्राहिक मुखपत्र भारतिक्षि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

हस्य एक प्रति ५० पैसे

उक्त क

रविवार ४ नवस्वर १८८४

बाय मस्तर १६,०५५३०५४

१४०० कानिक ३०४१

दयान दा॰द--१४८

# अलगाववाद की ताकतों का विरोध करना होगा

हम राष्ट्र को खरिण्डल नहीं होने देगे सभी देशवासी सकत्प ले स्वराज्य के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द का दिल्ली मे १०१वा भव्य निर्वाण दिवस

# आर्य नेताम्रो का उद्बोधन :

ब्र्याल सार्वजनिक समा मे महर्षि को श्रद्धाजलि

नई दिल्ली। महर्पि दयानन्द सरस्वती पहले भाग्तीय थ जिल्हान उन्होन उ नी-न्त्री मनाब्दी संसम्पूर्ण सानव समाज क अभ्यदय की बात कही वह पहल भारतीय व तक ये जि नेन पूण स्वराज्य की बात कही उस बाद मंदूनर राजनीतिज्ञा और ाग्रस ने दहराया। आज वे ही नाकन फिर एकजुर हा रही हैं जि होन देश का पहन ाडने की काणिश की बी धम प्रदाएव भाष के आधार पर अनगाववाद का माग का म जम कर विरोध करना हागा पिछला वप भःभावात का बीता है उसमे आयममाजन लगावबाद और विखण्डन क विरुद्ध राष्ट्रीय मूरक्षासेना द्वाराकी कायवाही का समयन न्या है। 'इन श•दाम साबदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगापाल शालवाल न दावाला ४ अक्तबर, १६८४ के दिन प्रात रामनीना मैदान में बाय के द्रीय सभा दिल्ली द्वारा ायोजित विशाल जनमभा का उदबोधन किया। भारत सरकार की स्वास्थ्य उप त्रिगीसुत्री कूमूद बेन जापी ने जनना का आद्धान करन हर कहा --- 'आज हम सक्तर पना होगा कि हम राष्ट्र को खण्डिन नही होने दग हमारा पूण स्वराज्य ट्रेनही, ह्यत और पुष्ट हो इसके लिए आय जन प्रयत्नकील हा। नारी को उसका सम्मान ।दलान ले महींव दयानन्द ही ये अ।यसमाज क दस नियम हमारे लिए पर प्रदशक हैं। वापीढी को उनका अनुसरण करना चाहिए। इस अवसर पर श्री क्षितीश वेदालकार श्री बाचस्पति उपाध्याय के भाषण हए।

इस अपसर पर सावदेशिक समा के प्रधान श्री शालाश ले ने घोषणा को कि इंदरे में ब्रिटिश सरकार के विकद निकाने गए जलूस का घण्टावर मं नत्त करने निक्वामी श्रद्धानन्द के नाम पर चादनी चौक का नाम श्रद्धानन्द चौक रखने का हताब दिल्ली प्रधासन न स्वीकार कर लिया है इनसे पूज निगम न चौक पर रामधरण क्षत्राल चौक की पटटी लगाई भी।

# ऐसी उपस्थित पहले कभी नहीं

इस अवसर पर भाषण यते हुए । सी विवानन्द सरस्वती ने कहा— केन्द्रीय सभा द्वारा चालीसची बार । सिंद निर्वाण दिवस मनाया बा र. [ परन्तु मैं कह सकता हु कि यज्ञ व बजारोहण के समय इतनी बड़ी । सियनि पट्ये कभी नही रही। हते रण रचना होगा कि जिस रास्ट जन नस से सन्छिति, परम्पराग तथा तत्व कस जाते हैं, उसकी जात्मा सल्प हा हो है। दस की जात्मा सल हा ए उसकी सन्हित्त और सम्यता की साहित्य परस्परा और सस्कृति की रहा कर ही जारत की बात्मा को जिए जावी कर सकते हैं। मू पू ससद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि महाि में महित्य ने प्रतिकृत परिस्थितियों से काय कर मारतीय अरास की हो। उन्हार ने प्रतिकृत परिस्थितियों से काय कर मारतीय अरास की अरास के हो। उन्हार ने अरास के साम कर स्वाम कर सम्बन्ध के साम कर स्वाम के साम कर स्वाम के साम कर स्वाम के साम कर स्वाम के साम कर साम की साम साम कर साम कर साम कर साम प्रति की साम पर पर साम प्रति की साम पर पर साम प्रति की साम पर साम साम प्रति की साम पर साम पर



आय महासम्मेनन की अध्यक्षता करत हुए प० सत्यवत सिद्धातालकार परिद्रष्टा गुरुकुन कागडी विदरविद्यालय हुनुमान रोड समाज क प्रवान श्री राममूनि कैला उनका स्वापत कर रह है।

सावद्शिक समा के महामन्त्री था अग्रेप्प्रकाल त्यागी न १९वी जन दी के पुषप्रवर्त्त की मे महर्षि दयगन- की काल मालम में नुलना की। विराधी भी खाय समाज के निष्धा की महना स्वीकार करत हैं। सहर्षित देविली म मयार पर न गर्म सम्प्रचलित करन का प्रयंत किया था।

इस सभा म स्त्री बायसमाज पताबी बाग की मन्त्रिणी श्रीमती बादल कुमार बौर श्रीमती ए डी कपूरन श्रीनगर के हजूरी बाग के ब्वस्त बायममाज मदिर कोर साय पाठवाला क पुनिवर्ण के जिए ६०००) जाठ हुआर रुपए का चैक तिए ६०००) जाठ हुआर रुपए का चैक सावदिविक सभा के प्रधान नावा राम-गाराल गानवार का सेंट किया। बुधवार ४४ जन्म वर्ग है देशों से प्रशास के स्वयं क



### अगिन आदि देवता क्यो कहलाते हैं ?

अग्निन्वना वाता देवना सूर्यो देवता च द्रमा देवता वसवी देवता रद्रा दवतादिया देवता मस्ती देवता विक्वे नेवा दवना बहस्पतिदवन द्रो देवता बरुणो देवता यज् ० १४।५०

विश्वनेव दवता---अर यात्रय छ ब --- भरिग बाह्मी त्रिष्टप (अग्नि) उ नयन শহর এ

मागटशन गति काति और भस्म करन वालेतव---परमामा जीवामा मन गुरु ब्राह्मण महासूत अग्ति आर्टि (देवता) स्वय दीप्त दूसराका टीप्त करने और किसीन किसी रूपम दान करन के कारण देवता है। (वान ) गतिमय होकर प्रदेशण तथा दोषों का दर करने वाल उत्त (सय ) उपादन करने प्ररणा दन ए वय मय हान तथा ऐश्वय व प्रकाश देने वाल तस्व(च द्रमा) अभिलापामा का पूण करने देवता हैं (बमव ) निवास का साधन बनने आपत्तिया से अच्छात्न द्वारा रक्षा करन वल तथा अधकार को दूर करन बान तत्त्व (स्द्रा) उपन्या द्वारा ज्ञान था परितास देन वाने तथा दण्ड द्वारा अपराधिया का रलाने वाल तत्त्व (आदिया) प्रदूषण तथा अतिरिक्त भागको लने वात अदिति प्रकृति के पूत्र अर्थात उसके निकट रहने वाले तत्त्व (मरुत) कम बोलकर विविध प्रकार से रोचमान हाने तथा दूसरो का रोचमान करने और अपने बत का पूण करने म मरन तथा मारने सन हिचकन बाल (विन्वेदेवा) जगत क स्रय सर्वा ५०४ गुणसम्पनतत्त्व (देवता) देवताहैं (बहस्पति) बड लोका तथा सस्थाना के पालक तथार क्षिता (इ.द्र) किसी भी एइवय से सम्पन तत्त्व तथा (वरुण) सत पटार्थो तथा भावो को वरणं करने और कराने वाल तत्त्व दवता है

निष्कथ ---जगत के प्रत्यक पदाय म दियतायादान देन और लाभ पहुचान का सामध्य है इसलिए उसे दब या देवता कहसकत है वेट मं प्रथमत सभी नाम आन्यातज अधात यौगिक है इसलिए प्र यक नामवाची शब्द के स्थान और प्रसग की दप्टि से अनक अथ किए जा सकते हैं। किमी भी नामवाची ग॰ को किसी एक पदाय क लिए रूढ नहीं मानना चाहिए। जगत क प्राक्त पराध में परमामा की अन्तर शक्ति काय करती है इसलिए प्रयक्त पटायवाची नाम स अस्तिम अभि धयनहाँ प्रायक मन् य इस म त्र मे वर्णिन देवताओं मंस किसी कभी गुणो को घारण करके देव या देवता बन सकता 81

— मनोहर विद्यालकार

विशेष इस मत्र कऋषि शब्द का अन्यस्त करता है कि विव का प्रायक पदाथ दिव्य है अथवा वह पर म माही विश्वदेव है उसके गुणातथा उपयोगो का जानन वाला उनसे लाभ

प्राप्त कर सकता है

म त्र कप्रयेक नामवाची शब्द को देवतामानाहै इससे भाऊ पर के सकेत की पूरिट हाती है कि म त्र म आया प्रत्येक नामबाची शब्द देवता के गुणो से युक्त है मत्रक छ न का श≪द य सकत करता है कि यदि तिप्दुप बन अर्थात काम ऋाध लोभ का अवराध कर शरीर मन तथा आह लादित करने वाले नत्त्व (दवता) मा मातीना की साधना कर और ज्येष्ठ समवयस्क तथा कनिष्ठ तीनो की स्तृति अधान उनके साथ यथ योग्य व्यवहार कर ताप्रयक पदाश्व से अपना भरण पोषण कर सकत है और ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करके ब्राह्मगुणा से युक्त हाकर क्छ ग्रशामे ब्रह्मसम बन सकत है

अथपोषक प्रमाण-नामानि बाल्या तजानि निर० ११२ तनाम यनाभि दशाति स वम । देवता देवो दानाद्वा दीप नाद्वा द्वातनाद्वा यादव सादवता निरु ६१५। अग्नि - अग्रणी भवति अग्र प्रणीयत्र ग्रयनयति स्वस्म न न वन प यति स्नहयति अ ग --- नि एति (इणगतो ग अंग्रावित कि िं वा दह भस्मी करण के दग्ध का) नि (नीज) प्रापण) वात — वा गतिगधनमा । ग वन हिंसनम सूय — व प्ररण वज प्रसर्वेश्वयय । युत्र व्यक्तियव । चाद्रमा — चिन बाह लाग्ने दाक्तीच । वसव ---दस निवासे वस आच्छान्ने विवासयति वातमा । मस्त मितस्वति अमितस्वति बहप्रकारम मितममित वा रोच ते राच यतिवास्त्रियते वानन पूरपा रुद्रा— रुत शब्दपदेश कुवति रोदयति वा अ।दिय आददति ब्रादीप्यतवा अप्ति पुत्रा वा। विश्वेदेवा --- सव देवा । वहस्पति - वहता साकाना पालविता बहतो वा जगत पति रक्षितावा इ.इ.—इराअल्नदघाति धारयति ददातिया बीज त्रीह्यादि दणानि विदारयति वा इदव द्रवति गच्छनि वा इ.दीरमते इ.धानीपयति शरीर भूतदिइध्यते प्राणवा इद करोति उपादीकराति पश्यतिवा। अस्य सवस्य शुभागुसक्मणा द्रष्टा वा। वरण बाव णाति आद्रियत बाबूञा वरण।

५२२ ईक्वरभवन सारीबावडी दिल्ली ६

# \* दीवाली दयानन्द की

लेखिका श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालकृता साहित्यरत्न

एक बार महर्षि अरवि द से किसी ने ने पछा-आप दयानन्द जी को स्वामी दयान दया महर्षि दयान द श्यो नहीं कहते ? सिफ दयान द ही क्यो कहत है ? सामने की निशाम सडारश्न के लिए कहा महर्षि अरवि द ने कहा--- महर्षि तो भारत भूमि पर अनेक हुए है और स्वामी भी जहा जहा दिख्टगाचर हो जाते है पर तु भारत की भूमि पर दय न द जसा आ ज तकन कोई हुआ है न होगा। इसलिए मैं तो उहदयान-दही कहगा। वस्तुत दीन दुखियोप दया करक ही अपनिदत रहने वाल दयान द अपने आप मे एक ही थे। दीवाली की रात्रि है। ऋषिदयान द का पूण कारीर रोम रोम छालो से भरा पडा है। कोई साधारण व्यक्ति होता ता करा हते कराहत ही कमरा सिर पर उठा लेता पर तुवाहरे दयान द । उस पीडा असह्य पीडाम भी मुखपर अनिवचन य बाभा । लागो न पूछा स्वामीजी अप क्हा है ? उत्तर मिला- र्व्बरेच्छा म।सच मच ही दिल देता ऐसा परवरिंगार द

किर व का घडी भी खशी म गुजार द पीडा की घडियों मंभी सबका आनंद बाटन वाला अनोस्ता ही व्यक्ति या दयान द। स्वामीजी को अपने दद का चिंता नहीं थी। चिता थी ता यह कि जाते जात भी सवरे दिला मं प्रकाश की किरण बिखेरकर जाए। ० गुरदत्त विद्यर्थी नास्तिक थे। प्रभु विश्वास के लिए भी ता प्रभ की क्या की आवश्यकता है न यमैंवय वणततनलय वहप्रमृङ्गाका घडीण गुरुदत्त विद्यार्थी ने लिए आ पहुच थी। स्व मी ी न भवता ने कहा

१ सब खिडकियादरव जस्राल दो।

२ सब लाग मेरे पीछ आ जाश्री। २ प० गुरदत्त विद्याधा को भ्रपन प० गुरुदन विद्यार्थी ऋषि दयानद के अन य भक्त थे ऋषि के साथ सक वितककत ये। पर तु उनमं प्रभ पर विष्वास बानान हो सका। महर्पि से कहते स्वामीजी। आपके तक अकाटम है पर तुक्या करू। मन म विश्वास नही जमता ऋषि कहते वह समय भी आएगा जब विश्वास जमगा ऋषि ने सचा। इस अधरे दीए का प्रकाशित करना है। ऋषि दयानंद न प्रभभक्ति क संत्र पढ। आ वि वानि दव सवितद्दितानि परासुव। यदभद्र तन आसुव। पढा को अन्त नय सुपथा राय भी पढा प्राण याम द्वारा अपन स्वास बाहर निकाल और अपने प्यारे प्रभाकी गदम जा पहुच ईश्वर तरी इच्छा पृण हो गुरुदत्त दख रहे थिक यह कौन भी अन्दय गवित है जिसके सहारे से इस पीड़ाम भी ऋषि के चेहर पर दि॰य तज है। चमक है। मुसकान है। मानाप्यारं प्रतम से भटकरने जारह हो । जरुर कोई अध्यामिक शक्ति है। ग्रघरा छट चुका या। प्रभुविश्वास का प्रकाण सन मं व्याप्त हो गया या। यह वी दयान द की दीवाली रजनी की तमपिनत कहा जब दीपपिनत जगमग करती। नया प्रकाश की किरण पाकर रह स∓ताकालीघरता।

१६७४६ वरदान पुत्र मारहपत्ली निकद्रावाद (आध्य प्रदश)



एकताकाबल।

पजाब के महाराजा रणजीतसिंह अपनी राजवानी लाहौर मंद्रे कि उहं उनक गुप्तचरो ने सबरदी कि कबीली लूटेरो का एक दल सरहद क्सूब क पेशावर शहर म -घस गया है और उसे लूट रहा है। महाराजा रणजीतसिंह ने तुर त इलाके के सेनापित को बलाया और पूछा — जापने पशावर नगर की सुरक्षा क्यो नहीं की ? सेनापति ने क्छ सकोच से कहा— महाराज हमारे पास शहर मे क्बल १५० सनिक थ और क्बीसी लटेरो की स€या इट हजार थी फलत हम उनका मुकाबला नहीं कर सके।

महाराज रणजीतसिंह ने अपन साथ केवल ढढ सौ सिपाही लिए और वह पनाबर मे लुटेरों की भीड पर टूट पड । उन सनिकाकी वीरता और तलवाग के हमल के के सम्मूल कवीली लुटरेटिक नहीं सके वे भागत ही नजर आए। लौटकर महाराज ने सेनापति से पूछा- मरे साथ कितने सिपाही थे और क्बीली कितत सिप ही थे? सेना पति ने कहा महाराज अगपके साथ केवल इटसा सिपाही थे और कबील इट हजार थे। महाराज ने कहा—. इतने पर भी वे हार गए क्या कारण है? आपका बहादरी आरेर रौबदाब के कारण! महाराज ने कहा नहीं मेरे अकेले की बहादरी से नहीं पर सबकी मिली हुई बहादूरी के कारण । इसी एक्ता से एक एक वीर दुरमनो के सवा लाख के बराबर हो गया।

### ब्रह्मचय से मृत्युपर विजय

ओ ३म ब्रह्म बर्येण नपसा देवा मृत्युमपाध्नत ।

इ हो ह ब्रह्मचयण देवेम्य स्वराभरत ।।अथव ११५ १६

ब्रह्मचय और तप से देवों ने संयुकादूर विया। इन्द्रन प्रह्मचय से हादेवा अन्यदादिष्य प्रक्ति सम्पन इदियों के लिए तेज एवं सुक्त को घारण किया।



### सत्य एव न्याय का पक्षधर

पत्र के इसी अंक में बड़ीदा की आयसमाज खारीवाद मंग के एक उसाही आय कायकर्ताने बडी वेदना से एक प्रश्न उठाया है कि जिस आयसमाज की स्थापना मे बहुसम्ब्यक जनता के सहयाग के साथ मुसलमानी एवं मिस्रो का यागदान रहा काक इवाडी आयसमाज म जिला यास पथर मंचनके नाम का उल्लेख है लाहीर मे आयसमाज की स्थापना एक मुस्लिम मज्जन के घर हुई फिर क्या कारण है कि उसी आयसमाज का पाकिरतान मे पथक स्वन्त्र व बस्ति व नहीं ? उनका तथा उन जैसे विचा रिका का कथन है कि जिस प्रकार महिंच दयान द मरस्वती स य एव याय के पक्षधर क्षे वैमे उनके अनुयायी नहीं रहगए है। महर्षि दयान द सरस्वता मुस्लिम विद्य बिद्यलय गाना उहोन जहानिराकार भगवान की स्तुति की वहा उसके पैगम्बर एव समय थ की यक्तियुक्त आलाचना करने मे कभी सकाच नही किया। थियोसाफिस्ट आर्यसमान के सिद्धानों में अनुकृत थ पर तुमहर्षिन विमाभी वड से बन मानव को स्वाकास्वाम पैगम्बर मानने से इकार कर निया। महर्षिका भारतीय या विदेशी सम्प्रदाया एवं मन मना तरों से किसी पद्भाया अनुराग नहीं वा इसके बावजन उहींने मब धर्मा के मौलिक म य मिद्धाता की एकता त्या उनके साम्प्रशयिक दूपणा की कलई खालने मे कभा मकोचनही किया। वह मन विशय के आग्रहाका उसक अच्छ और बुरेत वो काठीक से समक्त कर वेदानुकल साय अप्रकाश क समक्त न कलिए निर तर च्चवत्त रहत । इसी कारण इनकी संय एवं यायप्रियता का सभा स्वीकार करत थे।

आयसमाज नस्था और इसके मस्थापक महर्षि कास देश पिछली सवा गता॰दी से देश विदेशा म गज रहा है। इसके प्रारम्भिक जीवन मे इसके सदस्यो एव कायकर्नाओ की सयनिष्ठाएव उच्च लक्ष्यों के लिए याछावर करने की वित्त सभी सरहते थ । स्वाधीनता के सबय का प्रदन हता या ग्रदना स्माज मन्य त कुरी तियो ब्रान्यों को दूर करने एव जनता के दुस नैय को दूर करन का जब कभी काई भी प्रदन उठनाया तब उसमे महर्षि के अनयाया आयव घु सदा आगे रहने थे प्राकृतिक सामाजिक एव राष्ट्राम विपदा आने पर ये नमठ आपन घ सदा सबदा आगे रहते थे राष्ट्रीय चारित्रिक जन जीवन कंव अग्रणा थ पर तुवाज स्थिति कुछ वैभी नहीं रह गर्न। यह ठीक है कि आज मसार भर मं ५ ६ हजार से भी अधिक गिनती में आयममाज कायरत है। इन सम्याओं के अ तगत महस्रो शिमण सस्याए अज्ञान को दूर करने मे प्रय नशील हैं इसी तरह हरिजनाद्वार नारी समु नित कुरीतिया व निवारण म भी बडी मह्या म आयजन एव मस्थाए काय कर रही ह। इतने लख जाले के साथ यह भी उल्लेखनीय है कि अराज आयसमाजो एव आयमस्थाओ का भौतिक स्वरूप बहुत विराट हो गया है और विश्व भर मे इस विचारघाराको ब्रगीकार करने वात भी काटिकाटि बायजनो की गिनती की जासकती है पर तुस्के बायकद प्रदर्शसम्प्रदाया व समाज सफैली बुराई अन्याय एवं व भावा को दूर करन में सस्थातथा उसक समथकों का पहला जजा प्रचण्ड सामृहिक उ माह देखने को नहीं मिलता ।

यही कारण है कि बाज पहल जमे बास्त्राय देखने को नहीं मिलत विश्लो मुसलमाना देंसाइयो ज्ञा बना कि हो प्रमुक्त पर्यथा गात बुराइया एव पुनताओं की ओर ह गित कर सच्चे मानवधम का स देश गजान वाले नहीं मिलते। हमें स्मरण रखना हुगा कि महीच दयान द सरस्ती न क्यारियो एव मतवादा है परिपृण क्या कि निर्देश के बाय मानव का प्रारम्भ नहीं किया था। उहीने ता भारतीय विश्लेष सभी सम्प्रमाने की कुरीतियो एव ब विश्व क्या का बार या चा उनुम्वन कर बात विश्वान से परिपृण्य मानव कम के प्रति के दिक्त कम का स देश मुनाया था। जब बहु निरातार मावान का स्तवन करते थे उसका गुणानुवाद करते थे तब ईवाई मुस्लिम और सिक्ष उनके चरणों में पहुंचते थे पर तु उनके पहुंचने पर वे उनके मतो की कुरीतियों और दुराइयों का पर्याज्ञाव करने म रती ग्रार भी सक्कीच नहीं करते थे। यस महीच १६ वह की वापू में ही बित नहीं वड जाते नो मस्मय या कि वह वयपनी थाना चुंची विस्ति में उन प्रदेशों का प्रारा का बात कर कर जाने बड़ा आब पाक्तिसान

का विदेशी निर्माण कर गए हैं। महाँच निर्माण के बाद की तथा आयसमात्र के जीवन की दूसरी सताब्दी में पदि हम महाँच के द्वारा प्रदर्गित मान का अनुसरण कर दशई को दुर्शोई भीर बर-अर्ड को बर-आई कहन की न्द्रता और सच्चाई का अनुवरण कर सके ता जगन वर्षों म महाँच भीर बायसमात्र का म देश ऐस स्पना म ज्यात ह सक्या जहा वह बाज दिसाई नहीं दे रहा।



### त्रिभाषा सूत्र के ग्रन्तगत हिंदी भनिवाय विषय

यह जानकर अयत प्रसानना हुई कि ि ली प्रमासन न १११० ६४ का हि दी शिक्षक सम्मलन मा की गई च पणा के अनसार नवी तथा त्यवी व स्थाबा मा त्रिभाप मूत्र के अनगत हि ी का अनिवास विषय बनान का निषय कि गई। इस निषय कालए दिल्ली प्रशासन च यवात्र काषात्र है और के इसरकार ने आग्रह करन है कि वह इस निषय को गीन स्वीकार करे और यह लिल्ली व स्वत्र नी स्वाधीन लागू किया जा मके। प्यारव्वी तथा बाल्यी क्साजा मा माभी विषयों का माध्यम हि रिस्ता जाना चाहिए प्यारव्वी तथा बाल्यी क्साजा मा माभी विषयों का माध्यम हि रिस्ता जाना चाहिए प्यारव्वी तथा बाल्यी क्साजा मा स्वी शारतीय माहिय के जात स्वचित न रह जाल इस उद्देग्य से बन कस्थाजा महिसी एक भारताय भाषा हो विकल्प अनिवाय किया जाना चाहिए।

वस्तुत हिदो का उनका उचित प्रतिष्ठित स्थान कवल तभी मिनगाब सभी उच्च शिलाको तथास्कापरापरापनोको की परीलाओं मसे अग्र बाकी अनिवायना समाप्तको जाए।

> डा० इप्णनाल प्रधान आयममाज एव स्य जक हिनी उपसमिति अयसमाज सरस्वती विहार निल्ला ११०० ने ४

#### पास्कितान मे श्रायसमाज का श्रस्तित्व क्यो नहीं?

महारा त्यान त्यारस्वती के अनुवाधियों से मैं कहुरा बनाम न समय में आज समाज पर गांधीवादी एवं गोलवलक रवाधी गुन का वहस्व छाया हुझा है यि आय समाज के बस्तित पर इनकी स्वापना संलकर त्या में विभाजन नात्त के तिर तबन बनान समय तक चितन दिया जाए ता यह निक्ष्य निक्लता है। के सभी अज्ञ से प्रवल पुरुषाय करत हुए भी बायसमाज ना पुषक अस्ति व बनाए रखन संप्याप्त उपेक्षा का गई है अयम आज भी पाहिस्तान में आयसमाज अपना अस्ति व बनाए रखना एवं भारत की गांजनीति पर जोरत्यार प्रभाव डाल सहता था। यह एक मौलिक तथ्य है कि बायसमाज ने द्वार न नव मंत्र के अने हैं। अन्य समय की युकार है कि सर्विष्यान न के सन्ये अनुय थिया का बायसमाज का अपन विगद्ध स्वस्थ से उभारकर विष्यक्ष पी बन नक निए अपना कमर का निर्वाण विवास स्वाप्त स्वाप्त स्वा

—--प्राधमद्रधीग्राकाकारकज स्तारावावमाग वडादा ६०००१

#### क्यादव यज्ञ जता युग की कल्पना है?

श्री युधिष्ठर जी मीमासक न अपनी वदिक स्वर मीमासा म पष्ठ ८७ पर लिखा है कि वेदाथ का क्षत्र आधि दैविक तथा आध्यामिक जगत है पर तुकाला तर म इनके साथ वेदाय का एक गौण क्षत्र यज्ञ भी सम्मिलित हो ग्या। मनुष्या की बुद्धि का हाल देखकर ऋषियों ने त्र तायुग के आरम्भ में अनिहोत्र त्श पौणमाम विविध श्रौत यज्ञा की कल्पना की उत्तर काल में वेटाय के वास्तविक अप लूप्त हो गए। और गौण यानिक अध्य ही प्रधान हागए मत्राकायज्ञ कम के साथ काल्पनिक गठब घन कमकाण्ड म मत्रो का जो विनियोग क्या गया वह इस प्रकार काल्पनिक है — जस र सचित्त निदशन के लिए रची गई रामायण की चौपाइया का रामलाला कंपात्रा कसाध गठब धन है। अत यज्ञों के पराध ह ने क कारण याजिक अथ गीण के। मत्रा का याजिक अर्थ तो ऊपर मे जोडा गया है। हसका केन क माथ कोने मम्ब ध नहीं माक्षान काई सबध नही है स्यो कि यज्ञो का आरम्भ त्र तायुग के आरम्भ मं हुआ। अत पव भावी देन मे पुरुचात भावी यनाका विधान कैसे हासक्ता है? अतं वेर के जिन सत्रा स यज इच्टिकन् आरदि शब्दों कानिर्देश है उनमें भी त्रतायुग के आरम्भ किए गा द्रव्य मय यज्ञाकावणन नहीं है। श्रीमान जी यदि यज्ञ कम त्र तायूग के ऋषियाकी कल्पना है तो श्री स्वामा देयान द जी ने अपने संयोध प्रकारा मस्कार विवि आर्थि पुस्तना म यज्ञकरने का विधान क्याकिया है ? और यज्ञके लाभ वेद मत्र क्णालिय हैं ? तथा आयवर शिरामणि राजमहाराज ऋषि महर्षिसव यज्ञकरते य यदि अब भी यज्ञ

— आ चाय स्वामी रामेश्वरान द गुरुकुल घाडा करनाल (हरियाणा)

--- स्वामी वेदमूनि परिवाजक, अध्यक्ष -- वैदिक सस्वान, नजीवाबाद, उ० प्र० राम कृष्ण और ऋषि-मृनियो की

सन्तानो । उत्तराखण्डकेसीमान्त प्रदेश गढवाल के पौडी, चमोली, उत्तर काशी कौर टिहरी जनपदो के निवासियो की अविद्या और निधनता का अनुचित लाभ जठाने के लिए ईमाई इन क्षेत्रों में स्कुल कालिजो तथा अस्पताला का जाल विछाने में लगे है। ईसामसीह के जन्म दिन पर तेल, भावून बनियान, कापी पन्सिली आदि का भरपूर वितरण करत है। दूसरी क्यों र उस क्षत्र के सवण हि दू शेष हिन्दुओं से चोर घुणा करते है। यह स्थिति यदि अधिक चलती रहातो वहा के अविद्या-ग्रन्त दलित हिन्दू ईसाई बन जाएगे और तब इस सीमान्त प्रदेश की दशा भी नागा लैण्ड जैसी हो जाएगी।

नागन्तैण्ड जो ईसाई बहलक्षेत्र बन चका है वहा के ईसाई बने हुए नागाओ को चीन ने छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देकर शस्त्रास्त्र दिए और अब लगभग -बीस क्ष से वे लोग देश से विद्राह कर रहे हे तथा भारत सरकार व दश के लिए सिर दर्द बने हुए हैं। गढवाल जैसे सीमात प्रदेश में जो एकदम भीन की सीमा पर स्थित है यदि ईसाइयत बढती है ता चीन यहा भी शस्त्रास्त्र बाटने और उन हिन्दू से ईसाई बने लोगो को छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देने मे नहीं चकेगा। उस समय की स्थिति की कल्पना करके भी रामाच हो आता है। इस स्थिति को उत्पन्न हाने से रोकन और दश के लिए वह दुभाग्य-पूर्णबनसर न अपने देन क लिए वदिक सस्यान नजीबाबाद ने कृतमकस्य हाकर काय प्रारम्भ कर दिया ह।

भविद्याम पड हुए दलित निधन जना म काय करने के साथ-साथ बहा क सवर्णों में भी इस बात का प्रचार करना बन्यावश्यक है कि यह दलित वर्गों के लाग खुणाके पात्र नहीं, अपितु उन्ही ऋषि-मुनियो और रामकृष्ण की सन्ताने है, जिनके आप हैं। वेभी आय थे और उनकी सन्तान होने से आप और ये सब आर्थ्य (हिन्दू) है। इस प्रकार के प्रचार से सवर्णी मंदलितों के प्रतिष्णा की समाप्ति होगी। ऐसा होने से ईसाइयत की गति मन्द हो जाएगी और ईसाइयत से सैंद्र। न्तिकटक्कर लेकर उसका प्रचार रोका जासकेगा। यदि उन लागो के साथ सावणों का घृणाका व्यवहार बना रहा तीलास्त्र प्रयत्न करके भी इसाइयताकी आवादको नहीं रोका जा सक्ता। इसी कारण वैदिक सस्यान नजीवाबाद न वहा

के प्रचार के लिए माहित्य वितरण का

काय प्रारम्भ किया है।

इस समय 'हिन्दू नही वाय' पुस्तक पाच सहस्र छपवाकर वितरित कराई जा रही हे और अब वर्ण जन्म से नहीं अपित् गूण कम से 'छड़ सहस्र छप रही है। इसे छपवाने के लिए दान प्राप्त हो चुका है। इसके तुरन्त पश्चात 'आयसमाज वया है' पस्तक की भी लागत ५००) र है। इसके वितिरक्त महर्षि दयान द प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्राय का वितरण भी गढ-वाल क्षेत्र मे कराना है। ४००) सैकडा सत्याथप्रकाश का मूल्य है। इसके साथ ही ईसाई मत के विषय में भी पुस्तक तैयार की जारही है उनके प्रकाशन और वित रण के लिए भी दानी महानुभावी का सहयोग बावश्यक है।

# ग्रार्थो सावधान !

वार्यसमाञ की यह निवलता रही है कि वह जाति अन्धन नहीं तोड सका और महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों मे वतमान जाति भेद को समाप्त किए बिना वर्णव्यवस्थाकाकम ठीक नहीं हो

हम दिन-रात वण व्यवस्था के गुण-कर्मानुसार होने के पक्ष मे धुआधार भाषण करे और लेख लिखे तथा जन्मगत जाति भेदका खण्डन करे किन्तु जातिभेदको तोडन के लिए तैयार कदापि न हो ता हम ऋषिवर दयान द के शिष्य और वेद के भक्त नहीं अपितु द्राही प्रमाणित हो जाते है।

वैदिक सस्थान, नजीबाबाद ने मार्च सन, १६८३ में सँकडो आयसमाजो को अपने जातिभेद निवारक विभाग की नियमावसी व विक्रप्ति भेजी भी, परन्तु सेद यह है किसी एक भी आर्यसमाज का इस कार्य में सहयोग प्राप्त नहीं हुआ हो सो ही बात नहीं, अपितु प्रतित्रिया भी उपलब्ध नहीं हुई ।

सस्यान ने अपनी विज्ञप्ति समाजी को इसलिए नेजी बी कि बायसमाजे अपने अपने क्षेत्र से एक एक, दो-दा सदस्य भी सस्थान के जातिमेद निवारक विभाग के लिए बना देगी तो सहस्रोन सही, सैकडो सदस्य तो बन ही जाएगे बौर इस प्रकार जातिभेद निवारण की ओर हमारा यह एक पग होगा।

व्यवस्थायह बनाई गई है कि जो व्यक्ति अपनी सन्तानो के विवाह जाति-बन्धन तोडकर करना चाहे, वे सदस्य बने

तथा ऐसे व्यक्ति जिनके सम्मुख बच्चो के विवाह का प्रदन शेष न हो, इस कार्य मे सहायतार्थं सदस्य बने । सदस्यता शुल्क १०० रपए बार्षिक अथवा १० ६पए मासिक रखा गया है। साथ ही यह सूचना भी दी गई थी कि कम से कम २५० रुपए एक बार देकर वैदिक सस्वान के आजी-वन सदस्य बनने वाले सञ्जन जातिभेद निवारक विभाग के सरक्षक माने जाए गे। यदि कुछ समाजे ऐसी हो, जो जातिभेद सोडकर अपनी सन्तानों के विवाह कर सकने का साहस करने वाले तथा वन द्वारा इस काय को प्रोत्साहन देने वाले सदस्य भी न दे सके तो कम से कम २४० रुपए भेज कर वे समाजें स्वय तो सदस्य बन सकती थी, किन्तु ऐसा किसी एक भी समाज न नहीं किया।

आर्यंजन स्वयं भी सोचे बौर अपनी समाज के साप्ताहिक और अन्तरग अघि-देशन में भी इस प्रश्न पर विचार करें कि बतमान परिस्थितियों में, जब इस्लाम और ईसाइयत हमे हडपने की पूरी शनित के साथ जुटे हुए है विनाइस प्रकार के ठोस पग उठाए क्या साप्ताहिक और वार्षिक अधिवेशन और उनमे होने वाले धुवाधार भाषण हमे बचा सकेंगे ?

जब कही से भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं हुई तब मन को बड़ी ठेस लगी। हमारे जीवन में कोई वैदिक बाबार नहीं, हम वेदों का स्वाध्याय करते नही। वैदिक सस्कार और अग्रय पद-

पद्धति के अनुसार पर्व हमने अपनाए नही तथा जातिभेद तोड कर हम-सतानो के विवाह करने को तैयार नहीं तो कृण्वन्ता विश्वमार्थम्' के भोष लगाने मात्र से क्या

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि "चौका लगाते-सगाते राज्य पाट. धन-घाम सब पर तो चौका लगा दिया और कही जाकर बस भी करोगे।" सोचना पडता है कि यदि गुरुवर आज होते और हमारी इस शोचनीय पीडादायक स्थिति को देखते तो कह उठते कि स्वाहा-स्वाहा करते करते सम्यता, संस्कृति, आधार-व्यवहार सब कुछ तो स्वाहा कर बैठे और कही जाकर बस भी करोगे। 'क्या आध जन इस दिशा में विचार करने की तैयार हैं ? यदि हा तो दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढिए, आपका स्वागत है। यदि नहीं, तो परिणाम भोगने और इतिहास के पृथ्ठो पर यह सकित कराने को तैयार रहिए कि विषदाता जगन्नाय ने तो महिष दया-नन्द के नश्वर शरीर की हत्याकी थी. उनके बास्तविक हत्यारे तो उनके मिश्रन की हत्या करने वाले उनके शिष्य ही हैं, जो घोष तो 'महर्षि दयानन्द की जय, वैदिक वम की जय और आर्यसमाज असर रहें के लगाते रहे किन्तु आचरण द्वारा यह सिद्ध करते रहे कि बास्तव में हम न तो महर्षि दयानन्द के शिष्य हैं न वेदभक्त और न बायसमाजी ही हैं।

### श्रद्धा-निष्ठा से भार्य स्त्री समाज का उत्सव सम्पन्न

१२-१०-६४ शुक्रवार हनुमान रोड, आर्य स्त्री समाज का वाधिकोत्सव मान्या बहिन ईश्वरदेवी जी की अध्यक्षता में हर्षील्लास से सम्पन्त हुआ। यज्ञ, स्तुति प्रार्थन बहिन कृष्णा जी वहेरा से मौजन्य से विधिवत-बडी श्रद्धा निष्ठा से हुई।

श्री कृष्ण रसवन्त की प्रेरणा से पहाडगज की बहिनों ने भजनों से समाही बाध दिया। रघुमल स्कल की छात्राओं ने रगारग कायकम प्रस्तुन किया। वाणी की महत्ता' विशेष प्रेरणादायक और प्रभावशाली रही । अध्यापको ने भी भजन सुनाए ।

वार्यक न्यागुरुकूल राजेन्द्र नगर की छात्राओं ने बंद पाठ किया। क० क्रांति ने आचार्यदेवोभव'विषय पर प्रभावशाली व्यास्थान दिया। बहुनो न भावविभोर होकर गुरुकुल की कन्याओं को पुरस्कार तथा माधुवाद दिया।

श्रीमती कृष्णा महेन्द्र की कविताए हृदयग्राही रही।

दिल्ली की प्रमुख स्त्री समाजो की प्रतिनिधि बहिनो ने बहुत योगदान किया। विश्वेषकर, मदिर माग, करौलवाग और राजारी गाडन, दीवानहाल इत्यादि ने । भजनो बौर कविताओं की होड-सी लगी रही। मूतपूर प्रधान शांति मलिक ने अपनी विदेश यात्रा के सस्मरण सुनाए।

श्री उथा शास्त्री बौर श्री० डा० शशिप्रभा के व्याख्यान मत्रमुख्य करने वाले ये । विदुषी बहिनो कास्वागत भी वैदिक-साहित्य से किया गया। डा० चन्द्रप्रभा तथा प्रकाश शास्त्री की कविताए मनमोहक रही।

— प्रकाश सार्था सत्रिणी

### श्री सत्यदेव स्नातक द्वारा बेद प्रचार

आयसम ज जानन्दविहार हरिनगर एस ब्लाक से १५ अक्तूबर से २१ अक्तूबर तक प्रात ६-३० से व बजे तक श्री सत्यदेव स्नातक न यज्ञ का सचामन एव वेदोपदेश किया। प्रतिदिन रात्रिको ८ से १० तक बीर वीरागनाओं के वरित्रो का आरक्ष्यान प्रस्तुत किया।

# यात्रा-पर्यटन : वैदिक परम्परा में

एतरेय बाह्मण की एक कथा के अनुसार कव राजा हरिए चन्द्र का पुत्र उत्थल हुवा और कुछ बडा हो गया तव यह वन में पर्यटन के विए निकल परा। जब उस उसकी बागस लीटने की इच्छा होती थी, तव-तब इन्द्र उसे कहते थे — पर्यटन करते रहो, पर्यटन करते रहो, 'बर्रवेति चर्-वेति'। पर्यटन का माहित्स्य बताते हुए वहा कहा है कि जो विचरण करता है उसे हो मधु मिलता है— चरन् मैं मधु विन्दति'। द्रव्टान्त सूर्य का दिया गया है कि देखो, सूर्य प्राची में उदय होकर गगन में यात्रा करता हुजा प्रशीचों ने पहच जाता है और फिर प्रतीची से प्राची में, यह यात्रा करता हुआ प्रकार नहीं है।

सूर्य के समान ही वेदों के अन्य प्रधान देव भी यात्री हैं। उनके वाहनो का भी अनालकारिक वणन मिलता है। इन्द्र के बाहन 'हरि' हैं, अग्नि के रोहित', अदिन्य के 'हरित' अधिवयुगल के 'रासभ' पूषादेव के बज', मस्तो की 'पुषतिया', उषा की 'बरुणवर्णा गौए', सविता के 'स्याव', बृह-स्पति के 'विश्वरूप' और वायु के नियुत्त'। वेदो मे पसटन के साधन मनुष्य के अपने पैर, अध्व, रथ, जलयान, आकाशयान, 💂 भ्रानियान, विश्व तयान बादि वर्णित हुए है। ऋरवेद मे 'भुज्यु' की समुद्र यात्रा के प्रसग मे उसके जलीय यान के टूट जाने तथा अध्वयुगल द्वारा उमे समुद्र में हुबने से बचाकर यानो द्वारा सकूशल यथास्यान पहचादिए जाने का दणन मिलता है। 'भज्य' समृद्र पार से भोग्य पदार्थी को आयात-निर्यात करने वाला व्यापारी है।

किसीकाल में चामिक दृष्टि से भारत में समुद्रयात्रा निषिद्ध ठहरा दी गई ची, परन्तु वेदों में समुद्रयात्रा केकई प्रसम बाते हैं। बदिवयुगल द्वारा मृज्युं के समुद्र उद्धार का वर्णन वेलिए—

तिल का सिन्न रहातिक निद्म नासत्य मुज्युम् कहेणु पतङ्गे। समुद्रस्य भः नाहस्य पारे निमी रचे शतपद्मि पहरूवे।।

यहा समुद्रयात्री 'तु-ज्यु' को इसने से बवाने की विविद्रुपत्र की कार्य कुलतता वर्णित की गई है। जो तीन दिन जोर तीन प्रति लगातार चलते हैं ऐसे जोरे स्वाकर-कवित्र जाएल भूज्यु को उसके पिता के पास जाते हैं। इस काम मे तीन प्रकार के रवो का प्रयोग करते हैं—जलयान, रचसवान जोर बाकादावा। उन रवो के संकडों कहा यन्त्र जरे होते हैं और जीन, बायु बारि कह जरव चुते होते हैं। ऋग्वेद में कहा है कि इन्द्रदेव धुम उद्देश से प्यटन करते वाले प्रत्येक सामी रे रच की रक्षा करत हैं — तः त्यमिटली रविमन्द्र प्राव सुतावत (ऋग् १०१७१ १)। वेद के अनुसार पैरल पर्यटन का भी महस्व है। अपववेद में पेदल पर्यटन का पीन की समता को वाछमीय कराते हुए लिला है कि — हे पुरुष, यदि सु चोडे खेसी तेज बाल से तीन या पाच योजन दौड सकता हो जीर उसी चाल से फिर कोट सकता हो, तमी तुम्हें पुत्रो का पिता बनने का अधिकार है —

> यद् वाविति त्रियोजन, पञ्चयोजनमाधिनम्। ततस्त्र पुनरायित, पुत्राणानो अस्त पिता॥ अस्यव ६१३१३

#### -- डा॰ रामनाय वेदालकार

वंदिक साहित्य में यागाए कई प्रकार केंद्रिक साहित्य में यागा किय-यागा, ध्रीलिक यागा, व्यापार यागा, साहक्रिक यागा। राजा लोग चक्कतीं सम्राट् ननने के लिए अस्पमेष यक्ष करते थे, जिस में बोडे को साथ लेकर मैंनिक सदक पर्य-टक करते थे। जो घोडे का प्रकर्श का साहृत्व करता था, उसके साथ युद्ध होता या और उठे पराजित कर सपने वाणीन कर निया जाता था। यह एक प्रकार को विजय-यागा होती थी।

छान्दोग्य उपनिपद् में सत्यकाम जाबाल की उसके भावार्य चार सी गाए सौप कर कहते हैं कि रन्हें ले बाबो, इनके ताथ साथ परिभाग करते रही जहां ये जाए, जाने दो। जब चार सो की हआर हो जाए तब लोट कर बाना। सत्यकाम पयटन करता रहता है जीर हमी काल मे प्रकृति-निर्धिषण करते-करते कृष्टम्, विन्, हस जीर एक जलबर पक्षी मद्गु के स्व-माख बादि को देखते-देखते उसे कमसा बह्म के एक एक पाद का झान होकर जाता है। यह सत्यकाम का वीकाणिक पयटन है।

छान्दोग्य वपनिषद मे ही बार्चण का पुत्र इस्तकेतु पयटन करता-करता प्याल देश के कात्रियों की समा में जा पहुंचता है। राजा प्रवाहण जैविन उससे पाच प्रकन पुछते हैं। एक का भी उत्तर उससे नहीं बनता। तब बानचर्चा होती है और पाचो रहस्थास्मक प्रकों का उत्तर उसे मिस जाता है। इसी प्रकार में प्राचीन थाल, सत्ययम, इंडबुन्न, जन और बुढिन नामक पाच स्थित विभिन्न स्थानों से सैसीणक शिविर के लिए एक इहोते हैं और 'आंत्मा कौन है ब्रह्म क्या हे?' इन विषयो पर सेमिनार लगता है।

बृहदारष्यक उपनिषद में जनक के यज्ञ में कुरु देश और पचाल देश के सभी प्रमुख बाह्मण आकर एकत्र होते है। जनक की यह जिज्ञासा होती है कि इनमे सबसे बडा विद्वान कीन है। वह एक हजार गाए इकट्ठी कर प्रत्येक के दोनो सीगो पर दस-दस स्वर्ण-मुद्राए बाबकर ब्राह्मणो को सम्बोधिन कर कहता है कि आपमे जो सबसे बहा ब्रह्मवित हो वह इन गायो को हाक ले जाए। किसी को साहस करते न देख याज्ञवल्यय अपने शिष्य सामश्रवा को कहते हैं कि इन गायो को हाक कर ले चलो। यात्रवल्क्य का दूस्साहस समभकर सब कृपित हो जाते हैं और उसके ज्ञान की परीक्षाले ने के लिए उससे एक एक करके प्रद पूछते हैं। यह भी एक बच्छा शिक्षण-शिविर हो गया है, जिसमे बनेक रहस्य-मय प्रश्न सामने बाते है और याज्ञबल्क्य उन सबका सही उत्तर देते चलने है। इस प्रकार के शिक्षण-शिविर उपनिषद् काल मे प्राय लगते रहते थे।

अपनी पर्ना एक प्राप्तक उपित बाजनोयम में एक प्राप्तक उपित बाजनोयम की कथा मिलती है, वो ध्यमी पत्नी के साथ हिरियालों के एक प्राप्त में बापहुंचाथा । वहां उसे निक्कां में एक हाथीबात से मूठें कुटच ही बाने को मिल पाए। उन्हीं से उसने सुधा शास्त्र की। बगते दिन उसे पता चला कि कोई राजा यज्ञ कर रहा है। नह बही जा पहुंचा और यज्ञ के पूर्वोहितों को चेंनेंन दे नैठा कि यदि तुम न्याने अपने काय के देवता को विज्ञानां मुक्ताय करा रहे हो तो तुम्हारा मुर्घा गिर जाएगा। धन्त मे उस का पाणिद्रव्य देखकर राजा ने उसी को मुख्य पुर्राहित के रूप में बर लिया। इन प्रकार अपनियदों ने कोई बिद्धान् यन-तन न्यानों विद्वानां का सिक्का जमाने के लिए भी पयदन करते दिलाई देते हैं।

व्यापार यात्राएं भी होती है। इस प्रसग में भुज्यु की समुद्र यात्रा का उल्लेख पूत किया जा चुका है। अध्यववेद के बाजिज्य सूत्रत में द्यांबा पृथियी के सध्य में विद्यमान बाकाश मार्गों द्वारा वणन है—

ये पन्यानो बहुवो देवयाना अन्तरा चावापृधिवी सत्तरन्ति । ते मा जुषन्ता प्यसा घृतेन यथा कीत्वा घनमाहराणि ।।

अधव ३१५२

अपनी सस्कृति के प्रचार के निमित्त सास्कृतिक यात्राओं का सकेत भी वेदों में मिलता है। इन यात्राओं द्वारा हम अपनी सस्कृति को विदय में फैला सकत है— सा सस्कृति प्रयमा विदववारा (यजू० ७ १४)। प्राचीन आर्य लोग द्वा विदिक्त सन्देश का अनुवरण करके अमेरिका, चीन, जावा, सुनामा लादि में अपनी मस्कृति का प्रयाद करते रहे हैं। विभिन्न वेद्यों की वित्रकला, पूर्ति, प्राचीन विदक्ती आदि से ये तस्य प्रमाणित होते है।

१।११६ फूलवाग पन्तनगर (नैनीताल)

# ENIXXXXXXX YXXXXXXXXXXXXXX

एक की महत्ता

ले० स्वामी स्वरूपानन्द, ग्रविष्ठाता वेदप्रचार वि , दि आ प्र सभा

्र्ण एक जोश्म को व्याइए, सकल प्रपञ्च विसार। सर्वोत्तम प्रिय नाम यह. समरो ब

सर्वोत्तम प्रिय नाम यह, मुमरो बारम्बार।। क रहे है किलाडी, एक गेंद से सेला

एक नजर की चूक से, हो जात है फेला।

🂢 देक्को गाडी रेल मे, डिब्बे रहे अनेक। ले जाता है खीचकर, सबको इजन एक।।

ल जाता ह खायकर, सबका इजन एकः।। ऑु≝ एक सूय आकाश मे, देना है प्रकाश।

एक सत्य के वचन का, करे समी विश्वास।। इंट्रॅंग्फ ही मला सपून है, कुल की राखे लाज।

एक ही शुद्ध विचार से,सफल होयसव काज।।

हूँ एक पूर्णिमा चन्द्र से, खिले चादनी रात। एक दूल्हा के साथ मे, द्योभा देय बारात।।

एक दूल्हा के साथ में, शोभा देय बारात।। ‱ुँएक अकेले ने किया, वेदो का प्रचार।

दयानन्द ऋषिराज को, जाने सब ससार।। 🌉 जाना सबको एक दिन, छोड जगत जजाल।

सबकेसिर मडरा रहा, एक काल विकराल।। ∰ एक वृत चारण करो, रहो स्वस्य सानन्द।

एक ईश की कारण गह, पाओ परमानन्द।।



# चण्डोगढ़ का प्रश्न अबोहर-फाजिल्का से जुड़ा

प्रधानमन्त्री का कथन चण्डीगढ़ पजाब का ही है, ऋर्द्ध-सत्य है-प्रो० श्रेरसिंह

समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के उस वक्तव्य पर जिसमें उन्होंने कहा है कि 'चयांगढ तो प्रजाह का ही है' पर जपनी प्रतिक्रिया करते हुए इरायाण रक्षा वाहिनों के जपन को अब मन्त्र मन्त्र कहा है। उन्होंने स्पण्ड कराया है कि प्रधानमन्त्री ने चयांगढ के बदाले अबेहर फावित्का इरायाण को देने का एवाव दिया था। अत चयांगढ पत्राह को बदले अबेहर फावित्का इरायाण को देने का एवाव दिया था। अत चयांगढ पत्राह को दिया जाता है ना अबेहर फावित्का पर हरयाणा का पूरा बिषकार है। उन्होंने स्पष्ट किया कि बाह कमीवान के फीवले के अनुसार चयांगढ को हिन्दी माणी को न मानकर हरयाणा के शामिक करने का निर्णय था, परन्तु प्रधानमन्त्री ने अक्ता तिता सन्त फनेहमिह की जान बचाने के लिए ही पाह कमीवान के निषय को बदलकर चण्डीगढ

प्रो० शेरसिंह ने अपने वस्तव्य में प्रधानमन्त्री को सुफाव दिया है कि चण्डीगढ पत्राव को देने से पूर्व अबीहर फाजिल्का हरयाणा को सौंपा जाए। अन्यथा हरयाणा की जनता इस जन्याय को सहन नहीं करेगी।

### बालावास मे शराव का ठेका वन्द होने पर स्रार्थ विजय-महोत्सव

आर्थनमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से प्राम बालावास जिला हिसार में १४ अर्थ ले के दराब के टेके पर घरना आरम्भ किया गया था। यह घरना निरत्तर ६ मास नक जारी रहा ओर घरना स्वत्त पर प्रतिदिन यह, सस्स्यात प्राच के विरुद्ध प्रचार किया गया। इस प्रकार कार्य को विजी बन्द हो गई। हरपाणा के इतिहास से यह इस प्रकार का एक प्रयम त्याहरण है।

अन्तत जनवास्ति के सामने घरा के ठेकेदार तथा सरकार ने व अक्तूबर को इन प्रान का ठेका बन्द कर दिया। इसी उपलब्ध में बाताबाद में १४ अक्तूबर को आध दिख्य महोत्सव सूमचाम से मनाया गया। इस अक्तूबर एक हाने का का मुख्यान से मनाया गया। इस अक्तूबर का नू, त्यार, न्तवा, दुभेठा अंधी, मुक्तान, चीरणवाम, आयंत्रवर, वीराना, मानवान, तौचाम, वाहपुर, यापा, हिसार दिल्ली, राहतक, मिचानी, मिवानी, लानक आदि स्थानी से मारी सक्या में नरनारी उपस्थित हुए।

### ग्रार्यममाज निर्माण विहार नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आयममाज निर्माण विहार (यमुना पार) नई दिल्सी का चतुर्व वाधिकोत्सव १ अ जन्द्रवर के २१ बन्दुबर, १६८४ तक केन्द्रल पाक निर्माण विहार में बडे समारोह पुत्रक मनाया गया। १८ से २० जन्द्रवर तक प्रात यजुर्वेद महायत हुआ। विसके कह्या प विद्यामित्र मेघायी, कुल्पति गुरुकुल महाविद्यालय सिरायू (बनाहाबाद) थे। रात्रि को श्री मेघायी औ के प्रमायगाली यचन होते रहे।

्र अक्तूबर को प्रात १० बने यह की पूर्णहृति हुई जिसमे श्री विद्याशकास सेठी, श्री मृत्यदेव, प्रवान दिस्सी आपप्रतिनिधि समा, श्री हुन्दनलाल माटिया, सनातन वर्ष ममा (प्रीति विद्यार वाले) ने भाग लिया। १० बने से १ बने तक राष्ट्रीय एकता स्थमनत ता रामगोपाल सालवाले, प्रवान सार्वयिष्ठ समा की अध्यक्ता मे बनी सक्तानापुत्रक सम्पन्त हुआ जिममे श्री रामचन्द्र विकल सदस्य राज्यसमा, आवार्ष हरिदेव वर ० विद्यामित मेसानी व अन्य विद्यानों ने अपने विचार रखे। अन्त से श्री विद्या- प्रकास सेठी के कर कमलो द्वारा सरायंत्रकास सेठी के कर कमलो द्वारा सरायंत्रकास ररीसानों में उत्तीण बच्चों को प्रमाण-

क्षार्यसमाज विनय नगर वाई ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे वेद प्रवचन

सुरोजिनी मार्किट पार्क (पताब नेशनला बंक के सामने) सोमबार ५ नवस्वर १९८४ से १० नवस्वर १९८४ तक रात्रि ७ ३० से १ बजे तक बाजामं पृथ्योत्तम जी बेदलवा किया करेंगे। श्री सरवदेव स्नातक (रेडियो सिगर) के मनोबर मजन होगे।

#### नवयुवको को प्रोत्साहन दीजिए

वार्यसमाज एक पर्याव वार्मिक सस्या है, यह एक कान्तिकारी बान्योक्षन है। वार्मिक, सामाजिक, सार्वावक उन्नित के लिए जावत करना जायसमाज का मुख्य उपदेश्य है। वेद ईश्वर की कत्याणी बाणी है। वेद का पदना-जाना जोर तुनना मुजाय समी बागों के जा एरम कर्तव्य है। वेद कीर मन्द्रमृति के बाधार पर महिंप हमानी द्याजद ने सस्यायंप्रकाश जैसे अपूरत उन्च को लिख कर रास्ते से भटके लोगों को नई दिवा दी। वेद को छोडकर सत्यायप्रकाश जैसा जन्य ग्रन्थ नहीं हो सकता। वेदिक साहित्य का स्वय भी अध्ययन करें और दूबरों को भी स्वाच्याय करने को भी रणा दें। बाज की युवा पीठी आयमाज से विषुख होती जा रही है। सभी पुराने बायसमाजियों को नदी-युवा पीठी आयमाज से विषुख होती जा रही है। सभी पुराने बायसमाजियों को नदी-युवा को भी भी साहत्य देना चाहिए उन्हें बायसमाज में बाज की अयसमाज में साना पाता साहता समी करने, सडिक्यों व परिवार के कायस स्वस्थों को आयसमाज में साता चाहिए

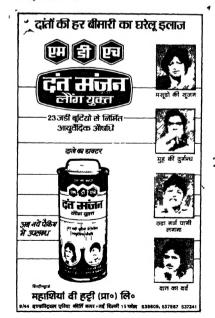
—पुष्पकर लाल बाय १०७ हाऊसिंग वोर्डकालानी, मिवानी (हरियाणा)

प्रार्ययुवक महासम्मेलन ११ नवम्बर को होगा

वार्यसमान (बेनारकली) मन्दिर माम में ६० वे वार्षिकासव पर ११ नव-म्बर को दोगहर र कमें से ५ बने तक बायपुतक परियक् के तत्वावधान में आयपुतक महासम्मेलन किया वाएगा। सम्मेलन के कप्यस भी धार्यनरेग होगे और घ्वचाराहुण दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विधारकाश सेठी करेंगे। सम्मेलन का उपाटन दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के महामभी डा॰ धर्मपान प्राय करेंगे। मुख्य बितिय आयपसान परिचय बिहार के प्रधान श्री होरालास चावता होगे। प्रो॰ सारस्वत मोहन महीयी डी ए बी कानेज बनोहर, प्रो॰ वेदसुमन वेदानकार डी ए बी कालेज करनाल बादि के सायण होगे बीर आर्यपुत्रक बासन, रण्ड बैठक, लाठी तसवार, जुडी-कारी शांचिया के प्रदान करेंगे।

ग्रार्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

सार्यसमाज गावि उपुरी (कालका जी) नई दिल्ली-१६ का ११ बा वाविकोत्सव २१ से २० बलपुबर का मनावा गागा उठा स्वाभी दीक्षानर जी की सर-स्वती के बहात्व में यह हुआ। रावि का स्वामी दीक्षानर जी की क्या हुई। २६ जन्मुबर के दिन आय महिला सम्मेलन किया गया। २८ अक्तुबर को बायं सम्मेलन मे स्वामी दीक्षानर जी एवं प खिनुकुमार शास्त्री के आपण हुए। ऋषि सन्तर बाय स्त्री समाज के सहस्रोग से किया गया।



# गुरुकुल शुक्रताल का वार्षिकोत्सव

#### वदप्रचाराथ बसो की विशेष व्यवस्था

वैदिक योग श्रम गुरुकुल खुक्ताल का बीगवा गांविकात्सव १ से ८ नवस्वर तक हो रह है। इस अवनर परम सबन पारायण महायज भी हा रहा। तिसकी पूर्णा कृति ८ नवस्वर को होगी ५ नवस्वर को योग छावना शिविर आधाजित होगा। बत्सव पर बहागो योगासन अधायाम ल ठी सरिया मादना जजीर तोकने काच पूमन आदि के कायक्रम प्रदर्शित करने।

उत्सव का आयोजन कार्तिक पूर्णिमा क अवसर पर किया जा रहा है जब सगा स्वात के तिय लाखा नर नारी गया उट पर बसे शक्ताल आता है। आयसमाल का स देग प्रचारित करारित करने के लिए यह अल्डा अवसर है दि ली जाय प्रतिनिध्य साम की आर से गुड़कुत जाने के लिए विधेव व्यवस्था की गई है। ज नवन्दर का प्रात अब न्यायसमात्र करील बाय से वम चलगी और वायसी वन्दर को दोवहर र बजे होगी। बस दिल्ली साय र बजे पहचेगी वस से अधिक सवारिया होने पर उहे राम्ब विश्व स्वाया हो लिखा जाएगा। प्रति व्यक्ति कार्य साथ २१ है निवास और भोजन की व्यवस्था गुड़कुत को और से की गई है यह गुड़कुत मि ने वि दे भी से कुत कुत करने कर से साथ की स्वाया से स्वाया हो से से की गई है यह गुड़कुत को से व्यवस्था हो से से विश्व से स्वयस्थ पर लिखी आय प्रतिनिधित समा को और से उपस्थेत प्रवार और प्रचार वाहन में अबे की कर के स्वयस्थ पर लिखी आय प्रतिनिधित समा को और से उपस्थेत अप प्रतिनिधित समा कार्यालय (३१०१४० फोन) या आयममात्र करोलवाग प्रदर्भ १५ वर्ष स्वयस्थ कर स्वायक करोलवाग प्रविक्ति है। सम प्रवस्थ के स्वायक करोलवाग प्रविक्ति है। सम प्रवस्थ के स्वायक करोलवाग प्रविक्ति है। सम प्रवस्थ के स्वायक की रामला प्रविक्ति है। सम प्रवस्थ

### मस्जिद मोठ क्षेत्र मे ग्राम प्रचार

मस्त्रिद म ठक्षत्र मे निन्ती आय प्रतिनिधि सभा और दक्षिण दिल्ली वेद प्रवार मण्डल के सम्बन्त तत्त्वावधान म दि० २०१० स्थ चौघरी मदसेन पटवारी की अध्यक्षता ने ग्राम प्रवार क य सम्यन हुआ भी वैद्यन्तर मान्त इस अवसर पर मुख्य अतिधि थे। सभा के अजनोपन्यक भी चुनीबाल और भी वेदव्यास जी ने सुदर उप देशा किया। सभा की प्रवार वाहन भी वहा पर गई जिनमे कसेट और साज्यस्पीकर आदि लगा है।

हमरण रखें कि विसम्बर के ब्रान्तिम सप्ताह मे विल्ली ब्राय प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे छ त्रीय महींव निर्वाण शनाब्दी मनाई जाएगी। ब्रपना सक्त्य सहयोग वें।

### सीवान मे शुद्धि सस्कार

हिंदू घम से विछडकर मस्तिम सम्प्रदाय म गए हुए ग्राम तुलसीपुर पो० यचकडबा त्रिजा फेबाबाद निवासी दा राजपुत महानुमाबा का उनकी इच्छा नुसार सीवान बायसमाज प्रागण में आय सस्दयो एवं वय प्रनिधित सन्तानों की उपस्थिति में ता० १६५ ८४ को गुडकर पुन विष्क धम में सम्मिणत

कियागयातथा उक्त खुद्ध किए गए शाबीर हसनक्षाकाश्री शकपालसिंह तथा मुहम्मद मुस्लिमक्षाका शिवपालसिंह नामकरण कियागया।

सीवान आयसमाज प्रागण मे ता० २२२ और २४ सितम्बर ८४ को वेद कथा एवं वेद प्रचारकाय सम्पन हुआ।

# करनाल में श्री देवीदास

प्राय का श्रीभनत्वन करमाल बाय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे बायो

समा हरियाणा के तत्वाववान में बाया जित महीष दयानद विवादा जवाली समारीह के बवहर में विव्यात महिला उद्घारक बायसमानी नेता भी देवीगत बाय (कानपुर) का नागरिक समिन दन किया गया। समिनदान पम हे हारों पतित के यांगी व महिलाओं को गुण्यों से मुस्त कराने विश्वायों को हिंदू धम सामिल करने तथा बन्य समान गुणार

क्षामिल करने तथा जन्म चनान धुनार के कार्यों की मूरिभूरि प्रश्चसा की गई।

### शत शत प्रणाम :-

(शरर एम ए)

बातुङ्ग हिमालय श जु तुल्य उज्ज्वल महान

गम्भीर पर पावन चरित्र गंगा समान ।

को बहाचय साकार न्यि जीवन अनप पासण्ड दस्भ के लिए उग्र विद्राह रूप को दया अहिंसास य याय केचम कार—अब अवलादीन ग्रनाय दलित केची कार

को पयोदिष से शात विजलिया से विह्नस

को प्रसार तेज मे सूय चद्रमासे कीतल

निर्मीक तपस्वि परिवटकोप न धारि— अचाय ऋषिवर दय नन्द ओ व्ह्यचरि अयो जगहित निजचीवन अधिन अधिन वात

विष पी पी कर भी पीडा हरने वाले

ओ तेजस्वि आ कातदर्शी बास यकाम

युगपुरुष हमारायुग युगतक तुभका प्रणाम ।

स्वराज्य मन्त्र के उदगाता महर्षि दयान द

४ नवम्बर रविवर रात्रि ८ १५ पर क्षाकान व भी क दिलाए कड़ साप्त्रा० अप्रदेव क्षाय की एक व नो प्रसारित होगा जिसकाविषय है— स्वराय मात्र कप्रयम उदगाता— महर्षि दयान दे।

# वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा मर्हाप दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशको-

सत्यपाल पियक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयव सोहनलाल पिथक शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना व केमरम तथा प बढादेव विद्यालकार के भजनो का सग्रह ।

आय समाज के अ य भी बन्त से कैसेटस क सचीपत्र के लिए लिख

14 मक्टि || ऐस || अशार विहार दहली 5 फान | 118326 744170 टेलेक्स 31-46 3 AKC IN

प्राप्ति स्थान यह कैसेट टिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा
 १४ हनुमान रोड नई बिल्ली पर भी मिलते हैं।

# उत्तमता का एक मात्र विश्वास



**#** †

पैरिस ब्यूटी सेल्स कार्परिशन

2665 ए/2 बीडन पुरा अजमल रनारोड करोल नाग नई दिल्ली १९०००५ ९ दूरभाष 569224 574200 582036

### नागालंड मे वेड प्रचार काय अस

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के अवनीपदेशक श्री बेद यास बाय ने द वास्त्रवास म र० वक्तूबर तक भारत के पूर्वोत्तर ख चल मे व्यवस्थित नागालड की यात्रा की । इस यात्रा म स्वामी दीक्षान द जी सरस्वती धी पष्यीराज सास्त्री काषाच्यक्ष श्री वेदप्रकाश मेहता और श्री तनेजा भी गए थे।

दीमापुर में १२ जनतुबर से १८ मक्तूबर तक दयानन्द सेवाश्रम के विद्यालय में स्वामी दीलान द जी ने महायज्ञ कराया रात्रि को वेदीपदेश एव अवनोपदेश का आक एक कायकम हुजा जिसमें स्वानीय जनता ने उत्साह से माग लिया। एक विद्याप कायकम म १५ जनतुबर के दिन सावदेशिक समा के अवान श्री रामगोपाल खालवाने तथा सम मनी श्री आन्त्रकास त्यामी ने जनता का उदबोधन किया।

### दशहरा पर्व और रावण वध-

बायस वेश के बक्तूबर के सक में श्री कृष्णवत्त का लेख राम आदरणीय ही नहीं बनुकरणीय भी हैं पढ़ा। त्यक्षक की माबनाओं से सहमत होना बावश्यक है कितु गित्त हिंग साम ने रावण का वश्य बारियन में नहीं अपितु चैन में किया या अमा कि वालमिक रामायण से विदिव होता है। बस्तुत यह पव विजववत्त्रमी का है वो लाज्यम में स्वीकृत विजय याजाओं तथा अल्लाक के प्रवत्तन ने साम्बद्ध है। इस्त विवयम में स्वीकृत विजय याजाओं तथा अल्लाक के प्रवत्तन ने साम्बद्ध है। इस्त विवयम में स्वीकृत वात हारी के लिए महात्मा अमर स्वामी रचित पुस्तक क्या रावण विजयवत्त्रमी का मारा गया था? पढ़ने की सस्तुति करता हु।

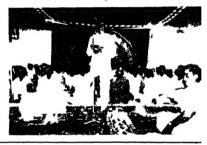
डा॰ भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ

### मस्जिद मोठ मे ग्राम प्रचार कायकम

० अक्तूबर को ॥ से ६ वजे तक चौघरी भद्रकेन परवारी को अध्यक्षता से निगण नि सी वेन प्रचर सण्डल के त बावधान म महिला सण्नल आय जनरल स्टोर मस्त्रिन माठ के समाप प्राम प्रचार कायकम हुआ। इसमे मगाताचाय श्री चुनीलाल और मगीताचाय वेन्ध्यास क सजन हुए।



बाय के द्वीय समा दिल्ली द्वाग आयोजित १०१व महर्षि निर्वाण उत्सव पर रामलीका मैदान्द्वेत आयोजित विवाल समा को सस्वीयित करती हुए के द्वीय स्वास्प्य उपमिणी सुप्री कुए देन वोशी। मच पर सावनिष्कि स्वाम त्वामा लाला रामगाणा सावाले स्वामी विवान र सरस्वती डाज्यनपाल महामय सम्पान औ सुप्रदेव भी रतनयन्त्र सुर उत्सम सम्बास स्वाम क्षा सुप्रदेव भी रतनयन्त्र सुर उत्सम के स्वसर पर मायण देते हुए श्री व्रितीय देशकार ।



# उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की ग्रौषधियां सेवन करें

बाका कार्यालय ६३, गली राजा केशरताच

कोन न ॰ २९६८३८

बावडी बाजार, दिल्ली-६



# अवस्य सन्देशाध्य

# दिल्लो आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

क मुख्य एक प्रति ५० पैसे वच ६ स्रक २ रविवार ११ नवम्बर १६⊏४ बाय सब्दसर १६५०=।

बाय सबत्सर १६५० = ५३० = ४ द कानिक २०४१

त्यान त्राक्त १५८

# अलगाववादी देशी-विदेशी षड्यन्त्रों का घृणित परिणाम

प्रधानमन्त्री इन्दिरागाधी की हत्या : भारतीय लोकतन्त्र को गहरी र्त्तात

गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री की रक्षा करने में सर्वथा विफल रही

# राष्ट्र के रेताचो की मावपूर्ण श्रद्धांजलिया

न है दिन्ती । ३१ बन्तुवर १६०४ के दिन प्रात ६ । बन प्रवानम की श्रीमती हिन्दरा गाथी पर उनके सरू रखन गई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर उनके सा पुरक्षा स्थार अस्परक्षने हारा गानिया माश्कर हत्या कर दी गई। असिल भारतीय आयुद्धितान सस्यान पर उनके सा प्रक्रिया सा प्रवास कर प्रवास के स्थार के स्थार का सभी राजनीतिक दला और नेताओ हारा लाकत न पर मारी बाबात तताया गया। मृतपृत स्थानमंत्री भी मोरारओ देगाई न कहा लाक तन को सातकवाद और भारत सता हे बचाना सभी को कत्त यह है। दिलत सम्बद्ध कितन को सहस्य प्रमुख्य स्थानमंत्री भी मोरारओ देशाई के हिन्दा में प्रवास के स्थान पार्टी के नेता भी परण तिंह ने कहा — यह मानना परणा कि देश के हिन्दाम में उनकी महत्त्य प्रमुख्य प्रमुख्य का स्थान पर्टी है। अस्ति हत्या में प्रमेक देशास्त्र को आधात पहुंचा है। अस्ति स्थान पर्टी के स्थान पहुंचा है। अस्ति स्थान पर्टी के स्थान स्थान पर्टी के स्थान स्थान स्थान पर्टी के स्थान स

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगापाल शासवाचे और महासचिव श्रा आध्यकाश त्यांगी ने श्रीमती गांधी के जीवन पर कायरतापुण हमले की निन्दा करते हुए उन देश का विषटन चाहने वासी अलगाववादी देशी विद्या गहरे बढ़यात्री का परिणाम कहा। उन्होंने भारतीय जनता और राजनातिक दलो से ज्योत की है कि उन्हें देश को अस्पिर करन के लिए प्रयत्नशील और राज्य कात्रुओं को पह चान कर उनका का समुक्त मुकाबना करना चाहिए।

# हिंसा देश के लिए कड़ी चुनौती इन्दिरा बीका बिलवान राष्ट्रीय एकता के लिए

्र प्रायक्षमाज अजमेर के प्रधान तथा तथा तथान द कालेज प्रवमेर आदि आय क्षमाज की शिक्षण सस्थामों केन त्री पौर रेडकास के नेयरमैन श्री दत्तात्र स्र वा०न ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के असामधिक नियन पर शोक सनदना ०यन्त की है।

उन पर किए गए कायरतापुण भीर विश्वासभाती भाक्रमण की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा है कि हमारे देख की राजनीति में हत्या और हिंसा का उदाहरण सारे देख के लिए चुनोती है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश की सखण्डता स्वत बता और एकता के लिए जीवन मर बुढता से जो सचय किया, उसी के लिए यह उनका एतिहासिक विश्रदान हुआ। है।

# मारत मा के रूप मे बलि दे दी

इन्दिरा जी के बलिदान पर श्री शालवाले नेवान हाल झायसमाज मे नाक प्रस्ताव

कारमम त्र निवास हाल के माध्या हिक सत्भग के बार भारत वा प्रथ नमना श्रीमती इंदिरा गांधी की दन्ताक हुय पर प्रस्ताव पारिस किया गया। सभा संबोधित करते हुए माबन्धिक सभा क प्रधान सभी रामगाव न नवान न नहा समुचा ससार हिला गया है। श्रीमती गांधी ने जिन सोगी पर विश्वस करक



श्रीमती इन्दिरागाधी यद हमझाक्रेगाभारत देश तम म

विश्वामणान करके आस्वयंवकित करदियं अन्य ज्ञान महो गया इदिराजी का नाम । भारत का स्वतंत्रना अक्षण्डना और प्रभुसत्ताकी रक्षा करन हुए उन्होन अपने कारीर की अस्तिम वंद भी बिल देंदी

गाधी का श्रद्धाः लिलाभी तक भारत माता को कल्पना करके ही लोग जयज्ञय कार करते थे। उहाने ता साक्षात्र मारत माता का क्याचारण करके छोने ता साक्षात्र मारत मात्र क्या किया है

# विश्व मे सम्मानजनक स्थान दिलाया

प्रधानमन्त्री की हत्या ऋत्यन्त निन्दनीय दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव का वक्तव्य

नई दिल्ली। दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी सुबदन ने एक प्रस क्ता यो घोषित किया है कि देश को लोकप्रिय नेता प्रधान यो बीमती इन्तिरागाओं की जयप हु या की सारा जावजनत कह सक्ता में निरा करता है। श्रीमती पात्री ने देश को विद्युक राष्ट्रा एवं भ्राव रॉप्टीय ज्ञान से सम्मानजनक स्थान किसाय था। हुस आज इन विपत्ति के समय प्रण जेना चाहिए कि राष्ट्र की जलाव्हता के लिए प्राणपन हे

# शहादत से सीख लें : अखण्डता रखें

इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र की क्षति-शालवाले

नई निल्ली। माबरेधिक बाय प्रतिनिधि ममा के प्रधान ताला रामगोपाल बालवाले ने एक प्रस वहन्त्र में पाधित किया है कि श्रीमती इंदिरा गांधी का जिवन केवल मारान के लिए नहीं मानव मात्र के लिए एक महती कृति है। सारा आयवयन इसमें जोक सात्र जय स्तत्र्य है तथा इस निलंग्य है याकाय्व की मत्यना करता है। हमें बागा है कि राष्ट्यारी बालिया श्रीमती इंदिरा गांधी की इस बहादत से पाठ लेकर राष्ट्र की अवस्थता के लिए एकबुट होकर काय करेंगी।



₹

### परमात्मा हमारी राक्षसो वधूर्तीसे रक्षाकरे

—प्रेमनाथ एडवोकेट

पाहिनो अपने रक्षस पाहि घूर्तेराष्ण। पाहिरपित उतवा जिवासतो बृहद्भानो यविष्ठप।। (ऋ०१।३६।१२)

भीर काण्य-ऋषि अग्नि देवता, विराट्पय्याबृहती छन्द, मध्यम स्वर।

धान्दार्थ — [बृह्द्माननो] हे महान् तेज बाले [विस्टब्ध] अनवताम [महान् अनत्त बल बाले] [बाने] जात स्वरूप सर्व पुत्रमो दुरुदे को स्त्य करते वाले [न] हमारी [स्त्रस ] राजस जर्यात् हिंसाधील दुरुट स्वमान मुद्रप हे [याहिं] स्त्रा करते (बान) हमारी [युनें] विस्ताया वाहक कली करदी (बा) बियाज्य वान वर्ष रहित करपण मृद्रप्य हे [याहिं] हमारी रक्षा करते। [उत] और [रियत ] ज्याद्यादि हिंसक प्राणियो से [न] अवया (जो दुरुट जवना पानल) [जिवासत ] (हमे मारते की जो इच्छा करता है उससे भी [याहिं] हमारी रक्षा करी।

व्याख्या--इस वेदमन्त्र मे परमात्मा से प्रार्थनाकी गई है कि वह हमे राक्षसो, बतौ, स्वाधी कृपण (जो धन होते हुए भी कुछ भीदान नहीं करते) मनुष्यो दा हिंसक (ब्याझ सर्वादि) जीवो से हमारी रक्षा करे ! कोई भी प्रार्थना हमारी सफल नहीं हो सकती जब तक हम उसके लिए स्वय पूरा पुरुवाथ न करें, व्यक्तिगत अथवा मिलकर अथवा शासन (सरकार) की सहायता से। इसके लिए हमे बल-वानृ होना चाहिए और सब साधनो उप-साधनो से सुसज्जित होना चाहिए, आपस मे मेल-मिलाप से एक दूसरे की सहायता करते हुए रहना चाहिए वा शासन पूरा प्रजातात्रिक होना चाहिए और शासनवर्ग मे कोई छली कपटी स्वाधी हिसक नहीं होना चाहिए। इसके लिए हमें लोकसभा अथवा विधानसभा आदि के खुनावी मे बिना किसी जाति आदि के मेदभाव के धार्मिक (सदाचारी) विद्वानों को ही मट- दान करना चाहिए। ताकि हमारे देश में अथवा ससार में रामराज्य (शांति सपन्न)

ही हो।

बाने इस वेद बन्त से परमात्सा
को असने' कहकर सम्बोधित किया गया
है। 'ब्यानि' सब्द बग-वर्षु'बातु से निकला
है जिसके अर्थ हैं ज्ञान, गमन, प्राण्ति वा
पूजा के। परमात्मा जानस्वरूप बंदा

योग्य होने से उसकी 'आर्थन' कहत है। वह ब्रम्मणी (हमारा सबका नेता) वा दुष्टो का दाहक होने से भी उसको अग्नि कहते हैं।

राक्षत' के अर्थात् जो अपने स्वार्थं की रक्षा करता है और इसके लिए छन, कपट, चौरी, बाका वध आदि करता है। अराज—यह शब्द 'रा' बातु से निकता है, जिसके कार्य दान' करने के है और बान घर्म से रहित क्रपण पुट- महुज्य हुआ करता है। अराज कहते हैं क्यांत् परमास्या हुने 'अराज' जो दान'किन ही उसके भी

हमारी रक्षा करे। इस शब्द का रामायण

वाले रावण से कोई सम्बन्ध नहीं।

रक्षस--- 'रक्षस' शब्द के वर्ष है

भावायं—सब मनुष्यों को बाहिए कि वे सब प्रकार रक्षा के लिए सर्वा-भिरक्षक परमारमा से सर्वदा प्राथना के शौर अपने जाप भी क्लवान हो या दुष्ट स्वभाव वाले प्राणियों से दूर रहे वा सब पापों से दूर रहें। और सासक (प्रधान मन्त्री, मुक्य मन्त्री बादि को भी छसी, कपटी, चौरों सामुखीं व हत्यारों आदि से रक्षा के लिए बाध्य करे, बिचसे देखा सादि का राज्य हो बौर प्रजा सुखी हो। बी०-१०३, नीति बाग, नई दिल्ली-४६

### जोचपुर मे महर्षि निर्वाण ज्ञातास्वी

१०-११-१२ नवम्बर, १६८४ को जोवपुर मे प्रातीय स्तर पर महाँव निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है। जनवन्त कानेज के पान दयानन्द माग, जोवपुर से यह सताब्दी कार्यक्रम किया जा रहा है।

#### ग्रायंसमाज लक्ष्मीनगर का वार्षिकोत्सव

कायसमाज तक्ष्मीनगर, विस्तार, दिस्सी ४२ में बायसमाज का दूसरा वाधि-कोत्सव रिववार, ११ नवस्वर, १९८४ को प्रात ८।। से दोपहर १।। वचे तक श्री रत्न विह सामध्वरण की जध्यक्ता में मनाया जा रहा है। इस प्रवसर पर श्री यशपास सास्त्री, श्री रामचन्द्र विकस, पवन कुमार सास्त्री, श्री जैमिनी सास्त्री बादि के मायण



### सेवा की सच्ची भावना।

उत वर्ष पत्राव मे वयकर अकाल पढा था, जैसा कि बूढो की याद मे भी कमी नहीं हुवा था। उन दिनो पत्राव मे महाराणा रणजीत सिंह का राज था। उन्होंने ऐसान करवा दिया 'हुम्म महाराज का, आहीं को ठार हर ज़रूरतम्पर के शिए खुने हैं, 'हर ज़रूरतम्पर के शिर खुने हैं, 'हर ज़रूरतम्पर एक बार में बितान बनाव उठा सके, ले आए।'' ऐसान होते ही जरूरत मन्द एक बार में बितान बनाव उठा सके, ले आए।' ऐसान होते ही जरूरत मन्द प्रजा उमर पडी, गाबी-वाहरो से बाल होते शीवित लोगो का सिल्मिला बन गया। उन दिनो लाहौर मे एक सद्गृहस्य बूढ सज्जल कहते थे। कट्टर सनातनी विचारों के, जीवन मे कभी उन्होंने कभी हाए नहीं पदार पा, किसी तरह की कोई जाय-परवाल पुख्ताक नहीं हुई। उन्होंने क्यों दिवाना नाज बाया, अधिक जनाव उठाना उनके सिए कितन था। इतने मे पगडी बाये एक बादमी बहु खाया। उसने कहा—'भातावों, आपने तो बहुत कम बनाज दिया।'' युढ सज्जन बाये—'वस्त समें में बुढ़ा लाचार हूं, इस बकाल मे थे थे बा जान लेना ही ठीक है, विस्ति से कर स्वरतमनों को अस स्वाच हा? इस कराल में थे बार जान तेना ही ठीक है,

उस लागन्तुक ने वृद्ध सञ्जन की गठरी कोल दी। उसमे मरपूर जनाज भर दिया। वृद्ध सञ्जन ने कहा— मैं हृतना बनाज नहीं उठा सकता और न इसकी मजदूरी का पैसा है। दे सकता हूं ।" वृद्ध सञ्जन हिषकते ही रहे, उस लजनानी ने वह लगाज ना गृद्ध र उस लिया बोर चल पड़ा । बर के हार पर दो कच्चे कहें थे, बोले— बावा-कहा चले गए वे ?" वृद्धा खुप रहा। जननी ने गृष्टा— 'चर मे कोई बडा नवका नहीं है ?" वृद्धा बोला— 'सक्का वा, पर काचुन की लडाई में कुर्वान हो गया, जब वह है विस्त दे दो पोले।" वह लजनवी बोला— "आई जी, क्या है लाए, जिनका बेटा देश के सिए हुवान हो गया।"

रोक्षनों में बूद अजन ने उस खननवीं को पहचान किया। वह स्वय महारावा रणनेत सिंह थे, बूद पोजों से बोले — इनके सामने मस्ता रेकों "बोर खुर मो प्रणाम करते लगे, बोले — "आज बढ़ा पाप हो गया, खापसे बोका उठवावा।।" "नहीं, वह पुण नहीं मेरी फिरमत हैं कि मैं एक छहीद के परिवार की सेवा कर सन् । आप सवसी सेवा करना मेरा फर्ज हैं, वब तक जीवन है, बाप हमारे साथ ही रहिए।" — नरन्द्र

# दक्षिण-पूर्वी एशिया

(थाईलेंड, मलायीशिया, सिगापुर, जावा ऋौर बाली की द्वितीय सास्कृतिक तीर्थयात्रा)

१६ जनवरी, १६०५ से २ फरवरी १६०५ तक दो उप्ताह की सात्रा का कुल ज्यय १३७५० रुपए प्रति व्यक्ति (जिससे हवाई जहाज द्वारा जाना-बाना, वालानुकू-लित होटलो मे निवास, डीलवस बसो द्वारा दर्शनीय स्वानो का जबसोकन तथा हाका-हारी प्रात काल और साथ काल का भोजन व्यय सामिल है।

दिलण-पूर्वी एशिया के देशों में जब से केवल चार सदी पहले तक हिन्दू वर्क एव भारतीय सक्कृति का प्रचार या। वहां वाली नाम का एक ऐसा द्वीर है, जिसमें जब भी पच्चीस लाख के लगमग हिन्दू रहते हैं, बोर जिंदी सच्चे कमों में 'लाबू आर्या-वर्त' कहां जा सकता है। आया के निवासियों में भी पैतीस लाख के लगमग हिन्दू हैं। इन द्वीपों में घनेक ऐसे मन्दिर व तीय तमा भी है, जिनका हरिद्वार व गोस्वरम् के समान महत्त्व है। इस तीभेयात्रा ये सम्मितित होकर दिला-पूर्वी एमिया के लिखाल सास्कृ विद्युत्यों के साथ एकानमकता न सम्बक्त स्थापित कीजिए, और मारत के विशास सास्कृ विक साम्राज्य की एक फनक देखिए। साथ ही, वहां के हिन्दुओं को महर्षि दयानन्द सरम्बती की शिलालों तथा प्रारंगमां व केवार से परिचित कराइए।

विवरण के लिए सम्पर्ककरे----

---श्री बद्योक त्रिसा

ट्रबल ट्रस्ट, बी-२४, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली-२१ टेलीफोल-६१८०४ १ धर्मेपूर्वक धन की प्राप्ति बोदेम् भूर्मुवस्य सुप्रजाप्रजामि स्याम। सुदीरावीरै सुपोदापोद्यै ॥ यजुर्वेद ८ ५३

हम प्रुलोक, अन्तरिक्ष लोक जोर युलोक की चपल व्ययों में सुकृत हो तथा सन्तानों से अच्छी सन्तानों वाले और पोषक पदार्थों से अच्छे पायक अववा मोज्य पदार्थों वाले हो।



# एक युग बीता: नए युग की शुरूआत

हुमारे महान राष्ट्र पर मकट की काली घटाए कई बार विशे हैं हर बार बहु सभी बापाबो विराधों एव प्रतिकृत परिस्थितियों से जुम्पत हुआ बढ़ता ज्या है। वृत्त १८४८ ई० की २० जनवरी को म गायी का जब बिलादान हुआ था, उस समय हुमारी राजनीतिक स्वाधीनता को प्राप्त किए हुए कुछ महीने हो स्थातित हुए पे परन्तु उस समय देख का नेतृत्व करने के लिए प० जबाहरणाल नेहरू, सरदार बल्लम गाई, बा० राजिन्द्रवान जेटे परीतित एव परसे हुए नेताबों का पथ-प्रवर्धन उपसम्बद्ध था। १६६५ में २० भई के ति पत्र वा किए वा का विराध के समझ कर का प्रत्य वा किए नेहरू के बाद कोन १ परन्तु अल्दी ही श्री लाल बहादुर शास्त्री एव श्रीमती इन्दिरा गायी ने सपने-सपने समया में देख की वायबोर सम्माल कर वह प्रदर्शित कर दिया कि हो सकता है अनुसब की दृष्टि से ने नई पीबों के रहे हो परन्तु प्रत्यों लिए, वृद्धा और लाल बहादुर सपनी लिए, वृद्धा और लहुपर सेमालिक में वे किसी से भी पीछे, नहीं रहे रोगों ने स्थाने करूँ रहे से प्राप्त तिका, वृद्धा स्थानित कर दिया कि स्था सित क्ष्म स्थान कर है।

त्रियस्थिनी इन्दिरा गाथी को नेहरू जी ने अपने प्रसिद्ध पत्री में जिल्ला सा—

'इतिहास का जम्म्यन प्रम्णा होता है परन्तु मह कही नेहतर है कि जून इतिहास

केला जाए ।' इन्दिरा जी ने अपने यमस्त्री जीवन है विद्ध कर दिया कि अपना पिता

की तरह वह भी शाहस की नेत्री थी । उन्होंने गुरू के ही प्रयोक समस्या का जम्मयन कर

स्वत अपना मन बनाया। जिल प्रकार की प्रमण्ड बासाओ एव प्रतिकृत परिस्थितियो

का उन्होंने सामना किया उसमे दूसरा कोई भी व्यक्ति परस हो प्रकृत परिस्थितियो

का उन्होंने सामना किया उसमे दूसरा कोई भी व्यक्ति परस हो प्रकृत परिस्थितियो

स्वर्थ स्वात्र वह १९६६ से राष्ट्रपति के पद के निर्वाचन का प्रकृत रहा हो भयवा

१९०१ म बगल देश के सम्बन्ध ने पाकिस्तान से गुद्ध हो, अथवा हिन्द महासागर मे

अमेरिकी सातर्व वेदे भी उपस्थिति हो अथवा सन्दर म उपवाद के गढ़ को ज्वस्य का सम्बन्ध हो । उन्होंने पुरी दूदता, साहस और सगन से भीषणतम परिस्थितियो

नोर बायाओं का सामना कर प्रदक्षित कर दिया कि बह नवीन सारत की अदस्य माझ
नाक्षों की सम्बन्ध प्रतीक की। अपन कार्यों से उन्होंने समाववाद के सिद्धात की प्रतिष्ठा

की सी साथ ही अस्पसस्यकों का विद्यास भी प्राय किया।

३१ अक्तूबर को प्राप्त देशी-विदेशी साम्राज्यवादी अलगाववादी ताकतो के हिसक प्रहार से भारतीय राष्ट्र एव जनता की बाकासाओं की प्रतीक श्रीमती इन्दिरा गाधी का पाणिय शरीर निष्प्राण हो गया है । उनके श्रसामयिक दुखद नियन से आधु-निक भारत का एक युग बीत गया है और नए युग की शुक्रवात हुई है। अभी तक सकट की बढिया गहराने पर देश को या तो अनुभवी एव परीक्षित नेतृत्व का साम मिलता या, अथवा उसे ऐसे माफी मिले जो अनुमधी और परीक्षित तो न वे, परन्तु जन्होंने सम्बे समय तक बनुमनी व्यक्तियों के सान्तिष्य में समूचित पथ प्रदशन पाया था। भाज देश के सितिज पर अलगाववादी जातकवाद की हिंसक घटाए विर धाई हैं, ऐसे समय यदि प्रमुख राजनीतिक दल राष्ट्रीय हितो के लिए एक व संयुक्त होकर कार्यं कर सकें और राष्ट्रीय समस्याओं को सुलक्षाने का प्रयत्न करेतव स्थिति का समुचित समाधान हो सकता है। इन्दिरा जी के असामयिक निधन से भारतीय राज-नीति मे एक अपूरणीय शून्य पैदा हो गया है जिसे भरने के लिए सभी राष्ट्रहितै चियो को प्रयत्नशील होना चाहिए। बार्यसमाजो एव बार्यजनी को इम सकट की वडी मे राष्ट्रीय परित्र को अधिकाधिक सरा, सण्या ग्रीर प्रामाणिक बनाने का प्रयत्न कर भावी दिशा-निर्धारण मे अपना उल्लेखनीय योगदान करना चाहिए जैसा कि उन्होंने राष्ट्र के नव जागरण एव स्वाधीनता सवर्ष के दिनों में प्रस्तूत किया वा ।

### श्रार्य विद्वानी, समाधान करी या संशोधन करी।

सहर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित बहु। यस में वो मन्त्रों का कम सस्कार विधि बन्य में बताया है उसमें बनेक परिवर्तन क्यो, बर्तमान के प्रचलित सन्ध्या पुरुषकों में प्राय १६ मन्त्रों का कम बताया है, परन्तु ऋषि आक्षानुसार मन्त्रों की सस्या २१ है। इसके बितिस्तर प्रारम्य में सक्ष्य का उच्चारण बताया है। द्याने देवीच मन्त्र द्वारा तीन स्थानो पर बाचमन बताया है। इस प्रकार विधि विधान में बान्तवित्त होकर सन्ध्या करें। प्राथायां करें तो पून से न्यून पोत्र चण्टा तो समय सन्धता हो है, परन्तु देखा बहु बाता है कि बायजन बाना पूर्ति के लिए तीन मिनट या पाच मिनट से ज्यादा समय सन्ध्या में नहीं। सन्धाते

'जब नित्य संन्या यज्ञोपासनाविधि त्रम— सदा स्त्री पुरुष १० बजे स्वयन स्त्रीर राणि के प्रदूर बहावेसा में ४ वजे उठकर प्रथम हृदय में रिरोस्वर का चिन्तन करके समें सर्व का विचार करना जोर सम और वर्ष के बनुष्ठान व उद्योग करन में पीडा सर्व हो तथारि सर्वदेशत पुरुषायं को कमी नहीं छोडना चाहिए। किन्तु सदा सरीर स्त्रीर बारस को रक्षा के सिर्धुक्त बाहार विहार जीवव सेवन सुपम आदि से निर-तर उद्योग करके व्यावहारिक सीर परमाय कर्त्त व्यावस की सिद्धि के लिए ईश्वरोपासना भी करना। विस्त परमेश्वर की कुगा दुष्टि बीर सहाय से महा कठिन कार्य भी सुमसा से सिद्ध हो सके इसके लिए निम्न वेद मन्त्री से ईश्वर की प्राथना सपरिवार मिसकर करें।

को हम् प्रातरिन्न । कादि ऋषेद के मण्डल ७ सूनत ४१ मत्र १ से ५ तक का पाठ करें। तत्पदचात् शीच द-तबाबन, युक्त प्रकासन करके स्नान कर। स-ध्योपासनादि नित्य कर्मनीचे लिखे अनुसार यथा विधि उचित समय में किया करें।

प्रारम्भ से सकस्य उच्चारण करें, फ्रोइस तत्वत् श्रह्मणो आदि किया साहित करें। किर इन सन्त्रो का एक-एक ब्राचमन करें। बोडम् अमृतीपस्तरणनासि स्वाहा, बोडम् चल्प यश श्रीमध्य श्री क्यता स्वाहा इसके अनन्तर पायत्री मत्र पायि बाब बाकर रक्षा करे। बाचमन मन्न—वाना देवी द्वारा तीन बाचमन, अप इन्द्रिय स्वर्ध मच्च — बोडम् वाक वाक् जादि, वय ईप्तर प्रार्थना पूर्व मार्जन — बोडम् वाक् जादि, वय ईप्तर प्रार्थना पूर्व मार्जन — बोडम् क्या कर प्रार्थना पूर्व मार्जन — बोडम् मु पूर्व बादि, वय ईप्तर प्रार्थना पूर्व मार्जन — बोडम् सु पुनातु विदर्शि खादि, प्राणमाम मत्र — बोडम् सु पुनातु विदर्शि खादि, प्राणमाम मत्र — बोडम् सु पुनातु विदर्शि खादि, प्राणमाम मत्र — बोडम् सु प्रानु वादि, वयस्य स्वर्धन स्वर्थन स्वर्यन स्वर्थन स्वर्यन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्यन स्वर्थन स्वर्यन स्वर्यन स्वर्यन स्वर्थन स्वर्यन स्व

जय बनता परिक्रमा मत्र— जा३न प्राची ने कर्षांपयन्त ६ मन्त्री द्वारा पर-मेस्वर हे प्रावंता करें। जयोपस्थान मत्रा— तरफ्सात् परमात्मा का उपस्थान जयोत् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे जित निकट परमात्मा है, एसी बुद्धि एव चारण करके करें।

उपस्थान मत्रों में बनमान प्रथमित सन्ध्या पुस्तकों में एक महत्वयूण मन्त्र को हटा दिया है। मत्रों का कम भी बदल दिया है। यह आय जनों की भारी भूल है ऐसा बान पड़ता है। उपस्थान मत्रा का कम और सस्था महाँच द्वारा निर्मारित निम्न प्रकार सस्कार विवि गृहस्य प्रकरण में विद्यान है। अब उपस्थान मत्रा

को रम् जातवेदते सुनवान ताम मरातीययो नि वहाति व । सन पथदति दुर्गाण विस्वा नावेन तिन्यू दुमनात्या। न ।। ओ रम विश्व वेशान मगादनिक साथि।। रा। ओ रम विश्व वेशान मगादनिक साथि।। रा। ओ रम् जुब्ब जात वेदस देव वहन्ति केतव साथि।। रा। ओ म् जुब्य जमस्परियम पथवानु साथि।। रा। ओ रम् जुल्बसूर्व विद्वा साथि।। रा।

पुन — नायत्री यत्र, जय समयणम् हे ईश्वर दयानिषे झादि, ओ३म् नम झम्यू-वाय च जादि मत्र से परमात्मा को नमस्कार करके छ नो देवी इस मत्र से तीन आचमन करके जिन्नहोत्र का आरम्भ करें।

सार्य विद्यानो से विनन्न प्राप्तना है कि उपयुक्त कमानुसार मनो का संयोधन करा बाए। इस कम का सकलन ऋषि प्रस्य के साधार पर साहपुर्रा निवासी बाय वधु श्री सोहनताल की सारदा द्वारा प्रकाशित पुस्तक सक नियस न्याय प्रशोधासना विधि' नि सुक्क समाकर ऋषि साझानुसार वयने परिवार को श्रद्धावानु वसाय, यही विनन्न प्रमुख प्रमुख्य के समाकर स्थाप साझानुसार वयने परिवार को श्रद्धावानु वसाय, यही विनन्न प्र

### महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व

सार्यसमान शिवाओं चोक सहवा से ऋषि दयान-द निर्वाण दिवस एव रीपा-वहीं पर्व दिवाक रे-र-१० ६४ को समारोहपूर्वक सनाया गया। पर्व पढित के अनुमार वहूद् यस सन्या प्रार्थना के पहचाल थी रामचन्द्र थी आयं प्रचान जा० स० सहवा ने सहूष वयानन्द सरस्वती के जीवन पर सार्यामित भावण दिया, भी प० नन्द किशोर थो दिवेदी ने थेस की वर्षमान परिस्थिति और हमारा कर्त्त ध्यांपर कपने विचार रखें।

# जीवन ज्योति के प्रतीक

— चमनसाल प्रधान आर्यसमाज वज्ञोक विहार दिल्ली-५२

पर्वो नवा त्याहारों का मानव के जीवन मे एक ऊचा स्वान है। स्वर्गीय लोकमान्य बालगगाधर तिलक यहा तक कहाकरते थे कि त्योहारो को मनानाही कि देश राष्ट्र के जीवन क्योंति का प्रतीक है। जितने जितने उत्माह, उल्लास श्रद्धा और प्रेम से कोई रास्ट अपने त्याहार मनाता है, उभी अनुपात में उस राष्ट्र के निवासियों में जीवन ज्योति समभनी चाहिए हुमारे देश मे जितनी अधिक सस्या म त्याहार मनाए जात है सम्भवत विश्व के किसी अन्य देश में नहीं मनाए जात होगे। हमारे कुछ त्याहार ऋतुपरक स्रोर क्छ महापुरुषो के नाम से सम्बन्धित है। मूछ राष्ट्रीय न्याहार भी है। परन्तु इन मब मे तीन बडे त्याहार ग्रयाभ्यापति मर्यादा पुरुषोत्तम राम के नाम से सम्ब-धित हे—रामनवमी— जा प्रतिवर्षचैत्र शुक्लानवमीका देश विदेशों में बडे उपाहसे मनाई जाती है परतुदो त्या-हार विजयदशमी का त्य'हार असोज मास की शुक्ला १० बी को मनाथा जाता है। जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है राम की राक्षमपति रावण पर विजय इस दिन हुई थी और तीसरा त्योहार दीपावली विजय दशमी के ठीक बीस दिन बाद आरता है। कार्तिक की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है कि अयोध्यावासियों ने श्रीराम जीकी रावण पर विजय प्राप्ति करके बापस लौटने पर दीप माला का उत्सव मनाया था परन्तु इतिहास व राम जीवन कमबसे प्रमाणित ग्रन्थ वाल्मी कि रामायण से इन त्योहारा का इन तिथियो मे पडनाक्दाचित प्रमाणित नही होता। बे सब घटनाए सक्षेप से इस प्रकार है -

अयायापित राजा दशास्य जब बृद्धा-ग्रम्या को प्राप्त हुए नव जन्दोत राज्य क मित्रया, गुण्जना तथा और अस्य अनक गाओं का बुनाकर नज सम्मुख राम —अपन ग्रम्य पुत्र का गास्त्र का कास प्रार्थ सोपन का प्रस्ताव रखा और जनकी अनुमति ने राम का युक्ताज कलिए सब मामग्री जुटाने के बादश दिए गए। यह चेत्र माम का महीना था।

यहा रहने-नद्रते सन्द ऋतु बीत गई हैमन्त का आरम्भ हुआ। इड ममय पश्चान् रावम छन-नप्ट से माता मीता को हुर कर ले गया। उसको अपनी अवाक बाटिका से रक्कर, छर-घमका कर मीता को अपनी पत्नी बनान में अमफल रहा, तो उमने सीता का एक यए का समय सोचने के बान्ते दिया और जब हुनुमान मीता को लका में मिला तब उस एक वर्ष में से केवल सो माता ही शब रहन गए थे।

इति प्रत्यक्या तान् राजा बाह्यणा निदमत्रत्रोत् । वसिष्ट वासदेव च तेषा-मेत्रोपशुक्ताम् । 'चैत्र श्रीमानय मास पुष्प पुष्पतकानन । यौतराज्याय रामस्य मत्रमेत्रोपकल्यताम् ॥

परन्तु विधि का विधान बढा विचित्र है। आदमी सोचता कुछ है, परन्तु परमा-न्मदेव की कुछ कौर ही रचना है।

चेत्रमास क पुष्य नक्षत्र से निष्पाप रास को अध्याध्या का युवराज वनने की बजाय दुष्टा दासी मन्दरा तथा कैनेयी के पढदान्त रचन क कारण हाथु देखा में पिठा को आजा से वन जाना पड़ा और जब सरत जी राम को वापस सीटाने वन स पए तब विजकूट पवत पर कुटी बनाकर रहते था।

'अनन्तरम् तन्सन्तिहिचत्र कूटश्व पवन । तया पणकुटी तात तत्र ती बसती

भरत मण्डली क शामह करत भी राम न १४ वर्ष के वनवाश की सर्वाकती समाति से पृव लीटने से इन्कार कर दिया तो भरत राम की पादुकाए लेकर राम से बौदह वर्ष की समाधित पर लौटने की प्रतिक्वा वचन ने वापस बने गए और यह कहते हुए कि पदि बौदह वय के जिला दिन राम न लौटेंगे तो में (भरत) विवा बनाकर अस्मिन ने प्रवेश कर दूगा।

भरत के लौटने पर राम ने चित्रकृट छोड कर किसी अन्य स्थान पर जान का निदयप किया और इस प्रकार वन में पूमने पूमते और ऋषि आश्रमों की आमा सीभा केसते स्व यय बीत गए और दण्ड-कारण्य में एक सुन्दर स्थान पचवटी में कुटी बनाकर लेख चार वप बितान का १८६३ से निक्यप किया।

हनुमान जीन राम का सीता का सदेश दिया और राज्य द्वारा दी गई दो माम की अविष बनाई, तो राम बढ आशुर होकर कांने यदि मीना एक माम नव भी जीएगो ना बहुत समझा, में ना उसके बिना एक आग भी नहीं जी सकना। अन राम न सुर्गेद को जहरी न जका पर चवाई करने को कहा और उत्तरा-फाल्युनी नक्षत्र में चवाई कर दी और जब राज्य पर सीराम न विजय प्राप्त की, सब बौदह वर्षों में से केवल एक दिन शेष चा, जत राम जो उसी दिन जयोच्या जाना चाहते थे, दश्वरीक्ष्य वह राज्य के एपक दिन सीय ना उठीक है भवर्ष के समाचित पर अयोग्या जा गहरें ।

इस सन घटनायक से स्पष्ट है कि राम रावण युद्ध फाल्गुन चैत्र मास मे हुआ और चौदह वर्षमी चैत्र मास मे

ही समाप्त होते हैं। बत विजयदर्गमी का स्थोहार जमीज मास में न मना कर कहीं जंज मास में न मना कर कहीं क्षेत्र मास में मना माहिए मीर इसी ही स्कार देवाने में दूसरें ही दिव कहीं चेत्र मास में पढ़ती है। यह तो हुई इन दोनों त्योहारों का राम से सम्बन्ध पत्ती ने माम में पढ़ती है। यह तो हुई इन दोनों त्योहारों का राम से सम्बन्ध पत्ती ने वाली वात। ज जाने कब से यह समा चनी। इतिहासशाहियों के से सर्व कर्तम है कि ठीक ठीक बोककर सही तिस्था इन त्योहारों को निश्यत करें।

दीवावली त्योहार का एक अपना ही विशेष महत्त्व हैं, इसको रास्ट्रीय त्योहार कहनाभी कुछ अनुचित न होगा। यह ऋतपरक और फमली त्योहार भी कह-लाता है दूपरे जन्दों में इसे 'नवशस्येप्टि' भी कहना ठीक ही होगा क्योंकि इस अव-सरपर न्यावनी (स्ररीक) की फसल के अनाज ज्वार, मक्का, बाजरा, उडद, चावल, गुड-शक्तर निलादि सभी आ जाते हैं और सभी लाग इसको लक्ष्मी-पूजाकरूप मे मनाना बढापुण्य समभते ह। लक्ष्मी के स्वागन क लिए मारी रात्रि घरो मे राशनी रखते हे ताकि कही अभा-वस्याकी घार ग्रथरी रात्रि मे प्रकाश क अस्मावमेलक्ष्मी वापस न चली जाए। इसी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए कुछ चूत, मूलंलोग जुआ लेलकर आनन्द लूटते हैं, क्योंकि ऐसे लोगों का अन्धविश्वास है कि जो इस दिन जुवानही खेलता, वहनरक मे जाता है जबकि वेद मे जुआ खेलना, दुष्कर्म पाप बताया है। जैनियों के लिए भी यह दिन कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। क्यों कि अर्ज के दिन उनके मन्तिम तीर्थ-कर महादीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त कियाधा। अञ्जके ही दिन मन् १६०६ में स्वामी राम ने गगा माता की गोद मे जीवित समाधि ली थी, परन्तु इस दिवस का महत्त्र एक सौ एक वय से पूर्व अर्थान् और बढ गया है।

त्रव इस कार्तिक की बमावस्था के दिन गुग प्रवर्त्त के महर्षि दयानर म सरवती ने इस नवस्य दे हो । त्या नर मुच्य तिवस्य प्रारंत कर — 'ईवद र नगे इस्का पूण हो। कहन-कहने बगउनमी बगटस्या माना ही पण्म पावनी गाद में विश्व में पाया था। उसी दिन में अप पाय हा। उसी दिन में अप पाय हा। इस निर्देश के स्वीहार का ऋषि निवासों स्वयं स्वाव स्व स्वाव स्व स्वाव स्व स्वाव स्वाव

**₹**1

गत वर्ष बजसेर में उनकी बिलदान शताब्दी वड़ेसमारोहपूर्वक मनाई गई बी और उसके बाद पूरे वर्ष जिल्ल-भिल्ल स्वानो पर यह उस्सव मनावा जा रहा है को त्रीय बबसर पर।

दीपावली हर वय आती है और आयं-बन्ध ऋषि मक्त उनके जीवन में बटी बाबेक षटनाओं की चर्चा करके अपने की क्रूस्य-कृत्य समऋते हैं, परन्तु जराध्यान देकर देखें तो सही क्या ऋषि द्वारा छोड़े अपूर्ण कार्यकिस हद तक वे पूरे कर पाये। गत एक सौएक वर्षों मे। देश के वाचार, नैतिकताका पतन ऋषि के समय से भी कही अधिक इस समय हो गया है। महर्षि एक जाति व देश विशेष के लिए काय नहीं करते थे। वह तो समस्त विष्व की मानवता के कल्याण के लिए सारा जीवन प्रयत्नशील रहे और इसी मानव-कल्याण के लिए उन्होंने अपनी १८-१६ वटे की समाधिकादिव्य धानन्द भी त्यागकर ई टो-पन्थरों के प्रहार नहें भीर दिख के प्याले भी पीए। उन्होंने वेद को स्वत प्रमाण मान कर इसके आधार पर प्रचार किया और प्राचीन ऋषि-मूनियो की बिस्तृत परम्पराओं को फिर से जीवित किया।

वह महान देशयोडा थे और देश को सम्पन, शिक्याकी सौर स्वतन्त्र सता वाला देखना चाहते थे। सामाजिक मुरीविया के वह गान के को सामाजिक मुरीविया के वह गान के मोर बोर के वह गान के मोर बोर के वह गान के में सामाजिक में सामाजिक में सामाजिक के किया के में सामाजिक स्वामाजिक के बात के सुराविया के किया के मुलाक स्वय गुन-राती होते हुए मी हिन्दी को राष्ट्रमाया के रूप से स्वीकार किया और अपन सभी ग्रम्ब हिन्दी में ही लिखे। देश की एकता क्लाव्या के लिए वह जीवन भर प्रयत्नात्री रहे।

दीपावली निवाण दिवस पर ऋषि के प्रति सच्ची अद्वाजिल यही होगी कि हम सब गुरुबुट होकर आपसी भेदभावो/ को भुनाकर निरुकाम भाव से ऋषि के अबुरे काम की पूर्ति में यबाधिकत सहयोग बेकर ऋषि के ऋण से उन्हण होने का प्रयत्न करें।

### KTARXAKAN MAKARKATUKE

आर्यसमाज तिलकनगर का ३५ वा वार्षिकोत्सव

बायसमाव लिसकनगर, नई दिल्ली १८ का देश वा वाषिकोस्वव ११ नवस्वर से १८ नवस्वर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर इन्ही दिनो प्रात ७।। से ६ बजे तक नामवेद सज प० वस्ताल सुषायु के ब्रह्मान्य में हो रहा है। प्रतिदिन रात्रि को ८ ८-४५ बजे तक प० चून्नीलाल बी के अवनोपदेश तथा ८-४५ से ८-४५ तक प० वस्ताल मुवायु के वेदोपदेश होते हैं। १८ नवस्वर को पूर्णहित होगी। उसके बार श्री रामगोपल वालवाले, श्री सुवेदेव बी, महासब वभागल बी, बा० वसेपाल बी, व्रक्ष श्री रामगोपल के प्रवचन होंगे।

# भारत में युवा ग्रान्दोलन

भारत के नवनिर्माण एव पुनस्त्थान म युवाशिवत अपना गौरवपूण सहयोग दे सकती है। इस सामिथक प्रस्त पर राजधानी दिल्ली स निवा बित ससद सदस्य श्री सज्जनकुमार के विचार—

प्रस्तुतकर्ता रोशनलास गोयल

६ च्युवाद्यक्तिसम्पूर्णराष्ट्रकी दिशा को परिवर्तित कर सकती हैं। आप युना आन्दोलन से कैसे काय की अपेक्षा कर सकते हैं?

नि स-वेह युवाशिक्त सम्पूण राष्ट्र को नई दिशा दे सकती है लिकिन उसके लिए प्रौढ नेतृव को अनिवाय गत है। उस खक्ति से मैं रचना मक कार्यों को अपक्षा करना है।

ा भारत म राजनीतिक सामाजिक एव छास्कृतिक स्वर पर किनत हो युवा सगठत है। उदाहरण के लिए राजनीतिक पाटियों के युवा सन अववा सगीतकारो एव चित्रकारों के युवा सगठत अववा छात्राकी यनियन। ये सगठत भारत के उद्यान में किस प्रकार सहायक हो सकत

विन युवा सगठनो का जसा स्वरूप है बौर उनका नो उद्दर्ध है वे सामाजिक श्रीवन के उसी पहलू को परिष्कृत कर काम कर सकते हैं। सामाजिक सगठन भामीण का नो में ज्याप्त व्यविष्वासां रुद्धिया एव बहेज जसी दायपुण परम्य राज्यों से मुक्त करान की दिशा में काम कर सकत है राजनीतिक युवा मगठना तेववय में मेरी राम बिल्कुल साक है कि उन्हें जब तक भीड नतर नहीं मिलेगा उन्हें न्वास्त्रम हो सकता है।

च्कालको और स्कूला से क्या युवाओं का उचित निन्धान मिल गया है? यदि आपका स्नका नेतन्त्र करन की प्राथना की जाग ता आप क्या क्या सुधार साएगे?

यह मन्न अप्रास्तिक माहै औं भी आपका आग्रह है ता मैं अपनी राय आ को देता हू। शिक्षा मस्याआ क दाव बरण मनोपजनक मही न। गिम्मा सस्याओं का बाताबरण और अपने विद्या श्रिया की मन स्थिति नोत हो प्राप्त त बरण के लिए उत्तरनायों है मक प चार के लिए बहुत कठार प्रयास अप्रिमा

मिनमा और नाटका का यवाजनो पर कैंटा प्रभाव पढता है?

अनुकूल नहीं कहा जा सकता चिक नाटक या फिल्मे उद्देश्यपुण न होकर व्यावसायिक होते हैं। उनके निर्माण के पीक्षे अर्थोपाजन की प्रावना निहित होती

च्याभा तर्राघ्टीय युवाके द्वाबीर नेदक युवक केन्द्रों का संचालन अपक्षित

उगस हो रहाहै? क्याइनम किसी सुवारकी अवस्थकता है?

ब तराब्नीय यवा केद्रा एव नेहरू युवक केद्रा स मेरा बहुत सम्पक्त नहीं रहा है इसलिए ज्वके सम्ब स में कोई राय जाहिर करना वायमनत नहीं हागा। ऐसे मगठनों में मुगर की बावश्यकता तो निर नण बनी रहती है।

च्चामीण तत्रों संयवा आंदालनो का क्लिस प्रकार गति प्रदान का जासकती है? प्रौढ शिक्षाण्य साम्परता असियान संदनका क्याबाग्यान हा सकता है?

प्रामाण क्षत्राम युवायित्त को सम ठित करना बहुत आवश्यक है। ग्रामीण साने म अप जनन है कि दब्दा अपार जवानिन मुस्तावस्था में पढ़ी है। "हरी क्षत्रा का यवावग अपक्षाकृत जाग कक भी है। ग्रामीण क्षत्रों में सामाजिक एव सास्कृतिक यवा मगठनों का गठन किया जाना चाहिए। इस काय को सर कार या राजनीतिक दस कर यह अच्छा नहीं है। इस काय को वे नोग अधिक अच्छी नरह कर सकते दे लिले हो। गम्भीर समस्या तो यह है कि गावा के वलिल यना भी सहुर की जार जा रह हैं।

— राघी जो और बाद संज पी ने भी जन आदोलनों को चलान में छात्रा का सहयोग लिया आपकं इम विषय सं क्या विचार के?

ग्रधाजीका दस्टिकण रचनामक था। हनयवाणावितका वण्णीसर कार क खिलाफ संघव करने की प्ररण नेथ और वह गुलामी के खिलाफ न्सक विषरात्र गण क आ। निविस भाट्रीट से रचनामक नह क=ान सकना बहुआ।दल= निवंचन बन बन प्रतिनिधि क विलाभ ध अंड भ परिस्थितिय म छ।त्राके र ङ नानि मऋिय सागलन को एक मय व है उ निमक सस्याकाका बहिस्कार करक पडका पर आत लन करने के ।लए उक्सान को मैं किसी भा दृष्टि से उचित नहीं मानता। गांघी जांग्रीर जंपी के बाह्यान से अमीन और जासमान का अतर है। एक रचनात्मक है जीर दूसरा नका

मजय जी युवा जान्दोसन के मेस्दण्ड थ। परिवार नियोजन बृक्षारोपण आदि कायकम देस को समद्धिकी जोर ले जाने वाले थे। बाशाकी आती है कि जाप जोर आपके साथी इस दिशाने भर-सक प्रयास करेंगे।

देश की युवाशक्ति को रचनात्मक दिखा देने का पूज अब भी सजब गायी को है। भी सजब गायी को है। भी सजब गायी को है। भी सजब गायी को नाजुक बक्त पर जयना स्क्रम नेतर अवान किया जब कह दिशाहीन हाकर किया जिया की हिम्मी या थी। जनके पाच सूत्री का-क्रम का मैं मार दलक सिद्धा तो के रूप में स्वीकार करता

ा नेहरू जी का ज म दिवस हम बालदिवस के रूप में मनात है। वह बालको से क्या क्या अपेक्षाए रखते थे? क्या हम बाज उनके सदेश को बज्बों में प्रमारित प्रवास्ति कर पारहे है?

प० जवाहरलाल नहरू बच्चो मे राष्ट्र के मिल्प को देखना चाहत थि कि मारत के प्रयेक बालक का सर्वामीण विकास है। ताकि वह ने ने का प्रायक्क नागरिक बने और राष्ट्र के हिना की रखा कर सके। प० जी के आदलों सिद्धा ता और मा यताली का प्रचर और प्रचर अधिक यापक हाना चहिए विगेष रूप से देहाली अना म

च्यासम्यूणभारतकी भावासक एकनाके लिए युवाआ दोलन किस प्रकार

महायक हा सकते हैं?
हैं जो साम्प्रदेशिक में ऐसे तत्त्व सिकंध के जो साम्प्रदेशिक में ऐसे तत्त्व सिकंध है जो साम्प्रदाशिक वा जानीयता जीर का त्रीयता को विध्य फैलाकर राज्येय माना मक एकता का ताडकर अपने मकु क्षित न्त्रीय हिंती को पूरा करता चाहन है। युवाशित ऐसे तत्त्वा का गाति तुवक दढता के माथ सम्प्रदेश हो कर अगर मुका कला कर ता राज्य का बहत बड़ा हिन सम्प्रतकर पाएंगे प्रवक्ष का दिल के लोकियल का काय कर जी एसे ने लोकियलया का काय कर जी एसे ने तो कि खिलाफ लावम्बन न्यार कर।

युवाको का अग्रणी हाथ है है जिसम की समस्या किस प्रकार हल हो मकती है ?

प्रयक्त रूप से देखने से ऐसा सगता है सदम आ दोलन का नेतृ व गुरका है हाथ में है। जिलन वास्तव मं एसा नहीं है परोक्त में उनकी प्ररक शक्ति वे राज नीतिक तत्त्व हैं जिनकी द्रश्टिम राष्ट्रीय हिंद गोण और दलगन हिंत नवापरि है।

अब आप ही देखिए असम आ दोलान ने ऐसा हिसा मक मो किया है। बहा का जन जीवन अस्प्यत्म हा गया था बद्धा रेपा कराव बहा की दिनव्यां हा गर्वथी तेजसोक्क कारक्षाना महाना स करपढ़ या। परिवहन व्यवस्था सग हो गर्दथी सरकारी कमचारी कय पर नहा जात था यस स्थिति का कीन ठाक

सरकार ने आद लन कार्यों के ननाओं को पास्त्यरिक बातचीन के लिए कई वार लामि जन किया जनकी बहन सार जामि जन किया जनकी बहन सार जामि जन किया जनकी बहन सार जामि जन के सार जामे के सरकार इस बात को मानना े कि जमम से बिन्दिया की मानना और सका कोन्म न न न न मानि जनका प्रकार कर जामि जनका इसक नियु आरोलन का नरीका अपनाया जाना गान्म हित स नहीं है। पास्परिक बातचीन से एक प्रनिष्ठापण हल साजा जा सकारी है।

अर्थायम् अवसर पर यवाआः के लिए कार्टसदेग नता चानगे।

मे अपन यस मा थिया से कहना चाहुगा कि वा एन के हिना के खिलाफ अवग्ण केने बार राष्ट्रधाना तस्त्रा के खिलाफ एक्ज होकर मचल कर उन का तन और कर प्रवासक होना चाहिए तथ प्रीनन बके प्रति वे अपनी आस्थ का बन ए रख

युवक रचनात्मक सोचे रचनात्मक करे।
— असम अण्यन का बलानम एव ४४ गम मरवण गली १३

● ४११४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४००歳●

### एक सटाल

र वस स्वरूपान तसर बना अधिष्ठन । द प्रचार

एक पक्षित नन्म न सुष से उाश्रय अबकन नर ज्ञावन प्रभक्तान स्माकाय । स्वाग नमान नेन म अना अनि जन न कथाकानन प्रभ जपन अना नहीं पमन्। रात रात भर जाथना स्वाग्नमानी जाय । कथाकीतन मे मुक्त लनी नीन दवय । प्रमुक्तपति सत्यय का विस्तर कामल कन । बेल तमाशे स्वाग के विश्वे तेज पर नून ।। तीव शुल सक्कर वहानीद नहीं ठहराय ।

पुष्प देशकर चैन की वाशी देय वजाय।।



# जनता शांति और सद्माव बनाए रख

श्री शालवाले द्वारा व्यापक हिंसा की मर्ल्सना

सार्वदेशिक बार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सासा रामगोपास कालवासे ने दिल्सी में और देश के विभिन्न स्थानों में हुई हिंसा की अर्स्तनां की तथा बाम जनता से धारित तथा जानीय तद्भाव बनाए रखने का बसुरोध किया। उन्होंने कहा कि बीमती इदिरा गाधी ने भारतुं व बीर एकता के लिए बपने प्राण न्योधावर किए। उनके बादबों के बनुसार राष्ट्रीय एकता के लिए कपने प्राण न्योधावर किए। उनके बादबों के बनुसार राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करके ही हम उन्ह मचची अद्धावस्त बर्गित कर सकेंगे।

### स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गाधी के लिए आर्यसमाजो मे शोकसभाए

सना प्रधान श्री सूर्व रेव भौर नहान नी हा वर्ष गल ने प्रिन्ती की सभी बार्यसमायों से बनुरोध किया है कि वे अपने सार्गाहिक बोववेशनों मे स्व० श्रीमती इन्दिरा गाणी के लिए गोक समाए नवा शांति यह ज योजिन करें। योक प्रश्नावों की प्रति राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और गृहमत्री को में जैं नवा सवाचार पत्रों में भी दें।

### महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्कका उद्घाटन महर्षि वयानन्व सरस्वती निर्वाणोतसव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती निविणी तब दिनाक २८-१०-६४ को प्रात ६-३० के १०-१५ तक महर्षि दयानन्द सरस्वती पाक मे इस कीव को समस्य समाजो केशव पुरम (बारे-स रोत) अशोक विहार केवा !-। रानी बाग प्रजाबी बाग तथा जिनगर के सहयाग से बा स्वामी इष्णानन्द भी की अध्यक्षता में वसे उत्साह तथा सूनवाम से मनाया गया। इस अवकर पर वृद्ध यह हुमा जिससे बहुता श्री एक पाजवीर सास्त्री में ।

इस जबसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती पाक का उद्काटन श्री दीपचन्द्र सन्दू (उपसहापीर द्वारा किया गया। इस पाक के नाम करणा कराने का अंग्र हस अंग्र के श्री निगम पायद श्री साहित सिंह जी वर्गी को प्राप्त है। जिनके व्यक्तिगत जवक प्रयासो हो दिल्ली मा पहलीबार एक बहुत वर्षे पाक का नाम महर्षि के नाम पर रखा गया।

श्री दरवारी लाल का स्वागत किया गया। महींच का अखाजिल देते हुय समस्त समाजो को इस पाक में प्रतिवर्ष इसी प्रकार उत्सव मनाने के लिए प्रेरणादी तथा अपना पूज सहयोग देने का वचन दिया।

ृह्त्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूपदेव जी कास्त्रागत किया गया। श्रीस्त्रामी विजयानन्द जी ने श्रद्धाजित देते हुए सायसमाजो को सतर्क रहकर और अधिक शक्तिकाली बनने का बाह्मान किया।

उपमहापीर श्री दीपचन्द जी बन्धु के स्वागत के लिए बाए सहदेव मल्होन्ना बार्स पल्लिक स्कूल के बच्चो द्वारा बजाया गया बैण्ड वास्तव से सराहतीय था।

आर्य विद्यामन्दिर शायसमाज केशव पुरम (सारेन्स रोड) तथा कुसाबी हस-राज मॉडल स्कूल अक्षोक विहार के बच्चों के रगारंग कार्यक्रम उपस्थित सभी जनो मोह रहेथे।

मनेन्द्र शक्ति विद्यालय जिनगर के बच्चो ने भी बासुरी वादन से ब्राह्मिक का अन्त भोह सिया।

मुख्य प्रतिषि ने मच पर बोतते हुए अपना समाज से अट्ट सम्बन्ध बताया और कहा कि आर्यसमाय जैसी श्रेष्ठ सस्या ससार में कोई दूसरी नही है। उन्होंने बागे कहा कि हमें पार्टी विशेष से दूर रहकर समाज कल्याण में लगे रहना चाहिए।

श्रीमती सुबमा बार्या ने बपने मधुर गीतो से श्रोताओं को मुग्व किया। श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रकी उपस्थिति ने सब की शोधा में चार वाद लगा दिए।

स्वर्तीय श्री दीपबन्द जी बार्य (कालि साबुन) वालों के बेच्ठ बुपुत्र श्री बेदपाल जी ने पाक के स्तम्म में लगाए गए महर्षि के नाम, नियम तथा शिक्षाबों से बुदी सीनो शिलाबों का व्यय करीब २००० घरए सहर्ष बहुन किया।

मुच टैन्ट बादि की व्यवस्था श्री दरवारी लाल थी ने स्वय कराकर समाजो को अनुनहील किया।

### मारतीय संस्कृति का भ्रपमान-लता

बर्ल्य । स्वर कोकिया सता यगेषकर ने कहा है कि श्रीमती इत्या गांधी की हर्या से वह सारी भारतीय सस्कृति हिल गई है, जिसमें महिमाओं के लिए विशेष सम्मान है।

लता मगेशकर ने श्रीमती गांधी को श्रद्धाजिल देने के लिए बुलाए गए एक समारोह में मजन बोलने से पूर्व यह बात कही।

हत्यारों ने श्रीमती नावी की हत्या करके हनारों सालों से चर्की था रही सारतीय सस्कृति को चोट पहुंचाई है। उन्होंने भारत का अपनान किया है, उन्होंने जारी सस्कृति को तहस-नहस्र कर दिया लेकिन हिंसा का अवाव हिंसा नहीं है। चुचा को चुचा से समाप्त नहीं जा सकता। चुचा तो प्यार से ही समाप्त हो सकती है।

### स्रार्य स्त्री समाज ऋशोक बिहार का वार्षिकोत्सव

बार्य स्त्रीसमाज लखोक विहार फेन-१ दिल्ली १२का १०वा वाधिकोत्सव खुक्बार दिनाक १६११ च को प्रायंतमाज मंदिर एक १ ब्लाफ निहार दिल्ली १२ से श्रीमती सरसा महता की प्राप्यकार्य ने पीसहर १२॥ वे भी। तक हो रहा है, जिसमे श्रीमती हा जाति वर्ष वाला प्राचार्य लखानक विक्विचालय के बोजस्वी भाषण, श्रीमती हिंदार देवी जी तथा बन्य विद्यो विहिनों के प्रचल होंगे।

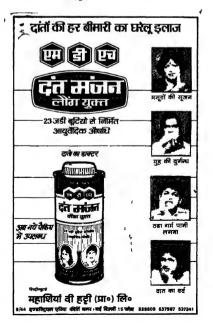
यञ्ज की बहुरा श्रीमती खान्तिदेवी अग्निहोत्री तथा कविता पाठ कविश्रती श्रीमती पदमा सर्मा मेरठ वालो के होंगे।

सभी बार्यं बहिनों ने इसमें भाग लेने के लिए जामत्रित किया जाता है। जार्य समाज बचोक बचोक विहार फेश्चा F5 का वार्षिकोत्सव भी १२११ ८४ से १८ १२ ८४ तक होगा।

भजन श्रीपविक जी के रात्रिको हुवाकरेंगे। २००५ कोटि के विद्वानो के मावण भी होगे।

#### सभी बामत्रित हैं

सयोजिक श्रीमती प्रेमशील महेद्र होगी। ---पदमा तलवाड मत्रिणी आर्थ स्त्रीसमाज



एक सामधिक ग्रन्थ तूफान के दौर से पजाब

तुफान के दौर से पजाब — लेखक श्री क्षितीश वदालकार प्रकाशक — दि वर्ड पब्लिकेशन्स ६०७।६५ नेहरू प्लेस, गई दिल्ली १९। पृष्ठसस्था २२०, अजिल्द का मूल्य ४८)।

यह तथ्य है कि सतलुज से लैबर तक बोर लहाल से सि यू की सीमाबा तक कैना दिन्त प्रमान का ४० वर्ष का खालता राज केवल दस वय की बल्याविधि में विदेश विद्यान निहित्त कार्यों पारस्परिक फूट के कारण विदिश्य साम्रान्य में विलीन ही गया था। खालता राज के लारण होते ही समस्त सिख सैनिको को निहत्त करके वेतन वेकर घरो पर वागत परने के ट्री पर भेज दिया गया, दूसरे देशा में सिखों की सर्ती वन्द कर दो गई तीमरे सिखों ने विना किसी विरोध के हिंद्याग डाल विद् । कुछ ही नर्यों से वेरोजगार खाल विद । कुछ ही नर्यों से वेरोजगार खालया सैनिक सिखों के समूह बेतरतीब यूपने लगे। उस समस्त काल मारक बोर लाव उनहों ने न दस्त को बयेखा सुविधा की मावना किस सीनको को विदाही पूरियोगों प्रोर गुस्तम सैनिक के बिद्धा प्रतिशोध की मावना के प्रमा दसा सामोरों और पे साने के वाश्वाह के के फिरायों के हाथ के खिलोने वन गए, उन्होंने जाजादी की सबाई में यह जो का साथ दिया।

बात बबी जटपटी लगती है परन्तु है सी टके सच्ची कि महाराजा रणजीत सिंह के बालसा राज को समाप्त करने वाला लाड वसहीजी जूते पहनकर स्वणमन्दिर गया या जोर उसके स्वागत में बहा दोवाओं मनाई गई यो स्वणमन्दिर की वाबिया अब जो को सीप दी गई यो सिंह तमा का सदस्य एक प्रत ज हो सकता या परन्तु सहववारी हिन्दु नहीं, सन १०५७ कं स्तत जता मुद्ध में प्रते जो के विरुद्ध लोहा लेने वालो का गहार कहा गया या गोला के लिए प्राण -दोखावर करने वाले नामवारी कूलावा को पय-अब्द कहा गया था।

पिछले जून मास में पाकिस्तान, अमेरिका कताड़ा और ब्रिटेन स्थित तत्वा के सहयोग से मारत के परिवासित एक से सांतिस्तान बनाने का प्रथम न पनप रहा था। विषत है वर्षों से पत्राव से हत्याओं, वर्कतियों, लटाम व मी कराजकता का नम्न नृय प्रचित्त या पढ़वल पढ़ का का में में नृय के उत्तर हों पर किया को चहा आपरेशन के स्तर हों पर के प्रीय स्कार को बहा आपरेशन के स्तर करा पढ़ा । आपरेशन के फलस्वरूप वह बड़यन नो बकारय गया पत्राव से परिवास का ना नया माहील लाया। इस बटनावक के बातजूद आतकवादियों ने पुरक्षा सैनिकी के साध्य से उन्हें प्रस्थान र १ अक्तुबर के दिन भारत की लोकप्रिय प्रचानमनी की हत्या करना दी है।

पि उने वयों में पत्राव सूकान के भीषण दीर से गुवरा है उस दौर की भीषण प्रतिकिश प्रवासन-मी इस्टिश जी की हु या से भारतीय राष्ट्र को भी सहनी पड़ी है, पजाब की यह सारी समस्या क्या है उसकी पुष्ठभूमि किन तत्वों ने तैयार की है, और उनका समुख्य क्यावात क्या हो सकता है इस सकता सामिक विवेचन प्रस्तुत सामिक कि विवास या है राजनीति बद्धान के अप्येताओं के साथ सामान्य पाठकों के लिए भी यह यन पठनीय है।

# 'एकला चलो रे!'

नइ दिल्ली 'एकला चली रे औं गुरदेव रवीद्रनाय की यह कविता श्रीमती इन्दिरा गांची को कुछेक चूनीदा पस दीदा कविताओं में से एक यी। इस कविता के लिए श्रीमती गांची के दिल में एक खास बगहुयी। अवसर वो इस कविता को बगला में सुनाया करती थी।

हत्या से एक माह पूत्र ही एक विदेशी लडकी ने उन्हें एक कविता भेजी वी जिसे उसके दिल ने कही गहराई में छुरा था। श्रीमनी गांधी उस लडकी का एकता चलो भेजना स्वाहती थी इसलिए उन्होंने इस कविता के कई अनुवाद करवाए और उनमें छाटकर सुद अपनी कलम से उसमें फर बदल किए ताकि वो भावना वा कविता में वाहती हैं वो उसमें बासक। श्रीमती गांधी ने अपनी कलम से उस लडकी को एक सत लिखा कि मुख्देव की कविता का मैंने यह टूटा फूटा अनुवाद किया है।

### त्राह इदिरा।

रक्षक ही अक्षक वन जाय नहीं मिलेनी कहीं निगल। कुर कमीने हत्यारा ने, कैमा रचा मिलीना बाल। क्षीन लियावयी हाय हमसे ? इदिराजवाजयमृत लाल। कैसाविकि कावज्यपत यह, बोकाकुल है भारत भाल।

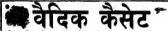
—-प्रकाश प्रभाकर (सोनीपत)

इन्दिरा हत्या-योजना का ब्लूर्पिट कनाडा स्थित उग्रवादियो ने भेजा था।

नह दिल्ली ६ नवस्त्रर। दिवगत प्रधानमंत्री श्रीमती इतिरा गांधी की हत्या के खिलानि में केन्द्रीय गुप्तवर अपूरों को कुछ ऐसे सूत्र प्रिले हैं, जिनसे हत्या के यदयन्त्र में कुछ विदेशी सगठनों का शब्ध होने तथा जन के द्वारा कुछ अधिकारियों के माध्यम से आधातिया फैलाए जाने की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही इन चौकाने वाले सुरागा से जाच की दिशा हो वदन गई।

मृहस प्रात्य के सूत्रा के अनुसार श्रीमती गांधी की हत्या के निलसिले म गुप्त-चर अपूरों के प्रथिकारी चार विभिन्न कहिया को परस्पर जाडकर जान पडनात कर रहे हैं। वे कहिया पाम मनाहर लाहिया ध्रन्यताल म मती हत्यारा सत्वत सिंह जसे सपय दिलाने वाला ज्ञानी चरणजीत सिंह जुड़क्त मा प्रयाद हाकर तीपराम अस्प ताल से मती हे और कुछ सूत्रा के प्रनुतार विदश आग गया बनाया जाता है, एक विश्व प्रमुख्य कि स्वीपराम करिस्त पूलित अधिकारी और हत्यार का एक अन्य साथों को फिलहाल हिरासत म है।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में निर्वाण शताब्दी के ग्रवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन अपनी रचनाए ग्रोर विज्ञापन भेजिए



प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्त्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी सन्ध्या—यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनेपदेशको—

सत्यपाल पीयक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूब, सोहनलाल पीयक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनो क क्मन्स तथा ष बुद्धदेव विद्यालकार के भजनो का सग्रह ।

आय समाज के अन्य भी बन्त स कैसेटस के सूचीपत्र क लिए लिख कुन्द्रोक्षम इलेक्ट्रोनिक्स (इण्डिया) प्रा नि प्रा मानिक्ट ।। केम ।। अमोक बिक्तर दहली 52 फोन 7118326 744170 हैलेक्स 11-4623 AKC IN

प्राप्ति स्थान यह कैसेट तिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा,
 १५ हनमान रोड नई बिल्ली पर भी मिलते हैं।



30 वे सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

### श्रद्धा-सुमन

सत्य का सदा छला जनत्य ने, रही सत्य की परम्परा थे।
छलवात रहा सदा लगने को कभी न पास हटा कदम या
बलाय पर ही चलता सीरों का कम रहा है।
निभय भीर नृढ निक्चय उनका मग रहा है।
विभय भीर नृढ निक्चय उनका मग रहा है।
बलाय के खलत्य छोर पर जमर व का कुन्म भरा है।
जो भी है उस छोर थे पहुचा उसने उसका वरण करा है।
बलाय के ये धनुवाती, युलपुक्त सभी कहकाते हैं।
जनमानस की त्या कर, ये सभी अमर हो बात हैं।
मानदता के लिए समित हुए यहा जनान बलिदान ।
उनम हुजा आज नवासिक, इन्दिरा जो का साम।
तुमने वपने अभिक्षम से मारत का उस्ता माल किया।
जो भी निक्चय लिया देशाहित पूर्ण उसे तत्काल किया।
जुम जमर हुई तुम अवर हुई तुमको प्रणाम हमा। है।
तुम परम गय में लीन हुई, तुमको प्रणाम हमा। है।

---बानन्द रक बन्धु

### इदिरा दहेज-हत्यास्रो के विरुद्ध प्रवल जनमत पैदा करने की पक्ष मे थी

दिवगन प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गांधी भारतीय महिलाओं के जीवन स्तर स्त्रीर जनको स्थिति मं पुषार लाने की प्रवल समयक थो लेकिन बहु यह थी चाहती थी, कि भारतीय महिलायें भारतीय समाज की बढ़ी सम्बाधा को व्यान से रखकर सथती समस्यावा पर विचार करें।

उनका विचार था कि दूसरे देशा के महिजा आदालनो अहा पुरुषो के बराबर अधिकार प्राप्त करो का समय है और प्रार्थिय स्थिति स्वहृत अन्तर है। उनकी इच्छा था कि महिलाओं को अपने व्यक्तित के का इस उस से विकास करना चाहिए कि समाज के दिन स उसका अस्पिक प्रयाग हो सके। उन्होंने स्पट किया चा कि जैसे पुरुष और महिलाओं न एक जुट हाकर भारत की आजादी के लिए सच्च किया था उसी प्रकार अब सारत कर विकास करें।

।। आ३म् ॥

## आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (त्रमुमानित लागत दो करोड़ रुपए) के लिए

दिल स्वोलकर दान दीजिए
दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तमत करमुक्त हागी।
सारा बान चैक समीखाईर/चैक हुम्बट द्वारा
मन्त्री माता चननन्त्री बाय बर्मांच नेत्र चिकित्सालय सी १, जनकपुरी नद्द दिस्सी ६८
के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकित किए आएगे।

#### निवेदक

रामगोपाल सालबान सरक्षक सुयदेव महायाय वसपाल अनामप्रकाश आसाथ चिकित्सालय एव प्रचान दिल्ली आराय प्रति प्रचान आराय मत्री सहायाय सा० आ० प्रति० समा, निष्तिमा केंद्रीय समा चुल्लीलाल चेरि ट्र सौज यसे महाशारी हरापा० विधिष्टि ६ ४४ की निरास्त्री प्रोत्त सन्त्र नहीं दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार की ग्रौषिधयां
सेवन करें

बाला कार्यालय . ६३, गली राजा केवारनाव

नान न० २६६८३६

बाबडी बाजार, दिल्ली-६



# 3112 21-621

# दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

ख ह

रविवार १८ नवस्वर १६८४

वाय यह यर ११६०६५३०६४

३ मागशीष २०४१

दयानन्दास्य — १४ =

# इंदिरा जी का निधन मानव मात्र के लिए महती क्षति

सभी राष्ट्रवादी शिक्तया शहादत से सीख ले : श्रखराडता की रहा करे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दीवान हाल में शांति-यज्ञ व श्रद्धांजलियां

नई दिल्ली। इन्दिरा गांधी पुग्यानवी थी, बहु आरतीयता का जीवन्त प्रवाण थी, यह सत्यन्त वेद की बात है कि प्रवास के लोगों ने बहा लाक्यतराय सदमसास होगरा बोर भगत किंद्र जेदे काहीर कोंगर राष्ट्रवादी रहे श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या श्री अलग्त हत्या का अपराच किया। "रिवार ११ नवस्यर को प्रता १० वर्ष दीशान हाल में दिल्ली आय प्रतिनिधि वभा द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में आयोजित एक श्रद्धावित समा से लोकसभा के सच्यक श्री बलराम जावक ने उक्त उदगार प्रकट करते हुए बागे कहा- खुद आत्या, कम व तपस्या से ही यह चृणित पाप बोबा जा सकेगा। कितने दुक्त को बात है कि रक्षक ही मसक हो गया। ठीक उसी प्रकार सेवे एक बाकूने वाचू के क्षेस से सन्त हरिदास के बाद पर कम्बा कर तिया था।

इस ध्रवसर पर के-प्रीय ऊर्वा मन्त्री थो पी शिवशकर ने श्रीमती इन्दिरा नाघी के प्रदिवीय गुणो व बहावुरी की प्रशसा की । प्रमुख पत्रकार श्री वीवान द्वारका खोसमा ने श्रीमती गाणी को राष्ट्रमाता की स्वत्रा वेते हुए बननी श्रद्धावित वर्णित की । समा म सावदेशिक समा के प्रशान ताना रामगोपाल शासवाले, दीनक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री विनार कुमार मिश्र बायसमात्र कृत्यन विद्वान न्यासी स्वामी सस्यप्रकाश सरस्वती आदि ने दिवता बात्या को श्रद्धावलि प्रस्तुत करते हुए उनके उज्ज्वन व्यक्तिल एव कार्यों से प्रराण लेन का प्राह्मात किया।

### म्राततायियों के विरुद्ध कायवाही हो

अदाजिल सभा से पूर्व दिवनत बारमा की सद्गति के लिए साति यह किया गया। समा में एक अस्ताव स्वीकृत कर घोषित किया गया कि देशी विदेशी गाजाज्यवारी, अलगावचारी ताकतो के सक प्रहार से मारतीय राष्ट्र की वनता की साकासायों की अतीक सीमती इदिया गांधी की स्वामायक हर्या के मारत की स्वर्तज्ञता एकता स्वष्टवता भीर अभु-सत्ता की स्वाम के स्वर्तज्ञता एकता स्वष्टवता भीर अभु-सत्ता की स्वाम के स्वाम के स्वर्तज्ञता एकता स्वष्टवता भीर अभु-सत्ता की स्वाम के स्वर्तज्ञता एकता स्वष्टवता भीर अभु-सत्ता की स्वाम का स्वर्ता ना स्वर्ता ना

श्रीमती गांधी एक महान बात्मा पी उन्होंने भारत को बन्दार्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानवनक स्थान दिलाने में महत्व-पूर्ण मूमिका निवाही। उनका निवन केवल मारत के लिए हो नहीं बाति है। इस धक्तर पर सम्मान भाग के लिए एक महती सांति है। इस धक्तर पर समी राष्ट्रवादी सन्तियों के सनकी सहादत से सक लेकर राष्ट्र

की अक्षण्डता तथा अभुवत्ता के निए एक जुट होकर प्राणपण से काय करने का सकल्प लेना चाहिए।

इस सभा में उपस्थित धार्यजनो ने दिवगत आत्मा की शांति के लिए प्राथना करते हुए उनके परिवार बनी तथा मानव मात्र को सान्त्वना के लिए प्रमु से प्राचना की ! साथ ही यह प्रण भी किया गया कि श्रीनती गांधी के बताए हए माग पर चलकर सदा राष्ट्र की उन्नति के लिए काय करते रहेगे। आर्यसमाज भी राजीव गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीत्वान के सिए सभी कार्यों को पूरी धनित से पहले की ही भाति करता रहेगा। साथ ही हम सरकार से अपेक्षा करते हैं कि बातता-यियो, उसटा सीवा लिखने बोलने वाले देशी विदेशी समाचार पत्री सामाजिक और वार्मिक कार्यकर्ताको तथा नेताको के विरुद्धन्याय सगत कार्यवाही की आएगी।



कर्वा सन्त्री सी पी० शिवसकर श्रद्धात्रक्ति प्रस्तुत करते हुए। बाएसे लाकसभा वच्यक भी बनराम जाखड मादरस्थिक सभा के प्रधान भी सालवाले कोषाच्यक्त श्री सरवाहा बादि।

#### इन्दिरा जी शताब्दी की सबसे महान महिला

बायसमाज लन्दन के प्रवान प्रो० सत्यदेव एन मार्ग्डाज ने ब्रिटन स्थित भारतीय उच्चायुक्त की माफन मारत के प्रवानमन्त्री श्री राजीव गांधी को सन्दश भेजकर भारत की प्रधानकन्त्री श्रीमती हिन्दरा गांधी पर किए कायरतापूण वातक हमले की तीव मस्सान करते हुए श्रीमती गांधी को देव खानशी की तबसे महान महिला घोषित किया है। बाखा है कि यूच परम्पराओं का पासन करत हुए मारत को समृद्ध शक्तिसाली और इसरे देखों के लिए अनुकरणीय बनाया जाएगा।

### पुलिस अधिकारियों की सराहना

प्रायसमाज दीवान हाल के प्रधान थी सुपदेव ने एक प्रस वक्तव्य म पिछले दये दौरान चादनी चौक मे क्षत्र में स्थानीय जनता की जान माल की सुरक्षा मे स्थानीय पुलिस अधिकारियों की दूरविधता व काव कुमलता का सराहा है फलत यहां के किसी धार्मिक भी स्थान को स्रति नहीं पहुंची।

### श्रद्धाजलि निमित्त हवन भजन-कीर्तन

रविवार ११ नवस्थर को ससद सदस्य एव विश्व सि भी समाज के बन्ध्यक्ष बाचाय भगवान देव के सांनिध्य मे १३ सीथी एस्टेट नई दिल्ली २ मे विदोष श्रद्धाजिल कार्यक्रम बायोजित किया गया। इस बयसर पर विवगत प्रधानम त्री इन्दिरा गांधी की स्मृति में श्रद्धाजलि परक हवन भवन-कीतन किया गया।



निष्टिषद्प् छन्द, धैवत स्वर।

### परमात्मा सब सृष्टि के उत्पादक

त्वमस्य पारे रजसो व्योमन स्वभूत्योजा अवसे धृषत्मन ।

चकुषे भूमि प्रतिमानमोजसोऽप स्व परिभूरेष्या दिवम्।। ऋ० १।५२।१२।। जागरिस सध्य ऋषि , इन्द्र देवता,

शब्दायं — हे परमैपूबमंबन् परमा-त्त्रन् । [स्वम्] बाप [ ग्रस्य ] इस ससार के रिजस पृथिक्यादि सब लोको (तथा) ब्योमन ] आकाश के (भी) पारे पार ग्रमीत् परे ही (अपीर) [स्वभूत्योजा] अपने अनन्त ऐश्वर्यवा परात्रमं से विराजमान हो के [पृपन्मन] दुष्टो के मन को वर्षण सर्वात् तिरस्कार करते हुए [अवसे] (हमारी रक्षा के लिए [परिभू] सब पर वर्तमान और सबको [एषि] प्राप्त हो रहे हो (किञ्च मापने) विोजस विपने बोज मर्यात् धनन्त सामध्यं से [प्रतिमानम्] अवधि सहित ठीक मान से [भूमिम्] भूमि को (क) स्व ] सुब विशेष मध्य सोक, (वा) [दिवस्] परमाकाश सबवा सूर्यादि बुलोक को (तथा) [अप] भन्तरिक्षलोक काजल (इन सबको)

[बायकुथे] बच्छी प्रकार रचा है।। व्याख्या--पृथिवी सूर्व चन्द्रमा तारा गणादि विविध प्रकार के सब लोक लोकान्तरो की ठीक परिमाण से ज्ञान-पूर्वक रचना करने वाला परमात्मा ही है। वह भनन्त है वह इस समस्त सुव्टि के अन्दर और बाहर भी व्यापक हो रहा है। उसका पार कोई नहीं पासकता। बह ग्रनन्त ऐरवर्य वा अनन्त बल वाला भी है

धौर हमारी रक्षा के लिए दुष्टो के मनो को सदा विरस्कार कर रहा है जिससे उन को पाप करते समय भय, शका व लज्जा उत्पन्न होती है और फिर भी यदि हम दृक्ष पाते हैं तो इस लिए कि हम इसके लिए पूर्ण पुरुषार्थनहीं करते हैं अथवा जिन को हम भूनाव द्वारा शासकाध्यक्ष (प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्री बादि) बनाते हें वह ऊ वे बाचार का अथवा बलवान मन बाला नहीं होता और अपने कर्तां व्य का पालन नहीं करता। यदि हम अपनी सहायता स्वय नहीं करेंगे, तो परमात्मा हुमारी सहायता नहीं करेगा।

भावार्थ-परमेश्वर सबसे उत्तम और सब दुक्तों से परे अपने बनन्त ज्ञान वा अनन्त सामर्थ्य से इस समस्त बगत की बदभूत रचना करने वासा है और सर्वत्र व्यापक होकर इन सब लोकासोको की ठीक व्यवस्था भी कर रहा है और सब जीवो को उनके पाप-पूज्यो का फल यथोचित देकर पूर्ण न्यायथीश सिद्ध हो रहा है। ऐसे ही सभेक्ष (प्रवानमन्त्री श्रयवा मुक्यमन्त्री) को भी चाहिए कि ठीक शासन द्वारा प्रजा को सुख देवे अर्थात् कोई चोर-डाक्, हत्यारा, छसी, कपटी, विषयी, जुद्यारी, जाससी अववा विधा-हीन देश मेन रहे और प्रजा की रक्षा पूर्णतया करे।

बी० १०३, नीतिबाग, नई दिल्ली-४६



# धर्मकी दुहाई।

महाभारत के युद्ध का प्रमग है। कौरवो और पाण्डवो की सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध चल रहा था। कौरवो के पहले दो प्रधान सेनापति भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्यं पुद्ध क्षेत्र से विदा हो चके थे। कौरवो की सेनाओं का नेतृत्व योद्धा कर्ण को सौपागयाथा। कर्णने एक सर्पाकार बाण डोरी पर चढाकर फेंका चतुर सारबी श्री कृष्ण ने रथ के घोडो की लगाम सीचकर उन्हें घुटनो के पर बैठा दिया। ग्य नीचा हो गया, पहिए पृथ्वी मे गड गए, कर्णका तीर सिर पर गुजरते हुए उसके मुकुट को गिरा गया, युद्र के नियमों के अनुसार कर्ज को युद्ध बन्द कर देना चाहिए था, परन्तु वह युद्ध करता रहा, श्री कृष्ण ने पहिए को निकाल दिया और अजु न लडता रहा, कुछ ही देर मे अर्जुन के तीर से कर्ण बेहोश हो गया, अर्जुन ने युद्ध बन्द कर दिया।

इतने मे कण के रब का पहिया पृथ्वी मे घस गया, कर्ण ने अर्जन को सग्राम-धर्मकी दुहाई दी तब श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया— 'जब भीमको जहर-भराभोजन दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, जब माता कून्ती समेत पाण्वी का जलान के लिए लाक्षागृह का निर्माण किया गया था, तब तुम्हारा वम कहा गया था, तेरह बरस का बनवास पूर्ण होने पर जब तुम लोगो ने पाण्डवों का राज नहीं लौटाया, तब तुम्हारी धर्म की दहाई कहा गई थी, अकेले बालक अभिमन्यु को छह महारिथयो द्वारा मारते समय तुम्हारा घम कहा गया या अाततायी लोगो द्वारा घम की दुहाई शोभा नहीं देती।" कर्जल डने लगा, उसक बाण से अर्जुन सुन्न हो गया। अवसर पाकर कण गाईए को गढे से निकालने लगा, तब तक अर्जुन सचेत हो गया या, उसने कर्ज के सम्मलने से पहले ही उसकी गर्दन पर निशाना जमा दिया।

### श्रार्यसमाज को ऋाय का एक प्रतिश्रत या ऋधिक क्यों?

-- रामस्वरूप

भारत मे आयसमाज के प्रातीय सग-ठन व विदेश में राष्ट्रीय सगठन प्राथमिक (कम से कम १० सभासद्) आर्यसमाजो से बाय का १० प्रतिशत लिया करते हैं। प्रातीय सगठनो को प्राथमिक खार्यसमाओ से विकायत रहती है कि प्राथमिक सभा-सदो की बाय के बसावा धन्य बाय (किराया बादि) का भाग नहीं मिलता प्राथमिक वार्यसमाजें परेवान हैं कि समासद् उनकी आय का एक प्रतिशत नहीं देना बाहते । बहुत बोडे से ऐसे सभासद्हैं जो स्वेच्छा श्वे एक प्रतिशत या अधिक देते रहते हैं। अभी अधिक बार्यसमाज तो ऐसी ही है जिनके सारे अधिकारी भी १प्र नहीं देते हैं। सभासदी मे जहातक प्रेरणाभरने की बात हैं बह कार्य तो पुरोहित एव यति कर सकते हैं। संगठन या प्राथमिक समाज के अधि-कारी तो व्यवस्था को इस प्रकार से करे कि एक प्र० मिल ही बाए, बरन् इससे मी अधिक ही मिले। प्रावनिक आर्थ-समाज में जो उपस्थिति-पुस्तक हो इसमे निम्न सूचनाए हो-१ सभासद् बनने की विकि, २ नाम । इसके साथ वर्ण-व्यवसाय-विद्या-उपाधि बादि को पैत्रक मान रसे उपनाम नहीं हो। ३ पिता का नाम या पति । अथवा पत्नी । नाम. ४ स्ववशानामः विवाहित स्त्री समा-सद्हैतो उसका वद्य, पति का नही। ४ व्यवसाय। अपनी मेहनत की आय का सावन । ६ पूरा पता । जिसमे चिट्ठी मिले, साथ ही कोई वर पहुचना बाहे तो पहुच सके। ७ स्व अजित आय —

अपने शारीरिक या बौद्धिक श्रम द्वारा प्राप्त बाय तो एक भाग है। यदि मेहनत की कमाई से बचत होती है जो अधिकोष (बैक) मे जमा है तो उसका ब्याज भी। साथ ही धपनी मेहनन से कोई मकान बनाया या बनाए हैं तो उनका

३१ तक सकेतित होती है। अत समासद अपने हस्ताकार जिस दिन आएगा, उस दिन कर देगा। बाय मरने का जो स्थान है उसमें भी सभासद्के हाथ की शिका-वट होनी चाहिए। कोषकार एक प्रतिशत आदिकी रसीद अपने हाथ से बनाऐ। समासद स्वय ही जाय भरेगा तो अपने का अधिक उत्तरदायी मानेगा। आमदनी के लिए जो साना (कालम) हैं उसमे से तीनो स्रोत लिसे जाएगे। हर स्रोत मे जो बाय उस मास विशेष मे होवे वह समान्द्द्वारा लिखी जाए।

विना मेहनत की बाय भी हो जाती हैं। जैसे उपहार। मास या वर्ष मे जो

उपहार मिलते हैं--यदि कुछ, तो उसका भी सकेत हो। पिता या दादा आदि की ओर से मिला धन व उसका ब्याज भी जायबाद व उसका किराया ये तो उप-हार है ही। उसकी पत्नी अभिभावको से किसी प्रसग में उसको कोई वस्तु मिले या धन-सम्पत्ति बादि ये सम उपहार ही हैं। कारण इनकी प्राप्ति से उसकी अपनी मेहनत तो कुछ है नहीं। ससुरास बासी से प्राप्ति बाहे विवाह के समय अववा विवाह के बाद में वह तो सारी उपहार

वार्यसमाज, वेद प्रतिपादित आश्रम पढित को स्वीकार करता है। किसी भी प्रकार का वश्यत वा पैतृक अथवा अस-हीन व्यविकार वेदानुकृत नही हैं। बास्रस जन्द ही बताता है, सब ओर वानी ६ दिशास्त्रों में जो हैं उनके लिए श्रम करना हैं। जल आयं समासद्होने को सार्वक करना है तो पितृबश्च-मातृबश पत्नी के माता-पिताके वशः सा अन्य किसी **से** किसी भी प्रकार का उपहार नहीं लिया जाए ≀ 'उपहार' <del>हे</del> जो मासिक या वार्षिक बाय है उसका एक प्रतिशत ही क्या वह तो पूरी ही वार्यसमाज को दी कारी। उषित है। यदि समासद् कही बन्य सोक कल्याणकारी सस्वाओं का भी सदस्य है तो उपहारको आयमे से उनको भी दे सकता है, परन्तु आयं सभासद् के लिए योग्य तो यही है कि अप रहित-पैतृक विधिकार वादि की बाय स्वय के उपभीग मे नहीं लें। ऐसा होने से वार्यसमाजो की आय तेज गति से बढ जाएगी। एक प्रति-शत स्वथम बाय देने से ही आयंसमाजो को बाय बच्छी मात्रा में बढ सकेगी।

समासदो की बाय का एक प्रतिकत या अधिक ? इस बारे में हर प्राथमिक आर्यसमाज मे परिचर्चा आयोजित की उण्टिचति पिजका में दिनाक १ से जाए। किस किस प्राविमक समाज में किसने सदस्य एक प्रतिशत देगे, कितने अधिक प्रतिशत देंगे। ये आकडे भी एकत्र किए जाए। एक प्रतिशत या अधिक वासी को पदाधिकारी का प्रतिनिधि बनाने मे वरीयता दी जाए। सार्व ब्यार्थसमाज सगठन को योग्य है कि सब बाय पत्रों में यह निबन्ध प्रकाशित कराए । प्रान्तीय-राष्ट्रीय सावदेशिक सभा की जाय बढाने का वातावरण इस रीति से बनेगा।

> स्वाध्याय-सुस, गर्वेष कुटीर, गेदालाल मार्व, वजमेर-३०५००१

### भववान् शांतिप्रव हो ।

क्षोदम् स्रानो मित्र । स्रावरण सानो प्रवत्वयंना। सान इन्त्रो बृहस्पति सानो विष्णुरुरुक्ता। ऋ०१-१०६,

यजु॰ ३६ ६, अपर्व० १९ ६६

मित्र न्वरूप भगवान् हमारे लिए सुबकारी हो, सर्वेश्वं पर परोस्वर सुबदायक हो, न्यायकारी ईश्वर हमारे लिए शांतियव हो, नियामक इन्द्र एव सत्विवेकी बृहस्पति सवा कत्याणकारी विष्णु रूप परमेश्वर हम सबके लिए कत्याणकारी हो।



# शक्तियों के संघर्ष में हमारा दायित्व

सामंत्रपाज सामान्यत प्रत्यक्ष राजनीति में भाग नहीं तेता, परन्तु वह राष्ट्रीय रागम पर घटने वाले हिंदक राष्ट्रिवियों बटनायकों की उपेक्षा भी नहीं कर ककता। पिछने दो-जीन वर्षों के देश के परिवर्मानार अंत्र में निवर प्रकार के हिंदक राष्ट्रिवियों में सलागवार्यों कर स्वार राष्ट्रिवियों में सलागवार्यों कर सकटशरत हो उठा वा, उठे निवरूत्रण के सित्य प्रवाद के निवरूत्रण के स्वार प्रवाद में केन्द्रीय सरकार को भातकवारियों के अमृतवार स्थित गढ का निवरूत्रण करने के सिए विनिक कार्यवाही के सर प्रवेच में स्वित्य कुछ निवरूत्रण हुई थी कि देश करनावार में स्वार प्रवेच में स्वत्य हुई थी कि देश करनावार के स्वार प्रवेच में स्वत्य करनावार के स्वत्य प्रवाद में स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनावार करनावार करनावार के स्वत्य करनावार करनाव

वेख में बावन चाहें कियी भी दल का हो, परन्तु प्रत्येक राष्ट्रवादी को कुछ मीलिक वृतिवादी विषयों में स्पष्ट नीति घर्गीकार करनी चाहिए। बाधुनिक प्रजातन्त्री राष्ट्रों के कि तर हुसे यह घर्गीकार करना चाहिए कि देश उन्नति कैसे करे, वह किस प्रकार को रीति-नीति माशाकर करे, वह किस प्रकार को रीति-नीति माशाकर करे, वह किस प्रकार का रीति कर के बावजूद राष्ट्र को बातरिक कव्यवस्था एव बाद्य प्राप्तक्रणों हे सुर-क्षित करने के शिव किसी प्रकार का मतायेद नहीं होना चाहिए। गण्यवाँ के राषा चित्रर बद्धारा करेद वह के के तेताओं को गिरण्दार करने पर युधिष्ठिर द्धारा वपने माइयों को दी हुई सीख हमारे लिए बाज भी मागदर्यक हो सकती। युधिष्ठर ने अपने माइयों को परापर्यों दिया था—कीरन मी हैं बौर हम माई पाच। हमारे बाएसी विवाद वा मनभेद हो सकते हैं, उन्हें सुक्तमाने के लिए हमें यन्तवीत होना चाहिए। परन्तु विद हमारे विवद कोई बाहरी यक्ति जाए तो हमें मिलकर एक तो पाच के क्या वहार करना चाहिए। बाज हमारे राजनीतिक नेना स्वस्थ प्रजातन्त्र को हस भीक को मानकर राष्ट्रीय व्यवहार में कार्य के रीत बनेक समस्याए मुक्तम सकती है। को मानकर राष्ट्रीय व्यवहार में कार्य करें तो बनेक समस्याए मुक्तम सकती है।

दानी के साब हुमे यह भी स्मरण रखना होगा कि मारत की स्वतन्त्रता देख की केन्द्रीय सत्ता के दिवंच होने से सनेक बार खनने में पड़ी है। जब-जब केन्द्र कमजोर हुबा, देश बट गया जीर जिसेशी यहां प्रमुख स्थापित करने में सकत हुए। इसी के साथ हुम यह भी नहीं मूल सकते कि हमारे देश में अगवन्त, जीर मीरवाकर जीर दूशरे गहार पत्मागी सदा रहे हैं, जिनके बोबे से देश का परायक सामाग करना पड़ा। देश की प्रमानमनी की नृत्य पहुंचा निकेश हारा लाखों विदेखी मुद्रा को चूस देश की प्रमानमनी की नृत्य पहुंचा निकेश हारा लाखों विदेखी मुद्रा को चूस देश के करणा ही सम्मय हुई। स्थाप्त हैं है। देश अर से —कम से कम जायकारी जीर नितकता गही है जो दूसरे देशों में है। देश अर से —कम से कम जायकारों जीर नितकता एवं चिरक के अमायदाय में से नितकता एवं चिरक के अमायदाय में देश जीर अर से —कम से कम जायकारों में नितकता एवं चिरक के अमायदाय में देशी में है। देश अर से —कम से कम जायकारों में में हिए सकता है। मारत से देशी वासुरी स्थापनी के साथ की पढ़ी से हुक सहस्त कर सकती है। साथत से दी सावता से सिंत सक्षेत्र पढ़ की सावता से सावता स



# - त्रार्यसमाज सगठन त्रौर पौरोहित्य ऋधिष्ठाता

सावदेशिक-राष्ट्रीय-प्रदेशों की आर्थ प्रनिनिधि सभाओं में बेदप्रचार अधिराज्ञ हुंबा करता है। डोक ऐसे ही पौरोहित्य अधिकाता में हुर स्तर पर हो। सावदेशिक का पौरोहित्य अधिकाता मुंचनाए प्राप्तकर्ता रह, पाष्ट्रीय पौरोहित्य अधिकाता है। उनका मार्गदर्शन की करता रहे। इसे प्रकार के राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिकाता प्रदेश पौरो अधि में कि स्तर पर असे पौरो अधि हो है दे हैं हुर प्राथमिक आपस्थान म पुरोहित हो। सबकी विविध (शारीनिक-आस्थिक-सामा-जिक) उन्नति करने की समता उत्पन्न करना भी एक काय है पौरो अधि का। जिला पौरो अधि के साथ प्रव्या कि नगरपालिका) स्तर पर पौरो अधि बन सके तो बहुत बच्छा। बन्यया तह तक जिला पौरो अधि प्राप्तिक आयस्याओं का क्षेत्र पृत्रा क्षेत्र साथ प्रवास के साथसाओं का अधि प्राप्तिक अपस्था की साथसाओं का अधि प्राप्तिक अपस्था की साथसाओं साथसाओं का अधि प्राप्तिक अपस्था की साथसाओं साथ

जार्यसमाज मजन से जो पुरोहित सक जार्य समासदों की परिवार (यत्ती-स्तानों) गोग्डी कराके ही नियमित रूप से। जावस्वकतानुसार आय पत्ती, आय पुत्र (वा पुत्री) इत इनकी गोष्टिया भी कराई जाए। जातमः जात्र ना प्रदेश परिवार की सिम-तित गोष्टियों के अतिरिक्त पुरोहित हर समासद के परिवार में जाया कर । बहा सबकी सम्मित्तत तथा व्यक्तिगत चर्चाजों के माध्यम से पारिवारिक स्वास्थ्यवद्धंक करें। ताकि समायद के परिवार जानों में परस्पर मित्रता-मुराता बढ़ती रहे, और ये परस्पर व्यक्ति विकास करते रहे। यह कार्य इतना प्रभावधानी हो सकता है कि जो आयं समायद नहीं से भी आय पुरोहित को चुनोन सर्गे। पुरोहित हर समायद की सबानों का पुरा विवरण भी रसे तिवरण पुरोहित को पुरा (वा पुत्री) के विवाह सम्बन्धी माग दर्शन कर सके। कार्य का विवरण पुरोहित को अंग्रे, सक्कण (मा जिला) पीरी. जांव को। रेही हो प्रवेश-राष्ट्रवावदेषिक शौरों अबि को विवरण जांगे। यदि कोई समा तैयार हो। तो उस स्वेन के पुरोहितों को प्रशिक्षत कार्य जा मकता है।

--- रामस्वरूप द्वारा स्वास्थ्य-सुल, गणेश कुटीर, गेदालाल माग, वजमेर-३०५००१

### "महाकवि रवीन्त्रनाथ ठाकुर भौर इतिहास खिन्तन"

शिवाजी के प्रथल से समुचे देश में एक सस्वामी उत्साह फील गया और हमने समफ दिया कि देश सगिठत हो गया। परन्तु समुचे समाज कभी सारीर में पड़ी हुई दरार कीर खित्र मुल कभ से काय किया करते हैं। उनके कारण हम किसी उच्च काश्य को चिरकाल तक बनाए नहीं एक सकते । शिवाजी ने इन दरारों को बंधी की बनी बनाए सहना चाहा। बहु मुनलों के बाक्ष्मण से एक ऐसे हिन्दू समाज की रक्षा करना चाहता था, तो जानिभेद के विभाजन और असमाज की हो जीवन का स्वाम समस्ता है। वह विचमता से भरे हुए नगा-वमुनी समाज को समूचे भारत का विवेदा बनावा चाहता था, इसलिए मानी बहु बाजू को दीवार बड़ी कर रहा था। वह असम्भव को सम्भव बनाने वा रहा था। जाति पात से बुरी तरह दवे हुए भीतर से फटे और सिक्सरे हुए हिन्दू समाज का भारत जैसे विशास महाद्वीप पर स्वराभ्य स्वर्णित करना मनुष्य की शक्ति से बाहर और निवान के विच्छ है। (शिवाजी एवड हिज टाइस्ज, एक-भीव)

प्रोपक प्राथमेन्द्र घीत्रा, ओकार कुज, खारीबाब रोड, बडोदरा ३६०००१

### स्वामी दयानन्द धौर महात्मा गांधी

दि ७ सक्तुबर के आयमदेश में डा कमन किशोर गोयनका ने उपशुक्त शोपक लेका के कमनीत महास्या गांधी के स्वामी रयामन्द एव आवेदमान विषयक विचारों की मुन्द विवेचना की है। यहा यह स्मरणीय है कि २६ मई १६९४ में 'यन इण्डिया' में महास्याभी ने सत्यार्थप्रकाश को एक निरावाजनक पुत्तक तथा स्वामी दयानन्द को सहिष्णु, अनुदार तथा हिन्दू यम को सकीण बनाने वाला आदि लिखा था। कालान्तर में दिस्सी के लाला मानवर ने नत्यानियों सीर्थक पुत्तक तक्कर महास्याभी की इन आपत्तियों का उत्तर दिया था। यह प्रथ १६३ ई से प्रकाशित हुया था। इसका उद्ग सक्कर कहार हिन्दू की सकरण बनारी हुया था। इसका उद्ग सक्कर बहारे हकीकत शीर्यक से प्रकाशित हुया।

डा भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़

# दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

हुवारो पर्यटक प्रतिमास भारत से याईलंड कीर विगापुर वाते हैं। उनमें से व्राप्त कर वाते हैं। उनमें से के कुछ पूर्व दिया में और भाने बढकर हाग-काग तक वले जाते हैं और कुछ जापान तक। पयटकों के लिए ये दश विशेष जाक-रंग रकते हैं। तिगापुर कोर हागकाग करन्म भी (आसात कर से मुक्त) नगर हैं। वहां टेलीविजन, घडिया, उन्ती वस्त्र जीर वीडियो जादि सस्ते मुल्य पर प्राप्त किए जा सकते हैं। जाधुनिक, भीविक कम्पना का उल्कर्ष जापान में देवने को मिलता हैं। और हागकाग तथा पटाया (वाईलेड की एक नगरों) विलाशिता के प्रविद्ध केन्द्र है। तथा वस्त्र को जाप वर्ष को अपिय देवने को सा आपकर हो हो। सब की ओर पटीक है। आ जाविब को पत्र वर्ष को नगरी हो। आप हा सा वादित के हैं। सब की ओर पटीक हो। सब की ओर पटीक है। आ आपकर हो। सब का वाप परीक है।

पर सिंगापूर के दक्षिण-पूर्व में इण्डो-नेशिया के जो बीप हैं, उनकी ओर भारत के पर्यटको का अभी ध्यान नही गया। प्रकृति की रमणीयता तथा आयुनिक सुस-साधनों की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। बाली द्वीप मे अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप में लाको पयटक भ्रमण के लिए आते है। और दक्षिण-पूर्वी एशिया म एक पर्यटन केन्द्र के रूप में उसकी वडी स्थाति है. पर भारत से कोई भी पर्यटक या यात्री वहा नहीं जाते । यह बात इस कारण और भी अधिक आस्चर्यकी है, क्यों कि बाली द्वीप के ६५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धम के अनुयायी हैं, और धम तथा सस्कृति की वृष्टिसे भारत के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। केदल बाली में ही नहीं, श्रपितु इण्डोनेशिया के जावा व सम्बक बादि द्वीपो मे भी लाख्तो हिन्दुओ का का निवास है, अपरिये द्वीप सास्कृतिक दृष्टि से अब तक भी भारत से प्रभावित है। सोलहबी सदी के प्रारम्भ तक इण्डानाशया के प्राय सभी द्वीपों में हिन्दू वम का प्रचार था और वहा के राजा हिन्दू घम के अनु-यायी थे। उस समय तक दक्षिण पूर्वी एशियाका यह क्षेत्र बृहत्तर भारत का ही भंग या। पिछली चारसदियों में इण्डो-नेशिया के बहुसस्यक निवासी को इस्लाम को अपना चुके हैं पर अपनी प्राचीन सास्कृतिक परम्परात्री का उन्होन परि-त्याग नही किया है। वहा की भाषा, कला, रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोर्रजन बादि सब पर भारत का पूरा-पूरा प्रभाव बाज भी विश्वमान है। हिन्दू धर्म का अभी वहा लोप नहीं हुआ है। इण्डोनेशिया के जो लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, उनकी सस्या अस्सी लाख व लगभग हैं, जिनमें से पच्चीस लाख के लग्भग बाली द्वीप मे निवास करते है, और दस लाख के लगभग सम्बक्दीप में । इण्डानशिया के ये हिन्दू भीजी, मारीश्य के सुिन स और केनीया आदि हिन्दुओं के समान गत सी बेड सी वर्षों में वहा जाकर नहीं बसे हैं। भारतीय हिन्दुओं के समान वे भी हजारो वर्षों से हिन्दू धर्म का अनुकरण कर रहे हैं। बाली द्वीप तो सध्वे अभौ में हिन्दू प्रदेश या बार्य राज्य है। कोई-कोई मारतीय हिंदू पिछली सदी मे वहा अवस्य गए हैं, और वहा के भी कोई-कोई विद्यार्थी साति निके-तन व हिन्दू विश्वविद्यालय सस्वास्त्रों मे किसा के लिए आए हैं, पर सुदूर दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन लाखी हिन्दुको के साथ भारत का सम्बन्ध नाम मात्र का ही रहा है। गृप्तवस के काल (चौथी-छठी सदी) के परचात विद्वानों व पण्डितों की कोई भी मण्डली इस क्षेत्र मे नहीं नई, जिसके कारण इण्डोनेशिया के हिन्दू वर्न का भारत के हिन्दू धर्म के साथ सम्पर्क नही रह गया, और मध्यकाल मे भारत मे जिस मनित बादोलन का प्रादुर्माव हुआ, और कृष्ण ने विष्णुके अवतार के रूप मे जो महत्त्वपूर्ण स्थान इस देख के हिंदू अर्म मे प्राप्त कर सिया, इण्डोनेशिया के हिन्द उससे अपरिचित रहे।

यह प्रसन्नता की बात है, कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पक स्थापित करने की ओर कतिपय महानुभावों का घ्यान गया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू पर्यटको की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा के लिए गई और वाई-लैण्ड तथा सिंगापुर के साथ-साथ वह जावा ओर बाली द्वीपो में भी गई। इस मण्डली में बीस नर-नारी थे, जो समी सुशिक्षित एव उदबुद्ध वर्गकेथे। पराप-कारिणी सभा के प्रदान स्वामी बोमानन्द सरस्वती (अपन दा उच्च चिक्ति शिष्यो तथाएक शिष्याके साथ), चित्रकला के अल्लानिस्य विशाप्तः कराकारश्री बेन्द्रे, धमस्यल कर्नाटक के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आल्बा, विश्व हिन्दू परि-षद् के प्रचार-मन्त्री शादतात्रेय तिवारी, आर्य वानप्रस्य आश्रम हरिद्वार के डा० मेहता, लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० शाति देवबाला, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा कमला प्रधान श्रीमती रिक्मणी देवी, श्री रामाज्ञाठाकुर बादि कितने ही सम्भ्रात एव सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा-मण्डली सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा से साथ गया था। यात्राकी सब व्यवस्था ट्रेंबल ट्रस्ट (बी, २४ निजामुद्दीन ईस्ट,) नई दिल्ली द्वारा की गई थी, और इस कम्पनी की ओर से यात्रा का प्रवन्ध श्रीमती ऊषा त्रिसा के हाथों में था। इण्डो-नेशिया की बात्रा पर गई इस प्यटक-मण्डली को सचने बनों मे भारतीय हिंदुको का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। तीन दिन बैंगकाक तथा पटाया का परिश्रमण — डा∘ सत्यकेतु विद्यालकार

कर २५ सितम्बर, १६६४ की रात के नी बजे हम जकार्ता पहुचे । जकार्ता जाना का सबसे बढ़ा नगर है, भीर इण्डोनेशिया की राजधानी है। उसकी बनसस्या ७५ लाइस से भी अधिक है। शान शीकत और सास्कृतिक पैमाने मे वह किसी भी आधु-निक नगर से पीछे नहीं है। अकार्ताकी भूमि पर पैर रकाते ही मुक्ते राजा पूणवर्मा का ब्यान जाया, जो छठी सदी मे इस प्रदेश का शासक या। उस समय इस नगरी का नाम अकार्तान होकर तारूम वा। राजा पूण वर्माने वहाएक नहर कानिर्माण करायादा, असिका नाम ग'मती वा। चन्द्रभागा नहर बहा पहले है विद्यमान वी, जिसे पूर्णवर्मा के पिता शवाधिराज ने बनवायाया। गोमती नहर के निर्भाण के पुरा हो जाने पर राजा पूण वर्माने एक हजार गौर्वे बाह्यणो को दक्षिणा से प्रदान की थी। मैं तारूम नगरी के प्राचीन शिला लेक्बो के स्मरण में मन्न आर्थ। नमस्ते शब्द सुनकर मेरा ध्यान भग हुआ। सामन देखा, तो इण्डोनेकियाकी पालियामेट के हिन्दू सदस्य श्री पुष्पात्मज हमारा स्वागत करने के सिए खड़े थे। भारत से आए इतने विद्वानो को अपने देश में देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की, और अगले दिन का कायकम निर्घारित कर हम अपने होटल मे चले गए। जकार्ता मे इसने बहुत कुछ देखा, पर ६५ एकड के विस्तृत क्षेत्र मे निर्मित लघु इण्डोनेशिया ने हमे विशेष रूप से आकृष्ट किया। इण्डोनेशिया का निर्माण बहुत से छोटे बडे द्वीपो से मिसकर हुआ है। इनके निवासियों की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन तथा सान-पान बादि में बहुत अन्तर है। लगुइण्डानशिया मे विविध द्वीपो की संस्कृति को संजीव रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बासो, सुमात्रा, कलिमन्यन (बोनिया) आदि सभी द्वीपा के लिए उसी शैली के अवन बनाए गए हैं। और उसी प्रकार के भोजन आदि की वहा व्यवस्थाकी गई है, जैसे कि उन द्वीपो मे यथायँ पाए जाते हैं। उनके प्राक्त-तिक दृश्यभी वास्तविकताके बनुरूप हैं। मिनी इण्डोनेशिया का अवलोकन कर सारे देश का यथार्थ आ ला के सामने स्पट हो

लबु इ होने विधा के समीप ही एक मन्य हिन्दू मन्दिर है। इस मुद्द वेश के हिन्दू किस बग से दैनिक प्रापंता-वयासना करते हैं, इसे देशने का व्यवसर दुसे इस मन्दिर में जाकर प्राप्त हुवा। साथ काल का समय था। जाठ से अधिक नर-नारी बहा उपस्थित थे। मन्दिर के प्राप्य में एक कले चनूनरे पर सब बेंटे हुए थे। इस भी एक कोर बैठ गए प्रापंता-उपा- सनाप्रारम्भ हुई। बोरम् भूमृंव स्व के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रो का उच्चारण प्रारम्भ हुवा । सब उपस्थित नर-नारियों ने समवेत स्वर में वेद के मन्त्री तथा महाभारत बादि के दलोकी से प्रार्थना-उपासना की। जकात्ती के हिन्दुओं की सध्या के बाद हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सन्ध्या तथा प्रार्थना मन्त्री का पाठ किया । कैसा अद्भुतद्श्य था । हम इन्होनेशिया की भाषा नहीं समऋते थे। और वहा के लोग हिन्दी के अनिभिक्त के पर हमे परस्पर जोडने वाली हम सब मे एकात्मकता की भावना उत्पन्न करने बाली वेद शास्त्रों की वे धार्मिक एव सास्कृतिक परम्पराष्ट्र बी, जिन्हे हुमने समान रूप से विरासत मे प्राप्त किया षा। बो३म के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूत्रो व महाभारत के इलोको ने हमें इस दग से एक मजबूत सूत्र में बाध रसामा, किसैकडो वर्षनीत जाने पर भी उसके सुदुढ बधन मे ढील नही आई थी। भी पुण्यात्मज इस अवसर पर हमारे साम में। वह भी अपने देख के हिन्दुः, } के पूजा पाठ में अन्य पण्डितों के समान ही भाग ले रहे थे। पार्लियामेट के सदस्य होने के नाते उनमे उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भुत नहीं हुई थी। हमारे स्वागत मे जकार्ता के हिन्दू मन्दिर मे जसपान की भी व्यवस्था की गई थी। हमने इन्होनेशिया के हिन्दू भाइयी के साथ बैठकर फल, मिष्ठान्न, चाय, दुख बादि प्रहण किए । सब कोई यह अनुभव कर रहे थे, कि दो सुदूरवर्ती देशों के हिंदू सैंकड़ो वर्षों के परचात् आज फिर मिल कर एक साथ बैठे हैं। अर्म और सस्कृति की उनमे ऐसी एकात्मता है, जिसे न हजारो मीलो की दूरी शिथिल कर सकी है और न सैकड़ो वर्षों का अन्तराल।

दो दिन जकार्ताका परिश्रमण कर हम लोग जकार्ता गए। यह मध्य जावा का प्रधान नगर है। बोरोबदूर का विद्याल बौद्ध महाचैत्य उसके समीप ही है। उस की गिनती ससार के शांत आवश्यों मे की जाती है, जिसे देखने के लिए अमेरिन यूरोप, जापान बादि सब देशों से लासी प्रतिवर्षं लोग अकार्ता आते हैं। इन्डो-नेश्वियाका एक बन्य द्वीपसुमात्राहै। जिसके सैलेन्द्र वर्मा राजा बौद्ध धर्म के जनुवायी थे। इनकी राजधानी श्रीविजय थी। शैलेन्द्र राजा वडे प्रतापी थे। अपनी शक्तिका विस्तार करते हुए बाठवी सदी मे उन्होने जावा को भी जीत लिया या। श्रीविषय (मुमात्रा) के इस वैभवशासी बौद्ध सम्राटो ने ही जावा मे जोगजकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। महाधैत्य नौ विशाल चब्तरोया चनकरोसे मिलकर बना है,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

# श्रस्तेय-चोरी न करना

—सुरेश**चन्द्र वेदालकार** एम ए एल टी

'अस्तेय'न होने से लाखो रूपए का नुकसान सरकार को और दूसरे शब्दो मे जनता का हो रहा है। एक घटना सुनिए।

रेलवे कर्मचारियों को रेल में बिना टिकट चलने का अधिकार सरकार ने विया है या नहीं। पर उन्होंने स्वय ले लिया है। इसके लिए उन्हे एक मत सीसना पडता है। मत्र बतलाने से पर्व एक बटना सुनाक ? मैं एक बार देवरिया से गोरसपर वा रहा था। मेरे पास टिकट भी था। मैं बिना टिकट यात्रा करना अपने प्रति, जनता के प्रति और राष्ट्र के प्रति अपराध मानता ह। बहुत यात्रा भी नहीं करता, परन्त बहा मैं रेल में बैठा वा, वही मुक्छो दाई जोर तीन अप ट्रदेट सज्जन भी बैठे थे। बाते वे कुछ हिन्दी जौर कुछ अग्रेजी मे कर रहे थे। शायद रेलवे मे कुछ अच्छे क्लक थे। टिकटचैकर ने एक व्यक्तिको टिकट न होने के लिए दण्डित करने की घमकी दी और कुछ ले देकर बिना रसीद के उसे छोडा और वह बागे बढा और उन सज्बनो से भी टिकट मागा। उन्होने एक मन्त्र पढा। मन्त्र था 'स्टाफ'। अर्थात टिकट मागने पर स्टाफ शब्द उच्चारण किया। टिकट चैकर आगे बढा। दूसरे ने भी कहा स्टाफ'। बह तीसरे के पास पहुचा वह भी बोला **'स्टाफ । उसके बाद 🐔 था। मेरे पास** टिकट तो बापर मैंने भी साचा कि 'स्टाफ' शब्द की शक्ति का परिचय प्राप्त करू अत टिकट मागने पर बडी गम्भी-रता से बोला 'स्टाफ'। बाप विश्वास की जिए, वह मुक्ते भी छोड कर आगे बढ

गेट से बाहर बाते हुए भी मैंने उन लोगों के माग का मनुसरण किया। जब मैं बहा भी स्टाफ कहने से बिना टिकट दिखाए बाहर जाने कारा तो उनसे स्वाप्त सिमाय समभ्तेन के विचार से अपना टिकट लीटाया बीर उन्हें उनका कर्त्तव्य सुभाया। पर भेरी कीन सुनता है?

जावीयता के नाम पर चुनाव लड़ने बाले, मुखलमालो और हिल्डुको को बामिक सावनाओ को उमार कर एम एक ए बनने वाले राजनीतिक नेता, महा-राष्ट्र, सहम, पजाब, बगाल राजस्थान को मारकर सम्पन्न होने बाले दूसरे प्रान्तीय सज्जन चोरो की गिनती से बाएगे। इसी प्रकार हिल्सीमाधियों को हटाकर भयेजों के हिमायती लोग ऊसी नोकरिया पाने पर स्नववृत्ति बाले नहीं माने जाएगे ? किमानों को मजदूर बना कर, रात-दिन गुलामों को मादूर बना कर्ट देकर उनके हारा दैशा किए मुस्त के बनाव से सपने कोठे सरकर धनवान बनने

वाला जमीदार चीर है। मजदूरी से दस-दस घटे तक बैसो भी तरह काम करवा कर उन्हे पेट भर भोजन न देने वाला. उनके रहने की ठीक व्यवस्थान करने बाला, उनके बाल बच्चो की चिन्ता न रखने वाला और इस प्रकार घनी बनने वाला कारलानेदार चोर है। ग्रध्यापको से विद्यालय मे ६-६ वटा पढवाने वाला, उन्हे पार-पार मास तक बेतन न देने वाला, बेतन कम देकर अधिक पर हस्ता-क्षर करवाने वाला स्वय जाली हिसाब रसने वाला विश्वालय का प्रबन्धक और प्रमानामार्थक्या चोर की श्रेणी से न वाएमे ? इनका कार्य अन्याय और अधर्म पर बाधारित है। किसानो पर चाहे उनके यहा बनाज हुआ हो, यान हुआ हो, मनमानी ब्याज की दर लगाने वाला, उनके जनाज को जब्त करवा कर उसके धर-बार को नष्ट करवा देने वाला, बाल-बच्चो को ग्रनाज का मोहताज बना देने बाला, स्वय मौज उडाने वाला, हृदयहीन कृपण, साहकार अधम का स्तेय का अध-शास्त्र चला रहा है। ये सभी चोर हैं। हमे समाज में इन कार्यों के प्रति चूणा के भाव भरने होगे ? परन्तु, साथ ही हम बुराई से घुणा करने वाले हो, बुरे से नही यह भी ध्यान देने बोग्य बात है।

बडी बडी खुटियों के अवसर पर रेलवे कम्मनिया जोनल टिकट चालू करती हैं, उन पर सोगों के नाम और उम्म दक रहती हैं पर बहुत से घनी और राष्ट्रीय कार्यकर्ता दूसरों के टिकटों का प्रयोग करते हैं और इसे अनुभित नहीं सममने।

क वहरी के जनके या पेशकार से बापको मेट हुई हो बार हाण उठा कर लोगो को नवेल करते हुए बापू के चिन को दिखाकर उगके नीचे लिखे सन्दी पूध तेना बीर देना पाप हैं की बोर मकेत किया हो तो धापको नह व्यक्ति जरा पुरुकराते हुए बार निजा नह पास्ति करा के साथ यही कहता मिनेगा, 'माई, बाप बानते नहीं, इचका बया मतलब हैं? देखते नहीं राष्ट्रपंता बापू हाथ उठाकर स्पष्ट क्य मे अपनी अपुलियों से इखारा कर रहे हैं कि प्रश्ने जो के समय वो स्वा स्पर्य की देखिणा या बुस की जाती थी बहु तेना-पाप उनके उसके स्थान पर पाच स्वस् केने चाहिए।

इस प्रकार उचित या अनुचित उपायो का अवस्थन करके मनुष्य धन कटोरने न तमा है। अभी आपने देश के बढे से बढ़े बनस्पति ज्यापारियों के गाय की नहीं वनस्पति में मिलाने की कथा सुनी ही है और उससे गाय को माता आनने वाले तपाकियत बहिसक सोम हैं। इस सेंच समाकर चौरी करने वालों को चूमा की

अभी १०-१५ वच पूर्वकी बात है। मेरी धर्मपत्नी के कान के पास दद प्रारम हुआ। मैंने एक बाक्टर को दिखाया। यद्यपि वह कणरोग विशेषज्ञ नहीं थे परन्तु कान देखने के बाद नाक भी चढाते हुए तथा कुछ जिल्लाब्यक्त करते हुए बोले, वेदालकार जी जानते हैं, कान का पर्दा एफैक्टेड है। एफेक्टेड शब्द सुनते ही मैंने उन्हें अच्छी दवा देने को कहा। उन्हों ने ऐसी दवा डाली कि बभी तक दर्द कान और गाल के बीच में या बब वह कान के बन्दर भी होने लगा और वह छटपटान लगी। मैंने कहाडाक्टर अच्छे हैं दवा लगती है तो मबराती क्यो हो ? अब तो ५) सर्चमी हो चुके है। परन्तु उस दवा को दुवाराडल वाने को वह किसी तरह तैयार नहीं हुई और रात भर छटपटाती रही। अच्छाही हुआ।, वह दवा पहली रहती तो बवस्य ही उनका कान का पर्दा जाता रहता।

अब मैं दूसरे डाक्टर के पास पहुचा। उन्होने कान देखकर जरा गम्भीरता से कहा कि कान में छेद हा गया है। आप यह दवा डालिए और लाल,पीली नीली. हरी पवासी गोलिया एक के बाद इसरी बाने को दी और १०) प्रतिदिन का नुस्खा तैयार हो गया। दिन ४-५ विकित्सा के बाद हालत वैसी की वैसी रही तो मेने उन्हे एक प्रसिद्ध डाक्टर के पास भेजा। उन्होन उसका कान साफ किया और कुछ दवाए में साने लिए बौर एक-दो इजैन्शन देकर कहा, 'मास्टर साहब, अब बस समस्टिए। पन्द्रह रुपए प्रतिदिन के हिसाव से ४-५ दिन चिकित्सा के बाद भी कोई लाभ न होने पर मैंने अपने पुत्र के साथ दूसरे प्रसिद्ध बाक्टर के यहा भेजा । उन्होंने तो गजवकरदिया। वहजब मेरेपुत्र के साव लौटी तो उनके सिर के चारा अगेर प्लास्टर चढा हुआ या और वे एक कमाडर सी दीक्ष रही थी घर अपने ही मैंने उन्हे सैल्युट मारा अपेर कहा 'अब ठीक है।'

वह जरा उद्धिन-सी दीक्ष रही थी। परेक्षान होकर सगले दिन वह पट्टी उतार कर फेक दी बीर दर्द बरा भी कम न हुआ। अब मैंने कण रोग विशेषज्ञारकारी बस्पताल के डाक्टर की खेबा में उपस्थित होकर अपनी गाया गाई। उन्होंने कान देख कर विक्ता अ्पक्त करते हुए बड़े भें म से घर काने की सलाह दी। मैंने सोचा कि डाक्टर मरीजों से सहानुभूति रखता है बीर घर आने की स्वीकृति उन्हें दी तो तत्काल उन्होंने कहा बैसे घर पर देखने की मेरी कीम दस दप्प है पर आप अध्या-पक हैं बत आप से बाठ लूगा। नेते साइएगा।

अभी उनसे निवट कर मैं घिल्ता से मेड्बाहुआ। वर आ रहा वाकि एक दुकान पर बैठे डाक्टर को देखा। उन्होंने मरीज को देखा-अच्छी तरह देखा आखिर वे परिचित डाक्टर थे। मोडी वेर बाद अत्तन्त गम्भीर और चिन्तित मुद्रा में कहा वेदालकार जी, यह कान का दर्द नही, यह उपद्रव दात दर्द का है, और यह सावारण दात का ददं नहीं बल्कि मेरा स्याल है कि यह कैसर है। कसर? कैंसर मुनते ही मेरा दिमाग विगडा। कैसर – ठीक हो या न हो, यदि मुक्के विकित्सा करानी पड़ी तो कहा से बाएगा पैमा<sup>?</sup> अब मैंने दात के कैसर को दिखाने के लिए दात के डाक्टर की शरण ली। उनका आयसमाज से प्रेम था— समया-माव से आते तो कम थे पर उनका परि-बार महिला बायसमाज मे आता रहता था । उन्होने कहा 'शास्त्री जी सब डाक्टर कुछ नही जानते। याद रखिए कान का दर्द यहा नहीं होगा यहा तो दात का दर्द होगा और दो तीन दिन दवा देने के बाद उन्होने दात उक्साड दिया और अब वह कैंसर गायत्र हो गया, कान ठीक हो गया. विटामिन की कमी पूरी हो गई। आज भी जब डाक्टरा की याद बाती है तो हृदय काप उठना है।

२०-२२ दिन मे पूरे ४००-४५० रुपए डाक्टरा की सेवामे गए। उनके भव्य प्रासादों के निर्माण में काम आए। नया डाक्टर और वकील, बच्चापक और उपदेष्टा यजमान और पुरोहित राष्ट्रो-द्वार के लिए अस्तेय वृत्ति अपनाने का प्रयत्न करेगे। महाराज शिवाजी न सन्त तुकाराम के लिए पालकी, मदाले, बोडे और सवारिया भेजी। उन्हे देखकर तुका-राम ने कहा 'भगवन् ये बोडे ये पालकिया ये छत्र चामर सब किस लिए है ?' तुका-राम तो सेवा के लिए सेवा चाहते थ, उन्ह मोक्षफन भी नहीं चाहिए था। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा मोक्ष के स्थान पर दुक्षीजनताकी सेवा पुनजन्म लेकर चाहता हू। यह है अस्तय वृत्ति।

आप विदक्त सस्कृति का दृष्टिकोण देखिए पैना एक साधन है साय नहीं, रास्ता है मजिल नहीं। यही अस्तेय बत है।

१७५, जाफरा बाजार गोरखपुर



# आर्यसमाज पानीपत की सफल शताब्दी

त्रनेक त्रनकर **णीय यञ्च एव ग्रन्थ-प्रका**शन

भागसमाज (बडा बाजार) पानीपत को स्थापित हुए सी वव हो चुके हैं आव समाज (बडा बाजार) पानीपत का शताब्दी समारोह बडी पूम्यम के साथ सम्पन्न हुआ।

रिवरार १४ १० ६४ का बहु दस्य मध्य था अबिक आध्यसमाज के सम्मूष भारत के उच्चत्तरीय विद्वानों को जिहोंने अपना जीवन वैदिक साहित्य के अवगाहर में फोर्क निया सम्मान्ति किया गया। जन समाज में विद्याल मुख्य पर बैठ विद्वानों को अब्दा से कल मालाओं के साब स्वागत किया प्रस्थेक को १४०० रुपए व खाल दो पुस्तकें प्रयस्ति पत्र तथा जाने जाने का माग व्यय दिया। प्रस्मानितों से एक बी अमर खहाँव भी रामप्रसाद विस्मित की बहुत श्रीमती हाश्मी देवी जी।

समारोह के बायोबकों ने जाम जनता को जानकारों के निष् जायगण दि (नग्र्सिप्) तथा पौणनाशिष्ट प्रकों को कराने की व्यवस्था को इस बजों को कराने के लिए दिल्ला के देवान भी रानाय कुला समुक्त बावजेयों को महाराप्ट के भी जानहानी रामानुत ताताचाय कुम्मकोणन को तिस्तावह से तथा प॰ विश्वनाथ मी हानी को जाम्मदेश से जामनित किया गया। इनकी देख रेख में सक किए गए। इन विद्वानों के विचारा को जनता ने नपार अद्वाद शांति से सुना सक्षिये मायण सक्कत माया में थे।

प्रायतमाज की शताब्दियों व प्रत्य शताब्दियों के ब्रवसरों पर स्थारिका किका लने की परम्परा म बायवसाब पानीस्त ने एक नई परम्परा स्थारित की है। स्मा रिका के स्थान पर एक बय प्रकारित किया है। यन बीर सस्कृति के नासक रख पत्य में देर विषयक उन्यकीटि के दिखानों के लेख हैं। जेखों की विशिवता हती से स्पष्ट होंगी है कि उतने वेदिक गणित बैंबे लेखपूण बायपामों के साथ है। इसके विशिर्त स्थान स्थान का प्रमाय चित्रों व कविताओं के साथ एक पूषक विशेषता रखती है। बायसमाज ने यह पुस्तक बय की वृद्धि से नहीं विषयु वैदिक साहित्य के प्रचार की दृष्टि से प्रकाशित की है।

मायसमाज ने इस प्रस्तर पर नेत्रहोंगे के लिए भी आयोजको ने वैनिसिध में में प्राथमितितय का प्रकाशन किया जो घोज ही नेत्रहोंनों के हाथों में बहुच जाएगा। है इराबाद के मानन्तित सृष्टि विज्ञान की प्रदशनी भी दशनीय थी विसमें वेदानुसार सच्टिकाल को गणना चित्रित की गई थी।

ाताब्दी तथा गोह या सम्बन्धी प्रस्ताव पारित हुए तथा लोगो शराब न पीने व साम काने का प्रण किया।

ान •ी सनारोह में सम्मिलिन विद्वानों की अनेक विषयो पर गोष्टिया हुई या १४०७ परिवर के नाम से एक परिवर का गठन हुआ। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वनी को सवसम्मिति से इस परिवर का प्रधान मनोनीत किया गया।

### प्रधानमन्त्री पर घातक हमले की मर्त्सना

### विल्लीभर की बायसमाओं में विशेष शोकसभाए

दिन्ती प्रदेश की लगनग सभी आयसमाओं में भ नवस्तर के दिन साप्ताहिक सत्सा के बाद अप्तार्राष्ट्रीय गुटनिरपेश बा बालन की नेत्री एव बारत की प्रवानमन्त्री श्रीमंत्री इदिरा गांधी की नियम हत्या पर विशेष सोकस्त्रभाए कर हादिक सोक एव सदस्ता प्रकट की गई साथ ही निवास जा मा की सदस्ति के लिए सालि एव सोक मनन्त्र परिजनों की सार्थना के लिए प्रायना की गई।

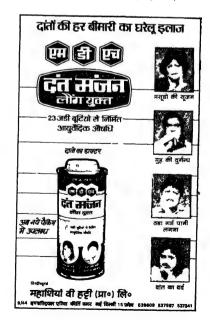
आयामाज नरेला म प्रस्ताव के बाद हिसक घटनाओं की रोक्बाम के सिए मरक प्रय न करने का कनता किया। आयसमाज के पदाधिकारियों व सदस्यों की एक वाति संभित बनाई गई। आयसमाज बाजार शीलाराम ने बोक प्रस्ताव के शाव कठिन परिस्थितियों म प्रथानम त्री का कायमार सम्मालने वाले श्री राजीव गांधी की सफलना की कामना की। आयसमाज मदर बाजार और आयसमाज मुजराबाबा टाउन ने त्रीर गांक पुन्तक के साथ प्रथानम त्री श्रीयती इदिरां गांधी पर किए हमने की तीज मरनना की।

वायसाज मोतीनगरने शोक प्रस्ताव स्वीकृत कर यह माग भी की कि विज लोगो क पृत्रा जौर द्वय मरे प्रचार के परिणामस्वरूप यह पृत्रित काम हुआ है, वे तुरन्त ऐसा पृत्रिन प्रचार वंद कर और राजनीति को हिंखा से पुक्त करें।

### दक्षिण एक्सिया की सास्कृतिक तीर्थयात्रा (पृष्ठ ४ का शेष)

जिनमें से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाल चक्कर की तुलनाने थोडा भीतर की बोर सिमटा हवा है। नी वक्करों या वब्तरों मे से निवने छह समकोण चतुम्ब के रूप मे है और कपर के शव तीन चक्कर योकाकार हैं। सबसे निष्में चब्तरे या चक्कर की लबाई ४०० फुट है और सबसे ऊपर बाले की ६० फूट। महाचैत्य के चयुतरों की दीवारी पर रूपाविषया बनाई गई हैं जिनमे दुद्ध की जीवनी को प्रस्तारो पर उल्कीण किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से ये रूपायाशिया बस्यत उत्कृष्ट है। इस प्रकार जो चित्रावसिया बोरोबदर के महाचैत्य पर उल्कीण हैं उन्हें यदि एक साम एक पक्ति मे लगा दिया जाए तो उनकी सम्बाई साद तीन मीस हो वाएगी। वित्रावलियों के बीच बीच मे नवाक्ष बने हैं जिनने से प्रत्येक मे ध्यानी बुदो की एक एक मूर्ति प्रतिष्ठापित है। सारे महाचैत्य मे ऐसी ४३२ मूर्तिया हैं। हमारी मण्डली से अन्तर्राष्ट्रीय स्थाति के वित्रकार श्री बेन्द्रे भी थे। वह इन मृतियो और रूपावलियो को देखकर इतने अभिभूत हो गए कि उन्हें न अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक टक हो इस बदभूत महाचीत्य जीर उसकी उरक्रव्ह कला को देखते रह गये।

जोग जकार्ता के स्त त्र में कितने शी हिन्दू मन्दिर भी विद्यमान है। प्राम्बनन का शिव महादेव का मन्दिर इनमे सबस्रे अधिक महत्त्व का है। यह मन्दिर एक ऊने विशास चब्तरे पर बढा है। और इसके चारो कोर कार द्वार है। मन्दिर की दीबारों को खलकृत करने के लिए प्रस्तरो पर पदम पूष्पो, सादि की आकृ तियों को उत्कीर्ण किया गया है और रामायन की सम्पूण कवा रूपावलियो के रूप में व किंत की गई है। पौराणिक देवी-देवताओं की भी किननी ही मूर्तिया मदिर की दीवारों के साथ निर्मित हैं। शिव महादेव के इस विशास एवं गगन चुम्बी मदिर के दोरों ओर दो अप मदिर हैं भीर उनसे कुछ हट कर छोटे छोटे मदिरों की शुक्रताने चारी कोर उन्हें घरा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मदिर के अतिरिक्त जो जय मन्दिर जो अपन्य मदिर वहा अधिकत या अञ्चलिकत दशामे वहा विश्वमान हैं उनकी सस्या २४० है। इस उस समय की कल्पना कर रोमान्वित हो गण जब कि ये सब हिन्दू मन्दिर पूण व अखण्डित दशा मे थे, और जब इनमे पूजा पाठ के शिए श्रद्धालु हिंदुकों की भीड रहा करती थी। उस समय भगवान शिव महादेव के विशाल (शव पुष्ठ ७ पर)



# समाज का कार्य देश-विदेशों मे फैलाएं

दयानन्द के स्नादर्श पर चलें : ऋषि मेला सम्पनन इस वर्ष रीपावशी के परवात् १०१ वा समारोह ब वनेर स्थित ऋषि उद्यान वे दिनाक २७, २८, २८ बक्तूबर को बूमबान से मनावा गया। समारोह के बबसर

मे दिलाह २७, २८, २६ अन्तूबर को पूर्वमान सेमनावा गया। समारोह के अवसर पर बजुर्वेद की पावन अपावों से ऋषि उद्यान स्थित विशाल बज्ञशाला में यज सम्पन्न किया गया। २६ अक्तूबर को विश्वमित्र मेघावी कुलपति गुरुकुल तिरायू के ब्रह्मात्व मे अक्र का प्रारम्भ हत्या।

क्ष का प्रारम्भ हुवा।

बेदराठ का कार्य प्रो०रामबीर खास्त्री, प० यदनमोहन बास्त्री, प०रामबेद एव प्रो क्रमंबीर बादि विद्यानों ने सम्पन्न किया। स्वापी बोमानन्द वी सरस्वती दा० सप्यदेव बादि के वर्षाप्येवा हुए। इसके व्यतिस्ति इस वस्तर पर बार्य कन्या महाविद्यालय की खामाबों तथा पत्रनोप्येशक की पन्नालाल की शीमूब ने अपने मबुर सगीत और अवनी है बार्य बनुता को बायंद्य का परिचय कराया।

बन्तिम दिन २६ वस्तूवर को यज्ञचाला में विशिष्ट कार्यक्रम सन्यास दीक्षा का सम्यन्त हुवा। कस्यपदेव बानप्रस्थ ने स्वामी बोमानन्त्र जी महाराज से सन्यास की दीक्षा लेकर देश में पून-पून कर बायसमाज के प्रचार का सकल्प लिया।

यज्ञ के अवसर पर जलग-अलग दिन श्री श्रीकरण शारदा शीमती कमला शारदा आई कर्मक्रव श्री गुरा संस्तीक, श्री प्रमधिह श्री कोठारी संस्तीक श्री पुत्रस पत्रश्री खाय क अन्य अनेक स्थानीय एवं वाहर से पद्यारे संश्वतो ने प्रवसात वनकर अपनी श्रदा पुर्ण आहार्षि प्रदान की।

न्य ने ने को विभिन्न प्रारम्भ यज्ञ के पहचात् व्यवारोहण से हुझा। २७ अन्तुवर को प्रात काल यज्ञ के उपरान्त समा प्रचान आर्य वसत् के प्रसिद्ध सत्यासी स्वामी बोमानन्य की महाराज ने व्यव का उत्तोलन कर ऋषि येते का प्रारम्भ किया।

इस अवसर पर स्वामी जी ने वार्यजनता का बाङ्गान किया और कहा बाज समाज को देश और विदेश में फैलाने के लिए सगठित होकर हुमे बड़ी सक्या ने अपने व्यक्ति-गत कार्य को छोडकर देश-देश तक सन्देश लेकर बाना चाहिए।

बार्यसमाज भटिण्डा के नए पदाविकारी

प्रधान-व्या रोधनसास, उपप्रधान-व्या अमरनाथ, मन्त्री-व्या कृष्यकुमार उपमन्त्री-की विद्यारीलाल, कोषाध्यक्ष-श्रीमती कमलावी ग्राटिया, लेखानिरीक्षक -श्री बोम्मप्रकास मनला

दक्षिण एशिया की सास्कृतिक तीर्थयात्रा

(पुष्ठ६ का श्रोप)

मन्दिर का बहु चुवितृत परिसर कितना मध्य एव बाक्ष्यंक होगा, इतनी कल्पना मे ही जित्त में एक सादिवक मावना तथा आदा का प्रायुमीब होने नगता है।

श्चिव-महादेव के विशाल मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से मन्दिर प्राम्बनन के क्षेत्र में हैं। इनमें चण्डी कासमन, चण्डी सरी, चण्डी मेन्द्रत और चण्डी सर जोग्रड् के मन्दिर उल्लेखनीय है। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह तथ्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आग गण कि अब से कुछ सदी पूज तक सम्पूज जावा में हिन्दूधर्म का प्रचार था। अब जावा के बहुसक्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके है पर उन्होने अपनी सस्त्रति का परित्याग नही किया है। प्राम्बनन के मन्दिरों का दर्शन करते हुए हमने एक कृषक परिवार से बातचीत की। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे सब मुसलमान हैं, पर उस परिवार की गृहिणीकानाम सूत्री था। और सन्तान से दुष्यम्त तथा मुकीति । जावा मे सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते ये कि पूर्वी जावा भी जाए। इसवी सदी के द्वितीय चरण मे इन्होनेशिया की राजसिन पूर्वी जावा में कैन्द्रित होनी प्रारम्भ हो पुकी थी। वहाके सद राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे, और उन्होने बहुत से मन्य व विद्यास मन्दिरो का निर्माण करावा था। पूर्वी जावा के इन मन्दिरों में सूर-

बाबा मन्दिर सब ये प्रसिद्ध है। समय के बागाव से हम हनका ध्रवकोकन नहीं कर सके। हम बीझ से बीझ बाक्षी द्वीप जाना चाहते ये जो वर्गमान समय में भी बस्तुत एक हिन्दू प्रदेश है। २८ स्तिनस्वर को तीसरे पहर हम बानी की राजवानी बेनरसार पहुब गए थ।

ए-१।३२ सफदरजग ए<del>न्यले</del>क, नई दिल्ली-२१

### ऋषि मेले पर टकारा चले

महिष दयानन्द बन्ध स्वसी टकारा में टकाराट्रस्ट की बोर से ऋषि मेला १६,१७, १८, फरवरी १६८६ को मनाया जाएगा। दिल्ली से एक विशेष रेजगाडी का प्रकास किया जा रहा है। इस समय ऋषि दयानन्द बन्मस्पनी टकारा म लन्दर्गाट्टीय उपसेक्ष किया जा रहा है। इस समय ऋषि दयानन्द बन्मस्पनी टकारा म लन्दर्गाट्टीय उपसेक्ष किया जा रहा है। इस समय ऋषि दवानियों के नित्र मनिष्य मुद्र बादि कार्य मुझाक कप से चल रहे हैं। जिन कार्यों पर ट्रस्ट का अवार्ष लाल करए वार्षिक व्यय हो बाता है। ऋषि मेले के अवसर पर ऋषि जगर की भी ट्रस्ट द्वारा नि सुक्क व्यवस्था होती है। बता ऋषि मन्दर दानी महामुमाब इसके लिए अधिक से अधिक दान की राशि महिष्य दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा पिन-१६,३६५० अथवा महिष्य दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उप कार्योजय —आयक्षमण मन्दिर नाग नई दिल्लों को चैक, द्वारट अथवा मनीआदर द्वारा विजवाने की कृण करें।

### गुरकुल होशगाबाद का समुचित विकास होगा

दिनाक २१-१०-६४ को गुरुकुल हासगावाय मे व्यवस्था समिति को बैठक हुई जिससे निजंग किया गया कि, गुरुकुल की (क्रिंग गोशाला) यज्ञ साला का विकास सुव्यवस्थित डग से किया जाएगा। गुरुकुत होसगावाय की व्यवस्था पर आय प्रतिनिधि समा (स० प्र० विदसं) ११२००० का प्रतिवर्ष व्यय करती है। जत सामामी वर्षों में ४० एकड जसीन हरित काति के साध्यम से बाटेको कम किया जाएगा।

# 🏄 वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

> सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशको-

सत्यपाल पथिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूच, सोहनलाल पथिक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजनो के क्रेसट्स तथा

प बुद्धदेव विद्यालकार के भजनो का सम्रह<sup>े</sup>। आय समाज क अन्य भी बहुत सं कैसेटस के सुचीपत्र के लिए लिख

कुन्स्टोकॉम इतिवद्गीनिवस (इण्डिया) क्र सि 14 माकिट || फेस || अशोक विहार दहती 52 फोन 7118326 744170 टेलेक्स २1-4623 AKC IN

प्राप्ति स्थान : यह कैसेट विस्ती बार्य प्रतिनिधि सभा,
 १५, हनुसान रोड, नई विल्ती पर भी सिलते हैं।

# उत्तमता का एक मात्र विश्वास



पैरिस ब्यूटी सेल्स कापीरेशन

२६६५ ए/२ बैंडन पुरा अजमल रवारोह करोल बाग नई दिल्ली-१९००५ ° दूरभाष ५६९२२४ ५७४२००-५८२०३६

# ऋषि निर्माण शताब्दी हम मिलकर सभी मनाएंगे

ऋषि निर्वाण-शताब्दी हम, मिलकर सभी मनाएगे। वेद प्रचारक दयानन्द का, गुभ सदेश सुनाएगे।। लहराएने जीम पताका, दयानन्द नगर बसाएने। उढे सुसद, सुगध हवन की, वेद मन्त्र गुवाएने।। होगा बातावरण शातिमय, सकट दूर भगाएँगे। कर नष्ट अविद्या अन्यकार, सत्य माग दरशाएगे।। सभी करेंगे प्रेम परस्पर, दुव्यंबहार मिटाएगे। निज देश धर्म पर तन, मन, धन, अर्पण करना सिखलाएगे ।। पाबन वैदिक सत्य हगरिया, भूले उन्हे बताएगे। है वेद प्रमाणित सत्य ज्ञान, जन-जन को पाठ पढाएरे।। मच, मास मादक द्रव्यो से, रहना दूर सिस्ताएगे। दहेज आदिक कुप्रमाए, जग से नाम कराएगे।। सब मिच्या पन्य-विसार प्यारकी, बन्धी सथर बजाएगे। करकब्ट विकार मिटाने की, सुख जात सुधा बरसाएगे॥ कव, नीच और भेद-भाव तज, सबको गले लगाएगे। ऋषि निर्वाण शताब्दी हम, मिलकर सभी मनाएगे।।

अविष्ठाता वेद प्रचार विभाग लेब-स्वामी स्वरूपान-इ सरस्वती,

### वेदविद्याजय गौतमनगर मे विश्वशांति महायज

श्रीमद्वानन्द वेदविद्यालय, ११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-४६ मे १८ नवस्वर छे १ दिद्यच्यर ८४ तक विषय धालि महावज्ञ स्वर्गीया प्रवानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाणी केपवित्र सपनो को साकार करने के लिए वारो वेदों के बहु पारायण महायज्ञ के साध्यम से सम्पन्त होगा।

यज्ञ समय---प्रात ६ से १। साय---३ से ६।

### बचन्य हत्या की निन्हा

वार्यतमान सङ्गापुरा वाराणधी के साप्ताहिक विधिवेशन में एक प्रस्ताब द्वारा भागत की प्रपान मन्त्री शीमदी हस्तिरा गांधी की जकत्व हत्या की नित्वा की गई। बाय समाज सल्लापुरा का होने वाला ३८ वा बाधिक उत्सव वो १५ नवस्वर हे १८ नवस्वर ६४ तक होने वाला वा उसको स्परित किया गया।

।। ओ३म ॥

## आर्य जगत की ज्ञान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (त्रानुमानित लागत दो करोड़ रुपए) के लिए दिल स्रोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अघिनियम जी० ६० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा वान वैक/मनीझाडँर/वैक ड्राप्ट द्वारा सन्त्री साता चन्ननदेवी बार्य वर्मार्थ नेत्र विकल्पासय, धी-१, जनकपुरी, नई दिस्सी-५८ के पठे पर भेजा जग्ए ।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

### निवेदक

रागगोपाल शालवाले सरकार सुयदेव महाश्रय वमपाल बोमप्रकार वार्य चिकित्सालय एव प्रचाल, दिल्ली बार्य प्रतिः प्रचान बाय अभी महाश्रय साल बाल प्रतिल समा, निष्ति समा केन्द्रीय समा चुल्लीसाल चेरि ट्र सौजन्य से बहाश्रिया दी हुट्टी प्राल्लिबिटिंड, १/४४ कीर्तिनमर बौचोगिक स्रोम

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की श्रौषिधयां सेवन करें

शाका कार्यालय - ६३, वसी राजा केवारनाज

कोन न० २६६८३८

बाबडी बाजार, दिल्ली-६



# दिल्लो आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

स्थिएक प्रति ४० पैसे वय ६ अक ४ रविवार २५ नवस्वर १६६४ बाय सवस्सर १६६०८५३०८४ ३ मागशीव शु० २०४१ वि० दयानन्दास्ट—१३८६

# निर्वाण शताब्दी को निर्माण कार्य मे बदल दो-सभा प्रधान

दिल्ली मे महर्षि दयानन्द निर्वाण ज्ञताब्दी, व्यापक स्तर पर दिसम्बर १६८४ के

# अन्तिम सप्ताह मे मनायी जायेगी।

नई दिस्ती। दिस्सी बार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सुयदेव ने बताया । दिस्सी बार प्रतिनिधि समा दिस्तदर १६०४ में महुषि दयानन्द निर्वाण सताब्दी। आयोजन कर रहा है। इस अवशर पर अयनसाज का गरेश घर कर पहुचाने के सिए स्त्री के विभिन्न स्वानों पर यज्ञ, भजन एक देशेपदेश आयोजित किए जाएंगे। प्रधम तक की सोभायाथा धौर धन्तिय दिन के कार्यक्रम समूहिक कर से केन्द्रीय स्थान पर योजित किए जाएंगे। वेद तथा मार्य प्रयोजित किए जाएंगे। वेद तथा मार्य प्रयोजित किए जाएंगे। विस्ता के साधार पर सिल्य हुँकट छपवाकर मंत्रिक्त का जनसाधारण में प्रधार करने हेतु वितरित किए जाएंगे। दिस्सी के प्रत्येक ने येद साथ प्रयोजित के से हम आपके सहयोग से प्रयोजन आहेते हैं।

सभा प्रवात ने दिल्ली की सभी बार्यवसावी, श्वी समाओं बी ए वी स्कूली तथा म्य साथ सस्वाती के अधिकारियों तथा वाती महानुभावी से बपील की है कि वे इस । सं को सुवाक रूप से कराने में तन, मन, वन से सहयोग में । नयोकि सहयोग के बिना हु कांस प्रव्या रूप से स्वस्था करता सभा के लिए सम्बन न हो बकेगा। उनकें गतिक सम्बन्ध स्वस्था करता सभा के लिए सम्बन न हो बकेगा। उनकें गतिक स्वता का स्वस्था कार्या । मन्त्रोने वायवनों का माह्या किया कार्या । मन्त्रोने वायवनों का माह्या किया कार्या । मन्त्रोने वायवनों का माह्या किया किया कि वै निर्माण स्वताब्दी को निर्माण कार्य में बदलने । लिए प्रदीसित सगा दें।

### हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन

बायबीर वल हरियाणा का प्रान्तीय महाधम्मेलन वो कि गत २४ नवस्वर को तिस्वत वा प्रधानमन्त्री सीमती इन्दिरा गांधी की जबन्य एवं निमम हत्या के शोक से स्वित कर दिया गया वा । अब पर्ष्टृहित में वह माननीय वो मोमप्रकाश जो त्याणी, ह्यामसी साववेशिक साथ प्रतिनिध वसा, नई दिन्ती को स्वय्यवता में मागागी १ तवा । इस्तस्वर दिन खनिवार एवं रिवदार को मीमनगर गुडगाव से होगा। इससे १००० गांवीर एवं गणनेवा में माग लेंगे। देश के मुखन्य युवक साथ विद्यान भी सम्मेलन को गांवीर एवं गणनेवा में माग लेंगे। देश के मुखन्य युवक साथ विद्यान भी सम्मेलन को

# आर्यसमाज पाण्डव नगर का पांचवा वार्षिकोत्सव

# श्रीमती इन्दिरा गाधी के ६८वे जन्मदिवस पर चननदेवी ग्रार्थ धमार्थ नेत्र <sup>[</sup>चिकित्सालय का संकल्प

—योमप्रकाश प्रार्थ

महावय चूनीवान चैरिटबन ट्रस्ट द्वारा तचाजित माता चनन देवी बार्क चनायं नेत्र चिकित्सासय के बिषकारियो, कर्मचारियो एव दाक्टरो द्वारा प्रातः काल यस के परचात् श्रीमती इत्तिरा गांधी जी को अदाजिल वेते हुए प्रतिवा की बर्क कि गत पाच वर्षों की प्राति प्रचान मन्त्री के २० सूत्री कायक्रम के अन्त्रगत सन्धाद्भव निवारण में कोई कसर बठा कर नहीं रखी जाएगी।

स्मरण रहे कि यत पाच वचों से जगातार यह चिकित्सालय स्व प्रचान मन्त्री का जन्मदिन मनाता चला बा रहा है। जिसमें नेत्र विधिर सगाकर ५०० से १००० तक ति सुस्क नेत्र आपरेशन किए जाते हैं। हजारों बच्चो एव प्रामों में जाकर हवारों माई बहुतों के नेश्च परोक्षण किए जाते हैं और बहादा बाटो जाशी हैं। स्व प्रचान मन्त्री ओ के २० सूची कायकम के बत्तमत चिहित्सालय ने एक चलता किरना नेत्र विकित्सालय बनाया है, जे पाम पाम में जाकर जहां नेत्र बिना किसी जाति चम आदि भेट माव के परीक्षण करता है, तथा राष्ट्रीय एकता का भी प्रचार करता है।

# अखिल भारत वर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ग्रोर से विदेश यात्रा

सभा प्रचान भी रामसाल मिलक ने बताया कि इस मिनी विदेश यात्र के लिए दिस्ती वालम से २३२ ८५ रात्रि को ८ वजे बँकाक के लिए प्रस्थान होगा। पटेम्बा (बैकाक) बाईलीच्च कुलाला लम्पूर, पिनाल (मेर्योशया) स्थिगपुर, सम्बई होठे हुए दिल्ली २४ ८५ को रात्रि २ वजे वाशस पहुचेंगे। विस्तुत निवारण के लिए बायसमाज करोलवाग ५६७४६८ वार्षसमाज बनारककी ३४३०१८ श्री रामसाल मिलक ५६७२६२ १६२४१० पर सम्बक्त करें।

### प्रधानमंत्री राजीव गाधी के लिए दीर्घायुकामना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की निमम हत्या पर दिल्ली की विकित्न क्षायसमात्री की विकित्न क्षायसमात्री की विकित्न क्षेत्र क्षार भ्रद्वाजिल सभाए आयोजिन नी गयी। इन बैठकी में प्रधानमन्त्री भी राजीव गांधी की दीर्घांधु के लिए भी कामना की गई। वार्यक्रमात्र क्षांधी नगर में बीर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मन्दिर ४० प्रायंक्षमात्री तक्षक्ष कमार ककेनी नगर में बीर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मन्दिर ४० प्रायंक्षमात्री तक्षक्ष कमार कुरूनी काय मुक्क परिवद दिल्ली में उपरोक्त क्षाय के मस्ताव प्राप्त हुए।



### परमात्मा सबको हच्छी प्रकार जानता है हम भी उन्हे जाने ?

### -प्रोमनाथ एडवोकेट

विजानीह्ययानय च त्रस्यवो बहिमत रन्धयाशासदत्रतान। गानी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेना ते सघतादेषु चाकन ।। ऋ० १।५१।।

आगिरम मध्य ऋषि इन्द्र देवना विराड जगनी छ द वैवत स्वर।

हे सबको यथा योग्य य दाव जानने वान ईश्वर । आप [आर्यान] घामिक विद्वात परोपकारी मनुष्या को [विजानीहि] विशव रूप से जानने हो चि]और मि]जा दिस्यवी चोर डाक विद्यामधाती मूख स्वार्थी अनाय मनुष्य हैं उनको भी जानत हा। आरप कृतया यह जा दस्यु हैं इनको [बहिप्मत] उनम धम्य व्यवाहार आदि की सिद्धि वा शाति सम्पान कंलिए [र घम ] समल नध्टकर दीजिए (तथा) यत्य भायण ब्रह्मचय बनोसे रहित अनाचारियो पर

समस्त जगत अदभूत रचना करने वाला है। और सवत्र व्यापक हाकर इन मब लोक नोकान्तरों में ठीक व्यवस्था भी कर रहा है और सब जीवों को उनके पाप-पुण्यो काफल ययोचित देकर पूण न्याया-धीश वनमान हो रहा है। ऐसे ही सभश (प्रधान मन्त्री अथवा मूरूय मन्त्री) का भी चाहिए कि ठीक शासन द्वारा प्रजा को सल देव अर्थात कोई चोर डाकू हत्यारा छली कपनी विषयी जुआरी देश मे जालसी अथवा विद्याहीन न रहे भीर प्रजा की गक्षा वा उसका पालन पूजतयाकरें।

**बी १०**३ नीति बाग नई दिली ४६

# गरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश-व्यापकता

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मूल मिद्धाताके विषय म पूजा जा सकता है कि अग्रज के परिवेश म वे क्या व्यवहारिक हैं? क्याउ ह कियाबित किया जामकना है? आज का गुरु उन आ देशो पर चलन क लिए नैयार नहीं है जो हमारे क्थना नुमार गुरुकुल जिला पद्धति म मार्तीनहित हे। वह प्राचीन गुरुओं कासातपस्यामय जीवन विताना नही चाहता। वह कहता है कि "से नप नहीं करना दूसरों की तरह ब्राराम की ब्रिटगो है। उस ब्राराम का मकान चाहिए गर्मियो मे एयर कन्डी शनर चाहिए सर्दियो मंगीजर तथा ही रर चाहिए आमोद प्रमाद क लिए रेडियो तथा टलीबीजन चाहिए। इस सबक लिए उनका वेतन दिनोदिन बढना चाहिए। जहानक शिष्यों का सम्ब घ है वे गुरु को न पिता क समान मानत है न पिता का मा उमे व्यान्य दंग्वन वं उनके लिए पुरुष्ट बननभागा संबक्त है अवन पन कात्रएनोकराकरना है प्राचानकाल का तरह वह अपने गृर का पूर म नकर बह सम्मान दने के लिए नैयार नहीं जो प्राचानकाल के शिष्य गुस्कुला म रहत हर अपन गम्आ का दिया करत थे। वहा तक शिशा सस्याम कुल को भावना क अनुभव करने का सम्ब ध है गुरु भी शिष्य भी उमे एक टोचिंग गाप अण्यापन की दुकान ही समऋत हैं और कुछ नही। माज जितना बडा विद्यालय है उतनी त<sup>न</sup>े राशि शुल्क की पब्लिक स्कूलाम पढायातो वही जाता है जो अन्य सामा रणस्कूलो मे पढाया जाता है परन्तु

पिलक स्कूल के नाम से उनमे शुल्क सैकडो गुणा ज्यादा लियाजाता है। पब्लिकस्कूल—यहएक चालू मिनकाहो गया है न इसमे पिन्नकपना रहा, न स्कृलपनारहा। पब्लिक स्कल यह नाम रख लिया ताकि त्याढा त्युना शु~क वसूल कियाजासकै याबच्चो को अग्रजी रहन महन सिखा दिया जा सके।

ऐसी स्थिति मंगुरुकुल के वे भादश जिनकी पिछल लेख में चचा को गई है, कहातक समयानुकूल तथा व्यवहारिक है। अन्यापक ता वसे ही मिलगे जैसे मिल रहे हैं। बाजीविका के लिए ब॰यापन काय तरन बाल बच्चो का जीवन बनाने के लिए तप त्याग और तपस्या करने वाले

शिक्षा किही अगदर्श को सामने रख कर दी जाती है। जब ध्रयज लोग भारत आए नव इन उद्देश्य से कि राजकाज म ग्रग्रजा नया जननाक बाचसम्पक स्था पित हामक और शासन करन म सुविधा हा आग्ल िक्षा प्रणाली का सूत्रपात हुआ जिसकाश्रय मैकाल को है। इस युग मे अनक बादोलनाकाज महुआा जिनमंसे शिक्षा के क्षत्र मंजिस अगदोलन ने जन्म लियावहगुस्कुल शिक्षा प्रणाली का आदालन या। गुरुकुल निक्षा प्रणाली का बादशायाकि ऐसं व्यक्ति तैयार किए जाए जो प्राचीन वैदिक सस्कृति से बोत प्रोत हो भारतीय सस्कारो तथा बादशौ की जीवन में घटाकर देश की स्कतन्त्रता के लिए अपने को सिपाही बना सकें।

इस प्रणाली का बीज ऋषि दयानन्द

इत्त सत्याथप्रकाश मेथा परन्तु इसे मृत रूप दिया महात्मा मुक्तिराम जी ने गुरु कुल शिक्षा प्रणाली का केन्द्र हरिद्वार के समीप रस्तागया। जिस समय हरिद्वार के समीप कागडी बाममे गुरुकूल की स्था पना हई उस समय देश परतन्त्र वा और परतैत्रनाकेयगकी प्रतिक्रिया का रूप ही शिक्षाके क्षत्र मे गुरुकुल था। शिक्षा कामाव्यमहिन्दी को रखा गयाऔर रसायन गणित ज्यामिति भौतिकी आदि विषयो का ग्रग्नजी के स्थान में हिन्दी मे पढाया जाने लगा, इन विषयो पर हिन्दी मे ही पुस्तकों प्रकाशित की गई। विद्या वियोको बुडनवारी नीरदाजी जदि सिखाए गए। विद्याधियो की दिनचर्या ऐसी रक्षी गई जैमी सैनिको की हाती है। प्राप्त काल चार बजे उठ जाना, सध्या-उण्यसनाके बाद भिनभिन्न प्रकार क योगासन करना दड बैठक व्यामाम कृष्ती करनाजिससे खरीर पुष्ट हो सर्दी गर्भी सहना जुता घारण न करना आदि दिन चयाऐसी रसी गई जिसे देखकर वरवस कोई क्हदेता या कि यहातो मैनिक तैयार किए जात हैं।

सरकारी क्षत्रों में प्रसिद्ध वाकि गुरु कुल कागडी मे काति के सैनिक तैयार किए जाते हैं। इसी किंवद-ती का सुनकर लाड नेस्टन लाड चेम्सफोड तथा बरता निया के प्रधान मंत्री रैम्जे मैग्डीनाल्ड गुरुकुल देखने के लिए आए थे। वे लोग चाहते य कि गुरुकुल सरकारी मदद ल ल ताकि काकि कातिकारियों का दल गुरुकुल से उदासीन हा जाए। महामा मुश्रीराम जीन सरकार के हाथों जाना अस्वीकार कर दिया।

स्वतत्रता प्राप्ति के बाद देश का रूप-रग बदल गया स्वत-त्रता प्राप्ति के रूप मे वेशवासियो का उद्दश्य बदल गया, उसके अनुरूप गुरुकुल शिक्षा पद्धति का सरकार से किसी प्रकारकी सहायतान लने की नीतिभी बदल गई। सरकार अपनी थी सरकार चाहती थी कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के म्ल सिद्धान्त बने रहे और उनमे सफलता प्राप्ति के लिए गुरुकुल पद्धति के मचालको के हाथ दृढ किए जाए। दु स की बान य≃ के कि सरकार ने जिस ‴ह इय से हम आर्थिक रूज्यता देना गुरू किया उस उह बय का क्रियात्म रूप देने में हम सफल नहीं हुए। हम सफल नहीं हुए --इसका यह कारण नहीं या कि हमने सर-कारी सहायना प्राप्त करना शुरू किया हम इस कारण सफल नहीं हुए क्यों कि हम भी बहाव के साथ बह गए।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जो बाबारभूत सिद्धान्त हैं वे शिक्षा क्षत्र में सवमान्य हैं कोई उन उनसे इन्कारनहीं कर सकता। गुरुका अपने छात्राको पुत्रवत मान कर उनके साथ देते हैं वहा पाध्चात्य विद्वानो को भी जीवन दिताना, सब छात्रो का एक साथ रहना, अपने को दूसरों के साथ भाई भाई

भाई का सम्बन्ध रखना जैसा परिवार से होता है, ऊष नीय का भेदमाव न होना न जातपात का भेदभाव होना, अल्दी सोना जल्दी उठना सन्ध्योपासना करना. तपश्चर्या तथा ब्रह्मचर्यं का जीवन विताना भोजन करना और व्यायाम बादि स शरीर को हुष्ट पुष्ट बनाना-कौन सी शिक्षा पद्धति है जो इन बातों को स्वीकार न करेगी। इसी का नाम आश्रम-बास है इसी का नाम गुरुकुल बास है।

गुरुकुल कागडी को विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो चुकी 🐉 पर तु इस मे गुरुकुलीयता नहा आई। विश्वविद्यालय के छ।त्र साइकिलो पर चढकर बाहर से आते है, और पढकर अपने-अपन घरो की चल जात हैं प्रोफसराकाभी यही हाल है। अन्य स्कूलो काल जो की तरह वे पढ़ा-कर अपने घर बावठत हैं। रहनासहना उनका उसी तरह का है जसा दूसरे अध्या-पको काहोताहै। तपक्चर्याका किसी प्रकार का बाताबरण नहीं है। व गुरुकुल मेरहनवाल गुरुया आवाय नहीं है लेक्चरर रीडर तथा प्राफसर है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मूल। वार तो गुरकुल कागडी ही है। वतमान स गुरुकुल कागडी को दो भागा म बाटा जास्कता है। एक भागता वह है जो चालू पद्धति पर ही चल रहा है, दूसरा भागवह है जिसम गुरुकुल पद्धति के सिद्धात लागूहो रह है या हो सकते हैं। दूसरे भागका गुरुकुल कहकर हम ग्रान पहले भाग के लिए ले रह हैं। पहले भाग म छात्राकी सल्याक्षत्रिक है परन्तु वर्ठ नाममात्र का गुरुकुल है, दूसरे भाग म छात्रों की सक्या कम है पर तुबधाध म बही गुरुकुल है। इस गडबडफाले में से निकलने का उपाय यही है कि हमा दूसदे भागको इतना बढाए कि उस भाग से पढन बाले छ। त्र ही पहले भाग मे प्रविष्ट हो और घीरे घीरे स्थिति यह का जाए कि पहले भाग में सिर्फ गुस्कुल में शिक्षा प्राप्त छात्र ही रह बाए, ऐसे छात्र जिन्होने गृह-कुल के विद्यालय विभाग में शुरू से शिक्षा प्राप्त की हो। गरकुल शिक्षा पद्धति को देश व्यापक बनाने की पहली खत यह है कि गरकल कागडी मे विद्यालय विभाग से विष्वविद्याल विभाग तक वे ही छात्र भर जाग जो गुरुकल शिक्षा पद्धति से पृत्र हा जिनका सोना जागना साना पीना, बोलना चालना, देश भूषा--सब कुछ गरकलीय हो।

जहातक पुस्तक शिक्षाका प्रश्न है हमे यह समफ्रकर चलना चाहिए गुरुकल शिक्षा पद्धति वास्तव मे जीवन की पद्धति है। शिक्षा के क्षत्र में हम जहा सस्कृत साहित्य, दशन तथा वेदादि प्राचीन ग्रन्थो एव उनकी रिसक्ष पर विशेष ध्यान पाठविधि में स्थान दते हुए यह ध्यान से (क्षेत्र पष्ठ ६ पर)

### प्रभुका ग्राथय मिलता रहे

को ३म उद्धय तमसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम । देव देवत्रा सूयमगम ज्योतिरुत्तमम ।।

हे प्रमु, जाप समस्त चरावर जगत के बात्मा हैं मुमुक्ष श्रो गुणी वर्मात्माकी जीर मोगियो जावि को सब प्रकार का बानन्द देने वाले जगत के प्रवय के बाद भी निष्य स्वकृष में विराजमान सर्वाल-स्वक्य अज्ञाना पकार से परे बतमान सापको हुने प्राप्त हो।



# राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानो।

बृहस्पतिवार १५ नवम्बर १६८४ के दिन दिल्ली के कास्टीटयूशन क्लब में एक विवारोत्तजक परिवर्जा हुई। परिवर्जाम तूफान के दौर मे पजाब की समस्या पर विभि न पहलुआ। चर्चासे की गई। चर्चाम भाग नेने वाले दिल्ली के कुछ प्रमुख पत्रकार थे। पत्रकार श्री सशव तसिंह ने न्हा--- पजाब की समस्याहि दूसिका सरकार और विपक्ष की दरिट से नहीं दसना चाहिए। उहीने कहा कि किसी भी स्थिति म देश का विभाजन नहीं ह ना चाहिये क्यांकि अनेक विषयता आप के बावजर भारतीय जनता एक ≯ा≂स अवतसर पर नवभारत टान्स्थ के सम्पादक श्रीराजे द्वसानर ने कहा . राष्ट्रपति को सर्वापरि मानत हुए अलग पहिचान बनाए रखन वाली प्रवत्तिया का सफाया किया जाना चाहिए। जनसत्ता के सम्पादक श्री प्रभाव जोशी न कहा हि द्वा और सिनका का भारतीय दृष्टिकोण अपना कर अपनी समस्याए हल करनी चाहिए । और आध्यात्मिक परम्पराओं को आये बढाना चाहिए । परिचर्च में अभि व्यक्त विचारों से यह तो स्पष्ट है कि सभी वक्ता इस बात म तो सहमा थे कि अनेक वियमताओं के बावजद भारतीय जनता एक है इसलिए उसका विमाजन नहीं होना चाहिए। यह ठीक है कि विभि नताओं एवं विरोधों के बाब बद भारत एक और असण्ड रहा है पर तुयह भी ठोक है कि उसकी एक्ताको खण्डन करने के लिए व्यवस्थित <sup>फ</sup>प्रयान किए गए है ।

उन्त परिचवा में भाषण देते हुए पनकारा ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कुछ वय एवं सिक धम की पथक पहचान लगमग समाय सी हो रही थी वह ममाय न हो प्रत्यन उनकी पहचान करना बनी रह दसने लिए व्यवस्वित प्रयत्न किए गए। सिक प्रवा स्थाना में इस बाताओं के प्रारम में भारतीय हिंदू मिदरा में निवृत्त किए गए। सिक प्रवा स्थाना में इस बाताओं के प्रारम में भारतीय हिंदू मिदरा में निवृत्त किए गए। सिक प्रवा में इस बात के उन्न विश्व सासका के इसारे पर हटाया गया। इसी प्रकार पशक्त दिनो परिचमोत्तर का म म जो घटनाए हुई उनम स्थटत्या एक तथ्य काम कर रहा वा कि हिन्दू प्रवास्थानों से अपवित्र वत्तुए कक कर तथा निवृत्त्वी जनना पर आक मण कर में प्रमुख सम्भागों के मध्य जनवान वेदा विश्व आए। एक सुधा पत्रकार ने वह सत कही है बहा तक सिक्ष पुरुष्ठा विश्व वत्त्वा नामक वाणों का प्रवत्त है वह सत कि होस मुख्या विश्व वत्त्वा नामक वाणों का प्रवत्त है वह सत कि होस मुख्या विश्व वत्त्वा नामक वाणों का प्रवत्त है वह सत कि होस मुख्या विश्व वत्त्वा माय स्था है। यदि भारतीय धर्मों की आध्यास्थिक परस्पराजों पर वस दिया जाए। बीर उनकी स्थास्थित व्यवस्था और प्रवार विश्व वा स्था के स्था स्था हिया जाए तो वत्त्वान में द एवं विभिनताए समाय हो है। सकती है। वत्त्वाकों के दर स्था पर में बन दिया कि सारत की एकता एवं बक्ष व्यवता ने नर कर स्थावा के स्थानयों को बडाने के सिए विश्वेषी सामान्यवारी विश्ववा मदद कर रही हैं।

पिछ ने दिना नानक जयली के बास पास वाकिस्तान मे परिवर्ध देशों से समय खलगाववादी उपवादी सिखों को बहु के सारका ने खुला में संस्वाह दिया। प्रधान में नी भीमती है दिया नाम के हता है सारका ने खुला में संस्वाह दिया। प्रधान में नी भीमती है दिया नाम के हता है ने पह चुला भी दी है कि प्रखुत हरादे कमत के हि या के निमित्त कोस्त्री दिवस नु पु भारताय राजदूत हरी दिवह न एक लाख पीण्ड निए थे। और दूसरे हत्यारे नतवत को भी ६५ हवार डालर की यनरित वक्त मिनने की बात स्वीकार की है। कहा वा सकता है कि विदेशी सामाज्य की व्यक्तिय की को यह स्वीकार नहीं है कि भारत एक एक युवुत रहते हुए एशिया कीर विवय की एक महाजित को 1 ये उसके के द्वीय धारत को निवक करने के विवर प्रधानकी है विदय सामाज की अपने स्वाह में स्वीकार की मारव के भारत की प्रधानमंत्री भीमती को भारी भार्यिक प्रलोभन एव खस्त्राधियों को मदद से भारत की प्रधानमंत्री भीमती है दिया गांधी के बतासर्थिक विवस्त है श्रेस मृत्य को स्थित राज्य है और केन्द्रीय सत्ता किसी भी तरह निवस न हो, सान ही भारतीय सामों के मूल बाध्यास्तिक सामिक तत्त्र एक वसे है हमें मिनकर रहना चाहिए सक्त कर राष्ट्र को कि वह सामवास्तिक सामिक एक वायस्त्राज्ञ कर राष्ट्र को स्वत्र पर वह करना चाहिए। क्ला के किए सामवास्त्र का सामक तत्त्र एक वसे है हमें मिनकर रहना चाहिए कर राष्ट्र को स्वत्र पर वह इस करना चाहिए।



### बहेज लानत नहीं समाज के लिए एक प्रथा है

साज का प्रवक्तित दहेज शब्द का पूज नाम गौदान या क्वादान सा। यह दिस्तरिला रामव इंद्री के बक्त दो बका बाया है। जैसे कि सीताजी का दिवाह राम के साथ हुआ या तव राजाजनक न सीता को दान क रूप म्बद्दुत नुरुष्ठ दिया या। सत दक्क नाम गोद न या क्यादान या। मतलब यह होता है कि गाय माय में आये अर्थात तसका लाना करदा जब्द्या मिलता रहें।

प्रत्यक पारिवारिक जन अपनी प्रिय पुत्रीको प्रसन रक्षनं के लिए अपनी तरफ से ज्याराय श्यादादेने की को लिख करताहै। स्नांकि लडके के मानाप भी लुख रहतक। लडका काहक भाजर ह जाय।

एक बात समक्ष से नहीं बाती किसी की सास का जलन का खबर न<sub>ा</sub> मिलती लक्ति जब भ**ं**व हया सुना है सडकान सून्कुशी करली माम स्मर से तग आ कर

नया ॰ पार्श लडकी घर का क″ काम नहीं करनी। यह एक अश्रीद मामसा है। जब तक गौदान की प्रचाप्रचलित थी तब देश में यह सब कुछ नहीं होता था। लेकिन तब में युग्न शेल पार्क कप से बाया है तभी से फ्नाड गुरू हागय है कि तु अब भी कण परान है जा सतीयों बीद है जो कुछ मिले सब ठीक है। अपना सब धारित में पन काट पने हैं।

जब लडकी काज स होता है तो घर सिक्सी प्रकार की स्वधी नहीं मनार् जानों है चर्डी को पराया नंत साना सवा है। पराये पर रण किस भी व्यक्ति को प्रमीती किस्तार पर पर पुरुष कुर्ड की पराया पर प्रमीत को सकत प्रकार पर पर बढ़ की पर प्रकार की पराया पर रणी है तब उसकी नौकरी की चित्र पराया है। प्रपक्त कर्ननीकरी बाली सामरा है। यमे नेवा जाय नौकरी बालों मिल जाए तो सान क उपर सुहागा होता है कहा लडका पर की मुफ्त सी हैं विकाही अब पढ़ के का सामना समात हा जाता है तो के ह्या सादी का सामना साता है कितना देना पड़ता है किननी परेतानी उठानी परती है। अपनी इन्बत की सातिर कर्नो लेना पड़ता है। क्या हुवांनी है?

वैसे देखा जाए तो दहिन स्वय एक प्रकार का बहेज पढ़ी लिखी नौकरी व ना है साथ सब कुछ लाई है। अगर नौकरी वाली नहीं ता उसे यहिंगी सेविक मना आता है।

सबसे महाकुर्बानी नौ साह पुत्र पुत्री को कोस मे रखा जा है सगर उसके साम मनुरु व पनि का नाम ाके नाम केसान केसा व दिस जाता सदन वारी का नाम नहीं क्या जा बक्षा क्वांनी है प्रक व याद्यान केन मंग्य निमंत्र जी स मनुष्ट रहोन या इस्वयं का घटना करों। फिर के घ म किनता स्वाधि वासि रहती हैं। या मन न राजा म

वैदिक अन्तयेष्टि कर्म से सम्बन्ध नही

एक ऐसी बात तो ज्ञायसमाज न "े अपनी स्त्रीर पायबा स्वात सीचना चाहतान। प्रधानर अधीमनो नियाधी का जा भावता भरा अन्तर्योक्ति कम देली विचल कुरनान परशानना के नम्बदर १६६४ के दिन दिखाया पाबा उससे बायकसमाज के ज्ञो की बाव व भी मुनाई देती थी। उहोने प्रथमासत्र एक बाति प्रकरण के सन नयं ज्ञा पनिषद का पाठ भी किया वा तथा गायजीसत्र के स्वाहाबार के साव आहुनि भी नी

सुन प्रव का वन्ति व येष्ठि कम के साथ काई सम्बन्ध नहीं। क्या आप बता कुकते हैं नि वे कौन खें आय विद्वान या। यप्ति कोई सज्वन वैदिक विधि से अन्त्यस्टि कुम नहीं कराना चाहते ता आयविद्वान वहा जाकर हास्यस्पद क्यों बन। अद्वातनि तो सालीन वर्गसे भी यो जा सकती है।

--सत्यदेव विद्यालकार शान्तिसदन १४५।४ सैण्ट्रल टाउन जालण्यर

### पटाखो की करामात

हिनाक २४१० ८४ अक्तूबर दीपावली की रात्रिकी आपके प्रिय प्राय प्रकाशन से आपन लगण्डे यह पटाओं की करामात थी। हम प्रपने नृष्ट पर दीपावली यज्ञ कर रहें के। प्राय दस बजे मूचना मिली आस पात के लागाने बहुत शीष्र आग पर काबूपा लिया पिर भी हवारों रूपयों का साहित्य जल गया तथा लोगों द्वारा सुट लिया गया। आप नागों से साहित्क सहयोग की आशा करते हैं। जैसा कि पहल आप हुसारे प्रकाशन से स्नेह करते हैं— करत रहने।

— निलकराज साथ अध्यक्ष झाय प्रकाशन ८१४ कूण्डैवालान, अजमेरी दरवाजा दिल्ली

# दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

(२) बाली द्वीप में

जब हम हवाई जहाज द्वारा बाली पहुचे तब एक अद्भुत दृश्य देखने मे आया। हवाई बन्ड पर वाद्य मगीत की समाब्बाथा, और दादर्जन के लगभग बायको और गायिकाओ द्वारा मगलगान माया जा रहा था, हवाई जहाज से उतरते इष्यात्रियाकी कोर गायिकाओं की यह मण्डली जागे बढने लगो । सबके हाथो मे पुष्पमालाए तथा फूला के गुच्छे थे। हम सोच रहेथे कि इण्डोनेशिया के काई मन्त्री व उच्च प्रशासक बाली आए हैं, विनके स्वागत मे यह भायोजन किया गया है। पर हमारे बाश्चर्य का ठिकाना नही रहा जबकि स्वागत के लिए आगे बढती हुई बृत्यागनाए हमारे सम्मुख रक गई। बै हमारी मण्डली के नेता के गले मे पुष्प-ञाला डालना चाहती थी। बार्यसमाज के मुर्द्धन्य नेता स्वामी आमानन्द सरस्वती द्धवारे साथ थे। मेरे सकेत पर जब एक क्त्यागना उनके गले मे माला डालने लगी, जी स्वामी जी को नकोच हवा। पर मेरे अनुरोधपर उन्होने यह औपचारिक कम्मान स्वीकार कर लिया। अन्य सब यात्रियो को पूष्पगुच्छ समपित किए गए । इन्हें वाली की परम्परागत कला के अनुसार अल्पन्त सुन्दर रूप से बनाया गया था। हमारे इस शानदार स्वागत का बायोजन टेवल टस्ट द्वारा किया गया था।

हमारे स्वागत के लिए बाली के अनेक हिन्दू नेता एव विद्वान भी हवाई अड्डे पर बाए हुए ये। हमने उनके साथ अगले दिन का कायकम निर्धारित किया, और इम विश्राम के लिए होटल चले गए। उन-पसार (बाली की राजधानी) के जिस ह्रोटल में हम ठहरे, वह समुद्र तट पर एक रमणीक उद्यान मंगा। निवास के लिए छोटी छोटी कुटिया बनी हुई थी। बाहर के देखने पर वे फोपडिया दिखाई देती थी, थर उनके अन्दर आयुनिक वैज्ञानिक युग के सब सुब साधन विद्यमान थे। प्रत्येक 🖘 बरे के साथ पृथक् बाथरूम या जिसमे ठवडे पानी के साथ साथ गरम पानी के -वल भी थे। सब कमरों में टेलीफोन भी कौर उनकी सज्जा आधुनिक ढग से की गई थी, कृटी के अन्दर बैठकर ऐसा प्रवीत होता था मानो हम रमणीक प्राकृ-निक वातावरण के हरेभरे उद्यान मे अव-स्थित किसी अत्याधुनिक होटल मे ठहरे हुए हैं। ओग जकार्ताका हमारा होटल भी 🜪ळ इसीढगकाथाः जावाऔर वाली मे भारत की जो प्राचीन साम्कृतिक पर-म्पराधाभी तक सुरक्षित है, ये हाटल उसके असनरूप ही थे। इनके दरवाओं तक पर रामायण की कथा की रूपावलिया उतकीण बीं, बीर हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र वित्रित थे।

२ हसितम्बर, शनिवार को बाली की सदयन यूनिवसिटी के इन्स्ट्यूट आफ हिन्दू घम म एक विशेष आयोजन किया गया। इण्डोनेशियाने सरकार काएक विभाग धर्म मन्त्रालय (मिनिस्टी बाफ रिलीजन) ने नाम से भी है। इसके अधीन हिन्दू धम के लिए एक पृथक डाइ-रेक्टरेट (निदेशालय) है, जिसके डाइरे-क्टर जनरल पद पर श्रीपृज याश्री पूज्य नियुक्त है। श्री पूज वेदशास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित है । गीता, मनुस्मृति, ईश्वोपनिषद, व्वेताश्वर उपनिषद आदिका बहु इण्डो-नशियन भाषा में अनुवाद कर चुके है, और आजकल वेदो का अनुवाद करने में लगे हैं। ऋग्वेद सामवेद बीर अथववेद का वह अनुवाद कर भी चुके हैं, और इनके कुछ सश प्रकाशित भी हो गए है। इन सबका प्रकाशन इण्डोनेशिया की सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार के हिन्दू डाइरेक्टरेट की ओर से बासी की उदयन यनिवर्सिटी के तत्वावधान में इस्टिट्यूट आफ हिन्दू धम का सचालन किया वा रहा है। हमारी बहुत इच्छा थी, कि इस सस्यान मे जाकर बाली के हिन्दू विद्वानो के साम सम्पर्ककरें, और वहा प्रचलित हिन्दू वर्ग के सम्बन्ध में जानकारी ब्राप्त करे। श्रीपुज के प्रयत्न से इसके लिए समुचित वायोजन की व्यवस्था हो गई। हिन्दू धर्म के ये महान विद्वान एव नेता इसी प्रयोजन से जकार्ता से एक हजार मील से भी अधिक दूरी पर स्थित डेन पसार आए थे और उनके निदेशन में हमे उस बायोजन में सम्मिलित होने का सुब-वसर मिला था जिसमे बाली के अनेक प्रमुख विद्वान् उपस्थित थे। हमे यह जान कर सुखद बाइचर्य हुआ। कि इस्टीटयूट बाफ हिन्दू धम मे दो हजार के लगभग विद्यार्थी वेदशास्त्र, हिन्दू दर्शन, कमकाण्ड, पुराण, महाभारत तथा सास्कृतिक इति-हास का अध्ययन कर रहे हैं। सम्भवत भारत में भी कोई ऐसी शिक्षा सस्था नहीं है, जिसमे इतनी अधिक मस्या मे विद्यार्थी हिन्दू धर्म के बध्ययन मे रत हो।

हिन्दू धम सस्यान (इस्टिट्यूट) में हमें बाली में हिन्दू धम का जो स्वरण हैं उससे परिचय प्राप्त करने का जवसर मिला। हिन्दू धम बहुत प्राचीन हैं। समय समय पर उनके नए विचार-सम्प्र दायो तथा पूजा पदितयों का विकास होता रहा है। आरत में हिन्दू धम कितने ही स्वरूप हैं। चीन, वैल्लान, साक्त जादि विशेष सम्प्रदाय हिन्दू धम के अन्त-मंत है। अद्वेतवाद, विधिच्दा द्वेतवाद बौर नैतवाद तीनों हिन्दू दार्थनिक विचारमारा विख्याल है। प्रतिसाख पूजा के साय-साथ याजिक कर्मकाण्ड बौर नियु ण बह्य — डा० सत्य<del>वेतु</del> विद्यालकार

कहता है। सुब्टि के पालनकर्ता के रूप मे उसे विष्णुक हते हैं और जब वह सुध्ट को अपने में विलय कर लेता है तो उसे शिव या महेश की सजा दी जाती है। बाली के हिन्दू यह नहीं मानते कि शिव सुध्टिका सहार करता है। उनका मत है कि सब्दिया प्रकृति भी बनादि व अनन्त है। प्रलय में परमेश्वर सुध्टिका विलय करता है, सहार नहीं । विश्व की इस सर्वो-परि शक्ति को बाली के हिंदू शिव महोदय कहते हैं। वही उनका प्रधान या एकमात्र उपास्य देव है। जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह बस्तुत खरीर की मृत्यु होती है, आत्मा की नहीं। बात्मा भी अंतर तथा अमर है। पच महाभूतों से निर्मित शरीर के अन्त के साथ आत्मा का अन्त नहीं हो जाता। अपने कर्मों के अनुरूप आत्मा का पुनवंन्म होता है।

मन्यकाल में इण्डोनेशिया के हिंदू देवी देवताओं की प्रतिमाओं को मन्दिरों में प्रति-व्यापित कर उनकी पूजा किया करते थे. पर बर्तमान समय ने बाली के हिन्दुओं की पूजा पद्धति के प्रतिमाओं या मूर्तियों की पूजा का स्वान प्राप्त नहीं है। वहा प्रत्येक परि-बार के घर में एक पुजास्थल होता है। जिसके एक भाग को पद्मासन कहा जाता है। पद्मासन मे पश्चिगर के लोग त्रिसच्या करते हैं। त्रिसध्या के मन्त्र वेदछास्त्रों से लिए गए हैं। मन्त्रोक्वारण करने के परचात् ध्यान किया जाता है। इस ब्रह्म-यक के अतिरिक्त अन्य यक्त भी किए जाते हैं, पर केवल विशेष अवसरो पर। पितरो की पूजा बाली से प्रचलित है भौर परि-बार के पूजास्थल का अन्य भाग इसी पूजा के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परिवार के पूजा स्थलों के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम मे एक-एक केन्द्रीय पुजास्थल (जिसे बासी में 'पूर' कहते हैं) होता है। जो सार्वजनिक सामूहिक पूजा के काम बाता है। इसी

प्रकार प्रत्येक जिले मे एक एक केन्द्रीय पुजास्वल या 'पुर'की सत्ता है और सम्पूर्ण बाली का एक सर्वोपरि या सावभीम मन्दिर है, जिसे वे साखी का मात् मन्दिर कहा साता है। यह केवल बाली के हिंदुओ का नहीं अपित सम्पर्ण इण्डोनशिया के हिंदुओं का सबप्रधान 'दुर' है और यहा पूजाके लिए सारे देशा के श्रद्धाल नर-नारियो का भागमन होता रहता है। विश्व हिन्दू परिषद ने इसे विश्व भर के हिन्दुको के लिए तीर्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है और अब भारत के हिन्दुओं के लिए भी इसका यही महत्त्व हो गया है, जो बदीनाय या रामेश्वरम का है। यद्यपि बाली में मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं है, पर कतिपय देवमूर्तिया जब भी बहा विद्यमान हैं, और बनता उनके प्रति श्रद्धा भी रखती है। ऐसी एक प्रतिमा भगवती दुर्ग की है।

इध्योनेषिया के हिन्दुकों का यह विद्वास है, कि महां क्यास्त्य ने बहा मा कर वर्म का प्रचार किया था। बागान्स्य के प्रति उनकी क्याध लढ़ा है हमने वह व्यास्त्य गुफा भी देखी, जहां महांच ने तपस्या की बी बीर वहा रहकर उन्होंने वर्म की स्थापना की थी। जगस्य के रवनाम् महांच माकच्येय स्थोनेशिया गए थे। वहां के हिन्दू वर्म तस्याधक के रूप से उनका भी बस्यिक जादर करते हैं। गुण-वर्मा नामक एक बस्य भाषार्थ भी दक्षिण पूर्वी एशिया के लोग से वम प्रचार के लिए गुणे वे बाली के लीग उन्हें भी सम्मान-पूर्वक स्माण करते हैं।

जनताके जीवन परहिन्दूधर्मका क्याप्रभाव पडता है ? इस विषय से श्री डाक्टर शर्माने हमे कुछ महत्त्वपूण बातें बताई। डा॰ शर्मा असम (भारत) की गौहाटी युनिवसिटी मे सस्कृत विभाग के बच्यक्ष हे, और गन सवा साल से बाली की उदयन यनिवर्सिटी में डेप्टेशक पर जाकरसस्कृत के प्रोफेसर पद पर काय कर रहे हैं। उन्हें इण्डोनशिया भाषा का समुचित ज्ञान है, और बाली के जनजीवन का उन्डे बच्छा परिचय है। उन्होने हमे बताया कि सवा साल के बाली निवास मे चोरी की कोई बारदात उनके सुनने मे नहीं आई। वहां के लोग आपस में सहते-मगबते भी नहीं है। यदि किन्ही की मोटर साइकिले जापस मे टकरा जाए, और किसी को चाट भी लग जाए, पर वे लडने या एक दूसरे को दोष देने के बजाय मूस-कराते हुग ओ ३ म्स्वस्ति 'कहकर अपने-अपने रास्त पर चले जाते हैं क्यों कि वे कमफान पर विश्वास रखत हैं, केव मानते हैं कि जिसका दोष होगा उसे परमेश्वर कर्मफल देगा ही, परस्पर लडने से क्या लाभ । हिन्दू समाज का ऐसा ही उज्ज्वल रूप चीनी यात्री फाहियान ने भारत से

(शेष पृष्ठ ४, पर)

# मानव-जीवन का सर्वश्रष्ठ मार्ग

बैदिक साहित्य और साथ ही सस्कृत साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पश-पक्षी. कीट-पतग---रेगने इत्यादि योनियों के प्राणि अधम स्तर के हैं, भीर भयकर पापो के फलस्वरूप हैं। अधववेद द ४२२ मन्त्र 'उल्**यमातु**' इत्यादि के अनुसार उल्लु, भेडिया, कुत्ता, चिडिया (कोक) गिद्ध, गरुडर ६ राक्षमो से बचने और इन्हें समाप्त कर देने की प्राथना की गई है। इसके विपरीत देनिक यज्ञ है जिस मन्त्र को ४ बार पढ़ा जाता है -- 'अयन्त इध्म आत्मन्'मे प्रजा, पशु, बहादचस, अन्न और अन्न को खाने वाले 'अन्नाघ इनकी बुद्धि की प्रार्थना की गई है। यज से पूर्व स्वतिबाचन के मन्त्रों में प्राथना की गई है - 'गौपतीस्थात बहीय जमानस्य पश्नु पाहि' गौए के स्वामी हो और यज-मान के पशुकों की रक्षा करो। शान्ति करण के मचो मे 'समुसन्तु गाव' शानो अस्तुद्विपदे चतुष्पदे' और खी शान्ति' सत्र में तो जब चेतन सब प्रकार के पदार्थी में और उनके द्वारा शान्ति की कामना की गई है।

#### समानव योनि, प्रेरक आवर्श

इसके साथ यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि साहित्य-विशेषत 'सस्कृत साहित्य' मे श्रेष्ठ गुणो की जितनी उपमाए है, वे सब पशु-पक्षियो अववा अचेतन यदायों पर हैं। उदाहरण के लिए शक्ति और पराक्रम के लिए सिंह, सौन्दम के लिए कमल, पवित्रता और शुद्धता के लिए हस' अदृष्ट योगी जनो के लिए परम हस, मीठे स्वर और नान के जिए को किस जाशा और प्रतीक्षा के लिए 'चातक' सम्रहकी भावना के लिए मधुकर (भ्रमर), भारत का राष्ट्रीय पक्षी 'मयूर' कानन्द अवस्था मे नावने वाला, प्रसन्न, सुन्दर नासिका के लिए तोता (शुक), आशा में बठने के निए बातक, बालाकी-बूतता के निए सोमडी, स्वमिभन्ति के लिए कृता, सीवा सरल व्यक्ति के लिए गी, परिश्रमी के लिए बैल, अन्धकार में भी प्रकाश के लिए जुगनू, सेवा अपैर परिश्रम के लिए हाची, मस्ती बौर उछल-कृद के लिए मृग, मेह-नत के लिए बैस, चचलता के लिए बदर, भूर्तताके लिए गीदड टेडेपन के लिए सप इसी प्रकार वृक्षी में कल्पद्रुम, चन्दन, पारिक्षति चम्पक, अशोक, मालजी, केतकी दाडिम,द्राक्षा, नारियल, शाल्यलि नीम, इक्षु (गन्ना), कपास, करीर, बास, सता इत्यादि चेनन अचेतन पशु-पक्षी, पदार्थ इत्यादि की उपमाओं से भारत का संस्कृत साहित्य भरापडाहै जब कि मनुष्य सबश्रेष्ठ प्राणि कहा जाता है।

ध्र व सत्य मानव सर्वश्रेष्ठ है

ष व सन्य यही है कि मनुष्य सबश्रेष्ठ है। क्यांकि उसके पास बुद्धि, मन, ग्राभा सहित वह अदभूत शक्ति भण्डार है जिस के सह।रे सवगुण भण्डार परमात्मा से बल और प्रकाश की बाचना और उसके लिए बहुनिश सिकारहता हुआ अध पतन के अन्यकारमय गर्तसे निकल हिमालय की सर्वोच्च खोटी तक पहुच सकता है। विदव इतिहास इस प्रकार के अ्वलन्त जीवन के व्यक्तिया से आप्रित है। अधववेद मे भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है-

#### माचार्यं दीनानाच सिद्धान्तालकार

पठात हथिव्या अहयन्तरिक्ष मास्हय अन्तरिक्षात्। दिवमारुहय दिवो नाकस्य पुष्ठात् स्वज्योति रगहम् ।

वर्षात् पृथ्वी की पीठ से अन्तरिक्ष पर पहुचू। अन्त से बौलोक और बौलोक से सुक्तप्रद ज्योतिको प्राप्त करू। पर कैसे ? क्या खलाग मारकर ? नही -- इस के लिए नोतिकारों ने तीन मार्गबताए

### प्रथम मार्ग-पिपीलिका

१ पिपीलिका मार्ग--- विकटी का मार्ग। मकान के फछ के एक कोने मे अन्न पडा है। चिकटी उसे कपर छत पर ले जाना चाहती है। वह अन्न कण को अपने मुहमे हाल बीमे-बीमे जागे बढती हुई छत पर चढना प्रारम्भ करती है। आप घ्यान से चिक्रटी के क्रिया-कलाप का निरीक्षण करें। जहा एक बोर बागे बढ रही है वहा साथ ही रास्त में मिलने वासी चिकटिया के मुहसे मुहलगाफ र्शपर पडे बन्य के बारे मे वह सन्देश देती जाती हैं। एक भ्रमेज विद्वान ने इस तुच्छ और अति स्वल्प प्राणी के बारे मे चिरकाल तक अध्ययन करने के बाद अपनी पुस्तक मे लिखा है कि 'सगठन और पारस्परिक एकता और सौहार्दकी दृष्टि से चिऊ टी मनुष्य से कही अधिक आगे हैं। वस्तुत श्रोममार्गं पर चलने के लिए नियमित और अटूट भने ही स्वत्य धंय सहित प्रयत्न वनिवाय है। गीता मे श्रीकृष्ण का निस्न उपदेश साधक के सम्मुख बहुनिश रहना बाहिए-

धनै भनै रुपरयेन् बुहुपाधृति गृहीतया। माम सस्य मनद कृत्वा न किचि यि

चिन्तयेत्।। ६।५

वर्षान्-वैय से काबू की गई बुद्धि की सहायता से बीमे-बीमे अपने मन मे सासारिक विषयो के उदासीन रहने का बम्यास करो । इन दोनो साधनो के बाद मन को बाद्या के बाधीन करे। इसकी फलप्रति कही फिर किसी प्रकार की चिता

महासारत. उद्याग पर्व ३३।४२ मे व्यासमुनि कहते है कि जिस प्रकार दीपक वन्मीक (अपनामिद्री से घीमे-धीमे घर घर बनाता है, इसी प्रकार किसी प्राणि को कष्टन देता हआ। पर लोक सहायता के लिए धम का धीमे-धीमे सचय करे। नीतिकार कहते हैं 'प्रतिविन मनुष्य अपने आचरण की पडताल कर यह देशे कि क्या मैं पशुमाग पर चल रहा हुआ बवाश्वेष्ठ पुरुषो के मार्गपर। हे मनुष्य । बार-बार सावघान होकर यह देशों कि क्यार्ने पश् तुल्य हु अथवाश्रेष्ठ पुरुषो की तरह। तुम्हारे जीवन का आज के

दिवस याद रखो सूथ बस्त हो जाएगा।

### २ कपि मार्ग

दूसरा कपि-वानर मार्ग है। सदा चचल, अस्थिर भीर एक बाबाव वृक्ष से दूसरी शास्ताव वृक्ष पर सदा छलाग मारते रहना। सारा जीवन इस प्रकार च बलता में ही नष्ट कर देना, इस मार्ग का यही परिचाम होता है।

देखा या अब बहु गुप्त देश के शासनकाल

३ विहगम मार्ग

बिहगम अर्थात् आकाश मे बहुत ऊचा उडने बाले पक्षी को कहते है। ससार मे कुछ व्यक्ति ऊचा उडने वाले पक्षी की तरह इतने उच्च चरित्र के हाते हैं कि सामान्य पुरुष उनकी ओर आश्चय और भ्रमसेनत मन्तक हो देखतो सकता है पर उनका उस सामान्य व्यक्ति क लिए सम्भव नहीं हाता। कबीरदास न ऐसे महापरवों के लिए ही शायद कहा था ऊ वा ऊ चा सब कोई कहे. ऊ चन मे ताल खजर।

बैठन को छाया नही, फल पाना अति दूर।।

योगवर्शन का माग-वृद्ध मूमि महाकवि कालिदास न रथवश के प्रारम्भ से ही श्रीराम के जीवन की तुलना उस आस बृक्ष से की है जो छाया अरैर फलो से भरपूर है। थके यात्री को इसके नीचे बैठ पूर्ण शान्ति और भूका मिटाने के लिए फल-दोनों की यथेटठ प्राप्ति होती है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न म।नव को करना चाहिए — अपने और दूसरों के कल्याण के लिए। इसे ही योगदशन के प्रथम पाद में 'जीवन की दुढभूमि' कहते हुए दीवकाल निरन्तर और श्रद्धापूनक' पालने का उपदेश दिया गया है। के सी ३७ वो अधोक विहार दिल्ली-४२

पृष्ठ ४ का शेव

मे भारत बाया या। डा॰ श्वर्मा के अनू-सार हिन्दू वर्म से प्रभावित बाली के बन जीवन का बाज भी यही उज्ज्वल रूप है। बाली के हिन्दू जब परस्पर मिलते हैं तो भोस्वस्ति वस्तु<sup>'</sup> कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। विक्षान व बहें लोग आशीर्वाद देते हुए 'ओ दीर्षायुरस्तु' तथा 'बो विष्णमस्तु' भी कहते हैं। वहा के जनजीवन पर संस्कृत भाषा के इस प्रमाव को देखकर गौरव की अनुभूति होती है। केवल बाली में ही नहीं अपितु अन्यत्र भी मस्कृत का यही प्रभाव विद्यमान है। वहा के होटलों के नाम स्वस्तिक' 'अम्बर रक्त' और 'आय' बादि है। एक बैक का नाम 'अर्थलोक है। इण्डोनेशिया मे राजपति की 'कपाल नगर' सज्जा है। वहां की भाषा मे नगर का अर्थ है राज्य और सस्कृत मे भूषिका पर्याय है। हेनपसार के हवाई अब्देकी दीवारो पर रामायण की कथा रूपावलिया विजित है। बाली मे प्रवेश

इण्डोनेशिया मे धर्मेशिक्षा सबके लिए वनिवार्य है। हिंदुको को हिन्दूधम को मिका वनियाय रूप से दी जाती है और वसमे वत्तीर्ण हुए बिना कोई विद्यार्थी कपरकी कक्षामे नहीं जासकता। यही कारण है कि वहा के सब निवासी अपने

करते ही यह अनुमव होने लगता है, कि

हम आर्यावत्त'मे बागए हैं। जहाकी

प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू या बाय है, और जहा

बहुत से लोगों को गायत्री मनत्र कण्ठस्य

वर्ग से परिचय रक्षते हैं।

बाली के राज्यपाल श्री मन्त्र हैं। हम उनसे भेट करने के लिए उत्सुक थे। अपने व्यस्त समय मे से दस मिनट निकाल कर उन्होने हमसे मिलना स्वीकार कर लिया। पर जब हम उनसे बात करने बैठे, तो समय का किसी की ज्यान नहीं रहा। एक वण्टे तक उनसे बातचीत होती रही। मारत की विद्वत्मण्डली से मिलकर उन्होंने कहा सदियों के बाद भारत के इसने विद्वानो ने हमारे देश मे पदार्पण किया है। भारत से हजारी प्यटक अमेरिका, युरोप, जापान माबि जाते हैं। पर दक्षिण पूर्वी एशिया के इस क्षेत्र में भारतीय यात्रियो की यह पहली मण्डली आई है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हजारो साल प्राना है। हमारी और बापकी सास्कृतिक तथा धार्मिक परम्प-राए एक है। इस दशा में हमारे और मापके सम्बन्धों से वृद्धि हानी चाहिए। मुक्ते जाशा है, कि मविष्य म भी भारत के विद्वानो व यात्रियो की मण्डलिया वाली माती रहगी। राज्यपाल महादय न जल-पान द्वारा हमारा जातिच्य किया और हमारे माथ फाटो भी खिनवाई। जिस आत्मीयता क साथ श्रीमन्त्र ने हुम स मेट की, उससे सबके हृदय गद्गद् हो गए।

उसी दिन सायकाल हिन्दूषम सस्यान मे एक बन्य आयोजन हुआ, जिसमे स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य बहुाचारी

(शेष पुष्ठ = पर)



# महर्षि का सदेश विश्व मे फैलाग्रो

त्रारबी भाषा मे सत्यार्थप्रकाशकाप्रचार-प्रसार ।

बम्बईमे महर्षि निवणि शताब्दी

क बन्बई महानगरी की समस्त जायसमाजों की जोर के जायसमाज सान्तक क क बावबान में रामनीचा मन्तन चचनेट में महाँच स्थानन बेलियान खताब्ही म्बामी स यप्रकाश सरस्ती की अप्यक्रता में रूप १६ अक्तूयर को मनाई मंगी । कायकम १६ अन्तुवर का कि मी कलाकारो एवं समीतकारों ने महाँच स्थान क की समीतमय श्रद्धा जाति से प्रारम्भ किया। प्रावकारिका सुन्नो जयनी धिवराम एवं बीचक चौहान जादि के गाये सह ए इस तेरे उपकरन मूला। 14 है तुमका महाच तू ने हम जमा दिया गीत बहुत मराहे गए।

"१ ८ अस्तूबर को विभिन्न बर्मों के प्रतिनिधियों ने महुवि द्यान के प्रति अपनी प्रदान लिया प्रस्तुत की। वस्तानों ने महुवि को मृत्युद्ध हमान्युद्धारक बन्ध विद्यामां के उपन एवं भागनीय संस्कृति का पुनरद्धारक बतवाया। हां। नृत्याद ने कहा जा हि दू पन छोडकर व य मन्द्रहों में चल गये थे शुद्ध का चक चलाकर द्यान द और उनके अन्यायिया ने उ है पन गल लगा लिया। अध्यक्षीय भाषण में स्वामी म प्रमुक्ता ने कह महुवि न भोड़ हुई जबानता एवं व अध्यक्षाय भाषण में स्वामी म प्रमुक्तान न्यर एकता के तुल म व पन वो काणिख को। २० अवत्वर का। भाग म गा० असरब बाय और स्वामी स्वयक्षा भी ने कहा कि महुवि के से देश को फलाने के लिए हुमें जियानरी तयार करने हाये जा भारतीय मह्कृति क्ष्यया हा। यह विदेश तक पहुंचा करत य की प्रतिष्ठा राज्य प्रमुक्त आया न मक्त्य तिया कि तह एक लाल स या प्रमुक्ता वर्षों भाषा म प्रकृति करने स्वामी न्यर्थन साथ ने महिता कि नहें का लि व के काने को ने प्रकृत्याय न स्प्रस्ती के महिता का वि व के काने को ने प्रकृत्याय ।

# ग्रन्थियो की राजनीतिक भूमिका रोको हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिह

का आह्वान

ह य जा रक्षा य हिनी एव आय प्रतिनिधि सभा हरय जा के अध्यक्ष प्रो सार्नितृत गरू वस्तव्य म कहा है दरबार नाहुत अमनसर के प्रथियों को चर्चा आज कल खंद गोवाणा तथा समाचार पत्रा म हा रही है। जिस प्रकार मन्ति स पुरोहित होने है उसी प्रकार गरद्वागम थी न्यिक्त किए जाते हैं बतमान प्र मुक्ब प्रयोजयना उम्म प्रवार काय छोडकर राजनीति क दलदल से कसने लगे हैं। उ होने हाल है म शिव मणि अकाली न्य की तन्य निर्माण को भा करके तक सिमित का गठन किय है। सन्नार प्रकालसिंह स्वीठ कायक्ती प्रका क का इन्सिल् हटाया है

# रामकृष्ण का आदशे अपनाए

नेपाल में व्यापक वेद प्रचार

श्रा ५ महारानी के व स दिवस पर दिनाक ६ नवस्वर से १६ नवस्वर तक बीन्यज गीता भवन क प्राण्य में गाय त्री महायज तथा वेद प्रवचन हो रहा है। जिसमें स्वामी का व्यान व जी श्री प रामान न्द्रास्त्री आगे प गायापर साहती उपदेक्क तथा श्री द्यान न स साथीं भवन पदेशक पथ रेहुए हैं। दिनाक १०१६ न्द्रे को श्री रामाशा वरागी मवानक की अध्यक्षता म हुई जिसमें बंग वीर दल के गठन पर प्रकाश हालते वताया कि किसी भी देश के यूनक और युविया का जीवन चरित उपवाहीना चाहिए तभी राष्ट्र की उन्नति होती है। अत राम और कृष्ण के जीवन चरित्र स्वारश अपना कर वपना तथा अपने राष्ट्र को ऊच्च उठाए।

गुरुकुल सस्थाको द्वारा हमले की भत्सना

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा असवाल कथा (शोनीपत) एव कचा गुरुकुल खानपुर कला के वरिष्ठ शस्त्रवो एव विभिन्न विश्वण स्टबाबा की समुक्त बँठक म पन्यभी सुभाविणी देवी की अध्यक्षता में प्रस्ताव स्वीकार कर भारत की प्रवान म श्री श्रीमती इत्तिरा गांधी की निमम ह या की कडी अत्यना की गईं। साब ही भू पु शिकाम श्री हरयाणा सस्यामों के प्रवान चीठ सावृश्विह के बाकरिसक निवन पर शोक प्रकट किया गया।

# मानवता के लिए बड़ी चुनौतो

सर्वजातीय सर्वसाप पचायतद्वारा

जघन्य हत्या की निन्दा

बेरी जिला रोहतक। नवम्बर को सवजातीय सवलाप पंचायत के सम्मेलन म २३ सापों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सवसम्मित से प्रस्ताव स्वीकार कर घोषित किया। प्रधानमंत्री सीमती इन्दिरा गांधी की उनके प्रगरसको द्वारा निमम हाया देश

अवानन ना लानता इत्यार पादा का उपण्य नगरवान के लिए मी वदी चुनौती है। का प्रवादावकता के वहरीने रग में रगे हुए एक सम्प्रदाय के लोगो के हाथी विश्व की महान नेता की हत्या एक वच्य वर्षाच है और देश की अस्मिता और एकता पर गहरी चोट है। सवजातीय नवलाय प्यायत का यह सम्मेलन इस वर्णित अपराध और वर्षाच की थोर निदाकरता है।

### गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश व्यापकता (पच्ठ २ का शेष)

रखते है कि हमारी विक्षा गरकलीय जीवन पद्धित को पपना भूल समक्ष बौर जीवन निमाण की उस दिखा को सबस मुद्ध म समक्षा गुरुकत जीवन पद्धित एक आदोलन है जितक। उ स्य उन म नव का निमाण करना है जिस अकर का मानव हम समाज में देखा म और विक्व से देखाना बाहते हैं ऐसा मानव जो जब पतन के सब अयोगनों से भुक्त होकर खा मानव जीवन का निमाण करे। इसके लिए नीव का काम गुरुकुल जीवन पद्धित के उन मल तत्वो का उमारते से ही किया जा सकता है का यथा गिकित हाकर भी हम अबिशिक्त रहने इस प्रकर को जीवन प्रवित का नरकल विवविद्यालय में के प्रवासकर सकी गीवन सकी गीवन हुए सहर हर राज्य म कालन की योजना का दग ज्या पक रूप देने से ही नव मानव का निर्माण ही सकता है। देश का आवश्यकता पुस्त कीय खिला के साथ साथ गरकलीय जी हो के उप प्रकर कीय शिक्षा के साथ साथ गरकलीय हो है। देश का जीविष्ण के सिद्धा तो को ज्य पक रूप देने की है। दक्षण ७६ ए स्टर ईल सा नई दिली ४६



# वह देश के लिए शहीद हुई विश्व इतिहास में ऋनू वे की तिमान इन्दिराजी को श्रद्धांजलिया

नई दिल्ली। भारत की प्रधानमात्री श्रीमती इदिरा गांधी की उनके सुरक्षा सैनिको द्वारा हत्या किए जाने पर व्यापक प्रतिकिया हुई। वायसमाजा आयसस्यामा एव सामान्य जनताने इस पर गहरादुक्त विभिन्यक्त किया है। भारतीय हिन्दू रक्ता समिति एव दयानन्द सम्यान की अध्यक्षा पण्डिता राकेशारानी ने अपन श्रद्धासुमन

था। अभावप्रस्त लागा क लिए उनके हृदय म सहानुभूति का सागर लहराता या वह देश के लिए जीवित रही और देश के लिए शहीद हुई।

आयसमाज बिडला लाइ स कमलानगर क्षत्र न अपने शाक प्रस्ताव म चापित किया-भीमती गाघी क दूरदर्शी साहसपूर्ण नेतृत्व म देश ने प्रत्यक क्षत्र मे जो कीर्तिमान स्थापित किए है उनके लिए श्रीमती गांधी विश्व इतिहास में चिरविस्मर-णीय रहनी । उनके निधन से राष्ट्र की जा अपार श्रति हुई है, वह अपूरणीय है।

अर्थित करते हुए कहा इदिराजी का सारा जावन राष्ट और समाज के लिए अर्थित

आयसमाज कृष्णनगर ने एक प्रस्ताव द्वारा अपन ही सरक्षका द्वारा विश्वासचात-पूजक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के कृत्सित कृत्य तथा थिनीने पडयत्र की निन्दाकी।

### बिना लाइसँस तलबार रखने की छूट हो

एक अ य प्रस्ताव द्वारा आयसमाज कृष्णनगर ने भारत सरकार और प्रधानमंत्री से मागकी कि अपनी रक्षा के लिए दिल्ली क सभी आयब बुआ कादि नीव पजाब की भाति बिना लाइमस तलवार रखन की छट दा जाए।

आयसमाज लक्ष्मीनगर विस्तार दिल्ली ६२ न एक प्रस्तावद्वारा उन तत्त्वा की घोर निदाकी बाइस अघय कुक्टय क लिए जिस्मदार है भारत विराघी शक्तियों क इशारे पर ही एक षडयत्र द्वारा भारताय र ष्टीय ननुव का समाप्त करने की काशिश की गई है।

आयसमाज रानी तालाब गुरुकुल विभाग भीराजपूर गहर न एक प्रस्ताव मे दिवगत आत्माकी घानिक सामाजिक एव राजनीतिक उपलब्धियाका चर्चाकी

### शास्त्रार्थ महारथी प० गणपति शर्माकी मुति प्रतिष्ठित

चुरू श्री मेश्री द्यमित के व्यक्तित्व पर प्रकादा डाल जाएगा

चूरू । श्रास्त्राथ सहार-ी प० गणपनि द्यामा को अवक्क्ष प्रतिसाँ उनक जम स्थान राजस्थान चूरूनगर के इद्रमणि पाक में स्थापिन की गइ है। प० गणपति शर्मा पुरालदेपीढी के अवस्य विद्वान तथा जपूत बक्ताये । उनकानिधन १६१ मं हुआ। था। इस प्रतिमा की स्थापना चूक नगर की एक मास्कृतिक मस्या नगरश्री ने की है। प्रतिमा के लिए नगर पालिका चूरू ने प्रमुख सावजनिक उद्यान में स्थान उनल व्यक्त कराया तथा नगर के बनी मानी मज्जनो ने उन्मुक्त रूप से धन प्रदान किया। यह स्मरणीय है कि इस नगर मे आयसमाज भी नही है।

प्रतिमा का अनावरण आयसमाज के प्रमुख शोध विद्वान डा भवानालाल भार-तीय ने किया। मुख्य अतिथि कंरूप में बालते हुए उन्होंने प० गणपति शर्मा कं वेदुष्य पर विस्नारपुवक प्रकास डाना तथा नगरवामिया को प० गणपति जी की स्मृति को विरस्थायी बना ने के लिए वन्यवाद दिया। नगरश्री के म त्री प्रसिद्ध पूरातत्विद और अप देवक श्री मूडोब अप्रशल ने सभाका मचालन किया और समारोह की अध्यक्षता डा० ब्रह्मानन्दे सर्मा (पुत्र अन्यक्ष प्राच्य विद्याप्रनिष्ठान ओवपुर) ने की । श्री सुबाध । प्रवाल न विश्वास दिलाया कि निकर भविष्य म नगरश्री के द्वारा प गणपति शर्मा कंजीबन एव ॰पक्तित्व को चरू शीनामक पत्रिकाक एक विशेषाक करूप से प्रकाशित किया जाएगा। यह भी स्मरणीय दें कि अर्थं सामाजिक मर्यादा को घ्यान में रखते हुए प्रतिमा पर फूल मालाए जापत नहीं की गई और समारोह एक इतिहासपुरुष की स्मृति को सुरक्षित रखने की भावना से ही सम्पन्न किया गया।

#### भारत को बन्तर्राष्ट्रीय शिखर पर पहचाया

१० नत्रम्बर का महाशय धमपाल की अध्यक्षता में महाशय चुनीलाल धर्मीय ट्रस्ट के देद प्रचार विभागकी ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी के जबन्य हिंसा काण्ड की निन्दा करते हुए वोषित किया गया कि श्रीमती गांधी ने अपना सारा जीवन राष्ट्र सैवामे समर्पित कियातया भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षत्र मे उत्तत क्षिखर पर पहचाया। परमात्मा से यह प्राथना भा की गई कि प्रधानमन्त्री राजाव गांधी को श्रीमती गांधी के अधरे काय को पूण करने की श्रक्ति प्रदान करें।

-श्रायसमाज मन्दिर माग द्वारा गायत्री मन्त्रोचनारण के बाद दिवगत बात्मा की शान्ति के लिए प्रमुखे प्रार्थनाकी गई।



# सार्थक पुजा

सहाराष्ट मे एक बढ मत हुए है -- मत एकनाथ। एक बार तीर्घाटन करते हुए वह प्रयागराज पन्चे वहा होने अपनी बहगीम ली कावरी त्रिवेणा क पवित्र जल से भरी। सोचाउसे रामेश्वरम मे चढाएग। उन साथ पुरामतम न्लीशी। सात्रा करत करने सतो की टाली रामेश्वरम के पास जा पनुची। नक्ष्य समीप हा था कि सत एकनाथ ने देखा—रामेक्वरम तीय के मृत्य द्वार के समीप रास्ते पर एक गर्भा पाना की प्यास से ब्याकुल तडप रहा था। लक्षणा से लगता थाकि यति कुछ पलो मे हो उस पानीन मिल। तो वह तक्कप नडपकर जान द देगा। उसका 🚈 देखकर सन एकनाय द्रवित हो गए । उन्हाने अपनी बहगी में कावरी खाली और उससे पवित्र त्रिवेणी जल लेकर उस ाो गप्रका पिला दिया। और वह स्वस्थ मशक्त होकर घाम चरन लगा।

मतो की उस मण्डली का स्त एकनाण का यह व्यवहार पस र नहीं आया। एक बढबोला साव बाल उठा एकनावजा आप तो बड सत समक्ष जाते हे पर तू आप नी महामूख निकते। इनना कष्ट तपस्या कर प्रयागराज का पवित्र गगाजन आप रामेश्वरम कमदिर पर भट चढाने के लिए लाए उस ग्रापने व्यथ ही एक मूल्य गचको पिलादिया । अर्थरामेन्बरम के तीथ पर जल च्ढान क पुण्य से बिचत रह गए । सत एकनाथ ने हाथ जोरकर कहा--- हमारा दयालु भगवान ता सभी चराचर जीवा मे थाप्य है सारा ससार हा उसका बसली स्वरूप है मैने ताएक पीडित दुस्ती प्राणी का पानी पिला दिया। उसका प्राणरक्षाकी। समक्षामंगी पूजा तो नाथक हा गई। नरे ह

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपर द्वारा महाघ द्यानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शान्तिप्रकरण स्त्रस्त्रियाचार वर्णव प्रसिद्ध भजनापदशका-

सत्यपाल पथिक आमप्रकाश बमा पन्नालाल पीटप रोजनलाज परिक शिवराजवनी जी के सर्वात्तम भजना असम सामान प बद्धदा विद्यालकार क भजन का सग्रह।

आय समाज के अन्य भी बें 'ने संस्मिक सचीपन के ना पर कन्स्टोकॉम इलैक्टानिस्स (इण्डिया) प्रा लि 14 मक्टि | 1 फ्स | अशार विहार दहली 57

> फान 7118326 744170 टेलक्स ३1-4673 NKC IN - प्राप्ति स्थान -

यह कैसेट बिस्ली द्यार्थ प्रतिनिधि सभा १४ हनुमान रोड नई विल्ली पर भी मिलते हैं।



30वे सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

#### मार्यसमाज जगपुरा का बाविकोत्मव नवनीतलाल सत्यप्रिया दुस्ट का जानोपयोगी काय

बायसमाजभागल के ४४ वे वार्षिकात्सव पर २६ धनतूबर को श्रीमती प्रेमशील की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन हुआ। श्रीमती उपा घास्त्री एवं माता लाज-बल्ती जो न बनमान समय में नारी का कलेल्य विषय पर उदवीधन किया। सत्यासिनी मीरा यतिजी न अरुन्दती तारे का जवाहरण देते हुए सहनशीलता द्वारा परिवारी को सुस्ती करने का परामश दिया।

शनिवार २७ अक्तूबर को नवनीतलाल सत्यप्रिया ट्रस्ट के तत्त्वावचान मे श्रीमती सत्यप्रिया जन्मदिवस बनाया गया। चामिक परीक्षाओं मे प्रथम द्वितीय, तृतीय खाने बाले छात्र-छात्राए पुरस्कृत किए गये। आर्थ पाठकाला अगपुरा को ट्रस्ट की बोर से १०००) का दान दिया गया।

महींच निर्वाण दिवस कविराज क्वानचन्द की बच्यक्षता भे भनाया गया। इस अवसर पर वैद्य रामकियोर श्री कर्णदेव झास्त्रीश्री क्वलास सास्त्री, श्री कर्लदेव स्वनीपदेशक ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

श्रीमती सत्यवती सूद बाय सैकेण्डरी स्कूल मे आयं वीरागना प्रशिक्षण शिविर

की सफल छात्राए पारितोषिको से सम्मानित की गई।

### मानव-जीवन का सर्वभेष्ठ मार्ग (पृष्ठ ५ का खेव)

रामबीर तथा ब्रह्मचारी विरजानन्द वेद-कर्णीने योगासनो काप्रदर्शन किया। ब्रह्मचय के पालन तथा योगाम्यास से मनुष्य कितनी शक्ति प्राप्त कर सकता \* जिससे कि लोहे की छड त माडी जा सकती है, इसे कियास्म देखकर सब कोई बारचयचकित रन सस्यान के दो हजार के लगभग छात्रो तवा आचार्यो पर इस प्रदर्शन का बच्छा प्रभाव पढा। इन्डोनेशिया क हिन्दुओं की दर्ष्टि में गंगाजन का बहुत महत्त्व है। ये उसे पवित्र मानते हैं। गगा के व्यतिरिक्त यमुना, नर्मदा, गोदावरी शादि अन्य भारतीय नविया भी उनकी दृष्टि मे पवित्र हैं। वहा के हिन्दुकों को . उपहार मे देने के लिए हम वगाजल साव

से गए वे । उसे उन्होने कृतक्षतापूर्वक स्वी-नार किया।

गली में हम उन बाकर्षण पर्यटन ⊣सो के अवसोकन के लिए भी गए,पर े लिए वहा का प्रधान आकर्षण वह

त्व या, जिसमे भारत की प्राचीन मः था सास्कृतिक परम्पराए जोत-२ थीं। हम बहा की भाषा नही जानते र रवहाके लोग हमारी भाषा नही धमानं वे, पर यह जानकर कि हम भी हिंदू हैं उनके मुख्यमण्डल पर बात्मीयता के वो भाव उजागर हो वाते थे, उनके माधूर्यको जब्दो द्वारा प्रकट नहीं किया

> ए १/१३२ सफदरबन एनक्सेन, नई विल्ली-२६

### बार्यसमाज पहाड्गज चुना मण्डी का ४८वां उत्सव

भायसमाज पहाडगज चनामण्डी नई दिल्ली का ४८ वा वाधिकोत्सव १६ से २५ नवस्वर तक मानाया जाएगा। इस अवसर पर १६ से २४ नवस्वर तक प्रात ६ से द बज तक चतुर्वेद शतकम यज्ञ तथा उपदेश काकायकम होगा। इन्ही दिनो रात्रि को दा। से १० वजे तक वेदक वा हागी। २३ नवस्थर को प्राप्त ११ से ४ वजे तक आय महिला सम्नेलन २४ नवम्बर को रात्रि के ७-३० से १०वजे तक आयगुवक सम्मेलन होगे। ४५ नवस्वर को प्रात स्से १० तक यज्ञ की पूर्णाहृति के बाद १० से १२-३० तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

॥ अगे३म् ॥

# आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

### निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए

कर दान दीजिए

दान की राशि आयकर ~ म जी० ८० के अन्तर्गत करमूक्त होगी।

> सारा बार मनीमार्डर/बैक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी बार्य । नेत्र विकित्सालय, सी-१, जनकपुरी, नई दिह्सी-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकित किए जाएगे। निवेदक

रामगोपाल शालवाले सरक्षक स्यदेव महाशय धर्मपाल श्रोमप्रकाश आयं चिकित्सालय एव प्रधान. विल्ली बार्य प्रति- प्रवान बार्य मत्री महाशय सा॰ बा॰ प्रति॰ समा, निषि सभा चुन्नीसास चेरिट तीयन्य से महाशिक्षा दी हट्टी प्रा० लिमिटिड, १/४४ कीर्तिनमर बीधोपिक सेत्र नई दिल्ली ११००:

उत्तम स्वास्थ्य के लिए फामसी, सेवन करें

शासा कार्यालय - ६३, गली राजा केशरनाव

काम न० २६१८३८

चावडी बाजार, दिल्ली-६



# दिल्ली आर्यं प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक

मूल्य एक प्रति ५० पैसे क्य क भक्ष रविवार २ दिसम्बर १६८४ बाव सबत्सर १९६०८५३०८४ १० मागशीय सु० २०४१ वि० दयानन्दाब्द--१४८

# जनतन्त्र का त्र्याठवा महाकुम्भ प्रारम्भ रणभरी बजी : नामांकन

# बनारे के लिए अपना मत दे" प्रार्थ समाज की घोषणा

नई दिल्ली। भारत मे लोकत त्र की झाठबी ससद के लिए चुनाव घोषणा हो चुकी है। २४ दिसम्बर एव २७ दिसम्बर ८४ को लगभग ३८ कराड मतदाता विश्व के सबसे बढ जनतन्त्र के लिए ५१५ प्रतिनिधियों का चयन करेंगे।

महर्षिदयानन्द और बायसमाज ने देश की स्वतन्त्रता और जनतन्त्र के लिए सतत प्रयत्न किया है। देश के हित की आयसमाज ने सदैव सर्वोपरि माना है और ठीक उसी दिशा मे प्रयत्नशील रहा है। क्योंकि यह बायसमाज का वपना स्वभाव है, कसव्य है। बायनमात्र का अपना सत है कि देख से सुराज्य स्वापित किया जाए। फसत यहा पर स्वस्य स्वच्छ न्याय परायण सोकश्रिय प्रचासन के लिए राष्ट्र के समस्त नागरिक विवेक से काम लेगे ऐसी सायसमाज की मान्यता है।

# रामगोपाल शालवाले की विहार यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न डा० दुसनराम से विचार-विमर्श

दिनाक २४ नवम्बर ६४ गया रेलवे स्टेशन पर सैकडो की सख्याम विभिन्न आध्ययमात्रों के अधिकारियों एवं कायकनाशा ने लाला रामगोपाल शालवाल का खान-दार स्वागन किया । रेलने स्टेशन पर ही प्रतिनिधि सभा के प्रधान पहित बासुदेव सर्मा, मन्त्री हरिदास ज्वाल आर्थवीर दल के सचालक रामाध्य वैरागी नवादा के मत्री द्वारका-प्रसाद आदि भायजन स्वागताय उपस्थित थे।

रेसवे स्टेशन से लालाजी बायसमाजमन्दिर में पथारे वहा हजारा की सक्या मे लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगो ने सावदेशिक प्रधान का हार्दिक स्वागत किया और उन्ह पूर्ण मालाओं से लाद दिया। लालाजी का ओजस्वी मावण हुवा। इसी प्रकार के कार्यक्रम विहार के अन्य जायनमाजा - नवाद रजीली में भी हुए। पटना म सालाजी ने दूसनराम से मट की। मन्त में समस्त आयद्यव्यनों ने समा प्रधान को रेलवे स्टेशन पर भाव मीनी विदाई दी।

# वैदिक धर्म-महासमा का चुनाव

हाल ही मे वैदिक थम-महासभा के पदाधिकारियों का जा चयन किया गया वे निम्न प्रकार से है ---

स्वामी र नदेव जी सरस्वती --सस्वापक एव प्रधान । महात्मा जानन्द मूनि बानप्रस्थी -- उप प्रधान । स्वामी जगत मूनि जी--- उपप्रधान । स्वामी गारक्षा सरस्वती --- उपप्रवान । डा॰ सुदशन देव वाचाय (एम॰ ए॰ पी॰ एच॰ डी॰ रोहतक) --- महा-सन्त्री। बाल ब्रह्मचारिणी बहिन कलावती शास्त्री।---मन्त्री एम० ए० प्रभाकर---स्वामी बागानस्य सरस्वती-मन्त्री । श्री अनरसिंह बाय कार्तिकारी-प्रचारमन्त्री एव कीवाञ्चव ।

### देश में डाकघरों की स्थिति

- 😑 १५ अनस्य १६४७ को स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमारे देशा मे केवल २२ ११६ बाकसर से।
- ३० सितम्बर, १६०४ तक डाकचरो की सस्या बढकर १,४४ ७७२ हो गई।
- 🕳 ग्रामीण क्षात्रों में डाकघर इस प्रकार से खोले जा रह हैं कि ग्रामीणों को डाकघर पहुचने के लिए तीन किलोमीटर से अधिक न चलना न पड । पिछडे और जनजाति क्षेत्रों को डाकवर खोलने में प्रावमिकता दी जाती है।
- 🗆 बचत करने की आदत डालने के लिए प्रत्येक डाकबर में बचत बैक की सुविधा है और यह देश का सबसे वडा वैकिंग तत्र है।
- 🗁 देश की कुल पाच लाख पेटिकाओं में से चार लाख से अधिक ग्रामीण क्षत्रों में हैं। देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच सम्पक्त की कही होने के कारण डाक तत्र राष्ट्रीय एकता का एक प्रमावी यन्त्र बन गया है।

# भारत का समुद्री तत

- मारत का समुद्री तटकर्ती क्षत्र ६०८० कि० मी० सम्बा है तथा इस तट रेखा पर १० प्रमुख तथा १०५ छोटे बन्दरसाह के बलावा असरय छाट छोट पवन हैं।
- ा हमारे देश म समुद्र मे चलन वाले °० लाख जी० बार० टा० स अधिक जहाजो
- मारत का विदेशी व्यापार ५०००० करोड ६० का है और लगभग यह पुरा ·यापार समुद्र स होता है। विदेशी व्यापार की ३३ प्रनिशत से अधिक की दलाई भारतीय जहाजो द्वारा होती है।
- अपतटीय क्षत्र में तेल की खांज के लिए देश में 2-20 का करोड द० का निवेदा
  हुमा है और हम श्रीघ्र ही ३०० साख टन तेल निकार्त के विका । ""
- ा हमारे पास हिन्द महासागर मे अधिकतम विशिष्टि आर्थि**क को न है जिस्सें स**निज एव जैब सम्पदाबी का विशाल महार है।
- भारत मे समुद्री सतह के खनन मे अप्रणी निवेशक की स्थिति प्राप्त कर ली है और सनिज सम्पदाओं के विभिन्न स्रोतों की सात्र के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

### बाई० बो० चह्नाण नहीं रहे

भूतपुत्र उप प्रधान मन्त्री वय वृद्ध स्वतन्त्रता सैनानी एव देश के मुख्य राजनेता श्री यशकत राव चह्नाण का ४५ नवस्वर का दिल्ली म दहावसान हो गया। उनको बायु ७१ वष की थी।

### हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष का निचन

विक्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह जी का निधन हो गया । उन्हेदिल कादौरापडाचा। वे ६० वय के थे।



परमधिता गरमेक्बर न सृष्टि के बादि में बाज से एक जरब छियान के करोड प्रांठ लाय की पह जरा किया न के सातव-कर्याण के लिए बार ऋषियों की बास्माजी में एक-एक वेद का जान दिया इसीलिए वेद का नाम अर्ति भी है। वेद ईस्वरीय जान है यह तर्क यृष्टिय सातव अर्थाण एक स्वाव दे प्रमाण से भी दिय किया जा सकता है। जेसा कि बाबूबर में कहा है

तस्मादयज्ञात सर्वहुतः ऋष सामानि जिसरे।

अन्दामि जित्ररे तस्माद यजुस्तस्माद

जायत् ॥ (यजु० ३१।७)

यात्री उसी परभेश्वर से ही ऋग, साम, यजु और अधर्व वेदो की उत्पत्ति हुई।

एसाही हम अथव वेद काएक और

मन्त्र लेते हैं — सस्मादुनी सपातक्षन् यजुयस्माद पाकवन् । सामानि यस्य लोमान्यवाज्ञि रसो

सामानि यस्य लोमान्यवर्गोङ्ग रसो भुस्वम्।। स्कम्भ त बृहि कतम स्विदेवसः।।

क्षवत १०-२३॥
कार्यात् उस (स्कम्मम्) सर्व जगत
को सारण करने वाले परमेश्वर को वेसी
का करणे जानो। ऐसे देवर तथा महुस्मृति
कारियों कानेको प्रमाण है। हम सात पम
वाह्यां का करक प्रमाण कीर भी लेते हैं—
महण्याह्य वाह्य तथा पत्नी
भी ने भी को बता रहें हैं—एव वाह करे

अस्य महतो नृतस्य कि स्वस्मिमेतद ऋग्वेदो

बबुवंद सामवेदाज्यवीड्रिरसे शत० का०

१४ अ० ४)
ध्रमित् है मैत्रयी । जो बाकाशादि
से बडा सब व्यापक परमेश्वर है उसी से
स्कृत, यूज् शाम और अध्य य चारो वेद
स्वरमन हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से
स्वास बाहर आता है, वेसे सुष्टि के प्राप्त में बेद इंदर से प्रकट होते हैं और जसे
स्वास जब्द को जाता है, वेसे ये प्रस्य
काल में इंदर से प्रकट होते हैं और जसे
स्वास अव्यर्द को जाता है, वेसे ये प्रसय
काल में इंदर से प्रकान के अन्दर विद्यमान
चहते है। इनका नारा कभी नहीं होता।

अंद कुछ शकाओं का समाधान कर ≹नामी उचित है—

(१) निराकार ईश्वर से शब्द रूप वेद कैसे उत्पाद्गे

समाधान सब रानिनमान देवर बिना जुख प्राण के भी उनका काय कर सकता है। जैंदे मन में विचार के समय गुजारि की जावादवनना नहीं होनी है। अतन समर्था-जाव देवर कद्मुल सहान सृष्टि की रचना क्षाव देवर कद्मुल सहान सृष्टि की रचना

निराकार होते हुए भी करने में पूर्ण समर्थह वैसे ही देद ज्ञान प्रदान में भी वह निराकार होकर भी समर्थहै।

(२) ससारकी उत्पत्ति मे जीव समर्थ नहीं है पर व्याकरणादिकी माति वेद भी बनासकता है।

सप्तावान — जैसे मनुष्य मकान, सडक, पुन,नहर, रेल, बहाज, रोकेट बादि इंदबर की सुष्टि से पदाव लेकर ही बना सकता है वेसे ही इंदबर ने दिए वेद बाव के बाद ही प्रपना बान विस्तृत कर पुस्तके भी बना सका है। प्रन्यपा नहीं।

अगर किसी बालक को एकान्त में रक्तकर पाला जाय जीर उससे बातचीत न किया जाय तो उसे मरण पर्यन्त मनुष्यपने का जान भी नहीं हो। अभी भी बिना सिक्सारे कोई कुछ नहीं जानता जैसे कि बगली मनुष्य कुछ भी उन्नति नहीं कर पाता है। बेदोपरेख के बिना मनुष्य पशुक्त ही रहता, प्रम्य पना को बात ही नया? जैसे भेडिये के पास का बालक देका जा सकता है।

(३)स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्यो ने विकास कर वेद बनाये।

समावान — उपरोक्त बालक धौर वनवासी जैसे स्वामाविक जान हुछ भी उन्नित नहीं कर पाते हैं वैसे ही स्वामाविक जान, देवादि को सममने मे मान बहायक होता है उत्तर्थ जान बढाकर मनुष्य अपना विकास कर सकता है। जैसे अभी भी विद्वानों को शिक्षा बद या । यदानों के सन्यों को गर्द बिना कोई मी विद्वान नहीं हा करता ह।

ईरबर सव विद्यायुक्त है अत वेद भी सब सत्य विद्याओं से युक्त ग्रन्थ हैं।

वेद मे भ्राति कारण-कुरान, पुरान बाइ-बिल, जैन, बौद्ध, चार्वाक झादि की बातो का प्रचार ईश्वरीय झान के रूप से हो जाने तथा इनका सुब्टि कम युक्त प्रमाण तथा विज्ञान से विरोध होने तथा सामण रावण, महीधर, उब्बट, स्कम्द स्वामी, बैक्स मूलर ग्रादि के गलत वेद भाष्यों से इनका विज्ञान युक्ति और सच्चाई से विरोध होने के कारण, तवाकथित मजहवी को घर्म मानने तथा वेद, घर्न भीर ईव्वर के नाम पर एव परलोक बादि के नाम पर ठगी प्रारम्भ होने के कारण तथा वेद विरुद्ध वेद के नाम पर प्रचार हा जान के कारण, वैज्ञानिक बादि इन बातो को गलस मानने लगे पर, जिल्होने भी सच्चे बेद माध्य को जो कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूर्ण प्रमाण पहिन किया है देवा उन्ही

देद की श्रोष्टता अपैर महला कापूर्ण कायल हो गया।

अपेसा कि महर्षि खरविन्द ने भी जिल्लाहै—स्वामी दयानन्द ने वेद साध्य कुनी देदी है।

मैक्स मूलर ने कट्टर ईसाई होने के कारण सन् १०६६ ई० में बेद के सबघ में लिखा है—

यानी 'वैदिक सूत्रों की एक बडी सख्या बचकाना कठिन, अधम और साधा-रण है।"

वह तो उसे चरवाहे का गीत तक मानता था। मैक्समूलर ने १८६८ ई० मे भारत के सचिव स्युक आफ आरगाइल' को पत्र शिक्षा था—

यानी भारत का प्राचीन धर्म नष्ट प्राय है। भौर यदि ईताई धर्म उसका स्थान नहीं लेता तो यह किसका दौष होगा?

बही मंक्स मूलर स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य और प्रत्यों को वेखकर ''भारत हमे क्या सिखा सकता है।' नामक पुस्तक में लिखता है—

यानी मानव मस्तिष्क का जैसा भी बातावरण अपने स्वाध्याय के लिए उसे बुनना चाहिए-वह चाहे धर्म हो या फिलोसफी (विकान) साइ स हो या कला, कानून हो या व्यवहार परमाच विका (ईरवर) या देव पूजा गुन्हे भारत में हो बाना वाहिए। स्योकि जत्यन्त पूल्य-बान पदावों में से कुछ पदाथ केवल मारत में ही हैं। जागे वह कहता है—

यानी कठिनता से ही पठन-पाठन का महकमा कही होगा जिसने मारत के प्राचीन साहित्य से नया प्रकाशन लिया है।

इसी प्रकार वर्तमान समय में भी कम से कम एक दर्जन इसाम अनेकी पी एक डी तथा जमाइत इस्लाम के प्रधान बादि भी ऋषि दयान-द सरस्वती के वेद आध्य एक धन्यों से प्रमाणित हा वेद प्रधार में लग गये। जत हमें भी ऋषि दयानन्द के सन्यों एक उनके वेद आध्यों को देखकर वेद बास्त्र की सत्यता और दावभीमिकता को स्वयं जानना एवं सब को जनाना चाहिए।

लेक्कक — बिन्देश्वरी कु० सिंह स्वा० स० निदेशक ५०२, केन्द्रीय जल आयोग सेवा सबन राम कुष्ण पुरस नई दिल्ली-६६

# हास्य विनोद

जैसा सवाल बैसा जवाब

बनाल के नवाब सिराजुद्दीला ने अपने हिन्दू दरबारियों से प्रवन किया, "साप लोगों के पचाप ने सहण तथा ज्योतिक सम्बद्धी बार्ते पहले से बता दी जाती है। पर प्रकास के बारे में बापका ज्योतिक बयो कुप रहता है ? वेचारे रिण्डत कुछ उत्तर न वे सके। क्रण्या नगर के राजदरबार से एक हसोब दरबारी गोपाल भाव रहता था। वे उन्नके पात्र नते और उससे जवाब देने को कहा। वह सिराजुद्दीला के दरबार में हाजिय हुपर। नहां जब यही प्रवन किया गया तो वह बोला, "हजूर हम हिन्दुसों के मुद्दें जनाये जाते है। हम हिन्दुबों की बारमार्थ सीबी स्वर्ग तथा बाकाच की सोर जाती है। बहा सुआफ सु मुख्यमानों के मुद्दें जमीन के पत्र मार्थ को तथा बात्र विताती रहती है। बता मुआफ हो मुख्यमानों के मुद्दें जमीन ये दफनाये जाते है। उनकी कहें जमीन के मीतर बालों से पूछिये वहां की बातें बही बता सकते है।

नवाब लाजवाब हो गये।

हेवी इलंबिट्रकल्स ग्रायंसमाज को शोक

वार्यसमान हेवी इसेक्ट्रीकर्स की एक समाये प्रधानमन्त्री श्रीमती इस्टिंग गाधी के दुखर निधन पर बोक प्रस्ताव पारित कर इस्टिंग गाधी की हत्या के बाद हो रहे जबस्य क्रस्थी की समान्त कर देख से बातिपूर्ण स्थिति कायम करने की माग की गयी।

क्षमा ने दिवनत आरमा की शांति के लिए दो मिनट का मौन घारण कर परम-पिता परमेक्वर से प्राथना की।

विसम्बर के चन्तिम सप्ताह मे

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दो

कार्यक्रम

🕳 शोभायात्रा

 विभिन्न क्षेत्रों में यह भजन और वेदोपदेश

 वैदिक साहित्य का वितरण सावजनिक भद्राविस सभा

# आर्थ सन्देश

# हिन्दू सिख एक है।

विक्त में जितने भी सिक्स हैं। व सदा से हिन्दू थे, हिन्दू है और हिन्दू नहेंगे भी। श्री गुरू गोविन्दसिंह का जन्म पटना मे २२ १२ १६६६ ई० मे हुआ वा। श्री गुरूगोविंद सिंहजी महाराज ने केश कथा,कड़ा कुपाण और कच्छ बारण कराकर हमे सबस बनाया इससे पूर्व के गुरूओं ने इन्हें रखने की प्रेरणा नहीं दी थी। यह किसी से खिया नहीं है कि भारत में पहले किस बेरहमी से हिंदुओं और गुरूबों को विवर्भी बनाने के लिए विवस किया जाता था। विवर्षियो से सडने के लिए वसर्वे गुरू गोबिन्दसिंह जी महा राज ने दशमेश सेना का सगठन करके उहे पश्चकरार से अभिसिक्त किया और कहा कि सबा लाख मे एक लड़ाऊ तब गोबिन्दसिंह कहलाऊ ।' पाच प्यारे भारत के विभिन्न जातियों के लोग थे। माई दयाराम सत्री थे बमदास दिल्ली के बाट थे. भीकमचन्द द्वारका के बोबी थे हिम्मतराम जगन्नाथपुरी के कहार थे, और साहबचन्द विन्दर के हज्जाम (नाई) थे। गुरू जी मुगल बादशाही के साथ कई बार लडाई लड । सेना को मुसगठित शक्ति के लिए और मुगलो की शक्ति को दीका करने के लिए वे जीवन पयन्त युद्धरत रहे। गुरुओ ने अपना जीवन सपरिवार हिन्दू हिन्दू स्तान वस बौर गोरका में उत्सग कर दिया। येहि देह बाजा तुक को खपाऊ गोवात का दुल जग से मिटाऊ।' सिलातो यह भूल रहे है कि परमात्मा को निरन्तर मजने बाले माला जपने वाले गुरू महाराज ने जब हिन्दूओ पर सकट तथा घमपतन देखा तो कृपाण को मालारूपी रक्षा कवन मान लिया । वे जीवन पयन्त लडकर भी दिल्ली के सिहासन को विद्यमियों से मुक्त नहीं करा सके। दूरमन हमारी फूट और कमवोरी को जानते थे। फलत उ होने कई राजाओं को प्रलोभन देकर मिला लिया था। अपनी स्वाथ लोलुपतावश राजाओं ने गुरू भी को हिन्दू थम रक्षाथ याथना को ठुकरा दिया। फलत हमारा मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय हिन्दू समाज विभाजित हो गया। सैकडो वर्षों की गूलामी के बाद जब हम स्वतत्र हुए तो बाज सिख राष्ट्रपति भी भारत के सिहासन पर विराजमान हैं। क्या वे हिन्दू सिक्स सम्प्रदायवादी पाकिस्तान मे बफसर पद पर विराजमान हैं? बाप नकारात्मक उत्तर देग । भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से हिन्दुओं और सिक्षों को भावल और गेह बादि से ककड मिटटी की तरह निकाल फेंका गया। वसस्य नारियो ने वपनी इच्छा रक्षा के लिए ड्वकर या जात्मदाह करके अपने प्राणो की बलि चढा दी। उन्हाने हिन्दुओं के घन सम्पत्ति, इज्जत, जवान बेटे बेटियो तथा लोगो के प्राण छीन लिए। प्रथम गुरू श्री नानकदेव जी की जन्मभूमि ननकाना साहेब पत्रा साहेब और पत्राब की राजधानी लाहौर थी। इसे निवर्मियी के हाम से हम स्वतत्र नहीं कराते हैं। इसके विपरीत आज विवर्गियों के उकसाने पर उनका साथ देने के लिए भारतीय सिस्तों ने अपने ही हिन्दू भाइयों पर बाबात करना प्रारम्भ कर दिया। सिक्ष भाइयो । बाप कहते हैं कि स्वण मदिर की पवित्रता बनाई रसी जाय । जाप चाहते तो गुरूद्वारो की पवित्रता के लिए प्रारम्भ से ही उप्रवादियों को मदिर मे शरण (तरजीह) नहीं देते। पत्राव में चल रही हिंसा की आतकवाद के विलाफ सिवाएक गुट होकर अवाज उठाते। सैनिक प्रवेश से पवित्रता नष्ट नहीं हुई अपितु स्वण मदिर की पिवत्रता और मदिर दोनो सुरक्षित रह गये। नही तो उग्रवादी स्वण मदिर को उडा देते । इदिरा जी ने स्वण मदिर बचा लिया पर इदिरा जी को नहीं बचने दिया। स्वण मदिर टूटे भौर बन भी गये। लेकिन हजारो लोग मिट गये। जिस मा की गोद साली हो गई। जिस बहुन की माग उजह गई। जिसके माता पिता भाई बहन पति पुत्र समाप्त हो गये क्या उहे अब प्राप्त हा सकते हैं ? देश के अन्दर ये श्वमनाक काण्ड से देश कमजोर होगा। दुश्मन आप पर हावी होगें और आप सभी गुलाम हो जायेंगे। यह खूनकी होली बन्द माई चारा, प्रम शांति स्वापित करें और र्देश की एकता अखण्डता को बनाये रखें। खालिस्तान समथक उग्रवादियो के विरुद्ध देश के सभी सिक्त एक होकर अनवाज बुलाइ करें। इसी मे देशा और देशवासियो का मसा है। बद सिख माई गुरूओ की वाणी औरकूर्वानी को भूलते जा रहे हैं। हम अब उनकी वाणी पर नहीं चलते। श्रीराम को हिंदू भी और सिख भी मानते हैं। फिर एक क्या है ? गुरू ग्रन्थ साहब मंतो अनेको जगह राम के नाम तथा ब्रह्मा विष्णु महेश आदि के नाम भाये ही हैं। गुरू जी ने भी कहा कि श्रीराम गुण गाबो।' श्रीराम बोलन वाले सभी गुरू के शिष्य हैं। सिफ केश दाढ़ी रखने वाले ही शिष्य हैं ऐसी बात नहीं। कहीं भी हिन्दू सम्मेलन होता है तो गुरू को के नाम पर द्वार सज्जा दी जाती है। गुरू को के चित्र और जीवनवृत प्रदक्षित किये जाते हैं तथा उनके अनुकरण करने की प्ररणादी जाती है श्री गुरू गाविन्दसिंह के दोनो पुत्र घरे हिन्द बनकर हसते-हसते सरहिन्द की

बीबारों में चून दिये गये। समर विवसीं नहीं बने। गुरू तेगवहादुर ने दिल्ली संधीख करा दिया। लेकिन हिंदू खम की रक्षा दे मुद्द नहीं भोड़ा बीर न विवसीं बने। ऐस ही जानेको जान हुनीनिया देकर नर नारियों ने अपनी जीवन गांवा असर कर तो। २६ सितन्दर हिंदर और जार्ड १९६४ में तीन बार आरतीय बायुवानों का अपदुरूष कर साहौर ने बाया गया तथा वपहरण कर्ताओं को शस्त्र दिये गय। पाकिस्तान के उपवासियों को तैन्य विकास दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान मुक्यूची जानते हैं ≽ जक्षावियों को तैन्य विकास दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान मुक्यूची जानते हैं ≽ गुम्पाई किया। सिक्तों से दोस्ती कर उन्हें मुफ्पाई किया।

यही नीति है 'फूट हालो राज करो की। मिदरी मुख्यारो मे गा काट कर फुँकना गुरू बच्च रामायण गीता बादि को जलाना या पविज स्थलों को विनस्ट करना हत्यादि छ न्ये सिल कभी नहीं कर सकते। सत्ता की हत कुर मार से त कही नद नारियों कच्चे व्यवसायी कफतर सेना, बादि मारे गे एसा करने से विस्कृत अति हुई 'त स्पत्ति लुटे गये दुकानो से बान करायों गई। उपवादी सिल्लो ने पुत्ति स्वाक्त मारा। ये सद क्यो हुए 'व व्यत्तत पाकिस्तानी सिल्लो के नेय से पकर गये। पाकिस्तानी सालाकर व वार हुए क्या इन सब बातों से मारावीय सिल्लो की सत्व समा हुए व वार सब बातों से मारावीय सिल्लो की सत्व समा हुए क्या इन सब बातों से मारावीय सिल्लो की सत्व सनाववादियां की बालों नहीं चुनी जिस दिन पत्राव माराव से बगल हो वायेगा। ठीक उसके बाद बहु पाकिस्तान का यं बन बाएगा। उसके साथ साथ कमीर मी। यह मारत तो सिल्ला साइयों का है। दुल्ली से सिर उठाकर गुक्कों को सागों का प्रचार कर मीर लाणिस्त सारत की तुन व स्ववस्थ बनाकर गुक्कों के सागों का प्रचार कर मीर लाण्डित

लेखक कातिकारी सूर विश्वस्थार आर्क समस्तीपुर (विहार)ः

मैं बाधुनिक गारत के महान पष प्रदशक स्वामी द्यानन्द के प्रति श्रद्धान कि प्रस्कुत करता हु जिन्होंने मत मता तरी और अनुष्ठानों के बीहद जगन में से जिसमें देश के पतन के काल में गहरी वास उग आयी थी माग को परिष्टत किया ताकि हिंदु लोग परमास्मा के प्रति निष्ठा और मानव सेवा का सादर और विवेकपुण जीवन व्यातीत कर, सक।

— स्वी द्रताय परमुक्त ।

— स्वी द्रताय राष्ट्र से



# राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नवजागरण ग्रौर महर्षि दयानन्द

—श्री रामगोपाल जी शालवाले

यह कहने मे हमे सकोच नही है कि इस समय राजनैतिक बल वर्ष निरमेक्षता की झाड मे भारत के बहुमत की पग-पग पर अबहेलना कर रहे हैं। इन सबका मुकाबला करने के लिए झायं समाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड सगठन खडा करके ईग्राई. पुसलमान और सिक्खो, के अलगावबाद के नारे का वेश भर मे सक्तिय विरोध करते हुए जन झान्बोलन चलाना चाहिए।

ससार के इतिहास में प्राय देखा जाता है कि समय समय पर मानव-जाति को स्ववाने के लिए कुछ विशेष आत्माए इस घरती पर अववीण होती हैं। सुष्टि की उत्पत्ति एक अरत सतानवे करोड वर्ष पुरानी हो चुकी है। महापुत्रशो की सम्बी मुची से अवेक पराक्रमी व चकवर्ती राजा-महाराजा, ऋषि पुनि, बडे-बटे बोद्धा एव उच्च कोटि के महा-मानव इस्तोप पर पैदा हुए और वपना-अपना काम करके उसकी छाप ससार पर कोड गए।

ससार की राजनीति से सबसे पहले सकाद वैवस्वत मनुद्वार, उन्होंने राज्य-प्रणाली का वाविष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय को जनता को व्यने-व्यने कर्तव्य के पालन की जोर क्रम्सनर किया। इसी प्रकार सदिया बीतती गई और बडे-बडे महापुरप व्यनना व्यनना काम करते चले गए, किन्तु इतिहास में उनकी वसर गावाए बाज भी सुरक्षित है।

बार्यभूमि भारत में लगभग १ हजार वर्ष पूज महासारत के युक्क के पश्चात् बहे-बढे राजाजो जीर महाराजाओं का लास हुवा और वैदिक वर्गका लोग होने लगा। महाभारत के पश्चान् भारत से वर्गका बो लास हुवा, उसका दिग्दर्शन इतिहास के पृथ्वों में भी देखा जा सकता है। राजनीतिक गिरावट के साथ-साथ वार्मिक गिरावट भी इस देश में जाई और वैदिक घर्म अनेक रूपों से बट गया। वाभमार्गका उदय हुजा और वाममार्गके कारण जैन और बौद वर्म ने जन्म लिया। हिन्दू समाज वैष्णव तथा शास्त आदि अनेक सम्प्रदायों से विभक्त हो गया, जिसके परिणास स्वरूप अनीश्वरवाद का प्रादुर्भाव हुवा।

जैन और बौद यम के प्रचार का सामना करने के लिए खकराचाय भारतीय मय पर उमरे और इन नास्तिक मतों का नुकाबसा करने के लिए उन्होंने बढ़ी त बढ़ा का प्रतिवादन विधान थान नास्तिक भागे प्रष्टित नो उन्हों न व वे और ईरवर की स्तुति व सता से इनकार करते थे, वहीं बाचाय सकर ने प्रकृति का सवन कर एक ईस्टरलाय के प्रकृति के अनादि सिद्धाल का प्रतिवादन किया और यम के नाम पर मुल्यूना, बततारवाद, मृतक-शाद, खूल छात बादि का घोर विरोध किया कि समें के हास के कारण राज्य का भी हास हो गया है। इसलिए उन्होंने इस देश की राजनीतिक परिस्थितियों को मुखारने का काम किया, खितके परिणामस्वरूप हिन्दू जाति में राजनीतिक बीर प्रामिक चेतना पैदा हुई।

सन् १८५७ ई० मे महॉब दयानन्द ने बार्यसमाज की स्वापना की। व्यपे जमर प्रय सत्याथ प्रकाश' में खुले रूप मे अपने देश मे अपने राज्य का समधन किया और विदेशी राज्य की बुराइयो पर खुले रूप से अपने विचार जनता के सामने रखें।

सन् १६०५ वे भारतीय राष्ट्रीय कार्यस की स्थापना एक प्रयेज मि॰ स्पूनने की, किन्तु उस समय कार्यस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नहीं या, विल्क लक्ष्य यही या कि जिसामीश और पुलिस बिषकारी भारतीय हो। इसी बायार पर मिंठ सुन्य ने तरकालीन सामको से विचार-विमक्ष किया। किन्तु इससे १० वय पूर्व ही महर्षि स्यानन्द ने धार्यसम्ब की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की माग कर दी थी, स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८०२ ई० में कलकता के प्रमोद कानन से बैठकर सत्कालीन वायसराय मि० लाड नार्थेंदुक के साथ जो भेट की बी, उसमें बायसराय महोदय ने महींच दयानन्द से कहा था----'स्वामी जी ! आप ईसाई, गुसलमान, पौराणिक व जैन बादि वर्मों का सम्बन करते हैं, धापकी सान को कोई सवरा वो नहीं है? अन्यवा वापकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।" महाँव दयान-द ने जबाब दिया था— "नहीं महोदय, बाएके वासन में मेरे वर्मभ्रवार में किसी प्रकार का सतरा नहीं है। मुके सवँपितमान् देखर पर विस्वास है, नहीं मेरा सरक्षक है।" इस पर वाससराय ने बढे गम्भीर भाव से कहा— "महाराय ! यदि हमार राज इतना वन्छा है तो बाद जब उपरेख करते हैं तो परमात्मा से प्राचन कर दिया करे कि घम जो का राज बहुत दिनों तक कता रहे। वासदाय की यह बात सुनकर महिंद राजान को सेहरा ताम्ये की तरह सात हो गया। उन्होंने कहा— "धये ज सरकार बहुत दिन तक चने, ऐसी प्राचना मैं नहीं कर सकता। मैं तो भगवान् से यही प्राचन करता हूं कि वह कैसा प्रच्छा दिन होगा जब घम जे मारत छोटकर वने वाएगे।" इस मुक्षाक के बाद ही प्रयोज सरकार रहेंगा स्वामी दयानन्द के प्रति बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी क्राई० बी० लगा दिए गए एव उन्हें मरनाने के बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी क्राई० बी० लगा दिए गए एव उन्हें मरनाने के बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी क्राई० बी० लगा दिए गए एव उन्हें मरनाने के बहुतक कठोर हो गया और

जोधपुर में बार बली गर्दान खा, जिसने महाँच का इसाज बल्तिम समय में किया या, वह भी प्रयोजों का पिट्टू या । राष्ट्रीय और वासिक चतना के बर्दूत महाँच दयानन्द ने सनमेर में बाज के ठीक १०१ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन इस ससार को सर्वेव के लिए त्याग दिया।

३ नवस्वर से ६ नवस्वर, ६३ तक हमने युगयुरव महिंद दयान दका निर्वाध स्वतास्थी-समारीह सोत्साह मनाया था लोग पुकते हैं, नायसमान का जनता को वया कार्यक्रम देना चाहिए। मेरा कहना है कि महिंद दयान दन नायसमान क दय नियम बनाकर पर्म के विद्यात का जो स्वरूप हमारे सामन रखा है, वह इतना पूण है कि उससे बाहर कोई चित्तन की बीज ही नहीं रह जाती।

मैं बार्य बन्यूबों थे इतना हो कहना चाहता हु कि वे बापसी फारडे सन युटाव को दूर करें, यही, जायसमाज की प्रगति में रोबा है। हमें एक-दूसरे पर विस्वास करके समफने का प्रयास करना चाहिए। यही के गाध्यम से हम वासिक वृक्ति का प्रचार करें, वर-वर में नैरिक ज्योति ज्याए बीर इसका प्रचार-प्रसार करें।

नया जन आन्दोलन अपेक्षित

फरवरी १६८५ कर दी गयी है।

३७ वर्षं की राजनीतिक स्वतन्त्रता का विहायलोकन करते हुए यह कहने में हमें सकीय नहीं है कि इस समय राजनीतिक दक्त यम निरंपेक्षता की आड़ म भारत के बहुमत की पमन्पम पर जबहेलना कर रहे हैं। इस सबका मुकायला करने के लिए ज्ञाय-स्थाय को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड साग्य सक्ता प्रकेश के पुत्र का नीर सिक्सा के जमागावाद के हम हम सम से सिक्स विरोध करते हुए हुए जन-मान्दलन चलाना चाहिए। जाज चुण्याप होकर काम करने का अवसर नहीं हु, ज्ञांपनु प्रचार की भी बडी पात्रस्थलना है। जाथ बन्धु इस दिशा म भी सदेव जाणकर रहा।

दक्षिण पूर्व एशिया की सास्कृतिक तीथ यात्रा दक्षिण पूर्व एशिया की जो सास्कृतिक तीथं यात्रा सामती क्षिया गांधी क निवन के फलस्वस्य प्रचारत कर दी गयी वी उसकी तिविया अब २ फरवरा १८८५ स १६

### विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें --

श्री बचोक त्रिया, टेवन ट्रस्ट, बी $_{--}$ 24 निजामुद्दीन इंस्ट, नथी दिल्ली--13 (हुरमाय-980216)

### वाषिक चुनाव

बार्य समाज सान्ति नगर, सोनीपत, (हरियाणा) की प्रबन्धक समिति का गठन निम्न प्रकार हुआ - श्री बेंब व्यकुष्ण दास (सरसक), श्री रामसास मदान (प्रवान), श्री हरिचन्द रनेहीं (श्रो), श्री मेहरचन्द, कोबाध्यक्ष

भी वर्षदेव चक्रवर्ता, 10 माज्यवस्ता दिल्ली, 5 ने सुम्माव दिया है कि आयं सन्देख पार्ताहिक एत्र में कुछ परिवतन किये जाय। असे उपवधकों की सम्मी सूची न प्रकाशित की जाय साथ ही साथ कारने यह भी बताया कि महिताकों, खिछुकों, ज्ञान विज्ञान, बोडी राक्ष्मीतत्व स्वास्त्र स्वास्त्र के जीवन गायाये नियमित रूप से छमनी बाहिए। विससे कि धार्व सक्ष्म पिका का स्तर सुभारा जा सके। खार्थ सन्देख के सम्मादक मण्यव ने उनके सुम्मानों को स्वीकार करके तरनुक्य पत्र का सम्मादन कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

# राम जन्म भूमि के मुक्ति हेतु प्रकाशवीर शास्त्री के प्रयास

- स्वामी वेदमुनि परिवाजक

उन दिनो मारत के प्रधानम त्री भी जवाहरसाल नेहरू च मारत सरकार न देख में साम्प्रदायिक तनाव के कारणों को हुर करने तथा हिंदु मुखलमाना में साम्प्र दायिक सबसाव उपन करने की योजना के नाम पर यह निश्चय किया था कि जो मरिवर्ष हिंदुओं के खिलकार में हैं वह हिंदुओं के सेकर मुखलमाना को दे दी आप्रता

सन १९४७ में पाकिस्नान बन जाने पर जिन स्थाना के मुस्तमान उपर चले गये थ वहा को मस्तिव कहार हो। यथी भी। पाकिस्तान से बचर होकर साक्षों की सक्या में हिंदू इपर भारत में आये थे इहोने जहां जहां पाकिस्तान गये हुए मुस्तमानों के मकान रिस्त पढ देखें वह उहीं मकानों में रहने तथे। जिन स्थानों तथा जिन नगरों के जिन क्षा मों के सभी मुस्तमान पाकिस्तान मान गये थे वहां की मस्तिव बकार पढ़ी थी। पाकिस्तान से बाने वाल शरणार्थी बच्चाों ने ऐसी मस्तिवां में भी रहना प्रारम्भ कर दिया था।

मारत सरकार की योजना उन्हीं
मस्त्रियों को प्रस्तमानों को देने की बनी
यो। मुस्त्रमानों ने यहाँप ऐसी कोई माय
नहीं की बी। व तो ससद में और न ससद है बाहुर ऐसी कोई बाबाज सुनाई दी थी। सुनायों देती भी तो कहा थे और क्या जुनायों देती जिन मस्त्रियों म पाकि तान से बाये हुए हिंदू करणार्थी वसे हुए बे उन क्ष त्रों में कोई मुस्त्रमान था ही नहीं तो बहु। कीन नमाज पदन जाता रुवा किए प्रकार उन मस्त्रियों के लिए साबाज उठती ?

वास्तव में बात यह है कि स्वत व मारत में प्रथम बार वन दिनों भारत सरकार के गांधीबाद में सम निरंपेलता का उवाल क्षा रहा था और उस समय के मारत सरकार के प्रमुख भी जवाहरलाल नहक ने मुसलमानों को मस्तिद सौंपने की योजना बनाकर उस उबाल को प्रथा किया। वह मस्तित रिक्त करायों गांधी कन बवाद होकन बाए मारत प्रकल हे हुओं को एक बार फिर सरणार्थी बना बयागवा और इस प्रकार बापू के लाहनों ने वपने पूज्य बापू के स्वयं बहिंसा कृत को पाने या बनवाने में हुग्या कर है।

मस्त्रिय रिक्त करायी गयी और सलमात्र सबटनो को आञ्चान किया गया कि वह वहे सम्भान। पता नहीं कहा कहा से मुल्ला भोग लाकर उन मस्बिदा में अवान देने और नमाव पढ़ने के लिए बठा दियंगय। उनमें में से बहुत सी मस्बिदों को तो वर्षों तक मुल्ला उपलब्ध नहीं हो सके।

ससद-केसरी स्व पण्डित प्रकाश बीर जी शास्त्री उन दिनो लोक सभा के सदस्य थे। १६६१ की श्री कृष्ण जम बष्टमी के भवसर पर उद्योगे लोक सभा मे यह प्रदन एक प्रस्ताब के रूप मे उठाया उन्होने अपने प्रस्ताव मे कहा या कि मैं भारत सरकार की इस मावना से सहमत ह कि देश में साम्प्रदायिकता के विषय को समाप्त करने के लिए विभिन मतो के नागरिको मे पारस्परिक सदमाव उत्पन्न करना आवश्यक है इस सिल सिले मे पाकिस्तान बनने पर बहुत से मुसलमानों के उचर चले जाने के कारण वकार पडी जिन मस्जिदों में पाकिस्तान से अपने हुए श्वरणार्थी वस गये थे भारत सरकार ने उन मस्जिदों को मुसलमानो को सौंपने की जो योजना बनायी है उसी के सादभ में मेरा यह कहना है कि साम्प्र दायिक तनाव का कोई भी चिन्ह सेथ नही छोडा जाना चाहिए। इसीलिए नेरा यह प्रस्ताव है कि श्रीकृष्ण जामाध्यमी के शुभ अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण के जम स्थान मचरा मे श्रीकृष्ण जम मन्दिर का तुडवाकर मुगल सम्राट बीर गजेब द्वारा बनवायी गयी मस्जिब हिंदुको को दिलादी जयतथासाथ ही विदिशा (मध्य प्रदेश) का विजय मन्दिर राम जाम स्थान अयोध्या की व बरी मस्जिद विष्वनाथ महादेव काषी के मन्दिर का जो भाग मूसलमानो के अधिकार में हैं वह और सम्भल जिला मुरादाबाद का हरिहर महादेव का मदिर भी जो मस्जिद बना हुआ है हिन्दूओं को दिसा दिया जाय।

उससे ठीक जगले दिन जाय समाज दीवान हाल दिस्सी की उस महती समा में जो भी हुण्या ब माण्टमी के उपसबस् में जायीजित की याग्टमी वो औं साहसी जी ने जगने माण्या में मोक समा के माण्ये उस्त प्रस्ताव की बच्ची करते हुए कहा या कि मैं यह जानता था कि लाक समा में मेरे इस प्रस्ताव पर विचार भी नहीं होगा कि तु फिर भी मैंने हस प्रस्ताव को स्था या वो हससिए कि हसकी चर्चा जीक समा में फाइस में बाजायोगों जो एक दरनावेज के रूप में सुरक्षित रहेगी और मिलब्स में मारत की मानी सन्त तियों को प्ररणा का कारण बनेगी तथा उद्देयह स्मरण करायगी कि यह माबना अतित में भी कभी मरी नहीं थी।

अब सन १६८४ में ठीक २३ वय बाद हम कुष्ण मस्तराष्ट्यादियों से कहना बाहते हैं कि प्रयक वय श्रीकृष्ण स्वाप्त नेता क्या आप लोग समय केसरी स्वर्गीय श्री पष्टिक प्रकास वीर सारशी के उन उदगारी से सहस्त हैं जो उन्होंने १६६१ की श्री कृष्ण ज मास्टमी के जबसर तोक समा मे प्रकट किय ये और स्था चन माजनाओं का प्रत्याकन कर ज्या उनकी रक्षा के लिए तयार के जो उहाने उस समा मे स्थवत की थी। यदि हा तो सगठित होकर इसके लिए प्रयन की जिए यदि प्रयन किय गया तो सफलता जापने पास होगी कोने वाले सबस के निर्वाचन से पहल ही इस बाबाज को उठाइय।

## स्वार्था पच

### ले॰ स्वामी स्वरूपानन्व सरस्वती प्रधिष्ठाता वेद प्रचार [काव्यमय दष्टान्त]

कुछ स्वान ६कटठ हुए जहापर समन बक्त काथी छाया। मिल करके एक पदायत की बीहुबाफसला समक्राया। वचा काल ये पच वड प्रमान वने पदायत कर। प्रस्ताव पास यह कर दीना वात य प्रसासहित कर कर।

को ल मनिये लया । जाति व चु । तुम वाज न लाये हरकत से । हद में न तुम्हारी पण घरता है कोई माई दहलन से ॥ तुम लडते रहते लापस में बदनाम नाम है स्वानों का जब लडो नहीं जादर करिये अपने लाये मेहसानों का ॥

एक तो जमाना बहुत दुरा मुक्तिक है नहीं मेट सरता। महणाई भी जोरो पर है बब दिल भी घीर नहीं बरता।। पर वर इकारे जाते हैं कुत्ता कुकर कह कह बोल। कुछ भाई वड भाग्यधाली जे वठ कारों में डोल।

> बूमा बोलाजाित बच्चेनी अब लडनापरस्पर करी बन्दा। जो करे उल्लेचन उसकाभी देवण्डकरो मिलकर प्रवास । हो गमापास प्रस्ताव सभीने पची कम्माना कहना। माई माई सब लड नहीं आपस म मिल जुल कर रहना।

उस बक्ष के ऊपर एक चील उडकर दूरी छे आहा थी। एक मनकाटकडालगाचीच मे उठाकही सलाई थी। चाबजन आधिक उस टुकड मे चारकाचाच मे दाब छिरा। गया छुटचीच छे बकस्मात गची के बीच मे आन गिरा

> देलाओं कीच मात पक्षा ती मृहम पानी भर आया। भरुकालू उत परटूट पक्षा बूजा भी आये को भाषा। हो सबीभन पचायत सब होने लागी छोना ऋपटी। क्या कर समासद बजारे जक पक्ष होय छलिया कपटी।।

ऐसे ही पण स्वार्थी जोस्वाय हित टूट-टूट पढते। जपनी ही उदरपूर्ति का नित्रो केसाय सब रहत।। यह स्वाय सगठन की रस्सी का पल मे तोड फाड देत कहे स्वरूपानन्द स्वार्थी पस मे प्रम तोड देते।।

### दिल्ली झाय बीर दल की बठक

बाय बीर दल दिल्ली प्रदेश का एक ज यावश्यक बठक दिनाक २ दिवस्वर १९६४ रविवार को प्रात ११ वर्षे वायशमाज चूना मण्डी पहाइ गज नई दिल्ली १५ मे होगा। सभी बाय व चुनो से विनम्न जनुरोध है कि समय पर पद्यार कर बाय नीरो का उत्साह बढाय। प्रयक्त बायसमाक के प्रधान तथा मनियो से विश्वय प्रायना है कि निश्चित समय पर अवस्य पद्यारें तथा बपनी आयसमाज से कम से कम दो बाय बीरो को साम बाय।

अध्यक्ष वैदिक सस्यान नजीवाबाद उत्तर प्रदेश



हैदराबाद सत्याग्रह

# भारतीय स्वाधीनता सम्मान योजना गृहमन्त्रालय की शिफारिश

- बहादत्त स्नातक

सन् १६७२ में स्वतन्त्रना रजत जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय सरकार ने स्वतःत्रता सेनानी पेंशन का श्रीयणेश किया। यह १००० रूपए वाधिक आय से कम वालों को ६ मास का कारावास, भूमिगत नवरवन्द (भारत की भूमि में होने पर) वा सम्पन्ति जन्त होने बादोलन के दौरान बपन होने अथवा रोजगार के लोत समाप्त हो जाने पर मिलती वी । आ जादी के पूर्वकी रियासतों मे प्रजातन्त्री अधिकारो तथा भारत में विलय के प्रकृत पर पीडियों को जी इसमें सामिल किया गया था। बाद में १९६० में ५००० रुपए की सीमा हटाकर अपन्य रिवाबते भी दिया जाना शुरू करके उसका नाम सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी योजना १९८० कर दिया गया। इस दिखा मे आवस्यक प्रशासनिक एव वित्ताय कदम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भारत म विलय के प्रक्त पर पीडिलो को भी इसमें भी शामिल किया गया वा। बाद ने १९६० मे ५००० की सीमा हटाकर अन्य रियायर्ते भी दिया जानाभी घुक करके उसका नाम स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १६६० कर दिया गया, इस दिशा में आवश्यक प्रशासनिक एव वित्तीय कदम केन्द्रीय क्षरकार ने उठाए। मारत सरकार ने इस काम को करने के लिए बृहमन्त्राक्षय के बन्तर्गत गृहमन्त्री और राज्य के गृहमन्त्रियों के अतिरिक्त बाठ ससद सदस्यों की एक समिति गठित की। इससे पहले यह नहीं बनी थी। गत वर्ष तक इसकी ६ बैठकों में स्वीकृत अनेक सुफाबो को सरकार ने माना है। पूतपूर्व ससद सदस्यों को यह सम्मान पेंशन व्यविरिक्त दी जाती है। वर्तमान में केन्द्र सरकार इन सम्मानितों को २००) और इनकी विधवा पत्नी को २००) मासिक देती है।

१६७२ की तामचन की की योजना १६७६ में बन्द कर दी गयी। परस्तु 
१६०० में मह पुन जारी कर दी गई भीर केजीय सरकार के सनुरोब पर उनको 
न गुरूक चिक्रियम, माना सादि की युविधा भी सहुत भीर गय्म सरकार दे रही है। 
रेवित की लोगा में जो राज्य सरकारों के द्वारा वी जाती है, मिल-क्लिय है। १००-१३० 
के बीच। इस सम्बन्ध में मानिक स्नानोजन मानकर धार्यसमान ने सामूदिक रूप के 
हैदराबाद साथे स्त्यायह १९३६ के पीडितों के लिए कोई मान महीं की। मृतपुर्व 
निवाम रियासत के स्विकास स्वयमानी पीडितों ने स्ववनत रूप में बाप्यवेश 
कर्माटक सीर नहाराष्ट्र राज्यों के कामसी नेताओं के प्रमाय पत्री, अस तथा मानवित्त 
के प्रमाय स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं के कामसी नेताओं के प्रमाय पत्री, अस तथा मानवित्त 
के स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं से कोई से पर पंचत मिली है। बेद यही है कि साज 
तक हर सानवन्य में सम्बेत रूप में कोई प्रयत्न नहीं हुता है। वार्वरिश्चिक साथ रितिनिय 
समानवन्यी एक भीमती इतिरा गांधी को एक विस्तृत पत्र विसक्तर प्यान सीचा। निस्त 
पर गृहम-नासव ने हैरराबाद सार्यसमान के १६३६ के स्वयायह को इस योजना के 
कत्यत्व सरवीकार कर दिया।

हन पिनन्यों के लेकक ने भारत सरकार की सेवा में प्रविच्ट होते समय १६५३ में स्पष्ट कप से तम जीकरीवा आयोग की लिख दिया वा कि हैदरावाद वार्यसत्याग्रह में लगमन ६ माद वह जेज में रहा वा। जब १६०२ की योजना स्वान्त्रता होनानियों के लिए तिकली तब उसने १६०४ में तास्त्रण गांवे (वेतन १००० वार्षिक से ज्यादा था) और इस प्रेणी के सरकारी कर्मवारियों के लिए दी जाने वाली रियायों के लिए त्याय पूर्वक माग की परन्तु कुछ नहीं बना। सरकार का उत्तर या कि उक्त आयोशक की सरकार ने स्वतन्त्रता जादीवन का माद कमी तक नहीं माना है। इस सम्बन्ध में तक्ता नित्त्र न्याय स्वतन्त्रता जादीवन का माद कमी तह नहीं माना है। इस सम्बन्ध में उत्तक्ता जनर नकारायक सित्त्रात्री को स्वतन्त्रता जादीवन का माद कमी तह मात्री वे बीर सुद्धनन्त्राव्य से उनका उत्तर नकारायक मित्रा में में दी स्वति है स्वतन्त्रता का स्वत्र प्रवास के सुद्धनन्त्राव्य से उनका उत्तर नकारायक मित्रा में में देव समय से मादियों को पत्र किया की यह विद्याप्त से वेत्र स्वत्र की स्वत्र स्वत्र से सावविधिक समा के प्रवास का स्वत्र प्रवास के स्वत्र की स्वत्र मादियों में प्रविच्या मादियों को पत्र किया मित्र से मित्र से सावविधिक सम्बन्ध मित्र से की स्वत्र की स्वत्र मित्र से सावविधिक समा के स्वत्र की स्वत्र में सावविधिक समा के स्वत्र की स्वत्र में सावविधिक समा के स्वत्र की स्वत्र की स्वत्र स्वत्र स्वत्र से सावविधिक समा के स्वत्र की स्वत्र से सावविधिक समा के स्वत्र की स्वत्र की स्वत्र से सावविधिक स्वत्र से सावविधक सावविधिक से स्वत्र से सावविधिक से साविधिक से सावविधिक से सावविधिक से सावविधिक से साववि

बन्त में मैंने २८-१३-६२ को स्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इत्विरा गांधी को ब्रान्त्यम् एक डाक द्वारा व्यक्तिगत सनोषन के साथ निक्का विसमें सरकार के पिछले निर्णयो की अवस्कता और पुनर्विचार के लिए सिक्का गया। उन्होंने वह पत्र गृह मन्त्रालय को ब्रावस्यक कार्यवाही के लिए भेज दिया। उपर मैंने प्रक्रिक गारतीय स्वाधीनता सेनानी सन्तर्जन को निवाद नोट और परिचिच्छो के साथ भेवने के असावा इस सम्बन्ध में हिंदी-सर्वजी पत्री में आवाज उठाई कीर समस्त्र के सरस्यो के साथ बैठकें की।

धार्यसमानी जनता को यह जानकर हवं होगा कि गृहमत्रालय की सम्बन्धित सनाहकार समिति ने सर्वसम्मति से हैदराबाद के बार्यसमान सत्वायह को स्वाधीनता सवास के कप में स्वीकार कर सिया है बौर प्रतीमण्डम की मजूरी के सिए भेजने का

निश्चय किया है।

बाजा है कि स्व इनियर नाबी के बीवनकाल ये वो विजय तिया बया है, उठे सनिवण्यत की भी स्वीकृति बवस्य प्राप्त होगी। सम्पन्त कराने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक युग के बाद वन स्वाधीनता सेनानियों और उनके वारियों के लिए यह एक सन्दी अदावित होगी।

# आर्य केन्द्रीय समा दिल्ली राज्य की अन्तरंग समा की बैठक

सभा के महामन्त्री श्री सुर्यदेव ने एक विक्राप्त हारा बताया कि बार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की बन्तरम सभा की एक ब्रस्थावस्यक बैठक स्वामी श्रद्धानन्त्र विस् सान विक्स, केन्द्रीय के वार्षिक विभिन्नेत्र तथा दिल्ली जायं प्रतिनिधि सभा द्वारा आयो-बित महींच स्थानन्त्र निर्वाण श्रद्धान्त्र के सम्बन्ध से विभाग करने हेतु सानिवार १ दिसम्बर १९८४ को साथ ५-३० वन्ने बार्यसमान मन्दिर, करोल बाग, नई दिल्ली से सभा प्रधान श्री महास्य बमरास जो की बप्यवता मे होगी।

निर्वाण दिवस के अवसर पर विशेष लेख

# दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा (पंजीकृत) की आवश्यक बैठक

सभा के महामानी बा॰ जमपाल ने एक विक्षांत द्वारा बताया कि दिल्ली प्रदेश समस्त आंग्रेसमानो, स्त्री समाजो, विक्षण तथा बन्य सम्बद्ध सर्थाको के अधिकारियो एक मांक्रतांत्री की एक बत्यावस्थक बैठक महर्षि दसामन्द निर्वाण बताब्दी के सम्बन्ध में कार्यक्रम की अनित्म रूपरेसा और सन सप्रह की योजना बनाने हेतु बृहस्यति २६ नवस्यर १६८५ को मध्यान्होत्तर ४-३० वचे आर्यसमाज मन्दिर, १५ हनुतान रोड नई ' दिल्ली में होगी।

कानपुर मे सिल्लो को मुसलमान होने से बचा लिया गया

कानपुर हाल के हिलक दो। में यहां से काफी सिक्ष को आयं समाजी नेता औ देवीदास आयं ने समय पर मुखसमान होने से बचा लिया। घटना इस प्रकार बतायी आती है कि हिन्दू सिक्ष के नाम से हुए सचये में नवाबयज छाननी खेकों में काफी सिक्स आहसी ने अपने परिवारों के साथ छात्रनों में मुससमनों के यहा घरण ली थी। सिक्सों के मन ने बस समय हिन्दुमों के सिक्स उत्तरेवना भी थी। उस उत्तरेजना को और अवकाया गया। और उन्हे पराम्या दिया गया कि वह मुसलमान हो जायें। इसके लिए वह तैयार हो गये। मस्टिक्ट में पर्यं परिवर्तन का कार्यं क्रम बनाया गया।

कप्पूं के बीच किसी ने केन्द्रीय आय सभा व जिलाबार्य प्रतिनिधि सभा कानपुर के अप्यक्ष स्वी देवीदास सार्य को फोन द्वारा सुचना दी। इस पर श्री आय ने पुरस्त ऐसे सिक्स भाइयो से सम्पर्क किसा। और उनसे कहा कि सम शीदा बाजी की बस्तु नहीं हैं। काफी समभ्यत्रे के बाद उनका कोच सात किया। श्री आर्य ने उनको साय मन्दिर में रहने का बायह किया। इस पर इन सिक्स परिवारों ने मुसलमान होने का विचार बहस दिया और मौके पर पहुचने के सियं श्री आर्य का सन्यवाद किया व उनसे कुछ सहायता सी प्राप्त की।

## एक परिवार की शुद्धि '

हिन्दू शुद्ध मरस्रणोय समित समातका मदी में ता॰ द-११-८४ को शाम के ४ बजे औ हर्तिसह प्रधान आवंसमाज याव भोरा रस्तुतुर जिला सोनीपत के यहा श्री वेदप्रकाश शास्त्री पुरोहित जार्यसमाज समातका मण्डी से पारिवारिक सक्ष कराबाया गाव के काफी श्री कीर पुरुष सम्मितित हुए सायंसमाक समासका मण्डी के भी अधि-कारी व सदस्य बाए हुए थे। १० व्यक्तियों ने यक्षोपत्रीत स्थाण किए। स्वामी सेवान्य ने वो हिन्दू शुद्ध मरस्वर्धीय समिति समातका के महाम-त्री है वेदिक घर्म की विश्वकात और शुद्ध की आवस्यकता पर प्रकाश बाला। इस अस्तर पर श्री क्यर्सिस पुत्र की नत्रक मुना बाट ने स्वैच्छा से परिवार सहित वैदिक घर्म की दीक्षा ली।

# ब्रार्यसमाज बेलामेघ (समस्तीपुर) मे देवयज्ञ

- (१) बायसमान नेतामेच (समस्तीपुर) ग२०१००४ को देव यज्ञ तथा प्रवर्ग तरनारियों को भोजन कराकर दस्त दान करावदर आय ने किया। अपने पूत्रजों के वार्षिरिक अकसर पर इस कायक्रम में कातिकारी सुर विद्यवस्त्रण आयों ने कहा कि असहाय की तहायता करना ही चन्ची पूजा उत और सबसे बडा धम है। इस वस्त्रप पर श्री नवस किसोर शास्त्री भी चन्द्रदेव सत्याची न अपने अपने विचार प्रकटिकए।
- (व) समस्त्रीपुर में ११ ११ -४ को बायसमाज विश्व हिन्दू परिषद राष्ट्रीय स्वय सेकस सम भारतीय जनसम्, विद्यार्थ परिषद तथा गायत्री परिषदार के सदस्यमण में । कातिकारी मूर विश्वमण्य तमा व्याप्त में एक बैठक म गायत्री महायत कर दिवसम्बर को बण्यात्र में एक बैठक म गायत्री महायत कर के कई प्रमुख अपित उपस्थित थे। विश्वमण्य भी हात्र को हिन्दू राष्ट्र में बास्या स्कट में है। इसिलए सभी राजनीतिक गार्टी चामिक मस्याए जो हिन्दू राष्ट्र में बास्या स्कट हैं उन्हें एक चुट होकर हिंदू राष्ट्र मोहरस पर प्रविच व मुस्तवमाना को मत नहीं देन का और नहीं बजा होने पर प्रविच मताया जाए मुख्यें दियों को निकासा जाए अक्यायवादी तस्त्री के सर प्रविच मताया जाए मुख्यें दियों को निकासा जाए अक्यायवादी तस्त्री के सर प्रविच मताया जाए मुख्यें दियों को निकासा जाए अक्यायवादी तस्त्री के सर प्रविच मताया जाए मुख्यें दियों में का होना चाहिए। इससे हम सभी मत्रवुत होने और तथा मा जा उद्देश्य हो उनकी पूर्ति हा क्षेगी और किर यह देख मार्थन कर्तन के स्वार्ण अवस्ति में सहसा सम्बद्ध स्वर्ण मार्थन स्वर्ण ने स्वर्ण ने स्वर्ण ने स्वर्ण ने सम्बद्ध स्वर्ण मार्थन स्वर्ण ने सम्बर्ण ने स्वर्ण ने सम्बद्ध स्वर्ण मार्थन सम्बद्ध स्वर्ण मार्थन स्वर्ण ने सम्बर्ण में स्वर्ण ने साम स्वर्ण ने स्वर्ण ने

### शोक सभा

मारत की भूतपूर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निवन पर देख भर के बाय समाजों में उनके द्वारा वायोजित शोक समाजों के सदेख जो हमारे कार्यालय को निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं उनमें से कुछ निस्न हैं —

| नरन्तर प्राप्त हारह हज्जन च हुछ । जन्म ह —— प्रान्तीय आय महिला सभा लंबोकनगर फीजरोड आय समाज सान्ताकुन्त्र बम्बई १ मोतीबाग नयी दिल्पी ल इन विवेक विहार दिल्पी फित्रविल कालोनी शाहदरा दिल्ली

## जिला हिसार मे वैदिक धर्म प्रचार

दिनाक 10 से 16 नवस्वर1984 तक हिसार जिले के निम्न ग्रामों में कवारी सातराडकला धमाना उमरा, ब्रा बासाबास में वैदिक घमके प्रचार का प्रोग्न(म किया गया । जिनम निम्न विद्वानो ने भाग लिया-अाय जगत के प्रकाण्ड विद्वान हा सुदशन देव आचाय महामत्री वैदिक घम महासभा स्वामी बेचान द जो स्वामी बानन्द मुनि स्वामी रामानन्द जी स्वामी कीर्तिदेव जी व नारायणदेव प तेजपाल भजनोपदेशक (बाय प्रतिनिधिसमा हरियाणा) ब्रह्म चारिणी बहुन कलावती आचार्या कत्या गुर्केकुल गाठीयार बहन सावित्री महाध्य रिसाल बिह बादि विद्वान सन्यासी उप देशक आदि के महत्वपूण प्रवचन एव भजन हुये। उपराक्त विद्वानी ने इन गाव मे प्राप्त काल यज्ञ व साथ काल ईव्चर वेद पासण्ड अहेत्र चराव, स्रोरी, अध्दाचार बन्द करी बादि विषयो पर विस्तार से प्रकाश ढाला। गाव के प्रति ष्ठित लोगो ने इन बाब बिद्वानो का हृदय

से स्वागत किया। सभा को व क या गुरू कुल गणियार को दिल काल कर दान दिया।

## सत्यार्थ प्रकाश

—श्री राघस्याम आय विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुल्तानपुर उ प्र सत्य माग दिवलाने वाला ज्ञान—विवक बढान वाला। भूपर फेली गहुन तमिला—को निहिच तमिटाने वाला। विवसे दिव्यालोक प्रहण कर हुवा प्रकाशित भ्—वाकाश। दिन्य वही सायायप्रकाश।।

> भ्राति समस्त्र मिटाने वाला दूर प्रमाद भगाने वाला। सग्दी घरतीपर निभय हो—क्का सत्य बजान वाला। अन्नेय शस्त्र हैं इसके चौदह—मत्य शिवम मुच्दर सकुत्सास। दिव्य वही स यायप्रकाग।।

सच्चा इश दिखाया जिसने जीवन माग बताया जिसने। सारे बिर्धामयो की शैक्षी—क्षण में घूल मिलामा जिसने। कान्ति प्रणनावन युवको का मा की सहस जयाया ग्राश।

दिव्य वही स याथप्रकाण ।।

पाइचण्डो को सलकारा मानवता का मिला सहारा पोल खुली मत मतातरो की — जाग उठा भारत सारा। जिसके रहते कभी विश्व जन किंचित होग नही हताशा।

दिव्य वही सत्यायप्रकाश ।

# भवैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक **महेन्द्र कपूर** द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शार्गन्तप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपवेशको-

सत्यपाल पथिक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूच सोहनलाल पथिक शिवराज्वती जी के सर्वोत्तम भजना के केमटस तथा

प बुद्धदेव विद्यासकार के भजनो का सग्रह । आय समाज क अन्य भी बन्त स केसटस क संवीपत्र के लिए लिख किसे कन्टोका इनैस्टोनिस्स (इण्डिया) क्र नि

भन्दाकाम इनक्दानक्स (झण्डवा) फ्रांस 14 मकिट 11 फेस 11 अशोक विहार देहली 52 फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

### - प्राप्ति स्थान -

यह कैसेट विस्सी ग्रायं प्रतिनिधि सभा १४ हनुमान रोड नई विल्सी पर भी सिक्ते हैं।



# श्रीमती इदिरा गांधी के लिए प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा शोक समा

मुधी कुमुर बेन जोशी के द्वीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री ने बोक समा ने श्रीमती गंधी को महामानवी की सजा दी। १०११ क्ये धिनारा गंध व विकृत सुवित्य देवी जी को बरुशसता में स्वर्तीय प्रथाना को श्रीमती के दिलारा गांधी की निमम हुत्या पर बीक समा हुई जिससे दिल्ली की प्रमुख बाव प्रतिनिधि बहिनो ने श्रद्धाविषया वर्षित की।

इदिराजी को भारतीय प्रगति की बामा विश्व जाति की बयदुत और अदितीय राजनेत्री कहा गया। निर्मीकता से राष्ट्रीहत जीने मरने की अमर प्ररेणा बन सर्वे।

सबप्रथम सभा प्रथाना श्रीमती सरका महता ने शोक प्रस्ताव पढा जिसके समयन में बहिनों ने अपनी वेदनाए अभिव्यक्त की।

भ बाहागा जभाग बनाग प्राचनमध्य गा। पृत्य ब्रितिष कुमुद बहिन जोशी बावर विद्या बहिन साह बौर कीसल्या मलिक समी ने उनके सस्मरण सुनाए? बहिनो का बुदय मारी वा बौरनेत्र सबल थे।

सभा ने प्रतिज्ञा की कि हम साति सदमाव राष्ट्र में स्वापित करके राजीव साथों को अपना सम्पूण स्तेह समयन प्रदान करगे। यही उस महान जात्मा के प्रति सन्दी अद्याजनिया होगी।

'शत शत तुम्हें प्रणाम' (राष्ट्राम एक्टोकेट)

भारत की हे भाग्य विभाते मानवता की ज्योति पुनीत । युग युग तक ऋणी रहेगा तेरा सारा अगत विनीत ॥ गौरव की गाथाए तेरी बनी मरा पर दिव्य सलाम । गत-शत तुन्हे प्रणाम ॥

अपने भीय तथा महित से देव महान बनाया। कण-कव मे इत पुष्प भूमि के जायत ज्योति बनाया। जब तक तस्व व द रहेगा असर रहेगा तेरा नाम। बात खत तुरु प्रणान।। बातुमु तुरु प्रणान।।

बतुत्र की बह प्रगति राष्ट्र की कहती कमर कहानी। शक्ति पुज्व है हिन्द्य साथी और बसी! विनदानी।। वीन-वित्त की बहे रिक्कात तुम को युग का बाज प्रणास । सत सत पुन्हे प्रणास।। पहलबान ऋषि प्रकाश का सन्तर्राष्ट्रीय विवाह सम्बन्ध

न है (बस्ती ४ नवस्वर पुरु हनुमान के किया राष्ट्रीय पहसवान ऋषि प्रकाश (बाकनर (बस्ती नवासी) सुपुत्र जी मागेरास बाय का सुन विवाह बायुष्मती सक्सी ((मि सुक)) सुपूत्री अ बूटाका कास्तुरी टोक्सियो (बायान निवासी) के साथ विना दहेज वैदिक रूप से सम्पन्त हुआ। दिल्ली के प्रबुद्ध नागरिको पत्रकारो पहसवामो ने सर बच्च को बाधीनाँव दिया। इस अवसर पर विजिन्न सस्वाबों को एक सी एक स्पया दान दिया नया।

।। ओ ३मः।।

## आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए

दिल स्रोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तगत करमुक्त होगी।

सारा बात चैक/मनीझाडर/बक ड्राफ्ट द्वारा सत्री माता चन्ननदेवी बाय वर्माच नेत्र विकित्सालय सी १ जनकपुरी नई दिस्सी ५०

के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय को शिला पर स्रकित किए जाएगे।

### निवेदक

रामगोपाल सालवाले सरकारू सुवदेव महाध्य वसपाल बोमप्रकास बाय विकासालय एव प्रचान निर्णे बाय प्रति प्रचान बाय मत्री महास्वय सां बां बां प्रति समा कृतीलाल वे दि ट सोब य से महास्विया दी हुट्टी प्रां लिनिटिड १/४४ कीतिनगर बौकाशिक रि

नई दिल्ली ११००१

# उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेरी,

हरिद्वार की भ्रौषधियां

सेवन करें

धाला कार्यालय ६३, गली राजा केदारनाय

कान न० २६६८३८

बावडी बाजार दिल्ली ६



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

सूरव एक प्रति १० पैसे रविवार, १० फरवरी, १९८३ धार्य सबत्सर १६६०८५३०८४

# दयानन्द शताब्दी दिल्ली का अभूत श्रद्धाञ्जलि समारोह धूमधाम से सम्पन्न

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह एवं केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त मुख्य त्र्रतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। दयानन्द स्वतंत्रता के

महान् समाज स्धारक थे-महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

महाव बयानन्व निर्वाण सताव्यी के समापन समारोह में समापन भाषण करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलीसह ने कहा —

मुक्ते महर्षि दयानन्द निर्वाण श्वताब्दी समारोहका उदघाटन करते हए बढी प्रसन्नता हो रही है। महर्षि दबानन्द सरस्वती इस देश की उन महान् विभूतियों में से बे जिन्होंने समाज में फैली कुरीनियों को मिटाने, लोगो को प्रन्यविश्वास से मुक्ति दिलाने भीर स्त्रियो तदा पददलितों के कल्याएं के लिए

निर्भीक होकर घावाज उठाई थी। उन्होने भारतीय समाज मे नई जागृति पैद्धा करने की कोशिश की। वे सच्चे समाज सूर्घारक ये।

उन्होने भारतीय समाज को एक नई रोशनी देकर उसे फिर से अपने पैरो पर खडा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा का प्रसार, श्रञ्जतो

का उद्धार बाल विवाह का विरोध भक्त ये ग्रीर उन्होने भारत के नव भौर विषवा विवाह का प्रचार कर के जागरए। में बहुत ही महत्त्वपूर्श समाज मे एक नई क्रानि पैदा को। वे स्त्री शिक्षा और नारी स्वनन्त्रना पर बल देते थे ताकि समाज का यह मग किसी भी प्रकार से पोछे न रह

ऋषि दयानन्द सच्चे देश-

मुनिका निमाई भीर देश में स्वदेशो बान्दोनन की नीव रम्ती। सन १८४७ को भाजादी को पहली लडाई में भारतीयों को जो प्रसफलता मिली थी उस से हार न मानते हुए उन्होंने लूल कर कहा---क्षेत्र पुष्ठ २ पर

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश-स्तम्भ थे-

राजीव गाधी

सर्वात वयानस्य निर्वाण शतास्वी के ध्रवसर पर प्राप्त प्रवान मंत्री का सवेश

महर्षि दयानन्द हमारे राष्ट्रीय पूर्वागरण के प्रकाश स्टब्सों में से एक वे। वे हमारे प्राचीन गौरव के श्रमक प्रचारक के, लेकिन साथ ही वे श्रम्य विश्वास के कट्टर विरोधी के। वे विवेक सम्मत जीवन दर्शन के समर्थक थे। महर्षि जी जैसी महान विश्वतियों से ही हमारे देश की सास्कु-तिक परम्परा कायम रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाता बताब्दी के भवसर पर मैं उनको धपनी अद्वाजलि धर्पित करता है।



महानि बयानम्य निर्वाण शतान्त्री समापन समारोह तासकटोरा इन्होर स्टेडियम मे समापर शासीत वार्णे से-राष्ट्रपति भी जानी वैवसिष्ठ, शिक्षा नत्री भी कृष्णाचन्द्र पन्त, समा प्रचान भी सूर्यदेव श्री स्वामी दीक्षाचन्द जी. वेठ महासम वर्नपास भी एवं समा मन्ती डा॰ वर्नपास भी ।

# हे नर! तू अपने को जान

एम० ए० एल० टो० ६ ए० इ १, ग्रोवरा मिर्जापुर

सुपरगोंऽसि गरुतमान् ण्डे पृथिव्या सीद ।

भासाऽन्तरिक्षमापुरा ज्योनिषा दिवमूत्तभान

तेजमा दिश उदद ह ॥ यजु० १७ । ७२

हमनुष्य (सुपला आस) तूपसो बाला ऊची उडान लेने वाला है (गर <मान् श्रसि) महान् श्रात्मा वाला है तू (पृथिक्या पृष्ड सीद) पृथ्वी के पृष्ठ पर बैठ (भासा) धारनी जनक से (धातरिक्षम्) चात्ररिय का (ग्रापृण) भर दे (ज्योतिया) ज्योति से (दिवस्) य लो ह को (उत्तभानः) ऊपर वाम ने (तेजसा) तेज से (दिश) विशासी को (उदद ह) सर्थात् हे नर ! तू सुपण है जबी उडान लेने वाला है ऊ बी **मह**वाक नावनाहै जीव<sup>।</sup> तूगर त्मान् है गुरु झामा वाला है पृथिवी के सिहामन पर बैठ वहा बैठकर ऐसा चमक कि अपनी चनक से अन्तरिक्ष को परिपण कर दे धानी ,जनमन करती ज्योति से बनोक को थम ले "ग्राने तेज से दिशामी को उठाले।

मनुष्य के लिए कितना प्रेरसादायक है यह मत्र सफलनान मनिष्य के गम से खिपाहुई है नवह अगस्य है वह तुम्हारे निकट ै तुम्हारी पकड के भीतर है। सुधातसर घने वाला नहीं वह धा गया 🕏 । स्वगन्नाक न में ब्रैंखिपी हुइ चीज नटी है वहतुम्हार ग्राटरहै। समार की सभी श्रद्ध वस्तुण जीवन क सारी सफलताए तुम्हारेपाय ब्रा 🛪 🍍 । ब्रपनी शक्ति में विद्वस जन प्रनामाणा ऊचारम ग्राह उस के लि **भपना** शक्तिको "मफलना चाहिए यह मात्र कहता है ---

हमरा शरीर खड़ है शरीर का चनान व ना जावामाचतन है। नवित से भराहै यन नाव जन अविवा मनुष्य जान नन है तो वह उनति की भरम मीम र च जाता है ग्ररे मनुष्य मस्तर उनित करने वाले अपूपराहानुम गरु ग्रामावाले ग मान हो । उसे यह समक 🤚 ग्रीरजिम दिन वह यह मस अवगतो उप नि उस यह प्रतात हो जाएगा कि वह एक घर का एक देण काया एक जलि का नही किन्तु सम्प्रता पृथ्वीका पुरुष है। तब विक्रे अब झपनेको विन्य का पुरुष समसेगा विन्व मे एकताका धनुभव करेवा और ग्रपनी उनित की भीर भपनी महानता की भीर जाने के माग की जान जाएगातव इस एकत्व भावनाका यह परिस्ताम होगा कि पदाय ही उस का पुरेक्क्यन्त्र वेदालकार

स्वाय हो जाएना भौरतव वह धपनी दिना से धन्तरिक्षको भर देवा। उस विश्व ॰ बापक बीबात्मा की मानसिक नमक इस अगत्को चकर्चीच कर देगो। हेजीव<sup>†</sup> तुभानी चक्तिको जानसा नही समऋता नहीं। इस अगत को बादश वित्व के रूप में परिवर्तित करने की क्षमता रखने वाने राम कुष्ण शकराचाय स्वामी दयानाद स्वामी श्रद्धान कमहामा गांधी की गक्ति तुक मे नी है। बस तू अपनी श्विपीज्योति को प्रकट कर वसका तब तेरा तब दिय दिगतोतक ऐसा फैलेगा कि विश्व के सब प्रात्तातरे तज के प्रकाश में अपना यज्ञान भीर मभाव दूर कर सकते। तब तू अपनी उनिति से न होकर सब की उनित में भपनी उनित समभेगा भपने को देख। इस मन्त्रित को मपनी जनक स चमका अपनी ज्योति से बलोक को भर पृथ्वीतवादिशाझीको उनतकर।

हनर तूसाधारण बादमियो की तरहरूयो बैठा है तृतो वह अग्नि है जो कि बाने प्रदीपन से सम्पर्ण ससार को ∘बाप्त करने का**साहै।** तूउर श्रपने को जान त्सुपरा है त्यरमन् है।

[पूछ १ का धेप]

स्वामी दबानन्द स्वतन्त्रता केश्रग्रदूत थे

कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सब से उत्तम होता है।" विदेशी राज्य कमी अञ्चा नही होता।

राष्ट्रपति का भाव न

सन १८६३ में इन के गुरु स्वामी विरजानन्द ने ग्रु दक्षिगा के रूप मे ऋषि दयानन्द से यह बचन लेकर उन्हें विदा किया था कि वह भ्रपना सारा जीवन लोक कल्याए के लिए लगादगे। इसी की पूर्ति के लिए ऋषि दयानन्द ग्रगले २० वर्षीतक देश भर मे भूम भूम कर जन कल्याए। स्वदेश प्रम भीर सत्य का प्रचार करते रहे। लाला लाजपत राय भीर स्वामी श्रद्धानन्द जसे महान लोक नेता उन्ही की देन है। उन्ही के सन्देश से अनेक भारतीय नर नारी स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पड दे।

वह समाज में सभी वर्गों की उन्नति के समधक थे। उन्होने ग्राय समाज की स्थापना करते समय जो १० नियम बनाए थे उन मे से ६ वा नियम यह रखाथाकि प्रत्येकको श्रपनी हो उन्नित से सतुष्ट नही रहना चान्ए बल्कि सब को उन्नति में अपनी उन्नति सममनी पाहिए।" यह समाज के लिए उन का मूल मन था और इसी के लिए उन्होंने समाज के हर कमजोर वग को ऊचा उठाने की कोशिश की बी।

वे भारतीय संस्कृति भारतीय मावा भीर भारतीय शासन के हामी थे। वे देश के लिए स्वदेशी भाषा चाहते थे और इसी के लिए उन्होंने भपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषा मे की थी। जिसे लगभग १०० साल बाद स्वतन्त्र भारत मे राज भाषा का दर्जा हासिल हुआ। उन्होने इन ग्रन्थों की रचना उस समय खडी हिन्दी मैं की थी जब कि मभी तक हिंदी गद्य का पूरी तस्ह विकास भी नही हुमा था। इस प्रकार से उन्होने हिन्दी के विकास मे भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्री सरविद्योष ने उन के विषय में कहा या-

वे परम्पराकी इस विचित्र मुष्टि के एक भनोखे योदा भीर मनुष्य तथा मानवीय संस्थामी का सस्कार करने वाले महान्

यह देश स्वत ब्रता के श्रग्रद्रत, महान



महींप दयान द निव स अताब्दी पर स्मारिका का विभावन करत है राष्ट्रपति जान जल सह ानकाम ती कें विश्वात एव श्र रामगोपाल शालवाले

समाज मुघारक ग्राध विश्वास भौर रूढिवाद की बेडियो को कारने वाले महान सयामी महर्षि दयान द सरस्वती क सदा ऋष्गी हेगा। महाकृति रवी द्रनाथ टेगौर ने भी उन के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए

में सादर प्राणाम करता हू

उस महान गुरु स्वामी दयान द को जिन की दूर इंटिंग्ने भारत की ग्रात्मामे सत्य ग्रीर एकता का बीज देखा।

माज देश की एकता भीर अलण्डता के लिए जो चुनौती दी जा रही है "स का सामना करने के लिए हमें सेव को ऋषि दयानन्द द्वारा दिखाए गए देश प्रम भीर भारता यताके मूल मन्त्र से प्ररुगा लेनी चाहिए ।

इन शब्दो के साथ मैं महर्षि दयानाद सरस्वती को श्रपनी श्रद्धाजिल प्रपित करता हू।

। जय हिन्द ।

## राष्ट्रीय एकता और त्रार्यसमाज

सपादक धनपति वाचकः मनोचकुमार मिश्र

ल०-डाक्टर धर्मपाल धार्य

राष्ट्रीय एकना और मलण्डता सद्घ प्रश्न पर्याप्त समय से मारतीय मानस को किंभी बेरेर हैं गैर देश के लिए सकटापन्न स्थितियों का कारण भी बनते रहे हैं। राजनातक साथाजिक और सास्कृतिक मची से यह सवाल बनेक बार उठाया गया है भीर इस पर चिन्नाभी प्रकट की बयी है। यह दुखद स्थिति है जिसका हम एक दूबरे को ब्रह्मास ता कराते हैं, पर राष्ट्रीय एकता के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाता इस वधातो मह सवाल इतनी तेजी से उठा कि सारे देश की आराशा को ही तिमनिला गया। राष्ट्रोय एकता के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान न हमारा भ्यस्य साली है। इतिहास इस ब'त का साक्षी है कि दं सकट के समय इस देशा न धारचयजनक एकात्म सवदन भीर शक्ति स काम लिया है। हर ग्राम भादमी चाह बहुपजाब का हो या तामलनाडू का उत्तर प्रदेश का हा वा करल का, हिन्द हा या मुखनमान, सिल-ईवाई हा या कोई घन्य मतावलम्बा सभा का चिन्नन सददना की क्सी मुनायम पर सुदृढ सास्कृतिक डोर सं जुडा है जिस कवियों ने अपने वाल्य मे ग्रमिन्थिक्त प्रदान का हं विज्ञकारों न ग्रपना राजपूत, कागडा और मुगल ग्रादि धीनियों में निजित किया है, जिसकी प्रात्मा नानक मारा, सूर कवीर, टैगोर और सुकहाव्यव भारती की बुना में माल्यसात् है। एकात्म की इस बारा का, जो राजनैतिक विचार दशन पहचान सकेगा वहाइस दशका धरती को प्रसण्डता म बाध रख सक्या । क्षत्रीयता वा क्षत्रीय स्वायत्तता की माग दोष नहीं है पर इसका राष्ट्राय एकता स जुड रहना परमावश्यक है। इस बहुभाषी बहुबर्मी और विविधतापूरा भारतीय राष्ट्र क जाम बादमी हा की सबेदनश्वील सांस्कृतिक एकता से परे होकर यदि कोई राज-नीतिक चिन्तव का विचार उठा भा तो बाम बादमी उसे स्वीकार नही करेगा।

राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास झाज से नहीं किये जा रह है। इतिहास के साक्ष्य बतमान है कि दुराने समय म भा राष्ट्र का एकता की कड़ों मा पिरान क लिए प्रयास किय जात रह है। राम सीर कृष्ण का युव आ एकता के लिए प्रयास का युव रहा है। बुन्तकाल में भा एसे प्रयास किए गए है। युवल सामान्य के दिनों में मो सनवरत प्रयास किय यदे, वस कोटे-कोट राज्यों का सपन वह सामान्य में मिलाया जाता रहा है। सम म स्रांत होता है, इस शत को उन्होंन जान लिया था। केवल राजनातक स्तर पर नहा, तालांक, सामक, आजान स्तर पर भी एसे प्रवास किये गये।

सन् १८७७ मे महर्षि दयानन्द सरस्वतो ने एकता सम्मलन किया, विसमे सर सैयद प्रदुष्ट सा और वो केशवचन्द्र सेन सम्मिनित हुए थे। सायसमास के प्रवतक युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वता महाराज के निर्वाण का सौ से श्रीधक वय बीत जुके 🐧 पर अंखा कि सद द्वाता आया है नहापुरशों के जीवन तो प्रत्तुदायी होने ही हैं, उनका निवास मा, उनका बिबदान भी प्ररणादायक होता है। महर्षि दवानन्द सरस्वती भारत मा के एसे हा सपूत वे जिनका मन-हृत्य इस वेश की दुरवस्था को वेसकर रो पढा था। उनका इस भारत-भूपर अवतरण उस समय हुआ जब यह देश पराजीन षा। स्वत्र प्रविद्या प्रार प्रवकार की घटाएँ छाई हुई थी। बारतीय सम्पता, संस्कृति बोर साहत्य की द्वाला हा रहा था। इतिहास ने परिवर्तन करके वसे विकृत किया जा रक्षा था। सत्य-सनातन वैदिक थम जुप्त हो रहा था। चारो बोर बनाचार का खामाञ्य वा । नारा जाति की स्थिति दयनीय थी । सूद्र को धीर नारी को वेद पढने, विका प्रकृत करने का अधिकार नहीं था। बती प्रया का दानव हुने असित किये था। इस बोरतम अन्यकार से हमें निकासने के सिए, असस्य से सत्य की धोर से वाने के विय महा्व दयानन्द सरस्वती ने हमे सहारा दिया वा। उन्होंने देख की एकता के विए, राष्ट्र के कल्याल के सिए, मनुष्य को बास्तव ने मानव बनने के खिये जो प्रवास किए वे अमृतपूर्व है।

ु नाको की सकता में शिक्षित कोय उनकी और आकर्षित हुए । मुबतमान, सिख और ईसाई भी उनके दर्बन ने प्रचाबित हुए और समुवायी वने ।

परम झावरणीय मन्त्री जी श्रीमती मित्रणी जी,

सादर नमस्ते ।

बहुदि दयानन्द निर्वाच सदास्त्री की समूतपूर्व वफ्तवता ने सापकी समा के सविकारियो कायकर्ताक्षी का तन, सम बन से जो सहयोग और स्वद्भाव कर समा को प्राप्त हुआ है। उसके लिए मैं सपनी धोर से तमा इस बमा के सन्य सविकारियों की तर से साथ सभी का हुदय से सामार प्रकट करता हूं और साथका वन्यवाद करता ह।

बाबा करता ह कि मविष्य ने भी इस सभा के सभी कार्यक्रमों में धाएका सवा बापकी सभा का सहयोग निरन्तर हमें प्राप्त होता रहेवा।

चन्यवाद ।

डा॰ वर्गपास धार्य, महामत्री

मान्य सुषाशु जा

सप्रेम नमस्ते

भागं सन्देश का सम्पादन भार बायन सभा नियु है इस की मुझे घायला प्रसन्नता है। भाग जैसा कवि हस्य पत्न की नीभा का चार जाद लगायगा । गसी पूर्ण भागा है।

प्रापका ग्रपना

उत्तम चद शरर'

हापका ३० दिसस्वर का अक बहुत सनय व चु का पूर अध्य सं इति तक पढामीर बहुत पसद आंगा।

इससे वहल कभी पूर का पूरा प्रदू 😁 व न्द ही प्रया।

भवदीय मनोहर विद्यालकार

सम्पादक जी ।

सप्रेम नमस्ते।

माय मन्देश साप्ताहिक का शुभ सन्देश मिला । लगा कुछ तरुगाई बोधगम्यता का सन्देश वा गया । पर कुछ प्रश्न भी मन मे हैं

१ क्याइस के पेज बढ़ाये जा सकेंगे?

२ क्याले वो कास्तर भी ऐसाही अच्छारवाजासकेगा?

३ क्या राजनीति से ऊपर उठकर वैदिक आध्यात्मिक इंग्टिकोए। लेकरचल सकेंगे?

यदि हा तो एक भ्रच्छी शुरुप्रात के लिए मैं भीर मुक्त नेस प्रबुद्ध पाठक आभारी हैं।

> मावत्क हरिदत्त वेदालकार कैलाश कालोनी नई दिल्ली

मान्य सम्पादक जो

बहुत बहुत बघाई।

प्रार्थ-पान्तेयाँ के २३ दिसम्बर्गधौर ३० दिसम्बर के दो श्रक पढ़ने को मिले। दोनों श्रक पड़कर मन सुप्रन किल गया। सारे ही नेख खोजपूर्ण, रोचक शिक्षाप्रद थे। कृपया इस श्राच्यात्मिक ग्रीर आदर्शस्तर को बनाये रल।

पुन हार्दिक बघाई डा॰ श्चियमूर्ति माडल टाउन दिल्ली

महर्षि के स्मति चिह्न

२ ह सिसन्यर के प्रार्थ-वेश में श्री में रिक्स विकास स्थानी हिल्सी में महीं के निवास स्थानों को लतायंत तथा नहीं पर किसी प्रकार के स्तारक आदि बनाने का सुकार ऐतिहासिक वृष्टि से ज यन्त उपयोगी तथा महत्त्वपृष्ट है। परस्तुवातं के बना से का सुकार ऐतिहासिक वृष्टि से ज यन्त उपयोगी तथा महत्त्वपृष्ट है। परस्तुवातं के बना से लामें को हिए । कई वर्ष पूर्व सार्वेशिक समाने एक प्रतार स्वीकार किया था दिससे प्राप्त स्थानों को प्रारेश दिसा तथा कि सिंद उनके नगरों में स्वार्थों जो का प्रवर्ण हुआ वा तो वे स्थाने समान मिर है। एक दिसापट स्वार्था को का प्रवर्ण समान मिर है। एक दिसापट स्वार्था के प्राप्त प्रमान स्वार्थ के प्राप्त समान प्रतार स्वार्थ स्वर्ण समान सिर है। एक दिसापट स्वार्थ स्वर्ण समान सिर कराए। स्वर्ण प्रोप्त महेश्वप्रसाद मौत्या ने इस सम्बन्ध से यिन केकर स्वार्थ स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण से स्वर्ण से अपने समान सिर का स्वर्ण का स्वर्ण से उन्हें से स्वर्ण से स्वर्ण साम स्वर्ण से स्वर्ण से अपने समान से स्वर्ण साम स्वर्ण से स्वर्ण सिवर्ण से स्वर्ण से स्वर्ण सिवर्ण को स्वर्ण से स्वर्ण से स्वर्ण सिवर्ण को स्वर्ण से स्वर्ण से स्वर्ण सिवर्ण का प्रयोग किया है।

सार्यव्याच में इतिहास बुद्धि का दिनो दिन हास हो रहा है तथा चमत्कार-नाव तथा समीकिकता को बातें बढ रही हैं। आवश्यकता है कि समय रहते महींच हारा पवित्री कुछ स्वानों की मौगोनिक स्थावता का पता लगाया जाए और वहा पर सहींच की पुनीत सावसारें स्थापित की बावें।

मवानीलात भारतीय चण्डीबड



# वेदों में समाज शब्द की उद्भावना का मूल स्रोत

–पं० बुद्धदेव विद्यालंकार

वह्या से लेकर जैमिन मुनि-पर्यन्त समीयमं ने जिस बेरवहरन का निर्माण किया वा उसके तीरण द्वार पर भावान् सनु का समर वाक्य साथ भी मिकत है— विदो सिलाने पर्यमुक्त में प्रति के स्वत्य साथ भी मिकत है— विदो सिलाने पर्यमुक्त मार सम्बदेवर एक सिला साथ से इस्कृत मजु , साम सीर सम्बदेवर एक सिला साथ से इस्कृत सम सक्य वर्णानम कर्त्तम्यों का सायक है। यहा का वर्णा सम्बद्ध समाज-निर्माण का स्वातक है। किसी भी स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण स्वस्त सीर सामज के समन्य में है।

व्यक्ति प्रार समाज एक खड़ के दो किनारे हैं। जब तक इन्हें जोडान जाये तब तक न राष्ट्रहित होगा न विश्वहित। भल से समफायह जाता है कि व्यक्ति सुमाज कः भीर समाजव्यक्ति का विरोधी तत्त्व है। यही कारश है कि इन दोनों तत्त्वों को ग्राधार बनाकर धनेक वादी का जन्म हवा है। बाज का यूग समाज-बाद भीर साम्यवाद का युग माना जाता है। विश्व के वायुमडल में इन दोनों शब्दों की इतनी ग्रंब है कि जिससे भावाल बुद्ध प्रभावित हैं। इन दोनों के श्राक्षार पर ही रूप धीर बीन जैसे राष्ट्रों का निर्माण हुआ। समाजवाद पर विशाल साहित्य निर्माण हो चुका है। विश्वालयों, विज्व-विद्यालयों में इसने पृथक् विषय कारूप बारसाकर रखा है। इन महत्त्वपूर्णवादों के सम्बन्ध में बेद में भी कोई व्यवस्था है या नहीं, इस पर विचार करना प्रावश्यक है, परन्तुहम इस लघुले ख मे इस पर विचार न करके मात्र वेदों में समाज शब्द की उद्भावनाका मूल स्रोत तक ही सीमित रहेंगे।

वेदों में हमें जहां समाज के पर्याय ग्राम, समिति, समा, इत्यादि शब्द मिलते हैं, वहाँ समाज गब्द की उद्भावना जिस शब्द मे निष्टित है उसका प्रयोग बहुधा देखने में भाता है वह है सम उपसर्ग, इसी को हम समाज, समता समानना, एकता मादि शब्दों की उद्भावना का मूलस्रोत कह सकते हैं। वेदों का प्राम शन्द भाज प्रचलित सनाज शब्द की उद्भावनाधी को जितना सजीये हुए है सम्भवत जतना समाज शब्द भी नहीं। ग्राम ग्रीर समाज दोनों शब्द समूह, सगठन और सध के बावक है। समाज शब्द मे कमात्र समूह के सभी श्यक्तियों का एक होकर चलने की भावना निहित है, जबिक ग्राम शब्द मे समह के सभी व्यक्तियों का परम्पर एक इसरे की बहुए। करने और उनके ग्रास का प्रवत्य करने की भावना निहित है। मनुष्य को ग्राज की भाषा में सामा-विक पशु (Social animal) कहा जाता है। बेदों में उसके लिए शान्य-पत् का प्रयोग दुवा है। इन प्राम्य पत्तुकों से स्वया दुवा है। इन प्राम्य पत्तुकों से बाह्यण के प्रनुदार सर्वप्रयम सनुष्य, क्रम्य, गी, स्रवि घीर सर्व से धन्त मे प्रवा है। इन सभी पत्तुकों को वहां एक-दूवरे के साम सितकर एहना विकट है, वहां प्रपत्ती हो बाति से साम भी सिमकर रहना वाहते हैं। वस तक सितकर रहने की भावना मनुष्येतर पत्तुकों में है तब तक उस सरन का नाम समस्य है। वैसे ही उस भावना की उस्कान्ति सननगीम समाय हो गया।

ब्राम्य पश्चमों के परिगणन में मन्तिम पश प्रज है। प्रज भात का धर्य नित है, समाज शब्द में भी वहीं खब घातु प्रयुक्त हुई है। जैसे ही गति में एकता आई कि ऋटिति समाज का निर्माण हमा। उससे धागे ज्यों ही वाणी में एकता बाई कि समाज में उस्क्रान्ति हुई उससे उसकान्त ग्रवस्था वह है कि जब समृह के व्यक्तियाँ के मनन भी एक हो जाए। इसी को कहेंगे समज से समाज धवस्था में उस्क्रान्त हो जाना। ऋग्वेद के धन्तिम सूक्त मे प्रादश दिया जाता है 'सगच्छध्यम्' तुम सब मिलकर चलो, 'सबदध्यम्' तुम सब मिलकर बातबीत करो, 'स वो मनांखि जानताम्' तुम सब के मन मिले हुए हों। जब तक व्यक्तियां सगच्छव्य का पालन फरती हैं, तब तक वह समज-अवस्था कहलाठी है। जैसे ही बहस व मनासि में उल्हान्त हो जाती है, वैसे ही समाज निर्मित हो जाता है। इस प्रकार समाज-निर्माण के लिये जहा एक उच्चार, एक आचार और एक विचार का होना साब-श्यक है, वहां इन तीनों मे भी एकता होनी बावस्यक है।

जहा यह गर्व का विषय है कि वर्त-मान समाम जन्द जिल-जिल वह मान नायों को ममूहीन किय हुए हैं उन सनी भाव गयों को वेदों में प्रदम्त उदाल गर्दों में प्रकट किया गया है वहां यह जानकर पार-यें होगा कि वेद और वैदिक माहिल्य में समाज ग्राम का प्रवीत नहीं हुया है। इस यह दिला कुते हैं कि प्राप्त पुत्र ने भव ते पुत्र की सक्षा उस की मित के कारए। है, उस बित को किमी भाग सामन के द्वारा एक कर देने का नाम समन है उसी गित को सल्पोन के द्वारा एक कर देने का नाम सम्वात है।

वेद और वैदिक साहित्य में अब और अवा शब्द बड़ा, जीव और प्रकृति के वायक हैं। इन की यह सजा दो कारणो से हैं एक दो निरन्तर वृतिक्षील होने के कारण 'न वायते इति अव'। इन तीनों में ही दो तत्व नेतन हैं भीर प्रकृति जह है। प्रकृति को बलाया बाता है, उस को पसाने वासी सर्वातियायी सत्ता बहा भीर एकातिशायी सत्ता बीव दोनों ही बेतन भीर भवन्या है। जब यह नित एक होकर किसी भी बेतन सत्ता से बसाई जा रही हो तब उस का नाम समज-अवस्था या सांस्य के धन्दों में साम्यावस्था है। लेकिन जब यह मति बीव में देखी जाती है, तो वह सपने ज्ञान और प्रवल्नका प्रयोग स्वतन्त्रता से करता है, उसे किसी चनाने वाले की धावश्यकता नहीं होती। तव को धवस्था उत्पन्न होती है उसे समाज भीर साम्यावस्था जी कह सकते हैं। वेदों को बजा प्रकृति की समय भीर साम्यावस्था प्रभिष्ठेत नहीं, जिन के बलाने वाले कोई धौर हों, उसे ज्ञानवान प्रयत्न-शील व्यक्तियों की वह समाज और साम्यावस्था प्रभिप्रेत है, जहां की व्यक्तियां किसी के द्वारा न चलायी चाकर स्मयं वर्ले। इस का वर्लन अवर्ववेद के निम्न मन्त्र में हवा है

नाम नाम्मा जोहबीति पुरा सूर्वास्तुरोबसः । यवकः प्रवम संदूर्णय स ह सत् स्वराज्य-मियाथ यस्मान्नास्यत् परमस्ति सूतव् ॥

रमस्ति मूतम् ॥ १०।७।३१

जिन ग्रज नामवानी ग्रजीत नित्य कहसाने वाली सत्ताओं को धव नाम से बुसाया बाता है वे पुरा सूर्यात्; पुरा उवसः, वृष्टि के धारम्भ के होने वाले सूर्यं **ग्रौ**र उवा से भी पूर्व विश्वमान दे, दे सम्पूर्ण गतिशील, प्रजायमान व्यक्तियाँ एक हुई, निश्चय ही वह स्थिति स्वराज्य श्रवस्था को प्राप्त हुई, इस से परम उल्क्रुच्ट सबस्या और कोईन वी। इस ऋषामें सुष्टि-रचना की पर्वावस्था से लेकर परमोत्कष्ट स्वराज्य भवस्या तक का वर्णन है। यही वह सूत्र है जिसे समाज धवस्था का जनक कह सकते हैं। जब-जब नये समाज का निर्माण होगा तब-तब प्रजा (प्रकृति) ग्रजायमान ग्रवस्था में रहेगी, धराज विवत राज श्रवस्था में रहेगी। जैसे-जैसे इस धवस्या से उमरने का विवार बढेगा. वैसे ही वैसे प्रजापति विजायमान ग्रवस्था की मोर मग्रसर होगा। (यजु० ३१।१८) इस को हम वैदिक भाषा में अजायमान धवस्थान विजायमान धवस्था मे उल्क्राति कहेंगे। अथवः 'विगनो र'ट् यस्मात् विराट् **अवस्था से** 'त्रिशेषेण राजत इति विराट् कहेंगे। विशेषेण राजने विराट श्रवस्था की

विशेषता बहु है कि उस संतरत की सभी
व्यक्तिस्ता स्वय गावते हति स्वराद स्वरूपा
को प्रापत ही । यह सिमाय है 'स्वराजननियाय' सन्द का ऐसे व्यक्तियों का एक
होकर वित करवा कि जिस्र का प्रयोक्त
करवा या राजधात हो, समाज
कर्मकरिया।

विराड् वा इवलय सालीलस्या वातावाः सर्वेजविमेदियमेवेद मदिव्यतीति॥

सोबकाजस्ता गार्हपत्ये न्यकालत् ।। मूहनेची मृहपतिर्जवति य एवं वेद ॥ सोबकानस्ताहवनीये न्यकालत् ॥ यन्त्रवस्य वेदा वेदहृति प्रियो वेदालां स्वति य एवं वेद ॥

सोबकानत् सा बिक्तसानी न्यकानत् ॥ यसर्तो बिक्तसीयो नासतेयो मचित् य दर्व

वेद ।। सोबकामरसा समायां त्यकावत् ।। यत्त्यस्य समां सम्बो मबति य एवं वेद ॥ सोबकामरसा समिती त्यकावत् ॥ यत्त्यस्य समिति सामित्यो मुकति य एवं

वैद ॥ सोबकामस्सामन्त्रशे न्यकामत्॥ बन्ख-स्यामन्त्रमामन्त्रशोयो नवति य एव वेद ॥

समर्वे० ट । १०
सुव्हिट के ब्रारम्भ में सर्वेत्रध्य विराह्
ध्यवस्था में, ध्यम प्रवस्था तो थी, सम्राह्
ध्रयवस्था ने थी। ध्रम श्रयवस्था तो थी, प्रवस्थु
सम्बद्धान थी। ध्रम श्रयवस्था तो थी, प्रवस्थु
समान ध्रयवस्था ने थी, व्यक्तियाँ थीं, प्रवस्थु
स्था तो थीं, परन्तु सर्वाठत न थी, बहु श्रव्य
श्री मतिशील तो थी, परनु एक होकर(स)
प्रवस्था स्थाप सम्बद्धान थी। स्थापन

(शेष पृष्ठ १ पर)

# वैदिक कैसेट

त्या राज्य करूर द्वारा महर्षि दयानन्द

का अन्य करानी

सन्ध्या-यज्ञ, शर्मान्तप्रकरण, स्वस्तिवाचन आहि पसिद्ध अपनोपदेशकों-

सत्यपाल पाँचक, आमप्रकाश वमा, पन्नालाल पीयूष, सोहनसाल र्र्णियर, शिवराज्यती जी के सर्वोत्तम भजना के केसेट्स तथा

र बुद्धदेव विद्यालकार क भजनो का सम्रह । आय नमाज क अन्य भी बहुत म केसेट्स के मूचीपत्र के लिए निर्वे ट्रिक्टि वन्स्यकार इनेन्द्रोनिक्स (इण्डिया) का नि

14 माधिट-II, फम-II अशाह विहार दहती-52 फोन 718326, 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN बदो म समाज शब्द संब पुष्ठ ४ का

प्रहुख किया। जिस ने प्रहुख किया वह यहा बार जिस को प्रहुश किया बहु बृहिणा कहसाबी । इस से गुहुपतिसस्या का गृह बाधन ना निर्माण हुया। यह सूत्रपान था के अब समाज की बार सरकान्त कर रहा या श्रववा विराट् (बिगत राट) बिराट् (बिशवस राजत) का बार उसकान्ति कर रहा था प्राप भी गुहुस्थ।ध्यम बाहुपत्य।बार का नीव ब्रिवाह सस्कार की पात्मप्रहण विधि से हासी जाता है। कन्या का पिता स्वय धपना कन्या के हु य वर क हाय में सौंपता हुधा कहत है- असङ्खा कन्या प्रति-गुह्मातुभवान् उत्तरमं बर वधू कं हाय प्रकृत करक कहता ह गुम्लाम त सामगरवाय इस्तम् । यहा ग्रहा गृहिणा, प्रकृत रम्माम, गृह, गृहस्याथन खब्दा स ब्रह्माथक बातुक प्रयोग स पता चवता हाक विराट् भवस्था स अगला बरण बाहुपत्यसम्बन्ह । इस स अगसा बरण बहुद्द । अक्ष स एक ग्रहरूय दूसर ग्रहस्य का म ल।यसः । पर काह्मान करक्षा है। यह भाइवनाय अवस्था हाता है। साम्मालव ग्रहस्य जहा परस्पर एक दूसर स मगन।वसरा पर अपना अपना भट (बाधक) वत ए वहा बालकर भ भपना सम्मात प्रकट करत ह । बहुहीब आहा बचार रहाताथ वहा अन्ताद क इत्यम का होताय उसाका होत क वाम सं (यातक परिभाषा में, बुवाया जान लगा भीर जब यह हाव सब मार से

(धा इत्ली जाने लगी नो इस का नाम षाञ्चनीय हा गया। सन धार से हिंक प्राप्ति कापि साम हुना कि वह गृहस्य दक्षिणायुक्त होकर दक्षिणान्ति को प्राप्त हो नया समृद्धि को प्राप्त हो नया ऐस्वर्ध को प्राप्त हो गया। दक्षिएताका बाथ ही समृद्धि है। (निरु०१।७)

बाह्मनीय बबस्था मे जब एक गुहस्य ने अपने मगलकाय में दूसरे ग्रहस्य को ससम्मान बाहत किया और दूसरे गृहस्य ने भी समझा बाहति हासी नो सहज परिएाम हुवा कि ग्राम सस्या का निर्माण हुया जिसे उक्त सुक्त ने सभा शब्द म श्रमिहित किया है।

इस के विपरीत एक गृहस्य ने बापित की सकट की अवस्था ने सहायता दूसरे पृह्म्य को बुलाया तो इन सब ने मिलकर (सम्) बाषाओं का प्रतीकार किया तो उस सगठन का नाम सम्राम हो गया जिसे सूनत ने समिति सम् वति शब्द से समिहित किया है।। यहा सम्राम शन्द के रूढाय की छोडना होया।

ध्यववेद (७।१३।१ मे सभा भौर समिति को प्रजापित की दो पुत्रिमी कहा है। बावकल की गाथा में लोगर भीरभपर हाउस कहा जा सकता है इन शब्दों के सार बामन्त्रए। सभा भी लगाहै जासम्भवत मित्रमण्डल की घोर सकेत हा

इस प्रकार उपयुक्त सुक्त ने समज से समाज में उनकान्ति हेत् य सात चरण विराट गाहपत्य श्राह्वनीय दक्षिणान्नि समा समिति और माम त्रण दर्शाय है।

वसन मेला हरीकत राय दालदान दिवस समात पूवर सम्पन्न

भिक्ति भारताय हकीकत राय समिति भीर भायसमाज विनय नगर नइ दि नी की मोर संरविवार दिनाक २७ जनवरी १८०५ को प्रान ३ वज संदोपहर २ बजे तक ग्रायसमाज मन्दिर वाई ब्लाक सरोजन नगर नई निला म बड समाराह पुर्वक मनाया गया। प्रात २० बजे से ६३० 🖙 प णदल रमा शास्त्री जी पुरोहित सायसमाज ने ही स्वय बृहद यश कराया । ६ २० वज मे १० वजे तक श्री श्री गुसाब सिंह राघव के मनोहर मजन हुए। भीर महाशय धमपाल जी प्रधान भाय के द्रीय समाने बीर हकीकत को श्रद्धाञ्चलि श्रपित की । १० बजे से १ ३० बजे सक बच्चो ने वीर हकी कत क जीवन पर कविता भाषण प्रतियोगिता मे भाग लिया। विसम कर ५ द्रप्रस्य भीर भागवालगृह गैहा व उच्ची ने भी भाग लिया। रतन च द आय पब्लिक स्कूल सरोजना नगर क बच्बो न वि । प कायक्रम प्रस्तुत किया । जो भायसमाज क विचारा से भ्रोत प्रात था।

धन्त में स्वामी दीक्षान द जी संरस्वत 🕆 ग्रह्मक्षाा म अद्वाजिस सभा हुई जिसमे श्री सूयदेव जो प्रधान दिल्ली साथ प्रतिनिधि सभा श्री र टर नारायण श्री हावा दात वाले श्री कृष्ण चोपणा सुपुत्र स्वर्मीय श्री उत्तमचल्य चोउढा श्रा रत्नचढ बी मूर् भी जगरान राय सूद आ देवतत सम दु बार्योपट । श्री हरवस लाल कोहसी प्रधा । दक्षिण दि ली बाय प्रचार मण्डल श्री सरदारी लाल वर्म व दक्षिण दिल्ली की सभी भायसमाजो के मिषकारी उपस्थित हुए और वीर हकीकत को श्रद्धाजील

की रतनलाल सहदेव प्रधान समिति न स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द श्री चोपडा अभिनती पुरुषोत्तम देवी चोपडा सूद श्रीमती सत्यवती सूद की झोर से सभी के लिए प्रीति भोज का प्रवास किया गया । कायक्रम मे हजारी सीग उपस्थित थे।

रोधननाल गुप्ता

## वैवाहिक विज्ञापन

एक सुदर स्वस्थ्य डाक्टर (एम० बी० वी० एस० एस० एस०) प्रायु २६ वय कद १६७ सै० सा० वजद शाक हारी युवर के विवार न्तु मुनर नेड नास्टर की भावस्यकता है। लडका विदेश में कायरत है गोझा तशाझ सम्क कर।

> प्ता—वीर• **०मार** € १ त्यान•द नगर गाजियाबाद यूर पा॰ फोन 86563 ER 6=6

### महाबलिदानी प० लेखराम से

— शरर एम० ए०

क्याविचित्र विद्वपनालेकरतुम ग्राये थे। दीपक पर जलते पतग का भी दलाह लेकराम तरी उमय का नी दखा है बह बनता है जैसे कुछ साचसाचकर दीपक के वृद्धिश मंडरा साहस बटोरकर

पर तूसीका दशक की लीस टकराया तेरी विञ्चलता को क्कना तनिक न भाया क्या धरमान हृदय में जलने के पाए थे क्या विचित्र विह्नसता

विद्वसता जो स्कीन समर्थों से जूसकर किया निमन्त्रित मृत्युको भी जान बूम्सकर विसके दश में विकल हृदय कुछ सोचन पाया हसते-हसते बाधकार मे कदम बढाया हृदय रक्त से सीच दिया उजह उपवन को।

निज जीवन से मृतकों में फूका जीवन को। प्राणों में बङ्गार धवकते से लाए वे। न्या विविध

पुत्र मोह जिसमे दशरम को गरते दका। पुत्र मोह मानव मन की कोमलता दकी। क्षोड न पासे वे प्रनाप मी जिस समता को से अवराम<sup>ा</sup> तूने जीता उन दुवलताको ।

बन्य घमकहताहै जगतेरी श्रद्धा पर समर रहेगा नाम नराजम की जिल्ला पर दबानन्द के सच्चे सैनिक बन तुम माये वे क्या विकित्र विह्नयता नेकर

## बाय सन्दश साप्ताहिक

पत्रिका क प्राहक बन, ग्रीर [बनाएँ]

क्योंकि यह पत्रिका--

(१) वदिक मान्यताभ्रोको उजागर करती है।

(२) मार्यो (।हन्दुमो) की महान परम्पराम्रो की याद दिलाती है।

(३) महर्षि दयान द की वैचारिक क्रानि से भ्रात्म चेतना जागुन

(४) भारतीय संस्कृति के भूले विसरे प्रसंगो, महापुरुषो तथा भादर्श सस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(४) ऋषि मुनि तपस्वी ग्राप्तिबद्वानो की वाएगी का बोध कराती है।

(६) परमेश्वर की पवित्र वागी वेद का जीवनोपयोगी मचुर सन्देश लाती है।

(७) नय लेखको कवियो चिन्तको, प्रतिभाषाली विद्वानो साहित्य सैवियो को प्रोत्साहन देती है।

(८) घार्मिक, सामाजिक भीर भाष्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरज्यक बाह्यसम्ब गीता, रामायण नीति ऐतिहासिक वमूल्य प्रार्थ प्रन्यो जिन को प्रविकाश लोगो ने पढा तो क्या देखा भी नहीं, समस्त बाध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्यो पर सदा गर्व रहेगा उन सभी के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर आपकी **भज्**ली भर देती है।

(१०) ग्रतएव देर न की जिए भाज ही भपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये, वध मे अनेक विशेषाक तथा महर्षि बयानन्य निर्वाण खताव्यी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक ग्रार्य सन्देश

# दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन समारोह पर

श्रायंसमाज ने श्राजादी का भव्य महल बनाया है रामचन्द्र विज्ञल, ससत् सदस्य



महीं द्यानन्द धार्मिक सामाजिक एवम् भाषिक नता ही नही एक महान राजनीतिज्ञभी थ । उन्होन कहा था--विदेशी राजा प्रजा क साथ पुत्रतुल्य व्यव हार करने वालाभाग्र-खानही हाता। उनके इन्हीं दो शब्दा न पराचीन भारत में राज्य क्राति करदा। १८५७ की क्राति की शुरुमात भी नर्गे दयानन्द द्वारा हो हुई। व रूनन्त्रताक प्रथम प्ररणास्रोत थ । उनका प्ररणा स ही क्रातिकारी किरोमणि स्याम जी करण बमा विदेशो में बैठकर क्रांति का सूत्रपात क∢ते रहे। देश के समस्त आय बन्धु एवम् प्राय महिलाए गुरुकुल और नी ए बी कालिज एवम धनेक ग्रायं सस्थाए ग्राजादी के यज्ञ में ब्राहति देन कद पर। एक भी भायसमाजी परिवार एसा नही है जिसने देश की बाजादी के लिए बपना बलिदान एव सहयोग न दिया हो। महर्षि दयानन्द के सुयोग्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वतन्त्रत के 'लए प्रश्यविक बढकर काय किया। अलियादाला बाग के अधन्य काड के बाद काग्रस समाप्त प्राय हो गयी वी। स्वामी श्रद्धानन्द न काग्रेस का पन जीविस किया। अमृतसर काग्रेस अधिवशन के स्वागताध्यक्ष बनकर एव जनशास्त्रान कर उन्हान देश की अनता म उत्साद की लहर दौडाई।

दिली म जब स्वामा श्रद्धानन्द गुरुकृत रुप्रान म रहते य वहा उनस मिलने तथा प्रेरणा लने प जवाहर लाल नेहरू महात्मा गांधा तथा सुभापचन्द्र बोस साया करते थे।

सा० लाजपन राय संलकर शहीद मगतसिंह चरान्यर भाजाद, र मत्रसाद बिस्मिल सभी ग्रायसमाजी परिवारी की सन्तानें थी।

मैं निसकोच होकर कह सकता ह बदि महीप दबान-द भीर उन दारा प्रस्ता वित प्रायसमाज न होता तो देश भाजाद न हाता। भागसमाज के कवियो गायको ने गीत बना बना कर दश की निराश जनता में बाशा का सचार किया !

**गे मादरे ब्रिन्द गमगीन न हो** दिन ग्रन्छे ग्राने वाले हैं। भाजादी का पैगाम तम्हें हम जल्द सुनान वाले हैं।

महर्षि द्यानन्द की कपा से ग्राम समाज ने स्त्री िमा बानविवाह विषवा विवाह राष्ट्रनापा हिन्दी का प्रचार स्बदेशी का प्रचार हरिजन उदार ख्रमा-छत निवारण कोई भी ऐसा काय नही जो राप्ट को मजबत करने वाला कार्य न हो जो बार्यसमाज ने शरू न किया हो। बाद में राप्टीय कांग्रेस ने इन्हीं ग्राधिक भौर सामाजिक कार्यों को अपनाया।

द्याजादी मिलने के बाद द्यार्यसमाज राजनीति से उदासीन हो गया है। आर्थ समाज ने प्राजादी का महत्व बनाकर दूसरों को सौंग दिया उसमें भाड़ लगे न लगे कोई देखने वाला नहीं। यत मैं पाह्यान करता ह ग्राप राजनीति मे बाये। कुछ वार्मिक संस्थाए जिन मे राजनैतिक वेतना है राशिय वेतना नहीं है जिनकी सल्या देश नर के बायसमाजियों के मुका-बले बहुत कम है वे अपनी माग मनवा नेते हैं। भीर भाप बस दूर लड़े देखते रह जाते हैं। जब नब देश पर आन्तरिक वाहरी सकट ग्राया ग्रायसमाज देश की रका के लिए हमेशा सागे सावा है। ताजा ज्वलन्त उदाहरण है हमारे समने की मती इन्दिंग की इत्या के बाद देश हिल गया वा। धायसमाज तथा श्री ला० रामगोरात्र गानवात बचाई के पात्र हैं उन्होने राष्टिहित मे नथा देश की ग्रस ण्डता के जनरे को समकत हुए काग्रेस को सन्तर्भा विया। यह समयन काग्रेस को ही नही देश की विषटनकारी शक्तियो को नलकारने वाली समय की भावाज थी। जो बायसमाजकी राष्ट्रभवित की

त्राधनिक भारत के निर्माताः महर्षि दयानन्द क्षणाचन्द्र पंत



महामहिम राष्ट्रपति जी भागं प्रति-निषि समा के पदाधिकारी गण, देवियो धौर सुज्जनो ! मैं धापका सामारी ह जो मुक्ते इस बवसर पर नाये कि मैं महर्षि दयनम्द जी को श्रद्धांजनि श्रपित कर सक। आज राष्ट्रपति जी यहा पजारे हैं धौर सारे भारत की धोर से श्रद्धांचित धर्पित करने का घषिकार उन्हीं को है। इसकी मुक्ते बढी प्रमन्त्रता है कि वे स्वय पधारे हैं। महर्षि हमारे देश के चोनी के बहापुनवों में से हुए हैं। हमारा प्राचीन देश है, हबारों साम का इसका इतिहास है भीरवसय इतिहास है। इसका हमें गवं है। इसमें चप-छाया दोनो रही हैं। विजय के ऋण्डे भी हम ने देखे पराजय का सनुभव भी इस देश को है। जब-जब इतिहास में यह दश बक गया, निराण हो गया हतोत्साहित हमा, उस समय मे इसके अन्दर महापुरुष पैदा हए । जिन्होने हमें नया जीवन दिया है। नई चेतना दी है। एम महापुरुषो मे महर्षि दयान द भी थे। मैं नममता है जैसा कि श्री रामगोपाल जी ने कहा कि "म महर्षि जी के जीवन से बहुन कुछ सबक ले सकते हैं। वे नो सोच दृष्टि ग्रीर कर्मतीनों के बनीये। लेकिन जिम चीज का प्रभव आज तक मिला वह मन ही मे है उनकी

देश अनिस । जैसा कि सभी उन्होंने १८४७ की चर्चाकी वह चर्चा ससल में स्वराज्य की थी और महर्पि जी ने ही की बी धीर इसको बाद रखना चाहिए कि १८४७ मे जब भारत की जनता निराश हो चकी बी उस समय कोई रास्ता दिखाने बाला सही या। कई वर्गिक सकीसे लीग हमारी स्वतन्त्रता के लिए एक दूसरे 🗣 सड रहे थे। जो जमाना था जिस वस्त स्वामी औ ने एक नया रास्ता दिलाया । मैं समस्ता ह कि वही दिलवस्य बात भी विसकी मोर रामगोपाल जी ने इकारा किया। भारत-वासियों के अन्दर स्वाभिमान अवाया और उन्होंने भारत के अतीत का फिर से भारत बासियो पर विश्वास पैदा किया. जनमे शास्त्रत मिलावट को उनके सामने रका जो द्याज की दनिया से मेल नहीं स्नाता जनको क्रोडने का प्रयास करवाया। वे एक समाज सुधारक थे। वो खमाना ऐसा था जब बाल-विवाह प्रचित्त था धौर कई कूरीतियाँ समाज के बन्बर थी, इन सभी के खिलाफ धावाज महर्षि दयानन्द जी ने उठाई। जो सुवार वर्षों से सुरू हमा भीर १०० साल से चलता था रहा है, इसमें बहत सी चीजो का झारम्भ छन्होने अपने जमाने मे किया था। बहुत से लोगों का (क्षेष पृष्ठ ६ पर)



केन्द्रीय किसा जन्त्री भी कृष्णचन्द्र पन्त का स्थापत करते हुए समा प्रचान भी सूर्यदेव जी

# ार्य नेताओं के ओजस्वी भाषण एवं श्रद्धाञ्जलिया<u>ं</u>

# हिमिगिर सा उद्दाम-दयानन्द

श्रो स्वामा दोक्षानन्द का शताब्दी पर ग्रावाहन



किसी भी महापुरुप को कुछ विश्व-वत् नाम दिया जाता है भीर उस नाम से खसे स्मरच करते हैं। जैसे कि राम को अनुष वासा, कृष्ण को मुरलीवाला गुरु सोविट सिंह को पजाब मे एक नाम दिया गबा कमान वाला। इसी तरह महर्षि क्यानस्ट को जब कोई नाम दिया जाए हो कहा जाएगा 'वेदो वाला''। वेदो पर चून जम गई थी, जिंदगी स्माप्त हो वाती, किन्तुलोग वेदो तक नहीं पृत्व बाते थे। जितने महापुरुष बाए, सुवारक आये, वे वेदो तक नहीं पहुच पाये थे। श्वमाज की दशा उल्टी हो गई वी अनेक \*छल्टी उल्टी प्र**याएँ चल पडी थी। जब क्र**विने वेदों की सोर लौटों का नारा दियातो सोगो को लगा कि कोई उल्टी बात कही जा रही है। लेकिन उन्होंने जो कुछ उल्टा या उसको उलट दिया, उल्टे को उलट देना ही सीवा करना है। उलटे कोच को ऋषि ने सीवा कर दिया, व्यक्ति के लिए वेद का मार्ग सरल कर दिया। इसमिए उन्हें वेदो वासा कहा जाता है। ची बरा उतरा उसे ने लिया, जो व्यवं सवा उसे छोड़ दिया।

हिमानि से बना बहुबी हैं, सारी दुनिया बही कहती हैं। प्राय किसी ने हरिद्वार में नंगा स्वतट बयी। ऋषि की बुन्दिन बज गयी।

सारी दुनिया के सामने महाँच दयानन्द सकेला था और निर्मय होकर दुनिया को निर्मयता का पाठ नदा नया। क्लोने कहा बा वस्ति स्थापना करनी है तो देदों को साबार बनाओं। मसार के समस्त महान् कर्मों से दयानन्द प्रसंधी बनके सदेश देवा

प्रकृष्ट ।

एक बार की बात है एक सज्जन
राम-राम जप रहे ने पात में एक मुस्सा
बी बठे थे । उन्होंने कहा कि क्या जप
कर रहे हो ? उन व्यक्ति ने कहा मैं द्यपना
इस्ट कप रहा ह । मुस्सा जो बोने मैं
स्मापको इस है बहित मान बताजना जो
मान तुम जप रहे हो नह नहां ज्या होता है।
है नहां से परा बताजा नाम वस होता है।

तुम राम अपते हो राम में 'म' बाद में हैं म से मुहम्मद होना है, तुम मुहम्मद अपा करो। बह अमिला मुन्ता की बात पु पुर हो नवा, पर पास बैठे एक महावाय बा बोत बैठे, मुन्ता जो, मैं धापको धाप बाले नाम से भी बढिया नाम बताऊ, जहीं से मुहम्मद जल्म होता है बहु नाम बहा से जुक हाता है धौर बही पर बाल होता है—दयानन्द। द से दयानन्द जुक होता है भौर 'द पर ही बल्म होता है।

दूसरी बातः बयानस्य ने देशभक्ति दी। सपने को परखना है तो वेदों से परखों बौर इसरों को परसना हो(इसरी सस्थाधी मबहबों को) तो राष्ट्रभक्ति से परलो । बार्यसमाज इस क्षेत्र में सारा उतरा है। सस्याकोई भी हो, पर मह सस्या ही एकमात्र ऐसी है जो धार्मिक बाद मे, पहले राष्ट्रवादी है। राष्ट्र पर कही भी चोट होती है। वो पीड़ा इसे ही होती है। देश के विभाजन की जहरी ली वार्ते जब बार्यसमाब सुनता है इसका सीना दर्द से फटता है। हम सदा बान्ति के उरासक रहे हैं। हम ने अनुन दिया, अनुन किया नहीं। हिंबा के रास्ते से हम सदा दूर रहे हैं, यदि धाज भी बलिदान की धावश्यकता पड़ी तो श्रायंश्वमाची दयानन्द का प्रत्येक अक्त कभी किसी से पीछे नहीं रहेगा। दुवा होता है यह देखकर कि जिन शहीदों ने श्रपने जुन से भाजादी के वट वुझ को सीचा। भाज उन का नाम तक नही जिया वाता। प० रामप्रसाद विस्मित को मुना विया गया है। मैं मान करता हु, प्रधान-मत्री को देशा को एक रक्तने के लिए यदि कठोर कदम भी उठाना पड़े तो उठाना चाहिए। जनगणना के समय जाति वर्ग द्यादिको प्रसग-द्यसय न रसकर एक सूत्र मे पिरोया जाना चाहिए। गौ को शीझाति शीझ राष्ट्रीय पशु जोवित कर बच से बचाना चाहिए।

हमारी मान है धाप वाचा कोई भी पढामें, पर उसकी लिपि देवनावरी होती

श्रमेत्री या उर्दू सबकी लिपि देव-नागरी होनी चाहिए।

### अध्यक्षीय भाषण

समारोह के मध्यक्ष श्री रावगोपाल शालकाल ने मधन भाषण में देश की स्थ-तन्त्रता प्राप्ति भीर सम्रेजी राज्य के अन्त के सदर्म मे महर्षि दयानन्द धौर ग्राय-समाज की सर्वोपरि मृमिकापर प्रकाश डालते हुण कहा कि काग्रेम ने १,४० म भारत छोडो का नारा दिया या जब कि महर्षिने काग्रेस के जन्म से १३ वर्ष पूर्वही १८७२ में भारत के गवर्नर जनरल में बेंट होने पर मरकारी महायता और सरमाण की पेशका को जो उन्होने ब्रिटिश राज के कुछक बच्छे कार्यों की मान्यता के उप-लक्ष्य में की बीठुकराते हुए कहा वाकि "मैं तो यह चाहताह कि देश शीघ्र से शीघ्र ब्रिटिश जुए से मुक्त होकर स्वाधी-नता प्राप्त करे।"

वी शासवासे ने भपने भाषण मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिए जाने भीर गोहत्या बन्दी के लिए महर्षि की सर्वोधिर पृथिका की चर्चा करते हुए कहा कि महर्षि ने प्रथने सब प्रत्य हिंदी में सिखें। प्रपते जीवन काल में हिंदी को राष्ट्रभावा वनाने के लिए कई प्रेमोरेडम भारत खर-कार को मित्रवाए। बोहत्या वदी के लिए हुवारो व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से पुक्त महारानी विक्टोरिया को भेजे जान के लिए मेमोरेण्डम तैयार कराया। उन्होंने नारका विषय पर बोकस्खानिक स्रुपम पुस्तक निस्तकर प्रचारित की थी।

श्री शालवाले ने धार्यसमात्र द्वारा किए गए कार्यों एव प्रयामी पर प्रकाश डालने हुए भारत सरकार में एक बार पुन सम्पूर्ण गोहत्या बदी धीर गाय को राष्ट्र पक्षु उद शेषित करने की भी मार्गे की।

उन्होंने महाँव के घन्तिम समय के प्रभूतेरी इच्छा पूर्ण हो का हवाला देते हुए आयों और आयं तस्कृति के प्रेमियो को उनके छोडे हुए काम को बढाने और उमे दुढ रूप देने का ग्राह्वान किया।

श्री शालवाले की अपील शक्तिशाली राष्ट्र की कामना थी

साठवी लोकसमा के चुनाव में सार्यसमाज के चिरोमणि सगठन नालंदितिक सार्य प्रतिनिष्ठ सजा के प्रवान को रामगोपाल शाल वाले द्वारा कावेस (साई) के मनमंत्र की सपीन के विकट कुछ तमाचार पत्रों ने सार्यसमाज के कतियम महानुवासों के विचार पढ़कर सारव्यते हुआ।

जब जामा मजिस्स के इमाम प्रन्तुत्सा बुसारी की प्रध्यक्षता में प्रानन्तपुर माहिब का प्रस्ताव पारित हवा, भारत के कई क्षेत्रों में प्रराष्ट्रीय गनितया सक्रिय कप से विदेशी वन के बल पर भारत की एकता को खडित करने का काम कर रही थी। पाकि-स्तान द्वारा उप्रवादियों को इतने घरत-शस्त्र दिए गए कि स्वर्ण मन्दिर फौजी किला बन गया, पजाद में झल्पसल्यक हिंदुओं को बेरुनी से मारा काटा गया। लाहीर हवाई धड़डे पर पाकिस्तान द्वारा विमान अपहर्तामी को पिस्तौल दी गई। खालिस्तान के स्वय मूराष्ट्रपति जगजीतसिंह चौह।न द्वारा इंग्लैंड मे भारत को टुकडे-टुकडे करने की साजिश की वोषणाए होती रही और वृत वृतकर राष्ट्रीय व वार्मिक नेताशों की हत्या की योजनाए बनाई गई, वसवादियों द्वारा दिस्ली व पंजाब में मविषण जलाया गया, जम्मू काश्मीर में राष्ट्राय ब्वज का अपमान करके पाकिस्तानी भण्डा फहराया गया। जस्मू काश्मीर मही भायसमाज मन्दिर व भाय कन्या विद्यालय का उपवादियों द्वारा जला कर लाखो रुपयो की सम्मत्ति स्वाहा कर दी गई। उस समय उक्त स यं बख्यो को इनके विरुद्ध बोलने का माहम नहीं हुआ। । लाला रामगोपाल जी शालवाले द्वारा समय समय पर इन राष्ट्र विरोधी कारवाइयों के विरुद्ध बोलने पर मिडरवाला के समयकी द्वारा श्री जालवाले व श्री स्रोमप्रकाश त्यागी महामत्री सार्वदेशिक सभा को जान से सारत का बमकी पत्र मिला। उस समय भी ये लोग चुप रहे क्यों कि राष्ट्रीय एकता व श्रक्षण्डता के लिए जिसन भी शाबाज उठाई थी उनम से श्रीवकाश की अपने जीवन से हाथ घोना पडा या। प्रवानमत्री श्रीमनी इन्दिरा गांधी तक को इमीनिए विसदा होना पदाः

भारत के सबस्य राजनीतिक वस जो लोकसभा के कुल एक जीवाई सीटो पर सन्ते वस पर जुनाव नहीं तक सके उन दकों की मिनी-जुली नरकार के साथ देश का मास सीपना जीवत नहीं था। ऐसी स्थिति ने कापेस (धाई) के समयन क प्रलावा दूसरा विकल्प जनता ने सामने नहीं था। सन् ७७ म जनता ने एक प्रवसर विरोधी वसो को जनता सरकार बनाने का दिया था जो पूर्णनया समकल सिख हुमा।

सन दिन हमदद जोगों के समयन में किनियय थाय बघुयों न धायक्षमाज समजन के सर्वोच्च नेता व मुख्य राष्ट्र असत की रामगागान शानवाल पर प्रथम समजन के सर्वोच्च नेता व मुख्य राष्ट्र असत की रामगागान शानवाल पर प्रथम प्रवास कर कि स्वास्त्र के स्वास्त्र करें। स्वास्त्र के स्वस्त्र के स्वस्त

रण्डीव मेहरा यावडी एक्सटेशन, घाँडा, दिल्ली



いたながななななななななななななななななななななん

## त्र्याप बधाई के पात्र हैं

२० तारीस को प्रत्यक्षकप से दिल्ली नहीं पृष्य पाया, लेकिन टी॰ बी॰ पर तवा समाचार पत्रो से बापके समारोह की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई। यह सारा कार्य जिस कम और अनुसासन के द्वारा मम्पन्न हुसा, उसका सारा समस्त श्रेय केवल अपका देना स्रतिशयोक्ति न होथी. बहाँ बाप जैस कर्मठ, परिवामी तथा वानरूक कार्यकर्ता हाने, वहा कोई सी, बडे से बडा कार्य पूरा किया जा सकता है। टी॰ वी- के परदे पर मैं विशेष रूप से बापको दूउ रहा वा लकिन बाप तो उस समय भी प्रबन्ध के कार्य में न आने कहा-कहा माग-वीड कर रहे होगे। वास्तव में भाग वैसे व्यक्ति तो भवन की नीव के पत्थर की तरह हैं। नीव का पत्चर बवन को पूरी मजब्ती तथा सुरक्षा प्रदान करता है लेकिन हमें वह दिसाई नहीं देता। वास्तव में ब्रापकी यही भावना मुक्त जैसे साधारण मुवक को मागे बढने की प्रेरका देता है,इसीलिए मैं समय-समय पर भागत मिलकर मार्थदर्शन तथा नवीन योखनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता ह।

भापने ताबकटोरा स्टेडियम मे इतने वड कार्यक्रम की सहज उग से करा डासा साय मे पुस्तक भी प्रकाशित करा डाली. भापकी को भी प्रश्लसाकी दाए कम होयी ।

— प्रो० सनिस्त भा**रती** यह पत्र समारोह समिति को एक कार्यकर्ता के लिए नहीं बल्कि उन सभी का प्रशन्ति पत्र है जिन्होंने नाम की कामना न करके समारोह को सफल बनाने में योग दिया।

### दीप

─रामेश्वर 'हिमाञ्च' जग मे दवानस्य दीप,

को तुमने जला दिया। प्रज्ञान-प्रांचियों से जला.

ये बुकेना क्या।

तव वरापर श्राम का, इक मन्दिर बना दिया।

उसमे फिर 'प्रकाश' का, **करना बहा विद्या !!** 

बारत माँ वी बधी हुई,

युलामी के पाक्ष में 🛭 स्ववेशी राज्य धण्हा—,

हमे यह पाठ पढा दिया।

भी रजिलादिया ॥

### बमर रह गणतव हमारा

राष्ट्रयाम भावं

हिमांगरि से ने हिंद जनिष तक छा जाए चेतना सुवासित। भारत के प्रायण से मांगे विस्तत जो प्रायाय प्रसित।

पा**लण्डो के गढ** परकिर से चले श्रमय हो तीव दुवारा। ग्रमर रहे गणतत्र हमारा।।

मानवता के तत्त्व सिसकते— हुए वरा पर हो प्राध्वस्त बानवता का घट्टमास सब भूका हो पताने मुख पस्त ।

वेद ज्ञान की दिल्य गग मे धनुत पान करे जय सारा। धनर रहे गणतत्र हमारा।

साय सनातन धम सुर्वदिक वेदो का फैले घरती पर। सम्य सुरस्कृत अध्ठ बन सब — वसुधा के बासी नरनारी

कृष्यतो विश्वमायम् का— गजे भू पर श्रविरम् नारा। श्रमर रहे गणतत्र हमार॥

सुखी तथा सन्द्र गुणी हों ऋषि मुनियों के हम धनुयायी। ज्योतिष्मान करें मानव मन फटे स्वाय शिष्सा की काई।

> बढ सुपथ पर निभय होकर भारत यह प्राणी से प्यारा। समर रहे गणतन हमारा॥

### श्राय विद्यालयों के प्रबन्धकों प्रिसिपल महोदयों के नाम

भ्रावश्यक परिपत्र

दूरमाय ३१०१५०

श्राय विद्या परिषद् विस्त्री द्वारा प्रत्येक प्राय शिक्षण सस्याओं से नैतिक शिक्षा की पुरतकें लगवार्ड आती हैं। उन्हीं के अनुसार चार कक्षाओं की परीक्षाओं का श्रायो जन भी करती हैं।

जन मा करता हूं। परिव्य इंड क्य नीति प्रवेशिका (कारा १) बीति प्रविकारी (कारा ०) नीति वाणि (कारा १०) नीति वाणि (कारा १०) नीति विधारवा करते १२) की गरीलाए तमी विधारवा में २५ करवारे १२०१४ कीमानार को मार्गीवित करेगी। गरीला लागा मार्गी है वेश ने प्रविक्ता कारा कार्य मार्गी है वेश ने प्रविक्ता कार्य मार्गी कार्य मार्गी कार्य मार्गी कार्य करते हैं। वेश के प्रविक्ता ने होते वो प्रविक्ता के होते कार्य करते कार्य करते हैं। वेश के प्रविक्ता के होते कार्य करते कार्य करते हैं। वेश के प्रविक्ता के हिंग वाणि करते कि क्षा कर्या करते की क्षा करते करते कि क्षा करते की क्षा कर

ध्रस्तोता चन्द्रदेव साम विचा परिवद दिल्ली १६ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ कृष्णाचन्द्र पत्न (ण्ड ६ का नेप

निवार है कि वे बापुनिक विचारों का जिएसकार करते थे एत नहीं है व व विज्ञान के ब्रीवोगिकरण बार्टिक प्रवास के वे । वगर राज्य की सवस्थाना की राहोने पहले समझा ज्ञान प्रवास ना एवं वात की है कि हम नंजर जनवा बार न करें बहिक देश की एकत ध्वसन त स्वामियान ने जि दे परिज हैन ने नवस्वकारी साथ सक कार प्रभावना को जिल्हा है कि एकत धार जिल्हा है स्वामियान ने जि दे परिज हैन नवस्वकारी साथ सक कार प्रभावना को जिल्हा हैन ने

सामने महाँच ने रखा है उनको प्राज हमने धपने चरित्र म उालकर सायक बनाना है। महाँच ने बस्मक माचा के क्य में हिंदी के महत्त्व को समक्रकर उसे सीका और अपनाया और वाद में उसे राष्ट्र जारा के रूप में प्रचारित किया महाँच वयानन प्राप्तिक नारत के निमानाओं

माय इस भारत की श्रक्तण्डता के लिए हमे यदि बलिशन भादेना पडतो हम पीछे न रहे।



### गोतिका रामनिकास विद्यार्थी

परनेश के गुण गाते चली।

महमवारा बहाने चली।

राही से प्राए जो धनरोच बन।

कडूकपन मन से हटाते चली।

धालस्य जडता को निमल कर।

पुरुवाप में जनमंगते चली।

तज बुद्र धनुनार दुर्मावना।

समुद्रार निज मन बनाते चली।

हरवर केवत से वती मक्त बन।

तुन धाम सर को बनाते चली।





# त्रार्यसमाज वाकनेर दिल्ली में बृहद् यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार

दिस्सी ब्राय प्रतिनिधि सभा के तत्वावचान में ब्रायसमाज मन्दिर बाकनेर में १३ जनवरों से २० जनवरी तक मूर्वीय द्वागन्द निवाण सात्रा मी हर्गस्सार के साथ मनाई गद। प्रतिदिन प्रात ६ वने से ११ वने तक हुदद यज हुवा। यज के बहुए पुण्य स्वामा प्रमृतान द कार्य विकास निम्नालंबित यजनानों ने सैकड़ी चमप्रमी श्रवालुओं सिंहृत जाण तथा सवनी माणेराम प्राय जनप्रकार बाजू उदयविह, मेहरसाल पवार प० प्रजीवाल जिनतिह साम, रिखालवार प्रतिवृद्ध सीमप्र काण प्रमृत प्रस्थान्यायक सूर्वीव्ह ह्यासिह जा। यज के परवात महीं ब्यानन्द सरस्वतों के जीवन तथा ब्राय सिवालवा एर कथावानं कथा सहस्ताल प्रमार द्वार कथा हुई।

१६ बनवरो को दिल्ली बेहात की झायसमाबो के पराविकारियो तथा सुप्रसिख मगाज सेवा एव कारकरामा न नाग निया। बृहर सज के रच्य न अद्वाजित समा में म्यामा झामान-द वा सरस्वरा का आवस्या एव प्ररणादायक माचण तुने के लिए झामीण बुक्का एवं विचारवील अद्वुढ सम्पायको का झागर उमयवार । दो हुवार के भा सिक क हस विद्यान जनसमूह को सम्बाधिक करते हुए स्वामा झामानन्द की महाराव ने हुरियाचा और दिल्ली बेहात में सासमाव क कार का प्रमावकारी वचन के सहुदा किया। प्रयम बार ऐसे विद्यान संस्वतम के हुए स्वामा झामानन्द की महाराव ने हुरियाचा और दिल्ली बेहात में सासमाव कह कार का प्रमावकारी वचन के सहुदा किया। प्रयम बार ऐसे विद्यान स्वत्य में आप सामकारी वचन के इस्त्वा किया। प्रयम का स्वत्य के सुप्रवाद विल्ली बेहात का प्रायसमाव के स्वाय पर चनन की प्रतिवाद नी। प्रवचन के प्रवाद विल्ली बेहात का प्रायसमाव के कायस्वता में हुई। इसस प्रामो में झायतमाव की स्वापना एवज़ हुन सम्बर्ग के स्वत्वाच वार की समयराम वा की सम्बर्गन के प्रवाद विल्ली की समयराम वा की सम्बर्गन के प्रवाद वा वा। अत्र में सम्बर्गन के स्वापना प्रवाद की सम्बर्गन के स्वापना प्रवाद की सम्बर्गन की स्वापना यहां हो साम सम्बर्ग के स्वापना प्रवाद की साम साम ने हुकुन्त सायवमावों ने नवनीवन साने के लिए कटिकड होने का झामार प्रवाद किया। आ बेहरसाल प्रवार स्वापने की साम प्रायस देखा किया।

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शती

### एव मानव जागृति सप्ताह

> मार्यसमाज भार्येषुरा बब्बो मच्डो, दिल्बी-५

## कन्या गुरुकुल हाथरस

ग्रागरा निवासी श्री बौ॰ जिलोक खिंह थी, बोर्ड आफ रेवेन्डू के पूर्व सदस्य ने छा "वृत्ति की स्थानीय निष्कि के लिए दस हवार रुपये दान दिवे हैं। ग्रागरा निवासी श्री विस्तृदेव शोहार एक्वोकेट वे कन्या गुरुकुल मे प्रनिदिन होन वाले यज्ञ के निए १०० रुपये मासिक बेने का शुम सङ्करण किया है।

ग्रावश्यकता हे-

बन्या गृहकुल के लिए अवकाश प्राप्त विकित्सक धौर अनुमनी नसं की आवस्यकत है साथ ही आर्थ कि ते हैं की ऐसी महिलाओं की आव-स्यकता है जा छेनी कन्याओं की देखमा । करसका ।

मुख्याविष्ठात्री कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

### विज्ञापन सुचना

झायसमाज लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी के लिए मोम्य पुरोहित पाहिए। अपनी योग्यता अनुभव और सस्कारादि करवाने से दक्षता सम्बन्धी विवरण भेजे। पत्र व्यवहार नत्री, आर्यसमाज मन्दिर, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी, (निवास स्थान व विजली झादि की सुविधान लुक्क होगी)।

### शास्त्रार्थ संग्रह

ष्ठार्यसमाज के इतिहास में भाज तक जितने भी शास्त्रार्थ हुए हैं, उन सब का एक सबह और स्वामी भानर स्वामी जी प्रकाशित वर रहे हैं। अतः स्वाप सब से प्रामेना है, यदि भ्राप के पास शास्त्रार्थ जिवयक सामन्त्री हो तो कृपया रजिस्ट्री द्वारा २५ फरवरी तक बिजवाने का कस्ट कर। पुस्तक क्ष्में के बाद पुस्तक के उपहार सहित तथा भागके सहयोग का उल्लेस करते हुए भाषकी सामग्री सादर जिजवा दी जायेगी। पता—समर स्वामी प्रकाशन विसाग प्रवन्धक

३/३६ , दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०) वास्त्रार्थ संप्रह प्रकाशन समिति

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारको की धावस्यकता

लावेशिक आर्य सितिमित तथा ने देखान्यर स्थार पर विशेष स्थान के का मिरक्य क्या है । रिक्क ते वी वर्ष के दौरान विश्व के सेन्स देशों में सार्यस्थाल का क्षेत्र पहुँचा। गौरिक्स, विदिश्य नामना सीर गितिस्त के विदेशों में सह एक प्रमुख विश्व के स्थान से उत्तरा। विश्व के विश्व देशों में सह एक प्रमुख विश्व के क्या से उत्तरा। विश्व के विश्व देशों में सब तक संस्थिताल का वश्व का स्थान हो। जुका है। उत्तका लेव कुछ व्यक्तियों की स्थान प्रेरण मीर पारत से वृद्ध के प्रवाद के की किया सामानिक किया के सार्यस्थाल के स्थान से विश्व कर्म के प्रवाद के वाला है। सार्यस्थाल के स्थान के मिर्म क्या से में प्रमुख मुग्तिक प्रवाद के। पर वह ऐसा स्पृत्रव हो रहा है कि वैद्योधिक प्रवार वह हो या हा। है, स्थानिक विश्व कर हो। सार्यस्थाल का प्रवार हो राखा है, स्थान क्या की सार्यस्थाल का प्रवार हो राखा है, स्थान विश्व क्या की सार्यस्थाल का प्रवार हो राखा है, स्थान विश्व क्या की सार्यस्थाल का क्या हो राखा है। स्थान हो स्थान हो से सार्यस्थाल का स्थान हो स्थान हो सार्यस्थाल कर सार्यस्थाल का स्थान हो स्थान हो सार्यस्थाल सार्यस्थाल का स्थान हो स्थान हो स्थान हो सार्यस्थाल सार्यस्थाल स्थान स्थान हो स्थान हो सार्यस्थाल सार्यस्थाल सार्यस्थाल स्थान स्थान हो सार्यस्थाल सा

प्रश्नुक महानुमार्थों से निवेदन है कि वे इस विवस्ति के करण में हम वे पक-व्यवहार करने का कर करें। धरने प्रचोत्तर में में धरनी बानु, विवस्ति का नोमका, वाचाओं का जान, धार्मतमा को व्यवस्त्र अपार कार्य का प्रमुचन, प्रकाशनों की सूची एक्स क्ष्म धारमध्य कालकारियों का विवस्त वेने का कर करें। प्रकेशी अध्य का धम्बा जान प्रमित्रा है। बारत क्षमता वेशान्तर के तीन ऐसे जहुक पार्व वर्गों का नाम धीर पता भी विवह, वो धाएके कारों के विषय में जबी-वाशि वर्गों हो। बार्षी वी तृषित करने का कर कर कि वे विवसा तम्म इस इस होने में स्व विवस्ति है। बार्षी महानुमानों को क्षमते प्रवस्त पत्र में ही पूच विवस्त वे देना नोम्ब होना। धारा है कि वेशान्तर प्रचार में वहनों प्रधान करने हैंतु बाप करना धमुल्य तम्म हमें शब्द प्रवास

> वनसीय जाः शासन्य प्रकास जनवारी सवा स्व सुनोत्तक-विसेत प्रचार स्वयानिक

# त्रार्यसमाज दीवान हाल मे यज्ञ श्रौर वेद प्रचार



धायसमान सैवान हाल ने सहाँव दयान द निर्वाण खता दो के उपलब्ध से ।स्रोजित यज एक्स वेदक्या समारीह पूक्क सम्यन हुई। इस सवसर पर प्रात्त काल अपनी प० रजगढ का सम्बद्धता ने भी प० यसपाल सुमाधु एक प० सुरेट कुनार ।त्यों के द्वारा सप्तन हुआ। राजि ने भी प० राजपुर के धानस्ती प्रवास हुए। जिनसे नेक आव तर नारी जीवन का सिन्गाप्त रिकाशो द्वारा प्रमास्ति हुए।

१३ जनवरी यक्ष में चादनी चौकक्ष त्र के सासद श्रा जयप्रकाश अग्रवाल ने रेयक्र में ब्राह्मति प्रदान का।

मणी

मूलच द गुप्त श्रायसमात्र दीवान हालः दिल्ली

### स्मारिका प्राप्ति के लिए घ्यान द

जिन प्राथ सवेश के प्राहकों को स्मारिका नहीं मिसी व १७ फरवरा खिव जिन को फिरोजबाह कोटला मैदान से सभा कार्यालय से या १५ हनुमान रोड से पनी प्राहक सक्या विकासर कभी भी ले सकते हैं।

—सम्मादक



30 वे सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

## आर्यंसमाज तीमारपुर, दिल्ली मे शताब्दी समारोह पर यज्ञ तथा वेद प्रवचन

२३ जनवरी २० से बनवरी तक प्रात यह एवं सायकाल प्रवचन जो प० दिनेश बह पारासार के द्वारा सम्मन्न हुए। त्री तुससीराम बी की प्रवच सम्बनी द्वारा महर मवन हुए। बारी जनसमूह ने इस धनसर पर नदसान एवं मधुर अजनो द्वारा धम साम उठाया।

> रामेश्वर दास प्रधान भायसमाज तीमारपुर दिल्ली

### ईसाई युवनी की शुद्धि व विवाह

११२ ८४ को शायसमाज गिंदर प्रटर कैनाथ २ में कुमारी तथा औरी को उनको इच्चानुसार बुट करके वैदिक (हिन्दू) थम मे लेकर नाम उसा रखकर श्री चैतन सोनी है विवाह कराया गया वर वसूदोनो पक्षी ने नव-स्पती का श्राक्षीवीट

> रघुनवन गुप्त मत्री सायसमाज ग्रटर कैसाना II नई दिल्ली ४८

## प्रयाग निकेंतन, जवाहर नगर मे महायज्ञ पूर्णाहृति रविवार १० जनवरी को ११ ३० बजे होगी

स्व व्यामी प्रमु थाखित की महाराव के १८ में जन्म दिवस के उपलक्ष्य में स्रायोचित सक के सम्बद्ध है एक्य महारमा दयाना । स्वामी बीलानन्व महारमा बलवेब पर रामप्रसान वेदालकार की यच्चीराज शास्त्री भी नरेश बहाबारी सादि विद्वानों के बीवनोपयोगी विचार भी सुनते को मिलने ।

ऋषि लगर---१२ वजे ऋषि लगर का भ्रायोशन है। भारी सब्या मे पथारकर थम साम उठायें।

निवदक

ग्रन्निहोत्री परिवार प्रयाग निकेतन

३१ यू० बी० जवाह्र तगर तिली ११०००७

ग्रार्यसमाज कृष्णानगर मे ऋग्वेद परायण यज्ञ एव स्वागत

सायसमाय मिंदर कृष्णा नगर दिन्ती ११ मे १७ १२ द ४ ते २ १२ द ४ तक स लेप कप प्रतिनिधि सना बमनापार के तत्वावचान में व्यत्वेद परायण यस महर्षि दयान द बितान शताब्दी समारोह के कप में मनाया गया। विभने भी भो में क्रांच में गास्त्री सतीबी सातों के प्रयचन एवं एवं स्वयंदे जी स्नातक के भणन हुए। सन्तिम दिन २ १२ ४ को मास्टर सोमप्रकाश जी बाय एवं श्रीमती उथा गास्त्री के मा प्रयचन हुए। जाला रामगोपास साल याने का सावदेशिक प्राय प्रतिनिधि समा के प्रथान चुने बान पर दिन्ती प्रतिनिधि ममा के प्रवान श्री म्यदेद जी के तत्वावचान में स्वागत किया गया। पूर्णोहित प्रवचनों सन्तर्भ एकम प्रभिन न्न कं पंचात व्यति विभागा।

जगदीशनाथ भाटिया भायसमाज मदिर कृष्ण नगर दिली ४१

श्री रामगोपाल शासवाले का स्वागन करते हुए ग्राथसमाज कृष्णनगर के प्रजान स्रो डा॰ जगन थ।



# ऋषि मेला (ऋषि बीधौत्सव)

रविवार १७ फरवरी १६६४ स्थान-फिरोजशाह कोटला मैदान

प्रातः ८-०० बजे : यज्ञ

प्रातः १-३० बजे : ध्वजारोह्य

प्रातः १०-०० बजे : खेल-कूद प्रतियोगिताएं

प्रातः ११-३० बजे : भाषमा प्रतियोगिता

विषय--राष्ट्रोत्थान मे महर्षि दयानन्द का योगदान

दोपहर १-०० बजे : सास्कृतिक कार्यक्रम

श्रपराह्न २-०० बजे : सार्वजनिक सभा

## अध्यक्षता--लाला रामगोपाल शालवाले मुख्य अतिथि--श्री बलराम जाखड

लोकसमा ग्रध्यक्ष

प्रमख वक्ता-श्री ग्रोमप्रककाश पुरुषार्थी श्री शिवकूमार शास्त्री श्री क्षितीश कुमार वेदालकार, श्री पृथ्वीराज शास्त्री (वैदिक मिशनरी)

अधिक से अधिक सख्या मे परिवार सहित पहुँच कर कर्त्तंव्य पालन कीजिए।

नोट कपया भपनी भागंसमाज के सत्सग स्थवित कर समय पर प्रधारने काकष्टकर।

- निवेदक -

महाझय धर्मपाल

सुर्यदेव महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पजीकत) १५ हनुमान रोड नई दिस्ली-१ दूरभाष ३१०१५०

### श्री दौनानाथ सिद्धान्तालकार का ग्रामिनन्दन

रचि॰ न॰ डी (सी॰) ७५६

मान समान जलोक विकार फेस-१ दिल्ली६२ में १६ विसम्बर को विशेष असब सम्मन हवा, इस धवसर पर भाग जगत के ११ वर्षीय विद्वात उपदेशक वितक लेखक, राष्ट्र वेवक स्वामी श्रद्धानन्त के प्रमुख शिष्य धाषाय टीनानाच क्रियान्तासकार का साववनिक ग्रभिनन्दन किया नया। श्री बाचाय जी ने बनेक नैदिक पुस्तकों निली हैं तथा कई एक पक्षों के सम्पादक रहे हैं।



—कुलमूबल सहनी मत्री

## श्रार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेव चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी । दं के अन्तर्गत करमक्त होगी। सारा दान चैक/मनोग्राडर/बैक द्रापट द्वारा

मन्त्री माता च ननवेबी बार्य चर्मार्य नेत्र चिकित्सासव, वी १ जनकपुरी नई दिल्की ३०० के पते पर मेजा जाए।

दानदाताओं के नाम विकित्सालय की शिला पर अकित किए आएगे।

रामगोपास शालवाले सरनक सुबदेव धोमप्रकाश धार्य महाशय प्रवपास चिकित्सासय एव प्रधान प्रधान दिल्ली माथ प्रधान भाव प्रतिनिधि समा केन्द्रीय सभा चून्नीलास चेरि ट सा॰ मा॰ प्रति॰ सभा श्रीजन्य से महासिया दी हुड़ी आ० लिमिटेड ६/४४ कीतिनगर **श्रीश्री**विक नेत्र नई दिल्ली ११००१

लिए स्वास्थ्य गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी. हरिद्वार औषधियां सेवन करें

> शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारनाय. फोन २६६८३८ चावडी बाजार, विल्ली-६



# अवस्य सम्बद्धाः

दिल्ली आर्य प्रसिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ४० पैसे वर्ष र प्रक १३ रविवार १७ फरवरी १६८३ आय सबस्सर १६६०८५३०८४

फाल्गून २०४१ वयान वाल--१६

# शिवरात्रि के महापर्व पर विश्व भर की आर्यसमाजों में ऋषि बोधोत्सव की धूमधाम

महर्षि दयानन्द विश्व के महान् धर्मोद्धारक एवं समाजसुधारक थे

भायसमाज साहदरा दिल्ली द्वारा मायोजित महर्षि दयानन्द बोघोत्सव के भवसर पर मुख्य भतिथि के रूप मे बौलते हुए केन्द्रीय सस दीय मत्री श्री एवं के एल भगत रे महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये अर्ध न समाज सुधार के कायों की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्हे महान सुधारक धर्मोद्धारक एव क्रातिकारी बताया । उन्होने ग्रार्य समाज के द्वारा किये गए महान कार्यों की प्रश्नसा करते हुए कहा-समस्त युषार के काय स्त्री शिक्षा प्रछतो **बार सस्कृति और सम्यता की** रक्षा सब बाबसमाज ने घपनाया है। मैं समभताह सरकार का २० सूत्रो कायक्रम जो राष्ट्रीय कल्याराका सूत्र है वह स्रायसमाजने पूत्र ही



एच० के० एल० भगत

भ्रपनाया हुम्रा है। उन्होंने भ्रार्यसमाज को उसके द्वारा किये गए महान कार्यों के लिए साधुवाद दिया।

अध्यक्षीय भाषण करते हुए श्री रामगोपान शालवाल के कहा ऋषियमानन्द ने प्रायसमाज को एक प्रवत्त प्रायोगन के रूप में जन्म दिया है। प्रायसमाज अपने जम से ही प्रराष्ट्रीय तत्त्वों से अन्याय अस्तान जहानत से लन्दी चला वाया है। इस प्रवस्त पर हम ऋषि के कार्यों को पूण करने का वत प्रहण कर।

दिस्ती ग्राय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्पर्धेव ने कहा—
कवि दयानन्द ने राष्ट्रमहित मातृमहित पितृमहित मुक्सिक
(भ्रावायसम्मान) और प्राणिमान के प्रति प्रम खिलाया है।
उन्होंने वग जाति से जरूर उठकर मनुष्यता का पाठ पढाया।
उन्होंने कहा—महिंब द्वारा सस्वापित भ्रायतमान दश समाब्स की विषम परिस्थितियों में भी प्रपते सुधारवादी दिष्टकोस्ण में सलमन रहा है। हमें बाज और भा श्रीवक प्रबद्ध होकर कार्य करते रहने की प्रराण लगी चाहिए।

# ऋषि मेला (ऋषि बोधोत्सव)

रविवार, १७ फरवरी १६६५

स्थान—फिरोजशाह कोटला मैदान प्रात ६०० जे यज्ञ

प्रात ६ ३० बजे घ्वजारोह्स प्रात १० ०० बजे बेल-क्रुव प्रतियोगिताए

प्रात ११३० वर्जे भाषसा प्रतियोगिता विषय --राष्ट्रोस्थान में महर्षि दयान-दका योगदान

वोपहर १०० वजे सास्कृतिक कायक्रम अपराह्म २०० वजे सावजनिक समा

सम्बद्धाः—नामा रामनीपाम शामवाने सम्बद्धाः सविज्ञि—सी वनराम बासवः (सध्यक्ष मोकससा)

युक्त प्रतिक्रि-पी बसराम जासर (प्रध्यक्ष लोकसमा सुधी कृत्य वेन बोसी

> प्रमुख वक्ता--थी शॉन्प्रकाश द्वाषार्थी थी जिवकुमार धारती थी शिक्षीस कुमार वेदानकार

भी पृथ्वीराज कुल्ला (वश्विक मिलनरी) भी प॰ प्रश्विवश्वक सारकी सविक से प्रविक सर्वात ने परिवार कुद्तित पहुँच कर कहान्य का पासन कीविक् ।

स्तिक से प्रविक सर्वात ने परिसर प्रवित पृष्टि वर क्षावन का पासन की लिए। नोट क्रियम सप्यूपी अञ्जूष्ट्रमाज के बल्सन स्वेगित कर्व समय पर प्रवीरने √ का क्षांच करें।

ग्वान-म्यान्य पर्वेक्तिं — निर्देशं — गहामन्वी - स्वयंश्व स्वर्धि केन्द्रीर्ये सभा, दिल्ली राज्ये (पश्चीकृत)

१% हनुसान रोव, वह विल्ला-१

### 

सरल जिल्लानको

कौन विवाकर बनाजवत से जब खाया वाति निरम्नार? विकाम को सांधु रहा वा किस के उर में लीहरूँ मार? कोर निराखा के बतकर से लाया कौन बकल बहार ? व्या दृष्टि से जान बृद्धि से इरकिने किस में प्रक्रियार ?

ब्यानस्य के स्थानन्य के स्थानस्य के स्थाप सातार॥१॥ कीय क्षित्र यह प्रवक्ष के स्रोत्तर पर्यक्षित्र के स्वक्षार? कीय कार्याचा करूपकार स्थाप सिंग्न के करते पार? दुराकार प्रवक्ष्य हटाकर दिया जीत 'स्थाप संग्रत'? गारत हु पर केकर स्वत्य कींग स्थापकों की स्थार ?

द्यानम्ब के ब्यानस्द वे द्यानस्य के ख्रीव वातार।। २ ॥ कीन 'वेड जर्बर सामक्ष का किया सफल जिसने उपचार ? कीम नाक्ष्मी निवंके जुंब से खर्दी जान की स्वित्य चार ? प्रदेश खूँ के इपर जगर को मुठे कम्बों में एक मार ? वे श्वायाण अकास निवं निवंस ने सबस गढ़ को मिस्सार ?

क्वान व वे ब्यानम्म के व्यानम्म ये म्हणि वातार॥ ३ बाव अप्तायो का विवनाधी का या कीम बना धावार ? बीव बीव की यसे समायाः गऊकी की किन सुनी पुतार?

स्थव बांठ से ही थन देकर किम ने शासक किया परर? किस ने किसा किरसा अप में विष देने वाले को भी प्यार? अस्यानन्द थादय सन्द वे दयानाद से पणि दासाना से भ

**有效的现在分词不够有效的现在分词的** 

इन्द्र वर्षन्तो ग्रष्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । ग्रपष्नन्तो ग्रराव्णाः ।

死0 色1 5 元 1 光

पदार्थ-(इन्त्र ) परमेश्वर का (वधन्त ) युवनान करते हुए (मन्तुर ) कर्मी को करने हुए (विश्वम् आर्थे कृष्यन्तो) विश्व को श्रेष्ठ करते हुए (अराज्य अपन्तन्त ) भराति भावना तथा कृपणों को दूर करते चले चलो।

गीतिका

परमेश के गुण गाते चसो। सदमें चारा बहाते चली ॥ राही मे भाए जो सबरोम बन। कजसपन मन से हटाते चनो।। कणूलपन पन ज हु---धालस्य जडताको निर्मूल कर। ----- से जनसमाते वसी।। तज सुद्र अनुदार दुर्भावना। समुदार निज मन बनाते चलो।। ईश्वर के बत मे बती मक्त बन । तुम प्रार्थ सब को बनाते चलो ॥

उपास्मै गायता नर पवमानायेन्दव । ग्रिभिदेवा इयक्षते । साम उत्तराधिक १।१।१।

पदाब-(नर ) हे उपासक नेता जनी (बस्मै) इस परमात्मदेव के लिए (देवान् मनि इसक्षते) दिव्य तुणों के सग करने के निए इच्छुक तुम सब (इन्दर्व पवमानाय) भाद्वादक पावनकर्ता प्रवाह रूप प्राप्त प्रभु के निए (उप) उपासना करो (नायत) स्तुति गान करो।

गीतिका

आसे बढने के अभिजाबी नर ईश्वरका मूण गायन कर। करल समुपासन पावन का नर प्रभुवर का गुण गायन कर।। पावन करन बाला है जो उससे जीवन मन कर पावन। प्रवसान सोम रस सागरका वारावरका समुपासन कर।। तु दिक्य मुस्सो को लक्ष्य किये बारिमक ब्रध्वर इच्छक होकर । माञ्चादक कान्त प्रशान्त परम सर्वेश्वर का स्तुति गावन कर ॥ देवो का सगतकर्ता हो जा देवी सम्पत्तिदाता है। उत्तपरम रसीले प्यारेका सुख सागरका सवगाहन कर।। तु करुण गरुण में भाजा रे उस ईश्वर की अपना प्यारे। म्रानदंकदं सञ्चिदानदं करुणाकर का गुण नायन कर।। **धन्या धनित्रा** भवत शीर्षासोऽहय इव। तेषां वो झग्नितुन्नानामिन्द्रो हन्तु वर वरम्॥

बाम उत्तरा० २२। व । 1 ववार्य-(समित्रा ) हे सस्नेही जन (सन्धाः नवतः) अन्धे हो । (सशीर्वाज ) पवाय — (बालका ) ह बरनक्का चन (बन्दा) सन्दे हो। (घरोडांचा) सिर रहित, मुर्ची गरित्तकहीन (सदय दव ) सर्पवत् (प्रवत) हो। (वेचा वः सन्ति नुकालान्) तुव बालांगित द्वारा परे क्षेत्र विए जायो। (वर वरम् इन्द्र हन्तु)प्रश्लेष को कुल-मुलकर परमेववर वारे।

जो प्यार मही करते जो हैं मदान्य प्राणी। बाकों के होते भी सन्धे हैं समिमानी॥ हैं नही दूर द्रष्टा भी स्वार्थ श्रन्थ-द्वेशी। मस्तिष्क होन हैं वे अविवेकी सञ्जानी।। चिर फिरेडेय-विष से महित्त् इसने वाले। जूद भी उस से जलने की करते नादानी।। तुर भाष्य प्रमुख्य जान प्रश्नित स्वाहर कर देवे। प्रमामृत रख पीसे दुनिया धानी धानी ॥ कर स्त्रेह धमी वे तू है यही बृदियानी। कर स्त्रेह धमी वे तू है यही बृदियानी।

भ्रो शन्तो देवीरभिष्टय ग्रापो भवन्तु पीतये ।

श्रयोरिम स्नवन्तुनः॥

यजु॰ ३६। १२

वदार्य—(देवी बाच) सर्वे अकासक सर्वे आपक प्रमु (न समिष्टये पीतये वाँ जवन्तु) हमें सबीष्ट सानन्य रस पान के लिए कल्याणकारी हो। (न श्वयो सनि स्वन्तु) हमारे निए सुस की सर्वत्र वृष्टि करे। यही विशय है तम

है तुम वारम्बार । बया वृष्टि कर सुबाद वृष्टि कर कक्ष्मा वक्ष्णागार।। हे बन को चनकाने बाले नवजीवन सरसाने बाले। व्यापक विश्व समाने वाले सान्ति वृष्टि बरसाने वाले ॥ दिक्य क्याप्त कल्याणी बारा बरेखा सविरल कार। है यानन्य कन्द सुवाराधि मेरे प्रमु हे घट-घटवासी ॥ करणा वस हे विरव प्रकाशी हर बीवन दुस दैन्य उदासी। कर विभोर सब ब्रोर बहा वो शान्ति सुवारस सार॥ ननवासित सानद हेतु सा, हरने सब दुःस इन्ह हेतु सा। कोन दिव्य रसपान हेतु झा, करने बन कल्याण हेतु झा॥ हो साक्षात् दिव्य रस नस-नस कर बीवन सवार।

नावान्तरकार-रामनिकास विद्याप फबलपुर, सुन्दर नगर, (मेरठ

# आर्य पर्व सूची (१९८५)

सावदेशिक मार्थ प्रतिनिधि सभा मायममाजो की सूचना के लिए स्वीकृत मार्थ पर्वो की सूची प्रकाशित किया करती है। सन १६८५ की सची इस प्रकार है---

| ₹•           | पव                             | सौरतिथि            |                                   | चन्द्रतिबि श्रश्नेजी | दिन      |
|--------------|--------------------------------|--------------------|-----------------------------------|----------------------|----------|
| 8            | मकर सक्राति                    | १ माच २०४१         | माचबदि ८, २०४१                    | <b>१४-१-१</b> €=¥    | सोमवार   |
| 2            | वसन्त पश्रमी                   | १२ मात्र २०४१      | फा० सु० ४, २०४१                   | ₹4-1-18=4            | शनिवार   |
| ą            | सीताष्टमी                      | १ फा० २०४१         | फा० व० ⊏, २०४१                    | <b>१२-२-१६</b> =¥    | मगसवार   |
| ¥            | दमानन्त बोधराति<br>(शिवराति)   | ६ फा० २०४१         | फा० व० १३,२०४१                    | \$ 9-7-8 Ex          | रविवार   |
| ¥            | वीर लेखराम तृतीया              | ११ का० २०४१        | फा० सु० ३,२०४१                    | २२-२-१६=४            | शुक्रवार |
| Ę            | नवसम्येष्टि (होली)             | २४ फा० २०४१        | <b>फा॰ सु॰ १४, २०४१</b>           | €-3-8€=¥             | बुषवार   |
| •            | न <b>व सवत्स</b> रोत्सव<br>एव  | ६ चैत्र २०४१       | चैत्र घु॰ १ २०४२                  | २२-३-१६८%            | गुक्रवार |
|              | षायसमाज स्थापना दिवस           | r                  |                                   |                      |          |
| 5            | रामनबमी                        | १७ चैत्र २०४१      | चैत्र गु० ६, २०४२                 | \$239-6-06           | श्चनिवार |
| ٤.           | हरि नृतीया                     | <b>६ आ</b> वण २०४२ | श्रावरा गु० ३, २०४२               | २०-७-१६⊏≒            | शनिवार   |
| ₹•.          | श्रावणी उपाकम                  | १४ भाद्रपद २०४२    | श्रावण सु० १४, २०४२               | ३०-८-११८४            | जुक्रवार |
| 22           | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी           | २२ भारपद २०४२      | माद्रपद बदि ८, २०४२               | ¥=38-3-0             | शनिकार   |
| <b>१</b> २   | गुव विरजान-द दिवस              | २३ प्राध्वित २०४२  | मा० वदि १०, २०४२                  | E-20-2E=X            | बुधवरि   |
| <b>?</b> ३   | विजय दशमी                      | ६ कार्तिक २०४२     | मा० स् <b>० १०, २०४</b> २         | २२-१०-१६८५           | मगलबार   |
| <b>\$</b> .8 | महर्षि निवाण दिवस<br>(दीपावली) | २७ कार्तिक २०४२    | कार्तिक बदि ३०, २०४२              | १२-११-१६=६           | मगसवार   |
| 24           | श्रद्धानन्द बलिदान दिवस        | द पौष २०४२         | <b>ग्रव</b> हन सु० १२ <b>२०४२</b> | २३-१२-१६=३           | सोमबार   |

२ देशी तिथियों के घटनढ जाने से प्रमेजी तारील में परिवर्तन हो सकता है।

धोमप्रकास त्यानी क्षमा मन्त्री

# लघु कथा (क्यांना)

### आवश्यकता

साने की मेज पर पूरे परिवार के साब बैठे रिटायडं वाबू सकटाप्रसाद ने भपने बेटे से कहा ''बेटा, मैं सोचता हूँ बडे के पास दिल्ली रह धाऊ।"

"बाबू की घाप ठीक ही सोच रहे हैं किंतु भापके चले जाने से यहा बडी तक लीफ हो जायेगी।

'क्यो, भलामेरे जाने से ?"

हा बाबू जी अपना नौकर भी तो खड़ी पर गया है, दूध, राशन, सब्बी, वे सब जाने के लिए घर में कोई तो होना चाहिए," बहू ने प्रपनी दिश्कर्ते शिना

"हा बाब्जी, मधुठीक कह रही है, बेबी धीर पिंटू की परीक्षाए भी इसी माह मे हैं, ये दोनों ही हिसाब में कमजोर है, भाग देख लेंगे तो

बाबू संकटाप्रसाद को बढकऊ का पर बाद हो आया---"मैं एक बाह के सिए भर से जा रहा हैं, बाप बाजार्ये तो वर सुरक्षित हो बाने।" बाबू बी का मन विनमिना उठा और वह प्रवसाये ही उठ

११७/एब/२३३ नबीन नवर, कावपुर

## सम्पादकीय

## घटना ग्रौर बोध

बह १-३६ को महामिबरानि थो जब एक छोटो-सी घटना ने बाल क मूलवाकर के जीवन में महानू क्रांति कर दी। भीर वे सच्चे खिव की जोज में एक दिन घर से निकल पढ़े। घटनाए सपने साप में छोटो या बड़ी नहीं होती। उनके परिएाम से ही उनको छोटा या बड़ा कहा जाता है। हमारे जोवन में इतस्तत प्रमेक घटनाए घटित होती रहती हैं परन्तु उनका प्रभाव हमारे जोवनों में क्रान्ति नहीं कर पाता। इसिलए उनका घटित होना इतना कोमती नहीं। प्रत्येक घटना एक खिला है, बही कीमती है। जेम्स वाट की केतती के बक्कन को माप से उठते गिरते देख चमक्कारिक धनुमान हुमा कि माप से यस्यिक धानत होती है। यही व्यक्ति माप के इबन का बाविकारक प्रहान वैज्ञानिक बना। न्यूटन को बाग से पेड से टूटकर गिरते सेव को देख यह कीतृहल जारा, फल नीचे ही स्थी पिरा उत्पर क्यो नहीं गया ? वे घटनी की गुक्त प्राक्ति एक नीचे ही स्थी पिरा उत्पर क्यो नहीं गया ? वे घटनी की गुक्त प्राक्ति एक नीचे ही स्थी पिरा उत्पर क्यो नहीं गया ? वे घटनी की गुक्त प्राक्ति एक नीचे ही स्थी पिरा उत्पर क्यो नहीं गया ? वे घटनी का गुक्त प्राक्ति के समझ हुए। इसी विद्यात पर धनेक विज्ञान के सामकारी चमक्कार उत्ति के ति देश समर्थ पुर रामदास को पिडत हारा "खाववान" कहने मान से बेराज्योड हो गया।

मूलशकर एक घटना से ही सच्चे शिव को लोज मे ग्रहत्याग कर चले सौर महर्षि दयानच के नाम से विश्व विश्वात हुए। बहन भौर चाचा को मूरपु उनके बैराग्य को कारण बनो महारमा बुद्ध मी शव को देखकर ही सुद्धार को नश्वता से जिल्ल होकर महल त्याग बन को चल पड थे। पर महारमा बुद्ध के बैराग्य में कर्तव्य विश्वला प्रधिक थी।

महर्षि दयानन्द को एक ही बार बोध हुमा, ऐसा नही कहा जाना चाहिए, प्रतेक बार जोवन के घटना क्रमों ने उन्हें बोध कराया।

योगी ऋषिराज समाधि के भ्रानन्द मगन, एक बोस्कार से हिल उठते हैं। विचवा मा भ्रमने बच्चे को लास को नदी में बहा उस पर लिपदा विचवा भी प्रमानी लाज को डापने के लिए उतारकर चलो जा रही है। और अपनो गरोबी बबसी पर चीस्कार कर रही है। उस कार्याएक रूप ने महाँच को भारत की दोन दशा और गुलामों का महसास कराया। भाषों से विहीन गृह विराजानन्द ने भी स्वामी दयानन्द को ज्ञान, विज्ञान भीर देश, समाज के प्रतिकृत्य बोध कराया।

महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव की उपाधना का ससार को बोब दिया।
महर्षि दयानन्द का एक मनुष्य से लेकर समाज धौर राष्ट्र से लेकर विश्व
तक को मूल भूत समस्या एव विषयता के खिलाफ सशक्त धान्दोलन
धार्यसमाज एक दिष्या बोघ है। इसीलिए तो इन महापुरुषो ने कहा था—
प्वाठित कार्य दुवता, उत्साह धौर समन्वयात्मकता को वृद्धि का धार्यसमाज
की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

— पुनावकन्त बोस

जहा जहा बार्यसमाज है वहा-वहा जाबन-ज्योति है।

श्चार्यसमाज एक वास्तविकता है जिस से जन साधारण का श्वाश्चर्य-जनक उत्थान हुआ है। बार्यसमाज दिखावोच है परन्तु-व्यक्ति से ही समाज बनता है झाज श्वायसम्बद्धात है व्यक्ति-यन्ति में बचारिक क्रांति एवं दिखा बोच की। जो प्रत्येक द्यानन्त्र मन्त्र और वेदिक सर्मी को पूर्ण करना है। जोवन के प्रत्येक

बटनाक्रम से हम बोध ग्रहण कर सकते है।

### आरक्षण की नीति पक्षपात का द्योतक

भारत बरकार के द्वारा बलाबी गयी बारकरण नीति बहुन ही जतरलाक है। कुछ बर्ग या जाति विशेष के साधार पर भेदमाब करते हुए कम योग्यता वाले व्यक्त को साध्यत वाले त्यक्त के साधार तर भेदमाब करते हुए कम योग्यता वाले व्यक्त के साधार तरी हुए कम योग्यता वाले व्यक्त के साधार नीर पर रक्त केने वाली तथा-कैंग्यत आरख्य नीति प्रतिकार के साधार पर किसी नाम वा पुत्र इन्तीनपर यदि कम योग्यतावाका, केवल जाति के साधार पर किसी नाम वा पुत्र काने तथा विश्व काम पर समावा चार्य और योग्य व्यक्ति के द्वारा व्यक्ति के काम विश्व विश्व के काम विश्व विश्व विश्व के द्वारा निर्माण के स्वाया वा योग्यता का वास्तर कितरे विश्व विश्व किया है। विश्व विश्व

बसधीत झास्त्री धार्वसमाज कासकाजी

—महात्मा नाषी

-यदापाल सुचाञ्

## कुलपति सम्मेनन गुरुकुस कानडो विश्वविद्यालय की सस्तुतिया

आरक्षण आवश्यक है-

१६ जनवरों के विशिष परिचर्चा सत्रों में यह निष्ठवय किया गया कि वर्तमान सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रवस्थाम्रों के पिन्नेक्ष्य में मारतीय शिक्षए सस्थाम्रों में प्रमुक्षित और जन-मातियों के लिए प्रारक्षण जारी रखा जाए। युग युग ते वर्ज में तहे शोधक तथा माणिक विकास में योगदान के रूप में शक्त तथा प्रमाणक के रूप में शक्त तथा प्रमाणक के रूप में शक्त तथा प्रमाणक के लिए सानता नक्ष स्माणक में प्रोत्मा के प्रोत्मा के प्रोत्मा के प्रमुख्य तथा में प्रतिमा के प्रोत्मा के प्रोत्मा के प्रोत्मा के प्रोत्मा के प्रोत्मा के प्रमुख्य तथा में प्रतिमा के प्रोत्मा के प्रोत्मानता नथा सामाजिक स्तर के द्यावा के लिए माविधान में दिए गए आश्वास्थानों की प्रमुख्य के लिए भावास्थ्य के लिए तथा एक आविद्योंन समाज के निर्माण के लिए म्रायस्थ्य है।

भावश्यकता इस बात की भी है कि भारक्षण नीति का पनमल्याकत किया आए। अनसचित वर्ग के विद्यार्थियों में जागृति के लिए नि शुल्क शिक्षा, नि शुल्क भोजन पुस्तक छात्रवृत्तिया विकित्सा कपड तथा भारम-निर्भरता को प्रेरणा तथा सुविधाए दी जाय । प्रशिक्षण के लिए कक्षाए तथा भन्तरिम पाठमक्रम शुरू किए जाय । उनकी आर्थिक स्थिति सधारने के लिए रोजगार के मधिकाधिक नाधन उपलब्ध कराये जाय । शिक्षा का व्यवसायी-करण करते हुए भनसचित वर्ग के विद्याधियों के लिए पोलिटेकनिक स्थापित किये जाय। प्रनुप्चिन वर्गके विद्यार्थी शिक्षा प्रघुरो न छोड इसके लिए उन्हें तथा उनके समिभावको को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये। साथिक पिछडापन दूर करने के लिए श्यावहारिक स्तर पर उनकी सामाजिक आवश्य-कनाओं को पर्याप्त रूप में पूर्णता देने के लिए इन वर्गों के मेवावी छात्रों को विशेष रूप से कपर लाने के लिए ग्राधिक सामाजिक शैक्षणिक मनोविज्ञान तया राजनैतिक रूप से झारक्षण नीति का पुनम ल्याकन किया जाना चाहिए शिक्षा समानता तथा समान अवसर दिये जाने के सिद्धान्त पर आधारित हो भारक्षित विद्यार्थियों को उनकी मानुभाषाधी में शिक्षा ग्रहण करने तथा सामाजिक प्रशासनिक सेवामी मे उनका उपयोग करने को छन हो। सब लोग सुखी हो, वे समान रूप से जानि घम वर्ग तथा किसी भी भेद-माव से मुक्त होकर राष्ट्रीय धारा में जह सके। इसके लिए एक भावनात्मक बाता-वरण बनाने के लिए प्रचार तन्त्र का मजबूत होना ग्रावश्यक है।



# सत्य के प्रबल समर्थकः स्वामी दयानन्द



मायमम व कीस्यारा नो जरूर द्रिद्रश्रमे हई। पर इसमे पहने भी स्वामी दयान-दन ऐसे ही कुद और सगठनो की भी नीव वाली थी। उत्तर प्रदेश में भाय समाज की स्थापना स एक साल पूर्व नैनी साल में स्वामी जी न एसा ही एक संगठन बनाया जिसका नाम सत्य शोधक समाज था। प्रतीत ऐमा होता है -- ब्रह्मसमाज प्राथनाममाज ग्रादि सगरनों से लगता भिडता नाम भागसमाज सभवत स्वामी भी को ग्रधिक रुवा हो। इसीलिए उन्होने बाद मे उसे प्रपनालिया। पर वर्शनक भौर सामाजिक क्षेत्रों में स्वामी दयान द जिस सत्य का प्रचार करना चाहन य उसका धामास सत्य शोधक के नाम से ही म्राच्छापता लगताहै। सत्यका प्रचार करते समय न्वामी जी कमन मेन तो कोई पूर्वाग्रह ही या और न ही दसरे वर्मा चायों की तरह किसी बात को उ होने यह कहा यह ही अन्तिम सत्य है कोई बिन्दू इस पर लग ही नही सकता। बल्कि कही कही तो उनक लखी में यह नी सकेत मिमता है - जो क्छ उन्होंने लिखा है उसमे प्राप्त तथ्यो से यदि परिवनन की स्वाइन दिलाई दे तो वह निन्मकोच कर सिया जाए।

सत्य शोधक समाज की ही राह पर चलन हए ऋषि न्यानन्द ने भवनी असल पुस्तककानाम भी सत्यायप्रकाश रखा। सरय की तह में पंचने के लिए स्वामी चीने इसके बौदह समुल्लासी से यो तो प्राव हर प्रमुख विषय को ही उठाया है। ग्रन्थ का प्रारम्भ भी उन्ही दिनो ग्रास्ति-कताकी धाड में भिन्त भिन नामी स चल रही ईब्बर की आप दुकानो की अस सियत नया है ? यही से उन्होंने किया है। यह समय वह बा जब शैव लोग बैध्णवो की पगड़ी उछालते य भीर वैष्णव उन्हे बुरा भला कहते थे। स्वामी जी न सप्रमाण ञ्चन सब नामो की व्यान्या करते हुए कहा यह तो सब ही नाम उस एक ग्रहितीय श्चित के हैं फिर फनडा किस बात का है? मीता के शादों में यह तो सारे रास्ते पहु

वाते ही एक मिलन पर हैं। ऐसे ही भीर जी प्रतेको सामाजिक प्रस्त खरमार्थमकास मत्यामी को उठाये। जन्मना जाति, निजयों को शिक्षा से विचत रखना वाल-विवाह बुढ विवाह धौर पुनर्ववाह का निपंत्र धारि धानेको सामाजिक धिष्ठधाए ऐस व विनये देग धौर समाज दोनी तबाह हो रह थे। त्यामी जीने धाने जावाधी में धौर ध-यों में इन्हें बढ़े धाने हाथों लिया। मारत ने प्रत्यंत्रत खती सक् मतान्यारे को वह घषना मानते थे। इसी-लिए उनकी कमजीरियों का जी इस प्रय में उन्होंने प्रप्त उठाया है। खरमार्थमकास से इस मुम्लिक में बढ़े ही निजयं भाव से उन्होंन पह लिखा है—

मेरा इस ग्रव क बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य धांका प्रकाश करना है। मर्थात जो सत्य है उसकी सत्य भीर जो मिच्या है उसको निथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य भवें का प्रकाश समभा है। वह सत्य नहीं कहलाता जो सत्य के स्थान में प्रसत्य भीर प्रसत्य के न्यान में सत्य का प्रकाश किया जाए । किन्तु जो पदाथ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मामना सत्य कहलाता है। को मनुष्य पक्षपाती हाता है वह भपने ससत्य को भी सत्य भौर इसरे विरोधी मतवाले के सत्य की भी भसत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है। इसीलिए वह सस्य मत को प्राप्त नही हो सकता । इसीलिए विद्वान बाप्तो का यही मूख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्वासत्य कास्वरूप समर्पित करदे। पञ्चातु वे स्वयम् भपना हिताहित समक्र कर सस्यार्थ का ग्रहण धौर मिष्याय का परित्याव करके सदा धानन्द मे रहें। मनुष्य की भात्मा सत्यासत्य की जानने वाली है। तवापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हेतु हठ दुराग्रह भीर भविवादि दोषी संसरव की खोड बसस्य में कुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ मे ऐसी बात नहीं है धौर न किसी कायन दुलानाया किसी को हानि पट्टें-च।ने का तात्पय है।

बारते व्यक्ति निर्मिमानीयस और स्ट्रीत हो तकता है। हुस्तर कोई होता तो विक्त बाता रूत में अब कोई होता तो विक्त बाता रूत में अब कोई ह्योक्न की गुँवाहस नहीं है। पर स्वामी वी का मस्तिक रूत तकता हा—तर की सोव बारी रहनी वाहिए वीर कन भी कोई नमा तस्य हामने सावे तो जसे कुने हुस्य से स्वीकार कर लेना चाहिए।

धार्यसमाज के दस नियमों में एक नियम के तो शब्द ही यह हैं-- 'सत्य महरू करने और प्रसत्य के त्यागने मे सर्वेदा उद्यत रहना चाहिए। इन दस नियमों ने भी सब से प्रधिक वस स्वामी जी ने सत्य पर ही दिया है। दस मे से तीन नियमों में तो सत्य का स्पष्ट उल्लेख भी है। पहले ही नियम ने आया है-'स्वय सत्य विचाशीर पदार्थविचासे जाने जाते हैं छन सब का धादि मुन परमेश्वर है। पाचवें मे- सब काम धर्मानसार सत्य धौर धसत्य को विचार करके करने चाहिए। इसी तरह तीसरे निषम के प्रारम्भ में निसा है--'वेद सब सत्य विद्याची की पूरनक है। उसका पढ़ना भीर पढाना सब भागों का परम षमं है।' वेद का ज्ञान किसी जाति प्रयवा देश विशेष की सम्पत्ति नहीं है। मनुष्य मात्र के कल्यासा के लिए धादि सुष्टि ने मिला यह देवरीय ज्ञान है। प्राणिमान को मित्र की दब्टि से देखने का घादेश भी सब से पहने वेद ने ही दिया।

स्वामी दयानन्द के समाज सुधार कार्यक्रमो भीर सैदातिक सच्चाइयों की उन दिनों देश विदेश दोनों में भी भाजकी चुम मची हुई थी। वियोसीफिक्स सोसा-यटी के सचालकाण तो ग्रायंसमाज के विचारों से इतने प्रभावित वे कि एक बार तो उन्होने सोसायटी को बार्यसमाज मे मिलाने का निश्य ही ले शिवा। स्वामी जी से बहुत दिनो तक इस सम्बन्ध में उन कापक्र-व्यवहार भीचला। अन्त ने उक्त सोसायटी के सस्थापकों में से दो प्रमुख व्यक्ति कर्नेस समकाट और मैडम ब्लेड-बट्स्की बम्बई प्राक्षर स्वामी भी से मिने। कई दिनो तक यहां भी विचार विनिधय चलता रहा। लगभग सभी बातो पर दोनो पक्ष सहमत भी हो गये। पर यह ही बात ऐसी रही जिससे बेल गढेन चढ सकी। धायसमाज के तीसरे निवस मैं को यह वाक्य है--वेद सब सत्य विद्यार्थी की पस्तक है. उसमें से सत्य शब्द को वियो-सिफिकल सोसायटी वाले हटाना बाहत वे । उनका कहना वा -- इससे दूसरे वर्ध-बन्धो का बप्रत्यक्ष सदन होता है। स्वामी जी ने उनकी बात बडी गम्भीरता से सूनी भीर सहस्र भाव से उत्तर देत हुए कहा सत्य पर तो सार्यसमाज की नीव ही मैंने रक्ती है। यदि सत्य ही उसमें से निकस गया तो रह क्या जाएगा। सत्य से सम-भौते का भागपाय ही असत्य को प्रोत्साहन देना है। इस तरह वियोसिफिक्स सोसा-यटी की वह विशय वार्ता बीच में ही ट्र वर्ष ।

ऐसा ही एक प्रकरण उदयपुर ने स्वामी ब्रयानन्द के जीवन ने भाषा। महा-

राजा स्वयपुर उनकी विद्वसा पर मुख्य वे । स्वामी जी भी महीनों-महीनो रह कर वहा उपवेश करते रहे और सत्यार्थप्रकाश तथा वेदभाष्य के लिखने का काम भी उनका वहा पश्चता रहा । महाराखा उदयपूर ने एक बार स्वामी जी से कहा---महाराज यह तो बाप जानत ही हैं यह मेरी गही एकलिंग महादेव की की नही है। मैं भीर मेरा परिवार तो उनकी घरोहर का रख-वाला है। पर मेरी बजाय धाप जैसा विद्वान साध् यदि इस घरोहर को सभाले तो कितना सन्दाहो । धर्म प्रवार मे श्री बह सहायक होगी भीर दूसरे भने कामा में भी इसका सद्भयोग हो सकेगा। पर बहाराज । एक छो ने सी शत इसके साथ वह है - मूर्तिपूत्रा का जो लडन प्राप करते हैं वह अरूर बन्द करना पडेगा। भले ही भागस्त्रय चाहे पूर्ति न पूर्जे। स्वामी जी उठे और कमडल हाथ मे लेकर उदबपुर से चल दिए। कहने लगे राजन एक दौड मे तेरी रियासत पार कर सकता ह। इसका प्रलोभन देकर मुभे सत्य से डिमामा चाहता है। मैं तो उस राजा की बाज्ञा का पालन करने सद्यार मे बाया है विसको रियासत में जीवन भर दौड़गा तो भी उसे पार नहीं कर सकता।

लोकेवस्मा भीर वित्तेवणा यह दो प्रसो-भन ऐसे हैं जिनमे साधारण मनुष्य फस कर रह जाता है। पर स्वामी जी की यह दोनों प्रलोभन भी धपने पथ से डिगान सके। तीसरी स्थिति वस प्रयोग की भीर थी। जब उनसे धमृतसर में किसी ने काश्मीर यात्रा मे प्रास्ती के सकट का भय विसाकर रोकना बाहा तब स्वामी जी ने कहा-सत्य का प्रचार करने मे यदि मेरे हायो की अगुलिया भी मोमबत्ती की तरह तिल-तिल करके क्लाई बार्येंगी भीर उनने श्रसत्य का श्रषेरा दूर होने मे मदद मिलेगी तो मैं अपने प्रवान को सफल समभ्या। तरह बार तो उनके शरीर पर विष का प्रयोग किया नया। कभी पान मे कभी द्व में बोर कभी भोजन में बहर मिलाकर दिया गया। कर्णवास मे तो एक जागीरदार ने समबार से ही उन पर वार कर दिया। पर स्वामी जी ने तक्तवार रोककर ज्यो हो उसका गट्टा पकडा तो ऊपरका खन ऊपर और नीचे का नीचे बन्द हो गया। तलवार ही उसके हाथ से खटकर गिर पडी। इसी तरह हरिद्वार के सर्वे कुम्भ के मेने मे उन दिनो पासड के विरुद्ध प्रावाज चटाना कितना कठिन काम था। वह भी तब अन कि सबी-साथी कोई न हो। पर सत्य पर जमी भ्रास्था ने जनमे न जाने कहा का साहस भर दिया। जो वह प्रकेश ही पासण्ड सण्डिनी पताका हाथ में नेकर वहां डट गये।

सरपायंत्रकाल से स्वामी जी ने कई ऐसी सैंदातिक सवाहमी का नी प्रतिपादक किया है जो स्ववहार में झाज तक झावें-समाबियों के मने से नीचे मी नहीं उत्तर सकी। इनमें एक नियोध का सिंदात में (शेव एक्ट पर ११)

# सांख्य ईंश्वरवादी है

--श्री पo सत्यत्रिय जी शास्त्री, एम ए साहित्याचार्य प्राचाय, दयानम्ब बाह्य महाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

बिश्व का सम्पूरा दश्चन शास्त्र लीनवस्तुलक्षातिशयसम्बन्धाद्वाऽ बोव । सास्य १।५६

बास्तिक एव नाम्निक इन दो मागा स विमन्त है। इन भ भार्यावत का दशन भास्तिक कोटि म भारत है। जिन म याय वैदेखिक शास्य याग प्रदात एव मीमासा इनका प्रमुख स्थान है। ये सभी इ वरवादी इन्द्रन है। इनमें स सारय के सम्बन्ध म निरीश्वरवादी हान का सर्वाधिक प्रचार जिसके मूल में एक कारण नो यह रहा कि बौद्रकाल के प्रभत्व काल में उनक विद्वाना ने साक्ष्य परम्परा के पूरातन श्राचाय वाषगण्य के सम्बंब में नास्तिक होने का बढचढ कर प्रचार किया जो कि साप्य एवं कपिल के साथ झट्ट सबय के कारण धनायास हो करिल के साथ बुड मया। उसा ब्राधार पर बाद म ग्रनि इद्ध एव विज्ञानभिन्नु जैसे साय के विख्यात भाष्यकारों के द्वारा तदन्रू भाष्य लिखे जाने स साय के सिद्धार्त का मजबूत सम बन गया। दूसरा कारण यह है कि सारय का एक सूत्र देवरासिख क सम्बन्ध में कपिल का बयाय मत न जान सन्न के कारण स उत्पन्न हुई भ्राति

ची प्रसगयह सम्रारम्भ होता है यत्सबद्ध सत तवाकारोल्लेकि विज्ञान तत प्रत्यक्षम ।

धर्मात जिसके साथ सम्बाध होता हुआ उसाके प्राकारका उल्लेखन प्रथमा निद्धान करन वाला जा विज्ञान वह प्रस्पक्ष हु। यह प्रत्यक्ष का लक्षण कहा है। इसमे बका यह है। क इसमे ता केवलमात्र बाह्य स्थूल विषयो काहा ग्रहण होन से इस ल-नण स सुइम विषयो का ग्हण न होने से इस लक्षण में भव्याप्ति होगी त्तव झागे कहा--

बोगिनामबाह्यप्रत्यक्षत्वान्न दोष ।

ग्रयात यागाजना कातो भातरिक प्रत्यक्ष होता है। इसलिए उक्त साग मे यह दोन नहीं है ताना स्रय स्वरस्थास भी सूर्म वस्तुमो का शान हा जाता ह बत किसा भानग्हसे दाप नही है। यहा पर प्रकृप का नत्त्व समकान के अभिप्राय से आशक की जाता है कि बास्त्री मे कहाकती पर परमात्मा का जगत का जपादान कारण माना गया है तो पिर प्रकृति को मानन की क्या ग्रावत्यकता रह जाती है। तब कहा है-

सास्य १।५७ धर्मात स्पादानकारण रूप परमात्मा की सिद्धि नहीं हो सकती है यहाँ ईश्वर के अगत का उपादान कारण होन का ही की सलासंद कार कर रहहैं क्यों कि ग्रंचकी घन्त साक्षी "सम विद्यमान है। जैसे--

> स हि सववित सवकर्ता। सास्य ३।४६

ईंबुझेरबरसिद्धि सिद्धा।

सास्य ३।४७ ग्रथात वह परमात्मा सवत्र एव समस्त विश्वका रचयिता है भीर इस प्रकार ईन्वरकी सत्तासिद्ध है। इसी स्थान पर कहा है —

श्रकामत्येऽपितकोय पारवश्याद । साक्य ३।४४ भ्रवति जगत ईन्वर का काय न हाने

पर भाजगत काई त्वर के साथ नियम्य नियामक बारचना तथा रचयिना का सम्बाब के क्यांकि प्रकृति जह हान स सबद्याही परतत्र है ग्राकी इस अन्त सानाम कपिल का ई वर कामानन सभीष्ट है। इसके प्रति। रवन कपिल स्थान स्थान पर अपनाम तब्य का पुनिराम जन को उद्मृत करता है जिसका ग्रनिप्राय है कि सप्रकार वन्भी मरे मन की पृटि करता है। इस प्रकार करिल न धान सम्प्रसाग्रचमे श्रुति याश्रुन ⊤∞द को इकतास बार उदध्न किया है। कपिन क्तना बढ़ा भारी वदमक्त है। परन्त्र मनुजी लिखते है कि नास्तिका बटनि दक धर्यात देद का निन्दा करन वाला नास्तिक होता है। कपिल जी नो बेद का प्रशसा मे जुटै हैं फिर वह नास्त्रिक कैंग हो गय। किसो भी दशनकार ने न्तना बार बद सुत्रकार ब्यास्थान कर रे है न कि ई "वर को उदधुत नहीं किया है फिर यह है कि कपिल जीवन का चरम लक्ष्य मान का मानते हैं जो मील की मानता न वह नास्त्रिक कैसे हो सकता है ? न्त्रना ही नहीं बल्कि भ्रपने य का उपसहार मार पर ही करते हैं---

बद्दा तद्वा तदुष्टिञ्चति पुरुवायम्त बुच्छिति पुरुवार्व ।

श्चर्यात जैसे भी हा मोक्ष प्राप्त करना बाहिए श्रव बनाश्रो ये नास्तिक कसे ठहरे गीतामे श्री कृष्ण कहते हैं कि

सारययोगी प्रथण्डाला प्रवदित न मना शिए । प्रधान बचान बुद्धि वाला का कहना है कि साम्य घीर योग ग्रलग ग्रलग है बुद्धिमान पसान ाक्त हो हैं वैसे भी सा य ग्रारचीगाच सर कपूरक हैं तब मवयाविस्ड मत त्र लोका परम्पर प्रकता वैसी कलावित हाहा तर सकती है साप्रकार सान्यक र जात का भस्ति व नियव क्यल पूर्वजम चिदि कर करता है ना क्या एसी म यनार नानिकस्त्र कर किया करने हैं बगभाकलि जा ⊤₊म ऋसि कंपूत्र द्यंत्रयं वास्मालाजाकलामदेवहूति बा जाकि वयस्यत मन् कापूत्रा वी म नाभी चिंपकान न पिनाभा ऋषि न्नदनोम उत्पनहुद्धापुत्र नास्तिक कैस हो सकना है जिस पिन बा पर स्परात्यामातवश परम्परास वद का जान मिला ना उसका नातिक होना कदा-चित सम्भव नहीं है। इसी प्रकार कपिल जी यागक ग्रगा का वरान भ्रपन कास्त्र मंकरत है योगागों का वणन परमामा की प्राप्ति तथा है वर का सक्कात करने क इच्छातथ सिद्धान को प्रकट करती है नास्त्रिकको इसम क्यालनादेना**है <sup>9</sup>** इन सभा प्रमाणांस कपिल जी के संस्विध म फैलामा गया य भ्रम कि व नास्तिक हैं सवबा हा दूर हो जाना चाहिए तबा हमे क्पिल कवस्तविकस्वरूप कदशास करन चाहिए जानि वैन्दि स क्यो के धनुक्ल तथा सबया ही वशक्त है तथा आ। क पिलाका एक पक्काईश्वर वित्वासी सिद्ध करत हैं।

# गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—वेद प्रवार ग्रिथिव्हाता

गुरुदेव है जीवन मेरा नसार कलिए। सम्पूल मनुज जाति के उपकार के लए।

> वेदो की ज्योति सब जगत्मे जगाऊमा। पालडकी लकामे आपनि मैं जलाऊमा।।

उद्यत रहगायज्ञ के विस्तार के लिए। गुरुदेव है जीवन मेरा ससार लिए।।

प्रचलित करूना शुद्ध वर्ग प्राथम अवस्था। कर दगानव दूप भद भावकी दुरवस्था॥

कोई नहीं प्रखूत है यत प्यार के लिए। मुक्देव । है जीवन गरा समार के लिए।।

प्रियम तृत्विसाको नहीं विद्याचो पढात । कहनक द्वार जिनको जूती पर्गका बताते ॥

तस्पर र<sub>ू</sub>गा उनने में उद्घार के निण। गुरुदेव<sup>।</sup> है जीवनमेरा ससार क लिए।।

वस ब्रह्मचय क युरा गाजन्म पालगा िला पूर्नित ग्रापका जीवनमेटालगा॥

सवस्व हैसदयम पर बलिहार के लिए। गुरुदेव <sup>।</sup> है जीवन मरा ससार क लिए।।

# ऋषिवर को याद करके !

—मोहन लाल शर्मा रिश्म '

हात न जो झगर तुम रहते न हम कियर के। न हना है मन मेराय ऋषिवर को याद कर के।।

सद ज्ञान का गरान्तादिखलाता कौन हम को।

य बदो के मत्र पावन सिस्तलाता कीन हम का ॥

दुनियाकाप्यार बाटा वातुम न ताजी भर के। कहता है सन मेरा ये ऋषिवर का बाद करके॥

सारे वे झत्याचारी थे तुम से डर के भागे। सोय येजा भन तक वेसारे केसारे जागे॥

ध्यज्ञ ग्रोम का यहा पर ऊचा हुग्राफहर के। कहताहै मन मेरा ये ऋषिवर कायाद करके।।

सच्चे शिव का खातिर दर दरका साक आहनी। म्रालिर को बात देरी यहासारे बहा ने मानी।।

दयानस्य इतमी भी न रहाजगमेडर के। कहताहू मन मेराये ऋषिवर को साद करके।। बोगी महा नपस्वी वा वो वाल बह्मचारी।

सेवा मे थी गुजारी यहा जिस ने उम्र सारी।। धायबीर हम हैं बस उसकी ही डगर के। कहता है मन मराय ऋषिवर को बाद करके॥

चुन चुन के काटेजिस ने सुमन यहा विछाये। जिसके गीत रहिम यहा सारे जहा ने गाये।।

**अ**मृत देके अन्य को प्याले पीय जहर के। कहुंता है मन मेराये ऋषियर को याद करके।।

भीलैंग्ड गज दाहोद (गुजरात)

# यज का वैज्ञानिक स्वरूप

(१) यज्ञकर्म-यज्ञ मानव जीवन का परम ग्रावश्यक कत्तव्य कर्म है। जब तक मनुष्य प्रपने जीवन को यज्ञमय नहीं बना नेता, उसका मानव जीवन सफल नहीं होता। यदुर्वेद के प्रार-भ मे ही पहले मत्र में यह प्रार्थना है कि "इवे खोजें त्वा वायव स्य देवो व सविता प्रापंयतु श्रेव्ठतमाय कर्मले" हे सविता देवता हम सब को धन्न, बल, शक्ति ऊर्जा भीर पराक्रम के लिए श्रोष्ठतमकर्मों मे दीक्षित करो । यही श्रेष्ठ-सम कर्म यज्ञकास्वरूप है। शतपय बाह्यण का ऋषि स्पष्ट घोषसा करता है 'बन्नो वै बोच्ठतमम् कम" १। ७। १। ४ इस प्रकार स्पष्ट विदित है कि मानव जीवन में यज्ञ-कर्मका बढा प्रभाव है भीर प्रयास पूर्वक यज्ञ कर्मों से कभी भी विमुख नहीं होना चाहिए। मनु महाराज लिखते हैं---"पर्ज-तांस्तु महायज्ञान् यचाशक्ति न हापयेत्।" अनु० ४।२१ । गीता में योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण की स्पष्ट घोषणा है वज्र दानतपः कर्मन त्याज्य कायमेव तत्। यज्ञो दान सपरचैव पावनानि मनीविज्ञाम् ।। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी धपने चन्य सत्यार्थप्रकाश ग्रीरगृह्यभूत्र ग्रन्थ संस्कारविधि में यज की महिमा गाई है भीर प्रत्येक नर-नारी के लिए यज करने का विद्यान किया है। विना यज्ञ के मनुष्य प्रपूरा है भीर मनुष्य क्या परमात्मा भी विना यज्ञ पूर्ण नही । सुष्टि के प्रारम्भ मे उसने भी महान्यज्ञ किया एव सृष्टि-निर्माण किया। 'सहयज्ञा प्रजा सुष्ट्वापुरोबाच प्रजापति ।'गीता । इस प्रकार यज एक महान् कर्तव्य है स्रोर इस 🖘 प्रकाश जनसामारए। के मध्य होना स्रावस्यक है।

- (३) वर्तमान युग विजान का युग है। बैजानिक परिप्रेयन से प्रत्येक बात का स्पर्योक्तरस्स कारियन से प्रत्येक का मानव किसी मी बात को कहते मान ने मानने के निस्स चयवा नहीं है परन्तु बह प्रत्येक बात को वैज्ञानिक दृष्टिकोस्स में परन्ता चाहता है। कोई भी कार्यं करने से पहले या किसी भी तान्विक विश्लेषस्स के लिए विज्ञान उसकी महराई से तक्स्यूर्वक पहुचने का प्रयास करता है। प्रत युज कर्म को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोस्स सुन्ने

लेखक शिवाकान्त उपाध्याय सममाना पढेगा, क्यों कि वैदिक वाङ्गब मे यज्ञों का बढ़ा महत्त्व कहा गया है। जैसा ऊपर कहा जा चुका है। शतपय बाह्मए। की स्पष्ट घोषणा है—'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म । इस घोषणा को वैज्ञानिक द्ष्टिकोण से सिद्ध करना पहेगा। इसना ही नहीं शतपब बाह्यण तो एक कदम और थ्रागे बढ़कर उद्घोष कर रहा है कि सम्पूर्ण प्रत्यक्ष यज्ञ प्रजापति का ही स्वरूप है---एव वै प्रत्यक्ष बज्जो यत् प्रजापति । जिस प्रकार सूर्य इस विस्तृत यज्ञ का केन्द्र है। उसी प्रकार यजकुण्ड इस मुवन का केन्द्र है-इय वश्व मुबनस्य नामि । इस प्रकार यदि सम्प्रशं विश्व व ह्याण्ड की रवनापर गौरपूर्वक विचार किया जाय तो इस को यशका प्रतीक कहा जा सकता है।

(४) धब घाइए समष्टि से व्यष्टि में

इस यज्ञ के स्वरूप को देखने का प्रयास

करें। जैसे ससार के ग्रन्दर नाना प्रकार के सुजन भीर विनाश में सूर्य का प्रमुख स्थान है, जैमे मानव शरीर के निर्माश भौर विनाश में भ्रम्ति रूप प्राणु की ही प्रधानताहै, उसी प्रकार यज को भी सुसम्पन्न करने के लिए धरिन की ही प्रधानता है। यह प्रन्नि ही यज का देवता है, पुरोहित है, ऋत्विज, होता और रत्न, धाता है। ऋग्वेद के प्रनुसार "ग्रग्निमीके पुरोहितम् यजस्य देवमृत्त्विजम् होतारम् रत्नवातमम्।" इस प्रकार एक एक बात स्पष्ट उत्ररकर सामने ग्राजाती है कि सम्पूर्ण विश्व (विराट् शरीर) के साथ सूर्यं, प्राणी नात्र के शरीर के साथ प्राण भौर यत्र के साथ अग्नि का एक ही प्रकार का सम्बन्ध है। जैसे सूर्य धपने ताप, प्रकाश से तथा धपनी किरलों के माध्यम से मेजी हुई कर्जा के द्वारा ससार में फल-फुल, भ्रन्त, वनस्पतियाँ, भौषिष भ्रादि का निर्माण करता है, सम्पूर्ण पृथिवी को रतन-गर्भा बनाता है, जैसे स्वस्य प्राण अपने विभिन्न रूपों ने शरीर के मन्दर प्रवेश करके वर्मी पैदा करता है, सजीवनी शक्ति का निर्माण करता है और शरीर के पोषण के लिए भावश्यक पदार्थों के निर्माण में सहयोग करता है, ठीक उसी प्रकार यज्ञकुण्ड मे प्रज्वलित शन्ति भी यज्ञीय पदार्थों को घारमसात् करके उन्हें उनके सुक्ष्मातिसूक्ष्म कर्णों ये विश्वक्त करके उनके धन्दर खिपी कस्याणी शक्ति को हजारी गुणा विकसित करके प्राीमात्र के कल्याण के लिए सुल म भौर उपयुक्त बनाता है। जो कुछ हमारे पूर्वज ऋषि विद्वान यज के माध्यम से जन-कल्याज काकर्मकरतेथे। वहीसव कुछ ग्राज वैज्ञानिक धपनी प्रयोगशाला में पदार्थी का उचित सगतिकरण करके ग्राप्नेय तत्त्वीं के माध्यम से कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार की भौषषियों का निर्माण भी उसी पढित पर ही हो रहा है। भाज का वैज्ञानिक इस बात पर विश्वास रसता है कि किसी

रोग के निवान में Tablets से ज्यादा बामकारी Liquids है जीर Liquids से ज्यादा Gaseous form में दी हुई दवा-इयां हैं। सीध्र प्रभावी बनाने के लिए Tablets की खगह पर Injections भीर Injection की जनह ने Gascous form में दबाओं का परीक्षण सर्वमान्य हो चुका है। जिन जडी-बृटियों प्रयवा मौतिक पदावाँ को विभिन्न प्रकार के रासायनिक त्रयोगों द्वारा Tablets, liquids या Gaseous form में भाग का Chemist दबाधों का रूप दे देता है, उन्हीं तमाम बड़ी-बूटियों धौर भौतिक पदार्थों को हमारे पूर्वज विद्वान् यज्ञकृष्ट की प्रज्य-सित प्रानि में डासकर सम्पू विश्व के निवान के लिए मुफ्त में दिया करते वे। कुछ सत्रोच नासमक शपनी कृठी विद्या का दिखावा करके यह कहने का दूरसाहस करते हैं कि यह में डाला पदार्थ तो जल-कर राख हो बाता है धीर महनाई के यून में यह सब करना व्यर्थ है उनसे नम्र निबे-दन है कि प्रथम तो वे बज की प्रक्रिया को समर्के भीर फिर विज्ञान के सिद्धान्त को समभने का प्रयास करें। विज्ञान के बाबार TT Matter can nither to created to distroyed (Industructivities of matter) पदार्व न तो बनावा जाता है और न विशवा जासकता है केवल धाग्नेय तत्त्वों के प्रभाव से रासायनिक परिवर्तन करके उनकी दशाओं में परि-वर्तन कियाचा सकता है। विना गर्मी सिये या दिये कोई रासायनिक क्रिया सम्भव ही नही है। इसी को विशान की भाषा में Indothermic reactions भीर Exo thermic reaction की सभा दी बाती है। इस प्रकार धरिनहोत्र के माध्यम से पदार्थों का उचित समतिकरण करके विभिन्न प्रकार के राखायनिक परिवर्तन के द्वारा सोगों के हित के लिए उन्हें सुलभ करना ही यज्ञ का प्रयोजन है। chemist दवाओं कामूल्य लेकर नोवों काहित करता है परन्तु मजमान वज्ञ के द्वारा विना मूल्य लिये ही सव-साधारण का हित करना भ्रपना कर्लम्य कर्म समझता

इस प्रसग में एक बात भीर निवेदन करना चाहता हु। धाज के युव में वायु, जस, मन्न मादि हर एक पदार्थ में प्रदूषण की विभीविका का प्रकोप है। सारे संसार के सामने इन प्रदूषणों को मिटाने के लिए एक समस्या उत्पन्न हो गई है। मेरा विश्वास है भीर नम्न निवेदन भी है कि यदि घर-घर यज्ञ का करना कराना प्रारंग हो बाय तो यह सब कुछ सुबर सकता है धौर विश्व सुल की सांस ने सकता है। शिकारो में एक विश्व विद्यालय की स्था-पनाहुई है, जिस का नाम ही है Agnihotra univarsity है । इस विश्वविद्या-लय में नाना अकार के प्रयोग किए जा रहे हैं भीर उन्हें यज्ञ की प्रक्रिया पर विभिन्न चफलताएं भी जिल रही हैं। इस दिशा में वहां के वैज्ञानिकों का प्रवास और परी-

क्षसा स्तुत्य हैं।

(१) अब बोड़ा-सा यज्ञ में प्रयुक्त अनिन के स्वरूप की भी वर्षा करना विषत समस्तता हैं। अनि तीन प्रकार की होती है। (१) पवसान (२) पावक (३) सुनि।

व्यनी पर की प्रतिन को प्रवणन कहुते हैं। इसी को निर्माय प्रतिन भी कहुने हैं। पावक धारिक को धानिन है तथा प्रविच्यालेक की धानिन है तथा प्रविच्यालेक की धानि है। यहाँ तक इनके स्वक्ष्य का वर्णन मिलता है, प्रवमान पार्थिक धानि का स्वक्ष्य है जो बन (Sold) हैं। ध्यन्तरिक की धानि (पावक' वर्ष्य (Luqui) है धौर कुलोक की धानि वरिक (Gascous form) में है। वहीं Solid Liquid Gas प्रया्ष के प्रविच्यालय स्वक्ष्य है, जिनके परिपर्दान में धानि ही सावक है। धाज का विव्याल खाहे जितना भी समर्च हो नया हो पर व्यक्षियों की बोच धौर उनके जान के धानो भी भी यह विव्याल प्रवार है।

श्रुवियों ने प्रपने तर से जान के उपा-जैन और अनु के सान्तिष्य से प्राप्त शक्ति के द्वारा इन तमाम प्रिनियों को बहुएस्ट वे पिड में और सामिट के व्यक्ति वे पिड में और सामिट के प्राप्त वेतानिक उप से इस प्रकार को प्राप्त को सजकुण्ड के प्रन्य प्रज्यस्तित करने का विचान किया है। प्राप्त्ये इस यज्ञ की प्रप्राप्त करें—

जड जगत् में श्वापक यज्ञ का केन्द्र सुर्य है---

स्य विष्णुर्वज्ञसः। स्यास्य यक्कोऽसीस्यविष्यः।

या० १४ । १ । १ । ६ इसी ज्यापक सक्त का चित्र हमारें प्राप्तीन ऋषियों और विहानों ने सपने तप और जिल्लान से इस पृथिकी पर चित्रित करने का सल्ल किया। धौर सक्त वेदी की रचला कर उस के सध्य में सक्त कुण्ड बना उस में सीन की स्थापना करने की स्थापना करने

यह सर्वविदित बात है कि घरणि
गन्यन से यम की घरिन 'दा होती है। हु
पुराने समय में से कविद्यों के प्रवेश है
प्रानि प्रज्ञित करके प्रज्ञुज्य के लिए
प्रानेग करने की व्यवस्था थी। धावकल
भी कहीं कहीं लोग इस प्रकार धरिन देश कर के यम करने का विधान करते हैं कि यह धर्मिमन्त्रन किस बात का रहस्थ स्वार-करता है, इस का बैज्ञानिक प्रज्ञा विधारतीय है—

चु लोक, पूर्विशी लोक बीर घन्तरिक लोक वे तीन लोक हैं। चुलोक दबवे उत्पर घन्तरिक मध्य में धीर पूर्विशी तब वे नोवे या तीच में। धन दस चुलोक के पूर्वी लोक का सम्बन्ध धानि के मध्यक संस्थापित करने के लिए वज्र की व्य-सम्भाकी गई। बाला तचा पूर्विशी के प्रचार के धानि वैदा होती है। विज्ञान की भाषा में बाही Positive बीर Negative Charges है जिन से विख्त पैदा होती है। वैदिक बाङ्गय में स्थान-स्थान पर विभिन्न रूपों में इसी बात को कहा गया है। उदाहरणार्थ जीवन की सम्भावना के लिए प्रश्नि तथा सोम, ऊच्मा तथा शीत, बित्र तथा बरुए, बुसीक तथा पृथियी का पारस्परिक सम्बन्ध बढा भावश्यक है। यजुर्वेद के एक मन्त्रांश को देखिए-'विद्याते भग्ने जेला जवाणि' पृष्टिबी और श्वलोक को मिलाने में धन्तरिख की धरिन का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण योगदान है। जो कि एक माध्यम का काम करती है। हम सोबों ने विज्ञान में ऊष्मा के विकीरता का विदान्तों में Conduction, Convection और Rediation के बारे में पढ़ा है। क्या यहा वेद में बुलोक की स्रस्ति पुषियी पर पहुँचाने के जिए Rediotria की पुष्टि नही होती। बाब के नैज्ञानिकों स्त्रीर सुबी पाठकों के सिए वह एक विचार-शीय भीर भनुसन्धान का विषय है।

इसी प्रांत को ऋषियों ने धर्म प्रान्यन के द्वारा यज्ञ कुण्ड में स्थापित करने का विभाग किया है।

४ इस सन्दर्भ ने यजवेदी और यजकुण्ड के वैज्ञानिक स्वरूप का भी विक्लेषण भ्रपेक्षित है। पृथियी के ऊपर जहां यज की बेदी बनती है उसी को यज्ञ का केन्द्र स्थान भी माना जाता है। यह यह वेदी शारे विश्व की नामि है। इस यज्ञ वेदी को वामन विष्युकारूप कहा है। यक्को वैविक्तः। यहां एक पौराणिक उपा-स्थान की चर्चा कर देना उचित सममता है। लीव कहते हैं कि विष्णु ने वामन ैं इत्पर्ने बलिको खलाथा और तीनों श्लोकों को तीन पन में नाप लिया था। इस का रहस्य ऋग्वेद के निम्न मन्त्र से स्पष्ट हो जाता है-इद विष्णुविषकमे त्रेवा निदन्ने पदम् । **₹:• १ । २२** 

यह स्व यजनेदी का धीर यक का प्रजाब है कि देवता तो क्या सावारण सनुष्य मी तोनों तोकों का राखा बन सकता है भीर धनिवहीन धादि कर्म के डिसर तीनों को केंगे सपने यश को फैला है सबसा है। यहाँ यज कर्म वावन दिन्यु है कर्म में तीन पर्नों में सब कुछ नार केंग्री है।

सबसेदी की रचना को कितानी गी सवस्त्रेंचा और कम्मीराता से देखा जाए जतना ही सुस्पन्ध भीर सुक्त हिन्द की प्रत्येक विशिष्टिक क्षाप्यक सुन्दि की प्रत्येक विशिष्टिक को व्यक्तियों ने सज के साध्यम से बडी कुश्वसतापूर्वक चित्रित किया है। यज की व्यवस्था के साध्यम से सम्पूर्ण स्टिक नियमों का बैजानिक रहस्य भीर जान जान्त किया जा सकता है।

यज्ञकृष्ट का निर्माण भी कितना वैज्ञानिक भीर ज्यामितिशास्त्र (Geometrical Science) से परिपूर्ण है, इस का उल्लेख भी विचारणीय है। यज्ञकुण्ड में धन्तिचयन के लिए ३६० ईंटों का विचान है। मानव शरीर में भी ३६० ग्रस्थिया होती हैं। भौर सबस्तर में दिनों की सस्या भी ३६० ही होती है। इस विचार की पुष्टि शतपब बाह्यण में उपलब्ध है। एक पाइवात्य वैशानिक डाक्टर R. Hoernle ने भी भपनी पुस्तक Medicion of Ancient India Part I Ostreology में इस बात नी चर्चा की की है भीर इस सिद्धान्त की पुष्टि की है। क्या बाज के वैज्ञानिकों के लिए यह सोज का विषय नहीं हैं कि ३६० ईंटों, ३६० ग्रस्थियों और ३६० दिनो का मानव जीवन भीर सुष्टि है बाताबरण के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है ?

इस बजवेदी का उतना महत्त्व है कि यज् ३।५ में इसे देवयवनि पष्ठ कहा है। "देवयजनि पृष्ठे प्रनिमन्नाद-मन्नाचायादघे।" इस पर बैठने वाला देवत्व को प्राप्त कर नेता है। वो इस यज वक्र को समक्र लेता हैं, वह सारे ब्रह्माण्ड चक्रको समभ लेता है। यज्ञकुण्डके चारों तरफ मेसला, यशवेदी की अच्छी प्रकार से सवाना भी एक महत्त्व का विषय है भीर मानश्यक कर्तव्य है। केसों के सम्मे बन्दनवार, पत्तों के गूल्म भीर फुलों के गुल्के से सारी वेदी सजी रहनी चाहिए। मेसलाएँ जल से भरी रहती चाहिए। इत तमाम प्रयोगों का बहुत बढा वैज्ञानिक रहस्य है। यह केवल दिलाने के लिए या वेदी को बाकर्षक बनाने के लिए ही नहीं है, बहिक इन के द्वारा Cog (कार्वन- डाइ आक्ताइड) या इसी प्रकार की बीर धनावरसक विषेती गैंतो का जो यत कुण्ड से निकलती हैं, प्रहुण कर सी बाती हैं बीर यत का प्रमाव पूर्णंत साअदासक ती होता है।

बजकुण्ड के निर्माण में एक और नात भी विचारणीय है। सहाँव वयानन्द सरस्वती ने कुण्ड बनाने का विस्तृत वर्णन स्पर्न नृह्यसूत्र प्रन्थ संस्कारिविधि में बड़े विस्तार से किया है। हवन कुण्ड के नीचे की तवा ऊपर की चौडाई तथा कुण्ड की ऊपाई का समुपात बैजानिक सन्दिकोण से गवेषणा का विषय है। विधिन्न प्रकार के उस कुण्ड बनाने की प्रमा के पीछे भी ज्यामित की विधिन्न रचना का विज्ञान विद्या है।

६ बजकुण्ड के सन्दर किस प्रकार भन्यात्राम करना चाहिए, इस का भी वैज्ञानिक-स्वरूप वडा रोचक है। ऋग्वेद में एक नन्त्र बाता है-समिक्को अग्नि-निहीत पृथिक्याम् । प्रजापति ने शन्ति की पृथ्वी के केन्द्र में रलकर प्रज्वलित किया। इस मन्त्रास ने समिद्ध शब्द इस बात का प्रतीक है कि प्रजापति के द्वारा जिस मन्तिका प्राचान पृथ्वीके गर्भने हुमा वह मन्ति प्रज्वलित नहीं बी। वह प्रज्वलित प्रन्ति के पूर्व का रूप था जिसे हम बाग्नेय परमाणुक हु सकते हैं। यही ब्राग्नेय परवासु पृथ्वी के ब्रम्बर प्रविष्ट हुमा भीर फिर पाविव परमास्मों में हरकत के कारण उन के धन्दर Electric Charges की सृष्टि हुई भीर फिर सुक्स रूप में पडेबान्नेय परमासु वर्षस के द्वारा क्रियाशील हो उठे तथः सन्तिका प्रज्य-लित रूप प्रकट हो उठा। इस प्रकार की क्रियाने पृथ्वी के ब्रन्डर क्रिपे पदार्थी को नाना प्रकार के रूपों मे परिवर्तित कर दिया और धरार ऊर्जाशक्तिका निर्माण हुमा जिस ने पदायों के मन्दर निहित शक्तिको कई गुणा विकसित करके नाना प्रकारकी वस्तुओं का निर्माण किया और पृथ्वी रत्नगर्भा बन गयी। देखते देखते सारी घरती भौषणि फल-फूल वनस्पत्ति, बन्न बादि से लहलहा उठी यह सब कुछ पुच्वा के केन्द्र में प्रजापति द्वारा स्वापित धन्नि का प्रकट और ब्यापक रूप बन गया। इसी कारता पृथ्वी को धानि की पत्नी कहा है। पृथिक्यग्ने पत्नी। गो० उ० २। १। बिवाह सस्कार में पति इसी बात को स्मरण करके प्रतिज्ञा करता है कि "बौरहव् पृथिकी त्वव्।" पति अनिकारूप है और पृक्ति जेका रूप है पत्नी। उपरोक्त कवन की पुष्टि में यजुर्वेद का यह मन्त्रांश प्रस्तूत है---"माता पुत्रं बयोपल्ये सार्गित विनर्तुगर्भे द्या''। यजु०११। ५७। जिस प्रकार माता अपने पतिका प्रतिरूप अपने नर्ममें चारण करती है उसी प्रकार पुरुवी सनिव को अपने केन्द्र में बारल करती है। उसी प्रकार पृथ्वी धरिन को धपने केन्द्र में

भारण करती है।

वस इसी क्रिया का एक छोटा सा चित्र हमारे ऋषियों ने यज्ञ कृण्ड में ग्रांम का भाषान करके दिखाया भीर फिर कक्ष प्राप्त करने के लिए उसे प्रज्व-लिल करने का बादेश किया। महर्षि स्वामी दयानम्द सरस्वती ने इन दोनो कियाओं को सम्पन्न करने के लिए दो मन्त्रों का विद्यान किया है। मनुष्यों को जीवन में उन्नति भीर भपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यजों का अनुष्ठान करना पहता है भौर भग्नि प्रज्वलित करनी पहती है। अपने पुरुषाथ और तप से इस प्रज्वतित अग्निको शनै शनै सूर्यं के समान तेजस्वी थी र प्रकाशमान करना पहता है। शतपथ बाग्रण में एक बादेश है-बिनवें बन्न-स्यावराध्यों विष्णु पराध्यं । ५।२३६ बदि यज्ञ की धारिन प्रज्वलित नहीं होगी तो उस यज में डाली हुई ब्राहृतिया व्यर्थ हो जार्मेगी। प्रज्वलित प्रस्ति पर पत्नी भाद्रतियाँ हुव्य बन ज'ती हैं और सार्वक होती है तया वही देवताओं को प्राप्त होती हैं। सहदेवेषु गण्छति '' ऋषिबों ने कितनी बुढिमत्ता पूर्वक यज के रहस्य को स्पष्ट किया है। स्वय यवमान पर-मात्मः द्वारा रचे हुए इस ब्रह्माण्ड में विस्तृत विशाल यज्ञ की करने का सङ्खल्य करता है और अपने जीवन में सकल्पानित को प्रज्वलित करके जीवन बजमय बना डासवा है।

७ के ह्याण्य का यक सूर्य के तार के खहारे बन रहा है तका परमारमा उस का समानक है। वरती का यक, यक कुछ के अपनित कर का समानक है। वरती का यक, यक कुछ के समान उस का समानक है। इसी प्रकार वरित के सम्बर का यक प्राणी के बारा चन रहा है। सौर धारमा इस का समानन चर रहा है। इस प्रसम में मैनावणी उपनिवद की एक स्पष्ट चोषणा है—

षयोगांशुरन्तर्याममभि भवनन्तर्याम उपांशु च। एतयोरन्तरादेवीच्य्य प्रासुवत्। यदौच्या स पुरुषः। श्रयं य पुरुष सो श्रामिवववानः। मैत्रायणो उ०२। ६

श्रवीत प्राण भीर श्रपान सा उपायु भीर धन्तर्याम के पारस्परिक वर्षण से उच्यता उत्पन्न होती है। वही पुरुष भीर प्राणियों मे वैश्वानर भग्नि है। यही धनि यदि १८ ८°F से बढकर १०७° F के ऊपर पहुँच जाती है तो भववा घटकर १७°F के नीचे पहुँच जाती है तो जीवन समाप्त हो जाता है। प्राणी के अन्दर प्राणात्मक स्पन्दन सदा के खिए बन्द हो जाता है। जैसे ताप की कमी से यज्ञ समाप्त हो जाता है प्रविकता के कारण शरीर का यज समाप्त हो जाता है। उसी प्रकार यज्ञ के घन्दर प्रज्वलिय चनिका भी प्रभाव है। किस मात्रा में कितनी उच्चता की धावश्यकता है यह विचारणीय है। किस प्रकार की समिधा

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या –यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशकों –

सत्यपाल पथिक, ओमप्रकाश वर्मी, पन्नालाल पीयूब, सोहनलाल पथिक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनो के कैसेट्स तथा प बृद्धदेव विद्यासकार के भजनो का सग्रह ।

प बृद्धदव विद्यालकार क भवना का स्पन्न है। आर्य समाज के अन्य में ''१७त से कैमेट्स के सूचीपत्र के लिए लिखें कुरुदोक्का इतैन्द्रोनिक्स (इण्डिंग) फ्रांति अस्तिहरू । असे । असोव विकार देहली-52

कुन्दाकाम इतवड्रागवस (इाउड्या) भ्राप्त 14, माकिट-11, फेस-11, अशोक विहार, देहली-52 फोन 7118326, 744170 टैलवस 31-4623 AKC IN

शेष धवले धक में

ईशोपनिषत् का अध्ययन-

कर्म-महिमा

जगदोश स्रार्थ, सि० रत्न

सासाराम, बिहार कुवंन्नेबेह कर्मीिंग विजीविषेण्यतः । एवं त्विय नान्ययेतोऽस्ति न कर्मसिम्बते नरे॥

्रा (इह) इस समार में (कर्माणि) कमा का (कुदन एवं) करते इण इ (शत समा) मो वर्षों तक (जिजी-

(क्सामान) कमाना (कुबन पक्ष) करत हुए ह (ज्ञात ममा) मो वर्षो तक (जिक्की-विवेष) जोन के उच्छा करो। (एव) यही एक माग है (न्विय नरे) तुम्म सनुप्य से (न विवयने कम) कमें लिप्पन हारो। (इत घन्या) हम म निन्न दूसरा कोई मार्ग (न फ्रास्त) नहीं है।

ध्यात्या — कम करना मनुष्यो का स्वभाव हे। बिना कम किए मनुष्य एक झरणभी नहीं प्रह्म कनना। गीता में भाषा ह— न हि कि चिस्त्राणसिष्ठ जातु तिष्ठत्यकमकुन। कायते खबदा कमें सर्वे प्रकृतिवैगमी॥' (अ०३।४)

ध्रात कोई पुस्य किसी ध्रवस्था में भी बिना स्माकिए लगा भरभी नही रह सकतः। क्योंकि सम्पूर्णं बन प्रकृति जन्म स्वामाविक रागादि गुगो से परःश हो, कर्म में प्रवृत्त होने हैं। (गीता)

वैद माता भादण देती है कि नुम कर्मकरने हए ही जीन की इच्छाकरो। यहा जिजीवियन् पद विधि लिड्से भाषाह।

जीने की इच्छातो सभी करते हैं। मरना कोई नही चन्हना, मरणासन्न व्यक्तिभी जीनाचहनाहै। किसी कवि ने कहा है - 'ग्राह्म गलिन पलित मुख्ड दशनविहीन जात नुण्डम् । बृद्धो याति गृहीत्वा दग्र न दपि न मुञ्च-याशापिण्डम् ॥ ' भगगल गर्रे सिरहिल रहा है, दात गिर गए है, लाठी के बिना चला नही थारहा है, फिर भी जीने की भाशानही छुटती। जब जीने की इच्छा है, नो माल सी बनकर क्यो जीया जाय । परन्त्र भालसीभीतो कुछ न कुछ, करता ी ह। जैसे खाना-पीता, बलना-किरना ग्रादि। परन्तु यहा कर्म करन काजा ग्रादेश हे, वह ऐसे कर्मों से है, जिस का सस्कार सूक्ष्म और करण शरीर पर पडता है भीर वे ही सम्कार धगले जन्म को प्रभावित करते हैं।

जब कर्म करना जीव का स्वभाव है तो प्रश्न उठता है कि कैसा कर्म किया जाए। बन्धन का कारता कर्म है। इधर माश्रुति कहती है कि तुम कमें करो, इस से तुम मे कर्मलि<sup>द</sup>िन होगे। यह कैसे <sup>?</sup> इस के लिए कर्म की फिलासफी समक्ती होगी। कर्मों की तीन श्रेशिया हैं-'कर्त्तम्-ग्रकर्तम् ग्रीर ग्रन्यथा कर्त्तम्। कर्मकरना कर्मन करना भीर उल्टा रूरना। इस मे कर्मन करना भीर कर्म का उल्टा करनाही बन्धन का कारए। है। भार्ष ग्रन्थों में जहां भी 'कम' करने कानिर्देश ग्राया है। वह वेद विहित कर्म से ही भ्राशय रखता है। सत्यायं प्रकाश मे स्वामी दयानन्द जी धपने स्व रिचत इस्रोक मे 'कर्म' का सर्थ वेद विहित कर्म ही करते हैं।

य बुं ० घर् ४०, पर २ । ईवी ० घन २ ।
कर्म करन वाले का विद्यान लीग त्यार करने हैं। वेद म आया है— 'इच्छित वेदा सुन्त-त न स्वप्नाय स्पृट्-यन्ति।' (वेदा) विद्यान लीग (सुन्वन्तव) कम करन वान पुरुष की (इच्छिति) वाहन ह (स्वप्नाय) धालती प्रमादी की (न स्प्रद्रपति) प्रेम नहीं करते।

मन्त्र का प्रनितम पद है स्वधि नरे न सिप्यते कमं कमं तुम में सिप्न न होगे, भ्रमात् बन्धन के कारता नहीं होगे। यह कैस। अन्यत ग्रासा है 'सोकोऽस कम-बन्धन' लोक में कम बन्धन के कारता हैं।

इस मन्त्र के पूर्व जो मन्त्र झाया है, उस में दो पद महत्त्व के हैं — तेन त्यक्तेन भुञ्जीचा ग्रीरदूसरापद है 'नागूच'। इन का क्रमण झर्व है त्याग पूर्वक भोगो को भोगना अर्थात् कर्म करना, श्रीर दूसरे पदकाधर्यहे ब्रासिक्तिलालचन रक्तो। इन दा पदो की संगति इस मन्त्र से लगावे। मन्त्र में, कैसा कम किया जाय, इस का रहन्य खोल दिया है। यजीय कर्मकरना अधात् स्वार्थरहितकम। एक उदाहरए। से इसे न्पष्ट करताह। एक मनुष्य किसी बन्य मनुष्य का, अपनी स्वार्थ-सिद्धि मे बाधक समभ कर हत्या करता है, ना वह निन्दा का पात्र होता है, उस दण्डभा मिलता है। वही मनुष्य जब राष्ट्र या समाज का हित ध्यान म रख नर-सहार करता है, तो वह यश का नात्र होता है भौर उसे पुरस्कार मिलता है। ऐसाक्यो हुगा? इसलिए कि पहले कर्म में बज की भावना, ग्रर्थात् निस्वार्थ भावना नहीं है, जब कि दूसरे कम मे यज्ञीय भावना, निस्वाय भावना प्रवल है, यही त्यक्तेन भूडवाया 'है।

कर्तव्य समक्त कर भी वो कर्म न किये बाए, प्रकत्तच्य कम किए बाए तो बन्धन के कारण बनते है और जन्म-भरण के वक्कर में फ्याते हैं। ईशो० का तीखरा मन्त्र कहता हे —

असुर्या नाम ते सोकाऽग्रन्थेन तससाऽवृताः । तास्ते प्रेत्यापि गण्युन्ति ये के बात्महनो जना ।

इस मनन में आया हुआ 'श्रास्थहन' पद महत्त्वपुण है। धारमहत्त नह कम है जो मजीब माज से न किया जाए, अर्थाल् जो धास्तिक पूर्ण, स्वायस्य एवं लोभ की आवना से परिपूर्ण हो। ऐसा ही कर्म बम्बन ना कारण है और सिस्त के चनते जोव धावायमन के चनकर में पड़ा रहुता है।

'बन्यन' शब्द का सामान्य ग्रम् बायना या फासना है। परस्तु दर्शन-शास्त्र मे एक नित्र ग्रम्प रहाहि। न्याय दर्शन मे एक नृत्र है—'बायना-सक्षण दुखम्' धर्मात् बन्यन ही दुख का सक्षण है, पहचान है।

नीतामे, बजु० ४०। २ के मन्त्र पर धाधारित एक श्लोक है — 'कर्मच्येवा-थिकारस्ते वा फलेषु कवाचन ।' तुम्हारा प्रविकार कर्म करने मे है, पल मे श्रविकार नही है। इस स्लोक को समभने मे एक बडी भ्रान्ति फैली हुई है। ग्रर्थात् फलोकी धाकाक्षान रखते हुए कर्म करते रहो। ऐसी विचारवारा मस्वा-भाविक सी लगती है। किसान गेह बोता है तो इसी फल स इसी विस्वास एव प्राकाक्षा से कि पसल ग्रन्छी मिलगी। ग्रगर उसे यह विद्वास हो जाए कि मैं जो गेह बोने का कर्म कर रहा है वह निष्फल जायगातो वह कर्म करेगाही नही। कम न करने वासा व्यक्ति सालशी एक प्रभादी है। महाभारतकार (गीता का यह श्लोक सूल पे महाभारत के भीष्म पव मे है) की यह मशा नहीं है कि कर्मकरने के पूर्वही फल की कामना कर नी जाए। महाभारतकार यह कहना चाहता है कि तुम्हारे चिन्तन का क्षेत्र 'फन' नही है। प्रश्न चिन्तन का है। अब यह निश्चय हो गया कि हमारा यह कर्म कर्लव्य के क्षेत्र मे भाता है तो उसे निष्ठापूर्वक कुशनसा से कमें करना है। फल तो उसे मिलेगा ही। केवल फल का चिन्तन कत्तव्य कम करने में बना रहेगातो कर्त्तव्यका पालन ठीक से न होगा।तदा भ्रपेक्षित फल न मिलातो दुल भी होगा। क्यों कि यह कोई अनि-वायता नही है, ग्रापका फल मे ग्रधिकार तो है नहीं। एक उदाहरण से स्पष्ट करताहा जो धपने पुत्र को धनना कत्तव्य समभ्रकर उस कालालन-पासन-शिक्षा-दीक्षाका प्रबन्ध करते हैं, इस भावना, इस धाकाक्षा से नही करते कि मेरे बद्ध होने पर या अशक्त होने पर यह पुत्र मेरी सेवा-घुश्रूषा, देख माल करेगा। यहावह किसी प्रकार के फल की आ जा नहीं रखता। अब अगर पुत्र अपने कत्तंब्य का पालन नहीं करता है, तो भी पिताको दुवा नहीं होगा। क्यों कि प्रारम्भ में उस ने किसी पन की प्रपेक्षा नही रखी बी। भौर भगर कही पुत्र ने अपनेकतंत्र्य का पालन किया तो पिता की ग्रचिक प्रसन्तता होगी। क्योंकि यह एक सामान्य नियम है कि कोई भन्नत्याशित रूप से धनपक्षित सुखद फल मिलता है तो भत्यधिक प्रसन्नता होती है। इस उदाहरसा से यह साफ हो गया कि फल का चिन्तन धगर कम पर हावी रहे, तो वह दू ल भीर बन्धन का कारण होता है। जिस पर घाना प्रविकार नही, उस की चिन्ता करना सार्योभित मार्ग नही है।

अब कम के दूधरे पहलू पर विश्वार करे, कम ही बन्धन का कारपड़ है न कमें ही बिन्धन का कारपड़ है वह कमें ही बिन्धन पुत्त मी होना है। यह कमें रे जो कमें बन्धन का कारपड़ है वह बन्धन से प्रस्ति कैरी दिवायेगा। अगावार है, बन्दान से बक्ड आता है। दूधरी तरफ उच्छी रोन का उपचार करने से रोग खट जी रोन का उपचार करने से रोग खट जी ताहा । एक और कटान्स ने, एक मुख्य किसी के साथ कारपी नी करता है। नायाजीश तक अपराम के कारपा उसे कारपाइ से जान बेता है। अस वस्त्र वारा है। आप केता है। कारपाइ उस काफल है, धर्मात् बन्धन है। चार सौबीस करने मे वह स्वतन्त्र या परन्तु कारागृह मे जाना उस के ग्राधिका की बात नहीं थी। धब धगर वह जेल वें इशासन में रहता है, जेल के नियम असी कैदी के लिए बने हैं, उन का सच्चाई से पालन करता है तो वह नियत श्रविध से पूर्व ही छूट भी जाता है। क्यों कि जेल का नियम है कि जो कैदी धनुशासन में रहते हैं, उन्हें जेल मैनूबल के अनुसार सजा की श्रविष में उट मिलती है। यहा बनु सित ट्रम मे रहना भी कर्म है और यही कर्म बन्धन से मुक्ति दिलाने का कारण भी है। भीर जो कैदी जेल के नियम-कायदे का पालन नहीं करते हैं, जेल नोड कर भाग जाने का प्रयास करते हैं, व पकड़ जान पर पुन जेल में भंज दिए जाते हैं धौर उन की सजाकी धवधि बढ जाती है। यहा बन्धन कडा हो जाता है।

श्रव कर्म के एक श्रन्य पहला पर भी विचार प्रस्तुत करताहु। कम के बुरे संस्कारी को अर्थात बन्धन को कर्मों के द्वारा हलका भी कर सकते है भीर कर्नो के बुरे सस्कारी के प्रवाह का रोक भी सकते र्हेतथा उन्हे ग्रच्छ सस्कारो मे परिवर्तित भी कर सकते हैं। यह कैसे ? विद्यालय के एक विद्यार्थी को नकल करने के अपराख के कारल बीस रुपये पाइन हुआ। फाइन भुषतान करने की उसे एक माह की धविष मिली। श्रद वडी छात्र, श्रविष के बीच में किसी घच्छे कर्मक कारण उसे चालीस रुपये का पुरस्कार मिला। प्रव इस मे बीस रूपये का दण्ड माफ कर दिसा गया। अच्छे कर्मके प्रभाव न बुरे कर्म के प्रभाव को कम कर दिया। इसी प्रकार पूर्व जन्म के किए हुए बुरे कर्मों के सस्कारों को अच्छे कर्मों के द्वारा पूर्व सस्कार को प्रभावद्वीन कर सकते है या उसकी क्लिको हल्काकर सबते हैं। बुरे कर्मों के सन्कार के प्रवाह को रोक सकते है। यह इस प्रकार महोगा, श्याम ने राम को किसी कारण से एक घप्पड लगा दिया। स्याम के मानस में उस कर्य कासस्कारपडाः। उधर राम ने वप्पड काजवाब दियातो उस पर उस के कर्म का संस्कार पढा। हिमा-प्रतिहिंसा क्रिया-प्रतिक्रिया से सस्कारों का प्रवाह चन पडा। सब धगर राम, न्याम के थप्पड का जवाब न दे चुप हो जाए, शात रहे, मन से भी शात रहे तो सस्कार का प्रवाह रुक गया। स्थान कामी क्रोध शांत ही गया, उस के बुरे सस्कार वही एक नए, क्यों कि दोनों तरफ सल्कार के बीज को कोई खाद नहीं मिला। सस्कार के प्रवाह को चलाने वा रोकने मे दोनो स्वतन्त्र हैं ह

इस वेद मन्त्र द्वारा परमपिता एक-मारमा इसे यह निर्देश के रहे हैं कि वेद विहित कमों को सर्वाट, सजीय भावना से करते हुए ही जीने की इच्छा करो। बुरे कमें प्रयांत् सर्वेदिक कमों का लेक्क चढता है। सेद का मात्र है सस्कार, वासनाक्षों का लेप। बार-बार जन्म-परस्स क्र कर कर हुनी सस्कारों के कारस्स्र होता है।

धर्दैतवादियों ने इस मन्त्र का धर्ष जिल्ल प्रकार ने किया है। शास सकरा-वर्ष नृपने हैं शोधनावत के मात्र में इस मन्त्र का भाग यह बदलादे हैं कि प्रश्नाणी ही क्में करते हैं। जो सत्यासी हैं, जिन्हें ज्ञान निष्ठा है, उन्हें कमें करने की शाक-सकता नहीं हैं। यह मन्तव्य वेस विक्छ हैं।

ससार में कोई प्राणी ऐसा न मिलेगा, बो धपने प्रस्तित्व की रक्षान करना चाहताहो। 'मैं मिट जाऊ' इस माव का प्रकाश कोई प्राशी करना नही बाहता । इस के बिपरीत यदि कोई उस के विनाध का यस्त करे तो वह अपनी रक्षा के लिए जो कुछ उस से बने पूरा ब्रवल करता है। वह बस्तित्व वो प्रकार का है 'वैयक्तिक' भीर 'सामाजिक''। इन दोनो का परस्पर गहरा सम्बन्ध है बदि व्यक्ति विकृत या नष्ट हो जावे, तो श्रमाजका धगभञ्जहो जाता है और श्रमाय का अस्तित्व न रहे, तो व्यक्ति के श्वस्तित्व का कोई प्रश्न ही नही रहता। हमारे धार्मिक साहित्य में व्याहतिया, सों भू, मो भुव, मो स्व, मो मह, मो वन , भी तप , सत्यम् ये सात हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माच का रहस्य तथा उस की सामाजिक श्वक्तियों के विकास का तस्य इन्ही सात व्याहतियो मे गागर मे सागर की माति भरा हुआ है। इन में ने पहली तीन न्याहतियों को महाव्याहति कहा जाता है भीर शेष को केवल व्या-हृति कहते हैं। इन व्याहृतियों के द्वारा अनुष्य के अस्तित्व का निर्माण तथा उस की रक्षा किस प्रकार होती है। यह इस नेस का प्रतिपाख विषय है।

**व्यःहति —** व्याहति नाम ऐसे वस्तव्य काहै जिस में अनेक रहस्यों का संप्रह भीड शब्दों में किया गया है। जिस सक्षिप्त से वाक्य में गुप्त और मल्यन्त महत्त्वपूर्णं उपदेश भरा हो उसे व्याहति कहते हैं। सागे व्याहृतियों के सर्वों का उस्तेस किया जावेगा।

'ब्रोम् जू'--यह पहली व्याद्वति है। 'मू ' इसकी उत्पत्ति ' मू" बातु से हुई है। भू धातुके प्राप्ति चादि और मी कई वर्ष हैं, परन्तु सत्ता इन सब में मुख्य है। यो कह सकते हैं कि सत्ता में ही शेष सब अर्थ समाये हुए हैं। सनाका अर्व है 'ग्रस्तित्व"। इसलिए यह शब्द सन्देश देताहै कि मनुष्य का सबसे पहला कत्तंव्य अपने अस्तित्व की रक्षा करना है। मनुष्य के प्रस्तित्व को स्थिर रखने के लिए उसे जिन साचनी, जिस सामग्री घणका जिस कार्यक्रम की भावश्यकता है उन सब की रक्षाकरनाभी श्रस्तित्व की रक्षा के लिए भावश्यक हो जाता है।

हम पहले लिखा धाये हैं कि अस्तित्व हो प्रकार के हैं। एक व्यक्तियत और दूसरा सामुदायिक। येदी प्रकार के जीवन ही मनुष्य का कार्यक्षेत्र है। मनुष्य भै जितना प्राकर्षरा प्रपने व्यक्तित्व के किए है उतना ही समाज के लिए भी है तब तो ठीक है, धन्यथा उस के जीवन का एक ग्रश ग्रहूरा है। सब के विना मनुष्य द्मसहाय है। यद्मपि कई लोग स्वेष्ट्या से ग्ररव्यवास पसन्व करते हैं तथापि उन का धन्तिम उद्देश्य सामुदायिक हित के बिए प्रपने प्राप को शक्तिशासी बनाना ही होता है। साबुसन्त जङ्गम मे यहते हैं, बात्म साक्षात्कार करते हैं, परम्तु

बन्त में ऋषि दयानन्द जैसे सम्पन्न महा-पुरुष अपनी उस सचित बाक्ति का प्रयोग जनता की अर्वात् समुदाय की सर्वाङ्गीरा उन्नति के लिए ही करते हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत, जातीय तथा राष्ट्रीय अस्तित्व की रक्षाकरने कासकेत इस पहली व्या-हृति से मिलता है। साज मानव सपने सामाजिक प्रस्तित्व को भुला बैठा है, वही कारख है कि समाज का सहयोग न होने से बहु अपने व्यक्तिनत अस्तित्व का भी पूर्ण विकास नहीं कर पाता जितना खिल्ल हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की हानि के होते हैं उतने अपने सामाज्यिक बन्धन के स्वार्य की हानि से नहीं होते और यही दशा हमारी हानि के समय हमारे सामा-जिक बन्धुकी होती है, इस प्रकार परस्पर सहयोग न होने से हम दोनो ही भपने व्यक्तिगत स्वार्थों से वजित रह बाते हैं। ऐसे प्रवसरो पर गम्भीर सच्टि-पात कर हमे निर्माय करना चाहिए कि इमारा सामाजिक जीवन हमारे लिए कितना धमर ज्योति का सवारक है। यह सामाजिक जीवन ही तो है जो विशेष का विष्वस कर प्रेम को गही पर बैठाता है फूटका सिरफोड सबोगका समाधान करता है और मै का मान मदंन कर हम के अव्या भाव को श्रन्त करण मे आसुत

क्रोम् भूव — 'भूव' यह शब्द भी मू बातु से ही बना है। इसलिए इस के भी सत्ता और प्राप्ति दोनो सर्वने कोडासा मन्तर भी है। भूका धर्य है धस्तिस्व का निर्माण करना और भूव का अर्थ है निर्माण की भावना करना। मूब्या-हति के कार्यक्रम मे शरीर और इन्द्रिय का प्रयोग है भीर भुव के कार्यक्षेत्र मे हृदय का प्रयोग है। भू का सम्बन्ध पृथ्वी से हैं तो मुख का कार्यक्षेत्र हमारे स्यूख शारीर का निर्माण करताहै भीर भुव के कार्य क्षेत्र में सूक्ष्म शरीर को उन्नत बनाया बाता है। स्यूल शरीर तथा स्यूल इन्द्रियो की चाहे कितनी भी उन्नति कर भी आवे, परन्तु सूक्ष्म शरीर के प्रधान तत्व मन्त -करण ना उत्थान हुए बिना व्यक्ति भीर समाच दोनो की एक साथ उन्नति करनी कठिन होगी। यह ठीक है कि स्यूस शरीर के द्वाराहम ग्रनेक पदार्थों का निर्माण भौर उस की प्राप्ति कर सकेंगे, परन्तु मन्त करण मे उदार भावनाभी का विकास क्ये बिना उन प्राप्त की हुई वस्तुन्नो को समाज का समक्तना हवारे लिए कठिन होया। साजके युगने भूका साक्षय लियाजारहाहै भुव कानही। यह ही कारए है कि झाज प्राएगी-जगत् दुझ के सास स रहा है। भूव का ग्रव दू सो का

प्रवेश है। इस कार्यक्रम की धपनाने के बाद ही हमारा प्रस्तित्व पूरा होना है भीर हमे वह बस्तु मिल जाती है जिसकी प्राप्ति के बाद और कुछ प्राप्त करने योग्य नही

हम पहले लिस बाये हैं कि इन तीनो व्याहृतियाँ को महाव्याहृति कहते हैं। सक्षेप में इनका भाव जान लेने के बाद पाठक यह समक्त गये होते कि ये तीनों व्याहृतियो मनुष्य जीवन के पूर्ण लक्ष्य पर पूरा प्रकाश डालती हैं। इसलिए इनका यह नाम सार्थक है। इन तीनी महाव्याहृतियो द्वारा प्रकट किये परम लक्य की प्राप्ति क लिए ही शेष चार अ्याह्तियो के आदेश का अनुसरण आव-स्यक है, यह भाव झाने की चार व्याह-तियो में स्पष्ट किया अयेगा।

बोम् मह ---इम व्याहृति का श्रय है है महत्त्व-बडप्पन । समार के कायक्षेत्र में भाकर खड़ा होते ही मनुष्य को समभ नेना चाहिए कि मैं महान् हू। जब मनुष्य ऐसा समभः कर कार्यक्षेत्र मे झाकर खडा होगातो उसके लिए यह सम्भव है कि किसी समय वह भपने महत्त्व पर भागे हुए धावरण को उतार कर फेक सकेगा भौर अपने वास्तविक स्वरूप महत्त्व को प्राप्त कर सकेना। परन्तु जिसने अपने भाप को पहले ही हीन समक्त लिया है उसका धयन आप तो महत्त्व की धोर धप्रसर होना कठिन दूर की बात है दूसरे के महारे से भी भागे बढना ग्रसम्भव हो जाता है। न उसका व्यक्तिगत उत्थान होता है भीर न वह समाज का धगही बनने योग्य होता है। भारत व दलित वर्गकी धोर भारत के ही नहीं सारे ससार के की दक्षित वर्ग की चिरकाल में ऐसी ही सबस्वा देखने में बारही है। भारत के उल्लक्त वन ने उन्हें समय-समय पर, महाश्रव हरिजनादि जिन जिन उत्तम शब्दो से सम्बोधित किया ग्रपन महत्त्व की मोर ध्यान न देने के कारण वे शब्द उनके कास्प्रतिक हीन स्वरूप के साथ जुरूने के क।रण हीन ही होते चले गय।

बात्मा धौर बान्मा मे परम्पर मेद क्या है। मानव शरीर ग्रीर मानव शरीर एक जैसे ही नो हैं। भेद केवल इसना ही है कि एक ने अपने महत्त्व को समक्ष कर उम मौज घोकर निस्तार लिया है भीर दूसरा लान मे पडे हुए मिट्टी से लथपथ हीरे की तरह अपने आप को होन ही समकता था रहा है। दलित वर्ग की इन मावना को घपनाने में इस वर्गका ही हाय नही है समाज का भी इसके पतन मे गहरा भाग है। स्वार्थी समाज ने अपने दास ही बनाये रम्बने के लिए ग्रथवा किसी और कारण से, इनके महत्त्व को मिलनता के भावरण से बाहर निकलने ही नही दिया। धपने इस कर्म के फल को भी समाव ने कम नहीं भोगा। भारत के पहले (शेष पृष्ठ ११ पर)

# व्यक्ति त्रौर समाज व्याहृतियों की छाया में

लेखक स्व० स्वामी ग्रात्मानन्द जी महाराज करता है। 'मू' बातुका दूसरा मय है प्राप्ति । अपने बस्तित्व की रक्षा के लिए मनुष्य कुछ। न कुछ। प्राप्त करना चाहता है, "मूमि, भवन, भोषन, भगवान्, यश, थन, बल, सुख, बोज, महान्।

प्राय ये ही उस की प्राप्ति की वस्तूए हैं। इन के प्राप्त कर लेने पर उस के श्रस्तित्व का पूर्ण निर्माण होता है। इन में से प्रत्येक वस्तुकी प्राप्ति के लिए कितने ही मनुष्य पशु झादि सहयोगियो की भावत्यकता पडती है भीर दिना सामाजिक जीवन को सुन्दर बनाये उचित रूप मे यह सयोग सम्भव नहीं । यजुर्वेद के बासीसर्वे ग्रध्याय में स्वष्ट कहा है ' सब की बात्माधी को धपनी बात्मा मे और धपनी धातमाको सबकी धालमाधीने समको, सामाजिक भावना को और भी सुन्दर बनाने के लिए भागे चलकर दूसरे मन्त्र में कहा-- 'सब की धारमाधी को अपनी आस्पा और अपनी म्रात्माको सबकी मात्मा समस्रो। तात्पर्यं यह हो है कि अपनी तरह सब ही को सुस्ती बनाने का यस्न करो। कैसा सुन्दर गार्व है—हम के बिना में का धौर मैं के दिना हम का शुन्दर निर्माण प्रस-म्मन है। बस यह ब्याहति हमे धपने धस्तित्व की रक्षा के जिए व्यक्ति धीर समाज दोनों का साथ साथ ही निर्माश सिखावी है।

दूर करना इसनिए किया जाता है कि भुव का साश्रय लेने पर ही हम प्राणी मात्र के कल्यासा की भावना कर, स्वय मी सुखी हो सकते हैं और दूसरों को भी सुखी बना सकते हैं।

योग्स्व — स्वर्'यह तीसरी व्याहिति है। स्वर का धर्य धानन्द भी है। "स्वर् ज्योतिरवामहम्" (मैं स्वर् नामक ज्योति के पास पहुँच गया) इस मन्त्र **माग के ध**नुसार स्त्रर का ज्योति धर्षभी है। धौर 'सुवर्गाय शक्त्या'' (शक्ति के उत्तम वर्ग में जाने के लिए) इस मनत्र भाग के धनुसार इस स्थान को उत्तम वर्ग मे रहने का स्थान भी माना गया है। मानन्द शब्द उपनिषदों में ब्रह्म के शब्दों में बाता है सब से महान ज्योति भी बहा ही है। इन दो प्रयों को जानकर यह विना कठिनाई के ही सनक में ग्राजाता है कि उस उत्तम वर्ग का निवास स्थान भी ब्रह्म ही है। ब्रह्म में मुक्त भारमाधी का प्रवेश ही सम्भव है, इसलिए यहाउत्तम वर्ग का अर्थ होगा मुक्त बात्माबो का ऋण्ड।

स्वयु शब्द का धर्व जानने के बाद पाठक समभ वये होगे कि हमारे पहली दो व्याहतियों के द्वारा प्रकट किय गये, स्यूस भौर सूक्त दोनो ही क्षेत्रों के कार्यक्रम का मन्तिम सक्ष्य स्वज्योति की प्राप्ति है। मर्थात् बहा रूपी परमञ्चोति के अन्दर

### आयंवीर दल शिविर

समस्त धायबीर बन्धुयों को सृचित किया बाता है कि नह तथा जून १६८४ में नवादा तथा हजारी बाग में जिलक प्रीवालस धायबीर दक विविद का धायों कर किया का रहा है जिसकी निविचत तिथि तथा स्वान को बोधसा बीछ ही को आएसी विच्या कर स्वानी को सुविधा ने किए नमीं की छट्टी में ही फिविर लगावा का रहा है विकिद तथा मा सहिष्यालय के स्वीचक से प्रीविक्त स्वान भाव ने रूकें विधार रहे, सूचना की प्रनीक्षा करें प्रापकी सारी सुविधायों का ब्याव रखा बाएगा।

> निवेदक रामात्रा चैरागी प्रचान स्वालक, सार्वेदेशिक ग्रायवीर दल, विद्वार

### वार्षिकोत्सव सचना

धादरणीय मन्त्री जी

प्रार्थसमाज बाँकनेर का ३३वा वार्षिकास्सव विवाक २, ३ मार्थ १६-६ शनि तमा रिववार को इगोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मैजिक सावटेन थो बजन के प्रदुषार कुरती कवड़ी डॉब शुद्ध वेदमत्रोच्चारण, प्रार्थमतस्यो पर माण्य तथा निवस प्रतियोगिताए आयोजित की जा रही हैं। प्रात बृहद बजोपरात आयवसाय के न रोनिष्ठ मन्यादी महात्वायों के बीवनदायी प्रवचनो की समुचित अवस्या है।

> मेहर लाल मत्री धार्यसमाज बाकनेर

मार्थसमाज वाकनैर दिल्ली-४०

### वेद प्रवचन

धार्यसमान यालीमार बाग के तत्त्वाबचान मे श्री वेदप्रकाश मेहता के तिबास स्वान पर स्वामी दवान-द जी सरन्वती महाराज का शनिवार और रविवार को वेद प्रवचन हुआ। इस प्रवस्त पर सनेक वासिक जन उत्साहपूर्वक तपस्थित रहे।

रखुबीर वेदालकार

### भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

बायंसमाज सदर बाजार दिल्ली मे २७।१।०५ को मान्ताहिक मत्सङ्ग से हकीकतराय के बलिबान विवस के उपबक्ष्य में माध्यमिक स्तर के खात-बाजामो के लिए नायण प्रतियोगिता का प्रायोजन किया गया।

प्रतियोगिता से स्वान प्राप्न करने वाले खान-खानाओं को विशिष्ट पुरस्कारों एव प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन से पुरस्कार पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार विनरण का प्रवन्य को लाला किंगोरीलाल जो के द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्य कम सबया प्रेरणाद्याकर एव सकल रहा।

> सयोजक साचाय रचीन्द्र सात्रेय सार्यसमाज सदर बाजार दिल्ली ६

## आर्यंसमाज भवन निर्माण के लिए धनराशि की अपील

प्रायंसमान किदनई तथर नई दिल्ली की स्वापना १८६० में हुई थी। परन्तु इन समय प्रवत अस्पायी कप में बनाया नया था। जो इस समय पूर्ण कम से जीव-धीख हो गया है। इस काय म आप सभी वामिक बहन-आइसो की सहायता एव सह-योग की पाव-प्रकर्ता है। अपन में सत्तमन २१ हजार की सामन आने की सस्मातना है। इच्या सपना चैक, डापट मनीआदिर, 'आयसमान ए २६६ किदनई नगर नई दिल्ली २३ कपन पर भिजवाये।

> निवेदक मन्त्री मदनपास बर्मा

## आर्यसमाज नीलोखेडी मे वेद प्रवचन

म्रायसमान्य मन्दिर नाली खेबी, करनाल से महात्या वैद्य रामकियोर की १३ से १७ फरवरी तक वेदकमा हो रही है भौर ली प० नुम्मीलाल के मयुर अजन भी होंगे।

> सर्गी सोकस्था

### बार्यसमाज राजौरी गार्डन में वेद कथा सम्पन्न

४ फरवरी से १० फरवरी तक सामंत्रमान राजीरी वार्टन नई वित्ती में भी प० यसपात तुवासु एम ए द्वारा मनोहर वेदकवा वृत्रभाम से सम्पन्न हुई। कवा से पुत्रं भी विजय मक्स सामें के मचर सकत हर।

गण्यकिकोए मादिका

आयकर परिसर (आई० टी० ओ०) में वेदप्रचार

दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा धायकर परिसर (इनकम टेक्स धाफित) ने दिनाक ४ फरवरी से ८ फरवरी १६८४ तक मध्याझ जोजन के विधान के समय वहें पुनवास से सम्पन्त द्वारा । यह धपने प्रकार का एक नया प्रयोश होने पर कांगी सफल रहा। बान जेगी राज्य कर्मचारियों ने कांगी उत्पाह दिखाधा तथा इस अवसर पर साहित्य वितरस्य मी हुआ। कार्यक्रम की सफलता का थेय स्वामी स्वरुवानन, ४० वेदव्यास तथा डोक्स कलाकार ज्योति प्रसाद को है।

> प्रचार मन्त्री सार्व प्रतिनिधि सभा, इनुमान् रोड नई दिल्ली

### पुरस्कार घोषणा

झाचार्य गोवधन बास्त्री पुरस्कार १८०५ सम्ब निवासमा दुस्ट वायपुर की स्रोर से इस विरविवासय द्वारा प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान् की सम्मानित किया जाता है जिसका कि वेद प्रचार ने सस्तिवनीय नोगवान रहा हो।

गत वर्षों में यह पुरस्कार कमछ धावाय रामप्रसाद वेदालकार, श्री सवाणी साम भारतीय श्री विश्वनाय विद्यासकार श्राचार्य श्री सत्यकाम विद्यालकार को दिया वा चुका है।

संबद्ध विद्यासभा ८्स्ट वयपुर ने इस वव उपत पुरस्कार वैदिक विद्वान् पण्डित भगवट्स वेदासकार को प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

जातव्य है कि यह पुरस्कार विश्वविद्यालय के वाधिकोस्सव के सवसर पर कुलावियति महोदय द्वारा मेट किया जाता है। इस पुरस्कार मे १००० रूपये की राजि एवन समक्तक मेंट किया जाता है।

> मनदीय वीरेन्द्र घरोडा कुलसचिव, गुरुकुल कागडी, हरिडार

मार्थ गुरुकुल ऐरवा कटरा, इटावा

### त्र्यपील

इस गुरुहुत में १६ वहाजारी वेदाध्ययन कर रहे हैं। जिनका जोजन खादन रहन वहुत बाए सभी बानी महानुभावों के सहलोग पर निगर है। यह गुरुहुत एवे पिछड़े लोज में शिकाण कार्य कर रहा है जहां किता गुरुत्वमान सर्वाधिक पनस्ति का सर्वाध्य करके समत्त से नीय जनता को सरमा गहे हैं। यह गुरुहुत व्हिच दवानक इतरा प्रतिचादित जिल्ला सेली पर सावारित है। सत साप का सहसोग परमास्थयक है।

धाचार्य स्वामी रामदेव

ग्रार्यसमाज मन्दिर शकरपूर का वाधिकोत्सव सम्पन्न

१० करवरो रिवार वाधिकोत्तव के सुभावकर पर इस कों न के काफी वाधिक बनो ने उत्साह पूर्वक मात्र किया। इस उत्सव की प्रध्यक्षता की रामयोपास शालवाले ने की । तथा प्रचान को सूर्यदेव तथा गुलाविद्यह, राषव" स्वा तै स्वस्थानन, मा॰ श्रीमञ्जकाश झार्य शादि गीतकार एव वस्ताकों ने अपना प्रेरणाञ्चर सन्वेत दिया।

> प्रधाव----नारायस दास सम्मा

मार्यसमाज भिलमिल, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

हर समाज में एक 'शराब मना' व बक्याला के उपर ''गुम्बर' बनाने का कार्य का के बनाव में कार्यी दिनों से दका रहा है। सभी बड़ी बड़ी खनावों के समि-कारियों व दुवरें सभी सक्याने से प्रार्थना करते हैं कि दस सपूरे कार्य को पूरा करने ने हुनारी सहस्ता करें। वस्पवार---

निवेदक-सूर्यप्रकास <del>,गरिक</del> ( प्रकार )

## व्यक्ति और समाज-

(पृष्ठ १ का खेव) के बौर अब के सब के सब अब अब समाय की इसी होन नीति के परिणाम है। परन्तु अब भी समाव उसी माग पर चन रहा है।

समय-समय पर ऋषि दयानन्द बीर बहारमा बाजी जैसे महापुरुष बाये और वसे बये, परन्तु फिर भी समाज के कान पर जूँ न रेंगी। समाज कह सकता है कि हम ने उन्हें भागे नाम दिया महाश्व माम दिया भीर हरिजन नाम दिवा, परत बाप किसी निधन का नाम करोडपति रसते रहें उससे उसे क्या नाम। यह श्वव्य तो उस्टा उसके उपहास का कारण बनेवा। माना वा सकता है कि यदि समाच उसे वन केता, मूमि बेता, विका बैता, वर्ण देता और रोटी वेटी देता तो यह वर्ष समाज का प्रवस सब रीढ की हड्डी बनता, धौर समाच के हाची उसका महत्व निकार जाता । हम मह कहना चाहते हैं कि जब तक समाब भीर समाज के व्यक्ति सपना और भपने भगो के महत्त्व को जानुत नहीं करते तर तक महाच्या-इतियों के क्षेत्र में जाने का प्रवसर मिलना कठिन है। इस चौची न्याहृति का लक्ष्य त्तव ही पूरा होना जब कि समाच अपने एक भी व्यक्तिको हीन देखकर तहप चठेगा भीर उसके वास्तविक उत्वान मे ध्यपना सर्वस्य सवाने को छखनहो आयेगा । व्यक्ति समाज भीर राष्ट्र महान् हैं, यह ही इस व्याहति का निर्देश है।

धोम् जनः — यह पाचवी व्याहृति है। इस ब्याहृति का अथ है प्रजनन सन्तान का उत्वान । व्यक्ति भीर समाज के श्वस्तित्व तया उसके महत्व की ग्राधार विकाप्रजनन से रकी जाती है। यह ही कारम है कि भार्यजाति ने नर्भाधान सत्कार को बहुत महत्त्व दिया गया है। एक मार्व बहा से ही मपनी सतान का निर्माख जारम्भ कर देता है। यदि बाल्य-श्चवस्था में ही उसके महत्व को जगाना धारम्भ न किया तो उसका शस्तिस्व निर्जीव हो जावगा, या किसी महान् भाव-रण के गम मे जा कियेगा। इसलिए श्यक्तिगत भीर सामाजिक दोनो ही जीवनो के उत्थान का बारम्भ प्रजनन से ही होता 🛊 । इसलिए माता पिता बनने बाले नब-युवको को सन्तरि निर्माण के सब उपायो को प्रयोग मे लाकर इस व्याहृति के श्रादेश का पालन करना चाहिए।

श्रोग् तप — तप का सिलन्त धर्ष है करट सहन करना । सन्तान निर्माण, महत्त्व का विकास, मानन्द की मारिण, मुक्त सरीर की मानना भीर स्पृत सरीर की कर्म क्षेत्र मे प्रवर्ति, ये सारे ही कार्य ऐसे हैं कि उनके मार्च से कच्टो का माना मानस्यक हैं । इन कच्टो के प्रवरण पर तो मनुष्य चीद बनकर पर पी से हटा तेमा, तसे बसारे का कोई सीर मी प्रवर्ष विना कठिनाई के मिल करेगा यह सम्बव नहीं। महर्षि द्यानन के बीवन के धार-निजक भाग को हम एक तुत्र से बोत-मीत गते हैं। यन दोनो जागो ने हुने स्थाट ही एक तुत्र नगरीस की फलक दिखाई गढती हैं। पत्वरों, तजवारों, विनों सिहो धोर जमकर ननी के फनेजों से होकर न टूटणा हुम, यह तुत्र धारा तक कैंसे जा गुड्डणा। स्व प्रका की खानबीन कर उत्तर देवे सनय कृषे एक ही सावन स्विट्योचर हुआ है, भौर तखका नाज है तर। याता-पिता को भी सत्तान के निर्माण ने इसी प्रकार के तम का धायब लेना परेगा, तो ही वे स्व

भ्रोम् सत्यम् — सत्य का श्रय है सन, वाणी और कर्म में समानता। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसे विश्वास का जन्म-दाता कह सकते हैं। विश्वास के समाव मे समाज टुकडे-टुकडे हो जाता है और व्यक्ति विकार कर समहाय पढे रह जाते है। इस व्याहृति के इस प्रकार निरयंक हो जाने पर शेव सब ज्याहृतिया भी अपने अपने काम को करने में असमयें रह जाती हैं। थम की सबसे पुष्ट बाबार वित्या सत्य है भीर यह ही भाषार का सब से बढ़ा मूलमन्त्र है। समाज के सम ठन का यही मूलाघार है भीर व्यक्ति के विकास का भाषार वह ही है। ऋषि बयानन्द जैसे महापुरुवो के जीवन इस सत्य के ही प्रकाश से जनक रहे हैं और चमकते रहेंगे। हम व्यक्ति और समाज ने सत्य को पैदा करें यह ही सातवी व्याहति का उपवेश है।

हमने सक्षेप में इत सातो व्याङ्कियों के भाव को व्यक्ति और समाज के स्त्यान में परम सामन कहा है, पाठक इस विषय पर विचार करें। सत्य के प्रबल :

(पृष्ठ ४ का शेव) है। समाज को भ्रष्ट होने से बचाने के निए महाभारत में को काम युद्ध 🕏 बाद महात्मा विदुर ने किया लवभव वैसा ही सुकाव ऋषि दयानन्द ने दिया है। श्चिप-श्चिपकर पाप करने के बजाम यदि उसे वार्मिक प्रथा का रूप मिल जाय तो समाज में बनाचार भी नहीं फैसेना ब्रीर मर्यादा बनी रहेगी। सत्यावंत्रकाश ने उन्होने निका है-बहुत-सी परिस्थितियाँ एसी होती के अब वश बसाने के लिए और मध्ट होने से बचने के लिए नियोग भावश्यक है। स्त्री पुरुष दोनों से से काई भी सन्तानोत्पत्ति के लिए बशक्त हो अयवा लम्बे घरसे के लिए प्रवास क्ले गये हो तो बजाय खिप छिपकर दूराचार करने के उसे वैष रूप ही क्यो न दिया जाए। वैसे यह भी कोई नया सिससिला नही है। स्वामी जी ने लिखा है-

पाण्यु राजा की स्त्री कुल्ती धौर बादी ने नियोग किया। ब्यास जी ने विज्ञागद धौर निजित्र नीयें के मर जाने के परचार् उन अपने माहबों की रित्र यो में नियोग करके अध्विका सम्बा म युद-राष्ट्र धौर सवासिका से पाण्यु धौर दानी में विदुर की उत्पत्ति की। इतिहास भी इस बात में प्रसास है।

हुन्ह दिन पहुने तक यह बात सुनने में भी बटपटा-सी सगती थो। पर धत्र व्यक्ति विज्ञान ने विध्वाधों और प्रविद्या-हित मातामों का भोर पुरव सबोन के बिना हरी करनी प्रारम्भ कर बीठो किछी को भाष्यमं नहीं नवता। द्यूव से खो नातक धावकल जन्म ने रहे हैं सासिर वह भी तो विनियोग का ही परिवर्तित रूप है। पीछे नई दिन्सी के बातक इंदिया मेडिकल इस्टीटयुट में तब एक देवी ने स्वी विधि से बच्चे को जन्म दिया तो अहत है। यो तो बहुन्ह सुन्धा थी पर एक ही बिका यता उन्हें रही — बातक का ताक वैठी हुई

है जसका चेहरा कुछ ठेठ पहाडी बीसा है। बाक्टर ने कहा—स्मत्ती बार को भी चेहरा धामपसन्द करें। पहले जस व्यक्ति को हसारे पात भेज दें। फिर द्वाप की दुवारा विकासक का स्वस्तर नहीं सार्या, बब बताइये यह नियोग नहीं तो क्या है?

युक्ति-तर्क भीर प्रमाणी से पृष्ट सिदातो के प्राचार पर सत्यायप्रकाश जब स्वामी जी लिख चुके नी उसके मत में पृथक से भी कुछ पुष्ठ उन्होंने बोडे। न पृष्ठो कानाम उन्होने रहा। 'स्व मन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' धर्णात कुछ वह बातें जिन्हें वह मानते हैं सबवा जिन्हें नहीं मानते। इन में मनुष्य की परिभाषा करते हुए स्वामी जीने लिका है—जो बन्याय को मिटाने में प्राणी तक की बाबी लगा दे मैं उसे ही मनुष्य कहता ह। यह परिभाषा दूसरो पर घटती हो बान घटती हो पर स्वामी जी पर एक देशी रिया-सत (बोघपुर) में इसी तरह के झम्याद का सःमना करते हुए उन्हें विष दिया गया भौर उसी में उन कानिर्वाण भी ह्या। सत्य का प्रचार करन मे कठिनाइयाँ हो धानी न्वामाविक ही हैं। जिनक स्वार्ध पर भयवा कमजारियो पर चोट पडती है उनका तिलमिलाना भी स्वामाविक है। पर यह ही वह समय है जब व्यक्ति के वैर्य भीर साहस की परीक्षा होती है। इन्ही पृष्ठों से सहिंच सतृ हरि के एक श्लोक का उद्धरण भी स्वामी जी ने दिया है। त्रतीत होता है यह श्लोक उन्हें बहुत पसद या।

निन्यन्तु नीतिनियुशा' विव वा स्तुबन्तु, लक्ष्मी समाविष्ठतु गण्यतु वा बनेष्टन् । प्रदेव वा मरशामस्तु युगान्तरे वा, न्वाय्यात एव प्रविचलन्ति पद न मीरा ॥

राजनीति क पहित प्रश्नसा करें चाहे निन्दा कर। सम्पत्ति रहे चाहे जाए और मृत्युभी झाज झाती हैं या कल झाती हैं, इसकी परवाह किय दिना घयवान् पुरुष कभी सस्य झीर-यायका सगनही छोडते।



प्रमान

### भाषण प्रतियोगिता

ऋषि बोघोत्सव के उपलक्ष्य में धाय युवक परिवद (पर्वोक्कर) दिल्ली की घोर से सदैव की भाति दिनांक १७ फरवरों १९८५ को ऋषि मेंसे के धवनर पर मुख्य-नव से प्रात ११ २० वर्ज भाषसा प्रतियोगिता का धारोजन किया गया है।

विषय— राष्ट्रोत्वान में महर्षि न्यानन्य का योगनन्त कायक्रम की क्रम्यलता माननीय डा॰ व्यवपात जी करने । प्रतियोगिता में एक वस्त्या संस्कृत (श्वाचा चार जिन्द तक वोक्स वर्केंगे। प्रयम द्वितीय सुदीय खात्र झात्रामों को यो यो प्रोत्माहन पुरस्कार विए जायेंगे।

निवेदक ---प० देववत वसन्त्र सम्बद्धः सम्बद्धः सम्बद्धः

मूलवन्द गुण् संगोजक

मूलचन्दगुष्ता झोमप्रकाश संयोजक मंत्री

धाय युवक परिषद् (पणी») दिल्ली।

श्रार्य जगत् की शान २०० विस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि झायकर अधिनियम जी ० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी। सारा दान वेक/मनीझार्डर/वेंक क्षाव्य द्वारा

मन्त्री माता बन्ननदेवी मार्थ वर्माय नेत्र विकिश्सास वी-१ जनकपुरी नई दिल्ली १० के पते पर सेजा आग्राः

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की श्विला पर अकित किए जाएगे।

### निवेदक

रामवीपाल शासवाले सरक्षक सूर्यवेद महायय कर्मपाल स्रोमसकाय सार्य चिकित्सालय एव प्रचान, प्रचान दिल्ली सार्य प्रचान सार्य सत्री महायव सा॰ प्रा॰ प्रति॰ समा प्रतिनिधित स्रचा केन्द्रीय स्रचा चुलीसाल वेरि ट्र स्रोजन्य से महाशिया सी हट्टी प्रा॰ लिमिटेड १/४४ कॉलिनगर, सौबोधिक क्षेत्र नहीं दिल्ली-११००१

### वार्व सम्बंधे साप्ताहिक

पत्रिका के बाहक बने, और बना एँ क्योंकि वह पत्रिका-

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) बायाँ (हिन्दुबो) की महान् परम्पराद्यों की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से ग्राटम चेतना जागुत करनी है।
- (४) बारतीय संस्कृति के भूले विसरे प्रसगो, महापुरुषो तथा धादक् संस्कारो को प्रकाल में लाती है।
  - (१) ऋषि मुनि तपस्वी भ्राप्तविद्वानो की बासी का बोध कराती है।
- (६) परमेक्वर की पवित्र वार्गी बेद का जोवनोपयोगी मचुर सन्वेश लाती है।
- (७) नय सेखको, किबयो, चिन्तको, प्रतिभाशाली विद्वानो, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- $(\alpha)$  धार्मिक, सामाजिक और माध्यात्मिक ज्योति से मन-मिक्टर को प्रकाशित करती है।
- (६) वेद उपनेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र आरम्बक बाह्यएकम्ब गीता, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, असूत्य आर्थ बन्त्रों जिन को प्रीयकास तोगों में पढ़ा तो क्या भी नहीं, समस्त धाम्यारिमक जगत् को जिन बन्त्रों पर सदा गर्थ रहेगा उन सभी के बहुसूत्य मोती हर सन्साह बटोर कर बायकी धजनी भर देती है।
- (१०) घतएव देर न कीजिए प्राज ही धपना वार्षिक चन्दा २० रूपकें प्रेजिके वर्ष में धनेक विशेषाक तथा महिष दयावन्द निर्वाए। शताब्दी पद प्रकाशिन ५० रुपये सुन्य की अब्य मुनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जावेगी १

सम्पादकः भार्यं सन्देशः

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

> शासा कार्यालय—६३, गसी राजा केदारमास, फोन . २६९८३८ वाजडी बाजार, दिस्सी-६



# मांख विनाह कुण्वन्तो विश्वमार्थम

आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वष ६ सक १४

रविवार, २४ फरवरी १९-१ बाय सबस्सर १९६० - १३० - ४

**फाल्गुन २०४१** 

दयानन्दाच्द---१६०

# नन्द बोधात्सव समा मनोषो स्वामो दयानन्द का जीवन प्रेरणा देता रहंगा

खडे हए प्रत्याशियों को घोषणा

करनी चाहिए कि वे किसी प्रकार के

मादक द्रव्य का प्रयोग नही करते

नथा उनका व्यक्तिगत भीर सामा

जिक जीवन निर्दोष एव स्वच्छ है।

ऐसे लोग ही देश का कल्यारा

कर सकते हैं। इसके साथ देश के

प्रत्येक नागरिक को अपने महर्षियो

से प्ररुणा लकर जीवन और चरित्र

को सुधारना चाहिए। मैं प्रशासन मे

दिल्ली बार्य केन्द्रीय समाद्वारा धायोजित ऋषि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर भाषरा करते हुए श्री बलराम जालड ने कहा-माज का दिवस बोध का, कुछ जानने का, सत्य को क्षाजने का दिवस है। आज उस महामना मनीषी ऋषि को सच्चाई का बोध हुआ था। व सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए गृहत्याग कर चल पड **दे। समस्त विश्वको उन्होने सत्य** पष दिलाया। वे ऐसे उच्चकोटि के धादस पुरुष वे जिनका जीवन यूग-युगो तक ससार को प्ररुगा देता च्हेगा।

श्री बलराम जाखड ने भाह्यान करते हए कहा-ऋषि दयानन्द ने सस्कत, संस्कृति गौको रक्षा करने के लिए बल दिया था। संस्कृत सभी भाषाभी को जननी है, गाय हमारी माता है उसकी पूरा सुरक्षा की जानी चाहिए। उन्होने कहा-मैं मनुरोध करूंगा, भाज हमे मानव कल्याण के भाषरा न देकर भहाँच दयानन्द द्वारा बतलाये गये मन्तव्यो का अनुसररा करना चाहिए। मैं ससद मे यथासमव 浦 कुछ हो सका अवश्य करूगा।

श्रीप• राजगुरु शर्मा नै

सम्बोधन करते हए कहा-प्राचीन भारत मे राजा भश्वपति ने ऋषियो को कहा था मेरे राज्य मे कोई चोर व्यभिचारी स्त्री पुरुष न्त्री कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो यज्ञ रोपकार न करता ही ब्राप मेरे गाज्य मे प्रवेश कर अन्न जल ग्रहण कर। दुर्भाग्य से ग्राज ऋषियों के देश में चारित्रिक पतन पराकाड्या पर है। तथा भारतीय ससद और विधान सभाएँ इससे ब्रख्ती नहीं हैं बत निर्वाचन से पूर्व



चित्र मे— जी बलराम जासाड मायगा करते हुए, सच पर बैठ हुए श्री सच्चिदानन्द कास्त्री श्री पृथ्वीराच शास्त्री श्री प॰ राजगुरु कार्मा भी स्रोमप्रकाश त्यांगी श्री महाशय वमपाल श्री काचा रामगोपाल शालवाले दिखाई दे रहे हैं।

### लोकसभा ग्राध्यक्ष--श्री बलराम जाखंड विधानसभा ग्रौर ससद के लिए

स्वच्छतालाने के लिए किये जा रहे प्रधानमन्त्री के प्रयास का स्वागत करता ह उन्होंने सरकार से माग करते हए कहा संस्कृत हमारी देववासी है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है उसकी रक्षा के लिए शासकीय सेवाओं में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तथा सस्कृत के ग्रध्ययन एवम अध्यापन हेलु माध्यमिक विद्यालयों से ही संस्कृत ग्रनिवार्य घोषित करनी चाहिए।

श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा गौको राष्ट्रीयपञ्चोषित करंगीकी सरक्षाकी जाए तथा सस्कृत के भ्रष्ययन करने वालो को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

श्री पथ्वीराज शास्त्री ने नागा लिण्ड भीर उडीसा मे अपने कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि ईसाई पानी के गिलास पर गरीब लोगो का ईमान जुट रहे हैं। झन सरकार को चर्मा-न्तरण रोकने के लिए कानून बनाना चाहिए क्योंकि इससे राष्ट्रद्रोह उत्पन्न हो रहा है।

इस् अवसर पर श्री भ्रोमप्रकाश त्यागी एव श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी भ्रपने विचार प्रस्तृत किये।

# यज्ञ पर अनेक स्त्री कार्य करने का संकल्प ग्रहण

फिरोजशाह कोटला मैदान मे धार्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे धायोजित यज्ञ प्रात द बजे प्रारम्भ हम्रा।इस यज्ञ मेश्री महासय वर्मपाल, श्री के० ए० भाटिया श्री तीर्ष राम टन्डन एव श्री योगेश मार्य यजमान रूप मे उपस्थित हुए। यज्ञ के ऋत्विक के रूप मे श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री एवं श्री प॰ यशपाल सुमाशु

ने मन्त्रोचारए। तथा यज्ञ सचालन किया। श्री प० सुधाशु ने इस ग्रवमर पर उपस्थित जनसमूह की यज्ञ पर वत ग्रहरण करने का उपदेश दिया। जिससे प्ररित होकर लगभग ५५ स्त्री एव पुरुषो ने यज्ञ पर धपने दोव त्याग एव परोपकारी एवम् बाध्यात्मिक कार्य करते रहने का वत ग्रहरा किया।

ध्वजारोहण

यज के पश्चात ध्वजारीहरा पर श्री सूर्यदेव ने आय जनता की सम्बोधित करते हुए कहा -हमारी संस्कृति भौर सम्यता का प्रतीक ये घ्वज हमें राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कर्त्तव्य निमाते रहने का सन्देश देता है। हम अपने आपको और विश्व को श्रष्ठ ग्रार्थ बनाने का सकल्प ल। ध्वजारोह्न क पश्चात् श्री मूलचन्द जी के मयोजन मे खेल कूद एव भाषण प्रतियोगिता का छात्र छात्राम्रो का कायक्रम हमा। जिसमे युवा पीढि ने महर्षि के राष्ट्री-त्यान सम्बन्धी निर्देशी पर प्रकाश हाला ।

### वह मृत्यु से नहीं खरेगा

यशपाल सुधांशु

ग्रकामो धीरो ग्रमृत स्वयम्भूरसेन तृप्तो न कुनश्चनोन । तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मान घीरमजर युवानम्॥ ग्रम्बं० १०।८।४४

**धर्व-**-परमेश्वर श्रकाम ' कामना रहित, "धीर धीर धचनायमान, धमत ' धविनाशी कभी न मरने वाला "स्वयम्भू 'स्वय-भू भपने भ्राचार से सदा विद्यमान, रसेन तप्त प्रानन्दरस से तृप्त 'क्तरकान न ऊल कही भी न्यून नही न्यूनतारहित 'तमेव बीरम् बजर युवानम्" पर । उस बीर, धजर, सदा नवीन युवा "बात्मानम्" सर्वे व्यापक परमात्मा को "विद्वान् न मृत्यो विमाव' जानकर ही मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता । मृत्यु से निभंय हो जाता है।

बहेद्य-मनुष्य भगवान् को जान कर मृत्यु के दुल से बचे निमय होवे।

व्याख्या-धनादि काल ने जन्म-मरसा का चक चलता रहा है, भीर चलता रहेगा। क्या विद्वान क्या म्खं वरीव-श्रमीर बलवान निवल, योगी-भागी सब मृत्युकी पकड सहैं। काल बडा कराल है दे पैर वाले — पक्षी मनुष्य झादि झौर चार पैर वाने --- पशुकीट मादि सभी पर अक्ट शासन करता है।

"मृत्युरीके द्विपदा मृत्युरीके चतुष्पदाम्।

मृत्यु — मृत' मिट्टी यु'निश्राणा-मित्ररुषो मिलना भीर बुदा होना। वह यम रूप परमात्मा इस जीव को 'मृत्' ग्रमात् पत्रमृतयुक्त शरीर से जोडना भीर (मरण के रूप मे) मलग करता है। मृत यौति वियौति च ' एक पिंड में जुड़ना धीर एक ने घलन हो जाना ही मृत्यु है। केवल मात्र इतनी ही प्रक्रिया का ज्ञान न होने से ही समस्त भाणीमात्र समृत्युका भयव्याप रहा है। मृत्युते डरना दर्धन की भाषा मे प्रशि निवेश कहनाना है जिससे जानी प्रजानी सभी पीकित है। सारा ससार भय से जस्त है। सब से बड़ी सबा मीत सब स बहा दु व मौत इसी से टर धीर हरा रहा श्चादमी ।

बद काऋषि कहता है—

तमेव विद्वान न विभाय मृत्यो । उसे जानकर मृत्यु का न्रतही रहवा। तमेव विदिन्यातिमृत्यूमेति नान्य

पन्या विद्यतेऽयनाय ।

यजुवद ३१-१८ उस परमेरवर का जानक कही मृत्यू मे पार हुआ। जा सकता है और कोई रास्तर हे ही **नही**।

<sup>7</sup>-चा डर गया, किसी धनजानी बस्तुका दलकर चीलापण बचनेका राम्ताहै केवल मा की गोदी। गली से चीलना नैश्ताहबाद्याकरमा के बायन को पक्रड कर सहमा-सहमा हाच ऊपर उठाता है। बासुबों से बेहरा भीवा है। माने नोद मेले सिया, श्रव उसे किसी का डर नही, जो हाथ काप रहे से दे सब तन गये, मुटिठवाँ कस गयी भीर मुक्का तानता है धव उस डरावनी मयावह वस्तू

काल के पजे से करे मनुष्या। पर-मात्मा हम सब की मा है, वह जनवस्वा है उसकी गोदी, उसकी शरण सभी भयो से मुक्ति दिलाने बाली है । उसकी उपासना कर उसकी गोदी में बैठ। पर पहले उसकी बोदी से बैठने योग्य बन । देख बह कैसा है?

बकामो बीरी बमृत स्वयम्म् ---वह कामनामों से रहित है भीर हम कामनाधों से चिरे हैं। ये कामनाए ही हमारा बन्धन बन गई हैं। जो बधन हमने बाघलिये हैं उनसे निष्काम होकर ही वचाजासकताहै। ससार वाटिका का बह माली बीर है, उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं जो उसे प्रकम्पित कर खके वह अवलायमान है भीर हम हर एक फोके पर कापने लगत हैं, बोडा साभी दुव हमारे दिल को दहला जाता है। पर जो उसका सम्बल लेता है वह भीर हो जाता है। पहाड से भारी विशाल दुस को वह तुए। समक्रकर मेल जाता है। मनुष्य मर्त्य कहलाता है क्योंकि शरीर नरश जर्मा है। बात्मा बमर है, इस इन्द्र का बोग्य साथी 'इन्द्रस्य बुज्य सन्ता' परमात्मा धजर धमरहै,तो तृभी धमृतकाच्ट भर बपने पूण्यो से क्ला, बर्म, महान कर्मों से यश प्राप्त कर झमर हो जा। 'किन्तु यह तभी सभव है कि जब तु उस स्वयम्भ (प्रपने बाधार से विद्यमान परमारम-

बह ग्रानन्दघन प्रभु रसेन तृष्त मानन्दरस से भरा-प्रा है। धानन्द का स्रोत निरन्तर बह रहा है। तू ईप्यां, इप थुणा की भ्रागम मूलसता, कश्ता रहता है। सफ्लताए बहुत दूर तरा मजाक खडाती रहती है। बा, बाडी सी मस्ती ला पा उस धानन्द स्दरूप ही गोदी माबैठ, कुछ पल के लिए घपन द्यापका विस्मत कर देनेवल माकी गोदीका चरम सुख, तुम युग युगो से प्यासे वातक को प्राह्माद से चमत्कृत कर देगा। उस मस्ती म कलव्य के उन्माद में भरकर संसार यात्रा में प्रवृत्त हो। पर देखां कोई त्रृटिकोई

स्वरूप) के स्वामाविक गुल को अपने

भीवन म उतारेगा। भ्रपना भाषार स्वय

बनेगा दूसरो के सहारे की भाकाक्षा नही

कमी जीवन में मत रहने देना। नहीं तो शौंधे मूँह गिरेगा भीर फिर उठना भीर भी कठिम हो जाएमा। तेरा धावर्श तो पूर्ण बहा है, 'न कुतक्चनोन ' कही से न्यून नही है। भीर तुब न्यूनताथी, संयुताबी, हीनताओं से भरे हो। याद रख एक दोव ही बगरता के स्वच्छ वारि को जीवन घट से रिक्त कर देता है। इन खिद्री से बचना होना, बीवन नैय्या को एक छेद से, एक दोव से ही इबने का सतरा हो जाता है। उस चतुसनीय से घपनी तूसना करते हुए, श्रममर्थमा सरते हुए श्रमुषम नमा।

ल्या की है इवास्त, सुवासा हो बाऊ।

विकासा की इस धमुपम सृष्टि में उस विचित्र चित्रकार को हर कण मे, हर वस्तु में देख । उसकी शक्ति हवाबी के देव भे, सिंघु की गरवाती सहरों में विसाई देगी। उखकातेज सूरज की किरएनो मे दुव्टि-वो वर होना। उसका वैर्य पहाडी की श्रव-लतार्में नक्षत्रों के प्रशासन में दिखाई देगा, सना से उसके रग में रग आरताहै जिल्ला उसका धानन्द रस कुत्रो के सौंदर्य धीर सुगन्य में करत निकंरों ने प्रतीत होगा। यही रस पिलवों के स्वरों में चहक रहा है। हर रचना में उसकी पूर्णता दिखाई पहली है, कोई भी रचनाक ही से भी न्यून नहीं है। फिर उसी परमात्मस्वरूप को हर बाल्या मे, हर प्राणी ने दल । सब एक विभाता की सन्तान हैं सबसे हमारा बहरा नाता है, सब धपने हैं हमारे घपने । फिर किस को किसका ढर, सर्वत्र त्रेम, ग्रानन्द के ही दर्शन होने। धारमवत् देखना ही वर्गहै, धपनी धारमा से मिन्न व्यवहार करना ही शवम है।

मृत्यो स मृत्युमाप्नोति व इह नानेष पद्म्यति ।

जो व्यक्ति अपने से इस संसार वे नानात्व, भिन्नता देवता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। वो एकत्व प्रास्ति बात में बात्मवत् व्यवहार करता है उसे व कोई मोह, न कोई शोक होना। वह समस्त भयों से मुक्त रहेगा।

तत्र को मोह क शोक एकत्वमनु-पत्थत ।

उस बीर, प्रवर, सदा नवीन, जरा-मरण रहित युवा को जानने वाला मृत्यू बादि के सबी से दूर ही जाता है। न्योकि---

यस्य बाबाऽमृत बस्य मृत्यु ।

उसकी खाया, धाष्य ही मोझ सुब-दायक है उसकी मन्ति न करना, उस की लरण से मलन हटना ही मृत्यु प्रावि कुला का हेत् है।

**अक्त जब उस परमात्मा की उपा**-के रस में बहने सनता है फिर वह मौत की एक सेन समस्ताहै। शरीर का छुटना पुराने बस्त्रों के स्वाग से धाविक महत्त्व नहीं देता। वह इस ससार को सराय **धीर** भ्रमने को गास्वत वात्री (जो सदा से <sup>ह</sup> यात्रापर है) समक्रता है। फिर उसे वह वर्मशाला यह सराय छोडने मे कैसा कुल होगा बरिक प्रपनी मजिल पाने की कौनूहलता में वह सराय की तरफ पीखे मुड के भी नहीं देखेगा। वह तो मस्ती से ना उठेगा।

जिस गरने से जगडरे मेरे मन झानन्द। मरने से ही तो पाइबे पूर्णपरमानन्द ॥ <sup>६३</sup>

## ऋषिवर महामना

नायशरण ग्रायं

स्वशक्ति से किसने विश्वव्यापिनी-

उठा लिया बरली के सुव्योग को, न्वयम् प्रसूता कलिताम्बरा नयी-

फैली कछार मे पादपावसी ।

प्रबद्ध रूपा सूभ पावकायना---प्रचण्ड की बासी पुण्य मगसा,

> सप्राण थी असे श्वेत चन्द्रिका---महत्सका सी सुदुषा पयस्विनी ।

सत्तकं श्रदा की राम्बु सी मिली-जहा न थी ककंशता कठोरता,

भाषाढ का वर्षणशीसमेघ सुपुत्र था बहु गीतम क्याद का। सुबीयं गुल्का, नदशस्य ध्यामला---क्षमा सदश वह पृथ्वी स्वरूप था।

> विरत कियापीडा के कुपम्य से स्वधातको को स्वद्रव्य दान है।

सिदात ने धनदपाद सा धडिन-सरदूपणो मे मौमित्र राम था. करस्य धगीकुत बदको किया — उदार चेता ऋषिवर महामना। स्वराज्य का पोषक मंत्रह्रष्टा---साकेत कृत धर्मा वा कृतार्थया,

> बढे उसी का हम सम्ट बिन्दू ने---सहस्र चेता स्वराष्ट्र के सिए।

सम्पादकीय

# आर्थ सन्देश

धर्मवीर पं० लेखराम

# अमर बलिदानी

धम पर बलिदान होने वाले वीर योद्धा प० लेखराम का स्मरमा आने ही एक दि॰य ब्राकृति मानसपटल पर उभरती है। एक ऐसे मासी की थाद बाती है जो उफननी नदी के प्रवल वेग का विपरीत धारा मे बपनी नाव बेता चलता है और कभी यकता नहीं निराश भी नहीं होता। ससार ऐसे लोगों को उन्मत्त कहा करता है। धम की धन के धनी प के लेखराम का जीवन महर्षि दयानन्द और वैदिक धम के प्रति पूरा समर्पित था। व अपनी बम-प्रचार यात्रा में कभी थके नहीं एके नहीं। विदेशी षडयन्त्रों के जाल में भारतीय संस्कृति विगत शताब्दियों से जकड़ी चली आ रही है। इस देश के भील भाल नागरिको का छल बल से धम परिवतन किया जाता रहा है। १६वी शदी में हिन्दू धम उस कच्चे माटे के दीपक की तरह हो गया था जिसे बर मे रख तो बहे ला जाय भीर बाहर रखते हे तो कौए उठा ल जाए। किसी के छुने मात्र से ही धम से घलग जाति से घलग कर दिया जाता था। होसे कच्चे धागे जसे अम को तोडने के लिए अनेक मतावलम्बी ईसाई भीर भूमसलमान हिंदुग्रो को ग्रपने जाल मे जकव्ते चल जा रहेथे। उस काल मे महींब दयानन्द द्वारा दिया शुद्धि सुदशन चक्र प० लखराम ने अपने हाथ मे जठा लिया। और उसका ऐसा कुशलता के साथ सचालन किया अनेक बिछड भाई फिर हि दू होकर अपने पूराने घर मे लौट आये। उनके जीवन की इस घटना से तो शरीर रोमाञ्चित हा जाता है। जब उन्हे पता चला अमुक ग्राम में कुछ लोग मुसलमान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बठे भोजन करने ही जारहेथे कि पत्र द्वारा उन्हें सूचनामिली उसी भवस्था मे उठकर व रेलगाडी द्वारा उस गाव के लिए चल पड । उस गाव मे कोई रेल्व स्टेशन नहीं बा उन्होंने चलती गाडी से छलाग लगा दी। रेल से गिरने से उन्ह भीट भी लगी खून से रगे वस्त्रों से ही व उस स्थल पर पहुंचे जहा कुछ हिन्दू भडकाव मे आकर अपना धम परित्याग करने जा रहे थे जैसे ही उन्होने प० लेखराम को भौर उनके त्याग को देखा वे भाव विभोर हो गये। उन्होंने यह कह कर धमपरिवनन से अपना निश्चय बदल लिया कि जिस धम मे ऐसे हमारे रक्षक भाई हैं जो ग्रपनी जान पर खेल कर हम को बचाने ग्राये हैं हम उस धम को कदापि नही त्याग सकत ।

प० लेखराम ने प्रपने जीवनकाल में भ्रतेक पुस्तक लिखी जो लगभग ३१ हैं। ये मभी पुस्तक विद्याचियों के प्रदाने के उत्तर में लिखी गयी। महिंद दयानव के प्राप्ताणिक जीवन वारत को लिखने का श्रय भी वभवी र लेखराम को ही जाता है। देश के काने काने में जाकर उहाने जलस्य तरण एकत्रित किये। हिन्दू देवी देवता और सस्कृति पर कीचड उद्यालने वाले प्रनेक पुस्ला मीलवी विद्यानियों से उन्होंने भनेक शास्त्राय भी किये। उनकी विद्यात्ती से तकप्रहारों देविवर्षों जाने में भातक फल गया। उन पर मिर्जापुर प्रयाग लाहौर मेरठ दिल्ली बम्बई की भ्रदालतों में प्रक्रियों में बात गए परसु अदालत द्वारा उनके लया। भाषणों में कोई भी भ्राक्षम की वात न पाकर मुकदमें लाएज कर दिए गए। चारों और से लोहा लेने मुसलमान मतान्य मुकदमें लाएज कर दिए गए। चारों और से लोहा लेने मुसलमान मतान्य मुकदमें लाएज कर दिए गए। चारों और से लोहा लेने मुसलमान मतान्य

उन्होंने ध्रायममाज के भव्य भवन को बनाने में नीव का काय किया है। ऐसा उपदेशक ऐसा लवक ऐसा ध्रमर वेवक ऐसा कातिकारी पाकर भ्रायसमाज मर्वित है। उनके बलिदान के परवात उनकी पत्नी का त्याग भी स्तुत्य है। उनके बीमें स २००० रुपये मिल। व उहीने पुरुकुल कामधी में दान कर दिए छात्रवृत्ति के लिए। उसी छात्रवृत्ति स प० बुद्धदेव विद्यालकार जैसा बोजस्थी विद्वाल भ्रायसमाज को मिला है। चन्य है जीर लक्षराम धन्या है उनको पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवो। धन्य हैं महर्षि दयानन्द जिन्हें ऐस बलिखानी थिष्य मिल।

प्रार्यसमाज का प्रतीत बलिदानियों स वोमित है परन्तु आज हम उन वोर बलिदानी शहीदों की शौय कवाओं को मूलते जा रहे हैं। स्वामी भ्रज्ञानन्द्र और महास्मा हसराज को तो फिर भी श्मरण किया जाता रहा है शहीद लखराम कुछ उपेक्षित हो रहे हैं। यदि बीरता को न पूजा न सराहा तो वीरता की जननी बाक हो जायेगी। क्योंकि—

> प्ररेशा शहीदों संयदि हम न लगे भाजादी ढलती हुई साफ्त हो जाएगी। यदि वीरों को पूजा हम नहीं करगे तो सच मानो वीर ाबाफ्त हो जाएगी।

> > वशपाल सुधाशु

### स्मारिका के प्रति

मान्यवर

दिल्ली साय प्रतिनिधि सभा की धोर स प्रकाशित स्मारिका का स्वनोकन किया। यद्यपि इस स्मारिका का बायोजन सयोजन एव प्रकाशन सभी कुछ ममीचीन है पर इसका सवप्रधम सम्पादकीय नम्म महर्षि दयान एक ज्याति स्तम्भ सचमुच इस स्मारिका की भी एक ज्योति है। सन्म धनुन्छेदीय इस लघु निकच मे नक्क ने महर्षि के सर्वोङ्गाए न्विय गुणा को मञ्जूल भीर प्राञ्जल माघा मे जिस साहित्यक विधा स प्रस्तत किया है यह स्मारिका की मपना एक प्रनीष्म्य प्रतिज्यापत करती है।

ात न्सिस्वर के ग्रायसन्देश के एक भ्रक में स्वामी श्रद्धानन जी को प्रदत्त लक्षक की एक भ्रमुपम श्रद्धाञ्चित भी देखन को मिली थी। पर तु उसस भी कही प्रविक बढ चढकर महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित यह श्रद्धाजित है।

च्स को परकर मैं इस विचार में पर गया कि क्या महर्षि के प्रति इसल भी मच्छ कोई अद्वाजिल हो सकती है? यद्यपि कल्लो य निरविध विपुताच पृथिती इस उदिन के प्रनुसार क्लिसी क्षमता को प्रतिम कहना कठिन है पर तुमेरा मन यह निश्चित रूप स स्वीकार कर रहा है कि महर्षि के प्रति यह सर्वोत्तम श्रद्धाजिल है।

पर्म पिता परमात्मा ऐसी प्रतिभ के घनी ऋषिभक्त सुघाषु एक नहीं अनेकानेक समुत्पन्न करेजा प्रतनी न्थिय प्रतिभा की नथ्य रिक्स्यो स प्राय-साहित्यक यगन को सदा समानोकिन करते रहें। इस मगन कामना के साथ।

मगताभिलावी

दिनाक १०२ ८४

सुरेत्र कुमार शास्त्री साहित्याचाय

### स्मारिका सम्पादन

स्नाप की नेबी हुई स्मारिका प्राप्त हुई बहुत बहुत घयव द। स्मारिका का राज्यादन बहुत सम्ब्राहुस है जल सन्ध भी है प्ररणादास्त्र के तानदक्क मा समी स्वेताप्र सम्ब्री एव सुदर है। साप लोगों ने इस स्मारिका क समादन में स्वस्य स्टिक्शायु नेतीसीट सीर मुख्याहरूत ना सुदर समिनद परिवय न्या न

> हार्दिक बधाई प्रिसिपल मायो सिंह बडीस (मरठ)

## लेखक महानुभावो से--

हम आपके लेख एव कविता का स्वागत करते है किन्तु-

- श्रमने लेख वद दशन उपनिषद स्पृति कल्पसूत्र धारण्यक ब्राह्मण्यस्य मीता रामायण नाति ऐतिहासिक प्राप श्र को को धादश परम्परा की ध्यान में रखकर भंज । किसी एक विषय से सम्बन्धित लेख भी अपेश्तित है।
- २ सत्सम वाटिका स्तम्म के लिए वेदापदेश (मन्त्र व्याख्या) जो सरल एव भाव पूग्ण हो को नितान्त धावस्यकता है।
- ३ ईश्वर भक्ति ऋषि दयानन्द एव बलिदानी वीरो का शीय कथा संयुक्त कविता शीत भी प्रकाशित किए जा सकगे।
- ४ जिस लेखक एव कवि की रचना और लेख प्रकाशित होगे उन् भाषसभ्देश एंक्टूवण तक विशेषाक सहित नि शल्क दिया जाता रहेगा।
- ( किसी लेख एवं विवास के प्रस्तीकृत होने की दशा में वापस भेजने के लिए हम बाध्य नहीं है।

— सम्यादक ब्रायसम्देश

# ग्राज की जलझनों के दर्पण में--नारद श्री कृष्ण संवाद

दो प्रकार की ग्रापत्तिया-स्वकृत-परकृत

महाभारत गान्ति एव ग्रह्माय ५१ मे नाग्द श्रीकृष्ण सवाद प्राता है। बीकुष्ण पारिवारिक कलह के हेतु बहुत बिल्न भीर दुवी थ। श्रीकृष्ण कहते है --

हे महामत ! जैसे दो जुड़ारियो की एक ही माता एक की जीत चाहती है तो इसरे की पराजय भी नहीं चाहतो । उसी क्कार मैं भी इन दोनो बाहक और बहुर धापस में लढ़ने बाल दोनों ही जिसके स्ववन हो उसके लिए इसस बढकर दुल की बात क्या होगो ? और व दोनो ही जिसके सुदृत् न हो उसके लिए भी इसने बढकर दुल की वात क्या हो सकती है <sup>?</sup> नारद जी<sup>ं।</sup> व्य प्रकार मैं सदा उभय पक्ष काहित चाहने के कारण दोनों स्रोर से कव्ट पाता रहता हू। एसी दशा मे मेरा धपना तथा इन जाति मादयो का भी जिस प्रकार मना हो वह उपाय वताने की कपाकर।

व्यक्तिण की यह समस्या भाज की परिस्थिति में प्रत्यक संवेदन गील मानव की समस्या है। डोलचाल की भाषा मे कहें तो प्राय कहा जाता है कि दा नौकास्रो पर पैर मत रक्षों किसी एक नौका पर **डी** पैर रखना होन<sup>ा</sup> सामान्यन यह ही प्रतीत हाता है। पर प्रत्नता यह है कि बदि बही साम न्य रूप स समक में बाने वासी स्थिति ही इसका स्वल समाधान होता तो श्री कुग्ण महश घीमान् व्यक्ति को नारव में पृक्षने की मला क्या भावव्यकता थी ? वन्तृत समस्या पंचीदा है, दो नौकाओं पर पैर रखने के सदल है। इसोनिए श्री कृत्ण को नारद से पूछन की इतनी प्रवल माकाक्षा उसी प्रकार हुई जिस प्रकार गीना क नूसरे अप्राय के सातवें "लोक में घजन धपनी दयनीय मानसिक समस्याग्री म उद्धिन है। श्री कृष्ण से निवदन करता है -

बत थेय स्यात निश्चित बृद्धि तस्मे । किञ्चम्तेऽह शाबि मा त्वा प्रपत्नम् ॥

हे कृत्ण । मेरे लिए एक निन्वित भीय मार्गवताओं में भागका विषय ह तेरी शरण में भाया है।

यहाबजुन का जामानसिक द्वन्द्व है ठोक उभी प्रकार की रावाणेल स्थिति श्री कृष्ण जीकी नारद मुनि के सम्मूख थी। नारद का जो उत्तर है वह झाज के पारस्परिक ईंच्या, इ.व. हिंसा प्रतिहिंसा से पूर्णत बापूरित बाताबरस मे ब्रबस्य सजदन प्रतोन नहीं होता पर इस तहब को बिटिम स्वन हुए कि---"हिंसा से प्रति-हिंसा का प्रायुर्भाव स्वाभाविक ही है नारद का समाधान सर्वथा रोममूल निवा-रस है। नारन मुनि कहने हैं— ग्राप रियादो प्रका की हाती हैं बाह्य धौर

—बाबार्य दीनामात्र सिद्धान्तालकार शाम्यन्तर । ये दोनो ही स्वकृत भीर पर-इत भेद से दो दो प्रकार की होती हैं। स्वहत का सभिप्राय सपने ही कर्मो द्वारा उत्पन्न धौर परकृत वो किसी दूसरे के निमित्त से पैदा होती है । नारद मूनि कहते है --विना लोहे का वह शस्त्र विश्वसे भाग विजय प्राप्त कर सकते हैं निम्न है-(१) बन्त दान करना (२) सहन-

बीसता (३) सरलता (४) व्यवहार सौर वचन में कोमलता तथा (५) यथायोध्य चावर सस्कार पूर्ण व्यवहार।

यह तो बह साधन है जिनका सम्बन्ध दूसरों के साथ है। पर संजातीय बन्धू घनर भाप के प्रति कटु और श्रोक्षा व्यव-हार करें तो उनके निवारण का उपाय मधुर वचन द्वारा उनके हृदय बाद से सन को शान कर देता है।

उपनिषद् ग्रौर गीता के शब्दों मे उपनिषदा की झाध्यात्मिक माया से

यदि नारद मुनि के अभी कुप्ला की दिये गये उपर्युक्त उपदेश का प्रस्तुत करें तो बोष भीर प्रतिवाध इन दो शक्दो द्वारा श्रमिव्यक्त कर सकते हैं। जब मानव का ह्वय बहिमल होना है भर्यात् वह सदा दूसरो क दोष देखता है भीर दूसरी द्वारा भाग्ने प्रति व्यवहार ने सदा दोन भौर त्रुटि पर ही चिन्तन कर अपने भीतर मानसिक ग्रान्ति उत्पन्न करता रहता है तब उसे उपनिषत् की भाषा मे बान कहा जाता है। जब इसके सबचा विपरीत वह अन्तमश्र हो तनिक वैयं भौर चारमचिन्तन से विचार करेगा नव वह प्रतिकात की स्थिति का प्राप्त करने याग्य हागा। नारद मुनि ने श्री क्रप्शाको स्वक्रन भीर परकृत भापति सम्बन्धी जो उपदेश दिया है वह उपनिषत् के बोध भौर प्रतिवाव के माग का ही बोतक है। इसी प्रकारगीता के १६वे बच्चाय के पहल चार क्लोनो मैं दो प्रकार की सपत्ति दैवी भौर दूसरी झामुरी सम्पन् का वर्णन किया है। देवी सम्पन् के भन्तगत -- (१) भ्रमय (२) भ्रन्तःकरण की विश्वनता (३) ज्ञान भौर योग म निष्ठा (४) दान (५) दम (६) यज्ञ (७) स्वाच्याय (-) तुरा (६) सरलता (१०) बहिसा (११) सत्त्र (१२) बकोच (१३) त्याम (१४) शाति (१५) दूसरो क दोव न ढढना (१६) प्राणियो पर दया (१७) लोभ कान हाना (१८) स्त्रभाव में कोमलता (१६) नज्जा वीलता (२०) तेज (२१) अना (२२) वैद (२३), पवित्रता (२४) द्वेव न होना (२५) मेक्क मनियान स हो। - यह

वैंबी सम्पत्ति के गुण हैं। धासुरी प्रकृति के बन 🕽--(१) दम्भ (२) दर्ग (३) श्रमिमान (४) कोब (४) णारुव==कठोरता (६) । श्र**ञान** श्री

कृष्ण कहत है कि दैवी सपद मोश्र देने

वाली और बासुरी सम्पद् बक्त में डालने आक्री है।

यादव बश की रक्षा-

नारद द्वारा उपाय श्री कृष्ण बादव वश के प्रयूत्म नेता थे। नारद मुनि इसी पृष्ठमूमि मे भी कृष्ण को परामधं देते हुए कहते हैं --

हे केशव । बाप गावब वश के मुखिया हैं। यदि इसमे फूट हो बबी तो इस समूचे वश का विनाश हो जायेगा। भार ऐसा मार्गं धपनाएँ जिससे बाप का नेतत्व पाकर इस बादव गए। तन्त्र राज्य का मुक्तोच्छेद न ही जाय। बुद्धि, क्षमा और इन्द्रिय नियह के बिना तथा धन वैभव का त्याग किये बिना कोई राज्य ध्रयवा सच किसी बुढिमान् पुरुष की भी बाजा के बाधीन नही रहता है। महाभारत सान्ति पर्व भ्रष्याय - १ के इस प्रकरण में श्री कृष्ण के प्रक्तों के उत्तर में नारद मुनि कहते है कि — हे ओक्टल । ब्रापने पक्ष की ऐसी उन्नति होनी चाहिए जो धन यश तथा बायु की तृद्धि करने वाली हो बौर कुटुम्बी अपनों में से किसीका विनाश न ही यह सब जैसे भी समान्त हो वैसा ही व्याप करे।

परिमार्जा यौर अनुमार्जन-नारद यादव गणतन्त्र कं ग्रह्मण्य एकमात्र नेता श्री कृष्ण का इस गणतन्त्र की रक्षा, उन्नति ग्रीर पारस्परिक सद्भावना की वृद्धि भीर मतत विकान की दिशा में दिये जा रहे अपने उपदेश का उपसहार करते हुए नारद मुनि कहते हैं कि ब्राप परि-मार्जन भीर अनुसार्जन इन दोनो सागों का समन्त्रित भौर मतत भवनम्बन करने वाले हो ।

श्री क्रुण का यह प्रश्नम्ब स्वामा-विक ही था कि परिमाजन भौर भनुमाञन इन दोनो प्रकार के मार्गों को बाप मुफ्ते विस्तार स समका दे। तक नारद भूनि इसक उत्तर में बहुत है-

परिवाजन क अन्तगत यह साधन हैं (१) क्षमा — यह निवल का नहीं नशकत का साधन है। प्राय यह समका जाता है कि सब नवुसन व्यक्ति ही क्षमा अपनात हैं। महाभारत म पाडवी को कीरवी द्वारा पाण्डवो कं प्रति किय जा रहे श्रपमान-जनक व्यवहार क प्रति सहनशीलता का उग्देश दन हुए मजून भीर भीम को क्षमा के नारे से कहन है 'ग्रन्ति संतपे जाल शकारेको हथेनी पर रखनेके सदश क्षमा बिसाउ व्यक्तिका ही गुसा होता है। समा बनवता हि भूषसम् '--धमराज क शब्द है --क्षमा बलवान् का भूषण है। नीतिकार कहते है-

- (१) सामा शस्त्र करे बस्य दुर्वन कि करिव्यति। अतुले पतितो बह्य स्वयमेव उपसाम्यति ॥
  - नरस्य धानरस् क्य क्यस्य सामुचल गुरा । नुसारब बाबुक्स ज्ञान ज्ञानस्य ग्रानुषस् क्षमाः

मावार्थ-जिसके हाथ म समा रूपी हिंचयार है दुजन उसका नमा विनास सकता है। जिस जमह कोई तिनका नहीं है वहां प्राप्त स्वय ही चान्त ही जाती है।

मनुष्य का आभूषरण रूप है रूप का भाभूवता गुण है, गुरा का भाभु-वण ज्ञान भीर ज्ञान का भागवण क्षमा है।

परिमार्जन के प्रन्तर्गत दूसरा साधन सरलता है भर्यात् युजवात् होना। नोतिकार कहते है-

पुला कुर्वन्ति इतस्य दूरेऽपि बसता सताम् । केलकी वन्धमात्राय स्ययम् प्रायान्ति षटपदा ॥

माबार्थ - सरलवा सब्ध श्रेट पुरुषो के बुगादूर होते हुए भी दूत का काम करते है जैसे भ्रमर कतकी की सुगध के लिए स्वय ही दूर से भाते हैं।

(३) परिमार्जन के प्रन्तमंत दीवरा -कोमलता है इसका दसरा नाम है कील इसका धिमग्राय गीतिकार के सब्दो मे-

बहोह सर्वभूतेषु कर्नेस्ता मनसा विरा। प्रमुप्रहरू वान व शीलमेतत विदर्भुषा 🛊 🖫

मावाय -- मन वयन कम सीर वासी स किसी के प्रति द्रोह का भाव न होना इसके विपरीत दया कृपा भीर दान यह शील है भीर यही कीमलता है।

**बनुमार्जन** — न।रद मुनि ने श्री कुष्णा को यादवगणतन्त्र को रक्षा के बो जपाय बताये है उनमें सनुमार्जन' के बाद दूसरे माधन सेवा सत्कार उपकार द्वारा दूसरे के हृदय मे प्रीति उत्तन्त करना है। प्राचीन भागत के नीतिकारी ने परोप- थ कार की बहुत प्रवासा की है। जैसे-

- वरोपकाराय फलति वृक्का परोपकाराय बहुन्ति नद्य । परोपकाराय दहन्ति व ब परोपकारायमिव शरीरम्।।
- परोपकार कर्त व्य प्रासीरपि धनैरपि। वरोपकारक पुण्य न स्थात् क्रतुशतेरवि ॥
- तृस चाह बर मन्थे नरावनुपकाि ए । घासो भूत्वा पश्-पाति भीकन्पाति रसागसे ॥

भावार्य — (१) परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, परोपकार के लिए नदिया बहती हैं। परोपकार के लिए बौए दूध परोतकार के लिए यह शरीर है।

- (२) प्राण देकर और धन देकर भी परोपकार करना चाहिए । परोपकार 🏖 जो पुण्य प्राप्त होता है वह सौ यज्ञों सं भी नहीं होता।
- (३) धनुपकारी पुरुष की अपेक्षा मैं तिनके को भी समिक श्रव्यता मानता मात्रक का ना नाक करण है। हुन्योंकि बास के रूप में उसके द्वारा गोर्मों से दूध मिलता है और युद्ध में बद हरपोक उसे मुख में हाल भागता है तब वह प्रपनी रक्षा कर लेता है।

माज को पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय और बन्तर्राष्ट्रेय - पेबीबा सौर एक दूसरे मे प्रवत रूप से उलकी परि-स्थितियों में नारद द्वारा की कुष्ण को बताये वये उपाय भौतिक रूप ये सर्वधा संगत समन भीर अनुकरणीय है-ऐसा हमारा रह विश्वार है।

के सी रेप/बी under famer ---

# भारत की मौलिक एकता

### लेखक-प० इ.द विचावाबस्पति

[१] यदि गम्भीरता से विचार किया जाय ता प्रतीत होगा कि प्राज तक जितने प्रश्न उठाय गये हैं उनमे से शायद हो कोई ऐसा वे मतसब प्रश्न हो जैसा निम्नसिखित प्रश्न है—

क्या भारत एक देश है?

इस देश का नाम कुछ ही रहा हो ,परतुसदाकोई न कोई नाम तो रहाही है। जब नाम रहा है तो नामी भी रहा ही है। सदिया गुजर गयी हम कहें कि युगगुजर गय तो भी श्रत्युक्ति नहीं यह देश भीर इसका नाम विद्यमान रहे है। एसी दशा मे यदि कोई व्यक्ति यह प्रश्न जठावे कि यह देग एक देश है या नहीं क्षो इसे बहदा प्रश्न ही कह सकत हैं। म।रतकानाम चाहकुछ ही रहाही जब स इतिहास का काई भी निशान मिलता 🖁 तब से यह एक देश माना जाता रहा है और बाब भी माना जाता है जब यह ) देश उनति के सर्वो • च**िसर पर पहुंचा** ह्या प तक यहाक स्मृतिकार ने कहा **41-**

> एतददेशप्रसूतस्य सकाञादप्रजन्मन । स्व म्य चरित्र शिक्षरन पृथिक्या सबमानवा ।।

्स देश में जरून न हुए नाह्मणों के समीप साकर पुश्ती भर के मनुष्य सपन चरिल को सीलें उच दिन भी यह पुरु केश पा मौर साज भी। वस पुरु चीनता की सबस्य दिला के मीचे से निक सन का यरन कर रहा है तब भा यह एक देश ही है। जो जीग न्मकी एकता से साफ इन्कार करते हैं यह स्वयम् धपने मह से सपना सर्थन कर देते हैं।

उनका प्रत्ताव है कि हिदुस्तान के टुकड कर दा। टुकड एक चीज के किय जाते है। यदि वह पहन दुकड है ता उनके विभाजन का प्रश्न ही पैदा नही होता। जो लोग इस देश के विभा जन का प्रवन उठात है वह इसकी मीलिक एकता का स्वय स्वाकार कर लते है। वह जब विभाजन का प्रस्ताव करते है तो वह बाक्य क झारम्भ मे जो शब्द सिखते है भान मे उसी पर इडताल फेर देत हैं। प्रयुजी न प्रपने शव 'गासनकाल के १५० साल तक यह सिद्ध करन का यस्न किया किन इण्डिया कभ एक रहा भीर न रहेगा। वस्तुत बात यह है कि इस सारे समय में श्रयज इस दश को एक मानते रहे भीर भाज भी मान रह है। भो उन्होने एक समभक्तर इसका शासन किया और माजभी कर रहे हैं। सोग देन का अब भग करना चाहत है बहुविभाजन का प्रदन उठाकर ही यह सिद्ध कर रहे हैं कि माज तक यह देश एक है। इसे में भारत की मौलिक एकता कहता हूं। बादू वह नो सिर पर चवकर बोसे । जो किसी राजनैतिक स्वाद की सिंदि के लिए भारत की एकता से इकार करना चाहते हैं उन्हें भी स चार होकर मानना पकता है कि जब मानवीय इति हास की किताब खुनती है तब जा यह बंदा एक या मध्यकाल ने जो एक रहा भीर साज भी एक है।

[२] जब मनुष्य का व्यक्तिरव क स से मुख्यु तक एक एड्ना हुआ। भी अनक बन वाभो में स गुजरता है उसा स्वार्थ रेण का व्यक्तिरव भा एक रहता हुबा परिस्थितियों क अनुसार पजटता रहता है। भारत का व्यक्तिरव सनक युगो म स होकर गुजरा है। समार भरत है पहले क समय को हम मारन के रितहा क सार्यकाल या उच काल कह सकत है। इस काल में भारन क व्यक्तिरव का निमाख ह रहा था। माय जाति राशो और स्ट्युयो पर निजय प्राप्त करके देख को मौगालिक मोर सास्कृतिक एकता का स्थापना का प्रयान कर रहता का

रहेपरत् साम्राज्य की परिचिलनमन समान रही। उत्तर में सिघू दक्षिण मे रामेन्वर पूव मे ग्रासाम ग्रौर पूर्वीय समुद्र भौर पन्चित्र संकाठियाबाड भौर सह्याद्रि भारत की यह सीमाए छाटे मोटे परिवतनो के साथ स्थिर रहा। कभी उत्तर दिशा संयवनान बाक्रमण कर दियातो कभी सिमीयन हण नथा शक लोगो ने । कुछ समय के लिए उन्होने देग के किन टस्डको ग्रपने श्रधीन भी कर लिया परन्तु नीझ हा भारत मे काइ विजेता उठा भीर उसने विदशा भात्रमण कारियों का परास्त करके देश को फिर स्वाधीन कर दिया। द लण मंभी थार बहुत उलट कर हाकर रहे। उस समय के बाय विजेताओं की यह नीति नहीं थी कि भूमि के जिस भागका जीता जाय इसकी स्वाधीन सत्ता का मिटा दिया जायं। महाराज रामचान न लका पर विजय प्राप्त का बार उसे विभीषण को सौप दिया। दक्षिण कराजाओं क सबध मे उत्तर के गासको को यही नीति सय काल में भी रहा ब सारे भारत पर धपन चन्नर्नीराय की सत्ताको स्था पित करना पयाप्त समभन वे न्सम दा का एकता भी कायम रहती था और प्राप्ती

हिमालय से लेकर बगाल का लाड़ा तक प्राकृतिक सोगाबों से बचा प्रवण्ड भारत एक है। कभो कभा जहरोली हवाए चलती है सोगाए सिक्रन का सावकाए पदा कर जाती है। साज फिर ऐसी बागी हवाए देश में विषग-च फना रहा है। लिकन सदियों का इतिहास कहता है युग साबे चन गवे सिहासन बदलते रहे ताज बदलते रहे लेकिन देश सावण्ड और एक न्ना है

बडी लोज के साथ हम ग्रह लेख प्रस्तृत कर रहे है प इ द्व जो (तृपृत्र स्वामो अद्धान्य) उच्चकीटि के साहित्यकार पत्रकार इतिहासकार । अ नीतिज्ञ थे। उनकी तोह लेखनी से कोई विषय श्रखता नही ररा। आज के सन्दम में यह लेख पत्रोग है।—सम्मादक

कितना संदिया तक जारां रहे यह कहना कठिन है। प्रभान साहित्य के धनुगीलन स प्रतीत होता है कि वह भाग धनाय सथब भनेक सदियों तक जारी रहा होगा।

सत्त में बहु सथय समाप्त हुमा जिसन भारत में सागों की सवाधित सप्ता को बड़ता से स्वाधित कर दिया यहा भारत के प्राचीन दिवहाय का दूसरा सध्याय नुम्हाता है। देग के सनाय स्नोर दस्युया ता नष्ट हो नये हैं समया शक्ति हीन होकर राज नियम के नीचे सा मये हैं। सानव समशास्त्र मेर तम्राट मरत का एक्जब्रूय शासन—यह दो उस युग की मूलमूत घटनाए है।

भारत की र जनतिक एकता स्था पित हो बाने का यह धनिप्राय नहीं सम फना चाहिए कि एक नार देव का एक खुत्र वासन हो जाने के पत्वान् उनकी स्थिति में फिर काई परिवतन नहीं भाषा उससे धनक परिवतन साते रहा यह परिवतन दो तरह के ये। भारतीय सामा ज्य का केन्न दस्तता रहा। कभी वह प्रया-या में जाता कभी द प्रश्व के कभी चक्रवर्ती राज्य की राज्य नी बनने ना कोशाय पार्टिकपुत्र का प्राप्त हुआ तो कभी उज्यदिगते को। केन्द्र स्थान बस्तते

का स्वाधीन मत्ता भा। एस समय बहुत कम भाष जब लगभग सारेदा को ध्यवाय कहे देश के वह भागका एक द्वत राजाकोई न रहा हा। कभी राववता क्याकौरव क्यामीय नाक्यी गप्ता वशाबदलत रहे पर एक सत्ताकिसी न किमी न्यान पर कायम रही यदि किसा बाहरी बाघात के कारण कुछ, समय के लिए भारत का भग हुआ भी तो बाड ही समय में युद्ध द्वारा या विदेशी जातियों क भारतीय बन जान के कारए। एकता किर स्थापित हो गई। हम कह सकते है कि शायद सैकडो सदियों क उतार चढाव भारत की भौतिक एकना को नप्ट नहाकर सके। भारतवासी जानत थे कि यह हमारा देश है धौर विदाी स्वीकार करते थे कि शास्त वय भारतवासियों का देश है भीर वह भ्रय सारी दुनिया न भ्रतन भौगोलिक राजननिक घोर सामाजिक स्थिति रखता

(३) मुसलमानो के खासन काल में भारत का मौलि ह एकता मौर भी प्रविक स्वण्टता से प्रकट हो गई। मुसलमान धाक स्वण्डारियों के घनेक बत्यों ने योड योन समय के पक्षात् उत्तर दिखा से भारत पर साक्रमण किये उनमें से किसी बत्ये के सरदार की भारत का चौडा सा हिस्सा

जीतने में मफलता हुई धीर किसा को श्रविक हिस्सा जातने म । दोनो ही दशाश्रो म मुसलमान शासको का प्रवृत्ति यह रही किवहसारे हिदुस्तान कस्वामी बन सकें। उन लोगों की व्याप्त से साराहिन्दू स्तान वही था जिसका ग्रपना परना नाम भारतवयथा। जितने बनो ने राय किया उन में में सभीन निर तर यह यन जारी रखा कि वह मारे नेश पर ग्रपनी हुकमत रायम कर। कारि⊤ा ना सभी राजवशोन की परत् उनमंस ग्राशिक सफलतामुगल वरा के राजाओं का हुँ। वह पूरे नहीं तो द० जसन भरत के हाकिम बन गयं थे। यह ध्यंत दन योग्य बान नैकि जब तक न्हाक्ति सम्पन र न सारे देश पर नामन स्थापित करने का उनकी प्रवृत्ति जारा रती उनका इस्टि संयह बात एक निचित संयक्ष रूप म विद्यमान रही कि हि टूक्श पवत से लकर गमे वर नक का निदुस्तान एक हा देश है। हिंदातान का बादगाह वहा कहला सकता है जाइस सारे देश का बादपाह

मृतन साझ यदा घर एक विजाल र यजाति के मध्य से हथा । हस ति वाम मक्य मकत है कि यदि उस कि कि देख म परि म की शांतिया न धापडती ना धाज म १५० थय पहले शारत-० से पुण स्वरा यह छित हो स्वानान परन भ यका कुछ भीति की उचक पुथल मचा हुई य मारति की उचक पुथल मचा हुई य स्मस्य यहा पण्चिम के स्नोग साधन मण्यन हाकर खा यवे धौर भ रतन्व पर प्रश्न का प्रभुत्व स्वापिन । स्वा

प्रप्रजो के गासन सा का मा स स की विषयाया यह के कि उमन प्राप्य से ही सारतवर का भ्रमिम गम्पा को धपना लब्द कर्मा लिया कि हि दून्नान का गम्पा को धपना कि हि दून्नान का गम्प कही ही सारा के प्रची है जिस्मा प्राप्त नाम के निर्माण प्राप्त नाम के सारा के प्रची है जिस्मा प्राप्त नाम नाम के सह धपने क्ष्य को प्राप्त में सफल हुए सारा भारत खण्ड प्रजो के राख मीनि कोव में ndian Empr (नारव साज्ञाच्य प्राप्त मा प्रचान स्थान क्ष्य को प्राप्त साज्ञाच्य प्राप्त मा प्रचान साम के स्थान साज्ञाच्य प्राप्त मा प्रचान साज्ञाच्य प्राप्त साज्ञाच्य प्राप्त साज्ञाच्य प्राप्त साज्ञाच्य साज्ञाच साज्ञाच्य साज्ञाच साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच्य साज्ञाच साज्य साज्ञाच साज्य साज्ञ साज्ञाच साज्य साज्य साज्ञ साज्य साज्य साज्ञ साज्ञ साज्य साज्य साज्य साज्य साज्य साज्ञ साज्य साज्य साज्य साज्ञ साज्य साज्य

भग प्रवार हम देखत है कि अब कभी
मनुष्य आति के प्रिशान पर मे प्रायदात का पदाखंठा होगा नव मे यन देश एक बार सक्षण स्माना गाना गण्डे हैं। पुग साथ सौर चने गय सिन मिन आतियों का गर्म गिन्या पर देउ सौर काल का बाल में दिल्ली हा गय परस्तु साख तक्षणान्त की मीतिक एकता की उपना नाई भीन कर सक्षण ता सारे देश का ता कर वन गया। यह है भारत की गीतिक एकता। न वह साख तक सम्बद्धत हुई सौर न साथे सम्बद्धता का तक्षण्वत

# यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

८ मृष्टिविज्ञानमे इस यजका एक धीर स्वरूप हुम लोगा क सामने उप स्थित होता है जिस प्रकार जीवन की रक्षा के लिए बाक - प्राण - मन तीनो का हाना ग्रनिवाय है उसी प्रकार मृद्धि रचन के लिए धरिन बायू धादिय का होना भी परम भावत्यक है। यही धानि वायु और धादिय त्रयी विद्या के स्रोत है अपिन ऋग्यद का ऋषि है बायु सामवेद का भीर अस्तित्य यज्ञवद का ऋषि है वैज्ञानिक दिस्टकोण से यदि इ.स. बान पर विचार करें ना एक बान स्पष्ट हो जानी है—ग्रस्ति ऋग्वेद क म्बदर पिण्ड के निमाण का विज्ञान देता है। वायु पिण्ड मण्डल को घरने वाली परिचित्या द्रादिय पिण्ड मण्डलका कद्रविदुहै जहास गतिका स्फुरण होता है। यह भन्ति हो तो है जो सुप्टि रचनाके केन्ने समायाहुआ है व्सी धारिन के द्वारा ही ज्यवान पदार्थों की सृष्टिहो रही है इस झनि को ही यन बेदी में प्रज्वलित कर मुस्टिनिमाण का एक यत्र चक्र ऋणियाने प्रस्तृत किया इस के वैनानिक रहस्य पर धनुस बान अपेक्षित है।

### १ यज्ञकी समिषा —

मर्हीय स्वामी त्यानन्द सरस्वत न यज्ञ की समिब का चयन करन हुए नी ऐसी सुनिवामी का वणन किया है जो चलने के बाट कोबलान बन पार समि ष ए जल कर राख हो जाए ऋ यमस्कार विधि में निखने हैं पत्नाना नामी पापल वड गुलर ग्राम बिन ग्रादिकी समिना चरी मे चनना चाहिए। समिवाए कीडा सर्गान ना मलिन दे । पन्न न हो भीर भपवित्र पन्थ भानि म निवत न हो एसी समित्राको का विधान ऋषियो न क्यो किया<sup>?</sup> इसका वै≈ निक पश बाज के बनानिक युगम विचारण य 🤊 । जो लक्षी जलकर कोयला बनाती हैं उनमे क वन Carbon का मात्रा ग्राप्त होती है भीर Co<sup>2</sup> Gas का निमाण अधिक होत है परतुजो समिधा जलकर रास हो जाता के उसन Carbon की माजा विल्कुस हो नगण्य होती है भीर जो कुछ Carbon होता है वह भी सजीय पदार्थों 🕏 साथ नाना प्रकार के भौर उसरे सूक्स रासायनिक पदाय बनाने मे प्रयुक्त हो चाताहै भीर Co₂य इस प्रकारकी दूसरा भीर कोई गस जिसमे नुकसान हो सकता है नहीं जान्त हा सकती। नस प्रकार सम्पूर्ण यज्ञाय पराय ग्रीर समिधा ग्र<sup>ि</sup>न के साथ ध्रात्मसान होकर वाता बरण नोपवित्र करने कारसायन बन बाती र यौर यनवरी के बार्गे छोर सुर्गा उन भीर स्वास्य व उक सब्दिका

निम ण होने सगता है। यदि प्रसावधानी के कारण कभी कोई विवेशी गैस या Co. ग्रावि का निर्माण हो भी जाता है तो वदी मेल गेपसो के गुरुम भी ग्रहन बार केले के लम्भे बादि के द्वारा इन तमाम गैसी का बहुण हो जाता है भौर शुद्ध बाक्सीजन का निर्माण हो जाता है। यज के चारो तरफ मेलालाओं ने प्रराजन इन विषेली गैसी को प्रपने घटर घला नेता है भीर उनका कोई बुरा प्रभाव नहीं पहला। हा यज के माध्यम से निकला सक्ष्म गैस के रूप में विभिन्न पदाय वाला वरण को शुद्ध पवित्र करने से सहासक हो जाता है। क्तमान युग में वैज्ञानिकों को इस सन्दर्भ ने धवस्य धनुसवान करना नाहिए और वज के माध्यम से ससार के भग्दर व्याप्त ब्रद्द्यण की दर करने का प्रयास करना चाहिए।

### १० वज्ञ न प्रयुक्त द्रव्य--

यश के बादर प्रयोग से झाने वाले पदार्थों के उत्पर भी विकार करना बाव यक है महाँच स्वामी दय नद ने कार प्रकार के ज्यों के प्रयोग का वणन बपन याय सम्कारविधि में लिखा है।

- (१) सुर्गायत कस्त्री केशर सगर तगर स्वेत वन्दन इलायची आस फल जावित्री साहा
- (२) पुष्टिकारक—सतदूष फल काकान चावल गह उक्द शादि।
- (३) मि<sup>र</sup> गक्कर शहट खुधारे दक्कमादि≀

(४) रागनाशक--गोषसता मिलोय भादि भौषधिया ।

ण्न पदार्थों के साथ भात कियकी (बिनानमक) जीर सक्दू बोहन भाग स्रादि पदार्थों को भी यज से इसले का विद्यान है।

उपरोक्त विधान से स्वय्य विदित नीता है कि यह में एक एक धन बन स्वित्य और वीपिषमों को ही हालना स्वित्य और प्रश्निक के निक्र कर प्रश्निक कि स्वत्य का स्वाय का स्वित्य विद्या है — प्रिनेश्च व यना कनस्पित्य किय होते वनस्पत्यों हि यशीया नहि मतुष्या प्रजाना वहनस्पत्यों न स्पुरत प्रशास कर स्वत्य है हि । गण शिश हो अपने प्रशास के प्रग्न वनस्पत्यिय का ही प्रयोग होना चाहिए। यदि वजराक्त प्रश्ना विद्या और जनक का सहारा में या सकल्य धीर जनक का सवाद प्रवेन साम्बक है ।

तद्वैताचनको वैदेश्च याजवल्का पत्रच्छ वेत्था सनिहोत्र याजवल्क्य वेद सम्ब्राहिति किमिति पथ एवति । २ यतः पयो न स्वातः

### लेखक शिवाकान्त उपाध्याय

केन बहुवा इति । वीह्यवामासिति। यह वीह्यवो न स्वातास केन बहुवा इति । वा धारस्या धोषक्य इति । यदा उरस्या धोषक्यो न स्यु केन बहुवा इति । कानस्ययोगेति । यह वानस्यस्य न स्यात केन बहुवा इत्यदिनरिति । तदायो न स्यु केन बहुवा इति । ३ । ख होशस्य न वा इह तहि किचनाशीवयैतत सत्य स्वदा धामिति । वत्य यानस्वयानिकां वेनुस्वान्ते दराशीवि हो बाण ।)

SING 991212

जनक ने याज्ञवल्क्य से पूछा—हे याज्ञवल्क्य क्या तुम प्रनिहोत्र का तत्त्व जानते हो <sup>9</sup> याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि सज्जाट मैं प्रनिहोत्य का तत्व जानता हु।

जनन ने पूछा — किस प्रवाध ने हवन करना चाहिए ? इस ते। यदि इस न मिले तो ? जो चावल हो। यदि वो चावल मिले तो न जानी प्रनाज से। जनती धनाज कर धादि कुछ भी न मिले तो उसने द्वारा स्वन करना चाहिए और वक जल भी न मिले तो किस प्रवाध के यह करना चाहिए? इस पर शाजवल्य ने उत्तर दिया कि वदि कुछ भी पास न हो तो सम्बाध का अबा क्षेत्र करते रहना चाहिए। इस अकार का उत्तर हिना चाहिए। इस अकार का

उपरोक्त कथानक वे स्वष्ट है कि
यानीय पदाय प्रामा एक लुल बस्पति
योगवी बारि हो हो ककते हैं। दूसरी भी के
हिष्य नहीं वन ककती। सीम यतक ब्रायद स्रमानत वस स्ववता मानकतावता ऐसे
पदाय भी मान देते हैं विनका निषय है
सीर यन नाम भी वस बाता है। अच्छे
प्रमाय के स्थान पर हुरे प्रमाय काता

इस प्रसम ने एक बात की चर्चा प्रकार करना बाहता हूं। कुछ लोग यह से पत्रायों को बार मारकर उनका माह गानते है पीर प्रमास्य में पत्र बिला होते हैं। प्रावकत इस प्रकार के प्रमास प्रकार सर्वारा पारि पत्रिकाखों में बहुत और से किए जा रहें। यह के माजी का पुरुष्ट विनियोग करके घपने पक्ष में रह प्रकार की मजत नातों का प्रमास्य वह से मिक्स नर्ने का दुस्ताहस भी कुछ हुंगे व्यक्ति कर रहे हैं।

बदमत्र के दुष्ट विनियोग का निस्न जवाहरख देखने योग्य है—पश्चति के समयक जब बकरी के बच्चे (सैमने) को फासी सगाकर मारते हैं तो यजुर्वेद के निम्निसिक्ति मन्त्र को पढते हैं म्हलस्व त्या बेवहिंव पानेन प्रति मुज्यानि । यकु ९ १६ नम्त्र का स्वप्त है कि है निदानी है । त्या की हिंदि । तुन्हें प्रविक्षाति वन्त्र के तेने ने फन्या कालने का कोई विभाग नहीं है । पर स्वाध वा मासाहारियों ने का सम का गमत ध्रम करके इस का दुवट विनियोग कर बाना ध्रीर पशु वा विश्व करने का दुरावह प्रारम्भ कर दिया । इसी मन से धनले मन ने निम्म धानेग्य है खुन त्या नाता स्व मन्त्र प्रतान प्यान प्रतान प्रतान

इसका सथ करते हुए मासाजारियों ने वोषयण की कि है वकरों के कच्छे तुन्हें मारने के लिए पुन्हारे माला पिला आहें ब जु सब स्मृतमित हैं। क्या कोई हुदिमान अपिला उपरोक्त कपन को सथ माल सकता है। कहरों के माला पिला कहा मिली भीर सपने ही बच्चे को मारने का समुमति क्यों मेंति की देंगे। मनन का उच्चित स्मा है कि माला पिला बच्च वन सब लोच पपनी सन्तान को धाषाय को बेकर सज्जी शिला और बहुत्यय शांबि गुणों में सम्म न करन की सन्तादिं।

एक धौर प्रसम देखिये — यब्बद का भन्त्र है — बाब ते बुन्बामि प्रारा न श बामि बन्यू हो शु बामि श्रोत्रको श बामि नाभिन्ते श बामि भेडला शु बामि प उन्ते बुग्बामि बरित्रास्ते शु बामि।

यजुवद ६।१४

इस मात्र का दुष्ट विनियोग किया गयाधीर निम्न प्रकार से इस के गलत अय का प्रकार हथा।

जजान की पत्नी बकरी के मारे बच्चे के विभिन्न धनों का 'परफ कर के कहती हैं कि हे मेमने तेरी वाण' प्राख बच्च कान नामि उपन्येदिक पुरा तथा तेरे वरित्र को जुढ़ करती हैं। एक बात विचारणीय हैं वर बकरा की मार नया तो लाक को छ कर बमा कुछ यह किया का सकता के छोर कोच हुआ यह किया बस्का के छोर कोच हुआ यह किया वस्त्र को छोरों। साथ तो मेसी पत्नी हैं पर गुडिकरण हो रहा है। कैसी विभन्न विवस्त्रमा है। इस न का उचित्र धन जब्दता हैं कि मैं तुस्त्रारी वाणी प्राण जब्दता हैं कि मैं तुस्त्रारी वाणी प्राण जब्दता है कि मैं तुस्त्रारी वाणी प्राण जब्दता है कि मैं तुस्त्रारी वाणी प्राण जब्दता है कि मैं तुस्त्रारी वाणी प्राण

जिन लोगी न उपरोक्त मत्रो का तुष्ट विनियोग किया है उनके शासने एक धीर प्रग्न उपरिचल हो गया। इसी घम्याय का सम्मा पत्र घाधीयोद का सब है। प्रकरण के सनुसार शांचाय प्रपने शिष्य को साशीयोद देता है कि वाक द्यार-प्रदास प्रचल पांच्यायनाय चलु का प्राप्याव ताम स्रोत द साय्यावनाय चलु का प्राप्याव ताम स्रोत द साय्यावनाय । ६/११

नेरी वणी उल्लात हो प्राण बलादि गुण युक्त होँ दिंग्गिन सहो कार्न

सदगुल व्याप्त हो तथा तेरे दिन सुखपूर्वक बीतें। परन्तु इन मासाहारियो ने इस मत्र को भी घसीटने का प्रयास किया और मन्त्र का दुष्ट विनियोग करके इसे मरे हुए बकरे के लिए आसीर्वचन बना दिया, मरे हुए बकरे से कसाई कहता है कि-कि मरे हुए बकरे नेरी बाणी फले फूने, तेरा प्राण क्षे पूले, तेरे बल कर्ने-पूलें, तेरे कान कर्में फूले और तरे दिन सुख शान्ति से

इस प्रकार की धतुम्भव घीर धसगत हात का प्रश्रय इन पशु बलि का विद्यान करने वाले पालिश्वयों ने वेदों के मन्त्रों का गलत विनियोग करके सोगो मे किया भीर बजो में पशु बिल का भ्रामक भीर गलत प्रचारकिया।

यहा एक बात स्पष्ट कर देना चाहता ह कि पशयाग में मास-भक्तियों ने मन्त्रो का दुष्ट विनियोग भीर उनका गलत ऊट-पटान प्रयं इससिए कर दिया कि इन मन्त्रों का प्रयोग पशु सजयन में किया गया है। पञुष्मीर सज्ञपन दोनो शब्दो को न खनमने के कारण यह भूल हो गई। पश् भूद की उचित व्याख्यासमाने पर यह भूल न होती। पश्यतीति पशु। पशुका प्रचं है बालक । अवन १४।२।७६ निति-छन्त्राम् मातुरम्या उपस्थात् नाना रूपा पश्चवो कायमाना । यहा पशुधी का धर्य बासक की है। Grifeth ने भी इसने पश् का प्रयं Babies ही किया है।

सङ्घन का धर्य भी मारता लिया मुद्धाओं कि सम्भवनहीं है। सज्ञपन का वर्ष है सम्यक प्रकारेण जान देना। पशु प्रज्ञपन का भाग पशुओं को मारनान होकर पशुद्रों को सम्यक् प्रकार से ज्ञान हेना। सजपन क धर्यमारना नही हो सकता । इसमे अतपन का प्रमाण उल्लेख-

जीवमेव देवमा हविरम्तममृता-नाम् । ३।८।२।४

देव लोग जीवित है मुदें नहीं -- इस लिए उनकी इवि भी सजीव हो सकती है मुद्दानही। जीव वैदेवाना हवि.। इस क्र पशुसज्ञपन का अर्थ हुआ कि विनीत शासक अपने आचाय से विद्यावान् होने की प्रार्थना करे और प्राप्तार्थ उसे उचित उपरोक्त मलो द्वारा जिल्हा देखर धाशीवदि दे भौर उसका निर्माण करे।

इस प्रकरण मे पशु शब्द का वैज्ञानिक पक्ष भी विचारसीय है। शतपय बाह्यण मे एक स्थान पर भाता है कि --- (प्रजा-पति ) तेषु (पञ्जुषु) एवम् (धन्निम) धप-श्यत् तस्माद्वै ते पश्चव । ग०६।२।१।४ प्रजापति ने इन पशुस्रों में स्निनिकों देसा, इसी कारण इन्हे पशु कहने है। ये पशु खुलोक भीर अन्तरिक्ष लोक के अन्दर चत्पन्न वे कल और रेल् हैं जिन्हे रात्रिया व्यवकार मे देखा जासकता है। इसलिए इन्हें पशुकहते हैं (पञ्चतीति पशु) यहाइन चानुरासमी बाह्यसम्बन्ध । श०६।४।४४ पशुसीका कर्णन नहीं है जो पृथ्वी पर बूमते रहते हैं। इन पशुप्रों में घारनेय करा हैं, इनके घल्दर चमक है। इन पशुधों के

भन्दर से विकीरण होता रहता है तथा निविध्न अन्तरिक्ष मे ये पशु अमण करते रहत हैं। इन्हीं आग्नेय तत्वों को यश के भन्दर प्रयोग करने का विधान है। यजुर्वेद में स्पष्ट बाता है-देवा यद् यज्ञ तन्वाना धबष्नन् पुरुषम् पशुम् । विद्वान् जो यज्ञ करते हैं उसमे पुरुष पशुद्रों को बाबते हैं। य० ३१।५१ बाधना शन्द यहाँ सगति-करण की धोर हमारा ध्यान बाकुष्ट कर रहा है न कि पशुर्कों के बाधने की झोर। सोगो न पशुका वैज्ञानिक स्वरूप न सममः करयज्ञ के निमित्त घोडा—गधा, बकरा प्रादि साकर बाधना शुरू कर दिया और देखते देखते इन पशुची की

बाबा होता है। इन उदाहरणी से स्पष्ट है कि बहा पशु शब्द का धर्य घोडा गचा या गाय बादि के रूप मे पशु नहीं है यहाँ तो पशु वे धरा परभारा के रूप हैं।वे बौलोक, अन्तरिक्षलोक मे आग्नेय शक्ति के साथ विचरण कर रह है। इन्ही पश्ची को यज के निमित्त उपयोग में लाया जाता

इन पश्चा में सम्न ग्याप्त है और उनकी चनक से ये कण चनकते हैं। एक भीर प्रसम प्रस्तुन करना उनयुक्त होगा। भ्राप्ने बाव सर्वपञ् । ऐ० द्वा० २।६ श्राग्नेया पश्चव । तै० ब्रा० । १।१४।३ सर्वे पश्चवो यदग्नि तस्माव् भ्रम्नी **बै॰ ३।८१ द। यहा पशुधाठ प्रकार** बतलाये गये हैं। यह ग्राठ प्रकार के Charged करा। का ही बरान है जा प्रकाश युक्त हैं और भ्रपनी रहिमयों का विकीरण करत रहन हैं।

ततो रेवतय पशकोऽ सुरुवन्त । क् राहर्षा

ध्राग्नेयाइच मदलइच पण्।

B 0 212371 ये अग्नि भौर मस्त के Sarticles चमकन वाले होते हैं। इन माठ प्रकार के पशुमी (Charged Sarticles) के ग्रन्दर विभि-न्नता का कारण भी जैमिनी ब्राह्मण मे बहे वैज्ञानिक रहम्य का सकेल करता है। कनातिरिक्तो मिथुनौ प्रवननौ । उनम्

बन्यस्य बातिरिक्तम ब्रन्यस्य क्रनम् झतिरिक्तादि वै मिथुनात प्रजा पशव प्रजायन्ते । जै० २।६६१ ।

नाना प्रकार के मिथुन की क्रिया प्रयोत् षषण से विभिन्न Charged Sarticles "पशु'की उत्पत्ति होती है। धन्तरिक्ष के अन्दर कायुद्धाः अनिन पृथ्वी सादि के परमाणु विभिन्न परिस्थितियो मे बिन्न भिन्न सं समीग घपण सादि द्वारा भनेक प्रकार के पशुधों का निर्माण करत हैं। इन परमाणुको का दिव्यत्व Reflecting Properties भी भिन्न भिन्न होता

मीमासा दशन मे धरिनप्टोम का बणन मिलता है । इस प्रश्निप्टोम के बाठ प्रकार भी इन्ही बाठ तरह क Charged Sarticles of Reflecting Properties का प्रारूप है।

इन तमाम उपरोक्त उदाहरणी द्वारा यह बात र"ष्ट हा जाती है कि यज्ञ के पशु बाग्नेय परमाणु ही हैं और इनका किञ्चिन मात्र भी सम्बन्ध इन साधारण पज्ञों से नहीं है। ग्रत यज के भन्दर बकरे घोडे बादि पशुक्रो की बलिका कोई बगान अथवा विधान नही है। सुधी पाठक भीर ग्राज कल क वैज्ञानिको का यह उत्तरदायित्व है कि इन तमाम बातो को विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में देखने ग्रीर समभने का प्रयत्न कर । सम्पूरा वैदिक वाडमय इस प्रकार क धनेकी वैज्ञानिक रहस्यो से परिप्रा है । हमे प्रयास पूवक इन बातो को समभना पडेगा और पशु बाल ऐसे महान् पाप को सम्पूरण रूप से बन्द करने भीर करान का सकल्प लेना होगा ।

थाव ग्रन्थों का पठन पाठन बन्द होने के कारण और परस्पराध्नो से पौराणिकता के सन्निवेश के कारण यज्ञो का दास्नविक विज्ञान सम्मत शास्त्रीय स्वरूप हमारे सामने बहुत घुचले रूप मे प्रकट होता है क्षाज ऋषि परम्पराए उनका वैज्ञानिक स्वरूप, उनकी महत्ता भीर उग्योगिता हमारी सूऋदू अस बहुत उपर की वस्तु जान पहती है। कि भी प्रयास खड़ाय होना चाहिए। उसी दिशा में एक हल्का साप्रयास प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस निबन्ध में किया गया है। - यज्ञ मे प्रयुक्त क्रियामी का वैज्ञानिक स्वरूप

# दानवता के पथ पर बढ़ते

मानवता के त्राज चरण

राघेश्याम ग्रायं, विद्यावाचस्पति

मानवता का होता है उपहास नप्ट हुमा है जुचिता का विस्वास, कन्दन ही क्रन्दन का अवसी— तल पर, हुमा मनर सा वासः।

विकारा है चहु इन्द्र-दुराव, होता है दुर्गुण का स्नाव, भ्रमित हुई है बीच भवर स-माज मनुबद्धाकी ही नाव।

वर हैं सभी बने अभिशाप वडारकत का अनुस्तित चाप, मातो है वसुषा कण कण से--दनुत्र वृत्तियों की कटु बाप ।

> लुठित त्याग तथा बिलदान, कृठित स्वर्गिक स्वामिमान, सोया पढा हुमा है युग का --विषय व्यक्तिता नवव्यक्षिमानः

दुरमिसन्धियो का जजाल, विरता वने तिमिर का बाल, दूराग्रही मानस की वृत्ति---दिखाती भैरव रूप ग्रकास ।

> करता है युग हाहाकार, सकट बढता भगम भपार सर्वनाश की ज्वालाधी मे--जनताम् पूकर ससार।

नही रहा घव सत्याचरण, कही उपद्रव कही मरण, दानवता के पथ पर बढते---मानवता के भाज चरण।

> युद-लूट है, बरबादी, विष्वसोन्मुस धावादी, युगकी सकट ने है फसी---धजर-धमर सी घाजादी।

साहस-प्रतिमा व उत्साह, करते प्रतिक्षण द्वारमदाह माती वसुवा के प्रतिकण से--करणामरी श्रसीमित श्राह ।

> पाशविक प्रवृत्तियो की सत्बिट करती भपनी मोहक पुष्टि विन देकर करत रहते हैं---सत्प्रवृत्तियो की, हम तुब्दि।

है ब्राह्माद जरा श्रामवण देता इस जगती का कण कण मनुषुत्री । सब उठी । बढी तम--स्वीकारो, समग्र निमत्रण।

> युगकाहै इतिहास बुलाता मनुज मनुज का श्रमिनव नाता भावी पृष्ठों में स्रोलो तुम---दिव्य शक्ति ले, भ्रपना स्नाता ॥

बलि प्रारम्भ हो गई जबकि बहुत स्पष्ट वर्णम है-

राष्ट्रवाधवनीय । भ्रन्नहिनौ । ग्रस्निर्वा ग्रह्मा । ग्राज्य नेव । शतपव बाह्यराः। शतपद्य बाह्यण मे एक प्रसम पर इन घोडो सघो और वकरो का दर्शन मिलता है --

क्षत्र वा सम्बद्धा बैदय व सूत्र

घोडा क्षत्रिय के धनुकूल मुख-बालाहै बैस्य शूद्र—बधे के गुण वाले हैं तथा बाह्यण वकरे के गुण- पशको रमन्त । शत् ६।१।४।१२

इन उदाहरणों से स्वष्ट विदित होता है कि जिन पक्षु घो का यज मे वर्णन है वे साचारण पशुनही हैं। ये पशु अनिन से रमा करते हैं भीर वे पशु ब्राग्नेय परमासु दुलोक से भन्तरिक्ष लोक होने हए पृथ्वी लोकतक अमण करन रहते हैं। एक पर्गु सववा परमारण Electricaly Changed Graficles हैं जो Positive Charge के साथ तीनो लोको मे षुमते रहते हैं। जैमिनी बाह्यण मे एक बर्णन मिलता है--- बच्टातमान् पञ्जन्।

# गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा

जगदीश विद्यालकार

पुस्तकालय ग्रञ्यक, गुक्कुल कांगडो विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तकालय ग्रान्वोलनके प्रखेता ऋवि दयानन्द---गुरुकुल पुस्तकालय की स्था-पनाभी गुरुकुल कामडी की स्थापना के साथ ही हुई । गुरुक्ल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १६०२ मे ऋषि दयानन्द सरम्बती के शिक्षा सम्बन्धी विचारी को मृत रूप देने इन् की। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने ग्रार्यसमाज की स्थापना करते हुए अपना यह मत भी प्रकट किया था कि ग्रायसमाज के माध्यम से प्रत्येक ग्राय जन स्वाध्याय मे रुचि जागृत करें तभी विद्याकी वृद्धित गाधितद्याका नाग हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने सज्ञान से ज्ञान की भोर स्नाय जनो को प्रवृत्त करत हुए ग्रायसमाज के सविधान में इस ध्यवस्था को स्रगीकृत किया जिसके धनु-सार ग्रायसमाज के पदाधिकारियों में पुन्तकालयाध्यक्ष का प्रतिस्थापित किया।

प्रायसमाज की इस मरवना में पुस्त-कालवाध्यः के पद ना सुनन ऋषि यया-नव्य मण्यती की उम दिख्य विष्ट की प्रका-शित करना ह जिसक धन्नतेत प्राय जनी की ऋषि ने य शाञ्चान किया कि प्रत्येक ग्राय स्वाध्याय में लीन रह तथा निवा की वृद्धि करे। पुस्तकालयाध्याल के इस पद की व्यवस्था के साथ ऋषि दयानन्द का यह एक धृत्व स्वयन चा कि प्रत्येक भ्राय सभावद अपन स्वरूप की पहचानने हेतु व्येष्ट प्रयो का पादावण निरन्तर करता रहे। स्वामी अञ्चानन्द ने भी गृज्युल की स्वापना के साथ ही पुस्तकालय निर्माण की बोर गम्भीरता स ध्यान दिया।

धार्यसमाज ग्रौर गुरुकृत पुस्तकालय—

भ्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत मे पुन्तकालय धादोनन का पिनामह कहा जा सन्ता है। स्वामी दयान्द सरम्बतीनं उनसम्बद्धानां की न्यापना के साथ ही प्रत्येक समाज में एक पुस्त-कालय की करना नी तथा उस पुन्त-कालय की वें स्व रंख हुतु सुस्तकालयण्यका के पद का मुजन किया।

सत्यायत्रकाण के रूप से म्बामी दयानस्य ने जिम इति का जन सपुदाय के रूप मे सामने रला तर कृति भी हुनारों सन्दर्भों से सत्यासस्य के तत्यों को उद् भावित न रने के महान् मन्यां प्रवस्त्र रूप मे भावित्तत है। वैदिक विषयो पर प्रमाण सहित जवाब देन वाला ऐसा मुख्य सन्दर्भ प्रव्य विद्य के पुस्तकालय को स्वामी दयानन्य से प्राप्त हाथा।

गृब्दुल कांगडी पुस्तकालय मे भी ऋषि दयानन्द के इन विश्वारों का प्रति-विम्त बृहुत् रूप से देखने को मिलता है। ऋषि दयानन्द के समस्त प्रथ तथा उन प्रवों पर लिखी विस्तृत समीक्षाए पुन्त-कालय में धाय सामादिक सम्रह के रूप में पूबक् कक्ष में समाजित हैं। इसके प्रति-रिस्त वैदिक सिद्धातों एव धाय सामाजिक जीवन मूच्यों पर प्रवास डालने वाले सहन्त्रों प्रथ भी इस कक्ष के साथ सम्बद्ध है।

गुस्कृत के खान का तथा गुक्कृत के पुग्नकालय का सवस्य गमस्य सम्बन्ध है। गुक्कृत में प्रत्येक खान जान की जिज्ञासा प्रान्त करने हेतु पुत्तकालय की जराम प्रमान करने हेतु पुत्तकालय की खरण में माता है, तथा पुत्तकालय के बारा उसकी हम जान कृषा को विश्व विदेश साहिष्ट्र के मानर द्वारा तृत्व किया जाता है। पुत्तकालय में रखी उपस्थित पिकाक के प्रतुषार गक्कृत से पढ़ने बाला हर दूसरा खान पुत्तकालय का उपयोग करते पुत्तकालय का उपयोग करते पुत्तकालय साता है।

### बन्तर्थ सेवा

पुत्तकालय की मदभ सेवा वा सिन-प्राय समभने हेंगु पहले सम्कृत को वा के सनुवार सम्बन्ध गड़क का समित्राय सर्घे गमफ लेना चाहिए। सदम शब्द सक्कृत धानु दम (बाबना था बुनना) में 'सम्' उपस्य लग कर बना है। सर्घात् एक गाव वाको ने वाला, संघोतिक करने बाला, मिलाने वाला ओ कि प्रतिपादिक करते हैं। दो या प्रविक सस्दुमी का स्वयोग। पुस्त-कालय के सत्यमें में वी बन्हु हैं गठक तथा गुन्तक पाठक का धुननक में लख हो जाना ही सदमें नेवा की वरण सफलता है।

पुन्तकालय के द्वारा पाठकों को दी जाने वाली वैयक्तिक सहायता को हो गत्यक्त सेवा कहा जा सकता है। सन्दर्भ सेवा कहा जा सकता है। सन्दर्भ सेवा चा केट किट पाठक है। होता है जिनका प्रश्चय पुन्तक से कराया जाता है। एक विदेशी विद्यान जैस्स आई तायर ने पुन्तकालय की सन्दर्भ सेवा की व्याख्या हर सब्दों में मी— 'प्राध्यय और शोध काय हेतु पुन्तकालय सबह की व्याख्या करने म प्रदत्त सहायता को सन्दर्भ काय कहते हैं।''

उपर्युक्त परिभाषा के सन्दर्भ में गुर-हुत पुस्तकालय का मर्वाधिक उपयोग यहां के खान, प्राध्यापक एवं समीपस्थ रहने वाले शोध प्रध्येता निम्न प्रकार से उठाते हैं।

### बांखित पाठ्य सामग्री में सहायता---

गृष्कुल में पढने वाला प्रत्येक खात्र प्राध्यापक एव शोधकर्ता पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री निम्म प्रकार से सोजने का कार्य करता है।

- १ ५० प्रतिशत छात्र, प्राध्यापक एव कर्मचारी सम्बद्ध पुस्तकासय कर्म-चारी से पुस्तक के नाम या लेखक के धाषार पर सोवे कमचारी से बांखित पुस्तक प्राप्त करते हैं। इस कार्य मे पुस्त-कालय में २० वर्षों से कायरत बुकलिफ्टर गोविन्द एक धनश्याम का वांछित पुस्तकों के सम्बन्ध में प्रजित लम्बे प्रमुभव का नाम बहुत के छात्र एव प्राध्यापक त्वरिष्ठ रूप से उठाते हैं। पुस्तक का नाम कहते ही य कर्मचारी उस पुस्तक को पाठकों तक पहुचा देते हैं। इस के श्रतिरिक्त पुस्त कासय के २० प्रतिशत पाठक वाखित पाठ्य सामग्री स्रोजने हेतु पुस्तकालय मे उपलब्ध विषयानुसार रजिस्टरों की सहा-यता लेते हैं। जिस के धन्तर्गत उन्हें पुस्त-कालय के विषयवार संग्रह की जानकारी प्राप्त हो जाती है। बांखिल पुस्तक का वर्गीकृत नम्बर इन रजिस्टरों में देखने में मिल जाता है। जिसे पुस्तकालय कर्म-चारी को देकर प्राप्त कर लेते हैं। २० प्रतिशत पाठक वर्ग केटेलाग की सहायता से वास्तित सामग्री की खोज करते हैं।
- २ नवीनतम विश्व साहित्य की जानकारी निम्न सम्दर्भग्रन्थों के झाधार पर दी जाती है।
- १ बुक्स इन जिन्ह (यू एसु ए) १६८३ — समेरिका में १६८३ तक प्रका-शित समस्त पुस्तकों की जाननारी लेखक विषय एवं सीषक के अनुसार।
- २ ब्रिटिश बुक्स इन प्रिट १६८४--ब्रिटेन में प्रकाशित १६८४ तक की समस्त पुस्तको की जानकारी।
- ३—विटिश नेशनल विवलोग्राफी विटेन मे उपलब्ध समस्त प्रकारकी १६६३ तक नी पुस्तको की सूचना।
- ४— इण्डियन बुक्स इन प्रिन्ट १९८४ — भारत में १९८४ तक प्रका-शिन समस्त पुस्तकों की जानकारी देने वाला सन्दर्भग्रन्थ।
- १---पुस्तक समीक्षा पत्रिकाओं द्वारा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी पुन्त-कालम में निम्न पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए माती हैं।
  - १ बुक रिब्यू डाइबेस्ट
  - २---इनप्रिन्ट
  - ३---इडियन बुक क्रोनिकल
  - ४-इ डियन बुक इहस्ट्री
  - ५-साहित्य परिचय
- ६—विकास न्यूच इत्यादि

विभिन्न प्रकाशकों के केटेलाव जो विवयानुसार व्यवस्थित 🗜 श्रवकोकन हेतु पाठकों को उपसब्ध हो सकते हैं। सोध के क्षेत्र निश्चित करने में सन्दर्भ सहाबता---

गुरुकुल का कोई खात्र बोध उपाधि हेतु प्रजीकरण कराका बाहे तो उसे पुस्त-कालय के द्वारा योच के उसके हिंद विषय की बानकारी दी जा सकती है नबा बहुत से शोध खात्र धपना विषय चूनने में इस सम्बर्ध सेवा का साम उठा रहे हैं। सोच खात्रों को सेवाए निम्न प्रकार से दी जा रही हैं।

- १ पुस्तकालय के मन्दर्भ विश्वाग में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में १८- ई तक कियो वोष कायों की वामकारी पुट्ट के तक किये वोष कायों की वामकारी पुट्ट के तक किये वोष कायों की वामकारी पुट्ट के स्वाधित "बिल्मोग्राणी प्रांफ डॉक्टरल दिखटेंग १८००-१८-३" गामक सल्बर्भ प्रकार के सहायता से दी बाती है। की सहायता से वोष काशों को गह जानकारी हो बाती है कि उनके सिंक के विश्वय में गोष काशों की तथा किया विश्वालयों में कहां हुमा है तथा किया किया में विश्वय से विश्वय में विश्वय में विश्वय में विश्वय मारिनीय विश्वय में विश्वय म
- २ इसी प्रकार समाज विज्ञान, कला तथा विज्ञान के गोय छालों को भारत वर्ष ने विद्यविद्यालय के ही गोय काय की जानकारी नहीं यो जाती बेल्कि विद्यव के प्रमुख विद्यविद्यालयों से उनके शवि के शोध से जो में क्या-क्या कार्य हुमा है इस की जानकारी "डिकटेंगन एसलुक्ट माल-एव वी" के मास्त्रम से दी जाती है। यह बल्दमं बच मास्त्रम देश बता है। यह बल्दमं बच मास्त्रम देश पुर ए हैं नित्तनता है। इनके मल्दर विद्यव का वर्षीकरण के मनुनार किये गये शोध कार्यों का सार सलेर भी प्रक्ति होता है। पुस्तक बचन में सहायदा

पुस्तकालय में प्रध्यापकों द्वारा श्रेष्ठ माहित्य को कय करने की सन्दुति देने हतु सन्हें निम्म प्रकार की सन्द्रभ सहा-यता पुस्तकालय में उपसब्ध कराई जाती.

- (क) विषयवार पुस्तक विक्रेताओं के नवीनतम केटेलाग पुस्तक चयन (ट्री) सम्बद्ध विभागों को भेजे जाते हैं।
- (स) पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए उप-लब्ध कराई बाती हैं।
- (ग) नवीनतम पुस्तको की प्रदर्श-तिया झायोजित की जाती है। पुस्तकलिय झारा गत एक वर्ष में विभिन्न पुस्तक विकेताओं को भागतित कर तीन पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन हुआ। इन प्रद-व्यंतियों के माध्यम ते प्राच्यापत्रों द्वारा पुस्तकालय हेंदु २ १० लाख रुपये मुख्य की अनमोल पुन्तकों का चयन किया क्या। १ विश्व में प्रकाशित पत्रिका साहित्य
- इ. | बच्च म प्रकाशित पात्रका साहित्व की बानकारी — विश्वविद्यालय के प्राध्या-पर्कों को विश्व में प्रकाशित उन के विषय में सम्बद पत्रिकार्घों एवं उन में

शेष पृष्ठ ११ पर

# ग्रमर शहीद पं० लेखराम ग्रार्य मुसाफिर

---प० भवानी प्रसाद

ससार के इतिहास को बनाने बाने विविध धर्मों के सस्यास्क अपने विचारो के पीछे पागस बने हुए प्रपनी चुन के पकते ऐसे ही भावक महानुभाव थे। यदि धम-हस्यापको की जीवनियो का मनन किया बाए तो यह विशेषता उन सब में सामान्य इप से उपलब्ध होगी। बुद्ध ईसा, मोह-इमद, कबीर दयानन्द, गांधी सभी धपने विवारों के प्रचार में भावुक प्रतीत होगे। वन के विदातों का प्रसार भी सवार मे बनेक **भावुक बनुयायियो के द्वारा ही** ⊊मा है। बुद्ध के बानस्य घादि प्रमुख भिक्षु, इसा के पीटर झादि शिष्य, मोहम्मद के ब्रत्यत्साही (जोशीले) बली भीर उनर सादि समीफा इस के उत्तम उदाहरए हैं।

भाज इस शताब्दी के महितीय पछ-सस्यापक, बायसमाज के बाबाय महर्षि इयानन्द के एक एसे ही भावृक्त शिष्य समिक्षान्त धर्मेप्रचारक के पवित्र चरित्र ्रेकी पर्यासोचना का प्रसङ्ग प्राप्त है।

धार्यसमाज के परिण्ति मडल में तो कोई भी ऐसाव्यक्तिन होगाओं वर्मवीर प० केकराम के नाम भीर काम को न जानता क्षे किन्तु धायसमाज से बाहर भी करोडो मनुष्य प॰ लखराम के नाम से परिचित 🖁 । प० सखराम की भावुकता ही सर्व-साधारणामे उन के इस परिचय की मूल-ूकारण बनी थी। वैसे तो वे पजाब के केसम जिले के एक अप्रसिद्ध सारस्वत बाह्यसा कुल से जन्मे थं परन्तु उन में प्रपने पित्कृत की सैनिकवृत्ति स प्राया हुआ हारीर कासगठन तथाक्षात्रतेज का कुछ इस्त्रामी प्रवस्य विद्यमानथा। उन के पितामह महता नारायणसिंह पत्राव के सिक्सकालीन विष्तव के वीर योदा ये और कई सबाभी में घपने हाथ दिखा चुके के। उन्हीं महता नारायणसिंह के पुत्र महता तारासिंह हुए जिन के पुत्र प० क्षेत्रराम का जन्म द सीर चैस सवत् हिश्ध विक्रमी को युक्त के दिन उनत श्रीदपुर ग्राम मे हुन्ना था।

वे बाल्यकाल से ही भग्वुक तथा कार्मिक थे। प्रपने चचाप० गडाराम जी को एकादशी का तत करते हुए देखकर र्वासक लेखराम ने ११ वर्षकी भवस्या में बड़ी अञ्चास एकादशीका तस विधि-पूर्वक रखना भारम्भ कर दिया या। उन को बाल्यकाल मे केवल उर्दुफारसी दी शिक्षा मिखी थी, क्योंकि उस समय पंजाब भीर सयुक्त प्रान्त मे उसी के पढाने की यरिपादी प्रथलित थी । यह शिक्षा प्रामे पसकर अन के मोहम्मदी मत की बाली-चना करके में बहुत सहायक हुई । उन के किराधी-बीवन में केवल बही बाठ उल्लेख होंग्य है कि वे तब भी स्वतन्त्रतात्रिय, इत्तुल्यन्मित तथा तास्कालिक प्रस्युत्तर क्रबीख वे और कविता की धोर भी उनका

सवत १६३२ वि० के पौष मास मे व प्रवने चना पहिता गडाराम इन्स्पेक्टर पुलिस की सहायता से पेद्यावर पुलिस मे

कुछ अकाव था।

सः जेंग्ट के पद पर नियुक्त हो गए। ऊपर बताया जा चुका है कि प० लेखराम के बालहृदय में ही भावुकता तथा वार्विकता का प्रकुर विद्यमान था। धार्मिक सिख सिपाही के सत्सग से उन की प्रवृत्ति पूजा-पाट में किशोरावस्था से ही हो बुकी थी। वे प्रात काल स्नान-च्यान में निमन्न रहत ग्रीर गुरमुक्ती में लिपिबढ भगवद् गीता का पाठ किया करते थ। श्री कृष्णा की मक्ति मे तन्थय रहते थे। जीव ब्रह्म की एकता के विञ्वासी भीर वैराग्य प्रवस्त वे। २१ वर्ष की ग्रवस्था में उन के माता-पिता ने उन को विवाह बन्धन में ग्राबद करना चाहा पर उन्होने अपने वैराग्यवध उस को स्वोकार न किया। उन का अर्थ जिज्ञासा दिन प्रतिदिन बढती ही गई। उन्ही दिनो उन को जुवियाना के प्रसिद्ध स्वतन्त्र विचारक मृशी कन्हैयालाल अलख-धारी के ग्रन्थ पढने का भवसर मिला। ग्रलखबारी जी के ग्रन्थों संउनको ऋषि दयानन्द के बायं वस-प्रचार भीर भायं-समाज की स्थापना का वृत्तान्त ज्ञात हुआ धौर उन्होने डाक द्वारा ऋषि दयानस्य प्रणीत ग्रन्थों को मना कर पढना भारम्भ किया। इससे उनके विचार सर्वधा बदल गण भीर वे भागें बन वए। घटनाकम की कैसी विलक्षण समानता है कि पहित लेखराम जी के समान इन पक्तियों के लेखक का विचारप्रवाह मशी कन्हैयासाल जी अललकारी की पुस्तको द्वारा ही बार्य-समाज धौर उस के धानायं के ग्रन्थों की भौर फिराया, किंतु जुगनृ भौर सूर्य ने क्या साम्य हो सकता है ? पहित लेखराम की सुद्ध और भावुक प्रकृति ने उनको ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से प्रभावित करके धर्मेवीर सार्थे श्रीकड बनादिया और यह चिकना घडा वैसे का वैसा ही विद्यमान है।

वैदिक धर्मावलम्बी बन कर पडित ने लाराम ने सबत् १६३६ वि० के धन्तिम भाग में सीमाप्रान्त के यवन प्राय पेशावर नगर मे भायसमाज की स्वापना की ची। उस समय पेशावर बार्यसमाज के सव-सर्वा वे ही वे । वे धीर उनके चार-पाथ साथियो से ही पेशावर भायसमाज सगठित बा। पडित लेखराम के मन म जीव ब्रह्म की एकता भादि के विषय में कुछ शकाएँ उस समय तक बनी हुई थी। उनकी निवत्ति के सिए उन्होंने बार्यसमाध के सस्थापक्र ऋषि दशनन्द के स्वय दशन करने का निस्थय किया बीर साढे चार वर्ष की नौकरी के परवात् एक शास की खुट्टी लेकर १७ मई सन १८८० 🗫 (स॰ १६३७ वि०) को भ्रज-

मेर पर्ववकर सेठ फतहमल जी की वाटिका मे ठहरे हुए ऋषि दयानन्द के प्रथम और मन्तिम बार दर्शन किए। इस समायम का बुतान्त उन्होने स्वय इस प्रकार दिया

स्वाभी दयानन्द के दर्शन से यात्रा के सब कब्ट विस्मृत हो गए और उन के सत्योपदेश से सब सशय निवृत्त हो गए। उन्होंने महर्षि से उन से अयपुर मे एक बगाली की उपस्थित की हुई यह शका पूछी कि जब भाकाश भीर बहादोनो सर्वें व्यापक हैं तो दो व्यापक एक स्थान पर कैसे यह सकते हैं ? महर्षि दयानन्द ने एक पत्थर उठाकर कहा कि जिस प्रकार इम मे मन्नि, मिट्टी भौर परमात्मा तीनो ब्यापक हैं। उसी प्रकार बह्याण्ड ने बाकाश और बह्य दोनो ब्यापक हैं। सूक्ष्म बस्तु मे उस से भी मुक्ष्मतर वस्तु व्यापक रहती है। बहुत सुरुवतर होने के कारण सर्वध्यापक है। लेक्सराम जी निसन हैं कि इससे मेरी शान्ति हो गई। ' उन्होन महर्षि के धन्य सशय उपस्थित करने की भाजा देन पर उन से उसाप्रकापूछे थे। उनमे से ३ उन्होने उत्तर सहित स्वय निसे है। श्रेष उनको विस्मृत हो गए थे।

१म प्रध्न---जीव ब्रह्म की भिन्नता मे काई वेद का प्रमाण बतलाइए।'

उत्तर-यजुर्वेद ना सारा वालीसवा भव्याय जीव भीर बहाका भेद बतलाता

२य प्रवन — भ्रन्य मतो के मनुष्यो को गुढ करना चाहिए वा नहीं?

उत्तर--- प्रवत्य शृद्ध करना चाहिए? ३य प्रक्त--विजुत् क्या वस्तु है ग्रीर कैंबे उत्पन्न होती है ?

उत्तर-विद्यत सब स्वानी में है धीर रगड से पैदा होती है। बदलो की विद्युत्भी बादलो भीर वायुकी रमद से उत्पन्न होती है।

धन्त मे मूभ धादेश दिवा कि '२५ वर्षकी भ्राष्ट्रसंपूर्व विवाहन करना। ऋषि दयानन्द के स्वत्य सत्सम सं पण्डित लेखराम के भामिक विचार रह हो गए भीर वैदिक धम पर उन का विस्वास चट्टान के समान घटन हा गया।

श्रजमरसे लौट कर उन को दिन रात प्रचार की ही बुन सभी रहती थी। उन्होने पेशावर आयंसमाज की स्रोरसे अपने सम्पादन में धर्मी देशक नामक उर्दकामासिक पत्र जारी कराया। उस के साथ ही मौद्धिक व्याल्यान भी प्राथ दते रहते थे। कुत्र दिनो पश्चात उन की बदली पानिर से बन्य पुलिस स्टेशनों को हो 📢 । उन की घार्मिक लगन के कारश उनके विवर्गी श्रफसर उन से मनोबालिन्य रकाने लगे के। उधर पा लेक्कराम की स्वतन्त्र कारका विगहित स्वकृति (सेवा-वृक्ति) ने विको दिन क्षिम्य हाती जाती भी। अञ्चार्वे उन्होने २४ **बु**जाई सन् १=७४ (ब॰ १६४१ के) की सदा स्मरा**गीय तिथि को पुरिवत** की सेवा से

त्यागपत्र द दिया और उस मे यह भी लिख दिया कि दो महीन की कान्ती सियाद के परचात सुक्त को राकते का अधिकार किसी को भी न होगा। दो महीने पञ्चात १० सितम्बर सन् १८८४ ई० (स० १६३१ वं०) की उन्होन मनुष्यो के दासत्व से सदा के लिए मोक्ष लाभ किया। इस दामत्व श्रवला के कटत ही सार्जेण्ट नखराम, पण्ति लेखराम बन गए। धन वे दिन रात ग्राय धर्म के प्रचार मंश्तरहरून लगे। एक ग्रीर वे वैदिक धम के विराधियों की धाक्षेपपूरा पुस्तकों के उत्तर लिखने में सलग्न रहत ये तो दूसरी घोर मौलिक प्रचारार्थं वराबर पयटन करते रहन थे। इस शहनिका की य त्राके कारण उन का नाम 'भार्य मुसाफिर ग्रार्थयात्रीनाशार्थपथिक प्रसिद्ध हा गया और कार्यं जनता म आय पथिक पण्डित लखराम के नाम से विख्यात हो गए।

उनके लेखबढ़ प्रचार वा पुस्तक प्रणयन का सुकरात उन के मुसलमानी के ग्रहमदिया सम्प्रदाय के प्रवर्तक कावि-यान जिला गुरदासपुर निवासी मिरजा गुनाम प्रहमद कादियानी के साव समय से हुआ। था। उनतं मिरजाने एक पुस्तक बुराहोन ए ब्रहमदिया लिखी वी, जिस मे ब्रायंसमाज पर बडे कटु ब्राक्षेप किए गए थ । प० लेखराम न उन क उत्तर मे धकाटय तकपूण 'तकखीव ब्राहीन ए-श्रहमदिया ग्रन्य लिखा। 'फिर मिरजाने धनुचित धाक्रमणोस परिपूण सुम-ए-चन्म प्रारिया लिखा जिस के उत्तर मे पण्डित लेखराम न युक्तियों के जाल से परिप्रां नुम्ख ए-खात ग्रहमदिया प्रणीत किया। मिरजान घोषणानी यी कि मेरे पास इं वरक दून सदेश लान है भीर में ग्रलोकिक चमत्वार दिवसा नकता*ह* तथाजिस मन्द्यको मृयुके लिए मैं ई वर से प्राप्ताकरूगा वह मनुष्य एक वयको शीतर मर जाएगा। यदि मैं य दानो काय न कर सक तामै कान्यियन बेद्यापके पास रह कर उन की पर्णक्षा करने बाल मनुष्य को २००) मासिक की दर से २४००) दगा। पण्डित लेखराम ने उन के इस ब्राह्मान को स्वीकार कर के उसकी परीक्षा करनी चाही और उस की २४००) जमाकर देन को लिखा किंतु उस ने नानाप्रकारके बहान बना कर टाल दिया। पण्डित ल्लराम ने स्वय कादियान पर्चकर मिण्जासे मौसिक विवाद किया त्रिस मंबह निकलरही गया। जनतामे उस के हेत्वाभासो धौर वामत्कारों की पोल खुल गई धीर उसके बहुत से धनुवावियो पर से उसका प्रभाव चठ गया । मिरजासे पण्टित लेखराम का बहस्त्रव दिन प्रतिदिन प्रतानी नया भ्रोर उसन एसा नयकर रूप घारण किया कि मन्त में पण्डित लेखराम इसी की बलि हो गए। (ক্ষয়)

# आर्य जगत् के समाचार

# कृष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ

नागदा। धायसमाज द्वारा सवालित धायुवदिक वर्गाय घोषवासय के तत्त्वाद-धान में कुरु निवारण बाम का गुभारम्म शहायिह्म ब्रो० कै० एम० वाण्डी राज्य पाल मध्य प्रदेश के कर कमलो द्वारा दिनाक २३ १ ८५ को सम्पन्न हुआ।

हम धवसर पर राज्यपाल महोदय न उपस्थित विश्वाल जन समूह को सम्बोधित करन हुए कहा कि प्रायतमाज के सस्वापक महिष् दवानव्य उपस्थती ने समाज स्थार न लिए महान कानिकारा काय किये हैं उनके ह्यार स्थानिक स्थायसमाज की शा समाज सुधार एव राष्ट्र निर्माण के कार्यों से प्रमुख भूमिका रही। धामुजिक चिन्त्सा पढित का हचारो बया पूत्र हमारे बहा धाविष्कार किया गया था। धामुजिक हे हा पश्चिमी जगत ने ऐलोपयी का धाविष्कार किया। बुधी की बात है कि स्थके महत्य को हम किर से सहस्य करने लगे हैं। हमे इसमे धामुनिक नये तरीके धपना कर रखकी विकास के एय पर धाने बढाता है। कामचेनु धोषचिमों से कुट निवारण में सफलना मिले यही गरी गुन कामना है।

समय से पूज समारोह स्थल पर राज्यपास महोस्य के पवारने से जनता का हृदय गुद्दा हो गया। स्थापन द्वार से कुठ निवारण जास तक कदार से को नहीं बालिकाफ़ी ने सापके सुआपनन पर पुण्य जवा करके स्वापत किया। सन प्रथम साप्तीक प्राप्तने यह वेदी ए हो। रहे यक में पत्र से पुण्य हिंदी। स्वके बाद दीप प्रश्निक तापने यह वेदी ए हो। रहे यक में पत्र से पुण्य हिंदी ही। स्वके बाद दीप प्रश्निक करके क्ष्य दिवार के प्रतिनिधियों ने आसाधी से स्वापत किया। इसके लाख ही स्वापनमान नावरा का भीर से आ वार से आ देवारा के प्रतिनिधियों ने आसाधी से स्वापत किया वाद्व किया के वाद से भी विवार के प्रतिनिधियों ने आपना साह की भीर से श्री क्षयीं भीरवाल ने पुर मालाधी से स्वापत की मालाधी से स्वापत की प्रमुख प्रतिन नावरा की मालाधी से स्वापत किया। कायकम की सम्बन्धना श्री की किया की से की की से से से विवार से स्वापत की मालाधी से स्वापत की स्वापत की स्वापत की से से बी के के तिवारों की प्रमुख पूमिका रही समाराह की मन का प्रता की गई।

प्रयक-जोवसिंह राठौर

म लो-धायसमाज नागदा

### पद्माव केसरी लाला लाजपतराय के सस्परलो का सकलन

# एक निवंदन

प्रात स्वरणीय पवाब केसरी साला लावपतराय का परिचय केने की साथ रयकात हो है। जैसा ज्याविद्व है वे महान् देशमक्त दूरक्षी रावजेता राष्ट्रहित के मवग प्रहुरी न्यंत प्रताप्तायन क अमर सहीर प्रवार विचारक कुरास क्यादि प्रणा लवक सावन्या वक्ता प्रणाताला गियाचारत्री साधिक विकास के प्रवाद प्रणात लवक सावन्या वक्ता प्रगतिसाल गियाचारत्री साधिक विकास के प्रवाद उत्तायक सावन्य वक्ता प्रगतिसाल गियाचारत्री साधिक विकास के अवन उत्तायक सावन्य से। उत्तके सनेक जावन वरित उपल च है जिनम उनके जीवन तथा सवतो मुखी काय कलायो का विनाद विवरण मिवता है। पर उनकी सस्मरण प्रधान काई पुरस्क नहीं मिवती। सदस्यरण अविन के अस्तित्य तथा चरित्र की मुक्त तथा स्वरत्य विगेवतासों को उद्

में ताला लाजपतराय के सस्यरण सकतन के काय से गठ धनक वथा से सवा हुणा हूं तथा इस काय से पर्याप्त सफ्तता भी मिली है। देश जिदेश क जगजग है ३० व्यक्तियों के सम्प्ररण प्रधान लेल प्राप्त हो चुक है। मस्मरण लिकने के दे हैं पर्याक्तिक का हो सकते हैं जितका लाला जी सा व्यक्तियत सम्प्रक रहा हो—यह सम्प्रक निक्र का रहा हो प्यथा हुए का—जिस्होन उनक सालिक्य से यहते हुए उन्हें देशा सम्प्रक हो बिन महानुभावों से लाला जी का सम्प्रक रहा हो उनसे मेरा विनम्न धामह है कि के प्रपात सम्परण प्रधान लेल मेजने का कप्ट कर। उन महानुभावों क नाम तथा पत की सुचना क लिए भी निवेदन है जो लाला जी क विषय से व्यक्तियत खानकारी

स्राशा है पजाब कसरा की स्मृति से सर्मापंत इस पुनीत कार्व से सब सज्बसों का सहय तथा पूज सहयोग प्राप्त होगा।

### विच्छा शरर

एस १७५ कोटरा सुसतानाबाद भोपास ४६२-००३

### बलवीर हकीकत राय को याद किया गया

ह्यायस्थान गरिंदर स्थू नीती नगर ने वनधीर बान हकीक राय का विवास विवस वड समारीहपूतक मनाया नया। धनेक त्कूत क खात्र छात्राधी ने मायस्य कविता नाटर एव सामृहिक नान में भाग लेकर विवासी नीर क कार्यों को स्वरस्य

इस अवसर पर बानवीर महाशय बमपास की ने सगक्षा १५०० र० क पारि-तोषिक सिल्वर शीस्त्र कप मे तथा बहुत सी क्षानवचक पुस्तकें विजयी खासखात्रामी को प्रदान की।

> तीयराम थाय सयोजक---धमवीर नाल हक्षीकतः राय नलिदान समिति ।

# आर्यसमाज दरियागज का निर्वाचन

घायसमाज दरियागज नई लिल्ली २ का वाधिक चुनाव विनाक १० २ ८५ में विविचत् सम्पन हुआ जिसमें निम्न धविकारीमश सब सम्मति से चुने गये ।

- १ श्री बी० बी० सिंहल-प्रधान
- २ वी बमपाल गुप्ता-उपप्रधान
- ३ की एस एम मटनावर
- ४ श्री वीरेन्द्रपाल इस्तगी-मत्री
- ५ श्री दत्त बादव द्याय उपमत्री

स्रातरक सदस्यों क चुनने का अधिकार अधिकारी वय को संगाने प्रदान किसा।

मन्त्री आयश्चमाज दरियागव नगदिल्ली २

# सीताष्टमी एवम् ऋषिबोधोत्सव

प्रातीय भाग महिला सभा कतत्त्वावधान में भाग कत्या गुरुकूत न्यू राज्ये नगर में २७ फरवरी को प्रात ११ ३० वजे में ४ ३० तक श्रीमती शांतिदवी सिलिहोत्त्री की अध्यक्षता में समारोहपूबक मनाया जा रहा है।

इस प्रवस्त पर श्रीमती सुम्हा वर्मी श्रीमती पद्मा समें साविका (मेर्ड), इस सिंह प्रमा श्रीमती सुप्ता मन्द्रोगा प्रादि प्रपने प्रायक एव कविका पाट करेंने। अथाना न्दरका महिला मिकलो—प्रकास सार्वा

बन्तर्राष्ट्रीय युवा नय पर फुन्बाल दुर्नामेन्ट का ब्रभूतपूर्व बायोजन नेता जी सुभाष शाखा प्रथम, भगतसिंह शाखा ब्रितीयः सर्वोत्तम खिलाडी का

पुरस्कार त्राशे थाज ने जीता



केन्द्रीय धाय पुनक परिषद् दिल्ली प्रदेग के तत्वाधान से युना वन के उप-लक्ष्य से मस्तुतन्त्र दिवस पर २६ व २७ जनवरी - ४ को छ्रतशाल स्टीवयम माइक्स टाउन दिल्ली से फुटवाल पुकावलो का धायोजन किया गया। परिषद् की साझावर्षी के इस आयोजन से २२ टीमो ने भाव लिया जिस में नेता जी मुक्षाय शाला राती बाग प्रवस्त व विकान्त नगर की सगस शाला दिसीय सणा गुवत सहादुर नगर का सीसरा स्वान रहा।

इस के सर्तिरिक्त स्वोस पुरी जहांगीर पुरी किश्वनाथ ऋषि नवर, पूर्वी चिननर सम्बीसम्बी तमस्य पुर वादसी की टीमो ने मान निया। प्रथम ग्रिडीम शासा को शील्य तथा विक्ताबियों को सेटल दिए गए। सर्वोत्तम विकासी भी माई बात विकाल नगर को कुटबाल वेलता विकासी के प्रतीक विज्ञ से विवेष पुरस्कृति विकासमा गुरुकुल कागडी पुस्तकालय (क्षेत्र पृथ्ठ = का)

प्रकाशित सामग्री की वानकारी निम्न शन्दर्भ स्रोतों से दी वा रही है।

(क) प्रविकास विषयो में घन्तर्रा-ब्टोब सार सक्षेप पत्रिकाएँ मनवाई जा रही हैं जो उन उन निषयों ने प्रकाशित सामग्री का सार सक्षेप प्रस्तुत करती हैं। वैसे साइक्लोजिकम एम्सट्टब्ट मासिक-बनोविज्ञान की ५००० पविकामी का क्षार सकतन प्रस्तुत करती हैं। पिलीकस रिक्यू एव्सट्टर, भौतिक विज्ञान की १००० विकामो का सार प्रस्तुत करती है। विवर्देशन एब्सट्रक्ट कला एव विज्ञान में विभिन्न विष्वविद्यालयों में स्वीकृत त्रह्येक पाक्षिक सक मे १५०० शोध कार्यो कासार सक्षेप दिया जाता है। इसी ब्रकार कन्टेन्ट कस्टैन्स के नाम से साप्ता हिक पत्रिका में कॅला एव विज्ञान की ३०० धन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाधी की विषय सूचिया दी जाती हैं। मैथमैटिकस रिब्यू के द्वारा गणित के विषय में प्रकाशित ⊿चिकाश साहित्यका सार सक्षेपसक-किन किया जाता है। ये सब पत्रिका सदम ग्रन्थ पुस्तकालय में सदमं हेतु हर शबय विद्यमान रहते हैं।

(स) बहुवा प्राप्यापकों को 'सम्बर्ग्स इन्टरनेशनक विरियोजिकस्य' निर्देशका के माध्यम ने यह जानकारी मी प्रतिकार की वाती है कि उन के विश्य मे पितका 'साहित्य कहा कहा से किस तरह का निकस रहा है। मारतीय पत्रिकामों की जानकारी प्राप्यापकों की कायरेस्टरी माफ इन्टियन पिरियोजिकल एव प्रेस एक एडवरटाईकर वाधिक निर्देशिका के ब्राया वी जाती है।

६ बंदिक सिद्धाल्तो की गुष्ठपोषित करने काले प्रमाखो की प्रवितस्य चान-कारी बेना—गुरुकुम पुस्तकालय का प्रचान सच्य गुरुकुक के स्थापना पूरयो से जुडा हुआ है। बहुचा यहा पदने वाले

त्रों मे तथा प्राध्यापको मे वैदिक सिद्धान्त्ये के सदभ जानने की जिज्ञासा पहती हैं। इस बब्दि से पुस्तकालय के रूप से हम ने यहां केनन शाफ नेमोनिक्स का सर्वेषा नवीन प्रयोग किया। उस के र्मार्गत विद्यार्थी काल में लेखक के द्वारा माद किए गए लगभग १००० वेद मन्त्र एव दर्शन सूत्रीया सवयन किया गयाजिने वर्गीस्थतः विवयानुसार बाटा गया । बहुषा भी भी जिज्ञासु इक्षत्र वैदिक सिद्धान्तापर प्रमास बानना चाहे उस याद किए गए मन्त्री आग उदबाट्य तथा सदभ विना किसी विलम्ब के दे दिया जाता है। इस प्रकार की सदर्भ सेवामे सदन कर्ताका वैदिक बाहमय में गहरी पैठ होना भाव श्यक है यह एक सर्वया नवीन प्रयोग है तया मुदकुल पुस्तकालय के पुस्तकालया-म्यक्ष की हैसियत से से**सक इस** का किया-जबन तदर्ज सेवा वें कर रहा है। इस

प्रकार की एकेश्वरकाद पुनर्बन्म जैत-वाद, मूर्तिपूजा, कर्म फस मोखा, बोडचा सस्कार खादि के बारे ने तुरन्त सबर्म दिए जाते हैं।

गुण्कूल प्रकाशन सदय थेवा— गुण्कुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा शोक एव प्रमाशन के बेद में यह ८० वर्षों में बना मारी कामें हुमा है। सिकाश लोगों को इस की जानकारी न होने से उन्हें गुण्कुल साहित्य के शेन में योगदान नयण दिक्तार एवता है। बाहर के बिदानों के तथा गुण्कुल के खानो एन प्रमाण्यालयों को भी बहा के प्रकाशनों एव शोब प्रमृत्तियों की जानकारी सब निम्म प्रकार से उपलब्ध कराई था रही है।

रै पुस्तनालय के द्वारा गुरुकुल विश्व-विश्वालय के समस्त शोष एव प्रकाशन कार्यों को एकीकुत कर दिया गया है। जिस क धन्तर्यत निम्न सुबनाएँ गठको तथा जिसासु शोष खालों को एक ही प्रकाशन में उपलब्ध हो जार्येगी।

(क) गुरुकुल के स्नातको द्वारा प्रका-धित प्रमुख साहित्य।

(स) गुरुकुम के द्वारा प्रकाशित सम्पूण साहित्य की जानकारी।

(ग) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित अग्रेजी साहित्य की जानकारी।

(घ) गुरुकुल द्वारा स्वीकृत पी० एच० बी० शोध प्रवन्त्रों की सूची। (ज) शोध कार्य प्रगति मे।

(स) गुरुकृत में स्वीकृत शोध उप-कम।

(ट) गुरुकुल के प्राध्यापको के प्रकाशन ।

(ठ) गुरुकुल खात्रो की ह्स्तिसिखत पत्रिकाएँ। पुन्तकालय में उपभव्य उपयुक्त सम्प्रण साहित्य का पृथक समह गुरुकुल स्नातक प्रकाशन सम्रह के नाम से बनाया

गवाहै। ग्रन्थ १ मोनियर विलियम्स एस० ए० सस्कृत इमलिश दिक्शनरी १८६९ पृ०

११४३। २ वामर जे० रेफरेन्स वर्कं '१६३० पुरुषा

३ रगानायन एस० झार० रेफरेन्स सर्विस एण्डह्यूमनिज्म १६०४, पृ०३३।

४ विंबन सी० एम० साइड टू रेफरेन्स बुक्स पु०३७ एडीश्चन सप्तम।

# वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महिष दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशको-

सत्यपान पथिक आमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूच सोहनलाल पथिक, शिवराजवती जी व सर्वोत्तम भजना व कसटम तथा

प बुद्धदय यिद्यालकार के भजनों के सम्रह । आय सुमाज के अन्य भी बर्त संकसटस के सचीपत्र के लिए लिख

कुन्द्रोत्वर्षेम इनेन्द्रानिक्स (इण्डिया) जा लि कुन्द्रोत्वर्षेम इनेन्द्रानिक्स (इण्डिया) जा लि 14 मकिट || फस || अशाक विहार दहली 52 फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट समा कार्यालय १५ हनुम न् रोड पर भी उपलब्ध हैं।





# आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले

साप्ताहिक वार्यसन्वेश १५ इनमान रोड, नई दिस्सी-१

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ६० के ग्रनगंत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीझार्डर/बैक डाफ्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रायं धर्मार्थं नेत्र चिकित्सालय. बी-१ जनकपुरी, नई-दिख्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर पर अकित किए जाएगे।

### निवेदक

सूर्यदेव महाशय वर्मपाल स्रोमप्रकाश सार्य रामगोपाल शालवाले सरक्षक चिकित्सालय प्रधान विल्ली प्रधान क्रमी ब्रायं प्रतिनिधि ब्रायं केन्द्रीय महाशय बुन्नीलाल एव प्रधान, सा० ग्रा० प्रति० सभा सभा सभा सौजन्य से महाशियाँ दी हट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीतिनगर

ग्रीद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका के ग्राहक बने, ग्रीर बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका-(१) वैदिक मान्यताभी को उजागर करती है।

- (२) भार्यों (हिन्दभो) की महान परम्पराभो की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से झारम चेतना जागूत-
- (४) भारतीय संस्कृति के भूले विसरे प्रसंगी, महापुरुषी तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (x) ऋषि मूनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वासी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वागी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।
- (७) नये लेखको कवियो चिन्तको, प्रतिमाशाली विद्वानो, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (c) धार्मिक, सामाजिक धौर बाघ्यारिमक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सन्, भारण्यक, बाह्मणप्रन्य गोता रामायण, नोति, ऐतिहासिक, अमल्य भार्ष ग्रन्थो. जिन को श्रधिकाका लोगो ने पढा तो क्या देखा भी नहीं समस्त भाष्यारिमक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर भापकी भजली सभी भर देती है।
- (१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में धनेक विशेषाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वास शताब्दी पर प्रकाशित ४० रुपये मूल्य की जन्म मनोहारी स्मा-रिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक भार्व सन्देश

२४ फरवरी, १६८४

स्वास्थ्य कांगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारमाय. चावडी बाजार, दिल्ली-६ फोन . २६६८३८



# कुण्यन्तो विश्वमधीन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

क्षम एक प्रति ४० पैसे

बण २ सक १४

रविवार, ३ मार्च, ११८३

बार्यं सबस्सर ११६०८५३०८४

फाल्गून २०४१

दयान-वाब्द --- १६०

# आयसमाज

रामगोपाल शालवाले

२४ अनवरी रविवार को प्रार्थ समाज मन्दिर नागयसा विहार, दिल्ली का उदघाटन करते "ए सार्व-देशिक बार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा-बैदिक बर्म भीर संस्कृति की रक्षा के लिए तथा माने वाली पोढी को सस्कारित करने के लिए देश के कोने-कोने मे आर्थसमाज मन्दिरो का निर्माता झाबदयक है। विद्व में सम स्थाएँ बढ रही हैं, मानवता का ह्यास हो रहा है, प्रकान्ति के घरे बढ़ रहे हैं । भाज भावश्यकता है ऋषि दयानन्द के सैनिको और अन्यायियो की जो ससार में प्रम व्यार ग्रीर सेवा सहयोग का दीपक जलाय । ऋषि दयानन्द के मन्देश की घर-घर मे सनाने की भाज नितान भावश्यकता हैं। उन्होते बाह्यान करते हुए कहा-आधो हम अपने तच्छ स्वार्थ और धीर द्रष भाव से ऊपर उठकर धार्य-समाज के मिशन को और भी भागे बढाय । श्री शालवाले ने झार्यसमाज नारायणा विहार के कार्यकर्ताको एव

सहयोगियो की भव्य भवन एव सन्दर यज्ञशाला बनाने पर प्रशमा की।

इम मन्य यज्ञशाला का उदघाटा श्रीपाद स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। इस अवसर पर श्रीस्वामी विद्यानन्द जी प० शिवकूमार शास्त्री एव प० सच्चिदानन्द शास्त्री भी उपस्थित थे। धार्यसमाज ना ।यगा। विहार के उदघाटन के भवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी जिनका नेतृव दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुनदेव ने किया। इस अवसर पर अनेक बसी, टेम्पुक्षो श्रीर पैदल स्त्री पुरको तथा सस्याओं के छात्र छात्राधी ने बढ चढ क भागलिया।

# श्रद्धानन्द जन्म-दिवस

दिल्ली नगर निगम द्वार आयो जिन स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवम समारोहपूर्वक मनाया गया अवसर पर महापौर श्री महेन्द्रसिह साथी ने कहा—भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास पर जब हम दब्टि डा नते हैं तो भायसमाज हमें हर कोने पर स्रवादिस्वाई देता है। त्सनी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को ग्रष्ट्रन एव दलिनोद्धारक तथा भारतीय स्वतन्त्रता सग्रामका महान् योदा बनाया ।

दिल्ली गार्थ प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्यदेव ने उदबोधन करत हए कहा-स्वामी श्रद्धानन्द समय को चुनौतीका प्रवल जवाव थे। श्रयजी साम्राज्य के काल में भारतीय शिक्षा भौर सम्यता की मजाक उडाई जाती थी। ऐसे चुनौनीपूर्णवातावरशामे उन्होने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना कर ससार को धाइचर्य-चिकत कर दिया। उन्होने इस

२४ फरवरी, रविवार, धार्यसमाज कीर्तिनगर के वार्षिकोत्यव पर बोलते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने गी-रक्षा की भ्रपनी माग को दोहराते हुए कहा- भारत सरकार को गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू करना चाहिए। गी को राष्ट्रीय पशु घोषित करना चाहिए। उन्होने उपस्थित जनसमूह को बाद दिलाते हुए कहा

प्रगाली में प्राचीन जात-विज्ञान से लेकर ब्राचुनिकतम विज्ञान, तकनीकी नथा भौतिक ग्रभौतिक विद्या विज्ञान को ग्रपनामा अग्रज परकार हैरान थी कि वैसे एक वियाबान जगल मे िना किमा सरकारी सहायता के इतना बाकार्य किया जारहा है।

उन्होंने कहा-स्वामी श्रद्धानन्द का जावन एक दिशामे नही सर्वा-द्वोग् दिवाई पन्ना है। वं अनाथ रक्षक दलिनोद्धारकव श्रष्ठतोद्धारक. हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक, एक नपस्वी पत्रकार-शिक्षक के रूप मे भी दिचाई प-ते हैं।

### बार्यसमाब बनकपुरी

धार्यसमाज जनकपूरी बी ब्लाक मे भी स्वामी श्रद्धानन्द जन्म दिवस मनाया गया । इस ग्रवसर पर महाशय धर्मपाल ने ध्वजारोहरा किया तथा भनेक विद्वानी ने स्वामी श्रद्धानन्द को प्रपनी श्रद्धाजलि धर्पिन

# गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

कि गत वर्षकीर्निनगर मही एक मार की फबट्टी के विराध म ग्रार्थ-समाज ने काय किया था भौर हम अपने उदृश्य में सफल हुए थे। ग्राज हमे भ्रपनी यह माग भीर भी जा दार शब्दों में उठानी चाहिए। साथ ही हमें गोपालन के लिए भी हर सम्भव सहयोग देना चाहिए।

# ये आवाज कहां से ग्राई !

बोये बीज फूट के किसने वैर की ज्वाला ये भडकाई। जहर जोलने वालों की यह प्रावाज नहां से बाई।।

> माई-भाई हम सदिमी से वे एक ही मा के बेटै। किसने आकर हम सब की ये दौलठ बाज लुटाई ।।

हर मुश्किल ने सदायहा हम निम जुल के रहते ने। सन्तो की विका तक को, है विसने बाज भूलाई ॥

> क्यो खाया ये सन्ताटा क्यो सहसी रातें। क्यो सामोश हर स्वर है यहा वजती वी शहनाई॥

सवा सम्मान रहा यहां पर हमारी इन माता बहनो का। हैं किसने कुकर्म किये थे, यह किसने जूट मबाई।।

सुख के सातिर जापस में हम सब रक्सें माईवारा। चीवन के हर क्षेत्र से भावों ! हम दूर करें बुराई ॥

सब का मन दुलताहै हर बरवादी के कारण। फ़ुट परस्ती की बातें ये कब किस की यहाँ सुहाई।।

> —हम रखें नजर ऐसी पर, को धर मे ग्राम समाते। श्चन कोई भी कम हमाराना 'रिषम हो दुवादाई।।

> > — मोहनसाम शर्मा "दरिम" फीलैंग्ड गब-बाहोद ।

### वाटिका सत्संग

# पाप-निवारण

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

त्व हि विश्वतोमुख विश्वत परिभूरिस । ग्राप न

ज्ञ**डवार्थं** — हे (विज्वतोम् व ) मर्वद्रप्टा भीर सब ग्रोर ने उपदेश करने वाले प्रभी। (हि) क्योकि (त्वम्) तू (विश्वत ) सव स्रोर चारी स्रोर (परिसू) परिस्थाप्त (श्वास) है श्वन (न) हमारे (श्रवम्) पाप को (बपभो पुचद्) जलाकर भस्य कर दे नष्टकर दे।

बवास्या -- मन्त्र मे ए ह ही उपदेश है, परन्तु है भत्यन्त उपयोगी भौर कल्याण-कारी । इस दिव्य उपदेश पर विन्तन ग्रीर मनन कीजिए---

स्रप न शोशुचयसम्।

प्रभो<sup>।</sup> हमारे पाप को जल। कर भस्म

पाप एक रोग है भीर यह गारीरिक रोगो से प्रधिक भयकर है। यह रोग मनुष्य को निवन बनाकर बुद्धि को नप्ट-अब्द कर देता है। पापी को सुख की प्राप्ति नहीं होती । महर्षि मनुकहने हैं---

> ब्रवामिको नरो यो हि यस्य चाप्यनृत वनमा हिंसारतक्व यो नित्य नेहासी सुस्रमेधते ॥ --- मनु० ४ । १७०

जो मनुष्य धवानिक है, जिसका बन

पाप के द्वारा उपाजित है जो नदा दूसरो की सताता रहता है, वह इस लोक में सुस्ती नही होना फलना और फूलता नही। नाथमंदचरितो लोके सद्य फलति गौरिव। श्चनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्म्लानि कुन्तति।। यवि नात्मनि पुत्रेषुन चेत्पुत्रेषु नप्तृषु। न त्वेब तु कुनोऽधम कर्तुभवति निष्फल ।। —मनु० ४। १७२-१७३

भ्रनुत्टान किया हुमा भ्रषम लोक मे गी-प्रिवी के सदश तत्काल फल नही देता। जैसे पृथिवी बोने ही फल नहीं देती किन्तु घीरे-घीरे फ्लोन्मुख होती है वैस ही पापकर्मभी नत्काल ही फल नही लाता किन्तुर्ध।रे-धीरे पुष्ट हाना त्रमा प्रन्तन पापकता की जड़ी को कार नेता है।

यदि पाप काफ्लम्बय का नहीं मिलनातो पुत्रो को मिलना हे यदि पुत्री अन्य केन प्रयुक्तोऽय पाप वरति पूरव । को भी नही मिलता तो पौत्रो और प्रपौत्रो छनिच्छन्नपि बाव्लॉय बलादिव निघोजित ।। मे भवा प्रतिलता है। किया हुन्ना भवम कभी भी निप्तल नहीं होता।

न्स त्रिपय मे एक सुन्दर स्टान्त है। एक स्हिप्यास मध्याकृत था। पानी पीने 🗣 लिए वह एक नदी मे प्रविष्ट हुआ।।

उसकी प्यास तो बुभी, परन्तु वह कीचड मे फस गया। बहुत जोर लगाया परन्तु निकल न सका। प्यास दूर हुई प्रव भूस सताने समी । तीन दिन पश्वात् एक मीवड उधर से निकला। शेर ने कहा--"मेरे पास तेरे पिताका एक सन्देश है, उसे सून जा। 'गीदह बोला - नुमें तेरे पास माने से डर लगता है तूदूर से श्री कह दे। शेर ने कहा-'तेरा पिता और नेरा पिता दोनो मित्र वे घत मुक्त से तुके कोई हानि नही होगी। तुमेरे निकट ग्रा। मैं तेरी पीठ पर हाच फेरकर तेरे पिता का सन्देश नुके सुनाऊना। यदि में तेरे लाव बुरा करू तो मेरी सन्तान के बागे बाये।" मीदह भारवस्त होकर कुछ मागे बढ गया। जेर ने भपनी सारी शक्ति लगाकर एक छलान लगाई परन्तु गीवड तक पटुंचने से पूर एक ठ्ठ पर जा विरा, उसकी बाते निकल बाई। जेर की यह दशा देख गीदड मुस्कराता हुमा मागे बढा। शेर ने पूछा, 'स्रोगीदड<sup>ा</sup> बदि तुमे पता हो तो बह बतादे कि मैंने तो सन्तान पर भाने की बात वही थी मुक्ते यह फरा क्यो मिला।" गीदक ने उत्तर दिया - यह तो तेरे बाप न जो कसम लाई बी उसका फल मिला है तेरी कसम नरी सन्तान के आगे

पाप का पल तो भोगवा ही पडता है, ग्रत पापो न बचने का प्रयत्न करना बाहिए। परन्तु धौषष सोचन से पूर्व मनुष्य पाप क्यो करता है, यह जानना भी ग्रावश्यक है।

वाप का कारण क्या है ? ईसाई और मुसलमानी न जैतान की करनना की हुई है। वही सारे पाप कराता है। यदि शैनान ही पाप कराता है नो रण्ड भी उस ही मिलना चाहिए। वस्पुत यह एक मिथ्या कस्पना है।

मनुष्य कम करने से स्वतन्त्र है। वह जो कुछ चाहना <sup>के</sup> करना है। ग्रपनी कर्म-स्वतन्त्रना से ही वह पाप मे प्रवन होता है। गीन में इस विषय वर उत्तम प्रकान डाला गया है। ग्रर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा---

—गीला०३।३६

ह बाध्यों य<sup>ा</sup> यह मनुष्य इच्छा न होते हए भी जबरदस्ती से, दबाकर जोता गयाया किसकी प्रेरणा से पाप करता है? र्श्र कृष्ण ने उत्तर दिया---

-- श्रवर्व० ४। ३३।४ काम एव कोच एव रजोपुरसस्युद्भवः।

महाज्ञनो महापाप्ता विद्ववेनविह वैरिलम् ।। गीसा० ३। ३७ रबोगुण से उत्पन्न, बहुत धाविक

साने वासा, महापापी काम भीर कोच ही मन्ध्य को पाप में लीवते हैं - ये ही बस्तुत शत्रु हैं।

महाशारत में लोश को भी पाप का कारण बताया गया है-

पापानां विद्वयविष्ठान सोमनेव द्विबोसम्।। सुक्याः पाव व्यवस्यन्ति नरा नातिबहुश्रुता । — महा० वन० २०७। ४०

हे दिजोत्तम ! सोभ को ही पापी का घर जानो । जिन्होंने शास्त्रो का बहुत श्रवण नहीं किया है, ऐसे लोभी मनुष्य ही पाप करने का विचार करते हैं।

रोग का निदान। अन इसकी भौपणि बोजनी बाहिए। ईसाई वहते हैं कि ईसा पर ईमान लाने से, मुसलमान कहते हैं हजरत मोहम्मद पर ईमान साने से धौर पौराणिक कहते हैं गया मे बुबकी सगाने से पाप नष्ट हो जाते हैं परन्तु ये बातें तक भीर युक्ति विरुद्ध हैं। भार्ष ग्रन्थों में पाप से बचने के उपाय निम्नक्य में बताये वये हैं —

क्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन 🖣 । वापक्रुन्मुक्यते वायात् तथा बानेन बायबि ।। — मनु० ११। २२७

भपने पाप को सर्वशासारण मे प्रकट करने से, पश्वात्ताप करने से कठिन तपश्वरण से वेदाब्ययन जपादि से ग्रीर बापित में पड़े हुए व्यक्तियों को दान देने से पापी मनुष्य वाप से छूट बाता है।

ये वाच उपाय है जिनसे पाप में फैसा हुआ व्यक्ति पाप के संस्कारों से बंब आता है और उसकी भगली पाप।रिमका वृत्ति नष्ट हो जाती है। उसकी वृत्ति का युक्त पार महरकर धर्मकी स्रोर मुख जाता है। धाडए, तनिक एक-एक उराय पर विवार करे।

१ क्यापन — मैंन यह बुरा कम किया है, इस प्रकार अपने मुख क्ष प्रपने पाप के कथन करने का नाम 'ल्यापन' है। मनुष्य पाप को बुरा समम्ता है, अन उस खिपाने का प्रयत्न करता है जिससे दूस रोकी दृष्टि में बहु घृणाका पाण्य न वने। यदि मनुष्य पाप को द्वापने मुख से स्वीकार कर ले तो उसका झात्मा पाप से बचने का अयरन करता है, क्योंकि वह समभता है कि मुमे पाप को खिपाना तो

है नहीं फिर मैं पाप कर्म को छोड क्यों न र्व<sup>?</sup> विद्वार्मों के समक्ष धपने पाप को स्वीकार करना और एकात मे परमारमा के समक्ष प्रपने पापी का कथन करना और उनसे सुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करना पाप से बचने का हेत् है।

२ अनुताय-परचाताप से भी मनुष्य पापी से क्यता है। पाप करके सन्तप्त होने से [शीक ! मैंने प्रमाद से बह क्या कुकमं किया है, इस प्रकार मालक क्षेत्र से ] मनुष्य पापो से वच जाता है। 'फिर ऐसा नहीं करूंगा'—इस प्रकार व्यतिज्ञा द्वारा वह पवित्र होता है।

ग्रपने दुष्क्रस्यों पर पश्चालाप या अनुताय करना कितना मधुमय है <sup>।</sup> पश्चात् का बर्व है बाद। 'बनु' का भी बही बर्व है। ताप का धर्व है उच्छाता, वर्मी। बनुताप भीर परवात्ताप-इन दो शब्दों से ही प्रवीत होता है मानी शुद्ध, स्वञ्छ, स्वर्णमधी हार्दिक भावना अपने दश्करवाँ के कारण बन्दी हो गई है और वह एक बनती हुई तापपूर्ण श्ट्री के समान विश्व-मान है। अब 'सनुताप' पाणी, बुल्कुत्यों के परचात् होन वाला यह ताय---पूर्वकृतः कर्मों को भस्मी भूत करके उस धारमा को सुम्दर एव निर्मेशरूप प्रदान करेगा।

भनुताय से मनुष्य कैसे पवित्र ही काला है, इस विषय में एक भारूवाविका

एक मुमुक्षु वीस्तित होने के फिल्ए कवीर के पास गया । दीक्षा देने से पूर्व कवीर जी ने कहा---

तुंबी गरके लाना पुरु ने संगःवी। पहले बक्त तु पटनी लाना, नदी ताल के पास न जाना। कूंबा बाबली स्रोड़ के लाना तुबी भर के लाना रे। तूबी मर के लागा रे, बेटा ! गुरुने मर के मगाबी।

कैसा अमूल्य जल मेंगवाया है। कुछा, नदी, ताल, तलीया भील, पोक्रार का जल नहीं। उन्हें उस जल से क्या कास <sup>9</sup> गुरुका भाव था— "पुत्र <sup>†</sup> तुमः **प्राच मुक्तसे दीक्षा क्षेत्रे धाये हो परन्तु क्या** तुम नही जानने कि तुम पर धावरशा पका हुबा है। अपने कुकर्मी पर जब तक तुम परवालाप नहीं करते तब तक मैं तुम्हें बीक्षा नहीं दे सकता। तुम सनुताप करो। अपने पापी के लिए इतना अनुताप करी, इतनारो दो कि तुम्हारे नेत्रों के जल से यहत्वाभर जाए।

वेद मे कहा है-

इवमापः प्र बहुत यरिक च दुरितं शबि । यहाहमभिकुत्रोह यहा क्षेप उतान्तम्।। ऋ० १० । १ । व

हेजलो <sup>!</sup> मेरे गरीर भीर मन में जो दुष्प्रभाव, दुष्ट इच्छा, वासना या मसिन (क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

### सम्पादकीय

# आर्थ सन्देश

# प्रकृति का महोत्सव

भारत देश अपनी गरिसामयी परम्पराम्नो से, धाष्यारिमक सम्पदाचो से, सस्कृति सम्पता की विशेषताम्नो से सम्पन्न रहा है। इन्हीं विशेषताम्नो में एक विश्वेषना है हहा के पूर्व (प्योहार)। ससार के सभी वर्ग सम्प्रदाय एव जातियों में भीर देशों में कोई न कोई दिन नियत है जब वे धपने समन्त दुख दर्ष युला कर उत्सव मनाते हैं। व्यक्ति विशाद घवसाद में चिरा न रहे एक ही रस में वह लिन्न न हो जाये, वह जीवन के समस्त रगो रस्तो का स्वाद ले सके दगी घारणा को हो लेकर सम्भवत हमारे पूर्वजों ने पर्वों की सरवना को थी। समस्त विश्व में सब से प्रथिक पर्व मारत में ही मनाये जाते हैं।

वसन्त ऋतुका आगमन हो गया है। नौ रसो से रसित नव रगो के परिचानों से विभूषित प्रकृति अपनी नाटय कला का समस्त अुवन से परिचय दे रही है।

सेम्बल की केंची-केंची डालियो पर खिलते लाल-लाल फुल, बेत मे फुलती पीलो-पोली सरसो,बागो में महकती धमराई वन की कटीली फाडियो में सजे फुलों के गुच्छे, शुष्क वृक्षों की चोटियों से निकलते अकुर पर्वत की उजाडी भू खला पर उगती हरी-हरी वास भीर ऊँचे शिखर से धरती के सीने पर गिरता गर्जता भरना, मचलती इठलाती नदियों की निर्मल घारा, बासों के ऋरमूट से जाती पपीहे के मधुर रागिनी, कीयल और बुलबुली की कुक से गुँजते उपवन यह महोत्सव है उस परम विघाना को सुष्टि का, जो महोत्सव श्चविराम चल रहा है। हर ऋतु मोहक उत्सव लेकर ग्राती है और कह कर जाती है मानव क्यों तू निराश है, उठ । उत्सव मना गुनगुना खिलखिला ऋम ऋम कर उस परमें भानन्ददाता के गीत गा। जब प्रकृति में उत्सव है फिर मानव जीवन मे पर्वों का, उत्सवों का उल्लास क्यों न हो, ऐसा ही एक उल्लास है होली। जी हा, होली जो यज्ञ का अपभ्र श है। नवीन फमल के झागमन की लुशी का महोत्सव है। समस्त भेद माव भुलाकर गले मिलकर एक हो जाना और सानन्द सिन्धू में हुव जाना इसका सन्देश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया था — उत्सव अमार जाति धानन्द अमार गोत्र। उत्सव ही हमारी जाति है और मानन्द ही हमारा गीत्र है। सब कुछ भूलकर मानन्द-उत्सव में मस्त हो जाना पर्व है।

वेद में कहा है—हसा मुद हसा मृत । प्रसन्नता में मूम भौर हसते-नावते जीवनयापन कर। जीवन में समस्याए हैं कठिनाइया भी है परन्तु उन्हीं से दुं जी होते रहने से जीवन कुछुम मुरफा जाता है।

इस ऋतु में गेहूं चना, सटर, सरसो, जी झादि के पकने की दशा में यह पर्व मताया जाता है। रूस में फसल काटने पर किसान अपने समें सम्बन्धियों एवं मित्रों को दावत देकर उत्सव मनाते हैं। जापान में पान की फसल कटने पर उत्सव मनाते हैं। जावल को रोटिया एवं मादक इत्यों से झानस्य मनाते हैं। इङ्गतंगड में पील (May Pole) का उत्सव मनाया जाता है। योरीप में (St Valentines day) सेन्ट वैसन्टाइन का विवस मनाया जाता है।

इस प्रकाद की उत्सव परम्परा होती भी है। परन्तु काज यह पर्व वडा विकृत रूप ने चुका है। ग्रसम्य भीर भिष्ट वनकर राफकना, गरीबों के एक दो मात्र यस्त्र को राय देकर वेकार कर देगा तथा गोवर, कीचड, तेजाव, रेत भ्रादि प्रमत्त होकर फेक देगा मनुष्यता से नीचे गिरना है। होती के वक्ते भाग, शराव पीकर क्रवम मचाने वालों ने भी सन्दा कर दिया है।

रग की घाड मे प्रश्लीलता भी हैय है। हमारी सस्कृति मे माभी

भादि को माना की दिष्ट से देवा जाता है उन के नाथ अभद्रता का व्यव-हार होलों की भ्रान्त केर करना स्रवस्ता है। सभी सम्य ज्ञों को ये दोष दूर करने का प्रयन्त करना चाहिए। हर नौजवा को अपनी हिम्मत भौर क्षानिस से दीन दु लिया के स्रासु पोछ नक्षियों के फ्रन खिलाने ज्ला चाहिए। ''ओख'ने सचकहा है—

नवीन युगके उपासना की श्रीभलाषा की नुम्ने कसन है तू श्रव नये विचारा के भगवान पैदा कर। बहार में तो जमीन से ही बहार उग श्राती है, गर तू मर्द है तो खिजा में बहार पदा कर।।

- यशपाल सुधाशु

# अपने पाठकों से

आप पाठकों के अनेक पत्र प्रति सप्ताह मिनते रहते हैं। आपकी प्रवसा प्रयस्तिकि लिए हम आमारों हैं। स्माप्तिक के लिए प्राप के अनेकों अनेक प्रत्य प्रयस्तिकि के लिए प्राप के अनेकों अनेक प्रत्य प्राप्तिकि के प्रति हम उन में से जुख हो प्रकाशत कर पाये। सभी को प्रकाशित करने के लिए स्थानाभाव है। केवल मात्र सम्पादकीय के लिए भी बहुत पत्र मिने हैं जो आप के द्वारा स्नेह सिक्त थे। पिछले दो मास में लगभग २०० आहक तीवता के राथ बने हैं, इस से आप के प्रमुख्य हम सिक्त प्रति आप के प्रमुख्य हम सिक्त प्रति अप प्रति हम आपकी आकाशाओं के प्रमुख्य इस पत्र को सजाने से सत्यन हैं।

हमारे कुछ पाठकों को शिकायत थी कि इस के पृष्ट वहाए जाए, यह शिकायत हम ने उन की दूर कर दी है। पाठकों की माग पर सत्सग बाटिका" स्तम्भ हम ने शुरू किया है जिस में हर बार सत्सग में सुनाया जा सकने बाता वेद व्याख्यान हुमा करेग। सहर्ष हम यह भी सूचित कर रहे हैं कि एक प्रमिनन विशेषांक २४ मार्च को चूमचाम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषांक सपने उप का मानेखा ही होगा। आशा है आप का प्रेम स्नेह, एवम् सांशीष इस साप्ताहिक पत्र को अवस्य मिलता रहेगा।

> शुभकामनाओं के साथ— सम्पादक—यशपाल सूचाश्

# श्मकामना

श्रीयुत सुषासु जी ।

सादर बन्दे भानवम् । सार्यं सन्वेस के पिछले सकों को देख कर मन प्रसन्न हो गया।

बापकी सम्पादन शैली प्रेरखादायक बाय सस्कृति प्रमधिनी है । धाशा है बापके कुशक सम्पादन में बायसन्देश' बाय अगत् में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा ।

> धानन्द सुमन तपावन भाजम देहरादून २४८००८

# स्मारिका बेहद अच्छी

'धार्य-सन्तेष के विशेषक के रूप में ख्री मध्य मनोहारी गना वा स्मारिका प्राप्त हुई। स्मारिका वास्तव में धाकणक एव प्रमाव गाल थी। इसका मुखपूट्य प्रति सुन्दर एवं बोमगीय था। इसमें सभी लेख पड़नीय एवं गिनाप्रद थे। बिन्हें पढ़कर काफी प्रराप्ता मिली तथा काफी आनकारी प्राप्त हुई। स्वारिका से सध्यादकीय स्वत का की धानन ही महन्व रहा। स्वारिका के इस हु गल सम्पादन के लिए वचाई स्वोकार करें।

— रामङ्गमार ग्राय ग्राम० पो०-दुल्लागढ ग्राहाना (सोनीपत)

द्याप का 'स्वारिका पत्र प्राप्त हुमा बन्यदाद प्रध्ययन करन पर पता चका कि स्राप ने इर की सफलता के लिए बहुत प्रयस्न किया है। इस मफलता हेतु स्राप सब को बहुत-बहुत बनाई हो।

> निवेदक — योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान ग्रायंसमाज जासन्घर

# वेदों द्वारा विश्व को भारत की

# अमूलय देन

दुनिया में साज भी ऐसे कई सिजात व सायन ए हैं जिनका सही विव ज (परिचय) उपलब्ध नहीं हैं जात नहीं हैं या फिर फ्रम पूण हैं ऐसा ही एक जटिल प्रश्न गिएत की पूल मौलिकता का है। जिसका प्रशासिक उत्तर देशों के साथार व सीजय से सायके सामने रख रहा हूं। वह भी चूलती है।

विण्य को विषय का कोई श्री गिए।
तक यह नहीं बता पा रहा है कि प्रक गणित बैजगणित कहा के प्राई ? किस ने ही ? कद दो और कैसे दो? कई सानते हैं • जीरो (गृप्प) भारत ने दिया। कोई सकावसी भारतीय होना मानते हैं। विदेशी गणितक इसे बनीकोन भीन रोमन योक स्विण्य मिस्प की देन कहते हैं। ताब योक स्वाससक प्रणाली प्रपानी वेन कहते हैं सब विष्ठान् विचारक काल्पीनक वार्ते करन हैं। प्रपाने देश को गौरव दिसाने की पश कथा करते हैं और प्रयन्न किसे भी हैं। कि जु उनके पास प्रत्यक्ष न ठोड़ मौस्किय प्रमाशा नहीं हैं।

सत्य की लोज करना विज्ञान वेलाधी का काम है। सत्य का प्रचार व प्रसार करना विज्ञान सवाददाताधी का कत०य

वेद सब स यनिकामो का पुत्तक है। बाज वेद पर मनुसज्जन व सोज मनिवास है क्योंकि वेद भारत की मनूत्य निधि सस्कृति व वाडम्य की मझ्य बरोहर हैं। जिस पर प्रत्यक भ रतवासी को यब हाना

### नीड का नव निर्माण —डा॰ मानन्द सुमन

वित्व का नाड दगममा रहा है। राक्षक्षी प्रवृत्ति बन्ती ही जा रही है। मानव मानवका शत्रुहयारा भाईमा बहुनो कासती व उजाडने वाला सुहाग श्रीनन दाला पिसासतानो का टब श्रीन कर गराब की बोतलों में न्वन गला ग्रस्रता की सामा पार करता सकल मानव समाज प्रस्थिर हो गया है। भौतिकतावाद के नशे में हमारी सस्कृति के हमारे नियमो तक को तोड दिया है मानव समाज कराह रहा है इस कराहट में भाशा की एक किरण सभी भी नंप है असुरता की प्रवृत्ति समाप्त की जा सकती के मानवता को पुन विवमं प्रतिग्ठापित किया वा सकता है। बहुनों के उजन सतीत्व वापम नौट सकते हैं। स्तानो को पुन भारतीय संस्कृति के रग में रगा जा सकता है। भारतीय संस्कृति कोई ऐरी गैरी वस्तु नही जो लिएक स्पन मात्र सं चूर चूर हो जाये। समय समय की बात है कि विद्व मुख की सन्तानो न अपन ही हाथो अपनी विश्ववारा संस्कृति को समाप्त करने का चडमात्र किया दोप दो हजार साल की

-डा० मिट्टनलाल ग्रायंत्रेमी चाहिए ग्रीर है भी।

आयुनिक विश्व के समस्य इतिहास बता पुरातत्त्वकता व जीवज विद्वान् मानते हैं कि विश्व का आयीनतम अय ऋत्वद है। इसके बाद यजुनव है।

धाव मैं गव के साथ कह सकता हु कि सकपणित बीजगणित व दशमसव प्रसाली विषय को भारत की समूख्य व सैदातिक देन हैं।

मैं घापके सामने प्रकाशित बीव-गणित की मूल मौलिकता सिद्धात व मन पेश कर रहा हूँ वो यजुर्वेच के सौलन्य से है। उसमे घकित है जिसका सरल सञ्चाव व मायाय साय है।

यजुनद सञ्चाय १७ सत्र (२) दमा में
मुस्मित्सोके (एक को दस से
दस वस को दस से सी बानी दसमलद
प्रणाली) (१००००००००००००००

दस शक्त चण्चतम प्रक) ग्रांव तक इस श्रक से बड़ा कोई श्रक है<sup>?</sup> न भूतो न भविष्यति । यजुवद श्रष्टशाय १८ सत्र २४ एका कल्पताम् ।

विवस मिन १ + २ = ३ एक धौर मेरे २ = तीन ३ + २ - ५ इत्यादि ३३ यजुबद प्रव्याय १८ मत्र २५ वतलस्य कल्य ताम ।

सम भिन ४ + = १२ चार साठ मेरे नाहरा इत्यावि ३२ साच तक वो भायताए एव उदाहरण प्रस्तुत हैं बच्टि गोचर हैं। साथे हैं व सब इसके नाव के है। इसके नगज हैंन कि पुतवा।

मुलामी का है जिसन हमे चितन शुम्य बना दिया हमारे विकारों में ब्रामूल परिवतन कर दिया हमारी शिक्षा पद्धति जीवन पदित तक को विषरीत दिला में मोड दिया। इस क्या बहके सारा ससार ही बहक नया क्योंकि सारा ससार तो हमारे पथ पर ही चनताथा। ब्रावश्यकता है हम सब मिल कर कूसस्कारों को समाप्त करें सुसस्कारों को प्राप्त करें। लिखने बा कह देन मात्र से तो सस्कार बनत नही। यदि हम पुन अपना सनातन प्रतिष्ठा को प्राप्त करना बाहत हैं तो हमें निनकोच पारकारक भौतिक आसुरी विकारो की त्याग कर सनामन वैदिक सस्कृति के विचारों को स्वीकार करना होगा। यही इस युग की प्रचम ग्रावश्यकता है। ग्रामधा न्सी प्रकार हम लुटते रहेगे पिटते रहेगे। अपन हाथो अपनी माताओ बहनों से बलात्कार करते रहेगे। जानो मानवो! मानवता को ग्रामा मे बारल करो बहुनों व माताम्रोको पुन यत्र नायस्तु पूज्यन्ते के सदेशानुसार स्थान दो । सलानी को मुसस्कारों ने शिक्षित वीक्षित करो। तभी विन्व रूपी नीड का नवनिर्माण सम्भव है।

# सत्य और वेद

---रामसुमेर मिश्र एम०ए०

महर्षि दयानस्य की घोषणा है कि वेद सब सत्य विचाओं की पुस्तक है। यदि यह कहा जाए कि वेद सस्य हैं ती सावण महीचर को भी सत्व कहना होना। महर्षि ने सायसा महीवर को प्रसत्व कहा है। वेद पुस्तक है। यह तो अवकार ते श्रपेक्षा की जाती है कि वह उनका तत्म धर्व करे प्रचति शोधकर्ता से इस बात की धपेका की बाती है कि वह पुस्तक का सब किसी रूढि पक्षपात या उन्नाद से प्रेरित होकर न करे। महर्षि जब वेद को सत्य वोषित करते हैं तो उनका निर्देश होता है कि वेदों ने इतिहास नहीं है वह देश कास सापेक नहीं है । वेदों में भ्राक्यान सब काल सब स्वान और सभी व्यक्तिको के लिए हैं उनमें देश काल और व्यक्तियों के अनुसार परिवतन नहीं है। वेद किसी बाद या नत का दिन्दञ्जन नहीं कराते वह सत्य के लिए दर्ष्ट देते हैं। भावना और उनाद से प्ररित व्यक्ति तो स्वय किसी इंटि के मानेश में मानत है वह सत्य दिष्ट ग्रहण के सिए दीकित नहीं है। केवस सत्य विद्यामी का विद्यार्थी ही यह दिन्ह वारण कर सकता है जिनमे नेदी का ब्राख्यान निदश व सदेश है सायम मही-वर मादि इस रब्टि के समाव ने किसी दिष्ट से प्ररित होकर वेदों का सब कर नए जो सत्म से बहुत दूर हो गया।

सत्य वह है जो एक जैसा रहे। बदल जाने वासाया होकर न रहने वाना सत्य नहीं कहा जाता। दूसरी भाषा में इसे त्रैकाल प्रवाचित कहते हैं । वेद सत्य इष्टियों के बारुपान सत्य थम के निर्वेश व दुष्टो से रक्षित होने के बादेश से बर पूर मत्रो व छदो की पूस्तकों हैं। इनमे जो जैसा है उसका वैसा ही वर्णन है। यदि पदाथ बदल जाने बाला है होकर न रहने वासा है जैकाल बाधित है तो उसका वैसा ही बाख्यान है। पदाच सत्य है या बसत्य यह प्रका करने वासाही अभित है। जो वतमान मे है उसके नहीं का प्रश्न ही भ्रम है। हा हम उसके सही स्वरूप की खोज कर सकते हैं। यह मूख में नहीं था भवि व्यत मे नहीं रहेना वदलने काला है। इस स्टब्सि बिनाश बाले का बतमान मे मस्तित्व कीसे होता है। यह लोज हमे द्रि लाभ करा सकती है जिससे हमारा व्यव हार व धन हमे सुक्त और दुक्त प्राप्त करा सकता है।

हमको बण्टि से करन का बोक होगा है और जोक-कर्ता हरन से बण्टि की बोक करता है। कड़ैतनायी बरन से नहीं बण्टि की कोज करते हैं और न बण्टि से कस का सास्थान ही। वे एक प्रका को दिख्य के सिष्ट संपेक्षण का स्वक्र कर नवकर क्या प्रपादक का प्रविक्र वन बहुदे ससार समस्य पत्र का प्रविक्र वन बहुदे ससार समस्य पत्र का प्रविक्र वन बहुदे सम्भार में हुव नया। यह प्रस्त तो प्यार्थ निवा का प्रस्त है। पदान निवा का निवासी इससे विकासा की बेदना के सम्मान है। वेदना के सम्मान पदान नगा सकता है। वेद पान निवास का प्रस्त के नहीं हैं। सप्य की सोस उनका विषय है। यह बब्दि मुस स्वत्य का नस्त है। यह बब्दि मह मुस दिन्द है कि सके परिप्रस्य में ही बोन ना परिप्रस्य में ही बोन मार पर्याप्त की होने केन सम्मान हों कि ही बात मार स्वत्य की सान केन सम्मान हों कि है। इसी निस्प महिंद की योग मार मुस है। इसी हिंद सान सिंद मुझ है। इसी निस्प महिंद में बोन मार प्रस्त है। इसि का मारे सकेस यह मी है कि प्रयाद निवास से नी हुक भी बातन वार्य है। वहां का सानि मुझ है। वहां की सानि मार सानि है। वहां का सानि मुझ है। वहां सानि हो। है।

मून इंटिंग के सभाव ने मनुष्य दश्य का बोच नहीं कर सकता। यह सस्य आर्थ-समाब की मूल नाम्यता है। मूल सत्य की बच्टि पाने के बाद बिद्वानों से अपेका की बाती है कि बतमान प्रयतिशीस बटिस परिस्थितियों में मानव के लिए वे प्रशस्त पव की सोज करें जिससे जीवन समाब के किए समस्या न बनकर एक झावर्श सफलता प्राप्त कर सके । वनमान की देनो को नकारने वा उहें बुराकहने से इस्व और बब्दि में टकराव उत्पन्न होगा जिससे जीवन की हार ही सम्मुक्त है। पदाथ युज दोष मय हैं। जीवन मुख प्राही बने इस सक्य की प्राप्ति में वैदिक बच्डि सेवा रत बने इसकी घपेका विद्वानी से है। १२४ बी/६८६ गोविन्दनगर कानपुर

> बलिदानो के गुण गाने का युग है

रोने का नहीं झव तो विस्तानों के गुरागाने का युव है। पव से भटके हुए पत्थ को फिर पथ पर लाले का युग है।।

रोने से ज्योति घटती है

माशाकी डाली कटनी है। अपने पसे हरेक बूढे पर

धव तो कल लाने कायुग है।।१॥ वीर कॉलि कर देते हैं

वीर भ्राति हर देते हैं। धपनी सोई बूद चेतना जना धाज नाने का जुन है।।२॥

पूर्णं रूप से अधिकार समक्र कर सब कुछ समब प्यार समक्र कर। कव जीती तसवार सत्य को

फिर से से बाने का युग है।।३।। प्रम मोग कर दे पस्थर को, प्रम जिसा दे मृतक नर को।

भ्रपने घरको बढ़े प्रेस से स्थाकुत ' समदाने का दुव है।।४॥

> रविता प्रकाशवीर 'स्थाकुस' भावंसमान नया वास दिल्ली

# भारतीय संस्कृति कें गौरव-स्तम्भ : वेद

—- आचार्य रामानद शास्त्री महोपदेशक विहार भार्य प्रतिनिधि सभा विहार

'बेंड' का अर्थ जान है यह जान सुष्टि के प्रारम्भ में परमधिता परमात्मा के द्वारा चार ऋषियों के ह्वय म प्रेरित हुआ। जिन के नाम अप्ति, वायू आदित्य और प्रशिरा है। वेद स्वय कहत है—

> वज्ञेन बाच पदबीमायन् । तामन्यविन्यन् ऋषिषु प्रविष्टाम् ॥

श्रवात्—परमाध्या के द्वारा ऋषियों के द्ववत में चा गई वाएं। पदस्त होकर श्राहं। परस्पा के द्वारा 'श्रुति कहलाई। पूत्र में कहा गया है कि 'वर का सर्थ 'श्राल' होता है। वहीं ज्ञाल चार माणों में विषयत है। उन्हें हो ऋक्, यजु, साम एव स्वयं बेद के नाम से पुकारा जाता है।

भगवान् सनुका कहना है कि —
भूत अध्य अविश्वन्यसर्व वेदान् प्रतिक्षपति सर्वात् सदीत, वर्तमान तथा अविद्या का जान वेदी से प्राप्त होता है। क्योंकि सर्वं वेदादि निवंगी—

धर्यात् सम्पूर्णं ज्ञान वेदो से ही प्रका-वित हुमा है।

महामारत के रचमिता वेदव्यास जी कहते हैं कि — 'सवबिदु वेदबिदो वेदे सर्व प्रतिध्वतम् ।

सर्वात् वेदो का झाता सब कुछ, जानता है क्यों कि वेद से ही सारी विद्यार्प प्रका-सित हुई हैं।

वेदव्यास तो इतना झागे वडकर नहते हैं कि — 'को यहां (वेदों में) है वहो झन्यत्र है झोर वो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं है।'

महिंद स्थामी दयानन्द सरस्वती धपने धार्यसमाज के तीसरे नियम मे लिखते हैं—

"बेद सब सत्यविषाधों का पुस्तक है। बेदों का पढ़ना एव पढ़ाना सब झायों का परस वस हैं।' शिक्षा, कब्द, निचच्दु, निक्सत, व्याकरण और ज्योतित, इन्हें बेद्ध कहत हैं। इनक द्वारा बेदों का सहसार्य बाना जाता है।

भ्रायुर्वेद, चनुर्वेद गत्वववेद, वास्तु-कत्ता, गालिहोत्र भ्रादि भ्रयो के कर्ता भूतियों ने लिखा है कि — यह सब ज्ञान हम ने वेदों से प्राप्त किया है।

सास्य, न्याय, वैशेषिक, योग, पूर्व-मीमासा एव वेदालादि दशन शास्त्रो का सात्पर्य यही हैं कि वेदों की अपीव्ययता सिद्ध की जाय।'

वेदो के महान् विहान् वेदसमुद्र मधु-सूदन घोमा ने कहा है कि—'गीरस्त्य पारचारण दर्शनों का उल्लेख ऋग्वेद थे उपस्थित है।' उन्होंने ऋग्वेद के नासदीय- सूक्त मे १० पाश्चात्य दाक्षनिक विचारो कापूर्णं विवेचन किया है।

मैक्समूजर के बाजों से क्रावेद के घरर सारे श्वापित कमी के सुरक्ष कीच हैं। उन का मह की कहना है कि—क्यावेद दिवस की सबसे प्राचीन पुरत्तक हैं। हाननी पुरानी होते हुए भी हसमें पूण्विराम ध्रम्या धर्म-विरास म परिवर्तन नहीं हुसा है। धर्मादे किरास म परिवर्तन नहीं हुसा है। धर्मादे सही पर हस्त पाठ-में वहीं मिलता है। इसका कारण परम्परा से वहीं मिलता है। प्रतक्त कारण परम्परा से वहीं का परपाठ, धनपाठ, जटापाठ धादि - प्रकार स पढ़ने की परम्परा तथा पटने की विधि है। इसी प्रकार जैकडों पण्डितों ने बेदों को कण्डल्स किया है।

बाषाविज्ञाम-बेत्ता यह मानते हैं कि सुष्टि की धादिम धनस्था में कुछ ही भाषाएँ वी। कुछ लोग यह भी कहने लगे है कि एक ही भाषा थी, जिस से सारी मावाएँ सपभाषा रूप मे प्रकट हुई। बाइविस की पुरानी पुस्तक, बिसे 'बोस्ड टेस्टामेण्ट' कहते हैं, मे कहा गया है कि धारम्म मे एक ही भाषा बी, बहोबा ने बहुत कर दिया। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि बहु 'भावा' वेद की भावा ही हो सकती है। यहाँ हम बहुत शब्दों को न लेकर केवल ईश्वरवाची शब्दों को ही लेते है-पारसी सपने ईश्वर को 'सहुरमज्दा' कहते हैं। ऋग्वेद में इन्द्र को 'झासुरमध्य' कहा गया है। इसी प्रकार यहूवी अपने ईस्वर को 'यहोदा कहते हैं जबकि नेद मे यहातम शब्द इन्द्र के सिए आया है, जिसका धर्य ब्रविशक्तिशाली होता है। मैक्समूलर का कहना है कि- बोम्' छव्द स ही 'श्रस्सा' शब्द निकला है। कुरान के प्रसिद्ध माध्य-कार मुहस्मद प्रली ने अपने कुरान माध्य मे लिखा है कि--'धस्ला धन्युत्पन्न शन्द 🕽, यह धरव में ईश्वर के लिए पुरानन कास से बोसा जाता है।

कालक्रम से मेदार्थ की परम्परा बन्द हो गई। केवल कण्ठस्य करने तथा पाठ-साम की परम्परा मचित्त रही। सम की परम्परा को बगह निवाह उपनयन, शब-बाह सादि सरकारों में सन्तो का विनियोग मात्र रह गया

सौकिक संस्कृत माथा धौर वेद की भाषा में धन्तर है। वैदिक संस्कृत तथा बेद के व्याकरण तथा वैदिक कोष से विश्वत पण्डित वेदायं करने समे, विद्यसे देवायं दूषित हो गया। यहाँ मैं कुछ सन्दर्श का उस्लेख करता हु:—

वैदिक शब्द धर्म लौकिक सस्कृत सन्दर्श दिली वेश्या वृताची पानं नारी-विशेष कष्य मेवावी ऋषि-विशेष स्रोता हस काकवेषा नारी-विशेष विश्वामित सर्वमित्र ऋषिविशेष विष्णु सूर्य ईश्वर सा बिष्णु

इत्यादि वेदाथ में स्वरकी भी प्रधा-नता होती है। इस प्रकार मनमानी अर्थ चल नया है।

वेदमत्रों से पशु-हिंसा भी चल पड़ी बिसके लिए वेदव्यास महाभारत में कहने हैं कि—' चूर्न प्रवित्तम् एतद् नैतद् बेदेषु विद्यते। धर्मात् ' चूर्तों ने इसे चलाया है प्रत्यया बेदों में पशुहिंसा नही है।

राजा कूटबन्त के यहा बहुत पशु भारने भर्यात् विल के लिए लाए गये थे। बुद्ध ने कहा कि— हे राजन । पहले के बाह्यण जी दूज से हवन किया करते थे।"

धाव से ४०० वण पूर्व के लगजब विजयननर से राज्य पीचल धानाम सायण में धानेक पिक्तों की हासका से नेदो का आप्ता किया किया नेदा में कहि तथा व्यक्तियाणक सर्वों को लेकर इतिहास परक धर्म कर दिये। जैसी प्रतिक्षा उन्होंने सपने पाच्य की प्रीयका में की पी उसका पासन उन्होंने नहीं किया। कही-कही धरबील धर्म भी लिख दिया। बिससे बेदाणें द्वारत हो गया। अस्तमुलर ने उसी केयायां द्वारत हम प्रमाणका पांचका सम्मावन भी किया।

महीचर तथा उल्बटादि आध्यकारो ने नेदार्ष नावमाय के मनुसार किया, जिससे प्राप्त करो हे हृदय में नदी के प्रति पृणा होने कशी। लोग यही सममने को कि नेदो ने कुछ नहीं है, बहु-ईचनरवाद का उल्लेख है। प्रमित्त कातु कल प्रध्यी यहाद सादि की प्रकाह हरसादि।

ऐसी स्थिति मे सहित स्वामी द्यानन्द का प्राप्तर्गत हुया। स्थामी जी न देवाई की सेनी प्रस्तुत की तथा वतलाया कि बेदो का बथा नियक्ट निरुक्त व्याकरण सादि प्राचीन बन्यों के साथार पर करना चाहिए। उन्होंने कन्ये प्रची का दिख्खन कराया। सहा पर केवल एक मत्र नमुत के तौर पर उपस्थित करता हु। अञ्चयं का मन्त्र हु—

ये वाजिन परिपञ्चन्ति पक्वम् । स इमाहु सुरमिनिहरेति !

सह मन्त्र राज-प्रकरण का है---

ये (वो) नाजिनम् (घोट) को परि-पद्यन्ति—पदवम् (परिपदव स्रयात् योग्य) हो स्या। इससे सुर्पन—(गन्य) निकसती है इसे (निहरेति) निकालो।"

धर्यात् भोडा जब युवा होता है तो उससे एक विशेष गण्य निकलती है। इसी इस जब-पा नामक ध्रीपित भी बेंसी हो यन्त्रवाली होरी है। राजा का चाहिए कि ऐसे घोड को कार्य के लगये। किन्तु विदेशी आप्दकारों ने निकाह कि यज में थोडा सारकर डालों जब यक जारे ती प्रवासात करी कार्य।

कुछ लोग नेदों का इतिहासपरक प्रयं कर उससे प्रायं और प्रानार्यं की लाइ कि ता वर्णन करते हैं। किन्तु उन्हें समक्रता लाहिए कि धायां कीई जािंत नहीं प्रपित् जो बस्युन सम्यान हैं वहीं 'आयं हैं। इसीलिए इन्बन्तों विश्वमायंम्' कहा गया है। प्रवित् 'आयं बनायं का युव नहीं, धायु वारों से सामयं का युव नहीं, धायु वारों से अपने से मुझ नहीं, धायु वारों से अपने से सुख तहीं, धायु वारों से अपने से प्रयं का युव नहीं, धायु वारों से अपने से सामयं का युव नहीं, धायु वारों से अपने से सामयं का युव नहीं, धायु वारों से अपने से सामयं का युव नहीं, धायु वारों से अपने से सामयं का युव नहीं, धायु वारों से सामयं सामयं का युव नहीं से सामयं सामय

यहीं इन्न-हृतासुर के बुद्ध का रहस्य है। इसी का क्यालर कही खैतान कहा स्वा है क्योंकि वृत्त को 'स्तेन' कहा गया है। सहाजिदान प्रास्टर ध्रामेदकर ने ध्रपत्री पुस्तक Who Were the Shudras स्वप्रद तिसा है कि धार्य बाहर से नहीं धारों। डास्टर साहद कहत है कि—

जो लोग 'धनान् शब्द से विपटी नाक वाले का प्रत्या करते हैं कि वे गलत सर्पे करते हैं क्योंकि 'धनास ऋग्येद का शब्द हैं। धरफ़्स बोलनेवाल के लिए कहा क्या है। उन्होंने पाशिति व्याकरण का प्रमाण मी उद्युत किया हैं।

सैक्समूलर ने एक व्याख्यान में कहा या कि साथ जातिवाचक रूच्य नहीं प्रपितु भाषायाचक राज्य है। भाषा के वो प्रमुख विभाग हैं—साथं भाषा एवं सनायं भाषा।

कुछ नायाविजान के आधार पर सर्थे कर देवे मा समय करते हैं किन्तु महाँग स्वामी दयानन्द के प्रादुमाव से विदिस सूथ का उदय हो गया है। धीरे-धीरे लोग खमकत लगे हैं कि देद ही मानव के लिए प्रकाशन्द स्म है। बेदो के स्थित की पूजा नहीं हैं सारे विदय के प्राणियों की मित्र की दिल्ल से दबत का स्वादेग हैं। देग, जाति काला-नार साद का नेद वेदों से नहीं हैं? सत देदों कर प्रचार एवं पटन पाटन होना चाहिए।

कृण्वन्तो विश्वमार्थम ।

# यह सच है सिकन्दर हारा था और पोरस विजयी

लेखक-पी० एन० ग्रोक

भारत ने यानुना करने बाल धाज के पढ़ौसियों के सुगम धाक्रमणों ने सर्वया विभिन्न प्राचीन भारत की सुब्द सुरमा-पित के कारण उस समय के धाक्रमण्-कारी लडकारत धीर नाक रचते हुए बागत जाने पर विवश हुए थे।

ऐसाही एक दुन्साहसी युनान का सिकन्दर वा जिसने भारत की सीमायो के साम खेडकानी करने पर प्रपने जीवन की कटुतम बूँट का पान किया और दुर्गत के कारण जो प्राने प्राण ही सवा बैठा।

किंतु सिकन्यर की पराजय होने पर जी हमारे इतिहास उबके दुनाँच को मारत की धकेत जलान परेस्व पर उसके महान विजय का नहांने करते स्वाते नहीं। सबत्य का नहां परेस के जितने भी किंद्रम को उस महान स्वयं के जितने भी कर्णन निले हैं वे सक के सब जुनानी इति-हासकारों के किए हुए हैं। और यह तो सर्वजात हैं ही कि बीर पराजयों में प्रपना कुल काना करने वान साक्रमणकारी भी सरने परामशे को निजय के सावरण में, क्षम कर में प्रस्तुन करते हैं। यही बात विकन्यर की भारतीय वीर पुत्रभों से निकन्त में हुई है।

सिकन्यर महान जैसा कि वह पुकारा जाता है है सा पुत ३५६ से जन्मा था। वह मेने निवास के राजा किलप दिलीय कोर एरियेट के शाहजारी प्रातिकार किला पुत्र था। प्रपत्ती प्रातिकार का पुत्र था। प्रपत्ती राज्याति निपूजना एक द्विवस नुर्य के लिए हिलिय तो विन्यात ना, किल्तु कहा जाता है कि निकन्यर की साता प्रमस्कृत कहा जाता है कि निकन्यर की साता प्रमस्कृत कहा जाता समस्कृत प्रातिका प्रातिका सि स्व

विकन्यर के बाह्यकाल से मेसेबोनिया के दरबार का बातावरण प्रपन राज्यों की सीमाधी का विस्तार करने और इसी हुनु मयकर युढ़ी की योजनाए बनाने से प्रापु-रित रहुता बा। धतिक्रमणात्मक युढ़ी में यावर्जन करने एव समी गुनानी राज्यों का प्रपार्जन को महान् भाकाला मेसेडो-निया में स्पष्ट इंड्टिगोचर हो रही बी।

अब सिकन्दर १४ वर्ष का हो नया, तब उपकी विश्वा के निए प्रसिद्ध यूनानी वार्योनिक प्ररस्तु को नियुक्त किया गया। विकन्दर का निरुष्ध प्रस्त वर्षाकों कर्मुख प्रस्त कर व्याप्त वर्षाकों कर कर कर के निरुष्ध प्रस्त कर विश्वा कर के प्रस्त वर्षाकों के व्याप्त कर के प्रस्त वर्षाकों के प्रस्त कर के व्याप्त वर्षाकों के प्रस्त कर के व्याप्त वर्षाकों के प्रस्त के व्यक्तियों, सैनिको और राजदूनों के प्रस्त के वर्षकर के । व्यक्त कर के वर्षकर के । व्यक्त कर के वर्षकर के । वर्षकर के । वर्षकर के वर्षकर के वर्षकर के । वर्षकर के वर्षकर के वर्षकर के । वर्षकर के वर्षकर के वर्षकर के । वर्षकर के । वर्षकर के । वर्षकर के व्यक्त के । व

जब उसका पिता राजधानी से बाहर बा, तब उसने राज्य की सैनिक टुकडिया लेकर पहाडी वोत्र के विद्रोहियों को दबाने के लिए चढाई कर दी बी।

लगभग इसी समय सिकन्दर के माता-पिता के मध्य पारिवारिक कलह बढती जा रही थी। उन कोगों ने पृथकृ हो जाने का निश्चय किया। फिलिप ने क्लियोपैट्रा नामक दूसरी पत्नी बना भी । रानी स्रोलि-स्पियस राजमहल छोडकर चली गई। सिकन्दर, जिसका सहड स्वभाव धानी मा के स्वभाव से ही अधिक भिलता वा, अपनी मा के नाथ ही चला वया। फिलिप को क्लियोपैट्रा से एक पुत्र प्राप्त हुवा, जो राजींसहासन के लिए समान दावेदार बन गया । कुछ समय पञ्चात् फिलिप की हत्या कर दी गई और इस पितृहत्या के सिए इतिहास ने सिकन्दर पर सदेह किया है। व्यपने पिताकी हत्या में भागीदार होने की बात असम्भव प्रतीत नहीं होती क्योंकि वह मन्ताके साम साठ-गाठ किया ही करताया।

धनेक वर्षों तक सेना को यह बात रहा था कि सिकन्दर ही गाही पुतराज एव राज्य का वास्तरिक उत्तराजिकारों है, सत उसके पिता की मृत्यु के परवात् राज्यासन को बलात बहुल करने से उन लोगों ने सिकन्दर की पूर्ण सहायता की। राज्यासन पर बैठने के पत्रवात जिकन्दर ने धर्म वर्षेर ने सीतेन भाई को मरवा साला था निकसे राजमिहासन ने लिए धर्म प्रति प्रविकत्ता ने रहे।

भ र सिकन्दर समाहरण और विस्तारण के मार्गपर चल पड़ा। उसने सबसे पहले विद्रोही पहाडी लोगो का दमन किया। फिर वह पश्चिम की झोर चल पड़ाझौर डनूब नदी का तटवर्ती को त्र सपने आसीन कर बैठा। इस बीचा वेबस की जनताने उसके विकद्ध विद्रोह कर दिया। सिकन्दर ने उनके ऊपर धति चपसता से भीषण भाक्तमण किया भौर उनकी राजवानी को घल में मिला दिया। इस घटना ने भावी योद्धा के रूप में उसका यश चहुँ मोर प्रसा-रित कर दिया। एथेन्सवासियो तथा ग्रन्थ सभी यूनानी समाजो ने सिकन्दर के सम्मुख षुटने टैक दिए भीर ईराज तथा सन्य देशों को जीतने में उसकी सहायता देना म्बीकार किया।

इस प्रकार सभी प्रकार की सहायता ते बाज्बस्त हो २३४ ई० पू० में सिकल्यर विज्य-तिबय करने को निकल पडा। में प्रवासना हो सिकल पडा। में प्रवासना हो सिक्स प्रवासना के सिक्स पुनानी सवाबों की ४०,००० तेना लेकर सिकल्यर पूर्व की झोर कल पडा।

सिकन्दर सर्वप्रथम ट्राय की यात्रा पर

नया और विजय की प्रावी याताकों के लिए ईस्वरीय धावीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा से उसने विस्तास कोर मिस्ठापूर्वक ट्रोबव-युद्ध के हुलात्माकों की पूजा की !

विकन्यर के प्रस्थान का समाचार सुनकर ईरान के राजा ने सिकन्यर की विक्याकालाओं को सीसवायस्था में ही राँव बानने के विचार ते उससे भी स्विक्य सब्या में स्पन्ने तेरिक नेव दिए। सिकन्य समी 'एसिया लच्च' को जीतने में सफल नहीं हुमा था। दोनों की सेनाएँ सेनिकस के तट पर मिड गई। धमासान यह हुमा। सुनास होते-होते ईरान को सेना के द्वारा प्रतिरोध सोना पड गया और यह मान सबी हुई।

'एतिया लप्' से बाहर जाने वाले सभी मार्थों पर धक सिम्म्बर का पूर्ण प्रिकार या। उतने सामीय युनाती उत्प-तिवेशों को स्वतन्त्र हो जाने की पोवस्ता कर दी विकित प्रदेशों पर राज्यपाल नियक्त कर दिए धौर स्वयं को सम्राट् पोवित कर दिया। नये मृहीत क्षेत्र विकन्दर के प्रधान कि प्रकालिए हो पर क्योंकि इसकी विवास पुनानी जनसल्या एवं तैनिक-वाक्ति सहासक विद्य हुई थी।

एक वर्ष वश्यात् सिकन्यर ने उत्तरी फिकिया में गोरहियस के राज्य पर धाक-मए किया भौर जने सपने सकीन कर निया। किवदन्ती के सनुसार यही पर प्राचीन फिजियन-शब्दा गोरहियस के एक वे नवी गोरहियन गाठ को सिकन्दर ने स्रानी तमवार ने काटा था।

यस सेनामिशन के साथ-साथ सिकन्दर की नी-मैना है लेक्पोल्ट क्षेत्र से वस गई वी। यह बनी बेड़ा सिकन्दर को स्वदेश से सम्पर्क बनाए रकने से सहायक हुआ या। किंतु अर वृक्ति जह दूरस्व अदेशो तक जाने का इच्छुक वा, सत उसने अपनी नी सेना को अपने मुख सहदे पर सौट जाने का सायेख वे दिया।

हैलेस्तो-ट लोन से सिकल्यर की नो-सेना को उपके राजा का सादेश निका कि जह जूनान के राज्य पर साक्रमए। करने के विद्यार दें। धपनी गृहमृति पर साक्रमए की सायका दूर करने के निए सीरियाई लमुनी तट पर बजाई कर देने के निए ईरान का राजा बेरियक स्वय ही एक बहुत बड़ी देना लेकर सीरिया में प्रवादक हुआ। दोनों सेनाए ई० पूल ३३३ में ईसा से एक-दूसरे से पित वहीं। सोक इतिहासकारी ने लिका है कि सपने महिला वर्ष को पीछे ही कोक्कर ईरानी देना सर्थ-व्यस्त हो भाग कही हुई, किन्यु स्ववद्वार करने में सुरक्षा एव स्वय का परिचय दिया। डेरियस ने प्रपता प्राचा राज्य सम्प्रित कर देने का प्रस्ताव रखा किंतु सम्पूर्ण राज्य-समर्पण से कम कोई बात सिकन्दर को सन्तुकट कर ही नहीं सकती थी।

उसने सब 'टायर' को जा घेरा।
थेरा बात सास तक चला, धौर सम्पूर्ण फूलिविया उसके स्थीन हो बया। वाद में माजा पर प्रिकार कर सिकन्यर निक्र में सुसा। ईसा पूर्व ३२२-३२१ के वर्व की धौत ऋतु मिल्ल से हो व्यतीत करने वाले सिकन्यर को ही इसी समय सिकन्यरिया की स्थापना करने का स्थेय दिया बाता है। किंतु जैसा बहुबा हुमा है, हो सकता है कि किसी गुक्तालीन न्यरी पर सि

मध्य सागर के सम्मूर्ण पूर्वीय को को को परवात् कर सेते के एववात् विकल्पन ने सपनी धोलें हरान पर लगा हो। है जु २० ३३ में उसने २० सितास्वर के दिन टिपिस नदी पार को। उसों ही वह मोसीपीटामिया से पार नवा धौर पार्वे का राज्ये ही देशक के सेनापितल में हरानी सेना भोगियल नामक स्थान पर उसके सम्मूर्ण धा कही हुई। अयंकर सम्मूर्ण धा कही हुई। अयंकर सम्मूर्ण धा कही हुई। अयंकर सम्मूर्ण धा ने दिन सो में दिन सो की प्राप्त की होगा पड़ा धोर में दिन को फिर पानीका होगा पड़ा धोर में दिन सो मिर पानीका होगा पड़ा धोर में दिन सो मीदिया को आज गया। गोगियल के युक्त को ही 'धारिकल-मुद' के नाम से भी पुकारा लगा है धारिक स्थान से ६० मील दूर एक नती है।

सिकन्दर ने परशिया-साम्राज्य के बेबिलोन प्रदेश को भी सपने स्वीत कर लिया और र्रपान की राजवानी परतों सिक्त में के प्रवेश कर उस समूद नगर को स्वपने परीत को रीव डाला व किर उसकी साम लगा दी। कहा जाता है कि किसी पूर्व राखा अरखें बहुत में सिक्त के बदले में यह जाव्य कार सिक्त सिक्त सिक्त कर सिक्त सिक्त

बेरियस उत्तर की ओर भागा। किंतु यब उवकी सोज निरन्तर की गई। एक राजा दूसरे राजा का शिक्षा कर रहा था। वेरियस को मेरे निया गया। उनके साव उसका चचेरा आई एव बोडे से सरदार ही वे हैं पूर ३३० की धोम्म ऋतु सी। इसके पूर्व ही कि सिकन्यर के साथी माने क्षकर वेरियस को कसी वनाते, बेरियस के साथियों ने उसका प्रासान्त कर दिसा भीर उसका मृत सरीर सिकन्यर को सीप

इसके बाद क्यम (क्षोर) सावर के तटीय पहाडी प्रदेशों को रॉडला हुआ सिकन्दर भकगानिस्तान की भोर बढमया बद उसको धपनी बीठों पर भमण्ड होने

श्रमा वा। धन वह स्वय को धर्मेदवर सममने सवा वा और मपने को पूजने का श्रीवकारी समक विनान नच किए बप्रतिरोचित समर्पस चाहता वा । उसने **ई**रानी राजिल्ह्न व राजीवित वेशम्या सनीकार कर सी । इस काय ने उसके क्षेत्रेडोनियनों की सैनिक टुकडियो मे रोव ब्रह्मक्त कर दिया । उनको सदेह होने लगा कि तनका मृतिवत समादरित नेता उनका तिरस्कार करने संगा या और उनसे बिरक्त होने लगा वा क्योंकि वह ईरानी राजीचित वेशभूवा को पहनकर दरबार में बाता वा और बन्य लोगों से निविचत श्वमर्पस मान की अपेक्षा करता वा। निकल्डर की सेना के विभिन्न वर्गों में बोर ब्रसम्तोव की सहर फैस वई । सिस्तान ने प्रोपवेशिया के स्वान पर डेरा डाले हुई √ सेनामे घोर विभेद फैल नवा। प्रस्व-क्षेत्राध्यक्ष फिलेटस एव कुछ बन्य लोगों पर विकल्दर की हत्या करने की योजना बनाने का धारीन सगाया। धिकन्दर ने उनकी भीत के चाट उतारने का निश्चम लगमग किया ही हुआ। या किंतु फिर कुछ सन्पति गा वई । उसकी स्पन्ट हो स्या कि ऐसा कोई भी पन और भी विभेद पैदाकर वेवा इसीलिए वह नरम पत्र गमा।

ई० पू० १२२ की नवस्य कहु में विकास्तर ने बित्तकुछ पार किया बोर सम्मूर्ण वैजित्या सक्ये वसीन कर मिना। विकुद्ध होते देशक पत्रने वाले जिनेद पिर के उत्तर साथे। उन तनस्य तक विकन्दर पूरे कर से मरोजत सम्मित्त कर कृता। सा अनेक विक्तव्यक्तियाल एव सामे समिलासक के विकन्न वृद्धमान करने का विकास करा साम

क्यों ही उबकी लेगाए विश्व नहीं की सीर बढ़ी, त्यों ही मारतीय पठान कवार-सियों ने उनको निरम्पर स्थिर हुए स्थानों से बच्चों पर सामात गृहेंचा पृहेंचाकर, तब किया। वे उत्त सप्य मारत की बाख अंतिरता परिचया थी। एक क्रियन्ती के स्मृतार सुत्ती वह समय मा यह विक्वन्त में पहिला मातप्र हुता और उत्त पर विमो-नियस का पश्च कोल निकालाया।

सन सिकन्यर जिंदु नवी पार कर मारफीय ज्य-महादीय की दोनामी पर असे में उसरी तेन में तीन राज्य के । बेहुसन नवी के करूँ मोर के तेन पर राजा साहिम राज्य करता था। त्याविका उसकी राज्यानी थी। बेनान से नवते हुए तेनों गूर पोरंद का राज्य वा, और एक शीक्सा राजा कस्मीर के वहुँ योर की समिसार मूर्ति पर सावन करता था। राजा भानिम सन पोरंद से पुराना बैर ना, सठ उसने सिकन्यर के साक्रमण के समय को स्थापी सनुवा का पूर्ट-पुरा करता मेंने का उप युक्त धनशर समझ। विश्वार लोक गोरक घीर विकन्दर, बीनो की विश्वायुर्व धनवार बनाए रबने का बचन देकर तटस्व बैठेने का निवत्य कर बैठे। इस प्रकार गोरब बकेना ही रह नगा विकक्षे विकन्दर का सावना करना था। सिकन्दर को प्रकार का सावना करना था। सिकन्दर का प्रकार की प्रकार की निकम सहा-या प्राप्त थी।

पारस्परिक बर्णनो ने कोई तिथिया उपसब्ध नहीं है। सिंधु के ऊपर एक स्यायी पुत बना श्रिया गया और सिकन्दर की सेनाए भारत से प्रकिष्ट हो गई। बाक्रायक सेना ने घटक के उत्तर में १६ मील पर पदान हाला। ग्रीक-वर्णनी ने धनेक धसर्गतिया बृटिया धौर न्यूनकाए बूढी का सकती हैं, क्योंकि उनके सिष् इसका स्पष्टीकरण करना कठिन है कि उनके मूर्तिबत् समावरित एव बारमस्माधी सिकन्दर ने भारत में सपहत्य क्यों किए ! इसी कारण वे यह जित्रण करने का डॉंग करते हैं कि अपनी विशासता के कारण सिकन्दर ने अपनी भारत विजय के परि-शाम व्ययकर दिए ये घोर वह घपनी मूल भूमि को लौट नया या।

यह विस्मरण नहीं करना चाहिए कि सिकल्दर जब ध्रपने देश को वापस कला, नव तक उस का मद भाव दिया गया था। उसका दिन टूट डुका या वह विषम कर से जायल हो चुका या एव उस की विशाल समिनाशानी सेना बुरो तरह तहस नहस हो चुकी थी।

प्सूरार्व के ब्रानुखार २००० पदासि एव ११००० प्रकारोहियों की विकल्पर की सेता पोरस द्वारा शुक्रिक से एकत की गई सता से सक्या में बहुत ही व्यक्ति की । सिकल्पर की महास्त्रा आर्मिक की सेताधों सीर पारंगी मैंतिकों ने भी की।

महाराष्ट्रीय जानकोश के सप्तय थान के पूछ ५३१ पर निकार है कि तिकन्दर भीर शोख को नेता का रारत्यर स्थाप वेताव नदी के तड़े पर हुमा चा। किंदु कृदिय को राज्य का को राज्य हुस्सी को राज्य का को रहा चा। तिकन्दर की होगा का यह नाम वेहस्स के डीय में पहुँच नता। पीरत के वीतक राज्य डीय के राज्य रहुके ज मोपों न उनका बेरा का दिया और जुनानी महित क्या रहुक्का को मार काला। मुत्यु के बचके के लिए मनेक कुनानी नदी मृत्यु के बचके के लिए मनेक कुनानी नदी

ऐसा बहा बाता है कि सपनी लेगा बहित विक्रमार ने बेहमा नती की एक बनी सबेगी रात में नायों डाए इरखपुर हो उत्तर ६० तील की हुरी गर तेन कटाव के पास पार किया। पौरस के समित-का का नेतृत्व चक्का पुत्र कर हा था। प्रत-कर पुत्रकेस के बहु मारा नवा। रेशा कहा बाता है कि इस विकायों हो रही वी और पौरस के विशासकार हाथीं बसकस में कसवये। किन्तु नुगानी इरिहासकारी हारा विश्व में बसुनी में भी बारे ठीक की पुरुम-विवेचना कर शी जाए तो यह स्टब्ट हो जाएमा कि पोरस की मजसेना ने सम् शिविर ने प्रतय मचा दी भी भीर सिकन्दर की शिक्त सामी की म को सहस-महस्य कर दाला था।

एरियन ने शिका है कि, 'भारतीय युवराय ने सिकत्यर को पायस कर दिया और उसके घोडे बूखे फेसव को मार सामा।"

व्यस्टिन कहता है कि ज्यों ही युद प्रारम्भ हुआ पोरस ने महानाश करन का सावेश दे दिया।'

धनावरक रखन पात रोकने के लिए पोरत ने (उचारतावरा) केवल सिकन्सर से सकेने ही निगर केने का प्रस्ताव रखा। सिकन्यर ने उस (वीर-सरताव)को सस्ती कार कर दिया। साचे को बुद्ध हुआ उससे उसका नवांन्सक साधावक के कारतः उसी के नीचे देर ही ज्या। 'खबाक से युद-मृति में मिर जाने पर सिकन्यर को शत्रुओं है सिर जाने का अस उन्यन्त हो समा सिन्यु उसके धनगराक हागा कह बढ़ा से तृक अपनर सिकका दिए।।

पोरस के हावियो द्वारा युनानी सैनिकों

मे उत्पन्न बात र का बर्शन करत हुए कहि-

के विषद्ध कायवाही करे। इस प्रत्माचात स चिडकर उन बाहत पश्यो ने कुड़ हो माकमराकारियो पर भीषण हमला कर विया, जिसके परिक्षामस्वक्षप व लोग उनके पैरो तन रौद डाले गये। सर्वाधिक हृदय-विदारक इत्य तो वह या जत वह स्मूल वर्म पशु अपनी सुड से युनानी सैनि ह की परुष लेता था उसको घपन ऊपर वाबु मण्यल मे प्रथर हिलाना या धौर उस सैनिक को अपन बारोही के हाथों में खींप देता वा को तुरन्त छसका सिर वड ने धनव कर देवा था। इस प्रकार परिणाम सन्देहास्यद वा कभी मेमेडोनियन लोग हाथियों के पी दे भागत वे बीर कभी उनसे वृर दूर भागने को विवस हो जाते थे। इसी प्रकार सारा दिन ज्यतीत हो जाता या, और युद्ध चलता ही रहता वा। वियोबीरस सत्यापित करता है कि,

एव थे सियमी को ग्राजा दी कि वे गंबसेना

हिर्ताकोरस सत्यापित करता है कि,
विश्वालकाय हार्वियों ये स्थार कर था,
विश्वालकाय हार्वियों ये स्थार कर था,
विश्व हुए ।
जहींने साने पैरो तम बहुत सारे पूनानी
वैनिकों की हृष्टिबया प्रसीलया पूर कूर
कर यी। हृष्टी इस में निकों को स्थानी मुखी
से एकड तेते वे और भूमि में और से
पटक देते वे। वे स्थाने (क्तां पब-स्यों
के प्रस्त के तो सो प्रामि में और से
पटक देते वे। वे स्थाने (क्तां पब-स्यों
के प्रसिक्त के) तो सोव मोवकर मार बावते

बेस ब वर्णन स्तर्प्टत प्रदक्षित करते हैं कि युद्र यातों सूत्री अभीन पर कड़ा गया या सम्बा यदि मूर्ति मीजी भी भी तो को उससे पीरड की देना दक्तक मे नहीं उत्तरी भी—जैशा कि ससस्य प्रवास्ति किया जाता है।

ोरस की बीर सेनाड रा समुद्ध हुइस में प्रस्थाति अवकर झातक के इस कमेंनी के होते पूर में रक्ष्मावस्थ्य कुछ पुनानी बनाते में बाबा किसा गया है कि पोरस सामन आ बा, पक्षा गया भार उसकी केता को शस्त्र त्याव करने पः थे। —'इतिहास की समकर भूतें से सामार

(क्रमण)

यह में सिखा है— इन पहुंची में चोर धातक उदानन कर दिया का धोर उनकी (वृद्येवारफ वेंगी) प्रतिप्रतित होने वाली पीनवा की को बात प्रतिक्रम को बो को बया पुर कर देनी की निवसों व निवक्कर साम उन्हें धरिष्ठ को बोर्च के बात को बात उन्हें धरिष्ठ को बात के बात को बात को देवी थी। इसने इनके वागों ने एसी मन दह सम्बादिक बात कि विकास के से पिरो-मिश्र कर वेंग्रेस का की बोर्च से से वह यो बहु राजकी बरवा निवस के साम विकास ने बहु राजकी बरवा निवस के साम विकास ने

तेरी लीला ललित ललाम है
— स्वामी सोमानन (शीतन)

क्षत्वर्षिमि स्वामी तुमको बारबार प्रशास है। तुमने लोक रचान है, सूर्व चन्न चमकाये हैं। क्षय प्रमा बनाये हैं।। उसामे क्षरकाम वैती लीखा लेखित सलाम है।।१।।

विषुत् की बति वचन मे बन पर्वत जल मे बल मे। ब्राति-अवति फूलों में फल मे॥ स्रवन सतानों में पक्षीगण नाय रहे गुरुए-प्राप्त हैं॥२॥

> तू महान् से महान् है धौरन कोई तेरे समान है। ये वेदों का प्रमाण है, दिया ऋषि ने यह झान है॥

'शीतक' जकती तक पर तुम को सुमिर मिले विश्राम है।।३।। अन्तरमीने स्वामी तुम को बारबार प्रणाम है।।

# त्रार्यपथिक अमर शहीद प० लेखराम जी के बलिदान दिवस तथा होली के पवित्र पर्व के एक ही दिन ६ मार्च को पड़ने पर हमारा कर्त्ताव्य

उपास्मै गायता नर पवमानायेन्दवे । ग्रभिदेवा इयक्षते ।

भावात-प्रभ उपदेश करत हैं ह मनुष्यो महतीय दिव्यगुण बाल समाजसबी पृत्यों के चरित्रो का बहु ग्रास्त्र से मनन करके उनके पद्धचित्रो पर चलकर अपने चरित्र को भी उनक सम न उनम बनाझी ऐस अनु करगीय महान् व्यक्तियो की ध यसमाज के गौरवमय इतिहास में कुछ कमी नहीं है। भायसमाज का इतिहास विसदानी का इतिहास है इसमे झायसमाज के सस्या पक महर्षि दयान द जी सरस्वती संबप्रयम ऐसे महान् व्यक्ति हुए हैं जो देश जाति भौर राष्ट की निष्काम भाव से सेवा करते करते कुछ स्व यीं भीर वस विरोधी लोगी के यडवन्त्र का शिकार हुए भीर विश्वास घाती अपन रसोइया जयन्नाव के द्वारा दूध में हलाहल विष दिये जाने के कारए। देश की वेदी पर सपने प्राणो की बलि दे द । इसके पन्चात् झायसमाज स्थापना के पहिल पंचास साठ वर्षों में बलिदानी की मन्द्री सीलय गइ दिलाई देती है। इन से स कुछ वर्माच लोगों के छुरे बौर गोली का शिकार हुए भीर कुछ ने निवास हैदराबाद की जेल म परम प्ररणामय द्मार ग्रंथ सत्याथप्रकाश का बादोलन करते हुए भ्रपने जीवनो की बस्ति दी। इन में म महर्षि की बलि के बाद धमबीर इस्सर शहीद प० लेखराम जीका नाम स्वर्णाकरों में लिखने योग्य है जिन्होंने ब्रावसमाज का प्रचार करते हुए हिंदू बाति की रक्षा में अपने जीवन की शाहति ३६ वय की छोटी सी बायू में ही ७ माच सन् १८६७ से दे थी। वह जालिम घमा ध मुसलमान युवक पण्डित जी के पास शुद्ध होने के लिए द्राया था परन्तु उसने छुरा पेट मे जोप कर उनका जीवन समाप्त कर दिया। ऐस महान् पुरुष द्वारा उप स्थित ग्रादशों को जीवन म भारता करके देश भीर जानि के गौरव को ऊचा कर सकते हैं। प० लखराम जी महर्षि स्वामी दयान द के सच्च भक्त भीर भाग हिन्दु जाति के निष्धावान् सत्रक थे। पण्डित जी का प्रतिक्षण भ्रय सस्दृति एव वैदिक र्षामया और हिन्दुन्नों को ईसाई मुसलमान श्व बनन जने माज व्यक्ति होता था। स्राप का छोटास ३० ०प का जीवन कड मप्रथ भीर भागतीत का एक प्रराणादायक कहुनी है। मा उट फारसी क महान् विद्वान होने के घलावा घरबी के भी पण्डित थे। यही कारए था कि मुसल मानो के स शास्त्राय में आपके कुरान के ज्ञान ग्रीर भरवा न प की स्ट्रिला का देखक बड बड मेलव चक्ति रहजाते वे । लक्षराम जी वड कुशल व्याख्यानदाना थे। द्राय धर्मों की त्रुटियो पर द्राप इस कूश आरतासे प्रकाश डास ते ये कि उसमे

किसाप्रकार की कटूता एव खिछोरापन न धाने पाला या। श्रीर यही कारशा था कि साप के व्याल्यानों में सभी क्षमों के लोग विशयत मुखनमान नोग भारा सल्या मे सम्मिलित हाकर रस लते थ ? यद्यपि ब्राप सभा वर्मों का खण्डन मण्डन समान रूप से करते वे तो भी मुससमानी के बलावा शय बम बालो को ब्राप के प्रति कोई विशेष शिकायत न थी क्योंकि आप की सुधार भावना का व ग्र-व्ही तरह समझते थे। प्रवाब सनातन धम सभा के महोपदेशक प॰ दानदयालु जी ता झाप को हिन्द धम बाति का परम रक्षक मानते वे बौर कहा करते ये कि प॰ लेखराम जी के होते हुए हिन्दुमी की जह कोई भी सोलली नहीं कर तकता। मुखन मान विशयकर ब्रह्मदी कादियानी धाप से बहुत दूव रखते वे धीर माप की पान के वी के प" रहते थे इसका एकमात्र कारसा वह या कि बाप उनको बार-बार शन्त्राय के वास्ते श्राह्मान करते रहते ये भीर उनके भूठ कक्षामी का मुह तोड व्यवाब देते **ये** ब्रीर एसा यूक्ति समत माण्डा फोड करते बे कि उन को नाई जवाब न देते बन पहला था। जब ही सहमदियों की कोई पुस्तक प्रकाशित होती अथवा कोई शेख पढने को मिलता आप तुरन्त अविलम्ब पुस्तिका द्वारा लेख वा व्याक्यान मे उसका ऐसा भाण्डाफीड करते कि वे दगरह जाया करते थ । उन्होने इससे ञ्चटकारा पाने के लिए धनेक स्थानी पर बाप पर कोटों ने अभियोग चनाये परन्तु लाहीर मेरठ बम्बई तथा दिल्ली बादि सभी अगह बाप निर्दोष सिक्क हुए। प्रचार कार्यों में भाग इतने व्यस्त रहते ने कि ब्रापका भाई वाएकमाल पुत्र की मृत्यु की सबर भी किसी प्रकार की वाथक नहीं होती थी। बर्दी गर्मी यात्रा का वकावट और तकलीप भी किसी प्रकार की बाबा उपस्थित न करती थी। कई बार ती हिन्दुमो का मुख्यमान बनने स बचाने के लिए प्राणी की बाबी समाकर चसती टन से खलाग अगाकर यथासमय वहा प चत थे। ऐसे थ निर्मीक प्रवारक हमारे लेकराम जी।

पण्डित जी का व्यक्तिगत जीवन बडा सादा भाडम्बर स कासी दूर वा। वह बालकपन स हा पूजापार वार्मिक ग्राची के पढन मे रुजि लत थे। पूरी परिपक्क ६ वय का धायुमे उन्होंने विवाह किया भीर कुल तान बव बड़ी सादनी स ग्रहस्थ की जुम्मटारिया पूरी क्शी परंतु प्रचार काय निरक्तर चलत रहा भाप भाय समाज धयवा हिन्दू थम पर कोई भी ब्राक्षय सहन नहीं कर सकते ने। ब्राप का कामकात्र वटा व्यापक वन वया था।

किसी भी हिन्दु को मुनक्सान बयवा ईसाई बना सेमा तब तक ही सम्भव वा जब एक कि बाप को इसका ज्ञान न होता बैसे ही बाप को पता चलता बाप तुरन्त दौडबूप करते और उनको पतिल होने से बचा नेते थ । बापने बहा सहस्रो सास्त्राय किये वहा लगभग तीन दबन छोटी वडी पुस्तकें भी लिखी । महर्षि स्वामी दयानस्य की तरहधाप का भी पूण विश्वास वा कि वैदिक शिक्षा के प्रसार क बिना ससार का उदार कठिन है । इस हेत् वह विदेशी में भी प्रकार करने क लिए जान की बोजना भा बनाते थे । उन्होने कुछ पुस्तको का भरवी में भी अनुवाद किया था। परम्त दुर्माग्यक्श दुष्टाचारी विरोधी मुससमानो ने उनका पीखा न खोडा भीर बीबा कि पहिले लिख चुक हैं। ७ माच सन् १ ८६७ को काहौर में उनक पेट में खुरा घोपकर एक दृष्ट ने उनकी हुत्या कर दी और सदैव के लिए उस वैविक जगमनाते हुए सुय की शस्त कर विवा।

बाद रहे लेकाराम जी का विलदान हिंदू ज/ति की रक्षा करते हुए हुना। परन्तु दुस है कि हिंदु वाति फिर से सकट ग्रस्त है। विधर्मी सोग घरव देशी तथा पारचात्य देशों की विपुल धनराधि के बल बूते पर अशिक्षित सामन हीन पिछाड हिन्दुस्रो को एव तथा कथित हरिवनी सौर ब्राञ्जूतो को प्रलोभन देकर श्रवना हरा बमका कर उनको धम परिवतन करने पर वाधित कर रहे हैं। मीनाक्षीपुरव वैश्वी घटनाए फिर से घटने सभी हैं। यही नहीं जिन हिन्द बाति के लोगों की मुसलमान न होने देने धमना पहिले से हुए मुसल मानो को हिन्दू धम मे वापस साने के सिए हुतात्मा स्वामी अद्धानन्य ने शुद्धि का वक्र बसाया या और जिसके परिणाम स्वरूप उनको एक विषयीं मुखलमान ने उनकी खाती में गोली दाग कर उनकी हत्या की थी धाज वही मेव पून सूसक मान होते जा रहे। यदि ऐसा ही होता रहा भीर हम न अने तो वह दुविन दूर नहीं है कि जब बाज की वहसल्यक हिन्दू वाति शल्प सस्यक घोषित की आवे और विश्वमी लोगडस स्थिति का राजनैतिक लाम उठाकर श्रपना श सम स्थापित कर हैं। स्थिति नहीं भयकर है। इस वय प० लेखराम जी के बलिदान दिवस पर सभी हिन्दू विशय कर धायसमाजी सभी भेद भावों को शुलाकर कुछ ऐसे ठोस कदम उठाने की योजना बनावें जिसस स भय कर स्थिति का सामना करके विवर्गियों के नापाक इरावे निफल कर व और उनकी मुहकी खानी पड़। यह वच और त्री महत्त्वपूरा इसलिये थी है कि होसी का पृश्चित प्रव भीर लेकराम जी का बनिवास विवस हमारी बाद में शत्तेची तारीकों के

धनुसार एक ही दिन ६ माच की बा पडा है जब कि इन हिम्बी तिबियों के धनुसार बलिदान दिवस फाल्गुन तृतीया (नेसराम ततीया) भीर होनी फाल्मुन पूर्णिमाको होते हैं जो कभी भी एक दिन नहीं पढा करते। प० सेसाराम जी का जहा एक मात्र यही सवेश या कि सब हिन्दू सवए। और बख्त सोटे बढे सब मिसकर सगठित होकर एक सब्द हिन्दू जाति के तौर पर धपना धस्तित्व स्वापित करें। वहा होती का एक सबेश मञ्जूषा मिलन भा है कि सब लोग बापसी मेद बाव मुलाकर छोटे-बढ सभी मिलकर रहें और पुरखो का इस दिन के लिए वह बी कहना है कि बाज के दिन कोई सरपुरय नहीं है सभी एक दूसरे की सहश्तुभूति के पात्र हैं। देव का पवित्र सदेश भी यही है कि सब छोटे बड़ो के साम मिलकर काय कर और मानन्द रह हों ।

> क्लेकिरिक्कामि स रमामहे। ऋग्वेष १०।१३४।७

भत हमारा सब का कतव्य है कि हम समय के प्रभाव को देखें भीर हिन्द वातिको विनाश के गड्डो में विरने से बचाय । यही समय की पुकार है।

उत्तिन्छत बाग्रत डाप्य बरान निबोधत ।

बाबो बरा परिवत जी की जीवन तालिका पर बष्टिपात कर लें---

सैव्यदपुर नाम के प्राम तहसील चक बास जिला बेहसम (पाकिस्तान)में महता तारा सिंह के बर ने जन्म -1=15 दिहाती स्कूल मे उद फारसी पढ़ने के

निए स्कूल ने दाखिल-१८६४ चचा गम्डासिंह क पास पिशावर 2=48 वान।--

चचा की नौकरी स्थानान्तर होने पर प॰ जी का वापस चर-१८७३ वृश्चिस में नौकरी वेसाबर में --- १८७४

ऋषि दवानन्द क दक्षनों क सिए धज मेर जाना--3029 नौकरी खोडना---\$550

पेशावर में बायसमाज स्वापना-१८६० कुम्स मेले पर सहास्था सुशीरास के

साव प्रवार काय--9329 ३४ वय की बायु में २६ वर्षीय लक्ष्मी देवी से विवाह-1581

> पुत्र जय---258X 2528 पुत्र मृत्यु

एक वर्गाच मुखसमान द्वारा पेट में खुरा घोष कर हम्या--- ६ माव १८१७ धन्तिम सस्कार जाहीर में सहस

कोनों का शब बाता ने सम्मितित ७ मार्च १८१३ बीक्षा

# वैज्ञानिक वैदिक चिन्तन

--- प्रो॰ प्रतापसिंह समीक्षक बा० क्रिका विकेशी

प्रकाशक -- धार्यकुमार सना (रिवा०), किनके दिल्ली-६ ऋषि कोबोत्सक १८८४। युल्व १७४, पुष्ठ ४०

श्राव का विरव भौतिक विकास के यब ये उत्पात होकर पैवाधिक नृत्य कर खा है। बसी बीवों में यपने को सर्वेषण्य मानने वाका मानव बौतिकता के वहन मानव में हिक्क बीव बजुवों को पी लिजतत कर रहा है। उसका धन्त कहा होगा, हु भी बताना अब बठिन है। परन्तु इतना निश्चय पूर्वक कहा वा बकता है कि ताब की रक्कमांपी पैरिनियर्तियां कम्माण्यी वेदवाशी का मुखरण न करने के कारण है पैता हुई है। विवक विज्ञान का समाय भीर परिवर्धी कियारियार का प्रमाव—सन् होगों का विवस्तित रक्काव साथ के मानव हमान को एक ऐसे पाता पर एक हो तास्त्रा है अबन बहाव है। बहुव यानि विनाद । इन से बचाव का एक हो तास्त्रा है—वेद का वक्ता पहाना सुनना और सुनात, क्योंक वेब ही वब वस्य विवक्तों हो सीर मानव वीवन से पीया होने वाली वसस्त्राम का स्वाधि ओर है।

> प्रेषक —विकय हिवेदी महाराजा पूर्णवन्द महाविद्यालय बारीपदा (७५७००१) (उडीसा)

# ग्रपराधी अधिकारियों को फांसी हो

जानूची काम्ब के ब्रांश्युश्य अधिकारियों ने देश के बाब जो निश्वाचायत किया है, वह एक अमिट कलक है। भारत येंचे देश में, जहा पर राष्ट्र के सिए सबंदर व्यवस्ति करने वाने बहुत पैदा होते रहे हो, दस प्रकार का विनोना हस्य सम्भूषे बीट के समस्य है। इस बातूची काम्ब ने यह प्रमाचित कर दिया है कि हमारे देश में प्रधान कर तथा है। इस बातूची काम्ब ने यह प्रमाचित कर दिया है कि हमारे देश में प्रधान कर तथा मुद्राचे प्रदास विभाग कितना प्रसान व अवर्षण्य है। इस काम्ब के सबस में किसी भी प्रकार की दिवासे हैं। इस काम्ब के स्वत्य में स्थान की दिवासे हैं। इस काम्ब के स्वत्य में कियो भी प्रकार की दिवासे की प्रधान की स्थान की प्रधान की प्रधा

रावेदबाम बार्व, मुसाफिर साना, सुल्तानपुर, ४० प्र०

# श्भ विवाह सम्पन्न

विस्ती। वार्ववेषिक वना ने ऋग्वेष के सन्येजी प्राप्त के सम्पादक एव पणकार पितव बहावल स्नातक एम० ए० की बुपुनी वीपिका सानेय एम० एव-सी० का बुव विवाह बम्मू निवाली की रामधृति समि के बुपुत बा० रवीला समी एम० बी० बी० एक के बाव १० फरवरी ८३ को नैदिक विशि वे सम्मन हुया। इस सवस्य पर सार्ववक्त के प्रविद्ध विद्यान् स्वाकत एव प्रीतिमीज ने उपस्थित ने। जम्मू ने बम्बन्त नेत्वय के सवस्यर पर प्रतिनिधि समा के प्रवान बा० वोसेन्द्रपास सास्ती ने यह एव स्म कराई।

निवेदक---

रचुनाच त्रसार गठक

# नभ के तारे

—डा० रमेशकुमार लो' समीक्षा- डा० विजय द्विवेदी

प्रकाशक - धार्मकुमार सभा किकी दिल्ली। प्रव लिपि - सारावा सस्करसा २०४१ विक्रमी। मुख्य १५०, प्रव सव ५०

धानीच्या इति वाल शाहित्य का विषय है इसमें शियुपो को सत्याधिक उन्नित से सम्बन्धित तथा उन्हें चरित्र वल से युष्ट होने की प्रेरणा देने जाती प्रठारह रचनाएँ हैं। इन रचनायों के कुछ कथानावक हमारे इनिहास के महान् हैं तो कुछ ऐसे सीय मी हैं जो सपेशाइन कम साने माने जाते हैं। इस में बस्दुत नाम को ही नहीं काम को नाहत्व विषया वया है। जेवक का उद्देश 'यही रहा हैं कि हसे यथासम्मय रोजक व उपयोगी बनाकर सपने कुमार आहमी के हाथ में दिया आए। कहने की बकरत नहीं है कि वेबक अपने ज्यार में दूर रहा है।

भारत पूर्णन सवा से बीर प्रश्निनी रही है। यहाँ काल के हरेक खल्क से सरक्ष विचार त्यांची, तथी परीचकारी खेनावती समात्र सुवारक सीर युगलकारी सहामान्य वैचा हुए हैं। इन महाखनी हारा दिक्ताए नय यच को भुकाकर साज हमारे कियोर इक सोर मान रहे हैं जहां चौतिक सुन्य सहजता से पिक सकें आर्थमान की देखी नाम की प्रेरणा दे रहे हैं। हमारी चिका सरकाएं य दमी को सादमी बनाने की जगह हृदयहींन वैज्ञानिक मानव निर्मित करने की फैन्टरिया बन गई है। साहित स्वप्ती कमात्र विकृतियों के साच सारवा का महा स्वाप्ता तथा चर्म यथा बन नया है। प्रस्तावार को रावर्गीतक प्रवासन ने साज के जीवन का सपरिहाय प्रव मान निया है। ऐसी विचित में कियोरी को चरित्रवक्त कहीं से मिने ? औ' भी ने इस होटी सी पुस्तिकां के विरिए मात्री गंदी को सामसवात है सिने ? औ' भी ने इस होटी सी पुस्तिकां के विरिए मात्री गंदी को सामसवात है सिने की निर्माण करने का सराहनीय प्रयाव किया है। पुस्तका के जात सरकरण इसकी सोकप्रियवा के प्रमाण है। कामना है इसके सीर सरकरण हो, साकि साने वाली पीडियां इसके प्रकाश देश बाजि हित सपने जीवन के स्वेत की सही पहिचान कर सकें। इति की सकते हैं।

प्रेयक--विश्वय द्विवेदी

महाराजा पूर्णंचन्य महाविद्यालय वारीपदा-७४७००१, (उडीसा)
आर्यंसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली की अपील

इस निवार की स्थापना १२६० में हुई थी उस समय एक सस्यायी अवन बना सिया स्थापा। सब इसका मथन बहुत ही बीएा शीणें हो गया है। तस्यायीजनो को नवस में बैठने में कठिनाई होती है वर्षाक्रम के उन टपकती रहती है। सत हम बबब निर्माण के लिए सामका सहयोग जाहते हैं। इसके साथ हमारी घोजना है—

(१) दक्तित वगके लिए नि शुल्क प्रौढिशिक्षातचा सन्ध्याकाल मे दलित वर्गके शिक्षमीको नि शुल्क खिक्रण।

(२) वर्मार्थं होस्योपैधिक हिस्पेन्सरी।

(३) धर्मार्थं पुस्तकासः एव वाचनासय सवासन ।

(१) वशाय पुरानाता र प्रवासनाता प्रवासन । इस समस्य पुत्रम के महान् कार्य में प्राप्त स्वभाई बहुनो का तन भन घन से सहस्योग प्रपेक्षित है। दिल कोलकर समिक से समिक दान यें। प्रपना मनीसार्वर, वैक, हाएट इस पते पर भेवे।

> ए-२७४, ग्रायेंसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली-२३ ग्रामार सहित डा॰ नदनलाल--मन्त्री

### वार्षिकोत्सव

महाँव वसाननाथं पुरसूत कृष्णपुर समना [परुखावार] उ० प्र० के पावन प्राञ्जभं में सहींव वसानन्य बनियान शताब्दी तमारोह का प्रायोजन १५-१७-१० मार्च -१६ को नहे ही हुगाँक्ताल के साथ किया जा रहा है। जिससे साथं जयन् के सुप्रसिद्ध साथें विद्याल क्याडी महोग्येकक पत्रार रहे हैं।

निवेदक बार्य चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति

# आर्य जगत् के समाचार

आर्यं आदशं विद्यालय, आदशं नगर, दिल्ली मे ऋषि बोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता

पाय प्रादक्षं विद्यालय, ब्रादम नगर, दिल्ली में ऋषिवोधोत्सव तथा सावस्तु प्रतियोगिता 'प्राय केन्द्रीय सभा के तत्वावचान में तथा स्वायी विद्यानस्य सी सरस्वती की सम्प्रलता में महींय दयानन्य सरस्वती के बोचन की तीन प्रेरणादायक परनाए विद्याप र प्रावसिक कक्षा के खानों की भाषण प्रतियोगिता का धागोवन हुया। कार्यक्रम रोजक, प्रेरणादायक नवा शिक्षाप्तर वहा। क्ष्याभी जी ने बच्चो को कार्याने विद्या तथा पुरस्कार दिए। दीपिका बता प्रवस्त तथा गीत् साहुना ने बितीय स्वान प्राप्त किए। स्वामों जी ने कहा कि सहिए। स्वामा जीवन परनाधों के प्रराप्त किए। स्वामों जी ने कहा कि सहिए। यह बोबोस्सव हमें मी वोच करान आप हमें उनके जीवन से प्रेरणा तेनी चाहिए। यह बोबोस्सव हमें मी वोच करान प्राप्त है। हमें उनके जीवन से प्रेरणा तेनी चाहिए। यह बोबोस्सव हमें मी वोच करान प्राप्त है विद्यार से उनका सुकाबका करे। '

सयोजक--- महाबीर बत्रा

# दिल्ली सभा द्वारा वेद प्रचार

में ११-२-५ को ह्यात रोजेम्सा किसो काय से करी व १२-३० वजे दो पहुर गया या। वहां से जब मैं प्रांते लगा तो उसके पीछे सरकारी कार्यालय है जहाँ पर आर्थ प्रतिनिधि सभा गिल्ली का प्रभार वाहुन न तर पडा। वहा पर औप ० सरसदेव जी स्नातक के भजन व उपका प्रवार वाह्य ने साम स्वच्यानन्दनी के प्रधार का लोगो पर कापी प्रभाव पडा। वहा दैनिक प्रधार की धावस्थकता है। वस्योक्ति वहाँ पर कई राजकीय कार्यालय है वोट स्ववस से समिक प्रभाशी प्रचार रहेगा।

देवेन्द्रकुमार शास्त्री भायसमाज मन्दिर, रमेश नगर

# क्षि अनुसधान सेवा परीक्षा मे हिन्दी माध्यम

हुमि भ्रमुसवान सेवा परीला में कुछ समय पहले तक अधे जी माध्यम ही बा। सन् १९८५ में होने वाली परीला में सभी विषयों के प्रस्तपनों के उत्तर हिन्दी में बेने की सूट पहेंगी। यह परिवतन सभी शब्द के स्वावत सोग्य है। हिन्दी-माची लोगों के विद्याग्यों को इस पुविचा का पूरा साम उठाना चाहिए। वे हिन्दी में सपने विचार बहुत अच्छी अकार अवक्त कर पाएंगे तथा उनकी सफलता के सवसर पहले की सपेला स्विक सच्छे रहगे।

हिन्दी-मापी क्षेत्रों क इवि विश्वविद्यानयों को भी बाहिए कि वे प्रपत्ती सभी कक्षाओं में विभिन्न इवि विश्वव हिन्दी माध्यम से भी पढ़ाए जाने की व्यवस्था करें। इस समय विद्यार्थों का काफी समय प्रदेशी माध्यक पड़्या हान करने में का बाता हो। हिन्दी माध्यम हान स उस समय का काफी भाग वच सकेगा विश्ववे इवि विद्यार्थों में पारवा होने में नाग सकेंगे। जहा-बहा उच्च स्तर की इवि विश्वा हिन्दी माध्यम से देने भी क्ष्यवस्था है उसकी मूचना इपया "महामत्री हिन्दी व्यवहार सहात है-१, २३ वस्त वहार दिवार माध्यम से देने भी क्ष्यवस्था है उसकी मूचना इपया "महामत्री हिन्दी व्यवहार सहात है-१, २३ वस्त वहार दिवार नहीं दिवार माध्यम से के का कर्ट करें। चिन कृषि दिवार सम्बन्धी से स्ववस्था स्थान है-१, २३ वस्त वहार सहात है उसकी मुख्य स्थान है-१, २३ वस्त वहार से हिन्दी स्था स्थान है। है। तहा के ध्यवस्थान से से स्ववस्था स्थान है से वहा के ध्यवस्था स्थान हों तहा है। स्ववस्था स्थान हों तहा है।

हरिवाडू कसक महामत्री, हिन्दी व्यवहार सगठन, डी-३५, माउथ एक्सटेशन, भाग एक, नई दिल्ली-११००४६

### आर्यसमाज मन्दिर सैजपुर

भायनमाज मन्दिर, सैजपुर वोषा, महमदाबाद के वार्षिक चूनावों से प्रधान की गोविन्दराम सदोरोमन उपप्रधान श्री गुरदासमस छागाराम, नत्री श्री हरीलाल गुरदासमल उपमत्री श्री नेपाराम मासहमल, कोवाध्यक श्री दोलतराम जी व निरोक्क श्री सक्ष्मीचन्द मोहनलाल जी सर्वानुमति से चुने वए।

### वार्षिकोत्सव

'भाव कन्या मुस्कुल नरेला दिल्ली का वाधिक महोत्सव दिनाक १-१० वार्ष १८८५ सनिवार, रिवार को कुल प्रीम से समारोह पूर्वक मनामा वादेश। इस सुब सवसर पर सनेक सन्यासी, महात्मा विद्वान अपदेशन सन्नीक तथा मानतीय राष्ट्रीय नेता पत्रार कर वर्षेशामुग्त पान करायेगे।'

निवेदिका-- आचार्या कन्या गुरुकुत गरेमा, किस्सी

### आवश्यक सूचना

वैरिक यति मदल की ओर से वैदिक सन्यास झाश्रम गाजिबाबाद में १६ मार्च से ३१ मार्च १८८५ तक स्वाच्याय संस्कृत शिक्षण शिविद लगाया जायेगा। प्रत सव इच्छ्रक मान्य परियों (सन्यासी, नैध्यक ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थियो) से प्राचैना है कि समय पर पट्टच कर शबस्य लाग चठावें। सस्यार्थप्रकास, सस्कारिविच झावि पुस्तक केणी लेखनी तथा चहु धनुताद वस्त्र अपने साथ धवस्य लागें। मोचन का प्रवच्य बाग्रम की ओर से होगा।

> निवेदक क्रम्यक्ष स्वामी सर्वानन्द वैदिक यति सहस्र

# ऋषि बोघोत्सव शिवरात्रि

धार्यसमान महुः होधियारपुर, सद्धानन्द वाजार, वालन्दर धार्यसमान धर्वः धार्यसमान धर्वः होधियारपुर (स्वामी अद्धानन वाजार, वालन्दर से १७ फरवरी ११-६, प्रात - वजे से १२ वजे तक ऋषिवोधीखन शिवराधीय में वे उपनक्ष में बडे समारोह है प्रनावा गया। कल्या प्रायंता ने परवात् स्वस्थित प्रक सम्प्रत्त हुधा। क० र० हावा हायर सै० स्कूल के तथा हावा मावल गर्न्य हाई स्कूल के धम्मारक तवा हाव एव सन्य वामिल विचारपार के जन सैकड़ी की स्वस्था से सम्मितित हुए वह के परवात् स्कूल के ह्या हा साथ से स्वस्था से सम्मितित हुए वह के परवात् स्कूल के ह्या वामिल विचारपार के उपने स्वस्था से सम्मितित हुए वह के परवात् स्कूल के ह्यान तथा हाजाशी तथा प्रितिशक समृतसाल की कला। योगेश्यात स्वस्था की स्वस्था से स्वस्था स्वस्था से स्वस्था से स्वस्था से स्वस्था से स्वस्था से स्वस्था से स्वस्था स्वस्था से स्वस्था से

# महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल का द्वितीय वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती को बड़ी भावभीनी अद्धाञ्चली मेंट की।

महीं रयानन्व वेव वेदाज्ञ मुस्कृत चीमा का द्वितीय वाधिकोख्व प्रारम्म हुया। एव सवकर पर पावन यर पारायण यक्त का बाव खुक्ता ११ रिवार, हुट्य सवत् १९६०५३-८ रया-रावर १६० को सी वयदेव की वकीत के बब्बानात्व से युक्तारभ्य हुआ एव यज का स्वाप्त माथ खुक्ता १५ मतकार तक्त मुख्य प्रारम्भ हुआ एव यज का स्वाप्त माथ खुक्ता १५ मतकार तक्त मुख्य प्रारम्भ हुआ एव यज का स्वाप्त माथ खुक्ता १५ मतकार तक्त मुख्य प्रारम्भ हुआ । अथा विवस्त के बहुआ और वक्ता सावदेशिक स्वाप्त के स्वप्तमी एवं माथ यारतीय साथ प्रतिकित्व का से प्रायम सी पर पावपुत नाम थे। भ्रापने प्रकृत को भ्रापन की प्रयास विवस के स्वप्त की प्रतिकार को स्वप्ता दिवा। भूत का सी पर किसी को भी नहीं बखाया वार्य इस साथ के साव तन मन वन के स्वस्ता वेकर पुत्कृत के सर्वपता सहात्वा साथ इस साथ की प्रारम्भ हुआ वेकर पुत्कृत के सर्वपता साथ स्वर्ध में प्रारम्भ हुआ वेकर पुत्कृत के सर्वपता साथ स्वर्ध में प्रारम विवस के स्वर्ध पुत्कृत के सर्वपता साथ स्वर्ध में प्रतिकार वी। द्वितीय व सन्तिन दिन के बहुस पुत्कृत के सर्वपता सहात्वा साथ स्वर्ध में प्रतिकार विवस के स्वर्ध में स्वर्ध माथ स्वर्ध में स्वर्ध स्वर्ध में स्वर्ध माथ स्वर्ध माथ स्वर्ध माथ स्वर्ध माथ स्वर्ध में स्वर्ध माथ स्वर्य स्वर्ध माथ स्वर्ध माथ स्वर्ध माथ स्वर्

१—महाँव दयाक्तव वेद देवा हु गुरुक्त वर्मायं आयुर्वेदिक धीषवालक स्वाता वाथ सर्वप्रध्य भोगा साम में वल रह सासकीय आयुर्वेदिक धीषवालक से वर्तमाल में ने हुए भवन में सहयो। लिया बाय तरप्रवाद आयुर्विक उपरूरणों से मुस्त धीपपालस वहने हुए हैं नाल की राशि प्राप्त करने हुँह समिति धावर कान्य वहीं दिया धावापुर, सारणपुर, गुजलपुर उज्जैन इन्दौर, भोगाल के कार्यकर्ताओं की बिट्ट की बाये। आयुर्वेद स्वन एव भी स्वामी अदानन्द द्वार का खिलान्यास करवाने हुँह केन्द्र सासक तथा मध्य म रहा सासम है विष्टिक साम के प्रधान प्रवाद किसी केच दानवाता स सम्प्रक स्वाप्त प्रधान वाय । इस कार्य हेतु की प० रावपुर वी साम तथा साथ। इस कार्य हेतु भी राज मोहनलाल की समा वाथ। इस कार्य हेतु की प० रावपुर वी साम तथा है। इस सम्प्रक लाममाटी सायर तथा भी मेक्साल भी वेत सम्प्रक सामर को नियुक्त किसा बाये।

२— इस की क को ४० वर्ष पूर्व धार्यसभाव ने ईशाइसो के चमुल से मुक्त करावा था। यथवाए कार्य सुप्तर धवस्था ने हो गया था। पुन इस क्षेत्र को चिरिक एव नैतिक सिकारों ने हेतु वार्तिक सिकार को को धवन्य र ते हुलाकर प्रवम् स माह में १२५ पुत्रक को प्रीव शिकार विशे तो कालीराम की धवन, की स्वतिह्व की बार्व कालव की रमेशकर की वार्त इकलेरा, बी सक्लीतारायण की गोरवामी तथा की चोहनमहाद की पेण्टर विजवकार कही दिया, की रमेशकर की समित का बठन करके की प्रवृक्त के साथ कालव करें। परवाद, हुवाँक्ता के साथ कार्यक्रम स्वार्त्य हुवाँ।

व्यक्षिकाता स्वामी ज्ञामानम्य सरस्**वती** 

# त्र्यार्यसन्देश विशेषांक

२४ मार्च धार्यसमाज स्वापना विषय पर प्रायंतन्त्रेय काहुम स्मरखीय सम्रहुखीय विद्योगोक प्रकाशित कर रहे हैं। विद्वान् लेसक सपने लेस निम्वाकित विषयी पर क्षेत्रने की हुपा करें।

- १ स्वामी दयानन्द ने झाच्यारिनक जगत् को महान् देन दी है।
- २ महर्षि दवानन्द आधुनिक तकनीकी के पोपक एव वैज्ञानिक थे।
- ३ भारतीय समाज के जागरण ने बार्यसमात्र का योगदान।
- ४ मार्यसमान क्वा चाहता है ?
- प्र हिन्दी भाषा के उत्थान में बायसमाज की मुनिका ।
- ६ वैदिक दार्श्वनिकत्व ।
- ७ ऋषियो और योगियो की तेजस्वी परम्परा मे दयानन्त ।

लेस मेजने का पता---

सम्पादक--मार्थं सन्वेश साप्ताहिक १४, हनुमान् रोड नई दिल्ली-११०००१

# पाप-निवारण

(पृष्ठ २ का क्षेत्र) संस्कृत सम्बक्ता वहाले वासी। वसि सिकिसी के प्रति कोई दोह करूँ, कोई

मैं किसी के प्रति कोई द्रोह करूँ, कोई निम्बनीय बचन बोन् या प्रसत्य बचन कहू, उस सब को दूर कर दो।

कुंए और तालाव के वक्त में वह मक्ति कहाँ है, वो दुर्गत प्रोह झादि को को सके। परवाताप का जल ही यह कार्य कर सकता है है

३ तथ--पाप से बचने कातीसरा अपाय तप है। वैद में कहा है---

विद्यशस्त्रहत् तपसा तपस्त्री।

— सम्बंग् १३।२।२५ सपस्की तप से अपर उठता है जन्नति करता है।

पार वे क्लो का उराय शह है कि ज्युक्त कर्म कार्यों में लगा रहे। तर क्ला क्लाकर बेठना नहीं है। एक पांच पर कड़े हो जाना भी तप नहीं है। एक पांच पर कड़े हो जाना भी तप नहीं है। तप का वर्षों हम तक्त । युक्त नुक्त मुक्त-पाल, वर्षों तहीं, हानि-जाम जीवन-मरण-हम में कम रहने का नाम तप है। मुख्य पाप कर करता है। हुक से तु जित होकर सौर सुन पे सामियान से मुलकर मनुष्य पाप कर करता है। इस सहन से मनुष्य पापों ह कम जाता है।

У देशास्त्राम —चेद का स्वाच्याय तृष्य को पानो छै वणाता है। वेद के गीर उपदेश मृत्युष को धानिष्ट वे वचने गीर तृष्ट की ब्रामित के नियु उपदेश वेदें १। वेदो का प्रस्थयन मृत्युष को पाप धोर ात्यास के मार्ग से हटाकर सम्बुद्ध सुरू गिक्क उपनीत धोर नियम्ब्युष्मीका के गोर पर चलने के नियु हुरम ये उत्खाह १९ साहस सर देते हैं।

बनु महाराज कहते हैं — बेबाम्यासोऽत्यह जनस्या जहायज क्रिया जना। माह्ययस्थायु पापानि जहायातकसम्यपि ।

—मनु० ११ । २४६ स्रीतिक वेदों का स्वाच्यास, पञ्च- महासमो का अनुस्तान और समा — सहन-धीनता — वे कमें महापातकों से उत्पन्न होने वाले पापो को भी शीघ्र नष्ट कर वेते हैं फिर सावारण पापो की तो बाता ही क्या है यह दनका अ करण यश्यक्ति करने रहना वादिए।

ध्र वान—सान देना पापो से वबने का पाचवाँ उराय है। दीनों के दुल दूर करने और शाचकों की साशा पूर्ण करने से बन का व्यय करना धरन कराय को नियम प्रव पिता बनाता है। पात्र को दियाचा वान व्यय नहीं है सपित् लाम है।

किंपी कवि ने क्या सुन्दर कहा है— विश्वका नैव निकान्ते बोचवित गृहे गृहे । दीवता दीवता निस्वमदातु फलमीहसम् ।।

भिणुक मामते नहीं हैं अपितुषर घर जाकर जोगों को जोज प्रदान करता हैं। वे कहते हैं कित्य दान दो दान न देने परतुस्हारा बसा हमारे जैसी हो बाएसी।

दीन-दुक्षियों को दान दो। बावस्थ-कता से अधिक वन अब दीन और दुक्षियों की सेवा ने चग जाएना तब मनुष्य सक्ष-मास ग्रादि के तुरावार सेवन वाएगा।

# वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक **महेन्द्र कपूर** द्वारा मर्हाष दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध णजनोपवशको-

सत्यपाल पविक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्मालाल पीयूष, सोहनलाल पिषक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना क क्सन्स तथा प बढादेव विज्ञालकार के भजनो का सप्रह ।

आय समाज के अन्य भी बंग्ल से कंसरम के सूचीपत्र के लिए लिख कुन्देशकों में इतेन्द्रानियस (इन्डिया) में लि

कुन्दाकाम इत्पर्शानका (इाण्ड्या) आहाल 14 माकिट || फेस || अशाक विहार दहली 52 फोन 7||8326 744||70 टैलेक्स ३|-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट समा कार्यालय १४ हनुमान रोड पर भी उपलब्ध हैं।





# वावाहिक वार्वसनेव ११ ह्यूगल् रोह, व विकास

सरक्षक चिकित्सालय प्रधान विल्ली प्रचान मधी भावं प्रतिनिध्य भाग केन्द्रीय महाश्रय कुन्नीलाल एव प्रवास सा० गा० प्रति० सभा बेरि द सौकम्प से महाक्रियां वी हट्टी प्रा॰ सिनिटेड १/४४ कीतिनगर श्रीक्रोगिक क्षत्र, नई बिस्ली-११००१

おきがきお おみ さみ さず きゅうぎょう

# - निबन्ध प्रतियोगिताः

रजि॰ नं॰ डी (सी॰) ७४%

स्वर्गीय श्री लालमन आयं को पूज्य स्कृति में एक श्रविल भारतीय निवन्ध प्रनियोगिता का अध्योजने किया जा रहा है। निवध के विषय निम्नाकित हैं।

१- महर्षि दयसनन्द के सपनो का धारेस २- वर्तमान चारितिक सकट.

• अस्यस्याओं का समाधान

किसी एक विश्व ने हिन्दी ने २ क्ष्मार सन्दों ने विश्व वर्ष निवन्य की तील; प्रतिया भेजना प्रावस्थक है। जिक्क्य जिसने की धन्तिम खिवि २० आई 28=X 8 1

प्रथम पुरस्कार १००० रुपये, द्वितीय ५०० रुपये, तुतीय ३०० रुपये ५ सात्वना पुरस्कार प्रत्येक को

प्रतिष्ठित विद्वानी का एक निजायक मण्डल निवाको का मुख्याकन करेवा. चिस का निणय सर्वेमान्य हरता।

निवाध नेजने का पता--

थी निलकरात्र गुप्न संबोजक-श्री लालमन ग्रामं, निबंध मतियोगिता प्रधानाचार्य-हमाज माडल स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

उत्तम स्वास्थ्य

कांगडी फार्मसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

गाला कार्यालय-६३, गली राजा केदारमान. कोन २६६८३८ बावडो बाखार, विल्ली-६



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वर्षं श्री सक १६

रविवार १० माच १६८३

मार्गसम्बद्धर १९६० ५३०८४

फाल्गुन २०४१

दयामन्दाब्द--१६०

# पं० लंखराम ने आत्मबल से ईसाइयत की आंधी को रोका

धार्यसमाच शालीमार बाग के बार्विकोत्सव पर बोलते हुए दिल्ली द्वार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने यह उद्गार व्यक्त किये। उन्होने बार्य जनता को बाह्यान किया कि हम धमर शहीद लेखराम के बताये हुए मार्ग पर चलते हुए बार्यसमाज की दुन्दुमी बजाते हुए सार को धार्य बनायो, इस नारे को क्यान्वित कर।स्वामो श्रद्धानन्द ने o लेखराम की हत्या पर कहा था-हिंदि के खुन की एक एक बुद से एक कि बीर उत्पन्न होगा जो धार्य धम हो रक्षा व प्रसार में अपना जीवन रगा देगा। हम सब को चाहिए कि हिंद की चिता के समीप खड होकर तिज्ञा करे कि भ्रापस की फूट मिटा-र सब से 🌉 पूर्वक मिलकर कार्य रने तथा शहीब के अनुसार लेखन कार्यको निरन्तर जारी रखगे।

धार्यसमाज शालीनार बाग मे लेखराम पुस्तकालय का उद्-रित बार्य केन्द्रीय समा के प्रधान महाशय जी ने किया तथा ११००/ रु का पुस्तकालय हेतु सात्त्विक दान दिया।

इस अवसर पर भायोजित बेद सम्मेलन मे श्री स्वामी जगदीश्वरा-नन्द सरस्वती, प्रो॰ रतनसिह, डा॰ वाचस्पति उपाध्याय, प० प्रमचन्द्र, श्रीवर तथा डा॰ ग्रानन्द प्रकाश ने वेदो की महस्राका प्रतिपादन करते हए प्राय जनता को उदबोधित किया कि वे बेदानुसार अपने जीवन को

इस ब्रवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी का उत्तरप्रदेख सरकार द्वारा अपनी पुस्तक तत्त्वमसि के लिए पुरस्कृत होने पर भ्रभिनन्दन किया गया । स्वामी जी ने ध्वजारोहरा करते हुए धोश्मू ध्वज की पताका लहरात रहने के लिए मार्थ जनता से मनुरोष किया कि वे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए पूरो शक्ति से काम कर । २ करवरी १६८५ को चुन्नीलाल मेहता भाषण प्रसिमाविता भायांजित का गई जिसम क्षेत्रीय

लिया । चल वैजयन्ती टी॰ ए॰ वी॰ स्कूल शालीमार बाग को प्रदान की गयी। मेहता परिवार ने सभी बच्चो को भारी पुरस्कार प्रदान किये। १ जनवरी १६८५ को श्रीमनी ईश्वर

विद्यालयों के छात्र/छात्राधों ने भाग देवी की अध्यक्षता में धार्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुम्रा, इसमे श्रीमती प्रमशील महेन्द्र श्रीमती शकुन्तमा दीक्षित भीर डा० वर्मा ने महि-लाम्रो के उत्थान के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए।

# धामिक उन्माद का नमना

इण्डोनेशिया के धर्मान्ध मुस्लिमो ने बोरोबुदुर के विश्वाल बौद्ध मन्दिर को बम विस्फोट से व्वस्त कर दिया। भनेक स्तूप कई विस्फोटो से टूट गये। विश्वप्रसिद्ध इस मन्दिर मे महात्मा बुद्ध के जीवन चित्रों के साथ रामा-यण की दर्शनीय कथा भी उत्कीर्श है। इसका निर्माण भाठवी शताब्दी मे प्रसिद्ध राखा शैनेन्द्र के वस्त्रों ने

यह कारवाई बार्मिक उन्माद तया मदान्वता से कही ग्रविक सब-कर भीर मानव जाति के विरुद्ध है। स्मरणीय है दो वर्ष पूर्व सयुक्त राष्ट्र सघ ने शिक्षा, विज्ञान और सास्कु-तिक सगठन (बूनेस्को) ने लगमग ३० करोड रुपया व्यय कर इसका जीसोंद्वार किया था।

# श्र ति का गान करो - उत्तम बन्द झरर

नक्षत्रों से बालोकित यह नम का प्रापण इरा मरा वह स्लेह सिक्त करती का बाना क्या का सामा समज्य स्मित अवर विस्व पर धरण सारची का गुलाल कहें विश विकासना रवि शशि की यह श्रांस मिचीनी रैन बिवा की वादी की सरिता का वस सा का इठमाना सौरम पूरित वर्ण वर्ण सुमनो के स्नांबल मसय पवन का बात पविक को बीर बचाना किसी सहदय कवि का है यह काव्य मनोरम बादल के ब्रवबुष्ठन में खिश्व का मुस्काना देश काव्य कवि को जानी यदि जान सकी रे। इस के विक्य भी तो का अनुति के वाल करते है।

# श्रायेसमाज स्थापना दिवस

शार्व केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान ने दिल्ली की समस्त आर्य ौाओं का सामृहिक विश्वाल कार्यक्रम २४ मार्च, १६८५ को दोपहर २ बके श्र बजे तक बिट्रल भाई पटेल हाउस, रफो मार्ग नई दिल्ली के प्रामग्र मे मारोह पूर्वक बनाया जायेगा। प्रधिक से अधिक सक्या मे प्रधारें।

> निवेदक सूर्यदेव महामन्धी

# शोक प्रस्ताव

दिल्ली बार्य प्रतिनिध्न समा के समस्त स्विकारी एवं कर्यचारी शार्यसमाब सन्तिनगर, अमृतसर के यशस्त्री प्रवान श्री जगदीसराज भी के झाकरियक केशवसान पर गहरा दु स एव सोक्र व्यक्त करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह विकास बात्मा को सब्बति अदान करे भी दू उनके वियोग में सतप्त दू सी पारिवारिक जमों को इस महान् हु स को बहुन करने की क्षुनित प्रवान करे !

डा॰ वर्षैपा<del>स</del> (महामन्त्री)

# महात्मा इंसराज जन्म दिवस

अनर्य प्रादेशिक समा दिल्लीकी धोर से हुर वर्षकी माति इस वर्ष भी २१ भन्नेल रविवार को त्यागमूनि हसराज जी का जन्म दिवस समारोह E-३० बजे से १२-३० बजे तक तालकटोरा गार्डन के इण्डोर स्टेडियम मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस समारोह के सघ्यक्ष आर्थ जगत के मुर्घन्य विद्वान् एव सन्यासी स्वामी सस्यप्रकास जी महाराज होगे। उदन अवसर पर समस्त भार्यजन भारी सख्या मे पथारे।

डाo वर्मपाल-महामन्त्री, दिन्लो बार्य प्रतिनिधि समा

# सत्संग वाटिका

ससार बाग्तन में मसार है। इसे व्यर्थ ही उदासीनो ने झसार बता विया। इस मे एक से एक सार पदाथ भरे पड है। दिव्य रत्न दिव्य ग्रीविधया धन्य धनेक धद्भुत चमत्कार दिखाने वाली जडी बृटिया भीर चात्एँ इसी ससार मे है। विजली इसी ससार से निकली जो रात को दिन बना रही है और महीनो का काम मिनटो में कर डालती है। ऐक्सरे (सूर्यं की किरण विशेष) इसी ससार का चमत्कार है, जो शरीर के भीतर हड़ियो को प्रत्यक्ष दिला देती है ! सहस्रश रोगियो को इससे लाम पुत्रताहै जिजलीकी चिकित्सासे भी रोगियो को प्रपार साम हुआ है। रेडियम जैसी बातु जिस पारस . अर्जिही कहनाचाहिए इसी ससार की श्री देन है। रेडियो यन्त्र कितना ऋद्भूत है जिसके कारण बहाजों में बैठे बैठे समुद्र के बक्त स्थल पर ही स्थल-वालियों से बातचीत करिये गाने का रस सीजिये। एक देश के व्याल्यान दाता के व्याक्यान दूसरे दूसरे देश में अपने कमरे में बैठे बैठे सुनिए। हवाई बहाज में, प्राकाश में उडते-उडते भूमि बालो से बातचीत करते रहिए। यह सब चमत्कार इसी ससार ने से निकल पडे। यूरोप का सब विज्ञान-वैभव इसी ससार में तो पहल खिपापडा चा। वैश्वानिक लोग इस ऐश्वर्य की कही स्वम संतो नहीं माग लाये। इसी मिट्री मैं से जल मैं से भनि वायु मे से, यह विव्य जमल्कार प्रकट हो गए। केवल पुरु चाय का फल है। मेहनत की, जान लडाई बृद्धि को कष्ट दिया इन्द्रियों को धकाया जीवनों को गला दिया तपस्या से दीवाने हो गा, तब यह दिव्य चनत्कार देखने को मिले। जब नप किया तो प्रकृति देवी की इन दिव्य विभूतियों को पासा। विना त्तप किए क्या पानी मे से प्रकाश (विद्यत्) निकस सकता था। क्या यह बात समक में प्राप्तीयी कि पानी के गिरने मे भी एक गुरत शक्ति है जिससे बिजली मिल सकती है <sup>?</sup> पर बाज वस्वई नगर को यही पानी के ऋरनों से प्राप्त हुई बिजली प्रकाश प्रदान कर रहो है। यनेक कल कारखान इसी की बदौलत चन रहे हैं। इस समार मे अनेक सार गुप्त हैं। तप करो प्रकट होगे। खन्दमहीन बैठा रहे कुछ नही पाएगा। एक उर्दू कवि कहता है --

इस्नी के शखर में ग्रगर

स्वाहिश है चमक बाग्रो। •इच्चेन रहो विलक किसीरङ्गवैँ पक बाग्रो।

जिस प्रकार भौतिक ससार में सनेक सुप्त सार यं जो प्रकट हो वए सौर सभी हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए वैसानिक तप

# जीवन में तप का महत्त्व

-प० बिहारीलाल शास्त्री काव्यनीयं

पवित्र ते वितत ब्रह्मगुस्पते प्रशुर्गात्राणि पर्येषि विश्वत । ग्रतप्ततन्त्रं नदामो श्रश्नुते शृतास इद्वहन्तस्नत्समाश्चत ॥

 $\star$ 

कर रहे हैं ठीक इसी प्रकार धाष्पारिषक सक्षार में भी सनेक गुरुत चमस्कार है, जिन्हों प्रचली प्रवास करते हैं जिन्हों प्रचली हैं जिन्हों प्रचली हैं जो हुमारी प्रांत से स्वास के बुमारा धार्षि कित्राधों में दीका पढ़ी है। परन्तु इन कार्यों में सभी इनके कर्ता ही आदित के जिल्लार हैं। इनके उत्पर काम है योग, जिल्ला हारा धाष्पारिषक विश्वति होता है। जब योग करता है तक —

उत्तर्राह विमल विलोचन ही के। मिटहिं दोव दुक्त मद-रजनी के।।

खूति तत्त्वज्ञ ब्रह्मानिष्ठ गुरु की सेवा रूप तप से, मन को एकाम कर अन्तर्जनत् की बोर से जाने वाले बाम्यास रूप तप से इन्द्रियो द्वारा सदा गमन करने वासी मनोवृत्तियो को रोककर अन्तर्मुकी करने रूप तप से वाद मनुष्य ग्राम्यन्तर दर्षिट को प्राप्त कर लेता है तब धाष्यात्मिक शिभूतियों के दर्शन पाता है। एक दो विश्रुतियों से ही यदि वह इतकरण हो नया तब तो गया बीता, और यवि बरा-बर लोज करता चतागया भौर तप से न विचला तो पूर्ण विमूति तक, परम ऐव्यय तक बहा तक कि बहा जाकर फिर फिर कुछ क्षेप न रहे, पहुँच जाएना। वही ब्रह्म तत्त्व है। उसी के लिए म्रास्तिक जगत् इच्छक है। उसीकी स्तुति प्रार्थना मे वार्मिक सनार लीन है। जान प्रजान यूक्न किसी भी रीति से उसी की उपासना मे मतमतान्तरवादी बहेचले जा रहे हैं। धामिलाया सबको है। नाम्बिक भी निवृत्ति बाहता है पूर्णता का श्रामिनाची है। हा उसके पाने का उपाय उसका भीर है। वह बालू में तेल दृढ रहा है। उसे भी उसको तलाग है। वह शान्त और परि बतनशील प्राकृत रूपो मे विराम चाहता है जो ग्रनहोनी बात है। विरनि तो एक-रम ग्रखण्ड तन्त्र में ही हो सकती है यह तो केवल बहाही है। वह ग्ररूप है इन्द्रियातीत है वाचामगोचर है इसनिए नास्तिक कहता है कि वह नहीं है। जस प्रपात मे विद्युत् है आकाश में ईयर व्या-प्त है परन्तु विज्ञानज्ञय स्यूलबुद्धि ग्रामीण कहगा कि नहीं एसा नहीं है वैनानिक तो प्रत्यश कर चुका और उस सन्य को दिना जुका है वह कैमे निवेच करे। व्सी

प्रकार बहानिष्ठ ऋषियों न बहा का

सामाल् किया और साझारकार को योग्यता रकते नाने तिमंत्र हृदयों को, यान रक्त नाने कि उसका प्रत्यक्त कराया भी परस्तु प्रतिकाशिष्ट्रत नेत्रों के निए तो वर्धन कराना किन ही ना। काल्य में रस है, सहस्यों को उसका घर्ट्र कर कर होता है परस्तु काल्य वास्तारहित वनी को नहीं। इसी प्रकार पिट-बह्याण्य वन में रस रूप बहुए (रखी नै स्त) समाया हुमा है परस्तु उस को निना तप के नहीं क्ल्या वास्ता । यही बास नेय सम्बन्धन कर्या वा स्वता। यही बास नेय सम्बन्धन उसकी ना स्वता के नहीं क्ल्या वा स्वता। यही बास नेय सम्बन्धन उसकी ना स्वता है हैं.

(बहुएएसते) हे बेद के पति प्रमो (त) आपका (पविन) पविन बहुतात्व एकवितत्व) तब बनदु फैना हुगा है। (अपूर) आप सबके स्वामी (नामाण) सरीरो में (विच्वत ) तब भोर (पर्योव) आपका हो समर्थात् हमारे सरीर के साथ सह बच्च स्थापक हैं चट-चट में आपका धानम्य समाग्र हों चट-चट में आपका धानम्य समाग्र हों पर-चट-

(यतंपवन्) जिसमें धरमें सरीर को, मन को जुढि को मोनानि में नहीं तपामा सीर (यान) कच्चा है, प्रमास्य की सनि में नहीं तपा है (न तदरजुदे) मह धापके उस पतिस रह को नहीं चस्र तकता, (म्युणास इडहम्त-स्वसमासात) सान वप सोनामिन में सो पक नए हैं के ही जसे बारण करते हुए सच्छी प्रकार क्सार है, इसानन्य पतिम है, सर्वेन्न फैना हुआ है, इसारे सपीर से स्वास्य है पर हम असे दिना तप के नहीं पा सकते। उपनिचद कहती है तपसा चीयते बहा (मुच्चक) बहा तप से चुना साता है। कभीर साहब मी कहते हैं—

हवस करे त्रिय मिसन की

भीर सुद्ध चाहे भव। पीर सहे विन पद्मनी

पूत न लेत उ**छव**।।

प्रधांत् बिना कष्ट उठाए भगवान् से प्रिनना नहीं हो सकता। सूफी खरमद कहताहै — उस्त्रे वायद कि सार सायद व किनार।

ई वौलते सरमद हमा कसरा न दिहुन्द ! धर्वात् ईववरीय सम्पत्ति हर किसी को नहीं मिल सकती । भगवान् के दर्शन पाने को बहुत समय चाहिए।

धनेकथण्यसिद्धस्ततो याति परा गतिम्। श्रीका

धनेक जन्म सिद्धि करनी होती है सब परमबति मिनती है। साराश यही है कि बिना तप किये भगवान् को नही पा सकते । परन्तु तप ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। साधन वह जो साध्य तक पहुँचा दे। धगरसाध्य तक नहीं पहुँचाता तो वह साधन व्यवं है और पहुँचने वासे में. यदि साध्य का लक्ष्य नहीं है, तब भी सामन व्यर्थ है। सप सामन है, ईश्वर भाष्ति साध्य है इसलिए ईश्वर प्र प्ति की सदय करके तप किया जावे और तप की वही विधि हो जो ईश्वर प्राप्ति में साधक हो धत ज्ञानपूर्वक ही तप होना चाहिए, एक मनुष्य बाहता है दूब लेना और सेवा करताहै कोड की। उसके असमें कमी नहीं परन्तु यह साधन साध्य के निए ठीक नहीं। साध्य (दूध की प्राप्ति) के सिए उसे मौकी सेवाकरनी चाहिए। एक नवदूर भी शारीरिक सम करता है और एक पहलवान भी। पहलवान का लक्क है भपने सारीरिक सवयवी को पृष्ट करना धत उसके धन पुष्ट धीर सुदह हो जाते है। मजदूर का सक्य है मजदूरी पाना, यत मजदूरी पा सकता है। इस सिए तप की विधि ग्रौर सक्य शास्त्रा≥े नुसार होना चाहिए। भारत मे स्त्रिया धीर साधु लोग कायक्नेश तो बहुत उठाते हैं परन्तु उससे ब्रास्मिक काम कुछ नहीं होता। कारण---विधिकाठीक न होना तप के बर्शन में योग दर्शन भाष्यकार अ्यास मुनि कहते हैं - तथो इन्द्रसहनम्, इन्द्र च जिल्ला पिपासे, स्वारासने. काष्ट्रमोनाकारमीना च, ब्रतानि चद ययायोग कृष्यं चान्द्रायस्यसान्तपनादीनि ।

भूस प्यास, स्थान, धासन, काष्ट के समान मौन नहना, कण्ड्र्यान्द्रायण भान्तपन भादि वस तप हैं।

# र्यांसों का विशाल निःशुल्क शिविर

लाना दीवानचन्य बन्म बहाब्ती के उपलक्ष्म में दीवानचन्य ट्रस्ट द्वारा दीवान चन्य निर्मन होम महास होहल २ जैन मन्दिर मार्ग, नई दिस्सी-१ मे निम्नुस्क नेत्र शिविर सनावा चा रहा है। १४, १६,१७ मार्च के प्रात - बने से रोनियो भी जान होगी। सापरेसन वाने रोनियों को ससी दिन साचित्र कर निया जाएगा।

जोकन वकाइयाँ, खापरेकन सका करमे का व्यय काठ बीवानकम्ब ट्रस्ट हारा किया जाएगा। क्रपमा घपने विस्तर, जोजन के बर्धन साथ कार्ये।

निवेदक क्रूपाण ३४३३३६ **श्रक्षोण मस्होचा** 

# दयानन्द

मैंने धार्यसमाज का उद्यान लगाया है। इसमे मेरी धवस्था मालो की सी है। पौघों में खाद डालते समय राख घोर मिट्टी माली के सिर पर पड हो जाया करती है। मुक्त पर राख भौर चूल चाहे जितना पडे, मुक्ते इसका कुछ भी व्यान नही, परन्तु वाटिका हरो भरी बनी रहे, ग्रौर निर्विष्न फूले फले।

# वचनामृत

मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगो को मिलाना है, सकल समु-दायों को एकता में लाना चाहता हू कि कोल भील से लेकर बाह्मए। पर्यन्त सब मे एक ही जाताय जीवन की जागृति हो। चारो वर्ण के लोग एक दूसरे को भ्रग भ्रगी समभे।

सम्पादकीय

# एक भारो षड्यंत्र

"मारत तरह तरह के ऋगडो से भर गया है, वह हताश दोन हीन है, उसमें मौत का काला साया महराता नजर था रहा है। हिन्दू वस ने हिन्दुओं में दूष ग्रीर भन्य विश्वास सदा सदा के लिए भर दिया है। हिन्दुओं के लाखों देवना हैं उनकी कोई एक समान पूजा पद्धति नहीं है भीर वे धम के नाम १र हत्या करत है। भारत को ६६ करोड जनता को दुस्तो भौर 🗫 ष्टो स मुक्ति पान के लिए ईसा मसोह का बनुयाया बन जाना चाहिए।"

ये शब्द पढकर वापका कसा लगा है ? इस स भी कटु घूणित शब्द समिरिका के इवजालकल सगठन ने ५ जनवरी को न्यूयाक के अपने टेली-विज्ञन प्रसारण में कहे। दो घण्टे के प्रसारण में भारत की बहुसस्यक बनता का जिस मद रूप मे प्रस्तुत किया है, उससे न केवल हिन्दुमी का बाल्क सारे हिन्दू धम का अपमान हुमा हु, भावतु यह सारे भारत देश का

ऐ।तहा।सक दब्टि से यदि देला जाये, दुनिया में युद्धा का चृिएत सुत्रपात इसाइयत से हा हुया है। जितना धन्धविश्वास बाइविल और इसाइयत मे है इनना शायद कहा हो। ईसाइया ने जितना खून अपने हो भाइया (ईसाई) का बहाया है उतना उन्होंने दूसरे का नहीं बहाया। जितन सत्यक्यन करने वाले, माटिन, सुबर या वज्ञानक गलालियो, ब नो भादि ब्रनगिनत लोगों को संतापित किया और मृत्यु के गाल में पहुंचाया उतना पाप सायद हा किसा मजहब ने कमाया हो। हमारी सब्टि निन्दा करने को नहीं है, हमारा संस्कृति ता 'वसुषव कुटुम्बकम् की संस्कृति ह, जहां सारो षरतों के दुसी को अपना दुस समक्षा जाता है। हमारी पावन वेद ऋचा कहती ह-

### नित्रस्य बसुवा सर्वाचि मुतानि समीक्षामहे।

समस्त प्राशिमात्र को हम मित्र की दिल्ट से देख। सर्वा साक्षा सम मित्र भवन्तु। सब ादकाए हमारो भित्र हो जाय। हमारी धार्य सस्कृति मे तो ईसाई बन, मुसलमान बन, हिन्दू बन का उपदेश नही है, यहा तो कहा गया ह-मनुभव । मनुष्य बन, इन्सानियत सीख । इससे बढा धम भीर क्या हो सकता हु।

इबेंजलिकल सगठन ने अपने प्रसारण में घन की अपील भी की है जो ईसाई मिशन के धर्म परिवर्तन के काम आये। और बाप जानते ही हैं यह वैसा भारत में ईसाईकरण के लिए प्रयोग किया ही जा रहा है। इस वड-यन्त्र से नागालंग्ड भीर मिजोरम, गोवा तो ईसाईयत के चगुल मे मा हो गया है। प्रव उनका लक्ष्य मिएपुर, त्रिपुरा, मेवालय तथा मारखण्डका क्षेत्र मुख्य है ।

भगर भारत सरकार ने तुरन्त ही कोई विशेष कदम नहीं उठाया तो मारत के अनुस्रो के नापाक इरादे जरूर सफल हो जाय गे।

भारत सरकार को चाहिए, प्रादिवासी, वनवासी, गिरिवन सेवा तचा विक्षा के नाम पर जी ईसाई सगठनों को करोड़ो रुपया प्रनुदान दिया वाता है वह पुरन्त बन्द कर दिया जाये तथा इस प्रकार के प्रसारगो का विरोष किया जाये।

# पब्लिक स्कलों की संस्कृति

भारतीय परिवेश की उपजाऊ भूमि मे पब्लिक स्कूलो का विकराल वृक्ष दिनोदिन बढता जा रहा है। इस पौधे का बीज प्रग्रेजो हारा बोया गया, मग्रेजो के मानसपुत्र तथाकथित उच्चवर्गद्वारा पोषा गया । भाज इस वृक्ष के कुफल भारतीय संस्कृति पर गिरकर सडाध पैदा कर रहे है। कान्वेन्ट स्कूलों में बच्चों का पढ़ाना फैशन नहीं, मजबूरी सा होता जा रहा है। मेरे एक परिचित की सुपुत्री का सम्बन्ध एक सम्भ्रान्त परिवार से होने की बात चली, लडके वालो ने साफ-साफ कहा—'देखो जी लडका कान्त्रट मे पढा है, इतने हजार रपये पढाई मे व्यय हुए हैं लडको भा पब्लिक स्कूल की पढी होनी चाहिए।" जहा विवाह सम्बन्धों में पल्लिक स्कूल से पढ वर वधू को बढावा दिया जाता है वहा नौकरी में तथा समाज में पढ-लिखे व्यक्ति को सम्य कहलाने का भी बधिकार मिलता है।

इंग्लण्ड में इरो, हैरो, विन्चेस्टर, रंग्बो झादि लगभग एक दर्जन ऐसे स्क्रल हैं जो तथाकथित उत्तम शिक्षा भीर सम्यता के जनक कहलाते है। ये स्कूल बेहद खर्जीले तथा अफसरशाही के लिए सुरक्षित बनै हुए हैं।

भारत में भी भग्नेजों ने यही ग्रु खला प्रारम्भ की । पहले इनमें राज वश के सपूत प्रविष्ट हुआ करते थे, उसके बाद ये व्यापारी वर्ग के प्रधिक आय वाले व्यक्तियों के लिए सुरक्षित हो गये। भाज भारत में ख्याति प्राप्त ये स्कूल सट जेवियर (कलकत्ता), सेट पाल्ज (दार्जिलिंग) ला मार्टिनरी, (लखनक) विशय काटन (शिमला), लारेन्स स्कूल इनमे बढे-बडे राजनेता, भिमनेताकरोडपतियो के बच्चे शिक्षापा रहे हैं। इन पब्लिक स्कूलो मे बच्चों को प्रवेश दिलाना भी किला जीतना है। भारत भर में जितने भी विख्यात पब्लिक स्कूल हैं, अधिकाश ईसाइयो के द्वारा ही सवालित हैं और इनमे पढने वाले छात्र अपनी सस्कृति अपना धर्म अपने महापुक्ष राम, कुष्ण भादि तथा भपने पर्व त्यौहार भूलते जा रहे हैं। भीर एक दिन ऐसा आयेगा जब मैकाले की नीति पूर्णत सिद्ध हो जायेगी। उसके स्वप्न के अनु-सार ये मारतीय तन से भारतीय होगे पर मन से पूर्ण ईसाई हो चुके गे। ईसाइयो ने अपनी प्रचार योजना में मूलत दो लक्ष्य रखे हैं, शिक्षा पर प्रधि-कार तथा अस्पतालो का प्रसार। आज उनकी यह योजना मूर्तरूप घारए। कर चुकी है। अञ्झे अस्पताल, अञ्झे स्कूल सब ईसाइयो के हाथ मे हैं, इनके माध्यम से ही ये ईसाईकरएा में लगे हैं। भारत सरकार की इस समस्या को समऋते हुए इन सबका राष्ट्रीयकरए। कर लेना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र मे केंच नीच का भेद मिटाकर देश के भावी कर्णधारी का भविष्य उज्ज्वल

धार्यसमाज की कार्य योजना ईसाई, मुस्लिम तत्त्वो के बढते खतर-नाक पाने से अपनी संस्कृति और सम्यता को बनाना है। देश मे अराष्ट्रीय तत्त्व बढते जा रहे हैं, इसका एक कारए। यह भी है कि हम मजग नहीं हैं। स्वामी दबानन्द ने जिस शिक्षा पद्धति को ससार के सामने रखा वह गौरब-पूर्ण पद्धति है। उसके अपनाने के लिए हमे भरसक प्रयत्न करना चाहिए। महात्मा मुन्धीराम के सामने जब यह चुनौती ग्रामो, घर मे ग्रपनी ही बच्ची को जब यह गाते सुना-ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा क्रुच्ल कन्ह्रैया, ईसा मेरा राम रमेया। उन्हे दिखायी दिया राम कृष्ण की सस्कृति गिरती जा रही है बस स्वामी दयानन्द की शिक्षा पद्धनि के स्वप्त का एक मादर्श नमूना उन्होंने हरिद्वार में गुरुकुल कागडी के रूप में स्थापित किया। जिसे देखने इंग्लैण्ड के मूतपूर्व प्रधानगरती रेग्जे मैंबडानल्ड ग्राये,

भाज भावस्थकता है इस बात की, जितने स्कूल ईसाई खोनते जा रहे हैं, हम उनके मुकाबले पर उसी स्तर के वैदिक सम्कृति के अनुरूप स्कूल स्रोलं और वही सुविधाएँ प्रदान करें। ---वशपाल सुषांशु

भीर देखकर मत्यधिक प्रशसा की।

ममुद्र धपनी उत्ताल तरगी से फेन उगल रहा था बार-बार एक लहर किनारे को नोडने की असफल कोशिश करती भीर बन्दरिया के द्वारा सेलते हुए नवज त शिक सम सीच सी जाती। लहर फिर समूद्र माता की गोद से निकलकर हहराती हुई किनारों को तोड इस पार जाना चाहती लहर की इन्द्रा होती इस समुद्र के घरे से निकल उस पार क्या है? यह जानन की समुद्र की गांद में लौटी लहर को समुद्र ने उत्तर दिया — बत्स ! सुनो इस रहस्य को तुम नही जान पाधीमे। (ससार सागर के किनारे सबा दर्शक भी यही जानना चाहता है कि उस पार स्था है <sup>?</sup> मै इसको जान् पर कोशिश श्रसफल जाती है फिर किनारे पर लीट जाता है।) किनारों का नैयें देखों जो सदियों से सागर को मर्यादा में बावे साउ हैं। ज्ञान एव क्सक्पी किनारे से बधा यनुष्य काज बन सत्तित टहराहमाहोताहै। ठहराव मन की वृत्तियों का चैतना का नही। हिमक समान बाहर से सघन भन्तर मे तरल सोता बहता रहे। बाहरी बाकमणो से सुरक्षा के लिए कटीरता बीर भन्दर दया करणासेवाका स्रोत हृदय से बहताहुबा जन बन तक पट्ने । यह है जीवन का सगीत।

समुद्र के किनारे विचारों में इवा ममुद्रम बका सोच रहा है— यह सामर कितमा विश्वास है भीर बाहर से बिनना सात है अपनी किनारों की नर्यादा में, परन्तु 'खके सन्तर में एक लग का भी ठहराव नहीं हर पन सान्तीलन हो रहा है। नहरे एक दूसरे से टकराती हुई बड़ी चली झा रही हैं, मिनने निनारे से और फिर कीट वाती हैं। यह कम सनन्त कान से चल रहा है। कभी दकता नहीं न कभी रहेवा।

यह शात दिखने वाला समुद्र है महान् पुरुष । ऋन्दर की लहरे हैं उसक हृदय मे उमहते विचार लगातार मधन हो रहा है। बाहर भा रहे हैं किनारे पर उन प्यासे कोगो की प्यास बुकाने जो पिपासित हैं। कोई बाये और शात करे व्यास को भीर मान दिला दे सीचा जिस से सारी भटकन मिट जाये। विचारी के मधन से ही निकलता है प्रमृत और यहा श्चाकर जीवन शात हो जाता है। सधूर सर्गत की अकार निकलती है सारा वातावरण उस मधुर सकार से स्निक्ध हो जाता है। ऐसे बनाकर चसना इस जीवन को, बहु जीवन का सगीत तुम्हे भानन्दित करेगा तो बाहर भी भानन्दमय बातावरसाबनेगा। जो भी तुम से सम्पक करेगः वही अकुत हो उठेगा। चञ्चल धारापर्वत से अब दली कस-कल छल-छल करनी मैदान में भाकर शात हो गर्या गम्भी रहो गयी भीर सागर मंमिल कर रात्हो गयी । वचपन की चञ्चलता का अवानी में समलना प्रौढावस्था मे

# विचार मन्थन

### लेखक बलजीत शरात्री

दूसरी घटना ने डाकू से महर्षि वाल्मीकि वनः दिया। चोर या साधुने रतना ही पूछा था जो पाप तुम करते हो क्या उन पाप के फल मे तुम्हारे परिवार वाले भी भागीदार बर्नेंगे। जिनके लिए तुम यह पाप करते हो । पूछा <sup>।</sup> जवाब नकारात्मक था। वस वही से मस्तिष्क में विचार मा गया, मन तक जो जीवन-भारा उल्टी बह रही थी वह सब सीधी बहुने लगी। नीचे की ऊर्जा श्रव ऊपर को बहुने लगी थी। जो विचार प्रवरुद्ध नदी मार्गकी तरहवाबासे रुके वे वह एक ही भटके में उस सारी बाधा को पार करके ब्हुचल। प्रादिकवि बना दिया। ऐसी शक्ति सब में है उसे पहचानने की ग्रावश्य-कता है। पड़वानो और वस वड़ो। परोप-कार भावना तो रत्नाकर के मन मे बी, पर मार्च मलत था। वेद सन्वेश देता है ---कालो प्रस्वो वहति । समय रूपी (बदव= म + दव जो बाज है कम नही) घोडा भाग रहा है इसको पहुंचान उठ भीर उसके ऊपर सवार हो जा। कर्म-क्षेत्र में कर्मवीर बनकर कर्म करते हुए गाने को मुक्त कर लंस**व ए**वणाओं स धौर इन बंद की ऋचाओं को धपन जीवन का उद्देश्य बनाकर चल।

उपह्नदे पिरीचा सङ्गये व नदीनाय्। विवा वित्रो ग्रवायतः॥ 'पर्वतो की गुफायो मे स्रोर नदियो के समम पर विद्वान् पण्डितो की बुद्धि पविश्व बनती है।'

महात्मा मुशीराम ने इसी मन्त्र को सपने जीवन म उतारा सौर सर्वस्य स्थान स्थे। गणा के किनारे गुरुकुक कानकी की स्थापना की। गुशीराम न स्थामी अद्धानन्त्र बनकर रख कुछ बचान्त्र मा स्थापना की। स्थापना की। स्थापना की स्थापन की स्थापन की सुन्त कर निया करूम मुख्य के कहते।

भीर इस भवत्वाका वर्शन एक सायर ऐसे करता है---

'खुदाकरे के खुदा भी वहा पर न हो, मैं हू भौर सनम हो, भौर कोई दर्शमयाँ न हो।'

कबीरवास ने भी ऐसे ही कुछ अनु-मृति को व्यक्त किया है---

> थव 'मैं' या तब हरि नहीं। श्रव हरि हैं मैं' नाहिं॥

आतः काल की नन्हीं विविधा सन्तेया देती हैं, सोने वालो करो। सराने प्रत्ने अनु जुनवान करते हुए पर्ट्रेण वाधों करितेश में, सोबीरास भीकृष्ण की का गीता के प्रवान रानोक में ही यह सन्तेया है—वर्ग-सेने कुछलेने समर्थता। पर्ना के सेने के धानुसार मन्त्रेय के भी मर्थादाधों में रहका कर्म के लेन में उत्तरे और सर्थुन की तरह धाने सम्बन्ध की पूर्वक विचया संस्कृत कर्म के लेन में उत्तरे और सर्थुन की तरह धाने सन्त्र की मर्थादाधों में रहका कर्म के लेन में उत्तरे और सर्थुन की तरह सम्बन्ध मन्त्र कर्म की स्वाद्ध स्व संस्कृत कर्म के स्वीद हुए वह विधिया (सक्य) की आंच की और ही निधाना साथे मीर पूर्ण करें। वही सन्त्रेयों के तिए प्रत्य में निवादों है

बहु विध्न सबराते नहीं रहु सरोते शास के, बुत नोव सकताते नहीं। काम किया ही कठिन हो, किन्तु उकताते नहीं। सीड से सबस बने सो सी दिस्ताते नहीं। हो वए एक धान से उनके हुरे दिन सी सने। सब बनह सब कास से, के ही सिसे फुरे-फसे।।

देसकर बाधा विविच,

प्रमात की प्रथम किरण जब बरा पर पड़ी चारो बोर से धन्यकार ने बपना साम्राज्य समेटा भीर गण्यने सवा। नन्ही किरए। जवान हो गयी ग्रंबेरा भागकर पूल के नीचे छिप गया। सूर्यकी नन्ही किरण जब दूर सागर मे अपने पिता सूर्य के साथ विश्वाम करने हेतु सागर में विलीन हो वयी। ग्रन्थकार का साम्राज्य फैल गया, प्रात काल सूर्य रहिस को बचेरेने देखाधीर भागा। परेशान हो प्रजापति के पास शिकायत लेकर वया। सूर्य से प्रजापति ने पूछा — 'तुष धन्धेरे को परेक्षान करने हो पर्यों ? उसकी शिकायत है आप उसके पीछे भागते हो।' लुर्व ने कहा-- 'ठीक है, पर उस सबेरे को बुलाधो । मैंने तो बाज तक उसे देशा ही

नहीं। सबकार से कहा गया — तुम सूर्य के सामने साकर कुछ कही। सबेरे के कहा — कैसे साऊँ उसके सामने मेरा सस्तित्व नहीं रहता, नष्ट हो जाता है।

बात सामान्य सी है प्रकाश से सामने प्रवेदा है ही नहीं। प्रकाश की धनुनिक्वति का नाम प्रवेदा है। प्रकाश होणा तो प्रवेदा हो ही नहीं सकता, यह न बानकर हम धकार से प्रयमीत होने रहे हैं। प्रकाश धीर तम (प्रवेदा) हम सबके धन्यर निवसान है। जिसने प्रकाश देश निया धकान का तम दूर भाग नया। जान की नन्ही दिस्स हृदयाकाश पर प्रमक्ष कर व्यवमन कर देती है। सा स्वार ऐसे मनुष्य के प्रश्न नो लगता है।

प्रथम पाठ माँ की कोस से निकलकर विस्तु माँ की बोद ने लोरों के सत्य पढता है जीर उन्हीं लोरियों के सत्कारों से कोई बन जाता है जीर सुविध्दिद और कोई दुर्वोचन सम्मंदार मुविध्दिद और कोई दुर्वोचन सम्मादी। कुस रिक्कं कर्म और यहाँ की स्पति से बाता पिता से समाय से मिले सत्कार से मनुष्य का वृत्तियों बनती हैं, जो उसके जीवन को प्रयन्ने यनुरूप चल ती है। तुलबीदास जो > है मनुष्य की दिस्ति का चित्रहा किंदी है—

तुलसी पिछने पाप से हरि चर्चान सुहाय। जैसे ज्वर के ताप से भूख विदाहो जाय।।

दुर्योचन को जीकृष्ण ने कहा — दुर्यो-धन इस तेरी हठ के मयकर परिण्यास्त्री होंगे युद्ध से महाविनाण हो नामेशा, यह धरा बीरो हे सुन्य हो बायेगी। १८ बिक् धरने पाण्डव जाश्यो को पांच में के है। धारा जगडा समाप्त हो जायेगा। शुप्तांच्य जानता हु कि सै धन्यास कर रहा हु, इसके प्रयक्ष परिणाम से आंत्रवर्ष का बिनाण हो नायेगा, धींर क्लां बंकरका बेंगी। यह सब जानते हुए भी नेरी हुन्ति इन दुराइयो की धोर के नहीं हटली इस्तिल्य — सूच्या न दास्यामि विना युद्धेन केशव। श्रेष्ठ तो युद्ध हो धालिक्य प्रदेश केशव। श्रेष्ठ तो युद्ध हो धालिक्य

महर्षि भारभीकि जी ने भी रामायक्ष में इस बात को स्वीकारा। वह कहते हैं— विनासे बहवो दोवा जीवम् प्राप्नोति मद्रकम्। १।(३।४५

'विनास में बहुत सारे बोप रहते हैं। बीवन के रहते हुए ही मुख्य भनाई को हस्याण को पाता है।' इन सब इतिहास के पन्नी है विशा के स्पर्भ को समास स्पनी वृत्तियों को समास । निरासा को रसास कोर सासा का दीप सपने पवित्र हायों में लेकर उस मजिस को सोक, साध्यकर जिनमें तुम मटक गये हैं —

'जीवन है एक फूल की मुस्कान। जो औरों के लिए जुटाता झाखा।'

प्तहेशप्रसुतस्य सकातावप्रवासन्। स्य स्व परित्र तिकोरम्पृषिच्या सर्वमानवा ॥

धर्मात् इस देश में जन्म पाय हुए श्रोटाजनमा पुरुषों से पृषियों के सब मानव स्वपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।

राज्य मे राजा की बासपी (गही) धनसे क्या स्थान है, जहीं व रण प्रवृत्त होता है। मुन को बरावक राज्य होता होता है। मुन को बरावक राज्य में सारस्यव्याय के होता के स्वत्या में मारस्यव्याय के होता वक्तान निवनों का मक्ता और सोवक करत लगते हैं। वब तक राज्य निविध के हैं, तमी तक मुन के प्रवृत्ति के बहुबबाते ही मुन की धार्य व्यवस्थाएँ की वैठ जाती हैं। इसीत्य मुन न राष्ट्रीय सिक कुल में मुन की मार्य विवत्य नामा है। समू के मुन को महती बेवता नामा है।

मनु और राष्ट्र

डा० वासुदेवशरण ग्रग्रवाल

दण्ड है। दण्ड के निवंस होने पर वर्म रसातस को चना जाता है। यह स्मरश् रसना चाहिए कि मनुका वर्ग बोबा पर-लोक-विश्वास नही है, बल्कि वह प्रजाशो का भारता भीर सबबंग करने वाली जीवन की एक शक्तिशाली पद्धति है। दण्ड ही न्याय का मूल है। जब दण्ड का प्रसीता सामु मर्यात् निष्पक्ष मान से दण्ड का प्रयोग करता है, तभी प्रकाएँ एक-दुसरे को दबाना नहीं चाहती। ननुके धनुसार दण्ड ही राषा है, उध्ह ही नेता है, बण्ड ही वासिता है और वण्ड ही राष्ट्र मे सकेसापुरुष है। दण्ड के सामने धन्य सब कुछ स्त्रीकी तरह प्रतीत होता है। सब भूतों का बोप्ता प्रचार्यत का पुत्र ब्रह्मतेज स बुक्त दण्ड ही है, विससे राष्ट्रीय थमं विचलित नहीं होते। इस प्रकार का सबसे निकर रहने बाला और सबको निकर रखने वासा दण्ड जब तक राष्ट्र का ककुट् बा सबसे ऊषा स्थान बना रहता है, तभी तक राष्ट्र की भारमसम्पदा पनवती बहुती है। मनुका बादर्शराष्ट्र के प्राह्म वर्ग सौर ब्राज्यमं का (जिन्हे ब्राज्यस की राष-नीतिक परिमापा में Legislative धौर Executive शक्ति कहते हैं) सुन्दर

समन्बय है---

नाबह्य सत्रमुष्टनीति नासत्र बह्य वर्षते । बह्य सत्र च सपुक्तमिह चासुत्र वषते ॥

> --- १।३२२ के शत्र सीर विना

सर्थात् विना बहाके क्षत्र और विना क्षत्र के बहाका विकास नही होता। ये सिलकर ही इस लोक मे और परलोक मे सर्वाद्धत होने हैं।

इस प्रकार की व्यवस्था में मस्तिक सौर बस दोनों की प्रवाकी जाती है। मनु के भावत बाह्यल में हैं बिन में क्वार गाउदीय सस्कृति मुर्तिमान क्य बारण करती है। वे बाह्यल वमं के कोश है। राष्ट्रीय वसों का निर्माण इसी प्रकार के ब्रानिकों की परिवर्ष में होता है, राज्यक तो उन वमों की प्रवित्तित रखता है। मानव-सस्कृति बहुक्क्या पर निर्मर नहीं है। एक ब्रानी दस हवार मुक्षों से बेच्ठ है।

एकोऽपि वेदविद्धर्यं, व व्यवस्थेदृद्धिकोत्तमः । स विज्ञेय परो वर्गो नाज्ञानासुवितोऽयुतं ॥

मानव वर्मशास्त्र बुद्धिका समादर

करता है। वह अकड़ने वाले वर्मों का पुलिन्दा नहीं है। युगवर्म के अनुसार कानूनों की वृद्धि और विकास करने के दारा सील इस सारत में जान-तृत्रकर रहे नमें है। शिष्ट निहानों की दशावरा परिपदी को समस्तित करने का विवान इसीलिए था।

मनुके बनुसार विद्वान् या कमशीस ज्ञानी का मूल्य सबसे अधिक है। धन, बल्धु ग्रायु कर्मग्रीर विद्या, येपाच मादण्की चीजे हैं, इस मे बाद की वस्तु पहले से श्रेष्ट है। धन से ज्ञान बहुत ऊचा है। यह ऋषियों का पैमाना वा विससे मानव की ऊचाई नापी जाती थी धीर मनु ने इसी को अपनाया है। मनु की दिव्ह मे 'मनुष्य सबके केन्द्र में है उसी का निर्माण सब शास्त्र और वर्मों का ब्येय है। सनुष्य की समृद्धि के लिए ही भावसं-सस्यामो का विकास रुप्ट मे किया बाता है मनुकाविचारहै कि गबाही युग का प्रवतक होता है (राजा हि युगमुच्यते), **प्रतएव सप्नाग** राज्य की ठीक व्य**वस्था** मानव समाज की नबसे बडा ग्रावण्यकता है। इसकी खिडि के लिए जहाएक स्रोर बीयवान् दण्डकी स्थापना चाहिए, वही दूसरी भोर राष्ट्र की प्रज्ञामे निमलता भीर तेज भी भाना चाहिए।

(हिन्दी वि वभारती स सामार)

चलनवर्ष के आरम्भ तथा अन्त में सावारणत सीन सान्ति-मन्त्रों का प्रवोश किया बाता है। उनने से एक प्रसिद्ध सम्बद्ध पूर्णनियम् है। इस्ते पूर्व कि द्वा देशोपनियद् के मन्त्रों का क्रमश स्वाद्धकान करें इस शानित मन्त्र के बारे में कुक्ष में मुख्या बाहते हैं, पूर्णमन्त्र इस प्रकार है- यूर्णमद पूर्णनियाया पूर्णनेवायिक्यते। पूर्णने पूर्णनेवायाय पूर्णनेवायिक्यते। पूर्णने सुर्ण का ही सिया गया है। पूर्ण से पूर्ण का ही सिया गया है। पूर्ण से पूर्ण मार को सोन पर भी पूर्ण क्या गहुता है। इस मन्त्र में, निम्न बिन्नु स्विचारणीय :—

- ४ (१) 'श्रदस्' और 'इद सर्वनाम किस पदार्च की भ्रोर इनित कर रहे हैं।
- (२) वह वस्तुमी पूर्ण है सौर यह वस्तुमी पूर्ण है।
  - (३) पूर्ण से पूर्ण ही सरान्त होता है।
- (४) पूर्णको निकाल नेने पर भी क्षेत्र पूर्णहीरहताहै।

सन्त-बांशन इन प्रश्तों पर विचारने है एक बात को स्पन्ट है कि एक पदार्थ वहु है कि जिस से से कुछ निकाला जाना है और दूबरा पदार्थ वहु है कि जिसे विकासा वका है और ने बोनों के बोनो

# उपनिषदौं का शान्ति-मन्त्र

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वनी

पूर्ण है। शबस्य ही ऐसा पवार्व नेतन-तत्त्व न होकर जड-तस्य होना चाहिए। सत इमारी तुन्छ सम्मति में बदि 'वह' सर्व-नाम बहाापड का बाचक है तो 'यह' सर्वनाम पिष्ड का बावक है। इद शब्द का प्रयोग प्रपत्ने चति निकट प्रत्यक पदार्व के लिए किया जाता है। व्यक्ति के बस्यन्त निकट उसका बपना देश ही है। स्रोर वह-सर्वनाम का प्रयोग दूरस्य परोक्ष वस्तु के लिए होता है सो हमारी दिन्ट मे वह-सर्वनाम से मनिप्रेत बहुगण्ड है अर्जात् हम कहेंने वह ब्रह्माच्य भी पूर्ण है बौर यह पिण्ड भी पूर्ण है। इसी के ब्राचार पर 'विण्डबह्याण्डवोरंक्यम्' 'बचा विच्छे तथा बह्याच्छे' द्यादि सूत्र प्रवित्त किये गये । यदि यह सत्य है कि को कुछ बहुगक में है, वह पिण्ड में भी है तो 'धरम्' सर्वनाम का वाचक ब्रह्माण्ड होवा धीर इद सर्वनाय का वाचक पिन्ड होवा। ब्रह्माण्ड और निण्ड के तुल्ब होने से और

पूर्ण होने से इन्हें पुर कहा बाता है। सहास्य ने से पूर्ण विषय के निकसने पर जी उससे न्यूनता नहीं बाती और सेष पूर्ण ही रहता है।

'वह' धौर 'यह' खबंगम (उपायान) कारसा और कार्य के भी वाषक हो सकते हैं। प्रकृति कारसा में इस कार्य-बग्द को निकासन पर कारण प्रकृति से कोई सन्तर नहीं धाता, वह खबा पूस ही बनी रहती है।

'वह' धीर 'यह के तुत्र की हम तुज धीर बीज पर भी लाबू कर सकते है। बही तृज पूर्ण है वहां बीज भी पूर्ण है। पूर्ण तृज्ञ में से पूर्ण बीज को निकासने पर भी बुज पूर्ण ही बना रहता है।

वैदिक सुष्टि-विज्ञान से दो समुद्र बाने बाते हैं—एक बाकाबीय समुद्र और बूबरा पाँचिव समुद्र । ये दोनो ही समुद्र पूर्व हैं। बाकाबीय समुद्र वाष्ट्रमध्य है

भीर पार्थित समुद्र जलमय है। जलमय समृद्र में से यदि जल का वाष्पीकरण द्वारा निकासा आरमे तो भी इसमे न्यूनता नहीं आती। बाष्पीय समुद्र यदि अस मे परि-वर्तित होकर नदियो द्वारा समुद्र मे पहुंच बाय तो बाकाशीय समुद्र में कोई न्यूनता नहीं आती। यही प्रयोग हम पिता भीर पुत्र के लिए भी कर सकते हैं। परमात्मा मे यह सूत्र व्याप्त नहीं होता क्योकि उसमें से कोई वस्तु न निकाली ही जाती है भौर न डाली जाती है। हाँ यदि उसे ज्ञानसम माना जाय तो कहा जा सकेगा कि उसमे रहने वाला ज्ञान भी पूर्ण है भौर उसके द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान भी पूर्ण है। उसके ज्ञान में से वेद-ज्ञान को निका-सत पर भी सविशव्द पूर्ण ही रहता है। भीर यही सूत्र परमात्मा के बानन्द-गुरा पर भी चरितायं हो सकता है। बत हम कहेंने पूर्वम् बाव पूर्वम् इश्म्।



# तथाकथित विश्वविजेता सिकन्दर, सम्प्राट पोरस से

यह शिक्षित तथ्य भी कि प्रशिसार

ने सिकन्दर से मिलने से इन्कार कर विमा

था सिकत्थर की पराजय का सकेतक है।

जैसा कि दावा किया जाता है, यदि

वास्तव में सिकन्दर ने पोरस की शक्ति

क परामव किया होतातो मभी तक

तटस्य रहने वाला ग्रमिसार शान्सि बनाए

लेखक--पी० एन० ग्रोक

मे बकेल दिया है। किसी राजा को यह शोभा नही देता कि वह अपने सैनिको

धनुवर्ती घटनाधी से यह स्पष्ट हो वाता है कि उपयुक्त बारखा भनगढन्त एव स्वाथप्रेरित विभ्रान्ति है। यूनानी इतिहासकारों की इच्छा यही रही है कि हम विश्वास कर कि असल्य नरमेध कर हत्याची और सम्पूल समृद्ध नगरियो का व्यसकर्सा सिकन्दर उस समय प्रत्यन्त प्रकृत्लित हथा था जब बन्दी बनाये जाने पर पोरस ने उससे निश्वीकता से अगने साथ राजा जैसा व्यवहार करने को कहा वाकि सिकन्दर ने न केवल उसे उसका प्रदेश उदारतादश वापस कर दिया था. श्रापित अपनी मोर से भी कुछ भौर प्रवेश पोरस को द दिया।

<sup>र्श्</sup>योपियासी महाकाव्यो का सम्पा-इन कारन वाले श्री ई० ए० डब्ल्यू० बैज ने द्मपनीर नामे सिकन्दर के जीवन और उसके विजय ग्रभियानो का वर्णन सम्मि लित किया है। उनका कहना है कि, **"खे**हलम के युद्ध में सिकन्दर की घरव सेनाका प्रविकाश भागमारा गया था। खिकन्दर ने अनुभव कर लिया था कि बंदि मैं लडाई जारी रक्तगा, तो पूर्ण रूप से श्चपनानाश करलुगा। भत उसने युद बन्द कर देने के लिए पोरस से प्राप्ता की। भारतीय परम्पराके सत्यानुरूप ही पोरसने बरमागर शत्रुका बचनही किया। इसक पाद दोनो न एक सन्धि पर हस्ताक्षर किय। घन्य प्रदशो को धपने साम्राज्याधन करने में किर पोरस की सहायतासिकन्दर न की।

सिवन्दर •। पराजय के लिए श्री बैज द्वारादिया वया कारण यह है कि उसके सैनिक यद में अपने हजारी साथियी की अति से दुखित हो चुक ये। उन्होंने अपन शस्त्रान्त्र फेक दियं और अपने नेता से जान्ति के लिए प्रयन्त करने की प्राथना की। श्री वैज का कहना है कि शान्ति की प्राथना करन समय सिकन्दर ने निवेदन किया चा— श्रीमान पोरम ! मुक्ते क्षमा कर वीजिए। मैंने भापकी जुरता और सामय्य शिरोबार्यं कर ली है। धव इन कष्टों को मैं और प्रविक सह नहीं सकूमा। दुकी हृदय हो मैं भ्रव भ्रपना जीवन समाप्त करन का इरादा कर चुका ह। मैं नहीं बाहता कि मरे सैनिक मेरे ही समान विनाट हो। मैं वह अपराधी हू जिसने इन सी को को कराल काल के गाल मे चकेल दिया है। किसी राजा को यह को भा नही देता कि वह अपने सैनिकों को इस प्रकार मीत के मह में चकेल दे।

ग्रनुवर्ती घटनाधी द्वारा प्रस्तुत ऐसे स्पष्ट साक्ष्यों के होने हुए भी इतिहासकार उपयक्त उद्धरण को प्रक्षिप्ताश कहने भौर इसी।लए उनकी अवहेलना करने के दूरा-ब्रह पर धड हए हैं। तर्क के लिए यह मान केने पर भी कि उःर्युक्त उ**द्धरण** प्रक्षिप्ताश ही हैं हम यह प्रश्न करते हैं कि पोरस के सिरकाडरियस के सिर की भावि कव्ट

बाले सिकन्दर ने न केबल पौरस को जीवन दान दिया अपित उसको बन्दी सवस्था से मूक्त किया उसको उसका सम्पर्श राज्य लौटा दिया भीर सदभावना वश पुरस्कार रूप कुछ बौर प्रदेश भी भेंट मे द दिया। यह उतना ही ध्य नितय्कत है। जिलना यह कहना है कि किसी परस्कार-वितरण-समारोह में सहसा प्रकट होकर भपना शीश तीत्र गति से क्रद्धावस्था मे हिलाने बासा अयकर विवचर धकस्मात

रक्षने एव भित्रता सर्वन करने के सिए फटपट सिकन्दर के पास दौडकर गया होता । श्री ई० ए० डब्स्य० बेज का कहना है कि शाति की प्रार्थना करते समय सिकन्दर ने निवेदन हिया था— "श्रीमानु पोरस ! मुक्ते भ्रमा कर दीजिए। मैंने भापकी शूरता भीर सामर्थ्य शिरोधार्य कर ली है। अब इन कब्टो को मैं भीर प्रधिक सह नही सक्या। दु ली हृदय हो मैं अब प्रपना जीवन समाप्त करने का इरादा कर चुका हू। मैं नहीं चाहता कि मेरे सनिक मेरे ही समान विनष्ट हो। मैं वह अपराधी ह जिसने इन सैनिको को कराल काल के नाल

को इस प्रकार मौत के मृह में धकेल दे।" ही मुस्कराता हथा बाकर्षक राजकुमार बन गया और पुरस्कार विकरण करने

लगा।

यहो तथ्य, कि पोरस ने सिकन्दर से भपना प्रदेश सोने की भपेक्षा कुछ जीता ही या, प्रदक्षित करता है कि सिकन्दर ने न केवल शान्ति के लिए क्षमा बाचना की अग्रित यह भी कि उसका पराभव इतनापूल याकि उसे अपने कुछ भूक्षत्र भी पोरम को भेंट करने पत्र थे। इन यनानी वर्णनो पर भी विश्वास करते हुए कि सिकन्दर ने कुछ भू-प्रदेश जीतने मे पोरस की सहायता की भी यह भी विल्कृत सम्बद्ध है कि अपना चमड विस्कृत चर चर हो जाने पर मिकन्दर ने ब्रह्मन्त दस नीयायस्था मे पोरस का सहायक हो सेवा करनास्वीकार कर लिया और भारत मे श्रतिक्रमण कर प्रविष्ट होने क वण्डस्वरूप पोरम के लाभाय कुछ नुप्रदेश जीतने का वचन दिया। यह हा सकता है कि वह अतिरिक्त मुप्रदेश घोषित कामे शक्ष भाव बनाए रसने वाने तक्षशिला के राजा ग्राम्भि भीर राजनयिक-सटस्थता बन।ए रखने वाले प्रमिमार लोगों का रहा हो।

सिकन्दर का सामध्ये प्राचीन भारत की प्रतिरक्षात्मक सीह-दीवार से टकरा कर ऐसा चूर-चूर हो गया था कि पोरम के साथ यद के पश्चात जमके सैनिको ने भागे युद्ध करने से साफ इन्कार कर दिया। यह भली माति कल्पनाकी जा सकती है कि जब पोरम श्रकेशाही सिकन्दर भीर भामित की विली-जुली सामध्य को पूल में मिलासकता वा ता मिकन्दर कभी भी मिखु नवी के पार नहीं ग्राता यदि केवल ग्राम्भि की राष्ट्रभक्ति भीर न्यायबृद्धि पोरम के प्रति उसके गत्रु भाव की दास न हो जाती।

वापम जाने का निष्यय भी कर लेने के पत्चात् यह स्पष्ट है कि सिकन्दर को उन प्रदेशों से होकर जाने की प्रनुपति नही मिसी की, जिनको उसने पहले जीता का

ग्रीक-इतिहासकारी के प्रमुसार तो हमे विश्वास कर लेना चाहिए कि सिक-न्दर की सेनाएँ विना प्रतिरोध के विना किसी रोक-टोक के चेनाव तथा राषी नदीपार कर गई थी। यह स्पष्ट रूप में दर्शाता है कि जब पोरस ने अपने तत्कास शत्रु सिकन्दर को साम्मि के उत्तरी प्रदेश धौर वहां से सिन्धु के पश्चिम की छोर बापस लौट बाने से मना किया था तक पोरस ने विद्याल-हुत्रयतावश भपने प्रवेश के बार्ग से सरकित जले जाने में सहायता देने का बाहवासन दिया जा. यदि सिक-न्दर दक्षिण की बोर जाता।

पोरस का धोर से यह अल्यन्त दूर-दक्षिता का पन का क्योंकि गदि उनने सिकन्दर को भ्राप्ति के क्षेत्रीयमार्वभीर वहा से अफगानिस्तान जाने की अनुमृति है दी होती, तो बैसा कि अनुवर्ती मुस्लिम बाहमणकारियों ने धनेक बार किया. वैसा ही सिरन्दर ने भी कतध्नतापवंक धन्य धाकमण करन के लिए सेना का पुन एकतीकरण किया होता ।

ज्यो ही सिकन्दर की सेनाम्रों ने राबी नदी पार की त्यों ही भारत की द्वितीय सुरमा पक्ति ने भपना जौहर दिसाया। पोण्स ने अपने ही मू प्रवेश द्वारा उनको सर शत्मक व्यू**ह-रचना में सन्नद्ध कर दिया** था। किन्तु उसे ज्ञात या कि हमारे वीर क्षत्रियो द्वारा पूर्ण सन्नद्वता एव उस्साह पूर्वक प्रारक्षित मारत के घन्य भागी से भी मिकदर सम्पत नहीं जासकता था। इतनाही नही, जब वह ग्रन्थ राग्ते से लौटकर जाता तब उसकी वापसी पर उसकी पूरी चरनी बनाई जाती धौर विश्व विश्वेना होना तो दूर उसे तो ब्रस-हाय एव प्रक्रियनावन्था मे पुत्रा दिवा जाता। यही हबा भी। यत इतिहास को यह प्रवश्य ही ध्यान रखना चाहिये कि एक पराभूत शत्रुकी ग्रपेमा पोरस का मम्मान तो उस मारतीय महान् नेता धीर

उसकी सेनाको चर चर कर दिया छ। सौर निर्मंद शोकाकुल एव प्रायविश्वल-कर्ता के रूप में ही सिकन्दर को बाउस घर मेजने के लिए बाध्य कर दिया था।

रावी भीर व्यास नदी के मध्य भाग में निकन्दर की सेनाओं को अनेक विकट सडाइयाँ सडनी पडी थी। प्राचीन कास वे बारतीय सेनाए इतनी सावधान एट सतकं भी कि वे किसी भी प्रकार का समस्य अतिकमण सहम नही करती थी। ब्रत्येक नागरिक एक सैनिक था । राष्ट्र-मक्ति का स्थान किसी भी प्रकार सक-विकादबामाव नहीं ले पाता था। ध्वास के तट पर पहुंचते पहुचते सिक्त्वर के सैनिको ने भीर भागे कोई भी सहाई लडने से साफ इन्कार कर दिया क्यों कि यत्त्रवारी होने के कारण चनको प्रत्येक पन पर रोका गया वा। विकट सशस्त्र प्रतिरोध किया गयाचा वे भूसे रहे थे, उनको घर की याद बताने लगी बी अत-विक्षत एव युद्ध करने से चक वके के । है अनेक युद्ध लड चुके थे। पोरस के साब उनका युद्ध एशिया मे चौथा एव अन्तिम महान् संपर्व या । इसकी भयावह स्मृतियाँ उनके लिए इवयकपित कर देने वाली थी।

जिन मार्गे से सिकन्दर वादस आ रहा था, उनमे उसका ग्रायमन ग्रामनन्द-नीय न होने के कारशा सिकन्दर के भूखे मरते सैनिको ने घसावधान नागरिक-समुदायों को लूटना शुरू कर दिया। किंतु इस तब्य को यूनानी वरानों में इस धसस्य दाव का प्रमाश कहकर प्रस्तुत किया गया है कि पोरस के तथाक वित पराभव के पश्चात् भीर समिल प्रदेशी का जीतने एव लुट का माल एक न करन के लिए शिकन्दर दक्षित की छोर सह यया।

सिकन्दर सिन्ध और मकरान के मानी से बापस गया। प्रत्येक स्थान पर उसकी शोजनीयावस्था को प्रयन सेना के विभिन्न वर्ग भारतीयो द्वारा छट्टी धाक्रमणो भूजमरी एव रोगो स बस्त होकर सस्या में कम ही कम होते गय।

इस वापसी के समय मलावी नामक एक भारतीय जन जाति न सिकन्दर के युनानी राक्षसी भूण्डो का कडा मुकावला किया। इनमे होने वाली अनक मुठनेडी मे स्वयं सिकन्दर भी घायल हुआ। वा। एक सथव में तो उस क ट्रकड-ट्रकडे कर विय जाने वाले थे। व्लूटाक ने उस्केख किया है 'भारत में सबये अधिक संसार सडाकु जाति मलावी शोगो के द्वारा सिकन्यर की देह के टकडे-टकडे होने ही वाले वे भदनी छाटी सी टुकडी भीर स्वय अपने को ही इन वर्गर सोयों के तीर-भासी के मयानक सवाती से परेशान पाकर वह इन स नो के मध्य में कृद पड़ा। उन लोगों ने हावापाई तक में भयकर राजनीतिक के क्ष्री विवस्य किया बाला ... बाक्युक् किया । बलकी क्षम्यारे बीर

# हार मान अपने देश चल पड़ा

उसे जवानक रूप में आहुत कर दिया। सनु का एक सर-सवान हरने प्रवस्त के लेश हुआ या कि उसके विरहु-वस्त के गार कर नया और उसकी प्रतीयों वे बुध गया। विकस्पर चुटनों के बल या विरा। उसी समय उसका शनु करवान लेकर उसका शीध उतारने के सिए बीठ यहा। प्रवेस्टर और लिल्नेयस ने स्वय की खिक्त्यर की राजार्थ साथे कर दिया, रिश्मु जनमे से एक दी मार काला गया और दूसरा स्वयन्त सामक हो बया।"

इसी नारकाट के बीच ने सिकस्पर जी गर्दन पर भारी मोटे सिरे वाली खड़ी का प्रहार हुखा । उसका धनरक्षक उदे ससकी अनेतावस्था मे ही किसी सुरक्षित स्वान पर ने नया।

सीटते समय भी यूनानी राजसो ने सक्यनीय सत्याचार किया है। विवयो-म्बाद समया परावय-कन्य नेरास्य, योगो ही सबस्या में सिक्च्यत की यूनानी की सम्बन्ध कर व्यवहार करती थी। वय सम्बन्ध कर व्यवहार करती थी। वय सम्बन्ध कर वेती ची तो वे सत्याद नृश्वस्तापूर्वक कम सान्त्र नावरिकोपर करट पत्रते थे होर बच्चो व महिलायों को मौत के चाट स्त्रारोजस्वी थे।

मलावियो की ही माति स्यूजिकन, श्लॉक्सीकन व साम्बुख (सभी बारतीय कातिया) सिकन्दर की घतिक्रमराशील सेना पर मीवन प्रहार करने की डब्टि से श्रॅबिटित हो गईँ । घरपन्त कठिनाई से स्त्रीर बुरी तरह पिटी हुई बोडी-सी सेना मात्र के साथ सिकन्दर सिन्धुनदी के अब्रुहाने तक पहुँच पासा । चूकि अपने अस्त्रो एव सैनिको की प्रजेयता में सिकन्दर का विश्वास भय हो नया था, इसलिए उसने स्थल-मार्ग झोडकर समुद्र के रास्त आतो का विचार किया। उसने एक दल सैन्य-गतिविधि--- अनुसवानकार्य के निए भारि,नेज भी दिया। किन्तु उस में समुद्र आर्थ से जाने का भी उत्साह नही था। श्रत अत्यन्त सकोचपूरक उसने बलूचि-क्लान पार कर पश्चिम की ग्रोर जाने का विवार किया। इस क्षेत्र में भी झोरिटस सोलें ने यूनानी सेनाको को भारी पीडा वहचाई। रसमालन भीर पासनी पहुँचते पहुँचते बहाका मीवराताप उसके शुषातं विकस सैनिकों को ले बैठा। उनकी सस्या ब्बीरभीकम हो गयी। थका-मादा बीर निरास्त हो उसने महेसिया पार किया और वह कारमेनिया पहुच गया। वहा क्रेटसंके नेतृत्र मे एक टुकबी भीर नी सेनाका एक भाग उससे भा मिला। कुछ कम सत्रुत्वपूर्णकोत्र मे इस प्रकार सेना के प्रशों के बामिलने से मार-मार कर निरा वी गई और सनभग विनष्ट कर वी नवी सेना में कुछ बासा का सचार हुया। इव विजित प्रदेशों में भी विकम्बर द्वारा र प्राथमाओं हे बातने कर्मानी

सावरण स स्वानीय बनताको कृषित कर रक्षा या। लोगो ने उन के विषद्ध सवस्त्र विद्रोह कर रक्षा या। इसलिए सिकन्यर का उन राज्यपालो को बदलना

सिकन्दरको बहुत वार एक महान् भीर नक राजा के रूप में विजित किया नया है। किन्तु एरियन निसता है कि "अन बैनिट्या के वसूस को बन्दी बनाकर सिकन्दर के सम्मुक्त कावा गया, तब सिकन्दर ने अपने सेवकों से उस को कोड लगवाए, धीर उस के नाक धीर कान कटबाडाले। बाद में बसूस को भरवा हाला गया। सिकन्दर ने कई फारसी सेनाध्यक्षो को नुषसतापूर्वक गरका दिया वा। फारसी राजचित्नी को वारस करन पर सिकन्दर की बालोचना करने के ग्रपराथ में सिकन्दर को स्वय ग्रपने ही गुरु घरस्तु के भतीने कलस्थनीन को गरवा डालने में भी कोई सकोच नहीं हुमाया। क्रोबावेश मे उसन मपने ही मित्र क्लाइटस को मार हाला चा। उस के पिता का विश्वासपात्र सहायक पर-मेनियन भी सिकन्दर के द्वारा मौत के बाट उतार दिया गया था। जहा कही भी उस की सेना गयी, उस ने समस्त नगरों में भाग लगा दी, महिलाओं का ग्रपहरस किया ग्रीर बच्चो को भी तलवारो की घारो पर सूत डाला। ग्लि-म्यसिस घाफ बरढं हिस्ट्री'के ७२ वे पृष्ठ पर स्वर्गीय ववाहरलाल नेहरू ने लिला है 'सिकन्दर वृथानिमानी उद्धत भौर भनेक बार सत्यन्त क्रूर व हिसक था। बहुत्यस की हैन्दर के समात ही उसमता था। की क कथा मं समया प्रावेशा दस्या में उस ने अपन ही सर्वोत्तन मित्रों के पुत्रों का वक्ष किया और महान् नगरी की उन के निवासियों सहित ही पूणत आवस्त कर दिया।

धन्य वर्मों की महिलाधी में ईरान की दो सहजादियों का तिकन्दर नं धपने वर में डाल निया था। उस के छेना पतियों ने भी जहाँ कही वे यथ धनेक महिलाधों ने वस्तुर्वक धपनी रखेल बना कर रख निया था।

भारत में उस का समर्थ उस की मीत का परवाना बन गया था। धपने घर बारक वाले समय अब वह मीडिया शिविर डॉले पड़ा बा उस की सेना में भी भयकर विडोई फेल गया। विकम्पर ने मेहेडोनियमों को बर्कारत कर देने और और खम्य जातियों में से सेना में भरती कर लेने की यमकी दी। बहुत कठिनाई से बिडोई खाला हुमा और सम्बन्ध ईंग्

वेविजोन से प्रस्थान करने की निष्मित्त तिर्थि से दो दिन पूर्व दिकन्दर प्रमुने मिन मीडियब के घर पर एक मोज ने यदा हुआ। था। मारत-विजय करने का गर्वीला मन्तक नीचे फुक जाने की कटु स्मृतियों को भूला देने के लिए प्रस्थाकि मत्यान के कारण वह ज्या-स्वराधिक मत्यान के कारण वह ज्या- वर्षं काथा। ज्वरचडारहाव भीर भी तेज हो सया। १० दिन के बाद उस की वाक-शक्ति लुप्त हो गयी भीर फिर ई० पू० ३२३ से जून की २० तारीख का वह स्रचेतावस्थास मर गया।

सिकन्दरक मरणापरात 'भ्रोगस नामक एक पुत्र जन्माथा किन्तु कुछ, महीने के भ्रोतर ही सिकन्दर की पत्नी एवं ध्रवीध शिखुमार डालेगये।

सिकन्दरका उन्श्वनीय जीवन वृत्त धकस्मान् धतिकम् से प्रारम्भ हुमा, किन्तु जब उस का साहस न्याय एव विवक की परिधि की माम्रो को लाघ गया भीर जब उस ने भारत की सुद्ध प्रतिरक्षा पक्ति से टकराने का यत्न किया तब बह विषयाता हुमा लडखराता हुमा वायस भेज दिया गया था। वह भारत मे मरते-मरते बचा। प्रशेत रह से घायल हो जाने के कारण जब वह भारत से लौटा तो अपने घर पः चने से पूर्व ही मर गया। उम की शक्तिशाली सेना पूर्णत नष्ट अब्ट हो चुकी थी। धत इतिह सकारो को पून पोरस सिकन्दर सथय का म्ल्या-कन कर पारस को निर्दिवाद रूप मे विजेता घोषित करना चाहिए। ग्रव उपयुक्त समय है कि यूनानी वृत्त नक्षको के पक्षपालपुण दावों की घत्यन्त स्क्मता से जाचापडताल की जाए जिससे सिकन्दर के भारतीय प्रभियान की सत्यताका ज्ञान हो जाए। 'इतिहास की भयकर भूले से साभार

# गृहस्थ त्राश्रम के लक्षण

(सत्यार्थंप्रकाश से)

जिस कुम ने जायां से मत्ती मीर पति से पत्नी सम्बोद मक्षार प्रमुग्न रहती हैं उसी कुल ने सब सोमाय सीर ऐस्वर्य निवास करते हैं। बहुत कबह होता है बहा हुर्माग्य भीर बारिस्थ स्वित्य होता है। बो स्त्री पति से प्रतिक भीर पति को प्रस्तु नहीं करती सो पति के प्रस्तुन होने से कास उत्पन्न नहीं होता। जिस स्त्री की प्रसन्तता में सब कुल प्रसन्न होता है उसकी सप्तरनता में सब सुजस मार्चात है उसकी सप्तरनता में सब स्त्रसम्म सर्वात हु ख-सायक हो जाता है।

वर्ग कुछ भी न करे परन्तु धर्म के नाम से लोगों को उने। वर्वदा लोग से पुन्त करटी सतारी मनुष्यों के जामने धरणों दबाई के गयों के गार करे प्राणियों का सावक प्रवाद के पहिल्ला के प्राणियों का सावक, प्रवाद से वेंद्रुकि रखने वाला, सब सम्बंद धोर बुरों से भी नेम रखने उसको वेंद्राल सरीक सर्थात् विद्याले के समान पूर्व और नीच सम्भा की की कि लिए में विद्याल किया हो से प्रवाद कर की वेंद्र स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद प्रवाद स्वाद स्वाद

भूटी क्यों न हो परन्तु हुठ कभी न छोडे एसे सोमों को बगुले के समान नीव समकी। ऐसे-ऐसे लक्षणों वाल पासप्ती होत हैं उन का विश्वास वा सेवा कभी न करे।

सवा दबकारी कोमल स्वभाव जिते न्द्रिय हिंसक क्रूर दुष्टावारी पुरुषो है पृथक् रहनेहारा धर्मात्मा सनको जी<del>त</del> भीर विद्यादि दान से सुख को प्राप्त होवे। परन्तु यह भी ध्यान रक्से कि जिस काणी मे सत प्रय प्रयात् व्यवहार निश्चित होते है वह बाग्री ही उनका मूल घौर वाणी ही से सब व्यवहार सिद्ध होते हैं उस वाणी को जो जोरता ग्रर्थात् मिथ्याभ पण करता है वह सब चोरी भादि पानो का दरने बास्रा है। इसलिए मिथ्याभाषगादिरूप श्रवमं को छोड जो धर्माचार ग्रवीत् ब्रह्मचय जितेन्द्रियता े पूण ग्रायु भीर धर्माचार क्षे उल्लाम प्रकातका प्रकार धन को प्राप्त होता है तथा को धर्माचार से वर्त्तकर बुष्ट सक्षणी का नाश करता है उसके झावरण को सदा किया करे।

जैसे नदी धीर बडे-बडे नद तक तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त

भाश्रम स्थिर रहते हैं। (जैसे बायु के आश्रम सब प्राएगि हैं वैस गृहस्थाश्रम सब बाधमो काध श्रय है) दिना इस बाशम के किसी बाध्यम का कोई व्यवहार सिद्ध नही होता। जिसस बहुरचारी वानप्रस्थ धौर संवासी तीन बाश्रमी को दान और श्रम्नादि दके प्रतिदिन गृहस्य ही भाग्सा करता है इससे गहरूप ज्यव्ठाश्रम है द्मर्थात् सब स्थवहारो मे धूरन्वर कहाता है। इसिनये जो मोक्ष भीर ससार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न म गहाश्रम का भारता करे जो गृहाश्रम दुवलन्द्रिय धर्मात् भी क ग्रीर निर्वेत पुरुषो से भारश करने भयोग्य है उसका भ्रन्छ प्रकार बारण करे। इसलिए जितना कुछ व्य बहार समार मे है उसका भ्राधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता ता मन्नाना-श्रात्ति कन होने से ब्रह्मचय, बानप्रस्व भीर सन्यासाश्रम कहा से हो सकते । जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करत है वही निन्दनीय है भौर जो प्रशसा करना है वही प्रशसनीय है। परन्तु तभी गृहाश्रम में सुख होता है अब स्त्री और पुरुष दोनो परस्पर प्रसम्ब विद्वान् पुरुषार्थी धौर सब प्रकार के व्यवहारों के जाता नो । इसलिये नृहा-श्रम के सुख का मृख्य कारण प्रह्मचर्य भीर पूर्वोक्त स्वयवर विवाह है।

# आर्यंसमाज के पुराने साहित्य सेवी पं० बदीदत्त शर्मा जोशी

### डा० भवानीलाल भारतीय

पत्रकार धीर लेखक प० बदीदत्त जोशी का जन्म १८६६-६७ ई० (१६२४ वि॰) में काबीपुर जिला नैनीसाल मे हुआ। इनके पिता प॰ पुरुषोत्तम जोशी व्याकरण साहित्य एव ज्थोतिष 🖣 प्रकाण्ड विद्वान् थे। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा बढ़ी रत जी को धपने थिता से ही मिली। घर पर ही उनका कारसी शिक्षण भी ह्या। १८८१ मे वे मुरादाबाद ग्राये भौर वहाँ की संस्कृत पाठशाला मे प्रविष्ट होकर उन्होने व्याकरण एव साहित्य का झाने ब्रध्ययन किया । इस पाठशाला मे प्रवेश के समय उनकी बायु मात्र १४ वषकी बी। यहा उन्हेप० भव।नीदत्त जोशी से पढन का सुयोग प्राप्त हुवा चो द्मपन युग के बाच्छ वैयाकरला थे। उनके सहाध्य यियो मे प्रसिद्ध पत्रकार प० पद्मसिंह शर्मा तथा सुप्रसिद्ध सनातनधर्मी विद्वान् प॰ ज्वालाप्रसाद मिश्र भी थे। स्व० साहृ ऱ्यामसुन्दर की प्रेरला से जोशी जी बार्यसमाज मे प्रविष्ट हो नए। जब प० रहदत्त शर्मा श्रायसमाच सुरादाबाद के उपदेशक पद की त्याग कर कलकत्ते प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक भारतिमत्र के सम्पादक बन कर चले नए, तो उपदेशक कापदप • बद्रीदत्त जोशी को मिला। भार्यसमाज मुरादाबाद कं पाक्षिक मुख पत्र प्रायंविनय का सम्पादन भी कुछ काल तक उन्होने किया था। जब धार्यं प्रति-निचिसमा परिजमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की स्थापना हुई भीर मुन्शी नारायस प्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) को इस सभा का मन्त्री बनाया गमा, तो पहिन बदीदत्त सभा के कार्य मे भी मुरादाबाद रहत हुए सहयोग देने सर्व। उन दिनो सभा का कार्यासय मुरादाबाद मे ही था। यह स्मरणीय है कि मुन्नी नारायण प्रसाद के हृदय में धार्यसमाज के प्रति धास्या के बीज का वपन करने वात स्था उनका उपनयन सस्कार कराने वाल भी जोशी आही ही वे।

१८६० से १=६६ तक प० वदीदल जोशी ने बार्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पद पर कार्य किया। इस धवधि मे उन्होंने भनेक शास्त्राय किए तथा भनेक स्थानी पर भायंसमार्जे स्वापित की । मुरादाबाद मे सनातनी पांडत गोकुलचन्द से मूर्ति-पूजा पर उनका प्रसिद्ध शस्त्रार्थ हवा या। १८६६ मे बापने प्रतिनिधि सभा मे त्याम-पत्र दे दिया भीर मेरठ कालेज सोसायटी में चले गए तथा लवसव पांच वर्ष तक ऐंग्सो वैदिकस्कूल डी० ए० वी० काल-

पुर का (पुराना रूप) में धर्मशास्त्र के प्रध्यापक रहे। डी०ए०वी० कालेज बेहरादून के सस्वापक मुन्शी ज्योतिस्वरूप बाप क्रुपा भाव रखते थे। १६०१ मे जोशी जी मेरठ से धजमेर साथे धौर वैदिक बत्रालय में ग्रन्थ संगोधन का काय करन लगे। तीन वर्धातक बाबूराम विसास भारदा के मार्गदर्शन ने कार्य करने के उपरान्त ये पून मेरठ आग वए।

१६०४ मे प्रसिद्ध टिहरी शास्त्रार्थ िहरी महाराजा श्रीमान् कीर्तिशाह बहा-दुर के निमत्रशापर हुन।। टिह्र्री नरेख ने भार्यसमाज के नेता मुन्शो ज्योति-स्वरूप को प्रार्थ विद्वन्मण्डल के साथ शास्त्राथ हेतु भामतित किया। तब प० बड़ीदत्त जोशी महामहोपाध्याय सार्य मुनि पष्टित तुलसीराम स्वामी मार्यसमाब के प्रवक्ताके रूप ने सम्मिलित हुए। १३ दिन तक यह शास्त्रायं महाराज के सभा-पतित्व में सम्पन्न हुमा सनातन वर्ग 🕏 प्रवक्ता रायबहादुर पडित दुर्गादल पत तवा माहौर सनातन धर्मसभा के पहित कालुराम गास्त्री वे । इस घटना के पश्चात् बोशी जी कामपुर चले बाबे धौर डी० ए० वी० कालेज बोसायटी की धोर से मर्गप्रचार करने लगे। प्रचार हेत् सब उन्हें महाराष्ट्र बाध तवा बिहार बाबि प्रान्तों के सुदूर स्थानों ने भी बाना पढता था। कानपुर की डी०ए० बी० कालेख सोसायटी के तत्त्वावदान से प्रकाशित होने वाले ग्रामं समाचार उर्दू मासिक का सम्पादन भी धापने सगभग ८ वर्ष तक

१६१३ में ओशी की कानपुर से पुन मुरावाबाद चले बाए भीर धार्यसमाज के प्रभार तथा ग्रन्थ लेखन के कार्यमें जुटै रहे। १६१६ में धसीगढ के पी॰ सी॰ द्वादशक्षेणी प्रेस मे रह कर महामारत के सभीवन का कार्य किया । १६१७ में इलाहाबाद बाये और हिन्दी प्रेष्ठ मे कार्य करने संगे। कामातर में मुद्रीगंज स्थित कन्या पाठशासा में बाध्यापक बन गए। यहा ठाकुर बबनाब सिंह की प्रेरला से धापने विश्ववा विवाह के समर्थन में एक पुस्तक विसी जिस पर मापको एक सङ्ख रुपये पारितोषिक स्वरूप ठाकुर साहब ने प्रदान किए और स्वब्धव से पुस्तक की तीन हजार प्रतिया खपाई । ११२० मे जोशी की मुरादाबाद वले झाने । प० श्वकरदल शर्मा की शर्मा मैशीन प्रेस से प्रका-शित होने वाले धंकर का सम्यादम करने नवे । १६२६ में मुरावाबाव की बक्तवेवार्थ (१६६४ के बन्त क्य) पुनः लाड़ी वेश र्र्य

# त्र्यार्यसन्देश विशेषांक

२४ मार्च बार्यसमाज स्वापना दिवस पर ग्रायंसन्वेश का हम स्मरस्रीय सम्रहसीय विशेवांक प्रकाशित कर रहे है। विद्वान् लेखक अपने लेख निम्माकित विषयों पर मेवने की कृपा करें।

- १ स्वामी दयानन्द ने बाध्यात्मिक वमत् को महान् देन दी है।
- २ महर्षि वयानस्य प्राधुनिक तकनीकी के पोषक एव वैज्ञानिक वे ।
- १ भारतीय समाज के जागरण में प्रार्थसमात्र का बोनदान।
- ४ आर्यसमान क्या काहता है? हिन्दी भाषा के उत्थान में भार्यसमाध की मूमिका ।
- ६ वैदिक दार्शनिकत्व ।
- ७ ऋषियो और बोगियो की वैजस्वी परम्परा से दबानन्छ।

लेक जेजने का पता-

सम्पादक—पार्वं सन्देश साप्ताहिक १६, हनुमान् रोड, नई विस्सी-११०००१

# कैसे होली आज मनाएं ?

—राषेक्याम धार्य विद्याबाचस्यति मुसाफिर बाना, सुबतामपुर (उ०प्र०)

गूज रहा है जहाँ भ्रमय हो मानवता का क्रन्दन, होता जहाँ निरन्तर नियमित दानवता का, पशु प्रवृत्ति का कलुषित-कृटिल-कुमार्ग-स्वार्थ का स्वागत व ग्रमिनन्दन. होता नही मनुजता का श्चिता का, समरमता का, सौम्यता का स्पन्दन, वसम जलता हो, जलती हो पञ्चनदो की घरती, ऋषियों का यह देश जल रहा भारत माँ की पूण्य श्रस्मिता जलती हो निशि-वासर, होता हो मुखमरी, गरीबी, महगाई का ताडव नर्तन भ्रष्टाचारों का फैला हो जाल धमन्द-विवर्तन, **जहाँ सरे** वाजार नारी की अस्मत लुटती हो नव वचुएँ भी जहाँ विह्न की हबि चढती हों वहाँ भाज हम कैसे-होलीकात्यौहार मनाए? देख जल रहा, जलती है मानवता, फिर— **क्या** होली घाज जलाए ?

सस्कृत पाठवाका ये अध्यापक बने । १२ वर्ष परकात् १६२७ मे प्रेम विश्वासय वाडीचेव में बध्यापन कार्य स्वीकार किया । पश्चात् पुरकुतः महाविद्यासय ज्यासापुर मे तीन वर्ष तक रह कर बम्बा-पन कार्य करते रहे। बीच में वेड वर्ष तक

कर ज्यासापुर या नवे । स्वस्य समय पश्चात् मुराबाबाव चले वये भीर वहीं बन्य नेखन कार्य में संसभ्त रहे। १९४१ इँ० में बह वर्षे की बायु में बायका नियम

विश्व में सार्वभीम चार महादु स हैं। इनकी श्रत्यन्त निवृत्ति का नाम ही पुरु-बार्च है। इनकी निवृत्ति के लिए प्रत्येक पुरुष को एक न एक दुल के निवारण का बात सेना होताचा। एक कहताचारी स्वविद्या दुल का नाश करूना, दूसरा कहता में धन्याय-युव्य का नाश करूना, तीसरा गहता या में अभाव-दू व का नाश करूग भीर चीवा कहता वा भें बाबस्य इ.स.का नाश करूगा। प्रत्येक बार्य को एक न एक बत लेना ही होताथा और बद्धा भी बहुजो समाज, राष्ट्र झौर विश्व का बाधार हो। उसे धनम्य तत होना होता वा । निष्कमण्य वतहीन व्यक्ति को बस्यू माना जाता था ! इसीसिए द्यार्थे राष्ट्र प्रयोध्या में कोई भी (नासत ) ब्रत-हीन मनुष्य नहीं या। इस दतरूप अनि को प्राचान करनेवाला ही पार्व कह गता था। भूद्र वहा बालस्य निवारखार्थं कर्म-मय जीवन व्यतीत करना पसन्द करता बा बहाउसका वह कर्म ग्रन्य विश्वियो वा बनुकरण करनाथा। फिर शूदो का बत क्या वा - 'शूदा स्व्वमनिरतास्त्रीत्वर्णाः मुक्तारिस वे इन तीन वतवारियों में से कसी बनवारी के समीप रहकर असकी सैंवा बत लेते थे। किसी समाजसेवा-ब्रत-हीन की नौकरी हम किसी बवस्था मे नहीं करेंगे यह उनका बलया। इस प्रकार उस नवरी में कोई वतहीन नहीं या। इस-लिए सब सुसयत थे। जिसके जीवन का एक निरिचत बन व पित्रत्र ध्येय होता है, उसे दूराचारी दनने की फूबंत ही नही रहनी। यही संयोध्या के दिव्य जीवन का

### तस्या मञ्च

# तुम किधर जा रहे हो ?

लेखक प० बुद्धदेव विद्यालकार

रहस्य था।

वर्तमाम यूग में रूस उस घोर जाने का यत्न कर रहा है। वहा १ नर नारी तम्बाकू पीना छोड रहे हैं. २ शराब पीना खोड रहे हैं ३ वट-बुढ़ों का तथा अपने वेश का भीर भपने देश के वीर-पूर्वजी का पूर्व श्रद्धा से सत्कार करते हैं, ४ ग्रह-स्थाधन को सुझी बनाने के लिए कुटुम्ब का बादर करते हैं। जो माता जितने श्रविक बच्चो की ना होती है उसको उतना अधिक सादर दिवा जाता है भीर राज्य से हर बच्चे के लिए उत्तरोत्तर मिषक सहायता मिलती है। १ व्यक्ति-चारी की लुब निन्दा की काती है। ६ तलाक की प्रवा दिन-प्रतिदिन कडे नियमों ने जकड़ी जा रही है, जिस से ग्रहस्थों के लिए एक दूसरे को खोडना हची केल का सामान नहीं रहा, ७ वहा लडके लडकियाँ इकट्ठे पढते वे परन्तु इस के बुरे परिणाम देखकर उन्होंने बहा वर्य-रका तथा खिपाहियों में वीरता उत्तन्न करने के लिए लडके-सडकियों का इकट्रा पढनाबन्द कर दिया। ८ वहाँ बच्चे खुट्टी के दिन के श्रतिश्क्त दिनों में सिनेमा

वियटर ब्रादि में नहीं जा सकते भीर छटी के दिन भी किसी बच्यापक बचना किसी बडे के साथ जा सकते हैं, धकेले नहीं। ६ स्कूल में छुट्टी के पश्चात् भी कालको पर कहा नियन्त्रण रखा जाता है, वे व्यर्थ इचर-उघर चूम नहीं सकते। १० मास्को में दस बच्चे के बाद १६ वर्ष से कम ब्रायु के बच्चों को सडको पर घूमने की छूट नहीं। देखों <sup>|</sup> देकितने देग से तुम्हारी सस्कृति की घोर भा रहे हैं भीर तुम सिग-रेट के पीने में अपना गौरव मानते हो। शराब तुम में बढ रही हैं, तुम्हारे वर्गप्रव तुम्हें मनाकरते हैं, पर तुम उल्टै चलते हो तुम्हारे देश के कम्युनिस्ट बढ़ो का धनादर, देश से द्रोह, तथा राम कृष्ण, चाणक्य शिवाजी श्रकवर सरीचे पूर्वजो से पूरा करनासिवाते हैं। हमारे देश मे ग्रहस्याध्यम की खिल्ली उढाई जाने लगी है—तलाक पर जोर दिया जा रहा है— बज्बो की माका धनादर होने लगा है। यहा सज्के-सहकिया इकट्ठे नही पढ़ते थे, उन्हे प्रेरणाकरके इकट्टापढ़ाया जारहा है। हमारे देश के कम्युनिस्ट कालेखों मे

हुडेतास करवाते हैं जिससे सिनेमा टिकट

सस्ते दामो में मिन्नें। तुम्हारे देश में कृष्ण-सुदामा रात-दिन गुरुकुल में गुढ़ थी के साथ रहते थे। साब स्ट्ल के समय के परवाल् भावारानदीं करते हैं। यहाँ रात को व्याप्ट पुनने पर निय-त्रण लगाने का कोई न संग्री नहीं लेता।

रूस के लोगों न जिन वातों को बुरा समक्तर छोड दिया है, उन्हे तुम ग्रहण कर रें हो। ऐसे लागो को हमारे शास्त्र-कार वान्ताशी कहते हैं। बान्ताशी का मर्थ हैं - वमन (उलटी) किए हए को स्नानव'ला। मेरेप्यारै नौजवानो <sup>†</sup> तुम बन्तानी मन बनो। साची तुम किंधर जारहेही। यह रास्ता श्रयोध्या जाना तो दूर रहा मास्को भी नही जाता। तुम बयो॰यानी स्रोर क्यो नही जाते। जो **बुख मास्को मे है वह सब ग्रयो**ब्याम है परन्तु उससे भी मधिक कुछ है वह है सबम । जिसकी धोर मास्कोवाले का रहे हैं। एक और मुक्त भी है वह है, परमात्भा काप्रेम । जब मास्को सयम की धोर चलाहै तो प्रभु-प्रेम भी वहा बाकर रहेगा परन्तुतुम तो सवासे सथम भीर प्रभु-प्रेम के बनी रहे हो। इसी के बल पर महाश्मा गांची ने बिना हथियारी के विदेशियों के हायों से अपना राज्य ने

सव तुम स्वतन्त्र हो। सव तो तुम्हारे पास हिपियार भी हैं। सबम स्वीर प्रभू प्रेम के साथ शहन-वस को मिलाकर प्रपृते राष्ट्र की रक्षा करो। चलो स्रयोध्या की स्वोर—सीचो तुम किवर आ रहे हो ?

# जाग ! ज्वाला जाग !!

लेखक . यशपाल सुधाशु

परमात्माने जब सुष्टिको रचा भीर धपनी सर्वोत्तम इति यनुष्य को बनागा, तो उसे युवक के रूप मे ही जयतीताल पर 💎 इरित किया। विशास हृदय, मविष्य की बाबामी को निहास्ती प्रसन्न मासे, कुछ कर गुजरने को भातुर कसी मुद्रिया, सक्य की धोर बढते तीवनामी पन, ये वे बै युवा जिनके लिए ईश्वर ने बादेश दिया कि "अस्काम महते सीमयाय' = ऐ पुत्र ! महान् सीभाग्य के लिए उत्क्रमण करो, तुम्हारा पग उठे अपर उठने के निए, प्राने बढने के लिए। यब मेरा कार्य समाप्त हुआ यन तुम्हारा कार्य भारम्भ हुआ है। वयना भाग्योदय करने के लिए उल्क्रमण हरता होगा। पुत्र ने पिता के मावेश को शिरो-बार्य किया, उसने उत्क्रमण किया, परिक्रमण किया, विक्रमण किया। स्रावश्यकता पडी डो बाक्रमण भी किया। क्या नहीं जानते कि इतिहास को गढा है युवासकित ने । यूग-हुनों को हिलाया है बुवाशक्ति ने । गौसम, हपित, कवाद, वैमिनी की वरती पर

बाष्यारम धारा युवाको ने ही बहाई। चीवह वर्षों तक बन मे रहकर झातता-यियों के सिर कुचले हैं युवाघों ने। सबस की विषय जजीर को पहन, सेवा-सावना से श्रीरामको जिलाने वाले श्रीर हनुमान् युवा ही तो थे। कस के धन्यायपूर्ण शासन को पददलित करने वाल इच्छा युवा ही तो वे। रक्तरजिल रहा भूमि मे सक्षस्त भशोक को धर्हिसा और बौद्ध धर्म की दीक्षादेने वाले उपमुप्त सूचा ही तो दे। अस्याचारी राजानन्द के वश का विनाश करने वाले चन्द्रगुप्त बुवा ही तो वे, बौड ग्रीर जैन नास्तिक-मतो का जन्मूलन करने वासे भाषार्थं शकर कुल ३२ वर्षं के युवा ही तो थे। वर्तमान युव के निर्माता वेदी के पुनरदारक महर्षि दयानन्द गुवा ही तो वे । विदेशों में बाजाद-हिन्द फीज को तैयार करने वाले नेताजी सुभाष बोस क्यायुवा नहीं के <sup>?</sup> धपाह शक्ति के प्रतीक हैं युवक। परन्तु क्षेत्र है कि बाज

का गुबक पलायनवादी हो क्या है। दिनो-दिन वह माग रहा है पलायन कर रहा है, प्रपनी सम्मता-सम्कृति सेवा-भक्ति देश-मर्गसभी से। गाँव के युवा सहरो की भ्रोरभीर शहरों के युवा लि।सिताकी द्योर उम्मुख हैं। द्यपने द्यापको, समाज को रिक्ते-नातो को भूलाने के लिए नशीले पदार्थों का ग्रथाधृत्र उपयोग कर रहे हैं। १६६१ से अमेरिका से उठे हिप्पी धादोसन ने विश्व भर के युवाशो को क्रककोर कर रख दिया है। इस बादो-अपन की देश है पॉन (पाप) सगीता। प्राचीन धमरिकन जार्ज सगीत की तो ताल-स्वर की एक विद्या थी भी, परन्तु इसमें न तालान स्वर वस है तो समर्था-वित हो हुल्ला, अब अब। उसकी देन है जीन्स, कैंबरे, डिस्को तथा नशों का बढता

मेरे जुवा साथी परने को ठुलाने की आवस्पकरा नहीं, अपने को पहुमानों की जकरता है आते की जकरता है। तुस्ती हो में क्लिज़ोंने कीर मतत स्वकर साधी के कन्दे पर जुग-मुता तक बाया बाने वाला गीत वासा था। अपने सुन हो प्रपता बेहरा तकसाने बाने, क्लिज़ाने कार्स है हिन्नु कर्म की पताब, फहराने नासे बीर सैरागी पुन्ती तो केन कारी पर में दण्ड बैठक लगकर मृत्युको वरान वाले विस्थित तुम ही तो ये : राम-इत्य की बरती के सपूर जाग । उठ देल तो बरती वर्षेती हुग सं अतुमार ही है । रोक दो हुग के कदम जो चत्ती है प्राव, वैक्स की बुगो ये गाय, जिल्ला के माज राष्ट्र को बहक्ता हुया, प्राण चाहिए, स्वाभिमान चाहिए शोर बलिदान चाहिए।

तुम्हारे प्रास्त पास नया हो रहा है, धन्याय, घरवाचार सोवण, वलारकार बढते विषटनकारी तत्व नृशम हत्याएँ भीर तुम देखते हुए भा नहीं देखते सुनते हुए भी नहीं सुनते।

> बारात हो, या वारदात श्रव लिबक्षिया नही खुलती । क्यालह पानी हो गया है?

सुन पुरुष स्थानन्द ने कहा था, स्मन्यार, स्थान्यार करने बान से स्विक्त सहने नामा पानी होता है तो नथा पार के भागी हम नहीं बन रहे ? मरे दुखा तेरे स्थानाई केने के समस्य जा गया है। जाग, जाव ज्वान्ता जाग । उपनियर क ऋषि के स्था मन्त्र को या गुनगुना- उत्तिस्टल बायन प्राप्य स्थान्त निबोधना । उठी ! बायने यरो को प्राप्त करने स्थीरो को भो सामार्थ ।

# आर्य जगत् के समाचार

# दिल्ली की आर्यसमाजो के नाम अत्यावश्यक-परिपत्न

झायसमाजो का वितीय वर्ष ३१ मार्च १८८५ को समाप्त हो पहा है। झाप ३० अप्रेल १६८५ तक निम्नलिखित विवरस्य तथा बनराशि सभा कार्यालय में मिज-वाने की अपा करें।

- १ १ धप्रैल १६ म ४ से ३१ माच १६ म् ५ तक का वार्षिक विवरण।
  - (म) यज सस्कार, शुद्धियाँ, प्रन्ताजीतीय विवाह, दिन के समय सावारण रीति ।
    एव विना दहज कराय गये विवाहो का तथा समारोहोँ का विवरण।
  - (भा) समात्र के प्रधीन चल रही संस्थाधो, विश्वालयो, विकित्सालय, पुल्तका-लय सेवा समिति भावि का विवरण।
- २ १ अप्रैल १६८४ से ३१ माच १६८ अ. तक शाय व्यय विवरण।
- ३ सदस्यता जुल्क का दशाश वेद प्रचार न्यूननम १०१ वर्षये और धार्यसन्देश का वार्षिक गुल्क २०/- वर्षये।

द्याशा है कि आप समयानुसार कायवाही करके सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदक— डा॰ चर्मपास महामन्त्री दिस्सी धार्य प्रतिनिधि समा

# आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की मासिक बैठक

प्राय केन्द्रीय सन्ता की सागानी जासिक बैठक साथसमान ननिवर नासक टाउन दिल्ली-६ म १० नार्च १९६६ को सगराह्न ४-०० वर्षे सार्वसमान स्वापना दिवस (२२-१-६४) के सारोजन के सम्बन्ध में विचार करने हेतु सारोजित की क्यों है।

स्रापसे विनम्न सनुरोज है कि इस नैठक म पचार कर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

महामन्त्री—चुर्वदेव

# वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रायंसमाण विरला लाइन्स का वार्षिकोत्सव १८ करवरी से २४ करवरी सक धूमबाम से सम्पन्त हुन्ना। इस अवसर पर श्री प० रामकिशोर वैच की वेद कवा हुई।

तथा श्री प० हरिदेव, आश्राय गुरुकुल गौतम नगर द्वारा सामवेद पारासण् यज्ञ हुआ ।

मन्त्री--अवकृष्ण प्रार्थ

# अनाथ महिला का विवाह

३ २-८५ को पार्यसमाज समस्तीपुर ने सरक्षण ने २ह रही एक धनाव कन्या धवना प्रकर्ती का विवाह सरकार वी लाल बावू सिंह साम सबी पुर विवास स्वस्ती पुर केसाथ वड ही भूमवाम से सम्पन्न हुआ। स्वस्तीपुर को बनता वर धार्यसमाध के इस रमनास्थक कार्य का बहुत प्रभाव रखा है।

मन्त्री--- नवल किसोर

# वैवाहिक विज्ञापन

२८ वर्षीय, गुरुकुत स्नातक, एम० ए० हिन्दी, तस्कृत, आर्थ प्रचारक तथा निजी कारोबार में प्रच्छी धाय (जाट बातीय) वर के लिए एक दुयोग्या एवं सुम्बर कन्या चाहिए। बहेज एन जाति बन्बन नहीं।

पत व्यवहार का पता--

भोगराज झास्त्री वार्वसमाज मावल टावन सोनीपत (हरिवाचा) १११००१

# भाषण प्रतियोगिता का पुरस्कार

धार्य युक्त परिषय (रिवि० दिस्ती के तरवाववाण मे ऋषि वोच उत्तव के घुम सवसर पर ' राष्ट्रोरवान मे महर्षि वयानद का वोनदान' विषय पर नावरा प्रतिवोक्तित का सायोवन कोटला किरोबसाह नई दिस्ती में महासब वर्मपाल जी (प्रवान धार्षे केन्द्रीय बचा, दिस्सी) की सम्प्रसता में हर्गोत्साख से खम्मन हुया। इस प्रतिवोधिता मे २५ धार्म सम्प्रतिवेध के खान-खात्राधों ने भाग निया जिसमें सर्वप्रयम पारितीधिक पंत्रपाय चल 'विजयोगहार' धार्मसमाव सोधी रोड के खान राजू विज्ञानिक ने प्राप्त किया।

सभी बनता बच्ची को उत्साहबर्यनामं पुरस्कार स्वरूप तीन सी ६० का वैदिक साहित्य परिषद् द्वारा एव एक हवार रूपये की नगद राश्चि तमाने उपस्थित सार्यजनता द्वारा विजरण की गई।

—कमल किशोर पार्व

# त्रार्यसमाज की कृपा

आर्यक्यान वीताराय बांजार के मनती भी बाबूराम गुला के गांव २३ कर-वरीं-१४ को योल बाक्काना मह दिल्ली में बैठा था। वे बहा प्रक्रिटेस्ट रोस्ट्सस्टर है? क्षणानक उनके कमरे कें उन के पोस्टमास्टर जी देवा विद्वार्ग विनका स्वा-नाम्बरकु जरी दिन बन्बहें में हुमा था। उनके शांव नमें पोस्टमास्टर जी थे।

मुफे सत्यक्ष प्रसन्ता हुई जब दोनों पोस्टमास्टरों ने स्लेह-विट व गुज की को देखा और भी देखा जिंद ने मुक्तराते हुए उन्हें एक प्रवसायक दिया किस से सक पी० गस्टर के दौर पर उन के निष्टापूर्वक कार्य की सराहना बहुत पुन्दर सब्दों में की कई ली।

मैंने उस पत्र को पढ़ा और गुप्त भी को बचाई दी। उनका केवल यही कड़ बाकि 'यह सब सार्यसमान की हगा है, उस माकी ही यह एक बड़ी शिक्षा है कि अपने कर्तक्य का पासन कम समस्र कर बी-बान से करो।

धोमप्रकाश, प्रिसिपस

# श्चार्यसमाज श्रशोक विद्वार फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन

धार्यवागान धात्रोक विहार (तुरुकुत) फेन-२ का वार्षिक निर्वाचन वित्रीक २४ फरवरी =५ को बाचार्य की बीनानाच जी विद्यान्तालंकार की श्रव्यक्षता में वर्ष सम्मति से निम्मानिकत प्रकार से वस्त्रन्त हुधा---

प्रधाम---श्री पी० एन० सरीन सन्त्री--धी अशोक वदन

कोवाध्यक्ष-धी वसदेव राज समदेवा

क्रन्तरग सदस्यों के चुनने का अधिकर प्रधान जी को सजा ने प्रदान किया। मन्त्री, ग्रावेंसमाज अशोक विद्वार, फेक्ट-व

# वार्षिक यज्ञ, उत्सव

हान्युदयान दयानम्य वैदिक सम्यास सामान, वयानम्य नगर, नामियासाय २-वा मार्थिक वज्ञ वहारेख्य दिनाक ७ समेंस रिवसर से १४ सम्रीक १८०५ रिक्सर एक सामर्रोहपुर्वक सामितिक किया गया है जिससे उच्चकोटि के विद्यान्, सन्तासी कं अवनीयवैक्स क्यार रहे हैं।

-स्वामी प्रेमानन्य सरस्वती

# वार्षिक चुनाव

सार्थं पुरुक परिषष् (रिजि०) विल्ली का राधिक जुनाव १७ सार्थं, १६०६ रिजेशर को बार्यं समाज बीवान हाल, चादनी चौक, दिल्ली-६ में सच्चाझ २ वर्के से सन्पन्न होना।

-कमल किसीर प्रार्थ

# बार्यसमाज गंगागंज प्रयाग का वार्षिकोत्सव

इस आवंदमान का वार्षिकोन्सन १३ नार्य से १७ मार्च तक होने का पहा है : इस अवसर पर अनेक विद्वार, नामक पदार रहे हैं ।

पन्ती-विश्वपृथय विद्



# आह्वान

—स्व॰ कृवर सुजलाल मार्थ मुसाफिर

गफनत में क्यों पढे हो भारत के नौ निहालो। जाको हुआ। सर्वेरा हिन्दुस्ता के भूतालो।।

दुनियाकी गैर की में वेस्रोतो कहा पहुँची। फिर क्रपनी दुवशापर तुम इकामबाह डासो।।

्रतम मानिये कि नेशन पस भरमे उठ उड़ी हो। तम इसको उठाने का बीडा सनर उठा लो॥

फूट धीर अविका ने अधेर मचाया है। इन दूरमनो को अपने घरसे असी निकासो॥

पासण्ड की चट्टानें बढने ही नही वेंगी। क्यादेखते हो इनको मिल जुल के पीटाडालो ॥

नीच ग्रीर ग्रञ्जूत कह कर ठुकरा रहे हो जिनको। माई हैं ये तुम्हारे इनको गले अनग जो।।

ध्रव्यक्त तो तुम किसी को गिरनेन दो "मुसाफिर'। गकती से घनर कोई गिर जाये तो उठा को॥

# बोधोत्सव एवं यद्ग

सार्यवागाय परिचम विहार द्वारा २४ फरवरी १८-१ को कृषि बोधोत्सव खतुर्षेद (शक्क) एव नायाची महायक के साथ नदी पुनवाम से मनामा नया। यक के सह्या माता प्राचा रानी जी बी व यक के संयोजक जी घरत सिंह गुन्त थे। उन्होंने ४ जुक्क स्पर्तियों को यजनान नगाया। इस प्रवस्त एर समाज के प्रधान जी हीराक्षाल खावना ने कृषि बोध सम्बन्धी निषय पर प्रकाश डाला। तरावचन् कृषि सनर का भी सार्योजन किया नया था।

> हरिचन्द अधरम A I/११० परिचम विहार, नई विल्ली-६३

# वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आवि प्रसिद्ध भवनोपवेशको-

सत्यपाल पथिक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल पथिक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना क क्सरम तथा

प बुद्धदेव विद्यालकार के भवनों का संग्रह । आय समाज के अन्य भी बात से समाज के सचीपत्र के लिए लिख

कुस्टोकॉम इतेवट्रानिक्स (इण्डिया) प्राप्त 14 मकिट 11 फस 11 अशाक विहार देहसी 52

फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN वैदिक कैसेट समा कार्यालय १५ हनुसान रोड पर भा उरलब्ध है।





दंत संजन लोंग युक्त

मसुद्दों की सूज

-23 जडी बूटियों से निर्मित-आयुर्वेदिक औषधि





COCC GIT HOTE Star ger

ठडा गर्म पानी लगना

. . .

वात का वर्द

महाशियां दी हट्टी (प्रा॰) लि॰ १४४ वण्डनिहसल एरिया कीर्ति क्वार नर्ने दिली 15 फोल 539809 537987 537341

# निर्वाचन सम्पन्न

क्षार्य केन्द्रीय सभा गुरुवाँक का समाज भीत्रकार, १७ २-८५ की कार्य-समाज भीत्रकार, गुरुवाँचा में हुया। इस मे वर्ष १९८५ के लिए निम्निलिंबत श्रवि-कारियों का चुनाव श्री श्रीमर्वेग दीवान की सम्बद्धता में सर्वेशन्मति से सम्बन्ध हुआ।

प्रवान — भी गुणीराम सबदेवा इत्रप्रवान — भी सस्वपात मार्थ महामन्त्री — भी कन्द्रैयासास मार्थ मन्त्री — भी सोमप्रकास प्रत्यक्ष मेलाम्ब्रस्स — भी विचामुक्ष्य वास्त्री 'भव्वारी — भी दोलतराम वेडा सेखा निरीक्षक — भी हरिस्स सास्त्री '

इस स्वतर पर आयेसमाज नीमनवर, मुख्यांचा की घोर हे सहभोज का बायो-श्रम हुआ।

क्ष्य विशेष -क्ष्मीवाकास सार्वे

# उत्तमता का एक मात्र विश्वांस

अब नये वैकिय मे उपलब्ध

# Groversons





ब्रा.पेन्टी, बनियान अन्डरवियर व बेबी पेन्टी आह



2663-ए/2 बीडन पुरा अजनल रघानेड कैरोल बाग नई दिल्ली - १९००० र यार्य जगत की शान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

# नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भायकर अधिनियम जी० ६० के अनर्गत कर मुक्त हागी।

सारा बान विक/मनीमार्कर/बक क्रायट द्वारा मत्री, माता चन्ननदवी म्रायं वर्माय नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी नर्ड-दिली-५= के पते पर भेजा जाए । दानदाताओं क नाम चिकित्सालय की शिला पर किंत किए जाएगे '

निवे "क

ब महाशय धनपाल ग्रोमप्रकाश कार्य 'हल्ली प्रयोग मन्त्री ' तिनिष्ठ ग्राय केन्द्रीय प्रहाषय कुमीलाल । समा वेरिठ ४०

> ट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कोतिनगर १४ नेत्र, वई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, ग्रीर बनाएँ क्योकि यह पत्रिका---

- (१) वैदिक मान्यनाधी को उजागर करती है।
- (२) भायों (हिन्दुभो) की महान् परम्पराभी की याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से घास्म चेतना जागृत करती है
- (४) भारतीय सस्कृति के मूले विसरे प्रसगो, महापुरवो तथा भादर्ख सस्कारो को प्रकाश में लाती है।
- (४) ऋषि, मुनि, तपस्वी भ्राप्तविद्वानों की वास्त्री का बोध कराती है।
- (ई) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीव-नेपयोगी मधुर सण्देखः साती है।
- (७) नये लेखकों कवियो, चिन्तको, प्रतिभाशासी विद्वानो साहित्य सैवियो को प्रोत्साहन वेती है।
- (a) वार्मिक, सामाजिक धौर ग्रांच्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (६) बेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, घ्रारण्यक बाह्यएपरन्य 'ा, रामायरण, नीति, ऐतिहासिक, अमृत्य धार्ष ग्रन्थो पषिकाख लीगों ने पढाती क्या देला मो न क बगत् को जिन बन्यो पर सदा गर्वे ोती हुए सप्ताह बटोर कर प्रापकी

प्यना वार्षिक चन्दा २० ६० ० ग महर्षि दयानन्द निर्वाण प्रथम मनोहारी स्मान

भार्य सन्देश

5 H . F27

त के 😲 ाड़ी फी

# हरिद्वार की और्षाधया

# सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली राजा केवारमाय, फोन २६६८३८ वावडो बाजार, दिल्ली-६

# कण्वन्ती विश्वमार्थम

# दिल्ली आर्य प्रतिनिध सभा का साप्ताहिक पत्र

मुख्य एक प्रति ५० वैसे

वर्ष ६ सक् १७

रविवार, १७ मार्च, १६८६

**बार्य सक्तर १६६०**०५५३०५४

फाल्गून २०४१

वद्यानन्त्रास्त्र --- १६०

# पंजाब का उपेक्षित हिन्दू और अकाली नेताओं के

मत लोंगोबाल के साथ सात धान्य अकाली नैताधो की रिडाई पजाब समस्या हल करने मे सह बौगी कदम है। लगभग सभी राज-नैतिक वर्गी द्वारा स्वागत भी किया गया है, परन्तु प्रकाली नेताको के तैवर प्रभी बदले नहीं हैं। शिरो-मिंग प्रबन्धक कमेटी के कार्यवाहक धाष्यक्ष श्री प्रेमसिह लालपरा ने श्रपनी मार्गे पून बोहराई है। जब तक वे सात मार्गे पूरी नहीं होती, उनका अल्टीमेटम बरकरार है। उन की मागे हैं--सभी अकाली नेता रिहा किये जाये। धालिल भारतीय सिल

छात्र फेंडरेशन पर से प्रतिबन्ध हटे। उन सिख सैनिकों को फिर से बहाल किया जाये, जो स्वर्श मन्दिर मे सैन्य कार्रवाई के दौरान अपनी बैरको से जोश में बाहर निकल प्राए वे। प्रकाली दल की तदर्व समिति के सयोजक श्री सुरजन सिंह ठेकेदार का कहना है-पजाब भीर भन्य स्थानो पर गिरपनार सकाली नेतासो भौर सिल युवको को रिहा किया जाए, विशेष न्यायालयो की समाप्ति हो, पजाब में काला कानून समाप्त हो ।

दूसरी मोर १३ गार्च से २७ मार्च

तक दिल्ली में घाल इण्डिया सिख कान्फस ने "विरोध दिवस" मनाने का निश्चय किया है। वे दिल्ली दगी में गरे लोगों की त्यायिक जान के लिए २७ मार्च को वोट क्लब पर घरना भी दगे। विस्मय की बात तो यह है इन श्रकाली नेताशो का बयान भी घटल नहीं है। लगता यह है कि इनके पीछे उग्रवाद की शक्ति ग्रधिक प्रभावी है। जब तक उग्रवाद को सक्तीसे नहीं दबाया जाता और श्वान्तिप्रिय नेताश्री को विश्वास में नही लिया जाता समस्याका समा-षान सम्भव नही।

पजाब में गैर सिख या हिन्द ५० प्रतिशत से कम नहीं हैं। सिखी में आध से प्रधिक नामधारी, निर-कारी, उदासी, राघास्वामी बदहै सिख, राम गढिये भीर कम्युनिस्ट सिख अपने को भ्रलग कीम नही मानते। इन सबको मिला-जलाकर जो बहुसस्या है। ये सब हिन्दू समाज के भग हैं भीर सरकार की चाहिए कि बकालियों से बातचीत करते समय पजाब के हिन्दू प्रतिनिधियो को शामिल किया जाये तभी समस्या का सही हल सामने बा सकता है।

# देश में प्रजातंत्र और उसका हृदय ठीक कार्य कर रहा

विधानसभा के निर्वाचन मे श्रविकास राज्यों में काग्रेस (बाई) की प्रवल लोकमत मिला, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता धीर अलज्डता को ही इस चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यों में जनता ने यह समका कि कांब्रेस (बाई) का स्थिर विकल्प है बहापुन विरोधी दली को व्यवसर प्रदान किया। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र भीर उसका हृदय ठीक स्थान पर हैं। इन चुनावों ने पुन यह दर्शामा कि विश्व में सबसे परिपक्त लोकतन्त्र भारत में ही है।

साब हो यह भी सिद्ध कर दिया कि बुताको मे जनमानस का स्थान ही सर्वोपरि होता है। चुनावो मे प्रयुक्त प्रचार साधन भादि की बात गौरा है। जनता नये सिरे से देश का पुन-निर्माण चाहती है, यह भी असदिग्ध है। पिछले लोकसभा निर्वाचन के उपरात युवा अवानमन्त्री माननीय राजीव गांधी ने प्रशासनिक एव न्याय व्यवस्था का सुधार, काले धन पर ग्राषारित समानान्तर ग्रर्थव्य-बस्या की समाप्ति, पडोसी देशों से स्पष्टवादिता एव विरोध पक्ष की धावर देने सम्बन्धी जो घोषणाएँ की उनका बहुत ज्यापक प्रभाव हुछा। प्रगति के भनेक कार्यक्रम समयबद

रूप से चलेंगे. ऐसा विश्वास प्रकट किया गया । ३५ वर्षों मे दलबदल रोकने का प्रभावकर उपाय नहीं हो सका। वह एक मास के भन्दर ही दलबदल विरोधी कानून के रूप मे सामने था गया, जिससे लोकतन्त्र की मर्यादाकी रक्षाकी जासके। इस विधेयक के पारित होने से विरोधी दलों को ही अधिक लाभ होगा, जिनके विषायक सत्ता पक्ष की भोर सरलता से बाकवित हो वाते थे। पत्रकारों की स्वतन्त्रता से भी लोक-श्रमिञ्चिति को बढावा मिलेगा। पर साथ ही पत्रकारिता के सही विकास के लिए पीत पत्रकारिता से भी बचना चाहिए।

केन्द्र सरकार की उपरोक्त प्रगतिशील एव जनहितकारी नीतियो ने जनमानस को प्रभावित किया धौर उसका परिलाम विधानसभा चुनाव परिसामी के रूप में सामने है। नि सन्देह बहुमत ने पुन श्री राजांव गाधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है। इस सदर्भ मे एक विचार-शीय बात जरूर है। वह यह कि चुनाव इतने महगे हो गए हैं कि ६६ प्रतिशत लोग चुनाव नहीं लड सकते। इस प्रकृत पर भवश्य विचार होना चाहिए श्रन्यया श्राम जनता की चुनाव-प्रक्रिया मे दिलचस्पी नही रहेगी, जो जनतन्त्र के लिए घातक होगा । --- ৰা০ মানন্ব সন্ধান

# दक्षिए। दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आर्यंसमाज स्थापना दिवस

२४ मार्च, १६०५ को मार्गसमाज मन्दिर मालबीय नगर मे प्रात ८ बजे से १ बजे तक बार्यसमाज स्थापना दिवस वह समारोहपूर्वक मनाया जा रहा 🕏 । भ्रतेक उच्चकोटिके विद्वान् एव नेता प्रधार रहे हैं। इस अवसर पर ऋषि लगर का भी भागोजन है।

---रामसरन दास बार्य, मत्री

स्थापना दिवस पर प्रसाद वितरण

बार्यसमाज क्षालीमार वागकी बोर से कृत्नी कोपडी कालोनी वे प्रात द वजे से ११ बजे तक वेद प्रचार एवं मिष्ठान्न बितरसा का प्रायोजन किया गया है।

—डा॰ रचुचीर 'बुमुक्ष्', प्रवान

# आयं केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज स्थापना दिवस का भव्य समारोह

२४ मार्च, रविवार को २ बजे से ५ बजे तक विट्रल माई पटेल हाउस रफी मार्ग नई दिल्ली के प्रागरण में भूमधान से मनाया जा रहा है। इस श्ववसर पर अनेक गण्य-मान्य प्रतिष्ठित विद्वान एव देश प्रसिद्ध नेता प्रधार रहे हैं।

ब्रध्यक्ष-की रामगोपाल जालबाले

वक्ता-श्री जैन मूनि पुशील कुमार, श्री सीताराम केसरी, श्री रामबन्द्र 'विकल', भी प॰ शिवकुमार शास्त्री, डा॰ वाचस्पति उपाध्याय

विविक से विविक संख्या में पद्मार कर वर्मलाभ उठायें।

त्रधान-महाशय वर्मपाल

महामंत्री-सूर्वदेव

# सत्संग वाटिका

# सुख का आधार 'सेवा'

श्याम सुन्दर स्नातक, श्रार्थ महोपदेशक

यो श्राध्राय च त्मानाय पित्वोऽन्नवान् सन् रफिताय उपजम्मूषे ।

स्थिर मन कृरणुते सेवते पुरोतो चित् मर्डितार न विन्दते।



सर से सप्तमाने की प्रपत्ती घरूर्य वीची
हैं। "सा मान से कहां हैं— तेवा करते का घरणात करता चाहिए। यह जी एक प्रकार की सावना है पुण्य है। धन्य म इसम जुल मिलवा है। जो एसा नहीं करते उनकी गति का इस बेद मान में वरण है। कहां हैं— महिलार न श्लिते उसे दुल नहीं मिलवा जो परीव को सेवा नहीं करा। उसे दुकराश है उसकी सवा मीता हो कर मी पांच सामानी हैं प्रकारी धारदहरत के सिए मन को सलीए कठोर कर नेता है धोर सेवते पुण्ये तो चिल्प चल्के सामने देवन करता हैं (मीज करता

हर्ष सुरू में प्राये नहां है - मनुष्य को दूरवर्शी बनना चाहिए तथा करना बहुत करिन कार्य है दिक है। एरन्, हो बेशा करने बान प्रपना ही नक्याए कर रहे होत है क्योंकि को हि वत्तन्त रन्धेव कार मनुष्य के तब दिन एक हमान यह नहीं रहेते। एक के चक्र क समान यह जीवन है - खुक्क सुक्ष सोनो जीवन कहाय साथ जलते हैं। जब मनुष्य देखे कि विन भ्रच्छे हैं वो रोटो धाराम से मिल रही हैं, यही उपमुक्त धरवार हैं देवा का। पर सेवा उदाकी करें निसका सहारा कोई नहीं, जो कुका हैं, चित्र में देवे इस कर में कहा हैं—

> को ३ प्रृष्ट्रीयात् इत् नायमानाव तब्यात् प्राचीयातम् सनुपर्यतः पत्त्वाय् । स्रो हि क्लंस्ते रच्येव चका सन्यसन्य उपतिष्ठत्ति राव ॥

यह जन मैंन है हाप का प्राफ है कल नहीं। छेवा भी उसी की होती है जिसने पहले की हो। साल हम दूसरी का स्वान करते हैं कल हमारा भी दूसरे स्वान करते हैं कल हमारा भी दूसरे स्वान करने, परवाह करने।

इस सन्दर्भ में एक बात विशेष हैं। ससार में यह से प्रयावह मृत्यु हैं। यह मृत्यु केवक गरीद को मुंत्र के हो तहीं स्वाती जें हुए—त्याभी मौत के बाद सतति हैं। जो इसरी की, दुवियों की सेवा करते हैं। अपनी क्षमताओं के साल-भत इसरों को लामानिया करते हैं, वे इसी नहीं होते सम्बन्ध वहीं होते। इसके विपरीत कृत्यु व्यक्ति वो सपनी विया धपने प्रसिद्ध या सञ्चित वन या सामना धम्यास से प्राप्त बस ग्रादि से दूसरी का भना नहीं करते वे समय धाने पर सुका से बनित रहते हैं। कहा है—

कोश्य ज बा उ बेवा अविमत् वथ बहु, बताधितयुपमण्डान्ति मृत्यव । बतो र्रात पृत्यमे नोपबस्मति, बतापृत्यत् महितार् न विग्यते।

विश्वी भी जग्म-प्रान्त व्यक्ति को मृत्यु क्षणस्थानाथी है। प्रकार जीवन-प्राप्त की निर्माणनाथी है। एक बात प्रमान की नेपोध है—बहुत से मन्त तीथ =बार्मिक जन एसा मान केते हैं कि जो मी हार पर साथे थे।। इससे गुपा-मता ना प्यान कित सावस्वक कहा है— क्षणस्थान कृतिकारियान शीकते। कण्युस्थान नृत्ति सावस्वक स्वार्ग केत

मनुस्पृषि में मनुषी में लिखा है जो समर्थ होकर थी कार्य करने नेता मांगत होने पर भी कार न कर के रोना मांगत है के समर्थ कमा में उन्हीं घरों में पश्च नगते हैं। सस्कारिविच में धौर सस्वार्य कारा में महार्थ स्वार्य स्वार्य कारा से महार्थ स्वार्य स्वार्य कारा से महार्थ स्वार्य स्वार्य से सरस्वार्य में पश्च हैं—

### (बांस्से) ते हु प्रेत्यामिग**व्ह**िस यकुतायु सम्मदाविकास्।

याय कल हम देखते हैं कि वर्ष का यहारा नेकर समेक पेवदे करवा में प्राव्य नेकर पर समेक पेवदे करवा में प्राव्य नेकर कर का में स्वित्यानी की Calonios (कालोगियो में) बाकर मनेक मुटे उपने कहानी के पेदा मांचते हैं। कोई गांच के नाम से तो के कोई मांदर करवाना है। प्र वाल करों में पार के नाम से तो कोई मांदर करवाना है। प्र वाल करों में पार के वर्ष के दें। प्राय तोग कल काते हैं। यह रोज यह उत्तरोत्तर कर ही रहा है तालवानी को विद्या होने से साववानी के साववान में साववान में साववान में साववान में सहता है। प्रकार को स्थानों में तावात है। प्र वाल को स्थानों में तावात है ने के वी विकेष एक शाववानों का विद्या

सुल प्राप्ति के चार बाबार है-चप।सना के प्रतिरिक्त वर्म शान्ति, सतीव भौर सेवा। इस लेख में सेवा पर विचार व्यक्त किये हैं। साक्षा है स्वाध्यायशील पाठक सार प्रहरा करेंगे। सन्त में समापन करते से पूर्व भी चकवर्ती राजगोपासाचार्य भी के जीवन की घटनाभी लेखनीबद्ध करता है। बहुत पुरानी बात है एक व्यक्ति ने बाकर मदास में इन से अपनी व्यवा सुनाई — मेरी जेब कट गई है, सैने बाहौर बाना है, ये पता है। मैं Advocate हू, बकालत करता हू । चन्होंने कहा कल बाध्येगा । इतने मे उन्होते साहीर कोन कर के मित्रो डारा वाच कराई। सब कुछ भूठ निकला प्रयते दिन वब वे महानुभाव साथे तो पुलिस देख कर न्तक्व रह गये। सेवा की जिए वरम्तु सचेन होकर । सेवाधमं परम-गष्टम योग्निनामप्यगम्य ।

पता बी० २०१ ब्रेटर कैसास, नई विल्ली

# हम प्रसन्न रहें

### सुरेशचन्द्र वेदालकार

विश्वदानी सुमनस स्थाम पश्येम तु सूर्यमुच्चरन्तम् । तथा करत् वसुपनिवसूना देवा ग्रोहानो ग्रवसामभिष्ठा ॥

ऋ ० ६।५२।५

हम (निवदानी) सदा, सवकाल (सुमतक) अ तरिवर अस्त- मन (स्वाय) रहें (मु) या ( व-वरलमा) त्रवर होते हैं (भूव) मून का (यदेशा) देखता रहें। (वन्ना) एनवया का (बसुपति) ऐस्तय प्रीत (दवान देवों का (पोहान) वहल करने वा आर (प्रवसामिपट) रखण करने वा आर (प्रवसामिपट) रखण करने वा आर विवसामिपट) रखण करने वा आर वाला स्थाप्त अनु (नवाकर) वैता करें।

इस ससार मंदुल और चिन्ता, ये मनुष्य का धर रहते हैं। इस रख और चिन्ताका महाद्रद्ध धनादिकाल से अन- वरत कर म चल रहा है। ज्यो ज्यो वेशा-तिक उन्मीत हो रहा है य चिन्नाएं बढ़ती जा रही है। स्वार म फैली हुई व्याधियो रोगा भीर दु तो का कारण चिन्ना है। चिन्ना हो मुद्दण के सुखसय जीवन क तिल सबस बढ़ों बाग है। स कुन के एक किंवे ने लिला है—

चिन्ता चितासमा व्युक्ता विन्दुमात्रविशेषिता ।

विन्दुमात्रविशेषिता। सभीव दहते चिन्ता,

निर्जीव द**हते वि**ता ॥

इसी माय को ज्यक्त करते हुए दूसरे कवि ने इस बात को इस प्रकार कहा है—— चिन्ताचिताहबोमध्ये

विन्ता एव गरीयसी। विता दहति निर्जीव

बिन्ता दहति सजीवकम् ॥ चिन्ता भीर चिता की तुलना में जिल्ला समिक असकर है। जिला निर्जीव शरीर को जलाती है भीर चिन्ता सजीव शरीरको जलाती है। जिल्ला मनुष्य को एसे ला जाती है जैसे चुन अकड़ी को सदर म व्यात्रानाहै। चिन्धाद्यरीरका नाम कर जाती है। उसम हृदय की वीमारिया. रक्तवाप हो जाता है। ग्रन विन्ताको धारना चाहिए । विला चरित्र और स्वभाव पर प्रभाव डालती है। मुक्ते एक ब्रद्ध की कथा का स्मरल हो बाता है। वे पे ान न रहं छ। उन्हें पशन लते सेते उससे भ प्रथिक समय हो गया था जितने वर्ष उन्होने वास्तविक नौकरी की बी। अम लोग शक्सर उनके विवय में चर्चा करत रहते वे कि यमराब के दरबार मे उनके कायज गायक हो यए हैं। इस सम्बी

बाबु वे भी व सदाप्रसम्म धौर बुख न**जर** बाते थे। एक बार एसा हुआ कि जब वे अपनी पेंशन लेने ट्रेजरी में बए ती ट्रेजरी के पेंशन देने वाले बाबू ने कहा बाबू जी, धापका पेशन का कामज इसर उसर हो गया है, मिल नहीं रहा। प्रगत महीने बोनों महीनो की ल लीजिएमा। बाबू बी, मुस्कराते हुए वसे भाए। ऐसी घटना वो-तीन महीने लगातार हुई पर उन्हें तब भी कोई जिल्ला स हुई । एक बार उनका कागव मिल वया। बाबू ने उनसे क्षमा-याचनाकी भीर उन्हें पेंशन दन लगा। वे बडे जोर से हसे। सभी उनकी हसी की आवाज सुनकर उधर देखने लगे। एक ने ऐसे हसने का कारस पूछा । बाबू जी गोने मैं तो समऋता वाकि मेरा वहां का (यमलोक का) ही कागज गायब हो गया है पर मनीनों में पताचला कि यहाका भी गायब हो सकता है। उन्होंने धपनी प्रसन्नता का कारण और दीर्घायू-व्य का कारण जिल्ला न करना और प्रसम्न रहना बताया । उन्होंने यह सी

(क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

# **★** दयानन्द

हुंभने लोंगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर सांगतों को भ्राकांचित करना है। यदि वे ग्रत्याचार भी करे तो भ्रपने उदात्त उद्देश्य को हिस्ट में रखकर हमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वया भ्रमह है। बचनामृत 🛨

हमारे उपदेश माज विरेषक मौषि की भाति धवराहट श्रवस्य लाते है। परन्तु है वे जातीय शरीर के सशोधक और श्रारोग्यप्रद, वर्तमान भार्य सन्तान चाहे जो हमे कहे। 

□

सम्पादकीय

# आर्थ सन्देश

पंजाब समस्या

# उचित बातावरण की प्रतीक्षा

तरकार ने पजाब समस्या के समाधान के लिए लॉगोवाल एव तलवड़ी के साथ छ बड प्रकालों नेता रिद्धा कर सदमावनापूर्ण कदन उठाया है। यह फेसला औं राजीव गाधी के इन वयान के आधार पर लिया कि तरकार पंडाब समस्या को जल्दी से जल्बी हम करने के लिए सही मोहौल बनाएंगी।

बुह्मभी नी एंस-बीं न चंदारा ने श्रेस काम्प्रेंस में स्पष्ट किया कि ब्राइशर बूर तरह की धार्तकवादी नतिविधियों से सकती से निपटेगी। आतुम बींच क्येंस्पा की स्थित की दियर रखने को बचोंच्य प्राविभकतो होंगी धींच ब्रम्बादियी, राष्ट्रियोची व समाजीवरोषी तत्त्वों के सिलाफ कवी को देशोंई की बांएगी। उन्होंने यह भी कहा है धार संस्थान दुखा ती सरकार संसद के बेचट अधिवेदन में ही एक विधिक पेश करेगी, जिसके राष्ट्रियरोची वर्ति-विधियों को बडांची देन गेल धाप्रवासी बारतीयों की सम्मत्ति बन्त करने का प्रावधान होगा।

श्री राजीव गांधी पंजाब समस्या का जल्दी से जल्दी समाधान चाहते हैं। सरकार सही माहौल बनाने का प्रयत्न भी कर रही है परन्त श्रकासी बिस प्रकार जानन्यपुर साहब प्रस्ताव को मुख्य मुहा बनाकर चल रहे हैं तथा बलगाववाद को बढावा दे रहे हैं, ऐसे शासावरण में समझीते के शासार नबर मही बार्ब । बकाली दल पदने मोर्च की बीर जी संसक्त करने के लिए सभी सिलादलों को एक जुद्द करने के प्रयत्न में लगे हैं। इस समय विचाद किया था रहा है लीगोवाल अकाली दल, तलवडी अकासी दल, स्त्री प्रकाली इस, मास्टरतारासिंह अकाली दल, यूथ विंग धकाला दल और माल इच्डिया सिल स्टूडेंक्ट्स फेंडरेशन को एक मञ्च पर लाया जाये। सभी क्रकाली दलों का नाम अल्म कर एक नाम शिरोमिए स्रकाली दल रखा काबे। यथ विग प्रकाली दल की जगह जाल इण्डिया स्ट्रडेक्ट्स फ्रेंडरेशन अकाली दल के हरावल दस्ते का काम करे। सभी सिख वार्मिक सगठनी बिरोमिए। गुरुद्वारा श्रवन्थक कमेटी के घेरे में लागे जागे। इन सगठनों ने भिरुरावाला सम्प्रदाय, शलक्ड कीर्तनी जत्था, निर्मल सम्प्रदाय तथा निहग सगठन हैं। इस सारे काम को सिरे बढाने के लिए सिंह साहेबान को मधिकार दिये जाने की सम्भावनाएँ हैं। सिंह साहेबान जो हुक्मनामा जारी करने वह सभी को मान्य होना।

धानल्यपुर साहब प्रस्ताव का प्रांचप जल्बेदार टोहरा के कहने पर सरदार कपूर्तिहु भाईक्ष्मीच्याच्य (सेवायुक्त) ने तंवाग किया वा। वाद में धानल्यपुर प्रस्ताव को धन्तिम रूप देने के लिए सकाली नेताओं की कमेटी बनाई गई थी। उसने बहुमत जल्बेदार टोहरा की विचारधारा वाले तदस्यों का था। इस प्रस्ताव का सबसे स्विक राजनितिक लाग जल्बेदार गुरवरण टोहरा को हुआ जिसके कारण वह माज तक पूर्ववत् शिरोसिण गुरुवारा प्रवाचक कमेटी के प्रधान चसे धा रहे हैं। इस प्रस्ताव के प्राव्य को बताती इस्य लिखा है— 'सिंधा विश्व पथक ग्राजाद इस्ती दा एहसास कायम रखना है ग्रन्ये भजेहा देश, काल घडना जिस विच सिख पथ दे कौमी जजवे तथा कौमियत दा प्रगटावा पूरन तौर ते कुदरती तरीके नाल प्रफुल्लित हो सके।''

इस प्रदेनाव के साथ प्रतग-धलग घटको द्वारा प्रनेक प्रसम्भव माग उठाई जाती रही। पिखले मालो में पजाब के हरे मरे प्रदेा में जिस प्रकार जून को बारे बहाई जाती रही यह सब धलगाववाद की उन्मादी विचार-भारा के कारण ही बहाई गई।

श्व देशना यह है कि जिस एकता भीर अलण्डता का नारा देकर श्री राजीव गांची सत्तास्त्र हुए हैं, जिस एकता भीर भीर स्वच्छता का ज्होंने जनता जनादंन को श्रह्मास विलाया है, जस स्वता और कटारता का ज्होंने भी भ्रपनाए एस सकरों या नहीं। हमारे नीति प्रयोग में साम, दाम, दण्ड भीर भेद—चारो प्रकार में से जिस से काम निकल सके अपनाने के लिए कहा गया है। सबसे उचित तो सीची उगली से ची निकल जाने यही अच्छा है भग्या गया है। सबसे उचित तो सीची उगली से ची निकल जाने यही अच्छा है सम्बाद देशी करनी पहती ही है। लोक कहावतों में कहा गया है—राज कारी गरम की, कुकनबारी मरस की। दुकनवार प्रच्छा नह को ज्यादा महुर प्रीतिकारक व्यवहार करे। राजा भच्छा वह है जो अपने कानून के पालन के सिए कठीरता अपना सके। गृहसन्त्री ने जैसे कहा है उपवादी तथा अराष्ट्रीय तत्वा से सक्ती से निपटा जायेगा—सह उनकी धोषए। अजिनलतीय है।

—यद्मपाल सुषाञ्च

### प्रतिक्रिया

सम्पादक सुचासु जी !

श्रीपका सम्पादन पढकर हुई हुछ।। जाप ने बनता के रूप में तो चाक जमाई ही है देखना यह है कि सम्पादन के जीव में नहां तक चाक चनावे हैं।

कविवर मनीवी के सम्पादन के बाद से आर्थक्न्देश का स्तर पिछड़ गया था। श्रम बहुत कुछ माशाएँ जंगी हैं। नेरी भीर से शुजकामवाएँ।

-- बमंदेव बक्रवर्ती १६ माडल रस्ती विस्ती

यार्वकलेख के बाप द्वारा सम्मादित लगका सभी र्यक परे। यह कर सन वहुत प्रकल हुया। सभी वको के तेल हेरणादायक एव पिकाप्रव थे। ३ साल का सन्मादकीय 'प्रकृति का यहाँखव' बी द्वांची और सक्ता दोनों के उत्तव पर नाशित्य को कावापर कर रहा वा, बेहद पत्रन्य साथा। ऐतिहासिक विकास्य सम्मायी नेल नवीन सोव प्रस्तुत करता है। यस की प्रवक्ति पर हार्विक वचाई। —सुसीस कुमार सार० ६-६ म्यू राजेग्र नगर मई दिस्सी

बार्यसम्बेश'की प्रति निरन्तर मिल रही है। इस क्रुपा के लिए धापका हृदय

१० फरवरी १६०६ के सक में सुरेखनन वेदालकार हारा लिखी गई उनित सराहतीय है। खन्माचकीय, सहाव दवानन्य सदाब्दी समारोह सम्पन्न एवं अन्य समाचार बहुत ही बहुन व उपयोगी बानकारी देने वाले है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में झापका बहुत ही गौरवशाली स्थान है। झाप निरत्तर

प्रयक्ति के पच पर बढते रहे, यही मेरी हार्विक मगलकामना है। अपनी कृपा सहयोग व सद्भावना निरन्तर बनाये रिक्तयेगा।

> —स्थामसुन्दर सर्मा सम्पादक पालिका समाचार

बाप जैसे सुनोध्य मनीथी विचारक युवा विद्वान के द्वारा प्रव प्राय सन्वेद्ध में विष्यता बाती है। बावकी पवित्र कर्मेट्या एवं सुनश्चित सम्पादन कला से 'धार्य सन्वेद्ध 'निरन्तर निवरता रहे यही सुनकामना है।

---प्राचार्य रवीन्द्र ग्रावेय

जनरीरवर की इस कलापूर्ण सुष्टि में मानव मीन के लिए वर्षत्तम और मली-के के ने है वाएँगे! जिसके डारा मानव भर्म हुदययत विचारों को माकार क्य वेता है। यदि मानव को वाएँग प्रदान न को गई होती तो मानव भी पत्नुष्मों की तरह प्रपने साम्तरिक विचारों को क्यान न कर पाता। इसकी जानकारी के लिए पूर्ण नो देला जा सकता है जो कि वेचारे प्रपने विचार भी सकतो डारा ही प्रकट कर पाते है। पत्नु पक्षी और वाएँगी-विद्यान को देलकर ही मानव ने पुकार की है —

### वाक् म धास्येऽस्तु ।

अर्थात् "में आस्ये वाक् अस्तु' मेरे मुद्द में बोलने की शक्ति बनी रहे। वासी हो और बोलने की शक्ति-वाक समित न हो तो वासी कान होना बरावर ही है। भैद ने तो —

पावका न सरस्वती वाजेमिव विनीवती। यस बध्दु विवा बसु ॥

(ऋ०१।सू०३।१०)

इस मन्त्र से बारिएयों का वर्त्तन किया गया है। वे पावका च्यातिक करने वाले क्यवहारों को व्यातन वाली, सरस्वती चन्नप्रसमित कीर सब उत्तम विचाइयों की प्रदानों, वाजिनीवती चिवाइयों से सिद्ध की हुई कियाओं से युक्त वास्त्री को प्राप्त करों। साब ही वेद प्राप्ता ने कहा— चोवियाओं सुन्तानां चैतन्त्री सुनतीनाम्। यस बचे सरस्वती।।

(ऋ०१।३।११)

(350 6 1 65 1 5)

हळा — वो कि पठन पाठन की प्रेरखा की नाली सरस्वरी — वो उपरेश क्रमान का प्रकाश करने और मही क्रमा सब प्रकार के प्रकाश करने योग्य है वे तीनो वाएंगे कुतर्क से खण्डन करने योग्य नहीं हैं तथा सब सुख के किए सीनो प्रकार की वाणी सदैव स्वीकार करनी चाहिए, जिम म निक्चनता से प्रविद्या का नाश हों।

### चतुष्याव गौ

गो का अप बाणी भी है। यह 'वाक् चतुष्पाद अर्थात् चार पांव वाली है। बाक् चत्वारि पदानि परिमिता।'

नामि, उर झीर कच्छ में तीन पहन तो गुप्त है भीर को चतुर्य पाद है वह व्यक्त है। इस प्रकार ये वाशों के चार पाद है। इन चार पाद कार्य, स्वानों के यह वाशो उत्यन्त होती है। परम्यु इन वाणी के स्वानों को साधारशा सनुष्य

# वाणी

### लेखक प० सत्यपाल शास्त्री

जान नहीं सकते, इन्हें योगी सोग ही ज्यान बारणा से जान सकते हैं।

मनीवित्व बाह्यत्वा विदु ।

जानी बहा को जानने वाले ही इस बात को जान सकते हैं। धयवंदेय ने तो भादेश दिया है कि—

> कर्षा समुसती वाक्। समुसती वाचय उदेवस्। सण्डल २। काण्ड १६। स०१, २।

बाणी मीठी हो सौर बलशासिनी हो। सनुष्य मीठी धौर बलयुक्त बाबी से सापस में बातचीत करें।

हतनी बाहरणक बस्तु भी जह पर-मेरबर ने बिना माने प्रदान की हैं। बहु जबको कितनो बड़ी दवा है। इसे प्राप्त करके गदि बस्तुकूल जपनोग न कर पाये तो कहीं ऐसा न हो कि निश्व विशास धरनी व्यवस्था के धस्तर्गत हम से इस परक देन वाणी का सम्बन्ध विक्लेक्ट कर हैं और परिणामत हम गूँवे की भारित धाल, नाक सौर हाव साथि के सकेत करते दिलाई यें

वास्ती का उपयोग किया और कर्कशा वास्ती के रूप में, को क्या जला ककशा-वास्ती का समार में कोई पूर्य द्वीला है? वास्ती की सार्यकता तो मसुर- मानी रहने में हैं। किन्युहम इसे स्वीकार क्योंकर =7?

देकिये । उस शिशु के जीवन पर दिकार कीजिये जो मनी-मनी सतार में माजा है। ससार में माने पर उसका सर्वप्रमा सरकार नहींन ट्यानन्द जी महाराज ने जातकम तिका है। उससे एक जिमें हैं कि जब बालक उस्तान हो उसकी वाणी पर सीने की शताका से शहर में हुनीकर, भीश्म सिक्सा जाते।

इस प्रकार की विवि का बाशय क्या है ? इस पर बोडा सा विचारना मान-श्यक है। सोने की शकाका से ही वर्षों लिखा जाये ? किसी धन्य बातु की सहा-यता से क्यों न शिला जाये ? यत चातुची वे सोना सब से प्रविक मुख्यवान् है । साथ ही सौन्दर्य में कमान है । चमक सब से निराली है, जो चमक सदैव उसके साथ रहती है। यहा बाबक पर सस्कार डाला जारहा है कि स्वर्ण के सारे नुणो का बालक में समावैश कर दिया जाये। बालक की वाशी से निकलने वाला एक-एक शब्द स्वर्ण की भाति चमकता हुवा, सौन्दर्य से परिपूर्ण होकर मूल्यवान् निकले। सनिज विद्या विशेषको की राय है कि "सोना पहिनने, लाने बादि से कैसर नहीं होता है। वत इस मातुका विवान ऋषियों

ने स्वसाहै।

फ्रिंस्य धावस्यकता पढी कि शहद में ही भिगोकर किसा आये ? किसी पाग धयवा चीनी, गुड, धीरा धादि से जिसा जा सकताया। किन्तु ऐसा मही किसा गया।

बस्तुत चीनी, बुड-पान प्रादि वितनी भी मिठाइया हैं ये सब की सब एक एक एक वनस्पति का सार है भीर कारए। का नाश करके बन पाती हैं किन्तु शहर फूल को नष्ट करके नहीं निकलता श्रपितु फूल भी सुरक्तित रहता है भीर शहद भी बनता है। शहर में सभी वनस्पतियों का सार, मधुमक्षिकाची ने एकत्रित किया होता है। फिर वसत जैसी ऋतुका शहद तो और भी बाधिक बनस्पतियों के रस से समुक्त होता है। साथ ही शहद की खारिवकता भी निरानी है। परिशामत बालक जब बोने तो शहद की भाति मधुर-वाषी हो। सस्कृत ने शहद को "मधु कहते हैं। प्रत बालक जब से बोलना सीचे तभी से सोने की मौति मुस्यवान् और शहद की मौति मीठा ही बोले। इसमें बाणी की उपयो-गिता है। रही बात बाशी पर धो ३म् लिकाने की। यह भी रहस्य की बाता है साहित्व ने धन्य धनेक सब्द भरे पडे है उनमें से चाहे विश्वे शिक्ष लेवें ?

वेद ने इसका उत्तर दिया-

# बो ३स् प्रतिष्ठ

सर्वात् 'स्रो३म्' का ही प्रतिकात करो। सम्य किसी शन्द का नही। क्योंकि स्रो३म् को वेद ने—

# 'सो ३स् स अहा'

कहरू पुकारा है धर्मात् ''धोश्नू' सबस्थापक भौर सब स महान् है। साथ ही सानव जीवन के प्रारम्भिक समय से लेकर जीवन के धरसान पर्यन्त वेव ने एक मान्न साधन 'धोश्नू' को ही बताया । भौर कहा—

### 'धोर्य कतो स्पर'

हे जती । कर्यशीस नागव । तू सपने स्रीवन यर "सोशेश्र" का स्वरूप कर। इस तब का समित्राय है कि सीवन पर तू सारित्यक बना खा। बीवन की कडिन से कठिमतन विद्योग में मी ईनवर-विस्वास बनाये रसा। इंग्वर-विश्वात ते ही सार्थ-विश्वात उत्पन्न होता है। इसी का माम स्वावियान है। इसी से मानव स्वश्ती पर पूर्वाता है।

यह वातकर्म सस्कार जहां बाबक के निए बीवनीपयोगी है, वहां विसेच-रुपेण इस सरस्वती देवी कस्याशी वेद-वाणी को महसा प्रवान करने बाका है.1

बार विकथा कि वालक की वाणी से निक्काने नाका एक-एक शक्त है कर के निक्कान और आस्वा प्रतिष्ठित करते हुए स्वयं की मारि प्रत्यवान और मधु की मारि मधुमय हो। तभी तो मानव आस्थ-विक्वान के आबार पर प्रमु के सामने स्थान के प्रस्तुत करता हुआ, उनासक के क्य में कहता है—

### 'बाबा बदानि सबुमत्'

परमेश्वर ! मैं बब भी मुँह सोलू सो मणु की मांति मीठा ही बोले । वाणी का बागुर्ये वेषानों को धपना बना लेता है । धपनों को वेषाना बना देती है वाली की कर्केशता, क्खापन और निष्ठुरमाविता।

इसी भाव को संकर बेद ने कहा---

'ऋष वाब प्रपत्ने'

वेद कहता है कि वासी को ऋषा बनालो---

एक कवि ने इसी भाव को सिसा---

बनोने बुसदबे-श्रवशी में दिसहोरी बुबा होकर। जहाबीरी करेगी ये भदा नूरेजहां होकर।।

ममुरता वाणी का सत् प्रयोग है। वाणी क्या वन बाये। वाणी की कडेंबात बीर कटुवा से महा भयकर परिशास निकसते देखे गये हैं धीर वाशी के माधुर्वे से बडे से बडे विरोधियों को पिपकते वेजा गया है। जिसका इतिहास साली है। वानकारी के लिए भारत का इतिहास पढ बाहये। जिसके झापको सनेक जवा-हरण इस प्रकार के निक्त बायेंगे।

सन्तो की सुक्तियां जूरवीरों के उद-बोचन, समरांगण की समकारें, कवियों की कविसाएं और माकी सोरियां भावि के विभिन्न रूपों में प्रमुक्त वासी राष्ट्र की उम्मति का कारण बनती है इसके सत्प्रयोग से जहाँ राष्ट्र उन्नति की चरम-सीमा पर पहुँच जाते हैं, बहुा बसत्प्रयोग से प्रवनति की पराकाष्ठा करके ही दम लेते हैं। वैदिक वैजयन्ती कन्धी पर रख यूरोप के श्रम्बकारमय बातावरण में श्रमक बवाने वाले पुजरूत्य, ज्यास और नारद भावि ऋषियों ने विस भारत की वयद-शुरु के स्वाम पर पहचावा वा, महर्षि नीतम, कपिस, कखादादि ने बहाँ बैठकर बात्मा परमात्मा के गुप्त रहस्यो का उद्घाटन किया था, उसी पावन मूमि मे वाणी के कुपयोग से लका और कुस्क्षेत्र के महामयकर युद्ध जी हुए। शताब्दियो तक, सहस्राध्यिमों तक भी उनके वाब न भरे का सके। महारानी कैकेबी के वचनों की कीमत महाराजा दशरव को ही नहीं, पीढियो तक को चुकामी पड़ी।

वर्तमान विस्त्ती, पूर्व नाम इन्द्रप्रस्य, वें निर्मित पाष्यवों के बामस्कारिक राज-प्रसाद के फरोड़े में बैठी हुई द्वीपदी ने भूव के ''श्रमों के प्रस्थे ही होठे हैं'' विष् यास्त्र नहीं कहे होंगे तो सायद सम्भव है

पाटकगण । लोहे का सगा तीर निकल सकता है परन्तु वाणी का बाण जीवन मर कसकता रहता है। प्रताप भीर मानसिंह पृथ्वीराज और जमजन्द के इतिहास झभी पुराने नहीं पडे हैं। परि-श्रामत मानसिंह ग्रीर जयवस्य परायो से बिलक्र परका सत्यानाश करा बैठ।

पानीपत की तीमरी लडाई में भोसला बदा के मराठी ने भरतपुर के राजा सुरजमल धौर इन्दौर के महाराज होल्कर को वाणी के बाणों स घायल न किया होता तो व क्यो वापिस रातो रात घर सीट जाते ? इन महा भयकर परि**गा**मी को देलकर ही मानव पुकार कर कहता है कि---

### 'जिह्नामूले मदूलकम्

प्रभो ! मेरी वाणी में मधु भर दो । इसे मधुमय करदो। मधुमयी वाणी ही बास क्षीर की की जनगी है। यत सतपय ब्राह्मरण ने वाणी का कामचेनु कहा है।

### वान्धं कामधेनु

बाणी सफल कामनाम्रो की पूर्ति की साबिका है। कोई भी काय ससार मे ऐसानहीं जो मीठी वासी से पूरा न हो सके। कहा है कि-

कागा काको वन हरे कोवल काको देय । एक बिह्ना के कारखे, बन अपुनो कर लेग।।

महण्यना माचार्य प्रवर चास्त्रक महाराज ने अपने शास्त्र मे राबदूत का विशेष सक्षण मृदुभाषी होना माना है। पाण्डवी ने योगेरवर श्री कृष्णुचन्द्र सहा-राव को सम्भव है इसीलिए धवना प्रति-निधि बनाया हो। प्रिय जावा ये कहे नये बाक्य विरोधी पर भी सपना प्रभाव किये विना नही रहते। अप्रिय सस्य भी होना तो नले से नीचे नहीं उतर पायेगा। अत यत ब्यास जी ने कहा-

> सत्य बुवात् प्रिय बुवात् न बुबाद् सत्यम प्रियम्।

प्रियवाणी से कहा बया दोष भी मानव सुवमता से स्वीकार कर लेता है महाकवि तुलसी ने मीठी वास्ती को ही वश्चीकरण मन्त्र कहा है-

वज्ञीकरसा एक मन्त्र है तकि वे उचन कठोर साथ ही रहीम ने जूते साने का

सस्ता नुस्का लिका-विद्वा कह जीतर नई जूते सात क्यास ।

ससार में हम देखते हैं कि शनेक मनुष्य अत्यत ही कटुनावी होते हैं। बनकी कर्कशा वास्त्री के कारण वात की बात में लड़ाई हो जाती है। ऐसे कठोर-भाषी सोगों के लिए वेद के माधुर्य की एक कवि ने यो प्रकट किया---

**बुबरत को नापसन्य है सक्ती बयान में** । इससे नहीं लगाई है हडडी जवान में ।।

व्यत वाणी को ग्रत्यन्त सरस धीर मधुर रक्ता वाये । बुद्ध से विमुख के निम्न शब्दों ने मैदान में लाकर सड़ा

सुवित क्षत्रिया पार्थं! युद्धमीहशम् ।

वेद की भाषा मं यू कहा जा सकला है — मैत पन्यामश्रुवा भीम एव ।

एक साधारण से सकदहारे को वाणी की बोट ने महाकवि कालिदास बना दिया। जिस का सस्कृत साहित्य मे एक ही स्थान है। वास्तीके इक हाबाण ने प्रेम मे प्रमत्त नवयुवक को सन्त तुलसीवास बनाकर छोडा। बात हा तो थी सब गई। देश जारत को दो भाषापी के हीरे जिल गये दो महाकवियो के रूप मे।

वीरमूमि राजस्थान के तो कण कण मे ने इकारें धीर ललकारें बाज मी सुनाई देती हैं कि-

उचान ते पुरुष । नावबानम्

जब शुरवीर चढावत पत्नी के प्रेम-पाश में बच्चे कह उठे कि-नाह युद्धे गमिष्यामि युद्धन कि त्रयोजनम् । इस निवस घोर कायर पुरुषो जैसी वाणी को सुनकरक्षत्राणी सवल उठी धौर अपने पति को बद की भाषा में बोली---

कृत ने दक्षिएं। हस्ते जयो ने सन्य ब्राहित । राजपूतल नाथ ! बाब ते नित पदारो रख नाहि। तलबार बताको ह बास्यू वे चूडि पहिन सो वर नाहि।। क्षत्राणी की इस स्वामिमान बरी

जापान बुबावत को फिन्छोड सा दिवा भीर साथ ही बीवा हाव तनवार की मृठपर चापडा। वस फिर क्या वा कुपित अतिब कुमार शत्रु की मौत बनकर टूट पडा। वाणी का प्रभाव सूर्यं बनकर चमका। जयपुर के महाराज जयसिंह को महाकवि बिहारी की मीठी बोट-

झली कली ते ही विष्यो

रास्ते पर ने भाई। जिससे व्यसिष्ठ की कमान सीची हो गई। मूचरा सीर चन्दवरदाई ने खिवा जी भीर पृथ्वीराज को कभी भी दुवेल नही होने दिया। 🖈 पता - वेद सदन ककर लेखा मेरठ।

# वार्षिक निर्वाचन

धार्यसमात्र पूरनपुर का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २७२ ६५ मे विभिन्त सम्पन्न हुषा । विश्वमे निम्न पदाविकारी सर्वं सम्मति से चुने गये।

प्रधान--श्री तुलसीराम प्रायं -की जय जयराम प्रायं

श्री बहा॰ सियाराम बावं मत्री--श्री सुललाल धार्य उपमत्री -बी बितेन्द्र कुमार धार्व

थी केशक्दल खार्य कोवाच्यक्ष--श्री विजय कुमार वार्य पुस्तकाच्यक--वी द्वारिकात्रसाद गार्थ सूचना एव प्रसार मत्री-

बा॰ चनवान सिंह बार्व

# हिन्दी बोली 'आई' से

रचयिता-मुरेन्द्रकुमार शास्त्री

हिन्दी बोली बाई म तूबाई मैं छली मई। मेरे कारण त् बाई थी तू बाई मैं चली गई। मैंने तुम्कको बोट दिलाय तूने मरी बाली बोली। जब बार्द बारी ससद मे, तूने निज बोली बदली।

> तु पत्नी स्वदेशी बोली म. पर शपथ विदशा मे क्यो ली ' उपकार मेरे सब मूल गई क्या हथा तुमे वतला पगली? यदिऐसागतिविधि रहीतेरी क्या बस्शनी अनता अगला? मेरे ही दुकड़ी पर पलत मेरा ही चार हरण करती।

मैं बनीराष्ट्र की जब भाषा नेरा भवमानन करता लकर के रूपच विदेशी मं सम्मान तुमे मिल पायगा? कोई पैदा होगा रूसी जा तुम्कको सबक सिस्रायमा। विजयासक्सी पहित का जो तुम को बाद दिलायगा।

> को आई । इस कलाव्य ने देवो नहि दोष अवला तेरा है। बच्छे बच्छे सिंहो को भी इसी दाय न चेराहै। रसते हैं नाम दमकिया जो, व भी तो मुक्त को मूल क्या। टी० वी० पर राप्ट प्रसारण में प्रग्रजी वे भी बोल गय।

हिन्दी हित दावा करते जो हिन्दी पर घाना बोल गये। रासी पर जाज यह बालड'न सस्कृत मे जिनकी शपय हुई। अभी नारायसा की कृपाहुई,सम्कृत म सह भ सपय हुई । बलराम नारायण मिल करकेहिन्दी की नैया पार कर।

> राजीव सिवैया नैय्या के उनसे मिशकर सुविचार करें। अब समय है समा विवानी का, उनमे हिन्दी में शपव बले। बदर्ने सब भी सपने पथ को, सब तक जो यह कृपय चल।

# फार्म ४ नियम ८ के ग्रतगंत

# श्रार्यभन्देश साप्ताहिक की घोषणा

प्रकाशन स्थान नई दिल्ली प्रकाशन ग्रवधि साप्नाहिक मुद्रक का नाम डा० धर्मपाल (क्या भारत का नागरिक है?) भारतीय (यदि विदेशी है तो मूल देश)

प्रकाशक का नाम (क्या भारत का नागरिक है?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)

सम्पादक का नाम (क्या भारत का नागरिक है ?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से प्रविक १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली। के साभेदार या हिस्सेदार हो।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली।

दिल्ली मार्य प्रतिनिधि सभा.

दिल्ली घार्य प्रतिनिधि सभा.

१५-हनुमान रोड, नई दिल्ली।

डा० घर्मपाल

यशपाल सुवाशु

मारतीय

भारतीय

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली।

दिल्ली ग्रायं प्रतिनिधि समा.

मैं डा॰ धर्मपाल एतदद्वारा घोषित करता है कि मेरी ग्रिषकतम कानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

> डा० धर्मपाल प्रकाशक के हस्ताक्षर

विनाक १७ मार्च १६८५

परम पिता परमात्मा ने श्वन्ती इस विपाल मृदिर में जीवों के कल्यास के लिए नाना ऐसे पदाथ उत्पन्न किय है कि जिनके बिना जीवन की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। वयु भीर जल उनम स सबप्रमुख है। इन दोनो के बिना जीवन की कस्पना की ही नही जा सकती। किंतुद्रनाय यह हे कि यही दोनो झाज सर्वाधिक दूषित हो रहे हैं। यह प्रदूपण ईंग्बर प्रदत्त नहीं मानव निर्मित है। हम उनम प्राणप्रद वायु को निरन्तर स्वास प्रश्वाम द्वारा दूषित करते रहते हैं। किंतु यह तो जीवन की श्रनिवाय श्रावश्यकता है। साम लिये बिना प्राणी जे बित नही रह सकता। यत श्वास-प्रव्वास द्वारा बायुके प्रदूषण को राका नहीं जा सकता। दूल भौर भारपय तो इस बात के लिए है कि जो मानव बिना किसी सनिवार्य धावध्यकता के वायु को दूषित करता रहता है-वह है धूजपान के द्वारा वायू प्रदूषरा । घुम्रपान स होने वाला वायु प्रदूषरण देखन में बढ़ा नगण्य सा लगता है किंतु यदि सामूहिक रूप से इस प्रदूषशा का भक्तन किया जाये तो सृष्टि मे प्रदूषए। कासबसे बढा कारए। सिद्ध हो सकता है। बुज्रपान से होने वाली व्यक्ति-गत हानिया एव रोग तो होते ही हैं, प्रदूषण भी चत्यधिक होता है।

माज मानव ने जिस प्रकार की भी चानिक सभ्यताका विकास कर रखा है, उसम प्रदूपण दिन प्रतिदिन बढ रहा है। भौर स्थिति इस विस्फोरक स्थिति को पहुँच चुकी है कि यदि इसे तुरन्त न रोका गया तो जायद हम पीन क लिए स्वच्छ जल भीर सास लने के लिए स्वच्छ प्राणप्रद वायु भी उपलब्ध न हो सके। कल कारलानो से उठने वाला बुधा तथा भन्य प्राणनातक मैसें तथा इजनो भौर मोटरो स निक्लाने व लाधू था वायू को द्यत्यिक मात्रामे दूषित कर दता है। इसकी कल्पना हम इसी बात से कर सकते है कि समरिका सादि में बड़े-बड़े महा-नगरो क बड बडे चौराही पर ट्रैफिक पुलिस वे मि ही को सास केन के लिए ग्राक्य जन का सिलण्डर ग्रपने कल्बे पर उठा उसना पहता है। धन्यवा मीनरी के घूए संउन्सास लेनाभी दुश्वार हो सक्ता है। यनी हाल ही म भोगाल मे घटी भय र र गैस दुर्बटना कितनी भयावह थी कि जिस ना कोई कल्पना भी नहीं नहीं कर सहत । ये सब बीदाेगिक सम्यता के ही ता मिश्याय हैं।

फर्का ८४ के दूसरे सप्ताह से चण्डीगढ मे प्रदूपला विषयक सेमिनार मे पढे गय शोध तत्र प्रदूषण को मुह बोलती तसीर है। साम प्रदेश कौंसिल संक साइम ए ड टेक्नोस्रोबी के सचिव तथा विक्रम विविधासम उज्जीन की बन-साति शास्त्र की झब्ययनशाला के प्रमुख डा० प्रेमण∓र दुवे का एतद् विषयक वनतव्य भी कोइ कम चौंकाने वासा नही।

# प्रदूषण-समस्या और समाधान

# लेखक यशपाल भार्यबद्ध,

डा॰ दुवे के अनुसार सारणी ताप विजली घर से प्रतिदिन उडन बाली एक हुजार टन कोयले की राखतया सल्फर बाक्याइड गैस घास पास के क्नो के लिए खतरा पैदा किये हुए हैं। स्थिति की यम्भीरता इसी से बाकी जासकती है। इस पर भी हु स इस बात का है प्रदूषमा से होने वासी हानियों से हम आसें नदे बैठे हैं। किन्त भारते मुद लेने से खतरा दल नहीं जाता। लगता है भोपाल की घटना को शोग भूल से बये हैं। क्यों कि मरने बाले तो वेषारे मर गये। जिन की सार्वें गईंसी तो चली ही गईं। जिन्हे पक्षाचात हो गया, वे बेचारे उसे भोग ही रहे हैं। ये सब तो हो चुके। अब किसे चिन्ता है कि इस से भविष्य में कुछ सौर भी हानि हो सकती है।

वायुमण्डल में जो गदगी मानव निर-न्तर प्रक्षिप्त किये जा रहा है वह वर्षा मादि के द्वारा पृथ्वी वर लौट माती है। इससे नदियों का जल ही नहीं भपितु पृथ्वी के भीतर काजल भी कु**छ** सक्ष तक दूषित हो जाता है। फिर कीटनाशक पदार्थों के नाम पर क्रितना विव हम पृथ्वी पर फीक रहे हैं इसकी बीन कल्पना कर सकताहै <sup>?</sup> विश्वानत जल तथा वायु से पेड पौध भी विवास्त होते जले जा रहे हैं। किसना विष हमारे भीतर पहुच रहा है इसका अनुमान लवाने मात्र से ही हृदय काप उठता है। यह भीर बात है कि विष का प्रभाव हमे तत्काला दिखाई न देक्यों कि वह बीरे धीरे पिसाया जा रहा है भीर हम भी उसके भ्रम्यासी होते **व**ने जारहे हैं पर ऐसानहीं कि इसका दुष्प्रभावन हो। वैज्ञानिको का कथन है कि इस विषमय वातावरण का प्रभाव जीन्स (प्रजनन प्रसाधी) पर सर्वाधिक होता है। इस कारख भाने वाली पीढी त्मारी तुलनामे **इ**ससे श्रविक प्रमावित होगी। भावी सतति के निर्वल क्षीणकाम भौर विकलाग होने की सम्भावनाए दिनो दिन वदती जा रही है। वैज्ञानिक निर-न्तर चेतावनी वे रहे हैं कि यदि प्रदूषण की यही गति रही तो पृथ्वी का सम्पूर्ण बीवन गम्भीर सकट में पड सकता है। मुस्लिम विश्वविद्यासय प्रसीमढ के मेडि-कल कालेज के शरीर रचनाशास्त्र विभाग के भव्यक्ष डा० मेहदी हसन का सत है कि वृद्धावस्था मे जिस प्रकार स्मरण शक्तिका हास हो जाता है, उसका कारण एक प्रकर के पिशमेट्स होते हैं जो कि वृद्धावस्था में मस्तिक में तेबी से बनने लगते हैं। इन पिगमेड्स रे कारण

स्मरणशक्ति इस प्रकार की हो आती है

कि बीस साम पहले की बाते तो याद माने लक्ती हैं किन्तु दो दिन पूर्व की षटनाए विस्मृत होने सन बाती है। डा० मेहदी इसन ने बेलावनी दी है कि यदि प्रदूषण इसी प्रकार बढता रहा तो झाने वाले बास पञ्चीस वर्षों से यह स्थिति ही वायेगी कि किसी भी सबस्था के व्यक्ति में इस प्रकार के विवसेट्स मस्तिष्क में बनने लगेने धौर वह दो दिन पूर्व की घट-नामो को भूसने लगेगा । राजस्थान बोर्ड बाफ इण्डियन मेडिकल के बाध्यक बैदा श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाती ने वियतनाम की घटना से सिद्ध किया है कि प्रदूषण विक-लागता का कारण होता है। वह बात भोपाल की गैस दुर्वटना के सदर्भ मे भी सिद्ध हो चुकी है। यह विकसागता केवस महि-सामो के वर्तमान गर्मस्य बालको तक ही सीमित नही प्रियु माबी सतति के लिए भी हानिकारक हो सकती है। ऐसा वैज्ञा-निको का मत है।

वैज्ञानिको की इन चेतावनियों और प्रदूषराके दुष्प्रभावों को स्थान में रक्षते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने बिदव के सभी देशो के नाम एक धपील जारी की है जिसमे कहा गया है कि — 'धरती केवल एक है, यह चरती तथान्स पर उपलब्द पानी, हवा भीर दूसरे जीवनवारक तत्त्व यदि एक बार विवासत और भ्रष्ट हो वये तो दुवारा इनका निर्माण करने का सामध्ये ननुष्य का नहीं है। इसमिए इस प्रदूषण को रोकने के लिए यथासम्भव उपाय किया जाना चाहिए।' (देखें — लेखक की पुस्तक 'हवनयज्ञ की वैज्ञानिकता पर बाचार्यवागीस द्वारा सिकित भूमिका प्राप्ति स्थान प्रायंसमाज रेलवे हरवला कालोनी मुरादाबाड)

बाबार्य वागीश ठीक ही जिसते हैं कि 'सयुक्त राष्ट्रसम ने यह अपील तो जारी कर दी है किन्तुप्रदन यह है कि प्रदूषसा को रोकने का उपाय क्या है?" किर स्वय ही इसका उत्तर देते हुए सावार्य जी लिलते हैं कि — 'हमारा सुविदारित नत है कि चरिनहोत्र ही इस समस्या का एकमात्र समाधान है।" हुमारी भी यही मान्यता है कि इस समस्या का एकशाल समाधान प्रस्तिहोत्र ही है। हमने प्रपती पुस्तक हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता' से इसका विस्तार के साथ वर्णन विमा है। लेख का कलेवर हमे उन सबका यहां वर्तान करने की ग्रनुमति नहीं दे रहा। फिर भी इम यहा यह बता देना चाहते हैं कि प्रदूषरा की समस्या का ससार के पास एकनात्र नमाबार वृद्धि कोई है तो निश्चव ही यह अभिनहोत्र ही है। श्रापार्थ वासीस भागा का शहरा। श्रद्धत करना आक्रा हो।

जी के इस कथन से इस पूर्णतया सहसत हैं कि—' विश्व के तमाम वैद्यानिक मिल कर बहुत सोच विवार और ब्रमुसन्वान के बाद जो भी कोई उपाय सोचेंने। किसी न किसी रूप मे व्यक्ति के साथ प्रदूषण नाहाक पदार्थी का समीग अवस्य सम्मिलित करना पडेगा भीर इस तरह वह भरिनहोत्रका ही बदला हुन्ना रूप होगा ।' (देखें-मृभिका हवन-यज्ञ की वैज्ञानिकता)। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वतीका कदन है कि — ब्रह्माण्डमे समार करने वाला जो बायु है वही जीवन का हेतु है। प्रन्तर बायु द्वारा ठीक-ठीक व्यापार होने इसलिये बाहर का बह्माण्ड वायु गुढ रहना वाहिए। ब्रह्माण्ड वायु गुद्ध करने के लिए बक्र कुण्ड में चृत कस्तूरी केशरादि सुगधित पुष्टिकारक द्रव्यो का ह्रवन करना चाहिए।" (देखें--पूना प्रवचन---यज्ञ और संस्कार विषयक) नहींव बागे सिसते हैं कि-' सब कोई शका करे कि होस एक खोटी सी इति है इससे बह्याण्ड वायु कैसे शुद्ध होगी ? समुद्र मे एक चम्मच भर कस्त्री डालने से क्या सारा सनुद्र सुवित और सुद्ध होना<sup>?</sup> इसका समाधान यह है कि सी बड़े रायते मे थोडी सी ही बचार से रुचि आ जाती है, यह प्रत्यक्ष है। इसकी जैसी उत्पत्ति समक्री वाती है तद्वत् यह प्रकार भी है। कोई ऐसी सकाकरे कि होम तो यहाकरो धौर भनेरिकामे उसका परिणाम कैसे होगा<sup>?</sup> तो उसका समाधान यह है कि वायुद्वारा शुद्धि सर्वत्न फैले यह वायुका वर्ग है।" (पूना प्रवचन-वही) भीर वायु अपने वस का निर्वाह करता ही है। फिर अनिन से डाला हुआ। पदार्थ सूक्ष्म होक्क तुर्वको प्राप्त होता है चौर सूर्व अपनी किरलें समस्त संसार पर विशेष देता है. भत इसमे सका कहारह जाती है।

वेद में अनेक स्थली पर प्रस्ति की वेबबूत कहा गया है । यही समस्त देवो तक हिंव पट्टचाता है। ब्राह्मण ग्रयों से इसे देवतामी का मुझ कहा गया है। जिस प्रकार हमारा वह मुख सभी जोग्य पशायाँ को प्रहण कर एवम् उन्हें दातो द्वारा पीस कर फिर शरीर के बग प्रस्थम को परिपृष्ट करता है, ठीक उसी प्रकार देवताओं का यह मुझ भी समस्त देवों को परिपुद्ध करता है, इसमे तनिक भी सदेह नही। वृत्त विशेष करके गोवृत्त अत्यन्त विध-न।शक है। यबि ससार के समस्त विकों को एक प्रकेल बोचुत से हरना चाहें तो निविचाव हर सकते हैं। ससार वृत जैसा कोई भी सन्य ऐसा पदार्थ सत्यन्य नही कर सकाजो प्रज्वसनशील भी हो धौर स्मिग्ध भी सुगन्धित भी हो भौर पुष्टि-कारक भी तथा इन सबसे ऊपर जो विष-नाशक भी हो। ऐसे उत्तम पदार्व से ससार के कल्याण की जावना से जब हबन यज किया जायेगा नो निरमय ही

(शेष १६८ ११ पर)

# द्रौपदी चीर-हरण एक कोरी कल्पना : महाभारत की अन्तः साक्षी

भारतीय पुरातास्त्रिक सर्वेक्षण के भू० पू० महानिवेशक श्री घो० बबवासी सास का कथन है कि रामावण धीर महा मान्त कोई काल्निक इतिहास नही है किन्तु उसके मूल में सत्यता है। भले ही जसमे बाद में कवि की कल्पना की ज्हान -धौर सबद्धन के कारण बढ चढ कर बात शिक्षां नयी हो। श्री नान ने महाभारत बाम की सापता जानने के लिए हस्तिना बुर इ न्त्रस्थ वरनावा कुरुशन मधुरा, श्रानीयस प्रादिका उसनन व सर्वेक्षण करके उपरानत विचार प्रभिव्यक्त किये हैं। इसमें कोई शक नहीं कि मून रूप में ब्रटना में सत्य है। महर्षि दयान द सरस्वती ने मा धपने ग्रंच सस्यायप्रकाश मे महासारत की इसोक सस्या ने निरम्तर अदि की चर्चा की है। स्वामी जी के **विचार** पठनीय भीर मननीय हैं।

हम भी यहाँ महाभारत की अन्त सामा के बाधार पर उस तब्य का निक थण करने जो हमारे हदयों से घाष शबा की बहता वश पाज भी उबहता नहीं है। महाभारत की विशिष्ट घटना है -- दौरवी का भरी समाने प्रथमान कीरव वश 🕏 विनाश में इस घटना का महान् महत्त्व है। न जुबा (बुत) होता भीर न यह चूखित काय होता। विनाशकाले विपरीत बुद्धि । ज्ञानी मानी शूरवीर परस्पर कट कट कर मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी युधिष्ठिर ने जुझा खेला। वेद कहता है — भनेमा दीव्य कुविमित् कुवस्य कहते हैं। शकुनि की चालाकी से हार गए। क्यो बी<sup>!</sup> स्वय हारने पर भाषों को बाब पर श्रमाने का क्या भविकार या ? सर !

द्रौपदीका भरी समा मे धपम।न ह्या । उसे कट्रवचन कहे गए द्र शासन ने उसकी केस राश्चि पकड कर जबरदस्ती सभा में भाकर चोर प्रपमान किया। किन्तु द्रौपदी विदुषी थी उसने स्पष्ट रूप है सभासको से पूछा कि — महाराज -पुत्रिक्टिर ने सपने साप हार वाने के बाद बादि मुक्ते वान पर जनाकर हारा है तो मैं वैसे हारकर दासी म व को प्राप्त हो गबी। इस बात को सुनकर जहाँ दूसरे -सोय मृह सटकाकर वा फेर कर बैठे रह अप कहां सभा के मध्य विदूर जी न सम बोचित सत्यवाणी का प्रयोग कर द्रीपदी के सभा में साए जाने भीर उसके भपनान को सहान् बुष्कृत्य धीर वसहीन इत्य असाकर कौरवों के विनास की सासका श्रीभव्यक्त की। समस्त दुष्ट मण्डकी की निन्दाकी। वे कहते हैं---

न हि वासीत्ववायम्मा हुम्स्वा अवितुमहैति । श्रमीक्रेन हि राबीवा वस्ते त्यस्त्रीति मे नति ॥ सभा यव ६६।८

श्रदनन्तर विकल ने गरी सभा में जो

साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महारु घटना है। विकरण ने सब समासदों से प्रश्न किये तो किसी ने उसे इत्तर न

साबाराती च सर्वेचा पाण्डवानामनिष्दिता वितेन पूच चानेन पाण्डवेन इत परः । इय च कीतिता इच्हा सोबलेन परार्थिना एतत् सर्वे विवासीह मध्येन विविद्यामिनास् ।

विया। तब विकण बोला---

जब यह बात विकण ने कही तो सभाभे हगामा शरदा हो गया। महाश्रारत सामी समक गैपरी का रानिवाल में भेवा एव पालवों को रास्तान से मुक्त कर विसा गई साकर एक प्रभास समारत हो बाता है। न यहाँ तक चीर हरण की बात है न कुछ यह समार यही तमारण हो बाता है कि पुत्र प्रदेश बात में स्वतीक्कता का पुट देने बातों ने प्रदोश की बहु मरनार की है कि सममा सम्बाय पूरा द्रौपरी के चीर हरण का देकर आ कुछा जी का उठका वस्त बताते चित्रत कर दिया है। जब कि चीर हरण जी सी चटना बहा हुई

लखक महावीर नीर विद्यालकार गुरुकुल कागडी विद्यालय विभाग हरिद्वार

महामारत की अन्त साकी के आधार पर—जब जूझा खेला गया और बौंपदी को सभा मध्य अपमानित किया उस समय श्री कृष्ण जी महा राज अपनी द्वारिकारी से भी और हस्तिनापुर की भी भति दूर थे। इन लिए एक महान पुरुष को चीर हरस्ण जैसी वीभस्स घटना में चित्रित करना बुद्धिमानों को प्रका का श्रेष्ठ उसहरूण नहीं।

मे पहिये —

एतक्रुत्वः बहान नाद समाधापुदतिस्टतः।

तन्त तर विदुर जी ने कहा— ब्रौपवी प्रश्नमुक्तक रोरवीति द्वानाथवत् । न व विवृत त प्रश्न सम्यावमॉऽत्र पीक्पते ।। साथ ही विकण की बात को पुण्न

करते हुए विदुर जी कहते हैं—

विकर्तेन यवा प्रज्ञमुक्त प्रश्नो नराविष । भवन्तोऽपि हित प्रश्न विज्ञवन्तु यथागति ॥

इस प्रकार विकण और विदुर भी ने द्वीरती के सभा मध्य साए जाने का थोर विरोज किया। या सभासी को भा एकक्षाया। तब पुष्ट मण्डली का विरोज होने जगा। भरी सभा में स्थकर विस्फोट होता देख। यथा—

त वै खब्ब विदुरस्तरस्वेदी
धुन्नात घोर सुरक्षास्त्रज्ञा च ।
जीवको द्राम्म नोत्तरस्व पि विद्यान्
स्वस्ति स्वरतीलपित्र वतादुरुष्ण ॥
स्वते नात्वारी विदुरस्य पि विदुषा
सुरात घोरम सक्य राज्ञ ।
निवंदमानास्तुरात्वित् तदान्ततो
सावा वास्त्रपित्र कमारे ॥

पाठक इन श्लोकों से स्पष्ट क्या से कुट मण्डली के बिरोच में एक कान्ति का उदबोब है निर्दोच दीपदी के प्रपत्तान की क्या पाण्डल द्वितीयी अज्ञा जुणचाय यह स्वक्षी थी। उदनन्त्रत् युत्तराष्ट्र की साख जुली में जीने —

> हतोऽसि दुर्गोधन मन्बबुद्ध बस्त्व सभावां कुश्युङ्गबानाम् । लित्रव समाजाबसि दुर्विनीस विश्लेवतो द्रोपदी बमस्लीम् ॥

यहाराच पुतराष्ट्र ने यहान् विषद

नहीं भी। बहुत तो द्रोपदी को समा नध्य लाकर बड़ा कर दिवा नया था वहां उत्तका पोर प्रमाना था। नथींकि द्रोपदी स्वयं कहती हैं— समा में दस्ते पुर स्त्री वाति को इस प्रकार कभी धरमानित नहीं किया नया यदा सम्योतिकव समा पूर्व न नवस्त्रीतिन स्तृतस् । स

हाँ इस्त्र मण्डली उसका महान् धर मान कर सकती थी यदि विदुर धौर विकल मण्डली ने थोर विरोध न किया होता। उनके विरोध करने का ही यह एक हुआ कि खा में कौरव पक्ष के बीर मी इनके साथ हो गए धौर इस दुष्ट धाथ एण के विरोध में बोल पड़े।

इसी प्रकार उच्चोग पन में कुम्ली जी जी कुम्म को सावेग बेठे हुए चीर हरण को बात कही नहीं कहती विल्क वह सवन ही दीपती के प्रमान और दुक्षासन तथा दुर्वोचन हारा कहे गए कटु स्पाय वचनों को बात हो कहती है कुनी को बस से स्विक दुक्ष दुवी बात का है कि—

न राज्यहर्त्त हु स चून चारि पराजय । प्रवासन सुताना वा न से तदृष्ट सकारणम् ॥ यत्र सा मृहती स्थामा समाया स्वती तवा। स्वीधीय परमा बास्त्र में ट सतर सहत्। स्वीधमणि बरारोहा कात्रयस्ता सवा। नाज्यसम्बद्धारा नाष्ट्र स्वीधमणि सारोहित

बह कहती है—भी कृष्ण मुक्ते राज्य के किन जाने का इतना दुख नहीं जूए से हारने खीर बनवाब होने का भी मेरे सन में बतना महान् दुख नहीं है। पर पुक्त बचाम मे नेरी सुखरी मुददी पुनवकू गैपकी ने रोते हुए भी दुगींकन के कटु बचन भुने के नहीं मेरे लिए गहान् दुख का कारफ बन गए हैं।

वशी प्रकार श्री कृष्ण महाराज जब धिष के लिए हरितापुरे जाते हैं तब गोरी को उदे वनन कहती है ने ध्रात श्रीला का वदकता कर ही है। वह कहती है यावन में जा प्ररी समा में उस बास बीच कर प्रथमानित किया या उसमें बहु धर्म तक जब हो है। मेरे एक प्रथमान को मत पूनना। प्रजून श्री कृष्ण जी म कहते हैं कि पार बुद्धि वृद्धावन ने जैस रोपनी में बसा मध्य खीचा या उस स्थमान को कैसे पुनासा वा सकता है।

मकारालार से हम बहा महाकवि बास के द्रवावकम् नाटक के बी कुत उदा इरण के रहे हैं। सवा— ब्रीक्सी केस व्यवसम्मानिक्षण्यः। तवा— एव कुवा स्वती डीपर्यों केस्स्रस्ते मूर्तिकान। इनसे बात होता है कि बास के समय तक बीर हरण बेसी घटना प्रमान्य यो प्रसिद् दुसासन द्वारा डीपर्यों के केस पकडकर समाम पन्न साकर उसे प्रपानित करन की घटना का हो सहस्त्व वा।

इसी तदम म हम यह भी लय महाभारत की अस्त साक्षी के आधार पर रखना बाहेंगे कि वब बुधा बेता गया और ब्रीवदी की समा मध्य अय मानित किया गया उस समय थी कृष्ण की महाराज अपनी डारिका पुरी से भी और हस्तिनापुर से भी अति दूर थे। इसलिए एक महान् पुरुष को चीर-हरण जसी बीधस्स घटना में चितित छरना बुद्धिनानों को प्रता का आध्य उदाहरू नहीं। पिंदु चेथों पद का गह स्कोक-

महत्त्वनेततः प्रवृक्षः मे हृवया गापसपति । यव गोनि वेति मुक्तोतः कृष्ण्या या दूरवासिनस् ॥

धर्मात् निषय समय कौरव बना में दीपती का धरमान हो रहा वा मैं (मी क्रम्प) हॉस्तापुर से बहुत हुर बा उस समय क्रम्पाने सातामाय से भोविय क कर्डूसर जो पूर्वे कुकारा वा उच्छदा मेरे उत्पर म्हण बढ़ता ही बा रहा है मेरे हुट्य से हूर नहीं होता। धरपाधा कौरवी वा सहार किए बिना उसका मार हुर नहीं होता। बरपुत मंदि सम्बान के समय कुरम बहुं होते या पहुन कहें होते तो महामारत नहीं हो यया होता। स्वीकि कृष्ण उस समय के सहान् पमझ महान् राहमी राष्ट्रीय नेता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सत् चित् कीन है ? बीर यह बानन्द यात्रा क्या है? यहाँ हम इसकी चर्चा करेंगे। जीवात्माका स्वरूप सत्य ग्रीर चैतन्य है उसमे ग्रानन्दका (सुक्रका) श्रभाव है । इस भ्रानन्द भ्रथवा भूख की प्राप्ति मे ही जीवात्मा मलग्न रहता है। उसकी यही मलग्नता उसकी धानन्द के लिए यात्रा है जिसमे धनादि काल से लगा हुन्ना है। जीवात्मा का सत् विल स्व-रूप जिस क्षण द्यानन्द स्वरू। (सुलमय) हो जाएगा। उसी पल उसकी यह यात्रा समाप्त हो आएगी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर अनेकानेक सम्प्रदायो ने जन्म लिया । धनेक धम गुरु पैदा हए, जिल्होन अपन-अपने तरीके से इस झानन्द (सुख) की प्राप्ति का मार्ग स्रोजा भीर उमे जनता के समक्ष रसा, जनता ने उसे कितना समका कितना माना, यह तो कहना कठिन है किन्तु समय के साथ इन मार्गों में सकी जता या वर्ड भौर मनुष्य मनुष्य के बीच दीवारें सडी होती गई।

प्रस्त यह है कि मनुष्य बानन्द (बुस)
तक क्यों पर्रम्व नहीं पाता है ? हस क्यों
व उसने बहुत बार मोज की प्रीर उसका
पानन भी किया किन्दु कालान्दर थे
प्रत्येक बस्तु को सरस्त से सरस्तवम बनाने
र प्रयास ने उसमें विकृति उरन्य कर दी,
६८ समुख्य मार्ग से मरक गया। इसका
कारण यह है कि मनुष्य ससार ये कुस
हस प्रकार से रहता है कि वह सरीर धीर

### सत् चित् की आनन्द यात्रा

### श्रीमती सुभाषिगो वर्मा, विलासपुर

भारमाको एक में मिला लेता है, इस धानन्द की भोर जाने वाली यात्रा को भी सबरीर पूर्ण करना चाहता है। बारीरिक सुख की पूर्ति के लिए प्रधिकाधिक सुख मुविधाके सामान एकत्र कर बानन्द का एक कल्पित भवन बना नेता है। ये सुब सुविधा के सामान साधन हो सकते है साध्य नही, साध्य तो कुछ भौर ही है। जिन्होने इस साध्य को समक्रा है उन्होने पूजा-पाठ या उपासना को धपनाया है। द्याज पूजा-पाठ सपासना के नाम पर जो कुछ करते हैं वह भी केवल कर्मकाण्ड होता है। बाहे बहु हवन हो अववा सूर्ति पूजा हो, चाहे भजन कीर्तन हो। उसका किंचित् मासामी प्रभाव हुमारे सन्तरसम पर नहीं पडता है और यही कारण है कि हम सच्चे भानन्द की धनुभूति नहीं कर पाते हैं। पूजा-पाठ प्रथवा उपासना वह प्रक्रिया है जो मनुष्य के बन्तरतम की माभोड़ कर रख दे, उसका मन्यन कर दे, मनुष्य का व्यक्तित्व निकार कर सामने द्या जाए। ऐसा हो नहीं पाला है। इसका कारण यह भी है कि पूजा-पाठ-उपासना बोड समय के लिए होती है। अधिक समय

मनुष्य बाह्य जनत् मे कियाशील रहता है स्रोर बाह्य जनत् का दूषित वातावरण मनुष्य पर दूषित प्रभाव डालता रहता है।

इमें बीने की कुछ ऐसी कला चाहिए कि हम भागने में ही जी सकें। यह बात निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य किना कुछ किए नहीं रह सकता है। मनुष्य सम्पूर्ण दिन किसी न किसी कार्य में स्थस्त रहता है। इसलिए बानन्द प्राप्तिका सीवा-सरस एव जन सामान्य के लिए एक ही उपाय है कि वह अपनी एक रुचि बना से, उसके धनुकूल कार्य लेकर उसमें रम जाए, इस रम जाने को इस साधना कह सकते है। सामना मनुष्य को सदा प्रानन्द देखी है, वह सावना चाहे सगीत की हो, चाहे कत्वा की हो, चाहे साहित्य की हो, या समाज सेवा की हो। सावना का रूप कुछ ऐसा होना चाहिए कि बनुष्य स्वय को भूस जाए, उसी में भीन हो जाए। एक कार ऐसी साथना में लीन हो जान से महब-नीय बानन्द की प्राप्ति होती है। हाइना करके देखिए, ऐसी साधना, जिसमे साचक और साध्य का भेद मिट वाता है। जिस क्षण, जिस पल ऐसी सावना में शीन हो जाएने, सच मानिए जीवन का बहु आध, वह पल बन्य होना। उस क्षण उस पल ही उस परम प्रानन्य का साक्षास्कार हो बाएवा भीर मनुष्य जीवन बन्य बन बाएवा।

साबना से सद कुछ निज बाता है साबना कभी अपूरी नहीं रहती है। वसे ही किसी को आनन्द को अपूर्मुख में कब समय करोगा। किसी को अधिक सफसता अवस्य जिलेगा। क्रमता के रहस्य के सन्वय्य मैं किसी नयुवक ने क्यी लेखक उपस्टाय से पूछा, आपकी सफशता का रहस्य क्या है?

"वैटे—इस रहस्य का नाम है यैसे।" टालसटाय ने मुस्कराते हुए कहा—"ससार मैं ऐसा कोई काम नहीं जिसे पूरा म किया जा सकता हो बसर्चे कि करने वाले में यैसे हो।"

नवमुबक ने कहा — "किन्तु एक कास ऐसा है जो बहुत वैयें रखने पर भी नहीं किया जा सकता।"

"वह क्या <sup>?</sup>"

"चलनी ने पानी करना।"

"श्रोह ! इसमें क्या बढ़ी बात है" टाल्सटाय ने जुल्कराते हुए कहा—"इक्टे भी किया वा सकता है बधरों कि पानी के जमने तक कोई वैंबें रख सके।"

श्रत परमानन्द की प्राप्ति भी हो सकती है बचार्चे कि हम में उतना पैसे हो।

### शृष्ट ७ का क्षेत्र द्रोपदी चीर हरण एक कोरी कल्पना

स्रव स्वाप महाभारत के वन-पर्व का एक उदाहरण वैक्षिये। विश्व समय पाण्यव समवामी हो जाते हैं नव भी कृष्ण की उनके कुएक-सगन पूक्ते बहुई दन-बज सहित पहुने। बाते होने लगी। बातो हा बातो से श्री कृष्ण जी ने बढ़े कप्ट से कहा—

एव निहत्य समरे सीम शास्त्र नियात्य व । धानर्तान् पुनरागम्य सुद्धां प्रीतिमावहम् ॥

तबेतत् कारसा राजन् वबह नागसाह्न्यम् । नामस परवीरम्न न हि कोवेत सुयोधन ।। व० प० ४१

सध्यागतेऽचवा वीर द्यूत न मविता तथा। स्रक्षाह् किंकरिष्यामि मिन्नसेतुरिवोदकम् ॥ व० प० ४२

सकत् राजन् क्योंक में सीम और सालक को युद्ध में क्यून्स करने के निर्मास हरितनापुर ते हुए का । (शास्त्र ने क्यून्स भयकर विकास प्रवास ने युक्त एक बान निर्मात किया वा विशवणानाम सीम या, इसमे भयकर मारक शक्ति थी, विश् करह करने में कृष्ण जी को बडा परिश्रम और पराक्रम करना पड़ा) इसीकिए कृत स्त्रभा में उपस्थित न हो सका। यदि मैं वहाँ प्रृंत कमा होता तो युर्वेषन कीरिया नहीं रह करता सा भवना मेरे वहीं पहुँ-चने पर जूसा होता ही नहीं। किन्तु रासन् । चल पर से शुन ट्टेह्रए के समान धन मुझे बताओं में आपका नहीं प्रिव

पाठक । यह एक क्लोक ही 'बीर-हरण' की वैचता को चुनौती देकर उसे धर्वेष वोषित कर देता है, उसकी मान्यता के भ्रम को सण्डित कर देता है। चीर-हरण जैसी घटना महामारतीय इतिहास में हुई नहीं, इसे हमें सत्य परिश्रेक्य में लेकर देखना चाहिए। विदुर और विकर्ण मण्डली के साहसिक एव ऐतिहासिक वचनों का वहीं महत्त्व है, द्रोपदी के बोर श्रपमानित करने के लिए दुर्थोचन की बाज़ासे दुशासन के बढते कदम बीर दुेष्कृत्य करने को उद्यक्त हाथ विकश्यं मण्डली के विश्वमित होने और अवावनों के विरोध एव उत्पात के कारख वही सक बए। समस्त समासद भीर भूतराष्ट्र स्था गान्धारी एक अवहोनी घटना को नहा-जारतीय इतिहास ये जुड़ने बचा वए। (

### स्वास्थ्य के लिए लाभपद दोहे

-स्वामी स्वरूपानन्द तरस्वती

ज्ञात काल जो नियम से, बाए चूमने रोख। वस बुद्धि दोनो बहें, मिटे कव्य का रोब।।

> प्रवस मुख बोचन करे, तेत असे स्नान। रहे स्वस्थ नीरोव तन, सुखी रहे इन्छान॥

नाचर, बबुधा, धावसा, जो खाये मनसाय। रुवा बढ़ें कब्बी सिटे, जून खाफ हो जाय॥

> धगर कब्ज है उदर में, मूच विदा हो जान। रस गन्ने का पीजिये, शोबू सदरक साम।।

गरकमचोर दियाग है, तो कर इतना काग। साम सहद के साइवे, तीये हुए बादाग।।

> हरड, बहेडा, बांबसा, चौची नीस निसोस : को इनका सेक्न करे, सुन्दर कावा होता।

वाय, तम्बाकू डावडा, थो नहीं करे प्रयोग । इससे डरकर सामते, सांति-मांति के रोग ॥

> हरत, बहेता, धांबचा, चस में रखो खिनोय। खंटि बारे बांख में, निर्मण ज्योति होय।।

### श्रार्थसमाज बांकनेर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

स्रामंसमाज बाकनेर (विल्ली) का ३३ वा वाधिकोत्सव २ ३ मार्च १६८५ को स्रत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुमा।

धार्यसमान बांकनेर (विश्ली) का ३३ वा वाधिकोत्सव हर्गात्मास के बाव सम्मान हुया। उत्सव का प्रारम्भ बृहद् यज के साम हुया। यज के बहुए वे थे वे वेन मार्थ का स्वा । सामी प्रमृतान्य की महाराज की सम्मान तो "वे व सम्मान मार्थ का सम्मान प्राप्त के बहुए वे थे व सम्मान प्राप्त के साम प्राप्त के साम प्रमुद्ध के स्व सम्मान का प्रार्थ का क्ष्म के स्वा प्रमुद्ध के साम प्राप्त किया। आणी ने निक्वम प्रतियोगिता कि विजेना वे देकाल्य प्रवाद, कुलवीच कुमार तथा राकेश कुमार स्वीर मार्थ प्रतियोगिता के विजेना वे देकाल्य प्रवाद, कुलवीच कुमार तथा राकेश कुमार स्वीर मार्थ प्रतियोगिता में मान्यकास, पोलन्सित कुमार तथा राकेश कुमार स्विरीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। य॰ सावानस्य वो अवनीक ने 'विश्वक लैक्टर्' द्वारा धार्यसमान के खिदातों का नामिक विवेचन किया। युवकों से समठन की मानना यून स्वाच्यो रक्षा के सिंद (विभिन्न लेक-विजीताकों का सायोजन किया गया। दून प्रतियोगिताकों से हुजारों की सक्या से प्राप्तीय, राष्ट्रीय व सन्तर्राष्ट्रीय स्तर के किया। विश्वता विवासियो का विवरण इस प्रवार है—

- १ बाली बाल शूटिंग--प्रथम--प्रिसस्पोर्टस बसब नई दिल्ली । द्वितीय--सिंहल स्पोर्टस बसब, देवली ।
- २ कबड्ढी सीनियर (राष्ट्रीय) प्रथम--एल०एस० न० २ स्कूल, नरेसा वितीय --विल्ली सन्नि सेमा सेवा

६ कुरती--२१ कि० ते ७४ कि० तक के बचन की कुरितयों ने कबय स्वानन्त, नवीन, जुतीक, तीरेक तबकरण, पुरशीक्त, रमेश किनोड बीरविंद्ध तथा युवकीर अध्य स्वान त्या त्या किनोड बीरविंद्ध तथा युवकीर अध्य स्वान पर रहे तथा लोकेल क्याककाल, सतीय, रमेश, बीरेक, विवय, विदेक, अद्वानीर, पज्य तथा चन्द्रमान ने क्रमच दितीय स्वान प्राप्त किया। ११०० मीरव-मी तौब से प्रशोक पराया, समन्दर खिंद्ध, पुरेल कुमार कमस प्रथम, दितीय तथा तुतीय स्वान पर रहे। सर्वधी विधित कुमार जैन, स्वानव्य खिंद्ध (वालीवाल), सुरीक, नरेक तथा दुरेज क्रमां का कब्द्री का खेल प्रवाननिय था।



धार्य पुतक सम्मेतन' जी विचा प्रकास सेठी की सब्बताता ने सम्मन हुया। स्विद्धी जी ने समने कर कमलीं हारा विवेदाओं को साहबंक पुरस्कारों से सम्मानित विचा। धारवाम के उत्सव ने इतनी नहीं तकाम में पुत्रकों के सोत्साह माग नेने की उन्होंने मुर्ग-मूर्ग

### वार्षिकोत्सव सम्पन्न

"प्रार्थसभाक समूर विद्वार का तृतीय वाधिकोत्सव रविवार दिनाक १० मार्च ८१ को प्रात ८-२० बचे से दोपहुर १-०० बचे तक समारोहपूर्वक मनाया गया ।

(स्थान पाकिट तृतीय शापिन सेन्टर के सामने)

वितर्ने सार्वेद्यमाय के सन्द प्रतिष्ठित विदानों के प्रवचन हुए तथा धार्य प्रति-विविध सभा के स्वन्तेषवेशक के मदर भजन भी हुए ।

> भववीय ठाकुर दत्त सन्ना (मन्त्री)

### देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की श्रावश्यकता

उपरोक्त शीर्षक से एक विज्ञान्ति वस बनवरी मास में आर्यसमाब की पत्रि-काम्रो में प्रकाशित की गई की, जिसके उत्तर में कुछ पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। देशान्तर प्रचार के कार्य में एसे उच्च शिक्षित सज्जनों को वरीयता दी जायगी जो धार्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बना नहीं। इन प्रचारको को विवेशों की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों के अनुकृत प्रचार प्रणाली को अपनाते हुए आर्यसमाज के सगठन को नई दिशा देना साप्ताहिक सत्सग और आर्थ पर्व-पद्रति का आन कराना. धार्य बीर दल व महिला संबठन की नीव डालना धार्य साहित्य के स्वाध्याय की पेरणा देना, बार्य शिक्षण सस्याओं ने ब्रध्यापको एव छात्र-छात्राक्षों को वैदिक वर्म के मुल सिदातो का परिचय देना और समाचार पत्र रेडियो, टैलिविजन के माध्यम से जन-सामान्य को आर्यसमाज के सिद्धातों का ज्ञान कराना होगा। एक देश में अथवा उस क्षेत्र में कम से कम एक वय का समय देना अपेक्षित है । सार्वदेशिक सभा अपने निर्देशन एवस भनशासन ने यह कार्य करायगी। कालान्तर में विश्व के सभी भागों से भार्यसमाज के कार्य का विस्तार करना, देशान्तर की आर्यसमात्री व प्रतिनिधि सभाग्री से निकट सम्बन्ध स्थापित करना तथा आर्यसमाज के अनुकृत विश्व संस्थाओं से अपने मन्तव्य को पहुँचाना, हमारी दीर्घकालीन योजना का सहय है। इसकी प्रथम कही के रूप से कुछ बोम्य मार्यं जनो की सेवाए इस कार्यं में ली जार्येंगी।

इण्लुक महानुषायों को पत्र व्यवहार के लिए हम पुन प्रवस्त दे रहे हैं। प्रथमें वावेदन पत्र में वे प्रयमी प्राप्तु, वीकिक योग्या, प्राप्ताओं का ज्ञान, प्रार्थसमा के ले सम्बन्ध, प्रचार कार्य का प्रमुचक, प्रकाशनों की तृषी एवस प्रम्म प्राप्तायक खान-कारियों का विदार्ण देने का करू कर। व्यवेदी प्राप्त का प्रभुक्त काल प्रमित्र के हैं। भारत प्रवस्त देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख झार्य कार्न का नाम और पत्त जी विद्यों को प्राप्त कार्यों के विवय में भवी भाति वानते हो। यह की तृष्तित करने का करू करें कि किशा समय हस कार्य में देशकों है। सभी महानुमावों को सपने प्रयम्त पत्र में हेंपु प्तर्थ वेदन योग्य होगा। प्राप्ता है देशान्तर प्रचार ने सहसोग प्रदान करने हेंपु स्लुक सहसुन्नाव स्वपना स्वयंत स्वयंत प्रदान करें।

> भवदीय डा० सानन्द प्रकास उपमत्री समा एव सयोवक—देशान्तर प्रचार समिति

### आर्यंसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा होली मिलनोत्सव सम्पन्न

बार्य समाज हुनुवान रोड के तत्वावधान में ७ मार्च १६०६ को प्रात ६ हे १२ बने तक क्वा.द स्वेयर कालीवाडी मार्च महिल्ली में बड उत्त हु एव वास्तिक रीति है मनावा गया। इस क्षेत्र में रहने वाले सरकारी प्रतिकारियों एव वार मार्थानेहर लोहिए। हुएवाल के बाक्टरों ने इसमें गोरखाड़ मार्च किया। कार्यक्रम स्व हे प्रारम्भ हुएवाल के बाक्टरों ने इसमें गोरखाड़ मार्च किया। कार्यक्रम स्व हे प्रारम्भ हुएवाल के बाक्टरों ने इसमें गोरखाड़ मार्च किया। कार्यक्रम स्व हे प्रारम्भ हुए। भी प० कप किशोर सास्त्री ने होत्ती के सहस्य को बताते हुए कहा कि यह एक प्रविक्र मीर मेल दिलाय का रवीहार है। हमें बब येद मार्च मुलाकर बीर मन पुराव को मुनकर तक को बने काला वाहिए बनुष्य-मनुष्य में येद बाकने वाली उत्तर में प्रविक्र साम्य विचारों में को को बने मार्ग मार्ग प्रविक्र मार्च है। इसे बन येद साम्य मुलाकर बीर मार्ग स्व साम्य मार्ग मार्ग के बन्दों ने भी सुन्दर मचन एक पीत गाये। इस क्षम की एक्वीवएवन के प्रथम डा० एस० के निनोवा ने बायसवाल हारा इस पावन की स्वर्य करने एक इस बायसवाल के उत्तर प्रवास करने एक इस बायसवाल के उत्तर प्रवास की सरवार सामें का बन्दवार किया।

(के॰ एस॰ साहिया) मन्त्री

### वानप्रस्थ दीक्षा

शार्यसमान नारायण विद्वार के वाविकोत्सव पर प्रसिद्ध समाजसेवी भी बीनानाष गुप्ता एव उनकी वर्षपरनी शीमती साविजी देवी ने "वानप्रस्य" प्रहुश किया। इस ग्रनसर पर सैकडो स्त्री पूर्व उपस्थित थे।

### चतर्वेद शतक यज्ञ

वार्यसमाव रानी बाव के काँठ कार्यकर्या भी इन्यावन्त्र गुप्त के निवास ३००/११ रेखवे कालीती, सकूर बस्ती में त है र मार्च तक बहुवेंद शतक रास सम्मन्त्र हुवा। वस के ब्रह्मा त्याची वीचनानस्य वीचे। सैक्सों स्त्री पुण्यो ने यस एव प्रत्यचन का स्रान्त्र विचा। १ त स्ववहर एर की कुम्मचन्त्र गुप्त ने सपने योचे ने गमकरस्य एर ११ स्वयं सार्यस्थाचेक के लिए प्रदान किए। संगोजक तुमतीवास मस्त्रीमा

# आर्य जगत् के समाचार

### गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर के लिए श्रापील

बजशाला जिलका विकाल्याल विशोगित् प्रायं प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामवोपाल कालवासे ने किया वा यह सभी सपूरी है।

१ खालाकार कंका २ विचालय अवन कक्ष ३ व्यतिथि कक्ष ४ कार्यासन कक्ष ३ संस्थीन अवन, ६ यक वेदमन्त्रिट ७ वेद प्रचार वाहन, ० स्नानाबार, ६ ईकी, १० टैम रिकावर बाहक, ११ गोलासा ।

इन सब में नरीमव ६ मास २० का व्यव बाने की सन्तादना है।

प्रात एवं सायं वैदिक यत्र संस्थान होता है। उसके लिए वी वी-सामनी एव खात्रों की श्राजवृत्ति का भी सहयोग कर सकते हैं।

 बो सज्बन उक्त योजनाभी में सहयोग करेंचे उनके नाम से ही शंक्यर सवावा जायेगा। ५०१/-देने अववा प्रविक देने वाले सक्वतो के नाम भी परवार पर आयेने।

> वन नेवने के लिए नुस्वाविध्यादा---वुक्तुस नहाविद्यासन ततारपुर हानुस,

गाविकाबाव (१०००) चैक अववा वैंक द्रापट एवं मनिसाबैर द्वारा भेज सकते हैं।

### निवेदक वाचार्य वर्मपास

### निर्वाचन सम्पन्न

४-२-८५ सोमबार, दीवान हाल में वैदप्रिय सुरीक्षा घानन्त की खब्बकता में सका का चुनाव सर्वेसम्मति से सम्पन्त हो गया।

| प्रवाना<br>उपप्रवाना | सरला मेहता<br>सुत्रीला सामन्द | सहमत्रिणी<br>उपमत्रिणी | कृष्णा नश्दा<br>शकुन्तका दीक्षित |
|----------------------|-------------------------------|------------------------|----------------------------------|
| उपप्रवाना —          | प्रेमशील                      | ,,                     | चन्द्रकता                        |
| ,                    | शकुन्तला प्रार्था             | कोवाध्यका              | तारा वैद                         |
| ,                    | शास्ति देवी मलिक              | बह "—                  | सत्या वैव                        |
| महामत्रिणी           | प्रकास सार्या                 |                        | BORT ABOUT                       |

### आर्य कवि सम्मेलन

कार्यवामान सबर बाजार ने वर्गवीर प० लेकराम के बिलवान दिवस के उपलब्ध में २४-२-६६ को आयं किंव सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें भी उत्तवक्षण जी 'करर' भी स्वयामा जी 'बेबार' को म्याकुल की आदि किंव नहानुमानों ने ने पले जेलराम की के बीवन के प्रेराचांद्र प्रसर्गों की काव्य गठ के हारा प्रस्तुत करते हुए उन समर बिलवानी को प्रपत्ती बादर खडावांत्रि सर्माण की। सम्पूर्ण कार्यक्रम के मुक्बारजी ला० कियोरीसाल की के सुम्यास से ११००) की बनराणि की बान कप मे प्राप्त हुई बारा आयोजन प्रेरणात्यद एव सफल रहा।

### बाचार्यं रवीन्द्र बात्रेय

### वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नरेला

आपको जानकर प्रति हुने होगा कि धापके धार्यवसाज नरेला का ४१ वाँ वार्षिक उत्तक विताक ३० व ३१ मार्च १८-११ को बढी पुमकाब से मनावा जा रहा है। इस धनवर पर लाघु, लमाशी महामारा, केन्द्रीय नेता एक सहुर सक्वोपकेशक पर्भार रहे हैं। वर्ष नाम उठाई।

धानन्द कुमार (मण्डी)

### आर्येसमाज हजारी बाग मे आर्येवीर दख प्रशिक्षण शिविर

खनस्त धार्म वीरो को सूचित किया जाता है कि वितांक ११, नई से ३० मई १६८६ कर एक धार्म बीर वल प्रशिक्षत्व तिथिर हवारी बाद धार्मसंगा विद्वार में ज्याना जा रहा है। धाप धार्मिक से धार्मिक स्वयाने भाग सेकर प्रशिक्षत्व अपना करे। जाव ही तभी समाजों के समासनो एकम् भिष्कारियो से निवेदन है कि विद्यार जर की प्रयोक सामंत्राज्ञ ते कम से कम से सार्थ पुक्क समस्य इस शिविर में भेकें।

बस्तुत वही एक मात्र रचनात्मक पक्ष है जिबके द्वारा धार्वकमाओं में वैविक सिद्धान्तों से परिचत युवकों को धमसर कर साथ धानन्तित होकर विद्वार राज्य में सार्यकमाय के बोरव की रक्षा कर सकते हैं।

वासदिवाकर हस-- प्रवान सवालक

### महात्मा वेदिभिक्षा जयन्ती समारोह

दवानस्य सस्वान भीर हिन्दू रहा। समिति के सस्वापक स्वर्गीय महारमा वेद-शिक्षु वी का १७ वो जन्म दिवस वेद मन्तिर (इवाहीमपुर गाँव) मे १४ मार्च छे १७ मार्च तक मनाया जायेगा।

चनारीह १४ मार्च को प्रात - बचे बजुबँद गरासण यस से प्रारम्भ होगा। इसकी पूर्णाहिति १७ मार्च को प्रात १० बचे होगा। १४ और १६ मार्च को यह यस प्रात - बचे से हुमा करेवा। १६ मार्च को दोगहर बाद दो बचे कार्यकर्तामां की तेवल बीर हिन्दू रसा सम्मेलन होना। १७ लार्च को पूर्णाहिति के तुरस्त बाद सादे बस बचे नहारमा वेदनिज बचनती सभा होनी जिससे स्वर्गीय महारमा ची को बढावांसमा मेंट की बार्येश।

### वार्षिकोत्सव स्चना

हुक्कृत महाविधालय ततारपुर (हापुर) जि॰ वास्त्रियागर का वार्षिकोरख १६ से १६ नार्य तक वडे घूमवाम से अनावा जा रहा है। विसमें बारत वर्ष के उच्चकोटि के विद्वान् एव बार्यनता त्वार रहे हैं।

### शस्त्रक चन्द्रपास विह

### आर्यसमाज पुल बंगश का निर्वाचन

दिनाकं १०-२-मंद की साथें बनाज का वार्षिकं समिवेकमं की बुवसं निसीर मी(बुरपूर्व प्रचान) की सम्मासता में सम्मान हुया। विश्वने निम्म प्रवाधिकारी चूने वसे »

ह नी वायनपंत्र जो प्रचान ३ वी कुत्यनभाध वी उपस्पत्री २ ,, पुष्प क्रिकोर वी उपप्रधान ६ ,, रहेस हुनार वी ,, ३ वा॰ वेंचराज वी ,, ७ ,, हरीयान्त्र की सीधान्यक्र ४ वी पुरेशहुनार वी जन्मी व ,, चुमान्य वी प्रधार्थी वपसीय रहेक्ट्रहेगार उपन्तर्थी

### वार्षिकोत्सब आर्यसमाज नजफगढ़

भारत्वताच नवफाक नहें विस्ती-४३ वा १३ वां वार्षिकीत्वत विलोक ३६, २३, २४ मार्च १८०१ को नवी पूर्वधान के नगाना वा खा है। विक में बार्व जनक् के पुत्रविद आर्त विद्यान् बन्धावी नहीच्येतक तथा नवार्विकेतक क्योर खे हैं। रमुनाविक (अक्त)

#### सिन्धी आर्य सम्मेलन

सभी कार्य बन्तुको को सुनकर यह प्रसम्मता होगी कि, विवास १७, १८, १९ वर्ष १९८६ में---

व्यक्तिल नारतीय विंची बार्य क्षमा के द्वारा पुणे में आंग्लेकमाज पिर्व्यारी कें तीन दिन का सिंची बार्य सम्मेक्सन गनाया जा रहा है।

(१) सम्मेनन करने का वर्षस्य झाएक में मिनना (२) एकीकरण (६) विचारों का आवान प्रचान करना (४) कुरीविधों से खुटकारा (६) नैविक वर्ग की जानकारी जीर राज्यक का विचास करना । निवेदक सन्त्री

### आयंसमाज रक्सील का वार्षिक चुनाव

. बाब दिनांक १२-२-०३ को खार्यद्रमाव रखनेल १० वम्मारण के धस्तरण त्रवा का वार्षिक पुराव भी विक्लकर प्रवाद सार्यद्रमाव सवाही की सम्मलता में सम्मल हुमा। विक्ले निम्मलिबित सविकारी एवं त्रवस्य पुने करे।

है प्रवान- भी ग्रोमप्रकाश/राजपास

२. मन्त्री— की० के० शस्त्री

कोवाध्यक्ष— रामनारायण राम सोहिया

मन्त्री सार्वसमात्र रक्तीक



प्रसन्न रहे (१९७२ का केप)

कहा कि मैं यपने पुन, पौनो और प्रपोजों से बेलवा हैं, चित्ता में नहीं रहता। बड़ी नेद बीयांद्रम का रहता है। सद ने कहा है, स्वर्ग भीर कहीं नहीं इस पुल्यों पर हो है। ऋत्येद १०-२४-४१ नन कहता है— बहैंन स्त्र मा वियोद्ध विस्वतायुर्धस्तुतम्। अफीळत्यों पुनैनेप्तृमिसींदमानी स्वे गृहै।।

भी नोगो, इस ससार में रहो, ध्रलग मत होमो हमेशा पुत्रों भीर पौत्रों के साव केनते हुए भपनी भागु वितामो।

यह जीवन केवल फूलों की शःबा नहीं, इसमें काटें भी हैं। इन काटों को हटाने का मार्ग हैं 'सुमना' होकर प्रापे वढो-प्रापे बढों। प्रसन्नता तुन्हारा वरण करेगी।

६ ए ई-१, बोबरा मिर्जापुर

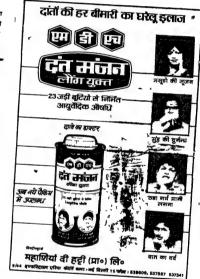
प्रदूषण समस्या (पृष्ठ ६ का शेष)

ससार के विश को हरने से सकता प्राप्त होगी। महिष का कवन है कि — "बब बादु और दृष्टि जल को विवाबने वाला सब हुगेन्स मनुष्यों के ही निजित्त स्थ उत्पन्न होता है तो जबका निवास करना भी जनको मोग्य है।" और निवा-रण का उनाय है हवन-यज्ञ। महिष् का सुस्पन्ट कथन है कि "बह कार्य प्राप्त किसी अकार के सिख नहीं हो जकता। यस सनवर है सार्यंत्रमास हवन-यज्ञ के प्रचार और प्रसार द्वारा विश्व का विश्व हरने के लिए सांगे साथे। वहि सार्यं-समास ऐसा कर सका तो फिर विश्व कर मे सीकते में बड़े बेर नहीं कहेगी। पर यह कार्यं कहने से नहीं कहेगी। पर

> भागं निवास, चन्द्र नकर, मुराबाबाद-२४४०३२

### प्रसिद्ध फ मी नायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्त्र मी अमर क्रमानी सन्ध्या-यज्ञ शानिनायकरण, स्वरितवायक आवि प्रसिद्ध पवनोपदेशको-सत्यपात पर्ग क, ओमपकाश वर्मा, पन्नाताल पीयूब, सोहनलाल परिक, शिप्राज्ञवती जी के मजीतम अना के केसेट्स तथा प बुद्ध विद्यालायार के भवनों का सजह । आय माराज्ञ क जन्म भी बत्न स क्सेट्स क स्वीपन के लिए लिखे क्रमों का क्रमों का स्वर्ण का स्व

फोन 7118326, 744170 टेलेक्स 11-4623 AKC IN वैदिक कैसेट समा कार्यालय, १४ हनुमान् रोड पर भी उपसन्ध हैं।



तुम भारत के भाग्य विधाता थे

रबयिता : शकुनबन्द गुप्त, विद्यावाधस्पति

तुम स्वराज के ज्यावयाता ये प्राष्ट्रितक राष्ट्र के जिन्मदाता वे मारत के मार्ग्य दिवाता वे पाष्ट्रित के मार्ग्य दिवाता वे वेदाज के प्रदर्शक वे परकों के मार्ग्यवर्श के प्रदर्शक वे परकों के मार्ग्यवर्श के प्रावर्शक के प्रावर्शक के प्रवर्शक के प्रवर्शक के प्रवर्शक के प्रवर्शक के प्रविद्योगी के स्वायाय के प्रविद्योगी के प्रविद्योगी के

तुमने बुकराष्ट्रको राष्ट्रमावा वी पीवियों को नई प्रासा वी पीवियों को नई परिसाधा की इर सब की निरासा की नमें सारत की सुब्धि की स्वेत्र ज्ञान की सुब्धि की कैते करें पुल्वारा पुलवान स्वयुक्ष स्थानक तम के म्हास



श्रार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

# नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायकर ग्रविनियम जी० ८०के श्रतगंत कर मुक्त होगी।

सारा बान चैक/मनीबार्डर/बैक कुष्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रायं वर्मायं नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर पर अंकित किए जाएगे।

### निवेदक

राजगोराल हालकाले पूर्वचेष महाहाय वर्णेराल हालकाल आर्थ संरक्षक विकित्सालय प्रवान, विस्ती प्रयान प्रयान पूर्व प्रवान, तांठकाठ कार्य मंत्रीतियि वार्य वेन्सीय महाहाय युम्मीतांक मतिः कता सँगा समा वैस्टिंग्ट्र

सीकन्य से . शहाकियां वो हट्टी प्रा० लिमिटेड , १/४४ कीतिनयर, श्रीकोनिक क्षेत्र, वर्ड विस्ली-११००१ आर्य सन्देश साप्ताहिक पविका के ग्राहक बने, ग्रौर बनाएँ क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) धार्यों (हिन्दुर्घों) की महान् परम्पराधों की याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से आश्म बेतना आमुद्ध करती है।
- (४) भारतीय सस्कृति के भूले बिसरे प्रसगीं, महापुनवीं तथा भादर्श सस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (४) ऋषि, मृति, तपस्वी झाप्तविद्वानों की वाली का बोध कराती है।
- (६) परनेश्वर की पवित्र वासी बेद का जोबनीगयोगी मनुर सन्देकः साती है।
- (७) नये लेखकों, कवियों, चिन्तकों, प्रतिमाधाली विद्वानों, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (द) वार्मिक, सामाजिक ग्रीर ग्राध्यात्मिक ज्योति से जन-मन्दिर को प्रकासित करती है।
- (e) बेद, उपवेद, दर्शन, उपलिबद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरण्यक, बाह्यख्यत्य गीता, रामायख, नीति, ऐतिहासिक, बनूस्य आर्के प्रत्यों, जिन की अधिकांश लोगों में पढा ती क्या देवा भी नहीं, समस्त आध्यारिनक चगत् को जिन प्रत्यों पर सदा गर्के रहेगा उन के बहुमूल्य मोती हुद सप्ताह बटोर कर भाषकी भजनों भर देती हैं।
- -(१०) अपएक देर न कोलिए साज ही प्रचना वार्षिक चन्ता २० इसकें भेजिये, वर्ष से प्रोन्क विशेषाल तथा महर्षि दवानन्य निर्वास्त्र स्वताच्यी पर प्रकाशित, ५० वसके पूल्य की सब्य बनोहारी स्मा-रिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक : सार्व-सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

साला कार्यालय—६३, गली राजा केशरनाथ, कीन : २६८८३८ वायडी वासार, दिल्ली-६



# अोउम् अन्दर्भाष्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिध सभा का साप्ताहिक पत्र

मृत्य एक प्रति ५० पैसे वय ६ श्रक २०

द्यार्थ केन्द्रीय सभा दिल्ली के

रविवार ७ धप्रैल १६ ५

द्मार्थं सबस्सर १६६०-५३०८५

चैत्र २०४०

दयानामा = -- १६१

# देश की स्वाधीनता व एकता के लिए आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है —हंसराज भारद्वाज आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर आर्य नेताओं का उद्बोधन

तत्त्वावधान मे २४ मार्च १६८५ को द्यार्यसमाज का ११०वा स्थापना-दिवस समारोह विट्ठल भाई पटेल हाउस के प्रागण में दिल्ली की सभी व्यार्यसमाजी एव शिक्षरा सस्यामी द्वारा बह बमघाम से मनाया गया। इस ग्रवसर पर बोलते हए समा रोह के मुस्य ग्रतिथि केन्द्रीय राज्य विवि मत्री श्री हमराज भारद्वाज ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि ग्राज देश की एकताव ग्रन्वडता को हमे हर कीमत पर बनाये रम्बना चाहिए नेया देश को बाहरी खतरो से सामना करने के लिए हमें एक जुट होकर कार्य करना है। इस श्वदर्भ मे प्रार्यसमाज ने अपनी महत्त्व-पूर्ण भूमिका निभाई हैं। उन्होंने कहा कि भारत ऋषि मूनियों की पुण्य भूमि है। समय-समय पर यहा महापुरुषो ने जन्म लिया है। इसी

भारत भूमि पर आर्यसमाज के

सस्थापक महर्षि दयानन्द ने जन्म

लिया और उन्होने धार्यसमाज की

स्थापना कर देश में फैली विभिन्न

कुरीतियो का डटकर विरोध

किया।

दिल्ली के मनापौर श्री महेन्द्र सिह साथी ने कहा कि जब मैं भारत की आजादी के ग्रान्दोलन का इति-हास पढता हूतों मेरे सामने यह

कल ही मुक्ते एक जिटठी मित्री है जिसमें लेलक ने अपना नाम तो दिया है तेकिन पता नहीं दिया। उट जित्ठी में मुक्तसे कहा गया है कि १०



भ्रायसमाज स्थापना दिवस पर बोसत हुए श्री मह इसिह साथी मच मंबैठ दार्थे से श्री रामगोपाल शासवान केन्द्रीय राज्यसन्त्री श्री हसराज भारद्वाज अब्ब राज सचीक श्री सोमनाय स्परवाह श्री क्षितीश नुमार श्री सहाशय घमणल जी।

एकदम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास में से यदि झार्यसमाज के इतिहास को निकाल दिया जाय तो ऐसा लगता है कि जसे झाजादों के सान्दोलन को ही निकाल दिया हो। उन्होंने साव विद्वल होकर कहा कि स्रप्रेल तक तुम यह बना दो कि तम हिन्दुघो के साथ हो या मिलो के माय क्योंकि १० स्रप्रेन के बाद हमने हिन्दुबो का साथ देने वाले सिलो को सरम करने का फैसला कर लिया है। पता न होने से मैं उस चिट्ठी के लेलक को जवाब तो नहीं दे नक परन्तु इस नावजित्त सभा । पोध ना करता हूं कि नमें हिन्दु के साथ हूँ ना सिक्षों के साथ हूँ ता देश की प्राप्त का साथ हूँ । दि तक जिल्हा की प्राप्त के साथ हैं । दि तक जिल्हा की प्राप्त के साथ के सिप्त की प्राप्त की सिप्त की सिप्त

उन्होन पजाव की समस्या व चर्चात ते हुए नहा कि जब म अ बादियों ने अपनी अन्याववाद व भावना फनायों है नव स पजा व दिकास क्का गया है। नहना संप्ता के खेत उजन्म गये है और कारवा वन्द्र हो गये हैं। पजाव के नाम प वन्द्र को गोली से अपना इन्द्र पूरे करने वालों ने जहा सारे देश क अपने विरुद्ध कर लिया है वहा पजाइ

(जेव पृष्ठ १० पर)

### पंजाब समस्या पर श्री शालवाले प्रधानमंत्री जी से मिले

सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले साज प्रात प्रधानमन्त्री श्री राजीव बाजी से मिले। उन्होंने प्रधानमत्त्री की पजान की समस्या थीर उस्त्र पर हिंकू जनता के विभारों से उन्हें सवगत कराया। बाराचीत के दौरान बी शालवाले ने पंजाब में वातावरणा के सुकान के लिए प्रकालकों की मर्तित वहीं के नजरवन्द हिन्दू नेताओं

को भी अविलम्ब रिहा करने की मौगकी।

श्री सालवाने ने सिरोमिए। गुर-द्वारा प्रवन्धक कमेटी के बन से गुर-द्वारों में शरनास्त्र के ट्रेनिंग देने के प्रावधान तथा द्वाल में चण्डीगढ़ धादि मे हुए डिसास्मक चटनाधों की धीर भी प्रधानमन्त्री भी का ध्यान भाइच्ट करते हुए साबह किवा कि (बैच पूळ शे पर)

### डा. हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाला

सार्वदेषिक प्रायं प्रतिनिधि समा के प्रवान श्री रामगोपाल शालवाले श्री घोमप्रकाश त्यागी (मत्री) तथा श्री सिण्वदानन्द शास्त्री, प० सत्य देव विद्यालकार गुरुकुल कांगडी हरिद्धार में पचारे। श्री रामगोपाल शासवाले प्रपत्ने साथियों के साथ सीधे पुरुकुल कागडी फार्मेशी गए वहाँ पहले ही संकडो कार्यकर्ता एव कमवारों उनकी प्रतीक्षा कर रहे

थे। प्रम एव स्दमाव के वातावरत्।
में उक्त प्रवसर पर डा॰ हरिप्रकाश
ने गुरुकुल कागडी फामेंसी के व्यव-सायाच्यक पद से त्यागपत्र दिया तथा श्री बलेव शायुर्वेदालकार को फामेंसी के व्यवसायाध्यक्ष पद पर नियुक्त विद्या गया।

फार्मेसी के हाल मे सैकडो कर्म चारी एव भविकारियों के मध्य श्र्र (शेष पृष्ठ दो पर)

### सत्संग वाटिका

प्रस्तुत सन्न मर्गीय दय न द का भ्रय थिक प्रियमा। ग्रन सन्न प्रथम उन्हीं के किय भ्रम प्रस्तन कर रन्हें।

धा हे सक्त जान क उत्सति कता समय एव्ययुक्त, गृहस्यका सब मुझो कद तापगमत्वर प्रापकृता करके हमारे सम्यण द्याग का क्लाणकारक गुरा कम स्वभाग्यार प्राप्य के बहुसब हम को प्राप्त र विद

प्रस्तुन सत्न प्राप्तनापरक है घीर प्राथनाका अथप्राय लागयाचना या मागना कर टिया करते हैं हमारी द्रष्टि मे यह प्रय यथा । नहीं प्राथना का वण्स्त विक प्रथ तो चाहना है मागना नही। चाहने भौर मागने म जो भातर है उसे हृदयगम कर लने स यह तथ्य प्रमाणित हो जायेगा । मानने में मानने वाने का किसा वस्तु की प्राप्ति मे ग्रामी माग प्रत्तुत करने के भ्रति क्त भ्रय कुछ नही करना होना। हा मागन मे बाल एव दीन भाव लाने झवस्य ही झवस्यकः । यदि ऐसान किया जाये नो फिर उसका प्रमाव भी नहीं पड़ता। कि तूचाइने में झपने पण पुरुषात की परम भाव यकता हवा करती है। बस्तुन प्राथना है ही -- सपने पुण पूरुवाय के पश्चात सहायता की इच्छाकरने का नन्म । साब ही याचना मे जहा मन मे हीन माव उत्पन्न होन सगत ? वहा चाहने म ऐस बात नही होती प्रिवित उसमे ता बात्मतीय तथा भात्म दिवस जागृत हो उठता 🦥 । कवि वर रहाम ने क्यासुदर कहा ह—

> रहिमन याचकता गहेै व छोट ह्वुँ जात ।

अय न मागन संबद्धा व्यक्ति भी छोटा हो जाना है। प्रायना—मानव गांधा न प्रायना को याचना के धाय में कभी स्वी कार नहीं किया उनका कथन है कि प्रायन करना याचना करना नहीं। वह

# आध्यात्म सुधा

ले० यशपाल ग्रायं बन्धु

ग्रो३म विश्वानि देव सविनदुरिनानि गरासुव । यद्भद्र तन्न श्रासुव ॥ यजु०३०।३



नो ग्रत्माका पूकार है। वैसे प्राप्तनाका धामी प्रक्रव्याच सवात् उत्कृष्ट प्रयोजन के लिए पुरुषाथ सदैव अपक्षित हमाही करता है। प० चनुपति जो ठीक नी जिसते हैं कि उपासकों की परिभाषा मे प्राथना भौर प्रतिका प्याय हैं। हाथ पसारे हैं तो हाथ हिलाने भी स्वय होंगे। (ब्रष्टब्य-सच्या रहस्य पृष्ठ २५) इसी प्रकार प० लेकराम ग्रन्य मुसाफिर ग्रपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक कुलियात बाय मुसाफिर मे लिखते हैं कि — सच्ची प्राथना को सकल्प कहते है और सकल्प ग्रुम गुरा। को धारता करने की इच्छा का कहते हैं। जबकि म्हर्षि दयानाद का कथन है कि ---अपने पूरम पुरुषाय के उपरान्स उत्तम कमाको सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामध्य वाले अनुष्य के सह य नेने को प्राथना कहते हैं। (बार्यो व्यय रस्त माला)स्पष्ट है कि उपरोक्त किसी भी महामनीषि ने प्रायमा का श्रन याचना करना नहीं माना। वस्तुत अब धपने पूगा पुरुषाय के पश्चात व्यक्ति यक कर चर हो जाता वधीर फिरभ काय की पति दिखा नही देनातो वह ॰ याकुल हा उठता ै। उस ०याक्लता भर ८ णामे घत करण से जो पुकार उठती है यहास चा प्राथना है डा॰ रामचरण सन्त क धनु सार मनोवितान का इंग्रिस प्राथना एक प्रकाश "ससकत ३ जीवन मंसकत या सूचनाए ह हमें ग्राग बढाती है। हम चुपचाप ग्रपन की जसा कड़ते हैं या मानते जाते हैं वैसे ही निरतर बनते जात है। हमारी प्राथन ए भी एक हमारी धाननी ही भावनाए हमारे मुख से निकलकर हमारे गुप्त मन का निर्माण करता हैं। (कल्याण प्राचनाक पृष्ठ २८३)

यही भाव लक्र अब हम इस मन पर विचार करते है तो चाहने वाली बात भीर भापुष्ट हो जाती है। क्योकि इस मत्र में जो दुगणों क दूर करने की प्राथना की गई हे उसमे यदि हुम स्वय दुगरा त्या ने का कोई प्रयस्त ही न कर तो फिर यह हमारी प्राप्ता किस काम की ? जब हम स्वय दुग लो को त्यानने एव सदगुणो नो बारण करने • (हैलए प्रवत्नशील होते हैं दौर किर में म सफस नहीं हो पाते, दुनण हठात हमें भा नर घेर नेते हैं तब आकुले हो उठना स्वामाविक है। भौर व्याकुसता भरे इन क्षराों में न्मारे अन्त करण ने जो पवित्र पुकार उठगी अस्ती वास्तविक प्राथना होगी । भीर यदि ऐसा नहीं हभा तो फिर प्राचना एक आन्दिक न्यायाम बनकर ही रह वायेगी । वदि हम अपने प्यारे प्रभू से दुगुणों भीर द्व्यसनी को नर करने की प्राथना करते हैं तो हमे स्वय भी उसक लिए कुछ न कुछ पुरुपाथ करना होगा। इसीलिए हम प्राथना को बाहना कहते हैं। यदि हमारी बाह होगी तो फिर हम भी दुगलो भीर दुव्यसनो को दूर करने भीर सद्गुली को बारण करने के लिए खबस्यमेव प्रयत्न करेंगे। फिर भ्रपने पूरवाय भीर ईंग्वर की सहा वता मे जमारा मनोरच धवदयमेव सिद्ध होगा इसमे किचिन्मात्र भी सदेह नही

यह मत्र एक व्यावहारिकता की धोर सकेत कर रहा है। वह यह है कि प्रथम हमें दुवुचों और दुब्बंसनो को त्यागना है फिर सद्युणी को बारण करना । यह ध्रत्यन्त •्यावहारिक बात है। प्रथम **ह**म अपने मलिन पात्रों को स्व छ करते हैं फिर उनमे स्वादिष्ठ पदाय डालते हैं। यदि हम ने पात्र स्वच्छा नहीं निया तो उसमे डाला दबा खादा पद व भी मिनन हो जायेगा। धन व्यावहारिकना न्सी मे है कि प्रथम हम अपने अपत करण की पवित्र कर उसकी मिलनता को दूर करें फिर सदगुणो को बारण कर। यटिन्हम भाग प्राप्त न भी कर सके केवल दूरित की हीं दूर करने ने सफल हो गये तो भी यह बहुत बडी उपलब्धि होयी। किं तुज्ब प्रमु की कृपा और अपने प्रवास से दूरित भी दूर हो गये भीर भद्र भी प्राप्त हो जाये तो फिर कहना ही क्या? मत्र भी प्रथम दूरित को दूर करने की बात कहता है पश्चात भद्र प्राप्ति की।

इस मत्र की एक विशेषता और भी है। वह यह कि यह नज्ञ बहुवचन मे है। एक अकेला दुरित नहीं त्यांगे हम सभी दरित को त्याग कर सदगुणो को बारण कर। एक भकेला उन्नति को प्राप्त हो भौर क्षेत्र सारा समाज भवनति को तौ काम नहीं चलता। एक भद्र हा और शेष सभद्र तो भी नहीं। इसीलिए यत्र से बहु-वचन का प्रयोग होकर यह कहा गया है कि हम सक दुगण पुरुषसनो भीर दुस्ती से छूट कर सद्गुण सुकम भौर स्वभाव तवा पदार्थों को प्राप्त हो। भागसमाज का नियम भी है कि प्रत्यक को प्रपनी ही उनति में सतुष्ट नहीं होना चाहिए। प्रतः हम सब मिलकर दुगणो दुव्यभनो को त्यागने भौर सद्गुर्गों नो प्राप्त करने के लिए पुरुषाथ करें और सविताओं कि क्प्त प्ररक देव है उससे सहायता की इच्छाकर इसी मेहमाराकल्याण है।

> -- बाय निवास चारनवर मुरादाबाद १४४०३२

### हरिप्रवाश न कार्यभार (प्रष्ट १ का शव)

(१५० रका बध)
रामगोपान जो चालवान ने चालखा
की कि प्राज से चाठ हरिप्रकाश
गृठक कागरी के मुद्राधिकराना
पद पर धामीन होगे। हाने सभी
कमचारियों और ध्रिमिनियों से
श्री बनदेव जी को भी पूग मन्योग
हेने की ध्रिमाना जी मरबाह गृर
कल कागरी विद्वविद्यालय के कल
पति श्रा वनभद्र कमार हजा तथा
मत्यान मिद्रातालकार भी वहाँ
पहन वार् म

पामसी से श्री समा प्रधान जी के साथ उपरोक्त सभी लाग गुरुकल कागी के कायात्य गए वर्ग पर श्री बलमद कुमार हुवा ने गुरुकुल कागी के मुख्याधिष्टाना के पद से स्थान पर दार हुवा की राजके स्थान पर दार हुवा की राजके स्थान पर दार हुवा की राजके कुल कागी का मुख्याधिष्टाना नियुक्त किया गया। दार हरिप्रकाश के सप्ते पद का चार्ज ग्रहण कर लिया है।

प्रकार की मूचनाए या सकत ही हैं।

इस श्रवसर पर संभी महानु भावो ने डा॰ हिन्प्रकाशः के मुख्या विष्ठातापद ग्रहुण कन्ने पर श्रपनी राभकामनाए प्रकटकी। प्रनार विभाग सावदेशिक सभा दिल्ली

पजाब समस्या

(पृष्ठ १ क नष) पज व न्मस्थाके सम्बन्ध मे पजाब के विशिष्ट हिन्दुम्रोसे भी प्रधान मन्त्री जीकाविचार विमश करना म्रावन्यक है।

श्रा शा-वाले ने बाद में एक प्रसद्भ यमें कहा कि प्रधानमन्त्री जाने उट भाष्त्रासन दिया है कि सरकार प्रजाब के नजरबन्द हिंदुकी को रिहाकरने पर विचारकर रही है।

श्री घालवाल ने यह भी कहा कि प्रधानम त्री जो ने श्राव्वासन दिया है कि जुनाव के समय जिन नीतियों की घोषाना की घी सरकार उससे पाछ नहीं हरेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पजाब के हिन्तुजों का एक घिष्टमण्डल शीध्र ही प्रधान मन्त्रों जो स्मानकर प्रधानी स्थित स्पष्ट करेगा। प्रधानमन्त्री जो ने खिष्टमण्डल से मिलने की स्थीकृति दे दी है। प्रचान विभाग सार्विश्वास समार विश्वास सार्विश्वास समार विश्वास सार्विश्वास समार विश्वास

### 🛨 वचनामृत 🖈

"ईसाइयत और परिचमी सम्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सुवधान करने का सेहरा यदि किमी व्यक्ति के सिर बार्षिन का क्याँगाय प्राप्त हो तो स्वामो दयानन्द जी की थ्रोर इशारा किया जा सकता है। १६वी सदों में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है जमने हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानो तथा श्रम्थ धर्मावलम्बियों को भी लाभ पहुँचा है।"

--पीर मोहम्मद युनुस

'महर्षि दयानन्द भारतमाता क उन प्रसिद्ध और उच्च घान्यन्यो में से थे, जिनका नाम समार क इतिहास में सदैव चमकते हए सिनारो की नरह प्रकाशित रहेगा। वे भाग्नमाता के उन सपूतो म से है जिनक व्यक्तित्र पर जिनना भी प्रभिमान किया जाए थोडा है। नपोलियन और सिकन्दर जैमें प्रनेक सम्राट एव विजेना समार म हो चुक है, परन्तु स्वामी जी उन सब से बढकर थे।'

--खदोजा बेगम एम ३ए०

सम्पादकीय

# भिडरावाले के उत्तराधिकारी बनने की होड़

पजाब को समस्या धव केवल धकाली दल और सरकार की समस्या नहीं रह गई है, सारे देश का हिल इसके साथ जुडा हुआ है। जब कुछ समय पूज उपवादियों और पृथक्तावादियों ने देश की एकता और अवकरता को चुनोतों दी भी तब सारा राष्ट्र जितित हो उठा था। पजाब भारत का सीमावतीं राज्य है और अगर यहा कोई गढ़वड़ होती है इसका असर अन्य राज्यों पर भी अवस्य गढ़ता है। प्रधानमन्त्री का यह कथन यथाय है। प्रधानमन्त्री का यह कथन यथाय है। अकान ने ताओं को जारास्त्र से हो ऐसा रहा है हिक यदि उनकी एक माग स्वीकार की जाती है वे अन्द्र धपनी दूसरों भाग सामने रख देते हैं। उनकी आम धारणा वन गई है मरकार आंटोलन की वमकियों से उरकर मुक जायेगी। उनके दवाव में आकर सरकार का मुकना समस्य जायेगी। उनके दवाव में आकर सरकार का मुकना समस्य उद्याव देशा है। देशे भी समक्षीते का माग दिखाई पढ़ने से पूर्व ही उपवादी कोई न कोई धमाका करके बतावरण विवादत कर देते हैं।

सावने प्रीर विचार करने पर दिखायों यह देता है पजाब सकट की जड़ में राजनतिक प्रतिब्रिन्दता है। इसी से राजनतिक वात-वरण में जहर चुन रहा है, घोषी-सच्ची नात नहीं कही जातो। नित नयी माग शर्ते समभीते के लिए पेश की बातों रही हैं। पजाब को जनता की समस्या देश के ब्रन्थ राज्यों की जनता की समस्या जसी ही है। परन्तु साम्प्रदायिक भाषार पर राजनीति चलाने का परिणाम यह हुआ पजाब दो देशों के वट मया है। जहां गुटवन्दी हो, साम्प्र-दायिकता का बोलवाला है। बहां पर शान्ति भीर स्थिरता को करूपना नहीं की जा सकती।

कत से कुल के बाद हरवन्दीगह लोगोवाल पपने शह को कुट करने से समें हैं। उनका मह कहता है कि वब तक केन्द्र सरकार उनके सामने पुटके न टेक दे, वे बातचीत नहीं करने। सरकार (उनकी सोप के प्रमुक्तार) जीक के सािपी को खोड दे, दिख स्टूबट फरदरेशन से प्रतिवन्ध हराने तो सकाली नेता कहते हैं हम प्रसन्न होंगे। सकाली नेता कहता हो कहा रह वादेगी हो कर करता ही कहा रह वादेगी? इस समय मकाली नेता एक हमरे से बब वब कर हा एक वादेगी? इस समय मकाली नेता एक हमरे से बब वब कर उन्हें सक्त स्थाप वे रहे हैं। बही सही कसर विरोगिण पुस्तारा कमेटी ने पूरी कर वो है अपने एक प्रस्ताव में सेना में विद्रोह करने वालो की प्रसत्त की है। कुछ प्रकासी नेता बिनमें ठेकेशार मुरखन सिह बीर उनके साथी बाधिन हैं अपेमती इन्तिरा सीधी की हरया को उचित ठहरा रहे हैं।

वा बनरेल सिंह जिंबरावाले वे इन पुष्य वो गुटो से घलन प्रपना गुट बड़ा कर लिया था, तब तबजडी ने उसका समर्थन किया बा और श्री लॉबोबाल ने उसका विरोध करने के बजाय उससे जी बढ चडकर उत्त जक मायण देने शुरू कर दिये थे। परन्तु प्रव जनरेल सिंह चिडरावाले तो नहीं है पर खब थे नेता उनके उत्तराधिकारी बनने की होंड से शामिल है। प्रिष्ठरावाले की शहीद करार दे रहे हैं। कुछ ऐसे सिर फिरे हैं जो भिडरावाला जीवित है कहकर लिखकर प्रवास की प्रामीण जनता को बरगला रहे हैं। इबर त्ववडों कह रहे हैं सरकार पहले झानन्दपुर साहिब प्रस्ताव स्वीकार करे तब बातचीत की जायेगी। जन्दन 'शावजवेंर' में उन्होंने एक वक्तव्य प्रकाशित की जायेगी। जन्दन 'शावजवेंर' में उन्होंने एक वक्तव्य प्रकाशित की जायेगी। जन्दन 'शावजवेंर' में उन्होंने एक वक्तव्य प्रकाशित करा वर्षा है। जिसमें बहा सिलों के लिए प्रवास विश्वा कामा मध्या प्रवास उत्तराह की हो कि २५ वष् के लिए प्रवास का शावत सिलों के हवाले कर दिया जाए और दो कीमों के साथार वर जुनाव कराए जाय। मतलब यह है कि प्रकारों देश की शावत होना चाहिए। गास्टर तारासिंह ने एक बार कहा या कि मोची लगाने पर जो हुछ मिल जाए उसे स्वीकार कर लो परन्तु सपने बक्ष स कमी निगाहों से स्रोक्त सद होने दो।

### उप्रवादी फिर श्रपने विलों से बाहर निकलने लगे हैं

बत युक्स ही प्रकाली नता पजाब की जनता को उत्त जित करन में लगे हैं। फ्रकालियों से किसो मने की प्राधा नहीं करती वाहिए। वह समभौता करना नहीं वाहते क्योंकि वह जानने हैं नि कोई भी समभौता किया तो जिन लोगों को तरह नरह के सब्ज बाग दिखाकर उन्होंने उत्त जित कर रखा है वह उनकी जान के दुश्मन बनकर सामने धा जायगे। वेसे भी अकाली उठ को नकेल उधवा-करों के हाथ में हैं। जब तक उथवाद का इनाज कठोरता से नहीं प्रा समस्या प्रह वाये नामने खड़ी ही रहेगी। गृहमन्ती श्री बन्हाएगे राज्य सभा भे कहा कि पजाब में उथवादियों की मदद व प्रोत्साहन देने वाले स्वण्यानिकर व अन्य धमस्यानों में शहत तस्करी करने वाले व उथवादियों को प्रकाश एवं ने वाले विदेशी तस्वों की पण्याल का काम जारी है।

हाल ही में कुछ पकरें गये सिख उप वादियों से दिल्ली में पूछ-ताछ की गयी तो उन्होंने स्वीकार किया कि पाकिस्तान में विभिन्न किदिरों में प्रशिक्षण प्राप्ण २०० उपनांधी भारत में प्रविष्ट हो गए हैं। प्रवास से जो सबरें था रही हैं उनसे पता चलता है कि पत्रास के तीन सीमा से लगे जिलो—गुस्सासपुर प्रमृतसर बौर किरोजपुर के साम काने वाली सीमा से गुमराह नीजवानों को पाकिस्तान भेजने का सब्सा बोर-सीप स चल रहा है। कहा जाना है दीनिक कारवाई स पहले लगजग १५०० उपवादी भागने में सफल हो गये थे। सम्मवत वे सपने विलो से निकलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैस-जैस पजाब स सेना हटनी गुरू हुई है, उपवादियों की गतिविधि फिर बढती जा रही है।

भारत का भाग्य सक्षक योग्य युवा हावों में है पर यह समय ही बना पायेगा कि हमारे कर्णघार इस भवर से नैया से पान में कितने कुचल सिद्ध हो पाय में ?

--- यशपास सुघांशु

# प्रसुव यज्ञम् – यज्ञ का प्रसार करो

लेपर पर वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य, वेद सदन, महारानी पथ इन्दौर

### (१) वसो पवित्रमसि। यज्ञ पवित्र है। यज्जुर्वेद १।२

यज्ञों का प्रचार प्रावश्यक ह तथा प्राज की परिस्थिति म ता परम प्रावश्यक तथा प्रतिवासंह । प्राज की सवों योगी प्रावश्यकता यन हो है क्यांक यह पवि-कर्माम— प्रयात् पविज है परम पविज-कर्ता भी है एक हो प्रकार म नहीं प्रपित् सैक्डो एव सहस्त्रों प्रकार से पविजकर्ती है तथा पविजता का हेतु है— ऐसा यजुबब क प्रथम प्रध्याय के इसरे मन्त्र में कताया है। प्रच वेद तीसरे सन्त्र में कहता है

### (२) बसो पवित्रमित सतधारम्। यज्ञ सैकडो प्रकार से पवित्रता करता है। यज्जुर्वेद १।३

यह यह महायात सहार वा चारण करने होर छाड करने होर छाड करने वाला करने हैं। तथा करने हों पड़ करने वाला करने हैं। तथा वारण करने हों पड़ हों करने वाला है जैसा कि नक्षी पित्रमारी होते बाला है जैसा कि नक्षी पित्रमारी होते करने करने के सहाया प्रभाव के तीसरे मन्त्र में बताया है। वेद ने यह की महान सामन्य का यहां प्रतिपादन किया है। वह बहुत की महान होते करने करना के हाला हो की महा पित्र प्रमेक प्रकार के हहालों की भी करता है वहीं है माझ सामन स्वारण करने करना है कहा पड़े सहार है। सत वेद ने कहा नो करता है। सत वेद ने कहा नो करता है। सत वेद ने कहा नो

### (३) चायुर्वा सस्ति चायुर्मे देहि। यस सायु प्रदाता है। यजुर्वेद ३।१७

पानंत गर नित्यातु दने तानी है हम को वह सायु प्रतान करे। यह रहस्य स्थान से सायु प्रतान करे। यह रहस्य स्थान से सायु प्रतान से सायु प्रतान सायु से सितान सायु से सीवत तरह देता चाहिए। वर्षमात समय में जीवत गृज्यु (स यमय प्रदान समय में जीवत गृज्यु (स यमय प्रदान समय में प्रमुत प्रवाता सिता का विलास का प्रयात सिता का विलास का विलास स्थान स्थान स्थान से सीवता सायु सीवता स्थान स्थान स्थान का स्थान से मूर्य तीवता सीवता का वृद्धि तीवता से सीवती जा नहीं है। इससे समये के लिए

#### (४) माह्या। सज्ञको कमी मत छोडो । यजु० २।१

इस पवित्रकर्ना वायु के साथ देख देख न्तरों में फंकन वाने वायु को सुद करने व से सहार को बारण करने बाने उत्तम स्थानों से सुसी को वडाने वार्य प्रका को सह खोडों- प्रवाद यक्त का अनु उठान प्रतिदिन प्रवश्य करों। ऐसा बेद

का स्पष्ट रस सम्ब्रण मन्त्र में स्नादेश हैं
तथा इसी वेद के मन्त्र में सीमिस—मी
कहकर विज्ञान के प्रकास का हेतु भी
सोर सुर्वं की किरणी में पिसर होन
वाला भी हैं यह भी बताया है यत करोगे
तो यज के विज्ञान का प्रकाश होगा । वह
यज्ञ न ट नहीं हु।वा। गूर्यं का किरणों में
स्थिर होने वाला है। यह भी जात खादेशा सीर वायु के साथ देश देशानारों
म भी फैलता है, यह भी सिद्ध होगा।
वायु को शुद्ध करने वाला है यह विज्ञान
भी सिद्ध होगा। वायु को शुद्ध के कारणा
विचन को जीवन देकर भारणा करने वाला
है यह भी समूभुत हो जायगा।

### (१) प्रवृष्ण के धातक परिस्थाम --

भोपाल के वायु प्रदूषण ने सिद्ध कर दिया है कि उसके श्रमेक प्रकार के दूर्ण िए। म हए भीर उत्तरोत्तर प्रकट हो रहे है। मनुष्य मरे भी बीमार भी पड़। पशुपक्षी, जलीय प्राणी मरे जो बचे उनमें भी न्यूनाधिक विकार हुए ग्रीर हो रहे है। वृक्ष वनस्यति, भ्रन्त, फल शाक **स**०वीनष्टहुई विषयुक्त हो गई भीर जिनने सेवन किया उनको रोग न्युनाधिक हो रहे हैं। गर्भस्थ शिशुधो पर भी धनेक प्रकार के दुष्परिणाम प्रकट होने लगे हैं। य सब क्रमाव पयावरण के दूवित होने से हुए। धत दूषित पर्यावरण के शोधन के लिए विशाल रूप से यज अवस्य करना चाहिए। कारसाने बन्द नही हो सकते। मोटर कार ट्रक, रेल, ह्वाई बहाज चलना ब ट नहीं हो सकते हैं। पर्यावरण को शुद्ध पवित्र निर्विष करा के लिए उसम जीवनीय रोग निवारण एव पुष्टि प्रदाता तत्त्वी का प्रसारता यज के द्वारा सरलता से सम्भव है। यत वर्तमान समय मे यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ स्ताय है।

### (६) इम बक्त नगत प्रश्ने। स्राज की पहिल्लित में बक्त को प्रधानतावी। सञ्जु०१।१२

शास के समय में यह के तुमम एवं विज्ञानपुत कमें को वर्तमान कमव के मारतीय वंशानिक हृदय से समीकार करते हुए भी सार्वजीनक कर से व्यापार में लाने में अपनी प्रतिष्ठा की हानि अनुषव करते हैं और वैदेशिक वंशानिकों को सोर मार्ग दर्जन की प्रतीका में रहते हैं। वे बो उपाय करें वैखा ही हुत भी प्रतुष-रण करें तो सपनी प्रतिष्ठा है। परस्तु विदेश के वैशानिकों को मह सा झान होई है। यारनवासी तो जानते हैं। सार के वंशानिकों ने हस समय पर्वाषरस्त शोधन काथ में ससार के वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करने में ध्रयसर होना चाहिए। इस यज्ञ कार्यको प्राथमिकता प्रदान करें।

### (७) महान बीज्ञानिक महर्षि वयानन्द--

महर्षि स्वामी दयानन्त सरस्वती ने समार के महान् उपकार के क्षिर प्राणि-माल के जीवन क लिए यज्ञ करना सर्वि बावञ्यक बताया। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए और जीवनीय बनान है लिए वायुमाडल को शुद्ध करने, वृष्टि वल ग्रादिकी शक्तिया उमे सुसस्कृत कर समस्त देश देशान्तरो एव पृथिवी बन्तरित्र भौर खुनोक से फैलाने के लिए लक्षाहुति के यजो का विद्यान किया। अर्थात् एक लाख या अधिक आहुति वाले यज्ञ कुण्ड भौर उनके लिए विविध प्रकार के हञ्यपदार्थों का विधान किया। एसे लक्षाहुति कुण्ड चारचार हाद्य लम्बे, चौडे गहरेतवा २ लाख बाहुतियो के सिए अहाथ के कुण्डो के निर्माण का विघान किया। २ मीटर -३ मीटर लम्बे चौडे कुण्डो से विशास परिसाण में बडे-वड यज्ञ होने चाहिए, तभी पर्यावरता के प्रदूषस्य शान्त होने ।

### (=) लकाहृति यज्ञो से शान्ति एव सुक्त

ये लक्षाहुति कुण्डदैनिक श्रविनहोत्र के लिए नहीं है। किसी श्रीत योग व इष्टि के लिए नहीं हैं और वोडश संस्कारी के लिए भी नहीं हैं घपितु सार्वभीस प्रदू षित पर्यावरण के नाक तथा प्रमुक्त पर्यावरण बनाने के लिए ही हैं। ऋग्वेद दशम मण्यल के सूक्त ६= के मन्त्र दसवें एक ग्यारहवें मे ६६ हजार माट्रिक का उल्लेख वृष्टि यज्ञ के लिए हैं । शत पर्वा-बरण शोधन ऋतुसृषार, भवर्षण रोक कर वृद्धि करने, उत्तम कृषि, मेघो की वृद्धि प्रादि के निये बढे-बढे, यज्ञी का करना परम भावस्यक है। इससे भवि वृष्टि धनावृष्टि, तुफान धादि भी शास्त होते। ऐने लक्षाधिकाहृति यज्ञ धनेक स्वानो पर होने चाहिये । एक कुण्ड निर्माण के द्वारा ग्रयवा ग्रनेक वडी-बडी कुण्डों मेयज हो सकते है। परिस्थिति विशेष में ही इनका भागोजन होता है। बाब के समय में बन पृथिवी धन्तरिक्ष, सवन प्रदूषण हा प्रदूषण फैल रहे हैं, तो इनका धनुष्ठान करना परम धावस्यक एव हितकारी है। अन्य कोई उपाय है ही नही।

### (१) मृतेन वर्षयामितः। वस्तानिको मृत तेप्रवण्डरको । संबुक्तः।१

सस यज्ञ की व्यन्ति को वृतादि की बाहृतियाँ से बढाते हैं। (यजु ३३) यज का प्रधान द्रव्य घृत है। प्रावश्यकता धनु-सार उसमें चार प्रकार के होम द्रव्य सुगन्बत रोग नावार्क, मिष्ट पदार्थ धीर पुष्टिकर्ता पदार्थों की भी बाहिन होती है। ये ही पदार्थ पर्यावरण को निर्विष करते हैं शुद्ध पुष्ट भीर रोगनाशक बनाते हैं। प्रकृति के शेग या उपद्रव गति-वृष्टि धनावृष्टि भाषी तुमान भादि का भी निवारण करते हैं। पृत की मायुर्वेद में विषशामक बताया है। अनेक विष, उपविषो का शोधन वृत दुव, तकादि में होता है। साप काटने पर या सिखवादि विष सा लेने पर वत पिलाकर हो चिकित्सा हमारे देश मे प्रचलित थी धीर है भी। अर्थात जिस प्रकार वत को पिलाने से शरीर निविध हो जाता है उसी प्रकार पर्यावरण के प्रदूषस्थी के शसनार्थ वायुमण्डल को बृताहृति के बूझ से पूर्ण कर देने स आरथ्यं जनक लाभ धवस्य होगा। पर्यावरण जीवनप्रद बनगा। स्रत यज्ञ परम धावस्यक है। यज्ञान्त के मन्द ने सर्वान्त कामान्समध्य शब्द है। धर्मात्यको से सब कामनाधी की पूर्ति होती है। यही कामना पूर्ति का माब यत्का-मास्ते जुहुमस्तन्नो बस्तु-मन्त्रम है। उससे भी घाहति यज्ञान्त मे है। घत यज्ञ सब कार्यों की सफलता का प्रवल साधन है। ऐसासुनिध्यित विचार सब ने ग्रहण कर यज्ञानुष्ठान करने में ग्रग्नसर होना चाहिए।

### श्रुति सुधा

सुसदा जीवनदा, कल्याणी, अमृत है वेदो की बाणी ।

दुको का भजन करती है, मानस का रबन करती है।

भातिन पास फटकने देती, जनमनकोन मठकने देती।

सब युरितो की नाशक है यह, मंगल मार्च प्रकाशक है यह ।

जीवन मर्यादा - विधि इसमे, सद् विकासो की निधि इसमें।

विसने भी श्रृति-सुवा वसी है, उसकी कामा पलट नमी है।

का राणा प्रताप सिंह 'राषा' गन्नीरी एस० ए० पी० एच० की० १ प्रोफेसकं काकोनी कैवल (हरि०)

# आर्यसमाज के उत्थान के लिए कतिपय सुझाव

लेखक---डा० रघवीर मुमुक्षु

- (१) श्राय सन्यासियो एव वान प्रस्थो का एक ग्ला संयक्त संयठन है जो कि समस्त प्रचार व्यवस्था को समास स । ये प्रचारक केवल निधारित तिथियो मे हा समाज। क उत्सवो धथवा कथायो मेन जाए भपित एक एक व्यक्ति एक जिल तहसाल प्रयवा एक निश्चित पारींच वाल कुछ नगरो गावो को ल ल सथा योजनाबद्ध दग स वहा क जन जन ने प्रवश करके स्राय व का प्रचार कर। य व्यक्ति बादक चम एव संस्कृति क प्रवाराथ पूर्णतया प्रशिक्षित हो। मोखिक प्रचार क बार्तारक लखन विकल्सा यज्ञ श्रध्यापन साहित्य वित रण भारक द्वारा भा भायसमाज का सन्दब घर घर पहुच सकता ह। सन्यासा एव बानप्रस्थ भ्रपन गृहस्य काल क घरा मे रहन का माह खाड द। भारत में सभी ऐस बहुत स स्थान ह जहा उनकी महता धावश्यकता है।
- (२) जा लोग बानप्रस्य ध्यवना सन्यास्य बारण नहीं कर सक्क तथा गोलपा ध्यवन अपने बरण कार्यों सानन्य हां पुके हैं एवं स्थान स्थान न्यान्य हां पुके हैं एवं स्थान स्थान प्रहरूर स्थान वार्ष ने प्रकार स समाब स्थान कर सक्क। एवं हा लागा का गायक वग आप स्थान क सनुस्थान कार्य का स्थान स्थान क सनुस्थान कार्य का समाव स्थान का सनुस्थान कार्य का समाव स्थान का स्थापनाय मान सक्क
- (३) याजनाबद तराक स उपदशक विद्यालयान सम्बद्धासम्बद्धाः स्व चपदसक प्रवारक बनन का ट्रोनग दा काय । जिसक भनुसार पौराणिक मुसल मान इसाई बाब जन तथा धन्य नय सम्बदाया क सिद्धावा के पूर्ण जाता विद्वान् तयार । क्यू आए। अन्य सम्प्रदाय वालो का शास्त्राय का चलन दिया जाय। इसके साथ हा वरिक सिखातो क जाता क्ष्यबेखक उन सिखातो का प्रचार करत रहे। किसा मी सास्त्र का नम्भार ज्ञान न करक कहानियो पुटकतो क माध्यम स कुरुद्धेदार भाषा में श्राताक्षी का मनोरजन करने की प्रवा समाप्त होनः चाहिए। छपबेशक बनने से पूज उसी प्रकार की टुनिय वी बाम बैसी कि देवबन्द मे भौसवी बनने क लिए तथा बैसूरमठ मे राम कृष्ण मिलन का प्रचारक बनने के लिए बी॰ए॰ परीक्षापास होने पर भी कई बच तक प्रशिक्षण विया जाता है।
- (४) समाचो तथा समामो का काय देवल साप्ताहिक सत्सव वार्षिकोत्सव सवा सम्मेलगों तक सीमित न प्यूकर पूरे

- वय के लिए एक ठोग्न कायक्रम बनाया जाए तथा जन सम्पक किया जाए । वय की समाप्ति पर कायक्रम की पूलता झपू सता सुकार पर विचार किया जाए।
- (१) प्रचार का एक सधक माध्यम ह -साहित्य। इस दिगा में ईसाइ कितने मत्त्रचाल है वह इससे ही जाना जा सकता है कि सटको पर चौराहो पर यहाँ तक कि सापक चरा में जा जाकर य माग साटे झाट ट्रन्टों क डारा इसार्य-त का प्रचार कर रह है। सावसीयक सभा सम्ब्र साहित्य का प्रकाशन करता है किन्तु उसका सपसिला किभी नहीं हो पाती। सावसेश्यक्तमा स्पन्न समी समा सा को तथा व समाय चानने से सम्बर्धिय सभी समाजों को सनिवास क्य में वह साहित्य केय, जिसका कि उनके सबस्य मा सर्वार तथा दूपर साथा में उसका प्रचार भी कर।
- (६) प्रस्थेक धान्दोलन का प्राण उसका युवा शक्ति होती है। राष्ट्राय स्वय सेवक सव ने इस शक्ति को शस्तिल मारतीय विद्यार्थी परिषद् के रूप म साथ लिया। राजनोतिक क्षेत्र मंभी युवा कारस युश लोकदल सादि के माध्यम सं विभिन्न सगठनो ने इस खक्ति का उपयाग लिया है। श्रायसमाज न भा भाग कुमार समा भाग युवक परितद भाग वीर दल की स्वापना इसा उद्दय से हुई थी। इन सगठनो मे शक्ति भाषा तभा तो महात्मा हसराज तथा स्वामा श्रद्धान द जैसे लौह पुरुषों का ग्राच्यक्षता इनको प्राप्त हो सकी। भाज इन सगठनो की शिथिसता के कारण ही युवक वव धायसमाज मे नहीं भारहे हैं। जा भायसमाज के लिए चिन्ता का विषय है।
- (७) आयसमाज के साप्ताहिक सत्सनो ने निरम्तर घटती हुई उपस्थिति तया बच्चो एव युवा वय की अनुपरिवति सभी के लिए जिन्ता का विषय है। इसके सिए भावश्यक है कि सत्सनों से प्रीढ दासनिक एव वैदिक व्यास्थानी के साथ साथ बच्चो के लिए रुचिकर सरस-सुबोध कायकम हो तथा उनको इतना क्रियात्मक बनावा जाए कि जिससे युवको के लिए भी वे साकथण का केन्द्र वनें। वैसे यह भी सत्य है कि यदि माता-पिता बच्चो को दो भार वय का होने पर सवादार भाग समाज के सम्पक्ष में रक्ष तो ऐसा हो नहीं सकता कि बढा होने तक समाज के प्रति उनकी दिव न बनी रहे। मेरी दढ़ बारका है कि माता पिता अपने बच्चो को जैसा वाहें बना सकते हैं। यदि वच्ने प्रवदा बुबक बायसमाब में नहीं भाते हो इसमें

भविक दोय उनके भगिमावको का है।

- (६) यत तथा योग क द्वारा भी हम जन ममुदाय की अम्बसाय का और आकृष्ट कर नकन है। यवि इस शि कियों का बनाद परिज नहा निया जा मकता किन्तु विद शायसमाय में कुछ बाबु सन्त बानज व स्त्यासी पाणित्या में शास्त्रत हो नाए तो जन समुदार योग तथा ग्राम्पारिकता के नाम पर टाग रूने वाले प्रकार का नाम पर टाग रूने वाले प्रकार का नाम पर टाग इसी प्रकार का की जन समुदाय की कहा का के प्रकृ है। खुने स्वानो ग परिवारों में इसका प्रवार करके हुन जनसमुदाय की स्वारा प्रवार करके हुन जनसमुदाय की स्वारा प्रवार करके हुन जनसमुदाय की स्वारा प्रवार करके हुन जनसमुदाय की सम्बन प्रवार करके हुन जनसमुदाय की सम्बन प्रवार करके हुन जनसमुदाय की
- (१) उत्तर भारत मे तो विश्व **धववा सशक्त किसी न कि**मी रू<sup>ल</sup> मे द्यायसमाज का प्रचार हो ही रहा है। दिन्द भारत का स्थिति तो भीर मा शोचनीय है। वहा के लिए इसे प्रत्येक प्रान्त की भाषा में प्रचार करने वाले उप देशक तैबार करने होगे । यह काम सभाको के द्वारा ही सम्भव है। प्रयक प्रात मे उपवेशक विद्यालय सालकर वही की भाषा में झलग झलग प्रातों के लिए झसग उपदे कि तैयार किय जाए अथवा उत्तर भारत संही दक्षिण की भाषाओं 🕏 आजन वाले प्रचारक भेजे जाए । इसी प्रकार प्रत्येक प्रान्त की भाषा में स्राय समाज का साहित्य प्रकाशित करके वित रित किया जाए। प्रत्येक प्रान्त में हिन्नी शिक्षण केन्द्र स्रोलकर भी ग्राथममाज वहा पर हिन्दी राष्टीय एकता तथा भाग समाच का प्रचार कर सकता है।

सृष्टिका नियम ही महहै कि

विकास के साथ हास भी जुडा रहता <sup>3</sup>। ससार का प्रत्यक जड चतन पदाय पदाय इससे युक्त है। कभी भाय वैदिक वस ही तो ससार मंप्रचलित था भारत षम गुरुषा। कालकम से वह वदिकथम भारत पंभी तिरोहित हो गया। यही बात ग्रायममाज के माब है। वह भा फ्लाफुलादेश विदेत मे फला कि त समय के प्रभाव से श्रद्धतान रहातथा पहल काश्रपका हासी मुख हा पया। न्स स्थिति क न तो नकारन का अरू रत है तथान ही इसस रकर हनासाहित होन की बात है। यति बृटिया धनिव य हैं तो उनका इलाज भी सम्भव है। इस लिए ग्रब हमे न तो भ्राम मृदकर विना कोई ठोस कायक्रम बनाए प्रचार मन्न करते रहना चाहिए तथा न तृथि। से घवराकर साहस छोडकर बैठना चाहिए। माम पराश्यण करना बुरा नही किन्त घनिवाय है।

हम समस्याक्षी पर विचार करने के सिए प्रावण्यकता है कि प्रावसमान का तेतृवय पण्टित वय तथा उपरोक्त कप रम बार ध्यान है। उम्मेनन उत्तवक साहि करने के साथ साथ हम यातो पर विचार करने क सिए भी कोई बैठक सम्बा समोध्ये बुलायों जाए। यह गोध्ये चाहु कई दिन चन कि तु कोई न नोई निम्मय लक्षर हा रहे। यह वहै कि राम स्वाहु स्वाय उदका उपनार की सम्बन्ध है?

यदि इस तगठित रूप में इस प्रोर तोचें तो काई कारण नहीं कि धायसमाय के प्रति कोंगों को बही बारणा वन जाए जो कि दोनब हु एल्प्यून न हन छन्यों में अवन्य की बी पुम एक प्रग दिस्तवायी पढती है जो स्वय पंजी हुई है। यह धाग सनावन प्राय वम को स्वामाविक पवित दशा में बान के तिए एक प्रट्टी में है जिसे प्रयसाम बहुते हैं मैं च्छ धान को बाइसिक समस्ता हू

लहरों में नैया बही जा रही है

प्रकाशकोर व्याकृत'—
लहरों में नैया बही जा रही है सुनी जा रने न कही जा ही है।
झसुर मन में बैठे झसुर तल डरे क्यो यह मार कब से सही जा रही है।
बहुत हूर है देख इतिहास से धव
इगर मुठ की हो गही जा रही है।
वतन के किलारों पे खतरे बने हैं
बचाए कोई जो रही जा रही है।
बने मौडने तज पुराने चलन को
न जाने किचर ये बही जा रही है।
पिसा के बहुत दूच है नाग पाने
मनुकता जन्ही से दही जा रही है।
हमारे हो हैं जो विधर्मी बनाये
बताए पुरानी वही जा रही है।
बही मुट और बुट रसक है मक्कक
बनी बात बिमडी रही जा रही है।

विकट यह समस्या है ज्याकुल कवि की

कोई तुक मिलाई नहीं जा रही है

# १८५७ के संग्राम में महर्षि दयानन्द

लेखक-प्रो० सत्यवत सिद्धान्तालकार

मानव का इतिहास मनुष्य द्वारा किए पुनित के प्रसारों का इतिहम्म है। दासता से पुनित काहे वह राजाधों की हो या व्यक्तियों की हो या व्यक्तियों की हो या व्यक्तियों की हो या व्यक्तियों की हो पाइट्टियों की दासता हो, इस से खुटकारा पाने के लिए समुख्य सवा में प्रयक्त करता था ग्वा है। पूरीण में १४ मी सता दी में पोपवाट से मुक्ति के लिए सुपर ने वो क्रांति की वह यम की (जा वारतन में प्रभ्य मा प्रमुख्य के लिए सी इत सुवार का गुन कहा जाता है। इसके बाद १७ १० पानाव्यों से पुनर्जागरण (राजा) का बुग है किया की प्रतिक्रिया मानव का निरन्तर स्वयाद कर गया है। बीर इसी में वह सपने लिए उपायें यागा को दूरने का, नया मार्च बनाने का प्रयास करवा है।

वित तरह स पूरांप में मानव को गांड तिहा से जगाने के लिए कुपर ने उसे मद्रणा दिवा उसी म्रकार भारत में जो है को ठीक है राम-भारता परेंगे की पूर्व्या में के इस देश के मानव का निकालने के लिए १० जी तथा १६ वी सभी में राजा राममोहन राख ग्वामी दवानन्द के शव-पत्र तेल र्राज्य राममोहन राख ग्वामी दवानन्द के शव-पत्र तेल र्राज्य राममोहन राख ग्वामी दवानन्द के शव-पत्र तेल र्राज्य राज्य होता मारी हा अक्षानेता।

यह काल १८ वी तथा १६ वी शताब्दी का बा जिसम भारत में ा नातिकारी लहरों ने ज म लिया। यदो लहरे की सामाजिक क्रांति तथा राष्ट्रवाद की बेतना के जागरण की क्रांति। राजा राममोहन राय केशवचन्द्र सेन तथा ईव्यरचन्द्र िसेसागर का कार्य सामाजिक काति तक सीमित रहा । स्वामी दयानन्द तथा सहारमा गांधी का कार्य सामाजिक नदा राजनैतिक भववा राष्ट्रीय दोनो क्षेत्रो मे छा गर्मा । राजा राममोहन राय न तो अपने भारमचरित्र मे यहा तक लिख दिया कि अ ग्रेजी का शासन इस देश क उत्थान के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। इसके विपरीत ऋषि दयानन्द न ग्रपने ग्रन्थ सत्याथप्रकाश के द वें समुल्लास मे लिला कि कोई किननाही करे परन्तुओं स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। प्रवदा मतमता-तर के बाग्रहरहित बाने भीर पराय का पक्षपाल शन्य प्रजा पर माता पिता के समान कृषा न्याय भीर दया के साथ विदेशिय का राज्य भी पूर्ण सुकादायक नहीं है, स्वामी दयानन्द न अपन यथ ग्रावाभिविनय मे लिखा-- ग्रन्य दश-वाशीर जाहमारे देश मंकभी न हो तथा हम लोग परा-थीन कर्ने, न हो।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन १८७४ रेकिया। १० प्रप्रेत १९७५ में बम्बई में प्रथम सार्थ- समाज की स्वापना की उनका जन्म १-२४ ो हुया था। इसका अर्थ यह हुआ कि जब वे ११ वर्ष के वे तब उन्होंने सत्यार्थ अकार स्वा और तभी आर्थ समज की उन्होंने स्वापना की।

इस बीच स्वतन्त्रता प्राप्ति का १०५७ का नदर हो जुकाचा। उस समय वे ३३ वर्ष के थे। ४१ वे वर्ष भे धाकर उन्होंने सम्पार्थप्रकाश रचा, और दश में चणह-बनह धार्यस्वायों की स्वापना में लग गय, इससे पहले की शाहु में वे क्या करते रहें? की प्रवस्ता में ने स्त्रामी निरकातन्त्र के बराएं। में पहुने, जो स्वय तरकातीन खशहन क्रांति के सूनवार थे। उनके स्वयमर्क ने रहकर स्वामी स्वानन्त्र महीक स्वानन्त्र हो गए क्योंकि स्वयंति निरकातन्त्र स्वय प्रमावलु वे तवार्ति स्वानन्त्र की मार्स खोले देने का काम बन्होंने किया।

इस समय दयानन्द को समझ पढ़ गया कि किसी भी देस की यचार्य तथा स्थिर साजाशी सामाजिक सामस्स् के बाद घाती है, घीर सामाजिक जागरण कडिवास से मुक्ति प्राप्त करने पर हो प्राप्त होता है। महुचि दयानन्द

जब सबत् १६१४ के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर-मूर्तिया ध्रमेंजी ने उड़ादी थी तब भूति कहीं गई थीं? प्रस्तुत वाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े शबूबों को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्की की टौंग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदस कोई होंगा, तो इनके दुरें उड़ा देता धौर वे भागते फिरते। —स्वामी दयानन्द (सत्सार्थप्रकाक्ष)

स्वामी दवानन्द बच ३३ वय के युवा थे तब देश में स्वतान्ध्रता प्राप्ति क लिए सन् ४७ की क्रांति हुई। उस क्रांति की फलक सत्यार्थकाश में जो ११४ में प्रकाशिय हुसा पामी जाती है। याद्ये समुख्यात स्वत निकारों हैं बच सबत् १६१४ के वस में होणों की मार स मन्दिर मूर्तिया बयोंकों ने उद्या दो बी तब मूर्ति कहा गई थीं प्रस्कुत वाथर सोगों ने जितनी नीरता की, सीर सब सबुसों को मारा परन्तु कृति एक सब्बी की टाव भी न तोब सबी। को मोहफ्या के सक्त शही होता, तो इनके पुरं उदा देता, सीर के माराने पिरते।

सबत् १६१४ के वर्षका सर्य है सन् १८६७, सर्पात् वह वर्षजब भारतीय स्वनन्त्रता का प्रथम युद्ध हुसा।

१ = ५७ के स्वत-त्रता सन्नाम के विषय में यह विकल्प कि मगर उस समय कोई बीक्रच्छा सरीवा होता का घडेजा के पुरं उबादेता वे नाग्ने फिरते। प्रयोजी की खत्रकामा में रहत हुए १ = ५० में ऐसा सिखत वाला कोई गाई का साल ही हा सकत था।

गेमा प्रनीत होता है कि १०५७ झर्यात घपनी ३३ वर्ष तक की यवावस्था तक स्वामी दयानन्द क सम्मूख सिफ राष्ट्रीयता का ही साना था। पण्डित दीनवधु शास्त्री ने कलकत्ता मे शहर्षि के समवर्ती महागयों के घरों से सामग्री एकत्रित करके महर्षिकी जिस बात्म कथाका सकलन किया है जिसे स्वामी सिन्चवानन्द योगी ने १६७२ मे नारायस बाध्यम नैनीतास से प्रकाशित किया है उसमे स्पष्ट होता है कि १०५७ तक स्वामी दयानन्द देश का भाजादी के लिए ही दिन रात व्यस्त रहते थे। इसी समय उनका द्वितीय बाबीराव पेशवा के दत्तक पुत्र बुन्धु पन्त (नाना साहक) उनके बन्धु अजीमुल्ला ला, नानासाहत्र के गार्ड वासा-साहब, तात्याटोप भीर जगदीशपुर के जमीदार कु बरसिंह से परिचय हुन्ना। इस समय स्वामी दयानस्य न निश्चय किया कि वे लाखो सामुग्नो को सगठित करेंगे। इस जीवन कथा मे ऋषि दयानन्द कहते हैं कि जारो मठो के साधुस्रो ने हमारे सगठन को जगत् मिष्या कहकर टाम दिया।

बह सब कहानी १-५७ की है। १७ का ससस्य कारित का विद्रोह विकल हुआ। इस समय स्थानी रयानव्य की विचार बारा ने पत्तरा साथा। विपाही विद्रोह के विकल होने के परिणाम स्वक्ष जब स्थानी स्थानव्य को कोई रास्ता नहीं कुछ रहा वा तब १-६० को सप्ती ३६ वर्ष का अवती काय १६ वर्ष की अ पु के बाद से जुक होता है, ब वर्ष व्यामी दिखानक के दीशा नेने के बाद करि बाद पर प्रहार करने के लिए कार्य को न से उत्तर पह । इस बीच १८६० से बब वे स्वामी विश्वानक क पास पहुंचे १८६३ (जब उनकी मृत्यु हुई) तक के शेच के बचाों में उन्होंन की देशव्यापी काम किया उसी के आचार पर भाव हम उन्हें स्वामी न्यानक म कहकर महाँच द्यानक कहते हैं। इस बीच उन्होंने राज्येश बेसना को जवागों के लिए उसकी साधारपुत सामाधिक चेसना को जवाया।

स्वामी विरजानन्द के यहा रहकर स्वामी वयानन्द का इंटिकोण बदला। भाजतक जिन ग्रन्थों के भाषार दर हिन्दू वर्गका ढावा सडा हुमाया, उन प्रन्यो का धर्म वह नहीं है जो साधारए। पण्डित करते वे यह गृठमन्त्र ऋषि दयानन्द को स्वामी विरजानन्द से मिला। ऋषि दयानन्द समकते वे कि हिन्दू समाज का ढावा विगडा हुआ है परन्तु भगर यह डांचा वेदो उपनिषदो पुरास्तो के भाषार पर लड़ा है तब न्से कैसे बदनाजा सकता है ? इस देश की जनता सब कुछ छोड सकती थी, धर्म-प्राण होने के कारण वेदों को तो नहीं छोड सकती थी। स्वामी विरजानन्द ने ऋषि दयानन्द को यह सन्त्र दिया कि बेदों के आरथ ही वे नहीं हैं जो किए जाते हैं। झगर बेदों के वे धर्य नहीं वे जो किने जाते वे तन तो ऋषि दयानन्द के हाथ में हिन्दू समाज के डाचे को बदलने का एक बढ़ाशस्त्र हाथ में भानमा था। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द ने सब देदों का नवीन द्रिक्तोण से भाष्य किया, भारतीय सस्कृति को मारतीय सस्कृति रखते हए उसकी धन्तरात्मा को सवा दिया।

ऋषि दयानन्द का रूढिवाद पर प्रहार

वर्तमान तृग के भारत के सामाजिक विचारकों में कृषि दमानन्द पहले व्यक्ति से जिन्होंने सर्दियों से परम्पया- वत किंदवाद पर कठोर प्रहार किया। अब तक के सामान्य कि किंदा में प्रदेश के से सामान्य कि किंदा के से सामान्य कि किंदा के से सामान्य के से किंदा के से सामान्य के से किंदा के से सामान्य के से किंदा के सिक्त के से किंदा के से किंदा के सिक्त के सिक्त के से किंदा के सिक्त के सि

# सरस्वती ने सक्रिय भाग लिया था

से भारत के हर क्षेत्र म हलवल मच गई। पुराने आधार हिलायने, धौर पीछे, को लौटने वाला या एक ही जनह साडा-साडा भारत सदियों की नीद छोडकर आये को कवम साडाने सगा।

(क) धार्मिक क्षेत्र मे रूढिबाद पर प्रहार--- भारत का बर्म वेदा से बधा हुआ था। जो कुछ है वेदों के आधार पर है। स्त्रियों को नहीं पढना चाहिए बणव्यवस्था जन्म से होनी चाहिए अही को यद पढने का अधिकार नहीं दलित वर्ग को समाज के निम्न स्तर में ही दासता के रूप में पड रहना चाहिए देवताची की पूजा करनी चाहिए । यह शब क्यों होना चाहिए क्योंकि वेदों में ऐसा सिसा है। ऋषि वयानन्द ने रुढिबाद पर प्रहार करने के लिए सब से पहला प्रहार वेदों के अथ पर किया। उनका कहना था कि वेटों में बह सब कुछ नहीं लिखा, पण्डित स्रोग वेदों के बाय ही नहीं सम मते वेदों के व जो अर्थ करते हैं वे अर्थ ठीक नही, गमत हैं। हिन्दू धर्म वद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है इस-लिए वेदो मे जो कुछ लिखा या उसी को ईएवरीय जान मानताया।ऋषि दयानन्द ने बेदो के प्रकलित द्वार्थों पर प्रहार किया। रुडियाद के वे इतने क्षत्र थे कि वेदी के शब्दी के भी क्दि-मर्चों को मानने से उन्होंने इन्कार कर दिया। वे सस्कृत के समास पण्डित थे। निश्वत के सामार पर उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों म को शब्द प्रयुक्त हए हैं उनका कोई रूप नहीं है। एक ही शब्द को सनेक सर्थों ने प्रयुक्त किया जाता है। इन्द्र का अब पौराशिक इन्द्र नहीं इन्द्र की निरुक्ति के मनुसार जो भी एववयवान हो बहु इन्द्र कहलाता है। परमेश्वर भी इन्द्र है, राजा भी इन्द्र है वानी मानी व्यक्ति भी इन्द्र है। अपने पक्ष की पुष्टि मे बन्होने प्राचीन प्रामास्मिक यन्यो का सहारा निया। ऋषि ब्रह्मानन्त न बढो के रुढिवादी सर्थों पर प्रहार कर सारे अस्टिकोल्य को बटल दिया। जिन मन्त्रों से स्त्रियों का पढना निधित कहा जाता था. उन्हीं से उन्होंने सिख किया कि दिल्ला को सबके समान पढ़ने का मधिकार है जिन गन्त्री क्रे बात ब्यवस्था जन्म परक कड़ी जाती थी उन्हीं से उन्होंने वता स्थवस्थाको कम परक सिद्ध कर दिया जिन मन्त्रो से हेडी-देवताथी की पूजा की जाती वी उन्हीं मन्त्रों से उन्होंने देशी देवताओं के स्थान में एक ईश्वर की उपासना का विद्यान सिद्ध किया। इस युग में ग्रन्थ जो भी सामाजिक विचारक हए उन्होने या तो प इचात्म सस्कृति के प्रभाव मे

साकर मारतीय-सस्कृति को तिलावालि दे दी या रूडिवाद से सपने को मुक्त न कर सके। ऋषि दयानन्द ही एक एमे विचारक वे जिन्होंने भारतीय सस्कृति को स्रोडा भी नहीं, पारचारय सन्कृति को लियासीर उस से डब भी नहीं।

(क) सामाजिक क्षेत्र में कडिबाट पर प्रवार— ऋषि दयानन्द के विचार का दिटकोश सर्वचा मौसिक स्टिकोश वा। वे मूत नतमान तथा मविष्य को पिक्षने तथा प्रवस्ते से मिलाकर बनना चाहते थे। यही कारण है कि सिक मूत के सिलाकर बनना चाहते थे। यही कारण है कि सिक मूत में उन्होंने बहिल्कार किया। समाज में ने स्थिरता के पक्ष पातो नहीं वे परिधालिका करकपारी थे।

चनके समय का समाज नवीनता से न्रता था जो कुछ चला बारहाया सामाजिक-क्षेत्र में उसी को चलाना चाहताया। स्त्री शिक्षाकाइस देश में लातमा हो चुका मः बास विवाह विधवा-विवाह निषध दहेज की प्रया-ये सब प्रवाए परस्पराए इस देश में रूढ हो चुकी थी। इनके विद्य बोलने का किसी को साहस नही होता था। ऋषि दयानन्द ने इस सब कविवाद को जहा सामिक क्षेत्र से उलाइ फेंका वहा सामाजिक को व में से भी इसे निकाल बाहर किया। उन्होंने एक बिल्कुल नवीन रण्टिकीण समाज के सम्मुख रखा ऐसा इष्टिकोण जो पहले से बले झा रहे इच्टिकोश से सबया भिन्न था उससे उरुग वा। इस कास मे जो समाज समारक हुए वे बीरे बीरे समाज का सवार कर रहे थे। ऋषि दशानन्द ने एक ही प्रहार से समाज की सब रूढियो को उसाह फेका। उन्होने समाज के स्वार का नारा नही लगाया. सामाजिक काति का नारा लगाया । श्चिषि दयानन्द के उद्योग का परिस्ताम था कि स्त्रियों के प्रतिसमाब का रुस बदल गया। जहाँ पहले स्त्री गुड़ी नाबीयातामुका राम श्रमापा जाता था वहा कन्याश्री को पढाने के लिए पाठशालाए सोली जाने लगी। ऋषि वसा-नन्द तथा बन्य सामाजिक सुवारको में बाबारभूत भेद यह है कि जहा दूसरों ने हिन्दू मन को समाप्त करने का प्रयतन किया वहाऋषि दयामन्द न हिन्दुशो काहिन्दू रहते हुए उन्हें नवीनता के रग में रम दिया।

उन्होंने हिन्दू धर्मको हिन्दू धम रखते हुए उसकी ग्रन्थर से काबाप टनेका यत्न किया। यही कारणाहै कि १६ बी श्रताब्दी के समकालीन समाज सुधारको मे जितनी बफनता उन्हें निसी उतनी सफतता प्रन्य किसी को नहीं मिसी। ऋषि दयानन्द ने समाब मुकार की जो क्यरेखा बना दी उठी को लेकर २० वी गताब्यों के समाविक समा राजनीतिक नतायों ने सहिया। महास्था गांधी के २० वी गताब्दी के सान्दोत्तन को सम्मने के लिए ऋषि दया-न द के १° वी गताब्दी के सान्दोत्तन को सम्मन गा सावस्थक है।

(व) पाननीतिक क्षेत्र मे कडिवाद पर प्रहार — कृषि द्यानस्क की दिवारकार का सामार कडिवाद का उन्ध्रुवन करना था। गाननीतिक क्षेत्र में विस्तका राज वला धा गहा रो वहीं गेल हैं — यह कडिवादी विचार बना धा था। उ होन धानिक तवा सामाजिक नेता होत हुए भी व्य विवार पर प्रहार किया। सरवायप्रकाश में उन्होंने विस्ता — "ध्याध्योदय से बोर सामों के सामस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से सम्य देशो पर राज्य करने की कथा ही न्या कहुना किन्तु सामाजिक में सी सामों का सवस्य, व्यतन्तर स्वाधीन निजय राज्य इम स्वयय नहीं है। को कुत है सो भी विदेशियों से प्रयाजकात हो रहा है। हुस थोड़ सामा स्वतन्तर है। दुर्वन वस साता है तव वेशवासियों को सनेक प्रकार है। वृद्धिन वस साता है तव वेशवासियों को

भग्नेजी के प्रसिद्ध वाक्थ Good government is no substitute for self government तथा कवि दया-नन्द के उन्त रन्दर्भ में कोई भेद नहीं है। दादा आई नारौंकी तिलक भावि ने इसी विचार को भागे वडाया। मार्यसमाच से बाहर यह कम सोगो को पता है कि जिस स्वराज्य शाद का प्रयोग कांग्रेस के सब से दादा माई नौरोजी ने १६०६ में किया या उसका प्रयोग रुषि दया-नन्द ने १८७४ में किया था। ऋषि दयानन्द १-४७ के नदर के समय ३३ ३४ वर्ष के नवस्वक वे धीर धगर उस समय उनके वही विचार थे, जो उन्होंने सत्याधप्रकाश से प्रकित किए तो कोई सन्देह नहीं कि वे इस क्रांति के समय अपने उग स कियारी ल रहे होगे। जो है वह ठीक है उसके प्रति विद्रोह नहीं करना-यह भावना सर्विवादी नावना है और इसी रूडिवारा भावना पर ऋषि दानस्ट ने खामिक सामाजिक तथा र। जनीतिक तत्र म सीधी चाट கிட

3

### पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सभी धार्मिक संगठनों तथा राजनीतिक पार्टियों को विश्वास में लेकर ही सरकार निर्णय करे

विल्ली १२ मार्च। पजाब समस्या के समाचान करन की दिया में केन्द्र सर-कार के खायेख पर चिरोमांना प्रकाली वस्त पूर्व चिरोमांना पुरुवारा प्रवम्मक कमेटी के कतिपय नजरवन्द नेताओं की रिद्धाई का स्वागत करते हुए सार्वदेशिक स्थाने प्रति-विश्व सभा के प्रशान भी रामगोपांक साववाले ने एक नवराज्य में कहा कि वश्वास समस्या का जीवत समाचान करने के विष्णु प्रवाद में रहते विश्व स्वावान स्वाह्य समस्या का जीवत समाचान करने के विष्णु प्रवाद में रहते वाले ४३ प्रतिस्व

श्री सासवासे ने कहा कि सकालियों का वर्तमान नेतृस्व विभावन का उन अध्यक्ति है। बस्ततः प्रधाव की समस्या सभी बैर सकालियों विशेष रूप स सार्थ-समास स्नातन वर्ग, जैन, नामपारी, रावास्त्रामी सार्वि स्वान वर्गे और स्विम राजनीतिक पार्टियों को विश्वास से सेकर हल की बानी चाहिए। ध्रत्यवा सकासियों को सन्तुष्ट करने वाणी नीति सं उस प्रात तथा देश से सर्वेद प्रधाति की स्थित बनी रहेगी। रिहा किये पर्य नेताओं को स्थय्ट रूप से हिसक कार्रवाहमां की तन्या एव प्रवातन से प्रपना इस विश्वास प्रकट करना सहस्त कार्यना इस विश्वास प्रकट करना जरूरी है।

समाचार पत्र मे प्रकासित धकासी नेता श्री सुरक्षित्वर सिंह डारा प्रकट जारतीय सविधान के वायरे मे सासि-स्तान काले की गाँ<u>व पर टिप्पणी करते</u> हुए भी शालवाले ने सरकार को धायाह रिया कि धकालियों की मौजूदा कार वाह्यों से क्यानिएकेलता का स्वरूप सम सम समाप्त हो नया है। धकालियों मी स्माप्त का समर्थन दिक्की का केवल एक शीकिन वर्ग कर रहा है किन्तु व प्रपमी सीग को छारे सिक्की के नाम तथा पबाव के रहने वाले धम्म वर्गों के नाम पर काय कर रहे हैं जो सवया धस्तवधानिक एव धानुचित है। राष्ट्रीय एकता धीर सक्वतता के दायरे में सम्बद्ध पक्षों की धापकी सह सारि से ही सरकार पबाव धमस्या का हल दूधीर धकालियों की किसी भी धानुचिन सीय के सामर्थन मुक्के।

इस सम्बन्ध में सभा प्रधान जी ने कहा कि सभी बागरूक बर्गों को सक सियों की देश तथा विदेशों में चल रही बतिविधियों पर कड़ी नजर रखनी चाह्यिए। प्रचार विसाग

सावंदेशिक सभा, विल्ली

### द्त्रिण दिल्ली वेद प्रमार मण्डल द्वारा आर्थसमाज स्थापना दिवस

धार्थसमाज मासवीय नगर मे विकास दिस्ती वेट प्रचार मण्डल दारा धार्यसमाज स्थापना दिवस घूमधाम से सम्पन्न हमा। इस अवतर पर मुख्य स्रतिथि अपी ललिस माकन सासद चौ० सरे-इ सिष्ठ चयरमैन दक्षिण दिल्ली जोन (नगरनिगम) की देवन्द्र कुमार सुद सबस्य नगर निगम ने धार्यसमाज भीर महर्षि दयानन्द के उपकारों को स्मरण किया। धायसन्देश के सम्पादक की बक्षपाल सुवास, विद्या-रस्न प॰ मदनमोहम शास्त्री ने अपने बाजस्वी भाषसो से जनता को मत्रमुख क्या तथा वैदिक समें की विशेषताओं महामन्त्री से ब्रवगत कराया। रामसरन दास बाय

महाँच दयानन्द सरस्वती ने ध्रपने प्रन्थों मे जो ग्रनेक इतिहास विवयक मन्तव्य प्रतिपावित किये हैं उनमें मुस्य निम्नतिस्तित हैं —

- (१) सृष्टि के प्रारम्भ से पात्र सहस्र वह पूत्र समय पर्यन्त पृथिती पर झायों का साक्षभोम चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दक्षा न्वायम्भुव मनु से शुक्र कर पाण्डव राजा पुधिष्टिर के समय तक रही।
- (२) जितनों भी विद्या, सस्कृति, विज्ञान व मत मसार में कैसे व सब प्राया-वर्त (मारत) से ही प्रसित्त हुए। प्राचीन समय म सवत्र वैदिक सम का प्रचार था, या सन्य देशों के निवासी एसे मतो के समुदायों के विनका प्रादुशन वैदिक सम से हमाया।
- (वे) महास्रारत पुद्ध व कोरव-गाण्यतो बा काल धन से लगमन पाण हुनार वण पुत्र वा। स्वाय-गुल मृत सुविध्यित तक वो राजा माराज ने हुए, उनका हरितहाल महास्रारत आपि इन्या में निका है। पुण्य-फिर के परचाल वमेक राजनात्रों ने माराज के। सार्वित प्रदेशों पर राज्यों की स्वायाना हर्ष ती, पर-प्रसम्प के राजाओं की स्वायाना सह व ने करणायान काल मंत्री है, विश्वके धनुवार बार्स्सी बसी के सन्तिम माण में दिख्ली का राजा स्वचाल मा जिसे प्रस्त कर सहासुदीन नोरी न मारत में धपने प्रमृत का सुकात किया था।
- (४) प्रायुनिक विद्वानों ने भारतीय इतिहास के जिस विधियन्त्रम का प्रतिपादन किया है यह यहाँच को स्वीकार्य नहीं था। सायुनिक विद्वान् वदी का रचनाकास

# महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतिहास विषयक मन्तव्य और त्रार्यसमाज

### सस्यकेतु विद्यालकार

२००० इस्त्री वून तक मानवे है। पर महाग बदो के क्योरस्य मानव य। माड्रोनक इतिहासकार का महानारक क काल का १००० ईस्त्री पूर्व के लवगर मानव है धोर राजा विकासदिस्य के समय का वा पानवी सदी इस्त्री म मानव हैं, बढ़ बहाव का स्वाकार नहीं था।

(५) प्राचान प्राय सम्मता को उन्नित के वसाल्य शिवस पर पहुने हुए से । प्रतु-ध्या को सम्मता का पारि दुग पाया हुए ध्या का सम्मता का पार्थ प्रति प्रदास जीवन न्यवात करता था, जीरे-बार प्रनुष्य सम्मता कमान पर प्रवस्त हुमा, वह मत महाच को स्नाकाय नहीं था। सम्मता प्रीर सस्कृति क क्षेत्र म व विकाशवाद को नहीं वानत थे।

(६) आयों का झादि निवास स्वान जिविस्टन (तिन्यत) था, जहा से जाकर वे सन्यत नसे। झाय किसी बाति विशेष का नाम नहीं है, और न हो उसस किसी नसस का बोब होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो की प्रपोद्देश्यता, एकेरवरवाद पब्दछानी में प्रपोद्देश, शत्रमम प्राप्ति के सम्बन्ध में को मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं, उन की पुष्टि के लिए प्रायसमाय के विद्वानो ने पर्याप्त

परिश्वम किया है। पर उनके इतिहास विषयक मन्तव्यों के सत्यासत्य का जाच के लिए या उनक समयन में धभी तक कोई महत्त्वपूरा काय नहीं किया गया। केयल पर अगवद्वा जा बीर एर रिसर्च-स्काजर तथा आधार्यरामदेव जीन इस दिशामे काय किया था। प्राचाय जी त भारतका प्राचीन इतिहास तीन खप्डो मे लिखा था जो महर्षि क मन्तव्यो के पूर्णंतया धनुरूप था । इस इतिहास के दो सम्हो के लिसन में मैंने भी प्राचाय जी को सहयोग दियाथा। पर नतः पचास वर्षों मे न डा० ए० व ० कालिको ने इस सम्बन्ध में कोई काय किया, न गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय न भौर न ही किसी भाग प्रतिनिधि सभा व सावदेशिक भाग प्रतिनिधि समाने।

भारत के स्कूबी, कालिजी और पूर्ति-वार्जिटवी में भारत का जो इतिहास पताया जाता है वह मुक्कि के मत्त्रच्यों के धरु क्य नहां है। भ्रायसमाय की जिल्ला स्थ्यामों में में ऐसा हा इतिहास रखाया बाता है। इसका परिखाम यह ह कि केवल उच्च शिक्षा प्राप्त जोगों में ही नहां, भणियु (विज्ञा क स्थापक प्रधार के कारण) सर्वेशायारण जनता में भी कारण) सर्वेशायारण जनता में भी इतिहास विषयक वे बारभाए बढ्यूल होती बाती हैं वो महर्षि के मन्तस्थों के निक्द हैं।

गत वर्षों में विश्व के विविध देशों में प्रातत्त्व सम्बन्धी जो खोज हुई है, बीर प्राचीन साहित्य का जो विवेचनात्मक ध्रष्ययन किया गया है, उससे बहुत से ऐसे सकेत व प्रमाश उपमन्ध हुए हु। को महर्षि के इतिहास विषयक मन्त्रव्यो की पुष्टि करते है । उनसे झात होता है, कि भत्यन्त प्राचीन काल म ईजिप्ट, एशिया माइनर, मध्य एशिया भादि स्वत्र बृादक वन का प्रभाव विद्यमान या मोर दक्षिए पूर्वी एश्चिया के देशी मंभी प्राचीन हिन्दू (थाय) बम की बत्ता थी। विवय दशा धाय राजाची के शासन के प्रमाण भी प्रकाश में भाये है। पर महाव क मन्तन्सा के सत्यासत्य के निराय क लिए सभा बहुत खोज व परिश्रम की बावश्यकता है। यह काय विद्वानी की एक एसा मण्डला द्वारा किया जाना चाहिए। जा जहा सस्कृत भाषा के पूर्णतया ज्ञाता तथा, प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहास ने पारमत हो, वहा वहा साथ ही जिनमें से धनेक के ञ्च,जसन, रूसी, चीनी व तिव्यतः मादि भी जानते हो। भीर जिन्हे इजिप्ट\$ ग्रीस चीन एकिया माइनर, ईरान भावि दशों के प्राचीन इतिहास की मी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानी द्वारा गम्भीर रूप से शोध के धनन्तर ही महर्षि के इति-हास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा । क्या कोई झाय शिक्षण-सस्था इस महत्त्वपूण काय को घपने हाथ में नेने को उचत है।

### त्रार्यसमाज हजूरीबाग श्रीनगर (कश्मीर) का पुनर्निर्माण

—नेत्रपाल शास्त्री

प्राप का स्मरण होगा ही कि ७ जून १६८४ को दिन के १०। बचे प्रावदायियों ने प्रामस्थाब हबूरीबाग श्रीनगर को पुलिस के बेसले-वेसले पेट्रोल व्हिडककर प्रस्म कर दिया था। परिणाम रवक्य प्रसमका को चालीए रीतालीस बास समये की श्रांत उठानी गयी।

त्वचर् १६४६ में स्थापित प्रार्थकगाव का विध्यास एव मध्य मध्य रास का देर बाग विधा विधा गया। उक्त मध्य में विश्वत बाठ वर्ष वे वेशको बार्थ मुन्नी गठ-सुक्ता (उत्तरी ठक्के पत रही हैं विध्य क्रि द्वी क्रमाएँ पर रही हैं। पाठकाला का स्वस्त मुस्तकालय प्रतीमकालार, फर्नीचर धार्ति वन क्रम स्वस्त पर दिया।

में आर्थसमान में पुरोहित पर पर निरन्तर २६ वर्ष से कार्य कर पहा हूं। आर्थसमान में रहता था। मुक्ते और मेरे

परिवार को बीजिंग क्या हेने का योकना-बढ़ पद्मान रचा गया। गष्टल बाहर के दरताचे बन्द कर दियं वे और पेट्रील च्चिकक कर प्राम कता वी गई। यदि मेरा खोटा लडका कुल्हाडी व दरवाना तोडने में बफल न होता तो मेरा परिवार सस्य हो बाहा। देव मोन से जब खमव मैं पर से बाहिंद था।

सांग्न काम्य ने नहीं वासीय हवार स्थ्ये मृत्य का गेरा म्यांतवाच प्रतकावाय ब्रता। वहा दो क्यांतवा के वहेब सामान, परेलु सामान विकचा मुख्य सामा देखे सामान विकचा मुख्य सामा देखे सामान कर विया। वात बही तक सीमित नहीं रही, बच मैं क्यां सहित सक्य पर मा वर्षा, तो एक सम्बन्ध हुग को सपने पर से यो। उनके नहां रहते हुए दो दिन ही हुए वे कि सरकार का धोर से येरे साम्ययसामां को विविवतक्ष में चतावनी पत्र प्रेषित किया। निवास वा नेत्रपाल हास्त्री सार्य- क्याको तीहर है, उसके रूने से सार्य- क्याको तीहर है, उसके रूने से सार्य- पत्र के स्त्र के रूने से सार्य- क्याको सार्य कर के स्त्र कर उसके सार्य कर के स्त्र कर के सार्य का सार्य का पर्य का पर भी बना दिया वायेगा। नेत्र कारल सार्य सार्य का सार्य का स्त्र की सिका के स्त्र न नहीं मुल्य सहस्त्र प्रमान का स्त्र का सार्य क

धव तो यह बात स्पष्ट हो पुषी है कि पदाब बीर बस्टू क्रम्मीर में बोदेव-बाती उपाय हुए जगने पीक्षे विश्वेषी होत्त्वजों का हुए बा। धव मी वेसतीही तत्त्व बक्ति हैं। में बारत को जगनत होने केबता जुही पाहते। धाब देश वस बोर सं चिर पुका है। देश के नीतर सी जब-चन्नों की देशा को है नहिंद

बार्वसमाम अपने जन्मकाम से ही

वेश जाति और यम की राज में तत्तर रहा है यह जिपकास भाव हे राष्ट्र वेशा में बक्त नहीं सामाचारों में सम्प्रक मुक्त वाली यह एक कारिकारों के सम्प्रक मुक्त वे वाली यह एक कारिकारों दिवस ताबित है। इस्तित्य वह यदेव वेशा-तोंहियों की सीजों में बटकरी रही है। वेतान में भी तक्की बात कहने पर सामें समाव को जानवाल की महान् वाकि उठानी पड़ी है। पर रही है और परेगी। रू मार्थेसमा कृत्रियाग, अनेनपर, कार्योर को उपवादियों हारा बनाकर वाक कर वेता की वेशवातक वहुन्य का सक्त वा ! आर्थेसमाज का पूर्णानस्था।

"रम नाती है हिना व्यवस्य में पिड़े वाते है हिना व्यवस्य में पिड़े वाते है हिना व्यवस्य में पिड़े वाते है वाते हैं वह है वह वाते हैं वह वह वाते हैं वह वह

(क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

# आर्य जगतके समाचार

### ष्टार्यसमाज नजफगढ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ध यसमाज नजपगढ (विस्ती) का **% ३ वॉ वा**षिको सब ५२ २३ २४ माच १६८५ को घायत मफलता के साथ सम्मन हवा जिसमे महान साथ संयासी भञ्जनीपदेशक पथारे । धासपास के गावी वाली का इस पत्सव में बढ़ा सहयोग रहा उस उ सव को सफल बनाने में बाब प्रतिनिध सभा हनुमान् रोड का बडा सहयोग निसा एस समारोह के शाभ अव सरपर एक राष्ट जागरण प्रदशनी का भी बायोजन किया गया या जिसमें लोगो ने बड़ी रुचि दिखाई।

रचनार्चामह प्रवान

### शद्धि सस्कार

आयसमाज मंदिर गीना गोकण माथ मे दिनाक १७३ ०५ रविवार को एक मुस्लिम उम्पती क सुद्धि सस्कार भ्यः गिरधारीलाल जी शर्मा प्रधान द्याय समाजकी भ्रष्यक्षतातथा प० केशवदेव जी शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। खाडे सनातन वैदिक धम की दीक्षा देकर जनका नाम श्री भगवान दीन तथा श्रीमती श्वगादेकी कीवित किया गया।

> मात्री हरवश लाल पायसमात्र गोकणनाव

### श्रायंसमाज स्थापना दिवस एव नव सवत्सर पर्व

च यसमाज खिवाजी चौक खडका जिला पूर्व निमाड (म०प्र०) मे दिनाक २२३ ८१ को नव सवत्सर पत्र एव ब्राय समाज स्थापना-दिवस समारोह बनाया वया प्रात साढ पाच बजे से प्रमात फेरी निकाली गई जो नगर के जिल्ल जिल्ल भौहल्लो से होती हुई समाज मन्दिर मे समाप्त हुई। त पश्चात व्यव व दन गीत के साथ व्यवारोहण काय सम्मन्त हुया।

इसी सुभावसर पर प्रात साढ नी से श्री रामच द्र जी भाग के नाती भवितन कुमार का सनप्राक्षन एव चुडाकस (मुख्यन) सस्कार समाज के प्रोहित सुब राम भाग सि॰ गास्त्री द्वारा सम्पन्न

साय ६ वर्षे से पव पदित अनुसार वृह्य यज्ञ सच्या प्राथना के पश्चात स्त्री रामप्रताप को श्रीमाशी मन्त्री झाल सन यसोसगज एव पुरोहित सुक्रपाम आय ने बीनों पर्वों की विशेषता पर सारवजित बोजस्वी भाषण विया प्रसाद वितरण एव सान्ति पाठ के पश्चात कावक्रम स्थाप्त हुमा ।

बायतमात्र**्थण्यस्यः** 

### निर्वाचन

भायसमाज मामबीय नगर का वार्षिक चुनाव २३१६८४ को सब सम्मतिसे हुन्ना जिसमे निम्न पदाणि कारी सवसम्मति सं चुने गये

प्रवान श्री वसवीर मसीन उपप्रवान डा तीयराज इस्त्री श्री मूर्पसङ्गुप्ता श्री नन्दलाल ग्रोवर महामत्री —श्री ही ० भार**ः जुनेज सीवेदरन स्त्री** छन**ः** भार० बता प्रचारमंत्री श्री मूलचंद भाय कोषाध्यक्ष श्री चुनीलाल वैद्य।

कायसमाज रमेग नगर का वार्षिक जुनाव ३३ = १ को श्री हरिबंश क की मध्यक्षता में हथा जिसमें निम्नपदाधि कारी धने गये।

| 8 | प्रधान   | श्रीन दल ल          |
|---|----------|---------------------|
| 3 | उपत्रधान | श्रीवधगत्र          |
| २ |          | श्रीभ मसन गुलाटी    |
| ٧ | स त्री   | श्री सरे इपाल महाजन |

उपम की श्री सतपाल नारम कोपाध्यक्ष श्री मदनसास

बस्त् भडाराध्यक्ष श्री हरिकट पुन्तकालयाध्यक्ष श्री किशनवाट नेसा निरीक्षक श्री असवत राय

भायसमाज रमेश तकर सुरेद्र सहाजन सत्री

भायसमाज नारायण विहार का साधारण प्रधिवेशन तिथि १०३ ८५ को सम्पन्न हुवा भीर निम्नलिखित पदावि कारी सबसम्मति से निर्वाचित हए। १ प्रधान श्री भूपे द्रनाथ सेलिया २ विश्री श्रीटेकचद सदुजा ३ कोबाध्यक्ष श्री दशनकाल कत्यास

> भवदीय भूषेन्त्र सेतिया प्रधान

### गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का ८४वा वार्षिकोत्सव

नुरकुत कानडी विश्वविद्यालय का वाविकोत्सव वत वचीं की माति इस वध भी ६ सप्रैंस से १४ सप्रैल १६०५ तक वडी प्रमचाम से मनाया जा रहा है। इस धवसर पर वेद शिका राष्ट्रनिर्माण साबि सम्मेलनो के साथ शाय दीवात समारीह का भी आयोजन किया गया है जिस मे उज्बकोटि के शिक्षा बास्त्री राजनेता पवार रहे हैं। झल आप इसमे सपरिवार सादर मामतित है।

> **मै**प्टन वेशराब **सहा** व मुख्याविष्ठाता नुरकृत कॉनडी हरिकार



महासब बमपाल को बासीय एव सुभकामना देते हुए श्री रामगो । ल शासवाले एव भी समित माकन।

### महाशय धर्मपाल जी दीर्घायु हों।

माय के नीय सभा के प्रश्न न दिल्ली धाय प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ संप्रध न माताचनन देवी साथ नेत्र धम्त लाके श्रद्धक तथा प्रसिद्ध व्यावस यिक सस्थान एम० डी० एच० के स्वाव धिकारी आ महाशय धमपाल जी के दृतें अपन दिवस पर जनकपूरी स्थित अस्पताल से ब्रायोजित अध्य समारोह में सम्पूरा रि ली से पचारे गण्यमा य महानुभाषा ने उनक दीर्घायुकी कामनाकी।

सावदेशिक साथ प्रतिनिधि समा क प्रभान लाला रामगोपाल शास्त्रवासे न सामाजिक कल्य वा के दोत्र मं महाशय वनपाल जीकी सवाद्यों की प्रशसा करते रहने के लिए अपना प्राधीवीन विया।

दिल्ली बाय प्रतिनिधि समा क प्रधान भी मूयदेव तथ महास त्री ३० वसपाल ने उन्हें भपनी समक सना दो

भीर कहा कि महाशय धमपाल का बरद हस्त साम जिक सस्य भी पर सम्बे समय तक बनारे जिससे व फ्लती फूलनी

श्रीलित माकन ससद सदस्य श्री धमदास गास्त्री श्री मन्तवन्त्र बहवा ताझ अनकसमाज रेवियो ने कहा ज स दिवस उही के मनाये आते हैं जो अपने लिए नहीं दसरों के लिए जीत हैं। महाशय जी ऐसे ही बिरल महापुरुवो से से हैं।

इस अवसर "र बायसमाजी शिन्तज सस्याची तथा क य समाजसेकी सश्याची की स्रोर से महागय जी को पूब्पगुच्छ सट क्रिये गये। इस समारह का आयाजन एव सयोजन टस्ट के महास जी स्रोम प्रकाश बाय ने किया

भायस देश परिवर की भ्रोर स महाशय वयप ल की दीव युके लिए शुमक मनाए

### श्रार्यसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सायसमान नरेला ५% वा वार्षिको स्तव °० एवं ३१ माच को बढी धूमधान से सम्मन्त हुआ। इस अवसर वर प्रथम दिन एक योषा यात्राभी निकाली गर्न विसमें हवारो स्त्री पुरुष शिक्षण सस्याओं के युवा युवतियां ग्रामीण क्षत्र से बाये बनेक ऋषि अक्तों ने बढ चढकर शास सिया ।

रात्रि को बाग सुचार सम्मेनन हुआ जिक्कमे चौ० नरतसिंह सांस चौ० हीरासिंह मु०पू० क बकारी पावद दिल्ली धावि धनेक नेताओं ने प्राम सुघार के निए सुमान तथा प्राम समस्या को दूर करने के लिए स्वय भी प्रयत्न करने का विश्वास विसाधा ।

प० देवेन्त्र नाथ शास्त्री एव दिल्ली समा के मसनोपदेशक श्री प॰ पुत्नीसास

के प्रवचन एवं भजनोपदेशों ने ग्रामीसा जनता को बायसमात्र की बार बाकुन्ट किया।

सनद कुमार

### यार्यसमाज का वाषिक निर्वाचन

भावसमाज बहुराइच की साधारण समा दिनाक १७ माच ८५ को धाय समात्र सदिर बहराइच में हुई जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारीमण एव ग्र ।रग सदस्य निर्वाषित हुए ।

- श्री कृष्ण माधव सरन प्रभान
- श्री बरतसिह मत्री की हरीराम वर्मा कोबाद्यक्ष
- ४ श्री जनदाश प्रसाद पुस्तकालयाध्यक्ष (चरतसिंह) सन्त्री

भागसमाज बहराइक



आयसन्देश विषेषाक का विसोधन करते हुए दार्थे श्री एव के एस अवत तथा सभा प्रधान श्री सूर्यदेव।

### श्रार्यसन्देश विशेषांक का विमोचन

११ मार्च। धार्यसमाज दोवान हाल विल्ली मे सर्वांवा पुरुशेतम राम के जन्मोत्स्वन पर एक विशेष झार्योचन किया गया। इस धवसर पर सार्वेदीशक झार्यो प्रतिनिक्त सम्मान श्री रामगीया गायवाले महामन्त्री श्री सोम प्रकाश स्थागी डांव वाषस्पति उपाध्यान, श्री

प० सिन्बरानन्य सास्त्री, दिस्ती सार्यं प्रावितिस तथा है प्रशास श्री सुर्यंदेव तथा स्वत्यंदेय कार्यंक्षणी श्री एकण के प्रशासन्य स्वत्यंदेय कार्यंक्षणी श्री एकण के प्रशासन्य स्वत्यंद्र प्रशासन्य स्वत्यंद्र प्रशासन्य होता स्वत्यंद्र प्रशासन्य स्वत्यं स्वत्यं प्रशासन्य स्वत्यं स्व

### आवश्यक सूचना सार्वदेशिक आयंवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर हजारीबाग आयंसमाज मन्दिर में १५ मई से ३० मई ८५ तक

सार्वदेशिक पायवीर वल बिहार की बोर से ११ दिनों के लिए प्रावंवीर प्रधिक्षण पितर हवारीवान आर्यस्थाय में स्वाया जा रहा है। है। वह अवस्य रिक्ट से मानतीय प्रचान उत्तराया जा रहा है। है। वह अवस्य रिक्ट से मानतीय प्रचान उत्तराया पर कि कुछल विस्तर व्यायामाचार्य एवं कई कुछल विस्तर व्यायामाचार्य एवं है। बितावीं उनके अपुरास्तर में रहु कर सहन्य न्यायाम, वार्धी त्यां धनेक सारम रहायों क्या केवल का जान प्राप्त करेंने। धार्य बीर वस सर्वेव विविद्यो हारा प्रचान में पर निर्माण एवं सर्व्यायान का वार्धिक प्रवास कर्या है।

सत सभी बन्धुमों से तथा सभी सार्वतमाओं से निवेदन है कि सपने सार्वसमाओं से कम से कम ६ बुवक सवस्य मेजें।

> नियम निर्देश १. प्रवेश सुल्क २१) स्परे सात्र ।

२ जोजनादि शुरू नि शुरू रहेगा।
३ भोजने निकाने के लिए ऋतु अनुकूस
वरी, चावर अवस्य लागे। ४ लोटा,
वाली कटोरा तचा कान तक की लाठी।
३ जाको हाफ पैन्ट, सफेज सैनिक कमीक
काला कण्का घोर सेक्षों गयो चफेज मोने
वाचा जान नृते हुरी डोपी सम्बी सीटी,
नोट कुक सास पेन शादि।

द्रष्टच्य — १६ वच क उत्पर आसु के युवक भाग केंगे।

> रामाझा वैरागी सवासक सावदेशिक प्रायंतीर दस, विद्वार

## प्रिटिंग पैस कारीगरों की श्रावश्यकता है

हिन्दी-सम्मेजी के कम्मोबीटर और वैन्द्रर प्रिन्टिंग मैंस के कारीवरों (मधीन मैंन) की बीझ सावस्थकता है। सन्द्रा वेतम व सन्य सुविकाए।

सम्पन्नं करें ---

(भवस्थापक) गुम्बल किसीर वैदिक मुद्रणालय, धार्यसमाव पुलवयस तथा मीहल्ला, भावाय गाविट दिल्ली-६ दूरमाव ५१६२४७

### श्रार्थो ! गुरुक्कल कांगड़ी हरिदार चलो देहली से स्पेशल बर्से चलॅगी

१ श्री प्राशानाव वर्ष, DS, कैसाख कासोनी, नर्ष विस्त्री फोन-६४११६१४ २ श्री वर्षे-ब मासवीय, आर्यसमाब मिदर मार्ग नर्ष विस्ती, फोन ३४३०/६ ३ टकारा प्रिन्टिंग प्रैस, गुरुद्वारा रोड, गुरुवाव। फोन—२६०७

विशेष---गृडवाव जिला के धार्य परिवार जोला-कुर्मा से बस में बैठ सकेंचे। विमीत

(भी रामधन्त्र मार्थ प्रवक्तक यात्रा, ४६६ त्रीमनगर, गुडगांव)

### श्राभार

मेरे पुत्र्य भारताची को बाकस्मिक मृत्यु पर जिन बन्चुको तथा सस्याची ने पुत्रे सवेदना के पत्र भेषे हैं 'बावंसन्वेच' बारा मैं तन सब का हार्विक बाजार व्यक्त करता हूं।

उत्तम बन्द शरर, पानीपक

\_\_\_

### श्रायसभाज पलवल का वार्षिकोत्सव

वि० १४, १६, १७ मार्च को समा-रोहपूर्वक ननामा नहा । इस ध्रवसर पर स्वामी क्वरीयराजन, हा॰ क्वानीमाक की भारतीय, हा॰ प्रधानतकुमार वैद्याल-कार, मो० राजमसास की तका मो० रतन विह्य की के व्याख्यान तथा औ सोहमकास पविक एव की गुलावविद्यू रावव के सबन हुए।

### {

### पाउकों श्रीर प्राहकों से निवेदन

स्रार्थसन्वेश सान्ताहिक बढि मिलने में सापको विसन्ध होता है तो इपया सपना यता चैक करे। बढि सापका यता वस्त सपा है वा सापका यता वस्त मया है हो साप कार्यासय को सुचित करें।
——व्यवस्थापक

आयं नेताओं का उद्बोधन (पृष्ठ १ का केव)

को सबसे प्रिषक हानि की है। क्या के सबसे प्रिषक हानि की है। क्या वे पानी की समस्या को जून की दिराया बहाकर हल करने का है। है भीर चण्डीगढ़ सहुर का आदिमयों की हिहड़यों से निर्माण करना चाहते हैं है। इसी प्रकार चण्डी- वह सहुर प्रवाद ने नहीं सारे वेश ने बनाया है, इसी प्रकार देश का सबसे बड़ा बाब पवाब के रहने वालो ने नहीं बिल्क सारे देशवासियों ने नहीं बार्लक सारे देशवासियों के जनाया है, प्रमार बाज प्रवाद को जरूरत हो तो सारा देश उसके लिए बपनी सब निदया उठले सकता है, बचारों का सदबसे हहा। है

त्री प० चित्रकुमार चास्त्री ने बताया कि किस प्रकार चृत्रि दयागन्द ने सत्य स्नारण ने दिक मार्थ पर क्षाता के बावरण को हटाकर
उसका बुढि तगा सबुज्यल क्ष्य प्रकट किया। विस्ती विश्वय विद्यासव के प्रवक्ता बा० वाचस्पति उपाध्याय ने प्रार्थममास स्थापना-दिवस
को सनस्त धार्यसामियों का सन्य दिवस वतारी हुए इसे सामूहिक रूप
यै मनाव का साम्लान क्षा । प्रो० बलराज मधोक ने श्री साधी के विचारों का समर्थन करते हुए, कहा कि पजाब की बसली राज-बानी चच्छीगढ़ नहीं लाहौर होनी चाहिये और हिन्दुओं और सिखों को इसी मांग को लेकर खडें होना चाहिए। इससे जहा देश में नव बेतना भायेगी वहाँ पजाब समस्या क समाधान का रास्ता भी निक-लेगा।

अपने भव्यक्षीय मावरा में सार्व-वैशिक आर्थ प्रतिनिधि समा के प्रवान लाला रामगोपाल सालवासे ने कहा कि आ ज के दिन ही महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्थ समाज की स्थापना की थी। साम ही उन्होने धार्यसमाच के गीरवपूर्ण कार्यों पर प्रकास डालते हुए आयं-जनो से कहा कि आत्महीनता की भावना को छोडकर सन्द्रनिर्माण के कार्य में तन-मन-धन से जुट जाबा चाहिए। यही बार्वसमाज दिवस को मनामे की सार्वकता है। सार्व केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सूर्य-देव ने मार्थ सस्वामों से मामे हुए समी पार्यवनो को स्थापना विसस की शुमकामनाएँ दी तका सारित आठ के पक्ष्यात् सभा विश्ववित बर्ड 🗈



आर्यसमाज हजूरीबाग (पृष्ट = का वेप)

सन भी दिया।

सायसमान को विधेषना यही है कि

बहु निर्माल का कर तुप्तानी म तथा
समयों में हो करने पा मार्ग है। स्वयहर्त में महा किसात तथा परनाला से गिल्ल प्राप्ति की प्राप्ता को भीत प्राप्ता के गिल्ल प्राप्ति की प्राप्ता को भीर सामसमान के पुत्रानिर्माल का काय प्राप्त न करिया।

स वशीका समा न्लिल। के प्रयान भी

राममाप ल जा शाल बाले और उनके (चमत्री श्री धोमप्रकाश और त्यागी व बस्म कश्मीर बाय प्रतिनिधि सभा के प्रवान श्री डा॰ योगेड कुमार की छास्त्री हासात का जायजा लने के लिए गये थे। तीन दिन रहे। तात्कालिक मुख्य मत्री **की** बनोवत्ति को जानने की भावना से तीचो श्रविकारी मिले थे। उनसे मुख्यमत्री ने कहा था यहां लोग प्रायसमाज को प्रसाद नहीं करता व्याजकरत है इसके ¥माने की। धगर वनाधोगे तो फिर जसा दगे। मुख्यमचा के विद्वपपूरा बाक्यों ने सावदेशिक सभा और प्रति निचि सभा के अधिकारियों के सजित साहस को सुददता प्रदान की। उन्होने बायसमाय के पुनर्निर्माण के लिए प्ररित किया । उनके वहा जाने से स्थानीय कायकर्तांशे का उत्साहद्विगुणित हो गया। भीर जुट गये भायसमाज के निर्माण मे।

बृत बद से घट अरखा है यह जिला प्रत्यक अनुमन में धाई। जमाधियों हिंदा है धावनगत में इस समाचार को बहा भी विसने पढ़ा वह ही विद्वान हो का धीर सगन शिल्म का परिचय सहायता के रूप में बार भे नेक्क दिख्या। सहायता के रूप में बाई साला उनसे से केकर एक स्पया बंक भाग्य हुआ है। एक पांच बस सी स्पंची की राशि से ही सीन बीचाई घट मर चुका है। एक बीचाई का रह नया है धाय जनता जसको पूरा कर देगी गेसा पूज विश्वास है।

धव तक जो निर्माण काय महान हो चुका है जसका विनरण इस प्रकार है—पैतासीस कघरे दो बंड हास ६२ ४३ घीर एक खोटा हास १४ १६ बनकर तैयार हो बवा है। सस खोबासय, बार स्नानाकोर निर्मित स्नानागार ग्रीचालय और यज्ञशासा २०×१५ बनना लेख रह गया है। इसके सिए दो लाख पिथत्तर हजार रायो की भावस्यकता है।

निर्माण काथ नरावर चल प्हा है। इस समय अवतीय हुआर रुपये का कल है। कल के चढ़ने उतरने का विक्तियुक्ता तो बना ही पहुता है। कर एए घन के सभाव में निर्माण राथ की वट नहीं करती । काथ चमता पहुता है मजदूरी सब्दी पहुली है। बाहर से चन मा जाता है सक्दूरी पहुली है। वहार से चन मा

कन्मीर प्राइतिक सी दाव की बांट रिवन में प्रमना विशेष स्वान रखता है। यहा पर देश विदेश से लाखों की सस्या में गांत्री प्रति वहा को है। उनमें भाव समाजी याश्मित्रों की सस्या में कम नहीं होती। उनकी सुख चुलिया के लिए बाखु लिक हव की कतिष्याला नानों की मोजना है इसके लिए बन की मायस्य मता है। यांन्य प्रत्यक्ष मायस्यमात्री पाय प्राच रुपये में अंकन की कृपा करते तो म्रांत शोध हो भायस्य जनतर तैन्यार हो जाएगा।

आयसमाज के पुनिनम का ते स्थान य हिंदू जनता का मनोबल बढा है। और उनके मन म धातक दूर होता का रहा है। भायसमाज के प्रति उनका विस्तास और अद्धाबडी है।

# वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिर्म कि **स्टब्स वपूर** द्वारा महिष दयानन्द की जमर क्टानी

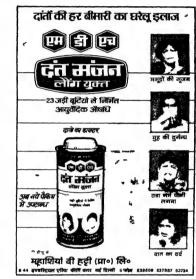
म व्यान्यज्ञ शार्षा करण स्वस्तिवाचन आदि

सन्यपार पाथन नारप्रकाश वस पन्नाताल पीयष सोहनलाल पाथन र राजण्याना जी क सर्वोत्तम भजना न कसरम नथा व रहन राजालकार क श्वना का सर्वह ।

आय नाम मान प्रभाव का मानीपत्र का लागा लख ८९४० कस्टोकॉम इनरा। नवस (डाण्डवा) फ्रांसि

कन्द्रोत्री कन्द्रोत्रीय इनक्षानियस (इाण्ड्राया) फ्रांसि 14 मार्जा 11 फन 11 अशाक विहार दहली 52 फान 7118326 744170 टैलक्स 31-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभाक यालय । मान् रोड पर ना न्यल घह।





श्चार्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

### नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित नागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भ्रायकर अधिनियम जी० ६० के अप्रतर्गन कर मुक्त होगी।

सारा बान चंक/मनीमार्डर/बक कृष्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी म्रायं घर्माणं नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए । दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे ।

#### निवेदक

राजनोपाल ज्ञासवासे पूर्ववेव महाश्चय वर्णपाल प्रोजनकात आर्थ सरकार विकित्सासव प्रवान, विस्ती प्रधान मण्डी पूर्व प्रवान शां-काः धार्य असिनिय धार्य केन्द्रीय महाश्चय कुलीसास प्रतिक सामा समा वेरिक्

ति सन्ता सभा समा चार० हु० सौजन्य से महाशिया दी हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, स्रोक्षोमिक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१ आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका के ब्राहक बने, और बनाएँ क्यें क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताभी को उजागर करती है।
- (२) मार्यो (हिन्दुमो) की महान् परम्पराधी को याद दिलाती है।
- (३) महिंव दयानृत्द की वैचारिक क्रांति से झारश चेतना जागृत करनी है।
- (४) भारतीय सस्कृति के भूने विसरे प्रमागे, महापुन्त्रो तथा स्रादर्भ सस्कारा को प्रकाश में लाती है।
- (१) ऋषि मुनि नपस्वी भाष्तविद्वानों की वाशी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर को पवित्र वास्त्री वेद का जोवनोपयोगो मधुर ऋत्देख साती है।
- (७) नय लेखको कवियो, चिन्तको, प्रतिभाशाली बिढानो साहिस्य सेवियो को प्रोत्माहन देती है।
- (द) वार्मिक, सामाजिक और ग्राष्ट्रह्मात्मिक ज्योति से मन मन्दिर को प्रकामिन करती है।
- (६) बेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, भ्रारण्यक ब्राह्मएय-पंगीना रामायए नीति, ऐतिहासिक अपून्य मार्थ पत्यो जिन को प्रिषकास लोगा ने पढ़ा तेन परो देखा में नहीं ममस्त प्राष्ट्रपारिक जगन् को जिन अन्यो पर सदा गर्थे रहेगा उन के बहुमूल्य ज्ञान ने प्रापका मार्गदर्शन करती हैं।
- (१०) जनएव देरन कोजिए आज हो अपना वार्षिक चन्दा २० स्पर्ये मेजिये वर्षे से अनेक विशेषाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वास्थ अताव्दा पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की क्व्य मनोहासी स्था- } क्कि नि शुक्क दी नायेगी। स्थारिका भीर विशेषाक का स्थाक कम है। अन यह सुविधा अपन नक ही है।

सम्यादक आर्थ सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

यासा कार्यालय—६३, गली राजा केशरणाय, कोन . २६८०३८ वानडी सामार, विस्थी-६



# न्तो विश्वमार्धम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वर्षे श्रमक २१

रविवार, १४ धप्रैल, १६८६

धार्यं सबस्सर १६६०=४३०=४

वैशास २०४२

# अकालियों से तब तक कोई बात न की जाये जब तक गैर-अकाली सिख और पंजाब के हिन्दू नेता उनके साथ न हों

### श्री रामगोपाल शालवाले ने शिष्टमण्डल के साथ प्रधानमन्त्री को जापन दिया

८ धप्रल. नई दिल्ली । श्री राम-गोपाल शालवाले के नेतत्व में एक शिष्टमण्डल प्रधानगन्त्री थी राजीव गांधी से मिला । शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को राष्ट्रीय ग्रसण्डता की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रत्येक प्रयत्न मे पूर्ण सहयोग का भारवासन दिया तथा एक ज्ञापन भी दिया। इस विष्टमण्डल मे धनेक वार्य सस्याको के प्रतिनिधि सामिल ये। साबदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम्, महामत्री श्री भ्रोमप्रकाश त्यागो, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाय मरवाह, श्री प॰ राज गृह शर्मा, दिल्ली बार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सुर्यदेव, महामन्त्री श्री डा॰ धर्मपाल, श्री महाशय धम-पाल श्री बेदप्रताप वैदिक', श्रा क्षितील देदानकार आदि थे।

प्रदत्त जापन इस प्रकार था-भारत मे श्रस्थिरता पदा करने की साजिश से इसको चारो झोर से घेरने और सोमावर्ती विधटनकारी शक्तियों को प्रात्साहन देन की जो प्रवृत्ति चल रही है। उससे राष्ट्र के सामने काफी मयकर सकट पैदा हो गया है। राष्ट्र को एक और अखण्ड रखने के लिए तथा एक राष्ट्रीयता कानिर्माण करने के लिए हमारे निस्न समाव है---

१ भारत के सविधान में सम्प्र-दाय निर्पेक्षता को स्वीकार करने के कारण किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मान्यता नही मिलनी चाहिए। न ही किसी वग विशेष के लिए अलग से बिल कोड हो भीर न ही धनचित धारक्षराका प्राथय दिया जाये।

२ शकाली दश सी एक साम्प्र-दायिक दल है वह सिक्सो का केवल एक सोमित वग का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उसको राज-

नीतिक मान्यता देना सविधान की हब्टि से अनुचित है।

३ राजनीतिक पार्टी के रूप मे उसकी मान्यता रह नही की जाती तो तब तक उस दल से कोई बात-चीत न की जाय, जब तक वे धकाल तस्त मे स्व॰ माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की निन्दा न करे, उसके लिए पहचात्ताप प्रकटन करे धौर भारत की एकता भौर भ्रखण्डता के लिए तथा भार-तीय सविधान के पालन के लिए प्रतिज्ञान करे।

४ शकालियों के किसी ऐसे शिष्टमहल से बातचीत न की आये जिसमे उतनी ही सख्या मे गैर शका-लियों के भौर पजाब हिन्दुसों के भी प्रतिनिधि न हो।

ध्र मानन्दपुर माहब प्रस्ताव देश के विघटन का दस्तावेज है। उसी के विरोध में भापने ग्राम जनता से बोट मागे थे और जनता ने धापको धपुर्व बहुमत से जिनाया था । उस ग्रानन्द-पूर प्रस्ताव पर किसी भी तरह की बात करना जनादेश का उल्लंघन होगा ।

६ हिन्दू नेताभी को जेलो से बिना रिहा किये केवल शकाली नेताक्रो को छोडना पक्षपात पूर्ण कार्रवाई है।

७ प्रकाली नेता श्री लोगोवाल के जेल से छुटने के बाद दिये गये वक्तव्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि वे भारत सरकार की सत्ता को स्वी-कार नहीं करते भीर उससे बातबीत के सदभावना प्रयत्नो को उसकी कमजोरी सममते हैं। गुरुद्वारो मे हथियार रखने पर उन्हें कोई मापत्ति नहीं है। श्रीमती गांधी की हत्या की निन्दा करने को भी तैयार नहीं हैं भीर उनके वक्तव्यों में से यह भी ध्वनि निकलती है कि शापको इन्दिरा गांधी से बड़ा दूरमन समभते हैं भीर यह अमुरक्षा की भावना भीर बढ राष्ट्रपति जी को भ्रपशब्द कहने से बाज नहीं झाते हैं।

गुरुद्वारा एक्ट को पजाब के बाहरके गुरुद्वारो पर लागुन किया जाये। भीर भस्तिल भारतीय गुरु-द्वारा ऐक्ट न बनाया जाये।

१ विदेशों में जो सिक्स भारत विरोधी कार्रवाईयों में लिप्त हैं और खालिस्तान के लिए कार्यरत हैं। एक मध्यादेश बनाकर उनकी भारत मे विद्यमान सारी सम्पत्ति जब्त की जाते ।

१० जो उग्रवादी गिरपनार किये गये हैं उनके ऊपर पजाब के बाहर विशेष धदालन में मुक्टमे चलाये जाये भीर उनसे कोई रिया-यतन की जाये।

११ घकाली नेताओं ने छटने के बाद जो बक्तव्य दिये है उनसे प्रजाब के हिन्दुयों में असुरक्षा की भावना पुन ब्याप्त हो गयी है। उन्हें लगता है कि फिर जुन १६=४ से पूर्वकी स्थिति या रही है। शकाली नेताओ को छोडने की एकपक्षीय कर्रवाई से

गई है।

१२ ग्रबोहर फाजिल्का हरि यागा को देने की और लिक नहर को बनाने की व्यवस्थातरन्त की जाये। चुकि ऐसा न करने से जहाँ हरियासा की जनता मे ज्यादा ग्रसन्तोष वढ रहा है, वहा श्रीमतो इन्दिरा गांधी के दिये हुए वचन को भी भग किया जा रहा है इससे देश की सीमा पर भी सकर की सभावना बढती है।

१३ विभाजन से पूर्वऔर उसके बाद भी पजाब के सामाजिक जीवन मे ग्रायसमाज का बहुत बड़ा योग-दान रहा है भीर भ्रायसमाज ने गाज तक बिना किसी राजनीतिक स्वार्ध के निस्वार्थ भाव से देश सेवा के ग्र ने प्रश को निभाया है। इसलिए पड़ाब की कियी भी समस्या के समाधान में श्रार्थ नताओं के परा-मर्श पर विचार करना पहा सरकार के हित मे होगा वहा ाप्टीय द्वित मे भी होगा।

### महातमा हंसराज दिवस समारोह

२१ मप्रैल, रविवार ६ बजे प्रात से १२ बजे तक

स्थान-तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

ग्रघ्यक्ष-स्वामी सत्यप्रकाशानन्य

मुख्य ग्रतिथि-श्री के ली पन्त (कन्त्रीय शिक्षामन्त्री)

वक्ता-ला॰ रामगोपाल शालबाले (प्रधान सार्वदेशिक समा) प॰ शिवकुमार शास्त्री, प्रो॰ रस्नसिंह प्रि॰ कृष्णसिंह ग्रार्थ श्री क्षितीश वेवालकार सयोजक भी रामनाय सहगल

सभी आर्यसमाजो एव आर्य सस्थाओं से निवेदन है कि भारी सख्या मे पहचकर कार्यक्रम को सफल बनाय ।

> निवेदक डा० धर्मपाल महामन्त्री-दिल्ली भार्य प्रतिनिधि सभा

### सत्संग वाटिका

धयस्पाटह—हम लागस्य धौर चन्द्रमाकी तरह कत्यासा के पथपर सन्मागपर जल। संवर्षध्रच्छाई याय के पथपर ग्रन्गिरहे।

व्याच्या—प्रव हम बरा विचार **६**र के देख सुय क्या क्या करता है ?

> सूब एकाकी चरति । (यजुर्वेद) सूब प्रकेला चलता है।

यहार्कर हमें सदेश वरहे है है मानव वर्म कल-प्र-याय परीपकार सस्य माग में प्रार कोई तरा साथ न भी वैता हो तो भी परबाइ मत कर घकेवा ही धनने स यपथ पर घांगे बढते रहो। एक्ता चनो रे (हिंत रवीन्द्र) यही बान बाह्य पर मा में कहता है—

चरन् वं विन्यते मधु चरन् स्वायु उदुस्वरस्। सूबस्य पश्य श्रमाराम् यो न तन्त्रयते चरन्। चरवेति वरवेति ।

हे मनुष्या चनने वाला काय करने बाला वानि पुरुवार्षी श्वीक ही सपलवा गाठा है। बही सम प्रम काम प्रोते मोळ को विद्य कर सकता है। प्रालबी नहीं। वारा मूच की घोर देखी जो चलने से प्रमाद कभी नहीं करता है। प्रम जनते गहीं। प्रस्तशील रहां। उसम करते रहीं। काम वा वाच्यामि गदीर वा पातवामि। ब्रम्म वाल वाच्यामि गदीर वा पातवामि।

उक्कमेन हि सिच्छान्ति कार्याशित न सनोरकं । नित्र सुप्तस्य सिहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा ।।

धर्वात प्रयस्त करने से ही हमें कार्यों से सरसता निसती है मात्र मनो रख करने म कमा नहीं। जैसे मुग्होये शिंह के मुख में सपने धा प्रवेश नहीं करते सिंह को पुरुषाय करके हा उने प्राप्त करना पढ़ता है।

### दैव देव घालसी पुकारा।

जैना कि बाल्भीकाथ गामावण में रामच जनम में सीत हरता के पण्चात् कहते गायन मुन्यद्वारण दुख हरताया में पुरा के भाग्य का बदक्त दूबा और बहार गडल भा दिया आस्य कुछ भी नहीं गे। हमारा मंत्र विद्वा कम ही नो है। अन भाग्य के भरी-धापता होण्य ने गाल का अन सबया रिक्ता नना वार्तिण।

सहाव दयानन्त घरने स्वसन्तव्या सन्तव्या पंचेपणा करते है—मैं पृत्वाव को प्रास्त्र सन्ता हु। विश्वके सुखारत से सन्त सुवरता और स्वावन से सब विगवता है। साथ ही वे कहते हैं। वस का पत्र सवव दहलोक सीर परसोक

# आदर्श जीवन का वैदिक सन्देश

व्यास्याकार-विन्देश्वरी प्रसाद सिह

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनदटताघ्नना जानता सगमनहि॥

¥

बोमों में मिलता है

पुन जब हुम मूच पर घरिटात करते हैं तो पाते हैं कि मूच निजय से धराना काप कराई। धालस्य प्रमाद से खण कर को लगद गर्ना है। स्वता है। यहा इस मन्त्र से परमेश्वर हमें यह सबैख दे रह है— मानव धालस्य प्रमाद से सम्बद्धान है।

इंतर न समार के महान - अंकिया भी जोशीस पपटे का समय ही दिया है और हमें भी उतना ही दिया है देकेन्द्र भर का भी अल्टानहीं है। पर वे उसी समय का सहुपयोग करके सहार में अप्ट तम जन समें। कानीयाज सालमीर्क धार्ति में जन तक अपने समय के मुख्य को नहीं सममा वा सदार में सबसे पिछली पांक में ही तो वे पर बेंसे ही उन्होंने समय का मूख्य सममा ससार के समझी पांक में मा गये।

जिसने भी समय के मूल्य को सबस्मा वही विद्वान् वन नया धनवान श्रेष्ट महान् बन गया। जिसने भी समय के मूल्य को नहीं सबस्मा बही विश्वव गया।

धगर भरते समय हमारे वास भरवो गी सम् ति हो और हम उसके बदले मे बन्द मिनटो का समय प्राप्त करना भी बाहे तो पाप्त नहीं कर सकते हैं—

धत शास्त्र वोषशा करता है---

श्चायुष्य साम् एकोऽपि न लम्ब स्वरमकोटिनि । स चेन्निरचक नेति का नो गनिस्ततोऽिनका॥

यानि घरवो न्वस्तु मुनाबो में भी एक त्राण की मी बायुन प्राप्त होने वाली है। ग्ले जो केकार कर नष्ट कर देना है उसमें बडी और क्या हानि हो सकती है। धन समय का मून्य सममने हुए इसवा पूण नदपयोग करन

पुन सूत्र के कार्यों की बोर देखत हैं तो हम पाने हैं कि बस स्वय प्रक रिख होकर सन को प्रकाशित करता है। यहां देखन हम यह ग्रदेश कर रहे हैं कि हे मानव तुम सस्थम स्वाध्याय उपासना योगाम्यास ने तर हक्ष सन्ध्यादि से स्वय ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर सब को ज्ञान दिया करो जिससे मनुष्य प्रजान के प्रवेरे में न मटके। हदन की माहति का सन्त्र

सूर्यो नवाँ ज्योतिकय स्वाहा धौर प्रानिक गँज्योतिकय स्वाहा मुनी इरकर हम यही उपदेख कर रहे हैं कि को परमेश्वर हम यहाना जान देने बाला है। उसकी प्रसन्ता के लिए हम यक करते हैं साहति डालन है।

यानी हमे स्वय ज्ञानवान होकर स्रज्ञान भवेर मिटान से श्रवस्य ही लग बाना चाहिए। साथ ही हमे दान श्रवस्य देते रहना चाहिए और सर्वेवामेक वाना ना बहा बान विशिष्यते। (मनु)

जान विद्या जब हमारे पास होमी वजी तो हम उसका दान कर सकते हैं। श्रव पूर्ण जानवान विद्यान होकर सर्वे जबन्तु पुलिन की पानना से सदा जान दान करते हुए ही धपना बीवन दिसाना वाहिए।

पुन इस बन्त में रेन्यर यह जारेख दे रहें हैं कि भीते मूस सब लोकों को नियम में चनाता साक्त्रपण से सब को बारण करता वर्षा ताए करका दिन राणि नामादि का कारण होता है बैठे हैं इसे भी चेप्टराय स्वत्रप्त स्वत्रप्त के कार्यों में निष्क्राय सवा से शोमाद्या के रहना चाहिए स्वादि समेको उपकेश हमें देवन चाहिए स्वादि समेको उपकेश हमें देवन चाहिए स्वादि समेको उपकेश हमें देवर सब के माध्यम हो दे रहे हैं।

पुन जा हन कन्द्रमा की बोर देखते है तो गाते में कि जन्द्रमा प्रपना प्रकास न होते हं नी सब के प्रकास से प्रनासकान होकर नक को प्रकास दे न न्हता है। ध्रत कम भी हर सावन स जानवान होकर नान कारा सनन फैसाना व्यक्तिए।

या गानन पन में धीरे थीरे उदन प्राप्तम करता है धीर कृष्ण पन में धीरे थीरे पटना। पहली प्रवस्था में बहु दूल बन जाता है धीर दूषरी प्रवस्था में उसका नामोनियान भी मिट बाला है। प्रत धीरे धीरे प्रचनी प्रवस्था मुक्तार कर हम अंडड वन सकते हैं धीर धामर प्रवास बत्था के सीत हम सारपाह है दू धीर को धीरे विनास की धीर बाने विधा तो एक दिन हमारा मामो निष्णल तक मिन जारिया। यत मायबान वहुँ वह में दिवर एक जबहु हुने उपवेश देते हैं कि एक प्रवस्ता में इस स्वार में कोई जी में हुन करता है। वह या हो नीचे जारिया प्रवस्ता में इस स्वार में कोई जी में हुन करता है। वह या हो नीचे जारिया प्रवस्ता प्रवस्ता मुक्त के विल्या के ती हुम एक नित बसनाय हो जी हुम एक नित बसनाय के तहुन जारिया। में में इस एक नित बसनाय के तहुन जारिया। में में इस एक नित बसनाय के तहुन जारिया। में से इस एक नित बसनाय के तहुन जारिया। में प्रवस्ता सुनार के हो लए जयनवारी के हो हस सम हुछ ही प्राप्त कर सक्के हैं

पुण करना भर बिंग्न हानने वर हम पाते हैं कि करना का उठना भाग ही अकाधित हो पाता है जितना कि बहु अकाधि के तोत के सामने होता है पत हम उतना ही अकाधित हो पाते कि तिता हम प्रकाश जान के ओत के पात पहुँचे। जितना भी हम प्रकाशित हो जनना अकाध हमें व उमा की तरह है देते रहना चाहिए।

चार गहण के समय जब सूच और चारमा के भीच पृथियों था जाती है तब वितान जाग जब तुम अकाग से वर्षिक होता है जनने पर घ चेरा द्वा स्वात है। धत हुँग भी जब कभी गान के लोग ने धलग हो नायेंगे अवानान्याकार से उसी सपुगत से बुकते चेले जायेंगे। धत सामक कहता है— स्वाच्चानमा प्रमुद। स्वाच्चार से प्रमाद मत करो।

इसी कारण परम ज्ञानी मनु भगवान् घोषणा करते हैं---

> यो द्वियो धनवीस्य वेदसम्बन्ध कुरते समस । स जीव नेव शुद्धत्वय झाझ गण्डति सालस्य ॥

यानि वेद जान है रहित द्विज तरत पुत्र पौत्र सहित शुद्रत्व की प्राप्त ही व्याताहै। न्सीकारस उन्होंने दिव के कर्मों में हवन सन्ध्या और स्वाध्याय को श्रनिवाय स्थान दिया है। नित्य कम पे दबास प्रदवास की तरह ही कमी भी रकावट धनध्याय को उन्होंने स्थान नहीं विया। इसी कारसा बनुने घोषणा की-वेदमेव भाग्येसत् नित्यम् यथा कालमत-न्द्रित । तहि प्राष्ट्र परमोधम स्वयद्यमं धन्यद् उच्यते । यानी निरासस होकर श्रविकाधिक वदाध्ययम ही सब बर्मी से अंष्ठतम वस है। परम कत्तव्य है। बत महर्षि दयानन्द ग्रायसमात्र के तीसरे नियम में घोषणा करते है--वद सब सत्य विचामी का पुस्तक है।

वेद का पढता पढामा और सुनता सुनाना सब धार्यों का परम धम है। इसी कारण दब दयानन्द सारा समय वेसादि के सम्मयन प्रचार और योगाम्यास में ही सनाते हैं।

बन्द्रमा पर जब पुन हम बिट डासते है तो पाते हैं कि बन बन्द्रमा समावस को (बेस पुष्ठ ११ पर)

### 🖈 वचन-सन्देश 🛊

नवीन कान्ति का बीजारोपण

"स्वामी दयानन्द युग द्रष्टा, युग निर्माता थे। भेरे सस्कारो पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों को वेदाधिकार दिसाकर महिलाग्रों में नवीन क्रांति का बोजारोपए। किया। नारों को स्थिति में सुधार को प्रनवरत वेष्टा करते रहे। नारियों की वेदना देखकर वह कहा करते थे, माई । इससे प्रधिक हृदय विदारक दु स क्या हो सकता है। विषवाधा को दुख भरी आहो से इस देश का सर्वनाश हो रहा है।

दयानन्द ने बदो की बैज्ञानिक व्याख्याए प्रस्तुत कर, वैदिक ग्रध्ययन प्रणाली में एक त्रुतन युग का सूत्रपान किया है। इन्हों सब कार्यों के लिए हम सब जनके ऋणी है।'

-श्रोमतो महादेवी वर्मा

### दयानन्द और आर्यसमाज

"ग्रायंसमाज एक जीता जागना सघ है। वह ग्राख खुली रखकर दुनिया की ग्रोर देखने वाली एक सगठिन सम्या है। दयानन्द सरस्वती जैसा तेजस्वी ब्रह्मचारी ग्रीर समाज हितैषी ही निर्भयता से किसी राजा से भी कह सकता था कि 'तूकुत्ता मत बन।"

जिस समाज में स्वामी दयानन्द में लेकर स्वामी श्रद्धानन्द तक बलिदान देने वाले वीर उत्पन्न हा जाते हैं, उम समाज का तेज सदा उज्जवल ही रहने वाला है।

–काका साहब कालेकर

सम्पादकीय

# राष्ट्र की प्रतिष्ठा का सवाल है-पंजाब

पजाब की हरों भरी घरती, बीरता, बदम्य उत्साह धौर आवन आग्नुति का प्रताक रही है। गीत सगीत, नाच रग की यहा की पता सि पता के पता की यहा की समनी एक अलग रहुवान है। होल तासी को गमक पर उछ्जतते नावते भगक करते अलगत्तर चुक्क, ऊषी तास के हो की हेल वसाते हलवाहे, बागों में भूले बालकर गातों खुका मनातों युवतिया, ऊषी कि दिशाल साने याते यह पुरुषा का प्रदेश है पताबां यहने यह पता के प्रताक, तो शान्ति सन्नीच के प्रताक का पहले हैं पताबां यह पहले के प्रताक के प्रताक, तो शान्ति सन्नीच के प्रताक करते का स्वत पहली का स्वत प्रताक के प्रताक के प्रताक के प्रताक के प्रताक के स्वत के स्वत के स्वत के स्वत के स्वत हो से विश्व का स्वत हो हो से स्वत है। ये लाग ता समूच जनते के हो यह सा हो से स्वत है। ये लाग ता समूच जनते के हो यह देते है।

आरम्य सं हो यह प्रवेश भारत का हृदय रहा है। वर्ता मकी, वीर विरक्षा क इस प्रवेश का दानहाल राग भार बालवान से सम् हुमा है। इसत, गात, नावने खुषी मनात हर पना में मब बून भीर मातू, आकाश भार अंत्रशाय का अवावह वित्र दिसाइ देता है। दुख ता यह है क्लंत वाल तथाकायत सामका द्वारा हो यह वित्र बनाया गया है। विनम अक्ता, चन्ता, सानिया का उपदेशामृत वित्रता या उन्हों क द्वारा हुंचाहुल बहुर बाटा बा रहा है।

बहर उगलत, भडकात य सन्त

अब तक श्री लागावाल का शान्त मोर समकाता का समर्थक माना जाता रहा है। लाक ये लाव रास्त पर करन बड़ा रहे है उसका माना जाता रहा है। लाक ये लाव रास्त पर करन बड़ा रहे है उसका माना जाता रहा है। लाक रे दूर उन्होंने कहा— मुक्त पर यह कहन के लिए दवाव डाला जा रहा है कि सत अवरावाल से हमारा काई वास्ता नहा है। ज्वान कहा, हगारे शारीरिक सम्बन्ध दूट सकते हैं लेकिन वामिक सम्बन्ध कमी नहीं दूर सकते। उन्होंने चेतावती दी— 'यदि सरकार पजाब समस्या श्रीम हल नहों करती ता सिक्ष युवको के म्रास्ट प्रवक्त तावा सब कुछ जलाकर राख कर देगा।''

सीमान्त गांव कलानीर के पुढ़ारा बन्या बहादुर से सन् तोगोवाल की उपस्थिति में एक दीनान म सीमती इन्दिरा गांधी के क्षित हुलार सत्वत विद्व को माध्यार कोर का करेंसी नाटो की माला पहुनाकर सम्मानित किया गया। बक्ताओं ने अपने मावएा में सत्वक्त सिंहु को जिन्दा सहीद घोषित किया। इरक्वित लोगो-वाल ने भावएंगे ने कहा-समझीता होने का तब तक सवाल नहीं उठता जब तक आनन्तपुर भरताल समेत सकाली दक्त की माँग स्वीकार नहीं कर ली बाती। बटाला में उन्होंने महा तक कह दिया-(इन्दिरा गाँधी की हुएया के बारे में) सत्वक्त सिंह्य बौर बैम्मत्सीहर ने बही काम किया है वो सहाद कम दिह ने जनत्व जायर की हरवा करते किया था। बीवाम में साविस्तान जिदाबाद, और मिंबरावाले बिन्दाबाद के नारे लगाये गये। फिर टकराव की स्थिति

पजान के हालात दिन पर दिन विगडते ही जा रहे हैं। भड कती माग को सरकार जिल्ला शान्त करने के प्रयत्न करती है उलने ही उपवादी भौर भकाली नेता उसे भौर भडका देते हैं। २३ मार्च को हुसैनी बाला सीमा की यात्रा पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी गये। यह उनकी साहिंसक यात्रा थी। उन्होंने सदभावनामय वातावरए। बनाने के लिए पजाब के लोगों के लिए उन्मुक्त हृदय में कुछ घोषगाएँ की हैं। पजाब मे थीन बाँच बनाया जायेगा। जिससे विजली और पानी की किसानो को किल्लत न हो। दूसरी घोषगा पजाब मे रेल के डिब्बे बनाने का बड़ा कारखाना लगाया जायेगा जिससे रोजगार की भारी रम्भावनाए वढे और बेरोजगारी हटे। जब कि अन्य प्रान्तो के मुकाबले पजाब में बेरोजगारी बहुत ही कम है। किमानो की जिन्स की मूल्यवृद्धि तथा गेह पर बोनस, भारतीय संस्कृतियों का केन्द्र भी पजाब में स्थापित करने की घोषणाएँ की । इन घोषणाओं से आशा की जासकनी थी कि सम्भवत अकाली नेताश्री का रुव कुछ नम्न होगा। परन्तु उनकी हब्टि तो कही सौर लगी है वे बिना लागिस्तानी परचम लहराये बठना नहीं चाहते। झकानी नैनान्नो की रिहाई भी इसीलिए की गई की कि सम्भवत वार्ना की मेज पर बठवर कुछ सममौते की स्थिति दढ होगी। किन्तु ग्रकाली दल टकराव के रास्ते पर खुलकर भाता दिखाई दे रहा है। उप्रवादी भानकवादियों के हाथ में पूरी शक्ति माती जा रही है। सरकार का दायित्व

धवपर की तरह लम्बी होती जा गृही इस समस्या का समा-धान जल्दी से जल्दी लोजा जाना जाहिए। देशमक्न सिन्न धोर हिल्लुधो को विस्त्वास में लेकर जनता के हित को ध्यान मे रखकर उन्हें एक्स पार्टी मानकर एकनरफा निर्णय कर देना चाहिए। उपवादियो से निपटने के लिए सरकार को धपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रकार सिन्ब ब्लोपिस्तान (पाकिस्तान) मे जिया ने धपने दमन चक्र से स्थिति शान्त की है उस तरह का दमन चक्र न भी सम्मन हो परन्तु उपवादियों को शान्त करने का रास्ता तो ध्रपना ही होना चाहिए।

विरोधी बलो की भूमिका

राष्ट्र की बिगवती समस्या किसी पार्टी की नाक का सवाल नहीं है, सचमुज यह देश की नाक इज्जन का सवाल है। इसे हर प्रकार से हल करने के लिए समस्त बलों को मिलकर हल करना चाहिए। अब संयय आ गया है कि देश की प्रतिष्ठा दाव पर है, इसके लिए सभी राजनैतिक नेताओं के योगदान का समय आ चुका है हमें अपने समस्त मवयें से सुलाकर भारत मा के फटते आवल को सीना चाहिए, यह समय की पुकार है।

—सक्षपाल सुवाष्ट

मनुष्यो ! तुम ससार के धन्दर मानन्द और शान्ति से जीवन जीन के लिए आये हो। तुम्हारे मन वचन धौर कम मे वे भूभ शक्तिया भरी हुई हैं जो ससार भर के लिए कल्यालकारी है। तुम्हारे स्वय के कार्यों की समार सुख णाम्यि पर प्रतिक्रिया होती है। यदि तुम्हारे सकत्र धच्छे हैं और काय उत्तम भाव से होते है तो निज्वय ही तुम ससारकी सूख समृद्धि में बढोतरी कर

बाज हम बान लिए जा रहे है दूसरे के दुख नद म हम कोई वास्ता नही है जो दुल या वरी बात हम भ्रपने लिए नहीं चाहते वह दूसरे के लिए करते हुए क्यो नहीं डरते ? कारए। यही है कि हम लाडमेकाले की शिला पद्धति में पढकर सस्कारवान् न बनकर एक कम्प्यूटर की तरह से जीवन जी रहे हैं। हमारा श्रञ्जन के सदय की तरह एक ही सक्य है बन की प्राप्त करना शायद मतु हरि को इस काल का पहल ही भागास हो गया या इसलिए जिल्ला पडा सर्वे गुरा काञ्चनमाध्यति हमारी प्राचीन ऋषिया का शिक्षा प्रशाली स्व वलस्त्री एव त्या। माटना काविस्तार करन वालाधी कहीं बाज की शिक्षा जो चाद सिक्को के द्वारा धादनी से कुछ भी कराल । इन सब विषयों को से चना है। ग्रगर मुभे सुक्त चाहिए ती मुमेदूसरे को मूख देना प॰गा ग्रन्थया सम्बक्षीकामना हा छोड द ।

ऋषि ने कहा धगर सुख प्राप्त करना है ब्रान्दप्रप्त करनाहै तो सयबद धम चर कवाक्यका अवन से उता-रनापडगा। सत्य का प्रयाग वाणा से क गे जीवन में उतारोंगे तो धम तुम्यरा धनुगामा बनेगारशाकरगा। तुम्हारामस र मुनहुराहोगा। जीवन मे द्यभाव न<sub>ह</sub>ी होगाः जिमन भी सत्य को उनारा वही सितारे की तव्ह से गगन

# आनन्द का शाश्वत मार्ग

प० बलजीत शास्त्री एम ए

सब के परस्पर मिलकर चलने से ही

समाज विकसित होता है याने बढता

है भीर पसताकृतता है। तुम किसी

**-यक्ति पर हिसा बस्नात्कार,** सूठ कपट

या प्रत्याचार करते हो तो वास्तव ने

स्वयम् भपने भानको ही वायस करते हो।

यदि तम नमाज में या राष्ट्र में रहने का

स्विकार माति हो तो इसरी को स्वत

न्त्रता पुरुक बानन्द से बौर निमयता से

जीने दो । तुम दूसरों को सधिक दिन

घोसे मेन रखसकोगे। एक न एक दिन

तुम्हारा पाप प्रकट हो जावेगा। फिर तम्हें

बपमान के पूट राने पहेंगे। उसकी पीडा

हजारी जिल्ह्रमों के डक मारने जैसी

हागी। पाप पर श्रविक दिन तक पर्दा

दुर्योधन समभता था कि भरी सभा

मे डोपदी की मानहानि करके वह कोई

पाप कम नहीं कर रहा है। कस समझता

था देवकी के पुत्रों की हरवा पाप नहीं है।

बाली बाई की सम्पत्ति एव पत्नी इहीन

कर गर्वित होता वा रावस सममता था

महासती सीताका भ्रपहरए। कर लका

ले जाना कुछ बुरा नहीं है। किन्तू पाप

तो मिर पर चडकर बोलता है। पापी को

नष्ट कर देता है। दुर्योधन कस रावण

वासी बादिसबक गपही उन्हें सा गये।

सदा के लिए श्मशान म जलकर व राख

हो नए भीर छोड़ नय धपने पापो की

काली श्वाया <sup>।</sup> पाप श्रयवा दुराचार चाहे

**र्वं**म भी व्योन हो मनुष्य कासपरिवार

नाश कर देता है। पाप कमी न कमी,

नही डाला जा सकता।

पर चमका। गांधी जी ने सल्य भीर ग्रहिसाको ही ग्रपनाया भीर राष्ट्रपिता कहलाये। विश्वमे नामग्रमर कर गवे धपना। हम भी किसी एक राहको श्रपना कर देखें क्या धानन्द धायेगा जीवन के भन्दर । भपने प्राचीन गौरव को पहचानकर चलना है। संस्कृति की सुरक्षा करनी है तो दूसरों के दुख में दू ली होना जानो सुख मे सुखी होना मीखो।

तुम समार में धानन्द पुत्रक रहना चाहते हो तो दूसरो को धानन्द पूतक रहने दो। तुम यदि समभने ही कि दूसरो को सताने से तुम्हारा कुछ नही विशवता यह तुम्हारा भ्रम है। वास्तव मे तुम्हारी ठगी चोले बाजी घत्याचार स्वय तुम्हे ही नष्ट करने हैं। तुम अपनी भात्मा का हनन करते हा। यमाज मे कोई भी श्रसम नहीं है। सब एक बड़े सरीर के सब हैं। पुरासमाज एक विशास गरीर है। स्या तुम बहुपसन्द करोगे कि तुम्हारे शरीर का एक हाथ उसरे हाथ को का उतने एक पाव दूसर पांव का चोट पहुचाये दात खुद तुम्हारी जीभ को काट डाले, हाथ सिर को लोड डाने। नहीं तुम यह कदापि पसद नहीं करोगे। इससे समाज का स्रहित होगा भीर नुस्हारा भस्तिस्व सकट मे वड जायगा।

इस मानव सशाज के शिल्म शिल्म व्यक्ति भी इसा प्रकार तुम्हारे सामाजिक शरीर के प्रव हैं। कोई •पक्ति हाथ की तरह है काई बादमी पावी की तरह को है नत हती कोई कान नाक मुह, हृदय त्रिगर कारफ फ को की जगह है। सर्वनास का कारए। बनता है।

तुम्हारा ईमानदारी, सज्बनता, सच्चाई निष्पक्षता बादि का बच्चो पर, बाने वाली नयी पीडी पर बडा प्रभाव पडता है। जैसे स्वय माता-पिता होते हैं, वैसे ही उनके पुत्र पुत्री सादि होते हैं। पापाचार के वातावरता में पले हुए बच्चे स्वजावत दृष्ट हो जाते हैं। सदग्रहस्बी मे हमारे मनोविकार स्वच्छ होते रहते हैं, जनका विष दूर होता रहता है। बच्चो भौर वर्मपरनी के सुबाद सम्पर्क मे लोश, क्रोध ईर्ष्मा हेव बादि मनोविकारों का शोध होता है। इस लिए ईमानदारी का जीवन ही हर प्रकार से वरसीय है पूरे समाज का हित करने वाला है।

ब्रत्याचार ब्रन्याय हिसा भूठ कपर खल व्यक्ति जार तुम्हारी घात्म के गुरा नही हैं। इनसे नुम्हारा कोई सम्बन्ध नही है। इन्द्रिया तुम्हें गुनाम नही बना सकती।

तुम तो निविकार सत् वित् द्यानन्द बात्मा हो। पूर्ण शा त बात्मा हो। स्वतन्त्र हो । स्व 😘 हो । न्यायकारी हो । मानसिक सतुजन म पूर्णहो। परमात्मा सर्वेज्यापी भीर न्यायकारी है। भारमा के रूप मं वह तुम्हारे प्रन्दर विराजमान है। विवेक की सर्वोपरि मानना दिव्य शक्तियो का विकास करना मानवताको ऊवा उठाना--- इन सत्प्रवृत्तिको मे ही तुम्हारी महानता है।

धाधो जिलकर धपने हृदय में उस बात्मतत्त्व के रूप मे परमात्मा की लोजे, जाने भीर प्राप्त करे। वह दिस्य साबाना जो भक्षय है भनमोल है। स्वय को परिवार को समाज को राष्ट्र को सम-पित होकर वम एव सस्कृति के प्रति क्तज्ञ वर्ने । ॰ नक द्वारा जा हमारा निर्माश हौता है उसक करता के रूप में हम भारण करें और स्वच्छ सम ज का निर्माण करें। तभी हम कह नकते हैं -- धाल्मन प्रतिकृतानि परेवा न समाचरेत्।

> बायसमाज कालवाजी नई दिल्ली---१६

कारण ही हमारे देश को जो क्षति पहची है। उसकी पूर्ति खेकडों वयों तक नहीं की जासकती। वज्र व द्याध्यम व्यवस्था सम होने के कारए। समाख बाख धनेक जातियों में बट गया है। कुरीतियों के बढन व धापस मे एकता म होने के कारण ही मूलकाल में बाहरी शक्तियों के बाक मए हाते रहे।

जिस समय मतो एव सम्प्रदायी तक ही वन ख॰ दका धर्म सीमित वा। तब महर्षि न वैदिक धर्म की वास्त्रविकता का सब लोगों को परिचय दिया। धर्म के नाम पर बजो मे पसुर्घोतचा बनुष्य सक की वित दिवे वाने का ऋषि ने वोर विरोध किया। सती प्रधा, मर्महत्या, तथा व्यक्तिकार के विश्वापक उन्होंने अपनी घावाच बुलव की। तभी तो होनियाँ, पालविवयों सबा वर्ग के ठेकेवारों की पोश सूचने नवी । देवी देवताओं जूतप्रेव धीर

देर सबेर अवस्य प्रकट होता है और पिक्षाचों की पूजाएव सत्य पासकों के विरुद्ध ऋषिवर ने प्रवस बान्दोलन खेड दिया। उन्होने धन्य नतो के सर्वी का बी श्रव्ययन किया तथा गभीरता से विचार करने के बाद उन्होंने सत्य की स्रोध की तथा वेद मन्तव्य पर मानव मात्र को चलने के जिए प्रेरित किया। वर्ष क्षेत्र की व्यापकता पर विशेष वस देकर व बड मूर्तिपूजा बन स्वल तीर्व मे बास्वा ध दि अनेक प्रवैदिक मतो का उन्होंने निराकरण किया। सत्य के प्रकृष करने के

घोष वयाया ।

स्त्रियो पर हो रहे अत्याचारो को देखकर उन्होंने हमे बताया 'यम नार्यस्यु पूज्यन्ते रमन्ते तम देवता '। नारियों की विश्वा से वनित नहीं किया का सकता

लिए उन्होंने सोवों से प्रचलित कढ़िवाब-

को तथा धन्य बुराइयो को फैंक देने का

(ga det f 44)

### महर्षि दयानन्द की देन

मोहनलाल शर्मा 'रिंदम'

जिन समय ऋषि दयानन्द भारत के रगमच पर भावे उस समय हमारे देश की यही दुरवस्था थी। बहुत सी कुरीतियो ने धर्मकास्थान ल रसाया। ऋषि पर म्परा लुप्त प्राय सी बी ढोगी व पासहियो का खूब बोसबामा था। सभी जगह मिथ्या व भ्रष्ट ग्रथो का प्रचार चा। वैदिक बम का उद्धार प्रभी तक नहीं हो पासा था। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुबा। उर्ोने बपने सदज्ञान रूपी तेज से भ्रज्ञान रूपी सथकार को नष्ट भ्रष्ट कर हाला। वे ऋषि दमानन्द ही थे जिन्होने बेद ज्ञान की प्रचण्ड ज्योति से इस भागं

धरा को भागोक प्रदान किया।

महर्षि दयानन्द सच्चे घर्चों मे राष्ट्र. जाति, समाव तथा मानवता के सवय ब सच्चे प्रहरी वे । वे जीवन पर्यन्त अन्याय व प्रत्याचार के सम्मुख सर्वव प्रत्यन्त निर्भीक होकर सिंह की बाति हटे रहे। उनकी विशेयता ये थी कि वे परिस्थितियो ते कभी नहीं धवराये बल्क परिस्थितिको को उन्होंने अपने अनुरूप बना सिया। ऋषि दयानन्द ने ही हमे बताया कि बेद मानव वाति का सब से पुराना पवित्र व महत्व-पूर्ण तथ है। यह सब सत्य विद्यासी का मारूर है। इसी वेद ज्ञान के ह्यास के

अ≽ भो३म् अ⊗

#### आर्यसमाज भावी का

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के विवारों में क्रान्ति लाने के लिए धार्यममाज को एक सक्षम माध्यम बनाया । यो तो महर्षि के लेख के धनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार बह्या से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही हैं जिन का मूल आधार वेद ही हैं। आय जाति प्रपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे भौर मानव मात्र का जीवन की दिशा मिल सके, यह ऋषि की तीव म्रिजलाचा थो । गत सौ वर्षों के इतिहास में बार्यसमाज ने मानव समाज के हित के लिए चतुर्मुकी विकास योजनाए बनायी उन्हे क्रियान्वित भी किया। इससे बौद्धिक वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को मागे बढने की प्ररणा भी प्राप्त हुईं। परन्तु जीवन का चतु-र्मुली विकास कार्यक्रम शिथिल न हो जाए आगे चलता रहे। इस दिखा मे विचार करना बाज फिर ग्राव-इयक है। इसी विचार से भविष्य मे ग्रामसमाज के कार्यक्रमों की रूपरेखा मेरी इंटिट में निम्नांकित प्रकार से होनी चाहिए--

१ भ्रायंसमाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पद्धति के ही केन्द्र न वर्ने, स्रिवतु उनमे साने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रात्मप्ररणा, वार्मिक मावना भीर बन्तज्योंति को प्राप्त कर सके, ऐसी व्यवस्था हो।

२ मार्य जाति की पूजा पद्धति में 'यक्त' का विशेष स्थान है। वस्तुन यज्ञ मानव जाति के सर्व-कस्वारा भाव का भावशं कर्म है। इस की प्रत्येक धार्मिक किया की सत्य, श्रद्धा तथा मनित के साथ करने ही पर लाभ की आशा की जा सकती है। यदि बोडा ब्यानपूर्वक इसे किया जाये तो निरचय ही वामिक भावना की वृद्धि होगी । उचित यही है कि केवल बाह्य कर्म म बनाकर जीवन में इसी मूल माबना धर्वात् धनासन्ति—इद न मम की भावना को जीवन में उतारा आए ।

३ वेदोपदेश-वेद ईव्वर की बेर्स्यांसी बाशी है जो मानव तथा शानवं समार्थ में जीवन की प्रत्येक धविरंका में कियार देने में समर्व है। इंसीलिए श्रेद्धापूर्वक यज्ञ कर्ने के शनन्तर ऋषि ने बेदोपबेश का हीना शायक्षम् वसाया है। जीवस से है the sentential primer and चिन्तन के भाषार पर भनुकूल भाषा में ग्रर्थात् देश की भाषाका ध्यान रखते हुए वेदप्रवचन करे । भाय जन वेद का स्वाध्याय कर उसके प्रवचन का भी भ्रम्यास करे। श्रार्य जनो को यदि यह सुवित्रा प्राप्त न हो सके, तो पुस्तक से ही वेद प्रवचन पढा जाये शयना सुयोग्य विद्वानो के कैसेटो का सद्पयोग भी किया जाना लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि बेदोपदेश से पूव वातावरए। को सात्त्विक बनाने के लिए ग्रच्छे स्तर पर वार्मिक सगीत भी मावश्यक है।

४ योग सावना-- महर्षि दया-नन्द ने यो तो बीज रूप में सन्ध्या के मन्त्रों में योग करने का सकेत प्रथमा जाप का भी सकेत दिया है। उसका परम उहेश्य जीवन मे धना-सक्त होकर अन्तर्मुखी होते हुए बात्मा तथा परमात्मा का दर्शन-लाम है। योग साधना के लिए प्रारागयाम अर्थ सहित जप का श्रम्यास बौर मन्त्रार्थ चिन्तन का घम्यास घावश्यक है।

५ विक्षरा-प्रत्येक प्रार्यसमाज को धर्म, सस्कृति, सम्यता गौर आत्म-चिन्तन के विचारों का प्रसार करने के लिए शिक्षाको भी उसी दिशा में ढालना चाहिए । शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी भौतिक और धाध्यात्मिक जीवन की शिक्षा धार्य-ममाज दे सके। शिक्षा एकागी न हो भर्यात् केवल मात्र भक्षर ज्ञान ही शिक्षाका लक्ष्य न हो। जागरता उसका उहेध्य हो। धार्यसमाज की सभी शिक्षा सस्याको ने नैतिक षार्मिक शिक्षा घनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्म का धन्य धर्मों से तूल-नात्मक परिचय प्राप्त हो।

६ नवयुवक तथा नवयुवतियाँ को शार्यसमाज की बोर ग्राकवित करने के लिए वैदिक वर्ग के विवय मे सवाद, भाषरा और कविताको सादि का कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना षाहिए। सा**ष**्ट्री सारीरिक विकास के लिए ज्यायाम भादि की दिव का कार्यक्रम भी होना चाहिए और सभी प्रकार से वे नवयुवक बनुषासनप्रिय होते हुए वर्गित्रम हों।

७ पिछडे वर्ग मे सेवा-प्रत्येक त्रांत की प्रतिनिधि सनाएँ अपना कर्तव्य बार्वे कि उनके प्रांत ने कम हैं की एक हैता । विश्वासने ही

जिसमें जाति के उपेक्षित बच्चो को युवा वर्ग को अधवा प्रीढ वर्ग को शिक्षा स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाये ग्रपित् उसमे निरन्तर उन्नति हो।

द आर्यसमाज के ग्रविकारियो मे भाज सब से बड़ी कमी यह है कि पुराने लोगो की भाति जनसम्पक का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिस के परिगामस्वरूप बार्य सदस्या मे सहानुभूति स्नेह और हित की भावना नही रही। ग्रावरयक है कि इस कार्यक्रम को पन शुरू किया जाये। कम से कम एक मास मे एक सप्ताह अथवा कुछ दिन जसी भी सुविधाही सभी सदस्यों के सुख-दूख का पता और सहायता की म्रावश्यकता को जाना जाय, जिससे सभी ग्रार्थ सम्दर्भ नार्यक्रम के द्वारा बृहत परिवार का रूप ले सक।

यदि उपरोक्त विचारो को भावी वर्षों में मिक्रय रूप से अप नापा जाये, नो मेरे विचार मे निश्चय हो आयसमाजो की उन्नति

> श्रोमप्रकाश त्यागी (मर्त्रा) सावदेशिक बाय प्रतिनिधि समा दिल्ली

# सिंह जाग ! वीर जाग !!

—डा० कृष्णलाल ग्रा**चा**र्यं संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली ११००७

सिंह जाय सो रहा है तू कहीं पढा

कीर जान सो रहा है त्यो यहाँ पडा। सास नोधने लगे हैं शत्रु प्राज

नीव छोड फिर भी हुमातूनही आरडा।। तेरी नात्भूमि है वह तेरी जन्मभू

तु यही पत्ना यही का ग्रन्न का बढा।

उपनिषद का देद काहै ज्ञान को बहा

रामकृष्ण की कवाध्योको भी तुपढा।। स्वामी दयानन्द के महान्

ग्रमुतीपदेश का किया है तूने पान । धरिबन्द तिसक मासवीय वी पटेलकी

प्रेरणाए वन्दे मातरम् का भक्ति गाम ।) पूर्व विशा देश से करवट तो एक न

सूर्य उदय हो रहा उसको तो देख ले। सामिया उथा की यह सन्देख देरही

व्यव्य अन्यकार की तूतोड मेन लं। चाचक्य चन्द्रगुप्त भीय भी भशोक की,

मालवेश विक्रमादिस्य की मी नीतियाँ । समुद्रगुप्त दिन्तिजय प्रताप शौय को

भूजक्षी नहीं है शिवा की की गीतिया ।।

ऋौंसी रानी चेम्नमा देवियाँ मगतसिंह बिल्मिस भाषाद की पुकार।

धुमाच विवासक सभी वीर वे विये

मातुभूमि के लिए देह को विसार !! सुबै बन के जाम मिटा धन्त्रकार धाज

भूल नहीं भूत नहीं इस सीयं-स्थाय की। स्वदेख-वेच-भाषा प्रेम की मझाल ले

जला हृदय में वर्ग की अधकती साग को।।

श्राय वन कि बज्ञ अंध्ठ कम है न मूल,

वास्त्र वा रहे एक स्वर से वेद-मात । कुछ भीकर तूबेद ज्ञान को नहीं मुला,

वही तेरा धाषार है भी वही विहान ॥ सम्बद्धान्यम् न यूनना

निसा के हाथ हाथ से उठा ले भाई की। माता नेरी जूनि है, इसी का पुत तू

पुत्र-पुता नवीं सहें दलायें बाद को ॥ सिंह बाब शपने रूप को पहचान से

इस बरा को, भी नयन-पवन को जान के। प्रवर्गी वर्जना की, प्रवर्गी माथा की शमक,

बेच्ठ तेरी बाबा 🕻 उड़ी में साथ से H

धाध्यात्मिक जनत् की धायसमाध की देन का सीचा सा सब है, महर्षि दया नन्द की देन । महर्षि दक्षानन्द ने ही वैदिक बम के सिद्धान्तों मान्यताबी और सस्कृति के प्रचार प्रसार तथा प्रतिपादन के लिए धायसमाज की स्वापना की।

महान् णिक्षा शास्त्री एव कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महर्षि को श्रद्धाञ्चली वर्षित करते हुए लिखा---

'My reverence to the great teacher Dayanand who e v sion found units and truth in India's spiritual h story whose mind huminiously comprehanced all departments of India's life whose call to Ind a is the call of awakening to truth and purity from mertness of unreason and ignorance of the meaning of

देव दयानन्द ने भारतीय जीवन का विविधताको ध्रयत सूक्ष्म इच्टिसे देखा था। उनका ब्राह्मन सस्य और पवित्रता ४ एकेश्वरवाद का प्रतिपादन सत्याथप्रकाश मे जिल्हा है-

प्रश्न- वेद ये ईश्वर धनेक हैं इस बास को तुम मामते हो वा नहीं ?

उतर--नहीं मानते क्यों कि चारो वेदों में ऐसा कड़ी नहीं सिखा जिससे सनेक ईश्वर सिद्ध हो। किन्तु यह तो लिला है कि ईश्वर एक है।

पाश्यात्य संस्कृतज्ञी ने भत्यन्त चृष्टता धीर दुर्भावना से इस बात का खुलकर प्रचार किया कि वेदी से बन देवत बाद है धर्वात् अनक देवा की पूजा उपासना का विधान है। देव दयानन्द ने अपना मत स्पष्ट करते हुए कहा कि ब्रह्म के स्रति रिक्त धन्य किसी भी देवी देवता की पूजा उरासना का कोई विधान नहीं है।

वेदो में बहुदेवतावाद है या नहीं इसका निराय इस पर निमर करता है कि वेदो का सप करने मे कौन सी शैंशी का श्रवसम्बन सिया क्या है। प्राचीन नैशक्तक शैक्षी सावरा की कमकाण्ड बौसी बयवा पारवात्य सस्कृतज्ञो की प्रकृति परक नैती बेट के प्रति सत्य भारता के लिए निन्धित रूप से नैदक्तिक शैकी को

को परमात्मा के प्रतिरिक्त किसी प्रन्य की ज्यासना करता है वह पस् है।

मार्गि दयानन्द ने एकेक्सरवाद का प्रतिपादन करते हुए एक सूत्र दिया है धन्यादि नामों से मुक्त धन परनेश्वर का ही प्रहुण होता है। तका कहां तहा स्तुति प्राथना उपासना सबक व्यापक शब सनातन धीर सुष्टिकर्ता सावि विश्वेषण सिक्के हैं वही वही इन नामी से परमेददर का ब्रहण होता है।

यहाहम केवस दो मंत्री को उदा हरण के इस्प में प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे स्पष्ट ने कि अने क शब्द एक ईश्वर के

त्तवेवान्तित्तवावित्यस्तद्वायुस्तवु च द्रमा । त्रदेव शुक्रतद् बह्यता ग्राप संप्रवापति ।

वही ज्ञान स्वरूप होने से धरिन है सब को ग्रहरण करने से बही आदित्य है मनन्त बलवान् होने से वही बायु है बानन्दमय होने से वही बादमा है शुद्ध भाव रुक्त ह'ने से वही शुक है महान् होने से बहा बहा है सवत्र न्यापक होने से बाप है बौर सब का स्वामी होने से वही त्रजापति है।

विवाचित किया वा सकता है।

११) शमस्य विश्व का मूल एक मात्र जड़ तस्व है।

१४ वर्षन १६८६

(२) दूसरा विकार है कि मूल में वास्त्वविक एक मात्र बेतन तस्य है ।

(३) तीसरी विचारवारा है जिसके धनुसार वड भीर चेतन दोनों प्रकार के तस्वी का बस्तित्व है और दोनो के सह-बोब से सुष्टि ब्रावि जगत् काय का निबहि होता है।

श्रव इन तीनो का पृथक पृथक विश्ले-चण प्रस्तुत करने । वैदिक काम मे आर्य स्रोगों का ईश्वर के स्रस्तित्व में पूरा विश्वास या । उस परम पुरुष की उपासना तथा तदनुकूल प्रपने जीवन के सभी कर्मी का धनष्ठान उनका धादले था। परन्तु उसी काल में भ्रायजाति में एक नवयुवक बृहस्पति नाम का हथा उसने परमात्मा की उपासना को डकोसला बताया और ईश्वर के मस्तित्व को मानने में इकार कर दिया। उसका विश्वास था कि ब्रह्म नाम का कोई तत्त्व नहीं है। ऐसा विश्वास केवल मूलताहै। यह सम्पूरा जगत् मात्र उतनाही है जो कुछ प्रत्यक्ष है इससे परे किसी श्री धन्य सत्ता का धस्तित्व नहीं

### जगत् को आर्यसमाज आध्यात्मिक

प्रेमचन्द श्रीषर एम० ए०

का बाह्यान वा क्योंकि उस समय तक भाग्तवस निध्या विश्वासीकी जडता भीर भ्रमन गौरव गा प्रतीत के प्रति श्चतान के जाल में फस ५क वे। देव दमा नदग्रयसम्ब के क्रातिकारी भाषा लन द्वारा भारतवासियों को निष्या साध वित्वासी भी जहता से मुक्त कराना बाहन वे

ब यसमाज ने ग्राध्यात्मिक जगत् मे भमग्रकाति व देवटून बनकर जिल सिद्धातो का प्रतिगदन क्याउ है हम धरमन्त सूक्ष्म इत्य में सात स्वणिम सूत्रो का नाम वे सकते हैं।

- (१)धम के वास्तविक न्वरूप का उद्घाटन
- (२) वेद का ज्ञान ईश्वरीय है।
- (३ वेद ज्ञान का सबको ग्राधिकार है।
- (४) एकेव्वरवाद का प्रतिपादन । (६) त्रैसवाद का सिद्धान्त ।
- (६) वडदशन समावय
- (७) मुक्ति से पुनरवृत्ति ।

इन सब की धरयन्त विस्तृत कर से व्याख्याकी जा सकती है परन्तु इस लेख मे प्रधिक विस्तार से प्रपनी बान को कहना सम्भव नहा है। इसलिए सक्षिप्त विक्ले यहा भीर विवेचन प्रस्तुत करने का प्रवास

(पूर्व धक में हमने प्रथम तीन सूत्रो की व्याल्या की थी)

घपनाना ही होगा धन्यवा घय का धनव होने की सम्मादना बनी रहेगी।

योरोपाय विद्वान देव शब्द का अय ही (God) र्वहवर लेकर चलते हैं जब कि निरुक्त के धनुसार-- नेवो दानाद्वा दीप नाहा द्योतनाहा द्यस्थानी भवलीति वा । अर्थात् दान देने से देव हैं प्रकाश करने से देव है जानेश व पालना भादि करने से देव हैं (मातानित) युन्यान भयीत् सूर्यादि सोको का भी जो प्रकाश है वह देव हैं। यहा वे सारे विशेषण परमात्मा में भी प्रयुक्त होने से वह देवों का भी देव धर्षात् महादेव है। परमात्मा सूय बद बद्र भीर मस्त सब को अपने हा शासन ने रखने वासा है।

इसी प्रकार विच्लु गब्द को बीविए विष्ल धातुमे नुप्रस्थय मगाकर विष्णु शब्द सिद्ध होता है। विष्सु-व्य प्ती सब जगह व्यापक होने से परमात्मा का नाम विडल है। स्वामी न्यान व ने सत्याक्शकाश मे इसके लिए लिका है- वेवेष्टि व्याप्नोति बराबर बगत् स विष्णु इस प्रकार विष्णु शब्द से सवव्यापक प्रच लेना चाहिए। इस प्रकार उपासनीय ईवकर एक ही है प्रस्य देवता व्यावहारिक प्रवश्य हैं उपास्थ नहीं।

योऽन्यां देवतामुपासते न स देव । वना पशुरेन स देनानाम् ॥ -बातपत्र बाह्यण १४।४।२ कव्यिक १६ २२

इन्द्र नित्र वदश्यमन्त्रिमाहरणी

विष्य स सुपर्गो गस्त्मान्। एक सद्वित्रा बहुचा वयति

स्रान्ति सम मातरिश्वानमाहु ।। - ऋग १।१६४।४६

विद्वान मेबानी उसी एक सदरूप परमात्मा का धनेक प्रकार से वस्तन करते हैं। उसी एक को इ.इ. मित्र वस्ण श्राप्ति श्रीर जो वह श्रत्नीकिक उत्तम जान भीर उत्तम कमवाला मीरवयुक्त है इसी एक को ही यम धीर मात रिस्ता नायुणी बहते हैं

इस प्रकार चारो वेदों में यह तह धने कम ब हैं जिनसे सम्बद्धीता है कि वैदिक मत्र एकेन्बर का प्रतिपादन करते है। महर्षि दवान व का भाष्य सामग्र जब्बर महीबर भीर परिचमी सस्कृतको से शक्ति युक्ति-युक्त है क्योंकि उसका ब बार नैरुक्त बीर व्याकरण है।

#### ५ त्रीतवाद

दशनों का मुख्य विषय पृष्टि की प्रक्रिया का ययाय विवेचन करके जिल्लासु को प्रध्यात्म में प्रवृत्त करना है। सृष्टि की प्रक्रिया के विषय में विशित्न विद्वार्गी ने धपने पक्ष एव सत्त की पुष्टि के लिए उसे इस हुआ। उसे वार्षिक सामाविक राजनैतिक प्रकार से जमारा कि वह तथ्य स्पष्ट होने की बचाए भीर अनेते में प्रमु नया। इन का वर्ती को प्रेमेप में तीन कोरियों में अपकर्त 1 set कर्तक में वो कार्यक्रिया &

है। बहु युक्क इतना प्रभावनाली वाकि उसकी इस घोषसा का यह परिणाम निकला कि भाय लोग दो वर्गों न विभा-जित हो नय-देव और बस्र । एक वर्ग की निष्ठा धच्यात्म मंथी भार दूसरे की श्रविभूत मे।

इन होनो वर्षों का जीवन दशन भीर तदनुरूप कर्मों का धनुष्ठान भी भिन्न भिन्न हो नया। वसा विचारधारा के प्रभारक और प्रसारक के रूप में वाविक का नाम भाषाहै। उनके दशन को बार्बाकदशन तबा बाहस्पत्म दशन 🖣 नाम से जाना जाता है। सास्य दशन के बातमत भी एक वाष्यक्य प्राचाय की वाला है जो परमात्मा को स्वीकार नहीं करते। इसी कारण कुछ विद्वान सास्य बश्चम को प्रकृतिवादी भागते हैं। काला-न्तर में बौद्ध दशन इसी विचार धारा से ही प्रमावित हुया ।

पाश्चात्य दशन जिसको हेगेल कार्ल माक्स जैमे प्रकृत दार्घनिको ने इसी घाषि-भौतिक विचारकारा के रूप में पुष्पित भीर परभवित किया । इसी विभारवादा का ही एक रूप है जो एकदम प्रकृतिवाबी है। इस का कितना दूरगामी परिवास क्षत्र मे नकारा नहीं वा सकता।

सोकायत दर्शन भी इसी का ही

### आध्यारिमक जगत को आर्यसमाज की देन

वनका धात्र तक कोई युक्तियुक्त उत्तर मही भिसा। ये विवार वर्शन में तर्क, वृद्धि और विज्ञान की कसीटी पर टिक नहीं पाते ।

दूसरी विचारधारा में केवल नाम परिवर्तन मात्र है। जड के स्थान पर बेतन शब्द का प्रयोग है । बौद्ध मन्तव्यों का बाधार वही है। ईव्वर की सत्ता को कही भी स्पष्ट रूप से नकारा नहीं नया। परम्यु ऐसा समता है कि वैदिक विचार-बारा में जो स्थावहारिक त्रृटिया द्या गई बी, बौद्ध धर्म उसकी प्रतिक्रिया मात्र है। कासान्तर मे बौद्धधम की इस विचारधारा के परिलाम स्वरूप जब पब प्रब्ट होने का भव उपस्थित हुवा भीर भाष्यात्मिक जीवन श्रम पतन की घोर उन्मुख हुवा तो उसकी भी प्रतिकिया हुई सौर यह माना बाने नवा कि वेतन सत्ता का शस्तित्व तो 🛊 पर वही वहाहै। शेष सब कुछ भ्रम मूलक है निष्या है। बहा सत्य जनिम-क्या का प्रारम्भ वही से हुआ। इसी विचारवारा को प्राच बकरावाय ने सम्पुष्ट किया ।

ब्राचार्यक्षकर बदान्त के भाष्य मे धनेकत जग्द को बहा का परिसाम भानते हैं।

> 'बेतनमेक बह्य स्वय परिखयमान जनत कारखमिति स्थितम ।'

> > -- शाकर नाव्य २।१।२६

इस प्रकार वह चेतन और किसी श्रावस्था में जड़ रूप होकर भी प्रतीत होता है। स्पष्ट है कि चेतन यदि जड क्षो सकताहै तो जब का चेतन होना भी स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। बन्तर केवन बनुभूतिमात्र का है। विश्ने-अशा और विवेचन की कसीटी पर एक बात तो निश्चित है कि जब सदा जड धीर चेतन सदा चेतन ही रहेगा। दोनी के ब्रस्तित्व को स्वतन्त्र तथा मूल रूप वे स्वीकार करना धांधक युनित समत है।

इस प्रकार हमने देला कि तीन प्रकार की इस दार्शनिक विवारभारा मे दक बढ सर्वात प्रकृति तत्व को महत्त्व बैली है। दूसरी चेतन प्रचीत् जीव को महत्त्व प्रदान करती है। तीसरी वड़ भौर चेतन दोनो को ही बहाकारूप स्वीकार करती है। तास्त्रिक विवेचन के आधार वर तीनों ही अपने में अपूर्ण असमत और एकपक्षीय हैं। इनको भी विज्ञान, बुद्धि भीर तकंकी कसीटी पर युक्ति युक्त **श्वीकार नहीं किया जा सकता**ा

हम यहां इनका जो मूल मेद है उसे द्वारयन्त सक्षेप मे स्पव्ट कर रहे हैं। प -बात्मा भोक्ता नहीं है, जब कि जीवात्मा शोबता है। बेहेन्सिवादि के साथ सम्बन्ध नाबरबा ने बीपात्वा प्रोधीं की जीवका विरोध नहीं है।

है। ब्रकृति भोग्य तस्य है।

हा सुपर्ला सबुबा सकावा समान बुक्त परिवस्त्रकाते । तबोरन्य पिप्पल स्वाहस्थन-दनमन्यो समिकाकशीति ।।

ऋग्वेब १।१६४)२०

वेद का यह मति प्रसिद्ध सन्छ है। इसमे मूल मूत तीनो तत्त्वो का बरान है। जीवात्मा भोक्ता परमात्मा सभीक्ता भीर भोग्य फल युक्त बृक्त के रूप मे प्रकृति का उल्लेख हुया है।

व्वेतास्वतर उपनिषद मे भी इसी को-

मोक्ता मोग्य प्रेरितार व मत्वा सर्वे प्रोक्त त्रिविच ब्रह्म एतत ।

इस प्रकार ये तीन सनादि शक्तिया हैं-ईश्वर जीव और प्रकृति।

वाशनिक जगत् मे महर्षि दयानन्द का यही जैतवाद का सिद्धात ही बहुत बड़ो देन है। भार्यसमाज इसी मान्यता का प्रचार भीर प्रसार करता है। इससे दार्ध-निक जयत् की सभी विश्वनतियो का स्वय ही समाधान हो जाता है। यह विचार ही तक और दुखि की कसीटा पर अपने मे पूर्ण है।

#### ६ षड्दर्शन समन्वय

धनेक विद्वानों की वारणा रही है कि वहदर्शन परस्पर विरोधी है। वास्त-विकता कुछ भीरहै। साम्प्रदायिक विचारमारा ने स्व स्व पक्ष 🕏 🥽 पूर्वी-ग्रह की भावना से ऐसा मत बनावा और उसी रूप में उमे प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। मूलरूप से शास्त्रकारी की ऐसी भावना विलक्त नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने इस विश्व नसता का को समाधान प्रस्तुत िया है वह अत्यन्त चमत्कार पूर्ण एव तकं सनत है। बाय-समाज की वही मान्यता है। यह बच्टि-कोण समन्वयवादी है।

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास मे ऋषि दयानन्य ने सिका है "जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अबवधी का एक दूषरे से जिन्म प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के जिल्ल जिल्ल ख अवयवों का बास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं है।

सन्यार्थप्रकाश के बब्दन समुस्तास के बनुसार कर्म समय उपावान कारण, विचा जान और विचार, तस्त्री का मेल तथा निमित्त कारण अर्थात् बनाने वासा इन स अवयवी के समाय ने किसी जी पदार्थ का शरितत्व में आना श्रमुक्त्रव है। मीमाशा वैधेविक, न्याय, बोब, सास्य भीर वेदान्तदर्शन इन सब की पृथक्-पृतक व्यास्था का रूप हैं। शक् इनमें कही बी

इस प्रकार सह दर्धन एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक हैं। सुष्टिरचनाकी प्रक्रियाका पूराव्या स्थान हैं।

७ मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धात

बाध्यात्मिक जगत् मे महर्षि ने मुक्ति से पुनरावृत्ति का जो नम्भीर विचार दिया है वह निश्चित रूप से नवीन है यहा सब सम्प्रवायो की मान्यताओं के साब इस सिदात का तुमनात्मक विवचन दिया आरण ठीक तो यही है परन्तु लेख के सत्यन्त लम्बे हो जाने के कारल उम खोड रहे हैं। धन्य श्रेनक श्रावश्यक के न बिन्दु नहर्षि बयानम्द की भाष्यात्मिक जगत्को देन है। जिनका प्रचार आय समाज करता है परस्त स्थानाभाव के भय से उन्हें भी छोड़ना पड़ रहा है। इस मन्तिम सिद्धान्त की सक्षिप्त रूप मे विवेषन भावश्यक है।

न्याय दश्रन में तदस्यन्त विमोक्षोऽप वस ' भौर सास्य दशन मे भग तिविध-दु सास्यन्त निवृत्तिरत्यन्तपृथ्वाच कह कर सब प्रकार के दुसो की ग्रत्यन्त निवृत्ति को मोथ का स्वरूप बताया है।

इस अत्यन्त पद का धर्य धाषायाँ ने यह लिया है कि इस प्रकार दू ल की निवृत्ति होने पर जीवात्या फिर कमी ससार मे नहीं साता । महर्षि दयानन्द की मान्यता यह है कि धल्पन्न धीर मल्पसक्ति जीवात्मा मे ऐसी सामर्थ्य नहीं कि वह जनन्तकास तक ही ब**ह्याबन्द** का भोग करता रहे। दर्शनो केइस ग्रत्यन्त' पद का यथ महर्षि ने शक्त न करके 'श्रत्य विक किया है। बहु काल ही इतना है कि उसके निए 'ग्रस्थन्त पद का प्रयोग बकत्पनीय बचवा धसमञ्जस ने डासने यात्रा नहीं है। मोठा काल को महर्षि ने परान्त काल कहा है। इस परात काल बागणनाकरके धवधि भी बताई है। इस प्रकार ऋषियों ने मुक्ति संपुनरा वृत्ति की बन्त को स्वीकार किया है।

भायसमाज ने इस प्रकार वैदिक मान्यताझो का प्रवार प्रसार करके बाध्यास्मिक जयत् ने जो क्वाति लाने का प्रयास किया है उसका बहुत प्रभाव पका है। बन्ध विश्वासी और पासण्ड की सभी मान्यतामी के प्रवाह की शोकने से जो भी सफबता मिली है उसका श्रेय भाग समाज को ही है।

क्षा क्षा प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका

### विश्व आर्य सम्मेलन

माप को यह जानकर प्रसन्तता होगी कि उपरोक्त सभा, तारील १४, १५ १६ दिसम्बर को अपने होरक महोत्सव और बिव्य ग्रार्य सम्मेलन का ग्रायोजन कर रही है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा (रामली ना मदान नई दिल्लो-११०००२) की बनुमति मिल चुकी है। हम भाशा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति यहा ग्राकर इसे सफल बनाये। इसके लिए प प निम्नलिखित तैयारियाँ सभी से चालुकर देव।

अपना पामपोर्ट बनवा लेव। उसमे प्रयास करके ग्रन्य देशों के साथ साउथ भ्रफीका का नाम भवश्य लिखवा लेव। स मान्य रूप से साउच बफ़ोका के लिए भारत सरकार अनुमित नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में अपने स्थानीय विदेश सर्विस के एजेंट भाप को मार्गदर्शन दे सकते। आप हमे भी लिख जिससे हन यहा की वीसा (Visa) फार्म भानको भेज देगे।

भारत की प्रान्तीय आर्थ प्रतिनिधि सभाएँ सार्वदेशिक सभा से सम्पर्कस्थापित करे। सम्मव है कि उन्हें यात्रियों का अधिक कोटा न मिले, तो ग्राप स्वतन्त्र प्रयत्न करे।

भन्य भाई बहुन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट भीर यहा के प्रवेश पाने की अनुमति के प्रयत्न करें।

अपने मार्गब्यय और प्रयास के लिए आवश्यक धनराशि इकट्री करें भीर एक्सचच के नियमों को समभ लेवें।

इस सम्बन्ध में हम से भी शोध्र पत्र व्यवहार चालुकर देव, जिससे हम धापको बावइयक मार्गदर्शन दे सके गे।

भी एस० रामभरोस

प० नरदेव वेदालकार

प्रकात बार्य प्रतिनिधि सभा, सन्द्रथ प्रफीका

समापति वेद निकेतन, साउच प्रमीका

३५ क्रास स्ट्रीट, ४०००१ डरबन, साउथ शकीका ।

ひかどうか およ なんなんだんれん

# आर्योचित आदशौं के प्रतीक-राम

डा० भवानीलाल भारतीय

भारतीय भावशौं का पूख परिपाक हुने मर्यादा पुरुषोत्तम भनवान् राम मे डॉब्टमोचर होता है। मानव जीवन को सम्पूर्ण एव सर्वारीण बनाने मे जिन गुर्णो की बाबश्यकता होती है उनका समग्र परिपाक राम क जीवन में दिखाई देता है। रामकथा के समर शायक महर्षि बाल्मीकि ने महर्षि नारद से जिज्ञासा करते हुए एक ऐसे व्यक्ति के बारे मे पुद्धा था जो ग्रत्यन्त गुणवान् शक्ति सम्पन्न वर्गञ्ज, सत्यवक्ता रह प्रतिक्र, चरित्रवान् प्रियदर्शन, बात्मज्ञानी तथा विश्वकोध हो। इस प्रस्न के उत्तर मे देवर्षि नारद ने इक्ष्वाकु वश म उत्पन्न राम का ही नाम जिया को उनके विवार ने नुखिमान्, नीविज्ञ, वन के ज्ञाता, सत्य निष्ठा वाले तथा प्रवाहित में जने रहते हैं। राज में विश्वासान विभिन्न गुर्जों का उल्लेख करने के पश्चात् नारव ने उन्हें समुद्र के तुरुव बरुवीर, वैर्व मे हिमानव के तुल्य, पराकम में विष्णु के समान तथा क्षमाणीलता में पृथ्वी के तुस्य बताया। नक्षेपत वे बार्य बुलो की समस्टिके रूप मे वान्मीकीय रामायस मे उल्लिक्ति

हुए है।

रामकवा की लोकप्रियता और व्या पकता का इससे बढकर और क्या प्रमाण हो सकता है कि घरवन्त प्राचीन कास से ही समुद्र पार के दक्षिण पूर्वी एशिया के देशा मे रामायण के कथानक तथा पात्र बड़ी के लोकमानस में बसे हुए हैं। इण्डो-नेश्चिया देश में रामकथा श्रत्यन्त नोकत्रिय रही है। वहाँ के निवासियों का वर्ग वाहे इस्लाम है, किन्तु वे रामकवा को अत्वन्त श्रदा की बच्टि से देखते हैं तथा अपने नाम भी रामायस के फन्नो के अनुकरस पर रक्षने में सकोच नहीं करते। मारि-वस में तलसीबास रचित रामचरित मानस बस्यन्त अ दा से पढा जाता है। लगमन दस वय पूर्व जन मानस की रचना की बतु शताब्दी मनायी गई तो मारिशस बासियों ने लालो की सक्या मे रामचरित गानस प्रत्य भेकने की गाँव भारत के पुस्तक प्रकासको से की थी।

बस्तुत राम ने झपने मुखा कम एक स्वभाव से मानव की परिपूर्ण खिंब हमारे सामने प्रस्तुत की है। लोकरञ्जन के खिए वे बड़े से बड़ा त्याप करने के लिए भी तैंबार रहते हैं। प्रत्याचार बोर प्रत्याय का प्रतिकार करने में वे बचा भागे रहते हैं। प्रत्यक्त तीम्ब कोमल एव मृहु स्त प्राव्य बाले राल प्रत्यक्त धाने पर प्रत्यस्त कठोर भी वन बाते हैं। उत्तरप्रावरित-कार वनमृत्वि के रुखों में —

' बजाबिंग कठोरासि सुदूति कुलुमाविंग'

बज् से की कठोर तथा पुष्प हे मी कोमल राम का लोकोचर वरिक वसकता सामान्य दृढि के व्यक्ति को लिए वस्प्यत् ही नहीं है। बीचन के प्रारम्भिक काल में हम उन्हें माता, रिवा, गुब बावि पुननीय व्यक्तियों की बाजरायक ने तपर देवित है। कर्मेल पानत से उनकी उपमा किसी सम्य है नहीं वी वा वक्ती। जनकपुर में विवचनुक मन के समय उनकी अस्तित्यसा में वे तमा सामार्थी के परिचय माला है। माता-रिता की धाला का एकान्य पानन सन्हें सम्भन्त प्रिय है। हस्तिए वे सपने राज्यांनिक के बामोयकनक असी की भी उपला कर रनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। कि कि सम्बा वे बाह्नतस्थानियेकाय बनाव पनमाव प । न मया लक्षित कविषत् स्थरपोऽप्याकारविश्वम् ॥

राज्यारोहल के निए बुसाये चाने पर तथा बोडी देर परचात् वन के लिए जाने के आवेश मिलने पर भी राज की मुखाकृति ने थोडा भी विकार नहीं थाया । सुख-दुस हानि लाग तथा निन्दा स्तुति में समत्व बृद्धि रखने वाले ऐसे ही महापूरको को स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। मारतीय परिवार के बादशों को रामा-बस्त के पात्रों में जीव़न्त रूप से देशा का सकता है। यहां भी राम ही धन्य पात्री मे बादर्श मर्यादा तथा कर्लव्य पातन का भाव बाग्रत करने में दत्तकित दिखाई पडते हैं। सपने भाइयों के लिए तनका स्नेष्ठ भीर वात्सस्य समय समय पर प्रकट होता है। सीवा के प्रति सनका अनम्ब त्रेम भीर भनुराग एक बादर्श पति की नर्यादा स्वापित कर एक पत्नीवत की गरिमा प्रतिष्ठित करता है। इसी प्रकार गुरु शिष्य सम्बन्ध, स्वामी सेवक सम्बन्ध, मिलों का पारस्परिक सीहाद भाव, वहां तक कि सत्र के प्रति भी न्यायपूर्ण बाच-रख का कटान्ड राम के चरित्र में डिंड-गोचर होता है। महर्षि शस्त्रीकि ने राम के इसी सर्वयूजान्वित चरित्र को व्यान में रक्तकर उन्हें वर्गका विश्वद्ववान क्या कहा है।

सस्कृति सत्य

# साँस्कृतिक विरासत

सुजीत कुमार ठाकूर

भारतीय उस्कृति निश्व की प्राप्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्ति स्वार्त्त स्वार्ति स्वार्यति स्वार्ति स्वार्ति स्वार्ति स्वार्ति स्वार्ति स्वार्ति स्वार्ति स्वार्ति स

बारत वर्ग प्रवान देव है। भारतीय सस्कृति वर्ग प्रवान है। वर्ग ते हमारा शास्त्र कर्मव्य ते है। इसारी शस्कृति का प्राचीनका विद्याल्य यह रहा है कि बो वर्ग कांभास करेवा उवका विनास हो बाएना। इचकी पुन्टि के सिए इति-हास के पन्ने परे परे हैं। इतिहास साझी है कि, निवा किसी ने हमारे वर्ग पर प्राचार किया उंचका ध्यस्तित्व हो दिर नगा। मही कारता है कि बारतीय बीचन बी समस्त्र वालों में वर्ग की मानवा अवान है। स्वारक क्यों में वर्ग का धर्म मानव करे से है। इसारी वस्कृति विश्व की प्राचीनक्षम वस्कृतियों में से एक है। धान के द्राचात वर्ष पूर्व एक धार्म वस्कृति को ही हमारी प्राचीन वस्कृति माना बादा बा परन्तु १८२२ ई० में हुई विल्कुचाटी की खुवाई वे हमारे वसका एक गई बस्कृति सामी। इस वस्कृति को हम भारतीय वस्कृति की प्राचन मानी कह सकते हैं।

भारतीय सस्कृति में प्रच्छे निवारों का प्रपट में समन्त्रय कर लेने की एक बढी प्रवस समित है।

इसने प्रार्थ, यूनानी, विधियन, वक, हुन, युक्तमान, ईसाई समी कालियों के प्रण्डे नुस्ते का ग्रहन कर सिवा। विश्व पुर विवेकानन्त्र ने मारतीय संस्कृति की पायन समित की बडी सराहमा की है।

प्रत्येक व्यक्ति को धरना देख प्यारा होता है, वह वपने स्तीत की उपनिक्वों के प्रति स्वामाधिक वर्ग का समुबद करता है। भौर नारत तो वह वहुन देख है विश्वेन व सिर्फ दुनिया को बहुत कुछ दिवा है वरन् दुनिया के विश्वन कवीओ से बाहे व धाकाय क वनकर आए प्रवचा वीदावर उनकी शास्कृतिक उप-निष्यकों को निष्ठकोच बहुन कर, उन्हें धारमधारु कर, प्रतने बहुन् सस्कृति के बावर से उन्हें वितीन कर हवारों वात्र प्रतनी इस सम्कृति का सवातार विकास किया। इस सास्कृतिक बरोहर पर वर्षे होना स्वावादिक है।

ह्वारी नहान् सन्कृति की एक नहान् बरोहर है तुफियों और सती का तुका-राम, कभीर तथा चैतन्य का वह मा-राम, कभीर तथा चैतन्य का वह मा-विश्व में मानव-मानव की वसानता को स्वीकार किया नया। परिवरों की सन्धे-दार टिप्पडियों से पूरा परन्तु खासक हिंदा में तैयार की गयी, निवसानवी को तोड चाहे नम्बत के कम में ही नसों म हो—कार-मीद की बोक्के वाका मारा सपनाया यमा, जांत-पांत पूर्व नहीं कोई। इरि को नवें से हरि के होई।

इस सम्कृति में विहिण्युता एकम् वदारता की मावना विशिष्ट क्य में नावी
वाती है। विश्व हरिहास पर हुने नकर
दौबाने से बात होता है कि पूरोगीन वेकी
में सविद्यालया के कारण समेक मुद्ध हुए,
विश्व कम भोर कम की बगार की
हुई। लेकिन जारत में हम मन्तर के मुद्ध कमी नहीं हुए। सनेकता में एकता
हुमारी विवेषता खी है। कई बनों का
एव सम्मार्थों का यहां एकता हुमारी एक सम्मार्थों का यहां एकता हुमारी एक सम्मार्थों का यहां एकता हुमारी का एक सम्मार्थों के समुतार दुख महां नहीं हुए। विभिन्नता में बारमूत सक्का नहीं हुए। विभिन्नता में बारमूत सक्का नहीं हुए। विभिन्नता में बारमूत सक्का नहीं हुए विभिन्नता में बारमूत सक्का नहीं हुए विभिन्नता में बारमूत सक्का

## यह नव वर्ष सभी को छसद शांति मंगलमय हो

<del>--स्वामो स्वरूपानन्द सरस्वती</del>

वस्तिम से दिव-दिनन्त हो, तुरनित व्यापि विश्व अब श्रव हो वैदिक विचार कारानुकृत, जिब बन-बन का परिपूर्ण हेटय हो

> बोग पराका वर-वर फहरे, ऋषिवर स्वातन्त्र की बस हो करुव शेरक बटल सत, मार्वों का प्रृप समझ्ड निश्चवही

नितंतक वेद पराचित हों, वैदिक वर्ग की स्विष्यस यह हो स्रजान तथ का नाम हों, समसी मा क्वोलिवेनस हो

> को स्वरूप प्रकार प्रकारित विशो पुत्री बहा पूर्व बहार हो बन विश्व को की होंगे को दूसा काहि होस्पाद है

# दर्शनशास्त्र का आदिगुरु

लेखक-ग्राचार्य रामानन्द शास्त्री उपप्रधान ग्राय प्रतिनिधि सभा बिहार पटना

किसी बाति की महत्ता समग्रने के श्रिए भौतिक सम्यता का विकास पर्याप्त ही बड़ी है। मूतल की बहुत जातिया जैसे केडिकोन इकिपिणियन ग्रावि सम्बत्ता की बरिट से बहुत उन्तत भी कि तु आज पदा क्राम्त हैं। जाति की महत्ता उसके दशन क्षास्त्र से है। किसी जाति का बबप्पन जानने के लिए यह जानना परमावश्यक है कि सस जाति की दाशनिक विचारवारा क्या है। विज्ञान का सम्बाध ज्ञान प्रवदा बुखि से है किन्तु दशनशास्त्र तो बात्यानु श्रुति होता है। दशन बम्भीर चिन्तन या विव्य अनुभृति का परिलाम है। इसलिए बर्शन बास्त्र किसी ज ति की सस्कृति की ब्रास्मा है। जारतीय प्रजा इस चिन्तन मे guof समया यो कहिये विश्वपुर है। यूरोपीय दासनिक येकिज (Theles) विसे दशन शास्त्र का पिता कहने हैं आज क्षे २५०० सी वष पूज यूनान के मायो निया नामक ग्राम में उत्पन्न हुआ था। ब्रस ने जस तत्व से मुख्टिका विकास आना। उसके पदकात् और यूनानी दाश मिको ने किसी ने सम्मिया वायुतस्य से विकास की कल्पना की। यूनानी दाश किको से सिरमीर पाइयागारस ने सक्या बाद पर ही अधिक बल दिया भारत की बब्दि में ये सब वाशनिक प्रवाचीन हैं।

दाशिनक इतिहास से विदित होता है कि सम्बाद नीतम हुन के समय व्यवित स्राज से २६ ० ती वस पूज ये तत्त विज्ञात कारत में दिल्कुल अर्थानत हो गए ये। स्वय दुन हे समये प्रयमनी म = ध वास क्रिक सिद्धातों का समय किया है। गीतम बुद्ध ने यर ने नियनकर साराइ काल म स नाव्यशास्त्र की विशास अगल की थी।

भारतीय दशन शास्त्र की परम्परा केटों से प्रारम्भ होती है। ऋग्वेद के नास बीय सुक्त में हुने सुक्त दाश्चनिन बातो का स्पष्ट एल्लेस मिनता है। यही विचार सपनिषत काल में प्रविक विकसित हुए। बृहुबारन्यक तथा छ। योग्य मे इन दाश किक सास्त्रों का भी उल्लेख मिकताहै। -किविसामिपति विवेहजनक केक्यदेशा विपति सःवपति काशीनरेश सवात शत्रु वशासनरेश प्रवाहण जैवासि मुख्य ये। ये राखा राजनीति ने निपुण वे । इनकी कासन व्यवस्था धरबूत्तम थी । राषा बारवपति के लिए कहा बाता है कि उसके राज्य में कोर कुपण शराबी विना क्षानिहीत्र किए कोई पुरव मूर्ख (निरक्षर) अविषारी तथा व्यक्तिषारिणी स्त्रियां अक्षीं भी ।

धजातसम् की राजधानी काशी में क्षतातक भी क्षतासाकि गार्थ के। सम को अपनी विद्या का नका सिक्षान था। उन्होंने सार अनपदों के दाश्वनिकों को चैनेक्ज कियाया कोई साकर शास्त्राय कर से। उपनिषत कहते हैं कि—

हत्तवालाविहृत्यानो गाम्य धास । सहोवाच धवातकःत्र काव्य बहुत ते प्रवचाराति । सहोवाच धवातकात्र सहलमेतस्या वाचि बद्दमो बनको बनक इति व बना धावन्तीति ।

इससे स्पष्ट विदित होता है कि कर बालांकि को प्रपनी विका पर कितना प्रपिक विकास था । राजा प्रवाह्य वक्षन के विवासों के। पण्चात वह जाती वाहानिक हुए उपनिषद मे जनका भी सिद्धात प्रावरणीय माना जाता था।

राजाजनक उनमें भ्रम्नणी थे। बृह दारम्थक ने एक शास्त्राय का उल्लेख किया है—

> बनको ह बवेहो बहुदिलिएंग यज्ञन कि तम ह मुक्यञ्चालाना बाह्यए। प्रमिस्तरीता बनुषु । तस्य ह बनकस्य वेदेहस्य विविज्ञाला बनुष क स्वि वेण बाह्यएगामामुबालतम् इति । स गया सहस्रमावयरोच राज्ञ वारा याद्या एककस्या ग्रञ्जयोरावद्या बनुषु । तात् होषाय बाह्यएगा मयकस्तो यो बाह्यएग स्वाह्या स्वाह्या स्वाह्या

सर्वात राजा जनक ने बहुद्दिक्त से सम्मन्त एक यह किया। उससे कृद्दशायात के बाह्मण उपरिक्त से। उस समय जनक वितेह को यह बानने की द्रश्या हुई कि उनमें सबक्षण विद्वान् कीन है। उन्होंने बोबगा की—बाह्मणों । ये एक सहस बार्ये हूँ मरोक के प्रञ्जा से दश दश पार कीने वह सुप हैं। जो कोई साप से मंद्र विद्वान् हो से उन्हें हाककर से बाबे।

वारी जनां ने जनाटा का नगा।
वन वाहत्वर प्राप्त के प्राप्त किया होगा
वन प्राप्त के प्राप्त के विष्य होगा
वा को प्राप्त किया। त्रोमा
वा को प्राप्त किया। त्रोमा
वा मही वे वाहत्व प्राप्त होगा
है। उठमें मान केने वाके जनक हे होगा
वा प्राप्त के। उनके व्याप्तानाई मान
वाल्य ने उन के व्याप्तानाई मान
वाल्य ने प्राप्त विषयां कराया। तव
वर्ष्य ने प्राप्त विषयां कराया। तव
वर्ष्य ने प्राप्त का प्राप्त वर्ष्यमाना।
मुक्तुमाञ्चान कराया। वर्ष्य वर्ष्यमाना।
मुक्तुमाञ्चान करात्माव वर्ष्य करायाः
प्रमुक्ताव्यान करात्माव वर्ष्य वर्ष्यमाना।
मुक्तुमाञ्चान करात्माव वर्ष्य वर्ष्यमाना।
मुक्तुमाञ्चान करात्माव वर्ष्य वर्ष्यमाना।
मुक्तुमाञ्चान क्ष्याची। वर्षानिक वर्षे
विश्व है विष्ठ क्ष्यार ठीएलाव वर्ष्य

तीरों को बनुव की अत्यञ्चापर रखकर लक्ष्य की विद्याना बनाते हैं उसी प्रकार शार्मीने अपने तकों का निशाना याज बल्क्य को बनाया। याजवल्क्य से शिक्षा केकर गार्मी बहावादिनी हो वर्ष।

वाजवल्य की दो स्त्रिया थी— कारवायनी और जैत्रयी। वेचारा कारवा बनी तो रोटी पकाने बादि गढ़ कार्यों ने ही क्यों रहती थी कि तु मैत्रयों तो उन निवद (परिवद्) जाना केती थी। उत्तर परक विद्वारी थी। उत्तने ही याजवन्य से पृक्षा वा कि मनुष्य केंसे प्रमुख होता है।

याज्ञवल्क्य ने उसका बहुत झण्छा समाचान किया। आज के दाशनिक उस परस्ताब हैं। ऋषि कहते हैं---

> न वा धरे परयुकालाय पति प्रियो भवति धात्मनस्तुकामाव पति प्रियो भवति ।

कोई बस्तु प्रिय नहीं है अपितु बारमा ही फ्रिय है उसी को बानो वहीं एक उत्तर है जिससे सारा जबत भारत के घाये नत मस्तक है। सारा वस्तुएँ बारमा स सम्बद है इसलिए उसका ज्ञान धावस्यक है।

दश्चनशास्त्र का भारम्भ यही से होता

न्सी को जानना ही दखनगास्त्र का परम सक्य है। प्रारतीय तकसास्त्र की भी ग्रावारिमला यही है। यूरोप से नकसास्त्र का मुक्त नाणी वितास के लिए हुया था हि 1 सारत से इसका स्वन ग्राव्यज्ञान के लिए ही हुया।

यूरोगोम नकसाहन के विशा सरस्तू नह जाते हैं जो तिन दर महान् के पुत्र के । तिन दर के मर जाने पत्र के पुत्र के । तिन दर के मर जाने पत्र के पुत्र के । जारताज तकसाहत ती राजा जनक के दरवार से क्यांचित तुलमा नामक स्त्री के युज के सुना गर्जा जिसने ६ तर्म्य की तुलताओं के वारी समा के जीन कर विशा या "सीतिय तो महीच त्यांची व्यांच सरस्त्रती ने कहा है कि मह देश कार दश्ह ह। मुनोज में जिसनी विशाय सेनी है शब

### मगोलपुरी पुनर्वास कालोनी में वेद प्रचार

म गुष्य को प्रशिक्षण की प्रावस्थकका होती है जबकि धाय जीव कुछा बस्की आदि नैस्थिक ज्ञान के परिपूण होते हैं। बस्तक को दैरना विज्ञान की धावस्थकका नहीं होती हैं। ज्ञाना प्रावगोपाल जी धालवार प्रथान सबसे यक साथ प्रवि निधि कथा ने प्रयोक्षपुरी में महाश्रव जुनीलाल ट्रस्ट के दि प्रथार विभाग हारा आरम्भ किए गए काशकम का उद्धाटन करते हुए श्वास किए लाला जी ने कहा कि मयोमपुँकि निवासियों के लिए यह हर्षाम्य सबस्य है व्यक्ति से बात प्राप्त कर कक्ष है है। इस जान को प्राप्त करना तभी खायक है जब हुने इसे खपने जीवन में जरिताय कर सक । जब्होंने क्षाया कि वेद का खप्तेग कवल हिन्दुओं के लिए नहीं है वह जभी के जिए है। सामबसाज तक जीमित न होकर प्राह्मोआं के जिए हैं।

इस ब्रह्मर पर यज भीर भवन के परचात महाबब बमय त की प्रमान बाय केडीब तथा डा॰ गाना द प्रकाश उपस्त्री स्वावदेशित स्थाप पर पायक की कर्मा प्रमान प्रतिनिधि सम्मान्यपारक ने उपस्थित बनों को सम्मेणित विद्या। कावक्रम का मयोबन प नुगराम जो स्वाविक्रम का मयोबन प नुगराम जो स्वाविक्रम का मयोबन प नुगराम जो

### दयानन्द की देन

(पृष्ठ ४ का वेष)
उन्हें केवल पृश्य की इच्छापूर्ति का साधन
स सम्ब्रा जाय। इसी प्रकार महाँच द्यानन्त्र ने धपनी वैचारिक ऋषि हाए नारी बाणि की किए के सम्बान के पद पर बातीन करवाया।

महर्षि वसानन्य ने धपने झारभ खबस त्यान तप तथा निर्मीकता के कारणु मानच माच को करवाणु के बाव पर सबने की प्रेरखा थी। क्रव्यत्वी विकसमार्थम् करान्येख केकर एकता के सूत्र में बाबसे का बद्दमीय गुजाया।

स्वयमम् भारतः की स्वतंत्रता का बीचारीपरा महर्षि दवानन्य ने ही किया वा। यम के बान्ति वदाकर बाय स कृति एव हिल्दी भाषा का प्रम उन्होंने हो बहाया। सत्य को ग्रह्स करने धोर सत्य को क्ष्रीकने से स्वता उच्छत रहना बाहिए। महर्षि का उदमोप झाल मा गल रहा है।

महर्षि दवानन्द ने मानद मात्र ही नहीं प्रास्ती मात्र के कल्यास के लिए को देन दी है वह साज तक हमें किसी ने नहीं

> ६०७/ए डी साईट, फीनेण्डनच दाहोद गुजरास-३८१६०



# समाचार-सन्देश

### मार्वदेशिक सभा के अधिकारियो द्वारा जन सेवा के निमित्त नया पग—

### ग्रन्तर्जातीय विवाह केन्द्र की स्थापना

धाव देश की वतमान स्थिति को देखते हुए वहेद प्रथा को समस्त करन तथा पुरा कम स्वकाद के धावार प्रवाह करने के सावार प्रवाह करने के लिए धन्तवातीय विवाह केन्द्र महर्षि दयानच्य प्रका नहीं दिस्सी में धपने विवाह वोग्य वच्चो-विज्या के नाम प्रवीहत कराए। यह कार्य नियुक्त होता। धार धपने परिष्यव पत्र में नियुक्त होता। धार धपने परिष्यव पत्र में नियुक्त वालो का जानकारी वेदान नहीं नाम-पिरा का नाम धारू कर

शिक्षा वर्ण व्यवसाय (फोटो प्रवस्त्र मेज । प्रपनी इच्छा क्या बाहर त्रेवने के पक्ष में हैं परिवार के खदस्मी का परिवय शाकाहारी प्रवस्ता क्या कोई रोग तो नहीं है।

ग्राप सयोजक श्रन्तवितीय निवाह केन्द्र सायदेशिक समा नई दिल्सी के पते पर मेर्चे।

> व्यवस्य चन्द्रप्रकाशः सयोजकः

### 'पूर्ण मद्य निषेध' पर पुनर्विचार हो

केन्द्र में कायस की सुबद सरकार नने धीर यवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव बाधी द्वारा सावजनिक जीवन ने अच्टा चार समाप्त करने का बाह्यान करने से नि सदेह नैतिक मूल्बो में सभी भी प्रमाद बास्का रखने वासी को कुछ राह्य मिली है। बास्तव में बब तक हमारी सरकारें शराब बेक्कर बर्नाजन करती रहेंगी तब तक सावबनिक क्षेत्र से भ्रष्टाचार दूर करने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। बही कारण वा साजादी के पूज वह व्यक्ति कात्र स का सबस्य नही बन सकता या जो चरान पीठा हो । महात्मा नाची ने स्वयं कहा वा कि स्वतंत्र सारत की श्वरकार का पहला काय शराव की शारी कुकानों को बन्द करने का होगा। श्वराब पीने से मन व मस्तिष्क पूर्वत दूषित हो

बाता है सोचने समझने की खरित समाप्त हो जाती है। वराब पोने से राष्ट की वर्तमान व भावी पीढी वर्बाद हो रही है। एक बन कस्यालकारी सरकार विक्ने प्रारत्येय सविधान में उल्लिक्ति नीविनिवशक विद्वांतो पर धमस करने की श्वरण की हो यदि शराव को प्रोत्सा हित करती है तो इससे बड़ा देश का दुर्भान्य धीर क्या होगा ? बाशा है भारत को इनकी खबी के स्वर्शिय प्रयास की घोर ने जाने की योचना करने वासी भी राजीव शाबी की सरकार इस दिशा ने सकत्य बढ होकर पुत्रविकार करेगी धौर गांधी जी के स्वप्नों का रामराज्य लाने के लिए समस्त देश में एक साच पूरा मध निवेष की नीति बागू करेगी।

### वार्षिकोत्सव

धायसमाय कृष्णुनगर का वाधिको स्वय २२ धार्में से २० धार्में त सक समारोह पूर्वक हो रहा है। इस अवसर पर धायसवेद पारायण यज्ञ तथा धनेक प्रसिद्ध विद्यानो एव समीराज्ञों के प्रवचन एव भावनोपेखे होंगि।

> मन्त्री-अवदीश नाष भाटिया

### सत्संग भवन का निर्माण

प्रायसमाथ मन्दिर पोविन्तपुरी काकका जी के सत्तव मकन का निर्माश काम प्राप्त हो चुका है। समस्त वार्मिक जनो स प्राप्त ना है हस पवित का है प्राप्त है स्विक चन के हारा सहयोग कर एष्प के मानी वर्षे । मन्त्री

> भावसमान, गोविन्दपुरी नई दिल्ली—१६

### श्री मुख्यतार लान के परिवार द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

राचेरवाम शाब

हिन्दू युद्धि समिति के यसती स्वामी सेवान द बी के प्रवत्न से प्राम कराव्युद्ध जिला सोतीपत के वासी भी पुरस्वाप्तर खान युद्धन को बीचा बात ने सबसे वर्दि वार सहित यह स्थाहत कर कर के के परणाद स्वेणकों में विकल कर में ज़बेख कर विवा। यह उनका नाम बुद्ध कर कि के परणात पुरस्वार सिंह रखा बता है।

> केवार विह शार्व कार्याजयाज्यक

### श्रार्यवीर दल के मुख्य कार्यकर्ताश्रों का शिविर

धार्ववीर वल विल्ली प्रवेश के मुख्य कायकर्वाचाँ एवम् धाविकारियाँ की एक धाववस्थक बैठक ३१ ३-२३ साम बार बंध धार्वस्थाक सुनुमान रोत पर बर्ध्यक्ष धार्वस्थाक सुनुमान रोत पर विल्लीय विवा वया कि धायवीर वस के काय-कर्वाचाँ का एक धिविर २० व्यक्षित साम बार साम बार बच्चे है राजी ७ वच्चे तक धायसमाया वाचित्र सुनुमान रोत व्यवसाया वाच्या हितिस के विल्ला ब्या धायसमाया वाचित्र सुनुमान रोत व्यवसाया वाच्या हितिस के विल्ला ब्या सामी कार्यकर्ताचाँ से प्राथना है कि वह इस प्रस्तानिक विविद्य में भान सेक्ट्र भावनीर क्लाको समस्य दस क्लामें में सहयोग करेंगे।

नोट (बीध्यावकाश में धार्यवीर दल के ध्रम्य बार शिविर सगावे जायेंगे। इन शिविरों का विस्तृत कायक्रम शीझ ही प्रकाशित करा विवा बावेगा।

त्रियसम्बास रसक्त स्थामसुदर विरमानी स्रक्षिकाता मन्त्री

### शुद्धि

सार्यक्रमाच नीभवाना विवा नुसन्त सहर (ठ०४०) वे ता० १७ १ १८०॥ को पुरवक्षमान परिवारों के पुर्वक कराई गई। वनी परिवारों के सक्त्यों को सक्ते-व्येषण परिवारों के सक्त्यों को सक्ते-वेषण पर्वा सारा निक्का मान परिवार किया बता। सालकों सालक्ष्य नाये परे उनकी वयगली-सजीवा वेषण से जीवारी सल्यवर्धी वनी थोर में बच्चा से में मक्क्य को मान चालकों के में मक्क्य की मान चालकों के मान करा की व पुत्री के नाम भी वदने नये। कु॰ मुन्ती के ममीनी नाम रखा नवा। क्रमी खा का नाम बन्मवीर रखा नवा। इस घनकर पर दोनों मुस्लिम परिवारी को उपस्थित रसी पुत्रमों ने भाकीश्रीय दिया। बात हो साला वनक्ष्मक पान विशेक विद्या (विश्ली) नामों ने मोनो परिवारी की व्यास नमाने का नवन दिया भीर नस्क न रुपया भी विशे नए और प्रमन्नय खाय-नम्म के हामों से सवार विरास्त कराया हवा वालित पाठ के बाद कारकम समास्क हवा।

### बार्य सन्बेस साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योंकि यह पत्रिका-

- (१) वैदिक मान्यतामी को उजागर करती है।
- (२) भायों (हिन्दुभो) की महान् परम्पराम्रो की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से झारम बेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय सस्कृति के भूले विसरे प्रसगी, महापुरुषो तथा भादर्श सस्कारो को प्रकास ने लाती है।
- (ध) ऋषि मुनि तपस्वी झाप्तविद्वानों की वास्ती का बोच कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वास्ती बेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश साती है।
- (७) नय लेखकों कवियो चिन्तको प्रतिमाधाली विद्वानी साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (द) वार्मिक, सामाजिक ग्रीर माध्यात्मिक ज्वाति से सम्मित्व को प्रकाशित करती है। "
- (२) बेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कस्प सूत्र झारख्यक, झाझ्एयस्य भीता रामावस्य नीति, ऐतिहासिक, समूरूप झार्च इन्बो किन को अधिकास लोगो ने पड़ा तो क्या देखा की नही समस्य भाष्यासिक कमत् को बिन इन्बो पर सदा वर्ष रहेगा उन के बहुमूल्य झान से झापका मार्चदर्शन करती है।
- (१०) बतएव देर न कीजिए बाज ही धपना वार्सिक चन्चा २० व्यवे वेजिने, वच में धपेक विवेदाक तथा महर्षि वयानच निर्वास बताब्दी पर प्रकासित, ५० व्यवे मृत्य की सब्ध मनोहारी स्मा-रिका नि शुस्क दी जांगी। स्मारिका भीर विधेवाक का स्टाक कम है। मत यह सुविचा धन्नेस तक ही है।

सम्यादक प्रार्थ-सन्देख

### आंदर्शजीवन ' (पृष्ठरकाक्षेष)

खरती निक्रस्ता घरस्या को बला जाता है तब भी नह पुन अरती धरस्या सुधा रने के तिए प्रमल करता हुया एक दिन अंटक्तम धरस्या को प्राप्त कर लेता है। बत हमें कभी निराग नहीं होना चाहिए और अपनी धरस्या का गुधारते हुए हम

पुन जब पूजिमा के बाद चन्द्रमा प्रमाद बच ऐसा नहीं करता तो विनाश प्रारम्भ हो जाता है। सत विवास और सापरवाही प्रमाद में प्रयत्न शिविस कमी नहीं करनाहै। इत्यादि अनेको शिक्षाए हमें चन्द्रयासंसिक्स्तीहै।

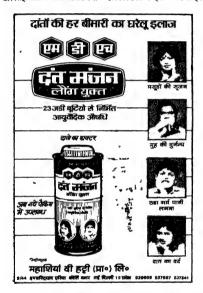
पुन जब हम सूथ की तरफ देखते हैं तो गांते हैं कि सूथ को जब बाबाएँ (बादन) घेर नेता है नो सूव बबबाएँ नहीं उससे युद्ध करता है धोर विकयो होता है। यहा प्रदर्ग स्माप्त स्तेवा दते हैं कि बाबाओं से जरा मी विकसिन मत होगों। उननं जुकते जल जाओ। ऊजा ठठो आंगे बनो तुम शब पिजयों होंगे। विस्तिया स्वस्थयन दूर होकर रहेगी।

इस ससार में विपत्तिया भी हमें अच्छ-तम बनाने के लिए ही भानी हैं। वह ईश्वर की तरफ से हमारी परीमा है। उसमें बुक्तकर हम विषयी होते हैं। सफ्त होते हैं निखरते चले जाते हैं। ससार में विषक्तियों ने बी व्यक्ति को महान् बनान में कम योगदान नहीं दिया है।

इन प्रकार हम देखते हैं कि एक एक वेद सन्त्र से कैंसे केंसे सर्व्युत ज्ञान विज्ञान गरे पड़ हैं। सब ही वेद सन्त्र एक ए एक बदकर मेंच्छ हैं। जितना ही जनसे हम प्रवनाहन करेंगे जतना ही झानन्द स्रोर मान ज्ञान हम प्राप्त करत चन

इसी लिए वेदो के परम ममज दव दबानन्द उपदेश मञ्जरी के उपदेश में बताते हैं कि झाग सोग एक एक वेद मत को लेकर गहुन सनन चितन समाचि से रैदबर से प्रपक्षान प्राप्त करते वे भीर प्रवृद्धत बार्ते सतार को देने था ध्वा हुम तो ऋषिनाध्यानुसार वद सन्नो का गहुन मनन करते हुए नई-नई बार्त नसार को देते रहें जिससे ससार का उत्तरोत्तर हित होता रहे। क्योंकि ससार का उप कार करना सकता मुख्य उद्स्थ हाना चाहिण। ब्रोडेस् शब्

बि"श्वरी प्रसाव सिंह ध० सहाबक निदेशक ५०२ के ीय जल खायोग सेवा भवन रामा कृष्ण पुरम न<sup>6</sup> दिल्मी ६६



# घरेलू उपयोगी बातें

- ऊनी कपडों को कीडों और वरसाती हवा से बचाने के लिए उस पर खुब बारीक पिसी हुई फिटकरी छिडक।
- परके अन्तर उन पौचों में जिन्ह प्रकाश नहीं मिलता सुहाना निश्चित पानी डाल। हमशा ताजे बने रहेंगे।
- एक सर पानी मे एक चम्मच मिसस-रीन मिलाकर रेशमी कपड धोर्थे इससे न तो व सिकुडने भीर न ही कन्हाने।
- नये रेशामी मोजो को पहनने से पहले खूब गरम पानी में बो नें मोजे डीके नहीं हांगे।
- उनी व रेशमी कपडों से यदि रग खूटने का डर हो तो उन्हें चरा सा नसक रीठे के पानी से कोर्से रग नहीं खूटेगा और कपड जी साफ व जनक दार धुलेंगे।
- □ नये रपीन सुती कपदों को बोते से पहल यदि उन्हें कुछ देर बोड़ नयक नित पानी में मिश्री दिवस बाए दो उसकारय बहुत दिनो तक सच्छा बना रहेता। स्वरण दरे पानी गरफ करने की सावस्वकता नहीं है। देखती कपड़ी ने चक्क साते के लिए

चुले हुए क्यडो को बोडी सी स्प्रिट | मिले साफ पानी में बोडी देर के लिए डुबोये क्लें।

- दायातीन रगकास्वैटर घोते समय कोडासालमक डालने ने कडी भी स्वराद नहीं होगा।
- बचे हुए आटे का कभीचा हान से बचाने के लिए उसे पोलीबिन की वैलियों में नालकर फिक्र म रकना चाहिए। जब आटे की आवस्मकला हो तो १५ मिनन पहले ही बैची को पानी ये रख वीबिए झाटा १५ दिन भी कराब नहीं होंगा।
- यदि ककडी का फर्नीचर पुस्तवा सा लक्ते लगा है तो सरखों के तेल से पानी सिमाकर साफ करिए फर्नी-पानी से पहले खैसी समस्य धा चायेगी। □ नेल पानिका सक्त जाय तो उच्छे कुछा बुढें रिस्टर पान दीचिए, उच्छे।
- पत्त हो जाएगी।

  यदि कीम मल जाय तो उसमें थोडी
  सी ग्लिसरीन डाल शैबिए शहले की तरह युसायम हो जायेगी।
- चारी के प्राप्त्रस्य झवता की बो को उस पानी में साथ करिए जिसमें प्राप्त प्रवान में वो प्राप्त पर पूर्त का लेप कर दें। या उन पर चूने का लेप कर दें। यूखने पर पुरान कपडे से रगडकर साफ कर दें।



### वैवाहिक-विज्ञापन

एक १३७५ र० मासिक बाय वाल विद्युर धनासन्देण्ट के लिए तिस तन, सुन्द स्वस्थ स्था लम्बा विषया या परि त्यवता की धाव यकता है। सम्पक्त कर—

श्री ग्रमरनाथ खन्ना मनान न०३६७ सेक्टर न०१९ ए० फरीदागद (त्रस्वाणा)

### परोहित की आवश्यकता

धार्यक्षमाज ग्रीन पाकँ में एक मयोध्य विद्वान् पुरोहित की धावस्यकता है। उचित बेर्तन दक्षिणा प्रदान की जाएगी। इञ्छक महानुभाव भीघ्र सम्मकँकर!

प्रधान, लाला इन्द्र नारायण ए१६ ग्रीन पार्क नई दिल्ली

चार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

साप्ताहिक 'बार्यसन्देश १५ इनमान रोड, गई किस्सी-१

# नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए तान की राशि आवेरर प्रविभिष्यम जीव दा के अतर्गत कर मुक्त होगी। सारा वान : चेच/मनीखाईर/बेक बावत हारा मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रायं धर्मार्थ नेत्र चिकित्सासय. बी-१ जनकपरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर मेजा जाए । दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

#### निवेदक

राममोपास झालवासे संरक्षक विकित्तालय जवान, विक्ती प्रवास क्रमं प्रतिनिवि धार्य केनाव एषं प्रधान, सा०धा० alle anima प्रति० समा चेरि॰ द॰

सौजन्य से महाशियां ो हुद्दी प्रा० लिमिटेड, १/४४ बीतिनवर, भौकोगिक क्षेत्र, वर्ष बिस्ती-११००१

### "आर्यं जगत" साप्ताहिक

- १ यह हिन्दू दियो के सबल प्रवस्ता और राष्ट्रवाद का प्रवस पोषक है। २ राष्ट्रीय समस्याओं पर इसकी सुविचारित टिप्पित्या राजनीतिक लेखों को जी प्रभावित करती हैं।
- अभागवा करता है। इ. बहु वन के नाम पर पासच्यो और अन्यविश्वासों डा कट्टर विरोधी है और वैविक वर्म के उज्यवस स्वरूप का पुरस्कर्ता है। ४ यह समाज ने जैनी जुरीतियों ना निवारका कर सामाजिक ऋतिक के जिए प्रेरिट
- करता 🧎 ।
- १, यह बनुष्य नाथ की सारीरिक सौर सारिशक उल्लित का मार्व सुम्राता है। ६ किसोरी के वरिक्ष का शौर उनके स्वास्थ्य का निर्माण इसका विशेष सक्य है।
- ७ सोसल नारो स बचाकर नारी उत्यान की सही दिला का सन्देश देशा है।
- वैदिक मस्कृति पर अपनी वा पेशायो द्वारा किए वए आक्रमस्तो का तर्क कुक्त उत्तर
- र प्रार्थ सस्यो प्रीर प्रायसमाजो की महिलिक्कि का वरिषय देता है। १० व्यक्ति समाज धीर राष्ट्र ने यशिक केंद्रिक का या विकास कारू कार्य हो।
- संबठित करना चाहता है। यदि इनमें स एक भी लक्ष्य बापको प्रिय है तो भाज ही इसके वार्षिक या

माजीवन प्राहक वनिये। वार्षिक जुल्क २४/- ६० और माजीवन सदस्य २४१/- ६०।

> प्राप्ति स्वान-शार्व प्रावेखिक प्रतिनिधि समा धार्वसमाज मन्दिर मार्न नई दिल्ली-११०००१

### श्रद्धेय श्री रामगोपाल शालवाले का श्रमिनन्दन

सार्वेदेशिक यार्थ प्रतिनिधि सभा के इस अवसर उन्हें एक व्यक्तिनन्दन ग्रम्ब वी बशस्त्री प्रकान श्रद्धे व श्री रामगोपाल जी शासवासे के सम्मान में धावामी १२ जून, १९=४ को दिल्लीने एक समि-नन्दन समारोह का भागोजन किया जा साला भी के सम्बन्ध में भागके प्रेरणा-रहा है। सालाजी ने अपने जीवन काल में बैदिक बम के प्रचार आयं जाति के उत्थान, श्रायसमात्र के सबठन को सुद्रह बनान एक राष्ट्रीय बारा के सरक्षण से गौरवशाली भूमिका निभाई है। उनका जीवन भौर उनके कार्य अनुकरशीय है।

सन्पित किया जायेगा । प्रमुख कार्य कर्नो का एक कार्यकारी दल इस बायोजन की क्फलता के लिए कार्यरत है। बर्जन वायक सदेश, सस्मरता एव सुकाव हमे लाभकारी होंने।

करे रा॰ सामन्य प्रकास उपमधी -- सार्वदेशिक समा, विक्सी सबोजक: प्रमिनन्दन समारोह

उत्तम स्वास्थ्य लिए कॉगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

सासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, फोन: २६६८३८ चावडी बाजार, दिल्ली-६





ब्राकालय

बार्वे संबरसर ११६०८५३०८६

264 pie का साप्ताहिक पत्र24.4

वैशास २०४२

सम्पादकीय

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

महात्मा हमराज दिवम अंक

रविकार २१ वर्त्रेस १६८३

# । वतारक महात्मा

अनादिकाल से सृष्टि का चक्र भविरत गति से चल रहा है। अगिएत जन इस घरती धाम पर जन्मे और मृत्यु को प्राप्त हो गये। अनन्त आकाश में उभरते चमकते अनेक सितारे दिसते धासो से ब्रोफल हो जाते है किन्तु युग-युगो से ध्रुवतारा अपने स्थान पर गनिमान् है। अधि-यारी में भूले भटके पिषकों का वह सदा दिग्दर्शक रहा है। ऐसा ही मान-बता का मूतरूप ध्रुवतारक है महात्मा हसराज। पजाब की घरती का यह लाल अपने समय मे प्रान्त भर मे बो० ए० की परीक्षा मे द्वितीय आया था। चाहता तो उस समय मे अच्छा सरकारो नौकरो प्राप्त कर समद्धि लक्ष्मी के फूलो से सुवासित पथ पर चल पडता । परन्तु इन्होने स्वोकार किया शिक्षा सरस्वती का माग जो काटो की चुमन से दहक रहा था। यह सहज ही सीधा सरल माग नहीं था। कवड-लावड कटाली फाडियो, हिसक जान-वदो को भयकर गजना के बोच से गुजरने वाला एक लम्बा माग, जिसकी मजिल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या भीर बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है। और इसे कोई माई का लाल ही अपनाता है। महर्षि दयानन्द को शिक्षा नोनि के प्रसार का महान सकना बादल किया, महात्मा हसराज ने । डी॰ ए॰ वी॰ स्कूल एव कालिजा के महान् वट वृक्ष के रोपण का काय किया इस महामना ने। देश-देशान्तरी प्रदेश, प्रान्तों में दयानन्व एंग्लो वदिक स्कूल एव कालिज का फलाब उस महान् व्यास्त व को याद दिलाता है। उन्होंने कहा था वदिक वम एव सायसमाज के प्रचार का एक मात्र गुर है उच्च बलिदानी बोर एव समर्पित स्थागी सेवक। वे इसी एक विचार पर सम्पूर्ण जोवन चलाते रहे। बिना वेतन लिये, भूखे पेट रहकर बारत की गुलाम घरती पर देख के मावी करावार को खिलात करते रहे।

दिल्ली

वय ६ सक २२

महात्मा हसराज ने यह पग उस समय रखा था बन समस्त भारत के बन-जन को अग्रजियत भीर ईसा मसोह को भेडो मे बामिल करने का यहयन्त्र लार्ड मेकाले को शिक्षा नोति के अनुवाद बनाया जा रहा था। किसा नीति एव पढित तब केवल मात्र अग्रव शासको के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही की। ऐसे विक सल काल को महान् चुनौती बनकर सह हुए महात्मा हसराज। महर्षि दयानन्द के इस घीर वार शिष्य मे सेवा दया और त्याय का भी महान् मुख वा। घगर मैं यह कहू कि सेवा भीर त्याग का वह देवता था तो भतिसयोक्ति न होगी ।

महर्षि दयानन्द के मिखन के लिए जहाँ उन्होंने धपना जीवन दान विया, साब ही बकाल पोडित जनता के लिए उनका सेवा कार्य एक देवत्व-पूर्ण कार्य था। उन्होंने १८१५ से १६२१ तक बोकानेर, राजपूतामा, सूरत, मध्यप्रदेश बडीदा, ध्रवथ गढ़वाल, उडीखा, ख्लीसगढ पंजाब स्नादि के भवकर बकास में तथा कांगडा के मूक्त्म के बहाविनाख के समय



उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहन कार्य उस महात्मा के मान-बताके चरमोत्कर्वका परिचालक है। युग-युगो तक मानव मात्रा के लिए महात्मा हसराज का पवित्र जीवन दिशा प्रदान करता रहेगा । सचमूच ग्राज उस महान् नाविक की स्मृति रूप लहरे रह-रहकर उनके प्रति प्रगाघ श्रद्धा जगा रही हैं-

लहरो से लड लडकर पतवार हाथ में थाने। ओ बक्ष चीर सागर का उस तुफानी बेला मे।। जब भन्ना के भौकि ये उन्माद भरा या सागर। मृह फाडे तकते वे जब लहरों के भूखे अजगर।। जिसके भ्रदम्य साहस ने हर कर मृह जरा न मोडा । जिसने बपनी नौका का पल भर भी साथ न छोडा।। उस नाविक को तकती हैं, मेरी यह माज नियाहै। "भो" मन्त स्थल से बरबस निकली पडती हैं भाष्टें ॥

—वक्रपास स्वांश

### सत्संग वाटिका

(यज्ञस्य) जीवन यन के (शिवे) नुम प्रमुखान संसुमपानन से (मतिष्ठन्य) स्रस्थित दो जा नगजा।

सम्प्ण ससार की नाभि यह यज्ञ है। मेरी मित और मुमति यज्ञ से सामर्थ्य

(बज जब्द यज धानुसे बना है! यज का अर्थ है देन पूजा सगतिकरस्य भीर दान। इन सन बालों का एक वाक्य म कहनाहो तो यत का सब है खेष्ठ तमयाप्रशस्ततमकमः। सबसे व्यष्ट्र सबसे प्रशस्त या सर्वोपयोगी जो कर्म होता है, वही प्रशस्ततम कर्म कहलाता है। जिस कम से श्रेष्ठी का सम्मान सबके साथ श्रमिन्नता भीर परोपकार होता है वह प्रशस्ततम कम है। इस प्रकार के कमों से ग्रपने प्राप्तो समर्पित करने से ग्रपना मन शक्तिशाली भीर समय होता है। तात्पय यह दै कि अपने आप को ऐसे कमों ने लगाना चाहिए जिससे सबका हित हो सबका कल्यास हो। एसा करी से मन की शान्ति बढती है उसमे सामध्ये आता #1

7क बार की बात है कि अपनी किशोरावस्था म देशबल्यु चितरजनवान ने प्रयंते पिता स अनुरोध किया पिताजी मुक्ते कुछ देयवे चाहिए।'

पिताने कहा क्यो कल ही तो मैंने तुम्हे पाच स्पये दिय व पिता कुछ नाराख हुए।

देश बन्धुने कहा 'हापिताजी कल आयपने मुन्ने रुपय ब्रावस्य दिये वे पर वे सबके सब सर्वहों नये।'

पितान उन्हें तीन क्यें दिवे और कहा कि न्यें स्वाल कर सर्वे किया करो। पुत वह बाते सना तो अपने एक विक्वास्थान नौकर को मुलाकर उन्होंने उस सक्के के पीछे सना दिया धौर कहा कि तम पुण्याप जाको धौर वेसो कि वह क्युम का स्था करता हैं

नी । र स्वा ' निने बालक को खाते हुए देला घोर यह भी देवा कि रास्ते ये उसे एक लडका मिला। जो देवते से प्रस्थन्त सरीव घोर सामान्य तन रहा खा। नौकर ने संदेकर घाये क पत्ना का इस प्रकार वाचे क पत्ना को देवा के पत्ना का इस प्रकार वाचे के पत्ना कर एक हुकान पर गय। वहां उही त वे जूतो की हुकान पर गयं वहां उही तर वे जूतो की हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव कर दे हुकान पर गयं वहां उस स्थल सरीव हुकान सरीव हुकान सरीव हुकान सरीव है। यह के प्रवाद कर स्थल सरीव हुकान सरीव है। इस के स्थल सरीव है। इस के स्थल सरीव सरीव है। इस के सरी

# जीवन यज्ञ है : श्रेष्ठ कार्यों के लिए है

सुरेशचन्द्र वेदालकार

यज्ञस्य चित्रे सतिष्ठस्त । यजुर्बेद २।१६ श्रय यज्ञो भुवनस्य नामि । ऋक् १।१६४।३५ 🚦 मनिष्क मे सुमतिश्व मे यज्ञेन कल्पन्नाम् । यज्जु० १८।११



बाल् बा नये बीर पूत्र के कर बाते पर उन्होंने उसे खाती से खबाकर कहा, देटा <sup>1</sup> जीवन में गरीबों की सहायता दवी उरह करते रहना। यही उत्तक्ष बग्ने हैं। <sup>1</sup> की इसी धिका का पालन करते हुए वालक चित्रत्वनदाल देखान्यु चित्रद्वनवाल के नाम से आरलीय इतिहास में बमर हैं। सहायता के बालिनाची दीतों, दुखिनों की सबा दोनवन्यु परमेश्वर से अस्ति हैं। यही यहा है।

नोकसान्य तिलक के जीवन की एक पठना है। कवा में खिलक खाजी को रिहास किखा रहेंचे। खाज किन तो रहेंचे पर उनका मन बाहर लगा था। एक खान बैठा पाठ सुन रहा वा किख नहीं रहा था। उतके पास न तो कापी को भीर न कलम। उन इस मकर वैठा के कर लिलक को होना था। नवा और वे बोचे बनवन पह क्यां पाठ क्यों नहीं क्लिल रहें? नुरु की धापने जो कुछ भी बताना है पुने फ्लारस बाद हो गया है। फिर क्यों लिख् ?"

विक्षक कुढ हुए बौर बोले 'तो फिर सुनावेगा यदि न सुनापाये तो बेंतो से समझी उपेड दना । असवत ने सारा पाठ सना दिया।

एक दिन इन्ही चित्रक ने कला के कर्ण पर मूलकारी के जिलके कर्ण पर पढ़ हुए नेल कर कोन में आकर क्षात्री के कर कार में पर पढ़ हुए नेल कर कोन में आकर कर की के कर कर के ने कर कर के कर कर के निर्माण कर के निर्माण कर कर के निर्माण कर के निर्म कर के निर्मा

स्वामी स्थानस्य एक बार आीमपुर आने लगे ता लोगों ने बहा चाने से रोकना चाहा भीर कहा कि वहां न बाहमे बहु नवार देश है वहां के लोग सरास्तो हैं वरस्य स्थानी की से स्थान स्वीत-कोस स्वामी यबुलियों को बस्ती बनाकर जला वें तो भी परबाह नहीं हम जनता को सच्का मार्ग बचाकर रहेंगे कि नाता को सच्का मार्ग बचाकर रहेंगे कि नाता नहीं। "अब स्वामी को बहु बाने को तस्तर देखा तो एक अस्त बोला नहीं है। देश में प्रकार वह हूर देख है। स्वामी की पुरकरात और और असरों के जनती पुलों की बढ़ को जाटने के लिये पुरक्तां की ता मूर्ग, न कि नागियों की नेहरती से ताम नूँग, न कि नागियों की नेहरती से ताम नूँग, न कि नागियों की नेहरती से ताम नूँग, न कि नागियों की नेहरती से ता सुके स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता हमार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता हमार्ग विकास स्वाम करता हमार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता मार्ग विकास स्वाम करता हमार्ग विकास स्वाम स

ससार में नवाकाम करने के लिए सुचार करने के सिये वा कान्ति करने के किए जीवन को बजनय बनाना होता है। ससार ने एक यज्ञ हो रहा है। सूर्व बायु चन्द्र पृथ्वी भीर भाकाश यज्ञ कर रहे हैं। देखते नहीं दीपक की बली प्रयने की बनाकर मस्य कर देती है और मटकों को मार्व दिससा जाती है। क्या देखते ही बीब अपने को मिट्टी में मिला बेता है और श्रपने स्थान पर अनेकों को अपन दे देता है। बीच्य ऋतु में जब पृथ्वी तथे की तरह गम होकर तप रही होती तब यही पानी की तन्ही तन्ही बूंदें एक के बाद दूसरी भारम बसिदान कर पृथ्वी को शीतल कर वेती हैं। यह सव यज ही तो है। सूय को देखा है न<sup>?</sup> वह सारे ससार का दुल दूर करताहै। परन्तु यदि हम उससे कहें सूर्य देव ! आपका हम पर किसना उपकार है कि आपने समार का ब्रावेश दूर वर दिया है तो सूर्य कहेगा मैंन कहाँ से अवेरा दूर किया है ? लाझो बुके योडासा विकामी तो<sup>'?</sup> मैंने तो मधेरादेवाही नहीं है सो दूर कहाँ से करूगा<sup>?</sup> में ले केवल जकाका करना ही जानता हु। रात विन वसते रहना ही मुक्ते ज्ञात है। सूर्य ने अपने जीवन का बज कुम्ब सतत प्रवीप्न किया है । नहीं क'रसा है कि उसकी नहीं से ब्राणि नाम जीवित रहते हैं फून फन उत्पन्न होते हैं बन-स्पतियां व ता है। शारे संतार का कार्य

की चारमा है। 'सूर्व धारमा चनकृषी स्युवस्था:

महास्था हुक, थंकर, स्वास्थे द्यानके स्वास्था हुक स्वास्थ्य स्वास्था हुँ पर्धेक का जीवन बजा है। यो ही जीवन हुँ हमें यज्ञ की संदेश की सावत बावकी हमें या की स्वास्थ्य का जीवन वा कर की सावत बावकी वा किए सावता है। अंश्यक वरताना वानते हैं। हमा बहुना थानती है। स्वास्थ्य वहना थानती है। स्वास्थ्य करताने में सर्वास्थ्य वहने हैं। दिवास हिमारी के स्वास्थ्य वहने हैं। दिवास हिमारी के स्वास्थ्य करना निश्चित कर सिका के सीवन के स्वास के स्वस के स्वास के स्

श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नामे सज्जनता एव दयालुता के लिए सारे भारत मे जाना पहचाना है। उसकी शिक्षा दीक्षा उनकी रूपाति उनकी सामा-विक प्रतिष्ठा व धन सम्पत्ति सादि सब उनके जीवन से मिन भिन्न भागों से साबे परन्तु उनके चरित्र की पूर्णता उनकी माता की देन थी। उनकी माता का नाम मनवती देवी वा । एक सच्या को भगवती वेवी वर के काम में जुटी बी। पड़ोस 🕏 एक नांव से वरीव स्त्री छाती से अपने छोटे से बच्चे को चिपकाए हुए ग्रायी। वह भीर उसका बच्चा दोनो सदी से काप रहे वे । वर्फीली हवा चल रही थी । उसने भववती बेवी से कहा माताजी सगर कोई फटा पुराना कपडा पडा हो तो दे दो बहुत ठड पड रही है। बच्चे को डांप सूनी । मगवती देवी का हृदय पसीज नया वै घर में गई भीर अपने विस्तरे ने से ही एक नई रजाई लाकर बोलीं लो यह पटे पुराने कपड़े से समिक गर्म रहेगी, भग-वती देवी के पास केवन वही रखाई थी। उन्होंने धाने कब्ट की बरा भी परवाह न की वह सोचकर कि सभी उस मा धौर बच्चे को भी तो जाड़ ने बचने के शिये कुछ चाहिए था। इसी माता के पुत्र वे ईश्वरचन्त्र विद्यासानर जिनके यज्ञमय जीवन की कहानिया वहाँ तहाँ सुवाई देती हैं। भीर जिनको जन्म देकर भारत नाता नीरवान्त्रित हुई है।

माईकेस मधुसूदन दल बगास के साहित्य की में बहुत प्रसिद्ध है । वे जिलने प्रतिमावान् वे उतने ही उदार भी । ऐसे ही एक धन्य बनाली लेखक ये राजकृष्ण, राजागब के विषय में कहा जाता है कि वे कवि वे नाटककार थे, अनुवादक वे, निबन्धनार वे । मतला वह कि साहित्य के सभी धनो स उनकी शहुच थी। कहा बाता है कि एक नाटक में उन्होंने धपनी सारी सम्पत्ति सना दी। वह असफल हो गया और उनके शूबे भरत के दिन था नये। वे एक प्रकाशक के पास वये। यह उन्हें काने देने को राजी हो बया। उन्होंने क्षमा लेकर उर्वे मंत्री अन्यवाद भी नहीं नहीं विया वा कि एक सुरुवन बड़ी उनके पास का नवे । उन्होंने कहा कि उनकी पत्नी बांब मे बीमार पड़ी है और प्रनिक्ष शर्थे से प्रहो है। यह उपके पास जाका

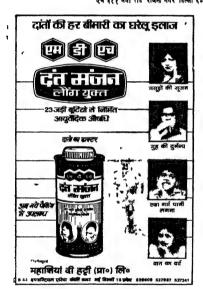
का रहा है स्की निए हो हार्र कार्र कार्रह 🕝 😲 (हिन्दु का १६३५)

### तनिक और रुक जाते!

बीक रहा था निकट किनारा मिटला जाता वा प्राप्तिया। - समक रहा वा भाग्य सिलारा अल्ड कर करको पकड़ें और तुभ - क्षोब नय तक पाठे - क्षियर ! तिक कोर रक बते! - तुम हम के वरदान विके वे मानव को प्रतिमान निके भारत को मनवान मिले वे मानवता पूजित होता विट हम तुम को प्रयन्ति स्वामी तिनक और रक बात।

हम पुत्र का ध्यक्तात स्वाधी तानक धार कर बात।
तुमको कोकर वन पोता है पर पोने ते सब क्या होता है
जो सोना है वो ही होता है कोई मानदात को औपन पर,
तुम तो रहे बनाते स्वाधी तनिक धौर कर बात।
वन पर को यास कातात वेद का पादन गीत सुनाता
पन ध्याम को एहराना सामकार दिट बाता नहिंदुन

ग्रीर प्रधिक क्क जात स्वामी तनिक ग्रीर का जात। सोमबल्ल विद्यालकार एव ६११ नया रोड राजेम्द्र नगर दिल्ली ६०





११वे सरकाम स उपमेल न देर होग

जीवन यज्ञ है

(पुरु २ का शेष) चाहते हैं पर यात्रा के लिए पैसे नहीं। सम्प्रत सम्प्रकात का टाम तक ले

स्थापर रागवायुक्त हो हायु पुरस्त केल मे नवासीन सब पन उनका व दिवा उहोन कह भी नहीं बोचा कि इसी पन केले स्थान की धनिताय सावन्य कता पूरी करने बाले ग उस व्यक्ति ने उन्हें बन्तवाद दिवा पर नह क्या जानता या कि राव बालू ने कितना बडा स्थान किया है।

सक्षीय भावना अस्य या परावव विदिया शसिदि यक्ष या सारवण सुक वा पुक्त की सोर प्यापन नहीं वनी निक वेत्र कार साता है और जाटा ती लेकिन उसकी और वस्त्रीर वचना ककी नहीं एकती। सक्षीय व्यक्ति निक्स से उनस्त्र और परावय के निराण नहीं होता। यक को माला चाहे यत मिने या प्रत्य की माला चाहे यत मिने या सप्त्य वह तो प्रशस्त कर के की सेर ही बदता है। है। बीवन के जियम के नगाड सत ववाओं और पर वस का रोला। सत रोसो। यह ही सहान वस है। महामा हसराज (पृथ्ठ ४ का नेव)

करसके।

१६ नवस्वर १६° का वह ग्रमावी राज्ञिती जिस मे महानाची ने धपने प्राणो का उत्सन कर दिया

महात्माहसराज्य की का देहात हो। गया मनर एक सन्दश्च देकर कि वैदिक कम का प्रभार त्यान और तपस्थातथा वित्वानीस हो सकता है। यही बाख उन्होंने अपने सम्भूष कीयन से सिद्ध की।



रजि० नं० डी (सी०) ७५६

# श्चार्य नगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

# नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भ्रायकर श्रविनियम जी • ६० के श्रतगैत कर मुक्त होगी।

सारा वान चंक/मनीमार्डर/बेक कृष्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी मार्य घर्मायं नेत्र चिकित्सासय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओ के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

### निवेडक

रामनोपाल जासवासे वृश्ववेव नहाशाव वर्गपास ग्रोमज्ञकाल वार्थ वरण्यक विकित्सासम्ब प्रवान, विस्तरी प्रवान वृत्वी वृत्वं प्रवान, तावशां वार्थं प्रतिविधि वार्थं केन्द्रीय नहाश्य वृत्तीसाल प्रतिक सामा समा वैतिक द्वारा

सौकन्य से महाश्चियाँ ी हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, सौद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

# केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- ज्ञा आप ऋषि, मुनि तपस्वी, योगियो को प्रमृत वागी पढना चाहत हैं?
- क्या भ्राप देद के पवित्र ज्ञान को सरल एवं मधुर शब्दों में जानना चाहते हैं?
- क्या भाग उपनिषद्, गोता रामायण, बाह्यसम्बन्ध का भाष्यात्मिक सन्देश स्वय सुनना और भगने परिवार को सुनाना चाहते हैं ?
- क्याभाप भपने भूरवीर एव महापुरुको की शौर्य गायाएँ जानना
   चाहेने।
- क्या प्राप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से प्रात्मचेतनाः जागृत करना चाहते हैं।

यदि हौ तो आइये भार्यसन्देश परिवार में शामिल हो जाइए।

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम मन्य विशेषाक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये ग्राजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान— आर्यंसन्देश साप्ताहिक १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यासय---६३, नसी राजा केशरनाथ, फोन: २६८०३० वाचडी बाखार, विस्ती-६



# महात्मा हंसराज महान् शिक्षाशास्त्री थे

महात्मा हसराज ने बैदिक सिखातों के ध्रमुख्य मानव पूत्यों को स्वाधित करने वाली शिक्षा पढ़ित को धपनाकर वेस के शिक्षा जगत् में एक घमूतपूर्व कार्तित का विहुनाव किया था। इन खब्दों में धार्य प्राप्त किया था। इन खब्दों में धार्य प्राप्त किया था। इन खब्दों में धार्य प्राप्त स्विक समा द्वारा तालकटोरा इच्छों क स्टेडियम नई दिल्ली में धार्योजित महात्मा हुषराच बन्म दिवस समा-राह के प्रवस्त पर मुख्य धार्तिष केन्नीय सिक्षा मननी श्री कृष्णुचन्न पत्त ने अपने श्रद्धा सुमन अपित किये । सार्वदेशिक मार्थ प्रतिनिधि सम्रा के प्रमान श्री रामगोपाल खाल-को कहा, यदि महारामा हस्यान ने प्रपान वीवन विकास के लिए सम-पित न किया होता तो भारत देश में आप की अपेका कही अपिक मैकाले के मानवपुत्र होतें और इनके प्रभाव को समाप्त करना असम्भव हो यया नेता।

बार्व प्रादेशिक सभा के प्रधान

प्रो॰ वेदव्यास ने महात्मा हसराज के पूर्ण व्यक्तिरक और कृतित्व का परिचय दिया। उन्होंने डी०ए०वी० सस्वामों के दितहास तथा माची योजनामों के स्वक्प पर मी प्रकास बाला। उन्होंने बताया झागामी वर्षों मे डी०ए०वी॰ सतत्व्यों के धनसर पर हम केवल मारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रार्थसमाल के सल्वेख प्रेजने के लिए डी०ए०वी॰ -के० सी० पन्त

सकत्य लेते हैं। इस प्रवस्य पर बाक मक्तराम पाराझर द्वारा लिखित महारमा हसराज पुस्तिका का भी विभोचन किया गया। प० खिवकुमार खारनी तथा भि० कृष्यासिह भाय ने भी अपने अद्वास्मन भित्त विधे। इस सबसर पर बी.०एबी० खारो-सन के महस्य के भनुक्य कार्य करने बाले अध्यापको एव कार्यकर्ता को भी सम्मानित किया गया।

# केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को ज्ञापन पत्र दिया

बायसमाज का एक प्रतिनिधि मण्डल के तीय पिकासन्त्री भी कैं। सीठ पान से उनके सास्त्री भवन कार्याण में में कें लिए पान से उनके सास्त्री भवन कार्याण में सिका केंद्र प्रवास समस्या के सम्बन्ध में प्रायंक्री की माजनाओं से स्वयंत्र कराया। माय-स्वाध एक राष्ट्रीय सस्त्रा है तथा राष्ट्र के हिंदों के कार्य करते के लिए पूर्णत समित्त है। श्री पन्त ने लाए प्रायंत समित्त है। श्री पन्त ने लाए पहले हुई बातवीत का सन्त्र में देते हुए कहा कि प्रवास समस्या का समा-सान करते समस्य समी धर्मीक्तान्वर्यों की मावनाकों का पूर्णत ध्यान रक्षा बाएगा।

प्रति चर्याः
प्रतिनिधि प्रकल में आर्य केन्द्रीय
सभा के प्रचान श्री महास्वय चर्यपाल,
दिल्ली सार्य प्रतिगिति सभा के महामहाननी डा॰ वश्यपाल, महाननी श्री
स्रोमप्रकास प्रारं के बहामननी श्री
स्रोमप्रकास सार्य, दिल्ली वेद
प्रचार सच्छल के महामन्त्री श्री रामखरस्यरास सर्य और सार्वसन्त्रेक के
प्रसाल की सुरेनकुगार हिल्ली
वे। दिल्ली सार्य ग्रीतिनिध सभा के
प्रसाल भी कुंदिक की बोर से एक

ज्ञापन पत्न श्री माननीय शिक्षामन्त्री महोदय को दिया गया । इस ज्ञापन में माग की गयी शिक्ष-

(१) बारतीय इतिहास की पुस्तकों में बार्बों को विदेशी धाक्रान्ता होने के सन्दर्भ को पूर्णत निकाल देना चाहिए। क्योंकि इतने राष्ट्रीय एकता की बावना को टेस पहुचती है।

(२) सस्कृत भाषा को पाठ्य क्रम मे समुचित भीर प्रतिष्ठा पूर्ण स्थान दिया जाये।

(३) स्कूली किसा मातृ मावा मे और विक्वविद्यालयी शिक्षा राष्ट्र भाषा हिन्दी में दी जाए।

(४) केन्द्रीय विद्यालयो के पाठ्यक्रमों पर भ्रामारित स्कूल भ्राधिक से भ्राधिक लोले वार्ये भौर पब्लिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध लगावा

(१) মাৰ্মিক যিয়া ভা पूৰ্যা মাৰমান কিবা বাব ।

(६) श्रल्यसम्बद्ध समुदान द्वारा बलावे जा रहे निवालयों को मिलवे बाबी सुविचा तथी को दी बावे। द्वार वर्मपाल ने आपनपत्र की उन पिस्तियों को शिक्षामन्त्री महोदय को पढकर सुनाया जो श्रीमती इन्दिरा गांधी के एक भाषण से उद्धृत की गई हैं तथा जिनमें वार्गिक

चिद्धा को भावस्यक बताया गया है। भिक्षामन्त्री ने इन विचारों से सह-मति प्रकट की भीर भारवासन दिया

कि वे इस दिशामें ठोस कदन उठा वेंगे।

महाश्चय घमपाल जी ने कहा कि चुन्नीलाल घर्मार्च टस्ट खाड्यीय विचारघारा के धनुरूप स्कूल खीर कालेज खोलने के लिए सहर्ष अस्तुत है।

### वह भी क्या जीवन है ?

जिस में उत्साह उमग नहीं वह भी क्या कोई जीवन है?
जो अरा हुआ है रोगों से जर्जर है भौतिक भोगों से
जिससे न कर्म की धारित शेष तप तेज साधना का न लेख प्रति खिषल जीए। निवंत तन है वह मी क्या कोई जीवन है?
जिससे खुनिता सरमात नहीं अनुराग त्याग सुप्रभाव नहीं जिससे ग्राम मद-मत्यर है प्रति दीन हीन पर-निमर है कुमींद रम्भद्रिता मन है, वह भी क्या कोई जीवन है?
जिससे होता निज भीय नहीं परिहत में भी उपयोग नहीं जो कूर कर्म का साधक है, प्रमुता प्रभाद धाराधक है एकम किया मुस्तित जन है वह भी क्या कोई जीवन है?
जिससे तन मन बन खुद नहीं, जो स्वस्थ मित्र मनुद नहीं, जो स्वांव-स्वांति का चातक है मानवता का माम पातक है, पसुता का प्रवत्त की सामनवता का माम पातक है,

### सत्संग वाटिका

धर्यान् जिस प्रकार खसनी से सन् खाने जाते है उसा प्रकार बहा विद्वान् सोय धपनी व णीको मन से युद्ध करके बोलते हैं वहा पर सक्सी धौर मित्रता

वैदिक धम में साय की बहुत ही महिमा है। कहा गया है कि नास्ति सस्यात्परा धम नानतास्त्रातक परम्।

स्ती प्रकार यज्वद १ ॥ में भक्त प्रमु से प्राथमा करता है— धामें तवपते तत परिष्यामि तष्मक्षेत दाने प्रध्वताम् । इत्यस्त्र दाने प्रध्वति हे परमेषदर में प्रतिका करता हू कि धपनी वक्ति नर स्त्य का पालन करूगा। पाय में यह प्रस्तय है निक्ककर स्वय नाम का प्रकारन्य करता हू। इसी प्रकार कुठ ७११०४११२ में एक मन स्नार है— ७११०४११२ में एक मन

युविज्ञात चिकित्य जगाय सच्या सच्या वरवी पर्व्याते । त्योपरस्य यहर्द् व्यावेग्दर्शिसोमी व विद्या के स्व प्रयाद मुख्य की युविधा के निष् स्व प्रयाद महत्य के विज्ञान को एक पूष्टे के विद्या कहा गया है। इन दोनों से वो स्वय है वह सदस चीर धीमे स्वामा से कहा बाता है तथा उससे कोमलता प्राती है। यर जो सस्त्या है वह तो हर प्रकार से सत्यानाल ही कर देशा है।

इस प्रकार हम देवते हैं कि इन सत्य के प्रतिपादन करने वालों मंत्रों में सत्य भाषण की समस्त जूषियों का बहुत सुन्दर वगान किया है।

परन्तु इसके विषशीत लोक व्यवकार

क्रैं— अस्तर वा अनुत मान्या की कई

सामली में कर ने गाई है। एक रचान पर

कहा गया है कि— न वर्मकुक्त वचन
हिनस्ति न स्त्रीतु राजन्तिवाहक ले
प्राखात्वरों सर्वेचनारहारे प्रवान्ताम्याह
रित्ता से स्त्रीत प्रवान्तिवाहक ले
प्राखात्वरों । अवान्त् हवी ने कहा गया
रित्ता से सम्लोक में विवाह के समय
ने मा हुमा प्रण के सकट में पड़ने पर
तथा सारे सम्पत्ति के अपहरण का अव
च्यास्त्रत होने पर न्न गया अवसरों पर
नेता हुमा अप्रण नजा है। इसी प्रकार
एक स्त्रय स्त्रीक में मन हुमार कहते हैं कि—
सत्य य वचन अय सत्यादिय हिंत नवेत्।
यदभूतहितम यथम् एतत् सत्य स्त्रामा।

क्यांत् सन बोमना कल्याण करक है पर उसकी अपेशा भी हित कारक बात कहना भावक घन्धा है। जिसके नोकते से प्रणी का बहुत हिता है। वहीं सस्य भूभ भाव है एक प्रयासका पर तो उस धम को भी कोड देने को कहा नवा है जिसका परिणाम हुक सायक हो। वर्ष सत्य ग्रसत्य विवेचन एक कठिन समस्या

# सत्य क्या है ?

#### सोमदत्त विद्यालकार

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्न घीरा मनसा वाचमकतः । स्रत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रेषा लक्ष्मीनिहिताघि बाचि । ऋ० १०।०६।२



वर्मावरण का परिकाम दुख दायक हो तथा को सोक द्वारा निन्दित हो यह धम जी त्याज्य है।

स्मवहार वे बी हम देवते हैं कि छोटे बच्चे को मंतरिया या रहा प्रकार के फिसी रोग से पीडित्त होने पर जब उसे हुनीन बेली कबकी स्वार्ट रिकामी बक्टी समझी जाती है तो बाता उसे कहती है— बेटा मुह बोको दवाई बहुत भीड़ों है— बेटा मुह बोको दवाई बहुत भीड़ों है बच्चे के हिल के मिए फिसा हुमा यह प्रस्तय मायशा भी खातम्य माना वादा है। ऐसे उदाहरूमों से सम्य का बालन करने की प्रपेशा हितकारक काय करने को प्राचीनकता से वाली है।

यन्ना वाबी ने रावकुषार के प्राण बचाने के लिए फठ का झाल्य लेकर हत्यारे के सामने सपने बानक को राज-कुमार बताकर बचारि फूठ बोला वा तो प्री समी उसकी क्खता करते हैं।

इसीप्रकार की एक कथा राजपूत साहित्य में भी भावी है। जुनानद के शतिय राजा राव महीपास देव युद्ध में धराशायी हो जाते हैं। शत्रु सेना की धन्त पूर के समीप पहुँचते देख कर राव का इकलोता पुत्र नीवण तथा राजरानी चितात्र हो गए। विश्वास पात्र नत्री को कत्तव्य की पुकार धुनाई पडती है। वह मुख्य माग से बाहर निक्सकर निरनार की जबकर चाटियों को पार करके विरि के जनस में स्वित छोटे से गाव में रानी व राजकुमार को सेकर पहुँचता है। वहा देवायत नाम का एक शहीर वासक की रक्षाका वजन देता है। मात्री के लौटने पर राप्ते में गत्रु सेना से घिरने पर जब वह राजकुमार का पता नहीं बतनाता छो वह करश कर विया जाता है। शतु को किसी प्रकार रागी व राजकुमार का शहीर के पास होने का पता जल जाता है। सेना वहाँ पहुँच जाती है। बहीर राज कुमार की उपस्थिति से इन्कार कर देता है। शत्रु प्रहीर को बाथकर घर के कोने कने की तलाश मेलनता है। आहीर ब्रयनी पत्नी को बुलाकर बांख के इकारे से उसे उस का कलाव्य समझाता है धीर फिर स्वा सन्धों में बहु कहता है कि कुमारनीयण को वहा हाबिर करो।' वस्त्र वर्गते ११ वर्गीय तकके को गहुताकर ऐस करती है। उसके मेहरे पर विषाय की कोर्ट से पार किया की कोर्ट से पार किया कि कीर्ट में कि देवी। ११ वर्गीय सामक के पूक्षने पर कहा भी वर्गना नाम नीम्या परसाता है। विदेशी देवा पाँच उस महीर नामक को माता—पिया तमा बोटी बहुन की आसी के मानू कर कर देवा है। पर किशी नी भाषों से मानू के पर की पार की की मानू की पर का हम मान करना को पर की पर की की मानू की पर का हम मान करना को पर की पर की की मानू की पर का हम मान करना को पर की की मानू की पर की पर की की मानू की पर की पर की की मानू की पर की पर की की मानू के पर की प

यवापि यह कुठ बोबा बया वा वो भी बाज वजी बहीर के प्रवहत करते हैं। पन्नावायी बहीर के काय को कौन हुए कह वकता है। उचमुत्र कोक व्यवहार में कई मीके ऐसे बा जाते हैं बहुा सस्य बौर बहत्य में क्या लाज्य है बौर क्या कर्सव्य है इसका निराय करना कठिन हो बाया है

नहामारत के दुढ़ में घन की विजय के लिए कुरण डारा खानिक तरम के हरन के धारेन उदाहरत्व विवये हैं। होशाचाम की घरन परित्यान के लिए प्रारत करने के लिए धरनत्वामा हव ' खहकर एक हाची का नाम धरनत्वामा हव ' त्यान नवा धनत्व नहीं वा? तथी यो सत्वामी पुनिष्ठिर के मुख के धरक त्यामा हव कहनवा कर बतके 'गरो वा कुनरो वा कहने के बनव विमुख सादि बनवामर उनकी गरो वा की वात बना वा श्री मही।

सत्यवादी शे एक और कठिमाई और उक्तका हुल —सस्य भाषण के सम्बन्ध में एक श्लोक बहुत प्रसिद्ध है जो बठाता है कि सस्य क्लि प्रकार क्षेत्र विचार कर बोलना च हिए। श्लोक इस प्रकार है—

> तरव ब्यात प्रिय ब्रुवात म ब्रुवारतस्यर्गाप्रवद् । प्रिय व नामृत ब्रुवात् एव वस समातम ॥

कर्यात् १ सस्य बोले २ प्रिय सस्य बोले २ अप्रिय सस्य न बोले ४ प्रिय सनके बाला क्रूठ थीन बोले यह समासन कर्म बताबा है !

कुमारनीयण को नहा हाबिर करो। 'इतर बहुत बढ़ा बढ़ा है कि शहर हो चतुर महीरनी हपने करिक कहेंचा हो दीवना कहिए हा कि की

रस्य नहीं बोखना चाहिए। काता को कामा कहना नवारि बरस हे पर यह समित होने के कारण त्याच्य है। वहां रास्त प्रमाता नी तिम क्यन बोचनों की समित अच्छा बतावा नवा। इसका समाचान करने के लिए उसकी सर्व यह दुखी है कि तिम चनने वाली वाल कहों पर वह कुटी नहीं होनी चालिए।

इस कसीटी से सस्य शायम इण्युक प्रेमी मनुष्य के नम में बढी मुक्तिक सफ रियस हो जाती है। नया किया सम्य ।

एक मनोरणक कहानी इस मुक्किक का इस बढाठी है। एक राजा की खबू 🕏 साम बुद्ध करत समय बाबी प्रांत तीर सबने से वाली रही। और वाबी जुवा चढ़ के प्रहार से बाली रही । सुनते हैं कि राजा ने चतुर वित्रकारों को बुसाकर सपना चित्र बनाकर जान की सामा दी। एक चित्रकार सत्य बबात् के धनुसार रावा का ऐसा चित्र बनाकर सामा, जिसमे उसकी एक ही बाक्त वी बीर एक ही हांच वा । राजा ने उसे इनाम देना वो दूर रहा उसकी मत्सना की कि विद धन् इस वित्र को देखे तो हमारे देश पर चढाई कर देवा कि यहा का राजा एक हाम तवा एक बाक्त वामा है। दूसरे चित्रकार को पताचला कि पहले चित्र--कार की यह दशित हुई है वह राखा का ऐसा विक्र ननाकर सावा विसमें उसकी बोनों बांकों शत्र को तरेरती हुई विसाई तया एक हाच में तजवार तथा दूसरे में डाख पकडी हुई दिखाई। राजा ने जिम को देखा तो डोटकर कहा यह किस का चित्र है<sup>?</sup> नेरी तो एक ही माल सड़ी समामत है भीर एक ही हाब है। उसे भी इनाम देना को दूर रहा डाटकर मदा दिया । तीसरा चित्रकार बहुत समस्र्वार था। बहुरामाका ऐसा चित्र बनाकर साया जो उसकी साइड पीज में बा । एक बास चत्र को होय से देवती हई बी उसकी नाब की योग में होने से दिसाई ही नहीं देती थी। एक हाथ में समबार बी वो दूसरा हाब शरीर की शोट में होदे वे विवाद ही न वेता था। कहते हैं कि राचा ने उसी बुद्धिमान चित्रकार की शर-पुर श्माम दिया ।

ऊपर बनाये स्त्रोक के ब्रमुखार स्वस्य भावता की तीनो वर्तों को पूरा करने का दम चतुर भावती को सोचकर बुद्धि से निकासमा चाहिए।

शका मन में पैशा होती है कि विद कोई भी पातक गांव का कर करने के लिए लगवार नेकर उसके पीड़े सामा है इहा हो भीर नाम जगत में जाकर आही कि नामें तो मांचक के पूछने पर सारे हुई सरकारी बनकर गांव के कि तो जा पता सरकारा तो हुँचें पोहरूपा का पांच करें होर बिंद कुर मेल के पारंच करने का हार की दे ऐसी पता में की विद्या चार करना हुए की है ऐसी ने किस चारत

# 🖈 वचन-सन्देश 🖈

मनुष्य कौन हैं ? करस्वात्मवत् भी हो त

मनुष्य उसी को कहना कि मननशीक होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख दुख और हानि लाभ को समसे। अन्याय-कारी बलवान् से भी न डरे और घर्मास्मा निर्वल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामध्यं से घर्मास्माओ--कि चाहे वे महा अनाथ निर्वल और गुरा-रहित क्यो न हो---उनकी रक्षा, उन्नित, प्रियाचरएा और (अधर्मी) चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुरावान्

भी हो तथापि उसका नाश, ध्रवनित ग्रीर अप्रियाचरए। सदा किया करे भ्रयांत् जहा तक हो सके वहा तक ग्रन्थाय-कारियों के बल की हानि ग्रीर न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वेषा किया करे। इस काम में चाहे उसकी किनना हो वारुए दुख प्राप्त हो चाहे प्राएग भी भले ही जाव परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कमो न होवे।

---महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय

# पंजाब समस्या फिर खतरनाक मोड़ पर

धकालियों की लगमग सभी वार्मिक माग मानी जा चुकी हैं खत्येदार टोहरा ने भी इसकी स्वीकारोक्ति की है। सकाली नेताओं की रिहाई, भालइण्डिया सिख स्टूडेण्ट फडरेशन में प्रतिबन्ध हटाना, अकालया की मागो के सामने सरकार का भूकना, बादि कदम आशा निराशा की विवित्र चित्र को प्रकट कर रहे हैं। देश की अख-डता का चुनातो देने वाले उग्रवादी विदेशी इसारी पर चल रहे है। उनकी माजल है अशान्ति, कहर, खून खराबा देश की प्रमप्रात और एकता का चोथड-चीयड कर देना। विगत वर्षों मे हमारा देश विकास क माग पर जिस प्रकार स आगे बढ रहा है उसको एक शक्ति के रूप मे देखना अनेक महाशक्तियों को अच्छा नहीं लग रहा। अनेक विदेशी गुप्तचर एजेन्सी भारत में मपने खूनी पजे जमाने में सलम्न हैं। उनके सकता पर अनक आधिया इस देश को देखनी पड रही है। सरकार को ऐस अनेक सबूत निलं हैं, जासूसी में पकड लोगों से अनेक रहस्य उजागर हुए है। पाकिस्तान मे प्राचक्षाण पा रहे उप्रवादी भारत मे प्रविष्ट हाकर योजनाबद्ध दग से हत्या काण्ड कर जाते हैं। सरकार जब भी शान्ति जार माई बारे के लिए सपना पग बढाती है। सका लियो का समभोत की दिशा में लाने के लिए सफल होती दिलायी पडती है, तभी एकाएक नेपध्य से विस्कोट की भयकर गजना हो जाती

पजाब समस्या के लम्बे होते जावे से उप्रवादियों के हाथ भी मजबूत होते जा रहे हैं। पजाब इंग्लिया काग्रस के महासचिव श्री रचुनस्त नाल भारिया पर किया गया हमला, पजाब के प्रत्य धनेक स्थानां पर गोना वर्षा भीर सामुह्क नरसहार भावि घटनामों से उप्रवादिया के किर सक्रिय हो जाने के प्रवल प्रमाण हैं।

दूसरी और प्रकाशने नेताओं के तोबे वन्तान्य और भडकाने वाले भाषण उम्रवादियों की मदद जरें ही हैं। श्री टोहरा का यह कहन समल सार वाला तथी करने जब सिखी की सम्पूर्ण मान मान ली जायगी। इस्तिरा गांधी के हत्यारे को बहुरे कहना उनके विधानक मिलल का परिवायक हैं। तथाकियत नरमपन्थी श्री लोगोवाल जिल्हारावाले के गांव जाकर उनके परिवार से मिले। उनसे सहयोग मागा और यह वीयणा की बी कि जिंबरावाले से उनके कोई सत्यरेग मागा और यह वीयणा की बी कि जिंबरावाले से उनके कोई सत्यरेग कही थे बन्दी से बल्कि दोनों का लक्ष्य एक ही था। उन्होंने इस्तिरा गांधी के हत्यारे को सम्मानित भी किया। राष्ट्रपति ज्ञानी जैतिहरू को सिखी का यत्र नम्मर एक और प्रधानमन्त्री श्री राजीय गांधी को सनु नम्बर ए से और प्रधानमन्त्री श्री राजीय गांधी को सनु नम्बर दो भी उन्होंने करार विया है। ऐसे वालावरण में केवल सरकार का नम्न पढ़ना कायरता का परिवायक है।

उन्नवादियों की तलाख स्रकार ने वो स्वर्ण मन्दिर की सरायों में खापा बाला भीर तलाखी ली एवं कई स्वतरामक उपवादियों को बल्दूक हुवगोलों और पिस्तौलों के साव गिरफ्तार किया है। इसवे जाहिर प्रमी भी ये बार्गिक स्वल उपवादियों के यह बने हुए हैं। सरकार को वाहिए वेख के किसी भी सन्देहास्यद वर्गिक स्वर्ली में खापे बालकर तलाधियाल । किसी भी प्रसामाजिक उप्रवादी तत्त्व क पकड जाने पर कठोर सजादे। तथा विशेष प्रभियान चलाकर उप्रवादी तत्त्वा को सक्ती से कुचल दे। —यशपाल सुभाषा

सम्पादक के नाम पत्न---

### धर्मपरिवर्तन का कुचक्र

विगत कुछ वर्षों से हमारे देश मे हरियनो गिरियनों पिछडे क्षेत्रों के मोले-भाने लोगों के वर्मा-तरस का सत्य विक मृश्चित प्रशियान चलाया वा रहा है। एक समय था जब प्राज से लगभग वो इजार वय पूर्व सारी बरती पर हिन्दुस्व की विचार माराका प्रमुख छाया हुन्ना था। जब यवनो ने मारत को पदाकान्त किया तब तलवार के बस पर इस्लाम के प्रचार का दुर्भीग्यपूज श्रीक्षशाम चलाया यया था। स्र क्रेजी का भारत पर साधि पत्य हो जाने के उपरात पादरियों ने सेवा भाव के माध्यम से हिन्दुओं को ईसाइयत मे वीक्षित करना प्रारम्भ किया। ईसाइयो के चगुक में कुछ सीधे-साथे लोग को जनलो पहाडो पर रहते थे फसे। देश में मौलिक अधिकार प्रत्येक नागरिक को निसा। बाजादी के बाद सरकार की तुष्टीकरण नीति के धन्तगत विभिन्न प्रकार की धराष्ट्रीय कायवाहियों को बढावा मिला। इसी सदभ मे विगत वर्षो मे तमिलनाडुके मीनाक्षीपुरम व राम-नावपूरम नावो के हरिखनों का और अब उ० प्र० के बहुराइच जिले में सगमग सास सौ नटो का वर्गपरिवर्तन पेट्रोडानर के बल पर किया गया। लोभ धन भ्रम विस्तार के बाबार पर वर्गपरिवतम कराना भारतीय सविधान के प्रतिकृत है। वर्मान्तरम् के इस प्रराष्ट्रीय काथ ने विभिन्न प्रकार की सस्वाए सम्मन है जिन्हें अरव देशों से अकृत वन मिल रहा है। वर्मान्तरस धराष्ट्रीय इसलिए भी है क्योंकि वर्मान्तरित व्यक्ति की निष्ठा अपने राष्ट्र राष्ट्रीय सस्कृति राष्ट्री-विवारवारा के प्रतिकृत होकर धर बोम्मुखी हो जाती है यदि इस प्रवेध शस-वैधानिक वर्मान्तरण पर घविष्यस्य कठो रता है रोक न लगाई गई, तो धविष्य ने

इसके भयकर परिणास राष्ट्र का सोसने पडगे। — राषेत्रयास झास

हिन्दू चुढि सरक्षर्गीय समिति समा सक्त १५,४ ८५ समाचार पत्री में वह राईच उत्तर प्रदेश में हिन्दू नटों के सामू हिक बम परिवतन का समाचार सुनकर पढकर हिन्दू शुद्धि सरक्षणोय समिति के महामन्त्री स्वाभी सेवानन्द जी इस इलाके में जो नेपाल के साथ साथ लगता है हालात जानने के लिए प<sub>2</sub> चे जाने पर पता लगा कि यह हिंदू नटो का सामुहिक इस्लाम मे बन परिवतन कोई झामिकः तगी व सामाजिक तिरस्कारके कारण सम्भव नहीं है इसके पीछ पेट्रोडालर और विदेशी वडयन्त्र काम कर रहा है भीर यह वडयन्त्र १६८१ से चल रहा है और इसा कारण समय समय पर धन परिवतन होतारहा। जिस क्रोर किसी का विशेष ब्यान नहीं पट्ट्या बमला देश की सीमा से लेकर नैपाल की सीमा के साथ साथ बस्ती गोडा और बहराईन ग्रादि जिलो से यम परिवतन करवाकर मुस्लिम बेस्ट बनाये जाने का वडमन्द्र चल रहा है। इस काम मे प्रन्य मुस्सिम सगठनों के साथ साथ मिल्ली इमदादी सीसाइटी का बढा हाच है, जिनके पास करोडो की सम्पत्ति है जिसका धर्म परिवनन में प्रयोग होता है स्वामी जी ने नटो को समकाया है। वह बीर शिवाजी के बशज हैं वह लोभ वा धन्य आकषण से धर्म परिवर्तन कैसे कर सकते हैं। उन्होंने तो हिन्दू धम की रक्षाय बढे कच्ट सहे हैं। जिनका उन लोगों पर ब अबा प्रभाव पढ रहा है भीर पुन हिन्दू अम से सौट रहे हैं। ग्रन्य समिति के सदस्य वहा जायेंने । स्शामी जी सामान्य स्थिति हो बाने तक वहीं उहरेंने।

--बोमप्रकाश प्रधान समिति

वीवन भाषाभीर विश्वास का नान है। जीवन को धगर एक नदिया कहा वाये तो बाका भीर निराक्षा हो किमारे है। व्यक्ति कभी निरास हतास हो जाता है कभी भाषा उत्साह से युक्त । हरी हरी पत्तियो भीर तीले शुलो के बीच मुस्काती सदमाती कर्लियों के होठी पर कल पूज सुमन बनने की धाशा होती है। कमल की कोमल पलडियों में बाद भीरे की कल तक जाने का स्वर्णिम श्रवसर का सहारा धाणाने ही लो दिया है। वमन्त के बीत गातीकोयल के स्वरमे जीन ग्रर ग्राका की मधुर तानें भरी हुई हैं लहल हाती प्रकृति के हरित पट स भाषा क हरा रग भरा है। क ची सुदूर ज्हान के प्रिक पक्षियो म जो मस्ती दिलाई पडती है उसमे प्राक्षा ही वलवती कै। निरंगा जीवन का बाबन है दुल है एक जजीर

हुम कोयों में से प्रविकाश तो ऐसे हैं जो तीं के नेने वालं मुद्द है। क्योंकि उनमें कोई प्राश्मा नहीं कोई प्रावामा नहीं। बीवन वास्तव में एक गति हैं साथ प्रतीक हैं जबता की गतिहोनना की। बीवन प्रतीक हैं जाराण का प्रगति का। हुमारा प्रसित्य काराण का प्रगति का। हुमारा प्रसित्य काराण का प्रगति का। हुमारा प्रसित्य काराण की मा मा ह इन्हू हुम बस मन्न हैं हमारी हस्ती में स्विक्ट हैं जीवन के काय कलाग जवात प्रावनाए धीर प्रमानी परिस्थितियों के उपर उठने की काशना। धाप इन्हें राजा है प्रस्तर प्रामन हैं सो क्या भीत

#### तस्यामञ्च

#### आशा

#### यशपाल सुवाञ्च

तुम्हें मार देवी ? परिस्थितिया तुम्हे नका दथी ? बका देवी ? दुवा देवी ? नहीं विल्कुल नहीं । विद्यते यह विश्वाद कर निया है हर- हु किसी से परावित नहीं हो से हता उसे यह सारविश्वास ही वितासमा

धाप शकर बनना चाहेगे धौर धपनी वासनाधो पर विजय प्राप्त करना नही बाहेंगे? बार दक्षान द बनना बाहेंग धीर सत्य के सामने कष्ट भोगने में भापकी कह नाप उठगी धाप बांधी बनना च हेगे भीर सत्य के प्रति खाग्रह करने में फुक जाना पस च करने । मेरे मित्र । जिसमे जीवन की शक्ति प्रविक हैं उस पर बीमारी के कीटाणुभी धसर नहीं करते। जिसमे जीवन की शक्ति अधिक है वह अपनी कमजोरी पर विजय प्राप्त कर लेगा। जिसकी जिन्दगी कमजोर है उस दीमारी सा जायगी। उसका प्रस्तित्व ग्राधी में प<sup>⇒</sup> पीले पत्त की तरह है जिसे बहाकर परिस्थितिया जहा चाहे ले जा सकती हैं। शक्तिहीन दुवल निराशावान् कभी एकनिष्ठ नहीं हो सकता आयेर न ही वह स्थिर रह सकता है। कभी उसे

दुष्ट भीर उद्दर्श शक्तिया भवती भीर वीचेंशीतो कमी वह वेवस्य के छोर बाकवित होगा । इसी बींचातानी वें उसका मस्सित्य विसर जावेगा। आसा बीर स्वप्न में यही घन्तर है स्वप्न का कोई बाधारनहीं होता और बाधाका माचार होता है। माशा विश्वास को बाम देती है। विश्वास क्ल के मरोसे पर ही टिका है। निराश का बब्दिकोच शक्तिहोनता सौर अस्वस्थता का चोतक है। जवानी आका को जन्म देती है नवों कि उसमें शक्ति है। बुढ़ापा नैरा य को जन्म देता है क्योंकि उसमे धपने ऊपर मरोसा नहीं। शक्ति हीन टटे सण्डहरों में ही निरावा की साक उडा करती है। वहासदा भौत की उदास भीर क भी छाया ही महराबा करती है। मिराशा के बवण्डर में खबस स्विर पाव भी लडवडाने सनत हैं। पहाडी से टक्कर लेने के लिए समझने वाले दिल भी वक कर बैठ वाल है। और जवानी सफेद ऋण्डे विकाकर निराशा है बागे घटने टेक देती है।

भाज हर क्षेत्र में निराशा के अयावह धनकोर कादल आयो हुए । सारा वाता

वरण बातक के पन्ने में समाया हवा है। राष्ट्र की सीमाधी की घोर काशी खावा नवती भा रही है । अपने हो चर के धन्दर ज्यासामुखी पूट रहे हैं। रक्षक और श्वासक जनता जनादन का विश्वास को बैठे हैं। हर तरफ से चैतानियत की गरी चीकों सुनाई वड रही हैं। चरित्र ना बसा चींट दिया वशा है। ईवानवारी मुह खुगावे बैठी है। बेसमक्तों धौर प्रहरियो का उत्साह सो नवा है। निराशा की बहरी रात्रि जवान होती जा रही है। तो क्या सरव श्रव नहीं उमेवा है सूरव जरूर उनेका और जब उनेना तो अवने असस्य तीरों से इस राजि इप दैत्य का सीना चीर देगा। दूर दूर तक कही अन्वेरा नवार नहीं आयेना।

यदि निरागा ने प्रापके सन में बर कर सिया तो जान जाइने कि ब्रामका बुडाप धानया है यापकी तमित प्रापका स्वार्य कोंबर पहीं है। सनर ब्रापको निन्ता पहना है तो ब्यास संबंधी किया। के धाना की नाठी निजाइये और फिर देखिये धानकी तक्याई न य कर उठती। किया बासा के जिन्दमी बिना तारों की मीमा जैसी है जिन्दमी के तारों को सखाइये बेरा देशिए एक मीठी रागिनी किया विराद स्वार्य क्ला ठठ। बासमान के दिखारे कम ठठ। सक मामिए धापका जबीव व्यस्तित्य बासा के मनोहारी समीव पर करेमा।

×××

#### भारतीय समाज के जागरण में आर्य समाज का योगदान

लेखिका-शामती प्रकाश स्द

ब्रायसनाच की स्थापन से पूर्व भारत य समाज में नाना प्रकार का कूरी तियाँ पनप चुकी थी यथा बास विवाह स्त्रीसमाजको शिक्षासे दचित रस्तना खुभाखत वल व्यवस्थाको कम से न मानकर जन से मानना हिंदी भाषा के प्रतिप्रम का समाव मूर्ति-पूजाव साच विश्वामी के महजाल में फसना व देख प्रमुका प्रभाव। वन उपरोक्त बुराइयो का उन्यूजन करने का श्रय केवल भाय समाज को ही है। श्रायसमाज ने बसुर्वेव कुटुम्बक्स, का प्राणिमाल को पठ पढाया धौर कहा- मनुभव यह कभी नहीं वहां कि मुसलमान वन ईस ई बन मुसलमान बन ग्रीर दूसरों को पीडा दे परातु सदव यही कहा है-मानवता सीस इससे बडायम और क्या हो सकता है ? भायसमाज संपूर्व देश के नवसूबक मात भ या हि दी को शमजी की वेदी पर बलि दन कर चुके थे। हिन्दी प्रत्तक वा सम चार पत्र जो हिल्ली में प्रकाशित होते वे

उन्हें पढ़ना फैशन के बिक्ट समक्षा बाता था परन्तुस्वामी दवान द ने अपने जनस् प्रसिद्ध प्रयो को हि बी मे जिसकर हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिवा। आय समाध ने नारी जागरता व इसके प्रसार का मरसक प्रयत्न किया। समाज ने नारी को समानाधिकार दिलवाए। नारी के लिए शिक्षा के द्वार लोल दिए। बहुत से डी॰ए॰ वी ॰ विद्यालय व महाविद्यालय मुलवाए। जी लोग नारी को पांव की जूसी समऋते ये उद्वें बतलाया कि एक नारी के सुचि क्षित होने से पूरा परिवार सुबोम्ब व शि। तही सकता है। स्वामी बद्धानन्द ने पुत्रवस्ता कोकैपसा व वित्तेवस्ता त्यानकर सोक सेवाकी धीर बुदकुल की स्वापना करके देशमन्ति से बोत प्रोत शिक्षण का बारम्य किया और देसवासियों को स्व राज्य प्राप्ति की प्ररणा दी। स्वामी बढा नद ने २ प्रश्रश्च को सार्वदेशिक धायसमान बनाई जिससे भारत नावा की देवा चीर शक्तिक क्यापक रूप के ही

सके। १८१५ में बडबाल में पढ सकाल में आंधरमाल ने नडवाल में तुम्बा पीडियों की वहुत सवा करके प्रसस्य लोगों को गौत के पुह से बचाया। १८२३ ने सापरा में हिन्दू पुर्वि संगा को स्वाचना की गई विससे प्रमेक हिन्दू वरों के हाब जाने से बच सके।

भागशन्दकाधवही कुलीन व ववाचारी है इसी उह य से ७ सम्मार=७४ को बम्बई में प्रावेंसेमाज की स्थापना हुई थी इसके सस्वापक का भूज नाम स्वामी दवानन्द सरस्वती है जो आदिश्य बह्रा वारी व सत्योप<sup>3</sup>शक वे। वेद और शास्त्री के मह न बिद्वान वे। इनके जीवन का मुख्य उद्दय संसार को मिच्या ज्ञान मिच्या विकार व मिथ्या विश्वास से मुक्त करके सत्य म ग पर लाना था। इसी उदृश्य की पूर्ति के लिए महाँच ने धार्थसमाज की स्थापना करके कई ग्रामों की रचना की। जिनमें मुख्य सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेशार्थि माध्यमूमिका भीर तस्कारविधि भादि है जिनसे समाज को शसकी ज्ञान प्राप्त होकर बाच विश्वासों से सुटकारा हुया। नानवनात्र की भीर वार्मिक सेवा करते के लिए इस समाज ने दस निवम बनाए विवते प्रविक से प्रविक संक्वा में सोवाँ को बाहति व साम प्राप्त ही सुके। स्वाबी वयान्त्व ने दुवस्य व कृत्रश्रदाती का

सण्डन किया वा ताकि सोय सबेरे सूच में न बिर सक उन भी कोई समाबि न बनाए इसीलिए न होने निस्सा बा— जो साक हो मेरी हरिडयों की वह ज के लेती में बास प्राना।

साम श्री स यनमान संनाय का प्रति नायक है। रामनीतिक सम्बा कानिक सम्माय के निए हमेशा धावाज उठाता है मोनो को शुद्ध व सारिवक झाम प्रदान करके सावनीतिक बत्याक की प्रयस कामना करता है धौर जोगों को तकी नात से उनर बठाकर प्रकास-साम्य की मौति स्वर र को प्रकास देशा है।

> एव २ ग्रीन पार्ड एवस्टेंसन, नई दिल्ली

#### सूचना

भागतमाथ वासीमार साथ ने वरकार तथा नैकित वर्ग के प्रवार-जवार के सिए एक सुबोध्य विद्यान् की ए० अझ् प्रकार 'नागीक पुरोशित पर पर साक्षीन है। कथा तरकार भागि के सिए सम्बक्त करें।

मण्डी धार्वश्वमात्र साझीमार बाव (बीट एवन पूर्वी) विस्तृति-११००० ६२ फोल ७१२७४४३

#### श्रनेकान्तवाद दर्शन की दृष्टि में

#### रामसुमेर मिश्र

मारत में बंग मानानों ने एक विष्ट ही विश्वे अनेक त्यादा कहते हैं। इस विष्ट की मान्यता है कि मर्चेच गया पंके बंचात है, बचात अपने प्रतों के समुदाय का परिष्णाम है। मत प्रवापं का बोच तथा बत्या वार्य। मनों के बोच को विजाने पर परवार्य का बो बोच होता है कह सक्यायाल है, विश्वास्थक नहीं। मत परार्थ का जो भी बोच मान्य होता है, वह सत्य भी हो सकता है, सदस्य भी हो सकता है सार सक्यां निमा हमा भी हो सकता है सार सक्यां निमा हो मनता है। सकता है सोर सक्यांनीय भी हो नकता है।

इस विरेट को मानने नाले एक उता-इराय केरे हैं कि प्रमा एक हायों का बोध करने जमा रें रहे में स्था कर उते जानने का बोध हुवा, पीठ को स्था ं करने पर तर बुध का बोध हुवा, सुद को स्था ं करने पर बुध का बोध हुवा, पुर को स्था ं करने पर केर का बन्दा हुवा। इस सब्द बोधों को निमाने पर क्य को को पवार्थ का वो बोध होगा, यह व्यवसायक है, तिक्यवास्थक नहीं। इस प्रचार कैंग बोध इस प्रमान है कि ध्यवित प्रयोग का बोध इस प्रमान है कि ध्यवित प्रयोग का बोध इस प्रमान करता है धोर कृष्ठि उत्तका जान निष्यवसायक नहीं हो सक्ता धार उत्ते करता स्थान करता है हो सक्ता धार उत्ते करता स्थान करता है हो

वैन बाचार्यों की यह बच्टि व्यवहार्य वी नहीं है। जब मधा पैर को स्पर्ध करता है तो उसे निश्चबात्मक बोध होता है और एक सक्षा, सम्मा उस वीच का ज्ञान है। यदि उसे इन्द्रिय स्पर्शद्वारा संखवात्मक, बोच होता तो कोई कर्म या प्रतिक्रिया उत्पन्न न होती। यदि सबेरे मे मा कम प्रकाश मे रस्ती को देख-कर व्यक्ति सांप का बोच करता है तो वन की चपेट ने असन होता है। उस कान में जो भी जान है वह निश्चवारमक है। संसव तो न्याम की देन है बोच की देव महीं। ठहर कर बन व्यक्ति अपने नोक पर न्यास करने समता है तो उसे जिल्लाता के पुर्खों का भी प्रकाश होता है, भीर परिचास में जो बोध वह बहुण करता है क्स पर निश्वपारमक बृत्ति रखता है। संस्थात्मक बृत्ति से तो व्यक्ति कोई बोच रखड़ी नहीं सकता। मनुष्य में वृत्ति का क्षय वर्षि बंधवात्मक होता तो वह मुखा मर बाता, पेट भरने के बिए कोई पदार्थ भी प्रदुष न कर सकता । इसी समय में पदारक्षताकि निष है या अपूतः जैन धायाची की वह सासबुक्तकर्या की कि बीव पदानें के सनों का होकर बुढि हारा बमन्तित किया बाता है तब पूर्व बंगा- विक पदार्थ का बोध होता है। बॉक्ट में पूर्ण पदार्थ इकाई बनकर बाता है। गेस्टा-स्ट मनोविज्ञान ने सिद्ध करके विकासाया है कि बॉक्ट में पूर्ण (Whole) बाता है बच पत्र (Parts) नहीं बाते।

दस नामबुक्तम्बन्धी का आकार यह या कि पवार्ष सभी का समाज है और पवार्ष की सभी के जुगो सीर अवक्दारों के बीच से ही जाता बा सकता है। यह साम्यवा भी नक्तत चारखा रह है। पानी सोमवन सौर हाइड्रोजन को निवाने से बनता है चीर धामसीजन चीर हाइड्रोजन के मुखो से जिम्म नुम प्रकट करता है। हैयानकर ने यह बोचमा की ची कि प्रशेक कमात के सपने गुण होते हैं वे नुम सोन के मुखो सामुद्राय नहीं हो सकते।

दर्धन ने पदार्थ के गुरा वर्शका अवनोकन करके उसके कारण की स्रोज की बाती है। इन सब से ऐसे सत्य का बोच किया वाता है को उस पदार्थ के धस्तित्व, सत्य धीर धर्मका ज्ञान करा देता है। जैन धाचार्यों ने विश्लेषसात्मक पढति सपनाई। पदार्व का विश्लेषसा किया। विश्लेषसा रूप का किया और धयो का समुदान पक्रड में शावा। अब इस कल्पनाने जनको गलत राह विका दी कि पदार्व से नये नुस्तु धनों के समु-बाब का वरिखाम है। कपिश्र ने सांस्य की रचना ने सही निवेंश दिया है कि कुण धन्मक्त से व्यक्त होते हैं. किसी सवात है कारण पैदा नहीं होते । प्रत्येक समात से बो मुख बर्शन में बाते हैं, वे प्रकृति मे सम्बद्ध रूप से मीजूद हैं ये धनेकान्त के समुवाय का परिवास नही है। सुष्टि नियम शारनत सत्व हैं। इन नियमी की स्रोव विज्ञान करता है। इन निवर्मों के धरितत्व भीर उसके निवन्ता की स्रोध क्षंत मे होती है। जैन वार्शनकों को धपनी मान्यता से स्वय ही पवार्व का बोध करते समय सक्षय हो नवा फिर बी वे दर्शन को धनेयबाद का बाबा पहला कर चले वये।

बुढि की सहायता से ही जान प्राप्त करता है, दुढ़ि प्रकृतिक नियम से कार्य करती है। वन बीन वो सानो (Corcepts) को विरोक्तभास ने पाता है सववा ज्ञान को सम्मवहार्य प्रमुखन करता है तक उसे समय पैदा होता है। यदि पदार्व जेय न होता तो सक्षय को भी स्थान न होता मत सन्नेयवाद को तो दर्शन में स्थान ही नही है। सशय जिज्ञाशा की जननी बन दर्शन को बच्टि स्रोजने में सहायक है। सत्य सभागात्मक व सन्नेय नही है। इस क्षेत्र को स्पष्ट करने में दयानन्द ने दर्शन को यह द्रष्टि दी कि जीव ग्रस्पन 🐉 पूर्ण ज्ञान उसकी सामध्यं ने बाधय से ही प्राप्त होता है, बुद्धि या सर्वज्ञ का माश्रय ही उसका सम्दल है। बुद्धि उसकी सत्य के प्रहुए। करने भीर असत्य की छोडने मे तत्तर रहने पर अपनी सामध्यं का पूर्ण सहयोग देने मे सहायक है। ईश्वर सबंह होकर मनुष्य को उसकी जिज्ञासा की वेदना दूर करने में सहायक है।

जीव ने जानने का गुरा है उसका यह गुण किसी घाषय से ही प्रकट होता है। सल्पन्नता चीव की सामर्थ्यका चिल्ल है। कम्प्यूटर धादि वनाकर मनुष्य ने श्रपनी बुद्धि और दर्शन की सीमा बहुत बढा भी है, फिर भी यह पूर्ण सत्य जानने वें बसमर्थ है। इसका धर्य यह नहीं है कि सत्य सन्नेय है। जो भी ज्ञान मनुष्य पाता है, यह सब जेय ही है, कुछ माग सभी जेय की परिषि में नहीं साया, सत शनै सनै प्रगति करता हुआ मनुष्य ज्ञान ने वृद्धि करता चला जाता है। इस क्षेत्र में बाबा हुठ गर्व और मिथ्याभिमान से से पैदा हाती है। जो व्यक्ति मनुष्य को किसी विश्वास क खटे ने बाधकर हठी. गर्वीसा प्रगति विरोधी बनाते हैं वे इस समाज के कोर शत्रु हैं। एसी इंब्टिया जो मगति और मुक्ति का विरोध कर अठे शान्ति और मानन्द का प्रलोभन देती है. मानव के विश्वास पर बलि देती हैं। दबानम्द ने दर्शन और वर्गको प्रगति धौर मुक्ति दिलाई है जो पूर्ण निश्चवात्मक भीर जेय है।

> १२४ वी/६२६ गोविन्दनबर कानपुर।

।। भी३म् ॥

#### वैदिक धर्म ही श्रेष्ठ है।

लेखक-स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतो

वैविक वर्ग श्रेष्ठ वर्ग है। वैविक वर्ग हर प्रकार वे उत्तर वेकर बात्य गार्ग को वरद्याता है। क्योंकि स्वका धावार मजहवो की भाति किसी मनुष्य का सल्यक्षान नहीं है किन्तु देक्वप्रैय ज्ञान है, वो हर प्रकार से पूर्ण और महान् है। स्वतिस्—

वाद तक वर्गे वैदिक न अपनायेगा। सारा जीवन तेरा नच्ट हो वायेगा॥

> तुओः पण्डे पुत्रारी बहकाते रहें। राम कृष्ण को ही ईश्वर बसाते रहें।।

साच्ये देश्वर का ना मेद तूपायेगा। सारा चीवन तेरा नष्ट हो वायेगा॥

> है निराकार प्रमुको मुलाया हुआ।। सब के घट घट के बन्दर समावा हुआ।।

वेद विचासे इसका पता पायेगा। सारा चीवन तेरा नष्ट हो बायेगा।।

> तीयों मन्दिरों मे सवावा तमयः। बोसताहीरहाधेरीवासीकी अस्यः।।

वेक्ररताव वरना व्यर्वहो वानेमा। साराजीवन तेरा मध्य हो आयेवा॥

> को नई हो नई रास से तूरही। को स्मृनाम समझही मार्गसही।।

वर न मामा तो फिर पीछे, पछ्छतायेकाः स्राराजीयन तेरा शब्द हो जायेकाः। व्यासपीठ--

#### उपनिषत् कथा-माला-१

## आओ आध्यात्मिक जगत् में चलें !

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

इन दिनों में मुक्त झापके सामने जो चर्चा करनी है उसका सात्यय एक बात मे यह होगा कि चाहे देदों के सिकासी की लो बाहे उपनिषदी है। जिन नियमो का वे वरान करते हैं वे लोक परलोक के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ईस्वर की प्राप्ति हो बाहे ससार सुझ की दोनों के बिए नियम एक ही हैं। बाप कहेंने कि लोक और परलोक एक कैसे हो गये ? इन में तो बड़ा मेद है। मेद है किन्तु केवल देखने मात्र का। जैसे सून्य भीर १ की सख्यामे । वास्तव में ये दोनो एक ही है। किसी सरुवा के ब्राये शूच [०] लगा दो ६ वढ जायगे। जैमे १ 🕂 ६ 🕻 🤊 । किसी हिन्दमें के बागे से जूर्या • ] उड़ा दो तो १ घट जायने । इसकिए ईश्वर प्राप्ति दुनिया में सुख का एक माधन है। यदि कुछ मेद है तो केवस देखने मात्र का बास्तव म कोई नहीं ये दोनो साथ साथ चलते हैं। परन्तुमनुष्य इसका विचार नहीं करना। चपनिषदों में ईश्वर प्राप्ति भीर सासारिक सुब को एक ही बताया है जो ईश्वर की प्राप्ति कर लेता है वह ही सासारिक सल का प्रानन्द भी पाता है।

वेदों में तिला है कि देश्वर को अपने दूवर में ही देला जाता है। ह्वय में ही देश्वर का जाता होता है। हिन्दु एक शव है बहु यह कि देश्वर को पति देख सकता है। शत यह है तो अब अपन पैदा होता है कि हम तो पति नहीं परन्तु बन तो सकते हैं। यदि कोई बानक पाठशासा न साथे तो बहु बान कैसे प्राप्त कर सकता है? को चला बाता है जात तो बही पा सकता है। इसी प्रकार को मनुष्य यिव सनने का प्रमरन करता है बहु यति क्यों मुद्रन खड़ेका?

यति का अध्ययह है कि जो मनुष्य इन्द्रियों को सीच मागपर पत्नाने का यत्न करता है वहीं विति है। उसी का नाम नेता है। उसी को सीवर अपना पच प्रदशक भी कहते हैं।

बह पुष्प को इतियों की नियम में रहे जहें भीवे मान पर क्वाये उसी को सुख मिनता है। बही ससार में सुल प्राप्त करता है। वो इतियों को विषयों की घोर न जाये धोर उन्हें नियम के स्थीन न रखें वह तो सर्वेष दुशी ही रहेगा।

मनु भववान् ने बताया है कि

इन्द्रिया क्या है ? ये हर तरफ भावती हैं। भांसें विवर ने जाबो देखती हैं नाक वहा सम्मव हो सचती हैं कान प्रत्येक शब्द की बाहे वह कही हो युनते हैं हाब बहां भी कोई वस्तु छूनी वा पकडनी हो वही पहुँच जाते हैं। मनु अववान कहते हैं कि इन इदियों को सबम से चलाओ अर्थात नियम मे रक्सी वैसे एक बोडे का सवार योडा लेकर बाजार में भाता है योडा सड वाताहै। सवार उसकी गीठ पर एक चाबुक जवाता है। बोडा बान बाता है कि मेरी पौठ पर काई सवार बैठा है वह सीघा हो जाता है। यदि सवार निवल है समादी है बाजार में बोडा लेकर बाता है जोडा बड जाता है जपर बैठा हवा सवार भयभीत हो जाता है वोडासमफ जाता है कि सवार दुवल है। बहु भीर अधिक बढता है भीर क्या ने नही रहता। दुवल सवार क्या सवारी करेगा?

मही ।

उपनिषय कहते हैं निवस में चर्मा ? प्रका यह है कि जब तक सोप दूर न हैं। निवस में कैंडे चलें योप नवा है? जाक्य सारज के सावाय से युखों ! यह बतलाएना में योप कोम मोह राज और हैं वहाँ। में योप कहीं बाहुर से नहीं साते सावार से से रीवों में नहीं जारी कार्य र हैं। वैवा होते हैं। इन योगों से ही बुढ़ि मिलम हो बाती हैं इससिए राज हेंच और कोल मोह को बो नमुख्य खोड देता है नहीं विस्त

बब मनुष्य में राव का बोप बढ बाता है तो उत्तकों क्षोड़ने के लिए कितने बस की बायव्यकता पडती हैं। वास्तव में बसी बहुई हैं विद्यने बताम में राव इव कीर बोम मोह को जीत जिला है। बुसस मनुष्य काई कैंग्रे जीत बकता है? इसके

कफ से बकी चोटियाँ, दूर तक वादियों में यूचता प्रकृति का मधुर संगीत सारी दुनिया के सोर वारावें से सलग वह पवंत की गुफा माह-माया से दूर योगी और मुनियों को पुकारती रही है परम सानव्य की प्रांति के निए तपस्वी जन इस सामा पर खाते रहें थे। तेकिन ससीम शान्ति परम सत्तेष सानवर का प्रमुव क्या योगियों को ही मिल सकता है। नहीं नहीं वित्त प्रमान बाहते हो तो पुन्ते भी अवस्य मिलेगा स्वयत को खेरकर मागने की प्रावस्थकता नहीं। इसी जीवन के सवाम से तुम यह सव पा सकते हो। इस युग के परम योगी दवानन्द ने यही तो कहा वा ससार नहीं वागना छो नो तो तुम पाना बाहते हो वह सवपुत्र तुम्हारे पास है। तुमने उसे को यो तुम पाना बाहते हो वह सवपुत्र तुम्हारे पास है। तुमने वह साथ से वा मा हो तो तुम सो सकते वह तुम ते से पुत्र म वे के । उसे या ति पर्ति मोह माया है दूर वे। उनके प्रवत्त वेश या या साथ सहस्य के माध्यम से हम यह साप तक पहुत्र पहुं है। हर सत्तते वे। साय सरेश के माध्यम से हम यह साप तक पहुत्र पहुं है हस सत्तत्व वे पता माहन साथ से हम यह साप तक पहुत्र पहुं है।

इसी प्रकार हमारी इन्द्रियां भी जोडे हैं। उनके लिए भी बलवान सवार की भावश्यकता है। मनु मयवान कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य निक्षम के विपरीत सपनी इन्द्रियों को नान से हटाकर उनका उप योज करता है तो उसने दोव पैवा हो वाते हैं। नाना प्रकार की दुर्वनताए था वाती है। धन्त में पुरुष इन्तियों का दास बच बाला है। इन इन्द्रियों को नचनें करके जो पुरुष सीचे मार्ग पर चनता है वही सतार में मुख पाता है। वती विद्धि को प्राप्त होता है और को विवर्धों के प्रधीन होकर इन्द्रियों को सीवे मार्ग पर नहीं जलातकता वह क्या कवी सुकाया सकता है ? एक जितेन्त्रिय पुरुष जिस तिबि को प्राप्त करता है। विश्ववो का बास उसे की पा सकता है? क्यापि सिए सन्ति की धावस्यकता है वे पराक्रम से जीते जाते हैं। परन्तु कैसे ?

त वात वात हा । परंचु करा "
विहार प्रान्य में हृषिद्द भीय का नेवा
वातवा है। उसमें हृष्यी निकने प्राते हैं। वे
हृष्यों के वृत तोर मणते हैं। वेदि किसी
हृष्यों को वृत ते वांचा काने तो यह उपकरें
ते बांचा कार्य तो बूता उसाब देता है। वेदि
तोन इस्ता को विरा देता है। वेदि
तोन इस्ता को हम्म के वेदि है।
हम्म प्रकार ने एक-यूवरे के बांच क्या है
एक प्रकार ने एक-यूवरे के बांच क्या है
एक में कि एक क्या हमिल्म की वास
रमकता नहीं। पात हैय और जीन-मोह
को रोक्नो के निष्ठ केना प्रातिक स्वा मीर
वानस्य वा है। एस ने किस्ता समीर
हैया कर एक्का है, हिन्द में मिल्म का मीर
हैया कर एक्का है, हर्ज में मिल्म का मीर

पीलाए हैं और मोह ने किसने मनुष्यों को केचैन नवाया है ?

एक वसवान् ननुष्य को किसी ने वाशी वी उवने क्यको मारा। एक ने पुका, बाही पुन कियना नोफ उठा पक्ते हो? उवने उत्तर विवा, वो हाई वन ।' पहले मनुष्य ने कहा ' पुन को एक नाली का बोफ वी नहीं वहार एकते, इतना बोफ कैंदे उठाओंने? बही है वीय ! इन वोशों का युवार करोने को ध्यना युवार होगा तभी जुब धनने वेख जीर वाति का भी मुक्तर कर क्षेत्रों । विव स्वय नहीं मुक्तर तो कुछ भी नहीं नह किया। वो सार ही सुपरा हुमा नहीं नह

इसितय थाप देखें कि जिसने राव हैंव को जीत किया उठी ने हुव वप्ट विकाय पानी। वह क्षम वाह राम को दवा तकता है जिस पाहे हैंव और मोह का प्रयोग कर सकता है। यदि उदो प्रापरेशन कराने की धावस्यकता है तो धपना हाल धाने कर देगा उतके बन्दर शहनवांका होगी। यदि जनुष्य इन्दियों को धरने स्थान कर से छी उससे धनित था जाती है। यदि जह समके धर्मन हो जाने की किर उक्से बस्तिर नहीं? धनीन हो जाने की कर से से सम्बन्ध से सक सु हो पारे से सो समुख्य है सक सु हो पारे से सो समुख्य है सक सु हो

सव में साथ से पूछता हू सापको इन में से स्था सम्बद्ध मताता है ? गुरू से पूछे तो हरनें से कोई मी अम्बद्ध मही। सा प् कहेंगे सेने ? मुनिये। सापको पूरी' वहीं स्थाद करती हैं। साप साकन्यर सा रहे हैं। नाई कहता है कि यर मे पूरी तैवार हैं बाते बायों स्टेकत पर सम्बद्धि पूरी नहीं मिसंसी। 'किन्तु साप कहते हैं 'गायी का सम्बद्ध है या। सापको पूरी ती बाती है साप सस्ती जस्ती बाते हैं। सापको सानन्द नहीं साता। राव तो स्टेसन की ओर है सानन्य केंग्रेस में के

याप प्रतिदिन देखते हैं वश्ये हुठ करते हैं। जब वश्या कृड होता है तो वरती पर मोट बाता है। बातते हो क्यों नह खड़ा रहकर भी याना कोच पड़क कर सकता है। पर महीं वश्या तताता है कि जो जातियां कठी रहती है वे सेटी हो रहती हैं। उनमे क्या होता है <sup>9</sup> वहीं कि राग हो व बौर मोह यह बाता है। खड़ार वे वहीं जातिया उन्नति कर सकती है विनको राव हो के सोर मोह पर सविकार है।

एक बात और समझा हूं। घरत की क्यान दिन-प्रतिविध करों कृषेत्र होती बाती है ? माता थिटा बातें, जहे न बावें इतका क्षेत्र कविकतर उन्हें वर है। इतका कारम शह कि समझे कुंत्रकों की सुनि निवक्तमुदार नहीं । इसलिए सन्तान बुर्वस होती बाती है । एसका परिजास यह है कि बाव ही साथ बाति भी निर्वस होती बाती है ।

वैष पृहस्य में वाने से नहीं रोकते, विजयु पृहस्य में कब बाना वाहिए? पुर- जित होकर पृष्ठीय होकर। पृहस्य का बनुषय उनको ही कच्छा होता है जो निवसानुक्य रहमें में अपने से पहने ही समस्य निवस तोड़ सें ।

ितव है। विषयी जोग ईस्वर की प्रास्ति गृहीं कर सकते, गति ईस्वर का वर्षम करता है किन्तु प्रयो हस्वय में ईस्वर सकें स्थापक है, यब स्थानों ने विषयाना है, परन्तु विवाही हुस्य में ही देता है। यद-एव हस्य की युद्धि की धावस्थकता है। यदि मन्त करण गतिन है तब ईस्वर-प्रास्ति कहां? ईस्वर-मान्ति उसी को हो बकती है विवकता हर्य युद्ध हो, जो विवेत्तिय हो।

को यक्ति है वह परमारमा की प्रपने

वो मनुष्य प्रपता काम स्वय प्रपत्ते हाच से करे वही तपस्वी है। यदि धाप कंपी लेखा लिखा रहे हैं, और नौकर दें कहें कि पानी का गिलास लाओं तो कोई हुनें नहीं। क्योंकि पानी के लिए उठकर बाने से लेखा ठीक नहीं होगा। किन्तु गरि प्राप्त के कार बेठे हैं, युराही और निलास भी पास रखा है और नौकर को बाहर से पुकार कर कहते हैं कि "पानी लाओ।" वह कहता है, "बाइ जी महराही और गिलास तो पास चरा है।" बाइ जो कहता है, "प्रवे कुत है हैं की प्रपत्ता वल और साहस बो सेते हैं। प्रवे कुत के लिए रखा है ? ऐसे लोग प्रपत्ता वल और साहस बो सेते हैं।

बृहस्य वे प्रवेश करने वावे पुरुष के विषय में वेद कहते हैं कि वह सन्ध्य सुर-किल हो, सुबील हो। गृहस्य प्रवेश के बमय वह बसवान् हो, दुवंल करापि न हो।

मैंने एक करवा क्या तीन वर्ष की - किन्तु वह वजी सुबोल तथा पुट्ट थे, पाण कर वर्ष वर्ष के अपने हों में वह वर्ष के स्वाप्त क

बरीर को वी भीच युरोब, कठन और कुछ बनाती है उचका नाम है 'बातु' उचका ही जीक प्रयोग होना चाहिए, वो अनुष्य चुनेस बौर बतवान है, पुरुष का कुछ भी उसी को प्राप्य होगा, और बसार में वी यही चुल पा सकता है। दुनेस बौर विकास का साथ कभी सुख नहीं कर सकता।

enter erfere seit file

दुषन थे देवला है। सखार का कौन वा बान है वो उचके बानने कर सकेता? जो अनुष्य बधुर से देर सकता है बह दिरवा है तथा डरेता? विवक्त सन्त करवा परित हो नह देखन को सन्ते वानने ऐसे देखता है जैंदे दूरवीन में हूर की दर्शन किया होती होती है, बैंदे वित परनात्वा को सपने बीतर देखता है बैंदे ही नाहर भी देखना। जैंदे तमुद्र का जल बाहे पाहर धावर से नो सबवा अवाल वाहत से तस बनद् बारा ही होता, बैंदे ही बुद्ध कर करवा जाना मनुष्य सकते एक बैदा और वह में परनात्मा को देखता है। हुकीन गुक्रमात का वचन है—

बार बन बार सत बन।

तुव एक पूचरे के बार बनो सबस्वार बनो सहायक बनो, किन्तु दूसरों के लिए बोक न बनो, दूसरों का सहारा बनो, जनके लिए कार कबी न बनो। बिंद सब्द करख में स्पितिकार को है। वेश्वर-आध्य कहा है दिवर की बोज का क्या प्रयोचन है। इसीलिए तो कहा है —

बार मन में, इंडे बन में।

वो कहता है कि नेपा यन नहीं सबता यह मन सवा से। उने रोकता कीन हैं 'तन को तो सवानों की सान-स्पकता है। यह सता तो मानी बाद है कि समुक्त मुख्य का नज़ मेरे वस में नहीं। निन्तु यह कैंगे माना सारे, कि सपना मन भी यह में नहीं 'मोटर होती हैं साप उक्ता पहिला हिसाते हैं किन्तु रोकना नहीं साता। परिचान नया होता हैं 'तम तो जब पदार्थ हैं 'यह बता में नज तो जब पदार्थ हैं 'यह नहीं में सह स्वार देवा हो? 'वसका मन ही जब में नहीं सह स्वार देवा? 'वसका मन ही जब में नहीं सह स्वार देवा?'

मीवामा क्य वा क्यम है, कि वित दू महानवा की थीर बाता वाहता है वो निवर देश मग कहता है उबके कियो यब । किर उवके मितवा हो आयेशे। एक से दिन कम को रोको। हर काव नग की हच्या के किया करो। वह स्वव वीचा हो वाहता ह क्यावनमंत्र में वी रोकान वावेवा, वव तक बद्र पुरुषों का बरस्य न होया तब तक कुछ भी न होया, तब तक कुछ बी न बन सकेवा, बन कवापि स्विर न होया, वस में न बायेवा।

सन दशका वाचन वी भुत को । दिवार कर कार्य महारा क्यार के ही निम्नाह है। वाचार के कार्य महारा क्यार के ही भूत के वे मही क्यार के कार्य महारा क्यार के ही भूत के वे मही क्यार के व्यार के समझ के की कार्य की विश्व के कार्य की वे ही मही वही के कार्य की विश्व के कार्य की कार्य की कार्य का स्ववहार होता है। क्या कभी किसी ने कही देखा कि सब टिकट की कीमत किसी ने कही देखा कि सब टिकट की कीमत किसी ने कही देखा कि सब टिकट की कीमत किसी ने की क्यार की व्यार कार्य की क्यार की कीमत किसी ने की निम्नाह की कीमत किसी ने की निम्नाह की किसी किसी ने की निम्नाह की किसी निम्नाह की निम्नाह की किसी किसी ने की निम्नाह की

सान बीबिये मैं सिवरेट पीता हूं सौर सार के कहता हूं, कि किनरेट मत पियों ! मेरा मन स्वय जुक पर विस्कार करेवा और कहता हूं, कि किनरेट मत करोवा और कहता कि तिव बात का तु जयस्व देता है वह स्वय तेरे बीबन में नहीं। तस्य पर स्वत्ति बनती है। कुछ म हुँ । मूठ पर स्वत्ति बनती है। उस म कुछ पायों के पर कोई बाता है। उस म कुछ पायों के पर कोई बाता है। उस म कुछ पायों के पर कोई होया। किन्तु विद गोरी की इच्चा वे जवाता तो बता बाता हुया बायेवा ? महीं, वह तो जुता बी जतार देवा। कहीं कुछ यन्य न हो बाये। दुरे काम करने में बनुस्य को सदेव ही सब होता है। स्वाह में कोई सब नहीं

वो मनुष्य अपना काम स्वक अपने हाम दें करे नहीं तपस्वी है। यदि धान कोई तेम जिस रहे हैं, धीर नौकर से कई कि पानी का विस्ताद आयो तो कोई हवं नहीं। क्योंकि पानी के किए उठकर जाने से से ठीक नहीं होगा। किन्तु मित बाप के अप बैठ हैं चुर्राही और निकर को बाहर के पूजार कर कहते हैं कि "पानी साथी।" नह कहता है, 'बाबू बी! चुराही और निवास तो पास करा है।" जानू की कहते हैं "बसे हुके नौकर किस सिव एवा है? ऐसे बीम अपना स्वा और हाइकु को देशे मुना करता वा मैंने पूछा कि ऐसा स्थो किया बाता है तो उत्तर मिना कि "यह इसिनए करते हैं बिससे कभी भावस्थकता को तो अपना खामान उठा सकें। यह है एक व्यक्ति का साहस ।

पबाब में तो यह रिवाब है कि बिस बाबू का बेतन दो सी हो जाये उसके घर की स्त्री निकस्मी हो बाती है। उसे काम कांव के लिए नौकर की बायरवकता पडते है। किन्तुगुजरात देश मे बट-बडे घरों की स्क्रिया अपने हाथ से भोजन बनाती हैं। यह तप है। इसलिए दुम्स हो यासम्ब वयहो यापरावयः। तुम श्रपने कर्तव्य का पासन करो ! किन्यु तुम्है तो न्सका सम्यास हो यमा है। छोटे-छोटे बच्चों को कठ सिमाया बाता है। एक बार एक बाबू के घर सक्डू बाए । उसके लडके ने मार्ग ती बाबू ने कहा कि स्कूस हो बाबो फिर मिल बाबेंने। परन्तु सबके को चैन कहा<sup>?</sup> वह स्कूल स्रोडकर सा मया धौर ज्यों ही लड्डू उतारने समा टोकरी का सामान गिर वया। आब ने पूछा तो कह दिया बिल्ली यहा से नई है उसने गिरा दिया।

इसके साने एक बात सीर है वह है जान । जान नाम है बानने का । इसके निया फिली काम की पूर्त धारफ्य है। एक मनुष्य बिसका सारीर शवक तथा हुवेंन है, यदि वह खापसे कहे कि 'बहा-कर्य अपन्या है स्वका रासन धारफ्य है' तो स्वका प्रमाद कुख न होना । यदि बहा-कहे कि मेरी सार देखी । मैंने बहा-करें को स्वका प्रमाद पढ़जा। जान के स्व प्रमाद है कि किस काम को हाथ में तो स्वका मनी सीत समस् कहें, जो काय करते हों उसके स्वय धारखार हैं।

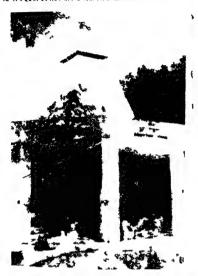
जब तप, सत्य धौर ज्ञान हो बाखा है त व धारमा का प्रकाश होता है। यह प्रकाश क्या है? जिल्ला उसे वर्शन नहीं कर सकती।

पाणकन वह सहर कसी हुई है कि हमारे पुजक गास्तिक होते था रहे है। माना कि साथ परनेकर को नहीं मानते। न माने भेरे सम्बर जो है वह परमात्मा है। चलके मान नहीं हो सकते। नाम निवा कि साथ परमेरकर को नहीं मानते ? क्या जान की पूर्ति जी तुर्दी है? क्या कथा जान की पूर्ति जी तुर्दी है? क्या उसको भी नहीं मानोने, कि हमियों को नियमानुकूल बसाना बाहिए? वहि नहीं मानोगे तो बकते कासोने। रहतें मान निवा तो साथकी साला को सपने साथ ईवार के दिवा साथि।

दूवर देवों के बोच पारिकारी हैं, वाहबी हैं इसे केंद्री सामानियों में यहीं मेर हैं। बारानी अपनी केंद्रियों के बात नहीं जोर हिन्दुरानी बाद हैं। बाराब उनके बार करने काल ने मेर केंद्रियों के बात नहीं जोर हिन्दुरानी बाद हैं। बाराब उनके बार केंद्रियों ने काल काल मानकारी हैं, करने काल ने में मेंद्रिया हैं नहीं। वे तो महुन के बार कर हम हमेंद्रिया हमेंद्रिया करने काल मानकारी हैं, वार केंद्रियों केंद्रियों कर बार करते हैं बीर उने रासानिया

#### Fao श्री लालमन आर्य जयन्ती समारोह

प्रसिद्ध दानबीर स्वत त्रता मेनानी कमठ खाय पुरुष महर्षि दवान द एव वैदिक म के धनण्य जपासक भी स्वर्मीय लालपन बाब के ७४ वे ज म दिवस पर १७ अप्रैस ो एक विकास समारोह हसराज माण्य स्कूल प्रजाबी बाग से सम्पन्त हुआ। इस अवस्थ ार भी सासमन बार्य की पुण्य स्मित में एक सबमगर की मध्य यक्तवासा विसमें बेद त्रियों का प्रकत किया गया है उनके सुपुत्र श्री गज न द बाय श्री प्रकासानन्द श्राय री सरयानन्द श्राय ने यज्ञ याग धादि परित्र काय हेतु हसराज भाडव स्कल को सम वस की । इसका उदघाटन झाय सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया ।



भी जासमन प्राय प्रावर्श ईश्वर भक्त एव कवि वे उनके प्रक्ति रस में ड्वे हितो का एक कैसेट जिसको आ पुनार्नीसङ्ग राध्य ने स्वर विका उसका विमोचन क्यानवाः

त्रो॰ वेवस्थास की सञ्यक्षता ने एक श्रद्धाञ्जली सभा भी की गई जिससे सिद्ध भायनेता भी रामनोपाल शालवाले तका भाय भाय विद्वानो ने श्री बार्य के ।। बार्स जीवन पर प्रकाश डाला।

भी बालमन प्राय निवान प्रतियोगिता के प्रतियोगियों को भी पुरस्कृत किया गया।

#### श्री लालमन त्रार्थ निबन्ध प्रतियोगिता के परिग्राम

इस प्रतियोगिता में दो विषय ये - महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत वा वर्तमान चारिति के सकट समस्या और समाचान जिसमें देश अर से २७६ सिंखोमियो ने नाम सिया। इन नियामों का मूल्याकन आयसमाय के तीन प्रसिद्ध केंद्रानों द्वारा किया गया। जिनके नाम इस प्रकार से हैं-

भी कितीय कुमार भी वेदालकार की डा॰ वाचरपति जी तपाच्याय सम्पादक धाय वकत

श्री हा॰ बसपास सी

दिल्ली विक्व विद्यासय प्रधान सम्यादक शायसन्देश

इस निबन्य प्रतियोगिता में निम्नलिशित व्यक्तियों को पुरस्कृत किया बया । बनके नाम निम्नलिसित हैं-

। वस पुरस्कार समुक्त विजेता---

भी कुष्मदेव शास्त्री पाणिति महाविद्याः बहासगढ सोनीपत ६००/-३० श्री महेस कुमार कौषिक द-जीवन भवन देवपुरा सामम हरिद्वार १००/ १० इतीय पुरस्कार समुक्त विचेता-

सी डा० सूबप्रकास विकासकार के०एव० १६७ कविनगर गा०वाद २६०/ इ० भी निजीसास मीना प्राम मध्येका बाबा विवाई वयपुर ₹20/-₹0

तीय पुरस्कार सनुबत विजेता --

। बी विनोध कुमार

क्वाटर न० ७६६/११/१११ टाउनश्चिष 120/-40 बी•एष०ई०एम० हरिद्वार

#### स्व॰ श्री लालमन जी चार्य एक प्रेरक जीवन



थी जालमन झाय का जन्म राज स्वान के सेरडा नाव में विश्वत १६६० की चैत्र सुक्ला द्वितीया को हुमा । बाल्य कास वाब के गरीब किसानों मे बीता लेकिन बीवन के साधना क्षेत्र बने--उत्तरी बगाल तथा क्सकता जैसे नवर । सम्प न्तता एव सादगी देशानराग तथा दान शीलता एव मानवीय मूल्यों के प्रति वड बास्या का दीप बलाकर कल्वाणमार्ग के पिकक बन गए।

ऋषि दयानम्ब एव महास्मा नाषी उनके बावख महापूरुष वे। वतिवर दमा नन्द के उपवेशों से प्ररस्ता प्रष्ठण कर मतक शाद पूर्तिपुत्राका प्रवल विरोध किया तका विकवा विवाह का सशक्त समयन किया । स्ववेशी धान्दोशन के प्रति बाक्रव्ट हए महात्मा नाथी के कारहा। श्रकात एवं बाढ शादि से गीडियों की तम मन और वन से सहायता की।

प्रसम्नवित्त निरमिमान सासमन बी का मन काल की तरह कान्तिमान् एव स्कटिक की तरह पारदर्शी वा। वि•स॰ २०४० की क्येष्ट जुक्सा दक्षमी के दिन उमकी इहकीला समाप्त हुई।

स्व अध्य जी ने धपने जीवन से तैक्यो कविताएँ गीत अवन भादि जिले । उन्हीं में से कुछ प्रभूमनित एव बात्मोत्वान ते सम्बद्ध नीतीं का चवन भी साथ सी की स्मृति में उनके वर्मानुरायी धारमधी, सक्त्री बनागद की ग्रांव श्री प्रकाशानन्त नी साथ एवं भी सत्वासम्ब भी माथ ने समद बनता की तेवा में समर्पित किया ।

बी बासमन बाय जी ने एक कर्नेट बोनी की तरह समाज सुचार एक चर्मी द्वार के क्षेत्र में बनेक कार्य किए। जनका अक्रिप्त विवरण नीचे विकासमा है---

- 🛘 वहेब झाडम्बर परवा प्रवा बाब विवाह खुशासूत मृतक शोव शादि कृत्रवासी का सोवाहरण प्रवण विरोध विश्वा विवाह व स्ववेशी वस्तुओं के प्रयोग का सोवाहरण समयन
- 🛘 सरोवर कुमो भीवषासय वससासा श्रादि का निर्माश
- 🛘 बाइ दुर्भिक्ष मङ्गामारी जैसी दैविक बाववामी ने बन सहायता
- सरपच पव के कायकाल में प्राम सुधार व विकास के सनेक काय
- 🗆 भ्रपने लिखे हुए सैकडों भवनों व नीतो के नाष्यम से बायसमान का प्रचार व बुव्यसनो तका धा धविश्वास का सण्डन
- 🗆 गरीव विद्यार्थियों विद्वान् व प्रवा रकों को बार्षिक सहयोग

उन्होंने भारतीय सस्कृति के धारकों के भनुरूप ही सेवा बत को ध्येय बनावा धनेक वार्मिक सामाजिक और ग्रैकणिक सस्याओं से पनिषठ रूप से सविदा रहे । उनमें से कुछ सरवाओं का उत्लेख इस प्रकार है-

दवानन्त बाह्य महाविद्यालय हिलार

- 🗆 वयानम्ब कालेख हिलार 🗆 जगन्नाच प्राय कन्या विश्वासय हिसार
- 🛘 विरवानन्य वैदिक सावना धाक्षम मथ रा
- 🗆 विषया विवाह सहायक सव
- 🛘 गुक्कुम बीरववास 🛘 पुरुकुस जानगर
- 🗆 प्रावेट्स्ट प्रावसमाज वहा वाधार

प्रतिष्ठान

🛘 मारत टेक्सटाइस

- इकोनोमिक ट्रासपोर्ट सार्वेनाइकेसन
- आव स्टील्स प्रा॰ सि॰

मुस्बोकन के हिसाब से १० प्रतिबोनियों को सान्त्वना पुरस्कार विये वस्-विनके नाम इस प्रकार है-

| *  | वी राजवीर सिंह ग्रसिक श्रुवरीय   | नी नेपठ                                  | 20/-20 |
|----|--|--|--------|
| 3  | बी विवयुरी बोस्वाबी रावान  | क्षा जोवपुर                              | 20/-50 |
|    | बीमती नार्वी मायुर इतुनान  | चीक जोवपूर                               | 10/-10 |
| ¥  | थी कृष्य विहारीसाथ अवस्ता  | ववाहर नवर हावरस                          | 10/ We |
| ×  | हा॰ वयदत्त उपनी बास्त्री प्रव्यक्ष सम्झ्त विवाग कुवाळ<br>विश्वि परिवर प्रस्थीश |  | 10/-10 |
| •  | बी कैंचाश विहारी वर्गा असिरिक<br>विविध   | त विका एवं सत्र न्यायाचीछ<br>कोट (विकार) | १०/ र∗ |
| •  | वी चुनीवा गासनागी, कोसवान  | ते के पास मोधाम                          | 40/-40 |
| ₩, | वी गोहुम्बर ब्रह्मक १११  | -रामनवर, वेरठ                            | 30/40- |
|    | वी सरोग सर्वा, सार्वक  | TC, HOMY,                                | 24/-   |

#### श्रद्धांजलि

#### चुना पत्रकार श्रमोदकुमार विनोद

--शिवकुमार गोयल



भरत ते प्रकाशित लोकप्रिय दैविक "प्रचाल के वह सम्पादक तथा जुगा साम समाजी परकार यो प्रमोत्कुमार चिनोद का ४२ वर्ष की सरगायु में ही निषद हो प्रया। वे वयोजुद स्वामीनता सेनाती तेकस्वी व निर्मीक पक्षपार तथा साम तैता श्री विश्वक दिनोद के व्येष्ठ पुत्र वै।

श्री प्रमोव कुछ समय संभोजन की सभी में कैसर से पीडित ने। उनका कम्बर्ड के टाटा कैसर इस्टीटयूट का इलाज जक पहुग्या कि प्रचानक त्वियत कराव हो यह तवा ने प्रमुको प्यारे हो गये।

मारीशस यात्रा अमिट छाप

जी जमोद विश्वसे वय जनदूवर माह में ही जारतीय प्रतिनित्त अध्यत में मेरे शाय जारीखत वये थे। बहुंग आववशंभा की सेर से सम्बाद अध्यत्त किया पर्या था। सम्होंने गारीस्थ्य के यवनंद जी शिव बावद रामगुमान तथा राष्ट्रकृति जी असिरज जनमान से जेट कर १००८ राष्ट्र विश्वमा था। नहीं ने जारीस्थ्य के प्रत्याद हिल्ली साहित्यकार जी समितन्तु प्रशत के स्तिसि से। सम्बी विश्वमसादिता सभा शृह स्वजाव से उन्होंने सनत जी ने परि-वाद को में स्तिक सार। ने परि-

वी प्रमोद ने मारीक्ष के मारव-वाहियों के सामने माने वाली वस्तवायों मा महम बध्ययन किया जा तथा नहीं हिंदुयों के मर्थ वरित्तम में सहित्य देशाइतों व सीविया के पुस्तमानों की सत्तवाके विवयों ना प्रचानी मेंस्मी हो मन्याकोंक विवयों ना प्रचानी मेंस्मी हो मन्याकोंक किये माना तस्त्वराख में स्वय्य कहा वा 'वानंतवाया तस्त्राख्य में स्वय्य कहा वा की मारीक्ष्य वर्ष प्रचारक मेसने वाहिए की सिन्दू सभाव को वानंतिय व विवय-वाही क्या कहें"।

त्रवात की बोकत्रियता विक्रिकेट में बेंबीस सार्थ में वहा की मरोपासकर विद्यार्थी एव डा॰ सम्पूर्णानम्य की से पतकारिता की प्रेरका नेने वासे ८२ वर्षीय भी विश्वतः विशोद बी के निर्जीक सम्पादकीय लंखों का योग-बान है वही जी प्रमोद तथा श्री सुबोध इन बोनो भाइयों के सेवन तथा कुशस सबोजन को भी इसका श्रेव देशा होगा। थी प्रमोद प्रेस के हर काम के विदेवज्ञ वे। वेकम्पोक से तेकर स्पाई तक के कार्यमे पूरादसल रसते थे। सामयिक विवयो पर तत्काल सम्पादकीय शिक्तने में वे माहिर वे। श्रीमती इन्दिरा नाबी की हत्या पर उन्होंने को सम्पादकीय निकावा उसे पढकर मेरी शांखें खलक उठी थीं। प्रमोद बत्वन्त मिसनसार तथा मृदुमापी वे। सुके वे बपना बग्रज जानते वे सवा नर्देव बादर देते वे ।

सन्तायु वापलों के वानजूद सदेवा विनोद जी तथा जनने दोगों पुत्रों प्रमोंं क सुजीद ने दैनिक प्रमात का स्वत्र बनाये रहा । बाब प्रमात चरिएकी उत्तर प्रदेश के प्रमुख दैनिकों में निया जाता है। प्रमुख के बी पांज के दौरान एक प्रमुख स्वत्य बहु बाने के गिरब्य ही प्रमात को बहुरा धावात लगा है। धदेव विनोद जो का हृष्य धावात लगा है। धदेव विनोद जो का हृष्य धावात लगा है। धदेव विनोद जो का हृष्य धी पर हिंबी खुं ही हो चुका

#### वे सस्कारी थे

भी प्रमोव को प्रायसमान के सस्कार सपने सार्वसमानी पिता थी वि-स-विनोद का मातुष्टी भीमती सुविदा विनोद से प्राप्त हुए के 1 वे क्षणत है ही प्राप्त साम करें के सरकार है है प्राप्त हुए के 1 वे क्षणत है ही प्राप्त साम करें वे 1 उन्होंने सपने पिता थी विनोद भी को भोमा भी स्वापी तता के लिए पूर्वमालमों की मोशियां के सम्म कार्य तानने की कटना सुनी थी। इस बातावरक ने उन्हें कट्टर राष्ट्रप्रमत्त्र व वैविक कर्म का प्रमण्य प्रेमी बना दिया था।

श्री विनोब परन पीछे प्रशी हु। जा बेसी तीन पृतिका व एक पुत्र कोव पते हूं। ८२ वर्षीय भी विन्छ ने मिनोब पर पुत्र विनोत्त का बहु कब्पर्यस्य सामाश कमा हूं। इंग्लर चिन प्रनोब की सारना को सांति तथा रिवा भी विनोब की कमा बहुस भी सुनोब कुमार विनोब व परिनार को कहन समित प्रमान करें, वही प्राचेना है।

> — शिवकुमार बोबल पितसुवा (च॰प्र॰)



#### साहित्य समीचा-

नक्जाकरण के पूरोका दयानन्द सरस्वती

नेकर — डा॰ स्थानीनाल चारतीय प्रकासक — वैविक पुस्तकालय स्थानेर मृश्य ४० र० ।

डा॰ मवामीसास आरतीय द्वारा प्रस्तुत "नव बायरक् के पूरीका द्यानन्द सरस्यती' शीवक ग्रम्ब उनके मनोयोग एवं सवत अध्यवसाय का परिशास है। प्रस्तुत प्रन्य महर्षि दयानस्य के जीवन चरित के रूप ने हैं। जीवन चरित सिखने के लिए दो बातें अपेक्षित है-चरितनायक की विचार सर्वि का सम्मक प्रस्तती-करता तथा इस प्रस्तृतीकरता के प्रसन में सम्बन्धित एवं यथाय घटनाओं का सम्मिबेश । डा॰ भारतीय ने दोनी बाती का सम्यक निर्वाह किया है। प्रत इस प्रव के द्वारा महर्षि के जीवन चरित की बचाय चटनाम्रो का ही ज्ञान नहीं होता प्रपितु उनकी वह विचार सरिए भी स्पष्टता के साथ उभर कर बाती हैं जिसने वे बटनाए अनुस्यूत है। घटनामों के सन्तिवेश में डा॰ भारतीय की बच्टि तथ्यपरक रही है। बता उन्होने महर्षि के जीवन चरित में उन्हीं घटनाओं का सन्निवेश किया है जो इतिहास सम्मक्ष एव जमाचपुष्ट हैं। हा॰ भारतीय ने स्थान-स्थान पर इन प्रमास्त्री का निर्देश भी किया है। प्रमासपुष्टल के समाय से किंवद तीमात्र पर बाधित वटनामी का वीवन परिश्व से बहिमांव करने ने डा० भारतीय सकोव का धनुमव नहीं करते । विचारसर्रात को प्रस्तृत करने में हा

सारताय को श्रांट वस्तुपरक रही है।
यत न्होंने उत्यक्षम श्रद्धा का विशोध
किमा है निसके साधार पर नहींव का
स्वान्य गणी बनाशो से जोड दिया बया
है जो न वेचन इतिहास विश्वद हैं अधितु
जननी विचारसर्गि के भी प्रतिकृत है।
इसके श्रीवरिक्त इस सन्य से मह भी पता
बनाता है कि उस समस्य भारतवार से
सावारिक एव सर्विक विश्वदित क्या सी
स्वामार्थिक एव सर्वित क्या सी
स्वामार्थिक एव स्वामार्थिक एव
सर्वित करके सही
स्वामार्थिक एव

धन्य के लिए सामग्री जुटाने हेतु डा॰ वारतीय ने धनेक स्रोलो का उचयोग लिया है। इस सम्बन्ध में प० नेकरास स्वाय प० वेनेव्हनाय डारा पूर्व प्रस्तुत सामग्री ही पर्याच्य नहुँ थी। धल डा॰ नारखीं ने दक्के बाद प्राप्त होने दास्त्री सन्दर्भ सामग्री वा समायीजन किया है व पवाच्य परीक्षण के डाढ इसका स्वयने प्रस् से स्वयंत्री पित्रका है। इसने इस सम्बन्ध परिपूर्णवा एव प्रामाणिकता निस्त्रतिस्त्र है नई है। सा भारतीय इस प्रवास के किए निस्सन्देह सामुकार के पात्र है।

--- डा० ब्रह्मानस्य शर्मा

#### घरेलू उपयोगी बातें

- कण्ये नेत्रों को बरभी से बचाने के लिए उन्हें पानी से घर घटको पर एसों। केते एक सप्ताह तक भी कराब नहीं होंगे।
- हरी सल्बो को बिना घोथे बीले सकावारणे सपेटकर रक्त वें प्रक्रिक समय तक सुरक्तित रहेगी।
- इंड्ये कारियंक्त का यदि केवल प्राचा भाग ही प्रयोग में घा सका है नो बेच प्राचे भाग को उसी समय नमक जिले पानी में रक्त में काफी समय तक कराव नहीं होना।
- हरी मिथ को सुझाकर बोडे नमक के साथ कूट लें। वर्ष भर खराब नही होगी।
- नीवृको सुरक्षित रक्षने के लिए उन्हें काटकर नमक व हींग सनाकर घोटे से नीवृके रस में रक्ष दें। कभी कभी बूप दिकाले रहें नीवृक्षराव नहीं हींचे।
- मृती को विश्व अधिक समय एक एकोवा हो थीं उसे वसी से अध्यय न

- करें सूत्री सूखेगी नहीं।
- भागकाटकर सुझाल भीर समक क साव मिलाकः दःवे मे रक्ष दें। जालानहीं समेवा।
- यदि आपके नासून कड हैं भौर उन्हें काटने वे तकलीफ होती है तो हायो को एक दो मिनट तक पानी में मियोमें रसने के बाद काटिए। नासून प्रास्तानी से कट बार्सिंग।
- □ किसी स्थान पर लगी काई को छुडामा हो तो रात को उस स्थान पर चूना घोसकर डाल खें तथा सुबह कपडे स रवड कर साफ कर थें।
- जैन जैनी धौर टमान्र की च नो को प्रिक्त दिन सुरक्षित रखन के लिए उन्हें बोसली में मरने के बाद उन्पर मोम की एक परत जमाकर उनकन लगाद। इससे जैंम, जैंसी धादि एक वो सहीने तक धातामी से ये का सकते हैं।
- पिसी हुई सटाई को जासे और कोड़े से क्याने के लिए बॉडा सा पिसा हुआ नेक्क भिकाकर रक्कें।

#### समाचार-सन्देश

#### फांसीसी युवती की शुद्धि एवं विवाह

बायंस्याव धनमेर हारा ३० वर्रीया कांवियों तथा हाल में पुष्कर प्रवास पर वाहि हुँ मिस्र विश्वीय स्थानी हारा सेच्चा से प्रामेंना करने पर सुद्धि कर उसे मेरिक (हिन्दू) बम मे बीचित किया गया। स्थाने स्वय बताया कि वह भारतीय वैदिक सम ने प्राप्तीय वैदिक सम ने प्राप्तीय देविया प्रमाणित हुई है। शुद्धि के परमाद समाचित हुई है। शुद्धि के परमाद समाच कु० वीना रखा गया।

धुद्धि के परवाल् उसकी प्राथना तथा पारस्परिक सहमति ने ब्राबार पर पुष्कर के सोटस होटस में सेवारत की भावान बास वायम के साथ वैदिक रीति से

#### गुरुक्क महाविद्यालय तता-रपुर-गाजियाबाद (उ०प०) वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हापुड से ३ मील पूर्व गढ मार्ग पर स्वित ततारपुर गुक्कुल का वार्षिक मही-त्सव १६-१० मार्च तक बढी धूमकाम से सम्मन्त हुमा। यज्ञ एव विद्वानी के प्रव-बनो के प्रतिरिक्त ब्रह्मचारियों का व्या-याम प्रदर्शन वटा प्रमावशाली रहा । परोपकारियी समाके ब्रध्यक्ष भी स्वामी घोमानम्ब जी महाराज ने खेळ व नेवाबी छात्रो को पुरस्कृत कर ब्राशीर्वाद दिया एव सर्वेदेशिक प्रायंतीर दल के प्रवान सञ्चासक श्री वासदिवाकर जी हस ने बार्येदीरों को पुरस्कार देकर उद्बोधन दिया। प्राचार्यं धर्मपाल जी ने सभी को षम्यवाद ज्ञापन देकर गुरुकुत की सहाबता हैतु अपीम की तो प्राम के बार्य युवको ने **सम्भग** ४ हजार रुपये एव ५० विवन्टल बेहू नुष्कुल को दान मे दिया। उत्सव प्रभावणाली रहा।

वेवेन्द्रकुमार ग्रार्थ, सन्त्री

सार्वे कुमार परिवद् गुरुकुल म०वि० सतारपूर के निर्वाचित सदस्य

श्रम्बक ज्ञानेन्द्रकुमार वार्य सन्त्री देवेन्द्रकुमार प्रार्थ कोवाञ्यक नेकपाल प्रार्थ साकानायक सस्यपाल ग्रार्थ

वेषेन्द्रकुमार माय, मन्त्री

#### पुरोहित तथा सेवक की श्रावश्यकता

आर्थसमाय सफदर जग ऐनक्तेव के एक सुदोग्य विद्वान् पुरोहित तथा सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति शीझ सम्पर्क करें।

एच०एस० बेर प्रचान ए-२/-इ. सफदरबंग ऐन्नलेश नई दिल्ली-११००२१ पाणिबहुण (विव ह) सस्कार भी समाज मन्दिर से सम्पन्न हुमा। शुद्धि एव विवाह सस्कार भी भावार्य योविन्वसिंह ने सम्पन्न कराया।

इस धनसर पर धार्थसनाथ के मत्री श्री रासार्थिह ने धार्धा वेचन प्रदान करते हुए फार्थसी पुत्रती का बैरिक बग्ने में बीजित होने पर स्वाबत करते हुए प्रवृत्ति स्वानन्द एवं वैदिक बन्ने पर प्रदेशी जावा में प्रकाशित साहित्य मेंट किया गया।

> (रासासिष्क्) मन्त्री धार्यसमाज, शजमेर

#### त्रार्यसमाज की स्थापना

देरै नयस्य सन् ११-४ दिन रवि-वार को मान समीरपुर (तहसीस देवनन, जिला सहारनपुर) ने मार्वस्तान को स्था-पना, मार्वसिक्ष (जुरुपूर्व चर्चासिक् मार्य) परिवार सदस्य, पुरुषुत महाविकासय सन्तर्भ । ११ सदस्य समुद्र स्थानमा में मार्वस्ट हुए। निम्नास्तित महानुभाव प्रक्षि-कारी चुने स्थे।

> प्रवान—श्री बहानसिंह जी मन्त्री—फूल सिंह वी कोवाष्यस पुस्तकाव्यस

वाम जनीरपुर व निकटवर्षी के वो मे वैदिक दिखालों का प्रचार सवसन के प्रप्ताह तक कराने का धायांकन पुरुकुत्व की घोर से किया गया। प्रचार कार्य के महाध्यस मुक्तपिष्ठ जी का नचेत्र सह-योग प्राप्त हुसा।

> प्राचार्थ गुरुकुस महाविद्यासय ततारपुर गाजियासाद (उ०प्र०)

#### श्रार्यसमाज ततारपुर गाजियाबाद (उ०प्र०)

१६८५ चुना वर्ष घोषित होने वर सार्यसमाज का दायित्व बी बुबकों वर सोंग विया गया और सर्वेसम्मति से विक्रम प्रचिकारी निर्वाचित किये गये।

सम्पन्न-प्रतिपाणितः धार्वः प्रपायकः-महावीरसिंहः धार्वः सन्त्री:--डा० सोमवीरसिंहः धारवः उत्तर्वा:--डा० सोमवीरसिंहः धारवः सेवाम्याः--वयपालसिंहः सार्वः प्रवारमन्त्री--पुळपालसिंहः धार्वः नेवानिरीक्षक-प्रो० वेयपालसिंहासकर

एस०ए० (मन्त्री)डा० सोनगीर्या<del>ड</del>न

#### मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यह यज्ञाग्नि श्रसंड रहेगी



जानन्वर एव पत्राव के सुप्रसिद्ध योगी श्री बाबा मोहनदास जी महाराज ने अपने भी रचुनाम मन्दिर के प्रागसा में विशास तम्मरमर की १६ सम्भी वाली वज्ञणाला का सब्वाटन ग्रपने गुरुवर राजस्थान के नहान् सत धिरोमणि श्री स्वामी भरतदास वी बहाराज शताबुके कर कमलो द्वारा सामवेद पारायण यश के नौ विवसीय महान् यज्ञ के धान्याचान द्वारा दिलाक २२-३-८५ सर्गे प्रतिपदा को किसा। उव्चाटन यज्ञ तथा वेदापदेश आर्थ जगत के सुत्रसिद्ध वैदिक विद्वान् भी प० राजगुरु की धर्मा विद्यावाषस्पति के ब्रह्मत्व मे सुसम्पन्न हुमा । बाबा के सैकडो अद्वास् सिक्स एव हिन्दू परिवारों ने इस यज्ञ में माग सिया। निस्पप्रति रात्री को भी बाबा मोहनदास जी जो कि जाने माने शास्त्रीय संगातज्ञ एव अक्ति संबीत के रचैंबिता भी हैं, अपन मक्ति समीत एव उपवेश द्वारा नोगो को दुर्गुएगे के त्याय **९व ई**श्वर प्राप्ति हेतु योग एव मनित का अस्यन्त ही मार्मिक एवं समृत उपदेश भी करते थे।

यज्ञ की पूर्णाष्ट्रित का दृश्य श्रवि-स्मरणीय एव वर्षनीय था। समस्य वय-सान गीने कस्मो ने परिवार खदित उप-स्थित थे। ४ ४ ५० के विशास या क्षेत्र की वषकती हुई सपटो ने भी बादा सोहन वास भी ने यज्ञ की पूर्णाष्ट्रित प्रदान की।

भी बह्या जी ने यज्ञ प्रेमियों को युका-

कीर्वाट प्रवान कर की बाबा मोहनदासर्जी को यज्ञ की सफलता पर बचाई देते हुए अीफल एव १०१/= रुपये मेंट किये जिन्हें स्वीकार करते हुए बाबा की माव विभोर हो नए तथा अस्यन्त ही मामिक वृश्य उप-स्थित हो नमा। जब नावा भी की आंखों मे प्रेम के बासुओं की बारा वह निकसी ! श्री सर्माजी ने बादा स यज्ञ की दक्षिए। की याद विकार तथा कहा कि यदि मुक्ते यक्त की दक्तिग्रा में यह बचन दीचिए कि बाप इस यक्षकुष्ट की अस्मि कभी नहीं बुक्तने देंगे तथा नित्यप्रति यज्ञ करेंगे। बाबा का कठ प्रवश्य हो बया था। अस उन्होंने सवल नेत्रों से हाथ जोडकर तबास्तु मात्र कहा । यज्ञ महप वैदिक वर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय वेद भगवान् की जय, भारत माता की जय, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्त्र महाराज्य की बय, योगीराज कुष्मचन्द्र महाराज की बय घोष से बातावरम मानन्दित हो उठा। बायुर्वेदिक बडी-बूटियो एव पचनस्य द्वारा निर्मित सोमरस बस वेबी पर वितरित किया स्मा।

इस यह ने गुरुकुल करतारपुर के आचार्य भी नरेश भी, गुरुकुल के वेदपाठी और बहुम्पारी एवं आचार्य वर्गवीर भी पवारे थे।

बाता बी ने दूवरे दिन गुरुकुत करवारपूर में प्रधारकर कुरुकुत के समस्त ब्रह्मचारियो स्वा जुरुकुत परिवार को दूर्ण वस्त्र प्रवान किए, एक टीन वेशी चूच ब्रह्मचारियों के मोजन हेंदु तबा १ हवार सप्ते मेंट किये ।

हस वैशिक यज ने पजाव पायं प्रति-निवि समा के प्रधान भी बीरेन्द्र की, सहा नवी विहेन कसकाजी घायां एव कई सार्य-परिवार सिमिसित हुए। यज का सार्या-क्या पुत्रसिद्ध सार्व देवक टबी पहुन्देव वी निरास के सीक्षण से सम्ब हुया जो महभूत एवं प्रस्तकतीय सा।

कास भारतवर्ध के बन्ध महत एवं सामु महात्मा भी इस प्रकार कायोजन कर सकें। भी बाबा मोहनदास वी महा-राज का अनुसरण कर सकें।

सुवाददाता

#### श्राचार्य की श्रावश्यकता

कन्या पुरुकुष विद्यारा त० नारलील विकास महेन्द्रपट (इरियाणा) के विद्य मात्र निवास महेन्द्रपट (वरियाणा) के विद्य वोग्यलामुर्वेष विद्याल के निर्देश एक सुद्योग्य वाचार्य की धावस्वकदा है। धरानी बीज-विकास पर प्राप्त के प्रत्य कार्यक विकास मात्र के प्रत्य कार्यक विद्याल कर के निर्देश कर प्राप्त के प्रवाद की व्यवसा व्यवस्वकदा अन्यक करें। व० १०० वाचिक दिवास के धार्तिरक भीवन, धावस की व्यवसा व्यवस्व विद्याल की व्यवसा विवस्त विवस्त व्यवसा विवस्त विवस्त विवस्त व्यवसा विवस्त विवस व्यवस्त विवस्त व्यवस्त विवस्त व्यवस्त विवस्त व्यवस्त विवस्त विव

#### शोक प्रस्ताव विनाक ७-४-५६ रविवार को

विनाक ७-४-६६ रविनार को सार्थयमान बल्लापुरा नारावाची के सार्याहिक सविनेयन में भी नेवानान जो का स्वस्थान में भी नेवानान जो का स्वस्थान में भी नेवानान जो का स्वस्थान में सार्थ जनत् के युवा विज्ञान, सक्त विनाव रवण्यम स्मावकोत्तर महा-विज्ञानम्, स्वोठी के प्राच्यानक ने की जनवलकुमार जारते के पुरुष पिता की सर्वान पारित हुमा, ईपर से प्राचेना की नई कि विनयन सारमा को सामित तथा स्वोक सन्तरम परिवार को पैर्य प्रवान करें। मुख्येन सार्थ(व्यवस्थाक)-स्वानेस्वाध सल्यास्तर, सरस्वान

**लिपयाना** में त्रार्ययुवक

सभा की स्थापना

बार्यसमाच बग्न नगर लुचिवाना थे

बान एक विशेष कार्यक्रम बायोजित

किया यवा जिसमें यज्ञ के पश्चात् वेद

प्रचार भवन मण्डली ने प्रमुभनित एक

देखभक्ति के गीवो द्वारा खार्यंचनो की

मनत्र-मुख्य कर दिया । इसके पश्चात् सार्य

पुषक सभा पवाब ने सबोजक श्री रोशन

लास धर्मा ने विज्ञान सौर धर्म के सम्बन्ध

में बोसते हुए बताया कि विज्ञान और वर्स

में कोई बिरोध नहीं है बल्कि वे एक दूसरे

के पुरक हैं। उन्होंने कहा कि बाज के नव-

यवक भौतिक ऐक्वयों में भटक रहे हैं।

जिससे उनकी बार्मिक, राष्ट्र एवं समाज

वेवा के कार्यों में वर्षि कम होती जा रही

है। भी सर्गा जी ने यूवकों से अनुरोक्ष

किया कि वे रचनात्मक कार्यों में अधिक

से प्रविक समय सवाए।

#### सत्य क्वा है ? (पुष्ठ २ का खेव)

प्रमात." वहां वह भी तो कहता है कि श्वास्त्रम् विद्यम् नापि गरी नवति किरियमी ' सर्वात किसी के पुस्ते पर क्सका उत्तर न देने वाला और या उसटी बाह्य बोजने वासा मनुष्य पाप का मानी हीता है। ती क्या ऐसे मौके पर दीनों थापी से बचने के लिए अपने प्रास्ती की र्शकट में बालकर यूद करने के किए तैयार श्री बाए।

पुराक्ष में एक कवा वाती है विसमे एक सत्यवादी सुनि हारिद्रुत गीतम के

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

लींग युक्त

23 जड़ी बुटियों से निर्मित

आयर्वेदिक औरब्धि

टातें का शक्टर

वर में कुछ बाकृ एक बर्मात्या पुक्त का पीसा करते हुए बाते हैं। सत्ववादी जुनि को मासूय है कि बहु वर्यात्मा जवल की किस साड़ी में खिपा है। डाक्ती के पूछने पर पहले तो वह मूनि मौन भारता करके राष्ट्रभो को नहीं बताता पर राष्ट्रभों के उसकी प्रश्रमा करने पर कि श्राप तो सवा सत्य बोसते हैं सत्य को कभी नही फिपाते तो वह सत्यवादी प्रश्नसा में पूमकर उसके श्चिपने का पता बता देता है। परिचाम स्वरूप ने डाकू उसे पकडकर मार देते हैं। पुरासा वे विश्वा है कि इसी पाप के कारख उस सत्यवादी मृति को कुछ समय नरक मे रहना पदा।

बास्तव ने सरव घीर धतस्य की पह-थान करना, सामारख काम नहीं है। बहुत टेडी सीर है। सोकमान्य बास बमा-वर तिसक ने अपने अपूर्व ग्रम्थ नीता-रहस्य' में इसका वड विस्तार से विवेचन किया है। इसमे करा जी अल्युक्ति नही है कि नास्ति सत्यसमी वर्म न सत्वा-ब्रिषते परम् । नहि सीवतर किंपिबन्ता

'साच बरोबर सप नहीं ऋठ बरोबर पाप

तुलसी का यह वचन सोलह धाने सत्य है कि धरम का रास्ता मुश्किल छुरी की तेज बारा है। 'जिस प्रकार सीने के कोटे या चरे की जाच करना कठिन है। कसौटी पत्यर ही उसकी बाब कर सकता है। वैसे ही वेदादि सत्य प्रयो का प्रध्ययन तथा जून बारला बनाने पर ही इस दुरुह कार्य को बासान करने ने बहु सहायक हो सकती है। इसीसिए गायत्री मन्त्र मे बुद्धि के लिए याचना की यई है।

H ३११ न्यू राजेन्द्र नगर

#### विष्ठ विषये ॥ '

नगर आर्यसमाज साहबगज की साबारण समा की बैठक श्री देवीलाल बार्य प्रचान की बध्वशता मे नियाबाचार स्थित रमेश प्रसाद बृप्त की दुकान पर वार्षिक निर्वाचन हेतु सम्बन्न हुई विसर्ने निम्नतिकत पदाविकारी एव बन्तरव

(निम्त्रसिखित प्रवाधिकारियों के नाम)

- उपप्रचान
- ,, भगवान देवी मामा
- रमेश प्रसाद ब्प्त
- " हरिदार प्रसाद मबर

## सबीर भाटिया

- उपसमीजक, बार्यमुक्क समा प्रवाद १० श्री मधोदानन्द केशरवानी कोषाध्यक्ष
- ११ नन्दरानी गोयल सञ्चा०कोषाध्यक्ष १२ शुवारवती बार्वा (प्रचारमध्त्री)
- १३ ,, ठाकुर देवी
- १४ विकायती सार्घा (यज्ञकासा-व्यवस्थापक)
- १४ ,, पारसनाव गुप्त (पुस्तकाच्यक्ष) १६ , बन्दरजीत वरनवास (बाय व्यय
- निरीक्षक ) १७ बादित्य प्रसाद भी (प्रतिनिधि न्याय समा)
- १८ , ब्लवस्ती भार्या
- १६ , चम्पादेवी बार्या २०, ए० द्विजराज शर्माणी
- (बमधिकारी एव पुरोहित) इसके प्रतिरिक्त घन्तरन समा के लिए ग्यारह व्यक्तियों का गठन किया

निवेदक रमेश प्रसाद बृप्त (सहासम्बी) नवर वार्यसवाय गोरखपुर



ब्रा.पैन्टी, बनियान अन्डर वियर व बेबी पेन्टी 🕮

#### इस सुधवसर पर शायनुवक सभा की इकाई का गठन किया गया तथा श्री विकासी ६० यश जी धार्य को इसका संबोधक बनाया नवा तथा उन्हें अभिकार दिए वए कि निर्वोचन मम्पन्न युवको को समा के सदस्य बनायें तथा सगठन को मजबत करें। यार्यनमास धय नगर के प्रधान भी कपिला जी ने देव प्रचार भवन सन्दली तथा सार्वन्ययुक्तों को उनके कार्यक्रमों के सिए बचाई दी तजा समाख की कीर से १०० र० मजन मण्डली को इनाम दिया। सभी आर्थ बाइयो तचा शहनो को भी सत्यवास जी अञ्चल, मन्त्री की और से यज्ञशेष जित-रित किया नया । जयबोच एव शान्तिपाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई। (महामन्त्री) (च रमबी)

मार्थ नगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(बनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल स्रोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्राय हर ग्रिषिनियम जी ० ८० के ग्रतगैत कर मुक्त होगी।

सारा शन चैक/ननीमार्थर/वक कृष्ट द्वारा मन्नी, माता चन्ननदेवी प्राय धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिख्ली-४८ के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की झिला पर अकित किए जाएगे।

#### निवेदक

राक्योपाल सालवाले पुत्रवेष गहासव वगपाल स्रोतप्रकास साथ संरक्षक विकित्सालय प्रवास विकती प्रयोग सन्ती एवं प्रवास साथकार साथ प्रतिनिधि साथ केन्द्रीय गहासव कुलीसाल प्रतिरु हका साथ स्वास स्वास स्वास क्रिका

त्रोबाय से महासियों दो हुट्टी प्रा० सिमिटेड १/४४ कीतिनगर, सीसोचिक स्रोत, नई दिल्ली-११००१

## केवल ५० रूपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पद्धते रहिए

- क्या ग्राप ऋषि मुनि तपस्वी, वोगिवों को श्रमृत बार्गी प्रकार बाहते हैं?
- क्या चाप बेद के पविस्न शान को सरल एवं मधुर सक्दों में जानका बाहते हैं?
- क्या भाग उपनिषद गोता रामायण बाह्यसम्बन्ध का आध्वारिमक सन्देश स्वय सुनना भीर भपने परिवार को सुनाना बाहते हैं?
- क्या प्राप प्रपने सूरवीर एक महापुरुचों की सीर्थ गावाएँ जानना वाहेवे?
- क्या भ्राप महिंच दयानन्द की बैचारिक क्रान्ति से भ्रारमचैतक बाग्रुत करना चाहते हैं ?

यदि ही तो बाइये मार्यसम्बद्ध परिवार में सामिल हो बाइए। केवल ४० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पस्ते रहिए। साथ ही वर्ष में चार सनुपर मध्य विवेधाक की प्राप्त कीजिए।

एक वष केवल २० रुपये आबीवन १०० रुपये।

प्राप्ति स्वान---

**आर्येसन्देश साप्ताहिक** १५ हनुमान रोक नई विल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

सासा कार्यासय—६३, यसी राजा केदारनास, फोन 1 २६८८३८ वासार, विल्ली-६





सर्देश एक प्रति ४० पैसे

वर्ष देशक २४

रविवार, ४ सई, १८८४

धार्वे सक्तार १३६०६१३०६१

वैशास २०४२

दबामन्दाले 🖘 ६३

# आर्यसमाज दोवानहाल का शताब्दो समारो

वेद-प्रचार, ग्राम-प्रचार (ग्रामोत्थान) तथा गौ-संवर्धन एवं मन्दिर निर्माण के लिए

## इक्कोस लाख रुपये की अपील

ग्रार्यसमाज दीवान हाल की कतरण समा ने निश्चय किया है कि भागामी दिसम्बर १६८५ मे नार्व समाज की जतास्त्री सनाई जाये।

वेद प्रचार, प्राम प्रचार प्रामी-त्थान तथा गो सवर्षन केन्द्र की सहा यता के लिए १ लाव रुपये की तीन स्थिरनिधिया स्वापित की जाए।

इस अवसर पर एक विशाल-समारोह का बायोजन किया आयेगा।

धार्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने एक घोषणा मे कहा-शताब्दी स्मारोह की तैयारी जोर शोर से प्रारम्भ हो चुकी है। इस भवसर पर कुछ भन्य योजनाए इस प्रकार हैं।

- 🛘 मार्यसमाज दीवान हाल के विगत एक सौ वर्ष का इतिहास प्रकाशन
- नैतिक शिक्षा के लिए विद्यालयो मे विशेष प्रचार योजना
- सामाजिक क्रीति दहेज उन्मूलन यवको एव युवतियो से मादक

द्रव्यों के बढते हुए प्रयोग के साहित्य प्रचार से रोकना

 वैदिक पार्ष साहित्य प्रकाशन इस समाज तथा राष्ट्रहिन के पुनीन कार्य के साफल्य के लिए श्री गुप्त जी ने प्रार्थ भद्र पृष्वो से तन मन चन में सहयोग करने की भी प्रापील की है।

## दक्षिण अफ्रोका नैटाल में

१४, १४, १६ दिसम्बर १६८४ को आर्यं सम्मेलन की तैयारी

दिल्ली सार्वदेशिक मार्थं प्रति-निधि समा के कार्यालय से प्रसारित एक सूचना के अनुसार दिनाक १४ से १६ दिसम्बर १८=५ को नैटाल दक्षिए। श्रमीका मे अन्तर्राष्ट्रीय सार्य महासम्मेलन की घोषणा की गई है। इस् प्रकार पर वैदिक सार्वजीम एव गोष्ठियो का प्रायोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त

बिश्व के विभिन्न देशों में रहने वाले हिन्दुको के साथ सास्कृतिक एव धार्मिक सम्बन्धों को प्रगाद करने की योजनामी पर वहा विचार किया जायेगा । सार्वदेशिक समा इस धायोजन मे धपना निशेष सहयोग देकर विश्व के भायों के सम्मूल एक ता के महान विद्वानों के विचार ठोस सक्रिय एवं ब्यावहारिक योजना रखेगी।

#### राष्ट निर्माण में आयंसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान -श्री शालवाले

विक्षाम् दिल्ली वेदप्रचार मण्डल का वाधिकारसर्वे आर्यसमाज बार० के॰ पूरम संकटर ३ में सम्पन्न हुआ। पुष अवसर पर ला० रामगोपाल बालवाले, भी ब्रह्मदत्त स्नातक, मी सूर्वदेव, झावार्व देवेस, श्री नौ प्रियक्त जाचार्य मनुदेव सास्त्री बादि बार्व मेता एवं विद्वार्गी ने बत-मान सम्बन्धि बार्यसमाज के वासित्व पर प्रकृति काला । वह माला राम-

गोपाल सालवाले ने कहा -राष्ट्र के निर्माण में सदा से बायसमाज का महत्त्वपूर्णं बोगदान रहा है। चाहे वह स्वतन्त्रता समाम हो, अथवा दलिनोबार नारी उत्थान. या समाज सुधार। भाजःभी राष्ट्रीय एकता व ग्रह्मकता की रखा के लिए धार्य-समाज पूरी बनित के साथ जुटा हुमा है। कार्यक्रम के परवात् प्रीतिभीव का धार्यात्रनं किया गया ।

#### नये सवेरे की तलाश

धाका भी नया सवेरा नव जीवन देगा खड वेतन तब के मन का ग्रपनापन देना। भूडे पेटी को रोटी के दो टूक ग्रार नने सनाच तन को दो हाथ कफन देगा।

> पर भाशा के विपरीत मीत ये प्रात हुआ। मों के सीने पर चावला वज्रपात हुआ । चरतीकी दिल्य विमूनि गुन्य में सीन हुई दुर्भाव देश की माशा पर मामाल हुआ।

इन्सान दरिन्दी के हाथी मारा जाये रूपाण पारणा क हाण गारी आय इतने पर भी हिंछा का पुत्रकारा जाय । डिंडाबीक्स्ड जयानक ये उचियारा है को द्वारद्वार ग्रांचियारों के द्वारा जाथ ।

> कैसा है यह सकम्प धरे । कैसा प्रज है ? मा मून गरीचिका सा मिच्या ग्राकवरा है। क्षता की श्लीना ऋपटी में ये हत्याएँ सब महाकास के ताय्य को धामन्त्रहा है।

सीमाधी पर सका के गदन महराते काले विश्वार अपने वर में आते जाते। हिंसा प्रतिहिंसा दुष्टबाद उद्दण्डवाद बदते बाते विद्यासपात शातकवाद,

भवजीत सम्मताएँ निर्वेत्त्र स्वाती हैं चनते चनते बूढी ऋतुएँ वक जाती हैं। ऐसा बीकत्त विनास वेसकर परती पर ऐसा बीमत्स विनास देखकर घरती पर सूरव की किरजें साने में सकुवाती हैं।

वृद्धि अधकार से बचना है तो-याद रखी, जानक झानक के सच्य न नेद विवाद रखी। इस क्लिक्सों की स्रोतन में न बनपने दो, सवाद्यों में निर्माणों का प्रमुवाद रसी ।

> - कवि ज्याता बी-- ११ जवनपुरा विल्ली-

#### सत्संग वाटिका

व्याक्या यह मन्त्र महर्षि स्वामी दयानन्द ने सन्ध्या म पुन जोडा है। उपस्थान का सर्वप्रथम मनत्र संस्कार-विधि में उन्होंने इसे ही बनाया है। वास्तव में इस मन्त्र को छोडने से सन्ध्या भपूर्णं हो रह बाती।

इस मे प्रथम ईरवर को जातवेदस् भीर भन्त में भन्ति से सम्बोधित किया है। तीसरे मन्त्र मे पुन 'जातवेदस् ब्राया है-"उदु स्य जातवेदस देव वहन्ति केतव । दशे विश्वाय सूर्यम् । सन्त्र से श्रीमा शब्द का प्रयोग मनसा परिक्रमा के प्रवास सन्त्र से प्राचितिक स्वित् स्वरित-तथा उपस्थान के दूसरे मन्द्रम भी चित्र न्वानः मुदयदनीक च वृक्तित्रस्य वरुणस्याग्ने । यन्त्र म -

जातवदम - का धर्म हमा जाते जाते वेद जातवेदः यानी जा उत्पन्न मात्र वस्तुको जाननाहा। सब मे वनमान प्रनम्त ज्ञान और धनन्त धन वालातवावेद वाएग जिसे भनी प्रकार म बताती है। इत्यादि सनेक सब 'जात वेदस के बनते हैं।

जब हम देवर को सर्वत्र क्यापक सन कुछ जानने वासा भीर हुन पर नवर रखने वाला जान लेते हैं तो हम सब पाप एव बुराध्यो से बनकर पूर्ण विश्विन्त हो बाते हैं।

जैसाहम देखते हैं सन्त्याके धन्य मन्त्रों में भी यही भाव प्रवानता से अवस्त क्या गया है। जैने---

गन्नो देवीरभिष्टये बापो भवन्तु पीतये। श्रयोरिभ अवन्तुनः। मन्त्रका पाठ सस्कारविधि की सन्दर्भ मे चार बार हमा है। इस मे भी ईव्वर हो सर्व-व्यापक बताया है।

पुन स बहा पुनातु सर्वत्र मे भी र्डव्यर को साकाश्चयत् सर्वत्र व्यापक माना है।

पुन धवमर्पण मन्त्र मे तो ईववर की सृष्टि रचनाका विकान, सब को बध में नियम में रखने की बातें बादि तो हैं ही उन के कार्य पूर्ण शास्त्रत एव अटि बहित होते ही हैं। मादि।

पून मनबा परिक्रमाने की सही दिशाबी में ईश्वर की व्यापकता को खनू-भव िया नवाहै। हर धीर उन के शामध्ये बोषक विश्वित्व नाम आये ही हैं। विष्युका धर्व ही सर्वत्र व्यापंत्र र्दश्वर है ही। उपस्थान के दूखरे, झीसरे भीर चीचे मन्त्र में हम 'सूर्व' नास के परमेश्वर को द्वारामते हैं। सूर्व वानि परापर का कृत्या पश्चेक्कर । तय की

## वेद में परमेश्वर को सर्वस्व समर्पण रहस्य

#### विन्देश्वरी सिह

जानवेदमे सुनवाम सोमम् श्ररातीयतो निदहाति वेद । स न पर्षदिति दुर्गाणि विश्वा नावेव मिन्धूम दुरितात्यग्नि ॥

धासस्कारी, पूर्व निद्याप, बन ही नियम में रक्षते वाका आरश्म का भी सकते है। माधी।

बन्तिय मन्त्र — 'वज्यक्षूबेंबहित पुरम्ताच्युक्रमुज्यस्त् । पश्येम में भी परमेश्वर को सर्वडक चेतव (बस्रा) तया मुच्टिके पूर्व, कश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से विश्वमान रहने वासा (पुरस्तात) सब का करने वाचा (उच्चरत्) के रूप में स्मरशा किया गया है। तथा प्रसिद्ध गायत्री मन्द्र एवस् ब्रोस् न म मे तो परमेश्वर को सर्वत व्यापक सुष्टिकर्तादि माना ही है।

बब ईश्वर को अपनी एक-एक वेध्या को वानने बाला समझ गए तो फिर हम पाप करने की कलाना भी कैसे कर सकते हैं<sup>?</sup> फिर सब बुराइयो से बचकर हम सम्पूर्ण पञ्चाश्यों से युक्त हो काते हैं।

नद में सन्धन भी ईस्वर की सर्व-व्यापकताका उपवेश प्रकुर नामाने किया नया है। प्रसिद्ध ईशाबान्बोपनिवर् चो किय बुर्वेद का ही च लीस**वर अध्याय** है, का प्रथम मन्त्र ईश्वर की सर्वश्याप-कताकी घोषणा करता है। इसावा-स्वमिव सर्वम् यतिकञ्च अवत्या अवत्। तेन त्यक्तेन गुरुक्षीया मानुष क-य स्विद्धतम्। वे नी इस ससार वे जो कुछ भी जगत् है सम परनेश्वर से माज्छादित है, का ही वर्णन है। यत यहा परनेश्वर त्यान पूर्वक भोगी की भोनने का उपवेख वे रहे है। किसी की भी वस्तु मात्र की बरामी इच्छा (अध्यम) बत कर, का विव्य सबेश दे रहे हैं।

इसी प्रकार से "स पर्यंगाञ्छक्रम कायम् " " "परीस्य भूतानि परीत्य लोकान्, परीत्य सर्वा प्रदिको

'तद् विष्कृते परम पद सदा प वन्ति सरवः

'त नो बम्धुर्जनिता, सः विद्याता, जामानि वेद भूवनानि विश्वा

इत्यादि बैकडो मन्त्रों में परमेश्वर की व्यापकता का उपदेश है।"

इस प्रकार धन्ना आन, जनना वन, सनन्त सामक्ष्यं केव के क्षारा कृषित वरवे-स्वयं जो अञ्चलिस हमान्य सुत्र करने, रक्षा करने में पूर्ण समर्थ है, को सर्वत्र गोपूर कानकर हम विजंब, निरक्क, मार्ग में सफलता की कुञ्जी यही है। साथ ही योग दर्शन के साथववाद में प्रथम सूत्र में ही--तप स्वाध्यायेक्बर-प्रशिवानानि किमाबीकः ॥१॥ में सर्वस्य सप्रेम ईएवराएँच करने को क्रिया ने निमा है। तथा इसरे सूत्र में इस का उहेश्य-"समाधिजाननार्यं क्लेशतनकरका-बंध्य" भरा।

इस के सम्बद्ध बनुष्ठान वे समाचि-सिद्धि करता है और श्रविधादि पांची क्लेशोको उत्तरोत्तर सुक्त करता बसमा है।

शासक्ति लोश योह म्रोक ईंघ्या-द्वेष, विषय तृष्णादि बुराइयो से वह बचता जाता है। परमेश्वर की धरीय क्रमा से वह व्यवहार और परमार्थ में भी पूर्ण समर्थ हो जाता है। ईश्वर की इपा भीर सहाय से ज्या नहीं हो सकता ?

इते नियम ने भी चिना है बिस का फल बर्गुडि क्षत और ज्ञान दीप्ति बकाया है। इस से बोग के विच्नादि औ दूर होते हैं।

बत पूर्ण प्रेम मावना से सर्वस्य ईश्वरापंज करने का विका सदेश बहाँ है। विस से ईश्वर हम पर इत्या करके हमें मोक्स समावे । जैसाकि यज्० ४०। मन्त्र "बोश्म् हिरण्यमयेन पानेश सत्य-स्वापिद्वित मुक्तम् । मोऽसावादित्ये पुरुष सोऽसायहम् । सो३म् व प्रह्मा ।" ने जी परमेश्वर को सर्वत्र व्यापकादि माना है। इस के मानार्थ में देव दवानन्य की निसते हैं "वो मेरी शरण को शीख और सत्यावरण के भावों से प्राप्त होता है, तो मैं क्य की शन्तवंत्री क्य के व्यविद्या को क्ट करके उस की आत्मा को प्रका-बित करके उस के गुसु कर्म-न्त्रमान शुच बनाकर, सस्य के स्वक्य का साचरख स्वापित कर बोक्च शुद्ध निशान देकेंद्रै सब पुत्रों से जुसकर नोस सुस की प्रवान करता हू ।''

"बरातीयतो तम के बाद विदहाति वेद " भाग बाला 🕻 । विस में देवपर से "बराती पूजा, पापी दुराचारियों के वन ऐश्वयंत्रि के निस्य बहुन की प्रार्थना है। जिस से सह इनारा पुत्र भी नुकसाय व कर केर्ने वह हमेशा हमारे बाबीन रहें।" कार्य की ब्रार्थना है। यही बाब बनसा परिक्रमा के सहीं जन्त्रों में हर बार सामा है। 'रश्चित्रम्यो नम इबुध्यो नम एम्बोऽस्तु। बोडस्मान् हेप्टि य वय हिप्मस्त को बुक्से कम 1" का सर्व करते हुए ऋषिवर देव दवानम्य सिखते हैं-- को परमेस्वर के सर्वधिकारवादि युक्त एवम् इत के रवे हए बदावें हुमारी रक्षा करने वासे और क्रिक्स को बाजों के समान पीकृत केने बासे हैं, जन को हजास वगस्कार ही। बांड्य के हेक करते हैं और विश्व कुछ वारियों वे इब देव अपने हैं कई विश्रोध के तथा से मुद्दे के अव्याग कक करते हैं। क्रांदि ।

(Be Lee 7 42)

उसी परमेक्बर को हम 'सुनवाब सीमम् जितने प्रपत्ने सर्वोत्तम पदार्थ है, वह सभी सर्मायत कर देते हैं। परमेक्बर के लिए ही सर्वस्य क्षमपेण करने की वैक

समाह इस मश्त्र में है। बबुवेंद के ही 'धार्बुबजेद करूप-ताम् योतम् वज्ञेन कल्पताम्, वाक् वज्ञेन कल्पतान्, नवी कान कल्पतान् बारवा वज्ञेन कराताम् यज्ञो वज्ञन कल्पताम्, स्वर देवागम्म प्रजापते प्रजासमूम\*\*\*\* इत्यादि मन्त्रों में तथा बेद में बान्यस भी ईश्वर के लिए सर्वस्य समर्पेश की

जब सब चीव हम परनेश्वर के निए (संवर्षण) (ईश्वर प्रणियान) प्राण् बारमा श्रीर मन के प्रेम माब से बारमादि सरपड़की का कर देते हैं तब हम जिल्ला मुक्त होकर फलाखनित से रहित होकर कमें की व वे उत्तरते हैं।

नेक सबाह दी गई है।

बजुर्वेद के चालीसमें प्रच्याय-ईसाबास्बोपनिषद्) के तूसरे बन्त्र में भी "कुर्वलेवेह कर्माण विजी-विवेत् कृत समा । एव त्वयि नान्यवेतो-ऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।" मे मी "प्रनासक्ति भाव से करने योग्य कर्म को करते हुए ही हम कर्मासक्ति (बन्यन ते मुक्त रह सकते हैं।" यही बताया है।

फिर हमे बसफसता कभी दुसी कर ही वही तक्ती है।

बोगदर्शन मे भी बाया है-- "समावि-विद्विशेशकरप्रसिधानात्। " सब चीन ईक्बर को प्रयंश करने पर हम समाधि को प्रयता से बिड कर ही लडे है।

'ग्रम्यासर्वेशस्या तन्नि-रोश ।" विन को इकाइ करने वें सम्बाह धीर वैराश्य प्रतस सामन कहे हैं। धारमास में भी हम बिना वैरान्त के कैसे सम सकते हैं। यस बीव ग्रावन वें करपास एवं बोस के नावें में वैशाय ही एकनाम प्रवस्ताम साथन होता है।

क्योंक क्षेत्रम् (कार्ज़ाः, व्यान ग्रीर सवापि) निर्मीत समापि तम विद्रियंत हा है। यर वैच्छार ही बस का क्रमार्थ tige drimten mich femile melter set gemente set site

#### ŧ

#### 🖈 वचन-सन्देश 🗼

#### आर्य कौन हैं ?

जो शान्त वेर को उजागर नही करता, गर्ब नही करता, हीन भावना से प्रसित नही होता, मैं सकट मे हू, ऐसा सोचकर भ्रमुचित कार्य नहो करता, श्रेष्ठ भ्राचरण वाला ही भ्रायं कह-स्नाता है। 'महाभारत

#### सत्पुरुषो की वाणी

सस्पुरुपो की उत्तम वास्तो दूसरो को जगाने के लिए,सस्या-सस्य के बिवेक के लिए, लोक कल्यासा के लिए, जगत् म शान्ति के लिए भीर जीवन मे वास्तविक तत्त्व के उपदेश के लिए प्रवृत्त हुमा करती है। "जानासँव"

#### बडे आदमी

ससार को ऐसे व्यक्तियों की ब्रावश्यकना है, जो धन के लिए अपनी श्रात्मा का घृिएत सौदा नहीं करते जिनके रोम-रोम में ईमानदारी हो जो सत्य प्रकट करने में बड़ी से बड़ी शक्ति के सामने नहीं अफ़रते, कठिन कार्यों को देलकर हिचकते नहीं जो अपने नाम का ढिढ़ीरा न पीटकर साहसी कार्य करते जाते हैं। मेरी हिन्द में बही बड़े धादमी है। — स्वेट मार्डन

जिसने अपने स्वरूप को नही जान लिया है वह परमात्मा को नही जान सकता। इसलिए परमपुरुष परमात्मा को जानने के लिए पहले अपने को ही निश्चय पूर्वक जानना चाहिए।

' जानागांव

सम्पादकीय

## आरक्षण विरोधी आन्दोलन में जलता गुजरात

अुषरात से दिन प्रतिदिन घारक्षण विरोधी घान्दोलन हिसक होता जा रहा है। गुजरात सरकार ने जब कि मितिरिस्त घारक्षण के निर्शंख पर धमल रोक दिया है भीर हाईकोर्ट ने खात्रों को घपना घान्दोलन समाप्त कर देने के लिए कहा है। इस घान्दोलन ने पहले साम्प्रदायिक मोड लिया तो घब जाति युद्ध ने परिवर्तित होना जा रहा है। हिसा की माग फलती जा रही है भीर मानवता कराह रही है। हिसा की खम्प्रदाय के नाम पर हो या जाति के नाम पर उसे उचित नही ठह रावा जा सकता। झान्दोलनकारियों का कहना है, 'यह मान्दोलन योग्यताबाद भीर कुशलता प्राप्त करने के बिषकार की रक्षा के लिए झान्तिम लडाई है। उनके झनुचार घारक्षण से सामाजिक भीर शंध-एक तौर पर पिख्ड वर्गों का क्यर उठाने और उन्हें मध्यम वर्ग की मुख्यादार क साथ एकाकार करने का सिद्धान्त बेत्का है।

वास्तांवकता ता मह ह कि पोप्यता बीर कुछलता की न कोई लाति होती है भीर न कोई सम्प्रवाय । धारखरण की यह लवाई एक लम्बे प्रत्ये हैं । फरवरी, मार्च, १८८२ को बी गुजराति छात्रों के वल रहा है । फरवरी, मार्च, १८८२ को बी गुजराति छात्रों के ।वले दिसाने में माफ्रोध उमरा था। तब गुजरात के जाद में किकल कालेवा में ३३०० छात्र पढते थे। एन० बी० बी० एस० में अनुसूचित बाति धीर अनुसूचल जनजाति के लिए २४ प्रतिचात स्थान आराक्षत थें ।१८७५ में करी फारवड पढ़िन लागू की गयी। स्नात-कोत्तर कवाभों में चप्त विकल्पा, प्रवृति नेवमान, रेदियोलीची धीर पवालोजी विभाग में ६५ स्वान में, प्रतिक्षत मार्चित धीर पवालोजी विभाग में ६५ स्वान में, प्रतिक्षत के जाय १० प्रतिचात पर द्वाला वर्ष से। मार्चित स्थानों पर ५५ प्रतिचात पर द्वाला वरे का प्रावचान किया। इसका परिणाग यह हुधा कि पैची-लोजी और रेडियोलोजी को ६० सीटो पर मार्चित स्वान प्राप्त छात्रों का कव्या हो गया भीर वत प्रतिचात स्थान मार्चितों के हो गये।

क्कानों ने इस मोर सरकार का ब्यान बाकुट्ट किया और इसके बाद करी फारवर्ड पढ़ीत वापिस ले लो गयो। लेकिन खान उच्च डियो में याग्यता सावस्यक का नाग को लेकर सड रहे।

गुषरात की जनमध्या पौने तीन करोड है जिनमें २८ लाल ४० हजार हारजन, ३६ लाज जनवासा है। खोटे प्रामी से बसे हरिजन २२ प्रतिशत खेनों के काम में जुड हैं। महानगर और नगरों में ३ लाख ४० हजार हरिजनों से से कुछ मारआए। प्यतिक का लाख ठठा पासे हैं।

१६८१ में गुजरात सरकार द्वारा नियुक्त बक्शी आयोग की रपट के भतर्गत ४२ पिछडी जातियों के लिए ४ प्रतिशत भारक्षण स्वीकार किया था। इसके बाद फिर धान्दोलन चला भीर हिसा होतो रही। छात्र नैतिकता को छोड उद्दण्ड होते रहे। छात्रो के बग ने माग की. सभी छात्रों को परीक्षामों में उत्तीर्ण किया जाये। विश्वविद्यालय ने परीक्तान लेने की माग स्वीकार कर ली। बाद मे उच्च न्टायालय मे मामला दायर किया गया । न्यायालय ने प्राने निर्हाय मे बिना परीक्षा उत्तीर्ण करने की कडी झालीचना का। इसके बाद सरकार ने नया भायोग जिसमे न्यायमूर्ति श्री राण के भलावा तीन मदस्य और थे नियुक्त निया। इस मायोग को सिफारिश पर गुजरात सरकार ने उच्च शिक्षा के सभी स्तरो पर धारक्षण की सीटो में ४६ प्रनिशत बढोत्तरी का निर्णय ले लिया। इसी कारण फिर ग्राम क न्ही। एक के बाद एक अनेक मोड इस झान्दोलन मे बाते रहे हिसा का नगा नाच चलता रहा। इसी बीच पुलिस भी निरकुश हुई। कुछ ग्रसामाजिक तत्त्वी की भी खुला खेलने का भवसर मिला कानून व्यवस्था के परखचे उडते रहे। छात्रो का उद्दण्ड होना और राज्य मरकार का उपेक्षित व्यवहार दोनो ही निदनीय हैं। बादोलन से समस्या का हल तो नही निकत सकता किन्तु हमारे गष्ट्र के कर्मधारों को बुद्धिजीवियों के विचार इस विषय मे लेने चाहिए। इस विषय को वैचारिक बहम का विषय तो बनाया जाना चाहिए किन्तु भान्दोलन भौर हिंसाका नही। महादेवी वर्माने दु सी होकर कहा है ' शास्थाहीन छात्रों के सामने कोई स्वप्त नहीं है ' इसके साथ यह भी दु ख का विषय है कि कुछ तथाकथित राजनेता भी लोकेषणा के लोभ में ऐसे झान्दोलनो की पीठ थपथपाने लगते हैं।

सरकार को जनमत का व्यान रखकर छीछ उचित कदम उठाने चाहिए ग्रन्यथा देश की सुरूद दीवारे हिलने लगगी।

योग्यता और कुशलता को प्रश्नय देना वास्तव में राष्ट्र के हित में है। बाति या वर्ण की दीवार कारक्षण के नाम पर खडी करना भी उचित नहीं है। वैदिक वर्ण व्यवस्था हो इसका एकशात्र उचित समावान है। जिदमें कोई ऊँचा नीवा नहीं। जो जिस काय के योग्य है उसे वहीं कार्य दिया जाये। अच्छा महींव स्वानन्द द्वारा प्रति-पादित वर्ण व्यवस्था पर हमारे राजनेता और बुद्धिजीबी वर्ष विचार कर जिससे सविष्य में इस तरह के प्रश्न ही न उठे।

—यशपाल सुषांशु

हर जनह मीजूद है पर यह नकर प्राता नहीं। योग साधन के विना कोई उसे पाता नहीं।

श्रायसमाज क उत्सव पर प्राय सभी भजनोपदेशको म भ्रपन विचार व्यक्त करने से पुत्र मैं यह पश्च वान्य सुनकर बन्धान मे यह सोचता था कि वह य न साधन क्या है<sup>?</sup> जो र्वत्र को साक्षान् देखने का अव सर प्राप्त कर सक । मन मे जिजामा बढती निराधार बुद्धि धौर बन का प्रपच्यव किया चली गई भीर पूज्य स्वामः म्नीस्वरा नाद की महाराज त्रिवदशीय के सामने श्रपना प्रदन उपस्थित किया त उहीने कहा कि अभी वालक हो वह विषय आपकी ममभा मे नहीं धायेगा। सभी प्रारम्भ मे सच्या करो व प्राप्तः मेरे पास ग्राया करो। नियमित रूप से निनवर्ग प्रदम्भ की नीचानि के परचातु योगासन स्त न सच्या धौर स्वाच्याय स्वामी जी करान लगे। बोल यही योग साधन का प्रश्नम पाठ है। श्रदा भीर लगन से मैं दैनिक श्रम्यास से लग नया । यागी तपस्वी पुज्य स्वामी भोमान न जी सरस्वती के नगन हुए। बहुत प्रभाव मेरे न्त्या र हुन्ना। पुरा गानी है यह घरणा करके सब से लग गया तो प्राण याम भीर ब्रह्मचय पर उप देण दिया। तब म जंबर धाजतक उसा प्रतासीर नयम के पश्चन कर रहा हु। मैंन ग्रागे भी योग सम्बाधी साहित्य पटा भीर तत्नुसार धम्यास करते कन्ते एक दिन सच्या के धादर विचित्र सनुभृति सौर प्रसानताहुई भीर मुक्ते महर्षि दयानन्द जी महाराज पर धगाम सदा हो गई कि स्वामी की मनरात्र ने हमारे ऊपर किलमा बढा पकार किया है? वैदवर प्राप्त कत केलिए बाब नवाज से कितना पासण्ड भीर सम्प्रदायवान पर

# स्वामी दयानन्द सरस्वती की

# आध्यात्मिक जगत् को देन

माचार्यं धर्मपाल विद्याभाम्हर एम० ए० प्राचाय--गुरुकुन महाविद्यासय तत रपुर

जा रहा है। मैंने बड-बड़े स्वामी साथ महात्मा विद्वान् जो भी समा कि यह ईश्वर विषय जानता होना पूछा कि कुछ ईक्वरानुमृति हुई ? उत्तर सभी के नका रात्मक ही मिले और विषयान्तर हो नये। बार्व विद्वानो बीर महास्माओं से भी चिर्वाकी तो कुछ पुस्तकाय ज्ञान के घठि रिक्त साधना धनुभूति बादि से सबया धनाएक उत्तर मिला तो विस्मय होता है कि शार्डमात्र विश्वमे आयसमाजी ही ईंग्वर को प्राप्त कर सकते हैं और वे इसस सबया शनभिज है तो फिर काई भी सम्पन्धयादी कैस प्रप्त कर सकता है ? बुद्ध लोग क्या स्वयम् शायसमाजा श्री यही कहते हैं कि सच्या मे मन नदी लगता । ईश्वरीपासना म त्र मन्त्रीच्यारण करके ६ मिनट में अपना कलस्य पूरा करके समऋते हैं कि श्रव हम पूरे र्वदवर नक्त हो गए हैं एक जन्म नही शत अल्लॉ तक भी भाग वस प्रकार सच्या करके र्दश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। जबकि स्वामा जी बहाराज ने कम स कम १ मणा योग प्रतिदिन त्रात करने का प्रादेश विया है। उस समय में क्या कर कर्न कई बार मात्रोच्चारण करते रहें धयवा कुछ ग्रौर विकि है। रस पर जब वि तन किया ायेतव महर्षिकी सो बनाएक धन्भूत विल रक्ता का ज्ञान होता है।

महर्षिकी दन---

ब्राध्यारिमक जबल् में स्वामी जी ने एक नई काति की है जिसका प्राहमीय उनके जीवन के किसोर बय में हुआ था। मृतिपुषा से प्रशा - ई बोनी एव सहात्मा सन्धासियों को पहचानकर अपनी कोन सावना की । उसके पश्चात् हमारे कल्या शाय सन्ध्या का निर्माण योव दर्शन के श्राचार पर किया। योग दलन मे बष्टान बोग को महत्त्व दिया है। यही प्रकार सध्या का निर्माण किया भीर यम नियम भासन प्राणाबाम प्रत्याहार बारला ध्यान संग वि की स्थिति तक हम सन्ध्या के माञ्चम से प च सकते हैं। उसका जीवन मे जिवात्मक रूपेण पालन किंवा जाये। सन्त्या मे बैठकर प्रत्येक मन्त्र के शब्दों पर गम्भीरता से जीवन का विचार करत हुए ग्राचरता करें। समप्रयम प्राचामा करके मन को एकाप्रवित्त होने पर शिका बन्धन करते हए गावजी मन्त्र द्वारा बुद्धि का वान ईश्वर वे प्राप्त करके मैं सन्त्या क्यों नररहाडू? उद्देश्य सुद्ध की वृष्टि हो दुस दूर ही भीर जीवन शास हीकर कल्यासकार वर्ने। यही ने यम का पालन शर्वात् शहिसा सत्य प्रश्तेय श्रह्मचय धपरिग्रह का पालन औं बाक बाक से

बारम्य होता है और मार्चन नन्त्र के बाब निवम का पालन प्रारम्भ होता है - सीव सन्तोष तप स्वाध्याव ईरवर प्रसिवान इनका कमस मन्त्र में बिनियोग किया है। कों तप पुनातु पादको से बासन की सिद्धि करके पूरे शरीर में बग प्रत्यन को पवित्र एव बसवान् बनाकर प्राणामाम की साधना को सू प्रासायाय सन्त्र से की बाती है। प्रस्याहार की साधवा सब नवसा मन्त्री के द्वारा करते हुए ईस्वरीय चिक्ति से अभिभूत होकर जीवन के कल्मव को साफ किया जान और मनसा परिक्रमा के मन्त्री द्वारा चारका की साधना की बाती है प्रचात् कंटकर मेरे बामे पीछे बावें बार्वें नीचे उपर गरी बार है ससने में बिरा हुआ सुरिक्तित बैठा हु । ऐसा निश्चय करसे पर उपस्थान मात्रों के द्वारा ध्यान केन्द्रिक्ष किया जाता है। निविषय होकर सन ईवबर के ध्य न में जिल्डन में मान हो जाता हं और पुन समाजितक पहुचने का मान प्रशस्त हो जाता है। इसी मायना से धपने जीवन का समप्रा ईश्वर के प्रति करते हुए कामन की जाती है कि है इतिकर<sup>ी</sup> दशानिके सापकी कृपा से हुन शीघ्र ही घन धन कान और मोक्ष को प्राप्त करल तब शानद म श्रीभभूत होता हुआ मन्त नमस्कार मात्र हारा अपनी कृण्यता स्थवत करता है। इस प्रकार हमे सन्दर्भ करने का निर्देश स्वामी जी महा राज ने दिया है यह योग के साबार पर है ईक्वर भक्ति। इस प्रकार से सहकि से ईक्बर वनित को योग से सम्बन्धित किया है क्वोंकि योग साथन के बिना उसे कोई पा सकता नहीं। यह एक बाज्यारिमक जगत् को देन है। हमें इसी ग्राचार से साध्या करके ईववर प्राप्त करन का किए त्रवास करना चाहिए। नास्य प्रधा विश्वतेऽवेशाये । \*

#### भारतीय ऋध्यातम का विज्ञान से अट्ट सम्बन्ध

डा० ग्रर्धेन्द्र शेखर चकवर्ती

कलकता २६ माच वेटों धीर उपनिषदों के प्रकाश में भारत के प्राचीन ऋषि महर्षियों ने श्रव से हजारो हजार वय पहल मानवता के समग्र कस्याम हेतु को सुत्र मंटित कर दिये थे भाषुनिक विज्ञान तेज रक्तार से उसी भार समसरहै। शायसमाज के प्रवतक स्वामी दयानन्द बाधूनिक कास के उन तीन सबध्य मनी वियों में प्रथम स्थान पर रहे जायेंगे जिन्होंने विष्य मानवता को उपलब्ध प्राचीननम सरकृत वाहमब की दर मिलि पर वह कर वैदिक ईश्वरवाद भीर विनान के साथ ग्रहट सबध हापित कर दिया। दयानन्द के इस दिगा में प्रवटान के बाद योगी श्री श्रास्त्रिय क्रीर स्वामी विवेकान द की भी सेवाए स्मरण रक्षी बायनी ।' ये उदयार हैं

सुपसिख वैज्ञानिक साहा इस्टाटबूट बाफ पृत्तिवर फिविन्स के डा॰ धर्षेन्द्र वेखर चक्रवर्ती के जो उन्होंने तर रात्रि सहीद मीनार मैदान ने धायसमाज स्थापना दिवस के उपसक्त में बाबोजिन एक विराट जन्समा में बोसत हुए व्यक्त

ग्रार्थं प्रतिनिधि सभा स्थाल के तत्त्वावधान में स्वानीय श्रायसमाकों की भोर ने यह भावोजन किया नया। जिनमे विभिन्न विद्वानी ने अपने उद्गार व्यक्त कर बायसमाज की उपलब्धियों पर प्रकाश बासा। पूर्वांचल में वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० समामान्त स्वाध्याय ने प्राप राष्ट के समझ उपस्थित सकटों का विवेचन करते हुए जनता का ब्राह्मान किया कि वह बार्यसमाज से ब्रवना नासा जोड कर स्वय प्रपना तथा देश का शी भसा करना सीखे। हैदराबाद की डा॰ युनीति एम०ए०पी०एम०डी० ने नवना पुत्रक योवित किया कि बार्यसमाज कोई मत पर्ययासम्बदाय न होकरसमी मानंबीं के कल्यासा का एक सर्वांबीख ग्रान्दोलन है।

समा की शब्दकता सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री वजानन्द जी सार्व ने का तथा मुर्व ब्रतिबि के बासन से प्रसिद्ध नजकार श्री विवस्त्रर सक्य (सम्पादक दैनिक खुपते छुपते ) ने भायसमाज के क्रतित्व की सराहुना कर उसके और अधिक सक्रियता न सपसर होने की सावश्यकता बताई। श्री धारन्यतन दम्भार्थी ने बताया कि मारत एव जारतीयता के बस्तिस्व पर बाये सतरे से उवारने की विस्मेदारी से भी बायसमान पीले नहीं हुट सकता और बह कर्य हमारे बिना राजनीति में भाग क्षिये राज्य की नीतियों को प्रमाणित करने की अमता बारत किये विना प्रसम्ब है। धार्यसमाय को पाहिए कि समस्त राष्ट्रवियों के एक ऐते बांका नेप ने रीवार करने में वह पहुत करे को वर्वत्रक्रम

सत्ताबारी दल से राष्ट्रीय हित में समान नायरिक कानून सपूखें रक्षा धरीय वर्गा-मारणीं पर रोक वृक्षपैठियों पर कडी नवार वैसी कुछ बरवावरवक बादो को लाड कराने हेत् कारवर स्पाय करे।

धेश्व वक्ताओं में प्रमुख वे स्वामी जीवानन्द श्री अर्हेन्द्रपास सार्व श्री सत्य-नारायन सर्मा एव समा प्रवान श्री 🖦 कुष्ण बमन । सचस्य धन्य बहानुमानों से श्री फूलकन्द शाय श्री विश्ववादान गुप्ता व की जीराम आर्थ के भाग उल्लेखनी व हैं और जिनका बायोजन को सफस दनाने में सक्तिय योनदान रहा। सार्यंतमास वका बाजार एवन् धावसमाज विश्वन्त सरशी नार्वसमाज सबका एव बीका-सांच के अधिकारियों के संप्रवीन का श्री फल या कि कायकन इतना प्रविक सफल रहा। समाका सयोजन श्री सम्माणी कर रहे ने तथा बायबाद ज्ञापम किया विकास सरणी प्रयसमात्र के मधी भी रावेन्द्र वाबब्रवास ने । घत में बैदिक शान्ति पाठ धौर अय थोवी के साब समा विसर्जित gf 1 -- चा चरतम वम्भानी कार्वेकमें संबंधिकें

सार्वे प्रतिनिधि बमा प्रवास

घोश्य तत्सत्" 'सत्य क्षित्र सुन्दरम् ।" 'सत्य पर चीमहि ।"

चुल पवित्र जननी हतार्था, बसुन्बरा पुष्पवती च तेन । ब्रवारसवित्युक्तसावरेऽस्मिन्, सीन परे बहाति वस्य चेतः ।।

इन खब्दों के साव, सौम्य स्वनाव

नवदीकित नवस्न।तका । मेरा स्नेह घोर सरकार तुम्हें स्वीकृत हो ।

विश्वविद्यासय गुरुहुत कागडी के श्रीवकारीयस ने ६स वय दीकान्त मावस देने के लिए निमन्त्रिय कर मुक्ते पादत किया है, इसके लिए मैं सब का सामारी 🛙 । मुक्ते अपने गुस्कुको से नियेप स्तेह है, को स्वामाविक है, क्योंकि मैं भी बापकी तरह से ही, गुरुकुतों ने ब्रह्मचारी एहते gu, इस्रो कुलमूर्गम से स्नातक क्य में दीक्षित हुमा वा। मेरेमन, दुढि भीर ब्राचार-विचार पर गुरुकुत शिक्षा का श्रमिट प्रमाव रहा है सीर उसके हारा असार की सब तरह की भिन्न भिन्न विप-वामो, सक्टो और आधि-व्यावियो ने वे बुकरते हुए, प्रभु वे अनाथ विश्वाक रखते इप् किसी भी रूप में सवा कर्मयोगी नि -श्रीयस् मानका दश्चन करता रहा हू। जीवन बाजा में समय-समय पर बुक्कुल बन्युयो स निवते हुए सवा एसा बनुवर हमा है जैसे प्रपने सगे-जैसे गुर-बाइयों ने भिसने का बीमान्य प्राप्त हुमा हो। इस मिलन में किलना स्नेह, खडा, सरलता धीर पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे में तो यही कहूमा—'स्वय तबन्त करलेन ग्रह्मते ।

प्रपने इस कुल की बारमा का स्व-इप इसपिता श्रदेय स्वामी श्रदानन्य के व्यक्तित्व से अनुप्रास्तित था। वैदिक ज्ञान की विशुद्ध चारा, बुद-शिष्य परम्परा द्वारा, शिक्षा दीक्षा की सरस्वती के प्रव ह इत्य में प्रसुज्य इत्य से प्रवाहित हुई थी। ्युन्तु बीच मे शा नवी बहुत-सी चट्टानो रकरा वर्ष भीर मिन्न-मिन्न वारामी में बहुने सगी। मुक्य भारा कुछ विसुप्त-सी प्रतीत होती है-जब से भारत विप्सव वा विवायन की प्रवस्त्रायों ने से युवर रहा है, मनिष्य ने इस सब का निर्ण्य कुरना। इसीसे वह कहने का साहस करता है कि महर्षि स्वामन्य की वैधिक श्रद्धाफिर वे किलाक्य में उमरेवी वह श्रव मक्तिम का विषय हो नवा है। वर्त-मान तो पूनपूर्वरित वा पूजिस है।

वैविक बाक्सब में, "वरोन बीसा-गण्गोर्ति वीशवा विज्ञानाय्गोति विज-वदा श्रदावाजीति,वदया सत्वमाध्यते । ' इस मन्त्र का सन्तेस हमारी सन्त्रमं शिका का चनकहार बता रहा है। ब्रह्मचर्व बत है साने पड़के-बढ़ेड कहा की जान्ति और mit ein fich at felle bit abfan. गरुकुल कौगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## के दीक्षान्त समारोह पर दोक्षान्त-भाषण

द्वारा--प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार

बही परमार्चता है बिखसे बान्यूदय बीर नि श्रेयस् का मान प्रसस्त होता है। 'यो बच्छूब स एव स ।

इन विनों में ससार विशेष रूप में दो विभागो में बट बया है। दोनों का स्वरूप विश्वपक्ष (Right Wing) ग्रीर वामक या वास पक्ष (Left Wing) से हैं। नि सेयस् मार्गं की तरफ सदा दक्षिणपक्षीय वाते हैं जीर क्रातिसय सीकित प्रेयमानी बामक पक्ष के हैं। ये सत् और बसत् की विचारकाराएँ हैं। एक तरफ देवीय प्रवृत्ति चमरती है भीर दूसरी तरफ बाधुरी प्रवृत्ति । परिस्ताम वैनी सपत् का सचय बासुरी सपत् की प्राप्ति होता है। इस पर बीता के विशेष प्रवचन स्थान देने बोग्य हैं। सदार को इन दो बब्दियों ने बासानी से समभा वा सकता है। दीक्षा से दक्षिण एव का अनुसरल करना ही वैदिक बाह्मय का झावेश है। श्रेय मार्ग श्रम्युदय को समुचित रूप से स्वय ही जीच नाता हैं और इसस बर्मसिद्धि प्राप्त हो जाती - 'बतोऽम्बुदबनि श्रेयससिदि यम । ' श्रद धर्मका सदाध्यान रखना **एचित है- 'बर्मो शार्यते प्रजा ।** 

निराहार रहने में सोनों ने ब्रत-दीका को समक्ष लिया है। वह बारोग्य का एक साक्ष्म है। हमारी बहान् विकाएँ इससे बहुत प्राणे वढ बाती हैं। योग वर्शन मे महर्षि पतञ्जन्ति ने सम निवसों के विवेचन मे बमोको शर्वात् शहिसासत्यास्तेय-बह्यवर्गपरित्रहा वमा , एत। वातिवेश-काससमयानविष्याना सार्वजीयाः महा-वतम् , कहकर ससार को सार्वभीम महात्रत का सन्वेश दिवा है जिनसे समित ससार सुस और शान्तिको भासानी से प्राप्त कर सकता है। ससार को सार्वभौम महावत में दीकित किया बाना विका का सार्वभीम बीमिक धव माना है जिससे क्षिका की पूर्णता होती है। बोगिराक प्रक्रवर्शि के सम-नियम (Law and Order) एक साम्बल समातम धार्य वर्न है। इनके प्रति निरपेक्षता तो बारमहत्या के रूप में ही समग्री जानी वाहिए। यही वैदिक वर्ग मार्ग है।

बसार के प्रथम कानुनवाला नहींव ततु के "वसकं धर्मनतासम् ' एव "धाचा ए त्रवनो वर्व-", "न हि सत्यात् वरो वर्व " बतपते ' समृहात् सत्यमुपैनि' बादि ब्रॅंबन तथा वैविक क्ये का नामन क्ये करा क्ष क्षाची की "क्षेत्रकी रेका",

'बस्पेब कुटुम्बकम् सर्वजनस्याय', सर्वेजनहिताय ' मिवस्य चक्षा समीक्षामहे ब्रावि से मनुष्यो की सार्व-भौम विचारबारा की बोर ध्यान खींचता है। हमारे ऋषियों ने या वर्मग्रन्थों ने देशिक दन्दि (Nationalist View) को तुच्छ समऋते हुए मानव मात्र को भाई बन्दुरूप में ही पहचाना है। ' माता मूमि पुत्रोऽहपृथिव्या , पृथिव्यी सकर नग । "नमी मात्रे पृथिक्यैं' झादि वैदिक पृष्टियी सुक्त के सन्त्रीपदेश और निर्देश हमारी सस्कृति को ससार के उज्यतम शिकार पर ने जाते हैं।

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों स

ससार एक बहुत स्होटी इकाई बन गया है। रेडियो टैलीविजन, टैलीफोन कम्प्यू-टर ग्रावि के शाविष्कार तवः तेज रफ्तार से उडने वासे हवाई वहाजो से दुनिया धन एकदेशीय है। हमारे सन निचार धन सार्वभौम रुष्टि से ही होने चाहिए। ससार को विनष्ट करने वाली प्रवृत्तियो-वडे-बढ एटम बम मिलाइस्स जबी जहाज, विवैसी गैसें कीटाया वस प्रादि के हिंब-यारो का सम्बन्ध प्राणिमाल के बीवनी से है। शावस्थकता है कि जीवनमात्र को मध्ट करने वार्को--- शासुरी प्रवृत्ति वासी के प्रति विरोध मावना बच्चपन से ही बच्चो की शिक्षा का प्रांगल्य प्रगृहो। इससे बहा सदाचार या वर्गसस्यापना होती है भीर नैतिकता के जसकक का प्रवर्तन होता है मनुष्यो को सरका पाने में बनताके नैतिक प्रभाव का दल प्राप्त हो जाता है। पृथियी सूक्त के वैदिक लदेख को एक लार्वभीय शास्त्रत वर्वके क्य में सचार की सब नस्याओं शिश्रणा शबों, अमसस्यानों ने नर्व से रख सकते है। कोई भी मतमतातर इससे उच्च रूप **वें नेतृत्व न दे सकेगा । शब्द स्पष्ट हैं**—

"सस्य बृहद् ऋतमुख दीका तपी ब्रह्म बन्न पृथियी कारमन्ति, सानो भूतस्य श्रव्यस्त पत्नी, उद लोक पूर्वियो न इस्पोतु ।' "मानो द्विसत करवन मा नो द्विकत करवन।"

नवदीकित स्नातको, बड्डा पर दीका' इस्स पर विशेष व्याग देना। साथ के शास्त्र बचनों को भी बाद रखना---वाला ने पूर्विको नेवी,

पिता देशो महेरवर ।

इसके दाद में बानको नारिक-रीका

की तरक भी धाकवित करना चहुगा। हुमारी शिक्षा दीक्षा में यह की प्रवानता है — 'बन्नो वै अध्यतम कम । हमे पञ्च-महाबन्नो पर विन्तन को समाप्त नही करना च हिए। राष्ट्रीय इवि से राजसूय तया राष्ट्रमेष यहो काभी नदीन रूप मे विषाम समभ्रता चाहिए। इससे हम चक-वर्ती राज्य (One World Welfare State) की दिशाको भी दिन्ह में रख सकते हैं। भिन्न भिन्न भन्तर्राष्ट्रीय सम ठन समितिकरण रूप से सङ्गरूप में प्रवृत्त हो रहे हैं। हुम भी इस तरफ माने बढना है। इन यज्ञों ने लोकिनता ना विशय प्रशावन हो सके परन्तु धारुपारिमकता पनपती हो, इसे च्यान मे रखना चाहिए।

ससार में ब्राधुनिक वैज्ञानिक यूग मे मनुष्य झाकाश में दूर से दूर पहुँच रहा है। चन्द्रमा पर तो वह ग्रपने पैर भी फैला चुका है। चरती ने विस्तृत भूसव्हों पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवो के विशास प्रदेशो पर भी पस्त्र नोकन हो रहा है। समुनों झौर घरती की गहराइया भी मारी जा रही है। इन सब बडी बडी दूरियो भीर गहराइयो को मापने हुए लीकिक पुरुषों ने अपनी बढ़ी स बड़ी विजयो के ऋण्डे गांड हैं। परन्तु इस बरती पर वसने वाले मानवो के हृदयो मनो भौर बुढि की गहराइयो को मापा मनी तक नीला नहीं नया है। मनुष्य क मन भीर हदय को अन्दर से जीवने मे भीर उनमे प्रेम सहानुभूति उत्साह, सहायता तथा भीरता मादि का शाति मय सच्चेश नहीं 'दया सहा है। यह मान समीतक प्रसस्त नही हुसा। यहा पर बाकर भौतिक विज्ञान बसपल हो गया है। यही स हमे अध्यम गको प्रशम्सकरना है भीर यह यज्ञमय जीवन से प्र रम्भ होता है। बहुविषायज्ञावितता ब्रह्मणी मुक्ते काष्यान रखत हुए हुने बतमान मे इध्य यज्ञों के प्रति बहती प्रवृत्ति को ग्रन्थ श्रद्धाकी तरफ जाने से राकना होना। हमे यज्ञों की विविधता द्वा विशासना को भी समझना चाहिए। अपतेन्विता से ये यज ज्योतिमय हो जाते हैं। सम कता चाहिए कि -

इञ्चयका तपोयका योगयञ्चा तयावरे ।

बतबः समितवता ।। वेवान् प्रव्यवदात् बानवध वरतय।

सर्वं कर्माश्विस, पार्व शाने परिसमाप्यसे ॥

गाय लोकोऽस्त्ययक्रस्य, बुरोज्य कुश्तराम ।।

बद्धावान् लमते, ज्ञान तत्पर संबतेन्द्रिय । शाम सक्क्या वरा कान्सि-

वविदेखाविक्वाति ध श्रद्धापूर्वक विभिन्त नहीं से, यहपन (क्षमब )

व्यामपीठ---

उपनिषत् कथा-माला--२

## सुख का मार्ग-मनुष्यों का कर्त्तव्य और संसार की वास्तविकता

प्रवासनकर्ता-जीतराग स्थामी सर्वदानन्द महागाज

वेद के एक मत्र से ग्ताहै कि समारक्यावन्तु है और सनुष्य काकत व्य क्याहै ? वेदाल वाली ने मार की मिष्या-स्तायाहै।

वेदों में भन्त क्या है <sup>?</sup> जो वस्तु भाई है उसे किसी न विसी समय नाश भी होना है। बुखिमानी ने यही निन्चय किया है । बुद्धिमान् यह भलीभाति जानते है कि वैदिक समय को बोलचाल में भीर धाजकल की बोलचाल में बढ़ा भन्तर ण्ड गया है। प्रतएव यह समभ्रता क्ख कारिन हो य है कि पन्वत्य साद के झाथ वटो ने ससार के किय हैं। प्रचलित भाषा मे तसक धार पीलल के हैं। इस ससार को भ्रष्टवाय इसलिए कहत है कि ≽ान नहीं वल कोर्ड ∘ार्ति विनाय यहा रहेनाकि नहीं। इस लिए इसका नाम **ध**न्वत्य है । क्या ग्राप **ब**ना सकत है कि धाप जैसे यण ग्राये वे वैसे ही ग्रव मा हैं ? यदि भाग कहें कि हम वैसे ही है तो न भ्राप वन सकते हैं नाट सकते हैं।

कल्पना करो। एक सनुष्य राजी के फिनार ज चन्ना है एक प्रावसी उद्योग पुरावसी के तन पर बन् दरव जता चलनराया। प्रसोग पुत्री स्थानम चन्या ही प्रदिक्त एक पन स्थानम चन्या ही प्रविद्वती एक पन स्थानम चन्या ही प्रविद्वती एक पन स्थानम चन्या ही चन्ना नहा डच्चा

ाक धान्याक प्यान जागे। दूबरे प्रावमी ने 'तिका जब का निकास केया उचकी चिक्का पर एक इंद कल टबका दिवा। उनसे पूछी क्या पुन्हारी प्यास मुक्त मं ? यदि एक इंद पानी पिना से उसकी प्यास नहीं कुकसी। सरती के दोने लो। उससे से एक दाने को काटे पर रको। देखों काना बताता है या नहीं ? इसी प्रकार एक एक मिनट ने पडाय क्य कर्ते रहते हैं। इससिए देदों ने कहा है कि 'यह ससार प्रवत्य हैं। प्रयक्त वस्तु में बवतन की प्रकृषि विध्यास है चाह हसे समक्तर साम जा तो चाहे न वानकर सिन।

गौरास्मिक शब्द झरवरण (पीपल) में यह रुण हे कि बायु के झाने से उसक पक्त हिलत के क्षार कि ने बूल के पता तता गोध्या से नहीं हिलत व्यक्ते पता तिनक सो बायु गन पर भी तुरता हिलने क्या

हम लोगो को मरत हुए भी देखते है

भौरपैदाहोते हुए भी। किन्सु विवार कम करते हैं। प्रदियानी ने सोचा है कि जब बच्चा पैदा होता है तो हम उस पडते हैं जब नर बया तो रो पड़। किन्तु बच्चा पैदा होते समय रोता है। पर तु किसी ने यह कभी नहीं सोचा कि बच्चा राता क्यों है ? हम तो खुशी मनाते हैं वह तो इस लिए रोता है कि उसकी बात्मा को पूरा ज्ञान है किन्तु उसमे बोलने की जक्ति नही। उसको ज्ञान है। वह विकारता है कि मैं प्रकाशित स्वरूप को छोडकर श्रविद्याके भवन में जारहाह वह सम अता है बाकाश में उड़ने वाला एक पक्षी पिंजरे में श्रा गया वे भीर य लोगपैसे बात फिररहे है वह कभी बूग होकर सोता है और सोचता है कि शच्छा सब में बढ़<sup>।</sup> इस प्रकार बजान का परदा

प्राप्तक समुख्य की यहा सबस्था है जितना हम मरने में हरते हैं मरना उतना दरानी। यदि मृत्यु न हो तो प्रस्थेक प्राणी कि जिले में फम जारे। यदि मरने के बनतर जिस्म ना वैता वा यह बढ़ा कठिल है। जैसलाने से एक बदी है। ज्ये वहाजय कि क्त तस्हे बाह्य जाना है। या उसे स्वतंत्र हो जाना है तब तो वह कुछ किन्न नहीं सम नता। दिन्तुयनि लाहौर के जैललाने ग समतसर केल ये जाना है तो किन्त है। ऋषि दयानद महात्मा बुद्ध भीर भ स बन बड मोना मृत्यु से क्यो नही बरते वे ? क्यों कि उस्हें ज्ञात था कि हम म धीर परमारमा में केवल शरार का ही मेड है। इसकिए जितनी सीध्र ही यह शरीर विरा दिया बाय उत्तना ही बच्छा है। तुम इस रहृस्य को नहीं जानते । जिस वन्दी को कम खटना है उसको प्रसन्नता है। क्योंकि वह जानता है कि कक्ष मैं स्वतंत्र हो वाऊगा। किन्तु हुमे इस बात का ज्ञान नहीं इसीलिय हम मरने से बतना हस्त

कृष्ण जी महाराज ने गीता में झारवा भीर चारीर के सम्बन्ध में जिसा है। झारबा जब चारीर में झारता है तो पहन जच्चा होता है फिर कुछ समय पीड़ युवा झवरबा को पहु ता है फिर ट्रब्स सबस्था को। यह भेद केवल बस वय में होता है एक बच्चा जब युवा खरस्था के बाता है तो उसा में मान पहुता है। बच्चे की सबस्था में बहु स्वस्तम्य चा, किन्दु ज्ञाने कभी नहीं कहा कि मैं जन्मा वन आर्जे। जवानी मुक्तेन पर बहु बहु हुआ हुआ, अब बुडाएं से ही जान रहता है। इसकें बाद जोशों भी एक स्वस्त्वा है अमाँद यह सारीर खोककर दूबरा बारण करना। फिर उस से रोना कैंद्रा ने जन बच्चे से बतान धीर जवान ते बढ़े होते समय धाप नहीं रोते तो शरीर खोकने पर रोना कहा ने बीर पुरुष है बहु तो ज्याकृत नहीं होता। से स्व खानुक होंने। खाप परि बीर गम्भीर बनना चाहें तो कब ही बन सकते हैं। ज्यांचि स्वानन्य महास्त्रा बुढ गुक्तान्त देव को बात स्वान्त से कि कीन जानान राहि से बह होकर महा-

नी विधाए न वक् के शक्तक वे होती है। जैसे पुण्ली ग सब कृत विधान है। किन्तु उसके निकानने के लिए शोव वहां कारता है। नेहूं गन्ता चना मार्थि के बीव घरती से बाले बाते हैं और फिर से पृष्ली से उग मार्थे हैं। किन्तु गह कमी नहीं होता कि मेहूं का बीज बाना जाव भीर चना उस मार्थे। वस यही हाल बच्चों काई उप भीर गम्मीर बनाना भारके प्रभीन है।

एक जबका जा उबका नाम उसे ।
। उसके दो जार्ग थीं पिता थे। किन्तु वा इक्ता ने सीनी मिसकर बा=ार से उसे पीट रहे थे। यह बडा प्रदाराय हुया वा। एक प्रावसा में रखा था गारहा था। उक्तो कहा धरे ती शिक्त के जारहा था। इसा ? देवन ने ती तु "तजा हुटा कट्टा की प्रकार के सिंध मिस की वह ना हुआ कोर उसके या वा पित की वा स्वास की वा साम की वा साम

महता बेहुति बध्यक्षत करते हैं।
करालत छोड दी कीयके का व्यापार
किया उससे प्रवास्त करते हैं।
क्रिया उससे प्रवास्त करते हैं।
क्रिया उससे प्रवास्त करते हैं।
क्रिया उससे प्रवास व्यवस्थित की चार पांच
वर्ष में ही आशाब धमेरिका तक हो
साये। त्या प्रवास आप वें भी ने तक
पारिका धोर विद्यार्थ विद्यासान हैं परन्तु
साथ इता काम नेना नहीं वानते। इसी
विश्व छक्षण महाराम ने सर्जुन से कहा है
हि स र प्रयास वस्त सा नहीं। स्वतस्य
साथ तम भी चीर नम वस्त हैं।

धी पुरुष के सक्षण में मही कि वह गरासान नाहोताहै। भीर पुरुष कड़ी है भो पुत्र-पुत्र माने पर सक्य स्वयंकाली में एक सा पहला है। वो मून्यू क वय और जीवन के सानन्य से अप्यूप नहीं हाता वहीं पुक्व शीर हैं। क्योंकि वह समस्त्रा है कि बीवाल्या का क्यीर को त्याय बेना ही नप्त हैं। बुढिमान् बोनो प्रवस्वाओं में एक ही बेंदे प्तते हैं।

कोर्ट सेक्टेमन में एक ठेकेवार की स्त्री का बेहान्य ही नवा। यह नडे बोक में ला। वह तरे बोक में ला। वह तरे बोक में ला। वह तरे प्रतिक है। कोई सम्बद्धा दिन यागा नहीं कि शखायों ने सकटते ने ठकर शोक मनाने के लिए रोता- योगा में लिए रोता- योगा में लिए रोता- योगा में लिए रोता- योगा में लिए रोता में लिए रोता में लिए रोता में लिए रोता है। रोता मिं लिए होते हैं वालव से यह रोता मां लिए होते हैं वालव से यह रोता मां लिए होते हैं। रोता किंद बात का ? प्रतुक्ती वरों होता किंद वाल का ? प्रतुक्ती वरों हा यो उन्हों नायश । तो। येगा किंद वाल का ? प्रतुक्ती वरों हा यो उन्हों नायश । तो। येगा स्वाप्त में प्रतिक नियम साम ने साम ने

अस्तु उम उक्तार का एक स्थल था।
बसने उसे ति देखकर पूथा अपू जी
रीते क्यों हो ? उक्तेयार ने कहा 'ने मेरे
स्त्री का देहान्य हो नया। स्थल ने कहा
'इतना न रोशो आप तो पढ़ लिख हैं।"
ठेकेयार बोला कि मेरी तो स्त्री का
बेहान्त हो गया है धीर अप कहने हैं कि
सैन रोक एक पशी भी कोई पालता है,
आपता हो हैं।"

वह नहीं वामकता कि यह तो बकरों का एक रेवड हैं। वे वब के तब कताई के ला के वा रहें हैं। अब क्या ता खुब ला के वा रहें हैं। अब क्या ता खुब कर डाने। अक्षा आगे से भरा हुआ एक नोकरा किसी बाहारा के माने पूर्व तो। आप उससे कहा कि आगा पूर्व तो। आप डाने का मानूब की निकास मानूब कि वह कीन का नाम उनावर कीना। निकास ने निकास निकास कीना की नाम जिल्ला मानूब कि वह कीन का नाम वुरूष कोने की नाम वुरूष का नाम वुरूष कोने की नाम वुरूष कोने की नाम वुरूष का नाम

बावों के काल में बच्चे रोते के किन्तुजवान भौर बूढ कभी नहीं रोते थे। यविक्रमी रोना द्वाला भी था, की उन्होने बाबाबी से बाहर एक घर बनाया हुमा होता था जिस रोना भाषा वह शुक्री चलागवाधीर रोधावा। वे आ मते वे कि हम सब को ही मौत प्रानी है। वैसे बापके शरीर मे इन्द्रिया है। इन इन्द्रियों का धपना धपना भिन्न भिन्न कार्ब है। श्रीक्ष का काम है दलना तुम कान से कहो तो कमी देस सकता है कान देखते का काम नहीं कर सकता केवस सुनने का काम करता है। यहां कोई किसी पर **क्षाक्रमण नहीं करता सबका मार्व जिन्छ-**जिल्ल है किन्तु सर्व मिनकर शरीर के सिए काम कर रहे हैं।

नेत्रों ने साथ को देखा नारू ने सूचा बोर आरना तक उसका साम पहुंचा दिया। वयवा काम नह देखना है कि यह रस सं गरा हुंचा है कि नहीं यह विश्वास कुचाने किया। यम नह बहु। है या दीना, यह बिक्का ने बेखा। समई बक्क के क्रिक्- भिन्त हैं वरन्तु धन्त में काम बन का एक ही है !

पचुमाँ की घोर देवो ' प्रकृति ने उन्हें जो पाठ पदाबा है उन्हें वे सूचते नहीं। यह दण्ये देने का तमय घाता कर कर के बोदबा बना कीने हैं। यह वण्ये बढे हो काते हैं तद यह फोवर्गों की हुख चिन्नां नहीं करते । खालाओं पर ही निवांह कर तेते हैं। उनमें नर पर आता प्रत्येक पता मूटे सुद्धी स्वा एकन करता है। बो कम मूटे साक्षी रैवा कर सकता है वही बोसी बन जाता है। कियु रामद्धी स्वा कर सकता कर का में कियु रामद्धी है। क्यू रामद्धी है। मूट-सब बोसकर मोर सम्याय से कन इकटका करके अपना कुटुम्ब पानते हैं। परने परने कर सकता करता है। परने स्वा कर सकता की सार होवा? नहीं करायि नहीं। हस्तिण जब ममुख्य को यह बात का वाया वा हम स्व ममुख्य को यह बात हो वाये कि युगे एक ममुख्य को यह बात हो वाये कि युगे एक

पशुमो की धोर देखों। प्रकृति ने उन्हें जो पाठ पढ़ामा है उसे वे भूलते मही। जब बच्चे देते का समय धाता है, तब वे घोमला बना लेते हैं। जब बच्चे बढ़े हो जाते हैं तब वह घोसलों के कुछ विनना नहीं करते। धालाघों पर हो निर्वाह कर लेते हैं। उनमें नर सपनी नारों का किता घ्यान रखता है? किन्तु मनुष्यों में ऐसा नहीं, मनुष्य भपनी स्त्री को देलकर जो आव प्रकृत करता है दूसरी स्त्री को देलकर भी वहीं करता है।

सनुष्यों में ऐसानहीं मनुष्य सपनी स्त्री को देखकर यो मान प्रकर करना है दूनरी स्त्री को देखकर भी वरी करना है।

मी नाम है पृथ्वी का। पृथ्वी में साप एक ही स्थान गर कर बीज बाल थी। है माना मिथ मेहू जना जी तब सकत सलस बराज समें। मिन से करपन पुर्वदिवरेल) का साव सा जाता है गर्ने में निठास का। यह कभी नहां होता कि मिर्च से गर्ने का सा रस सा जाये। इसी अकार सा जी स्वास र है। ऐसे ही रहते के इंक्डर की अपित होगी सौर ऐसे ही सरने से स्वर करने निट वार्यों।

किसी ने कहा वा -आई रोते क्यों हो ? शक्स ही ऐसी हैं। ऐसा ही ससार का भी हाल हैं। मोटर को देखी, धनने बक्त (पहिंट) नम होते हैं पिछकों में बादु अधिक होती हैं। यदि सन पहिंचों में बादु समान (एक बादु) हो तो चनना कठिन हो बायें।

धापके शरीर में बीमारी है किन्तु धाप बर्दन ही रोगी नहीं रहते। कभी--कभी बीमार होता हैं। एक कवि ने कहा है--

ल्ड दुलाबराबर सुलानहीं जीदिन चोडे होस।

जिस सावभी गो रद समना कट्ट हो,

यो तीन निन् जर एक जावे प्रमिक नहीं
कि यम के नम नीमार पड़ा रहे जसका
स्वरीर हु-का हो जाता है। मन में सामित
सा साती हैं। फिर नह सीरे सीरे स्तर्व ही जाता है। इती लिए क्यों से नहा है उसी को परमेचनर मिसला है वो अनुस्य यह जान से कि मैं सदैन क्यार में रहने के साथ प्रमाय न करे। प्रदुख सक पर-स्व अपने परमा न करे। प्रदुख सक पर-स्व अपने प्रमान न करे। प्रदुख सक पर-

काजकल ससार में भूठ का राज्य है। एक पुकरणा "ग्राचासय में जाता है। दिन सहार छोड़ जाना है यदि वह इस बात को सब जान और मान ले तो वह क्वापि स प्रकर समने परिवार की पालना न करे। यह कुक कठिज नहीं, पुरुषों को ध्वराना नहीं चाहिए। कोई कठिनाएँ एसी नहीं जो सुनम न हो जाये। ससार के सब कान उतने ही सुगम हैं जिनने ने चिनन दिखाई देते हैं। एक कवि ने कहा है—

> बुनियामे रहके सब से जुदा हो तो जानिये। राजा कभी विगड के मिखारी हो तो जानिये॥

कमल बात ये रहता है परन्तु वह बाद नाई पानी को त्यान भी सकता है। इसी प्रकार मुजांकी जी पानी से रहती है वहीं प्रफंड देनी है बच्चे निकासती है। फिस्तु बन चाहे सकत मी हो सकती है। फुरत्या। एक की को तो पानी बुक्की दो मर वादेवा। कहतर को लो उसे भी बुकोशो मर जादेवा, क्योंकि कौसा और कहतर पानी से नहीं उड़ सकते परन्तु पूर्वाची की बह दया नहीं। पीपल के पत्ते को पानी से निहां वो मा वादेवा। किस्तु कमल का पत्ता नहीं। वादेवा

हमारे माता प्वता स्वय ही समझ

में कि हमें काहे कितना भी कष्ट क्यो न हो, किन्सू हमारी सन्तान को कव्टन हो वो बच्चे के विस ने भी अपने आप ही यह विचार उत्पन्न ही जायेगा कि 'मैं कोई ऐखाकार्वन करू जिससे मेरे माता पिता का निरादर हो। यज्यापक यह जाने कि यह विद्यार्थी मेरा जीवन है विद्यार्थी को स्वयमेव यह विचार होगा कि मरे किसी भी काम से मास्टर जी के सम्मान से अटि न हो। प्राचीन समय मे जब विद्यार्थी युरुकू से धपनी निकापूरी करके निक सताबातो प्राचय यह कहा करते वे कि 'हे शिक्षा । धाचाय के लिए वीर न धीर ससार मे यका प्राप्त कर। आवन ल लो हमारे सब काम धन देने से होते हैं। कोई शिष्य विका प्राप्त नहीं कर सक्ता जब तक वह ग्रपने प्रोफेसर को कालिज की फीस न दें परन्तु प्राचीन काल मे ऐसान था। प्रत्युत शिष्य की वृद्धि फलना क्लनातया उसकायश ही ग्राचार्यं के लिए या।

दूसरे का उपकार करना ही सपना उपकार होता है। धानकक के नवपुत्र के तिश्व कम सिक्सने पर भी नक प्रमुख्य के परण्य नर्फ सार्व जन से प्यास नहीं बुमशी इसीहिता है। कारण, उसी परमा हैती हैं। धर्मने पैसे की धाम ऐसे परामी पर व्याप न करी वरन ऐसे भी त्या कारो जो पुलिकारक हो। सीवनावर पीने से क्या जान है। धानकत के नवपुत्रकों के यदि कहा जाने कि मार्ड परवंश कमार्ड सामा करो सो जरार मिनता है कि पत्रसी नहीं। मार्ड पत्रसी कमार्ड सामा करो सो जरार मिनता है कि पत्रसी नहीं। मार्ड पत्रसी कमार्ड सामा करो सो जरार मिनता है कि

एक पुरुष असे मुराद बाट सं बरेली ले जाने के लिए ग्राय भाग ने उसने सोडाबाटर की तीन बोतलें चटकी ! मैंने पूछा भाई इसकें पीने सेक्या लान? इसकी जन्ह बवि तुम स्वकी काते तो तुम मे सक्ति बाती। उसने कहा कि पचती ही नहीं। जीन को देखों। जब वह वरती से उन्ती है तो दोनो पी को हिनाकर उडती है। अब वह भाकाश मे पट्ट मती है तो इनके पर ठहरे हुए दिखाई बेते हैं। जन कन उनकी समता में धन्तर पड जाता है तो वह फिर अपने परींको हिलाकर उसे पूरा कर लती है और जिर पर निश्वल हो काले हैं। इसी प्रकार बच्च बचपन से ही बध्यास न कर ता सब ठीक हो जाता है।

इत नियमों पर काण विचार कर बकते हैं। ससार के मेरा मध्य-ब क्या है? इस्सावि। इससे तुम ठीक मार्ग पर चक बकोवे। बेसे परिकासी बातक पन हो बाता है और बनता उसकी बबें स्तुति करती है और कहती है कि 'वह बडा बनाना बचा परिकासी मुक्क है। परस्तु परिकास करूरों बाता चाहे छेक सी हा जाये तो सब यही कहत है कि उसके भाग मैं चार होना चा हो नहीं तो यह पास कहा से होता 'सी अन्तर यदि इस ससार में रहते हुए यह अप्यास कर कि मैं क्या हु 'इस ससार तथा गरीर के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है' तो उसे मृत्यु से कभी भी भय न होता।

> षाये य जिस बात को भूल गयी वह बात। श्रव क्या ले बलें प्रश्नू को, खाली बोनो हाय।।

प्रयत्न करों सचाई म प्रेम करों।
माणे गंग पर चलों। हेलों एक सड़कां
प उमने तूपरे लड़ करों हो करा कि करें
पिता को चांचा कहीं के हतो क्षेत्र मान करें
पिता को चांचा कहीं कहें तो क्षान कर कहें क साथ नहीं।
यदि वह प्रत्यक बानक के पिता की चांचा
करें ती उसके पिता की सब्द प्रदेने खांच ही चांचा कहन नवीं। इसिंग स्वरं कम्मे

यदि वैं बा<sup>3</sup> कि घोर लोग मेरी
महायता कर हो मुझे नयस भीरा की
सहायता करती बाहिए। यही मादा बाग है। पारती में एक नोन्नेक्ति है विदक्ष मादाय यह है योग त बाहता है कि मैं तुने हावी कह तो नू चुने हाबी कह। यही यह से प्रचली विधि में जिससे ससार मैं।

एक सहका था। उसका पिता प्रति दिन प्रश्ने पिता श्रयात् उस वालक के पितासह के साथ बुरा वर्ताव करता था। उसे गन्दे बतनी म भीत्रन देता था। कप्ने ने ग्राम पिनासे कड़ा कि शा वाकाजी के साथ ऐसा क्या उत्त ने ? ये आपके पिता हैं। उसन वालक से कहा कि तू वडी बुद्धि वाला है। तुन्ते इसका ज्ञान नही। दूसरी बार फिर यनी बाते हुइ। िताने उसके दो शीन थप्पड भी रस्ट द कर दिय यह बालव क्छ दृद्धि च ला था। जनने संभायह माग उन्टा है। उसने एक कापी बना ली और अब भी उसका पिता सके पितामह की कोई बुरी । वहतातभी ह उस उस कपी वे नोटकर लेता। ज उसक पिता ने कहा कि स बुढ को ग्रच्छे बरसमों मे भोजन न दो। तो उसने भन नोटकर लिया। एक दिन उसने पिताने कहा कि यह तुम सदैव क्या सिक्ते रहते हो? लडके ने उत्तर दिया कि प्राप बाका जी को जो नुख कहते हैं वही मैं लिख लना ह जिससे कल जब प्राप बुढ होगे तो मुमे ये सब बातें याद रहे। तत्र से उसके पिताने बाबाको बुर 🗝 ग सहनाओं ड दिया। सीघा मान यही था।

वेथो के नियम बहुत शुक्ष है जिलु हमे उन पर सीधी तरह चलना नहीं बाता। सोचा समकातो बाप इस माय पर बा जाबोचे और सुख के चाणी नाने ।

4

सरकार ने श्री हरिहराव्य करपात्री उनके वेदाणं पारिवात ग्रन्थ पर एक सास रुपयो का पूरस्कार देना स्वीकृत किया है, जिसे उनके मरलोपरान्त उनसे सम्बद्ध संस्था को विनाक १६-४-८५ की राजभवन में झायोजित समारोह में दिया

सामान्य जनता नही जानती कि उक्त पुस्तक मे कितना विष घोला गया है। इसमे बेदो के सम्बन्ध मे भ्रान्तिपूर्ण वचन भीर तकं-विरुद्ध प्रवैज्ञानिक सिद्धान्ती को मान्यतादी गई है। (स मूप स वेदों के बद्धारक ऋषि दयानन्द भीर उनके अनु-बायियों को पदे पदे गालियाँ दी गयी है। पढने बाला उसकी भूमिका पढकर ही समक्त जायमा कि इस प्रकार लिखना ईव्या और द्वेष से परिपूरा है।

ऐसे ईव्या देव से भरपूर वैरामी को या उसकी सस्या को पुरस्कार देना वरीव जनशाके धन का केवल दुश्यवोग है भीर सरकार द्वारा स्वीकृत नीति के भी विवद है। निम्म प्रदन उपस्थित है-

१ क्या उक्त ग्रन्य की जाँच निष्पक विद्वानो द्वाराकी जा चुकी है ?

२ क्या इलमें प्रतिपादित विद्यान्त न्याय भीर तकंतथा विज्ञान के बनुक्ल एव बुद्धि-पूर्वक हैं ?

३ क्या यह पुरस्तार पा**लक्ट भी**र भ्रम्बविश्वास तथा साम्यदायिकता को दूर करन वालः होगा ?

इन तीनों का उत्तर है -- नहीं, नहीं, व्यक्ती।

#### वेटार्श्यारिजात सम्बन्धी वक्तव्य

#### वीरेन्द्रमुनि शास्त्री

श्री करपात्री के वक्तव्यों के कुछ, उन्हें धनेक गासियाँ दी गई है-नमूने दिखये ---

- १ (भागसमाजी) चोरी करने वाले समय चोर बिल्नी के समाम चूपके से चर मे पुत्रते हैं किन्तु ये भाकमणकारी पूर्व सबके सामने उजाल में वेदबाता के केशी (भूमिका पृष्ठ १२) को सीचते हैं।
- २ जनता और सास्त्र के साथ भी छल-काट करने की भावंसमाजियो तथा बन्य कुछ सोयों की प्रवृत्ति खेद-जनक है। ये लीग सामने ही धाँक मे पूक फीकने का काम करते हैं। (पृष्ठ १३)

इत्यादि बातों के कारण इस ब्रम्य को तो जन्त किया जाना चाहिए या, इसके विपरीत १ लाख का पुरस्कार दिया जा रहा है। भारत्यम् ।

कुछ सस्य नमूने देखिये-

१ त्रिपुर सुन्दरी से ब्रासिक्तित परमारमा शिव को हम प्रशास करते हैं। (प्रष्ठ रे)

(क्या परमात्मा का यही काम है कि त्रिपुर सुन्दरी से चिपटा रहे ?)

२ लोकवञ्चनहेतवे वञ्चनाकुशसेन (क्लोक १७, २० पृष्ठ २) जिनता निजय करे कि वचक कौन

है, दबानस्य या करपात्री?] ३ प्रथम भाग के १०८ पृथ्ठों में से ४२४ मे वयानस्य-मत सण्डम करते हुए

- (१) दवानन्द का लेख प्रमत्त-प्रसपितम् (पामसकी वकवास) है।
- (२) 'होम का करना बावस्यक है' --यह सब भी गमत है। पृष्ठ ४८१
- (३) कुमारिश ने मानो दबायन्द को सक्य करके ही कहा वा-मूर्वसकंटा (बस्दर) पिषाचा श्रादि।

[ वृष्ठ १५१ ]

(४) स्वामी वमानन्य बाइविक-फूरान बावि बनार्य प्रत्यों से प्रशावित होने कं कारण ही यह मानने समे हैं कि ईत्वर के ब्रतिरिक्त ब्रन्थ उपास्य नहीं है। (१३६ छन्द्र)

क्या एकमित् तमुब्दुहि' (ऋग्वेद ६४% १६), पतिरेक ब्रासीत् (ऋ० १० १२१.१, य० २३, १) न द्वितीयो स एकव्देक एव (ब्रवर्व देव १३ ४.१६) मादि वचन वेद मे नहीं है, को उपर्यूक्त निर्मुल बाक्षेप किया नवा? क्या यह वचन बायविस, कुरान के हैं <sup>?</sup> स्था एक ईश्वर की जपासना को छ।डकर धनेक बढ देवताओं की उपासना बताने बासा शौरहोम का विरोधी ग्रन्थ एक लाख क्पये पुरस्कार का प्रधिकारी हो सकता है ? (नहीं हरनिव नहीं)

पुष्ठ ५६० पर लिखा है— बहुसब

दयानन्द का मत चार्वाक का उज्जिष्ट ही है'। बाव विचारक बतायें कि परम ईश्वर विश्वासी ग्रास्तिक दयानन्द की चार्वाक नास्तिक बताना अवस्य है कि नहीं ? बिन्होने स्व-स्थापित ग्रायसमाज के पहले-इसरे नियम से ईश्वर को आदि-मूज बताकर उसी की उपासना करनी योग्य बताया, प्रपने सन्नी प्रन्यो सौर प्रवचनो को जिन्होने ईश्वर-प्राथना है धारम्य किया. धपने धमर ग्रन्थ सस्पार्थ-प्रकाश ने जिन्होन पहले समुस्तास में ईएवर के सी नामी की व्याक्या की तथा भागे सातर्वे समुख्यास में ईश्वर को खिद्धि कर बावाक मत का बण्डन किया-उन्ही को नास्तिक बताना अनता की बालो मे चूल फोकना और उसे बरमसाना नहीं है?

जो स्त्रिमो भीर शुत्रों को वेद पढाने का बोर विरोधी था, ऐसे धकीखं विचार वारा बाले व्यक्ति को १ साम ६० इनाम, धारवर्वम् ।

भत जनता को सावधान किया बाता है कि वह ऐसे अब्ट, द्वेषयुक्त सन्य पर पुरस्कार विय जाने का भोर विरोध करे धीर सरकार को बनता का बन ऐसे न्यर्थं अनुपयोगी कार्यों मे खर्च करने स रोकने का प्रयास करे । सरकार से प्रार्थना है कि वह ऐसे साम्प्रदायिक कोगो को पुरस्कार न दे। ससद-विधानसमा मे प्रक्त स्टावें बावें।

> -- भीनारायण बाबपेयी, बीरेस्ट-मुनि चास्त्री(बावशं प्रेस)ससनऊ उपाध्यक्ष विश्ववेद परिवद की दर्ध महानगर सक्तमक

#### शिक्षा नीति में परिवर्तन

शिलाविदों की यह राय रही है कि शिक्षाका सर्वोत्तम माध्यम मनुभावा होती है। किन्तु स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भारत में विपरीत लहर वली है और श्रव वडावड एसे स्कूल खुल रहे हैं जिनमें षिखा का माध्यम भारतीय भाषा नही, भन्नेजी होती है। इसस नम्हें मन्हें बच्चो पर कितना भार वढ रहा है, इसका कोई धनुमान नहीं संवाता। कई बच्ची की प्रतिया प्रप्रेजी माध्यम के बोऋ के कारण कुठित हो जाती है। अन्य देशों ये प्रयत्न बहु होता है कि बच्च सबवित विषय का ग्रम्बद्धा ज्ञान प्राप्त करे, यहाँ इस बात पर कोर दिया जाता है कि बज्वे बग्नेजी की कविताएँ रहें तथा अन्य नातो के लिए समेजी सच्छी प्रकार बोसने में विशेष समय संगायें, चाहे धन्य विषयों में उनका ज्ञाव क्रवकचरा ही रह वाए।

भारत सरकार शिक्षा मीति मे परि-वर्तन करने का विचार कर रही है। सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह होना

हायर सेकेटरी तक शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दाजाए न कि मग्रेजी के माध्यम सः। दूसरा सु<del>वार</del> यह होना व।हिए कि पब्लिक स्कूलो की होड बद हो तथा धनुदान प्राप्त शिक्षण सस्वाधोतवासरकारी स्कूलो ने शिका कास्तर सुवारा जाए। अन्यवा सामा-विक विषमताए बढती रहेंनी और बारत मे समाजवाद का स्वप्न वास्तविक रूप मे पूरा नहीं हो सकेगा।

विकासामाध्यम के परिवर्तन के संबच मे देख की समस्त सामाजिक, वार्मिक, साहिरियक, राजनीतिक बादि सस्वाओं को भारत के खिक्षा नत्री तथा प्रधान मत्री आदि से अनुरोध करना चाहिए। माया है सब के सम्मितित प्रवर्तों से माया-नीति मे बबोबित परिवर्तम हो सकेवा । नवदीव

> (इरि बाबू कवल) महाबंत्री, हिन्दी व्यवहार संबठन डी-३४, बावय एक्सर्टेसन, जाव

## वैदिक धर्म है मुक्ति दिलाने वाला

वैदिक वर्मवासानीन जब बन्दर, रसना राहो न गुण वक्षान होवे। बाषार इसदा वेद है ईश्वर वास्ती, मन वचन ते कर्म समान होवे। एकता न्याय ते समता दा पाठ बसे, भावें हिन्दू ते बाहे मुखसमान होते । वर्ण-जाति न जन्म तो मनदा ए, श्रुम कम दे नाम कल्याम होवे।

> भारमाभनर न कदेवी नरदी ए, सच्चे झान वी गष्ठ दिव्हाण वासा। वही पासेमो पई आवाज आवै, वैदिक वर्ग है मुक्ति दिसान वाला॥

कुरानी कहद वो तीचे बास्मान रहवा मुस्लिम सतवें बासमान निवास करहे। कोई पूर्ति बना अवतार मन्त्रे, मन्दिर, मस्बिद हे वित्र-हरे पा लडदे। गुरुवन ने पासा है जोर बाढा, इक दूवे तो राहो कुराह कर है। सबस्थापक को हरवा बस्दा ए, उसवे मुखादा नहीं जो नान करते।

> वेद ज्ञान जहे बेम तों पुस मोड़े, भौरासी संसमित चनकर हो बान बाका है नहो पासे वो पर्द बाबाच बावे, वैदिक वर्ग है युक्ति दिसान वाला ॥

बाबो जापनी विच मस्त प्रसमस्त होके, बन्दा मुलिया कर्म ते चर्म नू प्रस । पार्टी बाबी बुद वर्बी ने वर कीता, बन्दा भूतिया इज्यत ते धर्म नू शवा। इट द्रिक नी मैरी वे सक्य नासा, बन्दा मुक्तिया अमें वे मरहम मूं अख, चढ़दी कता विज्ञान वी केंब बन्दा, बन्दा भूमिया देशवर वे करम नू प्राप्त ।

> क्या बन्दवी बाक्त न वजे बन्दा, ऐटम हाइड्रोजन है पाहे बनान वाला ॥ बहों वासेयो पर्द भावाज आने, नैदिक वर्ग है मुक्ति दिलान वासा ।।

> > —इरबन्स साम बना' नलिक एम-२१ बैस्ट प्रदेश-जनप, नई विल्ली-११०००

समीक्षा-

## वैज्ञानिक वैदिक चितन

(भाग दितीय)

सेलाम प्रो० प्रताप सिंह, समीसक डा॰ विकाय द्विवेदी, प्रकाशक सार्थ कुमार सप्ता (रजि॰) किस्मचे, विस्ती ६, प्र० तिथि राम नवनी १६८४ पृ० स० (६४, सुस्य ड० २०० मात्र।

समय-समय पर वैदिक जीवन-पड़ित और चित्तन-मनन पर भारोप नगाए जाते रहे हैं कि यह बीवन न केवल बटिल तथा ट्रेंबर है प्रचित् समृतं प्रसहब प्रोर प्रवे-ज्ञानिक भी है। इन भारोपों से वेद भीर वैविक जीवन की महिमा तो कम नहीं हुई हो भी नहीं सकती क्योंकि यह लिय जात नहीं परमात्मा प्रदत्त है। इसके विपरीत बारोपकारी धपनी ही प्रज्ञानता से स्वय विकृत-विनष्ट हो गए। प्राचीन काल के बीड कीर पाज के बुद्धिवादी दोनो ही इसके बीवन्त प्रमास हैं। बाबुनिक यूग 🕏 ग्रन्थतम दूर द्रष्टा भीर दिव्यद्रष्टा मुहर्षि दयानन्द ने गुरु के धादेश से भारत-मूसि से लुप्त होती वेद-वाणी का सहार कर मीतिक बाबी विश्व को चमरकत कर विया, कुण्यन्तो विषयमार्यम्' की धूम समादी। तदसीदासत्वनार-वोद्याकान्त विवित्ति जारतीय चेतना भौतिक विज्ञान प्रदक्त जोनों के पीछे ही जानती रही और बाज भी सपनी बास्या के उत्स भन्यत्र कोचरही है। प्रस्तुत पुस्तिका में प्रो॰ प्रतापसिंह ने शायुनिक वैज्ञानिक विसन के नाम पर चल रही ज्ञान की विविध बाराओं से साक्षात्कार करने के बाद अवताया है कि साज का जीवन तीन एव-णाधी सोक पुत्र, विश्त के नारों धोर चनकर कार रहा है और यही तीनो एय-साए ससार में संघर्ष तथा संशान्ति के कारक है। (मन काम, कामना पु० १७)

दूसरे प्रध्याय धर्म वर्णाश्रम उपा

वैदिक वर्ष सद् कोर स्ट्रह कमें है। जिन नियमों के बालार पर यह लुप्टि कारक हो रही है तथा किन नियमों के बालार पर इस तनार का नवालन धाबि हो रहा है, उन नियमों को यम कहते हैं। (पृ० १८) वैदिक जीवन पूर्णत वर्ष पर बालारित जीवन हैं। हसके चार करा यौर चार हो बाल्य हैं। यह वैज्ञानिक स्थवस्था हैं। इसी से बालव जीवन ये प्रमुद्ध और नि बेयक की प्राप्ति हो सकती है तथा इसी से बालविक सीवन में सतुलन बना रह सकता है।

सना में लेखक ने बताजा है कि 'बमें' का

'भूत्यु पुनर्जन्म मोक्ष' तथा शिक्षा-विचा' एव 'यज और शान्ति' के धन्तर्गत सम्बद्ध विषयों का बड़ा सूक्स, सरक और बोधगम्य विवेचन प्रस्तुत किया गवा है। प्रो० प्रसाप सिंह के लेखन की सबसे बडी विभेवता जो इस पुन्तक में खर्वत्र दिल पबती है वह है सादगी तथा ताअगी। नेसक ने इसमें धपने ज्ञान का प्रदर्शन न कर उसकी सामाजिक उपयोगिता पर दृष्टि रकी है। इससिए इस छोटी-सी पुस्तिका के जरिये भी उसने वैदिक साहित्य पर धनिषकारियो द्वारा लगाए बाने वाले धारोपी का वितम्र किंदु बेबाक उत्तर दिया है। इसी'लए यह पुस्तिका पटर्न बाही नहीं सप्रहणीय बन गई है। पाशा है राष्ट्रवादी भारतीय जनना इनका हार्दिक स्वागत करेगी।

#### प॰ भूदेव शास्त्री का निधन

बाबमेर स्थित महर्षि दयानन्द निर्माण न्यास के पूर्व मन्त्री भूदेव शास्त्री एम ए एम एड सिडाम्न शिरीमणि (६१ वर्ष) का हाल ही में हृदय गति रुक ज ने से स्वर्धवन्स हो वदा। प० भूदेव जी एक प्रकार विद्वान मोजस्त्री वक्का और मिश-न्दी कार्यकर्ता वे । उन्होने मार्थ सिद्धाती का विशेष प्रध्यवन गुरुकुल वृग्दावन मे किया भीर सन् १६३ = मे वह स्नातक मेरे साम ही हुए थे। बसवन्त राजपूत कालज भागरा कैन्द्रीय हिन्दी सस्यान श्रावरा धीर पठ जियासास ट्रनिंग कासक स्वामेर में वे प्रीक्स रहे। उनकी यो बना श्रार्व साहित्य का प्रकाशन भीर भारत शका विदेश में प्रकार करने की बी। र्श्वकुर दिन्दी धीर वशेकी शीवों जानाओं

में में निकाल से। प्रभार धीर न्यास के कामों के उत्तर पारत के प्रशेक समास्त्री में कथा, यह नेजो धीर भाषायों के द्वारा ने प्रक कार्य कर रहें थे। शक्तिक कर से ने पार्यसमान के लिए सर्वाप्त से। उनके निवास से प्रायंत्रमान की सहसी स्रायं हुई

उनके पीक्ष उनकी पत्नी व वज्ये है। बज्ये सब बीम्य एवं कार्यरत हैं केवल एक शिक्षिकाएम एं बी एक कम्या का विवाह होना केव या। मनवान उनकी स्थारमा की सह्याति व परिवार को सार-वना प्रवान करें।

> बहादत्त स्नातक आरतीय सूचना धना (रिटायडं) सबै॰ प्रैस एवं वनसम्बद्धिमार्क समाहकार

#### वेद मे परमेश्चर (प्छरका क्षेप)

चुकि ईश्वर की पुरुपार्थ करने की भाजा है तथा कोई भौक वाले भीर देखने की इच्छा करने वासो को ही कोई चीज विश्वासकताहै। उसीप्रकार दुव्टो को वष्ट करने के जिए प्रयत्नशीस ईश्वर प्रार्थी ही चाणक्यादि की तरह नक्सतर पाता है। जैसा कि ऋग्यद क सन्त्र इन्ने जिष्ठि भ्रष्तुरः । भ्रषःनन्तुं भ्रशःमा । क्रुष्ट न्दोविष्यमार्थम् । संभी विद्यंका थटः बनाने हेसु दुष्टों को जीतन दूर करन "एट करने का स्पष्ट आदर हं। तभी हम स्व को भेष्ठ बनासकते हैं। क्बोकि एक स्वतन्त्र दुष्ट पापी अनको को विगाह सकता है अनिवनत व्यक्तियों को दक्षा बना सकता है। धत छसनो दूर करन. पराजित करने धौर नष्ट करने में ससार का धनन्त उपकार होता है। तभी तो देव वयानन्द अपने मन्तव्य मे घोषस्या करते है, वर्मात्वा चाह महामनाय क्यो न हो उसके सर्वदा डरते रहना धीर पापी चाहे चक्रवर्ती सम्राट्ही क्यो न हो सर्वदा ही उसका अप्रियाचरका करते रहना।

सव हम मन्त्र के प्रतिम चरता पर स्राते हैं। 'सन पर्ववति दुगासि। वि वा नावेव सिन्धु दुरितात्पनि ।' पर साने के

वह शीझकारी परमत्या 'स्रान' सम्रशी होने से हमें शोझ ही निश्चित स्प से समझ इस करत, रोत, 'गोक, उसकत पीया, 'विद्या, विद्यासियो साथि से समुद्र की वैसे ही सफलता पूर्वक पार कर देता है। मेरी कि बड़ी नदी या समुद्र को हम घट महाज्य साथी नीकाफो से सुप्तका से पार कर साथे हैं। साथ ही यह परदेक्वर इस समार में प्रोत्त पुलिस के ही दुसे पार मुग्न थीर सामन्द्र में रखता है। यो साथा मा गरक्य व्हर्षिक सहते हैं 'युक्त एक क जानने से ही सारा जाता है। सब मा जानने से ही सारा जाता है। साथ मा जानने से ही सारा जाता है। उपियान देवाला है। उपियान (रोमेक्स को आनो साथती है। से साथ साथवार हम साथती है।

इस प्रकार हम देवने हैं कि सस्तार विश्व में प्रहु-तासमा प्रकरण में जाते तथा में प्रहु-ता विश्व दी है बहुर रह गल्म के जुड जाने से और भी उससे चार बाद समाये हैं। इससे बिमा सस्त्रम में सन्व्या इस कुछ प्रमुख ही रह जाती है। या करिय में प्रसाद सर्वापित की सन्व्य ही प्रयानी वाहिए।

> विन्देश्वरी सिंह केन्द्रीय बस झायोग ५०२ CWD सेवा अवन, रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली-६६

#### पजाब "समस्या समाधान हेतु ११७० का ऐवार्ड लागू किया जाये"

'पजाब केसरी दिली में छवे १० अप्रैन १६८५ के सपने लेख की प्रतिनिधि नेजाते हुए प्रो० क्षेत्रसिंह ने प्रधान मन्त्री रक्षा मन्त्री गृहम-त्री शिक्षाय-त्री तथा सभी राज-।तिक दला के नदाबा, ची० घरए।सिंह श्रीमोर रजा दसाई, श्री लानकृष्ण भावानी, श्रा मधुदण्डवते श्रा शरद प्यार, आ एन०टी० रामाराव श्री इन्द्रजत बुप्त मादि को पत्र लिसे है। सभी नेतायों से अपील की है कि हरि बारमा के साथ हो रहे धन्याय को धन्याय माने धीर धकासियों की नाजायक खुरा मव श्लोडकर देश की एक्ता को बचाने के लिं उपवादियों यौर राष्ट्रज्ञोहियों से सक्ती स निवटें। स य ही उन्होने यह श्री कहा है कि राजनीतिक दशो ने पजाब क मामन को सकालियों से सौदेवाजी करके

उसे मूत बनाकर श्रद्धा कर दिया है।

यदि १६७० गा भैसला लागू करन का दस गावन तिक दनो में नहीं है नो व मेंच में से निकल जाय धीर सभी दलालों भीर गाव का लागे पर को व में वहां भैसला करें कि उनको प्रवास ने खाना है या हरियाका में काशीगढ़ धीर पाविस्का धोहर का फैसला भी बहा की जनवा न्य करें।

प्राठ शरसिंह प्रधान बाय प्रतिनिधि सभा हरयाचा व हरियाला रक्षा वान्नि;

केदारसिंह श्वाय कायालयाज्यक प्राय प्रतिनिधि सभा हरयासा सिंडान्ती मवन दयानन्द सठ, रोहतक

#### श्रार्यसमाज, परमानन्द बस्ती बीकानेर का वाषिक निर्वाचन

सर्वं सम्मति से दिनाक ७-४ ८५ को भी समरनाव भी की प्रधानता में सम्पन्न हुन्ना। सन्तरन सभा के पदाविकारी एव सक्तम निम्नक्षितित निर्वाचित हुए.—

१ प्रधान-श्री समरनाथ बी २ वरिष्ठ उपप्रधान-श्री डा॰ रवीन्द्र श्री कुलभेष्ठ ३ उपप्रधान-श्रा॰ शिवनारायण सार्व ४ चप प्रचान श्रीभती सुभाग मुखी ४ सन्श्री धर्मपाल ६ उपस-त्री-श्री हरमगवान भी ७ उपमन्त्री श्रीमती कैंसाध शर्मा ८ कौषाध्यक्ष श्री सेठ छुगनलाल भी आर्थ ६ लेखा परीक्षक श्री हरवश भी बस्खी।

(धर्मपास) मन्त्री

### समाचार-सन्देश

#### श्रार्यसमाज गांधीनगर का श्रीमददयानन्द वेद विद्यालय २१ वां वार्षिकात्सव शोभा **उद्घाटन समारोह** यात्रा का श्रायोजन

कार्यसभाज नाभीनगर, दिल्ली का २६ वा वार्षिकोत्सव ४ म. से १२ मई रविवार तक्ष धूमधाम स मनाया जा रहा है। इस क्षम अवसर पर १ मई रवि-बार को छाय तीन बजे एक शोमायात्रा कैलाधनगर, महावीर वाटिका से प्रारम्म होकर साम ६ वजे प्रार्थसमाज कृष्णनगर तक पहुचेगी। ६ मई से १२ मई तक, बेद पारायसा यज्ञ, कथा, भाय महिला सम्मे-बन, मानवता सम्मेलन एव राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का भागोजन होगा। ग्रतिम दिन १२ मई को ऋषिल गर होगा। समस्त कार्यक्रमो से घायों का सहयोग प्रविनीय है।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजी है, विशेषकर यमुनागरकी समाजो से निवे दन है कि शोमायात्रा में सोम्मलित होकर ग्रार्थसमाज की शोभा को बढायें।

> श्यामसुन्दर विरमानी मन्त्री

#### प्रतिभावान् छात्रों के लिए सुश्रवसर २०० रू० मासिक छात्रवात प्राप्त करें

गुरुकुल सिह्पुरा-रोहतक मे महर्षि दयानन्द के मन्त्रम्यानुसार ग्रावं पाठविधि से अध्ययन करन के इच्छक छात्रों के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है। ब्रध्ययनरत १० छ।त्रो को २०० व० प्रति म स छ।त्र-विल वी जावेगी। प्रवश के लिए न्यूनतम १० वी कक्षा उतार्ण होना बावस्यक है। आत्रों के लिए महर्षि दयानन्द विज्व-विश्वालय राहतक की भाग विभाव की विशारत, शास्त्री एव भाषाय परीक्षाए देने की भी व्यवस्था रहगी। आत्रों को वैदिक कर्मकाण्ड तथा मार्थ सिदान्ती का ममञ्ज्ञ बनाया जायेगा तथा वस्तृत्व कला एव लखन की विशेष शिक्षा दी जायेगी। गुरुकुल के धनुषासन एवं प्राचार सहिता का पासन करना छात्रों के लिए प्रनिवाय हांगा । वैदिक सिद्धान्तो पर निष्ठाबान् एव वैराग्यकान् छालो को प्राथमिकता वी बाबेसी। खात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। छात्रवृत्ति के इच्छुक छालो का भावेदन-पत्र ३० जून तक भाना भनिवार्य

श्राचामं द्विवराज सस्कृत महाविद्यासय नुक्कृत सिङ्गपुरा-सुन्दरपुर रोहतक हरिवासा

# गोतमनगर दिल्ली में

**बापको यह जानकर ब्रस्यन्त हर्व** होता कि सापकी प्रिय सस्या श्रीमद्दया-नन्द वेव विद्यालय गैतमनकर मे २१०० वर्ग फूट मे जनी सब्य बज्जवासा का जद-घाटन धार्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् धार्य नेता श्रद्धेय श्री स्वामी श्रोजानन्य सरस्वती बारा ॥ मई १६०॥ रविवार प्रात ५-०० बचे सं १२ वजे तक सम्पन्न होना।

इसी पूनीत सबसर पर शी नामा जिलोक बन्द जी वैश्य द्वारा बनवाये गये १५ 🗙 १५ फुट मे निमित्त चार कमरो का उद्घाटन भी सम्पन्न होना । भीर इसके साम साम नेद विद्यालय की स्रोर से नव प्रकाशित ऋग्वेद का विमोचन भी होगा।

१२ से १ बजे तक ऋषि लगर की व्यवस्था है। झल झाप समय पर वचार कर कार्यक्रम की शोभा बढाये, और ग्राधिक से ग्राधिक शन्न धन का दान देकर पूष्य के भागी बने।

निवेदक

प्रसान सयोजक नौ॰ दिलीप सिंह रामनाय सहगल

मानामं--- हरिदेव

#### हैशास्त्री पर विशाल शोभायात्रा

वैशासी, के पावन पर्व पर हिन्दू विकास परिषद् शकूरबस्ती दिल्ली-३४ के तत्त्वावधान म विद्याल श्वामागात्रा निकाली गई जिसमे हजारा कोयो न भाग जिया।

इसने १५ वस्तियों के द्विन्द्र मन्तिरी के सगठकों ने राष्ट्रीय व हिन्दू एकता की शपय सी व जनूस निकासा ।

केन्द्रीय धार्य युवक परिषद् के बुवकों तथा महारानी आसी विगेष की युवतियो ने इस प्रवसर पर गतका, तलवार, बाठी जुडोकराते के सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन दिखाय ।

> चन्द्रबोह्न सार्थ मनाददाता, युवा उद्वीष

#### श्रावश्यकता है

दिल्ली आय प्रतिनिधि समा के कार्यासय के लिए एक सुवोग्य विद्वान् की ब्रावस्थकता है जो वेद प्रचार की व्यवस्था में समयोग दे सके । दिल्ली का गौनोलिक बान रसने वाले महानुमाव को वरीयता दी बायेशी । वेनन योग्यतानुसार सीध सम्पर्क करें। बहाय जी दिल्ली बार्य प्रतिनिधि समा

#### बधाई स्वीकार करें

मावर नगस्ते।

बादरखीय सम्मादक जी,

''ब्रावंबन्देश' का ग्रायंसमाज स्था-पना दिवस विशेषाक मिला। विशेषाक वास्तव मे सुन्दर एव प्राक्ष्यंक था । मुक्त-पुष्ठ पर ऋषि दयानन्द काचित्र अस्यन्त सुन्दर एव मन मोहक था। इसमे सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक वे । सम्पा-दकीय लेख का तो बयना बालग ही महत्त्व

जब से धापने इस पत्र के सम्पादन का कार्य भार सम्भाता है तभी से पत्र की वृति में बान बाई है तथा यह बढ़ी तीय वित से भारती सोकप्रियता की और बढ रहा है। आसा है कि यह पत्र सीध्र ही एक सशक्त एव प्रभावशासी पत्र का रूप वेबा । विशेषाक की सफलता हेत वचाई ।

- राजकुमार बावं ग्राम पो॰ दुल्मागढ गोहाना सोनीयत)

जब से धापने धार्गसन्देश के सम्यादक का कार्यभार सभावा है, पत्रिका उन्नति की झोर सप्रसर है। महर्षि दया-नन्द बसिदान शती स्म रिका धार्यसमाज स्थापना दिवस, महात्मा हसराज दिवस विशेषाक सम्रहणीय व उत्तम लक्षो से युक्त है। 'मार्यसन्देश' का मविष्य निश्चित ही बापके कुशत खम्पावन में उज्जनस

> चन्द्रमोहन द्यार्थ प्रेस सचिव

विद्वद्वर सुषाञ्च जी,

में पिछने धनेक वर्षों से साप्ताहिक 'खार्यसम्बद्ध 'का नियमित पाठक हु। इसमे बेद, उपनियद्, बाह्याम संयो तथा बजादि क सम्बन्ध में दुक्द विषया की जिस सरल एव सुबोध गैली म लिखकर पाठको तक पहचाया जाता है वह सर्वेचा श्रवसमीय है। यो ता श्रायसन्देश के सभा म क पाठको का ज्ञान बधन करते 🖁, लेकिन इसका श्रायसमाज स्थापना विवस विशेषाक विशेष रूप स सब्रह्मीय तथा पठनीय है।

एक पत्रकार के नाते में वह विश्वास के साथ कह सकता हू कि आर्यसन्देश का सम्पादकीय एव विवयनयन स्तर दिमानु-विन उत्कृष्ट हो रहा है। युक्ते बाखा शीर विकास है कि धापके सम्पादकरण में वह साप्ताहिक पत्र और वी उत्कृष्ट होता।

नेरा एक सुम्हान है। देवो, उपनिवदो, बाह्यस्य प्रन्थीं बादि से कोकहित की क्याएं जी धार्यसन्देश में प्रकाशित होनी

> धानार्व वयवधी का भूका स्वतन्त्रादक 'गूनीवार्ता" नई विस्ती

#### निर्धन छात्रों की सहायतार्थ पस्तक संग्रह श्रिभयान

केन्द्रीय सार्थ युवक परिषद् विल्ली प्रदेश के निर्धन छात्रों की सहायतार्थ १२ वी कक्षा तक पुस्तकें तथा पुस्तकालय उप-बोमी उत्तम साहित्य संग्रह ग्रमियान चला-

परिषद के कार्यकर्ता घर घर जाकर धैलिएक पुस्तकें एकत्रित करेने तथा पिछडे व कमजोर वर्गके विद्याधियों से सम्पर्क करेंगे। युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे निवंन विन्तु प्रतिभाशासी छात्रों को नई पाठ्य पुरतकों भी उपसब्ध कराई अधिंगी।

धार्य जनता ने धनुरोध है कि प्रगर इस रचनात्मक कार्य ने सहयान देना चाहते है तो हमारे नजदीकी कार्यकर्ता से सम्बद्धे करें।

> पत्र व्यवद्वार एवं सम्पर्क हेत् पता-चन्द्रमोहन ग्रार्थ ७०४८ बेरी बाला बाग, दिल्ली-६

ग्रार्य जनता से ग्रंगील

#### श्रार्य शिशु मदिर के लिए दिल स्रोलकर दान दें ५

भार्य निदान्तों तथा वैदिक विचार वाराम्यो का बच्ची की जान कराने के निए प्रार्थेसमाज रमेश नगर में "प्रार्थ शिशु मन्दिर" की विविदत् स्थापना दि॰ १-४-८६ से की वा रही है। आये वहिन भाइको से अपील है कि इस नव स्थापित की जाने वाली सरका के लिए दिल सोल-कर दान दें।

कृपया साम दान सार्थं शिक्षु मन्दिर के नाम से बनादेश, नकद वा चैक द्वारा धार्यसमाज रमेश नगर, नई दिल्ली के पते पर मेजें।

मन्त्री, धार्यसमाज रमेख नगर, नई विल्ली

#### प्रवेश सूचना

जबदगुरु ऋषिवर दबानन्द की जन्म-स्थली टकारा में 'श्री महर्षि दयानन्द स्मारक दुस्ट टकारा" द्वारा सचालित धन्तर्राष्ट्रीय उपवेशक महाविद्यालय 🦠 नये मत्र के लिए महान् उद्देश्य वाले विधा-वियो का १ जुलाई १६८६ स प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश की सन्तिम तिथि १५ जुलाई १६८६ है। चार वर्ष के प्रशिक्षण समय ने उपवेशक विद्यार्थियों को ट्रस्ट की तरफ से जोजन, धावास वस्त्र व पुस्त-कादि समस्य धावस्यक वस्तुए नि.शुरूक त्रवान की जाती हैं।

प्रवेशानी की योग्यहा कम से कम हाईस्कूल (मैट्रिक) उत्तीर्ग और १६ से २४ वर्ष की बादू एवं स्वस्थ होना सनि-वार्य है प्रवेश के इच्छक स्नतिसीम निव-निवेदक नावसी नि सुरक गगायें।

हरीयोम् विदान्ताचार्य उपाचार्यं उपवेशक महाविद्यास्य टंकारा रावकोट (सीराष्ट्र)

#### गुरुकुल किशनगढ़ घरेडा का वार्षिकोत्सव

महेत्रवद २० ग्रंपन (सनिवार) का बातवा वार्षिकोस्सव ४५ मई को वर्षा क्षम वाम से मनाया वायेगा । गुरुकुन प्रविष्ठाता श्री ब्रह्मचारी दयांवीर ने ■ताया कि हरियाणा विकासहेन्द्रगढ के विश्ववे क्षेत्र में स्थित इस पुरुष्ट्रण में नहा वारियों को नि चल्क शिक्षा सुविधाए दा व ती हैं तथा क्षात्र वास व्यायामशाला बोधासा यज्ञशाला की भी समृत्रित व्य बस्या है ।

वार्विकोत्सव के उपसदय से बुद्धूक में महासय हीरालाल गुरुकुल किशनबढ़ वसेडा शिक्षा समाय-सुधार राष्ट्र रक्षा सम्मेलनी का बाबोजन किया ग्या है जिनमे बाय समाज के उज्बकोटि के संयासी विद्वान मजनोपदेशको क प्रतिरिक्त के ति एव प्रान्तीय मंत्रीय राजनता शी पदा

> च द्रमाहन संय सवाददासा युवा उदघाव (पाक्षिक) मायसमाज कवीरवस्ती दिल्ला ७



#### प० सत्यव्रत सिद्धान्नालकार स जिज्ञासा

महोदय

धायस देश के ७ धप्रल के सक म प० सत्यवत जी का ⊅ला विचार सजक है। उनसे निवेदन है क्रुपया वे प० दान ब धुकी द्वारा सकतित स्वामी दयान द की बजात जावनी का प्रामाणिकता के सम्बाध से कित्रस्य उपलब्ध करें सान स्पष्टकर कि क्या उड़े इस ग्रंथ का वह कप माय है जो सावदेशिक मे वारावाही प्रकाशित हुआ। वा प्रमवा वह जो सना कार स्वामी सञ्चिदानन्द जी द्वारा सम्पा दित होकर प्रकाशित किया गया न्योकि ग्रव अज्ञालकीवन के नय परोकर अव इसके बतमान रूप का भा नगोधित करने जारहे हैं

> भवानीलाल भारतीय क्षर= स

#### वार्षिकोत्सव

ग्रायसमाज तिसकतगर (पo) नइ लिली १ का बार्षिको सब ५ मई १६८५ से १२ मर्ट १६८५ तक हो रहा है जिसमे यज्ञ तथा वेदकवा प० बगपाल सुवास जी की होगी।

विनेष समारोह १२ म<sup>र -</sup>विवर प्रात ७३० से १०० बच्चे तक । वस्ता

१ औ रामनोपाल जी शासवाले

सभा दिल्ली

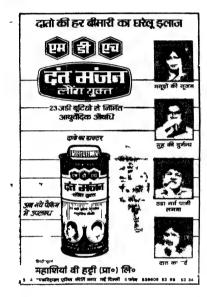
- प्रयान सावदेशिक ग्राथ प्रतिनिधि समा २ श्री स्यवेव जा प्रधान विल्ली आय
- प्रतिनिधि समा ३ महाशय घमपाल प्रधन ग्रंथ के दि
- ८ १० त्रमपास की महासात्रा दिल्ली भाय प्रतिनिधि सभा दिस्सी
  - श्राय वन्या विद्यालय शिक्षा माग भिवाना

#### प्रवश सूचना

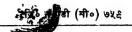
रन एव प्रभाकर का (केवल क साम्रो के लिए) प्रथम जुलाई १६=५ से प्रवेश बारम्भ है। यो यंव अन्त्रभवी अर्थ्या नामो की व्यवस्था है। इच्छक छात्राए सम्पक करें। सनी शक्तक या विद्यालय (हरिय पा)

घरेलू उपयोगी बात

- जल हए धवंपर गोल के तल को दिन मे रोज त न चार वार मालिंग करने पर जलन कद नान च न्निमे टीक हजता है।
- 🗆 हचीदातक चीजयदि पील पढ गई हो तो उन की शे के फ स म रक कर बुप म रखद फिर से स्केश
- 🛘 यदि पद्मापर स्थाही के दाग प हो तो थोडा सा दूव डालकर रगडि स्वाही साफ हो जायेगी।
- 🛘 ६० जीको लाम रम देने के सिक्ट् शाबुत शास भिष को बीब निकास कर एक बटा शानी में पड़ा रहन द । ब्रव इस पानी को सन्बी ने ठावें ब्रक्तीं का रन विल्कुल बाक्ष हो वार्वेगा ।







## श्चर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायम्र ग्रिषिनियम जी० ६० के भाराबेत कर मुक्त होगी।

सारा बात चैक/मनीमार्बर/बेक कृष्ट हारा मत्री माता चन्तनदेवी आर्थ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४= के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

#### निवेडक

राक्त्मोपान तालवाले पूर्ववेष महासव वर्गपाल प्रोत्तप्रकार आर्थ सरस्कर विकित्सालय प्रवान विक्ली प्रवान कल्पी एवं प्रवान शाल्याल धार्व प्रतिनिथि प्राय केन्द्रीय प्रशास्त्र कुलीलाल प्रतिल समा समा समा केरिल दुरु

सौजन्य से महाजिया ी हट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, बौद्योगिक क्षेत्र, नई विल्ली-११००१

## केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- □ क्या ग्राप ऋषि, मुनि तपस्वी, योरिक्के वाली पढ़ना बाहते हैं ?
- चा आप वेद के पविक्र ज्ञान को सरल एव मधुर शक्दो में आनना चाहते हैं?
- क्या मान उपनिषद, नाता रम्मायरा बाह्यसम्बन्ध का माध्यारिभकः सन्देश स्वय सुनना भौर अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- क्या ग्राप ग्रपने शूरवीर एव महापुरुषो की सौर्य गायाएँ जाननाः चाहेंगे ?
- क्या झाप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से झात्मचेतना जायुन करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो आइये आर्थसन्वेस परिवार में सामिल हो जाइए। केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढते रहिए। साम ही वर्ष में बार अनुपन भव्य विशेषाक मो प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० राये भाजीवन २०० रपये।

प्राप्ति स्थान— आर्यसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली रासा केशरनाथ, फोन : २६९८३० वास्त्री सासार, दिल्ली-६





बूक्व एक प्रति . १० पैसे

वर्ष ६ अंक २६

रविवार, १२ मई, १६=३

मार्थं संबरसर १९६०८६३०८६

वैशास २०४२ दयानन्दान्द — १६१

# देश को अखण्डता के लिए आर्यो आगे आओ

—रामगोपाल शालवाले

आर्यसमाज मोतीबाग के वार्षि-कोत्सव के धवसर पर भाषण करते हुए श्री रामगोपाल ज्ञानवाले ने कहा इस समय राष्ट्र में भनेक विषम सम-स्याये मुह बाये लडी हैं। विदेशी ताकते हमे कमजोर करने में तत्पर हैं। देख की अलण्डता को भी चुनौती दी जारही है। महर्षि दयानन्द के समस्त अनुबाइयों की इस समय

भीर भी कर्मठ शक्ति सम्पन्न होकर धाने बढना होगा । धभी बापने धीम व्यक्त लहराया । इस सुष्टि मे पर-मात्मा का व्यव सूर्य है, सूर्य झाता है सोते प्राश्मिमात्र को जगाकर अपने कर्त्तव्यों पर चलने की प्रेरणा देता है'। यह ध्वज हमारी सामाजिक नेतना भीर जागुति का प्रतीक है। भायों । तुम्हारी यश कीर्ति की पताका धाकाश को खती रही है। द्याज कही हम शककर या द्यालस्य में बैठ तो नहीं गये हैं हमें वर्ष में एक बार तो कम से कम झात्मा लोचन करना ही चाहिए। इतना आत्म विश्वास हमे होना ही चाहिये कि महर्षि का प्रत्येक शिष्य किसी से किसी तरह भी कमजोर नही है। जैसे आयों की परम्परा रही है.

हमारा भान्दोलन कभी ठडा नहीं पडा हमें कभी सामाजिक कुरीतियों के लिए लड़ना पड़ातो कभो देश की स्वतन्त्रता के लिए ग्राज देश की अखब्दता के लिए हमें फिर से धारी भानाहोगा। इस भवसर पर प० श्यामसुन्दर स्नातक प० यशपाल सुषाशुनै भी धपने स्रोजस्वी विचार प्रकट किये।

# भारत की जनता दंश को खण्डित नहीं होने देगी

#### आर्य नेताओं का उद्बोधन

आर्यसमाज करील बाग नई दिल्ली का विशाल वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व एक सप्ताह पर्यन्त श्री पः यशपाल सुभाशु की वेद कथा हुई। एक सप्ताह तक बृहदयज्ञ का श्रायोजन भी किया गमा। यज्ञ पर स्वामी रामेश्वरानन्द के अक्तिरस में भ्रोत-श्रोत प्रवचन हुए । प्रसिद्ध सगीतक भोनप्रकाश वर्मा ने प्रपने मधुर अजननोपदेश से बनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। भन्य युद्धशाला का उद्घाटन वार्षिकोत्सव में बर्गेक सम्मेलनों का भी भायोजन किया।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मे बिद्वान नेताओं वे अपने विचार व्यक्त किये। प्रविकास वक्ताओं ने कहा, पवाब समस्या के हुल के लिए प्रधान मन्त्री को सीघ्र कदम उठाने चाहिए। कांग्रेश की भारत की जनता ने राष्ट्र सुरक्षा भीर एकता के नाम पर वोट दिवे। बानन्दपुर प्रस्ताव को न मानने धीर उपवादियों के साव सक्ती से वेश धानें के वक्तव्यों से निर्वाचन के समय जनता का मनी-

बल रढ हथा था। भारत की जनता ने खुन से सनी घरती को पाकिस्तान के रूप में बटते देला वा धीर धव यह भीर ट्कडे होती नहीं देख सकती। जनता के मानस में उठती माक्रोण की सहरों को ताडकर नर-कार को चाहिए राष्ट्रद्रोहियों, उग्र-वादियों को सस्ती से कुचल दिया

दयानन्त्र वेद विद्यालय गीतमन्त्रर विल्ली में स्वामी भोमानन्द सरस्वती द्वारा एक अन्य बन्नशालाका उद्चाटन किया नवा। इस भवसर पर दिल्ली धार्य प्रति-निषि समा के प्रकार की सुर्वदेश की तथा प्रावेशिक बार्य प्रतिनिधि श्रवा विस्त्री के महासम्त्री भी रामनाव सहरक भी उप-

धार्वसमाज असोक निहार केन I जी नवनिर्वित **वज्ञशाला का उद्**वाटन हुआ । इस वज्रवाता का विशवि शासा पुष्पावेबी के पवित्र बान से किया बया।

#### जीवन निर्झर है

यह जीवन क्या है ?। निर्फार है, मस्ती ही इसका पानी है। सुस-दु स के दोनों तीरो से, चल रहा राह मनमानी है। कब फ़ुटा गिरि के भन्तर से, किस भवल से उतरा नीचे ? किस वाटी से बहकर बाया, समतल मे अपने की लीचे? निर्फर में गति है, यौवन है, वह आगे बढना जाता है। शुन एक सिर्फ है चलने की अपनी मस्त्री मे गाता है। बाधा के रोडा से लडता, वन के पेडो से टकराता। बढता चट्टानो पर चढता, चलता यौवन से मदमाता। लहरे उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पखताता है। तब यौवन बढता है भागे, निर्भार बढता ही जाता है। निर्ऋर में गति ही जीवन है, इक जायेगी यह गति जिस दिन। उस दिन भर जाएगा मानव, जग-दुर्दिन की घडिया गिन-गिन। निर्भार कहता है-बढे चली, तुम पीछे मत देशी मुडकर। बीवन कहता है-बढे चलो, सोचो मत होगा क्या चलकर। चलना है-केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है। मर जाना है इक जाना हो, निर्मार यह फरफर कहता है।

#### सत्संग वाटिका

ये सुविद्वास -- जो उत्तम ज्ञानी विश्वत + पारम् - सब धोर प्रवाह बाले यज्ञम् --- यज्ञ - श्रेष्ठतम कर्म को विते-निरे-करते हैं फैलाते हैं स्व + यस्त -मोक्ष को जाते हुए [वे] न प्रपेक्षन्ते[धन्य किसी पदार्थं की ] अपेक्षा नहीं करते ।

बाम् --[बरन्] बौ (ब्रौर) रोदसी--पृथिबी भीर भन्तरिक्ष पर भा रोहन्ति-पूरी तरह बारूढ होते हैं।

यह बात कभी नहीं भूलनो चाहिए कि यज्ञ वैदिकधर्म का प्रारा है। वेद सारा का सारा यज का विधान करता है, किन्तु यज्ञ का भाव वह नहीं, जो हमारे पौरालिक भाइयो या दूसरी के हृदय मे है। यज तो जीवन पदति का नाम है।

स्वय वेद ने कहा है ---यञ्जेन यसमयजन्त देवास्तानि धरमाति प्रवचान्यासन् ॥ [य० ३१।१६]

ध्यानी लोग यज्ञ के द्वारा यज्ञ का यजन करते हैं यही मुख्य धम्में है।

चन्म का धर्ष है---यतोऽम्यूब्यनि श्रेयससिद्धि स वर्म ।

जिस से लोकोन्नति एव मुक्ति की सिबि हो वह धर्म है।

भावार्थ यह कि जीवन को ऐसा बनाना जिनमे सम्युदयः चौमुखी उन्नति हो। जब एसा होना, तो वह यज्ञ बन जायेगा। हा, उस यक्ष में भी यज्ञ की भावना बनी रहनी चाहिए। इस भाव को वेद से इन शब्दों मे कहा है---

> वज्ञी वज्ञेन कल्पताम्। 'यज्ञ यज्ञ से सफल हो।'

ग्रवीत् धरमं करने के लिए प्रथमं का धवलम्बन नहीं करना चाहिए। धम्मी-नच्छान के खिए जब प्रथम्मं का प्रवलम्बन किया जायेगा, तो वह अधम्मं वन जाएगा श्रवस्मं काफल वस्मं यासुक्त कभी नही हो सकता। ग्रत जीवन को यज्ञमय बनाना चाहिए।

बहुत बोड सोग इस तत्त्व को जानते 81

एक बनी सपनी बिरादरी वाजी की इरवस्था देखता है । उस दुखदायिनी श्रवस्था से उसके चित्त में चोट नगती है। अपनी उस कसक को मिटाने के लिए वह कोई कारखाना लोल देता है और साव-धानता में इस बात की देखता है कि उसमे चनकी जिरादरी के प्रतिरिक्त और कोई साभ उठा न पाए । उपका यह कार्य शुभ है। बुकि उसने घन का दूसरों के लिए त्यान किया है। अस यह यज्ञ भी है। किन्तु यह विश्वतीकार यज्ञ नही बर्न् एकतोकार वश है। इस यश से, निस्त्रदेह

## प्रभु की प्राप्ति का उपाय

स्वामी बेदानन्द तीर्थं सरस्वती

स्वर्यन्तो नापेक्षन्त ग्रा द्या रोहन्ति रोदसी । यज्ञ ये विश्वतोधार सविद्वासी वितेनिरे॥

---মৃ০ পার্থা**র** 



एक वर्गका उपकार होता है, किन्तु इससे विद्वेष उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है, भीर उससे उस यज के दूषित होने की सम्भावनाभी रहती है। अख ज्ञानी सोग यज्ञ के रहस्य को समक्त कर सर्वभूतहित की कामना से प्रवृत्त होकर-

यज्ञ विश्वतीवार वितेगिरे । 'विश्वाधार यह का विस्तार करते

इसका एक कारख है--वेद एव ब्राह्म

ग्रम्भीने यज्ञका एक नाम विष्णु है। विष्णु का बर्च है व्यापक । व्यापक सर्व-देशी होता है, एकदेशी नही । एकदेशीयन मे सकोच है, सर्वदेशिता मे विस्तार है। तनी से सभी तन होने हैं। विस्तार से सभी प्यार करते हैं। ग्रत यज्ञ का विश्व-तोबार होना स्वामाविक ही है।

ऐसे ज्ञानियों के मन से अपने पराये का मेद नष्ट हो जाता है। उसका सिकात

सम निकः परी वेति यलना सञ्चलताम् । 'यह अपना है, यह परामा है ऐसा

विचार क्षुद्रहृदय वालो का होता है।' उदारबरिलानां तु बतुर्वेव कुटुम्बकम् ।

'उदाराक्षय महाशय के लिए तो

सारा ससार निज परिवार है।

शर्मात् स्व-पर-निरपेक होकर वे सब का हित सामते हैं। पापियो तक का पोषण करना उनका बादर्श है।

कई सोग धूर्ततावश अपने आपको उदार सिद्ध करने के लिए परायों की तो दामादि के द्वारा सहायता कर देत हैं, किन्तु प्रपनो की नहीं करते। वे दम्भी हैं न्योंकि उनके दान देने में कीति की ल'लमा खुपी रहती है। ग्रारमीयों की दानादि देने से कीर्ति की सम्मावना कम होती है। ऐसे सोन बाजिक नही है, वे तो पनी हैं, व्यापारी हैं। ऐसा व्यागरी कभी सफल नहीं होता ।

समयं होने पर जो कुछ भी नहीं देता, वह कृपसा है।

जिस का यज सर्वतोचार है उसका सर्वत्र बादर होता है। प्रभु धपने ऐसे बनुरानी के बिए परमयुव-स्यः (भोसा-

नन्द) का द्वार कोश देते हैं। निष्कान भाव से विश्वासीबार यह का विल्लार करने वाने ऐसे महात्वा को बुक्ति-प्राप्ति के सिए बन्य किसी साथन की बावस्यकता नहीं हुमा करती । बहु तो भ्रमायास ही बरीराध्यास से उत्पर चठकर अन्त करह की देखकर, उससे ऊपर उठकर औ (प्रकाशमय धारमा) को प्राप्त कर लेता है। इस माय को गन्त्र के दूसरे बरण में व्यक्त किया है --

वाद्यां रोहन्ति रोवसी। घववा वो कह सकते हैं कि उसे मुक्ति प्राप्ति के साथन धनाबास प्राप्त हो जाते हैं। वह पृथिवी == कम्में विस्तार, बन्त-रिश - प्राप्त करता के प्रसाद तथा थी--धारमा के साक्षात्कार में सहब से बारूढ़ याता है-

मा को रोहन्ति रोक्सी।

श्रवनवेद [४।१४।३] में इस प्रिनी थावि पर पाक्त होने की बात स्पष्ट करके कही वर्ष है---

पुष्ठारपुणिक्या ब्रह्मन्तरितामा-स्तृतन्तरिकाव् विवनाष्ट्रम् । विवो नाकस्य पृष्ठातस्यक्योंतिरकामहब् ।

पृथियी की पीठ से, अर्थात् वहिर्मुक बतासे उठकर में बतरिक्ष (बन्दर की धवस्था) को बारूड हुमा ह, मर्वात् मेरी वृत्तिया प्रतपुंच वृत्ति से मैं ची (ज्ञान सोक) को प्राप्त हुवा हु (बी=ज्ञान की धवस्या = बु सामाव की क्या)। देदीप्य-मान धानन्द को मैंने प्राप्त किया है।

सामारण सामको को वे सीडिया धवस्य चढनी होती हैं। किन्तु को सर्वेद्यो-भार यज्ञ का विस्तार करते 🖁, वे---

स्ववंग्तो नापेक्सले

'मुक्तिकी प्राप्ति के सिए किसी साधन की शपेक्षा नहीं करते।'

योग साधन

बूर्यानमस्य तंतीव्याचर्या हुववं च वत्। मस्तिकारूम्बं त्रैरयत्पवमानोऽवि हीर्वतः ॥ तद्वा समर्वत किरो केनकोसः

तपुष्टियतः । तरप्राक्तो सनिरसति किरो ससमयी मनः । पाहिए। विक १०११।२६ २७]

मस्तिष्कात् कर्म्न -- मस्तिष्क वे क्यर

रहने वाचा वस्तान समर्ग -वित्र सित्रवर्ग प्रचल बोबी

बस्य मूर्णानम्-इसके [-धपने] मूर्जा को मिन को == दिमाय की ] च हुवबम्--बीर हुदब को

वंशीमा—एक रस शीकर = बोड़कर बल्---वत [शास की] चीचंत बांच-सिर के ऊपर की प्रैरवत्-प्रेरित करता है। धवर्षेस -निश्चल बोबी का तत् चिर'-वह चिर, सीवेस्वानीय

समुभ्यत ---१कट्ठा किया हुया देवकोश -देव-कोश [दिव्य खुवाना]

बत् विरु-कड सिर की विशेष-स्वानीय प्रम्यास की

श्राम् × रक्षति--स्य तरह रक्षा करता

श्रमो सम्मम्-सीर सन्त श्रोचन मन -- [ और ] मन [ भी रक्षा करता है।]

इन दोनों नभी में सक्तेय से बोब की विभिका उपवेस है। बोम के जिए यहाँ कई बावश्यक निर्देश दिए वए हैं---

१- मूर्जानमस्य संतीव्याच्यां हृदवम्--

'दिन भीर दिमान को सीकर, सर्वात हृदव और मन की एकता होनी चाहिए।

विक मन कस और सोचे और हासिक वर्षि किसी धन्य घोर हो, तो योग हो ही

२. अवर्थे == निःचय (निश्चवतः) ।

योग-साथक को चयमता का सर्वेचा त्याय कर देना चाहिए। अवर्गका एक बाब-सबय रहित है। बोब सार्व में चलने वासे को इस प्रकार के तथन कि मैं सफल हवा वा नहीं, सर्वेशा त्यान देने चाहिए। योग के विष्नों में पराचित्र की ने समय को भी विभन माना है। ससम से बहुत हानि होती है। बहुवा सर्वेगान हो बासा है। वैशा कि कहा वया है-

श्व'त्रवारमा विमस्यति 'संश्ववालु मध्ड

धवर्गका एक साम यह भी है कि साबनकाल ने योगान्यासी का सरीर निव्हरूप रहना चाहिए। जासम धरोस होना चाहिए।

३ व्यक्तान ==पवित्रता

साबक को धन्तरंग और बहिरक शीच मे तया तत्पर पहना चाहिए। बाह्य चुडि स्नानादि साधनों से करते रहना वाहिए, बीर बन्दर की चुढि के बिए कास, जीवादि को विचार से हटाते पहुंचा

(सेव वृच्ठ ११ वर्)

#### 🛨 वचन-सन्देश 🖈

शिक्षा

जिससे विचा, सम्यता, घर्मात्मता, जितेन्त्रियतारि की बढ़ती होने भीर ग्रविचादि दोष झूटें उसकी शिक्षा कहते हैं।

—स्वामी दयानन्द

शिक्षा का मतलब है व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

 बास्तविक शिक्षा का यह एक ग्रावस्थक ग्रग होना चाहिए कि बालक इस बात का ज्ञान प्राप्त करे कि जीवन सम्राम में वह प्रेम द्वारा घृणा पर, सत्य द्वारा ग्रसत्य पर ग्रौर सहनशीलता द्वारा बल प्रयोग पर बहुत सहज ही विजय प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा का मर्थ है मनुष्य और बच्चो के शरीर, मस्तिष्क तथा मास्मा का सर्वागीया विकास।

---महात्मा गाघी

सम्पादकीय

## सावधान ! शिक्षा-नीति में परिवर्तन हो रहा है

मारत सरकार शिक्षा नीति में परिवर्तन करने पर विचार कर रही है। शिक्षा के ढोंचे में भ्रामूल चूल परिवर्तन करने को समान-नामों पर चिचार किया जा रहा है। इस नीति में सरकृति और नैतिक मूल्यों का कोई स्थान न रस भारतीयता की भ्रम्मानना की चा रही है। शिक्षा को सरकृति निरपेश रलने का नतसब खुले रूप में मौद्यो-गिक हितों के दायरे में बन्च कर देना।

ला० लाजपत राय के अनुसार अन्नेजों के भारत आरने से पूर्व हमारी शिक्षा गैली एक व्यवस्थित रूप मे प्रवस्तित थी। ग्राम ग्राम में पाठशालाएँ स्वापित थी। छात्र व्यवस्थित रूप में प्रनेक खास्त्रों भीर विद्या का भ्रम्यास करते वे । त्रिट्शि साम्राज्य को स्थापना के बाद लाई मैकाले,ने शिक्षा पद्धति में एक योजनाबद्ध षड्यन्त्र रचकर परि-बर्तन किया। उसने १९३८ में धपने पिता के नाम एक पत्र निस्ता। "जो भी हिन्दू अभे नी शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म के प्रति सच्ची श्रदा व विश्वास लो बैठता है।" मही शिक्षा पद्धति भारत की भावी पीड़ी को केवल क्लर्क के व्यक्तित्व तक ही ले गयी। आज हम अग्रे-जिसत के रग में ऐसे रग गये हैं कि पढ़ा लिखा होने की परिशाषा इग्लिश का मापाझान होना ही मान लिया गया। भारत की शिक्षा पदित भभी तक भन्ने की पूर्वकालिक योजनानुसार चल रही है। इसमें सुवार के प्रयास न करके, मारतीय शिक्षा खेली को उपेक्षित करके केवल मात्र पाश्चात्य देखों की उचार ली गई तकनीकी को शिक्षा का भग बनाया जा रहा है। हमारी भारतीय पद्धति के भवसर पर वो बेसिक खिला है उसमें फिर भी बच्चे के मस्तिष्क को विकसित करने का, आत्मनिर्भर होने का प्रशिक्षण है। विकसित देशों मे प्रार-स्मिक शिक्षा के समय ही बच्चे उपकरणों पर निर्भर हो जाते हैं। बोडा सा सा लेन देन करने का गिएत जोडने की भी उनकी क्षमता नहीं रहती। उन्हें कैलकूलेटर का सहारा सेना पटता है। सरकार द्वारा कम्प्यूटर क्रान्ति लाने के प्रयास जारी है। नये बूग में प्रवेश करने के ग्रविकार से हमें विचत भी नहीं होता चाहिए परन्तु देखना यह भी है क्या बच्चों की मौलिक प्रतिमा को उत्कर्ष तक पहुंचाने में ये ससा-वन सहायक हो पाएँगै या प्रतिमा को लकवा कर देने में प्रतिशापक होंगे।

विदन में जनेक शिक्षाबिद हुए जिनमें श्री हरवर्ट, बा॰ मोरिया माण्टेसरी, श्री हरवर्ट स्पंसर, श्री क्लो, पेस्टाक्षोत्री श्रीर लार्ड मैकाले डा॰ मेरिया माण्टेसरी ने बच्चों की चित्रवों पर ज्यान रककर ग्रोसा हित करने पर बहा बल दिया। उनके प्रमुखार बच्चे को बच्च बैचा बारीरिक क्ष्म से संतापित करना मणुनित है। श्री हरवर्ट की विचार-

- श्विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण मित माद-स्पक है। इसके लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मपनानी चाहिए।
- २ विद्यार्थियों के विकास, भादर्श विद्या भीर शिक्षा के लिए ऋषियों के ग्रन्थों के द्वारा ही पढाया जाना चाहिए।
- ३ ईश्वरीय ज्ञान वेद का स्थान ज्ञिक्षा में सर्वोपरि होना चाहिए।
- ४. शास्त्र के साथ बोबनयापन के लिए प्राविषक कला कोशल की सिक्षा भी दी जाये । सुसमें कला शिल्ल, प्रायुर्वेद, इतिहाल, धनुबँद, गान्वर्बे, योगलन्त्र, नाट्यकला, तथा प्रशासनिक विद्या प्रावि दी जानी चाहिए।
  - ध् वालक वालिकाचो का सहिच्छारण बन्द कर देना चाहिए।
- ६ शिक्षा, गरीव समीर सब के लिए सनिवार्य श्रीर सर्वसुल भ, विनाव्यय के कर देनी चाहिए।
- ७. शिक्षा में स्वदेशप्रेम, स्वसस्कृति गौरव, ईश्वर भिन्त भीर भारमनिर्भरता भावि गुण अवेक्षित हैं।

-- यसपास सुवांश

#### एक सर्वथा उपेक्षित परन्तु समर्पित जीवन

# मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

म्रोमप्रकाश भ्रार्थं



म्हर्षि दयान द के बेद प्रतिपादित सत्यज्ञान मूलक मन्तन्यो विदाती शिक्षाधी धीर विचारी की जिस सूबी के साथ मुनिवर गुरुदत्त ने समका जीवन में ढाला और प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य चकित एव स्तम्भित हो बाता है। बीवन मे केवल एक बार और वह भी इहलीला सवरता करते हुए ईश के सच्चे उपासक योगी यति तपस्वी दयान व को उन्होंने देखा वा । वार्तालाप करने या सका समा वान करने प्रववा महर्षि के ससन सम्पक मे रहकर उनके सद्पदेशों से लाग उठाने कातो गुरुदत्त जीको समय ही न मिला पर तुकमाल यह है कि १६ वन का यह नवयुवक यहाँव के प्राश्तो-सग के प्रद्भुत इ. य को देखने मात्र से जो कुछ प्राप्त कर पायावह किसी दूसरे को प्रथान हो सका। प्रायसमाज के प्रस्थात विद्वान् श्री पडित जमूपति जी एम • ए० ने इस चाम स्कारिक प्रभाव कानिस्त प्रकार से वरान किया है ---

— नवीन वेदात का सिखान्त इष्टि सृष्टि बाद के नाम से प्रसिख है। पब्लि गुरुदक्त नवे बदवक्त की सृष्टि

सचमुच ऋषि की बष्टिमाल से ही हुई थी यह सृष्टि असत् नही सत् भी। परलोक सिवार रहे ऋषि ने इन्हें एक दृष्टि देख निया भीर ये कुछ के कुछ बन गए। धनेक साधु महात्मा ऋषि के शिष्य वन वे परन्तु जो शिक्षा शाचाय के प्रतिम कुपा कटाक्ष द्वारा इस सरस विद्यार्थी को मिली वह किसी और के हिस्से नहीं बाई। गुरुदत्त ने ऋषि का सन्देश अपने हृदय पटल पर प्रक्ति कर लिया और समका इसके प्रचार का उत्तरवायित्व मुक्त ही पर है। ऋषि का बब्दि में भ्रातियों का क्रण्डन बाधीर वैदिक सचाऱ्यो का महन । धन पर बम का राज्य था सक्ति पर अक्ति का बाविपस्य था। गुरुवसः ने इस अप्रतका मण्डनका राज्यका**धा**वि यस्य का मानो चाज साल सिया। गुरु दत्त भानुविक सनिक या। ऋट दयानन्द की सेना में भर्ती हो गया भीर वयान-व की विख्याय अपने तन की सन को यन

याठक वृत्य <sup>।</sup> सस्कृत हिन्दी प्रमुखी

फारसी पदाय विज्ञान सुगम विचा रसा बन शास्त्र वनस्पति शास्त्र शरीर विज्ञान नक्षत्र विद्या बणित तत्त्व ज्ञान भाषा तत्त्व शास्त्र श्रादि विविध विद्याधी मे पारवत इस नवयुवक को किस शक्ति ने बायसमाज की घोर बाकुट किया? पारवास्यो की नास्तिकता बढाने वासी निकम्मी शिक्षा और विचारशारा से पूचक कर सञ्जी ब्रास्तिकता का पाठ किसने पढावा ? सस्कृत भाषा ही पूरा एव वैज्ञानिक जावा है यह ध्रुव सत्य गुरुदस्त को किश्र की कृपासे ज्ञात हुया? क्या किसी शास्त्राय में पराचित होकर उसने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया? या किसी की तक्या शक्ति से परायूत होकर उसे अपना माग बदमना पढा? नही बिस्कुल नहीं। कारण के बिना कोई काय नही हुमा करता। गुश्दत्त के जीवन की विन्तनबारा में परिवतन भी विना कारण कैसे हो सकता था महान् सस्कारी बात्ना गुरुवल के एक दूसरी विजन्नात् त्रभु अक्ति के रगमे आसूल रगी ईरवर बलधारी दिव्य धारमा ने बिना कुछ कहे ही अपने समान आस्तिकता के रग ने रव डाला । महर्षि दयानन्द के प्राणोत्सव क्य ने मुख्दल का जीवन निन्तन रविटकीण सभी कुछ बदल दिया। श्रव उसे चाव है दयानन्द वन जाने की। धून है ईश्वर के सच्चे स्वरूप भीर वस्तो के प्रचार की।

एक बार किसी ने उनसे कहा परित भी घापको स्वामी भी के शोगी होने के बारे ने मनेक बातो का जान है। घाप उनका चीवन चरित क्यों नही जिलते? अस्यस्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रवास कर रहा हूं। प्रजकतों ने पून पूछा—जीवन चरित कर सुप चालेगा? बोले—घाप काणव पर मिला जीवन चरित समक रहे हैं मेरे विचार ने महर्षि का जीवन चरित सपनी गूण बाजु ने सिक्ता चाहिए सौर हसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

इस सच्चे भारतक नेव भीर महाँच दयानय के अनन्यत्रका प्रविभावानी विचारक सत्य और स्थाचार की सानीव एस सानार प्रतिभा युनप्राही चुक्यत का कम्प २६ धर्मेक १८६४ ६० को पुन्नत म निवासी साला राजकुम्म सरवाना के बर

हुमाया। इनके वस्त्र विद्यातमा युद्ध दोनो में पारयस एव स्थाति प्राप्त कर चुके के।

जन्म, नाम तथा प्रारम्भिक शिक्षा—

भी नुरुदत्त का राख्ति के प्राचार पर नाम मूला रका गया। कुल गुरु ने वैरानी नाम श्रविक उपयुक्त समका परन्तु १२ वय का सायु में बालक गुरुवल अब सपने भारता के साथ हरिद्वार गया तब वहा के बोस्बामी रावेलाल ने वैरावी नाम बदलकर गुरावला रस दिया को बाद ने अपने सुद्ध रूप नुस्वत्त में परिवर्तित होकर वावज्जीनम प्रचलित रहा । गुरुवत्त के पिता साझारामकश्चाक्तगके स्कूस मे श्रद्यापक ने । श्रत पहले स्वय वालक को घर पर पडाने के पश्चात् सपने स्कूल में ही प्रविष्ट करा दिया उत समय नासक की ब्रायुद्ध वयं की थी। ब्रह्म कास ये ही होनहार बासक ने यसनकी भौताना रूम दीवान हाफिज खादि फारसी की पुस्तकों पढ डासी । डिस्ट्रिक्ट स्कूस ऋष से मिडिन परीका उत्तीमा करने के परचात द्यापको मुलतान के हाई स्कूल मे प्रविष्ट करा दिया गया । मुलतान में नाना वेतनानन्द भीर जक्त रैनलदास भापके वनिष्ठ मित्र वे।

नत्कालीन परिस्थितिया भौर उनका प्रभाव

श्री सरवतत शर्मा जिवेदी सम्पादक नवजीवन ने तत्कालीन प्रवस्था का वराण निम्न प्रकार किया है—

घडेजी जान धीर स्कूकों से पढते बाते जाय समस्त विद्यार्थी बमयक अस्ट एव प्रम के सम्मीर समुद्र की धीर परित हो रहे थे। हिन्दू विद्यार्थी सपने वर्तमान वर्ष के निवस धीर समर होंगे के कारख तथा प्राचीन समासन बन्न के सममार से प्रत्येक बम किरीसी मुस्तकाल धीर देखाई बादि से पर पर ११ टोकर का रहे थे। बहुत तक कि कोई काई बीर मुख समानों के पैनस्तरों से मुख्यानों के पैनस्तरों से मुख्यानों के पैनस्तरों से मुख्य प्राचना करते हुए ब्रास्ट बस हो रहे से और हिन्दू बमान के प्रमु धने के सिप्

प्राथमा कर रहे वे कि ऐसे धानकार के समय में मारत के दिवान धीर परिकास के भोने से देवीप्यामा मार्गान स्वरत्म हुआ "क्का नाम सामयसाथ है। इस पविषय सामन ने समस्य विरोधी महो के नवीन विद्यालों को प्रशिद्ध कर कि से पविषय समाजन सम के प्राकृतिक सिद्धालों को भी समानानकार से प्रकृत्य हो रहे के प्रकाशित कर साम बाति के होनहार नव्युवकों को सामिक सम पतन से सुर-सित कर दिया।

#### धार्यंसमाज मे

बुरुदत्त जी में बाल्यकाल में वर्ग के प्रति अतीव रुचि और शका बी परन्तु श्रमणी शिक्षा तथा पारचारवी के कतिपय प्रन्तों को पड़ने के कारण वह समिक दिनों तक स्थित न रह सकी। वस के प्रति बरुषि और नास्तिकताकी **बोर** भूकनव को बस प्रदान करने में लुक्सियाना के स्वतन्त्र विचारक मुझी कन्हैयानाल धक बकारी के लेका भी वे। मुसतान आर्थ समाज के साथ धापका सम्बन्ध जोडने मे मक्त रैमनदास तथा नाला चेतनानन्द जी का बढा हाच है। दोनो सुलके हुए सुयोग्य नवयुवक सार्यसमाज के प्रति पूरे निष्ठा वान् वे धौर बढी शत्न से समाज का कार्यं करते वे । गुरुवसः जी से प्राय विविक विच्यो पर इनका प्रेम पूरक बाद विदाद भी होतारहता था। धन्तत इन दोनों की विजय हुई और महर्षिका सत्याय-प्रकास तथा ऋग्वेदादिप्राध्यभूमिका के स्वाध्याय ने बुन्दल की नास्तिकता को वहारनाप्रारम्भ कर दिया तथा २ जून १८८० को यह विलक्षण प्रतिमाशासी युवक बायसमाज बुसतान का स्वेज्छा से समासद बन गया ।

#### लाहीर में आगमन-

नवस्वर १००० ई० में इट्टन्स की वरीक्षा गांव करके जनकरी १००१ ई० में वर्षा में

#### म्रास्तिक गुरुदत्त-

कालेज में परते हुए ही आपने १००६ के सत्त और १००६ में प्रते कियान में प्रते कियान निवास के प्रति कियान निवास कियान कियान

सामित्व ही क्ष्र स्टार करने ब्यूपादिनों के उस प्रवास की जो साइस पढ़ने के कारण वास्तिकताकी बोर वा रहा वा। एक दम स्तम्भ करके परमपिता जनकीवनर की प्रक्ति और विश्वास में सवा दिया । बीड्रे हा दिना म दन विद्यावियो को पूर्छ विद्याध हो नवा कि वह ईस्तर विस्की विकार बार पुरक्षा का नवन आनेसमान के दूबरे निवय य किया है। ह्यारा सकता बाबपात भीर इस सुन्दि का एवांबता है। बस्तुह उब समब धपने सहुपाठियो का बण्या ब्रास्थक, ईश्वर यक्त, यह ब्रोर क्षेत्र का सम्बाधकानु गौर प्रेमी बकाना पांड्य बुदरत या का विद्वता पूर्व बोय-स्वयी वक्तुवा का क्षा कार्य था। स्वय बामान् बाना बाबन्तयन सबत है कि क्यांच्य महा बहु प्रथम मनुष्य हु ।क विश्वके हृदय में पांडत पुरुवत का को वस्तुद्धाः चीर पापानुपाप न घायसमाच 🕸 पांच्य सहस्तों का व्ह निरंपय करा स्वता बोर विसम्बर सन् १८८२ १० का बाय-समाय शाहीर क वार्षिकोत्सव पर वै बायसमाय का समाहर हा नया।

बुख्दल जा ने १८८३ ई० में एफ॰ ए०, १८ : ५ के के के ए० तथा १८६६ ६० मे एम० ए० सर्वप्रवस रहकर पास की। कालेज ने पढ़ते हुए ही धापका धनिक समय स्वाच्याय, शाला-विन्तन तथा वैदिक यम के गुढ़ तत्त्वों को वानने मे संपत्ता था। १८-३ प्रस्तूबर मासान्त ने ऋषिवर वयानन्त के खरीर त्यान के इस्य को वेखने केपश्चात् तो झाप सर्वात्यका वैदिक वर्ग के प्रचारक-प्रसारक श्रीवन नए वे।

भायसमाज का को साहित्य प्रश्नेजी भाषा व मिसता है उसवे मुनिवर गुरुवत्त के प्रत्यों का नि सन्देह बहुत हो ऊचा स्थान है। उनक प्रन्थों, नेको धीर व्यास्थानी का संबद्ध कर प्रकाशित कराने वाल बाहीर पार्यसमाय के तत्कालीन प्रधान भी साक्षा जीवनदास पैन्छनर वे। उनका यस या कि विचार का उच्चता, मानो की बेच्ठता, बैना की सुन्दरता और पास्ता, द्धित की विश्वासता और आपकता तथा धर्ष को शनित और हुदव ग्राहकता की चच्दि हे मुनिन र का साहित्य महितीय है।

महर्षि ही स्मृति को स्विर रक्षने के **चिए स्थार ६ क्य में क्वाए गए डी०ए०वी०** स्कूत स्था कासेव की कमति के सिए व्यने स्वास्म्य की विस्कुत परवाह न करते हुए को सबक परिवास और प्रकार द्वारा सर्वसामारस को भाग्योजित कर वन समह क्या समका सहयोग और सहानुमृति प्राप्त करने का कार्य पुरवत्त थी वे किया बहुकोई धौरन कर सका। उन दिलीं समके पार परित्र, विसक्षण पाडिस्य एव उच्च कोटि को वस्तुताओं की बादो होर भूष बची हुई भी। छनके एक-एक व्या-स्थान पर सैक्ट्रों ही नहीं कही-कहीं तो प्रमुद्धें वपनों के सिवने का उन्हेच विवस

की परमावस्यकता क्यो ?

वचपि महर्षि स्वामी दवानन्द श्री के प्रचार से विकित बस्य गान्तेजित और प्रधावित हो रहा वा परन्तु धावस्यकता एक ऐसे विद्वान की बी, जो चिकित नर्ने को उसकी क्षी जावा में वैषक सिद्धान्तों की सरवता का बीच कराने के साव-साव विदेशी धीर विदर्शी गतवाओं की धाप-तियोका निराकरस करते हुए उनकी वेव विदश्च स्वकल्पित विष्या वारणार्थी धीर बान्दवाको को निस्धारतः प्रवास्तित कर बच्छे । मुनिवर बुस्वस सस्क्रमण होने के हाथ-साथ पारपात्य निकान के मी महान् शता वे। यत वह कार्व वे ही उत्तव रीत्या सम्पन्त कर सकते वे भीर उन्होंने जीवन जर पूरी निष्ठा धौर निर्जी-कवा से इस वाशित्व का विश्वहम किया। विरोधी बाहे टी विशिवम्स रहे हो वा मि० पिनकाट सबवा ब्रह्मसमाज धानि के कोई बुज्बन भी परित की सब की सकाओं का निरन्तर सेख द्वारा सन्तीवजनक हन बे उत्तर बेते पहे। २३ वा २४ वर्ष की स्वल्व बायु मे विवेची सौर स्ववेसी प्रकाड पढिलो बीर विद्वानों के प्रश्तो का यवी-चित उत्तर देना पहित पुस्रक्त की के बहुत सञ्चयन तथा इनके सत्यप्रेम का खोतक है।

वेद भक्त गुरुदत्त-

वेद की सरवता पर गुस्वल की गुन्ध वे, बर कमी किसी वैज्ञानिक के कवित नये ग्राविष्कार की कोई उनसे चर्चा करना, तो वे फट से उत्तर बेते कि हा भाई वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट मा बमा है। सस्पपूर्ण है और प्रभूदत्त नेव ज्ञान तबा वृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैद्यानिक को बन जितना बोध होता है। उतना वह असत्य से दूर होकर शस्य के निकट का काता है। वस बही बाविष्कार 🕽, इससे बाने कुछ नही । अपने ऐसे ही पवित्र और सत्यकान यूनक विचारों को विसम्बर १८८५ इ० में बाहीर धार्यसमाच के वादिक उत्सव पर बिए गए अपने भाषता में पश्चित भी ने व्यक्त करते हुए कहा वा--

"बाबुनिक विज्ञान बाहे उसमे कितने ही मुख क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रकाश नही डासता। वह अनुष्य की धारमा में धान्योगन रैदा करने वाने सब से महान् और कठिन प्रश्न ममुज्य जाति के बावि मूल और इसके धन्तिम साम्ब के हुल करने में कुछ भी ब्हाबद्दा नहीं करता । बायुनिक विज्ञान वाहे तरदेव नाड़ी और हुड्डी को चीर हासे धीर सह की बूंद की सतीय सूक्य वर्शक बल्ब द्वारा को सम्भवतः सबै मिन्न सकता है, बड़ी क्षम परीक्षा कर से, पर इक्ष प्रका पर उसके कुछ भी बन नहीं पड़ता कि 'बहु बीवन के रहान को कोम नही अकता।' वाने ववानिकार्रे हक कीए-फार प्लीस्परी-

गुरुदस्त जैसे प्रतिभाशासी विद्वान् अन करता रहे। बीवन की समस्या वेदो की सहायक्षा के जिला हम नहीं की जा बक्ती । वही केनम इस सब्नुत रहस्य का चदुवाट्न कर सकते हैं और उन्हीं की बोर वैद्यानिक नोडों को सन्त से माना

> पाठक वृत्य <sup>।</sup> कितनी संगाम अद्धा भीर अस्ति की मानना नेद शान के प्रद्रि नुस्वत्त के हृदय में विश्वमान थी। यह दढ साबना निरा विश्वास का क्य न होकर बेद को समझने और सत्य प्रमाणित होने के कारस ही थी। सम्बन्धितास तथा गतानुवतिकता की तो कत्पना भी गृहदत्त वैदे प्रबुद्ध विचारक से नहीं की बा सकती।

> इस प्रतिमाधामी वेद मनीबी तपस्वी विद्वान् को पूरे र६ वर्ष की जन सेवा का धवसर न मिन पामा परन्तु इस स्वल्प जीवन में ही उखने समित वस और कीर्ति का शर्जन कर सिया । स्वर्गीय पश्चित वमू-पति जी ने ठीक ही फ़िक्स था---

" "यदि इनकी बाबु कुछ सम्बी होती, तो इनके हारा जाने क्या क्या पांडित्य के, विकास के, तर्क के, बाध्यारिमक धनुभूषि के धमूल्य रत्न केवल आर्यसमाज ही को नहीं, किन्तु सम्पूर्णमानव-ससार को हस्तगत होते । इस मगरिपका मगस्या ने इनके लिखे हुए लच्च लेखा तथा पुस्ति-काएं ही इनके बसीम राहित्य के बीच ही में इक गए प्रवाह के श्रकाट्य प्रमाण हैं। गुक्दत्त केवल पहित ही न या, वह सच्चाऋषि पुत्र वा। उसे न वन की पर-वाहबी,न जनकी।सचकी वदी पर उसने प्रपना सुल, सम्पत्ति, नाम और धाम सब स्वाहा कर विया।

धार्य पत्रिका का लेखाश-

१६ मार्च १८६० ई० को जब गुर दल का शरीरपात हुआ तब आर्थ पनिका ने हुमारी क्षति शीवंक ते एक लम्बा भीर हृदय विदारक लेख शिक्षा या जिसका निभ्नाषा प्रत्यत विचारणीय है।

"एक मनुष्य एक श्रसाधारण मनुष्य एक प्रसीकिक मनुष्य संस्कृत विद्या का एक सच्या और प्रद्वितीय पहिता प्राचीन ऋषियो का बराज इस ससार से उठ गया। श्रावंसमाज का भूषण भीर गौरव सत्य और ज्ञान का भादर करने वाले सभी लोगो के प्रशिमान परित बुददत्त विद्यार्थी श्रव हमारे पास नहीं हैं। हा बह पुण्या-त्था श्रव नव्यर शरीर में बन्द नहीं युवा भीर बुद्ध हम सब उन्हें दू व रहे हैं। सत्य तो यह है कि हमें सभी इस बात का विश्वास नहीं होता कि वे हमें खोड गए हैं। हा हम फिर सन बैसा मनुष्य कब देखेंने ? हम फिर ऐसा मनुष्य कर देखेंने जिसके रोम्-रोन में सक्ताई के प्रकाश बैहिक वर्ष के सनातन सिद्धान्तों को फैलाने की कामना और परवेश्वर की वाली तथा उन सोवों को बाबी के द्वारा जिल्होंने तम बाखी को बाना और समन्त्र, बंबार के सामने वाने की कामना रम रही हो। हा बुक्दत्त विद्यार्थी। इस समय तेरी कति ससमाचेय है । सपने विशेष क्षेत्र में तू कोई भी ऐसा मनुष्य पीछ नहीं छोड नवा जो नह काम कर सके, जिसे तने

मार्थ पविका के प्रतिरिक्त धवष शसदार सलनक, रफी के हिन्द शसवार, रावी असवार, दूरबीन, पैसा असवार साहीर प्रस्तार, गमस्वारे हिन्द, पजाद निरर रावलपिण्डी, प्राफताब पजाब नाहीर, इम्पीरियस पेपर लाहीर, प्रसदार सरमीर गवट, कोहनूर साहीर, ताबुख धनवार रावनपिण्डी,सराजुल धनवार जेह-लम, सादक शसवार बहावलपुर, शलीबढ़ इन्स्टीक्यूट गबट ससवार साम साहीर, वर्ग कीवन साहीर भारत सुनार साहीर, ईसाई पत्र दूनाईट लाहीर, नूर प्रफक्षां लुधियाना, राजपूताना गणट ग्रमभेर, सिविस एण्ड मिसिटरी नवट साहीर, धार्य समाचार मेरठ, भावै वजट फिरोजपुर, सढमं प्रचारक जालकर तथा दिव्यान लाहीर में श्री पहित जी ने देहान्त पर सम्पादकीय लेख बडी भावपूर्ण भाषा मे लिखेगए थे।

एक २६ वर्षका नवयुक्क किस प्रकार इतना प्रमाव उत्पन्न कर सका कि धपने हो धपने बेगाने भी उसकी मृत्यु पर भाठ भाठ भास बहते देखे गए। बाबा श्रामिहोत्री भीर मुन्ती गोपीचन्द जैसे व्यक्तियो ने भी पडित जी की बोग्यता की भरपूर प्रशसाकी थी।

**पर-त धाय बन्धुमी मुक्ते तो झापसे** कुछ, पूछना है कि **बापने क**भी भू**ल कर** भी ऋषि मिनन के परवान बेद के सच्चे प्रचारक धौर वैदिक सिद्धान्तो की सत्यता मे विश्वास रखने वाले इस महामानव को स्मरण किया है। १=६० ई० के पश्चात् बाज तक क्या कभी किसी ध यंसामा-जिक पत्र पत्रिकाया सभाने सपने पक्षो के विद्योषाक निकालने का प्रयत्न किया। मुनिवर प० सरुदस्त, ग्रमण्यहीद प० लेख-राम निशुल्क शिक्षा को गुरुकुली के माध्यम ने प्रचारित करने वासे ताकिक शिरोमिष स्वामी दशनानन्द जी स्त्री शिका के प्रवत समर्थक और कन्या बहा-विश्वालय जासधर के संचालक सामा देव-राख जी, मस्ताने अचारक बलिवानी चिरजीसाल जी को साज हमारे नवयुवक तथा बच्चे कहा भागते हैं ?

धार्यबन्धुको-धपने पूर्वजो को जीवित रखोगे तो स्वय का जीवन ही सम्बा करोने तथा साथ ही इतध्नता के पाप से बच बाद्योगे ग्रन्थया जिस मार्ग का सब-सम्बन घज हम कर रहे हैं, वह मार्गन देवदयानर का है और न दयानस्य के बीवानो का । वह मार्ग हो यदि भाप पुरा न मानो तो वा मैकाले का है या छ्या-सीनों और कर्मद्वेषियो का । धार्यकीयो-भाई धीर वहियो-जामो धीर महर्षि के

(श्रेष पृष्ठ ११ पर)

व्यासपीठ---

#### उपनिषत् कथा-माला-३

## सुख की प्राप्ति के विभिन्न साधन

#### प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

उपनिषदों का कपन है कि सवय-क्षान क्षीर निपरीत-आन मनुष्य समाव के बी बढ़े कानु हैं। इस दोनों ने बड़ा क्षमण्ड हैं। जहां कोई जान लिक्स और दुविषा समुक्त हो जहें 'तथाय जान" कहते हैं। कतटे मार्च पर पत्ते आना और जब कोई बतायें तो हठ करना इसे 'दिवरीत-जान' फड़ते हैं।

करुपना करो धाप बोनानवर के रास्ते से मटक गए हैं। धापको यह जिवार नहीं इहा कि मैं किछ मार्ग पर जा रहा है, किसी ने पूछा "धाप कहा जा रहे हैं?" धापने कहा, "धोनानवर" उसने कहा, "बीनानवर का यह मार्ग नहीं, वह तो धाप यीन मील पीये खोड धाये हैं।" धापने हाम बोडकर कहा, "महाध्य कृपया युक्ते बतलाहए में किस मार्ग से जाऊ"। उसने करहा, "महागब तीन मील के धन्तर पर एक वृक्ष हैं। बहां से सार्य हुग्य को बीना-पर्क का सम्याव किया है।" धापने सुनकर स्वस्त समर्थ जाता है।" सार्य सुनकर पर्वा गा। यह दम को 'संग्रवाम'

परन्तु भारत को विपरीत शक्ति ने चेरा हुमा है। क्टूँ बन कहा जाए कि "यह काम न करो यह प्रश्वा नहीं।"तो भारतवाली मानने पर ही नहीं छाते। विपरीत शक्ति को भी सुभारा जाता है। पहले यह सावित कर दो कि यह नार्ग ठीक नहीं उकरा है। जब उसे इस बात का जान हो साथे भीर मान जाये तो उसे सीधा मार्ग बता दो।

महा पर तो प्रतिक्त वप्तेश होते हैं। बरे-बड जोर कोर में कहा जाता है। 'मार्ट किय मार्च पर तुम कर पे हो कह उत्तर है। वर्ष मार्च किय मार्च पर तुम कर पे हो कह उत्तर है। 'परन्तु दनकी मह याजा कमी पूरी नहीं नगी। कितनी ही बार का हाजारे कि निम नात को नुम परन्तु से एक नहीं पुनते। वस दनी का नाम ''विपरीत स्थित कोर वह दनिक नाम ''विपरीत स्थीविए यह वहुंब हानिकारक है। दसी-किए मेरे बाहै 'स्यायनतक में यह विद्यात स्थावा हुंक दिंदा करने में वह विद्यात स्थावा हुंक दिंदा करने वाले संवस्त्र में प्रतिक्रम ने वाले संवस्त्र मेरे वाले संवस्त्र मार्च करने वाले संवस्त्र मार्च करने वाले संवस्त्र मार्च करने वाले संवस्त्र मार्च करने वाले संवस्त्र मार्च से प्रतिक्षण हों।

श्रव उपनिषत् कहते हैं "क्या माता, क्या पिता, क्या पुत्र, क्या खीर कोई सभी

के हृत्य में एक गाउ है भीर वह भविषां की गाउ है। इसलिए अनु अववान् भीर पुत्रसीवात शहराज ने भी कहा है स्व 'स्वीव यपने सजान के कारण घरना। पहले करण को पविज नहीं बना चरना। पहले इस अविद्या की गाउ को कोलने की कोशिश करो।" अविद्या ही वो उसकी समक का कारण है। ऋषियों ने मानिया समक ने कहा है कि 'कुट्ट जानमनियां' सम्बाद वोचनुक्त जान हो सनिया है।

उपनिषत् कहते हैं —

निकाते ह्वयप्रस्थि

श्वित्काते सर्वतस्था ।
सीयन्ते चास्य कर्मारिस सिम्मृकृष्टे परावरे ॥

इस अदिया से छुटकारा कैसे हो? इस प्रस्त के उत्तर में जिल्ला समय समुख्य की भारत दूट जाती है तो सलक करण की मिल टूट जाती है तो सलक कार को मिल के से उत्तरे अगने की मिल नहीं रहती, बान का खिलका उत्तर तो तो उत्तरी उत्तरी अगने की सिल नहीं रहती, बान का खिलका जाता तो तो उत्तरी उत्तरी अगना करने की गरिक जाती रहती है इसी प्रकार सत्तर-मान के भाव गरी हों है इसी प्रकार सत्तर-मान के भाव गरी हों जाते पर बह उनका ठीक-ठीक उत्तर मिल आये तो सब समय

जब अनुष्य पैदा होता है तो भावा के साथ उसका क्या सम्बन्ध होता है? पिता के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? परमधिता परमायके साथ उसका क्या सम्बन्ध है? ये सब बानें उसे विद्या ही तो सिवाती हैं।

नारतवर्ष मे दान की प्रशाली ही निराली है। दान बहुत श्रव्हा है, कौन-सासुख है जो दान से मनुष्य का नही मिलता ? किन्तु क्या मारतवासी दान करते हैं ? ये तीयों पर जाना, गमा मे स्नान करना, बस इसी को दान-पुष्य समक्र बैठे हैं। माइयो <sup>†</sup> स्नाय दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयाग का कुम्म भादि । स्या कशी यह सोपा कि इस शव-सर पर रेल वालों को तुमने कितमा द० किराये में वे विया। धनुमान से ढाई तीन करोड रूपया हर एक कुम्सीमें रेलावे को किराये का दिवा चाला है। वह किस लिए ? इससे क्या मात्र हुआ ? बना मे स्नान किया वस इसी को साथ पुत्र्य समय बैठे । यह कहा की बुद्धिमत्ता है किन्तु इन्हें तो निपरीय-समित ने चेरा हुमा है।

तनिक देशों तो सही। समेरिका मे एक महोत्सव होने, वाला है। उस पर दक्ष करोड अपने सामत का धनुमान किया बया है। इसमे उन्हें बंगा यमुना में स्मान नहीं कराया कावेगा। बस्कि यह बताया जायेगा कि वत सताब्दी में विज्ञान ने कितमी जम्मति की है ? कहा तक पैर फैनावे हैं। परन्तु तुमने वह स्पया किस सिए सर्च किया ? गङ्गा-स्नान से तुम्हारा नन कुछ पवित्र हुआ ? बोरुप समेरिका भौर जापान वाले करोड क्या ५० हजार राया भी ऐसी दिल्लगी में सर्व करने वासे नही। उचित तो यह वाकि अन्त करज की शान्ति होती। इन्त्रियों को क्यामे साया जाता। इनमे से एक कात भी हो जाये तो बस बेबा पार है। जिस प्रकार तीत बेग से वायु चलके वृक्ष को उचाड देती है, इसी प्रकार समाच का भी यदि ज्ञान से सम्बन्ध न हो तो वह ऐसे ही गिर जाता है, जैसे बायु वे बुक्त । परन्तु यहा तो घरना गुज गाना ही एक बहान् कार्य है, किन्तु ये जो कर्म हैं, ये सब जन्म और मरशुके देने वाले हैं।

एक बार में मुक्रफरनदर से बरेली जारहाया, जिस डिक्बे में मैं सफर कर रहा वा उस दिन्नों ने कोई और मनुष्य नहीं था। रहकी के स्टेशन पर चार सहके उसमे आ बैठे। वे कालिक के विद्यार्थी वान पक्ते थे। निकर, कोट श्रादि पहिने हुए वे। ऐसा प्रतीत होता वाकिये बनी पुरुषों के पुत्र हैं। उन्होंने मुक्त से पूजा, "बाबा जी ! यदि हम गायें तो साप रुट्ट तो न होंगे ?" मैंने कहा, "माई । ओ तुम्हारी इच्छा हो सो करो । नाने ने दोष कसा?' उनमें से एक दो वाने अने। एक मक्त बन मगा उसने आयों बन्द कर ली धीर समा पुकारने—'हाय लैसा हाब लैला <sup>।</sup>" फट्टे के साथ जाकर टकराया । उसकी यह दशा देसकर मैंने कहा---

> वेस नवमूं का बुनून, तकता है केता ज़ार सु ? बट में है जैना निहा, करता है किसकी बुस्तबू ?

तम तो चत्रने मार्चे बोक्कि भीर भगने वादियों से कहते जना ''यह वाता तो पढ़ा-दिक्या है।'' मैंने पूक्त, ''वाही ने देव स्त्रीता-पनन् की तुम नार्चे कर पहें हो, तता कड़ते हो ने कहा के ये हैं कहानि वृक्ष हुबरे को एक नार देखा ना ना कहीं नार ने एक बात ने उनके बीनन की, पुलिया ने सूत्र कार-स्वाहार को देवा पक्का दिखा हैं

उन्होंने उत्तर दिया, "वह तो शात नहीं।"

बहु है इस देश की दशा । कहां का मध्यूं ? कहां की लीबा ? परन्तु उनके स्वाम इस देश के मुबकों को भाष्ट करने के लिए रचे बारहे हैं।

एक भनी पुरुष बा। इसने अपने बौकर से कहा, "मेरा कमरा साली कर दे !" रात का श्रमव था। नौकर ने वीपक बसाया और कमरे के एक कोने में रख विया । कमरे की सब वस्तुएँ पुस्तक श्रावि निकासकर बाहर रस दी भीर कमरा कासी कर विवा । मालिक से कहा, "सर-कार ! कमरा खाली कर दिया वया है।" यालिक ने कहा, 'चलो वेसों।' जब वह कमरे में बाया तो उसने देशा कि दीपक कमरे मे रक्ता है। उसने कहा, 'जिस दीपक से तुमने प्रकाश किया दा, उसे तो कमरे ही ने रख नये।" वस यही हुंबारी हाजत है। बिंह ज्योति से हमे प्रकास मिसता है उसे ही हम मूल जाते हैं। भाइयो, उस प्रकाश को पहचानो ! इसी ने तुम्हारा कस्याख होगा ।

जहां के लैंका समन् हुए हैं वहां की एक कहानी है। दो बादिमियों में एक माचा रुपये के लिए अमहा हो गया। मुक-दमा न्यायालय ने गया। कई हजार रुपने लग गए। झन्त मे उन्होंने यह निरुचय कियाकि इस प्रकार तो कुछ। फैसमा होता दिलाई नही देता। असी चलकर मजनू से पूछे। उसे किसी का पक्ष नहीं होगा। उसकी वो केवल एक ही चुन है। दोनो उसके पास वए। मजन् अपनी सान से बैठा था । उन्होने अपकर उसके सवास किया कि 'यह रुपया किसे मिलना चाहिए ?" पहले तो उसने उस तरफ कुछ ब्बान न दिया। एक दो बार कहने पर उनकी तरफ देखा घीर कहा, 'लैला की।' उन्होने कहा, 'चलो लैंसा से पूछे।' वन उससे जाकर पूछा तो उल्ने कहा, 'मजनू को।' जैसा मजनू से यही सबक सीको। जिस वरह उनके दिस में एक दूसरे का प्रेम था। तुम ईश्वर से उसी प्रकार प्रेम करके देशो । शापके शन्दर कितना तेज बाता है। यह क्यो ?

चुल यया राज जिसको पिनहानी। हेज है उसको साजे सुलतानी।

इसीलिए वर्गनवर्यों ने कहा है कि हृदय की प्रत्नि जन टूट वाशी है तो सन सम्बद्ध करते हैं ये सम प्रत्ने हैं पत अम दूर हो बादे हैं। वैते मूर्यन की रस्तियां कर तक न केंबी बायें करते हैं ये सन अम दूर हो बादे हैं। वैते मूर्यन की रस्तियां कर तक न केंबी बायें करते हैं सक्त ठीठ नहीं निकस्ता। इसी प्रकार समने हुयय की रस्तियों को बीची! मान करते हुया वावेची थीर सब संस्था दूर हो बावेची थीर सब संस्था दूर हो बावेची

विन सीतो ने शुभ कार्य करणा सपना सर्वे मान सिवा है और फुठे तथा सुरे कावो का त्यान कर दिवा है विक्होंने उन कार्यों को यहन कर सिवा है। विनक्क ईस्वर-प्रान्धि होती है, उनका <u>क्षान्त्रकरण</u> निषत्र हो जाता है। समुख्य-सङ्गित की वो श्ववस्थाए हैं, एक उठने की बीर दुवरी निरने की। उठने की बबरवा में बहु पर-शास्त्रा में श्वव को देवता है और विरने की श्ववस्था में बहु परमेश्वर को श्वव में वेवता है।

वस यही यो नियम पुनिया में काव करते हैं। यदि स्रापकी मुक्ति में यह कर स्ता वां व कि परमात्मा वव में निष्यामा है और हम वब परयेग्वर में हैं तो फिर आपसे कोई भी दुरा काम न होना। वरतु यहां तो बात ही उनदी है। वो ईरवर-प्राप्ति का समय होता है, उसमे हम समेक प्रकार की दुराइयां वोषणे रहते है। फिर साय कहते हैं सम्ब्या में दिस नहीं सबता। वाचान को देख थी। क्या उन्होंने विनेषा नहीं देखे। उन्होंने भी देखे चरन्तु नोड़ मीर उनने दिखा प्रहुत्य की बोर फिर धरवा वाचे पकड़ जिये। तुम बन को धपने वस में कर तो, फिर चाहे विनेषा भी देख तो, परन्तु तुम उनने कुछ साम ही उठायोंने। एक कवि ने ठीक क्या है—

पुबरे समर नोषवानों की हालत । तो यह ठीक है उन्मति की बनावत ॥ वहीं मूंह में तिमरेट वहीं वा को जाली। कहों मूह ये कैरे एवेची यह नाली॥ हो बब नोषवानों को

भारत में बान की प्रएाली ही निराली है। दान बहुत अच्छा है, कीन-सा सुब है जो बान से मुख्य को नहीं मिलता? किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं? ये तीचों स जाना, गगा में स्नान करना, सब हसी को बान-पुष्प समझ के हैं। भाष्यों! जाये दिन कुन्य होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयान का कुन्य भादि। क्या कभी यह सोचा कि इस सक्सर पर रेल वालों को तुम ने कितना रुपया किराये में वे दिया। मनुमान से डाई-तीन करोड रुपया हर एक कुन्य में रेलने को किराये का दिया जाता है। यह किसलिए? इससे क्या कहां की बुद्धिमता है किन्तु इन्हें तो विपरीत-शक्ति ने चरा हुमा है।

विज्ञातो समता है तुम मनामी भी <sup>?</sup> जिचर भी दिल को लगायो तुम सगा सकते हो। उसका स्वमाव तो बढा सीमा है। बच्छा वह तो बताबो<sup>ा</sup> बाप सिनेमा चाते हैं, वहां भी विस्न लगता है या नहीं ? या जब कोई बुरा काम करते हो तो कितनी जल्दी भाषका यन उसमें जन बाता है? उस समय बापका मन कीन सवाता है ? मन को सीचे मार्गपर ले जाना भापका काम है। पर यहाँ तो कूपच्य फैल रहा है। मला कभी कुपच्य करने वाले रोबी भी सक्खे हुए हैं ? कुष्ण महाराज से भी यही प्रश्न हुआ वा कि मन बायु से प्रविक चचल है। वायु को रोकना हो सुगम है, किन्तु मन को रोकना कठिन है। उन्होने उत्तर दिया, "यह बान नही। मुलाब के फूल को मसलना कठिन है, किन्तु मन को खीचे मार्ग पर जनाना सुवम है। केवल श्रम्बास को परिपक्त बनाने की बावश्यकता है।" बालक पाठशाला में पढता है, बी॰ ए॰ पास करता है। वह शन को न लगाता तो बी० ए० पास कैसे करता? अञ्चा भीर सो । पहलवान श्वचाडे में कुश्ती सबता है, उस समय वह भन सगावा है कि नहीं? वस विन्होंने मन अलावा जनका ही बेटा पार हो जाता है। मेरे बाई! प्रश्यास करने की खाबस्यकता है। विद्यार्थी के समान, पहलवान के समान मन समाधो । इतकार्यहो बाधोने । मेरे शार्ष ! मन को समाना बढ़ा मुस्म है। तुम को अपने मन से सलाह करते हो। एस समय मन भी तुमते कहता है उसका शक्टा करो । यदि वह कहे कि सिनेमा देखों, दो दब न देखो । दोग दार्कों ने भी इसी प्रकार सिद्धि प्राप्त की है। उन्होंने कहा है कि बंदि मन उसटे मार्गपर क्या क्षेषुक प्रवर्ष निवद पत्तो ।

फैंकन ने घेरा । सनेपार किस बॉति मारत का बेड़ा ?

अत्येक बात कठिन भी है आखान नी। बब मनुष्य का मन घपने बस में हो तब तो सुपम है, बबि बस से बाहर हो तो कठिन है। इसीलिए कहा है—

चुन गया बिस पै राखे पिनहानी। हेच हैं उसको ताचे सुनतानी।।

जैसा तुम चाहते हो कि दूसरा बादमी तुम से व्यवद्वार करेतूम भी दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार करो । उसी कांटे पर तुम भी अपने आपको तोलो, जिल पर दूसरों को तोलना बाहते हो। किसी की निन्दान करो। सदैव घण्छी वालों का विचार करो । बच्छी पुस्तको को पढ़ो । विचा पढने से ससय दूर हो जाते हैं। बुरे विचार जब मन में पैदा होते हैं तो मनुष्य नष्ट हो जाता है। ऐसे मनुष्य को कभी सुका प्राप्त नहीं होता। एकका शरी र दुवंस हो जाता है। कभी मृत्यु की इच्छा करता है।कमीबेसुघ हो जाता है। विद्वानो तवा बुद्धिमानों ने अपने मन को वश में रक्बा, फिर उनको किसी प्रकार का अब न रहा। एक कवि ने कहा है --

व्यक्त ते जुव कान ते, चल लीटकर तू वस्तो चर । कर तलक किरता रहेगा, नारा नारा वर वचर ॥ वा चवर होकर मला तू, कर्में हुमा है वे चवर ? रस्ता तेरा इचर है, चा रहा है तु कर ॥ परन्तु निकृत नार्य हुने स है। इसके वस में हुस्सी हुके कुक्वर सरी है। क्यों तो विश्ववाधों का ऋगड़ा ही दन नहीं केने देता। एक फारती शावर ने कहा है----

इका ई इस्मत, विवासय कर्व बूर । कि तुरा रवी-समस सहस रवृद ॥

व्यवित्युके बहुरोग बीघ्र ही दूर करना चाहिए जिससे तेरा दुस दर्व सब मिट चाये। विषयाओं का दुस सब बानते हैं, सब समझते हैं कि यह बढ़ा मारी दुः स है। परन्तु इसे मिटाने का कोई बाह्य नही करता । बार्यसमाव बनारस की बात है, वहां एक मनुष्य बावा। उसके साथ एक वासिका थी। उसने मन्त्री से मिनने को कहा। उससे पूछा, "भाई क्या काम है।" उसने कहा मन्त्री साहब से ही काम है। बस्तु मन्त्री महोदय को बुलाया गया। जब मन्त्री भी बावे, तो उसने कहा यदि तुम्हें इस सबकी को समालना हो वो समाल लो, नहीं तो जहां इसका जी बाहे बसी जाए, बाहे मुसलमान हो जाये या क्रिस्तान । उस वालिका से पूछा गया तो वह बडे जोर से रो पडी। उससे कहा, 'रोम्रो नहीं।' उसने कहा कि 'मुक्ते विश्वास कैसे बाये कि तुम मेरी सहायसा करोचे। बब माता-पिता ही सहायक नही हुए, तो तुम कैसे सहायक हो सकते हो।' उस कन्याको धीरज दिया गया तो असने बताया कि "जब मैं झाठ नौ वर्ष की थी तव मेरा विवाह हुआ। इस समय मेरी बायुपन्द्रहसोसह वर्षकी है। यह जो मेरे साथ मुके यहा श्लोडने झाया है, नेरा बाजा है। इसी ने मेरा सत्यानास किया। भव इसका विवाह हो रहा है। मैं कहा बाऊ निरासर्वस्य सुट गया । इस बाति का कल्याण कैसे होगा? यह ठीक है कि मैं बुरी हू, किन्तु जिसने मुक्ते बुरा बनाया, इस पाप में फैसाबा, वह भी तो बुरा है। पाप तो दोनों ने ही किया है। एक का तो विवाह हो रहा है भीर दूसरे को घर से बाहर निकाला जा रहा है। दोनों को ही निकासा जाना चाहिए था।"

मार्गे । ऐसी सैक्डों घटनाएँ प्रति-दिन होती हैं । जियर देशों उपर यहीं दशा है । इस प्रमाने देश का कर कुछ नेना ? यह कैसे उठ सकेगा ? जो देखता है कि आये दिन ऐसी चटनाएँ होती हैं, परन्तु मन क्या में नहीं । सार्यक्रमाज मी दुवंस हैं। इसमें सनुसन क्षित सार्गेगों तो उठ कबा होगा नहीं तो दाना जाला में पढ़ा हुमा हैं। पन्नी साता है तोने को देखता है, नीय में सा जाता है, नीने उठर जाता हैं, दाने पर चींच मारता है, किन्तु सब उठ नहीं ककता। ध्यान ने पकड विना और फिजरे में डासकर बस विवा। यह हुमा करों, उक्के मन में दाने का सोम स्रीक्ष

बाइसी <sup>1</sup> शोक कर करो। यन से कुढ करो। स्वार्य बोह सो। वदि अपने क्षमको कुछ बमाना पास्त्री हो तो दिखाने के पास बैठी। वृद्धिमानों की संबंधि करो। वृद्धि बार बायेगी, कुनुदि दुर हो बावेगी। विश्व काव का साथ से साथ खब्बन्य गारी होता वह कवाणि खिळ नहीं होता। जिसस सब संसय दूर हो, उसी विचा के बाने कोचों ने सिर भुकाया है बीर उनका बेड़ा पार हो जाता है।

हमला वर चुव में कुमी ऐ सादा सर्व। हम चूं वां केरे कि वर चुव हमला कर्व।।

सर्वात् ऐ मूर्ज तू सपने ऊपर स्वय ही बाकमण कर रहा है उस सिंह के समान जिसने प्रपने ऊपर ही प्राक्रमला किया या । बुद्धिमान् होकर मूर्ख न बनी । सूत्री । एक वनस में एक सिंह रहताथा। जब उसे भूस लगती तो जो पशु उसके सामने ब्राता उसे मार देता। इस प्रकार वह त्राय सात आठ पशुरोज मार डालता था, परन्तु साता या केवल एक ही। बन 🖣 सब वनचर दुश्ली हो गए। उन्होंने सोचा कि कोई उपाय निकासना चाहिए। इस प्रकार तो बोडे ही दिनों में हम सब मार दिये जायेंगे। वे सब एकत्र होकर सिंह के पास गए और कहा, हे बनराज। तुम आक्रमण करते हो तो सब वनचरों को मार डासते हो किन्तु जाते केवस एक को ही हो। सतएव तुम साकमरा करने काकष्ट न कियाकरी हम प्रतिदिन एक पशुदोपहर की तुम्हारे भोजन के लिए मेज दिया करेंगे। सिंह बढ़ा प्रसन्त हुसा। उसने कहा, 'बहुत सन्छा' । कुछ दिन तो पशुधाते रहे, बन्त में एक दिन सब जानवरों ने एक व होकर एक समाकी भौर कहा 'आई<sup>†</sup> इस प्रकार तो हम सब समाप्त हो बार्येगे।' सरगोश ने वहा, 'प्रच्छा कल मैं आकना।' दूसरे दिन दोप-हर को बया, १२ वज गये परस्तु कोई पसुसिंह के पास न द्याया । १ बज वया, २ वजनये परन्तुफिर भी कोई पश्चून पहुँचा।सिंह बड़ा घबराया उसे मूख लग रही थी। इतने ही मे खरगोश राम पहुचे। उसे देखकर सिंहराज ने कहा, 'झरे ! एक तो तूसमय पर नहीं भाषा। फिर तुमः से मेराक्या बनेगा? मैं सब पशुष्रों को सभी समाप्त किये देता हू'। खरगोश ने कहु', "मैं यहा तुम्हारे भोजन के लिए तो नहीं थाया । मैं तो सुम्हें तुम्हारे वैरी की सुचना देने आया हू। इस जगन में एक और शेर धानयाहै। वह कहताहै कि यदि तुम दूसरे सिंह के पास जामोंने, तो मैं तम सब को भार टाल्या। मैं तुम्हें इसका समन्त्रार देने भाषा हूं । यह सुनकर सिंह को बडा कोच धाया। उसने कहा, "श्ररे चल । बतावह सिंह कहा है <sup>?</sup> पहले मैं उसीको गार साऊँगा।" उसने कहा, 'चलो' <sup>।</sup> खरवोश क्षेर को एक कु**ए के पा**स ने साया, जिसकी मुहेर बहुत ऊँची बनी हुई थी । सरमोश कहने लगा, "सिंह इस कुएँ मैं था। पता नहीं अन कहां क्रिय नया ? मैं देखें इस कोह मे तो नहीं।" सरगोस ने मुढेर पर चढ़कर देसा । बोसा ''इसी श्रष्ट में हैं"। वेर भी मुडेर पर श्रद्ध गया । उसका प्रतिबन्ध पानी से पहा । उसने समका कि सचमुच दूसरा दोर इसी वें है। मेरे भय के बारे खिप बया है।

क्रिक पद्र ३३ कर ।

(गताक से बाने)

श्रद्धापूर्वक विचिन्त बज्ञो से, यहमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए सास्ति की प्राप्ति सञ्चल हो जाती है। हमारे भूत-कास में ज्ञानयज्ञ का धनुष्ठान सदा सीव रूप ने अप्रसर होता हुआ, सामाचिक जीवनो मे विश्व दिल्ट (Vision) वा चिन्त्नको प्रदान करता था। ज्ञानकी बारा लोकिक भीर प्रजीकिक, प्रेंब धीर श्रीय आसुरी तथा देवी, वामपक्की या दक्षिणपक्षी भावि हुद्दो मे समर्वात्मक दिन्ट से माने बढी थी। दर्शनजास्त्र या मान्बी-क्षिकी विद्या का इसमे विदेश भाग है। वडे-वडे ऋषि मुनि भीर ग्राचार्य जब चपरोक्त ससत् भौर सत् विचारकारामो पर बम्बीर मन्बन करते ये तो वार्षियों के बीतुल परिवर्तित हो बाते थे। धर्म, सस्कृति, सम्यता भीर समाय-रचना के मये-मये जोत वह निकलते वे और समार को नवबीयन प्राप्त होता था । मैं वर्तमान बुग ने जानी पुरुषों ने भारतीय बान्वी-क्षिकी विद्या या दर्शनशास्त्र की पूर्ण चर्चा का किया जाना धावश्वक समन्ता हु। यह विश्वविद्यालयों की पुन्तस्वनी मे ही समुचित रूप से हो सकेया । जब 'धर्म-निरपेक्ष शब्द बार-बार सना बादा है वो सौक्षक दप्टि से यम सम्ब तिरस्कृत हो वाता है। जब वैदिकी ज्ञानकारा "ब्राचार प्रचलो पर्न', वर्गवर का स्टबोब करती है तो 'Secular ख-द वर्मनिरपेक्षका के अवाँ में भावारनिर पेक्षतां की तरफ सीच ने जाता है। यही कारख है कि बतमान भारतीय समाज ने 'श्रष्टाचार बुरातर्यु से फैलता जा रहा है ग्रीर नैतिक ५ ल्य बिर रहे हैं। अम सस्यापन या धमचक-प्रवतन एक हसी-मात्र दिलाई बेखे हैं। यम शब्द महान् है-यह कत्वय, पुण्यकाय कानून तथा व्य वस्था झादि में मुल्यत प्रयुक्त होता है। धमनिरपेल पब्द को सरकारी रूप से तिसाञ्जलि दा जानो चाहिए । भिन विन्त मतीया सम्प्रदायों के साथ अम श्वन्द का व्यवहार हुमारी प्रशिक्षा का परिचायक है। सब सम्प्रदायों के प्रति उवारता का परिचय देना, विभिन्न मत गेटो में भी पारस्परिक भावर भाव रक्षता मानवमात्र को भ ईचारे से बतना ईस्वर के ब्रति श्रद्धा भीर विश्वास रचना Secular मन्द्र का प्रथ नही है। भारत मे इस विषय में अब का अन्य किया जाना रोक्ना बाहिए। 'Secular विदारधारा वामपक्षीय भौकिक विचारवारा है जो धनीष्वरवादी नास्तिक विचारी से भ्रोत-त्रोत्र हो बाती है।

वन वैविक परम्पराधों में बाहिक हिंता और हुराचार प्रदृत्त हुए धीर लेकिक विद्युष्ट मुख्त हो गयी तो बौद वर्ष ने पुरानी व्याचार की धर्म-आवा ताओं को स्वाचित किया वा। नने नवे विचारों के बीट परिवर्तन भी हुवा। करीकन केंद्र हुवार वर्ष पूर्व से हुवा। गुन्कुत कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्यार के दीक्षान्त समारोह पर दीक्षान्त-भाषण

द्वारा--प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार

वैश्विक भीर भवैषिक, सत् भीर ससत्, वार्शनिको का ज्ञानकर्वा-इह अत्वन्त यम्बीरता से पवता रहा है। वैदिक बार्व दर्शनों पर बौद्ध साचायों के वात-प्रतिवात वे । इस समय ने कई सविया बीस वनी । धार्थं दर्शनो के ऋषि कपिस कर्याद, बौतम, पतञ्जिस स्थास, जैमिनी सादि का सम्पोषस्। समन्वयात्मक सब्टि से सन्न-शर करने में बात्स्वायन, उद्योतकाचार्य, शकर, वावस्पति निम, उदयनामार्थ बादि वे तो दूसरी तरफ बसत् विचार-कारा ने बौद दासनिको ने भी प्रतिचात किए। इनमे नागाजून, दिस्नान, वम, कीर्ति, कल्यास्त्ररक्षित, शतिक्षा, वसुबयु, मासन भावि प्रौढ़ विद्वानी द्वारा यम्बीर विन्तन होता रहा भौर ज्ञान का चतु-र्मुक्ती प्रवाह बहुता रहा। इस तरह से दीर्थ कास के समय ने सन्त ने वैदिक विवारवारा ने ही 'सत्पक्ष' ने जारत की विजय को स्थापित किया । धव वही विचारधारा आगे सैमेटिक विचारों से टकरा गई है। इसमे महर्षि दवानन्द का प्रकाण्ड साहस, दूरविता गम्बीर वितन तवा सावमीम संस्कृति, चम, सम्यता को समन्वय रूप से वैदिक वन के मानववाद मे पाना सभा गम्भीर चितन का विषय है बिसे विषय ने अपनी कसौटी पर रखना

भारत की सम्पूण विचारकाराएँ गुढ़ शिष्य परम्पराभी द्वारा बढ़-बढ़ गुरुकुको या निद्वारों में पनपी थी। भववद्गीता की वैदिक कर्ममोग की राजविद्या भी गुढ़-शिष्य परम्परा से ही विकक्षित हुई बी।

इम विवस्तते योग जीवलवानहमक्तवस् ।

विवस्त्रात् ननवे प्राष्ट्र अनुरिक्याकते ॥

इत्यादि । रस्परा प्रान्त ज्ञान है। सन्निवधा के निए हमे तश्रीवता गुरुकुल के धावार्थ निय्तुपुरा वालक्य के श्रिष्य सम्राह् व इगुप्त को प्रस्तान विद्या वाहिए। इसी तरह से ग्रहींच प्रतन्त्र निक्तार विक्रित रह से ग्रहींच प्रतन्त्र निक्तार विक्रित स्वारा प्रतान की साम् वालक्षान की साम् वालक्षान की साम वालक्षान की साम वालक्षान विद्या विक्रमादित्य को भी स्वा वाह सहाराषा विक्रमादित्य को भी स्वा वाहिए। इन्होंने सुवक्षान में धार्म

कतारा जिल्लाम क्रमान के सुर्वात वहां स्व स्वता । नवरणविद्वालि क्षम्रकारी के महारामा विक्रमादिल को भी बदा बाद रक्ता नार्विए । क्ष्मिन सुरक्ताल में धार्म जाति की स्वतन्त्रता की स्वस्थ रूप ते स्वाध्य किया वा धीर मारत की स्व मिंद्र राज्य का स्वान विकास था । इक् क्षम्य बहु धीर क्षम के सम्बन्ध के बाय्ड पुण्यकोक वस नवा था।

राजवर्गको समकाने में की कार्य

रामाक्य तथा महानारत ने किया है एक यारवीय स्थूतिश्रम्मी ने वो डाम पारिय क्यारियों को प्रयम-द्रम्य पर दिया है, व्याद्य का भी पुत्र भारतीय बल्टि के विपत्रत बायरक है। वरमान बारहित्य का रामरितिक दियारपारां नारतीय व्याद्य में के न बाकर विश्वी वा पराने का से द्रम्य पर बन्धी नयी हैं। यह सम्ब्री प्रमुख्य बारव्यादिन्यों का सन विदेश विश्व है। हम का कुछ सम्ब्री की एकक वे देखते है और सेखा वेक्या है वहीं ने सरप का दक्षन दमक्के हैं। व्यादी स्थ्य की वाह्यों की विश्वद्व क्षांच्या है वहीं ने सरप का दक्षन दमक हैं हैं। व्यादी स्था का वाह्य दमका वाह्य हों। व्यादी स्था वाह्य हों।, इसे वामना पाहिए।

सम्बूण मारत की श्रीवोशिक एकता को कविकृतपुर कामियात ने कुमार-समय के प्रारम्भ में सत्यन्त समुरता से विसाहे—

करपुरारामा विश्वि देवतास्था, द्विमानवी नाम मयाविराकः । पूर्वाचरी तोयानियी विश्वश्वा, रिचत पूर्विच्या इव मानद्वप्यः॥

रची उप्ह से प्रमुच्य में पुत्र की वेनायों ने निव स्वराज्य की स्वापना की बी धौर विषके द्वारा सूर्यवय वा राजुव्य ने भारतीय राजवन्य में राजराज्य की विचारपार का वनातन रूप दिया गा, वह भी गुनाया नहां ना सकता। राजुब्य ने भारत के थीचोसिक स्वरूप को स्वाधी विचार की भारत के मान राजराज्य की चीट से मारता का के मीकरण खा ही इसारा नहेंच्य रहना नाहिए।

शबोच्यास निकल कर बच महा-रावा रचु ने केन्द्रीकृतार्थ (for integration) बहाबारत निर्माश में को सना प्रस्थान किया था बहु पहले पूर्व की तरफ बढा था। नवब राज्य सीर सुद्धा राज्यों को परास्त करते हुए बनवेश के धन्तिम किनारे तक रचुके स्वयं वह वह वे । इसी तरह से नवासायर के सब दीपों को बस में कर उड़ीसा ग्रीर कॉलब देश को वश्ववर्ती किया । पास के सब पहासी प्रवेकों पर भी वयना ऋण्डा पह्नराते हुए रषु ने महेन्द्र पर्वत पर प्रतिकार जमाया । इस तरह से पूर्वीय माध्या पर विकास-पताका पहराकर के विश्वस्था विशा की तरफ बमुद्रकट के साथ-साथ पत्रे । कावेरी नवी के सब जुमाओं को---पान्यूव राखायों <u>कृष्टिय</u>—नगानती करते हुए क्रेड्स प्रकेश् की बीतकर के बारत के बन्दर्श प्रतिकारी मकेर पर का नए। सबर वे स्थव वार्य के ही पारक वेश (पश्चिमा) में प्रविच्छ होकर क्समे नडे भाग को सबेटडे हुए क्रिम्यू स्थी के परिचयी प्रदेशों में उन्होंने प्रदेश किया, वहाँ भववक्त्यान के काबीय या कावूक **के राक्त को सपने साथ मिखाया। इसके** बाद हिमासब के महान् प्रदेशों में सब राज्यों की बस्वतीं करते हुए सपने परा-क्रम का शिक्का विठा दिवा । हिवाकक की जीहित्य नदी को पार कर वे प्राग्व्यो-विषया धासास में था पहुँचे से । इस वरह से महामारत मूसि की पूरी परि-क्रमा क्रिवय द्वारा स्थापित कर उत्का स्थावी बावचित्र बना दिया नया था। इस तरह से बार्स साम्राज्य की पूरा स्थापना कर वे बापस अयोध्या ने मा वए वे। विकेत्रित भारत एक महानू केन्त्रतः (integrated) महामारतः में वयस कर रामराज्य में चरनोत्कवं दर पहुँचा वा विसका वसान महामारह के शान्तिकां ने "राने राज्य प्रशासित र प्रकरण वे देखा जा सकता है। इन सक विवयों में रच्ने सार्व मर्वादामा का कमी त्याय नहीं किया। विश्व राज्य की बीता उसे ही सन्माम पर समाकर सुराज्य स्थापना के सिए दे दिया । कोई बदले की भावना न की। कोई ईच्यों या देव न का : रच् ने विद्याल स्वराज्य या धर्मराज्य को पैदा किया और राम ने 'सुराज्य रूप के परमाचवा का दशन दिया । साझाज्य रूपापना ने विन्त्रिय के बाद रमुने 'विश्वजित् यज्ञ को किया और 'परोप' काराय सता विभूतम ', 'सर्वभूतिहते रता , 'सर्वजनसुकाय' के वैदिक माय सहेरवो की पूर्ति के लिए सब कुछ दक्षिणा क्प से दान ने देकुर उन सब राजाओं की सम्मानित किया को रचु से युद्ध ने हार काने से अपने को मक्कित तथा विरस्कृत समम्ब्रे ने । सभी को पूजनत् मानमर्यादा बेत हुए स्वय एक तपस्वी, निमन, बान-प्रस्थी बन कर ऋषि झाममो ने जले वर् क्योकि वोनेनान्ते बनुत्यवास् का उद्देश्य जो पूर्ध करना था।

इस तपह से मैंने बारत की प्राचीन गौरव बाजा प्राप्त कामन रखी है। इसके स्वार की महान समिता है। रचुवीर और अधिन के निक्त मकता है। रचुवीर और बचुवीर जैसे सामनीर सारत के सक्त समस्त सुधं और चीर का तपह प्रकाल और कीमन केने साले हैं। महर्ति बसावन्द के सामने बारत की तद कीरनाबा सक्त स्थापित राज्य की तपह मिताब का पन-प्रचीन तरन की तपह मिताब का पन-प्रचीन करने बाजी रही है।

भारत में बहुत से साम्राज्य साह्य स्वीर एकड वर । चनमे किना-दिक्त सम्मृतियों वा सम्मताई को स्वीर उस-इती रहीं । परमुद्ध सर्वर शे नहिंद्या पूर सोर सकते उच्च मारकों पुरूष में सुक् व सा सकी। सरीर सर क्या एकसु

(\$3.0°)

## राष्ट्र के सम्मुख चुनौतियाँ और आर्य वीर दल

नरेन्द्र ग्रवस्थी सवासक धार्यं वीर दश, दिल्ली प्रदेश

देश बाज विस्त नाजुक दौर से मुबर रहा है सायद ऐसी विषम परिस्वितिया पहले कभी नहीं उत्पन्न हुईं। सीमानर्ती प्रान्त जम्मू-कश्मीर व पंजाब में विवटन-कारी तस्वों के राष्ट्रद्रोहिता ने घोत प्रोत हिसक काण्ड, गुजरात में जारक्षण की ब्रोट में मुस्सिम साम्प्रदायिकता का फन खठाता बचगर, उत्तर प्रवेश, विहार में उर्व की बकासत के पीछे बेनकाव होती बद-शीयती राष्ट्रवादियों के लिए गम्भीर चुनौतिया है। शिक्षा का मात्र प्रकर ज्ञान ब ब्यावसायिक गापदण्ड मानकर धार्मिक व नैतिक शिका के समाव से मावी पीढी में पनपती नास्तिकता, किंकतंत्र्य विमूहता, सलरवाबित्व हीमता अविच्य के लिए राष्ट्रवाद के समाव का परिवासक है। पहले शराब जीवन में खोसनापन व भ्रष्टाचार सा रही थी। सब विदेशी से तस्करी दारा बाई हेरोइन हजीक, नशीसी लेकिया बादि की भारी मात्रा ने भामद देश की हरी-भरी तरवाई को जर्जरित व ब्रत्युके द्वार पर लासका करने का क्रप्र-बास हो रहा है। श्रुष्तीय साहित्य व बाइजीस फिल्में, कला के नाम पर कैबरे नाच, फैशन के नाम पर मौडा प्रदर्शन बूबा पीढी को बहका रहा है, अटका रहा है। धनाव, धनान शोधन के जिलाफ भी क्रमकर लोहा जेने की आवश्यकता है।

यहेब-बानब, अस्पृत्यता आदि कुरीवियो वे भी पिण्ड खूटा नहीं। धार्येखमाब खरैव पाखण्डवाद, राष्ट्रप्रोहिता, अस्टाबार धादि ट टकरावा है, उसले समाब, सज्जान धादश के विवास भी धान्वीबनास्यक स्वर्षे किया है।

माज पून विघटनकारी हरवीं नखी व अन्य बुराइयों से टकराने के लिए बार्य-वीरो को बागे बाना होना। हमे महाराख दशरय की भाति अपनी सन्तावों को धार्यसमाज रूपी विश्वमित को श्रीपना होगा। हर द्यार्थसमाज कम से कम दस धार्येवीर तैयार करे। यज्ञ तो इस प्रति-दिन करते हैं परन्तु जीवन को बज्जनय बनाने का सकस्प सेने की चकरत है। वस दस धार्यवीर भी प्रत्येक खार्यसमाच धारे साए तो बार्वेदीरों का एक भव्य संगठन तैयार हो सकता है। यूवा वर्ष में इस बाह्यान को रचनात्मक रूप देना होगा। बायंबीरों की यह शक्ति राष्ट्र की करी-वियों पुषकताबादी तत्त्वों के सन्तर्वों की वकनाचूर करके महाँच दवानन्द के सपनी में भारत का स्वरूप प्रस्तुत करने में प्रब-ल्लगील होवी। हर बार्यसमाच मन्दिर मे बार्ववीरों को बावे लाने के लिए वस्ती-रता ने विचार कर इसे क्रियान्वित करने की पावस्थकता है।

#### यह श्रन्याय कब तक चलेगा ?

इतिहास गवाह है कि मोपले मुसल-भागों ने अप्रेष सासन के दौरान बगावत की थी। उस बमावत मे मोपने मुसल-शानों ने हिन्दुयों के साथ जबरदस्ती की। श्रमको मुसलमान बनाया । अवरवस्ती चनको सपने वर्ग तन्तील करने पर मज-बूर किया गया। बच्चो की गुलाम बनावा नया । उनकी नीजबान सबकियों के नाव बसास्कार किया नया और पत्नियों का सपमान किया गया । फिर जारत सरकार रुप मोपसा मुखसमानों को पैशन दे रही है। जिन सोनो ने देखद्रोह पूर्ण कार्य किया और देस की बाल्मा को ठेस पहुँ-बाई उन लोगों को सरकार पैसन दे रही है। अवकि प्रार्थेसमाजी सत्यापहो के विषय मासी का सा समुक्त किया वा रहा है। हजारों स्रोब अपने मान सम्मान के निए वेको में यह और निजाम हैवरावाड बरकार को कि नक्त रास्ते वर बस रही नी, को राज रास्ते कर साथे। श्रीर करते हैं।

उनको कोई पैद्यन नहीं मिल रही हाबाकि ने लोक बेख और वर्ष के लिए बड के। एउन्हाफिर भी उनको कोई पैदान नहीं वी बा रही। यह सन्वाय नहीं तो और क्या है। सौर बह सन्वाय कह तक बलता रहेगा।

> बयदेव गोयस पत्रकार जीम्द ।

#### शोक संवेदना

वेद है कि जी सरकारी साल दर्मा की जानी (वर्मपत्नी जी वक्तनाव वर्मा) प्रेटर कैतास का दूरवर्मात कर जाने से मृहस्पतिवार २ मई को देहानसान हो वया । जीवा एव की सावकात १ वजे सन्नार ४ मई को सावकात १ वजे सम्मन हुआ।

बमा परिवार ने इस अवसर पर ११०० क्पये विभिन्न आर्थ संस्थाओं को वान दिया। आर्थसन्तेश परिवार की ओर से इम कर्म परिवार से सहामुश्रुति प्रकट करते हैं।

#### बब नहीं तो फिर कभी नहीं परोपकारिणी सभा का भविष्य

लेखक--म० म० ग्राचार्यं विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्यं एम०ए०

महर्षि स्वामी ववानन सरस्वती द्वारा स्थापित जीवन की पावन केवा में स्थापित स्थित की उत्तराविकारियी स्था परो-पकारियी स्था परो-पकारियी स्था परो-पकारियी स्था को से बी स्थापित स्याप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थाप

महाँच निर्माण ग्राताञ्जी बन पहली नार सकनेर में मनाई गई किस में पाँच लाल देश विदेश के बामें नर नारी लिम-भित्त हुए और अपनी अदा के कुल लाखों रमया देकर गए सर परितकारिणी समा की सवार के साम्यों ने जाना। यह पहला ही सुबसर था।

परोपकारिगोी सभा के पास महर्षि का पाच प्रकार का सामान

२ — महाँव का पुहित पुस्तकों का विशास सम्बार । जिसमें उस समय के स्थे समस्य वैदिक साहित्य के प्रस्त तथा मतमसामार के प्रस्त जिनका महाँव ने सम्बन्ध किया परोपकारियी समा के पास है।

२--- जो प्रम्य उस समय मुद्रित नहीं हुए ये उनके हस्ति रेस हैं।

३ - महर्षि के शपने ग्रन्थों के कई-कई हस्तकेखा।

४--- महर्षि के श्रव तक श्रमुद्रित हस्त-सिखित रचे शन्य ।

५ -- महर्षि के उपयोग की वस्तुएँ शास-दुशाले वस्त्र सहाक पात्र आदि।

परोपकारिजी समा को चाहिए कि जो भी सामान उनके पात है उनकी सूची सामकर सामं जनत को दे के कि हम पर यह सामान महर्षि का है जिस से उनकी जुला रहे, सानेदेशिक सभा भी उपेका कर रही है भीर सूची नहीं मामती है। (भ्रमुस्तस्यान कार्य भ्रजमेंर ही

सभव है)

बार्यसमाज द्वारा सवासित बनुसवान विवान परोपकारिणी समा बजनेर में ही समय है। स्पोक्ति ऐसा सामान अन्यत्र कड़ी नहीं है।

धावपेर अताब्दी से वो वस प्राप्त हुमा है वह वीरे दीरे कम हो रहा है क्वॉकि से वर्ग बीत रहे हैं कार्य हुक प्रारम्भ बही हुमा। कोहा वव वर्ष हो तक कूट बेना बाहिए। ठडा होने पर फिर कूटने से कोई साथ नहीं होता।

कुछ पूर्वे हुई है। उन पर कुछ सोव

पर्वा डास रहे हैं। ये पर्देशक पर्वेबाजी को जन्म देते हैं। यह प्रवृत्ति किसी सस्वा के लिए सामदायक नहीं हो सकती है।

जो भूलें हुई हैं उन्हें झागेन करने का सारवासन दे भूल स्वीकार करना ही बडण्पन है।

हमारा मत

सहाँव ने परोपकारिक्षी सभा ने वैदिक बाहित्य का कोई उन्द कोटि का विवाद माने का विवाद माने किया नहीं के विवाद माने किया माने का निर्माण के किया माने किया माने

राजधरानो का राजा खिलाब से जिया नया और राज्य भी । पर **उत्तम** व्यक्तित्व कही नहीं चला गया है और न वे गरीब ही हैं। महर्षि ने जिन राज-परिवारों को वैदिक चर्म से दीक्षित किया तीन पीढी ही चला। चौची पीढी आर्य-समाज को मूल गई इसमें हमारा प्रपराध है। जो हमने राज्य चले जाने के ही कारण उन राज परिवारों को भूला दिया। इस को प्रगर कमल के वन से धलग कर दिया खावे तो क्या दव पानी शलग करने की योग्यता उसकी नप्ट हो जाती है। परोपकारिस्ती सभा ने वो व्यक्ति ऐसे हैं जो सम्कृत से भनभिज्ञ है पर अपने को पण्डित समझ बैठे है। वे ऋषि के सबी से गडवड कर रहे हैं। इससे परीपकारिसी सभा की रक्षा करनी चाहिए। मैं उन बातो को सोसना नहीं चाहता। शेष सदस्य बुद्धिमान् हैं वे सोचें।

#### श्वायेसमाज मोडबन्द एनस-टेंशन बदरपुर वार्षिक चुनाव

उपरोक्त सस्या का वाधिक चुनाव विनाक १३-४ ८५ को प० बुद्धराम स्रमा जी की सम्बद्धता में निविरोध निम्न-स्वित्वत क्या।

व राजक — को वरतांविह वर्मा विविक्ष इमी तमर, प्रशान — हा॰ धार० एस० इमी तमर, प्रशान — हा॰ धार० एस० वर्म हैं Sc B B S H CM S उनप्रधान — हा॰ कर्मचन्द थी, मन्त्री— की नेजवाल धारमी, उन्मानी — भी विक्रम चन्द वी को वाच्याक — की धारी प्रशासक वर्म हैं प्रकाश धार्म, उपकोश स्वार्थ, अवार मन्त्री एक कार्यमस स्विवन सार्थ, अवार मन्त्री एक कार्यमस स्विवन आहे उन्मान सार्थ, अवार मन्त्री एक कार्यमस स्विवन सार्थ।

भूदेव प्रसाद धार्य (प्रचार संचिव)

## समाचार-सन्देश

#### 'राष्ट्र निर्माण सम्मेलन'

हरिद्वार १४ धप्रैल, १९=६ । गुर-कुल कागडी विश्वविद्यालय के बार्षिक समारीह के संबंधर पर राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन का धाबीजन किया नगा।

इस सम्मेलन मे निम्ननिसित प्रस्तावों को प्रस्तुत किया-

(१) राष्ट्र की प्रसन्दता को सुरक्षित रसने के मिए चाविवाद वर्गवाद एव माणावाद के नाम पर उत्तेवमा फैसाने वालों को कठोर वण्ड बेना बाहिए ।

(२) राष्ट की सुरक्षा वैविक उदाल मान्य-

शाबों के बनुसार ही सम्भव है। (३) इय सभी भारतीयों को देस के

प्रत्येक भाग ने धाने-जाने, पूर्णि क्रम करने का धविकार होना वाहिए। (४) राष्ट्र-निर्माण ने सस्मृत की भूमिका

महत्त्वपूर्णं हो सकती है। सभी प्रान्तीय तरकारों से वह बोव्छी निवे-दन करती है कि संस्कृत-भाषा के उत्थान को सर्वाधिक महस्य दें।

(डा॰ जनदेव वेदासकार) सयोजक राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन

#### समिति का कार्यंकर्ता सम्मेलन

वार्यंगीर वस किस्सी प्रवेस का कार्य-कर्ता सम्मेनन २७-४ ८१ को खाब ठीक ६ वजे मार्यसमाण स्नुनान् रोट नई दिल्ली में सार्वदेखिक बार्वचीर वस के वपत्रधान संधालक डा॰ देवप्रत भी की मध्यें बंदी में प्रारम्भ हुया और ठीक ७ वर्षे समाप्त हुया । बां॰ बी तथा दिल्ली दन के संपासक की भवरनी भी के ग्रेरणा वायक वायम हुए। १४७ वार्य दूसकों ने दब को सक्रिय करते तथा तीन विविधीं को सफस बमाने का सकाम किया । श्री चन्द्र की ने समा का बड़े ही उत्तम दव से तपासन किया ।

महेशक्तर कार्याचन नहीं

#### निर्वाचन

वार्वसमाय रकावी वाच की त्रवल्यक सभा की बैठक २०४ वर्ष को सम्बन्ध हुई विसमे निम्नानिक्ति समिकारी १६८% ८६ के जिए निर्वाचित हुए।

थो विरवारीसास बुलाटी त्रकान भी सरवानन्य शास्त्री

की ईरनरचन्द्र बार्व नी वेदशकास स्तवास कोलास्त्र**क्ष** नी वर्मवीर थी जिलोक चन्द सहाना

भी विरदारीलाल बनाती पृत्तकाञ्चक्ष भी शिवनारायच बचाच

समन्यवाद । वेदप्रकास व्यावास सम्त्री

#### श्रार्यसमाज सरस्वती विद्यार (पंजी) दिल्ली का श्राठवां वार्षिकोत्सव

धविष -६ मई सोमवार से रविवार १२ मई ८५ तक

स्वान-धावसमाच मन्दिर, बी-**ब्लाक, सरस्वती विहार।** 

कार्यक्रम-प्रात प्रतिवित सत्र ६ वचे से ७ ३० वजे तक पूर्लाहृति १२ मई ८३ को १० वजे प्रात

बह्या-स्वामी स्वरूपानम्ब जी एव स्वामी वयदीश्वरायन्य जी

रात्रि – रोण दक्को से द ४४ तक जजन । स्वामी स्वरूपामस्य जी एव बीमान् मायानम्य जी।

वेदोपवेच--- शक्तिविन रात की = ४३ से १ ३० वर्षे तक महान् विहानों द्वारा : वार्व स्त्री समाव उत्तव-११ ६ ८१ वनिकार को दोपहर है क्ये है ६ क्ये तक बास बुबा सम्मेशन-- १२ १ द१ रविधार को प्राप्त १० ३० वर्ष से १३ बचे तक ।

प्रीतिनीय--१२ वर्षे ते १ वर्षे तक रविवार को ह मन्त्री कु वर स्थानांचे वेशी

### सावंदेशिक वार्य वीर दश अर्थिसमाज होती बीहल्ला करनाल की तदर्घ समिति

#### का गरन

की नरवेच शास्त्री १०१ दवाससिंह कालोगी, करनास २ उपप्रवाम ची० साससिंह विस्सी बाईपास जी ब्टी व रीड, करनास वैच रहीराम मीहरमा फोट, करनास

४ कोवास्त्रसः भी स्तिवाराम एडवेन्डिट

बार स्म, करनास १ सदस्य भी हरीस नुवाटी नवाब खता, कलन्द्री बेट, करनाक

भी महाराज कृष्ण जोपड़ा बीवडा ट्रांसपीटं, दिल्ली गईवास. बी o टी o रीड, करनास

मा० वसंबन्त विष्ठ डी०ए॰वी॰ उज्यतर विकासन करमास चौ॰ रतनसिंह

मीहेर्बना बाटान, करनाम ना • सुन्दरसिंह

म**्न• ३८४ मीहल्या जाटान, करना**स केंबॉरसिंह बार्य (त्रो॰ शेरसिंह) प्रधान, बार्य प्रतिनिधि सभा, हरिवासार सारस्वत मोहन "मनीषी" का श्रमिनन्दन



नत २ प्रमतुबर को अधिम जारतीय त्रका सव का वाविक समारोह होटल सिकार्य वेहरादून के सकाकार में कविवर ताराजस्य पास वेकल की सभ्यक्तता भीरडा व्यापेण्डनाच सर्मा झरसां के सान्त्रिक्य में नहीं सुरुवता के साक्ष सम्पन्त हुमा । इस सक्तर दर ही। ए० बी। कालेक सबोहर के हिन्दी प्राच्यापक, साव के बक्तर, प्राचा कफन तथा बूंद-बूंद वेदना वैसे सम्बद्ध कांच्य संकलनी के प्रवासिता हिन्दी काव्य सच के ग्रुवार बुद्धा कवि भी सारस्थत बोहन "मनीची को "तक्क भी १६५४ 'सी उपाचि से विस्वित करके मानवभ, स्मृति चिह्न, साम चौर नक्द पुरस्कार से विधिवत् सम्बानिस किया वया । स्थानीय स्कूथ के नक्यों को भी पुरस्कृत किया वया। युक्य प्रतिथि वे त्रिविषम प्रार०सी० सिक्स ।

> यहेन्द्रप्रकाष-चन्द्रीयाः प्रकार "कारत कारती", **सक्रीत**र

#### गऊत्रों की तस्करी का गढ

नवचारत टाइस्स १० चप्रैल के प्रका-कि रात को ही सबमय एक हवार नऊयो को पूर्विस की साविश से यमूना पार करा वित समाचार के बाबार पर दिल्ली बार्व प्रतिनिधि समा का एक प्रतिनिधि-विया नवा। दिल्ली गामी की तस्करी का गढ बन नया है। बीर बड-बड़े नेता तथा मण्डल बलीपुर ब्लाक स्थित हिरलुकी गाव के युवको से मिला । जिन्होंने सपनी पुलिस क्मीं भी इस घोर कोई व्यान नही जान पर बेलकर बैंकडो गायों को मौत दे रहे हैं। प्राम प्रधान थी चन्द्रशास ने बताबा कि इस सम्बन्ध में स्थानीय नेताओ 🕏 मुहुने जाने से बचाने का प्रयास किया। ये गऊएँ दिल्ली के रास्ते उ०प्र० ने भी कोई सहयोग नही दिया। इस प्रति-के बाबी जा रही भी। स्थानीय यूवकों ने निवि मण्डस में डा० श्रमपास, डा० रघ-सब को पुलिस के हवाने कर दिया। हिर बीर वेदालकार, यो चन्द्रप्रकाश तथा श्री शुक्ती गांव के युवक मण्डल के सचिव श्री सम्बैना सोबीरोड और स्वामी स्वक्यानम्ब वे । प्रतिनिधि मण्डल ने उन्हें प्राप्तवासम वसकीत सिंह ने बताबा कि पुलिस ने दिया कि वे सम्बन्धित अविकारियों से इन गऊमो का रखने में भ्रसमर्थं हा व्यक्त गोरभा के लिए पत्राचार कार्य करेंने । की। वरदुव के साथ कहना प्रक्रता है

#### सिधा त्रायं सम्मेलन

विवन भारतीय सिंबी पार्य समा प्लामु का वार्षिकात्सव सम्पन्न के द्वारा बार्यसमाज पिम्परी कालोनी पूनामे १७१८ १६ मई १६८५ को बढसमाराहपूत्रक मनाया आग रहा है। सम्मेलन का उद्श्य (१) धापस ने निसन, (२) एकीकरएा,(३) विवारी का भावान प्रदान (४) कुरीतियो से खुटकारा, (१) बैविक वर्ग की जानकारी भीर पालव्ह का बिनाश प्रादि है इस सम्मेलन मे भारत भर से सनेक नेता ज्ञानी विद्वान् प्रवार मस्त्री रहे हैं।

नेषाराम धाय

#### श्वार्यसमाज मंदिर गांधीनगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव

धार्वसमाज नांधीनगर का वार्षिको-त्सव बढी भूमचाम से ६ मई से १२ मई क्क मनामा जा रहा है। इस अवसर गर धनेक विद्वान् समीतानार्य धार्यं नेता पकार रहे हैं।

१२ मई को "राष्ट्रीय एकता सम्मे नन" होना विस्तवी प्रध्यकता श्री राम-बोपास बालवासे करेंने।

श्यामचुन्दर विरमानी

## श्रार्यसमाज राज चैनपुर

धायसमान के वाधिकोत्सव पर इस क्षत्र के प्रतेक वार्मिक जन वैदिक वर्स के पावन सन्देश का सुनन ६कटउ हुए। ए० महेन्द्रपाल धार्य, भू० पू० मौसवी महबूब के मायम तथा श्री दयानन्द सत्याची के गजनों से सोव सस्पश्चिक प्रमावित हुए।

नन्त्री--बार्यसमाब राज चैनपुर, बिहार

#### निर्वाचन

२४ मार्च १६८५ को शाससमाक बेम्बूर का चुनाव हुया जिसमे निम्न प्रकार से पदाधिकारियों का निर्वाचन हुया। कृपाकर बाप अपने पत्र में प्रकाशित कर प्रमुग्रहीत करें।

पवाधिकारी जिनका निर्वाचन हुवा-प्रवान-की वयदेव भी सार्व, उपप्रवान-की नुसजारी सास भी धार्य, मन्त्री देवपात शास्त्री, उपमन्त्री-की ईस्वर्शित जी शास्त्री, कोपाञ्यक्ष-श्री जनवामदास जी चान्दना, पुरसकाञ्चल-की राजेहर कनानी वी वकील । वन्धी

वेगपत सारजी धार्यसम्बद्ध चेम्बर प्रभुकी प्राप्ति " (पळ १का क्षेत्र)

४ वर्षितकाञ्चर्यः = वरितकः है कपर, पृषक्

धारमा के सम्बन्ध में उसे वह वह बारणा होनी चाहिए कि बारमा करीर ही नहीं बरत मन से की पूज्य है और वह निस्तालक के अपर है, धर्माय निस्तालक का सवासक है, बर वह मस्तित्लक का तथा-तक है तक बसुर, जानेदिय और कर्म-निव्रों का तो कुँतर स्वामी ही है।

श्र श्रैरवत् — स्रवित्रवित = प्राम श्रीर प्राल-वृत्तियों को सिर से उत्तर की आर प्रेरे। भारना-व्याल के श्रन्थात श्रवका प्रात्तावास के श्रन्थात हारा प्रात्तों और प्राप्तों की दृत्ति को उपर से आए श्रवीत् श्रद्धाराध्र में पहुँचाए।

६ तत्त्रास्तो मनिरकति = उसकी प्राण रक्षा करता है।

प्रवित् व्यान या प्राणामाम के कारण वब प्राण्-वृत्ति रुक बाए दो पबराना महीं चाहिए। उद य्या में प्राप्त ही रक्षक होता है।

 ध्रमनवयो नग == धन्त भीर नन रक्षा करते हैं।

धर्यात् योगी और योगाञ्चासी तथा योगामिलाची को धपने धन्न के सन्बन्ध में बहुत सावधान रहना चाहिए। बहुा, मीठा, तीवा साथि उत्तेतक पदावाँ के सेवन से बचना चाहिए। यदानाथं साथि सामक-मोचन मुद्धिका मोग कर बेते हैं। कोई मा मासाहाची या सरावी योगान्यास साथि कर सकता।

स्वान्त का जान पर जाना परवा है। इसी-मकार खुत बन भी रखा करवा है। विद्यान में स्वृद्ध और गांगी निजार हों तो जी बोगाम्बास्त नहीं हो सकता। सद बोगी को सन्त के जिए रखना और मन पर कहा निबन्नस्त एसता चाहिए। मन स्वित्त सामित सामित स्वान्त स्वान्त

'सत्त का एक सर्व 'सन्तमय कोश है। सन्तमयकोण स्थल शरीर नात्र है। उसकी बपेका मनीजबकोष' सुक्य है। धम्मस्य तथा मनोमय कोशी का स्थानन प्रातामय कोस के द्वारा होता है। वह मनोमय की धपेका सुदमतर है। मनोमय की धपेका विज्ञानमय और समिक सूक्य है उसको बड़ा चिर' सम्द से कहा नया है। सिर प्राणों का साधार है। जान की नति पर सावधानता से सच्टि डाली तो प्राण की ठोकर सिर में समती प्रतीत होती है, बर्वात् प्रालाका एक प्रकार से वह मूल ब्दा है। इस चार कोशी का विवेक करने से पाँचवें भ्रानन्दमय कोश का ज्ञान तथा मान होने सगता है । वेद में धनेक स्वानी पर उसे 'मबुकोस' कहा गया है। इस नव मे उसे देवकीस' कहा है, भीर इसे 'अपि-झीबंत कहकर विज्ञानमय कोण से अपर बताबा बवा है। इससे बात्मा पुत्रक है, जहमें परमात्मा के वर्षन होते हैं यही मुक्ति का सावन है।

इस्त प्रकार क्षमा मन भीर प्राया से स्ताधित स्टिंग्स एव नुसल्कर-

वेबकोश समुज्यित —वेवकोश समित हुमा है।

ग्रयात् भगवान् का वोध कराने वासा कोश इकटठा हुमा है।

इस प्रकार योग-सामन से परमाल्या की प्राप्ति होती है। सुख प्राप्ति के साधन

(पून्ट ७ का खेव) बरका, बढ़ कु मारी। कूप से से वही खक्द सीटकर उसके कान ने भागा। वस फिर क्या वा ने उसने खनाव भारी और कूएँ से पड़ा पड़ा ही दो तीन दिन पीछे वहीं भर

अतएव जब लोग मूर्व हो जाते हैं तो सब स्वार्थीं हो जाते हैं और इस प्रकार अपने आप पर ही आक्रमस्य कर बैठते हैं। हम मी इस समय ऐसा ही कर रहें हैं यदि आप अपने आपको बनाना चाहते हो तो परस्पर नेम करते और स्वपनी खरिक बढ़ाकर बुवेंको तथा नि शक्तों भी सक्षा-यता करते उन्हें अपने जैसा बनाओं। खेब तक यह न होमा तब तक तुन्हे ससा में सुख न निस्ता। मूल को स्नोहना ही पदेवा तमी सुख मिलेगा।

सौर सी सुनो । एक मनुष्य के फोबा या बास्टर साहब ने मरहुम दिया और कहा कि एक सो फाई नामा ने से ही साराम हो जायेमा । परन्तु उसे साराम न हुमा । इसे बास्टर के पास गया । उसे सब हान कहा। यह बोजा, सौयिक तो सम्ब्री है। परन्तु पुन्हें अयोग करने की विकि नहीं आंधी न्वोंकि पास में मनाद है यह मरहुम को सपमा काम नहीं करने देता। पहले इस मबाद की निकालों। फिर इस मरहुम को सराम्यो । उसमे मबाद निकास दिवा और फिर उस स्वाम पर मरहुम कनाया। पहला फाका ही साराम करके स्वरा ।

हमारे मन में मनाव है हस्तिए महर्षि दवान व के उपरेखों का मरहृत कुछ काम नहीं करता। पहने हम मनाव को निकासो। फिर महर्षि के उपयेशों का मर हम सगाने का हुछ पन मिल सकेवा। पहने उस गाठ को काटो मन को पविच बनाओं, मूठी वाटी को खोडों यस बेबा पार है बीर आप सास्तरिक सुख आप्त कर सेंगे।

> प० गुरुदत्त (पृष्ठ ५ का क्षेत्र)

(१८०६ माजप)
इस निष्कपट एवं धारुस्त धारुवावी का कम्ब दिवन २६ धारुन १६०५ शुक्रवार को पूरी अदा और समारोह से मनाकर यह सिंद कर दों कि धाप धपने पूजजों के सन्ने धारुवाणी और सदालु है।

क्या की अच्छा हो कि महात्मा हस राज कोर प्रृतिकर मुरदस जी विनकी आयु में मेनल एक सप्ताह कर है। प्रस्तर है। इन दोनो बिल्डामें नेताकों के सम्बन्ध में प्रात्मीय समाधी हारा प्रकाशित पत्र तवा व्यक्तिकत क्य से निकाले जा रहे साप्ताहिक और मासिक एक प्रति वर्ष समुक्त विभागक निकालने की प्रया जारी कर में। इस से युवा पीशी को भी सपने जीवन दाताकों करने का सीमास्य प्रमुद्ध से स्थान करने का सीमास्य

> एन॰ सीं॰ २३६ **सोय अवस्** कोट किशव **पस्ट,** वासन्वर **सहर-४**





## श्चार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(बनुमानित लागत दो करोड रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राधि म्रायकर मिनियम जी० ६० के

प्रतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा वान चेक/क्लीकार्डर/वेक मुक्ट हारा

मत्री, माता चल्नादेवी मार्य मर्गयं नेत्र चिकित्सासय,
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१६ के पते पर मेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सास्य की शिला पर

#### अकित किए जाएगे। निवेदक

राज्योचारा शास्त्रवासे पूर्ववेच महास्त्रय वर्गेपास स्रोतंत्रकार स्रातं स्रेपकार प्रिकार प्रतास प्रतास प्रतास स्रोतं स्रातंत्र स्रातंत्य स्रातंत्र स्रातंत्र

सौजन्य से महाखियां वी हट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीर्तिनगर, श्रीकोषिक क्षेत्र, नई दिस्ली-११००१

## केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पद्भते रहिए

- नमा आप ऋषि, मुनि तपस्थी, कोमिकों को समृत काग्री पढ़माः बाहते हैं?
- व्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरस एवं मधुर शब्द में जानना वाहते हैं?
- चना माप उपनिषद्, गीता, रामायण, बाह्यणबन्य का माध्यारिमक सन्देश स्वयं सुनना भीर प्रपने परिवार को सुनाना बाहते हैं?
- क्वा आप अपने श्रूरवीर एव महापुरुषों की सौर्य गावाएँ जानना वाहेवे ?
- नवा चाप महर्षि दयानन्य की नेवारिक क्रान्ति से भारमचेतन्य जानुत करना वाहते हैं ?

यदि ही तो बाइने कार्यसन्देश परिचार ने खामिल हो बाइए। केवल ४० रुपये में तीन वर्ष तक हर उप्ताह पक्ते रहिए। साथ ही वर्ष में बाद ब्रनुपम मध्य विजेशक भी प्राप्त कीविए।

एक वर्ष केवल २० रुपये भाजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान— आर्यसन्देश साप्ताहिक १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेंसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

वाचा कार्यालय—६३ गली राजा केशरमान, फोन : २६१८३८ व्यवसी वाचार, विस्ती-६





मुल्ब एक प्रति ४० पैसे वर्ष १ प्रक २६

रविवार, १६ मई, १६= इ

धार्यं सबस्सर ११६०८५३०८५

ब्यष्ठ २०४२

दयामन्दाब्द --- १६१

# देशद्रोहियों को सख्ती से कुचलना आवश्यक है

-रामगोपाल शालवाले

पजाब तथा दिल्ली में हिंसा एवं बिहोड़ की जो प्रवृति उमर रही है जस रहि एयं सार्वेद्र हिए सार्वेद हिए सार्वेद सिक प्रायंत्रीतिकि सभा के प्रधान और समगोपाल घालवाले ने कहा है "उचित है कि सरकार देते उत्तर कुर वाले के विकास करने वाले देखडोही लोगों ने हस्या तथा विकास के प्रवृत्त कुचल दे। विदेशी इसारों पर काम करने वाले देखडोही लोगों ने हस्या तथा विक्लीट के प्रपत्न देशा है। प्रधानमन्त्री इत्या गांधी की हस्या के पूर्व पजाब में जो स्थित थी उसे इस्टोने फिर से कामस कर दिया है। वेश्व के स्मृत्त एक गम्मीर समस्या सडो कर दी है।

श्री शालवाने ने कहा-- देश की झलण्डता एव एकता की भग करने

वाली राजनीति फिर से शुरू कर दी गयी है। श्री रघनन्दन लाल भाटिया तथा चौषरी बलवीर सिंह की हत्याए सत्रासवादी क्रियाकलापी की गम्भी-रता की स्रोर इगित करती हैं। श्री गालकाले ने सपना क्रम चार्चरस्ते हुए कहा—"जब से धर्जुनसिंह पजाब के राज्यपाल हुए हैं, तब से सत्रास-वादी कार्यों मे वृद्धि हुई है। वस्तुत श्री मिह के परामर्श से ही भारत सरकार ने कुछ गलत कदम उठाये भाराली विरोधी पक्ष ने सरकार की भइड नीति को भाग लिया और स्थिनि को सस्थिर बनाने को नाजिश शरू हो गई। सरकार को तुष्टीकरण नीति ही वर्तमान चरमपथी कार्यो की नींव है।

नोगों से भ्रातुन्त की भावना को कायम रहने की प्रपीत करते हुए श्री सालवालें ने श्री धर्जुनिसह को जान के राज्यपान के पत से हटा लेने तथा वहाँ कोई स्योग्य प्रशासक श्रेवने को यौग की। नाम ही यह भी कहा कि चरमपिया। के घरों की तमाझी लेकर सभी निस्पोटक पदार्थों को सरकार सभने कब्ब में लें।

जनता का बाहबान करते हुए की बाजिबानों ने कहा कि समासवादी को बाजिबानों के दशकी में सभी लीग सरकार की उमीननह सदद करें जैमी कि पिछली राष्ट्रीय विदित से की थी। 'श्री बातलाने आर्यमाज तिनकानगर के वाधिकीत्सव के धन-सर पर बीग रहे थें। उन्होंने प्रार्थ- समाज निलकतगर के द्वारा संवा-नित स्कृत तथा वार्षिक समाजिक कार्यक्रमों की प्रशास की तथा प्रार्थ समाज के देश देशान्तरों द्वीप द्वोपा-नर तक फैले प्रभाव का भी मृल्या-कन किया।

यह वार्षिकीत्मव ४ मई से १२ मई तक बड़े समागेह्यूकंक मनाया गा। इस अवकर पर एक वेद कथा हुई जिसमें प० चुनीताल के मधुर प्रेरक भजन हुए और प- यदापाल स्वागु के बेद प्रवचन हुए कथा में मिट्ट पा। इस अव के का प्रवच्च करने पन पन। इस अव के का प्रवच्च करने पन। इस अव के का प्रवच्च करने पन। में अरूप- थिक वा प्रवच्च करने पन। में अरूप- थिक वा प्रवच्च करने पन। में अरूप- थिक वा प्रवच्च करने पन भा मिया।

# देश के नभ पर समस्याओं के बादल मंडरा रहे हैं

आर्यसमाज गांधीनगर में सभा प्रधान का त्रोजस्वी भाषण

वार्यसमात गावीनगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव बही प्रभाग के साथ सम्प्रतन हुमा। ए महें से लेकर है, महंनक के हुस समारिह में शोभा- यात्रा, अजुबंद परायण यह, वेद- कदा, प्राचं महिला सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का प्रायोजन किया गया। शोभायात्रा में समुनापार की समस्त कार्य सर्वमाणी के वार्षिक जने, वालक-वालिकाओ तथा मुनावार की समस्त कार्य सर्वमाणी के वार्षिक जने, वालक-वालिकाओ तथा मुनावार के स्वामाणी के वार्षिक जने, वालक-वालिकाओ तथा मुनावार के स्वामाणी के वार्षिक जने, वालक-वालिकाओ तथा मुनावार के स्वामाणी के वार्षिक क्यानय के नाय-

रिको ने भव्य स्वागत किया ।

रिवनार को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में श्री वेदप्रकाश श्रीकिय, श्री विक्वतिक मेचारी, तथा दिस्सी प्रतिनित्ति समा के प्रधान श्री स्पर्देख ते प्रपूत भावश दिये। समा भ्रेषान ने कहा आर्यवमाज के प्रभा से विव्यवकात ते देख वर्षे और समाज में फेनी समस्त कुरीसिया को दूर करने के लिए समर्थ करता रहा है। इस सम्य राष्ट्र से श्रु छोर समस्याओं के बादल मुकराते लगे हैं। विषटनकारी तस्व देश के गीन में पलीता लगाने मैं अग्रसर है। सरकार इन उप्रवा-दियों के मामने दम्बूगीति अपना ग्रही है। धार्यसमाज ने मदा गष्ट्र को एकना के लिए कार्य किया है राष्ट्रीय एकता को ब्यान में रणते हुए मैं दिल्ली की सगस्त आर्यसरमात्रों को कोर सरकार से निवेदन करना हुं इस सम्बद्ध यगर सस्ती से इन चूनी ह्ल्यारों को नहीं कुचला गया तो देश की एकता स्वर में पड़ सकती हैं। हसारा विष्कीए आलीचनास्क्र नहीं हैं जनहिंद्ध धीर राष्ट्रित के

िए यदि सरकार सक्षका कदम उग्नी है नो हम सहयोगको नैपार है। किन्तू साम्प्रदायिक ताकतो के सामने सम्कार का फ्रार्य-समाज विरोज करता है।

समारोह में वैदिक धर्म के नारो को गुजानी जनता ने करनल ध्वनि से उनके वक्नव्य को समर्थे दिया। इसका मागोजन प्रधान श्री यदुनन्दन धर्मर धौर मन्त्री स्यामसुन्दर विरमानी ने किया।

. 🗆

#### सत्संग वाटिका

ससार मे बीटा स लेकर हावी पयन्त विक्रिष्ठ बीवसृष्टि हु । उनके नाना रूप-रग, पृथक्-पृथक् स्वभाव धोर भिन्य-भिन्न भोजन है। बहुत स जोव धपन कीवन क सिए किसा को न भारते, न सवाते, केवस प्रकृति प्रदत्त प्राह्मार से काम वसात है। जैस हाची, नाय, घोड़ा धावि। धनेक वाबो का दूसर जावो क प्राण सिए विदा काय गढ़ी चल सकता, जैसे-सिंहावि जीव। परन्तु इन जोबो से स बाह किसा बोव का प्रस्तित्व किसी जीव का धनप-क्षित हा, बाहे बढ-बड जाव-शास्त्र विशा-रवो का धमक म भा उनक सांस्तत्व का बावदयकता न बाई हा, चाह विकास-बादी इनको क्वस ज्ञान राह्त विकास हाका परिवास समस्त हा, परन्तु व सब जीव किसान किसी क्प म प्रकृति को सभ व्ह है। उनका सस्तित्व भनावश्यक मही। प्रकृति को उनकी जरूरत है। मीर ब्रह्मवादियों के विश्वासानुसार तो उन्हें एक बडे ही विचारक तत्त्व न निर्माच

सुष्टिक की वृक्ष पुज इस नाक क्षी मधान म बढ हा बाबस्यक है। एक भी पुजका कमास सक्षान विव अकार सराब हा जाती है, ठाक वसी प्रकार किसी भी प्राणा का क्रमा स साक-व्यवस्था विगड सकता है। भीटी क्या है ' मझला जस म बया बनाइ यह है ' काल रूप सप का क्या उपयोग ताह ' इस प्रकार विकास करन झोर प्रकृति का निराक्ष स्व स सब क शांस्त्रत्व का महत्त्व जाना वा सकता हु। ६६ टेका॰ मकाका का लाशा का उठाकर चाटवां हा ल जाती हूं। महामारी रोगो क समय जिस प्रकार पडा हुइ साशा का भन्त्यांष्ट कर ६ वा चार्मात लाक का स्वास्थ्य रक्षा न सहायक हाता हु, ठीक इस। प्रकार चीटिया हितकारिया है। मञ्जालया पाना का मिलनता का दूर करन क ।सए स्युनिसपासटा क मागी सम-किय । नाग महाराज भा वायुक विषल भागका चूसकर इसा प्रकार लाक कल्याच करत हा क्युमा (वसा) जसा तुल्छ काक्षाभाक्तिसानाका परम सहयक ह। घास क जढा का निकालत ५ मिटा की काफा गहराइ तक साद दता है जिसस कि मिट्टा म उपज का - किन बब्दा हा इसलिए हिन्दू धम 📲 उपदेश ह मा हिस्यात् सवभूतान ।कसः प्राणां का न मारा । प्रकृति जिस पुज का धनावश्यक सममता हु उस स्वय नट्र कर दता भीर श्रपक्षा हान पर नय पुज अ। **ब**सा है। यहा कारण ह कई बाबो का वाति क लाप हा बान और कइ नए जीवो क उत्पन्न हान का धीर मिन्न भिन्न परिस्थिति वाल दशो स भिन्न-भिन्न प्रास्त्रियो के पाय जान का । अस्तु, जब सभा का कुछ न कुछ उप-

#### श्रु ति-सुधा-

## जीवन की सार्थकता

लेखक-प० बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीय

मोघमन्न बिन्दते ग्रप्रचेता सस्य वदामि वश्व इत्स तस्य । नार्यमग् पूष्यिन नो सखाय केवताघो भवति केवलादी।।

--ऋ० १०।११७।६

\*

योग है तो तब जीवो में चिरोमणि मनुष्य महागाब का तो स्वार्थ पराय कुछ उपयोग होना ही चाहिए। यह प्रकृति कीवल का सब स. एक्ट नम्मा मनुष्य केवल इस मिए तो नहीं हो क्वला कि उसके सिए कवि को कड़वा पर--

> क्या कह सहबाव क्या कारे तुमाया कर वये। बी॰ए॰ किया, नौकर हुए,

बा॰ए॰ क्या, नाकर हुए, पेम्बान सिसी और मर क्ये॥" सबै विन नए क्किथ के हेत्

नहां नहीं मनुष्य जीवन का सवस्य काई उद्देश हैं। विसस यह परार शक्त हो सकता है वह दस (उपत्वी) वरोर का पहला उद्देश जान ना सवन करना है। बाह्य जान हा नहां साम्य-तर ज्योति का जनाकर सारम-तरम का खासार् करना, स्रदन स्वस्य का जान, कब जान, ज्ञुक जान, जुल काह्य, यह तस्य कि विस्थक लिए जूनि कहता है—

'तस्मिन् ह विज्ञात सर्वीमद विज्ञात भवति'

जिसका जानकर सब बाना बा सकता ह, बानना मनुष्य का पहला उद्दूरम हु। प्रारम नान, मायात्रपच स वचाकर श्रमृतानन्द का प्राप्त करान वासा ।वज्ञान मानव-तन म हो प्राप्त किया जा सकता है। बस यहा इस नर-तन का साफल्य है। यह मानव शरार भारता क उत्तरोत्तर ज्ञान के विकास का परिस्ताम है। और इस प्रकार यदि अन्यास किया जाव तो अ)न ।वशान का विकास करक जीव अक्राम तक पठुच सकताई। यहाऋतभरा प्रजा का प्राप्त होता है। यहा है मनुष्य का प्राप्तब्य पद, माजल मकसूद । इसा पद प्रचन का योग्यता रखन के कारता मनुष्य-वानि सब यानियां स श्रेष्ठ है। वह प्रमुकी विविध सम्यक्तिया का उपयोग कर सकता है, बार बंदि मनुष्य एसा नही करता, उसनं इस सक्ष्य को यदि ह्योड दिया, अपन प्राप्तक्य पद की ब्रोप स मुह फेर लिया दो बंद भगवान् की वष्टि से--

"मोषमन्त्र विन्दते प्रत्रचेताः" क्षेत्रात हे रहित बहुल न्यर्व सन्त्र कावा है, प्रकृति के दान को न्यार्च जवा-कवा है। उसे कमनीन कुमुन धीर सुमपुर फनों के उपयोग का कोई भी खाँककार नहीं है। जिसने धपने जीवन को प्रकृष्ट कान को कों में मही बगाया उसे प्रकृति की विद्वतियों के मोन का कोई धनिकार नहीं।

'सत्य वदामि वध इत्स तस्य' सत्य कहता हूँ कि यह उसकी मृत्यु है। वास्तव में उसका बीवन, जीवन नहीं हैं, वह मुदां है।

'नार्यमस्। पुष्यति, नो सखायम्' न तो वह बहा को पुष्ट करता है सर्वाद सपने साम्बासिक बान को बढ़ावा है सौर न नित्रो, पढोखियो, का उपकार करता है।

'केवलाघो भवति केवलादी'

बहु केवन जाता है, जाने के लिए ही बीता है वह केवन पाप है अब करण है। वेद ने क्या उत्तम नक्य जीवन का क्याया केवन का नो ने लिए नता निका, किन्तु जीवन के लिए लाओ और जीवन वह जीवन है कि वित्र वे बहुम्जावना को पुट्ट किया जाए। साम्मास्थिक शक्ति को नक्सानी ही नहीं हो सकते और स ववको बहुमानी ही नहीं हो सकते और स ववको बहुमान का अविकार है। सार्त्यक हित वित्र वार्त्यक होता का अविकार हहा? स्वा यहन वहीं तो अपने सार्थका हित करो, सस्तार का उपकार करो, मुख्यो का कस्ताम करो। नवर, सान, पडोसी किसी के काम बाबो, विनश्वर काया को विसका कोई भाग भी गरने पर किसी के काम न बावेगा, किसी के हिते में सवाको, बीवन किसी के लिए स्व योभी बना हो। रोनियों की सीयपि, प्यासों को पानी, मुली को भोचन, खीताताँ को वस्त्र और शवातीं को समयदान देने ने तुम्हारे सरीए का उपयोग हो। ब्रह्म-ज्ञानी अपनी बास्मिक शक्ति से जगत् कर हित करता है, उसका एक-एक दवास-प्रश्यास क्या नृतों पर पवित्र प्रमाव पैदा करता है। इस नी विवाद-सहरी से सुष्टि मैं वह पवित्र हरगें प्रवाहित होती हैं जो जीव मात्र के लिए प्रकृति को वस्पाय-कारिणी बनाती है। यत समभी कि वह निठल्ला बैठा है वह बैठा ही बैठा सूक्य जनत् मे काम करके स्पूत्र जनत् पर निमा इच्छा के ही प्रमाय बाल रहा है।

'रहे वहां दीपक तहाँ निष्वय करे उदोत'

वहाजानी विकादेश ने होगा उस देश के कल, बाबू, पेड-पीको तक को सारिवक रग मे रनेगा, मही उसने उपकार होता है। सत वह प्रकृति के दिए फल-कूलों को मनुष्य के दिए हुए भोजन को, किसी त्रकार वी सर्ववान् के क्यि हुए प्रसाद को न्यवं नहीं कोता । परन्तु को एक वो क्नों ही करने बोग्य दुराराध्य इस ब्रह्मा-राधन कथ तप को नहीं कर सकता, वह समार की तेना करे समार के प्रति अपने को उत्तरवायी समभे। बहु कितना खाता है उसके बोगोपभोन से प्रकृति के कोच का कितना अपय होता है, और वह जनत् का स्पकार कितना करता है यह हिसाक उसे नवाना चाहिए भीर यदि इसम उस के काम से उसका व्यय अधिक है तो बह पापी है। भीर विवि केवल साता ही है भीरससारका किञ्चिन्मात्र भी हित नहीं करता तो महापापी, लुटेरा अधस्यस्प है। बाज हम ने कितने ऐसे मुटेने बीर महापापी, है, इसका विचार प्रत्यक मनुष्य अपने लिए स्वय करे । यदि अपने जीवन का विचार करें तो हम धपना जीवन सफस बना सकते हैं। प्रथम धपने की शायकर तब दूसरों की घोर घाका उठाने का ह्यारा प्रविकार है। वेद ने तस्य की शिक्षा वे दी। अब हमारा काम है कि हने जिस सिये यह जन्म मिला है उस उद्देश्य को सफल बनायें।

#### कुरीतियां

ले॰ स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती-प्रविष्ठाता वेद प्रचार

नडा चाय का प्रचार, भूजपान की प्ररसार, क्या गरीन करबार, साम्रु बका न पुत्रारी है। स्वान-विजेमा के माने, सने सडकिया नवान,

और नाख अर्थ कान, देको कैसी नति नारी है। रचे देवता अनेक, बाके मस्तिष्क रहे टेक, नहीं दुक्ति व विवेक पूचा दीन की विद्यारी है।

तो की बाला नहीं तक, बनी मुस्यमानो की कत, गरेकवके नहीं सवर मकर पूजा ग्रमी जारी है।

#### 8

#### ★ वक्न-सन्देश 🛧

#### दण्ड और शासक

दण्ड विधान ही प्रजापर शासन करता है दण्ड ही प्रजा का रक्षक है सोते हुझो को जगाने वाला दण्ड ही है। इसीलिए ज्ञानी सोग दण्ड को ही घम कहते हैं। जब दण्ड विचार पूर्वक लागू किया जाए तो प्रजा को घ्रानन्दित कर देता है और जो बिना विचारे दण्ड चलाया जाए तो सब धोर से राजा का विनाश कर देता है। ——महर्षि मनु

जिसके कन्धो पर शासन का भार हो, उसे व्यक्तिगत पाप भौर दोष का विचार त्याग कर, जिस प्रकार भी हो सके सदा प्रजा का हित करना हो चाहिए, यहो पुरातन राजधर्म है।
——रामायए।

ज्यों-ज्यो अभराभ अच्छते जीये, न्याय को उग्र होते जाना चाहिए। —वैन जानसन

पहले ग्रपराघ तो उनके है जो उन्हें करते है, दूसरे ग्रपराघ उनके हैं जो उन्हें होने देते है। —यामस फूलर

सम्पादकीय

## जनता वजुहस्त को तलाश रही है

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में एक साथ हुए बम के बमाकों ने सारा उत्तर भारत हिला दिया है। जून भीर मास के लोबड़े मासूम लोगों की फटी लागें, बीसते विवाडते अय से बर्बराते नागरिक स्तम्म बाक्रोश में तनी मानवता की मुकूटिया ग्रातकवाद की दुर्दान्त कहानी कह रही हैं। ४२ जगहों पर विस्फोट हुए और द॰ लोगों के चीचडे उड । सैकडों लोगों की वायल होना पड़ा है। भ्रातकवादियों ने इन बन विस्फोटों को एक समय में ही भनेक प्रान्तों में विस्फोटित कर भारत सरकार के सामने खुली चुनौती दी है लेकिन उनके इरादे कुछ भीर भी के, वे बाहते वे सारा उत्तर भारत हिन्दू सिस नृहयुद्ध की घान में मुलसने लगे। लाखों लोग इघर उधर आने जाने लग जायें भाकी तादाद में एकाएक बावादी का तबादला शुरू हो जाये । इस घडयन्त्र में निप्त विदेशी ताकतें भी इस दिन का बेसबी से इन्तजार कर रही थीं किन्तु उनके इरादो पर तो पानी फिर ही गया। उद्भवादी भपना हर हमला पहले से भीर भी अधिक क्राता के साथ करते था रहे हैं। सरकार के सामने दो बाते आकर खडी हो गयी हैं। पहली आवश्यक बात यह है इस समय सिख हिन्दू दगों से बचा जाये, अन्यया पृथक्तावादियों के मनसूबे अवस्य पुरे हो जायेंगे।

दूसरों — बातकवादियों के साथ कूर मुठमेंड मोल लेती ही पहेगी, क्वॉकि इसके सिवा कोई चारा है नहीं। पजाब उपवाद की ख्ती होती में तकफ रहा हूं परन्तु वहां हिन्दू सिवा वमें नहीं हो रहे। न हो सकते को परिस्थितिया है। उसका स्पष्ट कारल हिन्दू सिवा के प्रापसी रिस्ते नाते, यारी दोस्तों, प्राप्त का लेत देन हैं, वो उन्हें सामाधिक एक्यूनता में वाबे हुए हैं। इन रिस्तों को परखंचे उदाने में नमे हैं उपवादी।

 जो निर्वाचन के दिनों मे हमारे युवा प्रधान मत्री ने गुजाया था।

देश को धराजकता से बचाने के लिए सरकार को उसी भाषा में बात करनी पहेगी जिसमें उग्रवादी बोलते रहे हैं। वह माषा बन्द्रक की नाल से भीर बारूद के जबहे से निकलती है। हमारी पुलिस, और सुरक्षावाहिनी की बन्द्रके जग सायी हुई नहीं हैं हमारे जवानी में वीरता सो नही गयी है, अभी वीरता बाम नही हुई है। कमी मगर है तो हमारे नेताओं के पस्त हीसलों की है। चन्द मुद्ठी भर सिरिफरों की आवाज से डर जाने से काम नहीं चल पायेगा। सरकार ने सबक ले ही लिया है। नरम रुख अपनाकर भी क्या मिल पाया, पजाब समस्या पहले से भी और अधिक खतरनाक हो गयी। वैसे भी लोहे के जब तक टोनों सिरे गर्म न हों उनको जोडा नहीं जा सकता। सरकार का लोह मिरा ठडा रहा भीर अकालियों का गर्म। ये छड जुडने की बजाय भीर भी भलग हो गये। पजान की समस्या में उन आये फोडे का बापरेशन ब्लूस्टार के रूप में सन्कार ने किया। लेकिन सरकार तब भी समक्त नहीं पायो इन फोडे का विष कहा तक फैल गया है। पूरी बाह में भीर भनेक फोडे फिर मे निकल आये। सरकार केवल मरहम लगाती रह गयी। और अब जब ४२ बम दो दिन में फूट गये, देश के भीड भरे स्थानों में नाशों का व्यापार हुआ। सुरक्षाकर्मी नैताशों की चौकसी में लगे रहे भाग जनता बारूद निगलती रही। विरोधी नेता श्री बाजपेयी ने सारा इलजाम सरकार पर लगाकर राजनैतिक लाम उठाने की कोश्वित्र करनी प्रारम्भ कर दी। इस समय तो उन्हें भी बाहिए कि देश व्यक्तिगत दलगत स्वार्थों से वहीं ऊचा है। हमें केवल प्रशासन की मजाक उडाने का हक नहीं 🕻, बल्कि अपनी योग्यता और धनुभव कुसलता से राष्ट्र में उठी भयकर समस्या के निदान में सहयोग देना भो कर्तव्य है। हरियाएगा उत्तर प्रदेश, राजस्थान भीर दिल्ली के इतने स्थानों पर बग फूटने का मतलब है कम से कम पांच सी भादमी इस वह्यन्त्र में शामिल हैं। जाहिर है वे उत्तर भारत में फैले पड़े हैं, उनका कोई न कोई मुख्यालय जरूर रहा होगा जिसके ग्रादेश से उन्होंने १० और ११ मई के दिन चुने । इस बच्छी खासी उग्र-वादियों की शहर शहर में फैलो फौज ने भारत की नीव मे जोपलीता लगाने में सलग्न है, जरूर कोई न कोई सुराग छोडे होंगे। जासूसी विभाग को अपनी दक्षता का परिचय देना चाहिए। काल का अध्व दौडता हुआ। अब जून के प्रथम सप्ताह की तरफ आ रहा है, उप-वादियों को वह वर्षे गांठ अवस्य तडफडाएगी, उनके भीर क्रूर होने से पूर्व सरकार को विष दन्त तोड देने चाहिए। जो इक्के दुक्के मिर फिरे रहेंगें उनसे निपटना फिर और भी भासान हो जायेगा। इसलिए प्रजा के हित में बब प्रधानमंत्री को राजदण्ड हाथ में लेना ही होगा, मन्यवा हालत भौर भी सगीन होती जायेगी।

— बश्चवाल सुर्वाञ्च

# "नव जागरण के पुरोधा" पुस्तक पर मेरी आपत्ति

स्वामी रामेश्वरानम्द



श्री बा॰ भवानीनाल भारतीय ने नव जावरहा के पूरीया धन्य की बडी प्रश्ना की है। य॰ नेवराम से नेकर वो भी ऋषि के जीवन छारे हैं ने उन सबसे उत्तम माना है। यह तिस्तने इस सञ्जन को जज्जा नहीं घायी जब कि वह न जीवन परित्रों के साधार पर ही है। इसमे उसमता कहां से सागर पर ही है। इसमे

- (१) इसमे प्रयम न्यूनतातो यह है कि इस पुत्तक का नाम नहीं जिल्ला यह है क्यायदि ऋषि का जीवन चरित्र है तो जीवन चरित्र जिल्लना चाहिए
- () इसमे ऋषि कास्य लिखित भीवन चरित्र नहीं आह्मपाओं कि सब से प्रामा स्मिन्हे।

स्थाम श्रीकहते हैं मैंने पाँच वय मे देवन।गरियशर पढने का सारम्भ निया था। भौर सभको हुल की रीति की शिक्षा भी न तापिता सादि तिया करते थे। बहुत से थम अफ्ड दि के इलोक और सुत्रादि भी कप्टस्य कराया करते वे। फिर मार्वे वस में भेरा यज्ञोपनीत कराके मयत्री सज्या और उसकी किया भी सिमा दी मण्धी। मुक्त को यजुर्वेद की सहिता का धारम्भ कराकर उसमे से प्रवम रुद्र च्याय पर या गया था। विला शावि यह भी कहा करते थ कि तुपाचिव पूचन किया कर। प्रामे स्वामी जी शिखते हैं, माता जी बीर वावा जी के समऋति से क्ति। जी शान्त हो मए। फिर निकब्दु निरुक्त पुर्वमीमासा प्राप्त साहत्रों के पढ़ने की इच्छा करके ब्रारम्भ करके पढता रहा धौर कमकाण्ड का विषय भी पढता रहा '

सीर भवार्ग नाल कहते हैं मुक्स कर ने नि उप्टूनियन सीर पूज मीशासा खाबि पाइनो की पढ़ने की रूप, क्यन्त की । पूज १६। ये स्वामी व्यानच जो के विपरीत किसते हैं कि इच्छा व्यस्त की धीर स्थामी जी कहते हैं कि मैं पत्ता रहा।

साये स्वामी की तिवले हैं 'उस तमस मेंते तिवस्य किया कि घर दिनाह किए जिना ये लोच न सोवीं हो। ति त्या परवें रा ब्राजा मिलेनी और न माना पिता मेंत्र सुनारी रहते 'एर सस्त होने। तस नेहस ने बन ने सोच दिनार कर सह निवस्य ठाना कि स्वस्त कार करना

ब-म भर के लिए बच्चा बहु निश्चय मैंने किसी गर अकट मही किया एक मान्ये निवाह की नीवारी भी हो नयी। फिर गुर पुर म० ११०२ के बच ये घोच के बहाने एक बोती खाय में लकर घर खोड़ कर साम के समय जाय चंडा। सिपाही से कहला भंजा कि एक निज्ञ के चर बचा है। बार कोश पर एक ग्राम चा। बहा जाकर रात्री को उहरकर दुसरे कि महर रास्ती स उठकर ११ कोश चला।

भीर मवानीलाल को लिसते हैं कि स्व करित सारम बतास्त में दबनान्द औं सिसते हैं कि 'बार कोग पल के वे एक साम में पूजे और बहा के हतुनान मदिर में रात्री निवास किया वह साम बढ़ा राजपुर बा। इसी साम के बाबति सम्बद्ध में निवास सार्दि की पूछ पुत्रिका है। दूबरे विन महर राजी बज्कर पन्त्रह कोस क्यों।

भीर स्वामी की कहते हैं, चार कोख पर एक गाव था। वहीं ठहरा धीर सवाणी की कहते हैं कि स्वामी वी एक गाव के हनुमान मेल्टर में ठहरे धीर वह गाव बडा रामपुर था। बढाधी किस की वात एक माने स्वामी की की या डा० साहब

यह रामपुर नवर टकारा से पन्द्रहु-बीस कोश दू है। स्वामी जी प्रचम दिन ही रामपुर कैसे पहुँचे। जब कि रामपुर टकारा से ५० उह जीस कोश दूर है। घौर श्रद श्रापने मावदेशिक सन्ना के निर्शाद के विषरीत स्वामी दयानन्द जी की अपन्म तिथि क्यो सिली। इसका तो यही प्रयो-जन है कि आयों ने परशार विरोध सडा हो जाए। भीर यदि भागके कथनानुसार धनर स्वामी दयानस्य और की अन्य तिथि भादो मास की मान की जाये तब स्वाभी की का यह कथन कैसे सत्य होगा कि विवाह की तैवारी हो चुकी बी क्या शांदों में य प्राह्तिन पिल्पका वे विवाह होगा, सम्भव था और स्वामी जी वर से किस मात में निकलते हैं। और विद्युर के कार्तिक ने मेले पर नैसे का सकते हैं। अविक प्रारियन के परचात् कार्तिक माख ही क्राता है। सनमन एक मास स्वामी बी बायली याम मे रहते 🖁, भीर तीन नाव कोट कांगडा में रहते हैं। फिर कार्तिक का मेला सिद्धपूर बाया, और वे बाडे के दिन में एक पोती में क्षेत्र काळी । इसके स्कृत १८८ के धनितम दिन वनते हैं। वर्राराज बर से बैदास के धनितम दिनों में निकसते हैं। एक मास सायते प्राप्त में रहते हैं। किर वर्ष ऋतु के दिनों में कोट कागडा धीर धनत ने सिटपुर के कार्तिकी मेले पर कहें। जाते हैं।

स्वामी दयानन्द जी तो लिखते हैं कि १४ वर्ष की सबस्था के बारम्भ तक सम्बूर्ण यजुर्वेद कुल-पुत्र सन्य बेदो के मान सीर शब्द रूपावसी ग्रांवि स्वाकरहा के क्रम्य पूरे हो नवे वे सर्थात् पढ लिये थे। और भारतीय जी कहते हैं कि यजुरेंद का वही श्रम मूनसकर को पढाया व्या । जिसमे कैलाक वाली बासकोच जनवान् खकर का वर्णन है। भीर पिता की प्रकृति सपने पुत्र को सम्बदम्य निष्ठ वर्गशीय एक भारको ब्राह्मण बनाने की बी। मैं पूछना चाहता है कि बजुर्वेद के किस सम्याय में कैसास वासी कासुतोग जनवान् सकर का वर्णन है। क्या बाप वे बहा सर्वेवे धीर बब स्वामी जी ने सम्पूर्ण यजुर्वेद सन्य देवो के कुछ जान और सन्द रूपा-बनी बावि स्थाकरल के बन्ध वह लिए वे। तो क्रापने क्यों कहा कि वहीं साथ पढ़ाया गरा जिसमें कैलाश वासी श्राश्-तीय अववान् शकर का वर्त्तन है। प्राथ-कल कैवाश बहुधा वीनियों के अधिकार मै चला गया है। धन वह बाबुतोप वन वान् शाकर कहाँ रहता है। बापको भी तो कुछ पना हो। स्वामी बीको धर्म श्रीहकहर प्रापने स्वामी जी का क्या धामान नहीं किया। तथा पु० १ पर धापने स्वामी दयानन्द जी की नव जाव-रण के पुरोचा भीर शालाका पुरुष सङ्घा है। पूरोबापूरेहित को कहते हैं। और शलाका सुपारी काटने के स्रशता को कहते हैं। ये सथ्य क्यों कहे, स्वामी जी तो साक्षात्कृतवर्मा ऋषि वे । उनको पुरोधा और शलाका पूरव कहना श्रव-मान है। तथा बार बार वर्ष प्रवण कहा, प्रवत्तु भीराहे को नहते हैं। भीर स्वामी बयानम्य जी का सङ्घाविनिध्यमका निवासर य क्यों किसा कि उन्हें हुआर क्या पूर्व कपिल बस्तुका राजकुमार विद्वार्थं भी बुवनी पत्नी यशीवरा तका कुम्बसु है बासक राष्ट्रम को श्लोड हुओं का निवास तवास करने हेतु राजधसाद का त्थान कर, इसी प्रकार शायमा वया का वर्षिक वर नवा वर। वरमानातिक वैन्ह्य अस वचनों को सहन करने में धसमर्थ होकर बृहत्यानी हो वए । हिन्दू पर पारशाही के मन्त्र क्रवटातया शिवाजी के सुद समर्थ रामवास के निए नो यह प्रसिट है कि बैदाहिक मण्डप में सावधान शब्द की सन-कर ही बहरवाश्रम के बटिस दावित्वों स मुन्त होने के सिए बात्र हो स्टे। बौर विवाह कृत्य की समुरा श्लोडकर वैरान्य-वानी हुए। पृ० २१ <sup>।</sup> कृतवा ये बतावें कि इन तीनो का स्वामी दवानन्द जी के जीवन के साथ क्या मेल है। इनका जीवन क्यो लिखा प्रापने भीर अब पृ० ६६ पर धापने राजकुनार खिढार्थ का इविहास सिस दिया या कि शास्य अञ्चीत्पन्त्र बाजकुमार सिद्धार्थ का एक रोवी एक मृतक तथा एक कशाबी वं व्यक्ति को देखना किस प्रकार उनके राजसी जीवन को त्यान कर वैराग्य भारता का कारण बनाया। क्याढाई हजार वर्ष पूर्व की वे घटना दोहर ईनहीं जा रही है। क्या बापको इतना जी स्वरण नहीं यहता कि बद बाप पू॰ १७ पर सिदार्थ की कहानी तिक बैठे फिर २१ पृ**० पर भी क्वो** निका। स्वामी वयानन्व भी नहाराच ने तो बुद्ध को अबकर नारितक निसा है। बार उसकी स्वामी दवानन्द जी से सपमा देते हैं। गौर तुमसीबास की स्त्री ने नियव वासमा मे फसे तुलसीदास को फटकार विया, फिर उसका नया वैराग्य वा। इसी लिए उसने धपनी राषायस में शिका

### क्षेस गवार शूह कडू नारी। ये सब शास्त्र के समिकारी।।

धीर रायवास को ग्रह्मबाधम नहीं करना वा। तौ फिर मण्डप में किस लिए बैठा ये सब जुटे िट जोन थे। इनका उदाहररा बादित्य ब्रह्मचारी के सत्व क्या हो सकता है। ऋषि दयानन्द जी जन्म बरा भी कटिस वधीरों के नेवन करने के सिए ग्रहत्यानी हुए और विचा पढके तवा बोबाम्बास करके देव के बाबार पर सोते भारत की पुन जवादा और पासद का सण्डन किया। तुससीवास और वृद्ध ने बहुत वडे कालन्ड फैसाबे । और धापकी स्मरण शक्ति का एक खवाहुग्स् देशा हु। बापने पृ० १ वर किया है कि नुजराती के समर्थ तामुखकार करहेवासास जानिक नाम पुत्री ने निमा। ' पूत्रकान की रथमूरिन पर ऐसे जनेक व्यक्ति हुए हैं। **१रक्**राम मनु स्**र**ग, क्यान् श्रीकृष्ण धीर संबद्ध समय के राजनीतिज्ञ चिरो-विख वाक्षमव ' 'पुर मानमन के एकावक एवं पुरीवा दवाकव सरस्वती की नक्षमा भी ऐसे समाका पूछनी कें होती है। इसी पुरु के धन्तिम परिक्रों में बाप जिर निश्वते हैं। नुर्वर विकाक मूर्यन्य क्याकार कन्द्रैवासाम मुक्ती ने निस्ता था। चुक्रपास एक महातृता है, बद्धारी पड़ में वरपारका बीकृष्ण तम कर्ज कोन विदा हुआ है। इसपीयानियों पर प्रश्नकरि मनदे और सहस्या वाची की कोलाँ प्रदी 📳

हुआ शांक कावि सम्म वृद्धिका की मद सूमि में रहने वाली क्यर वादिका है को वहा पांचनी सत्तान्दों में वी । हुन्ह और सक वाति के सीव वह सहाकू बोडा बीर निवसी वे। इन बोनो ने यूरोप को बापने प्राक्रमको से बहुत बार उसाइ सा विवा वा। रोन को बीन को बी सनेकों बार इन लोगों ने लूटा। विश्व देश पर वे सीम सेमा सेकर पढ बादे वह' हाहाकार सब बाता वा । एक बार समाबार निवा कि बड़ी बारी हूजों की बेना हिमासय पर्वत के उस पार भारत पर ब्राक्रमण के किए इक्टठी हो एही है। इस समय भारत में बड़ा राज्य सबक था। बहा का राजा कुमारकुत जा। उनका पुत्र युवराच स्कारमुख उस समय तक्ष नहीं हुए वे । हुनो का सेना एकब होने का जैसे ही क्याचार मिसा स्वत्यकृष्य धपने पिता के पास बीडे बये। सम्राट कुमारनुष्त अपने मन्त्रियो एव सेनापतियों के साब मत्रका कर रहे वे हूखो न बुद्ध करने की। स्कृत्य मूच्य ने पिता सं कहा कि नै भी बुद्ध करने बाऊना ।

सहाराजाकुमारकुप्त ने बहुत सम अस्त्रा कि क्रिया बहुत गराकमो सौर

### बालमञ्च-

# वीर बालक स्कन्दगुप्त

प्रस्तोता-बलजोत शास्त्री

निवसी होते हैं। वे बामम पूरक विशवण मी बब्बते हैं और जनकी सकता भी प्रतिक है। उनने करना तो मुक्त विवास भी प्रतिक है। उनने करना तो मुक्त करना हो मुक्त करने वाले मही वे। उन्होंने कहा— पिशाओं। वेचा और बस को पता के लिए मर बाता तो बोर का मिन्यू को साथ करने की बात है। मैं मृत्यु का बाते करने की साथ की बात है। मैं मृत्यु का बाते करने की बात है। मैं मृत्यु का बाते करने की बात है। मैं मृत्यु का बाते करने की बात हो। मोर करने वेचा को समुखी के सारा जुटने नहीं बुना।

महाराज कुमारणुख ने सबने बीर पुत्र को हृदव ने जवा निया। स्वान्यपुत्र को पुद्ध में बाते की साक्षा निर्का वयी। बनके साथ मान के ने नामा वी निर्माण का पर पदना ने क्लाकर पवान को बार करके हिदासन की नान से बनने सफेद घोटियों पर वे बीर सैनिक चढ वये । भवानक सर्वी घोतल हवा और कफ के तुकान भी उन्हें भागे बढ़ने से रोक नहीं सके।

हुलो ने स्वा दूखरे देशो पर धात जब किया था। कोई धाये बढकर उनगर में धाक्कच कर सकता है यह उन्होंने केवी खोषा भी नहीं था। जब उन्होंने देखा कि दिशासन की पोटी पर से बडी बारी देशा उन पर धाक्रमण करने उतर रही है तो वे भी सबने को तैयार हो बये। उन्हें बब से धिक्कशास्त्रय यह हुया कि उस पबत से उत्तरती समा क माये एक खोटी ध्वस्था का सामक माण पर देशा नीत समाया मिसे बडा भागा मा रहा है। बहु था दुसराम स्व ट्युप्त।

मुख भारम्भ हा नया । युवराज स्कन्यमुप्त जिल्लाम निकलते ये शत्रुकों को काटकाट कर डर कर देते थे। बोडी देर के यूद में ही हुणों की हिस्मत टुट वई। वे सोग इवर उघर मागने लगे। पूरी हुए सना भाव सडी हुई। शत्रभी पर विकास प्राप्त करके क्षत्र सुवराज स्कन्द गुप्त फिर हिमालय को पोर करके अपने देश पहुचे तो उनका स्वागत करने के लिए नानो मनुष्यों का भीड वहा पहले सडी थी। मगवामे राजधानी से पाच कोख तक का माम सज्ञाया गया वा उनके स्वाभत के लिए पूरे देश में उस दिन उत्सव मनाया वया । यही युवराज स्कन्द-नुष्त भागे चलकर भा त क सम्राट दने। बाब के ईरान और अफगानिस्त न नक इन्होने प्रपने राज्य का विस्नार किया। इस जैसा पराक्रमी बीर इतिहास में दुलम ही होता है। इन्होने विग्विवय करके ग्राचनेत्र वज्ञ किया वा। वीर धर्मात्मा दयालु और न्यायप्रिय सम्राट था। बच्ची बाबो इम मी इन महान् पुरुषों न विका लेकर ऐसे ही बन।

युवामःच-

समेवी युवास्य यजमानस्य बीरी बावतान्

# युवक दीक्षित हों

स्वामी समर्पेगानन्द सरस्वती

थात्र ज्ञानव समाज की धरवना दुर्वशाहै। प्राकृतिक वैभव अपनी परा काष्टाकरप<sub>ष्ट</sub>च चुका है। किन्तु उसका फ़ान विज्वस ही विज्वस दीना रहा है। इसका कारण नवा है । प्रकृति के जिल तरवी को मानव ने स्रोध निकामा है। तमके सदु।बोन के बिए को सवाचार भ्रात्नाव तवा वितेन्त्रवता अपेकित है मह बाज मानव समाव ने नहीं है। इससे बढ रर दुस की बात है कि मानव समाय इसका उपाय ठीक नहीं सोच यहां है। धाव समानवादी तथा साम्बवादी जोय कहत हैं कि वर्षि मीज्य पर्याप्त मात्रा ने तस्यन हो तथा उनका वितरस जीक हो ही मानव समाज के हु क दूर हो जावेंने । यह बात कुछ प्रश्न तक ठीक है। जो सीव बुख और वरिव्रता के कारश कुरात्वा करते हैं वह इससे दूर हो बावेबी करन्तु मुख और वरिद्रता है वडकर तृष्णा और भीवगढ है। उसकी विकित्सा की क्या करनी थी उसको बढाने में सबे हुए हैं।

वाच हवार में सम्म बीर नस्त की इसवी क्नी नहीं कितनी मनुष्मता की है को सरकन कड़ने के बावन हैं, ईंग्बर क्रमान, क्राइट, क्राइवर्ड, विवेगितका, क्ष्स्वन । विद धन सः को एक सक्य ने कहूना हो तो वह है उत्तन सिखा । उत्तकी प्रोर मानव सवाब का ध्यान नहीं वा रहा । हुमारी सम्मति ने उत्तन शिना मानव समाध की स्रतिन संरम है।

परत् उत्तम शिक्षा का बाधार शी तो कुछ होना वाहिए। यही बात पाच हम इस लेका ने विकाना चाहते हैं। आव हम शिक्काधास्त्रकापरम नौक्रिक पर मोपयोगी परमोपेक्षित सिद्धान्त सवार के सामने रकना बाहते हैं। बात नई नही है। परन्तुन काने इसका विश्व शास्त्र से स्पयोग क्यों नहीं किया जाता । वह सिद्धात है वत प्रथमा प्लव । हम किसी शैनिक को सेना में गर्दी नहीं करते जब तक उसकी मन्द्रे के सामने कवा करके राष्ट्र रक्षाकी सगद नहीं दिलाले है। इसी प्रकार राष्ट्रपति सेनापति राष्ट्र के मंक्रि मण्डल संसद के सदस्य आदि सब सोवों से सपव भी जाती है। वैक्कि बुहुस्य ग्रामन इती शपय के ग्राकार पर बाबा है। विकास क्या है ? स्त्री पुरुष के एक दूसरे के सुबा-दुवा ने जीवन गर साव हेंने की श्रमक । वह शबय इक्त सुंव के बावने हो बाहे रविस्ट्रार के बनतर में

इससे कुछ सन्तर नहीं पक्ता सपस तो सपस है। बेद है कि ननुष्य के भाषी सीतन के जुलाबार शिलस्तालय में कोई सपस नहीं।

प्राचीन मर्थादानुसार इर विद्यार्थी को विद्या ग्रारम्भ करने से पहले तीन सावजनीन महाशतुक्ती में से एक न एक शतुके निवा चाव सपव सेनी होती वी। वे सावधीम सनुसक्या से तीन है (१) क्रमाम (२) धन्याम (३ सज्ञान। इसके निवारकाथ का बता लिया जाता वा उसे ही उपनयन सस्कार कहा बाता था। इसीलिए प्राचीन काल ने विद्यार्थी को बतीया वर्णी कहते वे। वर्णी इसलिए कि बहुइन तीनों में से एक सत्रुक नास के लिए बस करता या समाव दुस से अवने का बती बैंग्य धायाय दुख है शबने का बती अभिय अविद्या दुस से जड़ने का बती बाह्यएं कह्नाता था। जो श्रयोग्यता के कारण इन त<sup>्</sup>नों मेस कुछ न बन सके वह किसी वती के पास रह कर खुर्थूवा द्वारा वत पासन का लाज केता का वह खूद कहनाता था वह चुनाक करता था कि हुप्ट की सवा नही इस्या । किसी न किसी लोक सेवक की क्षी केवाकरूना यह उत्तका जुनाव वा। इसक्रिए बहु भी वर्ली कहनाता या।

धाव की शिक्षा में यह का कोई स्वान नहीं न कोई वह की महिला की धोर ध्यान देता है। वदि कोई सबस निवल पर धानों क करता हो तो उसी स्वतिक नपरा बन्नु के निवारकाण मर निर्मा किन्तु कराहीन कहेगा जुके स्था गरक पढ़ी है जो मैं इककी पूढ़ीवार में गांप मूँ। वह इस पराई मुझीबत ने घने आपकी निटा देने की दीक्षाने प्राचीन काल में मानव वाति को नना ऊवा उठाया था।

वाह्यक कहता वा कि अदि नवर के क्षेत्रक में देख भी विवाहीत है तो हुन विवकार है। अतिन कहता वा कि विव नवर व प्राम में एक दुवल पर भी वणवान् क्षरमाधार करता है तो मुक्के विकार है, मेरे जीने से क्याता सेवक कहता क्षरमाधार क्षरमाधार करता है तो मुक्के विवकार है।

बस इमारी सस्कृति का शूल तर्य है— शपम बत दोशा जिसका परिखास भाग्रसिकतम मात्रा में स्वेणकापूर्वक अस और स्थाका पूनतम प्रयोग।

क्स की सस्कृति ने अविक्**तन सम्ब** का प्रयोग है।

वजीवादी सक्षार ने वृजावित को यजासमब प्रत्याचार ी सूट है। सक्ष-वित का बेटा कैसा ही दुराचारी हो, इसकी सम्मत्त उसे निसकर ही रहेगी।

इस स्रविकतन स्वेण्झापूवक अस्य की आवना वानृत करने का उपाय है खिक्षा से पहल की दीक्षा।



व्यामपीठ---

उपनिषत कथा-माला-४

# सच्ची पूजा

### प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एको बसी सबमूतातरात्म एक डप बहुधाय करोति। तमात्मस्य येऽनुबद्यत्मि बोगा स्तैयासुख झान्बत नेतरेवास।। ४।१३ कोयनिवद्य।

स्म उरिनियन का प्रधास की विषय को तिर्मित कर रिमाहे। दूसरे किस समाज की यह व का प्राप्त होनी है मनुष्ती भे उसका निर्माह के नाहै। तसर प्रमुक्ती निर्माण के की या यह समाज की जिल्ला प्राप्त कर स्था है "संग्राप्त करा प्राप्त कर स्था है" स्वारा में कि जी उसका प्राप्त कर सखा है" स्वारा में कि जी उसका प्राप्त कर सखा है" स्वारा में कि जी उसका प्राप्त कर सखा

ष य ज ति वाज कहत है कि आयों का परमा साका जात मुण्डि रचना के बहुत य छ मान्त हुए। इ हुँ पहल यह ज्ञान नहीं व किरशास्त्रा एक हैं। पर हुँ धाप कमें भीर उपनिग्मे का वेखा है। नियदों ना परमास्त्र की गक लिखा है। जैसे कम न म कहा है एका बाा । धार्मार्थ परमास्त्र की है वेदों सामी

न द्वितीयो न ततीय चतुर्थो नाप्युच्यत । न पञ्चमी न वच्छ सप्पमी नाप्युच्यत । नाष्टमी न नवमी दशमी नाप्युच्यत । य एत देवमेक दृत बेद ॥

स्थववेद १३।४।१६ १८

सर्वात् परमात्मा एक है सनेक नहीं है। बहुन ना है न तीन है बार नहीं पाच नहीं छह साल साठ नौ सौर दस भी नहीं। सत्तप्त नह केवल एक हा है। सत्तान साथों को परमात्मा का ज्ञान नहीं या या पीखे से हुया सबया निमार है।

भाइयों सलार मे वण्यायमों की ही बात मानी जाती है। छोटा मादमी मति बाद मानी जाती है। छोटा मादमी मति बाद मानी जाती। कहें छोटे छ टे मादमी मनी जाती। कहें छोटे छ टे मादमी मनी जाती। कहें छोटे छ टे मादमी मन्त्री मण्डी बात कर बैंग्न हैं पर न जिसके पास का चाय प्रिकिक है। ग्या की बात आप प्रिकित मातते हैं। खैंते किस्त्री बात क्याप प्रिकित मातते हैं। यह ते किस्त्री बात के स्वाप्त प्रिक्त मातते हैं। यह नहीं भी उसी वाजार में रहता है। एक नाई भी उसी वाजार में रहता है। यह भ पाओं का इनाव करता है। एक मनी पुत्प के के पोड़ा हो गया। मत्र वित्त वह मनी पुष्प नाई के पास जाता है मीर नाई पास के पास जाता है मीर नाई पास के पास जाता है मीर नाई

यह विचार कैस फैला कि मार्थों को <sup>र</sup>दवर का ज्ञान देग से हमा<sup>?</sup> व्सका काण भी मृनियां परमात्मा का नाम वटो ग्रीर उपनियदो म कई प्रकार से भाषा है अनिन नाम परमेश्वर का है पर नुजल नाम भी परमव्यर का है व्सी प्रकार पथ्वी नाम परमेञ्वर का बायु नाम परमे बर का अपूर नाम परमेश्वर का भौर सूय नाम भी परमे वर का है। जब लोगो नेदेशा कि बेदो मे झरिन जल पृश्या वायुच न स्य भी परमे वर की **कहत हैं तो हि दू उनके आग हाथ जाड जोड** कण्लाहो गय परन्त्यहन सममे किय सव तागुलासक नाम है। परमेल्बर तो त्वह ै परतु ⊐सको कई नामो से पकारा जाता ≛। जम कि उ~निषद् मे श्रया≓ कियहसदाससार उस जल की रचना ै ग्राटस जल के कहने से क्या पामम-क्रतियाजाय<sup>?</sup> नही। कन्नापि नही शकराचाय जीकहतुहै जिससे सारासस र उपन हुआ। और जिसमे यह त्रय हाज ता<sup>के प्</sup>यक्तानाम जल**े**। ग्रयाका ज्ञान सम्टिके ग्राप्टि से वला धन है। यजो मन्दिरोपर भण्य होते द्मयासे पूछागया कि परमामा के भण्य क्या है ? ताउ हान उत्तर दिया कि श्याधारि ज्सके भण्ड है। बदो मे कह≓ किहप्रकृत मूय≂ माजैमा पवितार नवालों की जिसम परमामा नरचन का ैन्ध यहं ग्रामन।म म माका न जल नाम । परमन्बर वनो म जब य बातें बाई है तो काइ 🧚 यह नणय कसे हागा। सूना मेरे झाई निश्वाहै हेमनि <sup>!</sup> प्रकाशस्वरूप <sup>!</sup> तू मूम सीघ मागपर र चल जब यह धारिकासम्बद्धासयातो क्या यह मनि जानती है कि माप प्रतिन्ति ह**व**न करत है<sup>?</sup> पर तुर्यदि किसी दिन आपका कपडा न्सनी लपट मंग्राजाये ता यह उसे भी जला दती है। यह ता माएके कपड को भी नही बचासकती तो यह धापको

प्रकट है कि यहां धनि के धय पर मारमा के हैन कि भौतिक धनि के।

तुम प्रतिविन वरिया की सैर को जाते हो। दिया ये तिनन कृतो सही गहरे पानी ये ज ते हा यह तुम्द कृतो देवा किर कह जस परमक्षद कैसे हुवा? हसी किर वा उपनिवादों के यन्त्र में कहा है कि परमान्या एक है भीर उसको मुनियों ने बहुत से नामों से पुकार है।

### एकोहि मृनयो बहुवा वदन्ति ।

यहां गणित के जानन वाने तो बहुत हैं व जानत है कि हर एक सस्या का धारम्भ एक से हाता है। प्रत्यक सक में एक स्वय्य विद्यान है। दा तीन चर पाच इन सब में एक विद्यान है।

फिरकहाहै हेईदबर<sup>।</sup> न तेरा कोई नीचा भाग है न मध्य भाग भीर न तेरा कोई ऊपर का ही माग है। परमे क्वर मैं तेरी क्या क्यारवा कक<sup>े</sup> तूनीचे भौर जपर के विचार से भनग है ? झास मोग उस परमेदवर को भनी माति बानते ये। ये सब दोष इनमें महाभारत स पी से बाये। जब म सम्प्रदाय हए तभी से बे मी हए। महाभारत से पहले कही भेद विसाई नही देता है। कोई जाति इस्टि नहीं भाती। न सन्ने वेन बल्होज न कोई धौर ही जाति थी। प्राचीन समय में नदको चर ब्राह्ममो की ग्वार वर्णी मे विमाजित किया जाता दः । ब्रह्मचारी ग्रहस्थी वानप्रस्थी स यासी झादि सम्प्र दायक्राय क्रीर बहुक्ष अत्रिय वैदय जुद्र य सब गीजिक नाम की जातिया सकी हो गइ। पहने न काई जाति थी न भगहा य सब सम्प्रताया के ऋग है। लाग कहते हैं कि बायसमाज ही यह कहता है धौर कोई नहीं कहता पर तृतुक्तसीदास महा राजन भी ता व्ही कहा है। यह साढ तीन सौ वयं की ही नो वत है। उनस जब मन्पो न पृष्ठाता "होन भी यहा उत्तर दियाथा। एक प्रश्त होता है ता क्याण्सके चारया दस उत्तर होते 🗦 ? उहोने कहा इसमिए तो सत्य पदाव का तानहालगता। वर्ष बट जोर से हो रही है। चारो धोर वास उम आवा चास दतना बढ गया है कि उसने मान ढाप लिया है जाने वाले अजियो की विदित नहीं हाता कि हमारा मात्र कौन साहै <sup>?</sup> इसीप्रकार असे पुरुषों के सम्बो का माग भी जाता रहा पाखण्डयो ने

प्राचीन काल में जिस प्रकार सोग परमेश्वर को माना करते थे तुम भी यदि वैसा ही मानना चाही हो मान सकते हो। परमात्मा तुम्हारी बात निकट से सुनता है। यदि सुनाना बाहते हो तो उसके समीप होकर सुनाभो । निकट से उसकी मक्ति करो। परमेश्वर को जैसा नानत हो वैसा ही अपना बाचरण भी कर जो तो तम उसके निकट हो जाधाने। यदि तुमन माना तो कि परमात्मा सत्य है भीर भवित की भी सचाई की तब तावह निकट है। परन्तु मदि तुमने दुकान पर बैठकर सोगो को कम तौलकर देना भीर भूर बोलना बारम्भ कर दिया हो वह दूर हे यह उसकी दूर म भक्ति हुई। मैं कैसे कान सकता ? कि भापके मन म क्या है ? परन्त झापसे तो कोई बान भूली हुई नही। दसी प्रकार मरे मन का विचार मुमे ही मालूम है भापको तो न त नहीं पर तु परमात्मा सबके तिवारो को जानता

में ब्रापका उपवेश दूपरन्तु किसी दिन एक भादमी ने मुक्ते देख लिया कि भग पीता है और भगका लण्डन भी वरता है। सुभे उसने कहा कि बाबा एक स्थान पर तो भगका खण्डन करते हो धौर दूसरे स्थान पर झाप ही भग पीते हो। मैंने कहा हा पीता हू सपने पैसो स पीता ह। मनुष्य कहाँ तक दण्ड देसकता है ? परातुयदि मैं उसस कह कि भाई <sup>?</sup> किसी भीर से न कहना तो क्याबना? मनुष्य नहीं परन्तु परमात्मा तो दण्ड देसकता है। पर मनुष्यों से ता हम डरते हैं किन्तु परमात्मा से नही डरते। अर्ड<sup>†</sup> दो प्रास्तो वाला क्या देख सकेगा? वह तो सामने ही देख सकेगा अपनी पीठ की तरफ से तो नहीं देख सकेगा। पर तु परमात्मातो सहस्राक्ष हजारो बाक्षो वाला है। वह तो सूय की किरण के समान देखता है। उससे हरना चाहिए वा परन्तु आप इरते है मनुष्यो से। यदि परमात्मा का भय नहीं तो मनुष्य से क्या डरना? जिस मनुष्य न बुरा काम किया परिषाम सामने बा गया। भीन नेसता था। भारत वचने उलटेकाम किय जिसके कारण बाज यह दशा हुई । कीन देखता या रिये पस किसने विय ? दूसरे के घर म जाकर क्सिको स्वत त्रता नहीं होता। परन्तु तुम तो धपने घर में भी स्वतनत्र नहीं। यह सब बुरे कमी का फ्ल है। यह कीन देलता या? यह वही देखता था। प्राप कहेवे कि वह समभाता क्यों नहीं ? यह उसकास्वभाव नहीं। में पुछता हू कि लैम्य जलता है दो लडके उसके सामने पुन्तक पढने लगे। श्रव वे दोनो सो गय। क्या लैम्प उनका जग वेगा ? ज्योति देना तो उसका काम ह किन्तू जगाना नही। इसी प्रकार परमेश्वर का काम भी ज्योति देशा है। जब मनुष्य बुरे काम करता है, परमेश्वर भी घोर से लज्जा घाती है मन की घोर सन्नहीं। मेरे माई ! जिल बातीं

और विनको प्रहम करना चाहिए या यह ग्रह्म नहीं भी। फिर दुदशान हो तो और क्याहों?

एक पुरुष कहने लगा स्त्री पुरुष की लडाई का जिल पास हा जाना चाहिए कि जब स्त्री पुरुष लाग पड़े तो धापस मे गकदूसरेको त्याय सकें। मैन कहा सोचो तो सही <sup>।</sup> विद्वानो मे कुछ मति होनी चाहिए। नुम मे तो ग्रनपढ ही घन्छे है। ससार में देखों तो एक स्त्रो पुरुष का विवाहहो गया। यह विवाह जीवन भर कासम्बन्ध होताहै ,सके समान भीर कोई सम्बन्ध नहीं। परन्त् चलो शिमले की पहाडी पर । यहान्नाज एक घर मंजो स्त्री है कल वही दूसरे के घर है। उनके यहां कोई एसा कानून नहीं, परन्तु तुम बाहते हो कानून बनवाना । तुमस तो वही भ्रच्छे है। कल कहोगे कानून हाना चाहिए कि परदान हो । तो भाई <sup>।</sup> अन भीतो कई स्थानों में परदा नहीं। क्या उनके लिए कोई कानून है <sup>?</sup> तुम मे से भी कई स्त्रिया परदा नहीं करती। ये सब बाते न सुनो<sup>7</sup> कहा है।

### सेवक सदन स्वामी गमन। मञ्जलमूल ग्रमञ्जल दशन।।

संबक्त के बर जब ह्वामी का आप सन होता है तो सब धननत दमन होकर सजस हो जोते हैं। सुनी एक सठ अपने मुनीस के बर बसा जाता है। मुनीम की सुवी का कोई टिकाना होता है। वानेवार सदसी के घर मालिक नेवक के पत्र कार्य सो धवनी कोर सेवक को चुली का टिकाना नहीं होना परमात्मा खब का स्वामा है और हम सब जस के सेवक। जब स्वामी एरमात्मा सबक जीवात्मा के पर जाता है उछ वनस चब मननत हुए हो बाते हैं और सनस हो जाता है। इसनिए पर-मात्मा का जिल्लान करा। बुरे कामों को कोड हो

मेरे भाई। विशिव्याय स्थापे सापको संमासना चाहते हैं तो बल पहण करो। सन ता नहीं से पिमता है जहा बल है सोर कहीं से नहीं मिल सकता। सालकल सब बातह बिजनी की प्रतित का सचार है। रहा है, सरकर से रहा से प्रतित है। आता सम्बन्ध विजनी से स्थाप प्रतास को दिजली का सम्बन्ध विजनी से स्थाप मान के सिजली का समस्मार परमारमा से ही मिलता है उसको जानन योर मानने से ही उसका कनमान हो बाता है।

परमास्मा धनन्मा है बन्मा नहीं, यह बन्म नहीं सेता। इस विकिट की उत्पर्ति और इस रा पालन विकि प्रधीन है भला बहु कैसे जन्मा हो सकता है? कैसे कोई ऐसी मून कर सकता है? जितनी माना में भूस होगी, उतनी ही हानि होगी। देखों मानर इकनी बोटी निकल माने से बार के स्थान पर दो पैसे मिलेगे। इसी हैं भी कोजा-कोडा साम होना। इसमें हीरा कोटा निकल झाये तो सैकडो का की हानि हो जाये। स्वाध्य पूल की माला में मेद कुछ समिक नहीं होता जैंड माला में मेद कुछ समिक नहीं होता जैंड माला में मेद को नहीं हो जाती और छोटी करनु को देखकर खोटी नहीं होती देखी प्रकार भूल की माला में भी भेद नहीं पकता। परमात्मा वो बहुत कबा है यदि यह भूल जाय ता उसक कार्य- अपनुत्र में कहुत जी गढ़कर जाय परनु ऐसा नहीं हो सकता है।

हैदराबाद म सम्रजी ने एक बड विद्वान थ। विद्वान हा जाहे काई भीर सतान का दूस सबको बरा र है। विद्वान भी सतन का दुख नहीं देख सकता। वहारिवाज है कि कन्याका विवाह सब हो सकता है, जब उसके पिता क पास चार पाच हजार रुपया दहेज मे देने का हा। वहा सनक रूपाएँ हैं जिनका विवाह नहीं होता। कारण जब किसी के पास इतनास्पया विवाहमे दन क लिए हा सभी वह जिव ह करे। परन्तुबहाक लोग इस रोग को नहीं हटाते, वे जानते हैं कि यह प्रथाबुरी है किन्तु फिर भी नही हटाते। धव दस्तो उस विद्वान का एक कन्या मुसलमान हो गई। जब उससे मुस लमान हाने का कारए। पूछा ना उसने इत्तर दियाकि मैंने अपने माना पिक्षा को सुसादिया उनके पास पाच हजार रु० नहीं था। वे छ। पे मेरा विवाह नहीं कर सकते थ। मैंन मुसलमान से विवाह कर लिया धीर उन्हें मुभे कुछ भी नहीं देना पका। 'हम में पढे लिसे तो बहुत हैं परत् वे द्यपने ऐसे कु<del>ड क</del>्कट जैंग निकम्मे रिवाजो को बाहुर नहीं कर सकते, यह उनकी मूल है। जब उनकी जाति से कोई चला भी जाये तो वह उसे वापस लाने का प्रयत्न भी नहीं करते। इसीलिए सस्कृत का एक विद्वान कहता है कि शास्त्री और वेदो कापड पढाकर भी कुछ लोग मूख ही रहत हैं। परन्तु कीन ? शक्रियावान् धर्मात् व जो भ्रमन पढे जिले का भ्रमुकरण

धव देवां । एक रोगी है उसे वब जोर से जबर चडा है। ह वे सपा जवरा कुछ कुनेन मिक्क्पर को छोजी सादि सब कुछ काट के नोचे पा उसके पास रकत से उसका जबर उत्तर वायेगा ? कहागे कही। मेरे माई ! ज्वर तब ही उत्तरेगा बच उसे कोई सौचिव विकाई कार्यमा । वेसे कहापि नहीं उत्तरी कहागि नहीं सादेशा । केसे नहापि नहीं उत्तरी कहागा हम को निकट होकर पढ़ें। उसी कहागा हम केसे गा जिस सकार में मातु बेन घोर पितृ स्तेहन हो नहीं उस सतार में भी कह्याएं हो जकता है ? परमात्या सब को होत प्रोत्तरी स्वार में सार केसी

ज्ञान कोर पढाय है बौर किया बौर। ज्ञान अनुकूल किया के लिए झास्मिक बल होना चाहिए। विद्या ने तो बपना काम करके बलने को ज्ञान नेना है। चैके परिस्थ एक दोषी को पकडती है परन्तु रण्ड नमें वे सकती। वण्ड तो न्यावाषीश (क्रज) ही देगा। पुलिस का काम पकडना है न्या व्यापीण का वण्ड देगा। क्या कभी को म्यापीण का वण्ड देगा। क्या कभी को म्यापील की स्वयं पकडकर किसी को म्यापील की स्वयं पकडकर किसी को म्यापील की स्वयं पकडकर किसी को प्रकार विशास का काम है नार्ति देगा किन्तु न्यास आन का पनकरण करना धारियक सक के प्रमित्ति ।

वैद्यालोग साजकल वर भीरु सीर करपोक होते हैं। मैं बस्वर्ट में था वहां उन्होंने इकानी पर पलरेतार जीकर रखे हार है। सान्यों <sup>1</sup> चीरज बडी सम्छी नान है। ग्रामानक यह नवा उड गई कि लडाई हो नई तस फिर क्वाबा? स्रोग सपनी श्रवती दकानें बाट करके ऊपर चट गए। यह तो नै बाजकल के नैज्य लोगों की धवस्था। एक वैष्य के घर चोर द्वाया उसने फर विजलीका भैग्य जलादिया। देशा कि मेरी स्त्री चौर करण सो रही हैं भौर एक धनजान धानमी पाम ऋडा है। परन्तुपकडनातो नैस्प काकाम जनी। पकडने के लिए उसे बल दिया गया है। यदि उसमे बल और साहस हो तो कहै-हेस्त्री ! त्भी उठ भीर साहस कर<sup>†</sup> भौर भाग भी साहस करे तब ता वह उस भ्रापरे जनव्य को बाहर निकाल देगा। परम्तु यदि यह बल उसमे न आये भीर वह चोरको देखकर फिर रजार्च छोडकर साजाये तो चोर समभः जायगा कि यह कायर है, जानकर भी सो गया है। मेरा कर ही क्यालगा? बस निर्भयता से झल-मारी तो गा भीर जो कुछ भी उसे मिलगा लंबायेगा।

प्रकाण न तो उसे जया दिया। पर-तु भार पण्डमा उसका काम नहीं उसका काम ता उज का करना <sup>5</sup>। मास्मिक बल परमात्मा की उच दना से मिन सकता है। उज्जी हम भूम समा। परमन्दर की उपा सना हमने छोड़ दी। बात समक म नहा काली।

भ्रच्छा<sup>!</sup> इतिहास का पढेतो ज्ञान होता है कि विदेशियों न इस दे पर द्यात्रमण क्यो किया। महमूद रञ्जनवा को इस दश में सहायता दन वाला को नहा था। वहमागभी नदी जानताथा। बुद्धि नहीं मानता किन्त जत सच्या है। हमाराधात्मिक वन दुवल हो चुकाथा। सोमनाथ के मन्दिर पर जब सहमूद न धास्मतः किया पचस हजार नवयुवक इसलिए तैयार बैठ थ कि पूजारी जरा कह दें कि मूर्ति को बचाबो तो फिर चाह मूर्ति की रक्षामे अपनी जान भी क्यो न दना पडे मूर्ति भी धव य बचायगे। किन्तु पुजारी कहते वे कि तुम्हे कुछ करने की भावश्यकता नहीं परभात्मा त्वय तत्रु पर श्चान बरसायेगा पश्यर वरनायना झौर वहत्रजुको जलाकर अस्म कर देगा। उधर महमूद ने ग्रंपनी फीज से कहा, 'बीरो<sup>।</sup> नौजवानो <sup>।</sup> तुस सात बाठ सौ नीचनात को । साना के नाम पर हिस्मत करो। रसून के नाम पर हिम्मत करो। विवास खुरा के दूबरा कोई नहीं खुवा और रसून न कहा है कि बाग्नो ससार में नैरी ज्योंगि एक्सा दो। कायर न बनी। वेता निक्की ने उत्तर दिया मर जायने किन्तु खुरा के नाम से नहीं हटने। ध्व वस मिल्ट का पाना है। वेतन एक्सा खेटी सी जान से नहीं हटने। ध्व वस मिल्ट का पता में नहीं। केतन एक्सा है। परन्त उस समस्य उस मिल्ट का तान हमा की नाठ पुजारों के मिल्ट का तान सो नाठ पुजारों के मिल्ट का तान सार्व का का स्वास करते तो नवा मन्यूद कुनकाय हो सकता था? का कार्य नहीं।

यह सम कुछ,प मा मा क नाम नने सन्दर्भातम कहाने कि परम मा को यम भी मानत हैं। कैसे मानत हो पर मामाकी पूजासे न वैसे झगरे न कुछ, जारगान कुछ घ<sup>डे</sup>गा। सहदव क पास जाग्रामे तालोगानकर पानीचान के लिए ने जाग्रोग । महाबीर के द्वार जान्न। गेतीएक दो नार तो मत्था टैक माम्रो यदिसाय कृछ न ने जाम्रो तो तीमरी बार पूजारी कह देगा कि मत्वा तो टकन रोजकाजाते । परन्तुकशी यह भी नहीं किया कि हनुमान जी के ।ला कुछ प्रसाद ही ने बाये । ठाकुर नीक यहाजाशा तो भागके लिए कुछ न कुछ ल् जानाही पडगा। परन्तु परमातमा के पास<sup>9</sup> वहातो झापको झपने साथ कुछ श्री नहीं ले जाना पन्गा। केवल बराबर का दर्जारखना पडता है। बराबर का नियम तुमने भल अवरेम पढ़ा है। जो हिसाब क्क जाता है उसे धलजबरे के नियम स निकाला जाता है। मिलिए परमा मा के शाय मिलने के लिए बराबर का दजा रखना प्रताहै। दिन भर के कामी मे वरावर का दर्भानहीं हो सक्ता उठ रोटी लाई भीर सो ग्ह इस प्रकार नो वरावरका दर्जानहा हा सकता दाप हर को या नाम का बराबर का दर्जा कभी नहीं हो सकता। राटाल भी उसके भन न्तर नेटन का मन चःहेगा। बरावर का दर्जा कहीं रहा ?

प्राप्त उठो<sup>।</sup> नीद पूी ले चुके हो। चित में श्रन्ति है शीच जग्रा स्नान करो दिन भर की शकावट साने से दूर हो गई प्रव बराबर का दर्जा है। कुछ देर परमेन्दर कान मली। देखी प्रच्याजब सोक्र उप्ताह राता है। मता उसको गोद मे ल लती है बच्चा चूप हो जाता है। माता नी गोद मं उसे क्तिना सुख मिलता है ? इसा प्रकार परमात्मा की योद मे जानर सब थकावट दूर हो जाती है। न बकान रहती है न भारीपन। उस धवस्थामे यत्न करो धारन्मन को एक जगह स्थिर करा भीर सोचो हे पर-माल्मा तेरा नीला अनन्त है। तेरी शक्ति का भ्रम्स नही । मनुष्य भ्रपनी बुद्धि धौर ज्ञान के प्रमुसार तुमे अपनन प्रीर मानने का बल्न करता है '। दस्तो । बन्धेरा दूर करने की शक्ति किस मे है ? बडी से वडी राज्यसमा में भी नहीं।

बां प्रधान्त वेदालकार का क्या प्रायसमात्र को राजनीति में भाग नेना वाह्यिए ? नेज दो किस्तों में पढ़ा । नेना प्राव्याकों से प्रायक्षण को संवेद राज्य नीति से करर रज्जकर हिन्दू सम क के निए रचनात्मक काम कर रहे हैं। इसा वमान्तरण क्या साम्प्रवादिक को मा क्या मन्द सम्प्रयाप में सावदिशक सजा के मस्प्रवाद मन्द्रयाप में सावदिशक सजा के मस्प्रवाद मन्द्रयाप में सावदिशक स्वाव निएक स्वाव से सुद्रवता के निए इनका निराकरण करते रहे हैं। इसी निए में निएक स्वावन वनीय है।

मेरा धुनिवारित मत है कि १६६४ के सवधीय निर्वाणनों से राष्ट्रीय एकता सीर समस्यात के सिय राष्ट्रीय एकता सीर समस्यात के सिय राष्ट्रीय एकता सीर समस्यात के सिय के सामस्यात के सिय कि ११६६७ में वे भारतीय जनका के वादनी भी के पर समस्यात के स्वा की सम्यात के सम्यात कर सम्यात के सम्यात कर सम्यात के सम्यात कर सम्यात के स्थात क्यात के स्थात के स्थात के स्थात के स्थात के स्थात के स्थात के स्य

किस्तु बनता पार्टी और उसके बत-मान मावचा बदक ने ३ वन में राव्य विरोधी और मुस्लिम - बकानी देशां कुट्येक्टर के वो कार्य किए उसके श्री बाययेग्री का मावचा बस कार्येत (इ) सी कार्येन कार्यी या वी टीम बस बया। क्या करण्डक्य साधोग के निर्माण ने वी बाययेग्री बींग्र उनके बटक बस के ६०

# रामगोपाल शालवाले और इन्दिरा कांग्रेस



सासद उत्तरदायी नहीं वे निया विदेश-मन्त्री के रूप में श्री वाजपेशी ३७० वीं धारा के बकील नहीं बन कर वे<sup>7</sup> क्या यलीगढ मुस्लिम विश्वित को धस्पबस्यक स्बक्त दिशान के सिए जनता सरकार हाराविधेयक लोकसभाने परितानही क्या नया था? १६७७ में उ० प्र० मे कनतास कार में म।जयाबटक के कम स कम १५ मन्त्रीया उपमन्त्री वे । फिर धा वाजपेशी भीर डा॰ प्रशान्त की ने वयोध्या में राम क मन्दिर के शात क्यों नहीं सुलदाए <sup>?</sup> प्रपितु विदेश मन्त्री के रूप में बीसा दीसा कर भी वासपेयी पाकि-स्तान का सामा कोब झाए, विससे पाकि-स्तानी कमाडो ने पूछपैठ कर चारत मे स्थान-स्थान पर दने कराने । उस समय १९७८ ७९ ८० में समीनड़ के बाधरस सान्प्रदासिक देगी में था शासकात प्रो० मधोक स्त्र जो । रामसिङ्गीर साम ० नरेन्द्र न हिन्दुको की सभी तरह से सहा-बताकी किन्तु भी वाक्येवी भीर भावपा क नेताको ने हिन्दुको के १०० ६०० व्य-क्तियो क प्रतिनिधिमहको से बात तक नहीं की कवकि श्रीमती इन्दिश नाथी ने हर पहलू पर सतावत्रद ढम स वार्ताकी। इन प्रतिनिधिमण्डलो का नेतृत्व मैंने ही प्राय किया था।

११८० के निर्वाचनों में विश्ववी होने के परवाद् वीमती इंपियर माण्ठी को जाअग होकर वामीनड मुस्लिम विश्ववीवाध्या को अस्पत्तक्ष्यक स्वक्र देना पड़ा तो सामापा के एक भी तास्य ने इसका विरोध नहीं किया। श्रीनती गाणी से ११७६ में मैंने बातचीत की मी। वे इस विश्ववीय-सामाय की सम्पादक्यक स्वक्र दिवे जाने भी बोर विरोधी थी।

श्रीनदी नाची की हत्या हे एक बाह पूव के वी वाजपेयी वा श्री एश्यक्ति वालांगी प्रायुक्ता ने से विकल्प वालांगी सादि माज्या के नेताची के नत्यक्ष पाकि-स्तान प्रकाशों वल बीर फास्का धन्तुक्ला के सवयन म दिए हुए हैं। श्रीनदी दोवरा याची की हत्या के बाव दिलांगी में किसी की हत्या होने पर भी बावपेयी ने कहा कि १७१० के जनकार दिक्ता में ने महा कि १७१० के जनकार दिक्ता दिनां में मारे वये हैं। हिलुकों तीट बये मन्विरों इन पुजारियों की हत्या की बार में माजिय माजभा ना संकती हरवत साला कम्ना की हरवा से पूर्व न सायने प्रभाव काना है। प्रचित्त समामाः

वत वावरा वेशी हिन्दू विरोतीं गर्छी को तबक विवाने के किए वालवाने की हार वालवाने की त्यांत के की वालवाने की त्यांत वालवाने वालवान

गुरकुल महानिद्यालय ततारपुर (गानियाचार) उ०४० का विद्यालय भवन ध्वस्त

हापुत्र से ६ मील पुत्र नाह-ताल पह स्थितत पुत्रकुत महाविधासन ततारपुर का विधासन मनन अबहुर तुष्ठा साने से नम्द ही पना है जिस से सानों की पढ़ाई में बाबा उत्तरण हो गई है। बच्चे पुत्र में मेंदनर हो मन पढ़ाई का काम हुए कर रहे हैं। वर्षकाएं निकट है को प्रधान वान से विधियत पढ़ाई मारम हो खने। यह वानी महानुमान राज्यां से निवेदन है कि स्थित से विध्यक खदानेन देवर पुत्रकुत के जवन निर्माण में धर्मक्क सहुदेना करें। पुत्रक से पीत मार्गक सहुदेना करें। पुत्रक से पीत मार्गक सहुदेना करें। पुत्रक से पीत मार्गक सहुदेना करें। प्रमुख से पीत मार्गक सहुदेना करें।

वक्रमानहार का पता---

वर्षपाल बानावं आवार्व युक्तुस यहाविद्यासय स्तारपुर बाब्रुसर (बाबियावंद) उ०प्र०

### (पृष्ठ ४ का क्षेत्र)

इत्यादि । वे दो बार एक ही पृष्ठ पर धापने किंतु लिए लिखा। नया आपको स्मरज नहीं रहता। राजा राममोहन राय का धापने सारा इतिहास क्यों लिखा बौर राजा राममोहन राव को पुनर्जाग रस के प्रथम सूत्रवार विका है। राजा राममोहन राय का सारे बीवन से लेकर मृत्युतक काभी इतिहास विकाहै। भीर बह्य समाज के सस्वापक उनके पीछे देवेग्द्र नाथ की ब्रह्मसमाय के संचालक हवा केशवयन्त्र के हाथ में बहासमाब सावा उनके सारे बीवन का वृत्ताम्स भी जिलाहै। भीर बहुसमाज की दो फाड हुई, और केशवचन्द्र सेन ने अपनी श्रह्म बबस्क पुत्रीका विवाह कृष विद्वार के राबकुमार से कर दिया। इत्यादि केसव चन्द्र की जिसा-दीका पारचात्य प्रचासी पर हुई भी । भीर बहाससा<del>य</del> के अनुरूप ही प्रार्थका समाज की महाराष्ट्र में स्वा-पना हवी । इनका जीवन भी सम्पूर्ण लिखा है फिर बापने विवोसोफिष्ट सोसावटी कावर्णन किया फिर रामकृष्ण विवेका नन्द की विशेष प्रश्नशा की य सम्प्रदाय बयानन्द के पूर्ववर्ती समकाबीन सवा पर-,वर्की जो अर्थिक कावक क्यांत्र, बादोसन

बर विहास बच्चि विचार किया। वर्षान्त प्रवास की है। रामधारी विह विवार का उत्तेश किया विनक्ष ने स्वामी व्यानम्य की के बाद की प्रानोचना की है। फिर बहासमान के अववकुमार वत्त के सम्मा-वस में पत्रित का बस्तुन किया है। राम कृष्ण परमहृद्ध विवेकान्य की सापने तृरि सूरि प्रवास की है—

रामकृष्ण नियान तथा जबके बस्था-यक स्वामी विवेकासम्य के कार्यों का उन्लेख किया जाना धावस्थक है। वस्तुत रसतहस रामकृष्ण ने विश्व धाच्यास्थिक साम्लाको धपने बानुसर्य में साकर धपने साम्लाको धपने बानुसर्य में साकर धपने साम्लाको परसूत किया।

यह तर्फ एव पुलितवाद के सर्ववा पृत्रक सारितकता तथा साम्मारिसकता का एक ऐता सार्वो फिक मान बा। विदे समु-मृति का विक्य तो नेवाया चा सकता है। परानु विक्र पर बार-विवाद माहि किया सा सकता, परावृक्ष वेच नव्यपि सौक्रिक सरित से विशित्त नहीं थे। कियु साम्मा-रिमक विन्त से उनकी सार्व्य वेदान सम्मा-रिमक वीन्त से उनकी सार्व्य वेदान सम्मा-कार्यक सोमान वर सवा ही सौक्रिक्ट प्रस्ति की श्रेक्ट काम्बर्ट में सुक्रा प्रस्ति की

नरेन्द्रनाम दल ने इंश्वर अनुभृति का सामास्कार किया था। तथा वह अनुभव किया कि उनके गुरु वर्ग के साक्षात विश्वह हैं। विवेकामन्द के रूप में अवस्था लेकर नरेन्द्रनाय दत्त ने दिन-दिवन्त में द्विन्द् वन और सम्बद्धा की विकास वैकायन्ती फहराबी इस की कवा ही पूबक् है । पूप्ठ 22. 28 क्षमा ये बतायें का॰ साहब कि वह क्या केतना भी जो अनने बर्बोच्य क्षोपान पर हवा स्थिर रहती बी । विवेकानन्द, परमञ्जूस रामकृष्णु के बीवन थवि शिक्षणा है। तो बाप अक्षण पुस्तक निष्ठें, स्वामी दवानन्द के बीवन के छाष नवा सम्बन्ध इनका । रामकृष्य परवहस ने बाज्यारियक चेतना को बीवन में बाकर धरने नक्तों में स्पूर्ण किया । क्लका मुख हिस्सा भागको भी तो निका होना, कृपना ने बतार्वे । तथा की बहु साध्यारिक-कता उस पर बाब-निवाद क्यों कही किया वा बक्ता। बीर प्• ६६ पर वाप विश्वते है। प्रश्नेक कर्द में तरण का तरब है, क्या जनुष्यों ने को क्यारकी क्या वे जी कर्ज हैं। इत्यादि समर्थेन रचातों रुक्ट विश्वकर धापने पुरसक का भार बढ़ावा 🚦 । भीर राय किन्नकी विश्वकर रहा प्राप्तक में

सापने सैकर्ज पू० धीर बढाये हैं। किसका कोई सत्त्रक ही नहीं जब धारण इतने पूछ कार्य किसे। स्वात्र जो का जीवन वरित्र को बढ लेकडों से प्रात्मा-लिक है को न सिकाग धीर दुनिया वर के मोनो का बीमान वरित्र सिकाग से कहीं तक दुनित जुंका है। सिराधा सीवन परित्र किसका चार खु। है उनके बाय उनका कोई समस्य नहीं है।

वीर निव मह पुस्तक स्वामी बवानव वी का वीवण जरिन है। तो इस पुस्तक का मूल्य चालित करने को रहा है। क्वोंकि इस पुस्तक का प्रकाशन परोप्त-कारिणी बना ने किया है। तौर परोप्त-कारिणी बना की है। फिर हक्ता मुख्य को है किया व्यापनी नाईनिय को नोड से मूल्य पर सम्बान क्रिया की नोड से मूल्य पर सम्बान क्रिया की नोड से मूल्य पर सम्बान की नि बुस्क सा नोड से पेसों में निवर्णिस की वारने चाहिए। और प्राप्त क्षानकर के जीवन को इसने महिल सुस्य में में कमने नाती बना क्या परीपंत्रार करती है। क्ये फिर—

## (शनाव के प्रापे)

सारका क्या सपनी सपरका का सम्बेद्ध बेद्धी पही । ऐसी मासना की ही इसमें प्रपुत्त करवाणी में किर से मोने भीने स्वराता है। हमारे रिक्स केन्द्र का पुर-पुत्र किसा की स्वागारी हसाने न वसें मेनुय को तुक्त सांगित सहस्य में में प्रोत ही अनुया को तुक्त सांगित सहस्य में में मोने प्रिकार का मानन्य किसा हो, बहुत मानो फोती को स्वीत सप्या है कर कर संसार से यह करन्य नाटता हो या है। स्वी में हमारी सरस्वती सप्या है सेर प्रमाम्भी स्वीत स्वर्ण करना है स्वीर प्रमाम्भी स्वीत स्वर्ण करना है

इस सब के बाद मुक्ते प्रापको वैविक सर्ग, प्रार्थसमाय समा महाँच दशानन्द के विद्युव में मा कुछ कहना है। बछिप वे तीनों समय-समय है प्रस्तु सीनों में एक सरम्बय भी है।

बैक्कि वर्ग इमारी सम्मवा, सस्कृति बर्खन, बाचार, नर्वादाओं बादि का काबार है, जिसके विना हम खरे नहीं हो सकते । आर्थससाय का प्रार्थराष्ट्र एक समाब-रंपना मा राष्ट्र-रचना का विशिष्ट विवान है को सब संसार को, प्राणिनात्र के उपकार के उद्देश्य से, मानव को मानव के भाईकारे में बोड देता है। यहा ' वस्-त्रैय कुटुम्बकम्" का सावर्ष शामने सा काबाई। इस विशा को दिशाने नाला बहान् नेता दवानन्द है, जिसने हुमे घपने बृत, वर्तमान और अविष्य के लिए उद्-बोबित किया है। हम बीरों की सन्दि में बहुत पिछड वए प्रतीत होते हैं। इसी वे शानक होने की हमारी सावस्वकता है। हकारी वास्ती ने, हमारे बार्य नेता जाय-क्क नहीं, इसी से कहता हु--'वय राष्ट्रे बार्याम पुरोहित", "प्रत्याम बीरा उत्तरे मचन्तु", "देवसेना तूर्वकेतव अबेतस श्रमित्रान् मी क्यन्तु', (बत्यं) ने दक्तिसो हस्ते बयो ने सम्प चाड्रित " इत्वर्तांद, इत्कवि ।

निकार में महान गरक में, जो एक व्यवस्था कार्य है, हवे परमात्मा के तो मिलेक विदेश नामी का परिचन निमा हैनवह 'राष्ट्री' और दितीव 'राब' कह्याच्य 'राष्ट्र का राष्ट्रवीत राष्ट्री परमात्मा है लोर 'वर्ष' वर्षात् काराय का कार्यों का मार्चिक ! "वर्षप्यारण का कार्यों का मार्चिक ! "वर्षप्यारण कार्य ", मार्गद् वेशस्त्रपुत हमें क्ये परमात्मा के पुत्र हैं । हसी वे वार्य मार्च ", मार्गद् हैं, स्क्री के वार्य स्वार हमार्थ हमार पार्ट हैं, स्क्री के वार्य स्वार हमार राष्ट्र हैं । क्यो कार्यार्थ कार्य हमार पार्ट हैं । क्यो कार्यार्थ कार्य हमार पार्ट हैं । क्यो कार्यार्थ-

"कृष्यानु विश्वे समृतस्य दुवा र" "कृष्यानी विश्ववार्थम् र"

बार्डरवर् में बहुता है, उन्न वार्टराम

# मुख्युन कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्यार के दोक्षान्त समारोह पर दोक्षान्त-भाषण

द्वारा--प• सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार

से प्रसिक्त धारूरवकता है। नौतिक विज्ञान की तरकती ने बोलिक धम्मुद्रव में महान् निरिक्षों के प्राप्त करते हुए धम्मुद्रव का नार्व प्रस्त किना है, परन्तु सार्वत्व का नि जयन्त्र को नहीं दिवा है। नहीं कर भारतीय सस्कृति में पोषित शिक्षसालयों से बोपिसा है।

इस समय हमने शिक्षा के क्षेत्र मे विशेष उन्मति के मार्ग पर चलना है। हमारे कुछ स्नातको को जर्मनी कास, इटली शादि प्रदेशों में मान्यता निन्दी वी जिससे स्नातक बनने के बाद कुछ स्ना-तको ने सीधे ही उन प्रदेशों के विश्वविद्या-बयो से उच्चतम उपाधिया प्राप्त की थी। श्रव हुने जारत सरनार से मान्यता प्राप्त होने से दूसरे देशों में भी मान्यता प्राप्त हो रही है। इसमे खबिकारीवर्ग बन्यवाद के पाल हैं। हमारा उद्देश्य महान् होना चाहिए। हुमारा विश्वविद्यासय "तार्व-भीम प्रार्व विक्वविकासक बुक्कुस कांगडी" के कप वें पनपे। ससार के सब देशी के विश्वविद्यालयो से हमारा सम्पर्क बढे, उनसे सहायता प्राप्त करने में कभी सकी व व होना चाहिए। ससार की भिन्न बिम्न राज्य-सस्वासी सीर राज्याधिकारियो को भी सम्मानित कर उनसे सब तरह की सद्वायता केनी चाहिए। प्रत्येक देश की श्चपनी विशास शाखा (Wing) हो, जिसमे उस देश की सर्वोत्कृष्टता को यहण करने मे कभी सकोच न हो। उनकी भाषा, दर्शन, विकास बादि हुनै सहज ने प्राप्त होते हो। समार के बढे परोपकार कृत्यो को करने बाले सस्यानो (Foundations) हे सम्पर्क कर उनसे विशिष्ट शास्त्रिक सहा-बला भी हमें लेगी चाहिए, क्वॉकि हमारे बहेरवों में 'सारे ससार का उपकार करना मी हमारा उद्देश्य है। इसमे, सर्वेष से, तमारिएव की तरफ बायका ध्यान कींचतर है। बाधा है, बार्यसमाज तथा पुरुषु ने श्वविकारियस इस पर विश्वेष ध्वान देने ।

सब ह्य पुरुकुम वे एड्डे वे तो बारिया निर्माण, देवन्य साथि विधा-स्वा के विधानी हमारे नहां साथे हैं स्वा-क्रमके स्वाणी नर वादि ने, बागल में साथ-जियोदितामें होती थीं, कभी कोई मैमनर्य देवा का सभी कोई । कभी कोई मैमनर्य पैदा नहीं हुसा। स्वा यह मग सब सपनी विजालता को पनका नहीं करती? हुमने स्वस्थानस्वक्ष वर्ष, संस्कृति, सम्या साथि स्रो साथं गीम सन्दि से पैदा करना है—'एव

वैरिकी उपनिषद्।"

प्रिय स्नेहपूर्ण नवस्नातको <sup>।</sup> अन्त मे 'सस्य वद, ''वर्गवर'' के ऋषियों के सनातन शिक्षा-बारेश्व या दीक्षा की तरफ व्यान दिसाते हुए यह कहकर समाप्त करताह कि "सस्वस्वरूप परमात्मा के विषय ने प्रवचन करना और चिन्तन करना सत्य के दर्शन से वर्म के स्वळप को सममते हुए उसवे कभी निरपेक्ष न होना, परेन्तु बदा उस पर प्राचरण करते रहना" बही "सत्व शिव सुन्दर" का प्रश्वस्त मार्व है। यह तुम्हें सदा प्राप्त होता रहे। भ्रपने त्रेन सद्भावना सहदयता तथा शिक्षा-करवान (गुरुकुत्त) की उन्त्रति में सदा अवसर रहने में सहायक होना — यह कहते हुए तुम्हारा बहुत तस्मेह श्रामनन्दन करता हूँ। गुरुकुस विश्वविद्यासय के सब प्रचि-

कारियमें तथा गुरू-मनो के सामने नत-मस्तक होकर सपरी सदा के मुबन उप-दिवत करता ह। हशाबी सदानन्य थी की सारम क्योति सायको सदा प्रवास देशी रहे। प्रभु का सब यर सदा वरवहस्त बना रहे।

हिसस्यय की सुपुत्री पार्वती कहू या बनामाता से कुसमाता को याद करू-पूछ भी हो-दापनी सावसीनी सदाञ्जलि सम-पित कहते हुए कहना चाहुँबा-

> बन्स यहीं मृत्यु वहीं खेलू वहीं द्या-प्राकर। हसना रोगा हो वहीं माता तेरे बरलो में॥

समान्त करन से पूत 'हुसमाना की पताका गर प्यान दिस्तवा हूं। यह सूत्रे-ज्योति स उपस्तित है। यही 'सोक्स्य स्त्री प्रवात हैं — सूर्यमन्त्र्य व्योतिस्त-मन्। इस्त्रा सन्त्रेस भी सामने रुखी। इस्त्रे बढ़ा प्राप्त करो समिता या सूर्य-वेष के पुत्रमन्त्र का भी मनन करो। इस्ते हम वेदमाना संपुत्रप्त हैं। यही हमारी बन्देमानपह हैं।

> 'शद्भवा सत्यमाध्यते।" 'सत्यमेव स्रयते नामृतम्। '

### श्रन्तर्जातीय विवाह

### वर चाहिए

१ २३ वर्ष ५-६" वी एव ती.बी एव (प्रध्यापिका) ११००) मासिक (मोदीनवर) २ २३॥ वर्ष १-२" वी एस सी वी एव (प्रध्यापिका) १३००), (दिल्सी)

३ २३ ,, ध-ध्र" बी ए कोवा ट्रेनिय (मध्यापिका) १२००) मास्रिक (दिल्ली)

४ २८ ,, ४-३" बी ए (स्टैनो) गरकारी सेवा १६००) प्रासिक (दिल्ली) ४ २४ , ६-२' बी ए ईस्टीरथर टेकोरेशन सेवा १०००) प्रासिक (दिल्ली)

६ २४ ,, १-२' बी ए नरसरी ट्रेनिंग (ब्रब्यापिका) ६००) माह (दिव्सी)

७ २५ ,, ४-१' वी ए स्टैनो (क्षेत्र बी०वी०पी०टी०) १०००) (दिल्ली) ८ २२ ,, ६-२" बी०ए० (इण्डीरवर न्येकोरेशन नमाप्त) दिल्ली (चण्डीगड)

### बबु चाहिए

१ २७ वर्ष ५-७' बी ई मैंकेनिकल सेवा सीमेट क॰ ३१००) दिल्ली

२ २६ ,, ४-७॥ 'एर ए बैनेजर इक्योरेस (बीमा) ३०००) दिल्ली

॰ २८ ,, ४-६ 'बी काम सेवा सिमको २८००) दिस्की

४ २५ ,, ६७ वी काम प्रधना कार्य टाइपराइटर क० २०००) विस्ली ५ २८ , ५-६' वी ए श्रपना कार्य (विषट लाप) २०००) विस्ली

६ २६ ,, ५--" बी काम (सेवा घोसवाल) १६००) किस्सी

७ ३० ,, ६ ७" एम की बी एस उस्तटर इपना श्लीनिक ५०००) विल्ली

द ३१, ५-४' की काम बी ए सेका वैक (वैरीन) ३००००) बैहरीन

१ ३० , प्र-पंपम की की एस काक्टर मेका हरावाल २४००} दिल्ली सम्पर्क करें—

चन्द्र प्रकाश प्रार्थ समोजक धन्तर्जातीय विवाह केन्द्र सार्वदेशिक प्रार्थ प्रतिनिधि समा ३/इ महर्षि बयामन्द्र धवन, नई दिल्ली-२

## बार्वसमाज रघुवरपुरा, हिल्ली-३१ का निर्वाचन

भी स्थानकुष्यर वो स्नातक की प्रधा-नता मे १२।६।०५ वे झात १० वये वार्य समाव स्कूपरपुरा, बनी न० ५ वांची क्या, विस्ती-वर्ष का वार्षिक निर्धान सातिपुर्वक सम्पन्न हुया। निम्नानिस्त पराधिकारी चुने बेट-प्रधाना—कीमती हीमदी देवी कती भी राजाकृष्ण आर्थे वण्यवस्थी — , साने पूज्यकत भी , , , नाने पूजार प्राप्त कोराष्ट्रक — , राजारात वसीय नेवा निरीदाक — प्राप्त सम्बन्ध सिद्ध वी विद्यास पुरतकाष्ट्राक्ष — , सुन्वरतास भी साने

# समाचार-सन्देश

## विशाल श्रार्थ युवक प्रशिच्नण शिविर

सन्तरांद्रीय पुषा वर्ष के उपलब्ध में सार्यकार्य की प्रपतिश्वीक नवपुषक उपला केन्द्रीय सार्य पुषक परिवद् दिल्ली प्रकृत ने महांद कक की तपीप्रति तथा दिशालय की सुरम्य वाटियों के बीच स्थित पुरुकुल कच्चायम, कनालवाटी, कोटद्वार विला पोडी वडवाल में १४ से २३ वृत तक एक रोमाणकारी विधाल सार्य पुषक प्रतिश्वास विविद का सामोजन बहुधार्वास्था करेश जी की सम्मालता में कि रा है।

परिषद् के घञ्यल व विवित्त सथी-बाक सी धानिल कुमार साथ ने बताबा कि युक्तो को महाँव दयानगढ की विवारचारा से बोदमांत करने, धनुवासित जीवन, तत्तम ब्याल्य, ब्यार्स निर्माण, राष्ट्र के नवामांण, युवा शक्ति को रवनास्या स्थानों से शीसत करने के वहंस्य से वर्त-मान परिस्थितियों में ऐसे सिविरों, की नितात धावयकता है। शिविर से बास्य-प्राणायान, वण्ड-वेटक, साठी, वृती-क्या के धातिरक्त जडी-बृटियों का मान, प्राक्त-रिक बीदर्श क परपूर ऐतिस्थालिक वास्यक वर्षटक स्थानों का भूमान तथा पुक्को के मतान रर दें, कर सेर, हांकी, नायू, हिरएा, बीजनाय सादि हिंसक-सर्दिसक बन्य जीव जतुमों के सबलोकन के रोमाच-कारी सबसर सिलेंगे।

धार्यसमान के नीजवान सन्वाची स्वामी जनसीरनरातन्त्र जी महाराज की स्म-रेज वे रुरही दिनों मेना समाना सिक्टर का भी धार्याजन किया जा रहा है। जिस में मीस, सन्दे, तरात, भीडी-सिमरेट व तामर्थिक रवाणों के देवन से मुक्त -व्यक्ति ही इसमें मान के स्वस्त्री

पौडी गडबान ने धार्य जुबक जीवासन शिविर का उरघाटन १४ जून जुक्नार को होगा। इस प्रवस्त पर क्लार प्रवेश के राजस्य मन्त्री भी क्लोब सिंह, तस्य सहस्य की सम्बद्ध सिंह, तस्य मी बन्मिनिता होने की प्राशा है।

चन्यमोहन वार्षे धार्य जनता से जार्यना है कि इस उत्ताही गुक्कों को प्रोत्माहन में । धार्य-सगाहन में शुक्कों के न धार्ने का एक करक रचदास्था कार्यक्रम का प्रात्मा मों है। प्रात्मान में में स्वता में मन पन से सहयोग बैकर द्यानन्त के विशन को धार्म बढ़ायों न द्वांनन्त के विशन को धार्म बढ़ायों न

यशपास सुवासू

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

(गुन्कुल कागडी विश्वविद्यालय हारद्वार से सम्बद्ध)

धमर शहीद स्वामी अखानन्द द्वारा सस्वापित इस गुरुकुत में सस्कृत विषयों के साथ साथ विज्ञान, तकनीकी, मैडिकस, नानमीडिक्स, इतिहास, विरात, हिन्दी ममेजी मादि विषयों के मध्यापन की समुचित व्यवस्था । छात्रावास मे समाज भोजन भावास की भावर्श व्यवस्था । समस्त सेल, योगासन कमाबी द्वारा व्यक्तित्व कापूर्णविकासः। सैनिको जैसा धनुशासम । श्रमजीवि नामरिक तैयार करना । सदाबार ईश्वर-भवित, शाली-नता भादि वैदिक सस्कारी से भोत-प्रोत करने हेत् सुबह -- साम बेद मन्त्रों के साथ यज्ञ-इवन, सच्या सादि वतिविधिया। क्लात्मक प्रतिमा के विकास हेतु भावरा शीत, व्लोकोच्यारण, वाद विवाद का

नियमित धारमास । ईश्वर प्रक्ति वेस भक्ति, रितृ प्रक्ति, मातृ भक्ति, गुरु भक्ति, धादि सद्युको से सुसण्बत समाब डप-बोबी बात्रो का निर्माण—

विद्याधिकारी (वसवी) के पश्चात् विद्यालकार (वे॰ ए॰) कब से कव चलुवें क्षेत्री क्लीएं, स्वास्य एव प्रधाव-सामी क्षात्रों के लिए सभी कक्षार्थों वे प्रवेश प्रारम्म ।

स्वान सीमित है प्रवेशार्थी तुरुत सम्पर्क करें।

प्रवानावार्वे पुरुकुत इन्द्रप्रस्व (फरीवाशव) हरि॰ डाक वर--नई दिल्ली ४४ फोन न० -- ६२६२६

### प्रस्ताव

गत दिनाक ४-४-८५ को जी राज-चन्द्र जी साथ प्रकान सन्वेतमाक काण्डका को सम्बन्धता में पार्वेदमान की सभा हुई किसमे मश्त्री केलाशचन्द्र पार्वोचान स्वानन्द्र कालेज सजमेर को जो रनुदान राजि प्राप्त होती थी उसे राजस्थान सरकार के द्वारा बन्ध किये साने पर यह समा चोर विरोध करती है एव रावस्थाय सरकार है सनुरोध करती हैं कि बो बची से सनुदान राशि वी बादी वी उसे बच्च न कर सविसम्ब वी बादी।

> यती बार्वसमाय, बण्डवा

## गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

सी नुद विरवानम्य वैदिक सस्क्रम् यहाविकास्य करतास्त्रः, विस्ता वार्णस्य (चंदाः) नुरुकुत कांग्रही विस्तविकास्य विद्यार हे त्याई साम्यता पान्तः, ये नये स्त्राभी का प्रदेश १४ जून १८=४ से सारस हो रहा है। सरकारी स्कूमो ये पढाये वाले वासे विस्ता, समेनी विभाग सादि स्त्री विस्ता से साव सस्क्रम तथा वार्ग सिका स्त्री सनिवार्ग कर मे पढाई जाती है।

ि सुक्त विका, हिली माध्यम, बोम्य एव ,परिवरी प्रध्यापत, स्वस्य सातावरण, मोधन, दूब, धावास की बाम ३० ३० (तीस क्षणे) पातिक पर समुक्ति अग्रदेश श्री लाला रामगोपाल शालवालों का श्रीमनन्द्रन

सार्वेदेशिक वार्य प्रतिनिधि सभा के वक्षत्वी प्रकार क्षेत्र्य की सामा राज्य-स्थापन शासवाल के सम्मान में भागामी १-२ जुन, १६-६ को प्रस्तावित स्विम कन्द क्यारोह कतियय कारणों से स्थापत करता पत्र खुा है। इस प्रविजन्यत समा-रोह के भागोबन की रोजारिया चला-रोह के भागोबन की रोजारिया करा-रोह के भागोबन की सामा तिथियों की निश्चत भोरणा शोझ हो सी जागणी।

हा॰ बानन्द प्रकाश स्थोजक, ब्राथनन्द्रन स्थारोह स्थिति श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल

# का सम्मान

बत २३ तारीख को साहित्यकार समिनन्दन प्रकाशन विमित्त सबुरा उ०४० की सोर स पत्रकारिता के सेन ये गौरव-नयी सेवाए देने के उत्तरकार में सब्दा सा क्षाशित २२ (बावन) वर्षीय खारताहिक स्रकृत के प्रसान स्वर्णायक स्त्री कैसाराचन्द्र राजीवाल का सम्मान किया नया।

माप नगर की साहि≥य, शैक्षासिक, सामाजिक सस्यामी से भी जुड हुए हैं। सार्वसमाज खडवा के मन्त्री भी हैं।

शुक्रराम बार्ये पुरोहित, धार्यसमाच सडवा (म॰ ब०)

झायं युवको द्वारा प्रचार आयं वुषक बना श्रीवनाना हारा २८-४-१८-१ को सार्वे बनाव बदानाव बाबार में त० एवं बी० वांनीयों की सम्बद्धाना में विशेष कार्यकर हुमा विवर्षे देवारिक, बनाव देवा सार्वि का तठ विद्या बना।

> निवेदक---रोशन सास अर्थी संबोधक मार्व पुषक समा, प्रवाद

कार्य पुषक तथा चुविषाला ढारा २०-४-८६ को गारिकारिक करवण सम्मन्न हुआ इसमें प्रकलन एवं नैविक साहित्य नेट किया जीर कुक्यों को समाय सेवा में सहित्य जान सेने की प्रेरणा दी।

> विवेदक अवस्य कारदाय नहार्वती

विशेषताएँ है। अवैश्व के निए खान का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होनी जरूरी है।

युक्कुल शिक्षा पढित पर धास्या रकने वाले सञ्चन मिने धवर्षा पनावार करें।

विकेष--- प्रवास विक्षिविद्यालय चडी-वड को शास्त्री कक्षा के प्रध्यापन का भी पूर्व प्रवन्स है। इन्धुर खात्र पम्पकं करें।

> धाषायं गरेश कुमार सास्थी धाषायं, गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर विसा जालघर, प्रजाव

## वेदोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन

बहुमुटी वेद अस्तिर अस्ताट वे वेदोपरेक विद्यालय का उर्पाटन प्रार्थ प्रतिनिथि छमा उरुप प्रदेश के जवान की एक स्ट्राटन की हारा देन आर्थ १८८६. राजनकों को किया गया। इस अपवर पर स्थानीय बन्तो तथा विद्वानों के प्रति-रिक्त बान सर्वादय की खाल्बी सरकृत सरकृत विभागाम्यक, अपदीश सरकृति हुई विद्यो कांग्य सरकृति सरकृति कुल प्रवृत्ति के प्रवृत्त स्वार्थित सर्वान्ति सर्वान्ति सरकृति सन्वत्त प्रार्थित के प्रवृत्त स्वार्थित सर्वान्ति सर्वान्ति

सभी विद्वानी ने बर्तमान की विषम परिश्वितयों से वेद प्रचार की झान-दयकता पर बन दिया यह निरचय किया वया कि १ जुनाई छन् १६-६ से विक्वित विद्यानव झारण्य किया जाये।

## प्रवेश सूचना

बहा कुटी वेदोपवेशक विश्वासय वक्षपाट में रे जुलाई बाए १६८४ से पारक किया का रहा है। कम से कम १०वीं पास हिल्दी का जात हो। शोम्य, विक्ट, समुखावनिय तथा साबीवन वेदिक वर्षे जवार के दशकुत सीज पन स्ववहार वर्षे में वस स्ववहार का पता

भ्राचार्वे बहाकुटी वेद<sup>्</sup>न्दिर, त्रज्ञचाट चि॰ वाजियाबाद (उ॰ प्र॰) वि २४४२०६

## शोफेसर रागसिंह जी की स्यृति में राष्ट्ररच्चा सम्मेलन

धार्यकाम निर्देश नयार्थास विस्ती में १२ नई को स्वामी विश्वानन्द की की सम्मकता ने राष्ट्रस्का सम्मेलन धार्या-विस्त किया क्या।

इस सबस्य पर बीनवी रामेस रावी, वी बनारवी विह पनकार तथा वयालीहरू वेदी पूर्व वार्षेष अवर नियम ने अपने बोसस्वी विचार अवर किये। यह सावी-का अवान भी योगप्रकास भी करवे वाले के हारा किया नवा। निवेषक

शिवकुषार

## श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि

जानपुर (वाराख्यी) विश्व भारती खुडुक्यान परिवद् में एक शोकसभा का धानोचन किया नचा निवने वसीकृत्य पत्रकार भी नमारती वास चतुर्वेती के निवन पर योक मक्त करते हुए चुडुक्य महानिकासम अग्रामापुर (हरिधार) के कुक्पित एव सस्या के निवेशक का क्षिक्रेस किसी के कहा कि भी चुव्येती जो ने को वेसकेस हा किसी महानि भी चुव्येती जो ने को वेसकेस हा किसी महानि भी चुव्येती जो ने को वेसकेस हा किसी महानि भी चुव्येती जो ने को वेसकेस हा किसी महानि भी चुव्येती जो ने को वेसकेस हा किसी महानि भी चुव्येती का सामस्यान वाहिएस साममा एव पत्रका रिता का को धासस्य महतुत किया वह सवा समुक्र एवंप रहेगा।

बा• द्विनेदी ने कहा कि उनकी पनि चता और सादसपरता जन जन की सदा हेरना देवी रहेवी।

हा विभू मिश्र हा आरते दुए व सन्य कई व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धाविक सर्पत की । सन्त ने दिवनत महान् सारमा की सार्ति ने लिए दो मिनट का मीन रक्ता नया ।

> श्र सेंन्द्र धास प्रवार मणी विश्वनारत धनुसभान परिपद भानपुर (वाराणशी)



# लोकनायक श्रीकृष्ण पर सचित्र ट्रैक्ट

विस्ती ४ नई (शिनवार) महान राजनीतिज कमयोगी तथा गीता क रावेष्टा की कृष्ण के प्ररक्त प्रमाग रह १६ पूर्ण्येथ सचित्र ट्रेस्ट प्रकागन का निक्चय साला रामवन्द धनावताने समीव ट्रस्ट के प्रमान का सात नेता की प्रमान प्रेटक के प्रमास क मान नेता की प्रमानव गोनक ने बताया, तभी तथा रिविहासिक घटनाथों पर धाचारित इस ट्रेस्ट वे व प्रापुत्रव सार नोकनायक होने। कन से एस्यु प्रमान सकतियां जेन उनसे कुवास सारक सुत्र नेता कांति कारी सुवारक प्रायम प्रमान एक प्रभीवन कूटनीतिज तथा वैदिक संस्कृति का

समु परन्तु प्रभावकासी चित्र पुस्तिका के सेसक एवं रचनाकार श्री चंद्रमोहन धाय के धनुसार युवा वय के उपसक्त में वेरामर के मुबक मुबद्दियों के निए यह प्ररणाप्रद होगी। युवा पत्रकार तथा बीर सबुन (दैनिक साध्य) के प्रकान सस्यावक आ सनिक नरेड तीझ ही इवे हवारों की सात्रा से प्रकित नर शाबी पीडी को सर्वापन करग।

बन्मोहन साम धैस सचिव के ीय धाय युवक परिवद

# महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का कुलपति कौन हो ?

—प्रो० सत्यवीर विद्यालकार

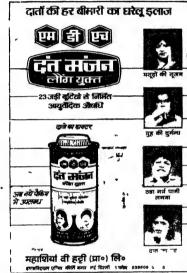
रोहतक १० मर्जन (केवार्रीवह साथ) समाचार पणों में प्रतिदित्य महांव दयानद रिवरविद्यालय के ना कुलवित के तर क ने कह नाओं की चयों चल रहीं है। इरवाखा सरकार को हमारा यह मनाव है कि इस विद्यविद्यालय का कुलवित किसी ऐसे विका धास्त्री को नियुक्त किया बार्य जो कि महांव स्थानन्त के विद्यालय को स्थानना का उद्य्य पूण् हो सके।

गुनानक वि"विश्वस्य कमुत्तसर् काकुलपति गुरुनानक के सिक्षाती का गत नया प्रकान विश्वस्यक्षात्र्यका कृषपति रुज्यके सिक्ती का जाता बनाय आतारना श्रेति विद्यालय से ओ यह प स्राच ५ करना वाहिए।

त्सनिया सँगम् । प्रतिनिधि समाक्ष्ण्या या सला न केनी इत्याराकेर रूपणाके स्था का

≆ शिम= झान







१२ मई, ११८४

# श्रार्थ जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायकर ग्रिषिनियम जी० ८०के ग्रानगंत कर मुक्त होगी।

साराबान वैक/मनीमार्बर/वैक कृष्ट द्वारा मत्री, माता चल्तनदेवी बार्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-१८ के पते पर भेजा नाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

### निवे इक

राजगोपाल वालवाले वृत्यंवेच महावाय वर्मपाल वालवाले वृत्यंवेच प्रशास वर्मपाल वालवाले व्याप्त सिर्मालय प्रथान दिल्ली प्रथान मन्त्री प्रथान प्रथान वालवाले व्याप्त सिर्मालय व्याप्त सिर्मालय व्याप्त सिर्मालय व्याप्त विश्वया व्याप्त विश्वय व्याप्त विश्वय व्यापत विष्त वि

सौजन्य से महाशियाँ नी हट्टी प्रा० लिमिटेड ८/४४ कीर्तिनगर, ग्रीग्रीगिक क्षत्र नई विल्ली-११००१

# केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- क्या आप ऋषि, मुनि, तपस्वी, वोगियो की धमृत बागी पढना चारते हैं?
- चा आप बेद के पविद्य ज्ञान को सरल एव मधुर शब्दों में जानना चाहते हैं?
- क्या आप उपनिषद्, गीता, रामायरा, बाह्यरायस्य का आध्यारिमक सन्देश्व स्वय सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- क्या ग्राप भ्राप्ते शूरवीर एव महापुरुषो की शौर्य गायाएँ जानना चाहेगे?
- च क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से धारमचेतनः जागृत करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो झाइये आर्थनन्देश परिवार में शामिल हो जाइए। केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्नाह पढते रहिए। साथ ही वक्ष में चार अनुप्रम भव्य विशेषांक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये, ग्राजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्वान— आर्येसन्देश साप्ताहिक १५, हनुवान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाला कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, फोन १ २६८८३८ वालडो बालार, विल्लो-६





मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वर्ष १ प्रक २०

रविवार, २६ मई, १६=६

धाय सवस्सर १६६०८४३०८४

क्योष्ठ २०४२ ।

वयानन्वान्य---१६१

# पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमंत्री श्री गांधी से मिले अभी शालवाले ने पंजाब की स्थिति पर ज्ञापन प्रस्तुत किया

प्रजाब के हि दू नेताओं ने धाज सार्वदेशिक पार्व प्रतिनिधि समा के प्रधान थी रामगोपाल शासवाले के मैतल्ब मे प्रधानमन्त्रो श्री राजीव गांची से भट की धौर उन्हें पजाब -की परिस्थितियों के सदर्भ में एक क्रापन दिया। प्रधान मन्त्री की ने क्रिक्टमण्डल के साथ प्रथमी लम्बी बातचीत में धारवासन दिया कि पकाब में समस्या के समावान मे पचान के जल्पसल्यकों के हितो भीर देख के बहमत की भावनाओं का पूरा धादर और सम्मान किया जायेगा। इन्होने यह भी प्रकट किया कि पञाब में त्युवादियों के साथ बोडे से लीव हैं सभी सिक्ख उनके साथ नहीं है।

क्षिण्टमण्डल ने निम्न झापन प्रचानमन्त्री जी को प्रस्तुत किया —

, १, पजाब के प्रकाशों नेताओं की क्षिप्त विक्स खात्र फेडरेबन से पानन्दों हराने की घोषणा दिस्सों में हुई हितक घटनाओं की जाब के धार्वेश के उपरास्त उग्रवादियों के श्राँकी काफी यह हैं। उन्होंने रसे धपनी विक्रय खनका है जिससे बाता-न्यस्त सर्वेक्षी गया है।

२ श्री अर्जुनसिंह की पजाब अवने के उपरान्त उनकी राय के अनुसार जो कुछ हुगा, वह केवस उन्नवादियों और अकासियों की खुख करने साक रहा। जिसका परिएाम अन्य समुखा के जिए हानिकारक विद्य हुगा।

3, दिस्ती में हाम ही में उपया-दितों ने जो हिसारमक विस्फीट किए हैं, इसके पीखें किसी निवेशी समित का हाम हो उक्तता है। इसके विष्ट सरकार को विशेष नीति निर्धारित करनी वाहिए।

प पजान में पुलिस तथा प्रसा-सर्त में विषयों का बहुमत है, इसलिए बहा के हिन्तुमों के साथ कोई न्याम नहीं हो सकता हैं। इनलिए पजान के प्रन्य समुदाय के लोगों को बी प्रशासन तथा पुलिस में पूरा प्रतिनि-विस्त मिलना चाहिए।

५ लोंगोनाल सिंहत सभी धकाशी नेता प्रभाग सभी सीमती हन्दिरा गांधी की हुत्या की निन्या करने को गी तैयार नहीं हैं प्रसित्तु लोभोबाल ने सतबून्तरिह सौर बेमल सिंह के घर बाकर उन्हें श्रदाजित देते हुए सहीशों की सजा दी हैं।

६ भूतपूर्व विदेश मनी सरसार स्वर्णीसह ने लन्दन से प्रकाशित एक वस्तव्य में साफ कहा है कि मिडरा-वाला वरा प्रावमी नहीं था। उसने ५ व्यक्ति मरवाए तो पुलिस ने ६६ मार दिये। उनका यह कहना है कि मानदपुर प्रस्ताव पृषकतावादी नहीं है तथा प्रधानमत्री भीर राष्ट्रपति में महरे मतभेय हैं जो राष्ट्र के लिए गातक हैं।

७ चडडोगढ फाजिल्का और खबोहर के विषय में वहा की जनता की राय लेकर निर्माय किया जाये। धकालियों का निर्माय वहा की जनता पर न कोषा काये।

द उप्रवादियों के विरुद्ध सक्ती से निपटने के निए सरकार कोई ठोस कानून बनावें ताकि देख के जन-जीवन और सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

 यदि सरकार ने कमजोर नीति अपनाकर प्रकालियो को प्रसन्न कन्ने की नीति का परित्याग न किया तो देश का बहुमत सरकार को ममर्थन न देशा बल्कि खुलकर विरोध करेगा।

१० वर्तमान नीति मे परिवर्तन करक पजाब के राज्यपाल श्री झर्जुन सिंह के स्थान पर किसी योग्य व्यक्ति को जासीन किया थाबे।

११ पजान के मामले में जो भी नातचीत हो, उसमें पजान के सभी भागिक व राजनीतिक समुदायों व सस्वाधों के प्रतिनिधियों को बी सम्मिलित किया जाने।

### विष्टमण्डल के सबस्यों के नाम---

१ श्री रामगोपाल सालवाले, प्रवान सार्वदेशिक सार्थ प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२ श्री गोपीचद माटिया, प्रधान दुग्धीना मुदिर, अमृतसर

३ श्री रामलुमाया प्रमाकर, मत्री दुर्म्यामा मदिर, अमृतसर

४. श्री खगदीश तागडी, प्रधान हिन्दू जिनसेना प्रजान

५. श्री सत्यानन्द मुजाल, उप-प्रधान सर्विवेशिक समा, लुधियाना

प्रवान साववायक समा, लुक्ष्याना ६. स्री किशन कुमार, भार्य-समाच भटिण्डा

७ औ प्रकाशचन्त्र मेहरा, प्रवान सास्त्री मार्किट ग्रमतसर

द श्री मोलानाम दिलावरी, भार्यसमाज समिननगर भगतसर

भायसमाज शाक्यनगर अमृतसर १ श्री नन्दकिशोर, मश्री आर्थ केन्द्रोय सभा अमृतसर

to श्री एस॰ के॰ सभ्रवास एड-वोकेट, जालन्यर

११ श्री तुससीयास जेन्दानी, प्रभान व्यापार मण्डल, सुधियाना

(शेष पृष्ठ १२ पर)

# पंजाब के आर्य नेता की

# दुःखद मृत्यु : शोक संवेदना

धार्यवनस्य वाजार श्रद्धानयः धमृतसरं के पूर्व प्रधान तेवस्यौ आर्थे नेता श्री धोमप्रकाशः वेदः की आक-दिनक मृत्यु पर कार्यस्माप्य शीचान हाल में वह महानी सांधा गङ्करा कुत्र बोर बोक व्यक्त करती है।

श्री धोमप्रकाश जी प्रवास के उस बीर सपूरों में से वे जो बड़े बिद्धान धीर देश तथा समाण के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार रहा करते के।

यह समा पंजाब सरकार से उन

की संविध्व मृत्युकी अद्यानती जान करने की मान करती हैं। यह सवा धनुनन करती हैं कि मोमप्रकास वेद के दिक्यत होने से जो स्थान खाली हो गया है उतका सरना निर्ताल समस्य हैं-

वह समा परम-पिता परमारमा ते जनकी मारमा को साति तथा दु सीपारियारिक जनों को वैर्ध प्रदान करने की प्रावेना करती है।

बूलचन्द गुप्त

### सत्संग वाटिका

(समने) वाह्य तथा धा नारिक सम्राम्म में (बहुना दर्राण) बहुती को भगान वाल (बिहुय पुनानम्) पुत्र कमों के नेस करने वाल तथा समुभ कमों का त्याग करने वान को भी (पलित जभार) सब का भेरल लता है। (वेब-ध) दिन्य चम-क्कारा अर्जु क (कान्यम्) इस काल्य का (पर्या हेल, पन्यभु इस काल्य का वीवन व्यवहार के बहल जो क्यांग (महित्वा हा समान) कल मह-वपूण दिक्षात के कारण की समझ स वा रहा सा सम्मान प्राप्त कर रहा चा (ह) वह (सहा) आर (ममार) मरा पडा है।

मृत्युक विषय में भनक विद्वामों न स्रतेक वार्त कहीं हैं। परन्तु मृत्यु जैदें। व्यावेभीनिक वस्तु का विश्वासना न वसी मृत्युक्षों के लिए बनावा है—यह निष्कत्व है। बचा यह मृत्यु सनुष्य के लिए स्रि-वाल हैं? विकार की जिए तो लगेता कि बहु सहारी-मान के लिए वरदान है, स्रान्धिन

मृ यु म एक भागन्य हे, पर तु अनुष्य का इस मानन्य से इसलिए भ्रतान्त रखा गया है, ताकि वह जीवन का कठिनाइयो को सह सके।

वेदिक सस्कृति में मृत्यु की भीव-णता नहीं हैं। मृत्यु तो मानो जीवन वृक्ष में सारा हुआ सुवर फल हैं। जीवन कोर मृत्यु वोनों ही सत्यन्त मशक कारक कोर प्रेरखादावक भाव है। राजि स ही को सरकारय होता है और सस्ख्योधय म हैं राजि स्थापी होती है। जीवन मृत्यु क्यों राजि का प्रक्षीयन हैं।

प्रस्त कभी-कभी अन से स्टटता है, सह सुरकु स्था है ? इस मृत्यु को आनते नहीं हैं, स्थाकि हम परे नहीं है । को अन्त कुछ है । वह मृत्यु का स्वस्थ बत्तवाने धाएगा नहीं। हा यह गृत्यु अत्येक के पाछ धाएगी। धाल जिसका जन्म हुमा है, कल वह धवरम सरेगा। परन्तु भाई नहीं बताना कि मृत्यु स्था है?

विक विवारणारा क अनुसार मृतु का मास्तिस्त है ही नहीं। मृतु क वास्त्र निक स्वरण को समझ सेन स यह मिट जाती है। गग्त विकाशकरण को समझ ते के लिए हमें यह ज्यान रखना है, कि धारमा और कारीर को मृतु हाती है— धारमा को नहीं। बारस को मृतु हमी हम प्रति दिन सोते हैं राज राज को ना छोटी छोटी मृतु हैं। हम प्रति दिन सोते हैं राज राज को ना छोटी छोटी मृतु हैं। हा सरस्त्रम जी विद्वाराण कार विकास हमें प्रति राज राज को ना छोटी छोटी मृतु हैं। हा सरस्त्रम जी विद्वाराण कार सारसा हमें सुना देती है ता कर करता है, तक सारसा हमें सुना देती है ता करते हैं का करता है हो का स्वार हो वास । बैटरी-कार्ज हों

# मृत्यु एक मधुर कविता है

सुरेगचन्द्र वेदालकार

विषु दद्राण समने बहूना, द्ववान सन्त पिखतो जभार। देवस्य पश्य काव्य महित्वा, भ्रद्या ममार सहा समान ॥

ऋ० १०।५५।५

\*

जाय। बैटरी जब बिल्कुल काम लायक नहीं रहती तब मात्मा हसे छोड देती है और वह गारसाने के लिए दूसरी बैटरी से तता है।'

कठापनिषद् से निक्केता ने समराव्य से पूछा पुरुषेत्र । जब शादशी मर जाता है तब कई कहते हैं, यह सर गया और कई कहते हैं, यह नहीं भरा। तुम तो सालात् मृत्यु रूप हो धत तुम बतवाओ कि तुम हो क्या?

यमराज बोला सखार में दो तरह के मनुष्य हैं। एक देजो शरीर को झारमा मानते हैं भीर दूसरे वे जो सरीर को ग्रात्मानही नानते। शरीर की ग्रात्मा मानन वाल सासारिक भोग-विकासी मे सिप्त रहते हैं। वे 'प्रेय मार्ग के पश्चिक बन जाते हैं। परन्तु सरीर को भारमान म नने वाल, वे नित्य की तलाश करते हैं, दुनिया की टीप टाप से उनकी तृष्ति नहीं, होती, भौतिक मोग-विसासी से उनका की नही भरता। इनका मार्व 'श्रेय का होता है। बाद रखो, मृत्यु का सर्व है निर्वाण ग्रयाति ग्रनन्तः जीवन प्राप्तः कर नेना। ब्रपने वैयक्तिक शुद्र स्वार्थ, श्रपनी श्रासक्ति को भूतना ही सच्ची मृत्यु है। इसविए सन्त तुकाराम कहा करते वे -

अपनी आसो ही मैंने तो अपनी मृत्यु देख नी है।

बनुषम वा गेरा सुका सुहाव।

जो एक बार इस मृत्युका अनुवय कर लेते हैं उनकी मृत्यु नहीं होती मृत्यु भानों माका सनकसय हाव जो प्रेय सार्वे से सन जोवन को पोकर स्तज्युक कर दे—

घूलि बूसरित है यह तन मन निज श्रमुत कर से घो दे समदन्।

मुला मुक्त चरणो म निश्नदिन भगवन् किसे कहु? अब क्या कहु?

अनुष्य से धासिनतम्य पसारा सुदता नहीं। सेकिन ईश्वर मृत्यु के द्वारा उसे उता देतः है। सबसुच मेरा यह मासिन्य, मा <sup>1</sup> नेने दिना कीन को सकता है?

ग्रत वैविक विकारवारा गहती है 'प्राणो नै मृत्यु 'मृत्यु प्राण है। मृत्यु का वश काटकर वैविक विकारवारा ने उसे सुन्वर ग्रीर मधुर नगा विवा है। मृत्यु मानो केस है। मृत्यु नानो स्रानम्थ है। इत्यु मानो काव्य है। मृत्यु मानो पुराने वस्त्र बदलना है। चिन्होंने मृत्यु के इस काव्य को चलका है। वन्हें मृत्यु के जय नहीं संग्रा। उन्हें मृत्यु से भी काव्य का सा रत सिचता है।

समतिसह (१८०७-१६३१) को जब फासी पर चडाने क सिए ल जाया जा रहा बा तो उसका चेहरा उच्च्यल हो उठा उच्चा वचन वड गाया आरत मारा की जया, 'इ-कलाव किन्दाबाद का नारा कमाता हुआ फासी पर चव वथा।

रोधनसान को इसाहाबाद केल में फारी होंगे वाली थी। यहले दिन प्रांत्रेल पुराण्डिंग्येट न वरात करते तेल प्रतंत्रेल पुराण्डिंग्येट न वरात करते हो की होगी, आज क्यों क्यरत कर रहे हो? वह बोबा वैदिक वर्ग में मरते सन्य को बाब होता है उन्हों के बनुसार दूखरा बन्य होता है। मैं शक्त प्राप्त करने का विचार तेलर मक्या तो समने सम्बंध में विटिस राज्य को उलाव पेकने में समिक शिंतर प्रहण करना।

रानप्रसाद विस्मित को जब गोरख-पुर ने फोसी दी नई तो 'निस्वानि देव' मत्रो का पाठ करते हुए उसने फासी की रस्सी को हुई से चूम निया।

१६१७ ६० में जब भवनर की सेना से जुड़ के समय जनमस भीर फला ने भीर उनके बीर सैनिकों ने केसरिया बाना पहनकर अपनी शातुच्चीन की रखा के सिए बिलाबान दिया और स्थितों ने बोहर बड़ा सारण किया। तब नया नह श्रीमाखाय सारण किया। तब नया नह श्रीमाखाय

न्हित बवायन्त्र (१८२४-१८८३) को निस्त दिवा गया चा। तिम्न से रोम-रोम मे ब्राय सभी थी परन्तु मृत्यु के समय वेहरे की कांग्यि को वेसकर नास्तिक गुरुक्ता (१८६४-१८६०) झास्तिक बन मना।

भावनी भीक ने सम्बेधों की होता के सामने बन एक निहरका खम्बाखी प्रपनी खाती कोण कर वोलियों का शुक्रावला करने खबा हो नवा दो बल्क्स कुक नई। क्या यह नृष्यु का खानन्द नहीं?

इन्लेड में नीटीनर (१४०६-१५१६) में एक पावरी था। उसके हाथों ने वह सपेटकर, उसकी मसाक बनाकर उसे साथ संगंधी वर्षा सक्ष सक्षात जन्म मरा कि उसकी मृत्यु की मधाल सभी दुनिया में श्रज्ञान के श्रन्यकार की दूर करेगी।

तूनों (१४४--१६००) कहता वा कि सूर्य पृथ्वी के निर्दे नहीं वृक्ष रहा, पृथ्वी उसके बारों सोर प्रवक्षिया कर रहीं है। उसके विरोधियों ने उस झान से वार्वा विद्या—पर उसने सपना विद्वाल नहीं खोडा। यह नृष्णु भी मा प्रमुखा ?

सुकरात मरते समय अमुदर्श का स्वाद ले रहा था। मरते समय बेट से कहा ' अधिक प्रकाश, अधिक प्रकाश '। सुकाराम महाराज 'राम, कुम्म हरि गाँठे निष्ठे के स्वाद '। समये ने कहा ' अंगो रोते हो । प्रेमचा रास है। समये ने कहा 'अंगो रोते हो । प्रेमचा यदा हि धर्मच ' । साम को कहा ' अंगो रोते हो । प्रेमच ' । साम जो को सोने का स्वाद कर गये । सामी जो बोगो हाथ जो हुए ' ।

हसनिए मृत्यु कितिता है। मृत्यु रख है। मृत्यु प्रास्ता ते मृत्यु नवजीवन का जारज है, मृत्यु धानग्द का दर्शन है। मृत्यु भागो परमारमा जीवाना के मिजन का समीत है। यरकर प्रथने प्रियन्त ने पाक. जाना है। किसी ने कहा है —

> करले श्रुवार चतुर श्रस्तवेली ! सामन के घर जाना होगा !! माटी घोडावन, माटी विद्यायन ! माटी में मिल जाना होया !! नहां ल, घो स, सीस गुवा से ! फिर वहां से नहीं घाना होगा !!

### निर्वाचन

ग्रायं नहिमा नडन करीसवाय क्षेत्रः का निर्वाचन जीमति सुबीक्तः जी द्यानन्द की द्यान्यसवा ने हुगा।

निम्नसिसित पदाधिकारी निर्वाशिक

वासती सुशी**ला महता पथा**ना

,, हा॰ चन्द्रप्रभा उपप्रवासा

नीमती कृष्ण रसवन्त मत्रिणी

,, प्रकास बुग्या उपमन्त्रिक्षा भीवती सावित्री कपूर कोवाध्यक्ष

मन्त्रि <sup>†</sup> कच्च प्रस्तवस्थ

कृष्ण स्वरूत शोक सभा

धार्वसमान रमेशनवर के वरिष्ठ स्वप्रमान भी बोचरान जी कोछह का १ मई को निषम हो बया । उनकी स्वप्ति में एक स्वाञ्चाल सभा थी/२३ रमेशकनगर में शम्पनः हुई। भी बोचरान कर्मठ समान सेवी तथा शानवीर के। उनका स्वमान सरक एव मसुर मा। इस सब्बर पर उनके परिवार की कोर से सार्वसाण रमेशनगर की ३२२६ स्पर्ध का एक एस्प्लीफायर तथा सार्थसमान सारवाहरी की एक तिलाई मसीन सी। सार्व प्रसित्तिक तमा को भी १०० क्यपे शाम स्वक्टर विए।

हम विवेषत मात्मा के प्रति प्रश्नु से सर्वित एवं शांति की प्रार्थना करते हैं।

Stiene ... nim mente

# सिखों के अपमान का कारण अकाली दल

सरदार सत्येन्द्रपाल सिंह

\*

पजाव के बकाली नेता और लन्दन में रह रहे बडवोले घलवारी शेर जमजीत सिंह वोहान तो सालो से कहते चले झा रहे थे कि भारत में सिल द्वितीय अर्णी के नागरिक की हैंसियत रखते हैं, किन्तु झव खुषावन्तिसह जैसे पत्रकार और महीपसिंह जेसे बुढिजीवी भी यह प्रश्न कर रहे हैं कि भारत में सिल आत्मसम्मान से कैसे रहें। पर क्या सचमुच सिखो के साथ भैचमान करता का रहा है।

बकाली दल ने मुस्लिम लीग की तरह हमेशा ही धर्म का राज-गीतक पंतर के क्य में इस्तेमाल किया है ब्रोस बहु भी पजाब के राजनीतिक परिप्रेक्स में। पजाब के बाहर फालियों ने न तो कभी फाका, न ही कही उन भी खड़े रही है। इसके बावजूद ऐसे बम्बस बहुत कम आये, जब वे पजाब मे सता में रह रहे हो। पजाब में गांवों का खेतहर जाट तबका हो बकाली दल से जुड़ा रहा है और दल भी बायडोर भी सम्पन्न जाट मूप्तिमों के हाथ में रही है। बहरी पढ़े-लिखे, पर जाट सिक्षों को सहामती में बस्त काली दल नहीं प्राप्त कर सका। पजाब के बाहर विभिन्न प्रान्तों में बस्त बाले तिस्स बामतीर पर कामस के समर्थक रहे हैं। शायद यहा जजह है कि हरियाएगा, हिमाजल के ब्रालावा उत्तर प्रवेश, राजस्वान, मध्यप्रवस, बिहार, पाइयम बगाल तक को विधानसभायों में कौध टिकट पर जुने गये

इससे साफ तौर पर को चोत्र उत्तर कर सामने झातो है, वह यह है कि भ्रकाली दल कभी खिलों का प्रतिनिधित्व करने वाली सस्था नहीं रहीं। इसास्कर पञाव के बाहर के सिलों ने तो इसे कभी गम्भीरता से नहीं विद्या।

स्वर्ण मन्दिर में भापरेशन ब्लूस्टार के पहसे तक भ्रकानी नेता साफ तौर पर कहते में कि वे पजाब के हका को लड़ाई लड़ है है। हाँ पर के पोछे तिला राज्य का मिश्रक करूर तथार किया गया था। पर स्वर्ण मंदिर में सेता के प्रवेश के बाद से भ्रकालियों को यह कहने का सुनहरा भ्रवर मिला गया कि सिला कौम पर हमला किया गया है, सिला भारत में मनुरक्षित है, भ्रादि-भार्त। एक भावनारमक उन्देश सा उठा भीर वह सिला भी प्रकानियों की बाता की सवाई को परलने लगा, जिसने भ्रमती सरी जिन्दगी में कभी स्वर्ण मन्दिर के दर्धन तक नहीं किये। प्रवाब का माहील काफी हद तक भ्रकालियों के पक्ष में हो गया। प्रवाब के बाहर मो सिलों में सुगबुगा-हट थी। श्रीमती गीथी की नृशस हत्या के पश्चात् हिलति में भीर फर्क सामा

इस सम्बन्ध में महीपसिंह से एक सबाल पूछा जा सकता है कि मेरे बसासिस, जो उत्तर प्रदेश में पदा हुआ, पढ़ा-लिखा, बढा हुआ और जो कसी भी उत्तर प्रदेशवासी से अधिक अच्छी भवनी बोल सकता है, तथा हमी भी पजाब के किसी भी शहर, कस्बे, गाँव मे गया तक नही, वह कसे बास से कि प्याब की अमीन पर उसके हिंत फलफूल रहे है ? सवाल यह ही है कि जिस धर्म के नाम पर शकाली पजाब को बन्द्रक की नोक पर ल्यक बनाए हुए हैं, वह पजाब में किस दौर से गुजर रहा है ? पजाब के संखों मे बाल कटाने, नक्षा करन, गुक्दारे न बाने, यहाँ तक कि पजाब से लायन कर अन्य प्रदेशों व निदशों में बसने की प्रवृत्तियाँ तेजी से बढती जा ही हैं। प्रवास में ऐसे सिखों की कमी नहीं जो न तो अपने इतिहास व रुओं को शिक्षाओं के बारे में जानते हैं, और न अपनी माथा लिख-यह सकते । प्रजाब के बाहर रहने वाले सिख अकालियों को किस प्राधार पर सम-ान दे ? सिवाय पजाब झाने का झानन्त्रए। देने के झीर क्या वर सकते हैं -पजाब से बाहर के सिक्षों का । फिर यदि कभी असम्भव वात सिख ाज्य के रूप में सम्भव हो भी गई ता क्या गारण्टी कि पजाब जाने वाले ससों का बही हम्म नहीं होगा, जो पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों का भा है ?

इस बात की बास्तविकता नो जाच करना भी जरूर हो गया है कि

क्या मारत में विक्षों के साथ भेदभाव बरता जाता रहा है। इस देश में सिलों को एक महान् देशभवन कीम का दर्जा दिया गया था। भीर हर जगह उन्हें सम्मान की निगाह से देला जाता था। पजाब के बाहर सिल उन्हें सह जाता था। पजाब के बाहर सिल उन्हें भी जाकर बसे, वहाँ के स्थानीय समाज ने उन्हें द्वियानम कर लिया। इसी बजह से उनके उद्योग भीर ज्यापार भी चल निकले तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी यित्री। बोग एक दूसरे के सुल हु जा, सबसरो-त्योहारों से सरीक हीने लगे। यदि इस सब बातों को एक तरफ रल दिया जाये तो भी महीपसिंह, स्वामी विवेकानन्द, डा॰ राषाकृष्ण्या, हजारीप्रसाद दिवेदी जैसे भनेक विद्यामी विवेकानन्द, डा॰ राषाकृष्ण्या, हजारीप्रसाद दिवेदी जैसे भनेक विद्यामी विकेषानन्द, डा॰ राषाकृष्ण्या, हजारीप्रसाद दिवेदी जैसे भनेक विद्यामी विकेषानन्द, डा॰ राषाकृष्ण्या, हजारीप्रसाद दिवेदी जैसे भनेक विद्यामी विकेषानन्द हो जो स्विण की सम्बन्ध विद्यामी की सम्बन्ध के स्वत्य महीपसिंह हो तो में कि हिन्दी कथाकार के रूप में उन्हें इतनी प्रनिष्ठा क्या भनायास ही मिल गई।

िकों की वैयनिक्क व सामाजिक प्रतिष्टा व मान्यता का इससे वडा प्रमान्न और क्या हो सकता है कि नियमों व कानूनों का सब्सी से पालन कराने हेतु प्रवेश यरकारे सिक साई एए स व प्राई पी एस अधिकारियों को प्रपत्न यहाँ बुलाने हेतु लालामिन रहती हैं। युक्ते याद था रहा है कि ममेटो में जब पहली बार राजों व गांची ससदीय उपजुनाव लड़ने थाए तो उनके माय पुलिस के अपराक्षा के कामा पाने पहले हुट्ट कट्टे खिला, जिनके माय पुलिस के अपराक्षा के कामा पाने पहले हुट्ट कट्टे खिला, जिनके साथ पुलिस के अपराक्षा के कामा पाने पहले हुट के हो से पूर्ण पर उन्होंने वताया कि उन लोगों ने १८७७ में सत्ता से हटने के बाद श्रीमती गांधी को प्रपत्नी न सुरुक स्विष्णक सेवाएँ अपित की थीं, तथा १६०० तक उनके साथ रहे। अब जब राजीव गांधी राजनीति में आए तो उन्होंने हमें हो साथ रखार किया व

राजनीतिक तौर पर भी मिश्नो को सदेव महत्व दिया जाता रहा है। सरदार बलदेव मिह, मरदार मजीटिया, हुकुमांसह, उज्ज्वलसिह, स्वर्णिसिह, गुरुदयाल सिह दिल्लों से लेकर झानी जेलसिह तक भनेक नाम पिनाए जा सकते हैं। विभिन्न प्रदेशों में भी राज्य स्तरपर भनेक सिल राजनीतिक रूप से सिल्य व पदासीन हैं। यदि इसे हो सिल्यों के साथ राजनीतिक रूप समझ्य व पदासीन हैं। यदि इसे हो सिल्यों के साथ राजनीतिक रूप समझ्य व पदासीन हैं। यदि इसे हो सिल्यों के साथ राजनीतिक रूप समझ्य माना जा सकना है कि भनालों दल कभी उभर कर सामने न भा सका, तो न्दिया हो हमें चुप रहना होगा।

यदि अमृतसर हरमन्दिर साहव में सेना की कार्यवाई को ही सम्पूर्ण सिल कौम का अपनान करने व चुनीनो देने वाली घटना मान निया आए तो जो अपनान, जो धम, आज देश के कोने-कोने में बंठा सिल महसूस कर रहा है, उसके लिए जिम्मेदार कोने हैं? वह शकालियो और उनकी गलत नीतियो को क्यों न कोसे ? वह सिलों की सामाजिक, राजनीतिक व वैय-क्तिक स्थित के इस अवसूल्यन के लिए जिम्मेदार है।

क्मी आचार पर आज बहुतेरे खिल आनन्तपुर साहब प्रस्ताव को पूल क्प से अस्वीकार करने में तिनक भी हिचकिचाहट क्यों दिलाएँ, जिसकी पुरुवात हो इस कतने से होती है कि शकाली दल सिवों की सर्वोच्च प्रति-निर्मित्त सस्वा है।

महीर्गांशह जंसे बुद्धिजीवियो से मेरा प्रमुरोच है कि पजाब समस्या को पत्राव समस्या ही रहने दे, सिल समस्या में न बदले। पजाब समस्या यो पजाब समस्या नहीं, प्रकाली समस्या है। प्रान्दोलन प्रकालियों का, प्रांचे प्रकाली राजनीति के प्रमुक्त, कभी नर्म, कभी गर्म उपलब्धि प्रमुप-लब्धि सकालियों की, सचर्ष सत्ता का। बाम सिल को चाहे वह पत्राव मे हो या पजाब से बाहर, इन सब बालो से कोई सरोकार नहीं है।

ककाली नेता झाम सिखो के हितों के रक्षक तो कभी भी नहीं रहे, इतना बबब्द हुमा कि वे सिख कीम के अपनान के कारए। वन गए। किन्तु बमें के नाम पर जोली गई उनकी राजनीति का दुकान भविक दिन तक चलने वाली नहीं।

(नवभारत टाइम्स से सामार)

उनीसबी शती मे महर्षि दयानन विरक्त साधु वेश में समस्त भारत का पैदल भ्रमण कर रहे थे। ब्रह्मचय ग्रीर सपदवर्ग से उनका शरीर व प्रात्मा प्रदीप्त था। भारत के सभी वर्गों की दशा की जनकी सूक्ष्म रुच्टि देख रही थी। देख गुद्ध वैदिक धम के स्थान पर बौद्ध भीर जैन सम्प्रदायों के अपूर्ण अहिंसाबाद तथा मतीन वनात के शक्स श्याद के सम से गिरा पडा था। जाससास का नम्न ताण्डव हो रहा बा। समस्त समाज नानाविध क्रीतियाव कवियों में फसायडा बा। स्त्री जुदो व पश्चमो के साथ घोर खपेका बरती जा रही की । भारत का भाकिक डाचा विदेशी कूटनीति के कारए। मडलडा रहा था। रावनैतिक रव्टि से ग्रय ज नारे भारत पर छाये हुए थे। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी कुछ देशभक्त व महत्त्राकाक्षी लोगों के हृदयों में देश-ग्रेम की श्रान्ति ज्वाता अधक रही थी। प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध के महाम् नेताम्रो मे बीर तात्या टीपे, नावा साह्य अजीम उल्ला सौ बादि के साथ ऋषि दवानन्द भी स्वतन्त्रता युद्ध की तैयारी मे जुट गये। ऋवि ने हरिद्वार क्रम्भ मेले पर ही देश की प्रज्ञानता भीर गिरावट का उस्य खुब देखाया। यस सवस्वश्यान भारत राष्ट्र के जागरण का स्वप्न सजोकर विरक्त साध्यो की टोली बनाकर हाथों में कमल कून भीर रोटी का दुकड़ा लेकर कश्मीर से वन्याद्यारी तक भ्रदण करते हए स्वतन्त्रता युद्ध का खदेशा पह-वाते रहे। जनता भीर सेना के बीरों ने मेरठ छावनी से स्वतन्त्रता के ऋण्ड का हाचमे सकर युद्ध घारम्भ किया किन्तु विद्रोहियों की राजनैतिक मूल के कारण स्वतन्त्रता का प्रथम प्रयास विकल हो गया। तब ऋषि ने नाना साहब तबा धनीय उल्लाखानी श्रीराष्ट्र वले जाने की कलाह दी धीर धपना माग वदल कर दूसरा ही काय भारम्भ किया। सन् १७ की काति की प्रसफलता का मुख्य कारण —एक विचारवारा, एक जाति एक सन्दन, एक भाषा, एक राष्ट्र का श्रमाव एव समाय ने फैली विकिथ कुरीतियो ग्रीर कप्रस यों का प्रसाद था।

धन महर्षि स्वतन्त्रता के प्रेमी धाव बन्धे के प्रकाण्ड विद्वास दण्डी स्वामी विरजानन्द क सवा मे पहुने । बहा उन्होने बहा श्राष प्रन्थो एव स्थाकरण का बच्यान निया वहा जारत की दासता का बेडियों को काटने पर भी चितन व मनन किया । तदमन्तर गुरु से विदाई सक्य ऋषि दयानन्द मान्तरिक व बाह्य तैया ते के बाव भारतीय समाध में व्याप्त परतन्त्रता के मूल कारखी वर्णान्यता, काररता ग्रथविश्वास एव एकता बादि कूरी वियो का दूर करने का रहसकल्प े से ≄र प्रचार क्षेत्र मे उत्तर पढाउल्होने क्रायांवत मे फैले सब प्रकार के दुर्गुणो की बाच कर न्बिर और सामयिक उपाय प्रारम्भ किये । स्वान स्वान पर व्याख्यान

# भारतीय समाज के जागरण में आर्यसमाज का योगदान

महाबीर 'नीर' विद्यालकार

दिए । सम्प्रदाणी मतमतान्तरी से शास्त्राच किए। वेद भीर संस्कृत श्रष्ट्यमन पर वस विद्वामों एव साथारण जनता को जायुक्त करने के लिए सत्याधप्रकाश ऋखेद-भाष्यभूमिका सत्कारविधि गोकद्या-निधि बार्वात्रिकिनय बार्वेहिस्यरस्न-माला व्यवहारमानु धादि ग्रव धार्य भाषा (हिन्दी) में सिखे। जनता तवा राजा रक्वाडी से सीचा सम्पक स्थापित किया। राजनैतिक व द्याविक सुवार के लिए स्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश मेजा। जितनी और जिस प्रकार की भी कूरी तिया बुराइया वी सब पर निशव होकर तक की कठोर कुठार चनाई। भीर---

धपने द्वारा चालुकिये कायक्रमों की धामे बढाने के लिए बम्बई मे धायसमाध रूपी सस्था को नीव राखी। जनता मे कानरण हुमा मतन दी व विरोधी अबके। धनक बार सनेक उपायों से ऋषि के प्राण हरने की ठानी। शस्त मे इन्ही सुवार कार्थों के कारल दुष्टों ने विव के द्वारा उनके प्राच हर लिये।

ऋषि के निर्दाण के पश्चात् साथसमाज एक बार विमूद व इतप्रश्न सा रह गया। कि तु कुछ उत्साही व दढ प्राम नेताधी ने ऋषि द्वारा प्रतिगदित कामाम की आगे बढाया । बेह का ग्रध्ययन ग्राव शिक्षाएव सस्कृत का प्रचार होने सना। र टकी एकमात्र भाषा 'श्रायमाया हिन्दी तथा देवनागरी लिपि की अब जन मयी। धनेक पाठश लाधी, कालेकी गृह क्लों ब कत्या गृहकूसी की स्थापना होने लगी। वेटों भीर सन्य बन्धो का समझ परक सर्व होने सवा। समास मे नम ते भीर भोश्मृका स्वापक प्रकार हुआ। स्वदेशी बस्तुधी के प्रति धार्यसमाज ने लगाव पैदा किया । सोसीं को नास्तिकता से बास्तिकता की जोर मोडा। वड पूजा से विमूल कर निराकार पर ब्रह्म की उगासमा की धोर उन्मुख किया। वाति पार्त तोड कर विवाह होने समे। बसा शाक्षम का प्रकार हुआ। स्त्री जाति को गढाया जाने समा एव उनका सम्मान होने लगा। बसूत अस्प्रस्य साथि कुरीतिको का निवारल होने सवा। जाति-पाति की दावारों ने दरार पडने सबी। आन का सता प्रकाश वहुँ स्रोर फैसने लगा। सारमा-निमान की वृद्धि होकर राष्ट्र होने की चिन्नारी स्कूरण पाने सनी। गार्थिक सुपार हुधा । राजनीति ने जी चैतन्त्र वासा । किन्तु बहा बार्यसमाज ने पार्विक व

वहां राजनीति वे सामृहिक रूप से कोई उपसब्धि प्राप्त नहीं की । फिर बी राज-दिया । राजा रचवाडो व विचारशील गीति में बार्वसमान के १० प्रतिशत सदस्यों ने मान निया। राष्ट्र की स्वतन्त्रता भीर उसके उत्थान के लिए कब्ट सहे। बैस वातनाए भोनी प्रास्तों की मेंट चढाई। अध्यमान की कालकोठरी ने रहे। इसके इसते फासी के फन्दों को चुना। परन्तु इस सवकाश्रेव समाज्ञको न भिन्न सका। वस्तुत मारतीय समाच की सोयी राज-नैतिक बनीवा की बनाने ने ही आर्यसमाब का प्रवल हाव रहा । समाजमें नई जावृति नाने के मिए न जाने कितने स्वामी बद्धानन्द पं॰ नेसराम व महासय राज-पास की जैसे महाशुक्त मोनी एव सकर का निजाना बनाये वये । यही नहीं श्रमणी जाति विरावरी के भौगों से भी ठकराये गये निकाले गए। हुक्का पानी तक बन्द हवा। किन्तुजानरताकाजो शक्ष ऋषि ने फूका का उसकी ध्वनि सदा सबवा मार्थों के कानों में बूबती रही।

> धाक धायसमाज के बहुमुक्ती प्रचार व प्रतार से राष्ट्र का रूप ही बदलने लवा है। यत कुछ लोग कहने सबे हैं हैं कि जितने काय धायसमाज ने प्रारम्भ किए थे। व सब सरकार ने अपने काय क्रमो ले सिये हैं। उनके बनुवार स्त्री खुदों की कोई समस्या नहीं रही। बस्प्र-व्यक्ताधर्वेत्र कर दीनगी है। जाति पाति के बाबार पर ऊचनीय के आराव सम प्त हो ए । है। शब्द बता की भावना बढ गया है। एकुयो पर सत्याचार बन्द हो गए है। सिक्षा सब को उपस्रव्य है। नैतिकता नाप्रभाव बढ गया ह। उस्त बाते कहने सूनने में कुछ ठीक श्री सबती हैं किन्तु है बिल्कुल निर्मृत । क्योंकि भारतीय समाज के जागरण ने बार्यसमाज की जैसी पहन भावश्यकता भी उससे वहीं पश्चित पात्र है।

बाज बाचिक्यास अब्टाचार वृक्ष-कोरी लुटपाट चोरवाजारी बागवनी हत्या बाई अतीवाबाद ऊँच नीच का नाव धनानता कायरता, धराव्हीवता स्वायपरता बहेज दानव क्रमांन्यता समाज में नितक समाब सादि बुाइबा इसने प्रवस रूप में स्वाप्त हैं कि इससे ताम पाना दहा कटिन है। साथ पड़ा निसा व्यक्ति भी बुढि पर ताला देकर बैठा है सीम सपने कींगी के द्वारा दुर्व का निवारण न करके तीवों सौर जडस्व में सक नोज़ रहा है। वर्ष ब्राद् धीर जानि वाद का रोग समाज में बढ़ रहा है आय समाय के पास इसका उपचार है। सर-कार ने विरियम हरियम, बादिवासी शामाविक क्षेत्र में शामृहिक कार्य किया पुषक् वर्ष व वाति सड़ी कर शे हैं विक्रका

समाजान नुष कर्मानुसार धार्यसमाज के पास ही है। स्त्री जाति और बूचको 🕏 उत्बाम के सिए धार्यसमाज के पास धनेक कार्यक्रम हैं। युवक धौर युवती (स्त्री पुरुष) दहेज धादि समाज के कनक का निवारण कर सकते हैं। प्रायतमाथ के गुक्कल व कन्या युक्कुल इस विकार्ने धाव भी पहल कर सकते हैं भीर वाति-पाति, ऊपनीच धमीर-मरीव की वीवारी को समाव से मिटा सकते हैं। पशु हुत्का रुक्तवाकर मी भावि पशुभी का सवर्द्धन कर समाय में प्रथमित शराब अच्छे चाम बादि स्थापक हानिकारक वस्तुवी का प्रयोग कम होकर घन्न की समस्या का समाचान भी हो सकता है। नैतिक शिका बार्यसमाध की धरोहर है जिसके विना व्यक्ति व्यक्ति नही । परिवार परिवार नहीं समाज समाज नहीं और राष्ट्र राष्ट्रं नहीं। बाज हिन्दी की बीर उपेका ड्डोकर सरकारी व गैर सरकारी कार्यक्रमो में बसेनी का प्रभाव वढ रहा है। इस वातक प्रवृत्ति का निवारण भी समाज व राष्ट्र हित ने धावस्थक है। बार्य पूर्वी को व्यक्तियत रूप से यदि वे राजनीति में स्वच्छता चाहते हैं तो राजनीति में स्रविकता से प्रवेश कर नैतिक मुन्यों की पुन स्वापना पर बन देना ही होना क्वोंकि पहले वर्गसे नीति और नीति से राज वसाकरते वे । बाज राज से नीति और नीति से थम चस रहा है। स्वामी दयानन्द बुराइयों को हटाने के लिए इट रहे, सचे नहीं। हम सबने समें दद न रहे इसलिए उपलब्धि दूर सबी है।

वास्तव मे शांक हमें इस बात पर बस्भीरता से विचार करना होगा कि हम भारतीय समाज के धन्तनत के बस हिन्दू समाज को ही लेते हैं सथवा इसके यन्त नत-जैन समाज बीख समाज सिन्धी समाज सिक समाज मुख्यमान समाज ईसाई समाज चादि विभिन्न सम जो का श्री समावेश करते हैं क्यों कि राष्ट्र के ये विविध पुद्रक धाव फिर विपरीत निवाधी मे भागे वा रहे 🖁 । इसलिए प्रायसमाध के इस खुठे नियम की व्यावहारिकता का पुनम्त्याकन समाख के पुनर्जायन्शा मे कहा तक वही सिंढ हो सकता है निचार स्तीय है कि ससार का उपकार करना इस समाच का मुक्य उद्देश्य है अर्थात् बारीरिक बारिनक और सामाजिक बन्मति करना ।"

सत उपमुक्त विवेचन के प्रापार पर कक्षा जा सकता है कि भारतीय समाज के ही नहीं धापितु मानव समाज के जागरण में बार्यसमाज का महान् योगदान रहा है। साथ के बदसते परि-वेख गुतो उसकी भीर भी महती आय-ब्यवर्ती है बार्वर्गनात्र मान्य समाय की ज वृति के कार्य में सबा ही उचत रहा है — 'यनर्शव विच्छत बायत प्राप्य बराज्यिबोबत सर्वात् समुख्य बनी सही कप में मनुष्य बनी, पुरुष बनी--इठी, वानो धौर श्रेष्टता को प्राप्त करो।' नह उसके अध्योग समाज के सिए दिन्स क्षेत्र स्ट्री

महाराशा प्रताप का जन्म बन् १५४० 'ई में हुबा बा। वे महाराजा उवयसिंह के **एबेर्ड पूत्र थे । उनकी खिशा-बीका मेनाड** राजवश परम्परा के धनुकृत हुई थी। **श**स्त्र संस्त्र से**ना संचान**न मृगवा तदा राज काम प्रमम्ब की कुशसता उन्होने बाल्यकाल मही पूर्णंकम से प्राप्त कर सी थी। राजा उदयसिंह धपने कनिष्ठ पुत्र जनमल को बहुत प्यार करते ने। छन्द्री को स ना उत्तराधिकारी घोषित करने का उन्होंने निरुचय कर शिया। प्रतार पित् भक्त थे, उन्होंने पिता के निर्णय का सनिक भी विरोध नहीं किया। प्रताप को बाल्य राज में सदा यही बात बाटकती रहती वी कि भारत भूमि विदे क्रियो की दासता की हवकड़ी धीर बेडी में पड़ी हुई है। वे स्ववेश को धाजाव

## किशोरमञ्च-

# प्रणवीर बालक प्रताप

प्रस्तोता-बलजोत शास्त्री

कराने की बोधना में चिन्तनशील रहते है। उनके सामा मालींक के रास सकार-राम बातक प्रताप की गीठ पर तथा हास प्रतारे है। उनहें सावका वी कि ऐता स ही कि प्रताप प्रस्त पुर के कड्बनतो के विकार हो बातें। प्रताप बड साहती बातक है। स्वतन्त्रता धीर वीरता के साव उनके रगरन में भरे हुए है। कभी कभी बातक प्रताप चोडे की गीठ पर से स्तरकर बडी शदा धीर खादर से महा-राणा कुम्मा के विश्वस स्तम्भ की परिक्रमा कर तथा नेवाड की पतित्र पृत्ति सश्तक पर समाकर बहु करते थे कि वैने वीर सत्राणी का दुःव पान किया है। मेरे रस्त में महाराखा सौंगा का सोन प्रशाहित है। चिराडि के विश्वस स्तम्भ । मैं गुनसे स्तन् तथा और सातृ पूर्तम मलिक सा धापस नेकर कहता ह विश्वास दिनाता ह कि

तुम सदा उल्नत भीर सिसोदिया नीरव कै विजय प्रतीक बने रहोगे। शत्रु तुम्हें श्रमने स्पन्न से मेरे रहते श्रपवित्र नही कर सकते। वालक प्रताप के सामने सदा राला सौगा का बादशंग्हता था। वे प्राय अद्धानिल समन्ति करते समय कहा करते ये कि मैं महाराचा माना के अधूरे कार्यको प्रवश्य पूरा करूना। उनके इस सकल्प के सामने शकतर जैसे सम्राट्को भी भूकना पढा । प्रश्विश प्रताप ने सारा जीवन युद्ध किया पर शत्रु के सामने भुके नहीं देश के बन्धनमुक्ति का बत लिया था। जिसकी मृत्यु पर प्रकवर जैसा शत्रुभी रोया बा। हम एसे बहादूरी के वशज हैं। भ्रपनी शातुभूमि के प्रति प्रताप के समान भाव रखने। हम सब यह बत लेते हैं।

तह्यामःच-

# जवानो, जवानी यूं ही न गंवाना !

प० बुद्धदेव विद्यालकार

मुर्ख और बुढिमान में बढा धन्तर होता है। मुक्तं प्रच्छी बात को भी बुरा बना लेता है भीर बुद्धिमान बुरी चीच को भी धम्छा बना लता है। काजल का धनर सही जमीन किया जाये तो साँको में डाला हुगा सुन्दरता को चार चौद सना देता है। सगर नतत इन से प्रयोग कियाहुमा वही काजल इथर उचर लग जावे तो बच्छी सूरत को जी महा बना देता है। एक द्विमान पुरुष ने साम पर वदी हुई देनची को देखा, उसने अनुभव किया कि वो पानी जो पहल पुपवाप वा भाग बनकर कितना जबरदस्त बन बबा है विसने डक्कन को बकेल कर परे फैक दिया है, दुदिमान ने इस गक्ति को सम्बाता बीर इजिन तैयार कर सिया। मूर्ख ने रानी धीर बाब को इकट्ठा किया धीर हुक्का बनाइटर बुव्युट करता रहा धीर प्रपना समय धीर स्वास्थ्य सराव करता रहा। सनुष्य पर भी एक समय बाता है बव उसके बामने अपनी सनित क्षम्मानने का अवसर शासा है। यथानी मस्तानी बनकर बाती है जब वह चलता है तो कमे मार कर वसता है। पूछी तो कहेगा, देखते नहीं बवानी का रही है। स्टीम पदा हो रही है। समझदार न इसे सुम्भासा और लाखों सोनो को पीसे लगा विद्या । केकिन मुखं वह कहता रहा ।

> इस दिल के दुकड़े हमार हुए। कोई यहा विरा कोई वहां निरा।

क्षपनी नवानी का गांव कर नेता है, गीवकानी में ही सभवने का समय होता है बेकिय प्रार्थ का गीनवाल कीन सी ऐसी बरावी है जिसका निम्म तरु नहीं देता, जैने एक बानकार नीजवान के विद्या कर में तर तक गई वी कहा कि क्यो धपना नाम कर रहे हो। कहने नगा, पश्चित की। बापने कमा पी ही नहीं— चेका नमा नाम कर मा पी ही नहीं— चेका नमा नाम तमा कर ते हो से कहने नगा, पश्चित कर निष्ठा कर नहीं पा तरे तो ऐसान नहीं । जैने नहां पाने से क्या होता है, कहने नका यह यह यह नहीं के नहां और हाथ नी कहने नका कि हो से उत्ता हो नहीं। जैने नहां और हाथ नी कहने नका कि हो से उत्ता हो नहीं। जैने नहां कि हससे वड़कर मीर नमा वेवहुम्से होगी कि नमुम्म पैसे तम कर माने होता की हता नहीं हो से पान निर्माण कर माने होता की हता से पान हों से से पान नो तम है कि हास का मान हों से पान नाम नहीं है। हो से से पान नाम नहीं है। हो से साम हो से पान नाम नहीं रहा हो से पान नाम नहीं रहा है।

नाम सुमारी नानका पड़ी रहे दिन रात । (लकिन नानक के पुकारी साम सब से संघिक शराब पीते हैं।)

स्रियममु को बादा पढ़ी है, सब रोवे हैं। जुला का दूरा ह सा है करण स ते हैं। कहते हैं कि तुम्रत क्या कर रही हो, युम्रता गे पक्ती हैं। कहती है कि मार्ह युम्र कुमे यह कह रहे हो कि क्या कर रही हों? येरा प्रवान केटा किल गया है। मैं सभीर न होक तो क्या कर ह क्रमण कहते हैं कि सुभाग तुमार कर तु स्रिय की पुनी है सौर त्या सीच्य की पत्री मार्गा है। बो वर्म पर बीर नति को प्राप्त हुया है। बापिय का सबसे बाम कर्तम वर्ध सौर भ्याव की रक्षा के निए सर निटना है। हेरा पुन्न ता समर में गया है सौर तु रा स्त्री है। सुपन्ना को हाया था नावा है। स्वस्त्रका मेंबुरा क्यक कठका है। कह है सो

खुमारी। पुत्र साथने सरापडा है और होग कायम रखे जाते हैं। यह हानत तब श्राती है जब मनुष्य नाम का खुमारी मे राजास । ब्रह्मचारी बन । ब्रह्मचारी का मतलब है जो बहा में निवास करे धपने सत को बीय को सम्भाल कर न्छे। यह वीय **भ्र**सनी रसायन है ज्सते बढकर ग्रीर कोई रसायन नहीं। आजाती लोग भसली रसायन को सोकार फिर इस्लेक्श न लग वाने लगते हैं। मूक्तताधीर किन का कहोगे । मात्र सुन्दरता के लिए सुर्थी मौर विपस्टिक लगाय जाते हैं। होठी भीर गानी पर युक्तीं भीर काली सगायी जाता है। इस रहस्य को भुक्ता निया है कि धनली स्वयूरकी भीर लाशी होटी भीर गली पर कैसे बानी है। साझो साप को इस बात कारहस्य भी बतका वें। होठ बहुत कोमस हिस्सा होते हैं। वहा सून की मानी उमरती है। शरीर में सून हा और उसका दौराठीक हो तो होटो पर साली जुद व सुद का जाती है। शरीर म खन हो ग्वासरफ भ्यान नहीं दिया काला। नकती रव का बाह्य प्रदशन किया जाता है। मण्डा मला भारती हा कुछ देर पानी मे रहेतो लान का बीशा एक कर होठ नीले पड जाते हैं। ये सून के करिश्मे हैं, घरे घपने सत को बीवें को कायम रख कर हो देखों कितना आगन्द आता है? ववाने में तो काशिक मजा और फिर पश्चतावा सवा रहता है लेकिन इसे कावन रख कर देखी कितना झानन्द भावेगा।

य प कहेंने परिश्त भी क्यों तरसा रहे हो। इसे काश्म रचने के लिए कोई रास्ता तो बकामी। रास्ता हुन नो साथ की बहुच्यारी बनना होगा और हमेशा प्रमूकी बाद रचनी होगी, कहा जाता है कि प्रमुणवन और प्रमुणनित तो बुदाये की भीव है। बाद रची समर सापने सभी से भारत न बनाई तो बुदाये में कुछ न होगा।

सावन का महीना है। आमो का टोकरा सामने पड़ा है। बनुष्य साम पूस कर बुटबियों को एक वासी में सवा सवा कर रख रहा है। मैंने पूछा ने क्यो सजाई जा रही है 'कहने लगा जयनान की मेंट हानी। घरे मीठा रस तो खैतान के मेंट हानी। घरे मीठा रस तो खैतान के लिए। जब गरीर नाम का न रहेगा जाक भगवान की गांद करागे। बजानी केकार जो ती है। में प्रमानन हिम्म जायेगा। एक जी महान कि प्रमु अबन क्या कर दिन तो नगता नहीं, लगेगा नहें ने स्वाप जी नगता नहीं, लगेगा नहें ने सुत्र के सुत्र कर कह है। प्रामु के भी नकरत है। अपना के मान तो कर सुत्र के सुत्र कर कह है।

पहलाभक्त वह होता है जा दुश्री हो। बाप कहेने क्या हम दुली हो आयें? हा <sup>!</sup> सार कहोगे सच्छे उपदेश देने बैठे। माता पिता आवित है घर में सब कुछ है किसी चीज की कमी नहीं काने को खुब मिलताहै डड पेलन हैं। दुस्ती क्यो हो ? इस पर भी दुली हो जाबो । बपने लिए नहीं दूसरों के दुस को ग्राना दुस समग्र सो । सगर तुम्हारे पास कोई भूमा भागे तो पहला उसे विकासाधी। कोई दुवा है तो उसका दुव दूर करो । परोपकार करो। सब कुछ रसते हुए सेवा का बत बारता करो । सब से बडी ईस्वर की नक्ति यही है। किसी के काम बाकर तो देखो, कितना धानम्ब स्नाता है। दुनिया में जिल्लने दुःस भीर ऋगड हैं उनके तीन कारक हैं इनमें स एक तुम से सो। आव शिक्षाके रहस्य को लोगो ने भूका दिया है। हमारे ऋषियों ने इसे सूब समक्षा या। बो विद्यानियों को दुनिया के इन तीन प्रकार के दुस्तों को दूर करन के लिए तैवार करते थे। हुमारी वैदिक शिक्षा शुक्ते वैदय सक्ते क्षत्रिय भीर सक्ते बाह्या पदा करने के लिए होती थी, जो तीन प्रकार के दुस दूर करने के लिए तैयार किये वाते थे।

> पहलादुत्त समाव से धिताहोताहै। (तेष पृष्ठ ६ पर)

# महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

विनोद कुमार

# श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध

भागत बहुम्बरा अस्य प्राप्तला भी
है प्रीर बीर-बीर प्रतिकती भी। जा-बब बारत सल्वात को किसी सबट का मामना करना पढ़ा धजानात्मकार की मयाबढ़ धौर पहुत खुवाय में भटकता पढ़ा, विदेशी धाकाताभी के घरधाचार की पीढ़ा सहसी पढ़ी धवना भाग्यरिक हैय की घान में मुख्यना पढ़ा तभी वभी बारव मा ने गड़ी स्वतात को बन्ध विवा विसका करंग—"हुटते का दयन, वर्म का उत्थान धौर साधुमी का परिमाख, वर्म का उत्थान धौर साधुमी का परिमाख, वर्म का उत्थान धौर साधुमी का परिमाख, वर्म का उत्थान

सुष्टिका यह चिर घटल नियम है कि रात जिननी प्रथकारमय होती है, प्रभ त उत्तना ही प्रकाशमय । पराधीनना एव प्रज्ञान के जीवणान्धकार से भारतीयो के परित्राणार्वको ज्योति पुत्र व्यक्तिन्त सबत् १८८१ (१२ फरवरी १८२५ ई०) को जगदीववर ने भारत के गुजरात प्रान्त में मौरी जिने के टकारा ग्राम में करवन लाल जी जिवेदी के घर में मेबा वह स्वामी दवानन्द था । दवानन्द के बवान कानाम 'मूक्तकार चा। भारतीय पर-स्परामे शकर' या 'खिद का प्रवंहोता है--- 'कल्याएकारी । जीवन के प्रारम्य से ही इस महापुरुत का कार्य 'बहुजन-हिताय', अब्दुबनमुक्तः व हो नया। यत उनका कर्मभी नाम को सार्थक कर बया। वस्तर ने दयानन्द का जीवन भवभूति के इस न बन को सायक करता है —

> बच्चावपि कठोरास्ति मृदूषि कृतुवावपि । कोकोस्तरासां चेतासि को विकातुमहति ॥

स्वामी दयानन्द का जीवन एक ऐसी बहुप्रतिभाका बनी है, बहा बहु वेदो का प्रकाण्ड पबित है, सास्त्री का उद्गाता है, वहावह देश की निर्धनताको देखकर रो पडता है। दयानन्द के हृदय में विश्व-थान्ति के लिए ठीस रचनात्मक पुरीवम की रूप्ट प्राभा मिनती है। जैसा कि स्वामी की ने स्वय कहा है - "सर्वसस्य का प्रचार कर सब को एकमत में कराके, द्वेप चुडाकर परस्पर में बढ प्रीतियुक्त करा है, सब को सुख लाग पहुँचाने के लिए मेरा प्रवल भीर भनिप्राय है।" भपने विचारी की साकार कप देने के लिए स्वामी बवानन्द ने १८७५ में बार्यसमाज की स्थापना की । स्वामी जी का विचार er -"One God, One religion and One world 'यहा पर एक ईववर से ताल्पर्य "One distinction and One God" से है। एक वर्ग से अभिप्राय एक आवार सहिता' से है। एक विश्व का सर्व ' एक परिवार" से है।

नवमारत के स्वप्त-द्रष्टा के रूप मे महर्षि दयानस्य ने एक शताब्दी पुर्व ही एक ऐसे भव्य भारत का वित्र उपस्थित किया जो सोकतात्रिक होने के साथ-साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों से रहित था। उन्होंने युव की वारा की बढलने का प्रयत्न किया। स्वामी बी भारत को एक धादर्श देख के कप में देखना बाहते थे। उनके भारत में कुरीतियों का कोई स्थान नहीं था । सर्वत्र प्रेम, सहयोग भौर बन्ध्स्य था। स्थामी जी के मनुसार-"प्रत्येक व्यक्ति को भ्रपने गुलो के भनुसार ही कार्य करना चाहिए । ऐसा होने से देश जन्मति के प्रच पर श्रयसर होगा और देश का कासन सरसता पूर्वक चलेगा।" स्वामी जी च'हते में कि भारत विस्व के समझ एक नमुना बने, वे भारत को इस रूप का बाहते थे। जैसा कि 'विष्णु पुराण २/३ में कहा बया है -

> पायित्त देवा कित धीनकानि बन्धास्तु ते बारसभूमिमाये। स्वर्गाच्यांत्यद्वशासभूते मबत्ति वृत्व पुरुवा तुरस्वात्।। बागामि नेतत् क्य वर वितीने स्वर्गमं कर्माण देहवाचनम्। प्रास्थात्ति बन्धा सुत्र ते ममुख्या वे बारसे निरुवा विवाहीता।।

न्वामी वयानन्व का विश्वास ना कि यदि देश ने बड रही नास्ति ता, धर्मीय-कर्ता अनुष्ठालन्दिन्ता, ध्व्यनित्व स्ता धर्मीय-कर्ता अनुष्ठालन्दिन्ता, ध्व्यनित्व में पर-स्वर दंधा-देव की मानना इत्यादि बुरा-इया मारतीय सवाब से विकीत हो जायें तो भरत एक कुणहाल देश वन वकता हो अपने प्रकार की पूर्वि हेतु स्वामी जो ने धर्मक धार्मिक पुरस्के सिकी, जिनमें 'तस्यापंत्रकाधां' तब से महत्त्व पूर्ण देश द्वा में वो ने विजा पर बहुत कोर स्वामी जो कहा करते हैं — 'भूम, सब्दाने बीर आतृत्व की वावना यव तक हम मारतीयों में सिकायित नहीं होंगी तब तक हम जनति के धिकार पर नहीं पृष्ठ करते हम उन्मति के धिकार पर नहीं पृष्ठ करते हम गुन्मति के धिकार पर नहीं पृष्ठ करते हम गुन्मति के धिकार पर नहीं पृष्ठ करते हम गुन्मति के धिकार पर नहीं पृष्ठ वकते हम गुन्मति के धिकार पर नहीं पृष्ठ करते हमा ग्री प्रस्त करते हमा ग्री पृष्ठ करते हमा ग्री प्रस्तु करते हमा ग्री प्रस्त करते हमा ग्री प्रस्त करते हमा ग्री प्रस्त करते हमा ग्री प्रस्तु करते हमा ग्री प्रस्त करते हमा ग्

टबानन्य सरस्वती व्यक्ति व्यक्ति के बीच की बार्र को बेबना नही चाहते थे। उन्होंने बडी बची सामाबिक मान्यताये के बिलाफ ऐसे समा वे मानाव उन्होंने बत्तक उस समय सदस का निड्डत समु बाय त्री विकटा मान्यताओं का समर्थन करता था। बाति वर्ण व्यवस्था में भारत में ऐसी फूट का बीजारीन्स किया विश्वसे भारतवासी एक दूसरे को बिदेव की बिदेव से बेकने बने। मानव मूल्यों की कसीटी जन्म बाति गत व्यवस्था की सरहस के हटकर विश्वक्ष मामश्रीय स्तर पर ऋषि स्वानन्स की वैचारिक कानित से उमरकर सामने साथी।

भारतीय समाज ने प्रसुती के साम किए जाने नाने दुर्ज्यहार से ताबित होकर प्रसुत और दूर विवसंपुत्त होने ने ने । यह जस समस की बात है जन वर्ग के मानने ने दुर्गीकी भी तर्क एक सीजिया से स्वतन हरकर पाचरण करते ने । सामाजिक स्वतन्त्रा के इस संकीत सामें से जुल्य होकर महर्षि स्थानक ने मर्मान्तक होकर एक स्थल पर कहा ना—

"बहुव्यवहार तो झार्यों के लिए शरता व्यवस्था वन गई है। देखे इस बाकिन से इसका कब पीछा खूटता है।"

स्वामी द्यानन्द जाहि-वांति के शेव से प्रस्कत क्षु-ज थे। जाति पासि के इस स्थापात को हटाने हेतु धन्तर्जाताम विवाह का चौका देने वासा धादस्य महाँव वया नन्द ने प्राथीन मारत में कडिवत आर-तीय समाज के सामनं प्रस्थित किया। धार्यसभाज ने इस धोर कियात्मक कटम उठाया निकन प्रभी धर्मकाकृत परिणाम के लिए धौर धर्मिक कमठता से काय करन की धायन्यकता है।

दयान-द सरस्वता न सन्देश दिया कि शिक्षा मनुष्य की जीवनदायिनी है। जब तक सभी भारत के नर-नारी शिक्षित नहीं होने तब तक हुम एक जुसहास बारत का साना नहीं देख सकते हैं। बास्तव में शिक्षा ही वह गुरा है जो किसी देश या राष्ट्र को उत्थान या प्रयति की स्रोर से जाता है। स्वामा भी ने नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया। स्वामी जी से पूर्व स्त्री भीर सूदी को शिक्षानहीं दी जाती थी। इससे स्वामी जी बदुत दू सी हुए और उन्होंने स्त्रिमों भीर खुदो को खिला दिवे जाने का ग्रमियान कलाया । वहा सकराचार्य ने कल्याची को शिक्षित करने का विशेष किया, वही दूसरी मोर स्वामी वयानव्य ने स्त्री-शिक्षा का श्रमियान चनाया ।

किसी भी समाज सबना राष्ट्र के सिए नारी को साचार सिला के कर में कहा जाए तो सस्युक्ति न होती, क्वोंकि नारी <u>में केस स</u>ो. क्वोंक्ट किसान सर्क

स्क्मदर्शी नायरिक प्रदान करती है। "परिवार ही मनुष्य की प्राथमिक पाठ-शासा है।" इस कथन को पूर्व रूप से उचित मानते हुए कहा जा सकता है कि विस देश की नारी सुशिक्षित वीराञ्चना तथा स्वतम विचारों की होनी, उस वेश के नामरिक भी सुश्चितित बीर तथा स्वतन विचारी वाले होंगे जो शिक्षा बच्चो को माता से प्राप्त होती हैं तथा सस्कार स्वायी रहते हैं। वह शिक्षा । व सस्कारी का स्थायित्व किसी सन्य व्यक्ति द्वारा नही दिया जा सकता प्रकृति माता को सस्कार धपने पुत्र में लोशी के माध्यम से सकामित करती हैं। वे संस्कार भ्रन्य किसी माध्यम से सक्रमित होने पर भी स्थायित्व को ब्राप्त नहीं कर सकते। इस तथ्य की पुष्टि "मदालसा" धारूयान मे सलकादि के कथानक से सभी को हो जाती है।

स्वामी दयानन्द का विश्वास वाकि "नारी का स्वान मानव समाज मे श्रत्यविक महत्त्वपूर्ण है । यदि उसकी ग्रवस्था उन्नत न हो तो सपूर्ण मानव जाति के सबीवति में पहचने का भय है। नारी पर की साम्राज्ञी है तका घर एक व्यव्टि है। उसकी जन्मति एक समाज तथा प्रत्येक समाज की उन्नति से सपूरा देश की उन्नति सभव है। देश का शाकार रूपी नारी माता बन-कर पुरुष कानिर्माण करती हैं। उसके क्तंब्य की पूर्ति बादर्स सन्तान की वाननी बनकर सम्पूर्ण शासारिक रहस्यों को सम-क्राकर कर्मक्षेत्र ने समर्वकरने के जिए तैयार करके बाहर भेजने में निहित है। मात्-सूल विडीन बातक प्राय बाबारा, निष्कर्मण्य भीर भसपन ही बब्दिनोचर होते हैं। पश्नीके बिनापुदयकी प्रतिष्ठा नगच्य है। नारी जैसा घर का निर्माण करेगी वैसा ही सम्पूर्ण समाज का ढाचा बदल आवेगा।"

जिस देश में नारी की विज्ञा का बहु के देशवासियों है रा क्यान नहीं दिया जाता उस देश का प्रविच्य संक्तारम्य कहु। बा सकता है। दस्यवक स्वीतिष्य मुद्दुप्तिकार ने कहा, "क्षुत्र नार्यस्य 'प्रवृत्यक्ते रमने उन देशवा ।" हुमार पूर्वज विदेश कहु पर एक स्वीतिष्य स्वातिष्य में स्वातिष्य स्

बंद स्वामी द्यामन्त ने वृक्ष तथ्य पर वृक्षम विष्ट से विचार किया कि 'किसी भी देश की मनति का साधार उब देश नारियों का नितिस्त होगा है,'' दी स्वामी जी ने नारी तिक्सा का समियान चलाया। सडकियों के लिए संगेक स्मूल कोले वहे। स्वामी जी ने सपने मिस्त एव मीतिक इन्य ''स्वलायंग्रकारों ने कहा है कि— '- अन्य से पायने वर्ष देश हैं कि स्वाम के नार्या है के मालता के स्वाम के स्व में बब्बों को तावन करने क सम्बन्ध में साम्बोंबन प्रारंभ कर एक नये प्रध्याय स्वामी बी ने तावन के पक्ष में प्रपत्ने विचार का श्रीवर्शीय किया। चराते पूर्व हिस्सुधी प्रस्तुत किये धीर कहा— को लाक्ष और त्रास से ईसाई और

सामृतं पारिएमिन्नेति गुरबो म विजीवितं। सालनाश्रवित्यो वोचा-स्तावनाश्रवित्यो गुरुा ॥

प्रवाद् — ' जो माता-पिता प्रीर प्रावाद करान प्रीर मिथ्यो को साहब करते हैं वे मानो प्रपत्न कि स्वत्यपन करा रहे हैं। किन्तु जो सम्तानो तथा कि यो का साहन करते हैं वे धाने स्नानो तथा विश्वादों को विश्व पितायर कर-अध्यक्त वैहें हैं किन्तु को स्वतानो तथा कि यो का साहन करते हैं वे धाने स्नानो तथा विश्वादों को विश्व पितायर कर-अध्यक्त वैहें हैं क्योंकि साहम से स्नान व विश्व दोषयुक्त तथा ताहन से पुरा पुक्त होते

स्वामी बयानग्द का विषवाड या कि
न्यित्क को मबबूत बनाने हेतु क्या क्याक को सर्ववृद्ध स्वम्मन बनाने हेतु यह पिका मुंद्री होती चारित्र १ वे मानते वे कि सह-चिता से चारित्रिक पतन होता है। उन्होंने ग्यास्पार्वकराव्या के तातीय समुस्तावां ने कहा है— सब को का मकर्के की तथा स्वाम्य के मब्दित्यों की पाठवाला में मुंद्र में एक इस से कम से कम से होता सावार्य एक इस से सम से कम से होता तक कहा है कि—

< स्त्रीणा प्रेमकालस्ममुख्यात वरस्य च।'

सात स्वामी भी की लिट में विका-काल में नारी को स्थान और तरप्या की मूर्ति बनकर ही मिखा बहुव का सहिए तमें कह एकार्याचल से आनार्यक कर सकते हैं और तदनन्दर प्रहस्ताचन में प्रवेश करके समाल कर राष्ट्र के लिए सुरोबर सन्तान प्रवान कर सकती है। सकते में स्वामी की सिक्सा के मान्यम के हैंग को गढ़ बरिस्स सम्मान चर्मी कर्तवाँ एव साविस्कों के प्रति बागक्यन गारी के के मोजना परस्तुक करते हैं। क्षीसूर्ध मानीवातामिति उत्तित को समागिएक विद्व करते हुए यजुर्बर तथा स्वक्वें के मोना परते हुए यजुर्बर तथा स्वक्वें के मोना परते हुए यजुर्बर तथा स्वक्वें के

'यनेनां वाच करवासी-प्रावशित करेग्य । बहुर (करवास्त्रां जुड़ाय चार्याय च स्वाय चारताय ॥ बहुर्यस्य करवा युवाल किन्द्रते पतिन् ।

वमं के लेन वे भी स्वाबी जो एक महान जातिकारी के कर ने स्वविद्वार हुए। वातिकारी वे परतज्ञता का बोक बहन करते हुए बारतीय वसता वर्ष का बारतावक कर विस्मृत कर बैठी थी। वर्ष के नाम पर बहरूब धन्यविद्वार प्रचिति ने धीर पायक के नो बालानी ने वर्ष के स्वादित स्वकृत के जब कीट के बोक्स स्वस्तुविक स्वकृत जो जब कीट के बोक्स सान्वोबन प्रारंश कर एक नये प्रध्याय का बीयहोंचा किया। वसके पूर्व हिल्हुयो को लासन और नात के हिल्हुयो मुस्तिय बनावा जा रहा वा। हिल्हु पाने तथ वादरे ने वद किसी भी प्रमा वर्षान-सन्यों को स्वकृष्ट में विश्वाहरों प्रीर मुक्तवानों के हिल्हु वर्ष में प्रवेश के लिए प्रोरकाहित कर विवेशी वीच्यो का सरीकार किया।

स्वामी जी ने जनसावारण को छन्देख दिया कि इस तब मारतवाडी मार्ड-मार्ड है। इसे प्रपने बीच से ईप्जों देख को निकास देना चाहिए। उन्ह्रीन "बसुवैन कुटुन्तकम्" की उपित को साकार रूप देने के लिए कहा। 'हैं' के स्थान पर 'हम' की मानना पर जोर दिया। प्रत्येक व्यक्ति से परोपकार और त्थान की जानना होनी चाहिए। स्थानी स्थानन के शब्दों में —

'प्रत्येक को धपनी ही उत्स्वित्ते वन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सन की धन्मिन ने कपनी उत्मति समस्त्री चाहिए।' उहाने अपने कहा—'खन मरुक्यों को सामाजिक वर्षहित्यक्ती नियम पालने प्रत्य रहेता चाहिए और प्रत्येक हित-कारी नियम में वह स्वतःन्य हो।'

सदा से ही शिवा का प्रयोजन रहा है 'धारवा विदि अवर्गित अपने को वानो । शिवा का गुन्य उहे' यहे - 'धीकन में उच्चमन सस्कारी का धारोपन ।' शिका का मुख्य प्रयोजन मानद को पख्ता के सदर से उपर उठाकर सस्कारी और का निर्माण करना है। द्वारा निर्माण की बुदता के लिए हो होगी चाहिए। केवल मोगो की समुद्धि या केदल उदर पोदण हेतु यशक्योकन होने से शिवा की सावकता नहीं हैं। राज्यु वस हुदय खुद धार निमस हो, तभी जीवनोहरण की गृति होती है। वेद कहते हैं—

तप से ही देवताओं ने मृत्यु पर विजय पाई। हमारी शिका प्रणाली वे धाने वाले कब्ट को सहन करना ही सप है तथा इसी तप से शिष्य शारीरिक मानसिक तथा प्रात्मिक विश्व के प्रव पर श्रप्रसर होता है। महर्षि दयानन्द क अनु सार शिक्षा का उद्देश्य ' सारीरिक मान सक तथा बारिमक शक्तियों का विकसित किया जाना है। ' वे शिक्षा को राज्य का कराज्य मानते हैं। स्थामी की के क्यूबार शिका प्यति में केवन बाध्यारिमकता का सक्य ही नहीं है बुरन् सीकिक विश्वामी (विज्ञान कवा सवा कीवाल) में निष्यात प्रवीवसा प्राप्त किये बाने का निर्देश भी है। स्वामी भी का मत है कि शिक्षा सर्वप्रथम स्ववैत्री बावा में ही वी वानी चाहिए।

स्थामी बवानन्त ने विविध्वाभी से पूर्ण इस देश में एक राष्ट्र, एक माना, एक समाज तथा एक देग्बर का देश विद्वत बचाना, विससे भारतीय समाज हो बडा। एक ईस्वर को मानने वाले सार्वमात्रक की हार्वमीनिक विकारकार में भारतीय समान की ऐसी विकारकार में में स्वाद कर की हार्वमीनिक विकारकार में में सार्वमात्रकार प्रभाव की स्वाद कर किया हो में सार्वमात्रक के मीचर दिना कियी में सार्वमात्रक के मान्यारिक स्वय का शास्त्रत की कराने वार्व महिला कर की मान्यारिक स्वय का शास्त्रत की कराने वार्व महिला स्वय का शास्त्रत की कराने वार्व महिला सही कप में भीवन के मान्यार्थ के हारा सही कप में भीवन के मान्यार्थ के हारा सही कप में भीवन के मान्यार्थ का सिमो सम्बाद स्वय का सार्वमात्रकार की सार्वमात्रकार सार

स्वामी दयानन्द ने यह भी बताया कि रावा पननी, स्वतास्त्र कीन व्यक्ति होने व्यक्तिए। इस पर भी प्रकार हाता है। स्वामी बी के सनुसा "राजा को निव्यक्त व्यावकर्ता राजकार में निवृत्य सरवारी, बुढिसान्, यमें पर भीर काम की सिद्धि करने बाला तनोमय नीतियास्त्र के सनुष्ठार सातन बनान वाला होना चाहिए।

मत्री ने निम्न गुण होते चाहिए— 'मौलान काल्मबिब सुरोत्सव्यवस्थान कुलोदयदान। सबिबान्सव्य बाब्दी वा प्रकृषील परीक्षितान्॥

सर्थात् स्वदेश में उत्पत्न, देदों को बानने वाला, शूरऔर, विश्वका लक्ष्य निष्कल न हां कुलीन सच्छे प्रकार सुप-रीक्षित सात वा झाठ, वासिक, बतुर सचिव या मजी हो।

नौकर के गुण — तेवामयाँ नियुक्त्वीत श्रूदान् दकान् कुलोदगतान् । श्रुपीन् करकम्याँनते भीदनन्तनिवेदाने ॥' दूत के गुण-—

"दूत चेव प्रकुर्णतः सर्वशास्त्रविशास्त्रवृ । इतिताबास्त्रविशास्त्रवृ । बजुरून सुविद्यंत्र स्कृतिस्त्रव्येशकालिय् । बजुरून स्वीतस्त्रविद्यं। वृषु-। बीतस्रीर्थाण्यो दूतो सङ्ग प्रजन्मते।' स्रामार्थिक गुरा —

आपनि के गुरा —

'तै सार्व विश्वस्योत्नस्य
सामान्य समिविश्वहम् ।
स्वान समुदय पुष्ति
सम्बद्धसम्मानित्य ॥'

तत्त्वचार् स्वामं दवानक ने यह वी बतावा कि उनके स्वर्धिय बारत्व में राखा ब्राम्य क्ष्मास्त्व, दूस वार्ध में कावा मिं-कार हेने चाहिए। त्रावा को वर्षवा राख-कार्य ने वालग रहुगा चाहिए और उन्हे रावकण्यं को विवादने नहीं तेमा चाहिए। रावकण्यं को विवादने नहीं तेमा चाहिए। स्वाबा को प्रवाद करवा सन्तानवन्

> ग्रमात्य के प्रचिकार---"ग्रमात्ये वण्ड ग्रामलो

नृपती कोक्षराष्ट्रे च बूते सम्बिषयर्थयो ।। दूत के प्रधिकार— ''दूत एव हि सम्बस्ते विजल्पेव च सहरान्। बूतस्तत्कुष्ते कर्म

मिस्नस्ते मेन वान वा।। राज्य कर के सम्बन्ध मे स्वामी जी ने सिसाहु—-

' ययात्रपाऽत्यमवात्याच वार्वीकोवस्सवट्यवा । सथाऽत्याऽत्यो ग्रहीसच्यो राष्ट्रावाज्ञाचिक कर ॥"

इसके साथ-साथ स्वामी जी ने यह श्री बताया कि देश का शासन क्लिप्त प्रकार का होना चाहिए। इस सम्बन्ध मे स्वामी दयानस्य ने यह कहा है कि—

"धानस्याधियाँत कृष्याँ-हराधानयति तथा । विद्यातीय ततेत्र सं तहलपतिसेष च ॥ धानसेधातस्युत्त्यनाम् धानस्य धानस्य स्वत्य । कतेषु धानस्यक्षात्र्य यशेको विद्यातीतित्रम् ॥ विद्यातीयात्रम् तत्वस्य तेत्राय निवेषयेत् । वातेत् धानसात्रस्य ततेशाय निवेषयेत् ।

तेवा प्रान्यात्ति कार्यात्ति पुण्यकार्वात्ति र्थंच हि। गातोऽप्य समिष निगायस्तानि पत्येवतनित्रतः ॥ नयरे नगरे र्यंक कुर्यारः योजिक्तकम् ॥ उच्चे स्थान चोरक्य नकारात्तामिण बहुद्य॥

प्रका से कर लेने का प्रकार —
'यञ्चासवमाग धावेगी
राज्ञा पशुहिरच्यागे ।
जान्यानामध्यमी माग बच्छो हावस एव वा ॥

स्वामी दयानन्द ने देश के कमचा-रियो की चुनाव पदित का भी तरीका बताया है। राजा बनने का जून बाचार श्रजाका प्रिय होना है। राजाके पद पर सर्वेव अत्रिय रूप के व्यक्ति को ही चयन किया जाना चाहिए। बाह्यम वैश्य ग्रीर शूद्र राज्य में प्रपने गुएों के धहुबार जन्म कार्य कर सकते हैं। राजा किया का प्रत्याकी होने के लिए धावश्यक है कि वह उस राज्य का निवासी होना चाहिए। राजा का जुनाव या तो देश की सम्पूर्ण जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होना चाहिए। (भगवा) कुछ महत्त्वपूर्ण न्यक्तियो के द्वारा राजा का चुनाव किया जाना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ स्थान पर चुने जाने पर सम्बग्ध्य होने पर भी वह वनता का प्रवम सेवक है जनता की सेवा पर क्षी उसकी स्विति निर्मर है। वह प्रजाकी इच्छामी के पीक्के चलने वासाहै। प्रजाकी इच्छा के विपरीत उसकी कोई इन्छा नहीं, प्रवा व्यासपीठ---

### उपनिषत् कथा-माला-४

# सच्ची पूजा

## प्रवचनकर्ता-चीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

(गताक से आगे)

सहस्रो मीलो तक भन्धकार **छा जाता** है। यह किसकी माया है? फिर कौन इस धन्धेरे को दूर कर देता है <sup>?</sup> रात को हम सब सोये हुए है बेसुच पड हए हैं सोते हुए सब का दर्जा बराबर है। क्या घनी क्या निधंन ? सब एक ही समान हैं। यह किसकी महिमा है जो जीबीस वण्टे मे एक बार सबको समान कर देती है ? यह क्लोरोफाम किसने सुवाया या<sup>?</sup> यह किस चतुर डाक्टर का काम है? जब कोई सामारण डाक्टर क्लोरोफार्म सुधाता है क्षी उसकी खुमारी का प्रभाव तीन दिन तक रहता है किन्तु इसका प्रभाव ऐसा नहीं। बाप सोकर उठते ही बारने बापको प्रफुल्मित पाते हैं। यदि छोकर न उठें तो मरने भीर सोने में भातर ही क्या है? परन्तु बाव पाप बाधिक हो रह हैं अविष्य मे एसा हा होना झाप मोयने पर तु उठ न

मृत्युनि सन्दह है परन्तुज्वर होना भावस्थक नहीं । झाप तनिक देखें तो सही । महाराज रामनस्द जे हुए है। बनवास से श्रीताजाबीरलक्सणा उनके साथ थे। चौटह वर्ष बनो मे रहे। सारी रामायण पढ जाडए कही एक स्थान पर भी यह नहीं मिलता कि अमुक स्वान पर भी राम इस्रसिए ठहरे कि उन्हेज्बर बाग्याया श्रमवारागने द्यादवामा वा। पाण्डव भी बारह वर्ष तक बनो में मटकते रहे। सब काम भनेक कष्ट उठाकर किये। सारा महाभारत पढ बाधो पश्न्यु यह कही नहीं मिलेवाकि प्रमुकस्थान पर मीयेन को पेचिश हो नई वी इसलिए उन्हें वहा ठह-रनापडा। कभी वन में किसी मीदड भेडिये, बजुली गाय भावि को भी बीमार होते सुना है ? क्या बन में कही बनैले पक्षमें के लिए बरकारी इस्पतान चुले है ? कही नहीं। चक्क्की जानवर उस समय तक मही लाते जब तक उनका पेट न मामे । वे प्रकृति के घषीन होकर रहते है। परम्तु तुम नो क्या, तुम्हारे जानवर गाय, मैंस घोड भावि भी बीमार हो बाते है। क्योंकि उनका मनुष्य के साथ सम्बन्ध हो बया है। प्राप भी श्रनियमिल हो अये धौर उन्हें भी भनियमित बना दिया।

प्रकृतिने मनुष्य को रोबी होने के लिए नही बनाया । प्रकृति ने पहले अस्य <sub>वा</sub>नु बनाये । पसु, कृकावि सब पहने बनाए

धौर सब से पीछे मनुष्य को बनाया। प्रकृतिका परीक्षण मनुष्य पर जाकर समाप्त हो गया। मनुष्य को प्रकृति ने बद्धा सुन्दर वनाया यह बद्धा ही रूपवान बनाया। दूर दूर से चनकर इसके पास बाते थे। तपोवन में महात्मा रहते वे, धानन्द करते ये पास ही हिरए। का बच्चा निर्भंग होकर पानी पीतायाः। प्रकृति ने मनुष्य को प्यास बुम्हाने के लिए जस और भूख मिटाने के लिए चावण गेहू सादि बनस्पति प्रदान की । श्वास लेने के लिए पक्त नेजी। अवर को तो प्रकृति ने नहीं नेजा। ज्वर को तो तुम स्वय बनाते हो । प्रकृति ने न कूनैन बनाई न ज्वर ।

बाजकस स्त्रियो का स्वास्त्य प्राय विगडा रहता है। पहली स्त्रियों को जिन्होंने देखा है, वे बानते हैं कि पचास साठ वर्षकी झाबुने भी वे कितने काम करती वीं।परन्तु ग्राजकल की जवान त्रिया तनिक साकाम किया नहीं वस बीमार हो **वर्ष**। एक स्त्री भी शाह्बरे <del>वे</del> ञाहबहापुर का रही थी। गाडी पर सवार थी। स्टेशन पर गूबरो के सडकों ने देखा। उनका काम वाकि वाडी में भूसकर यात्रियों को लूट लेते थे। उस गाडी में वह सकेली बैठी हुई बी। एक लडका उसमे चढने लगा। उसने कहा पी**ले ह**ट जा। वहन हटा भीर सामे भा गया। पिर उसने कहा, 'उत्तर जा । वह न उतरा। उस स्त्री न पक्डकर उसे वाडी में बीच लिया और दो वप्पड मगाये। ध्यमने स्टेशन पर उसे पुलिस के हवाले कर दिवा और साथ ही यह जी कडू दिया कि मैंने इसे पर्याप्त वण्ड दे दिया है। शब इस श्लोक को ।

बात तो वह है। माता सण्ली होची तो सन्तान मी मण्डी होगी। उसे कोई भी महर्षि के सपनो का भारत " है।' बीमारी न होगी। वह क्यों हुचा <sup>9</sup> क्या सब मुख मूख से हो क्या है ? नहीं। बंदि धाप उन पहली वालों को फिर जाना बाहते हैं तो पहले मानश्चिक स्वास्थ्य वा मन की तन्द्रवस्ती मानी चाडिए। बनुव्यों को नाहिए कि बुरी वार्तों का चिन्तव न करें। गवयुवक निरव बुरी-बुरी किन्ता करते हैं। राज्यकमा (तपेदिक) के रोब बम बाते हैं। ये नयों दिन रात विश्ता मे क्से रहते हैं <sup>?</sup> नियमपूर्वक न **काते हैं**, न पीते हैं। ईश्वर की छपासना जी खोड़ बेखे हैं। फिर रोगी न हों थी क्या हों है

चिन्ता भीर जिला ने बहुत कम अक्षर

है। परम्तु चिन्ता बडी ही कठोर है। चितातो वय मनुष्य मर जाता है तभी उसको बलाती है परम्तु विन्ता की अग्नि जीते जी ही जला देती है। इसलिए द्यात्मिक क्ल उत्पन्न करने के लिए मान-सिक शक्ति प्राप्त करने की सावस्थकता है बौर सिवाय परमात्मा की उपासना के किसी दूसरे उपाय से वह शक्ति प्रप्त नहीं हो सकती। प्रातः कास उठकर स्नान बादि से निक्टकर प्रशुका व्यान करो<sup>ा</sup> 'प्रमी तुम्हारी माया धवरम्रार है। श्रान्थकार को दूर करने के निए सूब के द्वारा प्रकाण किया । बस तुमसे इन तुम्हे ह्यो मायले हैं। यह नहीं कि उपासना के सिए बैठे भीर मागने सने बन, दौसत पुत्र भादि । इन सूर्वे विचारों को अपने यन मे स्थान न दो । यह तो वह झाप ही देना। उसकी उपासना करो भीर उससे उसी की मॉंको। उससे माको कि हे प्रको <sup>।</sup> सूने बस दो जिससे मैं जनहित ने काम कर । तुम्हारे वियोग से हम दूस पाते हैं। तुम्हारे समोग ने हम मोक्षाद को प्राप्त करते हैं। धतएव ऐसी कृपा करी कि तुम से हमारा वियोग कभी न हो।

मन्दिरों में पश्चिमास बजते हैं बलियां जनती हैं, क्या साथ ? दूसरो न इन विवयामाँ धौर विश्वयो से कितने काम लिये ? स्टैमनो पर जले जाकी गाबी जन वक्तेगी तत वडियास - वेया । अन्वेरै से इञ्चन हु। इवर को बसी दिखाई जाएवी कि बसो। दुनिया तो मेरे माई <sup>;</sup> इस प्रकार बृद्धि से काम करती है। परल्यु तुम बुद्धि को तिसांजसि दे बैठे हो।

ज्ञानस्वकम परमारमा एक है। एक के सामने मुकने से मनुष्य समाज में एकता

बादी है। वैसा किया वैश्वा फल पाया है हमें कोई नहीं सताता, मनुष्य घपनी इंद्रिसे सपने आप ही सताया जाता है। एक ममुख्य या उसके घर के शामने एक बानव था। ब्रांगन में उसकी दुवन्ती निर गई। वहाँ प्रत्येरा वा, कुछ दिसाई नहीं दिया । बाहर सडक पर लासटेन जब रही वी वहांबाकर दूँदने समा। किसी ने पुछा ' भाई क्या ढंढते हो ?' उत्तर विया "द्वन्नी निर गई है। 'फिर पूछा, कहा गिरी थी ?' वह बोसा, पर के प्रावन में। उसने कहा तो वहां बाकर बुढो। 'इसने उत्तर दिया, 'वहाँ सी अन्वेरा है वहा नहीं निस सकती । इसी-तो मैं प्रकाश से बुढ रहा ह। 'तुम औ ऐसे ही मूने हुए हो। पहले सपन मन से इस मूल को निकालो और अपने दिल में दूसरों के लिए दर्व पैदा करी फिर सक कुछ हो जायेगा।

-वामी दयानन्द जी एक बार क**लवास** गए। वहाप्राय जहा ठहरे वे रात के १२ वजे उठकर व्ह्नाने सगे। एक ब्रह्म वारी ने पूछा स्वामी जी बाप एसा क्यों 🌭 रहे हैं ? 'स्कामी ने कहा 'दर्द हैं'। आहा-कारी बोला पानी में नशक डाल देता हु. पी सीजिय दद प्रच्छा हो जायेगा । स्वामी जीने कहा यह वर्ष इस प्रकार दूर होने वासानहीं। मेरे तो विस वें वर्ड हो रहा है।' सतएव मेरे भाइयो ! बुनिया सी रही है। जानी का काम तो यह है-

> सामने ग्रपने तस्सन्वर से समकाता है तुने दूरवीं नजदीक दिखलाती है इन्सादूर का।।

जब तक मेरे माई । आर्थजाति प्रमु को सच्ची पूजाको सूने हुए है जब तक बह सौटकर फिर पण्मेरवर के पास नहीं जाती तब तक इसकी बही दुर्गेति रहेगी। इसिक्ए सबेरे उठी भीर उसके सामने हाव बोडकर प्राथमा, उपाक्षमा करों। बवि तुम्हारे विस में वर्ष पैदा हो जाये और एक परमेश्वर को मानकर उसके आने बिर मुका दो तो तुम्हारा तर प्रकृ दे क्ल्बास हो बाय । परमास्मा तुम्हें सुमति प्रदान करें।

(पृष्ठ ७ का क्षेप)

के सुख के व्यक्तिरिक्त राजा का कोई सन्ध सूच नहीं । स्थामी जी का वत्त है कि राजा को कत्री ती स्वत्रत नहीं सहने देना चाहिए। "शतपव ब्रह्मण" में कहा बमा

'वर्षि राजा तथा से स्वतम होना वी बत प्रचा को नष्ट कर बेगा, क्वोंकि सप्रति-बन्चित राजा प्रचा का नाशक होता है। बत किसी एक को राज्य में स्वतम नही रक्षा काहिए। वैदे बांसाहारी पक् किसी कुट वस् को सा वाते हैं। उसी प्रकार स्वतन रावा की प्रवा को बा बासा

उपर्वक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्वामी दयानम्य के सपनों के भारत में नोकतांत्रिक शासन प्रसासी की स्वापना की नई है। उसमें एक जावा एक वर्ष तथा एक राष्ट्र है । बहुत्व के स्थान पर एकाव है। स्वाजी जी के भारत में कडियों कृरीतियों तथा अन्यविश्वासों का कोई स्वान नहीं है । सर्वत्र प्रेम, सहयोग एकता -और आतृत्व का वातप्रवरण है। परस्पर इंब्या-हेव नहीं है। स्वामी जी के भारत में सबकी जन्मति में ही प्रचनी कन्मति है। स्वाती की घारत को पूर्ण रामशक्त बनाना चानुते हैं। उनका भारत नाववता-पूर्व द्वार सीहार्वपूर्व वर ।

## गोहाटी (श्रसम) श्रार्य वीर दल प्रशिच्या शिविर सानन्द सम्पन

म्रायं त्रीरो, शहोदो प्रौर महींष दयानन्द को कर्मक्षेत्र मे बीरता म्रोर सेवा भाव जगाकर श्रद्धांचलि मर्पित करो -श्री हस टेलोबिकन से मार्थ बोरो के मुनेक स्मायानो की स्रवि

टलावजन स ग्राय बारा क भनक व्यायामा का सारे ग्रसम में दिलाई जाएगी

बोहाटी, १८ बर्ग्स । धार्यसमाज बोहाटी के तस्वावधान धीर घरम धार्य व्यतिनिधि समा के सरक्षण में सार्वदेशिक भागे की र दल को हाटी प्रशिक्षण कि<sup>र्</sup>वर १ द अप्रैस से २ द अप्रैस नक ससमारोह सम्मल हुमा। शिविराध्यक्ष का उत्तर शाबित्व श्री प० शलवित्राक्ष र हस प्रधान-स्वासक आयं बीर दल नई दिल्ली ने 'किया और दीक्षान्त भाषण जो विशिष्ट व्यतिथि के रूप में उन्होंने किया। समारोह की श्रद्धाशता एक मू० पू० एम० पी० ने की । ज्यायाम प्रशिक्षण का उत्तरवायित्व श्री इ ० सस्यवत सस्यम् गुरुकुल विसीड राजस्वान ने सम्भाता । कन्यामी के निश्वर का सरक्षण-सुधी म**बु** स्मृति । चित्र ने किया।

श्री इस ने ध"ने घोजस्वी दीक्षान्त श्राद्रण में ग्राम बीशे का ग्रावाहन करते हए उन्हें कम क्षेत्र में उतरने की सलाह बी जिससे युका सक्ति वरित्रोपासक बने। मेरी इ घट में महर्ति दवानन्द भीर देश के सहीदो को यहा सच्ची श्रद्धावनि होगी। द्यापने द्यामे वहा झाप भौरवपूर्ण इति-द्वास का निर्माण कर रहे हैं पूर्व से पश्चिम धीर उत्तर से दक्षिण तक भारत के अप्ये चय्ये पर बार को उत्तरवा येल्य सम्मामना है। ममबान राम ने दोनी भुवा उठाकर कहाबा निश्चिषर होन करौँ नहीं तो बाप बन्ही राम के दश ब होने के नाते उत्तरदायित्व सम्भाने । घसप प्रान्त, हिमालय बह्य पुत्र ने अपने घाचल मे किविरायोजन किय है। डा० नारायण शस घो३म्प्रकाश मानन्ट एव भी सवय कुमार जी के नाथ साद उनके परम सह-योगी व्यक्तियान सार्थ (दानती) की घरण भी का अपूर्व सहयोव हम मे आत्मीबता का सुजन कर रहा है। मैं बाचा कर सकता हूं कि बाद बीर बल बार्यसमाज के सरकारण में सारे बस्तम ने व्यपनी महत्त्वपूर्ण मूनिका का निर्वाह कर सकेता।

सम्पास पर से गारायु करते हुए विद्वाल पूर पूर एमर पीर ने कहा — सार्यंडमान के महाल ने सकी सदेव मानवीचित स्पाद्वार प्रोट करकारों को स्वतंत्र स्पादा प्रेयं पूर्ण पूमिका का निर्वाह किया है। मैं भार स्पायों का सामारी हु कि सापने मुक्ते पुराशनित के मध्य में नुसाकर उत्तम मिलक हुँग प्रशिक्त का स्पाद उत्तम मिलक हुँग प्रशिक्त प्रतिकृत स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र के स्वाहत्त्र स्वाहत्य स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्य स्वाहत्त्र स्वाहत्त्र स्वाहत्य स्व

ध में वीरों के प्रविक्षण काल में बीखे का मार्गों का दुवसाड़ी प्रवर्ग जुम हुई किनी के बान कराहा गया। ससस बरकार के टैलीबीजन विजाग ने ब्यासास के मिल्ल फिल्ल कीवानों की फिल्म ली जो खायाहिक कार्यक्रमों में समस्त सबस में दिखाई नार्यों।

श्री हुल की या यं नीर दल के वीरव पूर्ण इतिहास के सदयें में एक बातों देशी-तिवन वालों ने ली । सक्ष्में ये ध्रा बातों देशी-एक सार्य जीरावनाओं के क्षेत्रस पूर्ण सम्बाधका और व्यायाम प्रवचनों का सर्वेद्याकारण र न्यापत प्रवच यहा। सार्य प्रतिनित्ति खना के प्रवान के निक् प्रवान तवानक नो से प्रपुरोध किया और स्थायात तिजक को सत्ववन सत्यन् तित्त सेत्यी की प्रवचानाओं के साथ वस्थीन-हार से धाप लोगों का मा मीना त्वायत किया। अपूर्मत

संबाददाता

# नई शिक्षा नीति के संबंध में विद्वानों का सर्वसम्भत सुमार

सार्वदेरिक दायं प्रतिनिधि सना के तत्त्वावचान में निर्मित विकासमिति की वैठक केन्द्र की नई विकासीति के सम्बन्ध में सुम्बंदिशिक सभा के प्रचान की राम-नेपाल सालवाने की सम्बन्धता में सम्बन्ध हुई।

विज्ञा समिति ने विज्ञा पदिव में सरहत को महत्वपूर्ण स्वान हो, नैति क शिक्षा बीर राष्ट्रपत्ति को मोरवाहन में का सुकार वर्षक्रमति से स्वोकार किया है। विद्यानों की समिति में यह निरमन किया है कि बीज्ञ ही विज्ञा समिति द्वारा 'निर्वारित सुकाही की पूरी कररेका में सम्ब विक्रह हुनकी भी पूरी कररेका में सम्ब विक्रह हुनकी भी पीत है नियमर 'क्र', के ने देखें

उनसे विवार विवर्श क्या जाये।

विज्ञा समिति ने बनेमान विज्ञा पद्मति के परिवर्तन के सम्बन्ध में सुमान दिया है कि दखनी कामा तक विश्वास कार्यन के स्ववर्तन समझक का विश्वस समितार्थ हो तथा ११वी से उत्पर बार-हवी तक पाठ्यक्षम ने एक नारतीय काथा का प्रध्यकन कराजा जाने हड़की स्ववस्था के सिंह्य सरकार ऐसी नोम्यता नाले प्रध्य-का ही नीत्रास्त करे।

> त्रवार विशास वार्वदेशिक समा, विस्ती

# एक अनूठा और अनुकरणीय सत्प्रयास । रचनात्मक पद्धति मे

महर्षि दयानन्द बलिदान राताब्दी वैदिक मिशनरी निर्माण योजना के कम मे

१ ग्रायंवोर दन प्रशिक्षण शिविर—

सह निविद समायोजन रि० २६ मई से ६ बुन तक लोस्ताह मानाया जा रहा है। इसमें सामान्यक कभी प्रतीप मुख्यक उत्तर उबेश, हरियाचा एवं राज-स्थान के ऐसे ही निष्ठावा / धार्यवीर मान की की प्रशिक्ता प्राप्त करके समय वैसे तथा धार्यक नि

शिविरासी २४ मई की साम लक्त वेदसस्टिर मधुरा पनेंदें। प्रवेशपत की पूर्ति करें बा प्रावेदन पत्र दें। प्रमुखासन का पासन सावस्पक है। शिविर खुस्क मही है। सभी श्रद्धानुसार दान देकर स्थय पूर्ति करें।

इस तिविर वे सार्वदेशिक पायतीर इस के प्रसान समाजक भी ०० शासिया-कर जी 'इस सहायक समाजक भी ०० देवतर भी धामार्ग, भी राजसिंह धार्म, भी सुरेन्द्र धार्म भी भनित सार्म धादि उच्चक्ती' के तेत एव सिक्षक जाय के रहे हैं। ति वेर का खात्वन था जय नाराजक भी साथ करेंरे।

### २ ग्रायं कार्यकर्त्ता-कार्यकर्ती प्रशिक्षण शिविर--

रचनात्मक पद्धिय में महर्षि वधानन्य शिवाना वाराव्यों के मन्दर्भ में सह एक प्रस् महत्त्रपूर्ण विनिद्ध है। निवसे सम्पूर्ण वीवन तानी घरना धारिक समय दानी प्रचना प्रतिदित्त धार्यवस्था के कार्य के लिए कुछ समय निरिचत रूप में योजना-बद्ध रूप में देने वाले भाग केंद्र। यह चिमित्र की उपर्युक्त तिथियों में उपर्युक्त स्वान पर हीं हो रहा है। सा॰ पुरोशक्त स्वान पर हीं हो रहा है। सा॰ पुरोशक्त सरवानी, सा॰ अवानीसाल की भारतीय

भादि उच्चकोटि के विद्वान् प्रशिक्षस्य हैंके।

अभ्य एव विराट् समारोह
७ से ६ जन-

उक्त विविधो में महर्षि दयानन्द बसिदान शताब्दी के साथ ही विरवानन्द वैदिक सामनाश्रम की रजत जयन्ती धार्योप प्रतिनिधि सभा मधुराका स्वर्णं जयन्ती भी सम्पन्न हो रहा है। वि० ६ जनको अद्धादिवस दि॰ द जन को सक्त्य दिवस तथा दि॰ १ जुन को बसि-वान विवस का बायोबन होगा । वेदमदिर (वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र) के भवत का उद्वाटन होया । झार्य युवा जानरण बम्मलन, बार्य महिना जायरस सम्मेनन, ब्राय किसान सम्मेलन, हिन्द संबठन, सब्बि सम्मेलन त्या बलिदान सम्मेलन (श्रदा-जिल समारोह) एव कवि सम्मेनन तवा बेद एव वैदिक साहित्य सनोष्ठी, वैदिक परिवार सगोव्डी बादि सगोव्डया होगी। विद्वय प्रशितन्दन एव विनदानी वीरों का समिनन्दन एव पुरस्कार वितरस भी होगा । घनेकों सत.विद्वान तथा उच्च स्त-रीय राजनयिक भाग ने रहे हैं।

समारोह के संयोजक धावायें प्रेमिश्रक्त स्वी ने हु युन से हु या अनुन प्राठ तक प्रवाना बर्गाह की प्रेरचा की है। यह सुर्वे प्रायोजन बात प्रवार को धावार बनाकर किया वा रहा है। इस बन्हे समारोह को तन मन बन से सफल बनाने के स्वार की स्वार प्रारक्ति हैं।

के तिए बनी सावर बानमित है।
विनीत
बनवेद (प्रचान) सुरेशचन्त्र बार्थ (सर्वा)
समारोह स्थल-वेदमदिर
बृत्दावन मार्ग मधुरा
(वेसेसीकी गर्द्ध कांक्र के बानके.

### जवानी न गंवाना (ग्रब्ध का क्षेत्र)

हेवा का काम है कि नह वस्तुओं का निवास करें बीर तह नोशों को दे ते किन आव का देवा तो अनेन मार्किटियों का हो बहुत है। को अपना स्टाक पर सेता हैं बस्तुत् वावक हो जाती हैं, न निमें तो तक बुक्ती। अवस्थेत अपने क्यों पर कायम है तो अनेक मार्कीट पीर क्यान मार्थिया।

दूसरा दुआ का कारता अत्याव है।
कुछ गुण्डे उठते हैं और दूसरों की वस्तु श्लीत कर वरने बाल तेते हैं। शांत्रक का काल है ऐसे लोगों से समाम को बनाये। कोई चोर न हो। तेते हैं। किसी पर समाम करे, यह मुखी हो चारों। इस कान के विष्यु सामिस हैसार किसे खाते वे जो त्याव डी ०ए० नी० हार्सस्त्रम के साथ)
को कायम रखने के लिए प्रत लेते वे और
बन्याय को सिटाने के लिए जान पर भी
वेस बाते वे '

तीसरा दुख व्यविधा की नवह है होता है। विश्वा की वक्षण को हुर करते का काम बाह्म करता था। खारा बहार सुबी था। इन तीम प्रकार के दुनिया के दुखीं को दूर करने के बिर् ही खिखा दी वासी थी और यही प्रमु-पर हैवा और परोपकार भी विश्वा क्यतिक तरता है वहीं प्रभु-करते है।

ऐसा ब्रह्मचारी ब्रह्म ने विवरता है स्रीर मृत्युज्य हो बाता है। नौजवानो तुनिवा पर और सपने साप पर विजय गानी है तो ब्रह्मचये जत को बारण करो। प्रभुन्त गन और क्षेत्र का बन को ससार सुन्हें तर वर स्टायेगा।

# समाचार-सन्देश

## देश में गो हत्या कब तक चलेगी

मधेओं के शासनकास से देश में बऊ हत्या चल रही है। गऊ हत्या बद करने के बारे में कई प्रयत्न किए गए। परत वक हत्या बन्द होने मे नहीं बाती हालांकि गऊ हत्या से देश को वित्तीय नुक्सान वहन हो रहा है। परन्तु इस झोर बिल्क्न ध्यान नहीं दिया जाता। जब धग्रजो के समय मे बऊ हत्या होती थी तो लागो की बाम विचार घारा बी, विशेष कर भारतीय नेतामो का कि गर हत्या बद होनी चाहिए। लोगो का विचार या कि प्रश्लेओ का शासन समाप्त होते ही गऊ हत्या बद हो जाएकी । हालांकि जिल लोगों ने यह कहा या कि माजादा के मिलते ही पहली कसम से गऊ हत्या बन्द कर दा जाएगी। वब उन नोगो का शासन ग्राया तो उन्होंने इस मोर कोई व्यान नही दिया और गऊ हत्या होती रही। इस विषय मे ऋषि

वयानन्य ने कोशों से हुस्ताखर कराकर मतका विकटीरिया को विकारण की विवा यो यो राम रुप्त रुप्त ने के लोशों ने में निकार कराकर दिया था। इसके स्थाला से में रुप्त मान हस्ताकर कराकर दिया था। इसके स्थाला सन १९४० ने गठ हरया वण्य कराने के नारे से धान्योजन न सर्थापह, पर किसी ने भी पठ हुस्या वर्ग्य करते की प्रयान नहीं किया। हुस्साकि इस दौरान से कराना पार्टी का सासन भी सा लिया। परन्तु उन लोशों ने भी इस सोर कोई क्यान नहीं दिया।

श्रव सोग हैरान हैं श्रीर सोबते हैं कि गऊ हत्या का कलक कब तक इस देश के माबे पर जलता रहेगा।

> जयदेव वोयस पत्रकार जीन्द

## बहराइच में विदेशी धन से धर्मान्तरण हुआ श्रार्थममाज का श्रारोप

उन्नाव । सार्ववसाज उन्नाव के अवे याधिकांत्यन के सवसर पर प्रायसमाज व वित्रव हिन्दू परिषद के विरसात नेता औ देवीसाव साम में बताया कि हाल में बहराइन में हुए वमन्तिरण के पीछे विवेधीयन (नेट्रीशावर) की करामात है। नेपाल शीना पार कर स्वर्ग भीन कुछ वर्षों संस्वर्ण कर से बहराईन गोण्डा वरती, बोरकपुर जिलों म प्रवेश कर सन के बक्त पर निर्वेण हिन्दू नटों का सम करीद रहें हैं।

भी वेबीदास पार्थ ने सरकार से पूछा

## नया प्रवेश

वधानम्ब नाह्य महाविधानय हिसार (हरियामा) में नया प्रवेश सारस्य है। भोजन, निवास, पुस्तक, वस्त्राहि का सारा प्रवण्य सर्वेशा नि सुरूक है। मैंट्रिक पात काणो का प्रवेश होता है। यह वर्षे प्रवार में वर्षि रक्तने के स्पष्टक का न हों, सविधाहित हो, अरुरो ही पत्रध्यवहार करें। प्रवेश २५ पुलाई तक हो होया स्थान सीमित है, यन प्रवेशायीं करवी हो पत्र-ध्यवहार कर प्रचना स्थान सुरक्षित करा में।

सत्यप्रिय शास्त्री एम०ए० साहित्याचार्य प्राचाय वयानन्य त्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरवाला) १२५००१ कि बहराडच में ४००० चारहचार, गोण्डा में ००० तीन हजार नरती व गोरकपुर में दो दे हजार व्यक्ति इस्लामी मदद से और कितने धर्मात्वरित्व किसे गये हैं? सजा की सम्मक्ता डा० रचुबीर सिंह एडबोकेट ने की।

प्रारम्भ मे श्री देवीदार धार्य के महिला उदार धुदि व यमाव सेवा के महान कार्यों की प्रश्नसा करते हुए सब्स स्वागत किया गया।

> रविशकर शर्मा नत्री सार्वेसनाम उल्लाब

## समय की श्रावाज

उत्तर भारत के कई अन्तो ने एक साथ वस विस्फोट, कई शीर्वस्थ नेताओ की हत्या के प्रयास धातकवादियों के पून भवकर रूप से सकित होने का प्रवास है। उनका बहु कुन्सित काय सुनियोशित वा। उनकी बोजनाथी भारत की धलाव्यता ग्रीर एकता को सण्ड-सण्ड करने की। भत मान की शावस्थकता है कि हम सब भारतीय एक जुट होकर वर्ने और इन समाज विरोधी तत्त्वो का स्टकर मुका-बला करें। मैं राष्ट्रीय एकता विचार सब विल्लीकी कोर से सभी वर्वी से तथा वार्मिक राजनैतिक दमो से सपील करता हुँ कि इस समय प्रपत्ने समस्य मतमेव भूका-कर राष्ट्रहित के लिए एक होकर सहयोग करें।

> श्रमोक कुमार अमान, राष्ट्रीय एकता विचार सम ८।व२, रमेश समर, नई दिस्की

## श्रलगाववादी हिंसक तत्त्वों को सस्ती से क्वचला जाए

सार्यसमाब केतरलब सक्सेर की विनाक १२-५-२६ की यह समा सपके सारवाहिक सरसव के उपरान्त एक सर्व-स्मय प्रताब पारित कर उक्कारों साठक वादियों द्वारा किए गए वेच के विजित्त मानों वे वन विस्कोदों तथा निर्मेष लोगों की इत्यामों की कडी मर्साना करते हुए नारत सरकार दे इन सबनावनायी हिसक तथों को सस्ती से पुन्तकों हुए कारत को सस्ती से पुन्तकों हुए कारत को सस्ती से पुन्तकों हुए कहारे स्थान नागरिकों विजेश्य हिस्सू सिक्कों से माईबारे एव साम्प्रवायिक खीहार्यंग्रा रक्तने की सपीन करती है।

> मन्त्री धार्यसमाज श्रवमेर

# महर्षि दयानन्द शिच्चग् समिति का चुनाव

धाय समाज शिवावी चौक सम्बद्धा विका पूत्र निमाड (म० प्र०) मे दिनाक १२ ४--२ को स्रो भाववाली माई मानुवाली स्टब्स्ट प्रवासन में स्टिस्ट देवानन्द शिकाम समित का चुनाव सानन्द सम्पन्न हुया। समीन्मित से निम्मीकृतिक पदा

विहारी चुने गये — भव्यक श्रीरामचन्द्र जी शाय उपाञ्चक श्री सक्यीनारायस जी शार्गन

उपाध्यक्ष श्री सहसीनारायस्य जी आई। हीरानाल जो आई सत्री सी कैसारायन्य जी पालीनास उपसत्री भी श्रमनसास जी चौकरी

कोपाध्यक्ष श्री जावश्री जाई बानुसाकी। कार्यकारिएती के सदस्य श्री कृष्णालाल श्री कार्य २ श्री तेठ नारायण दाख श्री क्रण्डलवाज

३ भी डा॰ वनदीयचन्द नोरे ४ भी नानूनात जी चीचरी ३ भीमती शान्तिनाई कच्छेसवास

६ जीनती चन्द्रकान्ता पासीवास उच्च समिति के श्रन्तचंत नगर कें है बास मंदिर, २ प्राथमिक शासा, १ माध्यमिक शासा, २ महिला सिसाई

स्कृत समामित है।

सुवराव सार्व पुरोहित सा॰ त॰ सहवा इने वर्षी सार्वसमान सन्दर्भा

खुद्धि
२४ नार्ष १८-१ का भी हघराव
वीस्त्रमें के वर्धाहमीन प्रवस्ती हारा उत्तहवीस्त्रमें के वर्धाहमीन प्रवस्ती हारा उत्तहविश्वी रोवच्यान द्वारों ने वस्त्री विश्वी
के निवादी रोवचम्द्र साने न वस्त्री प्रवि सम्बादित वा उनकी पुत्रियो पुत्रम तथा
वोगिना का सानें रीति से नह तथा उद्दोववीर हारा युद्धि का कार्ने सम्बन्ध

इस कार्य में भी हतराम पोस्टरीय का बाराह्मीय मोग रहा। बी॰ सार॰ मुतेमा, अस्ती

# लन्ना में त्रार्थ नवयुवकों की सभा

१२ ६-८१ रविवार को, आर्यसमाव सन्ना मण्डी (लुधियाना) मे सार्थ सब युवको की एक समा का बायोजन किया गया, विसकी अध्यक्षता भी हरिदेव बी जीवरी ने की । यज्ञ के पश्चात वेद प्रवाद मजन मण्डली लुचियाना ने प्रभूमनित एव देशअक्ति के गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस भवश्वर पर भागं यूवक सभा पजाब के समोजक श्री रोशनलास शर्मा ने नवयुवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि साज हमारे सामने देश की एकता भीर संसंख्यता का एक बहुत बंबा प्रश्न है न्योकि जिस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए ग्रहीबे माजम भगतसिंह, सुबदेव, राजगृब तथा सनेक वीरो ने सपने प्रास्ती की बाहुति दी बाज इसी स्वतन्त्रता की कायम रखने की जिम्मेदारी हम सभी पर है। उन्होंने दश में ही रही हिंसक घट-नाम्रोपर गहरी जिता प्रकट की तथा नव-यवको को बाह्यान विवा कि उन्हें साबू दायिक एकता बनाये रसते हुए देश की रक्षा के लिए खदैव तैयार रहें। श्री सुबीर जी माटिया, श्री विनोद की बसल तथा सीय तपाल जी साथ ने भी युवको को सम्बोधित किया। श्री चौधरी ने कहा कि बार्यसमात्र नवयुक्को की यवासम्बद सहायताकरेवा। शान्ति पाठ एव अय घोष के साथ कार्यवाही समाध्य हुई।

पुषीर आदिया चन समोबक धान पुषक तका पत्नाह, ७११ विवित्त हस्पताल रोह, जुवियाना उम्रवादियों से निपटने के लिए भारत सरकार से

धार्यसमाध के प्रशिक्ष नेता एव श्रीक एक पीन नेनेजिन करोडी की स्वाची स्थितिहाँ होणियारपुर के चेवरदेन चीन नवनीर विद्या करोडी की साम पुरत्न होणियारपुर के हिस्स को की साम पुरत्न होणियारपुर के हस्य कर वी मां । वह धार्यसमाव प्रश्न की एन बीन का प्रश्न सम्बद्ध के एन की प्रश्न के राजनी- तिक्र न पुराने समाध्यारी नेता ने । उनका कित्य कमाध्यार निकर्म है हिस्स कराम के बहुत सम्बद्ध ने साम प्रश्न समाध्यार निकर्म है है वीन एन की कालेज कमोडी एक प्रावेशक स्था कार्यास्थ में शोक स्वाच की साही पर परमास्था से उनका की साही हो साम की साही है की एन से साही साही हो साही हो साही हो साही हो साही हो साही है साही साही हो साही हो साही हो साही हो साही हो साही है साही हो साही है साही हो साही है साही हो साही है साही हो साही हो साही हो साही हो साही हो साही है साही हो साही है साही हो साही है साही हो साही हो साही हो साही हो साही हो साही है से साही हो साही है से साही है सह है सहत है सह है सह सह है सह है सह है सह सह है सह सह है सह है सह है सहत है सह है सह है सह है सह सह है सह सह है सह ह

इस बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया जब कि जारत सरकार उदकावियों के विचय के निनदे। धार्य प्रावेशिक स्वाद जिति स्वान ने इस उपतक्य में चारत के प्रवानवन्त्री जी राजीव नाजी एव प्रवाव के वर्जनर जी सर्जुनिक्क के टेलीबान के वर्जनर जी सर्जुनिक्क के टेलीबान के कार्य जी सर्जुनिक के एक्यादियों के वर्णनर के क्षेत्रर है कि वह उपवादियों के वर्णनर के क्षेत्रर ।

> —रामनाथ सहबस (मन्ती) धार्व प्रावेशिक प्रतिनिधि स्थार

### आर्यसमाज भोगल का वार्षिक चनाव

दि० १२-५ ८५ को झार्यसमाज भोजस्य का वार्षिक जुनाव सवसम्मति से कियागया।

प्रचान भी चार जैरु पीत गुप्ता जदयमान भी मुन्ती ताल योहरा जरपमाना भीमती नालपना सीनहोमी यभी जी सरदायाना चीन्छा उपमणी भारतेल्यु प्राव जेलाम्बल पालस्था हिन्दानी सातीदर सोनस्कात चीचरा सीवचालय च्या हरिस्कन्ट सरोहा बस्तु चयारी पल्लासाल बुराना दयानन्द पब्लिक स्कूल

का उद्घाटन

षार्थसमाय मात्रल टाउन निरुपी के राजें में बार्यिक सिंदा रें है मिला दिन रें रें मूर्य रिविदार को है है ने बेंदे दानान्य पित्रण होत्रल का उत्पाद मात्रा पान पित्रण कालवान (प्रधान सावदेशिक सभ ) के कर कमलो द्वारा यह हर्यों न्यास सिम्मन हुमा। पश्चात् रें कमनन हुमा। पश्चात् रें वे महत्त्व नगर रहा।

वयानन्द पश्लिक स्कूल झायसमाच रोण माडल टाउन विल्ली ११०००६ श्रायंसमाज वडा बाजार क्लक्ता द्वारा स्वामी दयानन्त्र की प्रामाणिक जीवना के लेखक डा० भवानीलाल भारतीय षण्यक वयानव्य कोष पीठ पत्राव विश्वविद्यालय का सम्मान व अभिनन्दन

कलकता। कलकता को बड़ी बाआर भायसमाज न श्रपने वार्षिकोत्सव के श्रव सर पर भायनमाज के प्रसिद्ध सोध विद्वान् तथा सेसक डा॰ भवानीसाल भारतीय का गत ४ सह को मुलबाति सदन के विद्याल सभागार संस्थानजनिक सम्मान तथा प्रभिनन्दन किया । इस सम्मान समारोहकी सध्यनता सायसमाज कनकत्ता के वरिष्ठ कायकर्ता श्री सीटा रम बाय ने की। पूर्वाञ्चल विशेषत दगान की सभी प्रमुख द्यायसमाजी तथा माय सस्वाभी ने डा॰ भारतीय का माल्यारण द्वारा स्वागत किया नवा इस श्रवतर पर उपस्थित महारमा अधिमिन् जी । अज्ययन्त कृमार श्वास्त्री तथा प्रो उमाकान्त उपाध्याय सादि विद्वानी ने भ रतीय जी की साहित्य साम्रो का शुरि मृरि प्रकासाकी। प्रायसमात्र वडा बाजार की सोर से विद्वात के सम्मानाथ १५०० ६० की एक ऊनी शास तथा श्रीभनन्दन पत्र श्रीपत किया गया । श्राय समाव बड़ा नाबार के बुवा कार्यकर्ता भी चादरतन दम्माची ने ग्राधनस्दन पत्र बाचन करते हए साहित्य पत्रकारिता तवाप्रचार में डा॰ भारतीय की की सेवाम्रोका उल्लेख किया। स्वानत के उत्तर में भाषण देने हुए हा० भारता जा ने कहा कि साहित्यकार यद्यपि निस्वाय एव करक्य पूर्ति की भावना से ही अपनी लेसनी असाता है तथापि यदि समाज उसकी शीरबाहित करे तो वह ध्रविकाषिक उत्साह से समाज सेवा मे लगा रहेवा। सम्मान समारोह के समय हर० भारतीय की पत्नी श्रीमती सान्ति भारतीय सी जवस्थित थी।

भाने बार दिन के कलकत्ता प्रवास

में डा० भारतीय ने श्रायसमाज विधान सरणी कलकलाके मत्री आर पुरस्यन्द जी तथा धायममाज कलकना स्थापना शतादी समाराह समिति के सयोजक श्री श्रीर मजा द्याय स समारोडो के द्यायो-अन के सम्ब व म उपयागी परामधा किया। आयसमाज वहा बाजार का उत्सव दिनाक २ मई म ५ मई तक मनाया गया। इस अवसर पर बायोजित राष्ट्रका सम्मेलन की सध्यक्षता करते हुए डा॰ भारतीय ने बायसमाज को राष्ट पर बाये सतरो के प्रति सावधान किया। कायकम का सयोजन श्री दम्मासी जी ने किया था। वेद सम्मेलन की ध्रध्यक्षता महात्मा भायभिक्ष जीने की तथा मुख्य श्रतिविके रूप में श्रो० विष्णुकान्त णास्त्री उपस्थित च । प्रो॰ ज्वलन्त कूम।र शग्स्त्री नथा भवानीलाल सार-तीय ने प्रायसमाज का वेद विषयक प्रीट-कोण प्रस्तृत किया। उत्सव की सफलता के लिए समाज के प्रधान भी कन्हैयालाल जी बाय मंत्री जी ब्रुश्वहालचाद कार्य-कर्ताशी चादरतन तम्माणी घायबाद के

—सबादद ता

# श्रार्य वीर दल शिविरों का श्रायोजन

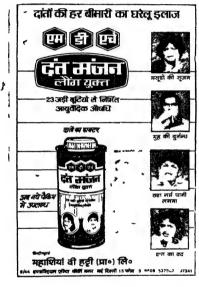
सानवेजिक धाय वीर दल दिल्पी से स्व सिंदि से सित्य के समुद्धार सुवानों के निरंत के समुद्धार सुवानों के निरंत के समुद्धार सुवानों के निरंत के समुद्धार से सित्य के सित्

२१ ४ ८५ १-६ ८५, २-६ ८६ शुक्त स्नानि तथा रिवबार रतन देवी आर्थों पुत्री पान्शाला कृष्यस्य नगर दिल्ली—११ (यमुना पार)

१४ १५ १६ पून १६८५ गुक्र पनि तथा रविवार आयममाज निमारपुर दिल्ली-७

१७ ८५ से ७ ७-८५ तक मोमवार से रिववार तक रुषमल कन्या पाठशाला निकट मद्रास होटल नई दिल्ली—१

त्रियतम राम रसबन्त ग्रामिकाता, ग्रायशीर दल दिल्नी प्र०





# श्चार्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की र'श्चिमाधकर प्रचिनियम जी० ६० के भारतमंत कर मुक्त होगी।

सारा दान : चेक/मनीझार्डर/बेक डाक्ट हारा

मत्री, माता चन्ननदेवी धार्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्पालय, सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४= के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

### निवेडक

राजनोत्राल सालवासे तुर्यवेव महाशव वर्गपान प्रोजमकात सार्थ सरसक विकित्सालय प्रवान, विरुत्ती प्रवान प्रवान एवं प्रवान, वाञ्याञ सार्य प्रतिनिव प्रायं केन्द्रीय महास्वय कुलीलाल प्रतिञ्जन सामा समा स्वेरिङ हुः सौजन्य से महाशियाँ हिट्टी प्राः लिमिटेड, १/४४ कीस्तिनगर,

ब्रौद्योगिक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्यं पुरोहित सभा का निर्वाचन

धार्व पुरोहित सभा दिल्ली का निर्वाचन धार्यसमाज बीवान हाज, पावणी चौक, विस्त्री से १ जून समिवार को साम १ वर्षे होना निर्वाचन हुआ है। समस्य स्वस्थवणों से प्राचना है कि स्थमना वाचिक सुरक्ष साम बेसे प्राचन है

> मंत्री वेदकुमार

## आर्यंसमाज विवेक विहार का वार्षिकोत्सव

धार्यसमाञ विवेक विहार का वार्षि-कोत्सव वडे चमचाम से सम्पन्न हसा । इस श्रवसर पर बहद यज तथा देव प्रशास का विशाल ग्रायोजन किया ग्या। १६ मई रविवासरीय ग्रक मे प्रसिक्त साहित्यकार बी क्षेत्रचन्द समन तथा सभा प्रधान भी सूर्यदेव ने प्रपने विचार प्रकट किये। वक्ताओं ने शिक्षा में हो रहे परिवर्तन के विषय में प्रकाश बालते हुए कहा -- हमारी शिक्षा ने महायुक्ती का गौरवमय परित्र तथा नैतिक पारि-तिक शिक्षा का स्थान अवश्य होना भाहिए। बार्यतमाज सदा चरित्र और नैतिकता तथा व्यक्ति भीर समाज के विकास पर बल देखा रहा है। सरकार को बाहिए शिक्षा में बारिजिक सौर

नैतिक मूल्यों तथा धरने भीरयमय इति-हास को खिला स्थान दे। मन्त्री धार्यसमास

नन्त्रा साधसनाव विवेक विहार

पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमत्नी से मिले

(पृष्ठ १ का शेष) १२ श्री चतुर्भुज मिलल, प्रधान व्यापार मण्डल, जालन्वर

१३ श्री कैलाश शर्मा प्रवान मदिर कमेटी, लुखियाना

१४. श्री घोमप्रकास त्यागी---महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ला

१५ श्री जगन्नाय मिश्रा, दुर्ग्याना ध्रमृतसर

१६ श्री सोमनाच मरवाह सीनि-यर एडवोकेट एव कोषाध्यक्ष, सार्व-देशिक सभा, दिल्ली

१७ महाराज कृष्ण सन्ना, जानन्धर

१८ प्रो॰ शेरसिह, प्रधान सार्य प्रतिनिधि सभा हरियाला, रोहतक है १९ प्रो॰ वेदव्यास, प्रधान सार्य

प्रावेशिक प्रतिनिधि सभा, नई विल्ली २०. श्री सूर्यदेव, प्रधान धार्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२१ श्री कृष्णकान्त एडवोकेट, लुधियाना

> २२ श्री लक्ष्मीचन्द्र, दिल्ली —प्रचार विभाग

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

ष्ठाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाय, फोन : २६६८३८ वाजडी वाजार, दिल्ली-६



# साप्ताहिक अस्टिश

पूरूप एक प्रतिः १० वैते

वर्ष १ शक २०

रशिवार, २ जून १८०%

धार्यं सबस्तर ११६०८१३०८१

क्षेष्ठ ३०४२

दयानन्दाब्द--१६१

# स्वामी दयानन्द मेरे महान् गुरु

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु है। मैंने ससार में केवल उन्ही को युरु माना है। वह वर्म के पिला हैं और आर्य-समाब बेरी वर्म की माता है। इन दोनों की गोद में सीने परवरिष्य पाई और अपने दिल भीर दिमाग को ढाला। कुम को प्रश्निमान इस बाल का है कि मेरा बुद बढा द्वाकाद मनका वा। ससने हम को जाजादी से विवार करना प्राजावी से बोलना और बाजादी से अपने कर्लभ्य पालन करना सिलाया । मुक्त को इस बात का भी गर्व है कि मेरी वर्म की साता ने मुक्त को एक क्त्वा ने बढ़ होकर रहना निसाया। एक ने बाबादी श्रदान की तो दूसरे ने मुक की डिसिजिन का वान विया। इनके बगेर न ती इन्सान अपना सुवार कर

सकता है न किसी भीर का। आसारी सीर विसिप्तन हर एक जले आदती की निकरती का सावार है। नवधुवक आधारी की निकरती वाहने हैं परन्तु निवंत्र्या है क्वराते हैं जब तक यह दोनों आय उनके अस्वर अच्छे अनुपात से सामित न ही काए उनकी जिल्लाी मेरित मेरित की मिट्ट के सामित न ही काए उनकी जिल्लाी मेरित मेरित की मीटित की मीटि



ताकि मनुष्य मात्र इत में संमा बाए। हमारी देखमानत वर्ष के प्राचीन है। प्ररोपीय कीमी की तरह वह वह और तलक न होनी चाहिए। वब एक वर्मन निवासी यह कर्रकर पुका-रता है कि उसे अधनी वन्म यूमि सब पदावों से जारी है तो नह क्षी बार प्रपने दिल की तम करके छड़ार वे नाला प्रकार के वखेटों की नीड़ रखता है और सिक्सा देता है कि बेरी कीम चाहे नलती पर हो सो भी उसकी पूल पूक्ते किस है। इक्के वहाँ वक तो सम्बद्ध है हि सुस्ती के वहाँ तक तो सम्बद्ध है हि सुस्ती के वहाँ वाहिए। जो श्वांतित विराग स्वित्व विश्वंत हो। कम सम्माहो, रापी हो। वराणी ही स्वित्व रेलेह की स्वत्व हो। क्षण हो। कि स्वत्व क्षण हंग्य स्वत्व स्वत्व क्षण मह सर्वे तही कि स्वत्व हों, वृत्त, पार, स्वत्व क्षण हों के पार्चे हों के पार्चे हों स्वति हों के स्वत्व हों हो हो हो स्वत्व हों प्रति के स्वत्व हों हो हो हो स्वत्व हों है। स्वति स्वत्व हम्बूजी संज्ञी साहित सौर स्वति स्वत्व हम्बूजी संज्ञी साहित सौर स्वति स्वत्व हम्बूजी संज्ञी सहित स्वत्व स्वति स्वति स्वति स्वत्व स्वति स्वत्व हिंदी

परन्तुइसका भर्ययह नहीं है कि जाति की मूलो ग्रीर सवानिक कुल्यों की भी हम बाहने लगें। स्वामी जी महाराज ने हम को जाति सेवा का उपदेश दिया। हम चाहते हैं कि हमारा देश बीर हमारी जाति धर्म के रास्ते मे वृद्धि करे। धर्म से भाव वहाँ उन कुछ सिद्धानी से न्ही जिनका नाम मत है। धर्म शब्द उन गहरे भीर विश्वाल सभी में लिया जाना है जो हमारे शास्त्र-कारों ने इसके लिए नियत किए हैं। सिद्धान्तों को मानना और चीज है और धर्मात्मा बनना भीर चीज है को केवल धम निद्धानी के बोस के नीचे दब कर वयने बिद्धान्तों के प्रश्निमान पर अम्मीरमा बनने की चेच्टा

करता है। वह जरूर ही वर्मात्या गही वन काता। वर्म का सम्बन्ध वहुत कुछ कर्म धोर धावरण है क केवल लड़क आन वे। वर्नात्मा ककी के लिए एक न्यास तरह का दिल क्यान होंगा है जिसमे विद्यालता, वसाबुटा, न्याय धौर भक्ति से मिश्ची हुई ही।



### सत्मंग वाटिका

सन्त्रम् बृहर् सस्य उद ऋत हाक्षा तप हक्का यह (एते सर्वे) पृथिषी धारयति। ा पृथियी न भूतस्य सम्बस्य पत्नी (प्रस्ति)। पृथियी न सोक उद कृषोतु।

धम पृथियों को इतभी बोज क्लानी हैं। (बृहद मत्य) बडा सब (उपम् फत्य), तीव खत नोता तम बहा घीर सब । यह पृथियों (न) हमारे (मृतस्य) भूत-काल (अध्यय) घीर भविष्मत् काल की (यत्नी) पारन वाली हैं। यह पृथियों हमारे (लोक) जीवन को (उद कृष्णेतु) कमा बनावें।

क्याक्या - इस मत्र मे पृथिवी प्रयत् देश की उनित के सधन बताय गये हैं। पृथियो परहम कोगो का जम होता है इसी पर बढत है और इसी पर हमारी धन्त्येष्टि हो जाती है। प्रत इसकी उन्नति में हमारी उम्मति भीर इसके हास मे हमारा ह्रास है। उन्नति मे भौतिक सामाजिक वार्मिक सभी उन्निवियों का समावेश है। पृथिकी या देश के समुज्नत होने के बहुत न मौतिब सावन हैं जिनको देश की सरकारें वैज्ञानिकों की सहायता हारा प्रयुक्त किया करता है। वैसे जिला ब्रकार की मुमियों को कृषि के उपयुक्त बनाना ऊसरों को तोडना पहाडी बनीनो को जौरस करना जहापानीकी कमी हो हुरस्य नियो म नहर निकाल कर वानी पहुंचाना विद्युत गक्तिको कृषको कंसिन सुसम् बनाना इत्यावि ।

परन्तु वेद सल में कुछ एसे समीतिक तवा मानसिक बुजो का बरान किया गया है जा उपर दियं भौतिक सामनी संभी श्राविक शावहत्त्र है जिनके सहयोग से ही भौतिक साधन सफल हो सकते हैं भीर जिनके प्रजाब में यह भौतिक साधन सवया बिपरीत सिद्ध होते हैं। इवि भावि मौतिक साधन मनुष्य के कल्याए। के लिए हैं न कि मनुष्य उन साधनों के लिए। यत यदि देश में साद्य पदाय बहुत हो और साने वाले निकम्मे हो उन पदार्थों का उपयोग महीं हो सकता। करपना की जिय कि एक चनाढ्य परिवार है। घर मकान जाने के लिए पुष्कल शन्त पहनन के लिए बस्त परन्तु परिवार के लाग प्रालक्षा स्वाधी ग्रीप कल हपिय है ताधर का गान्ति का सना भग हता रहेगा धीर शनै ननै घर का समृद्धि भी चनाथमान हो जायगी। राजान्दारय के चार लडके थे। राम भौर उन्हीत सदश मध्यसा भरत भीर शतुब्त इनम इस मानसिक गुण ये जिनकी सहा यतासे वहन्शरम के राज्य को विस्तृत भौर समृद्धिशासी बना सके। शाहबहा 🕏 कार पुत्र व दारा और उसके सका सुवा

# ये महान गुण

प० गगात्रसाद उपाध्याय

सत्य बृहद ऋतमुत्र दीक्षातपो ब्रह्मायज्ञ पृथिवी वारयन्ति । सानो भून्स्य भव्यस्य परूपुरु लोक पृथिवीन क्रसोतु॥ (ग्रयदैवेदकाण्ड१२।सूक्त१।सृत्र



की कमी थी घत सुसमृद्ध मृशस राज्य गीझ ह छिन भिन हो गया।

इन्हीं गुणों का बेदमत में बलान है।
एक एक करके देखिये पहला है— सत्य
बृह्द । प्रत्यन्त सर्वाप्यता भवीत्
ध्रवस्थ से पोर प्रप्रीति। ज्यन्यद में प्राया
है सर्वनोत्तिमा भृषि (ज्यन्यद १०
८५ १) घवीत् सत्य भूषि को ऊरर उठाये
हुए है उठी विरोन नहीं नत।

यहा सस्य कोई बोहे का सम्भा नहीं है। न केवनाय का फन है। न कोई ग्रटसस जैसा कोई देव है जो भूमि को कन्धे पर उठाय रकता हो। यहा तो भूमि रर रहने बाल मनुष्यों के मानसिक गुल से प्रतिप्राय है। सत्यनिष्ठ लोग दर्श्य देश को भी भी सम्पन्न बना देते हैं भीर सस त्यनिष्ठ लोग सम्पन्न देश की सम्पदा को भी नक्ट कर देखे हैं। सत्य का एक विशेषसा बहुद मों दो सभी सत्य को बच्छा सममन्ने हैं पच्यु अवहार में तत्व को कम म न्यष्ठा दी जाती है। हर स्था पारी का विषवात है कि सत्य स आयार नब्ट हो बाता है। हर बकोस कहता है कि बकासत सत्यक्षा स नहीं वस सकती। हर राजनीतिज्ञ कहता है कि राज करना है तो सत्य को कोडी। सत्य ब्रह्मा करना है तो ननोटी सगाकर वन को चले जाओ। रावनीति में बस्य का क्या काम? हा सत्व का दिंदीरा पीटते रहो। दूसरी को उनके घसत्य व्यवहार के लिए बदनाम करते रहो । भारतीय खास्त्रों मे सस्य की महिमा बहुतायत से बाई गई है। परन्तु वाजर बेचन वाल कृषड स सगाकर महा बनावय सेठ साहुकारो तक सभी श्रसत्य को समृद्ध का सावन समस्त है। इससे भारतबब की उम्मति तो नहीं हम्ती । बेद कहता है कि पृथिवा का भारण करने वाले गुराो में स मुरव गुण बृहद सस्य है नकसी सत्य भीर शसनी सत्य में मेद है। क्या सह अपन्त्रे की बात नहीं है। सत्यं की महिमा को स्थापित करन के लिए किसी ने हरिश्वन्द्र नाटक में धनेक प्रसस्य बातें मिलादी। क्या हरिश्वन्त्र नाटक के सिसने वाने को जी यह विश्वास था कि वसत्य का मिश्रण किय बिना नाटक सफस नहीं होना <sup>9</sup> संसर्थ की विपन्नता

का सबसे वडा प्रमाण वह है कि शासी

करते हैं परस्तु इन मांटकी ने सवार के प्रस्तव्य व्यवहार से कसी तो नहीं की। नेवब वचनो हारा क्या माध्य ही तो नाटक की कप्तस्ता नहीं है। इसी प्रकार वैशानिक उद्योगों के बाद साब वहि स्वय का प्रचार नहीं होता तो देश के सम्बन्ध ग्रीर कल्याण समृद्ध होने से सम्बेह ही है।

दूसरा बुल है ऋतन् उत्र । ऋत का सव है सुष्टि के नियमों का सहयोग। सूर्व किसी को अपने नियमों का ससह योग करने नहीं वेती। जो ऐसा करता है तुरना उस वण्ड मिनता है। साथ रोटी के प्राप्त को मूल के बजाय नाक से आपने समे । तूरन्त हो बण्ड मिलेगा। निर्के बल चलना आरम्भ कीचिये। दिल्ली बोह्ये रात में वानिये। यह बन उहच्छता के काम हैं और उत्पत्ता के लिए बण्डित होना स्वरवस्थानी है। साचकल साईस का बुग है। ऋत को विस्त्वास्पूर्वक बालवे का यत्न किया जाता है। सुष्टि के नियमी की नित्य प्रति सोख हो रही है। परम्बू ब्रपने जीवन में उशका उपयोग नहीं करते। डाक्टर होकर ऐसे साचरण वा साहार न्यवहार करते हैं कि जो विशान के सर्वना विपरीत है। इसस देश भीर जाति को हानि होती है। कोई ऋत यह नहीं बताता कि सिबट वीना उपयोगी है कोई 'ऋत यह बाजा नहीं देता कि स्त्रियां होठों को रगा करें या कमर को इस प्रकार कसा करें कि उनके पेट की नहीं निवस हो बाय या ऊची एड्डी के बुढे पहुना कर । विज्ञान-समूननत दशों के बाचार व्यवहार बताते हैं कि वदि अवजी वेशो ने ऋत का पासन नहीं कियाती यह उनके सज्ञान के कारण था। जब मनुष्य म ज्ञान का वृद्धि हा जाए फिर भी बानबूककर ऋत से प्रसङ्घीय किया बाब तो दण्डित होना ही पडवा।

तीश्वरानुसाहै दीक्याः यजुर्वेद से

ब्रतेव बीकामाज्योति बीक्यमाज्योति बिक्सलाम् । बीक्सला अखामाज्योति अख्या स्वचान्यते ।

(ब्युवेंद प्रव्याव ११ यम १०)

उसम धविकार किमा है। जब मनुष्य शुत्र काओं के लिए वर्त धारता करता है तो उसको उस काम के करने का प्रवि-कार प्राप्त हो वाशा है। जब तक किसी देख में इस प्रकार के उच्च मनुष्य उत्पत्न नहीं होते को निस्वाधभाव से देश सेवा के निए व्य सकल्य हो वार्गे उस समय तक देख की सम्मति सदिग्ध रहती है। भी तो देश ने कराडो मनुष्य एउटी हैं साते हैं पीते हैं मीज उड़ाते हैं पर तुदश बा वाति उनके बाध्य नहीं है। जैसे नश मे करोडो पशु पत्नी कीट प्तन रहते हैं उसी प्रकार वह भी रहते हैं। कोऊ नृप होब हमें का हानि । वार्मिक लोग रहे बा ब्रधार्मिक देश रहे या नष्ट हो जाय मेरे मकान में विकियाँ घोसला रखती है वृहे विक बनाते हैं मकको जाना पूरती हैं, ररन्तु उनमें से किसा को मकान की जिला नहीं। वर गिर जाये ता वे गिरे हए सकान का सबहर में रहेंगे। या घन्यत्र भाग बार्येये । मकान के बारण करन वाले बहु पशुपक्ती नहीं हैं। इसा प्रकार देशा की रक्षाकाभार मी बत हीन भीर दीका ) हीन बनुष्यों के ऊपर नहीं है। लोग जब सोकसमाधी या पालिय मध्य के सदस्य चुने जाते हैं तो उनको पच नेनी होती है कि हम जो कुछ करेंगे केवल देशहित की बच्टि से करने भपने ०२ क्तित्व परिशार दल या सम्प्रदाय की भावनाओं को बीच में न धाने देंने। यह वत बना ही उनकी बीखा है। क्रक के परकात ही वे पालियामेण्ट की सदस्यता वे अधिकारी होते हैं। प्रव विव उन्होंने दी जाभी के की और अधिकार भी प्राप्त हो गब परन्तु वदि स्वाच वर श्रमानवश उन्होन इसको निवाहा नही सो वैश्व शीघ्र ही नष्ट हो जानेवा। वयोंकि व्रत या शपय का मुहु से लेगा प्रथमा कावज पर हस्ताकार कर देन तो प्रासान है परम्तु जब स्वाय और देशहित में विरोध बाता है तो स्विर रहने के किए तीन भीर गुणो की धावश्यकता है तप भी बह्याकी और यज्ञ की। तप का समाहै कतव्य पासन करन से जो कठिनाइस्थि धावें उनको सह सकता। प्रयमे यन के धनुकूत बाठ होने पर तो सभी सथ बोलते हैं परन्तु जब सब बोलने से धाने स्वाध ने बाबा पहली हो उस समय सब बोजना कठिन हो जाता है । स्वाय होते हुए न्याय तो सभी कर सकते हैं परन्तु सन्दु के साब न्याय करन में सकोच न कर वही देश का उदार कर सकता है। काम कोच लोस मोह का बशामृत पुरुष कभी देश या जातिकी रक्षाकरने में समध नहीं हो सकता। तप वही कर सकता है को बहुत श्रवीत् ब्रध्यात्म जीर यज्ञ सर्यात् श्राह्म-त्वाव या बारम समयण में विश्वास रखता हो। अध्यास्य को मूलकर जो केवल शौतिकवादी हैं वे विषयों वे शीध फस बाते हैं। मनुस्मृति मे अभियो के सक्तारा निनाते हुए एक मुख्य नक्षण यह वी विमा है कि विवयों में बातवित न हो। रावे दा

# 🛨 वचनसन्देश 🛨

उपासना

उपामना शब्द का बर्ष समीपस्थ होना है। श्रष्टाञ्च योग से परमास्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्नर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो जो काम करना होता है, वह सब करना चाहिए।

जो उपासना का धारम्भ करना चाहे उसके लिए यही धारम्भ है कि वह किसी मे वैर न रक्खे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सस्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे सस्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो ध्रौर निरिभमानी हो, ग्रिभमान कभी न करे।

राग द्वेष छोड भीनर और जलादि से बाहर पिबल रहे, धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ मे न प्रसन्नना भीर हानि मे न अप्रसन्नता करे, प्रसन्न होकर ग्रालस्य छाड सदा पुरुषार्थ किया करे, सदा दुख सुखो का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे अधर्म का नही। सर्वदा सत्य शास्त्रो को पढ़े पढ़ावे, सत्पृष्ठा का सङ्क करे और धी३म इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार कर नित्य प्रति जप किया करे। अपने ग्रात्मा को परमेश्वर की ग्राज्ञानुकूल समर्पित कर देवे।

जो परमेश्वर को स्तुति, प्राथंना ग्रीर उपासना नही करता वह कृतघ्न ग्रीर महामूखं भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के मन पदायं जीवो को सुख के लिए दे रक्खे है उसका गुगा भूल जाना, ईश्वर हो को न मानना कृतघनता ग्रीर मूखंता है।

−महर्षि दयान*न्*द

सम्पादकीय

# पहले धूंए और धमाकों का इलाज कीजिए

पजान की घरती के वे गीत जिनमें गाया जाता था कि सोने की घरती है जाती सा पानी, घर-चर में गुजती हैं गुरुबी की वाएंगे। घर वहां आग हैं, चुबा है, चरते तरफ स्तंक्यता है। गीत सो गए हैं, उनके गाने वालों के होट क हुवाहट से तिक्त हैं। हर कोई एक दूबरे को सम्देह की नजर से देखता है। बच्चोंने चुए और घमको चुन भीर लांधों का ज्यापोर विगत कई वर्षों से गुरू किया में माने चुन भीर लांधों का ज्यापोर विगत कई वर्षों से गुरू किया है, व खूना दिन्द वाहते हैं चारों तरफ धातक हो धातक हो हिन्दू तदफड़ते खुटपटाते पत्राव से बाहर प्रीर वाहर कि सब अपने को अहु- रिक्ता समें प्राची की स्वाप्त किया रही जा गुरू धातक वह से हिन्द तदफड़ते खुटपटाते पत्राव से बाहर त्यार वाहर वह सिख अपने को अहु- रिक्ता समक प्राची जह पाता तक पहुंचा चुका है। एक हा समय एक ही दिन अनेक प्राची में विस्कोट तथा सबैदन बाल, महत्वदूण स्थानों पर भी बमो का पाया जाना उपवादियों के हरादा धार उनके होस्लों का तथा उनके सबदन पिरोह का जोता वागता प्रमार साख है।

उग्रवादिया पर सनिक कायवाहा को एक वष होने जा रहा है, उप्रवादो बौसलाय हुए हं उनका प्रशाचिक मानसिकता निर्दोष मासूम लागो के खुन की हाल। खेलना चाहता है। घल्लू घारा करने की उनकी तथारिया पूरा है उनक अतरनाक सकत भामिल है। हिन्दुस्तान के एक सवाददाता क अनुसार शून्य एक, शून्य दा भीर शून्य तीन। ये है कुछ उप्रवादियों के कुछ गुष्त सकत जिनका प्रयाग उपवादी अपनी हिसात्मक कार्रवाईयो को सचालित करने मे करने। इनका प्रयोग ग्रासन्न चल्लुघारा सप्ताह के दौरान हागा। चुन हुए इलाको ग्रीर लक्ष्यो पर सकेत मिलते हो उग्रवादी सक्रिय हो जायने भीर खुन-खराबा मचायगे। शून्य एक का अब है एक समुदाय के (हिन्दुओ) लोगो की हत्या। शून्य दो का अर्थ है रेल पटरियो पर वम रखना और भून्य तीन का झर्य है कूपो मे जहुर डालना-इन गुप्त सकेतो से उनके श्रत्यिक खतरनाक इरादो का श्रन्दाज लगाया हा जा सकता है। वे इससे भी कही बढ-चढकर खोचर हैं। भाग नागरिक इस हालत को साक्षी भाव से देख रहा है लिकन भीरे-भोरे साभारण नागरिको के मन मे भी लावा बहुने लगा है। लोग अपने आपको असुरक्षित सममने लगे हैं। उनकी भृकुटिया तनने लगी हैं और मुट्ठिया कसने लगी हैं। अब समय शा गया है, सरकार इन हत्यारों को इन देश ब्रोहियों को कठीर दण्ड देकर ग्राम नागरिक के मन मे सुरक्षा की अवना जगाये अन्यवा देश गृह्युद्ध के कवार पर जा पहचेमा।

सैनिक कार्रवाई के दौरान जो फीचनी जोशन से झाकर अपनी छ।वनियों से निकल पड थे उनमें से ५०० सैनिक पकडे नहीं जा सके उन प्रशिक्षित छैनिको कास्तराभी कम नहीं है। उनका पकडान जाना भी प्रशासन के निकम्मेपन का सबूत है। गृहमन्त्री ने रहस्योद-घाटन किया है कि बहुन बड़ी मस्या में ऐसे पाकिस्तानियों को गिर-पनार किया गया है जो श्रिका का भेव घारण कर भारत मे घुस झाये वे। सरकार ने भिल छात्र सघ ग्रीर ग्रकाली दल के सिरफिरे सदस्यो को भाच्छो वडीसल्यामे पुन गिरफ्नार कर लिया है भ्रीर भातक विरोधी वानून भो पारित कर लिया है झाशा है इससे उग्रवाद पर काबू पाने में सफलता मिलेगी। गृहमन्त्री की ग्रावाग्री के प्रति हमारी सहानुभूति भी है परन्तु राजदण्ड जैसा कठोर होना चाहिए वह दिखाई नहीं पड रहा है। श्री चव्हाए। कहते हैं हम बानचीत के द्वारा समस्या का समाधान चाहते हैं वास्तविकता तो यह है कि अकालियो की प्रमुख माग मानी जा चुकी हैं लेकिन फिर मी समस्या मुह बागे ज्यो की त्यो भीर ज्यादा बढ-चढकर सामने लडी है। यह सुविचारित मत है कि पजाब में मगर कोई समस्या है तो वह उग्रवादियों के कारण है और आतकवाद से ही पदा हुई है। इसलिए समस्या है उग्रवाद ग्रीर गुण्डा-गर्दी, इसका हल राजैतिनक वार्ती से सम्भव नही है समाज विरोधी तस्वो से निपटने के लिए डण्ड की भावस्यकता है। भातकवादी पजाब अवौर निकटवर्ली राज्यो मे व्यापक निसा भटका कर देश की एकता भीर मलण्डता को नव्य करना चाहते हैं। ऐसे तत्त्वी से बातचीत करने से कोई लाभ नहीं निकल सकता।

सेनिक कार्रवाई की वर्षगीऽ पर जनकी योजना बडी सनरनाक है परन्तु प्रशासन विद सतर्क रहे तो धातकवादी कुछ भी नहीं कर पायेंगे। अब तक दिल्ली में जो भी धातकवादी गिरपनार हुए हैं वे धाम नागरिकों की सतर्कता और सत्ताहीय प्रयत्नों के हो समत्र हुम्पा है। पुलिस तो केवल महत्त्वपूर्ण सुराग हाच लगे हैं इसी को विज्ञासिक करती रही है। ये महत्त्वपूर्ण सुराग पुलिस को छोडकर घन्य सब की समक्ष के बूले से बाहर हैं। अत सरकार को ध्यान रखना चाहिए कुछ पुट्ठी यर मिरफिर पूरे समाज को धातकित कर सकते हैं। साम्प्रदा-पक्ष विदय की धाग मडका सकते हैं। इसलिए उपवाद का इलाज पहले करना होगा। धार्यसम्बद्धाः माप्ताहिक के उत्साही विद्वान् मध्यावक जी की प्रेरणाः सं यह नवा स्तम्भ धारम्भ किया जा रहा है। हम

विद्वान् सम्पादक जो की प्रेरका सं यह नवारतम्भ सारम्भ किया बार हु। है। हम इस लेकमण्या सं धार्यसमाज के दविष्ठा की प्रेरण उद कह नियो द्वारा धार्यकारि के रक्त की ग्यांन का यन्न करेवे। इस लेकमाला में धायमाज के जात धाजात सेवको क जीवन की पटनाएँ वी जायेगी। इनिहास का सुरन्ति रक्तने की यह एक जस्म विधि है। हम दनम जो कुछ भी निकाने सप्रमाण हुंगा।

प्रसिद्ध वाकारी वेस के प्रक्रियुक्त प्रजान मंत्री पर रामप्रसाद जी 'विस्मान के सम्भव्य में तो बहुत से मार्ड जानते हैं कि वह एक दह धायसमाजी वे परत्तु उनके सहयोगी ठाडुर रोधनसिंह जो के बारे में धायनमाज के सर कोगों को भी धाय पड़ जन नहीं कि वह भी एक सिद्धा-तिहरू देवत मनत धार्य पुक्त की बाद काज काउरी में हैं य तो उनके पुज्य पिना जी चल मने । यह समा-चार सुनकर उनके नकती से एक प्रभु भी न पिरा। केवल दनना हो कहा 'सन् मन् तत्तु सत तत नन'।

पासी दण्ड मुन कर भी उन्होंने संध्योगामना वा व्यायाम के नियम को पूर्वेचत् निशाया (फासी पाने से कुछ समय पूर्वे भी सन्ध्या वा स्नान करके एन्हें दण्ड पेसते देखकर जेल प्रीयकारी दम रह गया।

फाडी पाने से लगनग एक सप्ताह पूर्व प्राप्ति मिल को लिखें पत्र में प्राप्तें वह मानिक व त तिसी, 'त्वारा म कम्म लेकर मराना तो प्रवस्य है। ससार में कुकम करके मनुष्य प्रथमें बाप को प्रय-कीति का जागी न बनाये बीर गरते वमन हैरवर का प्र्यान रहे। यही वो बातें होनी महिए। ईंटवर की कुला से ये बोनो बातें मेरे लाय हैं रस्तियए मेरी मृत्यु किसी प्रकार मी सोच्यनक नहीं है। दो वर्ष से बाल कप्यो ते प्रवस्त हैं। इस प्रविध में ईस्वर की जामना का बहुत सण्या प्रव-सर मिला।'

यह ऐतिहासिक पत्र तो आवक्कत की पुस्तकों से मिनता नहीं। इन बीरों के बिलदान के समय स्थ्यी एक पुस्तक से बहु स्थाया। वह पुस्तक विदेशी कासन ने जन्म कर ती थी।

बीर रोधनिंत्रह को प्रयान में कासी दी गई। धाव उस स्थान पर जबाहर साल जी की माता के नाम पर में डीक्स कालेज है। इनके शव की सामा शता तो निकालन की अनुमति न मिली परन्तु यह उसी पुस्तक में लिखा है कि इनका चितम सरकार मार्थ सामाजिक रीति से किया मया।

इनके झन्तिम सस्कार की एक कहानी है। इनका सुपुत्र महाविद्यालय

### तस्यामञ्च-

आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

# आर्यवीर की वीरगाथा-१

लेखक प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, ग्रबोहर

वहां धायतमान चौक प्रयान से धाया धौर कहा कि येरे पिता जी का धनिता सक्तार रेंटक रीति ते ही होगा। सरकार कौन करवायेथा? नवर से दशनजक चल रहा वा तय रि श्री विश्वप्रकाश जी (१० वा।प्रशाद उराध्याय की के हितीय सुरुत) ने कहा, 'मैं चलता हूँ। मैं बरवाडमा।'

विश्वज्ञकाश जी ने १९७१ ई० में हमें समय बताया चाकि रक्त साली भी रोशनसिंह का धन्तिम सस्कार मैंने करवाया च।

उसी मनम्म पुस्तक में निका है कि ठाकुर जी पवित्र भीश्म् अन्य का उच्चा-रस्स क'ते हुए हसते इसते फासी पर भूस क्ये।

पाठक वृत्यां अब जोग क्रांतिका-रियों के सब के समीप भी नहीं फटकरों में, उस पुत्र में क्या कोई साबारण सी बात मी कि दिन जले सार्वजीर वहें जोच से तस्का:रिविष्ट हाव में नियं उनके सितम सरमार को पहुच जाते थे।

बब राजेन्द्र लाहुडी फासी पर बड़े — बीर रामप्रशास वा ठाडून रोखनिश्च के एक साथी राजेन्द्रनाथ में लाहुडी के। वह उच्च निक्षित बुक्त के। ब्राह्मित दिनों में उन्हें गोडा के जैस में रखा गया। वह् मी को ईस्तर बिन्मासी के। पासी बच्च पने बें पूर्व नीता या उपनिषदों का पाठ करते रहे।

धापने धालाम इच्छा स्थल की कि उनका बाह कर्म हिण्डू शील से किया आव । काकोरी के शहीयों पर स्थरी उप-रोक्त ऐस्टिहासिक पुन्तक से यह स्थरा मिलता है कि बोबा के बो नोव उनके शव के साथ समझान जूमि में गये— 'उनये धावचन्द्र सार्यतमात्री सन्त्रन वे।'

इसी पुरतक में निकाह है कि पार्य सनाओं नोग बीर कहींद राकेंद्र सार्य की धर्मी के बान करे स्वर दे वेद मन्त्रो का उच्चारल करते हुए 'गारत माता की क्य- भारत माता की व्य' के व्यक्तारे स्वान हुए सम्बान मूर्गि में पृश्वे। इस प्रकार निर्मीक सार्य वीरों ने स्वर के इस समुद्र का सन्तिम सरकार किया।

सुपुत्र महाविद्यालय धार्यक्षमात्र के इतिहास की ऐसी स्टब्स्टकाम वर्षेचा । कितर्न ही महस्वपूर्ण बटनाए हैं, जिनकी चर्चा आर्थसमान से बाहर वाले तो करने से रहे। आर्थसमान का इतिहास लिखने बालों को भी इनका जान नहीं। हम चाहरें हैं कि आर्थसमान की वेरी ते को कुछ कहा जाये अप्रमान हो। ऐने तच्यों के रका करना इतिहास की बहुत बड़ी सेवा है।

सौर गांबी उसट गई — सभी कस की बात है सार्यसमाय के उत्सवाँ वा नगर कीर्तनों में हमें सहसार बताते हुए मस्ती से गांवे बाले एक सन्यासी को गुनने का सौनाम्य प्राप्त होता था। वह सन्यासी वे व्हित सम्या सी। वह हिरवाणा के एक छोटे से शांव में एक सीता गरिवार में जन्ये से सार्य-समाजी क्वा वने एक संद्रिम पुष्य वस

गये। वैश्व वर्ग के विष् कोई दन बार जेल नये।

वह हमे बताया करते थे कि प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् वह प्रथम बार वांकी भी की पुकार पर जेला में नवे। धबोहर बे कोई बाठ मीख की हरी पर दोतारां बाली बाम ने छन्होंने विरपतारी वी। तब भापने भपना नाम विरवानन्द रखा हुमाबा। इस क्षेत्र में यह प्रथम राब-नैतिक मिरफ्तारी थी। पुलिस ऐसा दुर्ध्यवहार करती वी कि स्वामी जी को रस्सो से बाच कर पुलिस ने अपनी गाडी के पीछे कस कर बांच विया। कुछ दूर ही गये थे कि गाडी उसट गई। मुसलमान बानेदार लाखू को बहुत चोटें ग्राई। ईर ३ र का विधि विधान देखें कि हमारे स्वामी जी को एक भी कोट न झाई। वानेदार ने कर जोड क्षमा मागी कि 'बाबाकी भाग की बददुक्या से "बुके चोटें बाई हैं। 'स्वामी बेघडक जी ने कहा, "मैंने तो नेरे दुर्व्यहार के कारण तेरा बुरा नहीं मागा। मैं तो इन यात-नामों को देशहित में हस हस कर सहन कर रहा हू।" बाइए ! इन बार्य वीरो कास्मरण कर देश में हिंसकों वा कूर लोगों से लोहा लें: (कमश )

## वह देव भूमि भारत यही है

जहाँ सम्मताका सर्वप्रवाग उदय हुआ का सम्मताओं की काननी बारत जूनि यही है कहा जान कासन से पहले प्रकास हुआ का यह देवी की जूमि भारत वहीं है

> बहा विद्या का धारिकाल से सम्मान रहा बाल्मीकि बेदच्यास की मारत पूर्ति यही है बहा विज्ञान का प्रारम्भ से प्रवतन रहा कपिल कवाद व्हरियों की बन्म वृक्ति यही है

बहा स्वाविता की रही सबैव मान्या हिरिस्पन, पुनिस्तर सर वादियों की भारत मुनि बही है जहाँ वानशोलता की सबैव रही प्रतिका कर्ण मामामाह हाज़ियों की मारत पुनि यही है

व्यक्तं मुज्युक्यों का होता रहा सर्वेव पक्षार्थक राप, क्रूप्ल, वयानस्य की कारता भूकि व्यक्ती है बहा बन्म क्षेत्रे के लिए लालासित रहे देवता वह देवभूकि भारत व्यक्ती है।

-- शकुनवन्द विद्यारद, सामगत, वि० रायवरेसी(७० प्र०)

### श्रमृत-कलश

जो-जो भी कोशिय कर करके हिम्मत की पीग बढाता है। इस भाजम में सरदार बने, बढ -चढ के गोभा पाता है।।

> वह कौन सा उकदा है वो वा हो नहीं सकता। हिम्मत करें इन्सान तो क्या हो नहीं सकता॥

गिरे सौ बार भी निजनी सगर किस्ते-सगन्ना पर। जो हिम्मतदार हैं मायूस कब होते हैं हासिस से॥

शिर समा सा कटाइने पर बम न मारिने। मंजिन हमार दूर हो, हिंहम्मत न हारिने॥

श्री विनायक दानोदर सावरकर का परिचय प्रसर राष्ट्रमस्ति के वयकत ज्वासामुत्री, कान्तिकारियों के हृदव सम्राट् के रूप में, शण्डमान की काल-कोठरी में नारकीय यातवाए सहते हुए भी साहित्य सुबन मे रत रहने बासे, हिन्दुत्व के मन्त्रस्टा के रूप में तो देशवासियों को ज्ञात ही है पर बीर धौर स्वातन्त्र्यवीर इपाचि से विभूषित सावरकर जी इस युग कै महान साहित्यकार भी थे। हिन्दुत्व, हिन्दु पावसाही १८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर, क्रोसेफ मैजिनो, सिसी का स्फूरिवायक इतिहास, माम्ही जन्मदेव, रा॰फुने, नीमान्तक उत्शार सन्यस्त सहक नेपाल मराठी भाषा की शुद्धि, उत्तरप्रिया, काला गानी बादि बन्त-र्राष्ट्रीय स्थाति प्रवित ग्रन्थों के रचयिता है। बीर सावरकर केवल भारत के रत्न ही नहीं वो तो विश्वरत्न थे।

सारत के हो नहीं किस्स के इस समूठे क्रांतिकारी विश्वने समने महान् त्याय के स्वराज्य वह स्वधमं को सजीवता प्रदान की भारत के पुनर्शानराय ने ठोड पिन्तन प्रदान करने वाले इस युव पुरुष को जीवन के हर कोन ने सवसी गाते हैं। (१) बीर सावस्कर भारत का पहला खान वा विश्वे देश विलये मारा। (२) बीर सावस्कर प्रवान प्रदान गाता। (२) बीर सावस्कर प्रवान पुनक या विश्वने का विद्या किया। (३) शीर सावस्कर विश्वन वा पहला सीर-स्टर वा सिने परीका गात होते हुए भी

### विश्वरत्न

# स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर

नरेन्द्र अवस्थी-सचालक ग्रायंवीर दल, दिल्ली प्रदेश

प्रमाख-पत्र मही दिया गया, (४) बीर सावरकर पहला भारतीय युवक या जिस ने सन्दन के अन्दर १०५७ के तथाकपित गदर को भारतीस स्वात-स्थ सन्नाम का पुरतक १८५७ का स्वातच्य समर ' को प्रकाशन सं पूर्व ही जन्त कर लिया गया। जिसकी केवल एक प्रति उन दिनो दो सी क्ष्मिकी कोवल एक प्रति उन दिनो दो सी क्षमि के बाजील के एक पाठक न लरीदी

२८ मई १८०५ को क्रान्निकारियों के प्रेरणास्त्रीत स्वातन्त्र्यावीर सावरकर का जन्म दिवस था। बीर सावरकर युगद्रष्टा महींच त्यान-इ जी के बिन्तन से प्रत्यीवक प्रमावित से । मराठा प्रमुखी दिनिक से उन्होंने महींच स्वानन्त र एक लेक्साला भी तिसी। महान क्रान्निकारी देशमनत त्याम जी कृष्ण वर्मा के परम खिष्य वीर सावरकर ते १८०६ से हिन्दी को राष्ट्र- प्राया वनाने की घोषणा को भौर उद् को मात्र मुसलमाने तक सीमित रखने को बात कहीं। उन्होंने अण्डामा की जेल से ही बन्दियों को हिन्दी पत्रवाद सिक्या वे बन्दी साथियों को स्वान खारम किया वे वे वर्मी साथियों को स्वान खारम किया। वे बन्दी साथियों के तहा राष्ट्र विक के कायालय का काम ६० प्रतिसत उद् में होता था उनके प्रयासी से नागरी लिए में होन लगा। उन्होंने भाजादी के बाद परमास्त्र बन बनाने की माग्र रखी। उनके तीन नार राबनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुमों का सैनिककिरण वे देश का उद्योगीकरण परि हिन्दू भमन में लाए होते तो बाज राष्ट्र की सखण्डता को चोट न भ्राती जारत तीसरी शिक्षन वनकर विवस के मानचित्र में उनरता।

नाम विया तथा १० मई १६८७ को १८५७ का अब सताब्दि समारोह स्वत-न्त्रता दिवस के रूप में मवाया। (३)बीर सावरकर विक्त के प्रयम्भेसक हैं जिनकी वी धौर निवसे कानात्तर में कात्तिकारें वन्त्रशेकर, स्मशीत ए-साजम सनतिति व नेताबी सुभावचन्द्र बोस ने प्रकारित कर प्रचार किया। (६) बीर सावरकर प्रथम भारतीय हैं जिनका समियोग हम न प्रमान र्राष्ट्रीय स्थायानय में नवा (७) शीर प्रमान रकर प्रमम क्रांतिनकारी ये जिन्हें दो साम्बन्य कारावाहीं (४० वर्ष को जेल) के बण्ड विसे गये (८) बार शावरकर प्रमम वेशम्य हिनालें रूठ वर्ष पर्यस्त बन्धी बीचन विशाना पद्या और केल से ही सपना सम्पूर्ण ग्रोवन गवाना पद्या। कोस्ट्र मे बैंक को क्याह जुतना पद्या, चूने को बनकी चलानी पढ़ी राम शास मुनना पद्या और को जी शार भी बहुनी पड़ी।

(E) बीर सावरकर पहला कैंदी या जिसने धण्यमान (नालेपानी) मे बेल की दीवारी पर कील की लखनी से (कागज कल्म के श्रभाव मे) ही साहित्य सूजन किया।(१०) बीर सापरकर प्रथम मेघाबी है जिन्होंने कात पानी का मजा काटते हुए, दस सहस्र पविनया को कण्यम करके यह सिद्ध कर दिया कि सुष्टि के श्रादिकाल से द्यार्थों न वाणी द्वारा बदो को क्रिम प्रकार जीवित रक्षा। (११) राष्ट्र के पुनर्निर्माण मे भारत का उद्योगीकरण राष्ट्रका सैनिकीकरण व राजनीति का डिन्ट्रकरण' का ठोस कायकम अन्तुत किया। (१२) बीर शावरकर भारत का प्रथम दूरदर्शी राधनीतिस है जिहान १६६७ में शत्रुपक्ष को बेताया भीर उनकी हर नविष्यवाणी समय की क्सोटी पर सरी उत्तरी।

महान् क्रान्तिकारी की प्रेरक जीवनी, जन द्वारा निकित अन्य पुस्तकें प्राप्ति हेतु व जनके चिन्तन की गोरिंडमो के माध्यम के प्रहम करने हेतु मिनों या पत्र व्यवहार करें।

इस समय दिल्लीकी गही पर अस्ता-उद्दीन सिलजी बादशाह होकर बैठा था। यह बहत पूर्व तथा निष्ठुर शवसाह था। राजपूताने ने चितीड के सिद्दासक पर उस समय राखा जीमसिंह विराजमान वे। श्वसाउदीन ने सुना कि राशा की नहा-रानी पचिनी बहुत ही सुन्दर है। यह पचिन' को किसी भी प्रकार पाने के लिए बढी भारी सेना लेकर राजपूताने गया सीर वितीष से बोडी दूरी पर उसने श्च-ानी सेना का पडाव डाला। उस धून ने राला के पास सदेश भेजा -- 'मैं पचिनी का पतिविभव शीको मे देशकर सौट जाळगा 'महाराजा भीम सह ने इतनी बात के लिए व्यर्थ रक्तपात करना श्रन्छ। नही समका । उनके बुलान पर प्रलाउद्दीन दर्गमे आया। दर्पण मे राना पश्चिनी का प्रतिबिम्ब उसे दिला दिया यथा। मोटते समय राजा उस दुव संबाहर तक प् वाने भाये। दुव से बाहर अलाउद्दीन ने पहले से सपन शीनक खिरा रक्से थे। उन्होंने राजा पर झाज़मण करके उन्हें पक्क किया भीर बन्दी बनाकर भाने

राखा के बदी हो बाने ने चिनाड के

शिविर में से सवे।

# किशोरमञ्च-

# वीर बालक बादल

दुर्ग मे हाहाकार सच गया। बादबाह की सेना इसनी वडी थी कि उससे सीवे सदाम करके विजय पाने की कोई आजा नही थी। धन्त में रानी परिपनी के नामा कोश ने एक योजना बनायी। ग्रसाउद्दीन को सबेग मेजा गया - राभी पश्चिमी बादगाह के पास माने को तैयार है, यदि उनके बा जाने पर वादशाह राला को छोड दें। रानी के स ब सात सी वासियाँ भी धायेयी। याता सैनिक उन्हें रोके नही। बादसाह ने इस बात की बड़ उत्साह से स्वीकार कर निया। साथकास प्रन्थकार होने पर दुवं स सात सी प लकियाँ निकली । बादकाह के सैनिक विजय के जन्माद ने उत्सव मना रहे वे : साही सेना मे बहुच कर रानी ने पहले राजा से मेंट करनी बाही और यह माय भी स्थाकार हो बयी। द्वाप क्या सोचते हैं कि राजी परिपनी पालकी में बैठकर साबी बी?

पासकी मे रानी बनास्त्री बेश में छिपा श्रास्त्र शस्त्र संसुक्तजित रानीका बारह वर्षकासुन्दर भान जा बालक बादल वहा भावाथा। दूसरी पालकियों में भाराब-पूर्तमो ही बैठ व भीर पलका उठान वाले कहारों के वेश में भी र अपूत योद्धा ही थे। राएग को मूक्त करके वा पर बैठ वर कुछ सैनिको के साथ दुस का ग्रार उन्होन भेज दिया घोंगस्वय गलाउड्डान की सनापर शस्त्र लंकर टूट पड । गोरा इस सेना का भनापतिस्य सम से था। बादल ने इस युद्ध मे झद्भूत बारता विकालायी । लेकिन मुटठी बर राजपूत समुद्र के समान विशाल जाही सेना स कव तक लडते। गोरा रणभूगि मे खेत रहा। दोनो हाथो से तलकार चलाकर बक्त सैनिको को गाजर मूली की प्राक्ति काटता हुमा बालक बादन दुव में पहुँच गया। श्रवाउदीन वाहता था कि इस युद्ध

का सम्बार दुव मेन प<sub>र्</sub>च । श्र**वा**नक ब्राह्मण करके वह पश्चिमी को पश्चकर दिल्लीले जाना चाहताचा किन्तु उस बारह वय के बासक ने उसकी एक औ चास चलने नहीं दा। दूग में समाधार पहुँचत ही राजपूर बीरों ने केसरिया बानापहनाधीर निकल पड बस स्वा मातृम्मि पर मस्तक चढाने । बडी कठि नाई से ब्रलाउटीन को विजय प्राप्त हुई । धपनी ध्रमिकाश सेना की बलि देकर जब वह वितीड के पवित्र दुग में घुसातब वहा बहुत बड़ी चिता घाँय घाँय करके जल रही थी। राजपूताने की देविया पापा पुरुष के स्पन्न से बचन के लिए सरिन स प्रवेश करकं स्वग पट्च चुकी थी। धला उद्दीन ने अपना सिर पीट निया। भारत की वह नौरवसयी दिक्य भूमि मतिये के तेज के हाम बीर बालक बादल की गुग्ता एव बलिदान से निय उज्ज्वल है। बच्चे हमे ऐसे वीरों सं शिक्षा नकर सपनी मातृपूमि एव सस्कृति की गार्क न्यस केकर सुरक्षा करनी है। प्रपना भविरय उज्ज्वस बनाना धीर द्रान्या के नामने व्यवना मस्तक ऊषा रखना है।

---प्रस्तोता बलबीत शास्त्री

### १ वेद विद्याएव विज्ञान का भनार है—

वन स विविध प्रकार का विज्ञान है।
सह विज्ञान अजो के माध्यम से हमार कख से प्रवासित था और उसका स्वकोय किसी
न क्लियों रूप से साल भी प्रवासित है।
सहाँच व मा न्यानाद जो सरस्वती ने
स्वान्न घोषणा की कि वेन से सल जान
विज्ञान वीज रूप से हैं भीर बज को रुदीबादी गत स निकान कर विज्ञान के सहाया साल कर स्वासा साल के समय से यज्ञ की वज्ञानिक उपसालिता का स्रमुख्याना योरोप बीर स्मारिका सहात की येर असके सुज रिणास सनक शत्र से प्रतीत होने करों हैं।

### २ यज काय वैज्ञानिक है-

वेद मे यज्ञ को विश्वभिषक कहा है। भर्यात् यन द्वारा समस्त विन्व को स्वास्थ्य भायुत्रवन प्राप्त होता है भ्रीर समस्त रोगतया रोमो क कारण त वो का प्रदूषस्तो का निवारस भी होता है। प्रत किस परिस्थिति मंकीन सायज किस प्रकार कर इसका विचार करने से ही यज्ञ विज्ञान का विकास करने म सफलता प्राप्त होगा यज्ञ के ३ प्रधान धग है १ सकल्प २ मन्त्र भीर३ ब्राहृति। सकल्प के बिना यज नहीं हो सकता मन्त्र के बिना भी यज्ञ नहीं हो सकता और अन्ति में हु॰य पदार्थों की आहुति दिये बिनाभी यज नहीं हो सकता। इन इन तीना का समन्वित काय यज्ञ हे। सकल्प होने पर हायज्ञ सम्भव है। यही यज्ञ का भाषार स्तम्भ है वेद कड़ता है —- धानो भद्रा कतको यन्तु विस्वत । यज् वेंद २५।१४। बर्यात कल्यालकारी यज करने के विचार सब ग्रोर से प्राप्त हो। जब विकारों में निमन्त क्लि उपे करने के निए उद्यत हो जाता है तो वह सकल्प हो जाता है।

### ३ यज्ञकाय में मन्त्रको प्रचानता-

लौकिक ० थ बहर मंग्रज का स्रव विचार भी है पर तुयज्ञ की परिभाषा मे इसका ग्राबद के ही मंत्रों से प्रधान रूप से बहुए। किया जात है। मत्र ६३ यात्मक होते हैं। ध्वनिका प्रभाव जड चेतन जबत् पर धवस्य हो<sup>डा के</sup> लोक में प्रस्यक्ष इट्ट है कि विकृत विनयों के उच्चारण एव प्रसारता स मननिक विकृतिया उत्पन्न होती है। बीररस वा ब्वनियो स बीरता का सचार प्रमरस की ध्वनियो से प्रम नान्त रस की व्वतियो स शानि शोकभात्रपूर स्त्रनियों **से** तोक का प्रसा रण होता है भीर वह प्राश्यि के मन स्तन्व पर प्रभाव करता है। मन क प्रभा वित होने परतदनुरूप वृत्तियों की उत्पत्ति होती है भीर वृत्तियों के अनुरूप ही कर्मों की प्रकृतिया उत्पन्न होती हैं। बत ग्रुम

# यज्ञ - विज्ञान

### लेखक श्री प० वीरसेन बेदश्रमी वद विज्ञानाचार्य

विचार पूर्ण म त्रो से शिव कल्या एकारी कर्मों की विक्व मे वृद्धि समृद्धि बाहु स्यता और स्य पकता धवस्यम्भावी है।

### ४ मत्र छन्दोमय है-

वेद काप्रत्येक ग्रक्षर चरण पश्चित व सम्पूरा मन्त्र छ दोमय है। उनमें सव श्रक्तिमान् परमात्माकी गुप्त शक्ति व साम-८० निहित है जो यज्ञ काय से क्रिया शील हो जाती है। छन्द नियत ग्रक्षर या मात्राभी में निबंद होते हैं। नियत बंबार पद छ दो के नियत स्वरों के व्यन्धारमक ग्रावनन से घ्य यात्मक मण्डल की उत्पत्ति होती है तथा उस मन्त्र के पून पून साथ तनचक्र या जप से चाहे वह जप मानसिक हो य व्यासक उसका मण्डल उतरो त्तर चन वपूरातया गतिमय होकर विशा लता को भी प्राप्त होता है जिससे प्राणियो मं उनसे स्वाभावत विलयो एव कममय प्रवित्यो का प्रवाहचजने जगता है अत यज्ञ मे सकल्प एव तदनुकूल मात्री का पुन पुन बावृत्ति से मन्द्र का प्रभाव तेज होता जाता है और छन्दात्मक मण्डलो की सुष्टि होने सगती है।

### ४ छन्दात्मक मण्डलो का निर्मारण−

खद बद्यपि प्रधान रूप से ७ हैं परन्तु इन सातो छन्दो को भी प्रमुखता से तीन विभागों में विभन्त किया है। ये तीन विभागही मू भूव स्व हैं। इक्ट परि भाषा मेय गायत्र मण्डल क्रिन्ट्रुप मण्डल भीर जागत मण्डल हैं। इन्ही मण्डलात्मक प्रभावों की विद्धि के लिए गायत खन्दमा रोह तैष्ट्रभ खन्दमारोह जानत खन्दमा रो " बदबा गायत्रण त्वा छन्दवा सादयामि जागतेन त्वा अन्दसा सादमामि प्रवका यायत्रण त्वा सन्दशा मन्यामि तैष्टु भेन त्वा छन्दसा म मामि, जागतेन स्वा छन्दसा म शामि — की प्रक्रिया का यजुबद मे धनक स्थानो पर उपदेश है। इस प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी क्षन्तरिक्षासीर बुलोक म प्रपने मनोवास्त्रित विवारी की व्याप्ति की जाती है।

### ६ मण्डनो त देवतत्त्वो एव प्रारागो का कियाशाल एव शक्ति सम्पन्न करना—

्न म इलो के मिन बायु एव भूय देवनत्त्व हैं। इनको भी सतेब करने क लिए प्रिन का दूत बना कर मिन दुत पुरोदथे। युवन २१ (थे। यबाथ घरने को स्वापना मध्ये सम्मुक्त नुभूव स्व सन्त्र से प्रिनोको को प्रभावित करने के लिए करनी पड़ती है। पुत्र उक्त प्रयुक्ष बड़ानि में तीनी महाव्याहित वाँ स उनके देवत तत्वों के साथ उनके सबिध प्राण प्रणान और क्यान रूपी विकल प्राणों के लिए साहृतिया वी जाती हैं। वर्षात् यक्ष हारा समस्त कहागढ़ या निनोकी के प्राणों को क्रियातील गुढ़ एवं पुष्ट पुष्ट किया लाता है। इसिल्य वेद ने यक को विवस्त साला है। इसिल्य वेद ने यक को विवस्त साला है। इसिल्य वेद ने यक को विवस्त साला । यजुनेंद रीरा कहा है धर्मात् यक्ष सहार का प्रणान सक्ष्य है। विवस को महास्माहृतियों उनके वैतर तत्वों सीर उनके ति व प्राणों क लिए साहृति नहीं वह यक सम्पा ही है।

### ७ यज्ञ का त्रिलाकी में गमन-

वज्ञ की यह प्रत्यक्ष एवम् श्रस्यन्त नड स्थिति है कि वर्डा चड्ड एक्स् अनु मान प्रचीत् सूक्ष्म प्रतिसूक्ष्म एव व्यापक रूप से समस्त बिरव ने स्थाप्त हो जाता है। यजुर्वेद शब्याय ५ के १५ व मन्त्र मे यक्र की इस स्थिति को प्रकट किया नया है। बहाकहानया है कि — इद विश्ल विचक्रमे — बर्चात् यज्ञ प्रारम्भ होने पर बहुयज्ञ क्रमण उत्तरोत्तर वित करता हुद्रा। त्रचानिदवे पदम्-पृथ्वी श्रतः र धौर बलोक भपने स्थान को प्राप्त करता है सर्वात् स्थिति को प्राप्त होता है। --- समुदयस्य पासुरे--- सर्वात् यज्ञकी यह स्थिति नागत्र मण्डल त्रिष्ट्प न्रष्टल **भागत मण्डमो मे** या भू मुद**स्य मोको** मे बस्यन्त गढ गुप्ता एवम् बनुमानयस्य है। विज्ञानगम्य है। तात्पय यहहै कि यज्ञ को केवल धूम की ऊचाई स नहीं नापा वासकता। वायुकी ऊर नाई से भी नहीं जाना जा सकता। उसकी व्यापकता विवत् सूय रश्यि और प्रकास के समान व्यापक स्विति को समभक्तर जाना जा सकता है।

### दयज्ञ से सुख की प्राप्त<del>ि</del> –

यक किय जाने पर यहाँप वह ती तो नोकों में न्याप्त हो जाता है पर पु वह नव नवार से पूप प्रतिवद्यानी होकर हमें सुख प्रदान करता है। ऐका वेद में रास्त्र बताया है। जैना कि —यहो देवाना प्रतिवद्याना है। जैना कि —यहो देवाना प्रतिवद्याना प्रवृत्य प्रमाद स मन्त्र प्रवृत्य के सात है पार धारिया वा मित्र प्रवृत्य के सात है पार धारिया वो प्रवृत्य प्रयाप करता है। इसी प्रकार —पूर्व विश्व प्रयाप करता है। इसी प्रकार —पूर्व विश्व परात सुपूर्ण पुरापता वा प्रवृत्य कुरार प्रवृत्य विश्व हो स्वार क्ष्य प्रवृत्य करता है। इसी प्रकार —पूर्व विश्व के से से से से से से से सहस्व विषय हमी प्रवृत्य प्रवृत्य करता है। इसी प्रकार —पूर्व विश्व स्वार सुपूर्ण पुरापता सुपूर्ण सुरापता सुप्त सुरापता सुपूर्ण सुरापता सुप्त सुप्त

क्षीर सम्बन्ध पूछ होकर प्राप्त हो जाती है। किस प्रकार से प्राप्त हो जाती है उद्यक्षिय गण के दिशीय परणा में उदाहरण यह प्रस्तुत किया है कि बींचे बाबार ने सरीरते हैं वैसे ही यह के द्वारा श्री शुक्षों को सरीरत हैं। समृत्य से सुको की प्रार्थित प्रस्थक केस में होती है। सत प्रस्थक काय के प्रार्थन में यह का सनुष्ठान समझ्य करणा चाहिए।

### ह यज्ञ का महान् फल विस्व मे माधुर्यता का प्रसार-

यजुर्वेद धाव्याय १३ के २७ से २६वें मन्त्री मे बताया है कि यज्ञ के सम्पन होने से माधुय ग्रायुक्त धर्वात् धनकूल बायुष्टी का प्रवाह चलने लगता है। नदियी में करनों में मधुर रस का सचार होता है भीर भन्न वृक्ष वनस्पति बनादि विष रहित रोग रहित होकर सब मधुमुक्त बीवनदायी हो जते हैं। यज करने से रात्रि धौर दिन सुन्दर उचा ये सब सब कारी हो जाते हैं। पृथ्वी के कम कम मे चूलि से सच्चरता उत्पन्न होती है सच्च रता उत्पन होने धूल में जो विश्व सनता है वह नष्ट होकर परत्पर धाक्ष्यता से रेनिस्तान माग उत्तर सूमि मे परिवर्तित होने लगता है और रेनिस्तान स्थिति नष्ट होने लगती है तथा खुलोक जो अपने अतिताप से पार्चिव शक्ति का हास करताहै। वह भी साधुय गुणयुक्त प्रिय एव बनुकन शक्तियों से शिता तुल्य बर्चात् पासक और जनक शक्ति युक्त बन जाता है। इस प्रकार विश्व की बनस्पतिया धन्न बुक्ष फल मूल कन्द एव वन तथा समस्त पर्यावरण मधुर वन जाता है। सीर शक्तिया भी बाधुय बुरायुक्त अनु कुत हो बाली हैं और नी खदि पशु भी माषुय नुरायुक्त शमतमय दिक्य दूध के देने वाली हो जाती है। प्रत बज से समस्त वर्षावरण अपने अनुकूल बन जाता है ऐसा सुन्दर बझ का मुगम विज्ञान है।

### १० यज रे पल प्राप्तिका एक ग्रद्भुत प्रकार--

वजुर्वेद प्रदमाय २। सच २५ से बताया है कि जमती छ द के सभी से यज्ञ करने पर यज्ञ खुलोक से पृथक्ता है। जिब्द्य सम्द के मन्त्री से बन्न सम्तरिका में प्रचता है भीर नायती सुन्द के मन्त्रो से यज्ञ पृथ्वी में फैसता है। पून इ ही स्थानो संबह और सूक्ष्म एव विभक्त होकर सब को पस प्रदान करता है। व्यवती द्वन्द क मन्त्रों सं किया यज्ञ सुक्षोक पर सूत्रप्रकाश को प्राप्त होकर जनत की तृप्त करता है। ध तरिक्ष मे पहुचकर वहा से जल विभाग की प्राप्त होता है तो बायु और वर्ष बन की सुद्धि करता है और पृथ्वी पर पट्टच यश विविध प्रकार 🖲 पुत्र की वृद्धि करता है। सर्वात् यज्ञ जब पृथ्वी पर किया जाता है तो उत्तरी त्तर बारोहण क्रम से सूक्ष्म ती ही बाता

### यज्ञ-विज्ञान

है, परन्यु छन तीनों स्थानी से घीर भी स्कम एव सामध्यं वान् होकर एक नये वर्षावरण का, जीवनीय पर्यावरस का निर्माण करता है। इसी को प्रकारान्तर से श्रजुर्वेद प्रध्यास ८, मन्त्र ६० में निम्न प्रशार संकहा है — कि यज्ञ खुलोक मे यह बकर दिव्य भोगो को प्रदान कराता है। उससे हमें द्रविस्प, धन, सुब, ऋत्वनु-कल मोग प्राप्त होवें। यह यज प्रन्तरिक अण्डल सीर मनुष्यों को प्राप्त होकर बक्त फल प्रदान करता है। पृथ्वी धौर ऋतुक्षों को प्राप्त होकर यज्ञ उक्त सुख प्राप्त कराता है-बत यज्ञ वहा कही मी किमी सोक मे पहुँचता है वहा से हमारा कस्य सा ही होता । प्रयात् यज्ञ करने क्षे पदाध नष्ट नहीं होते घीर न किया ही निष्कत होती है -- प्रपितु सब घार से कल्यास ही होता है।

### ११ ब्राहृति शक्त-

🗪 ४.शिन हब्ध बाह्क है । प्रत इन्छित को कः प्राप्ति के लिए हब्य पदार्थों का ज्ञान मावस्यक है। राग, प्रदूषण, विकार द्यादि निवारक कार्यों में किन हुव्य द्रव्यो से लाभ होता है। बायु मण्डल की पुष्टि किन द्रव्यों से होती है, ब्रतिवृष्टि, बना-अपूर्तः किन द्रव्यो से दूर होती है, इत्यादि **ब्**व्य पदार्थ विज्ञान का ज्ञान सावश्यक है। तभी यज्ञ कार्य मन्त्र सामस्य से विशेष फनदायक होता है। यज्ञ का विज्ञान यज्ञ पद्धति इष्ट कार्यानुकूष क्षमकाण्ड तका हुव्य पदार्थी के ज्ञान पर श्राधित है। दिना इस ज्ञान के यज्ञ करने मात्र से इष्ट फलप्राप्ति सम्भव नही। प्राचीन ऋषि महर्षि वेदी से घनेक प्रकार के यज करते थे और उनसे फलप्राप्ति होती बी। इसलिए उन्होने कहा-सर्वेम्पी हिकामेण्योयज्ञ प्रयुज्यते — सर्वात् यज्ञ की सब कामों के लिए उपयोगिता है और श्रमानता है।

### १२. यज्ञो काविभाजन~

यज्ञो का विभाजन निम्न प्रकार है-

१ — रालकृत विशाग न सर्वाचत, २ — स्वान्तिस स्वाचित है — राष्ट्र सर्वाचत, ४ — साम्रिक सावयवस्तानुसार। किसी श्रम स किसी भी फल की प्राप्ति मान सेना बस विज्ञानका तिरस्कार करना है। विविध प्रकार के दशों में सामान्य प्रचाली तो सावस्त्र एक से सकती है परन्यु स्वान शबन में तो मन्त्र मेस, उच्च भेद एव क्रिया मेद तो पृषक् होते हैं।

कालकृत विभाग से सम्बन्धि सभी में वित्तक सम्बन्धित नाव, प्रात की काल स्विथो में, पश्च प्रश्न सम्बन्ध घोर पूर्णि-मार्थों में, चातुर्नीस्य साम, सम्बन्धान, स्वत्यस्वरिक साम, पर्ववाम, नवरात्रवास ये तन कालक्कत सिषयों से सविकत यक्त हैं। इनसे प्राकृतिक पदार्थों से शक्ति की वृद्धि एवं घपनी धाष्यास्मिक समितयों की वृद्धि होती है।

व्यक्ति राष्ट्रया कामना सबिधनयज्ञ –

इन यजों का ग्रापोजन व्यक्ति विशेष के भायू से सबचित होता है। जैसे विवाह सरकार, बजोपतीत बदारभ गर्भाषा-नादि वोडस सस्काराय यज्ञ होते हैं। वे **व्यक्तियों से सबक्ति हैं तथा राष्ट्र सब**-चित यज्ञ राजसूव धश्वमेषादि है। व्यक्ति-वत कामना एव सामृहिक कामनाधी का पूर्ति के बिये किये जाने वाले यज्ञ काम्य यज्ञ हैं। व्यक्ति कामना राग कब्ट निवा रहा बस ऐस्वय प्राप्ति निमित्त कास्य यज होते हैं और सामृहिक कामना जैस वृष्टि कराने, भतिवृष्टि निवारशाय आधी तूफान भावि की शान्त्ययं, सामान्य एव विशिष्ट स्थानो मे प्रमुख प्रदूषसा निवा-रलायं, सर्वेशीस्पप्रद यज्ञ झावश्यकता-नुसार मिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ कल्प पद्धति से होते हैं तभी उनका साम हाता है । सर्वात् श्रीतवामी का फल समग है। स्मालयागी का फल बलव है बीर काम्य बज्ञों का फस प्रतग है। यह स्पष्ट समधना चाहिए । प्राकृतिक प्रदूषसा, वैचारिक प्रदूषण तथा वैज्ञानिक, ग्रीखो-विक रासायनिक प्रदूषण इन सभी की शान्ति स्वापि यज्ञ से ही सम्भव है तथापि उनका धायोजन यज्ञ विज्ञान पद्धति से ही कल्पना पूबक होगा तभी सफलता होवी ।

यज का प्रधान हव्य द्रव्य-घृत-

यज के हविज्ञक्यों ने युत ही प्रयान है। यदि पुतनी का हो तो सर्वाधिक बेच्ठ है भीर प्रभावकारी है। मृत का नाम प्राज्य है। प्राज्य का सर्व है—सा समन्तात् लोकान् जयति भनेन -- धर्मात इनके द्वारा नोड सोकान्तरों के प्रदूषशा रूपी बसर तत्वो पर धांबी, त्फानो पर विजय प्राप्त होती है। इसनिये युक्त की बाहतियों ने समस्त पर्वावरण का शोधन होता है। यूत नाम इसका इसलिए है कि वज्र में इसकी बाहुतियां विशेष प्रमाण में देने से वर्षातया कामनाशो की पूर्ति करता है। इससे वें प्ति होती है भीर वैद्यु-तिक नमोमण्डल मे व्याप्त विख्तु खनित को प्रदीम्त करताहै। युक्त का नाम सर्पि भी है। जब यह बज मे प्रयुक्त होकर झन्तरिम मे गति करता है तो इसकी वित सर्पकी नित के सदश तीव होती है और ग्रपने साथ हुच्य द्रव्य के प्रशा को भी विविध लोको में से जाता है। तेस बादि या भैंस, बकरी भावि के चूत ने तीनो सोको ने फैसने की शक्ति नहीं है। केवस

वायत्र मण्डल तक ही व्याप्ति की सामर्थ नी के प्रतिरिक्त वृत एव तेसो में है।

भ्रन्य हवि द्रव्य-

वेद से चुत के प्रतिरिक्त हुन्य का प्रयोग भी करने का बादेश है। क्ला सुवन्तित पक्षार्थ रोबनाशक पदाय, पुष्टि प्रदाता, मासुर्य प्रसारक द्रव्य जीवन प्रदाला द्रश्यों की हिंब प्रदान करनी चाहिए। धवर्षवेद में निका है कि जिन धोर्षाध, बनस्पतियों का सेवन गोएँ करती है बराह और नमुक्त धर्मात् नेवमा करता है उन सब को यक्त में प्रयुक्त करने से रोग की धनाध्य रिश्ति नष्ट होनी है धोर जोवन तथा ग्रायु प्राप्त होनी है।

.

# कौन कमी है ग्रपने हिन्दुस्तान मे

धन्तर दिसतानहीं बाग दमशान में, तनातनी हे पूजा और धजान में । ऋगडा होता बीता और कुरान में, कौन कमी है स्रपन हिन्दुस्तान में ।

नेताकी नारों से रिस्तेदारी है हाठों पर बादे मन में मक्कारी है। रोम रोम पर दुव की पहरेदानों है, देवामस्ति के चोने से बरारी है। सविधान के पन्ने पाठ बाते हैं सामिस्तानी मन्याव बाते हैं। निरपाय हत्याओं ना दिसादिताचने, कभी स्वस्न गुवरात कभी पवाच बना।

दूध नहीं बच पाया तेज उफान में च्हेचूंसे हुए ग्रपने सभिहान में। स्थासुस मिल पायेगा लालिस्लान में कन कमी है ग्रपने हिन्दुस्तान में।

> हिन्दी की किन्दी बाथे पर नगी नहीं, ऐसा नगता है घंभी गुनामी भगी नहीं। कृदिया से घर तक देशाली मनी नहीं, भारतमाता घंभी बुद्दा पिन को नहीं। वेदनागरों का वर्षस्व घंभूरा है। घंभी चंपीकत तुनसी, कदिरा, दूरा है। हिन्दी हिन्दुस्तान नहीं घंपमोंवा, तो क्या घरव उमें विर पर विठायेगा।

बल्दी हम सब जलते हुए मकान के, मुदेंजिल्दा होने लगे मकान मे । समृत ढुढ रहेबिय की दूकान से कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे ।

कुर्जी ने भोक्षापन कसकर पनक किया, कम्बल ने तराकों को पिर जक विस्ता। सपनी सपनी साझ सकी को पत्नी हुई कुर्ती वनी पिराय बाहुई छत्री हुँ। जो कुछ बापो कुर्जी से मिल बायेगा, स्वाहस्था कुल फिर से जिल बायया। जनका ने करकरियों का प्रसंस बनी, बने ककाई नशा अनका नाय वनी।

कितने हैं पैबन्द बाब ईमान में, छेद बहुत हैं प्रपने इस बलयान में। इन्ह्यानो सी बात नहीं इन्सान में, कौन कमी है घपने हिन्दुन्तान में।

बर्म और कानून हो गया सचा है, विना कफन मधी है टूटा कन्या है। ऊपर ते हर कोई राजनीयदा है। बना करन करना तनो का बया है। बनी नहीं है बेटी कुर्मी मेच के, सहसी हुई हुन्हन है हुन्द यहेज से । रोनी रहना नहीं लिक्क गरहेज से, सपटे उठती है बुहान की सेज से

सुद को स्रापारहे हैं फूठी शान में, पड हुए हैं ताले तेज जवान में। खुड़ी हुई बैठी है मौत अथान में, कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान में।—

> रोज-रोज प्रव जलने सवातिरवाहै, मानो यात्रत मानो यह तच नना है। लेक्ट बाढ दम की होता दगा है, यो वो पाप वकी वेचारी गया है। पियल रही बाहो के कचन जगा है, बग याज हो गया बहुत वेडबा है। कदम कदम पर कितने विल्ले रगे हैं खायु-सन्त, नेता हो गयं लक्ष्में है।

बहुत बेसुरापत है धपनी तान से, क्टेपल सह्वीनी नहीं उडान मं। जाते नहीं शब्द बहरों के कान से, कौन कमी है धपने हिन्दुस्तान थे।

> प्राच्यापक सारस्वत मोहन मनीवी स्नातकोत्तर हिन्दी विवाग डी० ए० वी० कानज, धवोहर (हरियाणा)



व्यामपीठ---

## उपनिषत् कथा-माला-५

# ईश्वर दर्शन

### प्रवचनकर्ता-वीत गग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

म्रो विक्षानि वेव समिनर्चुरितानि परासुव । यञ्जूत तन्त्र मासुव ।।

--- यसुर्वेद

उपनिषद् स पण्यं त्या की इस ज्या-स्था की ब्यान से लग्ग्र कहा नै। एक स्थी प्रवित्त वह पण्यात्मा हु। इस स्था सब को ब्याम स्थान वाला है। इस सन्त्र की याग्य में क्लाभी क्ष्यवुक्त हु। इस से पहल इन्हें कि स्थायात्मा इस से पहल इन्हें कि स्थायात्मा न तो स्थान न्यान मा विक्रम होता है न परिखास मा बाता है। द्रभावद् वह एक है। उसने स्वर्ण मंदिव एक हा भवस्था देखने।

बुँडमानो क सेतो का भी कुछ न कुछ साथ हाता है। इस निनेनाको को साथ बार्न बुँडिमान् मनुष्य बेसे तो उनमें भी कोई न नोई शिला निवास सकता है। उपनियाने ने परमान्या को बरासाने के सिक्ष यह सिंढ किया है कि यह एक है। गणित में जो दो को स्वस्म होनी है, उसमें भी एक सम्मित्त है इसी प्रकार सीन से जी, बार में भी एक सिना है। एक बार्णक परिसात है। एक साथ परिसात नहीं। कांग्य पर एक सिस्ती। बहा सस्या और सास्य दोनों ने एक ही है। अत्यव परमात्या एक ही है।

क्या जारतीय, क्या जापानी, क्या धमरीकन सारास को भी कोई है सब निस्तकर एक ही परमास्था की उपासका करते हैं। कोई वो की या तीन को नहीं करते। कोई उसे ही 'बीड' (God) कहता है, कोई ''परमास्था', कोई ''खुदा'। किन्दु कह है तो एक ही।

धन देखों । अभी कहते हैं कि बच्चों को माता पिता की बाजा पानन करनी बाहिए । बच्च तोपें कि कही रोखा धान न करनी बाति को कोनों में मेरा कीई ऐसा धान न बाते जिसमें न दु जिन हो । ' रसी प्रकार माता पिता को धान उच्चों का विवार रक्षें । देशक स्वामी की माज-पानन करता है तो स्वाभी भी नवक की बात मानना है । राजा प्रजा की तथा प्रचा राजा की तथा प्रचा स्वाभी में प्रकार के स्वाभी की धान मानना है । राजा प्रजा की तथा प्रचा स्वाभी वात सुनी प्रोप्त मानती है । स्वाभ की धान से प्रचा स्वाभ के स्वाभ के स्वाभ के स्वाभ के स्वाभ के स्वाभ करता है हमें भी के क्षण परमाला है । सामने ही धपना मरूक फूकाना वाहिए । खाने ही 'पदा भी धाने वा करते वाला

है? आग नया नयी बन सकते हैं? अब आग वनी हो जायेंगे तब अक्वतिका खाक-मण साथ पर न हागा। जब जीव निर्माल्य हो जाता है जब यह स्थित हो जाता है, जब यह प्रकृति के प्रभाव में नहीं रहता, तायह एक नियम है कि तभी जस पर प्रभु को क्या होती है तब ही जाकर बहु बसी बन सकता है सब्देत मुक्त हो तकता है। परन्तु यह नव होता है अब वह उस प्रभु को अस्ति करें।

सब प्रस्त यह उत्तरन ह्यां कि हम सुबी कव होंगें 'पुरुवास करों ! मुझ आप्त होगा। सामसी मतुष्य ही समार से सर्वेद उस उठाता है। हिन्दुस्तान सुखी क्यो नहीं 'स्थांकि स्यू पुरुवार्थी नहीं, जब पुरुवार्थी होगा तब ही सुबी हो जायेगा। माई! सहार सुब के चिन्दहीं

इससे भी बढकर परमेश्वर की।प्रप्ति के सिए पुरवाय होना चाहिए। ईश्वर तो सब का पिताहै। एक पुरुष के दो नक्षे हैं पिता से वे दोनो रुपये मानते हैं। पिताक हता है ''बाई सुनो <sup>।</sup> श्रव तुम वायान हो यह सब कुछ, तुम्हारा ही है परन्तु धमी मागना ठीक नही। कार व्यवहार करो, कमाधी और साधी। एम लडका वसना वडा निपुत्र है पर दूसरा हेमन्त निर्वृद्धि है। बसन्त ने सोचा, 'पिवाबी की भागा है कि नमाना चाहिए। दुकान के नियमी पर व्यान देने सवा। प्रातकाल दुकान पर श्राता दुकान को शावणानी से ठीक भीर साफ रसता । सब प्रकार साववान रहता। ग्राहकों से प्रेय-पूरक पोलता बाजार का माव ठीक-ठीक बताता। बहु नहीं कि जो मान निमा समासिया । एक भाव पर बाजार के साथ चनता । साम कम रसता, सन्ध्या-समय लक्षा करके घर जाता। सब ग्राहक कहते, "बसो भाई । बसन्त की दुकान पर चलें '। ब्राह्क उसके पास बाकर बढी प्रसन्तता से बैठते। साल भर में सर्च कम किया, दुकान से कमाया आहुव । माल औ बागे ने विवक भर सिया, पांच शास शी रुपये भी जमाकर लिये। सोव भी बडे प्रसन्न, पिता भी महा धानन्दित धौर बाप

धव दूसरे शब्के हेबन्त की सुनो। उसने विचारा, "पिता ने स्पवा दिया है सूद मौज करो"। उसकी वेसनमधी वेस- कर बुरे लोगपास बाने सने । भग, शराब, पीनी बारम्म कर दी । प्रतिदिन सिनेमा वाता, दुकान पर ब्राहक बाते, उनसे मसी प्रकार ध्यानपूर्वक बात भी नही करता। बैठा ताश केलता रहता। उसी में मन्त का ब्राहरू दूसरी दुकान पर कसा चाता। एक वर्षमे ही सारा रुपया दर-बाद हो गया। प्रव मीची पिता के दोनी पुत्र हैं। एक पर पिताकी प्रसन्तता है दूसरे पर सप्रसन्तता । नशी प्रकार पर-मातमा हम सब का विता है भीर हम सब ससार में रहन वाले उसके पुत्र है। जो उसकी भाजा पर चला उस पर तो पर मात्मा की कृपा दिलाई देती है जिसने उसकी माजा ना भग किया उसी पर उसका कोप है।

यह तुम्हारा कार्य है लोहे को तो तुमने नहीं बनाया परम्तु इञ्जन को तो तुमने ही बनावा है। इसी प्रकार पर-मात्मा ने सब को सोहा वे विया है, उसको ठीक बनाना और काम में काना वा न भानातो तुम्हारे सपने समिकार वें है। यदि योग की प्राप्ति करता चाहते हो, तो वह को क्यी परमास्था है, उसकी प्रार्थना करो । पहुंचवान बनवा चाहते होतो किसी पहलवान के शिष्य बनी। यदि मनेजी सीश्वनी है तो किसी श्रोफेसर से ही सीकनी पढेगी, गाना खीकना है ती किसी रावी के पास ही जाना होता। बाप ने सब गुण विश्वमान हैं, पहलवानी भी है, अग्रेची मी, राग भी । परन्तु इनके लिए किसी की सहायता की आव-क्यकता है । बदि तुम वसी बनना बाहते हो, तो परवात्मा की उपासना करो।

धव प्रश्न होता है, कैसे करें <sup>7</sup> सर्व-भूट भ्रात्मा परमारमा तुम्हारे भन्दर है। प्रमुको बाहर कहां दूदते हो <sup>?</sup> न वह ब्राकास पर है, न द्विमासक पर, न समुद्र मे, वहतो तुम्हारे अम्बर है। परमास्मा कहता है ' न मैं घासमान पर हू, न समुद्र वे, बाहर कही नही हूं। केवल ऋषियों के मनो में ही मेरास्वान है" ऋषि कहते हैं बोगी को, सच्चे स्वानी को । सच्चा त्याव विस मनुष्य के पास है|बह सबस्यमेव मुक्तिकी धोर वाता है। झावकस तो स्वान-स्थान पर रहट समे हुए हैं। पहले कुछो पर वरस होते वे । कुए से वानी सेंचने वाला चन चरस ऊपर भा जाता वा, वो उसे पाँच भारता था, इसकिए कि चरस कमर कुएं की मुबेर के साथ टक्कर

न साथे भीर था बाये। इसी प्रकार को स्वाय करते हैं वे कहते हैं 'इटाधो ! इटाधो! सब इटाधो!

एक सच्चा साथुथा। बनाबट और विसायट का उस पर कोई प्रमाय न या। वह एक बृहक्यी के घरवया, वहां एक दिन रहा। दूसरे दिन नहां से चन पना ! उसने कहा, 'महास्था जी ! ध प दरिया के पार जाना चाहते हैं परन्तु वाट वाले पैसे निये बिना पार न जाने देंने ।" साधू ने कहा, "भाई हिम कह देने कि हम साधु हैं। हम फकी रों क पांस पैसे कहा ?" उसने कहा, "वे न मानेगे।" उसने बहु-तेरा कहा परस्तु साधुने उससे एक पैसा र लिया। उस झादमी ने चुपके से मठली साधुके पस्त में बाध दी। महामा को ज्ञान भी न हुआ। भीर वह दरिया की भोर वस पदा। वह पुरुव भी पीछे-पीछे हो सिया । साधु दरिया पर बहुआ। मल्लाहस कहा, पारकरदा। उसन कहा कि 'पैस निकासा। साबुन कहा हम फकीर है, हमार पास पस कहा?" उसन कहा कि बैठ आधी। कोइ बना पुरुष बाएवा तो उनसे मागकर द देना हम तो पैसे बिय बिनान जाने देंगे।" साधुन कहा, 'सभी सही श्रीरवठ गया है धकस्मात् मल्लाह की बच्टि क्षप्ट पर वर्ड । उद्यन कहा कि 'बाबा तुम ता कहते हो मेरे पास बुध नहीं। परन्तु यह क्या वधा है<sup>?</sup> उसने कहा, 'आर्ड़ी को है तुन ही कोल मो। मल्लाइ ने कालाबो धटन्नी निकली । **उ**सने कहा 'बाबा सुम क्ठ बोसते थे। 'साधु ने कहा, मैंने क्ठ मही बोला।' अब मल्लाह किश्ती पर व्यक्तकरपार करने लगा उधर से बह बृहस्वी भी था नया । उसने कहा -- "महा-राज । देसा यह घठन्ती जो मैंने बाच ही बी, उसी ने पार किया । यह न होती दी धाप पार कैसे चाते ?" साधु ने कहा, "बाबा । यह कमबस्त कव तक बधी थी, क्रमी तक मैं पार नहीं जा सका, जब सुज वर्ष तो पार हो नया।

इसीसिए "ऋषि सच्चे त्यामी 🛶 कहते हैं। ससार में बनावट के काम सब विगड जाते हैं। परन्तु परमात्वा के काम । तो नहीं विगडते। उसकी घोर सच्चे भाव से बढ़ो। जैसा कहा है कि ''परमात्मा ऋषिके मन मेहै।" तुम ऋषि बन जाको । वह स्वयं तुम्हारे मन मे श्रा जायेगा। एक मनुष्य घरन मे बैठा हुआ। भी त्यान करके ऋषि वन सकता है » कारण, परमात्मा सर्वेन्यापक है। सभी जगह है, कही तिनक-सी जगह भी उससे लाली नहीं। उसे प्राप्त करने का श्वान तुम्हाराधन्तकरसाहै। इस स्वानकी तो तुमने कभी स्वच्छ ही नही किया। जब तक सन्त करण स्वच्छ न हो तन तक बरमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती > भन को पवित्र बनाओ। मन की पवित्रता में ही तो वह है। परनेश्वर को पाना सुनम है। (क्रमभ )

समीक्षा-

# सफल जीवन

केसक या मुरेसक्त्य वेदालकार, समीवक डा॰ दिवय हिदेदी, प्रकाशक बार्व कुवार समा(रिव•), किंग्बवे दिल्ली : प्रकाशन तिथि वेकराम बसिवान विवस १६८५ पृश्सः ७० सूस्य ६०२०० मात्र।

प्रस्तुत पुस्तक में प० सुरेशचन्द्र बेशककार विस्तित सन्तर लेख सकतित है। इन लेखी में बताया नया है कि वद के प्रस्तों द्वारा किस तरह वर्ग और जीवन के वास्तविक स्वरूप की जानकारी हो सकती है तथा मानव बीवन को सफल बनाया जा सकता है। विद्वान् लेखक ने बढी सरल भाषा में बताया है कि मानव कीवन केवल भौतिकता का समाहार नही है। यह परमारमा की देन है। जीवन की सफलता का यह मतलब कदापि नही है कि मनुष्य रोग देने वाल भोगों के पीछे भागते हुए धपनी सायु के बहुमूल्य लाग मध्ट कर है। इसके जिपरीत जीवन को श्वफलता, जीवन की प्रमुके वरली से क्षपंत्र कर देने में निहित्त है। इसका कारण यह है कि जानव प्रभू के जितना निकट रहता है उतनी ही उसकी शक्तिया बढती है, उत्तना ही उत्तमे नवा उन्हाह और उल्लास बाता है। जीवन की सफ-सताका दूसरा रहस्य बनवान् बनने में है। व्यक्ति के बलवान बनने से ही राष्ट्र बलवान् बनता है। इस कथन का समर्थन क्रभूकी वाजी बेद से लेकर सभी बाधुनिक सन्तो भीर महात्मामो ने किया है। मनेक यद्योषित उदाहरणो के द्वारा पण्डित जी ने इस बात को बड़ी शब्दी तरह से सम-भागा है। इसी तरह 'मृत्यु एक मधुर कविता है ने बताया गया है कि प्रशानता बच्च मानव मृत्युको कठोर और निर्मय मानता है। अवकि वास्तविकता वह है कि मृत्यू अमुख्य के लिए एक बरदान है श्रमिकाय नहीं । वैदिक संस्कृति में मृत्यु ्रणी भीषणता नही है। मृत्यु तो भानो

जीवन वृत्र मे अगाहुबासुन्दर पत्न है।

'मनुर्नेव (मनुष्य बनो) लेख मे प० जी ने बनाया है कि देवता बनने की ध्रपेशा मनुष्य बनना प्रविक्त कठिन है। मनुष्य बनने के लिए धर्मानुसार श्रावरण करना पडता है। चन ही मनुष्य भीर मानवेतर प्राशियों के बीच विभाजक रेखा की चना है। धन से हीन सन्दर सौर पश् में कोई यन्तर नहीं होता (धर्मेण होना पशुनि समाना )। सन वम से हीन होना जानवता का ग्रपमान करना है। इसी तरहमसिद्धार करना प्रभुकास्मरए। न करना, जीवन को यज्ञमय न बनाना धात्म ज्ञान से रहित होना बादि ऐसे कर्म हैं जिनसे मानवता तो कलकित होती ही है, जीवन का प्रशस्त पथ भी सकीएँ हो जाता है।

ब्रस्तुत पुस्तक में भी सुरेशचन्त्र वेदा-लकार ने अपने कथन को देश-विदेश मे षटित बटनाची तथा वेदों से उदाहरख देकर पुष्ट किया है। उद्युत घटनाएँ सटीक होने के बाय ही गायिक भी हैं। इनका बच्चा प्रजाब पाठकी पर पडेबा, इसमे कोई सम्बेह नहीं है। वैसे यह पुस्तक किसोरों के लिए लिसी नवी है, परन्तु इससे सभी तरह के लोग लामान्तित हो सकते हैं। सत्सनी और उपदेखकों के सिए इसकी उपयोगिका असरिन्य है। ऐसी उप-बोबी पुस्तक के बकाश्वन के लिए प्रायं कूमार समा, किंग्जने दिल्ली-६ के पदा-विकारी नि सबेह बचाई के पात्र है।

# निर्वाचन

द्वार्यस्थाय कोटा का ५७वा वार्षिक बुनाव विनाक १६-५-८५ को सम्पन्न हवा जिसमें निम्न प्रशासकारीयम चूने

प्रचान --- भी सोमेदवर जी मूसियान बनी-वनवारीलाल सिहल कोवाध्यक्ष -- श्री कन्यासमय मित्तक पुरतकाव्यक्ष-श्री वृजनन्दन विक्री पुस्तकाध्यक्ष-श्री प्रभुदयामधी शर्मा बविष्ठाता पार्थ

बीर वल-श्री रामदवाल मार्व बेका परीक्षक—भी खिननारायस नाहेती अपप्रधान--धी श्रीकृष्णु त्री सावक,

बी विरवीषम्य बी वाहेती श्रीवती स्वयमीदेवी की प्रार्था उरमधी -- बी चनवरीप्रवाद वर्मा बी भावकरता बी बाहेती

> भवदीव वनवारीकाल सिंह्स मनी

## स्त्री श्रायेसमाज माइल टाउन दिल्ली का वार्षिकोत्सव

११ नई १६०६ शनिवार को दोप-हर १ वजे से ४॥ वजे तक वडे हर्पोस्सास के साब महिला सम्मेशन के रूप में सम्पन्न हुया। जिसमे धनेक विदुषी महिलाबी द्वारा सगील एव प्रेरमाबायक उपवेशहुए।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि नई पीडी को बार्यसमाय के कार्य-कम में सकिय करने के लिए वचुधी को सम्मानिस कर प्राप्तिर्वाद विया नया ।

मकुन्तना बीकित, मन्त्रिशी

# श्रार्थ प्रतिनिधि सभा दिल्ली की वर्तमान स्थिति के संबंध में निरीद्वाण श्रास्था का संद्विप्त विवरण

सावंदेशिक बार्य प्रतिनिधि समा की धोर से दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा (पत्रीकृत) की बर्तमान स्थिति एव उसके कार्यों की प्रत्यक्ष जानकारी प्रप्त करने करने की डब्टिसे मैंने गत = व ६ माच १६८५ को इसका निगे॰ सा किया। सभा के मन्तर्गत प्रमुख विभाग कार्याक्षय वद प्रचार, बार्व विद्या परिपद गाहित्य प्रका क्षन एव विद्वत परिवद है। निर्रक्षण ब्राक्याकासक्षिप्नवित्रणनशाससभा द्वारा किए वा रह विशय उल्लंखनीय कार्यों का विवर्ण यहा दिया जा रहा है।

श्चर्यं प्रतिनिधि स्भाटिल्लीकी स्वापना१४ मिलम्बर १८७६ को का गई थी भीर बतनान समय मे इसम सम्बद्ध १५० मा उसमाज व ८ शिक्षण सस्थाए हैं। शिक्षण सस्थाको की प्रवन्ध समितियों का निर्माण प्रतिनिधि समा द्वारा गठित बावें विका परिचद करती है। शिक्षण सस्वाधो मे नैतिक शिमा व्यव या की गई है भौर नैतिक शिक्षा की परी क्षाए भी भागोजित की जाती हैं। नैतिक शिक्षाकी पुस्तकों भाग १ से भाग १ / तक समाद्वाराप्रकाशित की गई हैं। वेद प्रचार विभाग में ४७ उपदेशक (विनमे से २ वैद्यनिक हैं) और ३ अजनोपदेशक वैतिनिक रूप मे कार्यरत हैं। प्रावेसमाजी के साप्ताहिक सत्सयों ने नियमित रूप से उपदेशक मेजने के प्रतिरिक्त ४ टोलियो मे प्रचार कार्न स्थापक रूप से किया जाता है। इस विभाग के श्रीक्षकाता भी स्वरूपा-नन्द भी प्रपना पूर्ण तमक देकर सुचार क्य से इसका कार्य सचालन करते हैं। सवा के पाछ एक मेटाडोर बस भी है, जिसका उपयोग प्रकारक मेजने में किया जाता है। इस सभा ने पिछले ३ वर्षों मे उस्लेखनीय कार्य किए।

१ बार्य महासम्मेसन (दिल्ली के ३ विजिल्ल को त्रो मे)

२ प्रचार वाहन का क्रम ३ सहर्षि दयानन्द निर्वाण सताब्दी (तासकटोरा स्टेव्यम दिल्ली मे)

४ साहित्य प्रकाशन विशाप का STITES .

४ साहित्य प्रकाशन निवियो की स्थापनाः।

६ पुरानी स्थिर निषियो का व्याज सहित पूननवी । रहा ।

**अ द्रदशन तथा प्राक्तानवणी पर** वेद प्रचार एव महर्षि दयान-द पर एक

द प्रमुख समाचार पत्रो से सैद्धा-निक विषयो पर लेखों का प्रकाश्चन।

मभाकी ग्रोर से एक साप्याहक पत्र ग्रायमदेश २००को मध्या मे निय-भिन कासे प्रकशित होताहै। पत्र के सपादक श्री यशपाल सुचाञ्च ने योग्यता पूर्वक इसके कलेवर को सवारा है। इस पत्रिका कास्तर उस्तत होता जा ग्हा है। सभाकी झोर से सेवाप्रकल्प के रूप मे वीवानचद हस्पताल का सचालन भी किया जा रहा है। इसके साथ ही अनेक बार्वपमाओं ने बपने चिकित्सालय भी कोने हुए हैं। पिछले वर्ष सभा ने कार्यान लय पर १४४२४), वेद प्रचार पर, ७६०४०), मार्यसदेश पत्रिका परे ६६,७११) प्रार्थ विद्या परिवद् पर ४ १४१) बौर वीवानबन्द चिकित्सासय पर ६६१७०) क्षये व्यय किए।

धार्यं प्रतिनिधि सभा दिल्ली की चतुर्भुक्ती प्रवति सर्ववा सराहनीय है। सगठन भीर प्रचार के सभी पक्षी पर व्यान दिया जा रहा है जो अनुकरणीय है। कार्यालय की व्यवस्था व्यवस्थित है। व्यविकारियों में परस्पर तासमेल है भीर कार्य के प्रति उत्साह है। सभा के बर्तमान प्रचान की सूर्यदेव, सभी डा० यमपः साम तथा कोवाञ्यक भी स्रोम प्रकाश सुनेजा हैं। तभी सभा के कार्यों ने पर्याप्त समय देते हैं । उनके कुसस नेतृत्व वे सभा का कार्य प्रगति पर है।

डा॰ धानन्दप्रकास निरीक्षक एवम् उपमनी सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

### श्रारत्त्वग श्राधिक श्राधार पर हो

सरकारी सेवाची तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानो ये वातीय प्राचार पर प्रार-क्षण की व्यवस्था से जातिबाद, बगबाद को कृत्सित बोत्साहन विम रहा है साथ ही सबोग्य व सक्षम व्यक्तियों के कारण प्रकासन तत्र पनुबनताचा रहा है धारत्रत्त-अवस्था के कारण भुवोध्य उम्मीववारों का चवन नहीं हो पाता है, बौर बबोम्य सम्बीदबार सरकारी पर्दो पर बाचीन हो जाते हैं। बारनण के धन्तर्वत नियुक्ति या प्रोन्नत व्वक्ति के मन मे एक हीन भावना स्याप्त रहती है, जिसका कुषवाब उसकी कार्यक्षमता पर भी श्ववस्थानी रूप से प्रता है। शार-

अजका बाधार बातीय होने के कारण वैमनस्य विद्वेष मनोमालिन्य बढता है और वर्गसम्ब का रूप ग्रह्मा कर लेखा है, जैसा कि इस समय गुजरात मे हो रहा है। इस व्यवस्था के कारण वे युवक जो सुयोग्य तथा मेधावी हैं, सवाका मवसर नहीं पाते धौर देश तथा समाज को भी उनकी प्रतिभा से विचत रहना पडता है। यदि प्रारक्षण की व्यवस्था जातियत के स्थान पर अध्यक्त आधार पर की जाय वो समाब का भ्रषिक हित इसमे निहित

> रावेदयाम 'बाय' एडवोकेट मुसापि रखाना, सुलतानपर (उ प्र)

# समाचार-सन्देश

# श्रार्थसमाज जनकपुरी का वार्षिकात्सव एवं समाज भवन का उद्घाटन समिरिड

धायसमाज पत्नारो सी लाक जनकपुरी का वाधिकति स्व दि ।
माई १६८५ तक समाराह पूर्वक मनावा स्वा । इस स्व १६८५ तक समाराह पूर्वक मनोवा स्व एवं स्व १६८५ तक प्रयविद के मनो से नृहर शक कृष्या— विक रामिकारि जी महोपर्थक के। राणि से प्रवक्त क्लांधी से प्रमुख करने वेंद्य रामिकारि जी धाचाय डा० वाचरपति उपाध्याय सावाय विवक्त त उपाध्या से प्रवचन का सावा ही प० पनावाल की पीयुव समीता वास के प्रजन—उपवेशपुत्र होते रहे इन प्रवक्तो हारा धाय जनता को धाष्या सावा के प्रजन—उपवेशपुत्र होते रहे इन प्रवक्तो हारा धाय जनता को धाष्या स्व



उद्षाटनकर्ता---नी बीरसन की राज्यम-त्री नारत सरकार । बार्चे से डा॰ एस॰ पी॰ शुक्ला व्यासदेव मेहता मेजर र मश्रकाश चाम वालक मानवे द्र विद्यासावर मदान

१ नई १६-५ को नवनिमित खाय क्षमाक मनम पर धोन्नम् व्यवारोहक खायरल बार सत्येव भारद्वाज द्वार्था किया नया । तक्ष्णचात् उनका धीमत दन की किया नया । १६ मई को महिला क्षमोत्तन श्री शकुन्तता धाया की धम्य क्षता में मरण्य हुया जिससे कुरांति निवारण से महिलाधों का बोगद न विषय पर से विचार प्रस्तुत किये गय ।

१२ मई ११८ स रविवार को साथ स्वयाव नवन उद्यान्न की वीरतेन की क्रिनीय राज्य मना ने किसा। उद्यादन स्वयाने की भागवता की स्परारीसाल बर्मा ने की। मनी जा का परिचय की सीम पास की (सुपुत्र की रपुनीरसिंह साथ्य सुतपुत्र मनी सावसीलक प्राय प्रतिनिधि सहा न्यवस्थापक मनूर प्रश्च) न दिया। सनी जी ने उपस्थित जनतमूह को सपने नाम मं बाति सुचक गन्द निकाल देने की प्रायना की। उद्यादन समारोह के प्रशास राष्ट्रीय एकता सम्मेबन सपन हुमा—

4वि विषटनकारी ताकती को सरकार ने राजनैतिक लाज की शब्द से छूट वी फिर वो ग्रायसमाज मूक रूप से भौन नहीं बैठा रहेगा। शायसमाय के सिद्धान्त साब भौजिक हैं और वेद की वाणी बयेमा वाच कल्यासी मानवमात्र के लिए है। धन्य बक्ताओं ने विकस जी ने बायसमाज के कार्यों की सराहना की बौर इस प्रकार के सम्मलनों को समय समय पर भायो जित करन के लिए ग्रायसमाय का कन्य वाद किया । शाचाय उपाध्याय जी ने वैदिक उद्धरणों से उपस्थित जन समुदाव को धायसमाज के राष्ट्रीय सक्ष्म की बताया। भी शास्त्री वी ने धीर सुबदेव जी ने सामयिक परिस्थितियों में बाब समाज को सजग रहने की प्ररणा वी। शन्त मे अन्यवाद समाच प्रकार नेवर रामप्रकाश वान ने किया। शान्ति पाठ के बाद समस्त उपस्थित वर्गों ने प्रीति भोज में चाय चिया।

सबदीय.

# वीरांगना प्रशिक्षण शिविर तपोवनाश्रम, नालापानी, देहरादुन

रै॰ जून १६८% से २४ जून १६८% तक रायेवनाअर्थ नाजापानी वैद्वराहुनमें साध्यस के सचालक भी दयानन्य बानप्रस्ती की माध्यस्त्र विज्ञान सामार्थीं में एक वीरोधान प्रीव्यस्त्र विजित्त सनामा जा रहा है। जिसमें द्विराया प्रभाव हिमान्य व उत्तर प्रदेश से केवल ४० वहिन भाग मेंनी। यह शिविर नियुक्त होया। माने जाने का किराया सब का सपना सपना होगा।

इस शिविर में निश्नसिवित महा नुभाव प्रशिक्षक एवं प्रक्षित होंगे

१ स्वामी सन्यपति बी महाराज २ भी दयान द जी वानप्रस्थी सचा लक तपोवनाश्रम देहरादून।

क तपायगाजन यहराहर । ३ प्रिन्सियल कुमारी विसला खावडा

### युवा जागृति के लिए देश भ्रमण

दिल्ली २६ प्रप्रैण (स मवार योवा गुकारत सह राष्ट्र राज्यशान हरिय जा के ११० विद्यालयो प्रांत्र में नगरो उपनगरो में कैप्तिय जाय युवक परिवर्द के नेता बहुप्तारी ग्रंथ नरेश ने विध्यन साव स्रांत्र सामयो गोष्टियो में स्थाने प्रव बनो के दौरान हवारो नौकवानो को सास मझक — मक्यन त्यापनि विना बहुक विवाह करने विजेशा क्लावे का बहुक्कार करने वेश व समाज सुवार के कार्यों में सहस्य प्रांत्र कार्यों का

नत १६ विसम्बर से धन्तर्राष्ट्रीय बुवायक के दौरान युवा जागृति स्ट्रिब

भाग महिला कोलेख बरनासाः ४ कुमारी पुरुषा धहेती भूतपूर्व

भुक्याध्यापिको स्रोध गल्य हाई स्कूल, कत्तीरपुर।

त्रक्त शिविर के संवालक श्री प्यानद वी वानप्रस्थी तथा प्रशिक्षक संयोजिका विस्तिपन कुमारी विवता क्षाववा होंगी।

इस शिविष मैं भाग केने के किएं बहिनों को अप्रैम तिमानण है। इसमें शिविष्ठा नहिनों को प्रावधिकता दीं जाएमी। अस्त जो बहिनें इसमें जान सेना बाहुँ के कुपया ३० मई १८०५ तक व्यक्ते प्रावका पत्र संस्कृति सारक सर्वेष्ठिय को भेजकर स्वीकृति प्राप्त करने का कट करें।

> त्रिन्सिपल कुमारी विमला **छ।स्डाः** सयोजिका

यान के अन्तवत वेशवर में युवाओं में राष्ट्रीयता तथा वेश के टुक्ट करने वाली ताकतों के विवड ब्रह्मचारी आर्थनरेख बननत तैयार कर रहे हैं।

सायसमाज अवोक 'बहार से एके मटवारों से उन्होंने बताया कि वे वेश के बग्ध मांगो पिछत तथा उपेशित के की में भी दौरा करेंगे। वे सपन बेद प्रचार बाहुन के माध्यम से शुद्ध फबनों के कैंग्रेट बबाते हैं तथा सन्वाम प्रकाश व वैदिक साहित्य का प्रचार करते हैं। चारोहेन सास्

समादवाता युवा उद्योग (पाक्षिक)

### निर्वाचन

गत रविवार की धायसमाम स्वामी श्रक्कानन्य वाकार साबुन बाजार) सुचि बाना का १८८६ १८८६ के लिए साबा रख समा का धायबेखन डा॰ रामस्वकप वी की प्रधानता में हुआ।

धवसम्मति से बा॰ रामस्वकथ को प्रकान चुना क्या और धविकारियों धन्तरब सदस्यों के नठन का धविकार भी प्रकान जी को दिया गया। प्रचान जी ने स्व प्रकार घोषणा की — सरसक—भी राखाराम सरीन

श्री झो॰ पी॰ पासी प्रवान---डा॰ राजस्वरूप वरिष्ठ उपप्रवान — श्री यशापाल वाधिया उपप्रवान — प्रि यो थे। एकत सी स्थापाल प्रान्तर की सम्पनाय क्यों महानर्श — वा एवं ही वाधिया मक्यों — भी वर्षपाल महीन श्री वनपर रा कोवास्त्रक — मास्टर कुगरीलाल भी पुस्तकाम्यल — मास्टर कुगरीलाल भी पुस्तकाम्यल — मास्टर कुगरीलाल भी पुस्तकाम्यल — भी देवशस्य सीनी स्टोर कीयर मान सोनप्रवाल रच्छन उपस्टितमाय मान सीनप्रवाल रच्छन

वनपतराय मन्त्री

बार्च त्रतिनिधि बचा हरियामा के श्रीकारी एव प्वापिकारी— त्रवान त्री० केर्रीवह पूर्व रका राज्य संत्री उच्छवान करवाँसह वानअस्वी

वहिल युकाविकी देवी क्रम्बा बुक्कुस सानपुर, वि॰ दोनीपत की कस्ट्रैशासास की महारा करीवावाद

वयानम्ब बठ, रोहतक

बन्ती जी प्रो॰ सरवनीर तास्त्री हासावाच विद्या विद्यानी हरिसिंह कालोगी रोहतक सम्बद्धा संस्कृत विज्ञाग राजकीय महाविद्धा-सम नत्तवा चि॰ हिसार) पमन्त्री प्रो॰ सत्सवीर विद्यालकार

विद्वास कि सोनीपत (क्षापूरास किसास कालेस हिसार

कोषाध्यक्ष सा० रामिकसम प्रमान कार्याच्य श्रहापुरनद मध्यी चि०—रोहतक पुरतकाष्यक्ष सामार्थ स्वरिपास सार्थ क्रिमी स्कृतिकासन परक्षी श्रादरी

## ये महान गुण (प्रस्त २ का चेष)

सासक लोग समित और शिषकार पाकर सोलुप और विश्वनी हो गाते हैं। इसीलिए वर्खायन वम नष्ट होकर देख और सामित हो समोगित हो सामी है। वमो के एकि हासों पर सुक्त दिन्द जानने से जात होता है कि यम सब बृहत सत्य उग्र ऋत दीखा तर सामित पुली का समाय हो गया यो समुलात यस भी रसातम को चला वस। सासन का कोई रूप स्थी न हो एक चिपाय हो प्रसातन हो गएतन हो कोई बायन प्रवित्त सफत नहीं हो सक्यों बह तक कि देख के महुष्यों की उच्च क्या के लोग इन नुष्यों है कुछ न इसे। यह टीक है कि देख के सभी व्यक्ति हुची नहीं हो सक्वे। परन्तु बाँव देश में इन मुर्जों का सक्या शमाब हो बाय दो सप्त-कक्या फैल ही बायेगी हस्तिए देश व्यक्ति के उपयेश दिवा है कि देश मा पृथ्यों को बारण करने वाले मुख्यक यह मुख है इनके होते हुए शब्द व्यक्तिया धीर विदिया तो ह-स ही था जाती है। गृथ्यी राल वर्गा है परन्तु जहीं के लिए वो रानो के सी कारी है। सफीका क रिल्ली विमान पर



दिष्ट डासिये। सैकडो वर्थों सं ज ला जातिया रहनी थी । नितात जनशी । एक दूसरे ने लड़ने वाली किसी प्रकार की उल्लाति के चित्र न य । जब दाहर ने कुछ ज्ञान और अज से सम्यान को हथा नये तो उस दश की वही पुरानी मिट्टी सगूर नारकी सेव भावि रान जनलन लग गई। धन्य देशों का भी बड़ी हाल है भौतिक सम्पत्ति की उत्पत्ति भी बिना साथ बादि बर्खों के नहीं होती। धौर यदि उत्पत्ति हो भी काम लो मनुष्य का वल्य सातो हो ही नहीं सकता जब तक कि उ बन्न बस्त की रक्षाका उप।यन हो । वेता करना मात्र ही पर्याप्त नहीं है। उपज को पारी से अवाने का भी तो प्रथन है। जब तक कि दगवासियों में यह ग्रवीत् ग्राम समप्राका भाव उपन्न नहीं होता उस समय तक साथ जिक यात्र की स्थापना नहीं होती समाजिक याय का भवना के नहने म िंसा ग्रसाय धौर स्तेय का श्चाधिक्य हो जताहै पृथ्वाका घरस करने व ला<sup>3</sup>द इस्तियानो <sup>3</sup> हा जसे सय की ज्योति वर्षा पृथ्वी की स्व वया शक्ति इयादि । परत् जब तक इन ∽वित्य कला समामक विश्वत सानव गुरागे<u>...</u> का सहयोग न हा निर्यक्ष 🤰 असम्य 🛔

होर सबस्कृत देशों में मूनि उतनी ही स्वरूप होती है य तुए लोना चारा आदि बहुए रहती हैं यू तुए लोना चारा आदि बहुए रहती हैं यू तुए लोना चारा आदि सहुए रहती हैं पूरके प्रकार की कमी नहीं वर्षों पुक्कत माना में होगी है। परम्तु सानव गया दिहान सस्तम्य देशा उस सबस्य सकुत्र समाम्य प्रपत्ता भाग प्रदान नहीं कर सक्ते जब उस्त हो के सुन्ध स्वाम प्रपत्ता भाग प्रदान नहीं कर हा से देश के ममुक्य सम्य चुन प्रस्त कर हम देश के ममुक्य सम्य चुन अस्त देश कि प्रस्त हम देशों की स्वाम समाम्य स्वाम स

जब देश में ऊपर दिये बुर्गो का साजिम्ब गोता है तो पृथ्वी मनुष्य के मृत और मविष्य दोनो की पत्नी सर्पात पालिका हो जाती है। भविष्य तो मत का धनगामी ही होता है । जिसने वोया नहीं बहक टेगाकैसे ? जिस देश का प्रानी पीढिया गुनहीन रहेगा उनकी नई पीढियो मे जुराकहाँ म बावने <sup>?</sup> पित वस हो तो सत्तान के मविषय का उत्तरवाता होती है। बन मत्र में प्राथना है कि ऐसी पथ्बी हम को उदलोक या मोक्ष व दन वाली हो। मोक्ष की वर्षा अवानक ऊर से नही होती। मोक्ष परम प्द है उसके किए भौतिक स्रोर सभौतिक दोनो सानो की स्रवश्यकता है। इन साधनी के लग ब्ह्त स्य उग्र ऋत दीका तप बहुर धीर यज्ञ अनिवाय है। अत प्रत्येक मनुष्य को यह गण धपने धाप भा ण करने वाहिए और समाज मे उनका सचार करना

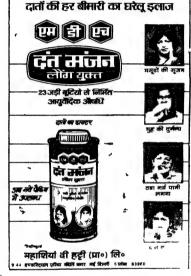
धीर सन सनिवार है। सन प्रत्येक समुख्य को यह गण सपने साप माण करने बाहिए सीर समाज में उनका सचार करना बाहिए।

गम सहकर भी स्वक्त राहि होनी।।

गम सन्व निरो को गुजर नहीं होनी।।

ग्रह्मा संक्र कर है जो ने लिए। रक्ता कर कर है जो ने लिए। रक्ता कर कर है जो ने लिए। रक्ता कर कर है जो ने लिए। ता प्रमान साम में मिल जा। स्वति होती।। खब सा वकर है समस्य नौन्सा। जनानी स्व मर नहीं होती।। उनको महर्षिक सकर रुगति है रिणी।







# षार्थ जमत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भ्रायकर भ्रषिनियम जी • ८० के भ्रतगंत कर मुक्त होगी।

सारा बान चैक/मनीकार्डर/बैक ब्राक्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी आर्य वर्मार्थ नेत्र चिकित्सासय, सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

### निवे इक

रामयोचान शालवाले पूर्यवेष महाश्रव वर्मणाल योजप्रकास सार्थ सरसक विकित्सालय प्रवान, दिल्ली प्रवान मन्त्री एव प्रवान शाल्बाञ प्रायं प्रतिनिधि प्रायं केन्द्रीय महालय कुनीलाल प्रतिञ्जन समा समा समा वेरिङ हुः

सौजन्य से महास्त्रियां दी हट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, ग्रीकोरिनक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१

# लाला रामगोपाल सालवाले चिनन्दन समिति महर्षि ववानन्द चवम, राक्कीला वैदान, नई दिल्ली-१६०००२

नक्षेत्र भी काला पानवीपाल कासवासे के विधाननाथ वशायीक के क्राव्यक में निम्माणितित प्रमुख वार्य कर्नों का वृक्त कार्यकारी नव क्राव्यक है :----

- १ मी तोशवाय शरका**ए** एक्सोकेड २ सहस्य वर्तपाल थी
- थीवृत साक्षा रक्त्यराक्ष भी
- ४ वा*० सावन्यप्रकास*
- भी वयरीमाञ्चात वैधिक
- **अग्र**क्त योगान्यव
  - बायक व समा खरहकोशक

THE REAL PROPERTY.

### -

- ६ भी योगप्रकाब स्याबी ७ प० बण्चियानस्य शास्त्री
- व भी जयनाराय**ण शस्स्र**
- १ श्री सूर्यवेत १० डा॰ वर्मपास
- ११ में ॰ वेद व्यास जी
- १२ भी रामनाथ सहनत
- १३ मो० ऐरसिंह जी
- १४ श्री इन्द्रराज श्री १६ राजगुरुशर्मा
- वनी सार्वदेशिक समा, दिल्ली। उपमती सार्वदेशिक समा दिल्ली। उपमती सार्वदेशिक समा दिल्ली।
- व्यान कार्य प्रतिनिधि समा दिल्ली। मत्री वार्य प्रतिनिधि समा दिल्ली। मत्री वार्य प्रतिनिधि समा दिल्ली।
- त्रधान सार्वे त्रावेशिक प्रतिनिधि सभी। मत्री सार्थे प्रावेशिक प्रतिनिधि सभा। प्रधान सार्थे प्रतिनिधि सभा, हरियाना
- प्रवान वार्यप्रतिनिधि समा उत्तर प्रवेशः । प्रवान मध्य जारतीय वार्य प्रतिनिधि सभा ।

सभी माथ बधुमी का सहयोग इस कार्य ने सपेसित एव प्राथनीय है।

(श॰ <del>प्रामम्ब</del> प्रकास) संयोजक एवं मंत्री

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, फोन . २६६८३८ वानडो बाजार, दिल्लो-६



पूरम एक प्रति १० पैते

बाय वयस्तर ११६००५३००५

क्येक्ट २०४२

दयानन्दाव्य — १६१

### पथिक स्वामी श्रद्धानन्द कल्याणमाग

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर

स्वामी श्रद्धानन्द जी में आय बाति का मनोन्नत स्वभाव पूरातवा श्रतिबिम्बन था। वे अपने जमाने के सर्वाङ्गीए प्रतिनिधि थे। सामान्य व्हरिस्थिति में रहते हुए भी आय पुरु, अध्मै पुरुवाय से केंसे उच्च और असामान्य कोटि तक पहुन श्रेष्ट्रता है इसका उदाहरण स्वामी की के सफल जीवन में हम पाते हैं।

स्वामी दवातन्त्र सरस्वती ने जो चैतन्य देश ने प्रकट किया उसका ब्रह्ममा सम्बद्ध से विश्वीने किया था वो वे स्वामी श्रद्धालन्द ही वे । वर्म प्रचार विकाप्रचार और लोकसेवा बीनो बातों में अनुमा जीवन अवतीत करके उन्होंने बलिदान के कम में बीवन यज्ञ का भदमुत स्नान किया। बुद भीर शिष्य दोनो पुरुषसिहो ने अपने निर्मय जीवन से मृत्यु को पंरास्त किया।

श्वनार्व हत्यारे का बदला न मेकर उनके प्रसल्य प्रतुवाधियों ने अपना भागत्य हा सिद्ध किया है। निर्मेख पुरुष का रक्त सास्कृतिक श्चन का उसम स्वाद है। स्वामी श्रद्धा मन्द जी ने जीवन भर बपने पसीने से सेवा की भीर भन्त मे भपने खून से। इसलिए वे ग्रमरपद प्राप्त कर सके।

सस्या सोलना भीर चलाना भाजकल सामान्य सी चीज हो गई है नर्गोंकि जनता देख चुकी है कि नोक जीवन में सुन्यवस्थित संस्थामी का महत्त्व किलना है। लेकिन जब ऋषि दयानन्द सरस्वती ने वार्य सस्कृति के बारना की जागृत करने के किए सरवार्वप्रकाश ने नई शिका प्रसाखिका बादके केस किया तब - करते । केवल बर्गीपदेशक बन बैठते मारतवानी स्ववेषी संस्थाए बहुत तो हवारों समावय हासिस करते।



कम भी । ऐसे समय पर सवस्व त्याग कर अपने पुत्रों को साथ लेकर गंगा के तट पर जगल में जाकर बसना केवल श्रद्धाधन पुरुष का ही काम का। मानो वह एक का विश्वजित यज्ञ ही था। मुबीराम जी वाहते तो वे किसी भी क्षत्र में प्रपनी कार्य शक्तिका परिचय देसकते थे। फीज में दाखिल होते तो नामाकित सेनानी हो जाते । किसी रियासत की सेवा मे प्रवेश करते तो प्रजाहिनैची प्रधान बन जाते । राजनैतिक क्षत्र मे प्रवेश करते तो महासभा की बुरा का वहन

साहित्य सेव का वेशा पसन्द करत तो साहित्य सम्रटो से कर भार बसल करने की बोग्यता प्राप्त करत। परन्तु उन्होने सब छोड कर शिक्षा का ही काय ग्रपना जीवन काय बनाया इसीलिए मेरा सिर उनके सामने सकता है शिक्षा का क्षत्र जगन में भभी उतना प्रतिष्ठित नही है कि जितना उमका ग्रविकार है। तो भी मनुष्य जाति की उत्तम सेवा विकादाराही होने को है

बारीरिक शक्ति द्रव्यशक्ति राजशक्ति सथशक्ति इत्यादि सब सर्वितयाँ किसा शक्सिके मुकावले मे गील हैं। वार्मिकता सेवा जानो

वासना भीर बलिदान यहा जीवन का सबस्ब है। और इन जीवन तत्त्व का पोषण केवल शिक्षाप्रसार से ही हो सकता है। दीषदर्शी समाज पुरुष ही इस बात को समभ कर शिक्षा के क्षत्र मे भ्रपना प्रदान कर सकता है। वेसच्चे ब्राह्मण ये भीर ब्राह्मण होने के कारए। ही वे हरिजन सेवा की विशेष जिम्मेदारी अपने सिर पर है ऐसा समभत वे। स्वामी श्रद्धा नन्द जी को इसोलिए मैं जातिगुरु कहता है।

कल्यारा मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानरू जी की सेवा ध्रपनी रहिट से भपुन है। राष्टीय शिक्षरण धर्म जागृति समाज सेवा घादि धनेक क्षत्रों में उन्होंने भाग्तवय को एक नया ही रास्ता दिन्यया ै। श्रद्धा के बल से ही वे यह तब कर मके। जिस दिन उहाँने धपने प्रिय प्त्रो की लेकर गृहकुल की स्थाप्ता के सकल्प से गगा के तट पर निवास किया वह दिन भारतवय के बनमान इतिहास मे महत्त्वपूराका था उस दिन उन्होने हिंदू जाति के उद्वार की नीव डाला ऐसा कहा जा मकता है। जिस दिन ए होने ग्रायत बापको को भ्रपनाया उसी दिन हिन्दू जाति को उन्होने सगठित विया । भीर जिस समय उन्होंने पत्थर गोली भीर सञ्जरकी नरफ तुच्ताकी नजर सेदेखा उसी दिन भारतवा को उन्होंने निभय किया धपनी सतुल 🧃 नीय श्रद्धा से उन्होने अपना दीका नाम कृताथ किया। सचमुच श्रद्धाः उ नन्द राष्ट्रमूर्ति थे। ऐसा समय जरूर भायेगा कि जब उनके द्वषी भौर

(शेष पूष्ठ १ पर)

### सत्सग वाटिका

# बुड्ढा जवान को निगल गया

ऋषि बृहदुक्को बामवेष्य । देवता इ.इ. । छन्द निष्कृत्त्रिष्ट्य ॥

द्यम्बय -- गुवान सन्त विष् समने बहुना दद्रारा पश्चित जगार। देवस्य महित्वा काव्य पश्य ह्य समान स श्रव ममार।

श्रव्याच — (युवान सन्तम्) एक ऐसे नवयुवक को (विधुम्) विविध कामना करने बाले को (समन) युख में (बहुनाम्) बहुतो को (ददासम्) मार भवान वाला (उसे) (पलित) एक वृद्ध (जगार) निगस जाता है। (दबस्य) प्रभु 🕏 (महिस्वा) वड महत्त्व वाले (काव्यम्) काव्य को (पश्य) वला (fक) (हा सम् मान) जो क्ल की रहा वा (स ) वह (बच) बाज (ममार) मरा पढा है।

व्यास्या---इस मन्त्र मे वड काव्यमय डब स ससार की क्षण नगुरता दिस्ताकर परोक्सस्य म यह प्रराष्ट्राकी समा है कि इस ससार के सुख दुव, जब-सोकादि हुन्द्रकी चक्की ने पिसन से तू उसी की श्वरण मे बाकर त्राख पा सकता ह।

ससार में बढ बढ बिडान् हुए जिन्होने सम्पूज वैदिक सौर लोकिक वाहमय खान मारा । जिन्हें अपनी बहुत्रता पर वसा श्चमिमान वा।वे ससहाय भीर विवस इस समार संचलने वने राज के वैदुष्य का वस्तुन करतं हुए वाल्बीकि महर्षि ने विका-

सवविद्यापतस्नातो बनावत् साङ्गवेदवित् । इब्बरने व पितु अंको बसूब भरताप्रव ॥ बा॰ रा॰ समो॰ १।२०

राम सब विद्याधी की पढकर तथा

### लेखक-प० शिवकुमार शास्त्री

विध दद्रागा समने बहुना युवान सन्त पलितो जगार। देवस्य पश्य काव्य महित्वाऽद्या ममार स ह्य समान ॥ ऋग्० १०।५५।५

पूराबद्धाययकत समाप्त कर विविवत स्नातक हुए। यडङ्गसहित वेद को भी पढा। बाए। बोर सस्त्र सस्त्र सवाजन मे बर्बात चनुबद में अपने पिता से भी बढ कर हो गये।

वनकामायतत्त्वज्ञ स्मृतिवान् प्रतिभानवास् । लौकिके समयाचारे कृतकल्यो विद्यारय ।।

राम ने चन ग्रथ भीर काम के रहस्यो को समक्र लिया। उनकी धवभूत स्मरण-शक्ति थी। शास्त्रीय बृढ तस्वी को और दूसरों के विचारों को वे बहुत बीझ सबक लेते वे। बौकिक चन तथा समयोचित बाचार-व्यवहार को वे असी प्रकार जानते वे धौर नर्यादानुसार अपने सावरण में साते वे। राम की बीरता बीकोसार उवा रता व्यक्ति के स्वजाव धीर व्यवहार को परसने की बाश्चर्यसमक क्षमता भीर ब्रत्यवादिता को देखकर उस समय गह प्रसिद्ध वा कि---

हि सरन्गामिसवसे

क्रिश्चाच्यति गाविताच् । विवंदाति न वार्विण्यो

रामो द्विनीनिमायते ॥

राम शतुका सहार करने के लिए दो बाला नहीं चढाते सर्वात एक बाग से हो अपने शतुको समाप्त कर देते हैं। राम अपनी शरण में आवे की योग्यला की देसकर एक बारही उचित स्थान पर उसकी नियुक्ति कर देने हैं। अर्थात व्यक्तियों को परसने को नमें भवजूत क्षमताहै। राम यावक को एक बार मे निहाल कर देते हैं। वह फिर भिक्कमगा नहीं रहता और राम को एक बार कह बेते हैं उसमे परिवतन नही होता।

राम इतने प्रसापी ये कि उन्हें लोगो ने गगवान तक बना दिया। किन्तु नेद कहता है उस नियन्ता के नियम को देखी यहा सब विवश भीर नतमस्तक हैं । प्रचा मनार सहा समाण कल तक जो जीवित जावृत्त या जिसकी योग्यता और परिश्रम का सिक्का उद्ध समय का बसार मानता या बाच वह गरापडा है। बुडढा सफेद बालो वाला कालरूपी परमारमा जवानी को निजले का रहा है।

सक्त्रण जैसा स्वाजिमानी साकार बीररस जो किसी प्रतिद्वन्द्वी को कुछ सम अभ्याहीन या। कहा बया---शीला स्वयवर के बनुष को देखकर और हसकर बक्यता ने राम को कहा-यह भी कोई पराक्रम की क्लौटी है---देव की रकुगाय कि बहुतका बार्क्डेडिया सदयस्त्रे

नेवविश्वपि पूचराम्य वस्त्रे बोरा विनाक कियान्। तग्नानाविश पाप पार्थ पा पन वृत्कस्य यत् कोतुकस्

मोद्धपु प्रतिनामित् प्रचलितुन्नेत् निवृन्तु सम ॥ हे राम <sup>।</sup> मैं सक्तिषम साप का सेवक ह। प्रविक बढ़ा के ती बात क्या कह : मैं मेर बादि पर्वतों को भी कुछ वहीं क्षमञ्ज्ञा, फिर इस पुरान कीव-सीसा चनुष की बात ही क्या है। मैं इसे चठा सकता है, अपना सकता हू केकरें बूब फिर सकताह और इसक दुक्त दुक्त कर सकता है।

राम ने वालि के मरने पर किष्क्रिश्वक का राज्य पार र सीता की सोव ने सुग्रीय का प्रमाद देखा हो सदमस्य को सुप्राव की अस्सनाकरन को भवा। अक्सच ता एछे अवसरो के लिए नयार बठा रहता था। जाते ही एक पुढकी में सुबीब की प्रक-म्पित कर दिया -

न स सकुषित पन्था येन वासि पुरानत सुन्नीय <sup>।</sup> जिसमान से कु**क्**टै समय पहल हमने वालि का मेजा 🕏 वह मास सब बन्द नहीं हो सबा है। ऐसे वीरो को भी वही बूढा कालकवलिस कर

कृष्ण जैसे प्रतायी प्रस्कृत्यन्त सक्ति नहापुरव--विसने नितान्त विक्रत भारत के चित्र को काट-स्रोटकरम**वर्षिक किया**। मत में अवस में लेटे हुए एक वहें जिय के तीर से वायल होकर स्थनो जीवनशीला समाप्त की।

सार वह निकसा कि ससार से सबको व्याना है। समय का एक एक क्षत्र बहुत मृत्यवान् है उसका बदुपयोग करो और प्रस्थान के बादेश पर प्रसन्नता से ससे कियाम्बर करो।

# वेद में विज्ञान

घमवीर विद्यालकार

१ भ्रोषजन भ्रीर उदजन से जल की उत्पत्ति-

उतासि मैत्रावदर्गो बसिष्ठ, उवश्या बह्मन् मनसो ऽचिकात । इप्सास्कान ब्रह्माए। स्बयेन

विद्वे देवा पुष्करे त्याददमा॥ ऋग ७ ३३ ११

ग्रर्थ-

विमध्य उन मैत्रावरण प्रसि == हे वसिष्ठ । तुसित्र भौरवरणका लडका है।

ब्रह्मन् उनस्या मनस प्रशिचात == है बह्मन् तू उवशी की मनाकामना से उत्पन्न हुचा है ।

दैव्यन ब्रह्मशा दिव्य नियम के

द्रप्स स्कल्न स्वाः च्युद के रूप में गिरे

विश्व देवा पुश्करे श्रददन्त=सव देवो ने पुष्कर (तालाव) में पहुचा दिवा। भावार्थ-

ाष**बु**त् की उपस्थिति में मित्र भीर वक्ता भीवजन भीर उदक्त) के मिलाय से प्राकृतिक निवर्मों के बन् सार बूद-बूद रूप में जस बना। उस मन को देवो ने पूब्कर में एक जिला किया।

२ वायुमण्डल मे जल-

कगो को उपस्थिति। सत्र हे जातानिविता नमोति, कुम्ने केत सिविषयु समानम्। तवो ह नान उविवास सम्बाद् तः । जातमृषिनाहुवर्तिष्ठ ॥

ऋ०७ ३३ १३

सत्र ह जायी -- बाकाश ने पैदा हुए नमोमि इवितौ--ईश्वरीय नियमो से प्ररित किये हुए (मिल और वरूप वायुष्पी) ने

समानम् == एक साथ निसकर, शवबासमान क्यासे

कुम्मे रेत विविचतुः - भूतसकपी कुल्ज में बारम्बार वस को सीचा धर्वात् त्रुमि पर बहुत जल वरखाया ।

तत मध्यात् भाष = उस वरसे हुए बस में से कुछ परिनास

उदियाव == काव्य क्ष्मकर आकास ने

तत वसिष्ठम् ऋषि जातम् बाहः= प्रवसे वसिष्ठ ऋषि (समस्त प्राणियों के बीवन वा धाषार) वने ऐसा कहा वाता

भावार्थ-

धाकाश में विद्यमान श्रोपजन श्रीर उदजन वाजुधों के मिलने पर प्राकृतिक नियमों के यनुगर जन बना। वह अस पृथियी म शस्यधिक मात्रा मे इकटठा हुवा । उसमें ने कुछ बाकास ने चला गया । श्रवात् वायुमण्डल मे जलकण विद्यमान रहने लगे। क्योकि वह अस बनस्पति भोषि,पण् पत्नी और प्रास्तिकों के जीवन का बायर है।

३ विभिन्न माध्यमो से ' गुजरती प्रकाश की किरसो टेडी हो जाती हैं--

(क्षेत्र पूछ १२ वर)

# भृष्टाचार और उसकी चिकित्सा

### प० बुद्धदेव विद्यालकार

साजकस चारो प्रोर प्रव्याचार के समन के जिए पादोसन मना हुआ है। जियर की मही हामहान मुना है वी है। रिक में, बस में, नाव में हुआई कहा की है। रिक सात के सहा जिल्ला के सात की सहा कि है। होने मा उपने के दिना ही में मही होती। इन रिकटकोरी को चौराई से काली है जी सात तो किर देवों काली के सात मही सात की सात की सात मही सात की सात की सात मही सात की सात मही सात म

वन श्वामो सोहिताको वण्डवपरित पायहा । प्रवास्तव न पुष्ट्यित नेताचेत् साबु पश्चति ॥

बहा इच्छावस्य रस्ततेत अवकर पुरूष है समान पात्रों का नास करन हारा वण्ड विवरता है, नहा जवा मोह का जाय होके सानन्तित हाती है। परन्तु विदे वण्ड का बसाने वाला पक्षपाठ रहिल विदान् हो तन्नी। १ मनु० ७ २१।

पाई वण्ड की महिका तो सब नावे हो पक्तु क्रन्त की पन्ति वो देखो ।

त्त्व का पानत छ। यका। नेतः केत् साबु वस्मति ।

'परन्तु को दश्क का वजाने दावा पक्षपात रहित विद्वाप हो तो। वह 'तो' कैंग्रे पूरी होवी। उथ्वा को ठीक है परन्तु कही उक्ष्में वाने जी हैं। वक्ष सारा नाव ही कोरों का है तो उच्चा किय के हान में दोने ?

युग की भूख

इस प्रकार स्पष्ट है कि पून की सबसे बड़ी झावस्पकता है। पक्षपात रहित काम को चलाने वाले पुरुव, क्या यह कहीं झाकास से बरसेंवे ? नहीं यह न होते, हुमें स्वयम् बनान होने।

कैसे बनेगे

पाको इस युन की इस सन से बनी समस्या पर विचार करें। ससार ने कोई भी पदार्थ कसे बनता है ? साचे स वा साथ से, या दो पदार्थ साचे मे साम पियं बाते हैं, या साचा पहले बनाकर पड़े साते हैं। एक का नाम विचन्द्र प्रक्रिया है, एक का नाम विचायन।

जो वर्भाषान द्वारा ठीक साथि मे हासे बाते हैं वे निपःतन का परिणाम है।

इस पुण की सब से बड़ी जॉब है वे पुण्य जिलकी सन्त स्थिति ने सस्य बसा है और औ कठिन से कठिन परिस्थिति में नी इंजानवारी क्षोड़ना नहीं बाहते।

को सस्सङ्घ द्वारा तपस्यापूर्वक घडे जाते हैं वे निषद्ध प्रक्रिया का परिचाम हैं।

परन्तु बोडा नहराई में उत्तर कर सोचें तो बांचा भी तो पडकर बनाना पडता है। इसलिए निष्ण्यु प्रक्रिया ही मुक्य है। बाम्रो साबो का डाचा पडकर बना लें।

मत भूलिये

वदना है मनुष्य को, मिट्टी को नही। इसिलए सब वे पहला काम है कि ठीक मसाला दूवो, 'श्रवितेऽनुमन्यस्व ।' धविति देवी से कही कि ठीक मसासा दे। फिर वड पदावंको तो ठाक पीट कर ठीक कर इकते हैं परन्तु मनुष्य को वडने के किए अनुमति चाहिए। नहीं तो मास को कारोगरक्या बढेवा, माल ही कारीवर को वट डालेगा। एक बाद मणुरा मे विरवानन्द नाम के कारीवर को दयानन्द नाम का मसाचा मिल गया वा। पूरी अनुमति बी, सोव कहते वे कि वड पदार्थ बोड ही है ठोको पीटो, किन्तु बहु ठोकने वासे के हाथ में लाठी देकर बोसा इस से ठोकिये में बढिवा कारीवरके हावो बढिया जान बनना च हत्ता हु। यह है 'शनुमतेऽनुमन्यस्य ।'

कारीगर

कारीवर बढिया था, गरलु बाल की बढ़िया था, कारीवर के गास करस्वती की पर बास के गास करस्वती को गहुमानो बासी धोर्स में तो भी, वह बी दो बयानन्य सरस्वती था। बस देखों क्या बढिया बास तीवार हुआ, सहहे सरस्वतुमन्यस्व।'

दिव्य गन्धर्व

सरस्वतो को सरस्वती का लाभ क्यो न होता। उसने सविता के दरबार में क्या बोडी साक छानी थी। घर खोडा, बार श्लोड़ा, परिवार खोडा, धवला बनने वाला परिवार क्रोड़ा। परिवार बनामा जनसी को, आडियों का, काटों को, पहाडों की, नदियों को, बरफोली नुकीसी बट्टानों को, सब जगह चिल्लाता फिरा सरस्वती दे। बन्त को समिता पित्रल घौर सरस्वती को सरस्वती का साम हुमा । दिव्य गम्बर्व की कृपा से बादित्य ब्रह्मचारी का रोन-रोम वा डठा, गात्र सब के है परन्तु उसके नाम तो समयुक मात्र (Musical instruments ) वे । घव में पूज्या हु, इसे कीन डण्डा लेकर नारने धावा था। बस बन्द बहुत हैं, बन्द बाल चाहिएँ।

परिस्थिति

सीव कहते हैं परिस्थित हो तो उप्डे

वासे धाप वन जाते हैं। यने लोगो परि-दिवानि तो धरव मनुष्यों के जिए वहीं थी। व वयो अपने धाप को भोता देते हो। परि-दिवादिया नहीं अन्त दिवादित वाले जाहियाँ। बहु धन्त दिवादि वाला जा, परिस्थितियों ते उत्तक्ष पदा और जीत कर खीवा, सुनी विधावित्त पर प्रमने वाला चूहा क्या कहता है—

> इक ग्रांच जिला सुनने वाला। नैं रोच पते को बात कहूँ।

> > सवन

बाहे डावा बनाधी चाहे सावा, इसे वैदिक भाषा में सबन कहते हैं। सबन करने बाला तथा सबन से तैयार माल सोनों का नाम है सोम।

क्यों कि जिस उपायान करता स मास तैयार को भीग को मण्य तैयार हो वह दोनो प्रस्थ तो एक ही हैं सोने का मुक्त सोना तो है ही।

भन देखिये शतक्य बाह्य क्या कहता है—

स्रोव कस्मिन् प्रतिष्ठित इति, दीकायागिति (शत•१४६२२४)

> प्रश्न — सोम किस में सबा है ? उत्तर — दीका में । कस्मिन्दीसा प्रतिष्ठिता सस्य इति । प्रश्न वीक्षा किस पर सबी है ?

वसर—सन्य पर।

ऋषि सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समू-ल्लास में लिखते हैं (मोह बादि दोषी के छोडने और सस्याचार के बहुण करन की शिक्षाकरे। क्वोकि जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार कोरी कारी मिथ्या आव-शादि कमें किया, उसकी प्रतिष्ठा उसके श्वामने मृत्यू पवन्त नड्डी होती। जैसी हानि प्रतिका मिथ्या करने वाले की होती है वैसी प्रन्य किसी की नहीं, इस से जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी वाहिए सर्वात् जैसे किसी ने कहा कि मैं तुम को या तू मुक्त संमिलेगा वा मिलना भवता भनुक बस्तु धनुक समय में तुम्कको दूगा इसका वैसी ही पूरी करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई न करेवा। इस मिए सदा सत्यभावण बुक्त चीर सस्य प्रतिज्ञा युक्त सब को होना चाहिए।

सही बात तुलसीदास जी ने इन सम्बों में कही है।

> रचुकुल रीत चली वह धाई। प्राप्त बाहिं पर बचन न बाई।

तुमसीदाश्चीने रचुकुल के सिए कही हैं उसे ऋषि ने बालक मात्र की शिक्षाका भाषार कहा है।

योजा के बिना शिक्षा निग्कल है परन्तु सत्य के बिना दीजा निराधार है। यदि आप बाहते हैं कि मानव समाब का फिर से ठीक निर्माश हो तो बाह्मण, कनिब, वैस्व यह साच या डाच तैयार करते होते।

परन्तुसव से बडा डाची धीर साची का मसाना है न य । इसलिए "स गुग की खबते बडी मांन हैं वे पुरप विजकी मनतः स्थिति संस्था का है और जो कठिन से कठिल परिस्थिति से भी ईमानदारी खीकना नहीं चाहतः ।

सब से बडा अप्टावारी कीन है?

कहते हैं कि एक मीन दी सा, ब अपवान्
ये पीक प्रधाना करने में कि है अगवान्
एक बार पुने खंदान से मिला है तो मैं

कसकी दाडी नीच मूँ। एक दिन अववान्
ने स्वचन में खंदान की उठके सानने का
बडा किया। सीनान की उठके से वादी
पी। मीनाने वाहब ने तुरक्त ताने वाहब के
करका दिया कि एक ही अठके में वादी
कसक आये पुरुत्त मीनानी वाहब की
सांच कुन मई। बेचा तो कुद अपनी वादी
उनके हाम में बो और सारा मुह अठके
के मारे दर्द कर रहा वा। मत साव
अप्टावार की विस्काह्य पुनकर मही
कवा याव सारी है।

देहाती कहता है कि सरपच वेईमान है। उसन कहते हैं कि तहसीअबार से शिकायत करो वह कहता है तहसीलदार भी अञ्चाचारी है। तब बहुते 🖡 🖦 जिलाबीश स शिकायत करो उत्तर मिलता है वह भी भ्रष्टाचारी है तब कहते हैं कि द्मपने विनानसभा के सदस्य म कहा उत्तर मिलता है, वह भी भ्रष्टाचारी है। पिर कहते हैं कि राज्य के मुख्यम-त्री से कही तो उत्तर मिलता है सारी काग्रेस पार्टी ही बेईमान है। तब मैं पूछता हु कि है बोटरो यदि यह सब है कि काग्रेस पार्टी बेईमान है तो तुमने उन्हें बोट क्यो दिया ? उत्तर मिलताहै कि देनातो नहीं चाहते वे नेकिन वस, यह लकिन ही सारे भ्रष्टाचार की जननी है। इसे घर में मत बसने दो,मैं नहीं कहता कि तुम बोट किसे बो। परन्तु इतना अवश्य कहता ह कि उसे दो जिसमे तुम्हे लेकिन न लगाना पड । तुम्हे काग्रेस के विवार पसन्द है तो कांग्रेस को दो, जनसम के पसन्द हैं तो बनसब को दो, कम्युनिस्ट के पसन्द हैं तो कम्युनिस्ट को दो परन्तु यह न करो कि देना तो कम्युनिग्ट को चाहते थे । सेकिन

नेद केवल इतनाहै कि जो बात (शेव पृष्ट हपर)

स्व॰ देवेन्द्रनाथ मुखायाच्याय द्वारा संगृहीत स्वामी दणनद के जीवन चरित के विभिन्त मुत्रों को सग्रीयन कर जन्हे बन्दियन नित्रत का रूप प्रदान करने का प्रयाप्त माहियकार पर घासीराम जीवा जनम मरठ नगर मे लाना द्वारिक द स क यहा कार्तिक पूर्णिमा सः १८ ८ वि० को हुमाया। साला द्वारिकाद संस्व मी दयान द के सम्पक मे द्याये थे और व मूर्निपूजाका परित्य न कर ग्रायसमाज कसभाग्द बन । प० घास राम की प्रारम्भिक शिक्षा च्रुव फारसी महुर । तदन नर वे ग्रग्नेजी परन के हतु हाई स्कूल म प्रविष्ट कराय गए। यहाउनकापरिचयप गगप्रसद(रिटा यड जज) सहद्या। टोनाम चनिष्ठ घेन एअमैना हास्य। ६८ ८६० संगग प्रसान्धार व सीराम न मिलकर द्याय िवटिंग क्लान की स्थापना की। टसमे द्मायनमात्र विषयक नायसा होते थे। १८८० भे घासीराम अस्ति मैं उत्तरी । उत्तर की तथा साग पटन के लिए सागराचन गए पर∗त् −नके द्वारा सामिल वनव यथावत चलतारहाम रामेभी घासा राम जीका पंगाप्रसाद तथा श्रो ज्वाराप्रसः६ ग्रंदि ग्रायममाजी छात्रो कासहयोग मिला । प्रवाद प्रायमित्र सभा चलाने लगे। ८०६४ में उन्हाने विष्वविद्यालय में सर्वेद स्वान प्राप्त कर की । ए० की परें आं उत्तास की । इसक उपलक्ष्य मे उहे स्वर्णपदक भी प्राप्त हुआ। छ।त्रवृत्ति तो प्रति वय मिनती ही रही। १ = ६६ ई मे दुइरा प ठयकन लेकर उहीने एम० ए० घीर एल० एल० बी॰ की परीक्ष ये उत्तीम की। निका समाप्त कर व जोचपुर के जसवन्त काले ज मे दर्शन एव तर्क शास्त्र के प्राध्यापक बने जहाउन्होने पाच वषतक काय किया। परन्तु १६०१ मे जोधपुर मे विवृत्तिका फैलने के कारण व विता के आवेश से स्थारपञ्ज बेकर मेरठ चने साथे।

मेरठ प्राक्त घासीराम जी ने वका-लत करना झारम्भ क्या। इस क्षेत्र मे भी उन्हें पयात सफलता मिली परन्तु वे आधिक द्र∘यो″ाजन नहीं कर सके। इसके दो कारण थ- वकालत के व्यवसाय म वाबाल व्यक्ति श्रविक सफल हा सकता है जबकि वासीराम जी मितमावी थे। उनमे बाकपट्ता ना ग्रभाव था। द्वितीय दे मुकदमा अडने व लो को पारम्परिक सद्भाव से काम पकर भ्रपना मामला निपटा लेने का ही परामश देन थ। १६२६ तक वासीराम जी हस व्यवसाय म रहे। इसी वर्ष वे मरठ नगर पालिका के सदस्य भी जूने गए भीर जार वर्षत कहस पद पर रहे। इस बीच वे नगरपालिका शिक्षा बोड के झच्यक्ष भी रहे।

श्रायसमाज की प्रवृक्तियों ने वासी राम जी की प्रारम्भ से ही दिखा थी। ने मेरठ रायंसमाज ने नर्को तक प्रवान रहे। सार्य प्रतिनिधि सभा सथन्त प्रान्त

### आर्यं साहित्यकार का परिचय

# स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक पं० घासीराम जी एम.-ए. एल.-एल.-बी०

#### लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

(बन्मान ज्लरप्रदेश क कई वर्षों तक उपप्रधान एव प्रधान रहे। बाज प्रतिनिधि सभापरिवनोत्तर प्रदेश (उत्तर ⊾देश का ⊾ार्चन नाम) में साहित्य प्रकाशन **का क म** १८८५ ई० सही प्रारम्भ हो चुका था। पानी रम जी कलियें न मे भी साहित्य ज्ञान एव प्रकाशन का यह कायकन नि नरचलन रा। ग्रीर उनके निधन के प्रवात् यह साहित्य विश्वाग उनकी स्मृति म प वास राम साहित्य विश्वाग के नाम संही ग्रनिहित किया जाने लगा। प उपनाम प्रत्युत लेखन प्रतिमाके धनीय । उ हे निन्दी सम्कृत, उद्, कारसी, बगरानवा ग्रग्नेजी का प्रीत ज्ञान था। धनुव द कार्यमे उननी विशेष रुचि थी। ५० नवस्वर १०३४ को धार्यसमाज के व्स साहित्य महारवी का निधन हो गया। उनके द्वारा रविन तथा धनुदित ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है-

#### १ सम्पूर्णगताकापद्यानुवाद।

२ ऋग्वेदादि आध्य भूमिका का प्रयोशी धनुवार । प्रमान यह धनुवार कुम कुल करावहां की प्रयोशी मुख्य पनिका विदिक्त मीनजीन ने बारावाही प्रकाशित हुया । पुन धार्म अनिविध्य समा समुक्त प्रमान ने पुरत्तक कर प्रकाशित किया समुक्त कान प्रमान के सुरत्तक मार्थ का ही धनुवार दिश्श गया है । इसका खिलीय स कराण साववेदितक सार्थ प्रतिनिध्यमा न ११६५ ने प्रकाशित किया। वनतान प्रकाशित दिश्यो विद्याभी ने ११० ने में इसका स्त्रीय सक्तरण प्रकाशित दिश्यो विद्याभी ने ११० ने में इसका स्त्रीय सक्तरण प्रकाशित दिश्यो विद्याभी स्वराग स्त्रीय सक्तरण प्रकाशित दिश्यो विद्याभी स्वराग स्त्रीय सक्तरण प्रकाशित दिश्यो विद्याभी स्वराग स्त्रीय सक्तरण प्रकाशित दिश्यो विद्याभी स्वर्ण प्रकाशित दिश्यों ।

महत्या नारायण स्वामी निवित हैंगोपनियद भाग्य का मबेजी मुवाद— प्रयम स्कारण श्लाहाबाद के भी विद्या यद बी० ए० डारा प्रकाशित हुन्छ।। हितोय परिवर्डित एव भशीचित स्कारण सर्वे प्रनिविधि कम सबुक्त प्रत डारा १८२६ वे प्रकाशित हुन्य।

४ वासीरामका सर्वाधिक महस्वपूर्ण कार्य स्वाभी दयानय के वयस्त्री
वयाना श्रीवती सेक्स प० देवेन्द्रनाव
भूक्तोपाच्याय विसित्त लाचु जीवन चरित
तथा वृहन् जीवन चरित के प्रारम्भिक
निस्तित प्रशासन कि स्त्री धनुवाद करवा
तथा उनके द्वारा मस्तुरीत सामग्री के सामग्र दश्यात्र करवा की पूरा करवा है।
देवेन्द्र बाहु ने १८६४ ने दश्यन्य चरित गीवक जीवनी बनला भाषा में लिखी थी। इसे ब्रज्नू देत कर पन्धारीपास ने जीवनीर राज्य बतारी के सास्कर मेरा केव्द हारा १६१२ में प्रबद कार प्रकाशित कराया। गीटिन्दराम हात नत्व कताक्ता न इसका द्वितीय सरकरण प्रका-पित्र किया। सार्थोदय डाज्याहिक ने इसी का सपने विदेशाक के क्या मंत्रकाशित किया।

६ महर्षि वयानन्द सरस्वती का जीवन

चरित-देवेन्द्रनाच मुखोपाच्याय स्वामी दयानन्द के बृहुन् जीवन चरित की उपा-दान मृत सामग्रीका सचय कर वुके थे। काभी में बैठकर इस मामग्री के झाचार पर उन्होंने वृहत् जीवन चरित का सिश्चना मारम्म ही किया वा कि दुर्योगवश उनका सर्वांग रोग से १६१६ में बेहान्त ही गया। उनकी लेखनी से इस जीवनी की महत्त्व-पूर्णभूमिकातवा चार ब्रध्याव ही लिखे गय। प० वासीराम ने १६१७-१८ मे काशी के तस्कासीन डिट्टी कलैक्टर श्री ज्वासाप्रसाद की सहायता से देवे द्रनाव द्वारा सक्बिन सामग्री चित्रकृत की। श्री ज्वालाप्रमाद निष्ठावान् बार्यसमाज वे तथा प विश्विताम के सहत्वामी रह चुके थे। इसमिए इस कार्यं में उनका सहायक होना स्वामाविक ही या। देवेन्द्र बाव् द्वारा सचित यह सामग्री घरणत

अस्तम्बस्त दशा में बी । कायजों के सैकडों क्षेटे बड़े टकड़े और उन पर प्रक्रित किए गए नोट, नोट बुकों पत्र पोस्टकाई समा-चार पत्रों की कतरनें इस समस्त सामग्री को पढना, उसे हिन्दी में धनदित कर व्यवस्थित रूप देना तथा प्रन्य में बया-प्रसग इसका उपयोग करना धरवन्त परि-श्रम साध्य कार्य वा । परन्तु वासीराम वी ने अपने परिश्रम एव अध्यवसाय से इस सम्पूर्ण सामग्री का व्यवस्थित सम्बादन एव उपयोग कर स्वामी द्रयानन्द के बीवन चरित को पूर्णता प्रदान की । प = वासी-राम रवित यही जीवनी स्वामी जी का सर्वाधिक प्रामाणिक जीवन चरित माना बाता है। इस महत्वपूर्व ग्रन्व का दयानन्द निवांच अदंशताब्दी के प्रवसर पर १६३३ में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने दो मागाँ मे प्रकाशित किया। सब तक इसके चार सस्करण निकल चुके हैं।

६ रण्डी विरवानस्य का जीवन वरित — बैनेट नाथ मुक्तिशास्त्रास्त्रे नथानी विरवानस्य की एक गोवच्च की वी। जह प्रक-काना आया में निवद की वी। जह प्रक-कानित रही। प० पालीराम जी ने दसका हिंदी मनुवाद किया, जो प्रापं मतिनिधि सभा समुक्त प्रात हारा प्रथम बार १११६ में तथा दितीय सर २०११ वि० से प्रकाशित हुआ।

७ वेदमुवा — ईश्वर स्तुति प्रार्थना विषयक १०० वेद मन्त्रों का आधार्ष य० वासीराम ने तैयार किया किसे सबुक्त प्रातीय सार्थ प्रतिनिक्त समा के ट्रैक्ट विभाग के प्रकिष्टाशा कर में स्वय उन्होंने १६०१ में प्रकाशित किया।

= जनित सोपान ——कार्ड पुस्तकालय, केरठ।

.

# शुद्धि

प्राचार्य देव प्रकार वर्ष प्रवार स्वितिल, केन्द्रीय धार्यसभा ध्रमृत पर का एक उपविभाग है, के द्वारा जलती बुसल्यानी को सुद्धि— पूराविषरण नीचे दिया का रहा है।

#### ग्राम तन्त्रवही बुगन (जिसा प्रमृतसर) दिनांक १७-४-८%

| \$ | सिलामत  | बाबु ६० वष | शुद्ध नाम | बन्तराम       | कुलसक्या | ų |
|----|---------|------------|-----------|---------------|----------|---|
| 2  | युगिन्द | २६         |           | योषिग्द्र पाम | ,,       | ¥ |
|    | देस     | 5.8        |           | देसराज        | ,        | × |
| ¥  | विवनस्  | २२         |           | व्यविश् कुमार | ,,       | 4 |
| ų  | बुरशैद  | 60         |           | खुसीराम       | **       | ų |
|    | मुरमीत  | 78         |           | गुरशीत काल    | ,,       | ¥ |
|    | मजीवा   | **         |           | मोहन सास      | ,,       | 9 |
| 5  | जना     | ¥.         |           | वयतराम        | ,        | 9 |
| 8  | मेहन्दी | ξX         |           | ज्ञान देवी    | 1,       | ¥ |
| -  |         |            |           |               | EW V a   |   |

(बोलानाथ विसासरी) प्रधान (मन्द किसोर मार्च) एम्० ए० महामन्त्री केन्द्रीय सर्वस्था स्वस्तस्य । "देख लो खाती पर वाव हैं"

साम कुछ स्वार्थी सोगों ने यह निरा-वार सोर सिपैसा प्रभार कर रखा है कि सार्यसमान के सरवार कर करना नकता के कारण सिखों में पूत्रवर्षात की मांचे साया। वह एक काला नुरु है। इस सोगों को यह पड़ा हा गड़ी कि ऋषि यसानम्य के व्यक्तित्व का विचारों से प्रमासित होकर पने को छोट में दिख सार्यन्याय में साए। मुस्लि के बाद भी विख सार्य-समाज से तूर न हुए। हिन्दुमों से सिखों को पुक्क करने की कुटिस कुषान परेशों की सम्मा हो। इस प्रसंग की कभी किस स्वान हो गई। इस प्रसंग की कभी

धाव हुन एक धार्यनीर की कुछ क्यां करते वसे हैं। यह संकरपार कृतायिह सी। आप करासा जिसा मुक्तियाती मित्रावी में। यह देशकर और विदाल प्रेमी साम में। धाप आगयमान के नोह प्रवर त्यामी स्वरूपकात्म को के बाल खबा में। क्यामी जो गो गो गहते विस्त ही से। सरदार कृतायिह में। में नेदिक वर्ण की सेना के नियु दिन रात एक कर दिया। इतहे कुछ सोन विद्या । विरोधी तके के हुद्धि से हो आपके प्रचार का प्रवाह

धाप पर प्राश्चमात्तक धाक्रमण किया गया। धाप लहुलुहुग्ल हो गये। यह दुवस समाचार सुनकर कोग धापके वायक सरीर के शास पहुंचे हो इस मार्ग बीर ने धावार्थ व्यानस्य वा प० लेकरान के सिकान का न्यारण करते हुए धपने एक मित्र से कहा

देख को मैंने पीठ नहीं दिखाई श्रास-ताबी के सामने खाती कोशी है। मेरी तस्यमञ्च-

आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

# आर्यवीर की वीरगाथा-२

लेखक प्राघ्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, ग्रवोहर

खासी से अहुवह रहा है। पीठ पर वार नहीं हुआ। '

सरदार की नावा करत के -मुक्त कम वेद से है पिता,

सदा इस तरह का प्यार दे। किन नोडुँ मुख कमी इस से मैं

कोई बाहे खिर भी उतार है।। इस प्रवन को सपने बोक्न में उतार कर सापने सायसमाय के स्ववित्र इति हास ने एक भीर सम्भाग बोडा।

यह कार्य केवल जिस्टल वसाल ही कर सकता है —

१-७७ ६० में क्विय वो जुवियाना प्यारी । बहुए एक ११ वर्षीय सम्प्रिक्षित पुत्रक ने क्विय में प्रमुख्याणी तुमी । यह पुत्रक एका विकास ने पर्याप्त कुम्म सम्बद्ध बढ़िया ने पौराण्डिक सम्प्रिक्श के कह्य को इक्की मा . व हरकर भूतिक और कनरों के पुत्रों से कराती भी और कह्य सम्बद्धिकी कुरात ऐसा स्टम्म स्वस्य विकासी मा नाम कि कर इससे स्टम्म कार्याणी मा नामा कि कर इससे स्टम्म कार्याणी मा नामा कि कर इससे स्टम्म कार्याणी मा नामा कि कर इससे स्टम्म कार्यों हुंद्र मानवा था।

इस व्यापारी कूल मे जनमे युवक

का सरीर वडा शतवान् था। यव यह परिक का बनी वन क्या विरिक्त विष्का-नरी वन क्या । प्ररक्ति का क्या क्या का काम करता था। कुरितियों को क्या मूल वे ख्वाबना रसका कश्य बन गया। रसी धार्थ पुरव के हुनक ने नृत्य के धाय स्थाबन ने भागी का। का धरमा प्रथम स्थाबन ने भागी का। का धरमा प्रथम स्थाबन ने भागी का। का धरमा प्रथम स्थाबन ने भागी का। का स्थान का स्थाबन ने भागी का। स्थान का वा। वहां विष्या दिला " न नती नताया करती थी। विश्व में स्थान नता नित्य दर करते के और कई बार प्रश्नां क्या कुरिति को ही निटा दिथा। नागी रक्षा का वह पायस्थाव का प्रथम प्रथस

एक बार जुविशाना में एक १६ वस के पोती पोतो नाले सेठ में एक १४ ११ वर्ष की करना से निवाह रवासा। आदि के विभार जुविशाना सालो ने सुने थे। प्रकार को स्थे नुरा समप्रते थं पर देठ को कीन रोके। सब सममने थे कि यह काम आदि का ना ना किर्य्यावसाल साल ही कर समना है। सीर न उस समप्रधाय चलि हा ने सुनी। सार्व बीर बाना प्रकार एक साल की सहसा साल स्थान रोकने के लिए कहा। उन्होंने कहा हम दवाब नहीं वे सकते।

"तुम वस्तम कहा देते हो? यह कीर का प्रश्न था।

उन्होंने कहा बहुं भनवा दगा हो।
यह पुनकर पहमवान विरञ्जीव नाम किर सैठ के वर गया। वसे सम्भागा। बहु व माना तो उसे कहा, 'युव मरो पुन्हारें बैटी पोती जैंदी वह कन्या है किस्से पुन्हारें बैटी पोती जैंदी वह कन्या है किस्से पुन्हा मेंठ उसके घर के लोग उस पर दहा बैठे उसके घर के लोग उस पर दहर बंधे कर करता या। बरा। उपने पिटाई कर करता या। बरा। उपने पिटाई कर एक विचा मार परा उपने दो सफ कर करता या। परा उसके स्वार कर करता या। सार परा परा स्वार कर कर मानी सारों करके यान क सोर सोग प्रसा। परा परा परा सार

सारा लहुण्यकी कोसी वा बस्त्रों पर पहलाग्या। वहाजाकर वहा देखो मेरै सारे बस्त्र लहुने रगे मुभे मारा बया है। सर रत्त दवी टानिराव गये हैं। प्रवाती दस न नो । पूलि संव लो को द्मव वहा जाना ही पडा। निम किस न मारा है <sup>?</sup> । बर≍त्र व पाल न दुल्ह सेठ का नाम सब संपहले सिवच्या। उसके कई रिश्तेदार जा बागती बनने वाले वे पणकी कोर भी क्रमुकी करके कहा, यह भी मारने वाले वे। पुलिस ने सब वर दबोचे । वे सीम सेठ समेश हाथ कोडले रह गये परन्तु चिरञ्जीव ने उनको बती बनवा दिया। विवाह क्या होना या। कच्या वच गई। स्था किसी देवी की रक्षा के लिए किसी ने ऐसा बलिवान दिया है। यही चिरञ्जीव लाल ऋवि के काद आर्थ समाज का दूसरा शहीद है।

यह महाराया। स्तार की बात नहीं है। यह तो बिताब के पत वानाराय रायवुर बामक की बात है। उसका नाम प्रतार का। करें बनीब से प्रेम था। वह बीत माकर मोनों की मन प्राच कर केता था। उसके माला दिया और निम जबसे अठल नहीं पहुंचे से। धन मोन जसे बादये और बिजाते के कि रामयुग्ध के सकके होस्ट तुम तकाराय रही। सीचते हो। देख पर कब सकट धार्तेश, तब सुम बरने कालक का स्त्रेस पता करते ? देख की सेका म करे, देख पर मर मिटने को सेवार न हो, देखा पतायुद्ध निक्ष काम

प्रताप का लोगों में कहा करता था— नेवा की सेवा केवल तकवार ने ही नहीं होती। तबीत से भी देखा की सेवा हो सरती है। काम पक्ते पर मैं नता तूवा कि देखा के जिए नद मिटने में मैं किया से पीसे नहीं हैं।

का है ?

किसी को प्रताप की बात ठीक नहीं सनदी थी। सोक समस्ति वे कि वह किशोरमञ्च-

# चित्तौड़ का वीर गायक

युकुनार तो है ही बीच इस्कने वाला जी है। प्रताप भी अपनी घुन का पनका वा। वह फिसो की वाल पर ब्यान ही नहीं देता था।

विस्ती ये वन विनो मुक्स सायक वे। मुस्ती की नवी नारी किना ने फिलीड एक इंटिंग कर वा कि मुक्त नेना न किन किस इतना कर वा कि मुक्त नेना उस पर विजय नहीं या वकती थी। किने की वीचार या फाटक टूटते ही गही वे। वार-वार मुक्त तेना की किने के मीतर के रास्कृत नीरों के नावा) की वीचार की नार खाकर ऐंग्रे नीराना रखता था।

चित्तीह ने जो शरबीर राजपूत वे वे सहाराखा श्री तेमा में भरती हो गवे है। वैकिन प्रसार एक भोर तो बालक वा धीर हुवरे वने करन यहन करन कामा भावा भी नहीं वा। वह तेना में अर्थी नहीं हुया। पर उतने हु हुया काम जुन किया। वह रामकुत को वेना में पूज वुन कर बोरना है पित गाता धीर उन्हें उत्थाह दिनावा था। वह चितांत में भार उसके साव-पास की बीरतयों में मक्सेना बना जाता धीर वहर धनमां बीरता के मीत जुनकर पुककों और तहर धनमां बीरता के मीत जुनकर पुककों और तहर धनमां बीरता के मीत जुनकर पुककों और तहर धनमां बीरता के मीत जुनकर पुककों और कहीं भार में साव में साव में साव की बीरा में साव की बीरा में साव की बीरा में साव की बीरा के मां यह अनाह हुया हैं। बारों भी साव हुया कि वहरों हों में बीरा हुया कि वहरों हों में बीरा हुया कि वहरा साव हुया हैं।

एक दिन जब प्रताप किसी पास की बस्ती में सितार बजाकर गीत सुना रहा वा एक मुगन सैनिक ने हिपकर उसका बीत मुन तिया। जब प्रत प बोटके सवा नव उस मैनिक ने प्रनाप को पस्क लिया थीर देनापति के पास जा साथ दे पुत्रस सैनापनि प्रताप को देशकर बड़ा प्रसन्द सैनापनि प्रताप को देशकर बड़ा प्रसन्द हमा। उसने कहां— लड़क <sup>1</sup> पुत्रहे हमारे लिए पीत सुनाना हागा।

प्रताप ने कहा—'वेरा काम ही गीत कुनाना है। घाप कहें मैं नाले को तैयार हैं । मुगल सेनापति ने रात को सेना सवायी । चित्तीक के किले के पास वह सेना के बाब घाया । चित्तीक के दरवाके पर प्रताप को चान करके उत्तत कहा— घव तुम घपने गीत बाड़ी।'

भुगल सेनापति ने सोवा वा कि
प्रनाप के बीत सुनकर किले के भीतर के
लोव समफ्रों कि जनकी सहाबता के
लिए कोई हुबरी राजपूत सेना बाथी है।
इस पींडे में वे किने का फाटक खोल

प्रताप मुगल सेनापति की चालाकी (श्रेष पृष्ठ १२ पर) प्रस्तावना -

जब ईब्बर न इस ससार का निर्माण कियाचा उसी समय से इस पृथ्वीपर मलाई बुगई सज्जन धौर दुर्जन के बीच फरका प्रत्रम्म हो नया या भीर सतार में उसी समय से ऐमे महापूरव पैदा होते रहे हैं, जिन्होने समाज की प्रत्येक ुराई को समय्त करने के हर समय प्रयत्न किए हैं। वो व्यक्ति जो सम ज की बुरा-इयो से इर समय लडते ग्हे है वो ही व्यक्ति चरित्रशन् बहलाए और उन्ही के कारण बाज ये ससार टिका हुवा है भीर निरन्तर प्रगति की बोर प्रयूप र है, यदि ऐसे चरित्रवान् महापुरुष इस पृथ्वी पर धवतरित न हुए होते तो यह वर्तमान ससार भूतकाल में ही कभी का समाप्ता हो जाना।

#### चरित्र क्या है---

चरित्र शन्द बोलने भीर समझने मे केवल ३ प्रक्षरी काही शब्द है, परन्तु चरित्र बडा व्यापक शाय है। इसके विभिन्न धार्व लगाये ज ते हैं। विद्वान् भी जे॰एम० जिल ने इच्छा शक्ति के अस्थाय की ही चरित्र कहा है। श्री काट महोदय भी पूरव को ब्रात्मनिर्मित त्रास्त्री मानने हैं। इससिए इच्छाशक्तिकाविकान ही चरित्र के लिए श्रीवश्यक है सर्वार्त इन विद्वानों के क्षवानसार इसका तान्त्रयं है कि मनुष्य कात्मा दारा निर्मित जाणी है, इस्पिए उसका चरित्र इसी बात पर डिप्पैण्ड करताहै कि उसकी इच्छा सक्ति क्या है ? बढ़ि व्यक्ति की इच्छा सनित दूसरी के प्रति मलाई की है तो वही व्यक्तिया प्राणी चरित्र शत् है।

बी मेंक मुगल महोचय स्वानीय जाव के तमरून को परिक कहते हैं। भारतीय साइच्य घाँविनयम की बारा ११ के सनु-बार ''बारिकास के सन्तर्गत क्यांति तम्बा स्वभाव दोनों भारते हैं। स्थाति से हुमारा समिन्नाय दूसरों के हारा किसी स्थालि के बारे में सोची सबसी जाने न या सारता है, भीर बहु सार्वमनिक पारता हारा बनती है पर्याद् किसी समुक व्यक्ति के विचय में प्रमाद किसी स्वानी की स्वानी की ब्यन्ति दिनों पारता है।

भ्राव चरित्र मे दो बातों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

१ मनुष्यों का दूसरों के प्रति ग्रावरण—

स्रवांत् किसी भी व्यक्ति का समाज के सन्य व्यक्तियों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार है, यदि उसका व्यवहार समाव सम्पत्त है तो वह व्यक्ति वरित्र-वान् है।

# वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

#### मोहम्मद श्रसलम

२ मनुष्य के सिद्धान्त -

सर्वात् किसी व्यक्ति के प्रथने जीवन के बया-पंजा सिंद्राल्य हैं। कुछ व्यक्ति समने जीवन के सिंद्राल्य समाज सम्मत मही बनारे तो उनकी चरित्र शत् नहीं कहा जा सकता। जैमे चौर डकैत सादि। इनके जीवन के सिंद्रन्त समाज सम्मत मही हैं इसनिए ये चरित्रवात् नहीं हैं। चले ही य चौरी दर्पती के बाद गरीशों की मेवा ही मोन करते हो।

जपपुंकत दो बातों से हमारा ये निष्कर्ष निकलता है कि वो ही व्यक्ति चरित्रवान् हैं वो समाज के सन्य व्य-क्तियों के साथ प्रच्या व्यवहार करने हो धौर उनके सिद्धान्न समाब सम्मत हो।

वर्तमान चारित्रिक सकट-समस्या का कारण---

प्राय देवा बाता है कि इस समार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी जम्म नेते हैं जो दार्थी होते हैं और ये स्वार्थी स्वक्ति धपने सार्थ बस स्वाज की कोई भी गर-वाह नहीं करते। ऐसे स्वार्थी स्वक्ति बरिजहीं कहन हैं, धीर ये चरिज-हीन व्यक्ति इस समार ने तो कभी स्वाप्त राज्ये नहीं हो गते, उपन्यु स्वाज के अने व्यक्ति वर इस विराह्मित स्वक्तियों के पाणी के सम्युक्त परास्त हो बाते हैं तो य समाज का सर्वनाश कर सेते हैं। वर्तमान समाज में चारिनिक सकट स्वयन्त होने के कारण विमन प्रकार हैं—

#### सामाजिक कारण--

वर्तमान समाज के बाज व रो बोर चारित्रिक दुवंसताक्षा नई है। साम का समाज प्रगतिशील समात्र होने का दावा करता है परम्तु इस समाज में प्रगति की बाड मे सामाजिक नृत्यो बादखौँ सस्कृति एव सम्पताकी तनिक भी परवाह नही की जाती है। साव सर्वत्र लूट ससोट भ्रष्टाचार दहेज इत्याएँ, बसारकार उकैती करण बादि हो रहे हैं। इन सब को करने वालो का सामना करने के लिए हमारे समाज मे दम नहीं है, बल्कि ग्रम-राथी का साथ देते हैं। उने सवा से मुक्त करा देते हैं और किसी शरीप व्यक्ति को मुठा फसाकर सवा देते हैं। दवा यही बादवं है हमारे समाच का ? विद्वान शरस्तु महोदय का कथन है कि Man अ

a social animal सर्वात् सनुब्ध को जीवित रहने के लिए समाब के अग्व ब्य-क्तियो पर निर्भर रहना पडता है, और रूसी महोदय सिसते है कि "बच्चाजब उत्पन्न होता है तो वह अञ्चा होता है धौर समाज की खराब व्यवस्था के कारसा विनव जाता है। ऐसा क्यो है? इसका कारण है, जिस समाज का हम सहारा लेते हैं, जब उस समाज का ही चारितिक पतन हो गया है, जब उसी मे चोर इकैल, बनात्कारी, दहेब हत्या करने वाले, कपटी व्यक्ति पहने ही विश्वमान हैं तो उनका बसर हम पर पडे बिना नहीं रहेगा। उस समाज के साथ हम भी उसी प्रकार माच-रए करेंथे और चरित्रहीन हो जाएने। एक अग्रेज विद्वान् ने लिखा है कि मुक्ते व्यक्तिकी समिति बतादी भीर मैं उसका चरित्र बता दुवा। सस्य ही है, A man is Knoning the Company he

इसी प्रकार सम्बुल रहीन खानसाना ने सिखा है।

बैसी सगति बैठिये, सैसोई फस दीन । कदनी सीप, भुजग मुख

स्वाति एक, गुज तीन ।। रहिमन नीवन सन बसि, सवत कलक न्<u>काहि ।</u> दूव कलारिन हाच ऋषि, मव समुक्षाहि सब ताहि ।।

इस पर जी कुछ व्यक्ति तर्क देते हैं कि हम पर जुरी समित का सबर पड़ने बाला नहीं है इस पर एक विद्वान् ने निकाहै कि—

धान के पास नन नैठी बाकर। एक दिन उठोने दामन बनाकर। ये माना कि तुम दामन बनाते रहोने। पर धाम की सेक तो बादे रहोने।

इस प्रकार प्रमुखे के हैं कि चरि-चिक्र पतन में समाज का बहुत बडा हाथ है क्योंकि जो समाज सामाजिक धादगीं के गिर बाएगा न्या समाज ने बाने बाली सन्तानें भी मरिज्ञहीन होती।

#### समाघान---

हुने बपने तमान की बुराहको को दूर करने के लिए सामाधिक सांश्रीमन करने होंगे। अष्टाबार, बोरी उर्वता, बारि के विरुद्ध एक होकर बाबाब करानी होती। हुने बहुने समाधिक साहबाँ.

मुल्यों को जिल्हा करना होया पपत्री बस्कृति भौर सम्पता को समकना होबा बौर उसी के बनुसार बाकरण करना होगा । समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सवा-बार, बाजापानन, मधुर भाषस्, नम्रता, साहस, निर्वीकता भीर धनुसासनप्रियता का संकल्प लेना होगा। समाख के जितने भी वसत बाराधी, बुराबारी, प्रब्टाबारी स्वार्थी कपटी, हिंसक और व्यसनी व्यक्ति हैं उनका साथ स्रोडना होगा। सञ्जय सौर बादर्शस्यक्तिका ताच देना व उसके सम्पर्क मे रहना होगा क्योंकि सर्व्यन व्यक्ति के सम्पर्क में रहने से ही मनुष्य वरित्रवान् बनता है। नयोकि युवास के पौषे के बासपास की मिड़ी भी सुवासित हो चाली है। बुरा व्यक्ति यदि विद्यादि से भी विभूवित है तो छोडने योग्य है क्योंकि मणियुक्त सर्पभी तो भवानक होता है। हमें सपने पूर्वज सहापुरुषों की बीवन कथाधी से शिक्ष प्राप्त करनी वाहिए। हमे स्थान स्थान से मण्छाइयो को ग्रहण करना चाहिए। सत्सगति या-नानी चाहिए। तमी हम पं मचुरताः व्य-बहार कुशवता, नम्रता, साहस, निर्मीकता उत्पन्त हो सकती है और हम चरित्रवान् बन सन्ते हैं। जैसे मधुमनिकामा सकरन्द सप्रह करने के लिए कोसो चनकर सवाती हैं भीर मज्झे मज्झे फ़ुलो पर बैठकर उनकेरत नेती हैं तभी तो उनके समु की संसार में सर्वेभिष्ठं मचुरता है। सरस-वति ने रहकर बाल्मीकि जैसा दुराचरसा ससार में सम्मानित हुआ। हमें अपनी यांको को बयने कानों को तबा दूसरी ज्ञानेन्द्रियों को सुसा रसना बाहिए। संसार के सम्बन्ध में जितना जान सनते ही चानो, ज्ञान को बढायो, को ज्ञान इन्त्रियो तुम्हें वेती हैं उनका प्रयोग करा। योग्यता के साथ बुढ़ि ही चरित्र का निर्माण करती है और परित्र सब का सब से बढ़ा हथि-बार है। जो व्यक्ति उत्तम चरित्र के होते हैं इस ससार में जनका कोई कुछ नहीं विमाद सकता।" जैसे रहीम बास भी ले कहा है कि --

> "वो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसन। बम्बन विव व्यापत नही, सपटे रहत मुखन।"

ग्राधिक कारण-

वर्तमान चारिनिक सक्द के कारणों में वार्षिक कारण मी एक है। बाज हमारे बानने वरेगा मार्ग की समस्या वर उठावें सानों है ऐता क्यों है ऐता क्यों है ऐता क्यों है ऐता क्यों है एता क्यों है एता क्यों है एता क्यों है एता क्यों है हा एक विकास करवारा वहीं अकार नहीं के रात्र ते एक करवें का सब्देश में उन्हें हमें बेबता के वर्षन हों हो हमें बेबता के वर्षन हों हो हमें के बात का ताता है सीर सुर्व वेषणा के वर्षन हों हमें हम क्यों के पर को नीता हो ही हम हम क्यों के पर को नीता है उत्ते हम मनसूरी में ४-६ समारे के हैं तो इयारी कोर का के के

#### वर्तमान चारिविक संकट, समस्या और समाधान

भी हैं को ४६ हकार रूपवा माविक नेते हैं और उनका कार्य सिर्फ कुर्वी पर बैठना है। प्राय गीकरी में भाई भतीवाबाद वनप रहा है। रोबगार के लिए परीव तथारोटी के लिए तरसते व्यक्तियों को सात मारकर बनी तथा खर्वाखनीय व्य-बितयो को नौकरी का प्रवसर दिया जाता 🤻 । ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति का हिसक बोर, डकैत अनैतिक व्यवनी एव अध्या-चारी बनना स्वामानिक है नगोकि वन एक व्यक्ति २०, २५०००/==६० देकर किसी पद को प्राप्त करेना तो उसका सक्य सब से पहले पद पर बैठकर उन रिश्वत के वैसों को जनना से वसूस करना होगा ग्रीर वह वस्त सिर्फन०२ से ग्रामात् रिष्टवत से ही करेगा। समाज मे जीवित रहने के लिए प्रत्येक अवस्ति की कुछ बावस्यकताएँ होती हैं। जैसे रोटी कपडा, अकान और ये सब अवश्यकताएँ पैसे से ही पूरी होती हैं। परन्तु जरा विवारिये कि वह व्यक्ति वेरोजनार है ? क्योंकि रोजनार पाने के अनए उसमे योग्यताभी 🖁, परम्तु समाज के ठेकेबारों ने उसको धवहेलना करके माई भतीबाबाद या रिश्वत का सिद्धान्त अपनाकर उसे रोज-बार नहीं दिया, तो उस व्यक्ति के हुद्य पर क्या बीतेयी ? वह सारे मादर्भ व मुख्यों को खोड देवा और प्रपत्नी बावरय-कताओं की पूर्वि के लिए सनैतिक मार्ग की भोर मगसर होना भीर नहीं से उसका चारितिक पतन झारम्म हो चानेवा । इत प्रकार बार्बिक दक्षा चरित्रहीन संकट के क्षिए जिम्मेचार है।

#### समाधान--

चारित्रक पतन को रोकने के लिए हुने पैसे का लिंबत बटबारा करना होगा, आई भवीजाबाद व रिस्वत के विकास्त को मूलकर वाव्यक्ति जिस पद के योग्य होवा, उसे उसी पव पर सुशोशित होने के - अवसर प्रदान करने होंने। हमे मजदूरी की समझूरी बढ़ानी होनी । समाच ने बदाप्त प्रवटाबार को बिट ना होना और व्यव एक वेरोजवार व्यक्ति को उचित दोबगार विन जाएना तमी वह धादवाँ अ सस्कृति की घोर प्रवसर हो सकेया, क्योंकि बुजूर्ग कहते हैं 'कि मूखे पेट से पूजा को नहीं होती है।' इस प्रकार सवाब का चारित्रिक पतन रोकने के लिए अरबेक व्यक्ति की शाबिक दिवति की सुवारना होना।

#### राजनैतिक कारण-

चारित्रिक तकट के कारणों ने राज-तीरिक कारचों को जी नहीं भुजावा जा सकता, साज सावारण व्यक्तियों से लेकर मुश्चिकों पर की व्यक्तिभूतिया का सारोप

सवाया जाता है। यह सत्य है कि "यथा रामातमा प्रका प्रमृत् जैसा राजाका धादमं वा दूराचरल होगा वैद्या ही प्रजा पर उसका धसर पडेना। बाज हमारे मत्री व बड बडे राजनेता सरकारी घन का दक्ष्योग करते हैं। भ्रष्टाबार फैनाते हैं रिश्वत नेते हैं। झान वब चूनाव होते हैं तो प्रत्येक नेता वढ सम्बे चौडे मापशा देता है जनता को भूटे बाख्वाबन देता है धौर बात बात में कहता है कि 'देशो भाई हम तो गरीव के साथी हैं ' गरीवो की सेवा करना हमारा वर्ग है। परन्तु जब वो चुन कर चले जाते हैं तो गरीनों को अपनी शक्स भी दिसानी बवारा नहीं करते । शमी धाम चुनाव हुए हैं अनता के सामने प्रत्येक स्तर के नता ने धपन शपने स्तर के सम्बे चौड भाषण, भाग्वासन दिये हैं परन्तु जिस दिन से वो जीतकर गये हैं अपने नों को नौटकर नहीं वेला है। विल्ली भीर भपने प्रदेशों के चनकर जवा रहे हैं। को बेचारे नेता हार गये हैं वो धपने नसीव को रो खे हैं और जनता से कहते हैं कि तुमने हमें बोट नहीं दी, हम तुम्हारे काम नही करेंगे। ये सब हमारे नेताओं की चरित्रहीनता ही तो है ये सब प्रपने भावजों में गरीन के नसीहा, गरीन के साबी गरीन के जाने क्या क्या बनते हैं, ब्रौर फोम के बद्दों पर बैठकर, विदेशी पोशाक व विदेशी बाज सामान से सुसज्जित, विदेशी स्टाइबॉ से बनी कोठी में बैठकर नरीव की तेवा कैसी करते हैं? ये सब जय वाहिर है, बताने की तनिक भी खरूरत नहीं है। इन नेखाओं ने गरीब का साव बेकर उन बेबारों से को कुछ उनके पास था वो बी ने सिवा और धनी वन नये कभी-कभी ऐसा महसूस होता है कि जैसे वरीबी समाप्त करने का सिद्धान्त ये है कि 'वरीव को ही सत्व कर वो। नरीवी समाप्त ' सर्वात् ' न रहेगा बास न बजेगी बाधुरी ', बाकी उक्ति परितार्थ सी हुई नगती है। वर्तमान समय ने प्रत्येक राज-नैतिक दश के दोष अनता के खम्मूका झा जुके हैं। विरोधी राजनैतिक दल, सनित प्राप्त सरकार को इटाकर सुद तो कूसी हिषयाना बाह्ते हैं, परन्तु वरी व की सेवा कोई नही करना चाहता, बाज भव्टा-षारी अपराधी भी राजनीति ने वा जाते हैं और जनता को मोहकर चुनाव जीत कर बनता पर अत्याचार शुरू कर देते हैं ये सब क्या है ? ये सब चारिजिक कमी तो है बनी पिश्रले दिनो परित जासुसी काण्ड विसमे बांदी के वर टुकड़ों के कारता हुमारे देश की बुप्त व महत्वपूर्ण दस्तावेजें हमारे देश के कर्णधारी ने दूसरे देशों को वें दी, वे इनकी चरित्रहीनता ही तो है इन सबका माने वासे युग मे भावी तन्ताम वर क्या असर वडेवा ? कथी सीचा इन भ्रष्ट धीर हराय सावे गामे नेता

सीर समिकारीमस्य ने।येसव बतमान समाम्यका मारिजिकपतन हो तो हैं, इस सिए इस समाम्य पर मारिजिकसकट सामास्वामासिक है।

#### समाधान-

बाज के समय में प्रत्येक देशवासी को जागरूक होना चाहिए उमे चरित्रवान् नेता बो को ही चुनाव में चुनकर भेजना चाहिए। उसे जाति धर्म ग्रादिका भेद-आव भूलकर बोट देना च हिए। स्योकि समाज का अन्तित्व भादमें एवं उज्ज्वस वरित्र के व्यक्तियों पर ही निभ र करता है। ग्राचार्य रामचन्द्र गुक्त का कवत है 'कि व्यवस्थाने ने पडन काने व्यक्तियी का धाकवंण समाज की धन्त्री तानो की घोर नहीं हो पाता सचम्ब ही ऐसे व्यक्ति समाब की चारित्रिक गिरावट के जिम्मे दार होते हैं। इसिलए हमें भवने नेताओं का चनाव करने में बढ़ी सर्तकता रसानी चाहिए। हमे भ्रष्टाचारी भीर व्यसनी नेता क्षी को ता अपने पास आने ही नहीं देना चाहिए उन्हे पकडकर उनकी हरकती को उनके भुट बायदों को उनके मृहुपर कहकर मगादेना चाहिए।

#### नैतिक कारग-

वर्तवान समाव ने पारितिक सकट और समस्या उपनिवत करने ने नैतिकता का भी कम रोज नहीं है। मान हम वर्गने नैतिक मूल्यों को भुता चुके हैं, हमारा मन वचन हैं। दुवंग है। हम घपना मान सम्यान व्यावि भूतकर स्वापंवता होकर, दूखरों को तीनक भी परवाह नहीं करते हैं। सानस्य एक स्वापंपरता वो ऐसे का पुणा हैं विजये की पर कर व्यक्ति प्रयने व्यक्तित्व को दूषित बना नेता है। नह इन कारणों से दुवंग ने नेता है। वह इन कारणों से दुवंग ने नेता है और उचका चरित हुमा के शोस क्षण बाता है। एक विद्यान ने नहां है कि—

When wealth is lost, Nothing is lost

When health is lost,

something is lost
But when Character is lost,
every thing is lost

इस प्रकार हुये कोई भी ऐशा करवे नहीं करना वाहिए विश्वते हमारा चरित्र कलकित हो वरन्तु हम बानी स्वायं विद्वि के लिए सन्य व्यक्तियों का विद्वि करने में बरा भी त कोच नहीं करते, गुरु नालक का सब हैं — कि ' दूसरों को भीचा विकास स्वायं इसरों का विद्वित किए स्वायं इसरों का विद्वित किए स्वायं सभी विश्वत में निर्माण स्वायं को स्वीत करती चाहिए।'' परन्तु हम सब्द सार्व को स्वोदक स्वायं की ओर सब्द मार्व को स्वोदक स्वायं की ओर वसरों हो समैचानिक कार्य करते हैं। एखा हम केवल अपनी फूडी जान वीकत, दूसरो की नीचा दिसाने, परनी स्वार्य-परता अकर्मण्यता ध्रुपाने सत्तार मे फूडी क्यातियाने के तिए करते हैं और इन के करन से हमारा चरित्रस् यतन होना धावस्थक हैं।

#### समाधान-

ट्वे नैनिकता की धोर ध्यान देना चाहिए कोई भी एका काव नहीं करें जितत प्रत्य व्यक्तित हैं के पित्रहोंने काम में कि स्वादा प्रत्य व्यक्तित हैं में स्वादा शाम खोकत न भावति हैं खुटकारा पाना होगा। भिष्या शाम खोकत न भावति हैं खुटकारा पाना होगा। साने चरित्र की रक्षा के लिए प्रत्यक प्रयत्न करने पढ़ियों मार्ग चरित्र की रक्षा करने से जान ही क्यों न चली चाए। हमारी पड़ित दुस्तक महाभारत में एक स्वान पर वर्षन स्थान है हैं —

यद् प्रस्मापि सदा चरित्रस्य रक्षा कार्यावन तुक्रामाति गति च । चरित्र यदि नष्ट स्थात् त्राहि सर्वे विनष्ट भवति ॥

वृत्त यलेन सरकेत् वित्तमेति चयाति च। स्रक्षीणो वित्तत कीणो वृत्ततस्यु इतो इत ॥

#### उपसहार-

वर्तमान पारितिक सकट, समस्या का समामान तभी सम्भव है बब हम भ्रपने सामाजिक, राजनैतिक, धार्विक भीर नैतिक बादशीं, मूल्यो को समर्से और धपनाएँ । भपनी मिथ्या स्वाति प्राप्त करने का मोह खोडें। घपने समाज मे घच्छी शिक्षा लागुकरें। घण्डा साहित्य पढ़ें उप. रोक्त सभी वार्ती कारणों का निवारण हम बुद करें, खुद को शुवारे । वो हमारा द्याज का नवयुवक दिशाहीन हो सवा है, व्यमनी अत्याचारी कपटी, धकर्मण्य, भाग्यवादी हिप्पी हो गया है। उसे सन्मार्च दिकाएँ। हम धपनी शिक्षा प्रचासी को बदलें क्योंकि हरवार्ट ग्रीर रेमान्ड महोदय ने चरित्र की शिक्षा का सहेश्य बताया है। मारत और यूनाम में इसी उद्देश्य पर श्रविक कोर दिया जाता वा क्योंकि जब तक हमारी शिना हमारी स स्कृति भादवं मूल्य, सस्कार भावरसा भादिका ज्ञान नहीं कराएगी तब तक हम सन्मानं पर कैंदे चलेंगे और चरित्र-वान् कहलायेंने । हमें प्रपनी विकित्सा खुद करनी होती । वर्तमान सनाव मे व्याप्त बनात्कार घूस सोरी माई भतीचा. बाद पक्ष गत, माहरण मादि दृष्कृती के विश्व प्रशियान छेडना होगा । तभी चारि-त्रिक सं कट व समस्या का समाव न सम्भव है भीर "सत्यमेव जयते की उक्ति चरितायं हो सकती है।

नोहम्मद स्रसलम C/o यग ह्यर ड्रेसर १९६, रामनगर, निकट हापुड बस स्टैब्ड मेरठ २४०००२ व्यामपीठ---

#### उपनिषत् कथा माला-५

# ईश्वर दर्शन

#### प्रवचनकर्ना-वीतराग स्वामी सर्वदान र महाराज

(गताक संधाने)

परमेश्वर का पाना सुगम है, परन्तु पहले काम पूरा कर ला श्रवात् इसक लिए यह बावव्यक है कि पहले परिश्रम करा पिर मजदूरी मिलेगी। श्रत्व परमात्मा का पान के लिए श्रयत् ऋषि बनन कालए पहले मन का पवित्र बनाम्रो । मनुष्य पहाड पर चढता है, परतु ऊपर बढन म जिल्ला समय सगता है, उतरन म उतना नहा लगता। कसोसा जान म जिल्ला समय लगगा वहा से भान म नहा। उतरना सुगम 👸 उतरन म बकाबट दूर हा जाता है। प्रतएव पहुला काम बर्यात् मन को पावत्र बनाना कठिन ह, परमात्मा को पाना सुगम है। इसके लिए भगव वस्त्रा की आवश्यकता नही । ग्रहस्थ मे रहकर जी धापपरमात्मा को पा सकत हैं। वेद दो जाज को मिटाता है, रक्त रोगको ूर करता है। गेरुए कपड मैन कम होते हैं, इसीनिए सन्यासी पहुनते थे। वेदए कपड परनात्मा की नहीं मिना देते। इसके निए तो मनुष्य को भ्रपना मन स्वच्छ बनाना चाहिए। महात्मा बहु है कि जो सकस्य मन मे करता है, वही जिल्ला से कहता है, भौर वही पूरा कर दिखाता है। तब बाकर कही महात्मा होता है। जिसके मन मे कुछ है, जिल्ला पर कुछ धौर, किया मे कुछ घोर, वह महात्मा नहीं। इसीनिए कहा है कि परमात्मा सबके अन्त र रश मे है मन बगानो कठौती में गङ्गा।

> दशन होत नारायण के, न पापी मन बचारे छे। ज्योति सेज्योति मिसती है चन में मन की मारे से।।

देखा । मन को मारे से कैसे पर मेरवर प्राप्त होता है 'इसके तीन नियम हैं—

पहला बुढि की तराज्ञ पर पूरा तोक-कर रको। नय पुकक विज्ञा वेक्स है, बच्छे भी धौर बुरे भी। यदि मन में का कोटे की पहचान है तो नेक पुकक तो बेक्कर शेखें हट जाता है, परन्तु बुरा धाने बढना है। जो बढता है, यह प्राक्त-तिक कप में भ ता ही हैं। तारपर्य यह कि धारतवासियों नो सलगा नहीं मिलता, जुक्म की माना बट गोर्ट हैं, सत्युव सल्सव होना सावस्य ।

दूसरे बहातुम उपम्बास पढ़ते रहते

सारत को पुरतक पढ़ो। सपने विद्यार्थी - नहीं। फिर कहो 'साई। पढ़े-लिखे हो, जीवन को पतिज बनायो। सदि सन नहीं। स्व सिट्टी से बना लो।'' परणु तह नहीं मानता हो उपस्था के साथ साथ दर्शन का निकेशा। क्षा सिट्टी से तो विद्यान्त की व तें भी पढ़ो। ज्वांच स्वानस्य का वीवन-चरित पढ़ लो। स्वाप्यकाश पढ़ कुम्हार के पास रेत से बाबो सौर लो। सिटापरेट पढ़ तो, जिससे तराज्य जाते कही कि 'बबा बना दे!' बहु के दोनो पत्रक समान रहे।

वोसरे धवना घन करसा पवित्र करो । दिन गत म चौबीम वण्टे होते हैं। सवा तेदस चण्ट भीर कामकाज में समाधी पौन घण्या बैठकर सब काय अवहार स असम होकर, उसस उन्सा प्रकार का कोई सम्बन्ध न रसकर, परम पिता पर-माल्या के चरलों में मन लगाओं। भोजन का सम्बन्ध छ अच्छे है, बस्त्र का सम्बन्ध छ महीने या बच भर किशी बस्तू का सम्बन्ध सन्तकाल तक नही, केवस पर-मारमा का सम्बन्ध धन्तकाल तक है। वब बीबारमा निकसता है तब भी परमास्म उसके साम पहला है। सतएव इस समय को नहीं सोना चाहिए, मन लगाकर पर-मारमा का व्याम करो । उस समय दूसरो वे बाता न करा। ऐसा न हो कि इवर भाप सम्भ्या कर रहे हैं, उधर बच्चे से बार्वे भी द्वा रही हैं। इन पैतासीख मिनट में तो न ससार तुम्हारे लिए हो, न तुम ससार के लिए। यह ठीक हे, कि मन हो चचन प्रवश्य है, वरन्तु तुमने देशा है कि मनुष्य कठिन से कठिन काम भी कर लेता है। एक समय शाला है कि मनुष्य शाल्म-ह्रत्वा तक भी कर सेता है। कितना कठिन काम है <sup>?</sup> परन्तु इसके लिए भी मन तैयार हो बाता है। इसी निए कहा है कि--

> मन के जीते जीत है मन के हारे हार।

बदाली कहते हैं कि बहु एक कप बाला है धीर धनेक कर बाबा हो बाला है। परणु धार्यसम्म का यह खिडाल्य है कि एरमारमा धनेक रण का नहीं होता। जो रक है नह एक ही क्प का खुवा है। जैसे लोहे से जुहार धनेक पदार्थ बना केता है परणु लोहा जुहार नहीं बचा एकता। इसी प्रकार मिट्टी और कुछा की बात समक को, बच परचारमा के प्रकृति को लेकर खसार बना दिया तो प्रकृति परमारमा केस बन सकती है? मिट्टी से बचा बनता है, इसके किए फिक्सी मिट्टी चाहिए, यह फिक्सी निद्दी किसी नहीं। फिर कही 'आई। पढ़े-सिखे हो, इस मिट्टी से बना लो । ' परन्तु वह नहीं बना सकेगा । वहा मिट्टी मे तो विश्वमान है, परन्तु उसके मस्तिष्क वे नही। धव उससे कहो कि 'बडाबना दे!' बह कहेगा कि 'वडा रेत से नहीं बनता अर्थात षडारेत में नहीं, मिटटी में है। इसी प्रकार संसार प्रकृति में और प्रमात्मा क ज्ञान में विद्यमान है। जिसके ज्ञान बायवा मस्तिष्क में कोई बस्तुहा वही उस बमा भी सकता है। कोट का कपडा धापने सिया है मैं उसे फाड दू, तो बाप सड़ेने। मैं कह लडते क्यो हो<sup>?</sup> दरकी मातो इसे फाड ही डालता । आप कहेने, मूल पावता ता सही किन्तु किसी रीति से किसी नियम से 1' उसक हास मे कैची भौर मुई हैं भौर उसके मस्तिष्क से कोट है। बस यही तो नियम है। एक बह बस्तु जो बनानी है दूसरे वह पदार्थ जिससे वह बनानी है, तीसरे वह मस्तिष्क विश्वसे वह बनानी है जब तक ये सब चीजें न हो कोई पदाय नहीं बन सकता । इसीकिए तो परमात्मा को अवापति कहा है।

सायकन कई को गाठे बायने को कल प्राय एक साल करवे में साती है। पाय मन कई की गाठ नव साया गाय करनी ने बाती है। क्या उद्यक्त नक्या कम कर दिया ? गही। बकन हो कम नहें हुआ, केवल दवा और सिकंड ने पाई। क्या उद्यक्त नक्या कर प्राया ? गही। बकन हो कम नहीं हुआ, केवल दवा और सिकंड ने पाई। क्या गिकका हो की प्राया निकंड ने हुआ कितना बवा है और उसका बीक कितना बाह है और उसका बीक कितना हो, तो वह कितना बवा है वारा है।

बार्कों को यानवा ही नहीं किर मुने क्यों नजर बाती है ? मैं तो मूर्तिको साकार् वैकारहा हूं।' वास्तव मे पुत्रारियों ने ऐसे ममुख्य रखे हुए हैं, बो यू ही मुठ-मूठ कह बेते हैं। शब वे ऐसा न करें, तो मनुष्यी के मनी ने जब मृति के सिए कहा कैसे हो? रामेश्वर बाबी, भोते-साचे मनुष्य बटकते फिरते हैं। धव तो नहीं परन्तु पहले जब कोई विशायक जाना भाइता था, तो यही सोग कहा करते वे कि "बिलायत व बाक्से, वर्ग प्रस्ट हो जायेगा।' वेश विवेश जाने को इस प्रकार रोक दिया। यस को भी एकादशी का वत समभ रक्षा था, कि चावस मूक्त मे कामा और दूड नवा। धर्म तो प्रत्येक स्वान मे रक्षा करने से यह सकता है। यवि अध्य करना चाही तो यही अध्य हो। वकता है। विवर से उम्मति होती देशी, उधर से ही रोक विया और कहा, बाफ्रो, रामेरवर जान्नोः वस श्लुति लोगो ने भारत को गारत किया है।

बीर पुरुष उस परमात्मा को वेक्सके हैं। मुसे भापको वह दिलाई नही देता, यखपि वह अन्दर ही विराजमान है। धीर पुरुष पहलवान को नहीं कहते को पहल-वान होता है लगर कसा हुआ, खाली चौडी गर्दन मोटी मुख प्रसन्त, चास ने मस्ती, पुढि मोटी, खरीर बलिच्छ । अब कोई बसवान् भाषातो उसको जी कह कर बुलाया कहा 'बाई तुम ती बडे मञ्झे झादमी हो । ' दुवंस झाया तो विचारे को मारने लगे। ये पहलवान के लक्षास हैं। वह बीर नहों। मतुंहरि की महाराज करते हैं -- घरे । लक्ष्मी आये चाहे रहे, काज ही मरना हो चाहे बुग बुगल्तर तक जीते रहें, वोई मान करे चाहे अपनान, भीर पुरुष नीति भीर धर्म के मार्ग से एक पन मी विचित्तित नहीं होते।' य मत् हार कौन वे ? वक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्व के बढ आई। राज ाज इनहीं का बाल परम्यु अपने छोटे आई विकशावित्य को वैकर वन को चले वए। बलुंहरिजी ने राव से मुख मोड लिया और बहा, त्रको ! मुके राज की इच्छा नही।

> गङ्गातीरे हिमािरिखिका बढपद्मासमस्य, बहाध्यानाच्यसमिविषा योगीनद्रा यतस्य । किन्तैर्माच्यसम्बद्धाः, कष्युवन्ते निर्देशकृष्य । कष्युवन्ते निर्देशकृष्य ।

मुन्ने तो यह दश्का है कि वह विश कब धाएगा, जब मैं बना के किनारे बक्कें से बकी हुई हिमालय की किसी बहरान पर मैठा हुआ हैना बन की तरमें धारमेंशी और मेरे उनर से नुबर जायेंथी परन्तु नेरा मन किर जी तेरी मनित से अरपूर रहेना।

बोबी बोब ज्यान में ही बर बिट कर्डी

#### ईश्वर दर्शन

बीव जन्तु भी उन्हें कुछ हानि नहीं पहुँ-काते ! किर वे कहते हैं, 'हे प्रवो ! हिएन साकर मुक्ते पर्वत का एक कार्य समर्के सोर मुक्ते टक्कर मारें।' ये हैं उन महा-स्वाधी के मन की उमर्थे ! सश्चर के लोग यब धरनी स्तुति सुनते हैं तो कुस्ता हिन्दा करता है तब उनका मुख गवा हो बाता है अंदे बीच में से पुवा निकास बेने पर कोक रह वर्ष हो ससारी मनुष्यो को बात है अंदे बीच में से पुवा निकास की पत कोक रह वर्ष हो ससारी मनुष्यो को बात है कि मान मही रहता नो वे किसी की प्रथमा करने लगते है थोर किसी की निन्दा यह बड़ी दूरी वात है। योगी थोर बीर पुत्रस्त तो निम्बा स्तुति से सबैद निकॉर रहते हैं।

प्राय तीस साल हुए, मैं काशीपुर सयाधा। एक दिन प्राय न्यारह बजे मैं एक चौतरे पर बैठा लोगों से धर्म सम्बन्धी साधारण बातचीत कर रहादा कि 'आर्ड! मृति पुत्रा करने से **प**रमात्मा प्रसन्त नहीं होता। इतने में एक पुजारी ने कहा, 'महाराज । भोजन का समय है। कुछ मोजन करोने <sup>?</sup>' मैन समक्रायह बेरी बातो से प्रसन्त हुआ है, इसलिए भोजन कराना चाइता है। बातचीत सराप्त होने पर मैं उसके साथ-साथ चल दिया। वह मुक्ते एक मन्दिर में ले गया और उसने वहा किठा दिवा कहा सोनो को चरचामृत विया काता है। बहु कहने भगा 'महाराज <sup>।</sup> यहां की वर्की वडी प्रसिद्ध है।" मैंने कहा, "ले बाबो।" वह मिठाई से माथा फिर उसने कहा 'बहा-राख ! सूर्ति की निन्दा क्यो करते हो ? भाष नहीं मानते तो न मानें।" तीन-चार **वण्डै व**हले मैं निश्वाकर रहा वा परस्तु श्रव मेरा मन बदस गया। मैंने कहा 'हा युष ठीक कहते हो हम तो सन्यासी हैं, हम नहीं मानते तो न मानें। यदि कोई गृहस्बी मान से तो हम चय बुरा न कहेंग। वरन्तु यह हमारी भूस बी, बीर पुरुष तो बहुई जो किसी नोभ मेन फसे।

एक कबुख बैठा बा, एक रागी बाया, स्वतं राग सुनाया। गाना सुनने के बाद स्वतं राग सुनाया। गाना सुनने के बाद स्वतं कबूध ने कहा, "तुम कब बाना, दुन्हें पांच कब्ये होंगे। रागी बडा प्रसन्त हुया। सुन्ता केंद्र सुन्ता केंद्र साथ सुनने कहा कि "कब सागे कहा या कस झाना पाच स्पये देंगे"। कबूध ने हसकर

(पृष्ठ १ का क्षेत्र)

करूपाण मार्ग के पिथक विरोधी भी स्वीकार करेंगे कि यह भारतवर्ष का धाष्ट्रीनक सन्यासी भिन्न की नजर से ही सभी की तरफ देखता या। कायरों के जमाने में इस पुक्व-बिह की निर्मयता बहुत लोग न समसे होंगे भीर सक्तय की नजर से उनकी तरफ देखा होगा तो वह स्वामी जी तरफ देखा होगा तो वह स्वामी जी का देखा होगा तो वह सामी जी

कहा, 'रापी ही हो ना ' नुद्धि तो है ही नहीं । तुपने मुक्ते क्या दिवा था? केक्स याकर हो प्रयत्न किया था ना? मैंने भी बात क्नाकर तुम्हें प्रस्तुन कर दिवा।' सुनो भेरे भाई' जासी का थन साने पर विस्त सानस्व न ने और पदि चक्षा आएं तो दुस न हा, उसी को भीर-पुरा कहते

जरनियदो में कहा है कि घीर-पृष्य ही मानी भारता न परमास्या का देखता है।" मेरे भाई <sup>!</sup> बात यह है कि किसी समय एक स्थान मे राज्य-प्रजन्धकनाओ का नियम यह या कि किसी निपुण मनुष्य को एकडकर पाच वर्ष के निए रात्रा बना बेते न भीर उसम यह कह देन य कि पाच वष नकत्म राज करलो, छुटे वर्ध तुम्हे एक जाल में छोड़ दिया आयेगा। वह मोचताचा कि पाच वय ता बहुत होते हैं इतने चिरतो राप सुख भोग व्रृं। परि-ए। म यह होना चाकि वह राज-सूख मे फैंसकर सब कुछ, भूल जाता था। जब समय बाता बीर वे कहते, "बलो । तुम्हे वन में इतोड भायें, "तव वह बहुत रोता विल्लाता, परन्तु वे उसकी एक व सुनते। ऐसे ही कई मनुष्य भावे भीर चने गये। परन्तु किसी को यह बुद्धि न धाई कि राज्य पर अधिकार बमाना चाहिए। एक बार एक चतुर मनुष्य राजा बना। उसे भी यही कहा गया। वह बुद्धिमान बा। उसने प्रजा का खूब प्रवन्य किया । नगरी की बलियां स्वच्छ कराई। दो वर्ष इसी प्रकार प्रवन्त्र करता रहा। लोग बड प्रसन्त हुए ती तरा वर्ष लगते ही आज। की कि यह जगल साफ कर दो। वहाँ सबकें बनवा थी । जगल में मनस हो नया । ढिंडोरा पिटवा दिया कि जो कोई उस अभिन ने जाकर रहेगा उसे मुफ्त सकान मिलेना। बहुत से लोग वहा बाकर मानाय हो नये। अन समय माथा तो उतने प्रश्मकर्ताची से कहा, 'क्सी माई ! मुक्ते जनल में क्षोड बाघो। ' उन्होंने कहा, 'महाराज ! सब बन ही नही रहा जहा बाहो इच्छा पूर्वक रही।'

इससिए नाई । बुढि से काम लो लो करवाण ही कत्याण है। एक परमारमा की जनित करो प्राने प्रस्त करण को शुढिकरो बुढि स्वयमेव था बायेर्ग और ईरवर के वर्षन हो बायेंथे।

(पृष्ठ३ का शेव)

भृष्टाचार और देनातो बनसम्बो माहते वे लेकिन।

नेकिन नया? सेकिन यह कि हमने घपना ईमान वेण विवा तब स्पष्ट है कि भारत ही सब से बड़ा भ्रष्टाचारी है। भारत का बोटड,

ए वोटर । तूने धैतान के दर्शन नहीं किये तो शव कर ल।

तव से वडा अध्याचारी सब से वडा वीतान तू है। दे दावी को मध्यका अब चौक कुनेवी तू देखेगा कि तेरी ही दाड़ी तेरे डाव में हैं।

### "संस्कृत में निर्णाय का श्रोचित्य"

विश्वत १० मई - पू के समाचारपत्नों के माध्यम सं जब इलाहावाद उन्न
स्थासावय के स्थाप्नित को बनावारी लाल
सावव हारा दिर गय मन्द्रत आपा में
निर्धय का समाचार तात हुया तो घनेक सक्तत प्रेमी मजनते तथा सस्याधी ने इक्का स्वाचत किया। यद्योग कुछ लोगो ने सत्कृत माधा को महन को स्वीकार किया तथारि निर्णय की अगबहारिक्ता के कारण खीचित्य के माध्यम से समा-चौचना मी की

इस सम्बन्ध में मेग प्रवना विजार है कि सम्कृत भागा के धन्नर ही मार-सीय सम्कृति की अलक मिलती है। जैसा है, सम्कृत सम्बन्ध में न गन-य मिना है, सम्कृत सम्बन्ध में न गन्दे में सात की शिला से धाज भारतीयों की मानमिक बातता का परिचय नवंविदित हो गया है और शिला प्रभागी को ख्यावहरिस्ता की स्टिमें रखते हुए हमारी सरकार नयी राष्ट्रीय स्थिता जीति वताने में खुटी हुई है।

पाल्यास्य म इति व सम्मता के सम्मता का सम्मता का सम्मता का सम्मता वार्गितक स्वत कर से सिंटगोयर हो गहा है। मेरे विचार से गुरुकृत पिक्षा प्रमानों व सम्बत्त प्राप्त के माध्यम से पढ़ने वाला सावद ही ऐसा कोई खान होया जिसने चोरी, बतात्वार, राहुनती, सपहरण्य साथि इत्य किये हो, जबकि समाचार क्यों के साने वे वाला गिवालयो/विवर्गवार स्वां के साने के साने के निकरी के निकरी है।

इन वस्त्र ने कोर्स पराङ युक्त नहीं हो सहता कि सानव बीवन निर्माण के जन्म से मृत्यु पर्यंग्न तक के सोकाह सरकार वर्षों वावन सरकुत भाषा म ही विश्वित हैं। ऋषि-पुनियों हारा प्रवत्तित धाम्बासिक ज्ञान की ज्योति धान्त्र वान्त्रित के साधन का मार्थ इसी भाषा में धापीक्षेत्र इन्य पर में समाहित हैं जिसका धान्येश्या कर बाज निवेशी विद्यान् वैशानिक वनत् में धारि-स्कार कर रहे हैं।

वंस्कृत भाग को मृतभाषा कहता स्वय धपनी हीनता प्रवंशित करता है। विस साथा को समस्त माथाधों की जनती के रूप में जाना जाता हो, जिस भाषा के महर्षि पाणिन जैसे देगाकरण के बारे से 'म मुतो न मणियन्ति कह दिवा गया हो, जिस साथा को लगभग सारी हुनिया में पढ़ा जाता हो, जिस भाषा में ससार का प्राम्थीनतम प्रत्य वेद मानव मान के तिए जान विज्ञान के समुच्य के रूप में उपय-प्रदेश तथा जिस भाषा में प्रार्थ (हिन्दु) जानि के समस्त क्में काण्य सम्यन्त होने हो वह मृत के से?

हां जब यह राज्याय थी तो मध्यक न के विद्वानी न प्रतिन्या में इंडे इन्ह सनस्य नना विद्या नित्रक प्रयास प्राप्त भी तत्र प्रयास के स्थान है। एक समय ऐसा भी रहा जब यह साज क स्थान जाति विचान के नीय रहा दिन्हीं है। एक स्थान के स्थान है। एक स्थान के पर क्षावह दिन्हां ने यह व्यादह दिन्हां न दूर हा गई। पर नुसाब यह सनी वा ज न सम के नागों के निय् उपना है। यह साहब स्व नियास के स्थान यह सहात्र में के स्थान स्थान

भाज इस भाषा के सरलतम विधि से भ्रष्ययन व स्थावहारिक ज्ञान की इंदिट से भनेक सस्याये कार्यंशील है। शासन द्वारा भी इस नावा के मान्यम से उपाधि ब्राप्त करने वालों को मान्यतादी जा रही है। परन्तु जब हम भ्रमने सविधान के भ्रमुक्रप स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३७ वर्षों के परचात भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूणरूपेशा नहीं भागना सके हैं तो संस्कृत भाषा दूर रहेगी ही। यत प्राज सावत्यकता है कि हम भ्रपनी सस्कति व सम्यता के प्रति भ्रदूट निच्ठा त्र्यस्त करते हुए सस्कृत का ग्राच्य-यन कर व्यावहारिकता मे परिवतन करें। न्याय पूर्ति अशिय दव जी ने हिन्दी श्रये जी मे अनुवाद कन्कं एतिहासिक निरास की गौरवंशालो परम्परा सस्कृत भाषा से निर्णय देकर किया है। प्रशाहै भारतीय जनमःनस घाने पूबजो की तस थाथी ' को सम्यक रीति से सुरक्षित रखते हुए इसकी श्रीवृद्धि मे योगहान देगे । इससे अहाएक भोर भ वाशी विवाद का शक्त होवा वही दूसरी घोर राष्ट्रीय एकता भी सुद्र होगी।

> सुरेश वन्द्र 'ाम्त्री' प्रवार मन्त्री

यदि इसमे यह स्वष्ट कह दिया जाय

भ्रष्टाचार को चिकित्सा धार्मिक शिक्षा

धासिर घ्रष्टाचार रोकने वासे म तो कियी पेड पर लगे मिलते हैं न धासमान से उपकरे हैं, वह वहाँ ही मिल सकते हैं बहाँ मानुष्य वनाए कारी है धार्चीत शिक्षा-एगासयों में धार वहां भी तब मिल सकते हैं बब वहां डल का प्रवण्ड हो।

पिक्रने दिनो समुक्त बदाचार समिति की कोर से एक नोकी बुलाई गई। गोकी ने जो सिफारिकों की उनने से दो मुख्य सिफारिकों इस प्रकार हैं।

१ शिक्षा सम्बन्ध मे नैतिक तथा ग्राचार सम्बन्धी शिक्षा दी जाय । २ रेडियो ग्रीर फिल्मो मे ग्रदसील

कि विश्वालयों ने बार्मिक विश्वा शरहम कर दी जाय तो वण्लवा के मिलने को सन्माबना वन वाएगी । बची कि वह कोई सान कही जाती है तो उसकी प्रभावतान्य दन बिला जहा पुलित पुलना पर निर्मर है यहा इस जात से ची शक्तार नहीं किया वा मकना कि प्रमाची-वारकना का प्रकल्पित में है मनुष्य को स्वस्त के लिए मर फिटना पाहिए यह कह ती वस वस्त है। यरन्तु सुनने बाले यह भी देखने हैं कि सह कीन रहा है। अब इसी वाश्य को नोग महास्था गांधी के मुक्त के शुनते से तो महास्था का साथ बीकन इस प्रास्थ के सम्बन्ध के बोलवा या हमित्य कर्मा क्यालय के

# समाचार-सन्देश

# त्रार्य वीर दल, दिल्ली का शिविर सम्पन्न

मभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी द्वारा बच्चो को पूरस्कार

बायं बीर दल, दिस्ली प्रदेश का ग्रीब्मकासीन शिविर ३१ मई से २ जन = ५ तक रत्नदेती पुत्री पाठशाला कच्या नगर म सायोजित किया गया। जिसमे यमुनापार की समाजी से १६ सबयुवको ने उत्साहपुण भाग लिया। शिविराधियों हेत् सान पीने एवम् ठहरने की नि शुरुक व्यवस्था की गई।

रविवार २ जून को समापन समा-रोह के धवसर पर ध में वीरो ने व्यायाम, प्राचामा एवम् साठी चसाने का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित दर्शको का मन मोह लिया। इस प्रवसर पर सभा प्रचान भी सूर्यदेव जी ने सभा को सम्बो-

वित करते हुए कहा कि बाज की विवस परिस्थितियो में देश एवम् समाज को निष्ठ वान प्रार्थवीरो की परम भावश्यकता है। युवको मे अवाह एवम् असीमित शक्ति को एक निमन्ति कार्यं पढिति मे परिएत कर बार्य वीर दल ने सराह-नीय कार्य किया है। उन्होने एक बार फिर ग्राव्यस्त किया कि अर्थ दीरों को उत्साहित एवम् प्रोत्साहित करने हेत् समाकभी पीछे नहीं रहेगी।

इस शिविर में साथे सर्वश्रेष्ठ शिव रार्चीको पुरस्कार २००० रुपय नकद एक मैडल एव पुस्तिका भाग बुवक सजय कुमार कोदी गई। -- श्यामसुन्दर विरमानी

### महिष दयानन्द बलिदान शताब्दी

मधुरा । प्रायोंप प्रतिनिधि सभा, सब्दाका स्वय जयन्तो मुख्य समारोह ७ जून से १ जून तक हो रहा है। इसका श्ववाटनश्री रामबोपाल शासवाले करेंने । इस अवसर वर वेद मन्दिर का उद्दादन, ब्रिन्दू बागरस सम्मेलन राष्ट्र रक्षी सम्मे-द्धन, महिसा चावरस सम्मेसन, मार्थ किशान सम्मेशन तथा कवि सम्मेशन का क्यायोजन किया गया है। समारोह मे क्षी बनराम जासड, स्वामी शस्यप्रकाश, सद्दारमा दयानम्द, डा॰ क्लासिद्द, प्रो॰ बसराव मधोक, बाचार्य प्रेम भिक्षु सादि महानुनाव धपने घोजस्वी विचार प्रकट

निवेवक डा० द्वारिका प्रम द झाम

### निवोचन

बार्यसमाज बाधा पार्क, जेमरोड, नई विल्ली-१= का सर्वसम्मत चुनाव २= अर्थन १६८५ को निम्न प्रकार हुआ। क्रमान-- श्री गान्सिक्रकाश नारम उपप्रचान--श्री दासचन्द जी ग्रायं मन्त्री-- श्री निरंजन देव जी संबदवा छपमन्त्री- भी दिनेशबन्द जी बन्सल कोवाध्यक्ष — श्री कुलभ्वण जी नोबस सेसानिरीक्षक-- श्री राज्य कुमार बौहान

धायसमाज धाना पाक १३-८-८३ को स्थापित हुई थी झीर पारिवारिक सत्समो द्वारा ही वेदप्रवार का कार्य प्रच्छी प्रकार ने कर रही है।

२८-४-८६ की साधारण सभा के निश्चय प्रनुसार धायसमाज बाला याक का सम्बन्ध 'झार्ग प्रतिनिधि सभा दिल्ली' से जोडा जा रहा है।

सान्तिप्रकाश नारग

### निवचिन

धायसमाब, सनाब मण्डी, शाहदरा विल्ली का वार्षिक खाबारण श्रविवेशन २६-५-वर् को सम्पन्न हुआ, जिसमे वर्ष ११८५-८६ के सिव निम्नतिशित पदा-विकारी चुने बये---

भी बनवारी साक्ष सर्वेशी निरञ्चन सास बौतन नेषाकर घाय, रतव साम यय

सन्नी थो सदानन्द चपम गी श्री ज्ञानप्रकाष कोबाध्यक भी हरपालविङ् प्रचारमधी भी निष्ठाकर द्यार भी यावेश्वर **दुस्तकाव्यक्ष** 

#### श्रावश्यकता

२७ वर्षीया (एम० ए०, शार्ट हैण्ड हिन्दी गन्नजी पास) ग्रह काय दक्ष, सुशीस, गौरवरा, कद ६ फुट १ इन, धार्यक्षमाजी श्वाकाहारी परिवार की सरकारी सेवारस ११००/- रुपये बेतन वान बासी सन्या के लिए सरकारी सेवारत काह्य वा वैष्य परिवार के वर की भावस्थकता है। श्रम्पक करें-- की प० यशपास जी श्रवाश् धार्यश्वमाज दीवामहास, दिल्ली ६

#### श्रावश्यकता

गौर वण ३५, वर्षीय सुसीक्ष कन्या कद ४/३ बाकाहारी परिवार सरकारी सवारत बेतन ११०० द० पाने बासी (घराड़ा) सत्रीवशीय कन्या के लिए सरकारी सेवारत ४० वर्ष से कम बाबु बाले वर की झावश्वकता है। विदूर या तमाकधुदा वर वर भी कोई सापति नहीं है।

> सम्पन्नं करें या पत्र सिखें---**22798** विल्ली बार्य प्रतिनिधि समा १५ हनुवान रोड वर्ष किस्ती-१

# हरियागा में श्रार्यवीर प्रशिच्चण शिचिर धूमधाम से प्रारम्भ

धार्यवीर दश हरियाचा के तत्त्वाव-थान ने हरियासा शर के विभिन्न विको में आर्थवीर दस के बीव्यकातीन शिविर बढी श्रमधाम से प्रारम्भ हो नए हैं। धार्य-समाज भाष्टवा (भिनानी) ने श्री धर्मपाल "बीर" शास्त्री बी के सरक्षण मे २४।॥ से १।६ तक, बार्य हायर सेकेन्डरी विद्या-सय नरवाना (जीन्द) मे श्री रामकुमार जी धार्य के सरकाण मे २६।%, से २।६ तक, डी॰ ए॰ बी॰ हायर सैकप्डरी विश्वालय, करनास मे श्री जगदीश चन्द्र मधोक मण्डल-पति की देखरेख में २७।५ से २।६ तक शिविर प्रारम्भ हो रहे हैं।

धार्यसमाय क्षपुरा, करनाम मे भी एक सप्ताह का बार्य वीशानना दस का प्रशिक्षरण शिविर कू० सन्तोष ग्रामां के नेतृत्व मे नग रहा है।

इसी प्रकार हिसार मे १४।६ से २१।६ तक सी सजय कुमार जी बार्य के सहयोग सं, बुरुकुण अज्जर (रोहतक) ने १४।६ से २३।६ तक बाचार्य देववर जी ब्बायायायार्व के नेतृत्व में, दयानन्द सञ्च विद्यालय सैक्टर-१६ फरीडाबाद मे १६।६

कैंस का प्रसिद्ध शिक्षणासन सापका

चिर परिचित्त की नुरुद्धम चित्तीहनड

र्धेरावली की सुन्दर पहाडियों में नभीरी

नदी के तट पर एकान्त स्वल पर भैव

स्थित है, शिक्षा बहा सर्वेचा नि शुस्क दी

बाती है सभी प्रान्तों के बालक बिना

किंसी नेदभाव के वहां शिक्षा बहुए। कर

रहे हैं, आअभ प्रशासी यहा की एक

उल्लेखनीय एव धनुषम विशेषता सिए

हुए है। यहा सुयोग्य एव विद्वान् बुरुयो

की देखरेख में बालको का सर्वागीस

विकास मुक्तरित होता है। वद, वेदाग,

धादि की पढ़ाई को प्रमुखता दी वाली

है। पहली से बाठवी तक वहा सस्कृत

विशेष के साथ धर्वाचीन सभी विषय

पाठ्यक्रम मे है। सस्कृत विश्व विद्यालय

बाराससी से बार्व पढ़ित पर बाबारिस

प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया

से मध्यमा, शास्त्री व शाचार्यकक्षा तक

की परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षों

से बहा की परीक्षाओं का परिचान सत्यु-

तम रहा है। मध्यमा, धास्त्री व

ब्राचार्य कक्षा के खात्रों के सिए छात्रवृत्ति

का भी प्रावधान है। यहाई १ जुलाई से

धारम्य होती है। नवीन वासकों का प्रवेश

१४ जुन से भारम्य होता है। प्रदेश

बन्नाची सन्य वानकारी के लिए मुख्या-

विष्ठाता को पुरुष्ट्रस चित्तीवन्द्र राज-

त्थान ३१२००१ इस वर्षे से पत्र व्यवहार

से २३।६ तक भी कन्हैयालान जी मेहता के लीजन्य से तथा पलवल में की सत्वपास मार्थ के सहयोग से २३।६ से ३०।६ त.

इन प्रशिक्षण विविदी से युवको की राष्ट्रवादी विचारकारा, भूत्रपान, मध-पान एव समस्य पदार्थों के सेवन से दूर रहने की प्रेरणा दो जायेगी। दहेज प्रवाध वैसी शामाजिक कुरीतियो से सामवाम किया जाएया ।

व्यायाम, प्राणायाम, भासन, बढ़ी-कराटे तथा प्रात्मरक्षाय बाठी प्रश्चिक्षक भी सिखाया जायेगा। उन्हें बारिमक, शारीरिक तथा सामाबिक उन्नति के साधन बताये जायेंगे । समाज ये क्याप्त बजान जन्याय, बभाव का दूर करन का प्रेरणा दी साबेध ।

शिविरों में १४ से २४ वर्ष सक के युवक भाव ले सकते है। निवास समा भोजन की व्यवस्था नि शुल्क है।

> धजीत कुनार धार्य (मन्त्री) बायंबीर दस हरियासा

#### श्री गुरुक्कल चित्तौड़गढ़ में बम्बई में श्रार्य बाल शिविर प्रवेश आरम्भ सफलता प्रवेक सम्पन्न

कार्यसमात नासुप की बोर स २८ ४-८५ में १२-५-०५ तक १६ दिन के लिए आर्थवाल शिविर लगाया वया बा जो कि राम झाश्रम पवाई के शांगन से बड ही सुचार कप से चलता रहा। इस में सरमय ३० वर्जी ने मान निया। विन हो गायत्री, सब्या, हवन मत्र तका प्रार्थना सादि वड ही प्रच्छे दय से सिकार वये। बन्तमे १२-६ =६ को तो मानो-बार्वजनों का नेसा जुडा हुया था। प्रथम पुरस्कार विजेता श्री सुरजीतसिंह उप्पन्न क्के इनको १०१/- रोकडा दिय । दूसरे क तीसरे मासूप के बज्ब रहे। सभी बज्बो सरकृत बाहित्य, व्याकरता, दर्बन, उपनिषद् को खान-पान, नाश्ता, दूव ग्रादि ठीक समय पर मिलता रहा। विस्की देवरेव द्यार्यसमाध्य के मन्त्री ज्ञानचन्द गोयल कर रहे ने। बच्चों ने वैदिक धर्म को प्रास्ना नाना इन शिक्टि का मुक्य उद्देश्य था। ज्ञान वस्य गोयल मन्त्री

### शुभ विवाह

दिल्ली साथ प्रतिनिधि सभा के प्रकार मन्त्री वी राजेन्द्र दुर्गकी बहिन सौ० बधवासा का गुत्र विवाह विश्वारतभूवक कोषाध्यक्ष नगर धार्यसमाज शाहबरा दिल्ली के साथ १६ मई को घूमचाम से सम्पन्न हुआ। इस प्रवसर पर सन्ना त्रवान की सूर्वदेव, सहामन्त्री श्री डा॰ बर्मपाल, वेद प्रचार प्रविष्ठाता स्वामी स्वरूपालचा जी मादि मनेक गण्यमान्य व्यक्ति व्यक्तियत वे ।

#### व्यावश्यकता

एक प्रौड़ सबना सक्षम सेवानिवृत व्यक्ति जिले सैनशिक व प्रशासनिक सन्भव ही चितीस्थव बुर्द्धल चामन बासकों की परिवर्ध हेतु व्यवस्थाप व पद के लिए अपेश्तित है। स्नातक व प्रसास निक सनुमवी को प्राथमिकता । देव वेतन योग्यता सनुसार स वेदन पत्र १० जून हुक वाह्य,सम्पन्न करें बचवा स्वय मिल-

मुन्याविष्ठाता-ची बृदकुस वितीदवद शाबस्थान ३१२००१

### निर्वाचन

मायसमाम कृष्णानवर विस्ती ५१ (बमुनागर) का वार्षिक चुवाब सम्पन्ध हुया । विसर्वे निम्नलिक्ति प्रविकारियो का चवन हवा--

प्रवान — भी राजकुमार मेदरा नन्वी-ची प्रशोक गठानिया कोवाध्यक-ची छोनप्रकाश बुवनार

सबदीय

पूरोहिल बायसमाज

#### निशोचन

**धायसमाव मुब्यकरपुर (बिहार)** का ६२ वो वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हवा। बागानी वच के किए सवसम्मति वे निम्नविक्त समिकारी निर्वाचित किए

- १ श्री पन्नासास श्राय-प्रधान
- २ की कुलभूषण बोहरा—म बी
- ३ की रामकृष्ण विवशासका---

कीषाध्यक्ष ।

समाकी अध्यक्षता समाज के वयो वृद्ध कायकर्श भी पूराचन्त्र विजरावका न की। चुन व में सगमग १२%, सदस्य उपस्थित वे। प्रातिभोज के साथ निर्वा म त्री चन काय सम्मन्न हुमा । धायसमाच

दिल्नी के विद्याल प्रानशास नव निर्मित

बज्ञासाका विधि नु स्परे जनवारन

६ मर्ट१६ ५ प्राप्त काल की राभ बता

में ५दमन्त्रों के उच्च रहा श्रीमती पुरुपा

जी सचदवाके करक अभी से सम्पन हमा

उद्बटन समाराह की ब्रध्यश्वा श्रय

जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आ जैमिनी जो

गचदेवाने २५,००० न्ययं की ।शि

ग्रानेस्व० पति श्रीतिसक राजसच्दवा

की पुण्यस्मिति मेदन रूपम दा। इस

यज्ञजाला के निर्माण का सकल्प लगमग

१ वस पून सच्देव परिवार ने ाकसा

ने नुप्तिन यह यज्ञाला देश विदेश की

त्र नी बाबुनिक य="गागणों में उच्चकोटि

की 4 नी है। इसका अय शायसमाच क

कायकर्ताचीका अने करवा को जाता

सगमरमर पर ग्रकित वेद सुवितयो

वा यन स्थप्त शव साकार

यज्ञशाला के निर्माण हेत्र श्रामती

शस्त्रीन बह्याके रूप मे का

र्था र

### निर्वाचन

धार्वसमाज सिसीमुडी के निम्म-निवित्त समिकारी १६०५ =६के निए चुने वने हैं। आसा है प्रियम में प्रकाशित कर अनुष्ठहीत करेंगे।

- १ की जवाहरलाल धाय-प्रचान
- २ औ हर जजराम बग्नवास -- उपप्रवास
- ३ श्री बीरबङ्गाष्ट्रस् प्रवान---उपप्रवान
- ४ भी सर्वेत्रवर फा मन्त्री
- श्र श्री वसदेव प्र० मौब— उपमन्त्री
- ६ समावयन्द्र बकीपुरिया-कोशाञ्यक
- ७ भी राजेन्द्र प्रसाद-पुस्तकाध्यक्ष

बन्बवाद ।

सर्वेदवर का (स.जी) बायसमाच सिलीगडी

हरप्रकाश धान्त्रधाकिया तथा भूतपूर्व यद्गशाला का उद्घाटन प्रचान श्री चमनलान के नाम उल्लखनीय बायसमाज बद्योक विहर ५ ज I

> वस समाज का १० वा व विको**त्स**व यज्ञशाला के उत्घटन मधा भ किया गया एक सप्तह के उत्तव संयक्ष प्रमी जनताने बन-कुण्डीय बन किय । सन्नि का कायक्रम B Block के पान मे साथो जित किया गया। प० जिमना सास्त्री की कथासे पूर्व युवा सन्त्री श्री विश्वव भूषण बाय श्रोर श्री शृतावस्तिह राष्ट्र के यनोहर अजन हुए। १० मई को महिका सम्मेलन एव ११ मई को बच्चो की नावन प्रतियोगिता का बायोजन किया गया ।

१२ नई ८४ को पूर्णाहुति के वश्यात् धाषाय पुरुरीसेंब देवं धाषावें विक्रमें जी के प्रवचन हुए। बाद मे ऋषि समर का मायोजन भी मनिनास का कपूर का तरफ से हुआ। जी इन्द्रभान जा क्रम्बका द्वारा यज्ञ का सारा सच दिया गया ।

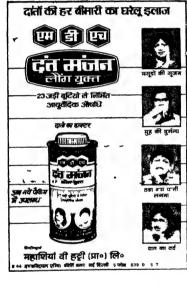
विजय भूषण बाय मन्त्री

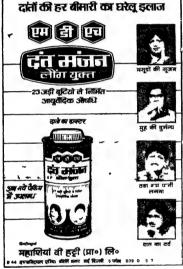
### श्रार्थ समाज हतुमान रोड का सर्वसम्मत निर्वाचन

बाय समाच हुनुसान् रोड के वार्षिक साधाण ग्रम्थसम्बन्धः से स्वसम्मति से श्री राममृति जी कैना को प्रकान चुना स्था सौर मेव निर्वापन करने का सधिकार भी उन्हही दिया गया।श्री प्रभान जी ने निश्न प्रकर से अधिकारिया के नामों की घोषणाक —

- १ प्रधान-धी राममूर्ति कैसा
- २ उपप्रधान-श्री सरदारी सास वर्मा
- ३ उपप्रजान-श्री रतनलास सहदेव
- उपप्रधान श्री हसराज चोपडा
- म त्री-की सैरावली लास माटिया
- ६ उपम त्रा-बी त्रिलोकी नारायण मिख
- ७ उपम भी--श्री रशक्य दवाल वी
- ८ उपमन्त्री-धा जातिबन्धु भाटिया
- सपम त्रा-- श्री वारेश ब्रमा
- १० कोवाध्यक्ष-श्व बुद्धराम <del>जुर</del>ा ११ पुस्तकाच्यक्ष--श्री हुवयराम नवानी
- १२ प्रविष्ठाता धार्यवीरदस की राजीव मारिया

बैरावती साम माटिया (मन्नी)







श्रार्थ जगत की गान २०० बिस्तर बाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए , द्भान की राणि धःसक्र बन्निस्मम बीठ ८० के प्रतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा बान वैक मिनीझाईर/बेक ब्रायट द्वारा मत्री, माना वन्तनदेवी आर्थ घर्मार्थ नेत्र विकित्मालय, सी-१ जनकपरी नर्ट-दिल्ली-४० के पन प भेजा नाग। द्वानदाताओं के नाम विकित्सालय की शिला पर

अकित किए जाएगे। निवेश्व

रानमोताल ग्रान्नवाले नूयवेष महाव्यवर्षणाल घोषप्रकाश प्राय वरणक विकित्सालय प्रवान दिल्ली प्रयान प्रश्नी एवं प्रवान साञ्चाञ धाय प्रतिनिधि धार्य केलीव महालय कुलीलाल प्रतिक समा समा समा समा सेरिट टुक

सौजभ्य से महाश्चिमाँ दो हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीतिनगर,

(एक २ का केव) वद में विज्ञान वह त्व बातवेवत केव **वेहत्विक केवत** । हत्ते विज्ञान पूर्वप् ॥ धर्म-

त्य वातनेयस देव सूर्वम् = उन्न संसार को प्रकाशित करने वाते देव सूर्व को

हरी विश्वाय=विश्व के समस्त प्राचित्रों को विकाल की हरिष्ट से

केतव व्यवहित चतुम की किरखें वसस्य को अगर कुल्लू है। अवहित भावार्थ-

प्रात काम सूब के जब प्रमम बक्तन होते हैं तब सूच मूचि के पीछे हाता है, जो सूव की सीधी किरणों से दिलाई नहीं दे सकता । उस समय बाकाश में ऊपर के विरस बाबू मण्डल से भानी हुई किरखें. जब पृथियी की स्रोर के यदे माध्यक है पास स गुजरती हैं तो नीचे की धोर ÷क (मुख जाता है। परिसानत सूर्ये— ना उस मध्य पृथिका की घोट में हाता है—दिस ई देश है। ऐसा प्रतीत होना हव भाविक है कि मानो मूब रहिमबी ने उस ऊपर चारिया है, ताकि पृथिकी के समस्त प्राणी उसे देख सकें। जब सुव की सीची किरसा पुविकी पर बडती है. उस समय स्य को देशा नहीं वा सकता। परन्तु इन दिखेंकी, विस्तृती के कारका... स्य का प्रवत प्रकास सूमि वर नहीं

पूर्वेचता । उस समय वृर्व-स्त्रंग क्यांप होता है । सर्वेचीर विकासिक्टर इ, स्त्रांच नगर, पीनीजीस (२६२-००६)

> (एष्ट १ का क्षेत्र) बीर गायक

क्षमक नया। उसमें ऐसा बीत साथा बारम्म किया कि तते सुमकर क्षिणे के राजेशूत तारवाण हो सवे। उन्होंने सुमक तेता पर तत्वरों और तीरों की वर्षी अज्ञाक करन्द्री। जुझ के निष्का बारे प्रवास सवे। पुष्पत क्षेत्रपरित वेतते हुए अक्षम

प्रतार ने वडी निर्वयता ते ह्यूक्टी-वैं भीत ने धानी बीरों में कह रहा हूँ कि श्रमु हार १२ स्वा है। लोगों मन । कोंचे में मत प्राथी। किसा नव कोंकी। स्थार मारों स्थार। क्षमु का क्षमूबर मिकास यो।

युगल सेनापति ने प्रताप के सिर को एक मत्ये म काट विका किन्यु राजपुत सावचान हो गये के पुत्रक सेना तो निराश होकर तीर जागा चडा । हसरे किन राजपुतों को प्रताप को साथ मिली। देश पर प्रास्त देने वाले क्या और वालक को देह को स्वय महाराला वाल के स्वर्ण किया पर च्या। खाको हम मी हम्द्री के जीवन से प्रेराला कार का कि की में के जीवन से प्रेराला कार का कि की की की की की में

--- प्रस्तोता अवकीत ब्राइकी

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गरुकल काँगडी फार्मेसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली रामा केदारनाय, फोन २६६८३८ व्यवडो बासार, विस्लो ६





सूरव एक पृति १० पैसे वर्ष श्रेष्ठ ३०

रविवार, १६ जून १६ द । बार्व सक्तार ११६० वध्रे वद्ध

क्येष्ठ २०४२

बबागन्यास्य — १६१

#### अमर पं० लंखराम

बर्म पर बलियान होने वाले बीर देखा प॰ वेसराम का स्वर्ण भाते हो एक दिव्य बाहति मानसपटल बर क्षेत्रती है। एक ऐसे मानी औ बाद बाती है जो उफनती नदी के श्रवत देश की विपरीत भारा में अपनी नाव बेता क्यता है भीर क्यी बांबता नहीं निराय की नहीं होता । क्सार ऐसे लोगों को उत्मत्त कहा सरता है। वर्ग की बूत के बनी पर क्रेकराम का जीवत वहाँक दयागम क्रिक वर्ग के प्रति पूर्ण समस्तित काः वै अपनी वर्ग-प्रचार याचा वै अभी बके नहीं, रके नहीं : विदेशी वयवाँ के जाल मे जारतीय सस्कृति विनश शताब्दियों से जकती चली बा रही है। इस देश के भीले माने वान रिकों का छल बस से अर्थ-परिवर्तन किया बाता रहा है। १६वीं सदी मे हिन्दू बर्म उस करने बाटे के दीपक की हरह हो गया वा जिसे घर में रलें की पृष्टे सा जावें भीर बाहर रबादे हैं तो कीए उठा ने जाए। किसी के अभी बात से ही वर्म से धन्य जाति से बलग कर दिया बाता वा । ऐसे कब्दे वार्गे जैसे वर्ग को तोवने के लिए घनेक मतावलम्बी ईसाई और मुसलमान हिन्दुयो को द्यानी साप के जकति वने जा रहे के । सक काल में महर्षि दवानन्द द्वारा दिया शुद्ध सुदर्शन चक्र प॰ के सराम ने अपने हाथ ने उठा लिया। कौर प्रस्का ऐसा दूशलता के साब स्थालन किया कि बनेक विख्द भाई किर हिन्दू होकर अपने पुरान घर भें सरेट झामें । जुनके जोमन की इस बरमा के जी सरीर रोमाणियत ही काता है। यब समी पता चला ममुक काय में कुछ लोग मुसलगान होने जा की है। वे उस समय घर बैठे मौथन इरमें ही जा रहे ने कि पत्र झस्रा



वर्ते स्वका मिनी, उद्धी स्वस्था मे उठकर वे रेक्साओं द्वारा चेत आंच के लिए चन पर । उस गोन से कोई रेलके स्टेकन नहीं का उन्होंने नलती गाडी से सनांग लगा दी। देश है गिरने से उन्हें बीट भी सभी खासे रने वस्त्रों से ही ने उस स्थल पर पहुचे बढ़ी कुछ हिन्दू महकाने मे शाकर अपना वर्भ परित्यस्य करने का रहे ने । जैसे ही उन्होंने ए० सेमा राम की भीर उनके ल्यांग की देला वे माव विभोर हो गमे। उन्होंने यह कलकर धर्म परिवर्तक से अपना निश्चय क्दम लिया कि जिस धर्मे में ऐसे हमारे स्थाक बाई हैं जो शपनी जान पर बेलकर हमकी बचाने आफे हैं, इस सम कम को कदानि नहीं त्याम सन्ते ।

प 🤉 त्रेक्टराम नै सपने जीवनकाम में वनेक पुरक्षतें विक्ती की कुरक्री ३१ हैं । वे अजी पुरुष विवासिकों के प्रश्नों के शक्तर में शिक्षी गयी। महर्षि दवानन्य के शकाशिक बीवन परिश्र को जिससे का अमें की मर्गनीय तेया-

राम की ही बाता है। देश के कीने कोवे मे बाकर उन्होंने शलम्य तथ्य एकत्रित किए। हिन्दू देवी देवता और सस्क्रति वर कीवड उद्धालने वाले धनेक बुल्ला मौलबी विवर्णियों हे उन्होंने बलेक सास्त्राच भी किये। उनकी विद्वता से, तक ग्हारी से विश्वभी जनो ने श्राप्तक फीन गया। उन पर मिर्जापुर, प्रवाग लाहीर बेरठ दिल्ली बन्बई की अदालती के मुक्तवारे की हाले क्यू करानु घटा नत द्वारा उनके लेखी भावणी मे कीई भी बाक्षप की बात न पाकर

मुकदमे सारिश कर दिए गए। शारों धोर से लोहा जेने से मुखलमान मनान्य क्र इ हो गए। ऐसे ही एक नीय हत्सारे की वे बलि यह गये।

उन्होंने श्रार्थसमाज के मध्य मयन को बनाने में नीव का कार्य किया है। ऐसा उपरेशक, ऐना लेखक देश बयर तेवक ऐसा क्रांतिकारी प्राक्त प्रार्थसमाच गमित है। उन्हे विवान के परवात उसकी परबी क्र स्थान की स्वारण है। उनके शीते हैं २००० सभी जिलें। वे उनके जुई इस कानग्री हैं बान कर शिक्षे बाल वृध्य के सिए । पत्री प॰ बुद्धवेग विकासकार वेशा क्रीक स्वी विकास कार्यसमाज को निका है। बस्स है वीर लेखारान बुल्हा है उनकी बल्नी श्रीवती लक्ष्मी देवी। म व है महानि दवानन्य जिन्ही ऐसे बलिदानी सिक्य पिसे।

पार्यसमात्र का धतीत बलिया-नियों से सीशिक है परम्बु भाव हम यन बोर बलिकानी करोदी की शीव कथायों की मूलते का रहे हैं। न्वामी श्रहानम्द भीर महात्मा ह पराज की तो फिर भी स्वरण किया जाता रह है। सहीद लखराम कुछ उपेक्षित ह में हैं। यदि बीरताकी म पूजा न सराहा तो बीरता की जनती बन

हो जायेगी। क्योंकि--

प्रराग शहोदी से बदि हम न लेंगे माजादी तलती हुई सीभ हो जाएगी। यदि वीरी की पूजा हम नहीं करने तो सच मानी वीरता बाँम ही जाएगी।

—बद्यपाल सुत्रोध



श्रार्य जगत की शान

200 बिस्तर वाले निर्माणाधीन

ज्ञेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भायकर भिषिनियम जी । ८० के

ग्रतर्गत कर मुक्त होगी। सारा दान चैक/मनीम्बार्डर/बैक द्राफ्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रायं धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय.

सी-१ जनकपरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर

अंकित किए जाएगे।

निवेडक

धार्व प्रतिनिधि धार्व केन्द्रीय

सौजन्य से महाश्चियां दो हट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीर्तिनवर, बौद्योगिक क्षेत्र, नई बिल्ली-११००१

गतावय वर्गपाल

प्रचास

धीवकाच प्रापं

कारो

वेरि॰ इ॰

व कुलीलास

सर्वदेव

रामयोपाल जालवाले

एवं प्रचान, सा॰सा॰

प्रति० समा

वंदसक किकिमासय प्रकार विस्ती

# रजि० नं० डी (सी०) ७४%

(पुष्ठ ८ का शेष) जान में ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, महा-बीर, कन्पयूचियस मावि महारमाओ की सार्वभौमिक शिक्षाएँ रसी बार्वे।

४ उच्च बाध्यविक (११-१२ कक्षा) विक्षा तकोव परक और ऐक्सिक विषयी के साथ डोभी चाहिए। हिन्दी, संस्कृत, प्रादेशिक भाषाएँ उज्ब साहित्य व व्या-करण सहित धनिवार्य रहें भीर प्रमेवी का सामान्य जात. रचना, बोसचास का धान्यास तथा तकनीकी घट्टाक्ली का ज्ञान प्रायोगिक पाठो के साथ रहे।

**ऐच्छिक विषयों के समूह---**(१) विज्ञान तीनो सासाएँ व वणित

- (२) वाणिज्य वणित भी.
- (३) खबाब विज्ञान -रावनीति, शमाब-कारण, इतिहास-मुबोस (बिश्व) शीर धर्मन्यवस्था
- (४) जावा वर्ग-कोई वो विदेशी माबार्टे व्याकरण सहित वा कोई से मार-नीय जासाउँ । पर्यावरण नैतिक शिक्षा के पाठ धनिवार्यं विषयो में सम्मिलित रहें।

भवदीय -- नवप्रसाद सर्मा

समाज वर्ग, सावि सनेक विद्यामी का समाहित होने पर ही प्रतिपादन करता है। इन समस्त चर्चाओं के पश्वात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वेद में समस्त ज्ञान विज्ञान बीच रूप में निहित्त है तथा बाद के बैदिक ग्रन्थों से ऋषि सहवियों ने

स्वाभी दयानन्द के इस महान् वैदिक प्रकास के फलस्वरूप बेद को धव तक

#### (पृष्ठ ६ का क्षेत्र)

ज्ञती का विकास किया।

में इनमें (जिनमें) प्रकृति की शक्तिमों की पूजा और धार्य जाति के बादि विकास का बुलान्त एव गडरियों के मीत ने। धव एक बच्चारिमक तथा ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक हो वाती है। इसमे एक वैज्ञानिक धर्म है जो मनुष्यमात्र के लिए है जिससे मनुष्य गात्र की बाध्यात्मिक एव साला-रिक उम्मति का सही बार्ग बतकावा 

पुस्तक वी तका पाववात्य विद्वानी के बत

सायव के हाथ में केनल कर्नकाण्ड की

#### लिए स्वास्थ्य उत्तम

काँगडी फार्मेंसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारणाय. फोन । २६१८३८ वावडी बाबार, विस्ती-६



# 🛨 वक्त-सन्देश 🖈

सत्यार्थंप्रकाश एक महान् सन्देश

सरवाषप्रकाश ने न जांभे कितने ग्रसस्य व्यक्तियों को कावा पतट की होगी।' -स्कामो अद्धानन्द 'युग निर्माण तथा चतुर्मुं की प्रगति की भावना से ऽ गोन यह दिव्य प्रन्थ (सरवाषप्रकाश) एक महान् प्रकाश-रतम्भ है जिसका निर्माण महाव द्यानन्द ने सर्वप्रथम सम्यगं मानव समाज की उन्नति के लिए किया।

-डा० श्यामात्रसाद मुकर्जी

यदि सस्थार्थप्रवाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रूपया होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता। — गुरुदत्त विद्यार्थी एम०७०

मैंने सत्यार्धप्रकाश पढा। इससे तस्ना पलट गया। सत्यार्धप्रनाश के ग्रध्ययन ने मरे जीवन के टतिहास मे एक नवीन पृष्ठ जोड दिया। —रामप्रसाद बिस्मिल

सम्पादकीय

# साइचिन पर पाकिस्तान की गिद्ध दृष्टि।

लहाल मे भारत पाक मीमा रेखा पर साइचिन ग्लेकियर बाटी 🐧 पर इन दिनो लघु युद्ध छिडा हुमा है। मई १६८४ मे प्रथम बार पाकि-स्थानी फौजो ने मचानक साइचिन ग्लेफियर पर स्थित भारतीय चौकी पर जबरदस्त हमला कर दिया था को भारतीय सैनिको ने बडी कुशलाना के साथ विफल कर दिया था। तब से लेकर ग्रव तक कितने ही पाक तथा भारतीय सैनिको को भ्रपनी जान से हास सोना पटा है। यह स्थान १८ हजार फूट की ऊचाई पर स्थित है। यह स्थान विश्व का सब से ठडा क्षत्र है। यहां की जलवाय बाकटिक की तरह माइनस ४० डिबी रहती है। घोर गरियों में भी जमा देने वाली बर्फीली हवाएँ चनती हैं। यहा पर सदा ही हडिडमों को तो इदेने वासी ठडक रहती है। हवा अस्वधिक हल्की और आक्सीजन इतनी कम होसी है कि कुछ भी काम नहीं किया जा सकता। ग्लेशियर १८ हजार फुट ऊ चा है और बारो तरफ वर्फ से ढके पहाड २२ हजार फुर तक ऊ वे हैं। साइविन ग्लेशियर युद्ध क्षत्र के लिए असम्भव जना है। हथियार पर नगा उगमी रखते ही वह जरूर जाती है और चमडा उलड जानी है इननी कवाई पर मशीन और मनुष्य २५ प्रतिशत क्षमता तक ही काय कर सकते हैं। यही कारण है १९४६ के युद्ध विराम समझौते में १६७३ के शिमना सममीते में इस क्षत्र का रेखाकन नहीं किया गया था। अब पाकिस्तान इसी का लाभ उठाना चाहता है। बमरोकी व जीनी नक्शो मे समझिवन को पाकिस्तान का हिस्सा बताया जा रहा है। बीठ बीठ सी० ने भी कहा है यह क्षत्र कभी सीमाकित नहीं रहा। इस साजिश के प्रति मारत ने कडा प्रतिरोध किया है। एक समाचार के मनुसार अमरीकी जासूमी उपग्रहों से बहुत समय से साइचिन ग्लेशियर बेल्ट कर निरन्तर जासूसी नजर रखी जा रही थी। इससे प्राप्त साकडो के भाषार पर ही गत वर्ष २३ जून १६८५ को अन्वानक पाकिस्तान ने आक्रमरा किया था। ३ भारतीय सैनिको ने भपनी श्रोर शाते हए धनेक जत्थों को देखा। पहले वे सममे कि पवतारोही हैं पर फिर देखा कि वे सभी सशस्त्र हैं व पाक लाइट इन्फट्री या स्पेशन सर्विस प्रप के लोग लगते हैं। उन्होंने फोन से भारतीय दस्ते को खबर करने की कोशिश की परन्त फोन डैड या तब वे प्रपने साथियों को सचना देने के लिए स्कीइग के लिए बढ़ कि पाक सेना ने गोली वर्षा शुरू कर दी। एक सैनिक मर गया दूसरा घायल हुआ। तीसरे ने किसी तरह पहच कर भारतीय चौकी पर सूचना दी। भारतीय ज वे तत्काल आये व सम्बी लगई के बाद पाक सेना पी छे हट गया। इस वय २६ मई को पाक्तिस्तानी वायुमेना के ६ जेट लडाकू विमान खुल्पमखुल्ला भारतीय सीमाभो पर घस ग्रामे जिल्हे सदेड दिया गया। फि जो दार ग्राक मसाकियापर भारतीय सेना ने उसे फिर विफल कर दिया। भारत संग्कार ने पाकिस्तान सरकार से इस सब पर बढा प्रतिरोध किया है। राजनतिक प्यवेक्षको का कहना है झाज जब सम्बन्धो के सामान्यीक रगा के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं पाकिस्तान का शत्रुता-पूर्ण कार्यवाहियों में लिप्त रहना ग्रत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत सर-कार ने प्रस्तुत भाक्रमण के पूर्ण विवरण भभी सार्वजनिक नहीं किये

हैं पर साइचिन घाटी के छीनने के लिए किए गये पाक आक्रमणी के बारे से मारत की उत्तरी कमान के जनरल एम॰एल॰ छिड़्बर के अनु सार एक साल के आक्रमणी में २००० से अधिक पाक सिनक मारे गये और हुवारी वायल हुए। इन कारगाईंची में केवल तीन में तीय सीनक मारे गये जब कि २७ हिन गड़ी के लिसकने से दबन र मर गये। सभी पर कुमाना र वर्षों नी ल्लाका में लन्ने में प्रविक्षण प्राप्त छापामार व कनाड़ी सिनक ये ये गायुनिक हिपारों से लस थ और उन्होंने दोनों और से एक साथ हमें वन्होंने दोनों और से एक साथ हमें वन्होंने दोनों और से एक साथ हमला बीना था।

४० मील लम्बे इस ग्लेक्सियर पर जो ि काश्मीर काराकोरम के बिक्कुल पात तथा इस्त प्रकागांतस्त्रात झीर जीन की सीमाधी के काफो करीब है। सुरक्षा को डिस्ट से सप्यन्त महत्त्वपुर्या है। इसिलए पाकिस्ताल जीन के हाथ चरने पर इस क्षत्र पर प्रमान कब्जा जमाने की हरसम्बद्ध करें पर इस क्षत्र पर प्रमान कब्जा जमाने की हरसम्बद्ध को शिक्ष कर रहा है। पिछले दिनो इस ग्लेक्सियर पर कब्जा जमाने के लिए गांकिस्तान ने वो ४७ वमनवक ला क्ष्र हवाई जहां आमाने के लिए गांकिस्तान ने वो ४७ वमनवक ला क्ष्र हवाई जहां अमाने के लिए गांकिस्तान ने वा १० वस मानतिय प्रारत के कब्जे मे हैं। १६ हवार फीट कवाई पर स्थिन मारतीय सिल्क चौको का काम बन्ध वस्त्र पर जौका का होना एक विवद रिकाड है प्रमित्त के किसी मी अपनी स्थाई का ० से ४० विन लाते हैं। मारत बन्ध किस्तान को करने वा रेस के स्थान के

पाकिस्तान के पास काश्मीर का मारतीय ७६००० किलोमोटर सन है जो उपने देश्वार रखा है जबकि छोन ने लहाक से अक्साइविन का ३८००० वर्ग किनोमीटर सन्न द्वीन रवा है। माय ही पाक ने बोन को आग्न की गांश्मीर अविक्रत भूमि म से ४४०० किलोमीनर सन और दे दिया है। इस सब से चीन-पाक सथुका रूप से बनी व १८ जून १९७६ से सुनी ४०० मील लक्ष्ती काराकोरम स क ने ही माइ विन मे पाकिस्तारी हमले की सुविधा प्रदान की है। यह सक्क इस्ला माबाद को चीन के निक्याग प्रान से जोडती है।

पाकिस्तान ने बारत की सीमा के साथ साथ १८ डिवीजन सेना
रक्ती हुई है और न्स बान में कोई सन्देत नहीं रहा कि प किस्त न
पत्नाव में गन्दन कराने के लिए धानकवादियों को विश्वन्य कार
वाइयों के निए प्रियक्ताय वे रहा है। शायद कनरन जिया मिष सीमा
प्रान्त गौर वल्लिस्तान में बिगचनी हुई स्थिति पर से जन्ता का ध्यान
हटाने के लिए सनिक कारवाई का खेल खेलना चाहते है। लेकिन उन्हें
बढ़ निधिवत समफ लेना चाहिए भारत किसी से किमी स्प में कम
और नहीं है। हर रूप में मुद्द नोड जवाब देने में हमारे मनिक सक्षम
हैं।

—यशगल सुबाश्

# नवजागरण के पुरोधा विषयक आपत्तियों का उत्तर

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

म्बामी रामेववरानन्द की ने नेरी पुस्तक नवजावरण के पुरोचा पर कुछ भापतिया प्रस्तुत करते हुए एक लेख 'मार तीय बी की भूम' शीर्षक से धार्यमातंण्ड में हो किरतों में छपाया या । सब उसे ही एक भिन्न शीर्थक वेकर आर्थसदेश के १६ सई के प्रक में प्रकाशित किया है। इस सम्बाध में मेरा वक्तव्य निम्न प्रकार है-

स्वामी जी कहते हैं कि भारतीय जी ने अपनी पुस्तक की बढ़ी प्रशसा की है धौर ऐसा करत समय उन्हें सण्डा नही श्राई कि उनकी यह पुस्तक श्रन्थ जीवन विरित्रों के बाधार पर ही लिसी नई है। निवदन है कि अपनी कृति की प्रश्नसा करना काई पाप नहीं है।

निज कवित कहि लाग न नीका। सरस हे ऊचाहे पति फाका।।

बाक्षेपकर्ता को यह सोचना चाहिए कि जीवन चरिन को श्रन्य पूर्व लिखित जीवन वरित्रों के साधार पर है लिखा बायमा और पूर्व लेखको से सहायता लेने मे धनुचित भी क्या है ? मैंने तो प्रत्य के समपंगुमे हो ४० लेखराम प० देवेश्यनाथ मुझोपाच्याय बादि उन सभी जोबनीकारी को सादर स्मरण किया है जिन्होंने न्वामी इयानन्द के जीवन नेसन म भरपूर परि-क्यम किया ।

स्वामी रामेश्वरानम्द की द्वारा उटाई बई बहुत सी भापत्तियों का निराकरण तो एक बाक्य विस्तकर ही किया जा सकताहै कि प्रत्येक लेखक क्या लिले कैसे लिखे क्या नहीं शिक्षे इसके लिये पूर्णं स्त्रतस्त्र होता है। वह स्रपना ग्रन्थ लिमने से पहले किसी से राय लेने नहीं वादिवह कैने भीर क्यालिकेगा। भव उन ही धन्य आपत्तियों का उत्तर-मैंने स्वामी जी के शैशव और प्रारम्भिक शिक्षाका वर्णन करने में महाराज की बात्मकव का ही अधिकाश में उपयोग क्या है मैंन प्रात्मक्या के जिस सस्क रश क उपयोग किया है। वह नरो का-रिली सना से प्रकाशित तथा मरे ही द्वारा समानित है जिसकी मूल पाण्डुलिपि हमे मून्शी समधदान क कानजो मे मिली थी। इसके माय ही देवन्द्रनाव लिखित जीवन चरित्र के प्ररस्थिक भ्रष्ट्यायों का भी उथिश दिया गया है। यदि इन श्चाधारमृत ग्रन्थो को समन्वित कर पाटक पर्हेंगे तो उहे इस प्रध्याय म वर्णिन बातो में कोई भ्रमगति न तर नहीं भायगी। श्री महाराज व जीवन लखन में मेरी तो प्रतिज्ञा ही है-

नामूल लिख्यते किञ्चित्। ६ घर मरे मित्र टकारा निवासी श्री

वयाल की आई बार्य ने टकारा के समीप-वर्ती गांव रामपुर शांवि के सम्बन्ध में कुछ नवीन जानकारी दी है। उनके एतप् विष-यक ने स्त्रों को घी छा ही अकाशित किया जायेता। इस सामग्री से स्वासी जी के टकारा से निष्क्रमण तथा धाने के मार्ग प्रादि के सम्बन्ध में कुछ नवीन तथ्य सामने बायेंगे। पाठक इन सेक्सो की प्रतीका करे।

स्वामी रामश्वरानन्त्र जी लिसते हैं कि मैंने सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्पारित महाराज की जन्म तिथि के विपरीत एक भन्य तिथि क्यो लिखी <sup>?</sup> भाक्षेप कर्ताको क्या यह भी बताना होगा कि इतिहासकार का काम तो किसी विषय के सम्बन्ध मे सभी पत्नो धौर मतो का प्रस्तुत करना हाता है। मैंने ऐसा ही किया है। जन्म तिथि के सम्बन्ध में कोटा के स्व० भीमसेन शास्त्री के मत को तो रक्ता ही है जिसे सार्वदेशिक सभा की मान्यता प्राप्त है। साय ही ऋषि के बीवन विषयक गवषक स्व० मामराजसिंहका इस विषय का मत भी प्रग्तुत किया है। इसमें कोई भनर्थ जैसी बात नहीं है। स्व॰ मामराजसिंह ने भाइपद वाली तिथि अपनी कल्पना से नहीं लिखी किन्तु प्रार्थसमात्र क्लोशनव नसनळ के पुस्तक अण्डार में रक्खी हई हस्तलिखित जीवनी (स्व॰ केशवराम विष्ण काल पण्डवा द्वारा निवित्त) मे उद्यत तिथि को ही निसा है। जीवन तिथि के सम्बन्ध में सभी नहीं की देना मेरा काम था। इससे घार्वी मे परस्पर विरोध कैसे सदा हो जाता है ?

मेरे प्रत्य के भानोचक ने इसे दिस बच्टि से पढा है, यह इस बात से ज्ञात हो ज'ता है कि वह लेसक के श्रीमधाय की सर्वोद्यामे भी समऋने मे ग्रसमर्थ रहा है। बंब मैंने सिला या कि "स्वामी दयानन्द के पिता ने धाने पुत्र मूलशकर को यजुर्वेद के वे प्रश्ना पढाये जो अनके मतानुसार कैलाशवासी भागुतोय भववान शकर का वर्णन करते हैं तो स्वामी रावेदवरानन्द मुक्त से पूछने हैं कि बजुबेंद में कैलासवासी शारूर का वर्स**न** कहा है ? धजी महाराज यह करन तो मूलशकर के जैव पिनाका है न कि मेरा। लेखक के बश्चित्रेत को नसमक्ष कर हो ऐसी भासोचना की जानी है।

ग्रव ग्राम्पेयकर्ता, पुरी**षा शशाका** पुरुव तथा प्रवरा सादि शन्दी के प्रयोग की बालोचना करता है। क्या किसी बुद्धिमान् पुरुष को भी यह समकाना पड़ेगा कि शादों के अनक अर्थ होते हैं। पूरोधायदि पुराहित का वाचक है तो यह निदनीय कैंग्रे हो बया ? क्या ऋग्वेद के अवस अब में परकारमा को भी पुरी-हित नही कहा नवा है ? बस्तुतः वात यह है कि साहित्यक धैसी से धनशिज्ञ व्यक्ति ही ऐसा बाक्षेप कर सकता है। इसीनिए स्वामी रामेश्वरामन्द को 'प्रवर्श' का धर्ष 'वौराहा' तो नवर बाबा किन्तु उन्होंने बामन शिवराम बाप्टै का सस्कृत हिन्दी कोय देखने का भी कष्ट नहीं किया जिसमें प्रवश्य के सर्थ -- गक्त सनुरस्त, प्रवृत्त, सलम्न बादि विये हैं। इन बचों के बाबार पर वर्ग प्रवस्त का बर्थ होगा वर्ग मे । अनु-रक्त, वर्ग में प्रवृत्त, वर्ग में सलग्न बादि। क्या स्वामी जी को 'बस प्रवस्त' कहना सनुचित है। 'शसाका का धर्य रामेश्वरा-नन्द की सुपारी काटने का सरोता करते है। बहु प्रचं ग्राप्ट के कोशा मे तो नहीं मिलता। किन्तु जलाका के कई सुन्दर प्रयोग संस्कृत साहित्य में निवते हैं। शिक्षा बन्य में जिल्ला है-

ब्रज्ञानात्वस्य लोकस्य

ज्ञानाञ्जनसम्बद्धाः । चक्ष सम्मीसित वेन तक्षी पाणिनये नम ।।

जिस पालिति ऋषि ने सज्ञान के ग्रथकार से भाजकल्ल जोगों के नेजों की जान रूपी ग्रञ्चन की समाका से स्रोत दिया वे हमारे प्रजम्म हैं। अफसोस है कि साहिरियक प्रयोगों के सौम्बर्य को न क्ये जले हैं।

बाक्षेपकर्ता की धनली बापतियाँ

१ स्वामी दवानन्द के महाभि निरुह्मण के प्रसम में सिदाब के बहुत्यान, तुमसीदास के गृहत्याय तथा समर्व रामदास के बैराग्य ग्रह्म भावि के ब्ब्टान्त क्वों दिये गये ।

२ स्वामी दयानम्द के जीवन प्रसन ने राम मोहन राग रामकृष्ण परमहस्र तथा विवेकानन्द की नची क्यों की गई? विवेकानन्य बादि की प्रशसा के वाक्य क्यो लिखे वये?

3 इस वन्य मे प्रस्येक श्र<u>म्माय</u> में सैकडो पाद टिप्याचियां क्यो की गई? ग्रादि ।

वस्तुतः इन बाक्षेपो मे बोडा भी सार नहीं है। वैसा कि मैं पहले भी लिख भुका हूँ, लेकक को इतनी स्वतन्त्रता प्राप्त होती है कि वह अपने सन्य में क्या शिक्षे, कितमा तिसे धौर भैता निसे <sup>7</sup> यह तो सम्मन है कि स्वामी रामेश्वरातम्ब का खपर्युक्त प्रकर्ण प्रासनिक जान न पडे हों, किन्तु अध्य पाटकों को भी वे पसन्द नहीं बार्वेने, इसका ठेका सने वाने वे सीन होते हैं। राम मोहन राय के कार्यों की प्रश्वसा स्वय स्वामी दयामस्य ने पुना प्रवचनो ने की। कमनता प्रवास के समय वे स्वय रामकृष्ण परमहस से मिले वे । सबसे बडी वात तो यह है कि स्वामी दयानन्द के ब्राविभाव काल की परिस्थि॰ तियों की चर्चा के प्रसग म नवजानरख के झाम्बोलनी तथा उनके नेताओं का उल्लेख तो अवस्यम्भात्री ही है।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी का सतिस बासीय तो बत्यन्त विचित्र तथा हास्या-स्पद है। उन्हें पार्वटिप्पशियो वर ब्रावस्थ है। वे इन्हें ॰मर्थ प्रनावश्यक तथा पुरनक का भार बढाने वाभी मानते हैं किन्त वैज्ञानिक शोध प्रक्रिया के जानकारी का कहना है कि पाद टिप्पणियों के बिना शोध प्रत्य का कोई महत्त्व नहीं होता। हाँ, उन सोगो की बात दूसरी है को साथ प्रक्रिया को न हो जानते हैं और न छ8 व महत्त्वको ही सनुभव करते हैं। साक्षेप-कर्ता स्वामी जी घन्त में निवारे हैं कि यदि सह मन्य स्वामी जी का जीवन चरित है तो इसका मूल्य चासीस स्पन्ने क्वों रक्ता गया ? यदि शतकी राय सी बाए तो स्वामी बी का जीवन चरित तो समझ कर ही इस प्रकार के व्यव साओ व श्रिप्त में दिया जाना च हिए। ब्रास्त व-**है**कता यह नहीं सोचता कि ६६० वृष्ठों के बन्द को मुक्त ने कैंसे बादा काएवा ? इसके प्रकाशक ने इस पर साखों स्पने व्यय किये हैं। उनका यह वर्ड को क्षेत्र हास्थाल्य है कि अरोपकारिकों स्था को इस पुस्तक को बाइबिल के शुरूप निःश्रहक बाटना चाहिए। यदि स्वामी दयानन्द स्वय परोपकारिसी सभा को यह सामा दे जाते कि उन्के ग्रन्थ विमा मुस्य ही बाटे जावें तो शायद सभा भी यही करती। बल परोपकारिगी सथा का कोसने से दी कोई साम नहीं। वो व्यक्ति भाग के समय मे पुस्तको के मूल्यों से परिवित 🗜 उसे ता श्री महाराज का यह जीवन चरित की बयो के मीस से भी सस्ता सवेगा । बाइविस को मुक्त मे बांटने बालों से हमारा कोई मतसब नही। निष्फर्वत यहा कहना पर्याप्त है कि किसी प्रस्थों की मालोबना की पात्रता भी संबी में नहीं होती।



दिल्भी के मुस्स वावसाह मीरविवेब के महा उसके विकासी जवल से पकडकर कर एक बढा भा । शेर स्त्राय से । शेर लोहे के गित्ररेसे बन्द या भीर बार बार बहुक रहा था । वाटगाह कहता वा— इसमे बडा भीर मयानक चेर बूसरा नहीं निक्त सकता ।

बादराह के दश्वारियों ने उसकी हा
में हा जिलायी सर्कित महाराज यवनक विह जी ने कह — रससे भी धर्मिक वर्णना लीली और नेरे पत हैं। वाववाह की बहुत कथ धाया। उसने कहा — तुम अपने तेर नो इससे लड़ने के लिए खोडा। बहि तुद्दारा रेर हार पया तो तुम्हारा सिंद काट निया जायना। यवनक्षित्वह ने ब बसाह की यह बत स्वीकार कर ली।

दूसरे दिन दिल्ली के किले क सामने के मैदान में लोहे के मोटे खड़ो का वडा

### किशोरमञ्च-

# वीर बालक पृथ्वीसिंह

भारी पिकरा वो केरो का सकाई के लिए रखा गया। केरो का युद्ध देखने नहां वजी गारी मोव इक्टठी हो गयी। धौरकनेव बावचाह भी ठीक खनम पर माकर धरने जिहासन पर बैठ नमा। राजा यशनना विह सपने दश वक के पुत्र पुत्रनीरिक्ष के शाच मार्थ। उन्हें देखनर बादमाह ने पुद्धा—आप का चेर वहा है?

यश्वन्तसिंह बोले — मैं प्रपना शेर प्रपने साथ लावा हूं। पाप लडाई प्रारम्भ होने की प्राज्ञा दीजिये। बार साह की घाड़ा से वह बमली सेर सपने पित्र से सबाई के पित्र में कोड़ दिया गया। यस-तिसिंह ने घरने पुत्र को उस पित्र में युद्ध जाने को कहा। बादसाह घीर वहां के स्वर्थ भोग हवके बनके यह गये। कि-तुस्य कर का वासक पृथ्वीसिंह पिता का प्रणाम करके जनते हस्ते तोर के पित्र में यस गया।

शेरने पृथ्वीसिंह की घोर देखा। उस तेषस्वी बालक के नेत्रों को देखते ही एक बार सह पूछ दबाकर पीछ हट गया के किन शिकारियों ने बाहर से भाने की नौंक ने ठलार के उसे उन्साया। शह शेरकोष में प्राक्त के पृत्रासिह के उत्तरकृत पडा। बालक पृथ्वी सिंह के के से एक धोर हट नया धीर उसत प्रपती तकवार किंव ली।

पुत्र को तलवार निकालते देखकर बरावन्त्रानिह ने पुकारा वटा । तूयह क्या करता है ? शेर के पास तो तलवार है नहीं फिर तूउस पन्त्र्या तक्षवार वाला-येगा? यह तो वस युद्ध नहीं है।

पिता की बात सुनकर पृथ्वाधिह ने तलबार फक दी और वह गर पर टूट पडा। उस छोटे बालक ने सर का जबड़ा पकड़कर फाड़ दिया और फिर शेर के पूरे सरीर के दो टूकड़े करके फेंक निया।

वहाका सारी भीड पृथ्शानिह की जय अध्यकार करने लगी। गर के जून से सनापृथ्वीसिंह जब पिंबरे से निकला तो बखनलसिंह ने उसे इसती से लगा जिया।

# "वाह री पाण्डित्य परम्परा"

प्रज्ञादेवी

सम्य बनात की वाल विचवाधी के करण क्रम्यल से परनी फटी जा रही जी एव सनाचार बढ रहें ने तक समाज सुपारको ने शिवचा विवाह का न्यावीचित पर करूर हरे प्रचारित कर हिन्दू समाज का करुवाण किया जा गा विरोध करने बाल तवाकवित सामाजिक पण्डियों ने?

२ यह कि १६२६ ने शारवा एक्ट के पात होने पर काशी के परिवती ने इसे ब्रशास्त्रीय कोवित कर स्वका प्रवण्ड विरोध किया जा। काशी की परिवत प्रवक्ती हारा हिन्दू समान के कस्त्राण के नियर किया गये एसाध्य कार्मी के रहते कनको कोन जारनीय समान से जदानीन बताने का सावस कर सकता है।

ão 5x5 5x5

काणी के पण्डिती की सामाजिकता की यह दूसरी उक्ति में समऋती हू प्रत्येक सन को धबस्य कचीर आयेगी। भना बास विवाहादिका समयम ही नहीं उमे श्रपनी स माजिकता का हेत् बताना क्या देश को मध्यकालीन अधेरे यूगमे ही धकेल देनानही है<sup>।</sup> किस प्रकार मध्य बूग में भी रचे बये मनगढ़ त करोलक स्पित वक्तों को प्रमाशा मान पण्डित वय भी समाज के एक वग के रुदन का परवाह न करते हुए बाज भी दकियानूसी वातो का समयन करता है यह इस बात का उदा-हरत्व है। इसी पुस्तक में पू० ५७२ ५७३ में लेखक ने महात्या बांधी एवं भी बीप्रकाश की के नाम उद्युत करते हुए उनके हरिजनोबार (हरिबन) के मन्दिर प्रवेश प्रविकार शांवि) सम्बाची कार्यों की पर्चा के प्रसव में नदी चतुरता से ए० वेबनाशकाषाय जी की वांगियता एवं जनके वन शांन्जीय मती की (बिनखे हरिजनों के महिर प्रवेश का प्रविकार नहीं है को समय होता है।) प्रश्चा की है जो शांव के मुन के लिए शांव्यवांवह है।

हिन्दू सभाज को गेंडियाद एवं सा स विश्वासी किममें विशेष क्या से नारी आति सिस रही यो मारहन दिलाने के निए हैन के वाय्यमान्य नेतासी एवं मुंती प्रम बाद तथा सरत्यन्त्र अंखे अच्छ साहित्य कारो द्वारा जो प्रवस्त प्रशास किये आरहे वे उन्हीं का स्वस्तमन एक चेत्रमशील प्रदे है निए विश्वास उदित है यह विवार बोस्ब बात है। वेद से प्रमालत होने पर

ही अन्य धमशास्त्रों के प्रमण प्रमण कोटि में आने हैं यदि एसा नहीं ना न्दियी सनी प्रमा के लिए भी---

> मतं भनरित्यानारी ममारोहेद्युताणनमः । सञ्चती समाचारा अथलोके महीयते ॥

जसे सस्कृत केस्वकित्य प्रमासा है तो क्याइन प्रमानो भी इस युगमें स्वो कार की विषया:

याज के युग में ऐसी विष्णानाएँ सहन नहीं की पासकनी यत हमें इससे उपर उठकर ही विचर करना होगा।

## गुरुरुल विश्वविद्यालय दृन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई नधुम प्राप्तम नि सुन्क की ए स्नर तक निका साथा भोजन निध-मित दिवस्था उत्तम देखसाल के लिए प्राप्तम्मक भोजन सुन्क ६०/ मात्र में ७ खे १२ वद क के बालको का प्रवेश पुरुकुल विस्वविद्यालय हु-दावन में दिलाल । साम्य सम्क्रन बायलोगी सहित हुण्य उनीमा परीक्षा खात्र प्रापुत्व महाविद्या लग्ने प्रवार से सकते है।

> (स्वाभी कर्मानन्द) मुख्य बिंगाता गुरुकुल विश्वविद्यालय उप्पावन

कनत् प्रतु कस्था के बाम
प्रवित्त्व प्रतिश्व प्रवास प्रकास
पट पट बासी पूरणा एक
रिका निक सन्तर के हुए निविद्यासर तरे हुए गायें ज्ञान सातु का होने प्रकास, केवल स्ती तुम्ही संबास।

२६ सप्रेन १६८६ के शावडीय मे 'सोते वे नांकी गोद ने और फेरे नय सम्बे श्रीवन को देखकर तथा स समा चारको पढतर कि राजस्थान ने एक बार पुन का दा एक्ट का घक्तिया उटाई गई' मुक्ते वडा धाश्चयावह दुस हुमा श्रीरकृत्रवातें स्थान में भाषी कि ४० हम र बूबन्हे बच्चों के विवाह कर शारदा एक्ट की बजिजया प्राय उन्ही बानीए प्रवामें बसने बाले प्रपठित निरक्षर सोयो द्वारा चढावी वर्ड हैं। जिन्हें शारदा ्रवन या किसी सरकारी कानून सादि का पता ही नहीं है किन्तु इस युव म ऐसे जोनो के जिए क्या कहा जाना चाहिए जो पूरा सुपठित भी हैं और सारदा एक्ट का विरोध करना सामाजिक कल्याण के सिए उचित नी मानते हैं।

छन् १६८३ में निश्वनिवासनीय प्रकाशन वाराण्यकी द्वारा मलावित काली मित्र वाराक्ष्य वरण्यां नामक एक ऐसी ही बाद्युट पुस्तक है जिसके नेवक द्वारा काली के पण्यियों की महत्ता एव उनकी सामाविकता निम्म उदाहरणों द्वारा वर्षामी वर्षे हैं—

दे यह कि वचान का सहस्यवाज स्वाद्यवाज स्वाद्यवाद्यवाच स्वाद्यवाच स्यवाद्यवाच स्वाद्यवाव स्वाद्यवाच स्वाद्यवाच स्वाद्यवाच स्वाद्यवाच

पृ० १३८ १३६ सह्यय महानुमान ! सेसक काशी के पश्चितों की सामाजिकता निषयक इस अधित पर स्थय विचार कर से में कि जिस

# वेदभाष्य की पृष्ठभूमि पर सिहावलोकन

#### धर्मेन्द्रपाल शास्त्री

वेद सब सत्य विद्याग्रो का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना भौर सुनना-सुनाना सब भावों का परम घर्म है।

धायों के जीवन में बेदो का स्थान घरयन्त महत्त्वपूर्ण है। प्राचीनकाल से ब्री वेद ईश्वरीय ज्ञान के रूप में श्रद्धा व झादर की भावना से स्थीकार किये जात रहे हैं। परना वंद मत्र झत्यन्त गृढ रहस्यमय है। इनकी एक विशिष्ट छन्द रदना है जो सनानन ज्ञान की अपने में सजीय रहती है। वेद मत्रों की ग्सी गम्भीरतातथा विशिष्ट खुद रचना के कारण साधारण ती क्या सम्क्रत भाषा मे पारङ्गत विद्वानो के मस्तिष्क भीडनकेरहस्यो को नही समभ पाने हैं। इसी कारण प्राचीनकाल से ही वेदों के भाष्य करने की पद्धति पायी जाती है। परम्परा के अनुसार रावण हुनारे सामने वेदो के सवप्रयम भाष्यकार के रूप में बाते हैं परन्तु इनका वेद भाष्य पूर्णं≖प से प्राप्त नही होताहै।

पक्कातुवर्नी भाष्यकारो से स्कन्द स्वामी उदगीय वरश्वि मट्ट आस्कर, महीचर उम्बट व सायश प्रसिद्ध भाष्य कार हैं। इन भाष्यकारों में सायण का भाष्य सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इन्हाने बारो वेदो ना नाय किया है। सायज क भाष्य का प्रभाव उनके परच नुहोने बाल भाष्य-कारी पर स्पष्ट रूप में बेलने की निसता है। पर तुसायसा भाष्य के बद भाष्य मे वेद की ग्रत्माव विवासभाराका सही सहा विशास नहीं हथा। इनका भाष्य कमकाण्डपरक है। ये बद सत्री के कम काण्डात्मक भाष्य की धुन से मत्री के बवाय धनिप्राः— जो मूल रूप से सनातन ज्ञान विज्ञान का परिचायक है। को भूत ज ते हैं। फलस्वरप साथशा का बैद भ ८२ "सा भाष्य हे जिसमे मझी के यथाथ ध वत्राय को ध यन्त सकुचित बनादिया गया है। जो बद की महान प्रतिराक्षा "सके ज्ञान को एक्दम बृद्धि विरुद्ध कर देन है। शायरण क वद भ व्य के बाधार पर ह यारोतीय विद्वानी न १६वी शना न स बद क विषय म एक नवीन विकासवारा मत का प्रतिपदन किया। उसके अनुसार वर्ष्टाय जातिका प्रारम्भिक ग्रवस्थ स विकास को घना है। ब्रह्मीन ज्यास्य प्रकृति परककी जा कि सायण भाष्य मे प्राप्त होने वाले प्रकृति गानी विवारी साली है। यद्यपि य प्रतिमन्द्राली साहमी भीर कपनाकी ज्ञान में स्व छदा फिर भी वेद की सभार पहेलियाको सुलन। नम इनकी प्रतिना

एव कल्पना शक्ति असमर्थ रही । इसका मून्य कारण वे वेद की भाषा खुन्द रचना व ग्रमर काव्य को नहीं समन्त पाये। उन्होंने धारने आच्यों ने बदी में विश्वित रूपको का ब्राह्माता उपनिषद, पुराणो में प्राप्त गायाओं व ऐतिहासिक तत्त्वों से सम्बन्ध बताकर वैदिक गाथा शास्त्र वैदिक सम्मताका नवीन मत सहा कर विया। इस निष्कर्ष पर पहुचने के तीन कारता बे---

- (१) उ हे वैदिक परम्परा व साहित्य काठीक ठीक ज्ञान नहीं या तथा उन्होंने प्राचीन ऋषियों की नैशक्तक प्रशासी को छोड दिया या।
- (२) सायस का भाष्य इन का मार्ग दर्शक या।
- (३) परिचनी विद्वानी की वेद से कोई सहानुभूति नही थी।

उगरिलिकित पर्वाभो का मूल्याकन करने पर पता चलता है कि बाचार्य सायण के मतानुसार वेद केवल कर्मकाण्ड की एक ऐसी पुस्तक है जिसके मत्रों मे कोई पारस्परिक समित नही है । पारचास्य विद्वानों के मनानुसार वेद मार्थ जाति के धादिम काल से उपनिषत् काल तक की मानसिक न्यिति या धक्स्या का नेला जोसा है। जिसे वैदिक कवियों ने छन्द बद्ध कर दिया इसमें कही ऊर्वे विचार नहीं हैं भौर ये तो शसम्य गडरिये के गैस मात्र हैं। बेद रजने वाले प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते और उनके प्रकीय से बचने के लिए यज किया करते वे। वैदिक ऋषि मुर्खं परन्तु श्रद्धालु उपासक वे। वेद गाथा ग स्त्र है वेदों मे गास भण्ण है यज मे पशुलि का विधान है जुबाबीर सोम के रूप में सुराहै।

महर्षि दयान द के ग्राविशीव तक वदो के सम्बन्ध म इन सभी विच रखाराखों र समृष्टित विकास हो चुका था। स्वामी दयान-द ने देखा कि वेद क सम्बाध से भनक (भ्रान्तिया) भ्रान्त सर्वो का बनार किया जा ग्या है। तो प्रतिक्रियाफस स्वरूप उन्नी सवी शताब्दी के महानु सुधा रक सामाजिक कालि के अग्रदूत एव वैदिक बाडमय के मन्यन एव योग साधन की भट्टी में तये कुन्दन सदश महर्षि दयानन्द न वैदिक सत्य निर्भान्त सार्व

भीन एक प्राशिमाल के खपकार की जावना से समूह्य सन्वेश नानव को दिये । वेद के विषय में एक तीसरी विकारवारा का सूजन किया। वे वेद को न तो केवल कर्मकाड की पुस्तक मानते के, न आर्थ वाति प्राप्ति के उपाय करना। के गीत । वेद के विषय ने प्रमुख रूप से दो मान्यताएँ दी---(१) वेदो के ज्ञान का प्रकाश ईरवर ने सुष्टि के बारम्भ ने धानन बाबु ब्रादिस्य ब्रिक्टरा नामक बार ऋषियों के बन्त करलों ने मानव जाति के ज्ञान व कस्वाण के लिए किया।

सनातन सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से बेद में सारा ज्ञान विज्ञान बीच-रूप में बर्लमान है इसी से वेद स्वत प्रमाण हैं। उनकी वे मान्यताएँ वैदिक साहित्य के गम्भीर अध्ययन पर आधा-रित हैं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। दयानन्द की इस मान्यता का विवेचन हम दो प्रकार से करते हैं --(१) वैदिक साहित्य बाह्माल, उपन्थिद् दर्शनो (दल्लन ग्रन्थ) मे प्राप्त प्रमासी के बाधार पर। (२) तर्ककी कसीटी पर। वैविक साहित्य का वहां तक प्रश्न है सारा वैदिक साहित्य दयानन्द की या इस यन्तव्य की पृष्टि करता है। वेद का प्रकाश ईश्वर ने सुविट के ब्रादि में ऋषियों के बुद्ध अन्त करणों में किया। शतपन बाह्यल कहता है-'तेम्यस्तप्तेम्बरमधी वेदा अजायन्ताग्ने-ऋंग्वेदो वायोर्वजुर्वेद सर्वात्सामवेद । ११४२३ अर्थात् ऋग्वेद का प्रकास धनि पर बबुबेंद का बाबु पर लामकेन का सूर्य नामक ऋषि पर हुआ। इसी प्रकार प्रम्य उरनि द दर्शन बनुस्मृति बादि सभी एक स्वर में वेदी की ईइवर से उत्पन्न हुया मानते हैं। इसी से बेद की स्वत प्रमाण मानते हैं।

महर्षि दयानन्द का वेद के सम्बन्ध मे दूसरा दावा है कि बेदों में समस्त ज्ञान विज्ञान है। इसी सम्दर्भ में स्वामी जी का कथन है कि सर्वेश्रयम वेद ईश्वरीय या ईंग्वर का ज्ञान होने से अपने आप से पूर्ण हैं। और ईस्वर ने यह ज्ञान मनुष्यों के ज्ञान व कस्थाण के लिए दिया। सत उसमे मनुष्यापयोगी समस्त आन विज्ञान होना चाहिए। स्वामी जी न बेद से निहित ज्ञान राशि को प्रमुख इस्प से चर विषयो में विभक्त किया है -- (१) विज्ञान सर्वात-सब पदावों को बदाई जातना । (२) उपासना (३) कर्म (४) ज्ञाम ।

महर्षि दयानन्द का विज्ञान से तात्पर्य

शान की उस प्रचानी से है, जिसमे जान. कर्म, उपासना इन तीनों के समृत्रित उप-बोग से नेकर तुल-पर्यन्त समस्त पदार्थी का सामात् बोच होना है और मानव बाति के बम्बुदय नि श्रेयस की प्राप्ति मे यबावत जनका उपयोग होता हो । स्वामी जीने विज्ञान को भी दो रूप में मान्यता वी है ---(१) ईश्वर का स्थावत् ज्ञान व उसकी बाजाधी का पालन। (२) पदार्थ विद्या का नान प्रयात पदार्थी के नुष्णी व तपथीव की जानना ।

उगसना-पर्यात् परमेञ्बर की

कर्म = कम में कर्मकाण्ड को नेते हैं जिससे जीवन मे परमाथ व सोक भ्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी जी का कमकाण्ड से तात्य केवल यश्च याथ से नहीं दरन् उसमे जीवन की समस्त क्रियामी को सम्मिलित कर लते हैं।

ज्ञान-नान का बय पृथ्वी से नक्ट्र नुष से प्रकृति पर्यंत पदार्थों के गूलो के ज्ञान से ठीक शिक काय सिद्ध करना। इसे हम आधुनिक विज्ञान के रूप मे प्रयुक्त कर सकते हैं। वेद भी भाषा मे विज्ञान=विशेष ज्ञान ईश्वर भारमा आदि के ज्ञान को जबकि ज्ञान प्राकृतिक विज्ञानो के श्रथ मे प्रयुक्त होता है। (ऋग्वेदाविमाच्यमूमिका)

केद मे पदार्थ विद्याएं **है** या नहीं ? यह गम्बीर भीर भनुसम्बान का विषय है। सभी तक वेदों में से वैज्ञानिक सुनों की कोज का नियम पूर्वक बस्त्रीर प्रयास नहीं हुमा। यत हमारे सामने कोई ठोस प्रमाण नहीं है। बत्तम न में कुछ प्रयास किया वा रहा है। तबापि महीं। दयानन्द सरस्य ही ने भानी ऋग्वेशदि राष्यभूमिका में वैदिक मत्रों से विश्वृत्, तार विश्वा, विवान विद्या अयो न विद्या, मूबो न विद्या धादि का प्रतिपादन किया। उन्नीसबी शताब्दी के मध्य में यूरोप में भी इनमें है भनेक विद्यापी का विकास नहीं हुआ वर्धि ऐसी धवस्था में स्वामी दगानग्द-सरस्वती का धानी ऋश्वेद।दिसाष्यभूनिका स विमान विश्व भी का प्रतिपादन करना इस बात का स्पष्ट सकेत करता है कि वेदो में पदाय (बदार्गे शेज क मे निहित हैं। परन्तुप्रयम रूप को विकसित करने के लिए सम्भोर अन्ते ग्रुण की आवश्यकता है। वर्तमान युग के महान् विद्वान सहिष झरविन्द तो स्त्रामी जी के दाव को हरू हा बताले हुए कहन हैं कि मैं तो यहालक कहुवा कि वेदों में कुछ वैज्ञ निक सत्य ऐसे है जिन्हें प्राधुनिक तिज्ञान ज नता तक नही। यहा घरविन्द ना सकेत मनी-विक्रान से है। वैदिक मनोविज्ञान वास्तव में अपने प्राप में धनुरम है तथा प्रविध्य में विकसित योगविद्या का बीज है।

बेद वास्तव में अपने आप में पद वी विका ही नहीं प्रपितु नीति वर्ग राजवर्ग, (शेष पृष्ठ १२ पर)

9

व्यासपीठ---

### उपनिषत् कथा माला-६

# गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वेदानन्द महाराज

् स्रो भूनुव स्व । तस्सवितुवंरेण्य भर्गो वेवस्य धीमहि । विशो यो न प्रचीवयात् ।

धो' परमात्मा का निज नाम है, को प्रालो का भी प्राल है उने 'भू' कहते हैं भीर भूव सब दुलों के हरने वाले को कहते हैं स्व 'स्वर मुख स्वरूप है और प्रवने उपासको को सब सुको की प्राप्ति कराने वाला है। एका परमास्मा । अञ्चिति अर्थात् समस्त जगत् को उत्पन्न करने वाला सूर्व भादि प्रकाशक पदार्थी को प्रकाशित करने वाला और सब ऐश्वयं का दाना है। देवस्य उस चाहने योग्य कीत कराने वाले देवता परमात्मा की जो 'वरेण्यम् सबसे वडा धीर ध्यान करने योग्य है भयों सब दुनो को दूर करने शास पवित्र भीरतेज स्वरूप है तत् स्त्री परमात्मा के स्वरूप को चीमहि हम द्धाने मन में चारण करें। यो न वही अमारी विश बृदिबो को उत्तम गुरू, कर्म और स्त्रभाव मे प्रचीदयात प्रेरसा करे।

इस बाबा को बपने नन ने रवकर सुत्तें इस बन्द से सुदेव जनवीर र की सुद्ध । प्रावंना बौर उपायना करनी पाहिए । जनुष्य का बोकन सनेक प्रकार से किरा सुवा है । मनुष्य पाहता है कि इस्ट के साम स्थान हो भीर प्रनिष्य के साम वियोग परम्यु स्थार में वे होगो गाव हो भूबाव पहले हैं। किसी के पात योग प्रवचा विवित्त कर है, मान भी है परम्यु परि-सास दाय यह होगा कि एक समय ये सब ही परालं उसे पुल्ब जात होगे भीर पने मुख भीर प्राप्त करने की इस्का हीनी।

मृत्यु से कोई भी नहीं वस सकता।
बुद्ध सार्था का गकट मुश्य के सामने
विश्वमान हैं गड़नाई ग उसनी साय साथ
सुद्ध का दोनों हाँ दनके स्थीन हैं। सब
को इसी मार्ग से गुजरना पड़ता है। सब
को इसी मार्ग से गुजरना पड़ता है।
सन्दुष्य को बोहे ससारिक सुद्ध प्राप्त हो
साहें परमेदनद को प्राप्त का सुद्ध न साहें परमेदनद को प्राप्त का सुद्ध न से सो ही पुरुषाय के कल हैं। पुरुपाय किये
किया सनदय बढ़कर उसके साथ शही
कुद्ध करेगा, जो एक सन्दु सन्दु से साथ
किया करता है। का सह सालस्य कियो
साति में प्रवेष कर साता है, कसी देस में
सुद्ध साता है। इसकी मान्या सितनी भी वढ जाये उतना ही दुस है हमारा भारत-वष भी इस समय इसी सोंबातानी मे है।

उद्योगिन पुरवसिंहमुपेति सहमी वैवेन वेथमिति कापुरुवा वदन्ति । वेव निहत्य कुर पोरवमात्मशस्या यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽन बोच ॥ हितोपवेश

मर्थात् उद्यम से ही सिंह समान पुरुष लक्ष्मी को प्राप्त होत हैं। सदार के समस्त ऐश्वय तथा गौरव उद्यम से ही प्राप्त होते है। यह ससार सब एश्वर्य का ही है कहन को ताहम यह कहते है किन्तु करते इसके विपरीत हैं। जितना वन चाहते हैं वरित्रता वढती जाती है। विद्या चाहते है परन्तुप्राप्त नहीं होती। हमें याद रजना चाहिए कि ससार का जितना ऐरवर्य है उचीगी को ही प्रत्यत होता है। उद्योगी पुरुव सपना उद्देश्य स्थिर करता है। उनमे धइता है चारे-भीरे सब दकावटी की धपने मार्ग से परे हुनकर माने बढता बाना है। साहसी पूरव जिसमें शारीरिक श्वनित्र भीर विचारशक्तिकाम करती है वहीं बन भीर विचा की प्राप्त होता है। विचारशीवता भीर सम्पत्ति वद दोनो ही मिल बाती हैं, तो लक्ष्मी उनके पाब चूमसी है। एसा नहीं कि दीवाणी पर सक्सीकास्तोत्र पढ सिया पूजन कर लिया भीर सक्सी बराग भा नई। यदि सक्त्री पर विवय पाने की यह रीति होती तो बाब सब ही करोइपति वन ज है। इसका सच्या मार्ग क्या वा मेरे वाडी

हिन्दू जाति भाग तीथे मार्ग से भव्ट हा यह है। उसका धन्तरात्मा बहुत दुवस हो जुका है। कहते हैं कि यह दशा ख सात हकार वर्ष से बिगडी हुई है। प्रशोक को तो केवल दो हजार वय ही गुजरे है। यदि उस समय ही सुघर जाती तो क्या विगवाया। जिस समय मनुष्य जाति जानकर समल जाये उसी समय उसका उसका वेडापार हो जातः। तुम यदि श्रव भी उद्यमी भीर पुरुषार्थी बन जामी तो धाञ्च हो बेडापार हो जाये । देशो <sup>।</sup> एक मनुष्य है इसने एक मकान बनाया द्वार बन्दकर दिया, भीर कही चला गया। बारह वय तक वहीं सूय का प्रकाश नही पहुचा भीर बल्चकार का राज्य रहा। बारह वर्ष मीखे वह वहा झाया और उसने

नहापर तैपक जनाया धन्यकार दूर हो गया। नया प्रकार ने यह कहा कि मैं सो नारह वर्ष संयहा हू इतने बोझ नही जाता ? इसी प्रकार तुम भी धाने धन्त करणास अपनेरे की दूर कर दो। मिन जानियों ने विद्याधीर प्रकाण का प्रकार किया उन्होंने ही घण्यर दूर कर विद्या।

युरुप भी दो सी वध पहले कुछ वहत षतीन द्याः उसने घपने ग्रवगुराो को हटा दिया तो वह अभी और एव्यर्थवान् बन गया। जागन ने सत्तर प्रस्थी वय मे हो कितनी उन्नति कर ली। उसने विचारा जिन बातो के करने से व्यथ दूशा तथा सकट बढता है उन्ह छोड दो। तुरन्त श्चोड दिया। मागती सीधा यह है। पर-तुद्धाप दुवल हैं ग्रापक ग्रन्दर वल नही। पहने व दर पकडने की रीति यह थी। शाजकस तो कई कई प्रकार से पक इते हैं परन्तु पहने छोटे लोटे मुह बाने पात्र घरती में गाड देते ने और उनमें दाने बाज देते वे। इन पात्रों के बास पास भी भरती पर कुछ दाने बसेर देने वे। बन्दर भाषा, उसने बरती पर से दाना चठावा साथ ही देला कि पात्र में बहुत संदाने पडे हैं, पात्र में हुव डाला और दानों की मृटठी भरली। धाउन पात्र का मृह तक्त है, मुन्डी बाहर कैसे निकले ? बहुत निकासना चाहत है हाब निकलता ही नही। वस पकडने वाला माकर पकड लेता है। यदि उसे ज्ञान हो कि मुट्ठी तो मैंने ही बाध रसी है इसे सोल दू खुन जाऊगा तो छुट ज।ए, पन्त उसे यह ज्ञान ही तो नी । इसी प्रकार जितने भी भूरे रिवाज हैं ये तुम ने हातो चनाय है परन्तुतुमो छन्ते नी । जब तक य दुरी रस्मेन छुटे तुम में बल नहीं भासकता। प्रभूकी जीवाहै अँसी उसकी च्छा होगी वैसाही वह करेगा यह तो कायर पुरुषो का कथन है। इसलिए मेर भाई! श्रात्मिक बल के लिए पृथ्पार्थं करो युवा श्रवस्था माने से पहुर हा कन्या का विवाद हा जाता है। घर सोचा हमार गृहस्य के भी बाजनल ग्रदनुत नियम हैं ' यदि उसका पति मर जार तो घरक बाहरके इथरके उथर के सब बही कहेगे कि तेश नसीब इट गया अस्य में ऐसाही लिखाया तून डी दुर्मागा घर भाई। भव हम।रे नाग्य म दुख ही दुल है। हमारी मान मधाटा रहेगी बा नी

वर्गं कर्मं से रहियों '। सभी उसकी शिक्षा देते हैं। उरन्तु यदि कही पुरुष की स्थी नर बावे तो उसे जलाकर गही याने पाते कि विवाह के लिए पहने ही तैयारी हो बाती हैं। सपुन माने नगन हैं। यह मेद क्यों हैं 'ओ आति सपने नडके प्रीर नडकी में इतना भेद समस्ती हो उसके लिए उम्मतिका मार्ग कहा? वह आति तो मृश्टिम का चिरोक कर रही है, उसे तो सतार छोडना ही पडना

उसमें सवानी की होतीं निरासी। सभी जानते कौन इनसे है खाली।। कानून कुदरत ने सब जोर पाया। नहीं हटता हमला है उसका हटाया।।

जिसे तुम हिंदू जाति कहते हो उसी में से प्राय एक सौ तीस लडके या लड़-किया प्रतिदिन निरुमकर दूसरी जातियों में मिल रहे हैं। परन्तु यह प्रभंग जाति सोई पड़ी है।

है नजर गर दूरवीं धानाज में धजान देख ! सुब्बह के धाईनए रोशन में धकते शाम देख ! खीन जी जाती है जितसे सुरुषे हस्ती से मिट जाती है वह धकवाम देख !

जिस कातिको हाान ग्रीर लाभ का कोई झान नहीं वह क्या जल नहीं बच सकती है?

रेल में एक स्त्री यात्रा कर रही है उन्हते साथना डोने का कहा उतारक वण्ये के हाल में दे दिया। वण्ये ने उन्हें सिक्कती से बाहर कर दिया। उन्हें क्या पना चा कि यह भी किसी काम का योज हैं 'सर बहु विक्लाती हैं रोती हैं। वण्ये को तो ही हानि सान का तान न चा परन्तु क्या उन्हती माने या न वानती की '

सच्छा सस्तों की भीर गरी सों को तुम क्यो बता रहे हैं? उन रं सुरा अला क्यो रह रहे हो 'उन रो सभी रंगो नहीं साने देने ? भीर फिर फुट्रेसे हो प्रभी ! तिरी क्या हो गरी शो की सन उपर गरी सों को सतते हा उपर अनु र सामने सच्चे बनत हो । मर्क्षा तुष्टारा भना की हो 'नहीं बानत —

> नहीं बुद्धि नहीं बाहु बल नहीं साचन को दाम तुलसीदास गरीब की पत राके भगवान ॥

साप को यद धानी बाबी य जाता हो नो टेंग वयना नोक देना वाहिए न्ये मोबाबी हो जाता स्वता है। टेंड पन तो ने मोबाबी हे युन हो नहीं सकता। इसिंवर तुम भी धौर म कुछ छोडकर उद्योग करो। , मके बिना कभी देशा पार न होना। हमारा धन्त करण तो खुढ होना नहीं रोज धन्ते हे धच्छा उपवेश सुनने है पर-न उसका कुछ प्रभाव नहीं देन। समीक्षा

5

### महान शिचा शास्त्री महात्मा हंमराज

टा० प्रक्तराम पारावार ने विवेच्य पुस्तक से नी० प्र० बी० झारोसन के प्राध महात्मा प्रमाय के व्यक्तित्व धीर कृतित्व को मफलता पूरक धाकने आपने धीर परस्त का धमसाध्य प्रयन्न किया है। पूरी पुरनक नो धाठ धव्यायों ने बाटा गया है। पुस्तक । पारस्पिक करें पर न निक्का जकर समस मियक गोध धनुस धान धीर वैज्ञानिकता से युक्त धमुनावन प्रपक्तराणा धीर साहित्य दिन्न का प्रावस प्रसाद है।

अथम ग्रध्याय प्राचन भारत की शिक्षापण्ययः। ग्रीरिक्षक हमे हमारे स्वर्णिम भ्रतीत काराद दिलाने वण्लाहै । नाटय कला का सार्यसमाज मे जिक्र करना एव घृष्टता समभी जाती है परन्तु नाटक को नकार कर हुम क्तिन वड मत्य से भारत मुद्द लेते है नायद यह नही बानते। विदान लेखक ने प्राचीन विद्या बाज भो पथभ्रष्ट पीडा को दिशा सूचक इक्ष्य स की तरह रास्ता विलासनती है इस बात को «लपूर्वक कोरदार शब्दों से कहाहै। द्वितीय ग्रष्टयाय वैदिक शिक्षा का त्वरूप' में इस बारला को पुष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्दय हमे किसी देकर रोजगार कामालयो के चक्कर लगाना पगु ग्रौर परमुखापेकी बनाना नहीं सपितु हमारे व्यक्तिस्व कापूरा विकास करके हमें स्वावसम्बी बनाना है। तीक्षरा ग्रध्याय 'भारतीय शिक्षा का ब्रारम्भ हमारी प्राचीन शिक्षा प्रशासी को किस तरह तहस नहस किया गया इस का एक ज्वलन्त दस्तावेज है। चौचा सम्माय "उम्नीसवी शताब्दी शिक्षा का स्वरूप ' मैकाले के मिनन इरादो की माकी प्रस्तुत करता है। क्लक बनाने वाली शिक्षा आज भी हमे दी जा रही है। मैकाले ने भारतीय सर्वेक्षण के झाधार पर भेजी भ्रपनी एक रिपोर्ट मे यह सिका थाकि मैं काले भारतीयों को गोरा तो मही बना सकता परन्तु मेरी शिक्षा नीति एक दिन यह चमरकार जरूर दिलायेगी कि मैं भारतवासियों को विस और दिमान से काला प्रयेज बना दूगा। पाराशर जी ने ब्रपनी पुस्तक में ठीक ही निस्ता है "स्पष्टत यह शिक्षा पद्धति भारतीय जन मानस की जावनाम्रो के प्रनुकूल नही थी"। पाचने प्रध्याय प्रायंत्रमाज घीर शिक्षा मे प्रार्थसमाज की शिक्षा, शिक्षक ग्रीर शिक्ष थीं के बारे में क्या मान्यताएँ हैं, इसका विवेचन किया गया है। सठा बाध्याय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का स्व-" क्य स्थव्ट करता है। लेखक ने एक स्वान पर इस प्रध्याय में लिखा है गुरुकुल शिक्षा प्रशासी महनव-निर्माण की स्रति

उपयोगी एवं अष्ठ पढ़ित है। यह ही ऐसी पढ़ित है जिसन समाज के लिए कई श्रव्ड रत्न तैयार किय थे।

सातवें ब्रध्याय देश-विदेश के शिक्षा वालनी में लक्षक का विस्तृत प्रध्यान वाया अस सकतन रवाद का स्वाद स्पष्ट क्षक्तकता है। हमारे यहा हो नहीं देश विदेश में कोने किनता नहरा है इस बात को जांच करने के लिए जुनाराकर प्रदा में अपने कि हो हमारिक लेक्क ने किसी को उठाने किसी को गिरान को गरब से ऐसा हुछ नहीं किया है, न ही किसी विश्वा हालनी के यर ने एसे सपनी समोग हो किया है। कर भी विश्वान खालनी का एक स्थान पर रखने स सुझी पाठक यह सनुमान तो सबस्य ही ज्ञा सकते हैं कि कोन सामन में सबिक तथा है में रिक्षकों विदिया नस से का स्वाद ही भाग

सात्वा प्रध्याय महान् विका शास्त्री
महास्मा हराप्त के जीवन सीर कार्यो
महास्मा हराप्त के जीवन सीर कार्यो
मा तेवा जीवा है या यो कहें कि शब्दविज प्रस्तुत करता है। इस सम्भाय मे
महास्मा जी की विका विषयक मान्यताएँ
साता जीवन उच्च विचार, हवरों कर बरस देने वाला पुरवकी व्यक्तिस्त, महास्मा हवरा वे की विका पुरवकी व्यक्तिस्त,
महास्मा हरुराव के विचिच्ट तथा हुनेम मुखों का विजय है। सेवकन में सहुतोजार का प्रवक्ति महास्मा जी की विज करा मा सप्तक प्रवात किया है। सनेक पटनाएँ इस तस्म कं समयन ने प्रस्तुत की बयो

वेश विवेश के शिक्षा-शारिनकों के वीश बैठे महारमा जी भाजा में सुपेद के स्थान, नवियों में गता हमान, क्ष्मों में क्षमित के समान, नवियों में गता हमान, क्ष्मों में क्षमित के समान, व्यापों में रवणें के समान, प्राचों में वेद के समान, क्ष्मों में वाज के समान क्षम और सबके उन्ने शील पकतें हैं। जान के मन्दिर में जाने बीश में महाराओं जी हारा प्रज्वातित वीशक सबसे स्विक मिफक्ष्म और प्रवास निष्क्रम और प्रकाशवान है। उन्नव सावव प्रवस्ति मों र प्रवास नाने का कार्य महाराओं जो कार्य कराय वाने का कार्य महाराओं जो कार्य सिंग कर सबसे मीर उद्ये जनपण बनाने का कार्य महाराओं जो कार्य सिंग सिंग कर सबसे मां अंग्रेस कर सबसे में अंग्रेस कर सबसे मां अंग्रेस कर सबसे क

पूरी पुरवक बरल, सुबोच खंबी में बिज्ञी बातको धीर प्रोडो, बुदरिका धीर धरपर्याठली धार्मबमाविको धीर बैर बातंब्वाचिकों के सिए बमान कर से उप-बोगी है। डी० ए० बी० धार्म्बोचन के बाताबी वर्ष पर क्रमायित हम् पुरवक का पुरव बीर उपवोधिता धीकक तार्षक धीर प्रायवान हों ठठी है।

प्रो॰ वारस्यत मोहन 'मनीची' डी॰ए॰वी॰ कालेज, सरोहर (पद्माव)

# शिक्षा नीति

१२ ५-५५ का सम्मादकीय 'विका मीति ये परिवर्तन' पर सम्बा क्या । इस विषय में सार्य सनार को विन्त है कि विस्तृत बहत और विद्युत समस्यों के द्वार सरकार पर बनाव डामकर मार तीय खिला पढित लागू करवाने का प्रवान करे । इस कार्य हेतु सावेदीयक स्था को साने साकर विद्वानों को एकविन व एकराय करने का बोडा बठाना चाहिए। साथ विद्वानों य विद्याविद्यों को भी प्रमुख दैनिक पत्रों से सपनी रास प्रकट करनी चाहिए। हुस्स विचारसीय सुम्नाव प्रन्तत हैं—

१ विधि चाह 'माण्टेसरा' चालू रखें पर प्राथमिक श्विका का माध्यम मातु-भाषा और साधार नाघो जी की बुनि-बादी विकाही रची जावे। नन्हो मुल्नो पर कागकी बोक हुगया जाने। सामान्य कान व सामाजिक क्षान आदि कला ३ तक तो मौलिक ही रखे जाये। भाषा नाम की पुस्तकें मातृभाषा व हिन्दी शी दो एव सामान्य गणित व व्यवहार गणित की एक (बस कुल तीन) रखी वायें। ज्ञान को क्रिया से सम्बन्धित किया जाये। सहायता के लिए वित्रकलाव पहाड की पूरतकें रकी वा सकती हैं। इस स्तर पर सुते क, याद करने अनुतने स वर्तनी भीर मौक्तिक उत्तर देने की क्षमताव देखकर काम करने की क्षमता विक्षित की जाये, कापिया अरवाना बन्द किया वाये। मौक्षिक प्रश्नोत्तर त्रणासी याने भी सामदायक रहेगी। परतु ४-५ कलामो मेही पाठवार जिसित प्रश्नोत्तर धूरू करवाये जायें। इन कक्षाधों ने इतिहास ने रामायण के भश्र व उपनिषद् कवाए हों तथा भूगोस, समाज, विज्ञान, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त सामान्य ज्ञान निवित भौर पाठ्य से दिया जा सकता है। परतु इनका माध्यम मातुशाचा हो रहे। मातु-शावा हिन्दी के व्याकरता तथा मस्त्रत की वर्णोज्यारण व सन्दोज्यारण शिका का प्रारम्भिक स्वक्ष्य सावृ रहे । प्रत्येक भावा शिक्षण (मनिवार्य) में ४वी से दसवीं तक ताहित्य व व्याकरण की अनय-अनय परीक्षा होती रहे । शिष्टाचार व नैतिक शिक्षा मौज्ञिक दी जावे।

२ उण्य प्राथमिक (६ वे म कता) उपरोक्त के धनाना सस्कृत का प्रारमिक एक्ना स्वरूप स्तिवार्थ कर वे पडावा वाये। किट्याचार मित्र व्यविक्त की पिक्षा ची स्तिवार्थ रहें। पढ़ींची प्रवेष की मात्वाचार की वेचनानरी में प्रारमिक ज्यान व नेकचान के कर में पढ़ाई वाये इतिहाल में केवल महाबारत तक की क्यार हों। बसाव निकाल में बुनावर्थ-कता के पाउ रेच वार्य । स्वतान, स्वस्था, बुनोक, सच्चत वार्य में प्राथमिकता को अक्षुत्व दिया वाये। त्यों मे केवल प्राचीन' इतिहास (महाभारत के बाद मुस्सिम प्राक्रमण से पूर्व तक) पढ़ाया वाये। प्रारम्भिक सिद्धान्त उस काल का सक्षिप्त' विश्व इतिहास भी पढ़ाया जावे। विकाल तीनो सम्बार्ध।

३ हाई स्कूल माध्यमिक स्तर पर ऐच्छिक विषयो की प्रशाली समान का का साथे। कियास्मकता के साथ साथ ये समी-विषय प्रमिवार्थ रहे —

- (१) मातृभापा हिन्दी, सस्कृत के साहित्य व्याकरण सहित
- (२) पडोसी प्रवेश की बावा, लिपि, बोलबाल व सामान्य रचना के स्तर तक साहित्यिक रचना ग्रम्यासनागरी सिपि वे करावें।
- (३) इतिहास भारत का विशेष एक पड़ीसी देश का गौण कर मे । भार-तीय इतिहास बाधुनिक पुराता स्थिक व समिले सीय सोजो पर सामारित हो।

भूगोल---भारतका विशेष व पृथ्वी का गीज रूप से ननित— तीनो शा**काएँ । समाज** विज्ञान क नागरिकशास्त्र- वनू-स्मृति सहित स्वास्थ्य विज्ञान-निजी, सार्वेश-निकद पर्यावरण बाजिज्य — न्यापारिक संबद्धन, विविद्या, स्पकरण, बहीसाता व मन्तिम लेखे, भौचोनिक विकास क समस्याए, मुद्रा सीर वेंक। रासायनिक, विज्ञान-मौतिक, वैविकः। कृषि - प्रामीण प्रयं व्यवस्था व कृषि उद्योग, भूमि का श्रध्यमम के

विविद्या, यसायनिक प्रयोग मैतिक (वर्ग) विका प्रनिवार्य रूप से इस प्रकार सम्मितिक की वाली है इससे प्रकार गरीका का बोफ नहीं पडेका-

बाबबानी व नाप बोख, कृषि वर्षे,

- (१) तस्कृत साहित्य में, काम्यों, नाटकों/ गखों के प्रसों से पूर्व कुछ पाठ वेदी के स्तुति मत्रों के व सक्सी संपठन, पुस्त सून्त, उपनिवयों के प्रश्न माध्य सहित दिये बार्ये।
- (२) हिंदी क्षेत्रीय भाषा साहित्य में, शिश्राचार व सदावरण के पाठ और सिक्षाभव बीवनियों, घरनाए, उप-निवर्षों की कथाएँ सी बावें।
- (२) समाज विज्ञान में, नावरिक, वर्षे, पारिवारिक व विद्यार्थी वर्षे सर्वेदी समुस्मृति के श्रस विवे वार्षे। राज-नीति सम्बन्धी श्रस थी। श्रन्तिक

(क्षेत्र पुष्ठ ११ पर)

# पंजाब की स्थिति सुधारनेके लिए ठोस उपाय किये जायें

श्रक में देशदोहियों को सस्ती से कृष अना बावरब ह है ' शीर्बक से सार्वदेशिक कार्यं प्रतिनिधि सभा के सध्यक्ष भी राव-बोबास शासवाये का बाह्यान उचित्, श्वामिक एव देशमन्ति की मावना से ब्रेरित है ।

नि सन्देह इस समय पश्चाव के काली जिम प्रकार केन्द्र के विश्व टक-राव की नीति ग्रानाकर राष्ट्रविरोधी मार्ग का मनुवरण कर रहे हैं। मिण्डरा वाले के पिता पिवासी वर्षीय जोगेन्द्रसिंह की हा में हा मिलाकर उपवाद को बढावा दे रहे है। स्व० श्रामती इन्दिरा गांघी के इत्यारे को मम्मातित कर रहे हैं। उपवा-वियों द्वारा उत्तरी मारत क विजिन्न नमरो मे टाजिस्टर बमी का विस्फोट कर द्धनेक लोगों को मौत के मूह में डकेल । दियाययालया धनको को घायल कर विवा गया । उपवादियो द्वारा स्वर्णमदिर के जस्त्र संग्रह को उचित उहरावा जा रहा है। उनके द्वारा धनेक लोगो की ह याथी का कार्यक्रम और पक्ड रहा है, धनेक लोगों को धमकी के पत्र फिर मिलने सने हैं तथा हर भीर पृथकताबाद एव न्।द्रदेशिहता को बढावा दिया जा रहा है, स्पष्ट है कि पजाब की स्थिति विस्फोटक श्वव विश्तनीय है ऐसी परिस्थिति मे स्वित है कि केन्द्रीय सरकार वहा सन-भौते व तुष्टीकरसा की नीति को त्यान इर कठोर व सथायंवादी नीति अपनाये शांकि देशदीहियों का दमन होकर राष्ट्र अधियों को बढावा मिस सके। इस सबच के तिरू समाव प्रेषित हैं-

१ सरकार उपवादियो तथा मातक-बादियों के विदय कठोर से कठोर कार्य-बाडी कर उन्हें निर्देशतापूर्वक कुचल दे माहि के प्रविध्य में फिर सिर न तठा सकें। इस सम्बन्ध में उसे स्वर्गीय सरवार बस्सभ-मार्च पटेल की प्रभावी नीति का प्रमुक-

रच करना चाहिए। बायसमोश के १६ वर्ष १६८६ के

२ उते वर्तमान पत्राम, हरियाचा, हिमापल प्रदेख वण्डीवढ तथा बम्मू क्षेत्र को निसाकर परिचम प्रदेश की स्थापना करनी चाहिए। विसकी रावधानी वडी-यद होयी। नि सन्देह ऐसे प्रदेश में राष्ट-बादी शक्तिया प्रवत हो जावेंबी तथा उपवादी कमजोर हो जार्वेने।

३ हिन्दू प्रशासस्यको को हवियारो के बाइसेन्स प्रकर मात्रा में विवे वार्वे ताकि वे प्रातकवादियों का सामना सफ-नतापर्वक कर सके।

४ वहा की पुलिस तथा प्रशासनिक सेवाधों में हिन्दुची को ग्राचे स्वान ग्रववा उनकी ४= प्रतिशत जनसंस्था के बनुपात में स्थान दिये जानें ताकि श्रत्यसम्बक्त वर्गे विस्तों के प्रशासनिक दवाब वे मुक्त हो

५ वर्षे के बाबार परस्थापित सभी शिक्षासस्यायो को समाप्त कर सजी मोनो के लिए एक सी शिक्षापढ़ित लाग की जाये। सभी छात्रों के लिए नैतिक-शिक्षा छोटे बच्चो के लिए स्कार्टिंग तथात्रहो के लिए एन सी सी श्रनिवार्य की असे।

उपरोक्त उपाय नि सन्देह पत्राव की स्विति श्रुवारने से सहावक सिद्ध हो सकते

> शकुनबन्द गुप्त विकासाबस्पति मासनज जि॰ रायवरेगी, उ०प्र॰

### मनोहर वेद कथा

बार्यसमाज मासवीय नगर नई दिल्ली के तत्त्वाबवान ने आवार्य वैनिनी शास्त्री के प्रवचन एवं प० सत्यदेव स्ना-तक के अजन हुए। यह कार्यक्रम १० जून से १६ जुन तक सम्मन्न हुवा इस वी न के सोनो पर माननीय प्राचार्य जी के प्रव-बनो एव अजमोपदेश का प्रस्थविक समर पक्षा ।

वेशराम जनेना मन्त्रो

### दिल्ली से ३०० नौजवान भाग लेंगे

वई दिस्सी, २१ मई (शनिवार) बीव्यकासीन श्रवकाश में १४ जून से २३ जमतक गुरुकून कण्वाश्रम, कोन्द्रार विसा पी श नडवाल मे विशाल पैनाने पर आयोजित केन्द्रीय आर्थ युवक परिषद् बिस्वी प्रदेश के बस विवतीय आर्थ युवक प्रदिचय शिविर मे ३०० नीजवान आग सेंगे।

शिविर सयोजक थी सनिस कुमार कार्य ने बताया कि युवकों में धनुशासन, चरित्र निर्माण, राष्ट्र-भक्ति की भावना, बैदिक सिद्धान्तों की जानकारी, तथा बारीरिक शिक्षण में योगासन, बण्ड बैठक, बहो-कराटे की स्टाईल कृष्तियों का बोग्य व्यामाम शिक्षको हारा कुशल प्रशि-क्षण देकर उनकी विजिल्ल प्रतिभागों को विकसित किया जायेवा । इसके साम योग-

साधना शिविर का भी धायोजन किया वायेना । श्री शार्थ ने बतावा वह गुरुकुल हिमालय की सुरम्य चाटियों के बीच मासतीनदीके तट पर महर्षिक ण्या की वयोश्रमि पर स्थित है।

धार्ययुक्तप्रशिक्षण विदिक्त लिविराज्यक बहुतवारी आर्थ नरेल होने तया प्रयंस-मासी स्वामी वमदीस्वरा नन्द युवडो को शिविर में बौद्धिक शिक्षक हेरो ।

शिबिर में भाग लेने के इच्छुक युवक कार्यांसय प्रार्थसमात्र कवीर बस्ती पूरानी सन्बी मडी, विल्ली-७ के यते पर रात्रि ६ से द-३० बजे तक दैतिक सम्पर्क करें।

> चन्द्रमोहन श्रायं प्रेस सचिव

## स॰ स्वर्गसिंह, स॰ खरावन्तसिंह के वक्तव्य निन्दनीय एव "राष्ट्रविरोधी"

सरवार स्वराधिह जैसे प्राने और बनुवरी तथा राष्ट्रवादी कहे जाने वाले सान भी धातकवावियों द्वारा की गई इत्याचों के बारे में कहें कि ५ प्रतिशत **बातकवादियो भीर १५%** पुलिस द्वारा की नहीं तो बारवर्ष भी होता है और दन भी । उन्होंने भिण्डरावासा की प्रश्नना धौर सरदार दरगरासिंह की निन्दा की है। शाखिस्तान क बारे में यह ⊲हकर कि मतसग्रह पर मिखी का बहमत साबित कर सकता है कि वह ज्सके विरुद्ध है मतसब्रह का छोशा छेडने का प्रयास किया गया है। क्या देश का विभाजन केवल एक सम्प्रनाय द्वारा प्रयने बहुमत से स्था बासकता है ? परोश रूप से स॰ स्वरा-सिंह निसाएक भ्रमन कीम है जैमे सतरनाक नारे को समधन दे रहे है। सम्प्रवाय निरपेश राज्य मे तेसी कल्पना करनाभी सर्विधान की मान्यताको भौर राष्ट्र के विषद्ध है।

स खुशवन्त्रसिंह भी दाना तरह की बोलिया बालते रहते है। उपवाद नवा राष्ट्रदोह की निन्द' भी और दूसरे ह अप उत्तका प्रोत्साहन भी। समृतसर मे ० नू स्टार के पश्वात सेना से क्वियार और बाहन के कर भागने बाल सैनिको को माजाद हिन्द फीज के सैनिकों के समकक्ष बताकर क्या वे खान्त्रदायिक विद्रोहिशो को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित नहीं कर रहे हैं ? साम्प्रदायिकता और विद्रोह की राष्ट्र अवित मानने सर्वे फिर दी साम्ब डाधिक सावनाओं से बहकर तथा देश की

तोडने वाले तस्वों द्वारा भडकाय जाने पर बो सोग सेना से विद्रोह कर जायें वे प्राजावी के परवाने कहे जार्येने । क्या स॰ खशवन्तसिंह जी बाहत है कि ऐसे विद्रोडियों को भागाद हिन्द फीज के सेना-नियो की तरह सम्मानित किया आये ? साम्प्रदायिकता अच्छे भन बृद्धित्रीबी लोगो को भी कितना धन्धा दना देती है यह इसका जीता जागता उदाहरण है।

धकाली नतुरव के लिए जो सवर्ष चन रहा है उसमे किसी घड से भी तके-सनत और नरम रवैशे की अपेशा करना गलत होगा । उनक बक्तव्यो की भाषा से अन्तर हो सकता है। परन्तु उनकी साम्ब-वायिकता भीर प्रथकतावादिता तो एक जैसी हु है। उनके बीच की लकीर तम ही नहीं होती जा रही, बर्लिक समाध्या होती जा रही है। पजान के बाहर दाने हुए मिलो को पजाब में लाने की नावत देकर सन्त लोगोबाल न लालिस्तानी विचार की पुष्टिकी है। स॰ जोगिन्दर्शसह ग्रीर लोगोबास सभी हत्याची का दोप सरकार पर नान रहतें। उनमे सकिसी से भी बात करना भातकबाद को बटावा देना है। उनसे बात तभा करने चाहिए अप वे एक हो दर घर्षे ग्रीर नविधान की परिचिने तर्कसनत सीर न्यायपूर्णहरू के लिए कहें भीर निर्णय होने पर उसकी तुरन्त अमल मे लाने के लिए जुन सहयोग का बचन वें।

केदारसिंह ग्रार्थ

# प्रचार वाहन द्वारा वेदप्रचार

द्यायसमाज गांधीनगर के बार्षिक उल्सव के सवसरपर धुमई १६०५ को बोपहर : बच्चे से एक शोमायात्र का धायोजन किया नया। जिस<sup>वे</sup> सभा के भवनोपदेश र प० सत्यदेव स्नातक प० आसाराम प्रेमी क्यमवीर राष्ट्र प० बेश्ब्वास द्याय, प० चुन्नीसास जी द्यार्थ की अजन महलियों के गीती व अजनों का क्षीमा ग्राजा में विकेष धारुवंग रहा।

१७ १८ १६ मई को धार्यसमाज बीस सैक्टर नीएडा म प्रचार वार्य की धूम रही। जिनम स्वामी स्वरूप नन्द सर-स्वती वे प्रचार अधिक त्या प्रचार बाहुन द्वारा उपस्थित होते रहे। साथ मे प० गुलावर्सिष्ठ राधव प० ग्राशाराम प्रेमी इयामधीर राघव के मनो र भजन होते रहे। प॰ शिवकुमार शास्त्री का वेग प्रव-चन एव शावार्य यशापाल सुधायु जी के द्वारा यक्ष का भागोजन किया गया। विसमे हजारों की सरुवा ने माता नहिनो भाइयो ने सत्सग से धर्म लाम उठाया।

इसके मतिश्वित प्रचार बाहन द्वारा दोपहर को १ बजे से ४ बजे तरु बोट. क्सव, रेस भवन, प्राई०टी० ग्रो० ग्रार०

के० पुरम इत्यादि स्वानी पर प्रवार कार्य होता र ता है। यह समस्त कार्यक्रव स्वामी न्वहपानन्द सरस्वती वेद प्रचार सभिष्ठाता की देखनेस में सुचार कप से चन रहे हैं।

# सचित्र श्री कृष्णा रैक्ट का विमोचन

नई दिल्ली २७ मई (मोमवार) श्री कृष्ण महानू योगी, विद्वान तथा ईश्वर के परम मक्त थे। इक्मणी उनकी एकशास वर्मपत्नी वी प्रीर राष/ या १६००० र नियो स इनका कोई सम्बन्ध न था। यह उदगार शास्त्रार्थ महारथी व धाय सन्यासः महात्मा धमर स्व मी जी महा-राज ने भायसमाज मन्दिर माग, भनार वलीम लोकनयकश्रीकृष्ण पुस्तिका का विमोधन करते हुए कहे।

ने द्रीय प्राय युवक परिषद दिल्ली प्रदेश व लाला रामचाद धर्माय टस्ट नया बाजार न युवा पीढी के चरित्र-निर्माण के लिए महा स्थी की सचित्र जीवनिया प्रकाशित करने की बोजना बनाई है।

चन्द्रमोहम शार्थ समिव केन्द्रीय द्वार्य युवक परिषद्

# समाचार-सन्देश

### नवीन श्रार्यसमाज की स्था रना

विशेष संवादबाता

हिरनकी प्राम दिल्ली ११००१६ में
र जून दर्भ को स्वामी स्वक्यानम्ब वेव
क्यान प्रिकारता, एक प्रावादाम प्रेमा,
स्वामवीर राजव हिरनकी ग्राम प्यारे वहां
राजी को मजनीपदेश रक्ता गया। प्राम के
सभी नर नारी भागी सक्या में उपस्थित
है और कोव राजि के १ वर्ष वक् प्रवार कार्य वचना प्राप्त काल एक
विशेष यज्ञ का कायकम रक्ता गया। जिससे
स्वीयती राकेण रज्ञ मा पर को नम्बित स्वीय स्वार कार्य वचना प्रवार कार्य एक स्वीयत राकेण रज्ञ मा पर को नम्बित स्वार्थ प्रवार कार्य क्या मा स्वार्थ विकास प्रव स्वार प्रवार कार्य क्या स्वार्थ राज्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य

ग्रावश्यक सूचना श्वार्थममा जों के श्वधिकारियों से नग्न निवेदन

दिल्ली आयं प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्थममाओं के लाप्ताहिक तस्त्रम, कथाधी जा कीस्वर्धों में प्रचारायं उपवेषक प्रचारोपदेशकों की व्यवस्था को जाती है। खता से याने वाले देतिक उपवेशकों करती है। सत साप उपकों को भी वन में, चाहे वह किसी मद का हो उबकी समा को रमीद न में। सापकी सामा हारा सो जाने वाली राद्या हो सक ।

सभा के उपरेणको नया अजनीपके-सको सादि से भी हमारा न्या निवेदन हैं कि सार किसी भी प्रकार का धन वह इजिस मद का हो, बाहे वशास, वर-प्रवार तथा मार्ग क्या सहवास, वर्ष-प्रवार तथा मार्ग क्या सहवास हो, पूर्ण विवरण सहित सभा की रसीद कार्टे। इसकी प्रवहेलना चिरकुल नहीं होनी बाहिए। क्रथ्या सभी उपरेसक महानुभाव सपने पास प्रकार करने और सभा के नियमों का पालन करें।

हा॰ वर्मपाल वार्य इत्त्री दिल्मी बार्य प्रतिनिधि सभा त्र्यार्यसमाज नयाबांस में विशेष व्याख्यानमाला

२३ जुन से ३० जुन तक धार्यसमाज मन्दिर नयाबाह, दिल्ली म प्रो० राखेन्द्र जिजासुके विशेष व्यास्थान होने । बनव राजि ८-४५ बजे तक सभी बमेदेमी बजुद्धी ने पार्थना है हम धववर पर पकार कर वमंताम उठावें। मंत्री

शिषकुमार

घरों से घी व निष्टान्न लक्कर श्रद्धा के साथ देव पूजन किय । बाद में प॰ क्य मंबीर र। घत व बाशाराम प्रेमी द्वारा बक्क प्राचना गायन व ईश्वर अवित के अबुर अवन हुए। श्रीमती राकेश रानी, बा॰ वर्मपास म र्य जी ने प्राचेसवाज की गतिविधियों पर प्रकाश हाला । स्वामी स्वस्थानस्य जी ने बार्वसमाज के १० नियम व बार्वसमाज के स्थापक ऋषि दवासन्य के विषय में जानकारी कराई। सोश्यु व्यव पहराया गया भीर भागसमाज के पदाधिकारी व सद यो का चुन।व कराया गया। यहाँ के सभी महानुम वो ने श्रद्धा सद्दित स्वावत सत्कार किया और उत्साह के साथ प्रमाद वितर्गः कराया । शान्तिपाठ के बाद कायत्रम समाप्त हुमा।

### ऋत्यावश्यक नम्र निवेदन

जैसा कि साप को विदिल ही है कि दिल्ली प्राय प्रतिनिधि सभा के बन्तर्गत दिल्ली प्रदेश में सार्वदेशिक सभा के सर-क्षच में झायबीर दल जोर शोरी से कार्य **कर रहा है । धार्यवीर दल के सगठन को** सुद्द करने बुवकों के चरित्र विशास तथा र ब्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के सिए आरत की राजधानी दिल्ली ने बायाबी जम एव जीनाई नास ने इञ्चनवर, तिमारपुर तथा महास होटन के समीप तया रचुमल आयं कन्या पाठलाला मे एक ons सप्ताह के बार्यवीर दल **विवि**र लगाने का निरुवय किया गया है। इससे पूर्व परिपन्न दिनांक १-५-८५ में आप से निवेदन किया गया वा कि सार सपनी धार्यसमाज सस्या की स्रोर से कम से से कम ॥ धार्यवीर इन शिविरों में भाग सेने के लिए संबद्ध जिल्लामें।

दिल्ली बार्च अधिनिष्य समा समस्य बार्यस्थाना है यह पहुरोज करती है कि साथ बारानी धार्यसम्य के निर्वाचन के स्वय बरिक्सीरियो के साम-बाथ बार्यसीर रक के तिरु एक घरिष्ठाता का भी स्वयन कर में, बाद बाप की स्वता का निर्वाचन कर स्वरान हो जुका हो तो बाप सपनी समाय की धारतर समा की देवक दुवाकर हर कार्य को धारिनान्द करा में। कृपया चुने क्ये, मनीनीत किये गये धारिकाता का नाम, साके नितास के रोत जाब दुरवाच नम्बर साथि दूरे विवरण विश्व तमा कार्यास्य के सवा बीज़ निज्वा में बार्य कु वर्षों में नहीं स्वता वाहत हो बीर वे धार्यसमाध्य के सामकी में बार्ये।

> सूर्यदेव संज्ञा प्रचान

# श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के सम्प्रान राशि में श्री लाला इन्द्रनागयण जी ने ११ इजार रुग्ये का दान दिया

दिस्ती पार्व बनवा को यह बानकर हुए होग कि अब्बेद जावा रावगीमक सालवाने के प्राजितन्त समारी हु अब-सर तर में दर्ज जाने वासी सम्मान राशि मे प्रयम सहयोग ११ हजार रुपये के सारिकड दान रूप से प्रजितन्त समिति के कोवास्त्रक जी साला हुन्द्रसार रुप्ये से प्राप्त क्रवा है।

माननीय लाला इन्द्रनार यहा जी ने लाला जी के शताबु होने की कायता करते हुए सार्थ जनता से पुन सपील की है कि सम्मान राश्चिक ११ लाला स्पर्थ के लक्ष्य को पूरा करने के लिए उत्साह पूर्वक बन सग्रह करके सार्वदेशिक सभा विल्ली को केबँ।

ज्ञातस्य है कि सार्थ प्रतिनिधि सका उत्तर प्रवेश की सन्तरम समाने नेरठ वे १६ मई को सम्यन्त बैठक में यह निराय किया है कि उत्तर प्रवेश की और से स्म से कम एक लाख रुपये की राजि समृही क

> डा॰ झानन्दप्रकाश समोजक झमिनन्दन समिति

### प्रतिकिया

सार्य सम्बेश नियमित विश रहा है। इसकी जानवर्डक एवं रोकक सामग्री व निर्द्धने वो विजेशाङ्क हते सन्य समाम्यो के मुख्यकों के विशिष्ट बना बेते हैं। बेते दिस्सी सभा के शेलीं पत्न मुक्ते पतन्द हैं। कुल्केक विकार । कुलाव प्रस्तुव हैं—

१ पुष्ठ २ पर सस्तर बाटिका ने स्वामी वेदानन्व (तीच) सरस्वती का ब्याच्यान उत्तम है। इसे बारी रखें, इस बहाने जनकी 'वेदोवसेश' पाठको के स्वामने बारावाहिक कप के प्रस्तुत करें ती बहा सामकारी होता।

वशा वानगर हायाः

२ इती अकार इस धाइम्बी के पूर्वा के कुछ नगीवागों के विचारोस्त्रिक क्षीर विकास कर्मा के विचारोस्त्रिक कर्मो की वारास्त्रीक कर्मो की वारास्त्रीक करने नई गीवीं को उनसे परिश्वत करवाना जरूक नाय-प्रवादा उत्तरी वारास्त्र करायाः

इत्तरीयाः

इत्तरीयां

इत्वरीयां

इत्तरीयं

इत्तरीयं

इत्तरीयं

इत्तरीयं

इत्तरीयं

इत्तरी

ठीक हैं पर माथणी के केवन (सयन्तियों पर वर्तमान नेताओं के विस्तुत मावण) वारणीतत सवा हो देना पर्याप्त होगा। भी पूर्व विद्युत्त प्राप्त होगा। भी पूर्व विद्युत्त व्याप्त होगा। भी पूर्व विद्युत्त हैं कि हर महत्त्वपूर्ण व्याप्त विद्याप्त निकासने वा धारित्यल क्यस पाठक वहन करेंगे। यदि यह उद्देश्य सर्वेष के नित्र निर्मापित किया बाता है तो हम हस पर्विका का हुपुना पश्या भी सहस्वं देंगे।

३ मेरा अभिन्नाय है कि 'आई सम्बेश" साहित्यक पणिका मले न बने पर हमारे महापुरूपो और इतिहास को पुन प्रकाशित अर्थस्य करें। इसी से इसका नाम सार्थक होगा।

४ कुछ पर्व वा ववन्तिया जब पास पास पक्ष्ते हो तो सबुक्त विशेषाको और सप्ताहों को भगाने की पण्यया डाकनी वाहिए। सार्व० सभा को सुकाया जावे।

 इस पत्र में शिक्षा का प्रचार क्रमियान और शुद्धि क्रमियान को स्थान दिया जावे।

> नवप्रसाद शर्मी ११०, घांची कालोनी, पास रोड, ओक्यूरे

'सार्वजनेत का तथा कर रह देख कर मेरा मन गर्वज हो जाता है। सापने तो सार्वजनेत को इतना भाकर्यक वा पठनीय बना दिका है कि बच इटका सन्ता प्रक देखने वा पढने की लक्ष का स्वका धनसा प्रक देखने वा पढने की लक्ष का स्व रहती है। इसे सर्वोगीय पणिका बनाने का बेय गिरुक्य ही मापको दिया जायेगा। देख पर, रखन पर करिहास पर, बुक्डो-प्योगी, बालोपयोगी, गारी वनत् सम प्रकार के स्तम्ब साप दे रहे हैं।

किन सम्बंधि ने बचाई वूँ ? आयं स्वाब ने प॰ लेखारा के सह से रस स्वच्छा लावेख जुला दिवा। हमारा प्रेष विकास सुद्देग्या। इसार प्रेष स्वच्छा सी धानई। धार स्वय नम्बीर स्वास्तात करें। धार की सेवानी ने बाल है। प्रस्तुवीर प॰ लेखारा के पन के पक्ति कमकर सार्व जाति ने बीचन का सञ्चार कीविए।

प० चमुपति, प० गवामसाद उचा-ध्वाय का समाज नने नने पत्रकारों को सम्म देता रहेगा। ऐसी घाषा धव वष् गई है धपने जैंदे रह बंध बीर उदीवमान विद्यान्तनिष्ठ धोजस्वी धार्येचीरों को कुछस पत्रकार बना दे। इसके दिना हम बी नहीं सकते।

धार्यक्षत्येस देसकर सगता है कि | हम एक जीवित तमाज के प्रमाहै। धार्य-समाज के प्रेल को धीर सुद्ध दमाने कें धाप स्थाप आय दे तदे रहें। स्व-क्षीरजन्द की विद्यार्थी के स्थान आर्क-समाज में पत्रकारिता के सिए बीवन कुटा हैं।

सायका अपना राजेन्द्र जिल्लास

# श्रार्थसमान तिमारपुर का वार्षिक जनाव संपन्त

दांतों की हर बीसारी का घरेलू इलाज

र्गेगि यक्त

23 जड़ी बरियों से निर्मित

आयुर्वेदिक औषधि

दातां का डाक्टर

देत मांज

महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लि॰

9/44 इंग्डॉक्ट्यल एरिया कीर्ति नगर नई विल्ली 15 फोक्ट 539609 53 987 53

अब नदी वैकिन

में उपलब्ध

धार्यसमाज तिमारपुर दिल्ली-७ के १२ मई ८६ को हुए वार्षिक चुनाव में विम्नविश्वित पदाविकारी सर्वसम्मति से नवीचित हुए --

मती--धी कुप्हा देव उप मत्री--भी विमस कान्त शर्मा -बी उदवसिंह कोवाध्यक्ष-श्री देव ऋषि पुस्तकाष्यक - की करत गारावक वीक्षित

इकाम ची॰ बीमसिह हप प्रधान-धी जनवीसमाम दुल्बम — भी ताराचन सार्व

(विमल कान्त सर्गा)

चपमची

ा कार्य पार्क



#### सात वर (पष्ठ२ काशेष)

सोपान है। ब्रह्मवित् ब्रह्म एव अवति। बहुावेता होना ही नि अयस साध्य है, इसीका नाम नोक्ष है इसीका 'परा-गति'। धम्युदय निश्चेयत के लिये ही होता है। श्रम्युदय यत्रा है। ग्रीर निश्रेयस सन्य है। साध्य न हो तो साधन वेकर है। भौतिक जीवन तो बात्र का प्रदाय सात्र है एक प्रदाय जाता है दूसरा भाता है। यह क्रम वरावर जारी रहता है जब नक कि प्रतिम स्थान न भाजाय, वहां पट्टेशना हमारा ध्येय था । इसकिये 'ब्रह्मवर्षेत्र' सब से उत्कृष्ट ध्येय है।

भौथी बात मत्र में यह बताई वई कि हे विद्वाना बह्मकोक की प्राप्ति से पहले तुम मरे लिय इन सात वरो की प्राप्ति के राघन जुटाधो धन्यक तुम को ब्रह्मकोक की ब्राप्तिन होगी। सब सबका बहुनही है जो मोश पाना चाहता है। घपितु यह है जो दूसरों को मान्त दिलाना चाहता है। महादत्वादाजत बहालोकम् । मेरा भागमूमे दक्र बह्य लोकको जाइये

कहते हैं कि स्वामी बयानन्द को विसी ने कहा का कि व्यवं नेद प्रचार के पचड में पडे हो, योग करो सौर मोल हो बायनी। स्वामी दयानम्द ने उत्तर दिया कि अस ससार प्रविचा की दासता मे पड़ा सड रहा है तो मुक्ते मोक्षा कैस फिल सकता है। महात्मा बाधी के लिये यह कटिन न या कि वे सद्देशी शासन की दासता से स्वय मुक्त हो जाते। इंग्लैंग्ड का नाग-रिक बन जाने से यह ब्येय पूरा हो सकता वा। परन्तु इससे भारतीय कोनो क दासत्व का सत तो व हो सकता था। सत महात्मा गांधी ने समभा कि जब तक देशवासी गुलाम है मरी स्वतन्त्रता का कोई सर्व नहीं। जनता पुकार कर कहती हैं कि मेरा ऋण पुकाकर ही तुम प्रद्वा लोक को बासकते हो सन्यया नहीं। जिसने रेल का भाडा नहीं चुकाया वह तो रेल से उतर वर घर नहीं का सकता। धाप के सात वरों में एक यह भी है कि जनताड़ाराइन सात वरो की प्राप्ति क जो साधन द्याप चुटा सकते हैं। उनम द्याप कभी न करें। कर भला, र्वदेश तेशा भलाकरेगा।

### श्री हरबंस सिंह खेर ५थान. श्री रामसरण दास श्रार्य महामंत्री सर्वसम्मति से निर्वाचित

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार महस का वार्षिक चुनाव २६-४ ८४ को सावसमाज मालवीय नगर में हुआ। जिसमे निम्न-लिखित अधिकारी चुन गए।

प्रसात श्री हरवस सिंह बेर श्री हरवस लाल कोहली चपप्र बान भी कृष्ण लाल स्री श्रीमती सरवा पाव महामन्त्री(\_\_\_\_ श्री र ससरण दास पार्थ मत्री श्री ग्रीम प्रकाश भावस मश्री 🗓 धी चन्द्र प्रकाश कोषाध्यक्ष श्री शालिय राम बौतम लेखा निरीक्षक किंदेसराज जुनेका रामसरखदास भार्य

महामत्री



#### सत्संग वाटिका

धवं-(मवा) मेरे द्वारा (वरवा) बरों को देने वाशी (बेद माता) बेब-माता (स्तुता) स्तुति की गई । खर्कात् मैंने देव क्पी माता की नोद में बैठ कर ज्ञाम के रस का पान कर विवाहे। (दिवामा) विद्वान् बाह्यको द्वारा गाई हुई (पावनानी) पावसानी नाम की ऋचाएँ जीवन को विक करने वासी (प्रचोदवन्तां) हुन क्य भूग कभी के निए प्रेरित हुआ करें। हे विद्वानी (महा ) मुक्त की (बरवा) इनसात वरों को देकर (ब्रह्म सोक) मोबा की (त्रजत) प्राप्त की जिये। वह जात वर यह हैं। (धायू) पूर्ण जीवन, (प्रारा) चीवन शक्ति (प्रजा) सन्ताम (पशु) नाव बैस, घोडा शांवि वसु (कीर्ति) बना, (द्रविष) वन बास्य (बह्यवर्षसम्)

बाध्यात्मिक तकः।

व्यास्था—इस वेद वस्त्र ने चार बालों का बर्जन है ---(१) वेद वाला 🖁 नाता निर्माता भवति ।' नाता पुत के सारीरिक मानसिक तथा सामाजिक बीवन का निर्माण करती है। इसी प्रकार नेच निचा द्वारा ही नावन समाज का निर्वाण हुआ है। मनुष्य ने जूनव्यन पर जिलमा सास्कृतिक विकास किया है वह सब मूल में बेद विद्या के द्वारा ही झारम्म श्रुपाचा । नेत ने बहुत्व को शोधना विकाया । समस्त वानव-वावाची का निकास बैदिक भाषा से हैं। बापा विज्ञान विशारदो ने सभी भाषाओं के पारस्परिक सारहय की कोज की है।संस्कृत का "वितु पारसी का पिदर लैटिन का ''पेन्र पूर्वनाली भाषा का 'पादरी श्रमेत्री का प्राप्तर यह निवते-जुलत शब्द हैं। संकृत का चलप 'बा 'बाव्य ; दिनिणी भाराभी का बाद्या, या बद्या उर्दुकाका भव्ता, भरवीका भव्या 'ग्राब्रुयह भी मिलते जुलत हैं। परन्तु सरकृत सब से पुरानी भाषा है। भीर संस्कृत मे ध्व यात्मक साहत्य के साथ साथ धात्वर्य भी मिल जाते हैं। जैस 'पित शब्द पे पा रक्षणी चातुका सथ विद्यमान है। प्रयेजी के पार या पारसी के पिदर नाग्रर्थं उत्भागको के बातुको से जान नहीं पनत । इससे पता चलता है कि एवं सम्कृत कहा दो न प्रपन ब्रादि मूल देश को छाड भीर विकृत होकर दूसर भाषात्री कल्प मे नितीन हो गये सीयहश् द ग्रपन ब्वनिको तो साथ के गये पर तुघात्वर्थों का पीछ छोड गये। संस्कृत मे घन्त्र का मिल अपना धौर दूसरी भ पाराम न मिला सकता इस बान का प्रमाण है कि वदो की भाषा से ही दूसरी नापायें निकली हैं। यदि शप को दो देो मे दो पूल की मुन्दर मालायेँ मिलें ५र-तूएक दश म पूली के साथ उनके बुक्षों का मूख नो मिल जाये और दूसरे में क्वल फूल हो धौर मूल न मिले

# साल -दर

#### लेखक-प० गंगाप्रसाक उपाध्याय

स्तुता सवा वरदा वेदमातीः प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् । स्रायु प्राण् प्रजा पश्च कीर्ति द्वविण ब्रह्मवर्षेतस् । मह्य दस्वा द्वजत ब्रह्मलोकम् । (वयर्षे वेद काष्ट्र १० । सूक्त ७१ । सन्त्र १)

\*

तो अन्या प्रदेश कि इस कुर्वो का अन्य-क्षेत्र वही था बहामूल भी मिलता है। सस्कृत का 'कमें' भीर पासी का 'कम्म' दोनो मिसते जुलते हैं इनमे व्यति-सादश्य है। प्रश्न बहु है कि 'कम्म पहले था या 'करने करने का धपभ्रं शा करन है या कम्म का सपभ्रश कम्मं े ऊपर की कसीटी सवाहये। इन दोनो का माव क्' (करता) बातु से निकता है। वरन्तु कर्म में कू' श्रविक विद्यमान है। 'कम्म' मे 'हु' का ऋकार वा रकार सर्ववा मुख हो नया है । बारवर्ष का पता नहीं सबदा। नह बात प्रकट करती है कि आहते 'कर्मी' का किर क्ली का विकृत कर 'कम्म है। इसी प्रकार वर्ग और वस्म ने व्यवसारपंक शास्त्र होते हुए भी वर्ग मे वृ (वारण करने) का माथ विश्वमान है। 'थम्म' ने उसका बीप हो बया । ऊपर का क्रिसका वेव है। मीतर की विरी सुप्ता हो यहै। इसलिए बड हम कहते हैं कि देद माला ने मानव जाति को बोलना विकास, तो इन ने नोई अल्युक्ति नही है। इसी प्रकार विचारों की बात है। भूमण्डल के समस्त वर्गों, सम्प्रदायी भीर सस्कृतियो मे जो धच्छी ग्रम्की बातें पाई वन्ती हैं, वे सब उन सरक्रतियों के चन्त्र से सहस्रों वर्षे पूर्वे केरों में उपस्थित बी । काशी के यगात्रल भीर गगोत्तरी के गयाजस में बहुत कुद सादृत्य है। परन्तु कोई यह नहीं कह सकता कि गमोत्तरी का गगाजल काशी स वया है। क्योंकि काशी पीछे का बीज है और बनोत्तरी पहले थी। इसलाम के जल्म महजारी वर्ष पूर्व बेदी में एक ईश्वरवाद था । ईसाई बाइबिस से हतारी वर्षपूर्ववद संईव्वर के निए पिता शब्द था चुका था। श्रव वेदमाता नाषा भी सिखाने वाकी है और धाचार भी सिलाने वासी बद ने भोग भीर प्रपदमं दोनो की शिक्षा दी है।

(२) दूसरी बात यह है कि विद्वान के झुणों दे रा की गई पावमानी स्तुतिया मनुष्यामान नो धर्म पर चनन की प्रणा करती हैं। यह देव के ६ वे मण्डल क ६७ वें मण्डल क ६७ वें मण्डल क ६७ वें मण्डल क ६७ वें मण्डल क ही ७ ऋषाएँ (मज २१२७) पावमानी ऋषाएँ कहीं वाती हैं — यहाति यह च इस्के मण्डल कि मामिह। प्रचानविक्तकवृद्धि।।

(ऋग्वेद ६ ६७ २१)

कुमान् मां केवलमा पुरान् बतावी विकास विकारिकाः पुरीत मा बातकेव पुरीहिकाः (१६० २ ६०-२७)

देववल मुक्ते पवित्र करें। बहुबक-दुक्ति द्वारा नुके पवित्र वरें। सब देव मुक्ते पवित्र करें। झामस्यक्प ईस्वर मुक्ते पवित्र

इन ख्वाधों नो क्ष्मियों ने स्टब्स् बानी क्ष्माएँ नहा है। यों तो समस्य नेव ही 'पायवान' अर्थाए सनुष्य के जीवन को वर्षान क्ष्माओं है। परन्तु इन सार पायवानी क्ष्माओं के गठ वस तक्षा सिकार से मनुष्य को वार्गिक जीवहरू किस करने में प्रस्ता विस्तरी है।

(३) वीचरी बात है सात बरो की । बाबु, प्राच प्रजा, पशु कीति, द्रविक और बहावर्षस । मीतिक या सनीतिक वितनी बीको की मनुष्य इच्छा कर सबसा है बन बन का इन खातों में समावेश औ बाता है। वह सात ६र इतने स्वष्ट हैं कि इनकी विस्तृत व्याख्या की सावस्य-कता नहीं। त्रायेक प्राणी का वह सम्पन् है। धौर क्यों-ज्यो मनुष्य सम्मक्ति के क्षोपाम पर चढता बाता है, उसे इस वर्षों ्रेकी उत्तरोत्तर महत्ताको अनुपू<del>षि होती</del> वाती है। रीर्वजीवी होना पहुंचा वर है।कोई नरबा नहीं चाहता। परम्यू बीयन प्रात्त हीन हो ती दुन्तरायी है। क्वको बनुप्राणित करने के जिए क्वस भाषार्वे होनी चार्निएँ। निराधान्य जीवन के हुनी होकर ही तीन प्रातनात करते है। बस बीवन से बाने बहुकर प्रास्तु का मुल्य है। इन वो बरो केंब्रीनक्षते वर खबा की इच्छा प्रथम होती है। 'एकोऽह बहु-स्वाम्"। मैं भकेला हू बहुत हो जाकृ। पुत्र, पीत्र हों। इसके परवात् इस तीक की कमी को पूरा करने के निये पश्च वाहियें। पोवा नाव, कुला प्रावि बावकी जीवन के पूरक हैं। वर्तमान वैज्ञानिक यूगका सब मे व्हा दोव है दक्षकों की श्यवहेलना। यत्रो के श्र व्यवस ने पश्चमी के लिए कोर्ड स्थान नहीं खोदा। वैविक बुहरूब में पशु एक विशे<del>य-बय समग्रे ।</del> शांते वे। 🖈 इन बार चें जो के होते 🧗 भी कीर्ति (यश) न ही नी कीशन विश्व काथ का। कीर्ति स्याहै ? ध प के ग्रुम कर्मों के विवय में समाज का प्रमाम वन (सार्टी-फिकेट) । जब हम समाज रोबा करते हैं तो हर मनुष्य के हृदय से भाषाज उठती है कि यह मनुष्य हमारा हितेया है। जिस विन बहात्या गाथी की हत्या हुई, ए इ सर्व काल डकाएक दुकन पर खडाकहरहा था, 'महात्मा जी हमार थे। सब हमार्थ सुध कीन लगा ? ' 'इविक्' मे सभी सासा रिक इच्छाक्षो का समावेश है। ब्रवि वर्षाय है अभ्युत्य का (द्रविशा=Pro: perity or Prosperous Life 'बन्युदय' क्सि। एक कामना की पूर्ति । नाम नहीं है। यह एक व्यापक शाद है पूर्लाणीवन ही द्रशि" है। इनके व नम्बर है बहायचस् का । यह प्रकृ

(शेष पुष्ठ ११ पर)

(ब्यू) को (ब्यांक) कार्यक में (क्या प्रत्ये) कीर को पूर (गय) कम (वह) वस सवार में (मा) मुफ्त को (शिव्यक्ति) प्राप्त होंवे । क्ये (है पवचाच) प्रक्रिय करने जाने देश्वर (यह वहि) उन्ने पूर कर पीलिए।

पवनान सो श्रम्भ गः पवित्रोत्त विश्ववैद्धिः । य योता त पुनातु न ॥

(मानेव १-६-२२) (व विश्वेष स्वयंता) वह वर्ते-त्रव्या प्रविष्ठ करते सामा ईल्वर (प्रि-नेक) पान-क्रीक्रक तेव से (प्रवा न पान इस को पवित्र करें। (व योगा व तुराहु न) देवर इस वस का (पोगा) वंशोषक है। यह इस को ववित्र करें। यस विश्वासीकरूमें किस्सासम्बर्धा । वहां तेव प्रमिद्ध सा

(बन्ने) हे बॉल (है व्यक्ति) तेर त्वांपेक बात्मचे में (वर पित्र) के वर्षांक के व्यक्ति है के युद्ध कर्षों वाली शोमता (बन्तरा वित-तर्म) भीतर विद्यान है (तेल) उद्ध वामव्यं डाप (न ब्रह्म) हमारे ब्राम्मा रियक तेव की (पुनीष्टि) जीवन कीव्यिक्ते । वस्ते पविकर्मविकत्त्वे तेन पुनीष्टि व । ब्रह्मत्वे पुनीष्टि व ।

(वः १-६७-११)
(वर्ष-व्यव् कःने) हैं प्रकास स्वरूप
प्रांत (पर्य पणित्र तेन) को तेरा श्रीका करने वाला प्राप्त्य है उस हो। हम को पणित्र कीतिकों। (बहुत-विषे) स्वाकों पणित्र कीतिकों। (बहुत-विषे) साध्यात्मिक ल्युतियों डारा हम को पणित्र कोत्रिये।

उनास्था वेन समित विनये स समेन व । मा बुनीहि विदयत ॥ (ऋ० १-६७-२५)

ह समिता वा प्रेरक ईश्वर पवित्र धौर सब दोनो से धर्मात् मल-लब्ट करने साली किमाधी तथा आध्यास्मिक तेत्र घारण कराने वालो प्रश्नृत्तियो द्वारा हुमको पवित्र कें जिये।

त्रिनिष्टव देव सरितवंषिष्ठं तोन वालि । धन्ने वृत्री पुनीहि न ॥

(ऋ०१-६७-२६) हे समिता देव सोम, (त्व) तृ (निभिः) तोन (विष्टै) नृद्धतम (दर्शे) योग्य (बामित्र) भामो द्वारा हम को पवित्र कीजिये।



# अलौकिक प्रतिभा के धनी गुरु विरजानन्द दण्डी

स्याग के उच्च धादर्श महानयोगी प्रज्ञाचक्ष गुरुवर्थ स्वामी विरेजानन्द की शिक्षा काही चमत्कार या कि सूगपुरुष महर्षि दयानन्द भारत को मिल पाया । स्वामी विरजानन्द का जन्म १७७६ ईम्बी मे पजाब करतार पुर उपनगर के समीप गमापुर ग्राम म इसाथा। वेचक रोग के कारल पाच वस से भो धल्प धाय मे वे नेत्रविद्वीन हो गए। वे सारद्वाज शारदशासी, सारस्वत बाह्यए। थे। भत बाल्यकाल मे ही बज्ञोपचीत बाद सस्कार के साथ बेदाध्ययन के लिए व्याकरण प्रादि की उनको शिक्षा दोक्षा प्रारम्भ कर दी गई थी। नेत्रों को वारीर का दूसरा प्राण कहा जाता है उनके नेत्र चले गये यह दुखं कम नहीं था कि स्नेह के साग्रर माता पिता भी बच **≱रन** में ही ग्रसार संसार से उठ गये। इसर वह भाई माभी ने विरजानन्द को लाड प्यार न देकर सताना दुत्का-रना शरू कर दिया। इस प्रकार की दु सद स्थिति मे भन्ध बालपन को लेकर वे केवल १२ वष की आयु मे घर से निकल पड़। तीन वर्ष तक भटकते हुए ऋषोकेश पहुचे। यहाँ पर उन्होंने जगल में गगा के तीर पर एक कूटिया बना ली। गायत्री उपा-सना मे रत रहते हुए कण्ठ तक गगा के जल में खंड होकर साधना करते रहे। उनकी स्मरण शक्ति धनितीव हो गई। १८ वर्ष की आयु में इन्होने कनसल हरिद्वार मे दण्डी स्वामी पूर्णानन्द से (जिनसे स्वामी वयानन्द ने भी सन्यास सिया था। तन्यास प्रष्ठता किया । इनसे ही शिक्षा व्याक-

ज्ञान के प्रस्त सूर्य परम तपस्थी,

ग के उच्च ब्रावर्श महामयोगी स्थले पहलान वे काशो पहुंचे काशा ।

बज्जु गुढ्यर्थ स्वामी विरजान वे काशो पहांचे काशो ।

बज्जु गुढ्यर्थ स्वामी विरजान वे काशो से पाया में । वहीं से कलकत्ता ।

बज्ज महर्षि दयानच भारत को स्त प्रकार पुर लेटिकर एरा जिला ।

पाया । स्वाभी विरजानस्य का के गगातीर स्थित सोगे नगर आ ।

१९७९ १ स्वो में पजाब करतार , जनको यक्ष कोर्ति नह और फेलने ।

प्राचा । से कर में से करगण सी।

एक दिन जब वे गगा में खड मत्र पाठ कर रहे थे। मलवर नरेश महा राज विनयसिंह ने इस प्रज्ञाचक्षु विद्वान को शुद्ध मधुर शैली मे पाठ करते देखा वे मुख्य हुए विनान रह सके । उनका योग साधना भीर त्याग से वे ऐसे प्रभावित हुए कि उनकी कूटिया में पहुच कर उनसे अपने राज्य अलवर चलने की प्रार्थना करने लगे। स्वामी जो ने कहा हम वरागी तुम रागदव की दूनिया के अनमस्त रागी। हमारा तुम्हारा सग कैसे समव है ? राजा ने जब बहुत धनुनय विनय की तो वे एक बर्त पर साथ जाने के लिए तैयार हुए। यदि तुम प्रतिदिन हम से कुछ ही काल तक सही पढना स्वीकार कर लो तो हम धवश्य साथ चल सकरो । राजा ने उनकी शर्त स्वीकार कर ली लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया यदि एक दिन भी पढ़ने में व्यवधान हुआ तो हम वापस लीटकर था वार्वेगे: ग्रलवर पहचकर उन्होंने राजा को पढाना शरू कर दिया। महाराज विनयसिंह के हृदय में दण्डी जी के लिए दिन-प्रतिदिन मक्तिमाव बढता गया। किन्तुएक दिन राजा नाच-रग में व्यस्त हो नया और पढने नही वहुत्र प'या; राजा के प्रतिका गम

करने पर स्वाभी जी राजैनगरी का परित्याम कर चल पड़। कहा तो उस सभय के जानी ध्यानी सत जी मीक्षानन्द नी प्राप्ति से भी अधिक राजदरबार में प्रवेश के निए उत्सक रहते थे और कहीं ये ने अधिकहोन साधु जो राजवश्य राजगुरु के सम्मानन पद पर ठीकर मारकर चल पर।

इसके परकात वे पून सोरो आये यहापर भरतपूर के राजा महाराज बनन्तसिह ने उन्हें भरतपूर पधारने को प्राथनों की किन्तु उन्होंने जाने से साफ इन्कार कर दिया। वे मधुरा चले पये भीर यही पर उन्होने भारती पाठशाला प्रारम्भ कर दी। इसका व्यय भार झलंबर नरेश भरतपुर के महाराजा तथा जयपुर के ग्रामिपति वहन करते वे । स्वामी जी इन राजामों को तथा भाने छात्रों को उस समय देश को गुलामी को सहन न करने के निए तथा देशहित में तन मन धन अपराकरने की सदाप्ररणा देते रहे। १८६० मधुरा में ही उन्हें स्वामी दयानम्द जैमा सुयोग्ब शिष्य मिला। शिष्य को पढाने मे उन्होंने चमत्कार जैसा काय किया। स्वामी विरजानन्द पढाने में करोर थे। उन्होने दयानन्द को ग्रनार्षग्रन्थ त्याग करने का प्रचम भादेश दिया।

मह्मिक्कस ध-को को पहने की घट्टी थी। जिसके कारण स्त्रामी द्यानन्द का जीवन ही बदल गया। बैसे तो स्वामी विरजानन्द की पाठ क्षाला से हकारो विद्यार्थी जानार्जन कर निकले, किन्तु स्वामी दयानन्द जैसा खद्दिनीय विषय एकनात्र ही या। धार्षप्रकार्य के विषय से समय के विरजान्य के किष्ठय जीवाल

ब्रह्मचारी युगलिकशोर सोहनलाल, नन्दनजी चौबे पाण्डय श्यामलाल, गरुडध्वज दीनव षु वनमाली चौबे और उदयप्रकाश ग्रादि भी प्रसिद्ध रहे।

स्वामी विरजानाद ने उदभट विद्वानों से सने क शास्त्राथ किये। वे मावग्र यो का प्रतिपादन ग्रीर ग्रनार्थ-ग्रन्थों का रूण्डन बनी कटोरता से किया करते थे यही पारम्भरिक गरा स्वामी दयानन्द मे भी अवनरित हुमा । समावतन (विद्यासमाप्ति) के समय जब दयानन्द अपने गम से विदा लेने लगे एक थाली लीग भरकर सन्यासी शिष्य ने गुरु चरणी मे म्मिंग करनी चाही किन्तु विरुवा नन्द बोले - दयार न्द । हम मनवाही दक्षिणा चाहिए। इतिहास मे इसी प्रकार महर्षि वरतन्तुने अपने शिष्य कौत्स से चौदह करोड स्वरामुद्रा मागो थी । किन्तु दयानन्द ने इससे भी बढकर दक्षिए। अपना जीवन ही गुरु के चरगों में दक्षिशा स्वरूप धर्मित कर दिया । गुरु ने धादेश दिया जीवन भर धाषग्रन्थो का प्रचार ग्रीर ग्रनापग्रन्थों के तिमिर का खण्डन करो। जीवन भर दया-नन्द ने इस ग्रादेश का पालन किया. एक बार जब स्वामी दयानस्द मेरठ मे वे रूठ का सन्देश मिला— दया नन्द अभी तक तुम्हारी चवल कीर्नि हमारे कानो तक नही पहची । वे चाहते थे मेरे शियकी कीर्ति दिग दिगन्त में व्याप जाये । सोमवार १८६८ सितम्बर में इस महामनि का निधन हुआ। उनके मृत्यु समाचार को सुनकर स्वामी दयानन्द ने कहा था---

### सत्मंग दाटिका

वाब्दा न-- (ह इन्द्र )पण्यासमन् श्रयका राजन् । (यम्) जिस मनुष्य की (प्रच-तम ) महाज्ञानी (वरण ) बरणीय (मित्र ) सुहुद (ग्रयंमा) न्यायकारी (रक्षन्ति) रक्षा करते है। (म ) वह (जन ) मनुष्य (न कि.) नहीं (दम्यन) मारा जाता।

व्याख्या-इस मन्त्र मे एक व्यक्ति की मक्सता का रहस्य बताते हुए वहा है कि वह समुख्य जिसके वरुए। मित्र और ग्रयंगा रक्षक हैं, कभी मारा नहीं जा सकता बर्मात् बान्तरिक बीर बाह्य अनु उसे असफल नहीं कर सकते, दबा नहीं सकते। दूसरे शब्दों में भाव यह हुआ कि मनुष्य को प्रयना ग्राचरण ऐसा बनाना चाहिए कि समार के वरणीय खेटठ पुरुष उसके उदात वरित्र से प्रभावित होकर उसकी रक्षाकरे । प्रेमी और भित्र भी सन्म गैमे चलने की प्रेरणा करके रक्षा ही करने वाले हो। न्यायप्रिय न्यायाचीय भी मर्यादा-पालन करने वाल ऐमे व्यक्ति के रक्षकवने।

श्रद एक एक बात पर बोडा विस्तार से विचार की जिये। ससार के श्रेष्ठ पुरुषो की यह स्वामाविक प्रवृत्ति होनी है कि बेश, भाई, बन्धु स दि की सामान्य सीमाओं को खोडकर श्रेष्ट व्यक्ति का हित साधते भौर सकर के समय उन्ही का सहयोग करते हैं। ग्रथर्याचरण करने बाले उनके निकट के सम्बन्धी ही क्यों न ह्रो उनका स व वे कदापि नहीं देते।

रामायसामे, रामग्रीर सुपीव राम तवाविभीवरा, महाभारत मे विदुर र्भ तम होणावार्य सौर हपाचात्र सादि के चदाहरण विस्मयकारक तथा भद्भृत है। आदम से लोग सारीरिक इंटिंग दुर्योजन के पन मे ये वहाँ हृदय ने पाण्डत-पन की ही हित कामना करते थे।

सुग्रीव को दिये वजनानुसर अब राम ने बाण सरकर वाली की धायल कर दियातो बाली ने रोप प्रकट करत हुए राम से कहा -

> इति मे बुद्धिस्त्यन्ना बसूत्रप्दशने तव। न त्वा विनिद्रतात्मान धर्मध्यजमधार्मिक्स ।। जाने पापसमाचार तुर्गीकूपमिवावृतमः। सता वेयघर पाप प्रच्छ नमिव पावकम्।।

है राम तुम मेरी इप्टिमे एक ब्रात्म-धातो और धर्म की कोरी डीग हाकन वाले पापाचारी भीर तिनको से ढके हुए कूत के समान लोक्त ने हो । सत्पुरुवों का वेष मोढे पायम्य दकी हुई माम के समान पूर्वक अपने अधिकार में करके कामातुर और अपने सरीर से भी क्या प्रवोचन रह

# जिसे बचावें वरुण, मित्र और अर्यमा उसे मारे कौन?

लेखक-प० शिवकुमार शास्त्रो

य रक्षन्ति प्रचेतसो वरुगो मित्रो धर्ममा । न कि स दम्यते जन ॥ साम० १८४

दाहक हो ।

हत्वा बारोन काकुत्स्व मामिहानपराधिनम् । कि बक्ष्यसि सत्ती मध्ये कर्न कृत्वा जुगुप्तितव् ॥

बा॰ रामा॰ ४ १७, २०, ३४

द्रे राम बिना धपराच के ही वास के प्रहार से मुभं मारने जैमे निन्दनीय कर्म को करके तुम सत्पुरुषों के बीव में क्या उत्तर दोगे ?

> सुप्रीबोऽपि क्षम कर्तु बत कार्यं तब राष्ट्र । किमह न क्षमः कस्माद-पराव विना हतः ॥

हे रावव ' तुम्हारी सहावता का बो काम सुन्नीय कर सकता है क्या वह मैं नहीं कर सकता था<sup>?</sup> फिर तुमने निष्का-रहामुके क्यो मारा?

> राञ्चसञ्च दुरात्मान तव मार्शपहारिखन्। कच्छे वदच्या प्रदश्चान्ते **ऽनिहत रावश रखे ॥४६॥**

तुम्हारी पत्नी का घपहरश करने वाले उस दुष्ट रावच को युद्ध मे न मार-कर भीर उसकी मुश्कें बाधकर तुम्हारे सामने उपस्थित न कर सका, इसका मुक्ते बढा सेद रहेगा।

वालीका यह कथन किसना युक्ति युक्त और नीतिनैपुष्ययुक्त है। राम ने वाली के प्रक्ती का निम्न उत्तर दिया ---

> तः तत्कारसा पद्य बन्ध स्व नया हत । भ्रातुवर्तसि मार्याया त्यक्त्वा घर्षं समाननम् ॥

— देखामैंने तुम्हेजिस कारण से माराहै वह यह है कि तुमने मर्यादा का उल्लंधन करके भ्रापने छोटे भाई की पन्नी को ग्रपन ग्रविकार में किया हुवा है।

> शस्य स्व धरमासम्ब सुप्रीवस्य महात्मन । रमाया वर्तसे कामात्-स्नुवायां पापकर्वकृत् ॥ ४।१८।१९ इस महात्मा सुग्रीव की पत्नी को बन

होकर नूदस प्रकार पापकर्म कर रहा है जो प्रपनी पुत्रवधू के साथ दूराबारण के समाम है। इस उद्धरण से स्पष्ट है कि वाली के पथभ्रष्ट होने के कारण राम उसके बानुबने। सुदीय के ऊपर राम के चतिशय प्रेम का कारल सुन्नीय के लोचित पीडित होने के साथ-साथ उसकी सदा-शयता भी है। राम का सूबीब पर कितना धनरागया सके लिए लड्डा के युद्ध के समय का एक उदाहरण देखिये-

सेत् से वानर सेना के समुद्र पार उतरने पर सुद्रोव लहा को देखने की इच्छासे सुबेन पर्वत पर वड यदा। बहा सुदेण के एक शिकार से अपका में चूनते हुए रावल को देखा। रावण को देखते हुए सुप्रीय प्रानवबूता हो गया धीर वयने भापको सभाव न सका। वह ख्वाव नवा कर रावण के पास पहुच बबा धीर उसके साथ कुछ देर तक युद्ध करके धीर धपनी वीरता की वक्त जमाकर वापस भा

. राम विन्तित होकर इस सारे कस्य को देखते रहे और सुपीय के वापख धाने पर शादावेश ने कहने लगे-प्रसम्मन्त्र्य मवा सार्थ

तक्व साहर्य कृतम्। एव साहसकर्मीख न कुर्वेन्ति अनेत्वरा ॥ ६।४१।२ मेरे साथ विना परानमं किए ही यह जो तुनने साहसिक कार्य किया, इस प्रकार का साहस राजा जोवों को नही करना चाहिए।

इवानीं मा कृषा बीर एव विवमिविन्तिम् । त्ववि किञ्चित् समापने कि कार्य सीतया पन ॥४॥

हे बीर इस प्रकार विना विचार किए मागे से बुसाइस मत करना। यदि तुम्हें कुछ हो जाता तो फिर बीता से मुक्ते क्या मतसब वा ।

वन्तेन महावाही लक्ष्मलेन ववीवसा । शत्र प्रतेत च शत्र प्रत स्वसरीरेख वा पुनः ॥५॥

हे महाबाहु सुरीव ! फिर भरत से, फिर सहवता है और होटे वाई बनुष्य है

त्वयि चानागते पूर्वमिति मे निश्चिता मति-। जानतस्थापि ते बीवं महेनाबरुणोपमम् ॥६॥

मैंने यह निश्चय कर लिया वा कि तुम सकुषन वापस न या सके तो--यद्यपि महेन्द्र और वरुश के समान में तुम्हारे पराक्रम से परिचित हैं, फिर भी -

ROTE रावस बुद्धे सपुत्रबलवाहनम्। प्रतिविच्य च सञ्जामां विमीवसमापि च।। सरते राज्यसावेदस

त्यक्षे देह महाबल ॥ ७, ८ ॥ मैंने निस्चय कियावाकि मेना भीर पुत्रो सहित रावण को युद्ध में मारकर भौरलकामे विभीषण का राजतिसक करके तथा स्रयोध्या का राज्य सरत की देकर में भाने शरीर का परिस्थात कर

वेराम के चवगार कितने स्नेत्र से सराबोर हैं। जिस व्यक्ति के बावरण से प्रमावित होकर जसे ऐसे सहबोगी मिक जावें वह दूसरों से मार कैते का सकता

राम विभीषण के शक्षकर भी उसके सारियक युच्ची के कार**स ही बने। रायम** ने बयमानित होकर जब विश्वीवता राव के दल में राम से मिनने घाया हो राम को छोडकर शेष सब की सम्मति वह बी कि यह राजुका जाई है, अधिक सम्बा-वना वह है-कि वह हमारे खिद्र जानने बाया होता। फिल्ट् राम इन विवारों हे सहबत नहीं हैं। वह कहते हैं कि बिना मिले वह कैसे जाना का सकता है कि उसके मन में क्या बात है ? वब सावियों ने इस पर भी प्रश्न किया कि मिलकर भी जन के सन्दर की बात कैने जानी जा सकती है उपर-अपर में विकरी क्यडी बातें करता रहेगा, और मन मे बाबू बनाये रसेगा, बन राम ने जो उत्तर वि वह उन महापुरुष की वीखता को बताता है कि वे मनुष्य के कितने पारबी वे। राम

> बाकाररक्षाद्यवामोऽपि न शको विनिगृहितम् । बलाढि विवृशोत्येव माबग्तर्गत नृत्वाम् ॥

\$1801£8 मन्त्य प्राने बाकार को खिपाने की कोशिश करने पर भी नहीं छिपा सकता क्योंकि अन्दर के विचार बलपूर्वक शाकर भाकृति पर प्रकट होते रहते हैं। यह मनोवैशानिक बात उर्दू के शायर विवर ने भी कही है ---

जिवर मैंने श्रियाका मास व्यवना दवीं वन सेकिन । वयां करवी मेरी सूत ने सब कैफियतें दिस की ।। (बेब पुष्ठ (१ पर)

### 🛨 वचन-सन्देश 🛨

#### सफलता का चमत्कार

गाजी मुस्तफा कमालपाशा जिस समय तुर्की से भागे थे उस समय केवल इक्कीस युवक उनके साथ थे। कोई माजो-सामान न था मौत का वारण्ट पीछे-पीछे, घूम रहा था। पर समय ने ऐमा पलटा खाया कि उसी कमाल ने प्रयो कमाल से ससार को माश्चर्यान्तित कर दिया। वही कातिल कमालपाशा टकों का भाग्य निर्माता बन गया। महामना लेनिन को एक दिन शराब के पीपो मे छिपकर भागना पढा था, नहीं तो मृत्यु मे कुछ देर न थी। वही महास्मा लेनिन रूके समय जियाता वने। श्री शिवाजो डाकू भौर लुटेर समसे जाते थे, पर समय माया जब हिन्दू जाति ने उन्हें प्रयाना सिरमौर बनाया, गौ ब्राह्मस्त स्वचरित चेवाजी बना दिया। भारत सरकार को भी प्रयोन स्वार्ष के लिए छन्नपति के स्मारक निर्माण कराने स्वार्ष के लिए छन्नपति के स्मारक निर्माण कराने

पड । क्लाइन एक उहण्ड निद्यार्थी था, जो अपने जीवन से निराश हो चुक्त था । समय के फेर ने उसी उहण्ड विद्यार्थी को अग्रज जाति का राज्य स्थापन कर्त्ता लाई क्लाण्ड बना दिया । श्रा मुनयान सेन चीन के अराजकवादी प्लायक (भागे हुए) थे । समय ने ही उसी प्लायक को चीनी प्रजातन्त्र का सभापति बना दिया । सफलता ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण करती है। असफल होने पर उसी को बबर, डाकू, अराजक राजद्रोही तथा हत्यारे के नामो से विश्वपित किया जाता है। मफलता उन्ही सब नामो को बदलकर दयालु प्रजापालक, न्यायकारी, प्रजानतन्त्रवादी तथा महात्मा बना देती है।

─मनर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

#### सम्पादकीय

# अकाल के पंजे में तड़फता इथोयोपिया

धाजका मानव विज्ञान भीर तकनीकि से चाद सितारो की क नाई तक पहुच चुका है। बरती का भार सागर की गहराई कची से कवो पवत की बोटा तक, हवा के वेग से लेकर सूरज के २ करोड गुने ताप तक को मनुष्य ने जान लिया है। समस्त विश्व को कुछ पलो मे समान्त्र कर सकन की सामग्री मनुष्य ने ईजाद कर ली है। लेकिन इसके साथ मनुष्य स लेकर खुद्रप्रााण्या तक के भयावह रोगो तक की विकित्साका भो प्रविष्कार निरन्तर चल रहा है। फसल वनफल की उपज का ब्राह्वयजनक वृद्धि कर सक्ते का विद्या मनुष्य जान चुका है। किन्तु झान विज्ञान के चरम को छने क बाद भी मनुष्य मे मानवता का हु। सहाता जा रहा है। मनुष्य में विज्ञान के साथ राक्षस प्रवृत्ति भी बढतो जा रहा हु। शांतभाज तथा उत्सव भाज मे लाखो मन भनाज तो अंच्यव्ट के रूप में कुछ में फकादया जाता है। दूसरी भीर इस समय मनुष्यता क नाम कलक बनकर मकाल करोडो मनुष्यो का ानगल रहा है। इवियापिया तथा २५ अफोका देश इस समय शकाल ग्रस्त हु। इाथवाविया का आबादा ४ करोड २० लाख के लगमग है। तान साल स यह दश मकाल के जबह में फसा है। मनुमान है तीस लास लाग भूख बोर बामा। यो सं मर चुके हैं। पूरे मफाका में सिफ १६ =४ म १ कराड ५० लाख लाग मरे है। साथ ही १५ करोड लोग प्रभावित हुए है। इस तरह के आकड़ों का कोई अन्त नहीं है।

वज्ञानक कहते हैं इसका कारण अधाषुण जानों का काटा जाना, कई जाही पर १० व से वर्षों का न होना पानी का दुल्योंग नगरों का ावकास करत जाना, जैसी क्रिंग का उपेक्षा प्राप्ति कारणों से सहारा क्रे रिगस्तान का फलान तंत्र हो गया है। इसो कारण १० लाल वन क्लिमोटर खता लायक जान सहारा से समा गयी और जगर तुरन्त करन नहीं उठाये गये तो सगसे ५० वर्षों में बफाका का ४५ % हस्ता रिगस्तान में समा जाने का ज्ञता है। पिछले २० वर्षों में पलुसा का चरागाह का तान जीवाई सहारा का हिस्सा वन गया।

स्रफोका मे जनसंख्या बृद्ध वर दुनिया में सबसे ज्यादा है। २० वर्ष पहले स्रफोका स्थाना में स्नारभ तिमर बा और स्थाना उत्पादन की दर जनसंख्या बृद्धि की दर के बराबर वो। और अब वह २३ संबंधित १२ प्रतिसत रह गई है। विशेष मंत्री के सन्त न भीर स्नामकी स्थ्यपिकों में तो जगन काटने की होड सुरू कर की है। जिससे जलवायु में बहत परिवनन हो गया है सहारा का फलाव तेज हो गया है। लेकिन सब से बडा कारण सामाजिक आर्थिक राजनिक है। कई देवों में विवेशी गुलामी से विगसन में मिला भौगनिवेशिक डावा भव भी बरकरार है। वह साज भी एक वस्तु के उत्पादन पर आधारित है। वे कोको नाफी केले आदि वेचक प्रांज खरीदते हैं। मल्टानेशनल सस्बाओं ने बब पैमाने पर पूची लगा रखी है। १५० मन्व जालर का कर्ज अब तक उन पर लद बुका है।

क्स दुमिस का सबसे बड़ा शिकार इधियोपिया है। इस देश की लगमग ७० नाल जनता इनसे प्रभाविन है। पिछड़ागल भी यहा इतलाय है कि गांवो से बगलो से मक्स तक पहुचने में दो या तोन दिन तक लग जाते हैं। सरे देश में लगमग ६ हजार दुक हैं जो राहुन कार्यों में जुटे हैं। इस समय पिछची देशों को जनना ने बार्षिक मदद देनी गुरू की है इसका अय बींध्बी०भी० को जाना है। क्योंकि इस प्रकाल पर उसते पपनी १० मिनट की एक फिल्म प्रसारित को धौर फाल के छावा जिब्र से जब लोगों का घामना सामना कराया तो सबयुव लोगों की जांक लुल गयी। देखते ही देशने लालो पीण्ड जमा हो गए। फिल्म में दिलाया गया था। मृत बचों के दर मिक्यों मोर कोडों से भरे शब इन स्वयों ने लोगों के दिलों को दहना दिया।

मार्च में म्रफोका से वर्षा हुई थी जो बहुत थोडी था। लेकिन वह मो म्रपिकाश मध्य दक्षिएरी प्रकोका से। जुलाई म्रगस्त वर्षा को कोई माशा नहीं। म्रकाल क्षत्रों के लोगों को नये क्षत्रों से बसाय जा रहा है। र लाल लोग बसाये जा चुके हैं ५ लाल लोग धौर बसाये जायये। अभी यो इवियोपिया में लालों रन मनाज भीर भोजन की मावस्य कता है। ममेरिका के एक नेना रोनीहाल ने म्रकाल ग्रस्त क्षत्र से लौट कर कहा था कि बढ सन को बात है कि एक नरफ म्रकाल और भूख से से मार्ग पर रहे हैं जबकि हमारे भड़ारगृहों में अनाज के पहाड जमा है।

धन अनुष्यता के नाते प्रत्येक मनुष्य का क्तव्य है प्रत्येक देश भूकच्ड वासी का फज है बकालपीडितो की सहायना के लिए तन मन धन, वस्त्र, धन्न, दवाई भ्रादि से महयोग कर।

—यशपाल सुर्वाञ्

सामित्रक प्रश्न

# आरक्षण नीति पर पुनविचार जरूरी है

#### -प्रो० बलराज मध

गुजरत ग्रीर मध्यश्रदेश मे विधान सम चून वो के समय ग्राप्काण की परिवम ग्रनुप्चित जानियो ग्रीर जन जानियो क सनिरिक्त दि हु समाज की धाय बहुत सी उरजातियों का लान का नीति कविरोप में तु हुबा च नोजन गुजरान मे विकरान रूप चारण कर चुका है वहाइसे दिशक और साम्प्रदायिक रूप भी दे दिया गया है और उसके कारण सैकडो लोग हताहुत हुए है सबा कराडो का सम्पन्ति नार हो चुकी है पर इसक कारणास नेदेग का ध्यान इस समस्या का जोर विच गया है और बारलशा नीति पर स वजनिक विश्वाद शुरू हा गया है भागानाति परयत ५ वर्षी कै धनुभव के भाष र पर पुनर्विकार की बावश्यक्तासब भीर महसूख का जाने

भारत के सविधान में हिंदू समाज के कुछ प्रति रिख" वग के लोगो के लिए जिहे गांधी जी ने हरिजन नाम दिया बा दस वय के लिए विधान सभाक्षी समद भीर नौकरी इत्यादि में भारक्षण की व्यवस्था की गई थी। इसका उद्देव इन वमों को बाबिक और सामाबिक १६ट से क्रपर उठाने के लिए विशेष सुविधाए देना था। स्वतन्त्र मारत के पहले विश्वि मत्री भीर सविधान सनाकी प्रका(डापिन्ग) कमेटी के ब्रष्टपम के नाते डा० भीमराव भम्बेडकर का भी इस नीति के बनाने मे हाप था। डा० ग्रम्बेडकर स्वयः हरिजन भीर भूक्त भोगी वे। उनके हृदय में हृरि जनो के लिए विशेष तहप भीर स्वेदना थी। वे प्राजीवन हरिजन बाबुधो के सामाजिक प्राधित बीर शैन जिक उत्वान मै बार्यर रहे। "सलिए इस सम्बाध मे चनका विन्तन विशेष महत्त्व रखता है।

मुने डा॰ सम्बेडकर को बहुन निकट से बान ने का नीमान्य मिला था। हमारी सापक में पनिष्ठ बीडिक नियता थी। जहारी मुने स्टब्स् बार कि उनके मत के हिरसन कम्यु बन तक प्रारक्षण की बैगाली पर निमर रहेंगे तन नक वे सपने पात पर नह नहीं हो समय इस सिंह में बार में पात नहीं हो समय इस सिंह में सापक को हरियन स्थापन का कारसर उगाव नहीं मानत थे। इसीनिए नहीं ने सपने दारा स्वापित रियन्तिकन पर्यामां इतिकास की मोचणा पन मं सारकण ने सार स्वापित रियन्तिकन पर्यामां इतिकास की बात स्टब्स स्वाप्त स्वा

गत वर्षों क अनुभव ने डा॰ अम्बेड कर के मत को सत्य सिख किया है। आर कस्य के दारसा हरिजन वंग के बुख परि सारों को धनवय नाम हुआ है। वे आर्थिक धीर सामाजिक बिट्ट से ऊन उठ गए हैं पन शारुगण का नाम मुक्सत उन्हों की बनानों को मिल रहा है क्योंकि शिक्षा दीना के मामन में बाब हरिजनों के वे सामें निकल चुने हैं। स्वामाजिक रूप मंडनका धारवाण नी त के बने रहने में निर्देशन उत्तम हो गया है।

कुछ राजनैतिक दलो विशेष रूप मे

सनार- कारेस न्य का भी भारतमा नीति में निहिन स्वाध पैदा हो चुका है। ध्वकं नता भाग गए हैं कि धारनण के बल पर वे हरिजन नता नाग गए है धीर रलना उनके सना में बने रहने के लिए धावरणक है। इस प्रकार हरिजनों के लिए आदरण है। इस प्रकार हरिजनों का स्थारनण निव न नाभानित हुए मुखर नोगों भेर सन हर का खित दक के निहित हवार्यों का मेल हो गया है। इक्के कारण धारनण की धवकि १६६१ १८७१ धीर १८९१ वे दस दस वन के लिए वडाई वारा गृही |

मारक्षण नेति द्वास वोट बैक बनते के सनुभव से कुछ राजनीतिक नेताओं के मन में इस प्रकार के बोट बैंकों के बढ़ाने का विचार पैदा हुया। उन्होने हिन्दूसमाज की कुल भाग उपजातियों को भी पिछाड़े पन के नाम पर झारक्षण की परिवि मे काने की माग उठावी शुक्त की। ऐसी मागो को राजनीतिक समर्थन मिसने के कारए विभिन्न प्रदेशों से सनेक उपवा वियो को खिडी जातियाँ जोजित करके उनसे लिए घारतमा की व्यवस्था नी बाने लगी। कई प्रदेशों में तो उनकी जनसच्या का श्रीब हाश भाग गिल्लडेयन के नाम "र भारक्षण की परिधि में सा गया है। फ्लस्क्स्प योग्यता के मात्रार पर नौकरी और शिल्म सस्यामों में प्रवेश के श्रवसर सगातार सीमित हो रहे हैं। इसके कारण तथा कथित उच्चवनों के लोग श्रपने श्रा को बिंबत भीर उपेलित महसूस करने लगे हैं।

धार । ज की परिचि के लगातार जिल्लार का सब के प्रविक प्रवाद तथा करित करी जातियों के युवको पर पक रहा है। वे के से पान यो प्रेमल धारे प्रमुग योग्याता पर साम्बल मानवे को हैं। सम्मन्त क्सीलिए गुजरात का वर्त मान धारतक विरोधी धाक्योजन विद्या पियो धीर उनके सजिशावकों ने युक्त

गुजरात के बाहुए भी इस धान्योजन

कीप्रनि नगी है। एक भारताव गेथी मोव हो चुका गठन इस विचार ॰ ण्क राष्ट्री सन का ग्रायाजन कर रहा है उच यामान सम्ब ध याचिक की है धार कोट क ठइस वि **ब** उने वि कर चुका

भारक्षण के दो मुख्य पहलू हैं। जहा तकहरिजनो सथवा प्रनृत्वित जातियो के लिए ग्रारक्षण का प्रश्न है उसके तुरस्त यमाप्त करने कं प्रत नहीं उठता। उस ıt 5 ८१ में उब धारक्षण की बतमान १० वर्**ों की धवधि** सम्बद्ध डोसी बाग्रेसा परन्य ग्रम साथ कि ⊧ बनोकेलिंगधारकाण केवल नीक रियों के प्रवेश में हो और पदो नित के मामने ने केवल वरायका और योग्यता का ही व्यान रखा जाना वाहिए और 'रोस्टर प्रणाली खत्म होनी चाहिए दवायी नहीं जासकती। इसका विरोध करना भी कठिन है इस मान पर तुरन्त विवार होना चाहिए।

धनुमय से यह जी त्यच्ट हो चुका है कि हरिजनो में भी भारतम का लॉम केवल कुछ उपजातियों भीर उनमे श्री बुद्ध परिवारी को शिला है। अधिकाश नियंत भीर पिछ हिरियत बन्यु भी इसके लाम स विवत रहे हैं स्योकि इनका लाभ मुख्यत उन चुने हुए परिवारी की सतानों को ही मिल रहा है। इनलिए हरिजनों में भी बहुबन के हिन मे हरियमों सबबी बारमण नीनियर पुरविवार करने की याबस्यकता महसूस हा ग्हा है। पिन्डे हरिजनो के हित में बारण्या क बस पर बागे बढ बुक परिवारों को इनकी परिचि से निकालने की कुछ यवस्था करनी होगी। जन्म के साथ बारससा के लिए द्याचिक प्राचार भी जोडना इसका एक उपाय है।

जहा तक हरियनों के प्रतिस्थित त्याकियित प्रत्य पिस्त्री वाधियों को प्रारक्षण की परिषि में साने का प्रत्न है उन्नके जियम में घर्मी तक कोई साम सह सति नहीं है। जन्म के प्राचार पर किसी पूरी जाति या उपजाति को पिस्त्रा प्रीप्तित करना न तर्थ सबत है धौर न स्वैणानिक। इस मौन का साचार केवस बोट की राजनीति है। इसने समाब विय-दित क्षेत्रा और पिस्त्रोक्षण की कावस रखने में जिल्लि स्वार्ण की हमन किए इस बाबने में तुरुकु पुनर्विकार होना चाहिए। भारत सरकार ने भी यह स्वीकार किया है कि इस विषय पर सभी तक कोई धाम सहमति नहा है भीर उसने प्रदेश सरकारों को सनाह भादी है कि वे मनमाने उस से रिकड़ी जानियों की परिधि

भ्रारक्ष्मण न ति एक भ्रामाण नीति है। सविभान ने इसे केवन दस वक क लिन स्वीकार किया था ध्येलमातार भ्रामे बढाते जाने का को भ्रीचित्र नहीं है।

समय द्या नया है कि द्यारण सीति के सभा यहलुको की व नुपरक समीन्या की जाय। समाज क पित्रड लोगों को उठने कादाबित्व समान का भी है भीर सरकार का भी। इस निशा में सोच समऋ कर यग उठावे जाने चाहिए। पर त कोई पूरी जाति सारी की सारी विश्वबी नहीं मानी सकती। वास्तविकता तो यह है कि हर परिवार में भी कुछ बाई धाने वड जाते हैं धौर कुछ पिछड़ वाते हैं। बो किसी भी कारण से पिछड़ नए हो उन्हें उठाना क्षेत्र परिवार का नैतिक कर्तक माना नाता है। यही नात बाति वा उपवाति रूपी वहे परिवारी पर भी लागू होती है। उनमें को समृद्ध भीर बढें हुए हैं उन्हें किसी प्रकार के बारक्षण की वैद्याली का भावत्यकता नहीं। जो पिछाडे हुए हैं वे सवा के लिए पिछाडे न रहे इसका उराव करने की मावस्यकता है। यही कारण है कि वह विचार जोर पक्क रहा है कि यदि भाग्याण नीति कारी रवनी है तो उसका भाषार गरीबी भीर भाविक पिछड पन होना वाहिए केवन जन्म धीर बाति नही।

धार इस पान को टाना नहीं का सकता। बेहुतर तो यह होगा कि धरकार स्वय पहुल गर के तरह होगा कि धरकार तरह का एक उन्न गरी य धारोम मत रहीता का को सम्प्रक क धाकार पर धारताला नीति के सभी पहलुगो पर किनार करने के लिए गठित कर प्रीर कमी गजी से धरील करें कि के धरना— धरना पन न्स धारोन के सामने रखें और उसकी रण्ट धाने तक धरने धान्योलन बन्द कर दें। यह एक धानहारिक सुम्माव है। जिस पर उद्दे दिल से विचार होना चाहिए।

(लव सेवा)



# अपनी स्वर्ग सदृश मातृभूमि के प्रति हमारा कर्त्तव्य

लेखक समन्त विद्यालकार

क्ष्मवेत १ १०११ तका १० १०१२ मे प्रापे दो मत्रो द्वारा हमें अपनी मात्रुमूमि केप्रतिकतस्य कावोस करायास्याहै। सत्र इस प्रकार हैं—

१ उदबुष्यस्य समनस समायः सम निर्माम स्व वहाय समीळा विकासिन मुप्रम च नेवीमि गवतोऽवसे निक्कृये व ॥ १ -१०१

२ मन्त्रा इत्ताब्द विवासा ततुष्य नावमरित्रपरणी इत्युष्यम्। स्व्युष्य सामुषार इत्युष्य प्राप्त्य यज्ञ स्र स्वयास्य सक्ताय ॥१०१०१२

१ प्रतवात् हवे कहते हैं कि —
(१न्द्रावत) एवंबय की कानमा करने
नाने बाप नोगों को (प्रववं) रक्ता के
जिए मैं (निह्नुवे) उपवेच करता हूँ कि है
(स्त्रीवा) पुरू ही देव के निवासियों
(बहुव स्त्राय समनत) नहुत सावादि वाहे स्त्राय समनत) नहुत सावादि वाहे स्त्राय होकर रस्टर्सर सहयोग स्त्र (उद , अपने) होक में बाबों — जायों।
(श्रांत स्त्रित-जा) सपने समनी नता को
प्रयोग्त करो। (व्यक्तम् स्त्रित) सारक स्त्राय करो। (व्यक्तम् स्त्रित) सारक स्त्राय करो। (व्यक्तम् स्त्रीत) सारक स्त्रित करो। व्यक्ति के करने वाले (उच्छ येथी प) सीर पोक्डी की सुषक दिन्य स्त्रित को प्रयोग्त करो।

राठोर बार धमर्रावह प्रपत्नी तेव दिलवा के लिए प्रविद्ध हैं। वे बाहुबहा वादचाहु के दरवार में एक उन्ने पन पर में। एक दिन वादचाहु के वाले चलावत बाने उनका धपमान कर दिया। मरे दरवार के धमर्रावह ने धमावत का हिए कह कहा। दिखी की हिम्मक नहीं हुई कि धमर्रावह को रोके या उनके कुछ कह बके। मुख्यमान दरवारी बान केकर इयर उपर सामन लगे। धमर्रावह धमने वर लीट धाया।

गरे बरबार मे इस तरह वाबचाह के साले का सिर काट देना मुगक दरबाए की जारी तोहीन की। कुछ होकर बदबार की में के लिए धमरिशिंद के लोजा और नीक हम ताब के साले धनुत गोव को बाद वाह ने सोण दिया धमरिशह का सिर काटने ने लिए। उतने धमरिशह की समझ नुस्तकर पुत्रक पतार से धाने की राजी कर निया। घोषा बेकर बाद साह के महल में स नगा। वहाँ बब समरिशह हो दिया हो से पहल में स नगा। वहाँ बब समरिशह हुइक्क होटे दरक के में होकर सात करा विदा परिष्य प्रमुज गोव ने ती की सार किया वारिष्य प्रमुज गोव ने ती की सार किया वारी समरिश्व हुइक्क होटे पर के स्व

२ (मन्द्रा क्रसुष्क) हुए धीर म ह प्रविद्यात करने वाले बचण व वे मातरस् बर्बाहु मादि ना दानायी (चिव सातनुष्क होश झान पुरुवाय सालरसा प्रवार सादि का विस्तार करो। (मावम् सार्च रही क्रसुष्क) न रक्षा करने माना मौका सौ क म करो। (दवह मुख्य) सिवन म म साद्रो (Grow more fcco) (स सु बार कुलुष्क) सान्य और सस्यो का प्रवृद्ध मात्रा स निर्माण करो (सवाय) पर स्वर्राव बात को सारण करते हुए (प्राप्त्र अप प्रवृद्ध की प्रविद कर सक्ष सा स्वर्णादन करो ।

इस प्रकार वेद ने इन दो मत्री द्वारा सातु पूनि के निर्वाखियों सनुवायियों तथा नेतामों के क्या कलब्य हैं इन्हें वडी सुन्दरता से प्रतिपादित किया है।

देश की जनता का कर्तव्य

१ परस्पर नेद मान भुसाकर एक साब मिसकर कमें से कमा मिसाकर देश की दक्षरक में फली हुई गाढी को निका सने का बला करों। धीर दक्षके सिवे सपने देश के नेदाओं को आजा का पासन कर उनकी सस्ति को बढ़ाओं उन्हें वह मोग प्रदान करों। देश को सरकार का क्त०ः १ जनता में उसाह भीर जोश की

विद्विकरे। २ जनतामे विद्यावृद्धिका प्रसार

२ जनतामे विद्या बुद्धिका प्रसार एव जोक के साथ नोश भी कायम रहे ऐसा प्रयस्त करे

३ जनतामे ज्ञानका विस्तार एव विज्ञानकी उप्तित करे।

४ देश की रमात्र जनसान नायु यान सादि का निर्माख करे।

५ प्रचुरमात्रा मं भन्न का उत्या इन करे।

६ शस्त्रास्त्र का प्रभूत मात्रा से निर्माण करे। इस प्रकार जनता को साथ नेकर देश राप्रगति रूप यज्ञ का सम्या दन करे

ज्यबुष्यष्यसम्बन्धसमायः। इसवेदमत्रका निताः । अनुवाद

अनुवाय उठो बधुवर निद्रं त्यागो मातभूमिका व्यान करो ।

इसको उन्नतः करने के हिंद तुन सन घन बलिदान करो ॥ तुन सब जिनकर प्रवास से

एक साथ उद्योग करी। नीका के जो कस्तुवार हैं जनसे तुम सहयोग करो ॥ मानुभूमि पर सकट शार्ये

उन्हें जीझ तुगदूर करो। पुन इमे जनवाय युक्त कर वैश्वव से अरपूर करो।।

नव जीतन सचार करो तम फिर जनता में जोश भरो। ऋति समरहो जय भारत की

जम बरमे ज्ययोव करो ॥ पाकर तुम से दिश्य प्रयणा

जनता में उत्पाह बढ़ें। ज्ञान बढ विज्ञान बढ अनमाय बढ सम्मान बढ़।।

विष्त भी बाजाभी के श्रव हम समुद्र को पार करें।

हम जल यल प्रकास में चलने वाल गानो कानिर्माण करें॥ रिष्कादप दलन करने को

भस्त्र शस्त्र तस्थार करें। सित्रो उन्नति पथ मे

धागे बढने का समार करें।।

निश्वयमन में घरो सफलता चरण हमारे चूमेनी।

फिर भारत की सकिल विश्व में विजय दुंदुनी मूचेबी श

एव० ३११ यू राजेन्ट नवर

किशोरमञ्च-

# वीर बालक रामींसह

से बहुत प्रसन्त हुया। उसने ग्रमरसिंह की सास को किले की कुज पर इसका दिया। एक विस्थात बीर की साम इस प्रकार भील कौवे को स्ताने के लिए डाल दिया नया। समरसिंह की रानी ने समावार सूना तो उसने धपने पति की लाख बगा उसका धन्तिम सस्कार कराने की बात ठानी पर लाश नाय कैसे ? महल मे जो बोड बहुत राजपूत सैनिक वे उनको उसने स्रपने पति की लास सने भेजा किन्तु बाद **शाहकी सेना के बागे वे वोड से बी**र क्याकर सकते थे। रानीने बहुत से सर दारों ने प्राचना की परन्तु कोई भी बाद बाह से शत्रुता सेने का साइस नही कर सकताया। भात में रानी ने तनवार मनाई और स्वय अपने पति का शव साने को सैवार हो नयी।

इसी समय प्रमरसिङ्का मतीना

रामसिंह नगी तलवार लिये वर्णे प्राया। उसने कहा वाची तुम धनी रको। मैं जाता हूया तो वाचा की साध लंधाऊवा या मेरी साध भी वही गिरेगी

रामसिंह प्रमुप्ति है के प्रारं कर रामसिंह प्रमुप्ति है के प्रारं कर कर्त सिंह का पुत्र था। वह मनी नवपुष्क ही या। सती रानी ने उसे धाशीक्ष को थो॰ पर स्वतर हुमा भीर थोड़ा दौदाता सीचे बादशाह के महल मे प च ग्या। महल का फान्क मुना था। डारपाल रामसिंह को पहचान भी नहीं पाने कि सीचे पहची सुवृत्त से सिंह में पूर्व ने नीचे पहची सुवृत्त से सिंह में पुत्र ने नीचे पहची सुवृत्त से सिंह में प्राप्ति उसे वर सिंबा। रामसिंह नो प्रयोग प्राप्त कीने की फिल्मा नहीं की। उसन पूज में बोट की सामस्य स्व रहन सा सी बीची हानी है तसकार क्या रहाथ।

उसका पूरा शरीर रक्ता ने लक्ष्यण हो रहावा। सैकड़ो नहीं हुआरो मुम्लमान सैनिक थे। उनकी लाखें गिरती थी और और उन लको पा से रामसिंक्ड माणे बढता जा रहा वा वह मुदों को खाती पर होता। उन पर वढ गया। प्रमर्राख्य की लाख उठाकर उक्के को पर रक्ता और एक हाम स उत्तकर उक्के को पर रक्ता और स्वाधा। घोट पर लाख का रचकर बैठ गया। उन के नीचे मुल्लो की नेना माले त पहुने रामिंक्ड का पोड़ा किने के फाटक से बाहर पहुन मुका था।

रानी प्रपने अलीजे का रास्ता देख रही थी। पति की लाझ पानर उसमा अतिम सम्कार कराया और स्वय भी पति की साथ ने साथ बिता पर बैठ गई। रार्मीतह को प्राथीशींद दिया—बेगा गी काल्राम सम स्रोर स्त्री की रेका कराये तेगा नाम स्वार है समर रहेगा। ऐसे नर एव नारी अच्छे से हमे अरणा मिनती है। देख जाति सम के स्वाधिमान की रका का तो हम भी गेने ही समये समीक रका सी आवस्वस्ता है बीर बटे और वेटियो की जिसे हम पूरी करने का सकस्य जने।

प्रस्तोना--प० बलबीत शास्त्री

व्यामपीठ --

### उपनिषत् कथा माला-६

# गायत्री मन्त्र की महिमा

#### प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एक बार में नागपुर गया, उस समय सहसार तेर क का प्राप्तन वा। गवन मेट प्राविमया को पकट -पकटकर लाना थी। बच्च के प्रेमी रोक्त वे प्रोप्त कहते थे कि उच्च र न बाधों। मेरे माय नव्यामिड सब-नीक नोया। हमे उच्चर कहा गये थे स्मावे काड पन्ति हुए इस मासुयों ही ने ती ह्यारी जानिक कर रखा है।" धोर भी बहुत नुख कहते रहे। नव्यामिड ने बहुतेरा कहा कि "इस जी प्राप्त - अभण करके था रहे है।" परन्तु के कब मानते के। कुछ समक्रिते ही न थे।

मैं जड़ाभो जाता हु बार्यसमाज ही मे ठहरता है। परदेश में मेरा घर आयें-समात्र ही है। श्रद्ठाईस वर्ष पहले का वणन है, में एक नगर से यया। समाज में दो भ्रादमी बैठे हुदन कर रहे थे। मैं बाहर तल्य पर बैठ यया, कमण्डल और सोटी मेरे हाथ मे थी। मैंने पूछा, यह क्या हो रहा है ? एक यूवक ने कहा, "तू कुछ पढा हुवा मी है ? 'दूसरे ने कहा, "पढा हुआ होतातो पूत्रताही क्यों ? ऐसे ही साधुर्यों ने तो जाति का नाग कर दिया है। जा ! यहारोडी बोटी कुद्रनदी निनेगी।" कुछ देरपी छेए समापुरव झा नया। उसने कहा, 'महात्मा जी ! रोटी साम्रोमे ?" मैंने कहा, ''हां साऊना।'' वह रोटी ले भाया, दाल भी नाथ भी । मैं बढ़ी बैठकर क्याने लगा। फिर वे युवक बोने, "बस? द्मब तो प्रसन्त हो <sup>?</sup> तुम तो इसीलिए द्माये वे । पेट् हो । पेट् ।" इसने ही में स्वामी दशनानन्द जी धा पट्टेंच । बरी प्रसन्नता से मिले। तब तो उनकी प्रांखे खुनी। कहने लगे "स्वामी जी ! हम से बड़ी भूल हुई। कथा सुनाबी।" मैंने कहा, भाई दुम मे भीर कुछ नहीं होतातो भाने-जाने वान का बचन से धादर सत्कार कर लिया

आरमो <sup>|</sup> बैठो <sup>|</sup> पीयो पानी <sup>|</sup> तीनों बातें मोल न लानी ॥

वचन में सराबी सड़ी कर लेती यह बहुत बुरी बात है। यही दोष है जो हमारे तन्तुकों को दोसा कर रहा है, इसलिए मेरे भाई। जो बातें सराबी की हैं उन्हें स्रोड दो।

मनुष्य का धर्म है कि परमातमा के नाम का सिमरण करना रहे। यदि नहीं करता तो उस दिन का धपराभ उसके सिर बढ जाता है। यदि एक दिन रोटी न सामो तो दुवंसता भा जाती है। ऐसे ही अनु का नाम न सेने से सनुष्य का भारित्स स्ता शीए। पड बाता है। मारित्स विस्त दुवंत हो बाती है। स्तर्यक मनुष्य मान का सन है कि उरासना करे। यदि उपा-सना कर जी तो एक परम कत्तव्य कर सिया, नहीं की तो धपने सिर पाप चड़ा सिया।

बटाने में एक मुसलमान लडका था। वहुएफ० ए० का विद्यार्थी था। एक हीज मे नहारहा था। मैं भी वहापहुँच गबा। नहाकर उसने कपडे पहन सिये भीर फिर बैठकर पांव कोने लगा। मैं जान तो गया कियह पांव भी रहा है, नमात्र पढेगा। परन्त् मैंने पृष्ठा, "मित्र। तुम नहा तो चुके हो, फिर झाम पांव क्यों बोते हो ?" उसने कहा, ''स्वामी साहव! यह तो बज् है। नहानातो शरोर की सफाई के लिए है, भीर यह नमाज के लिए।" मैंने कहा, "जब तुम नमाज पढते हो, तो तुम्हारा मन तो इवर-उधर नहीं बाता?" उसने कहा "यह दिल जाने, मैं क्या करूं ? यदि हम नमात्र न पढ़ेती झाज के भूनहवार हो जायेंगे। सिर्फ इस गुनाह से नचने के लिए नमाज पढने हैं।" इसी प्रकार मेरे भाइयो <sup>।</sup> तुन्हः राजीफर्ज है कि ईश्वर का ब्यान करो । परन्तु तुम हो कि किसी प्रकार पानने में नहीं बाते।

शुध्दिक स्वादि से लेकर साम तक सामों ने, दर्शनों के जानने वाले शोगों ने वेदों के जानने वाले लोगों ने, ईश्वर की उपानना किस्त कप में की ने मनियों में नहीं वहिक इसी प्रकार गामत्री मन्त्र के नक्कारण से —

घोशम् भू, घोशम् भूव, घोशम् स्व । धं तत् सिवतुर्वेण्यम् भर्गो देवस्य धं महि । वियो यो न प्रवोदयात् ।। धोशम् । गायती मन्य का धर्म ते प्रवेदयात् ।। धोशम् । गायती मन्य का धर्म ते प्रवेदयात् । इत्युक्त हि । इसका भावार्थ व्य है कि वह परमेशवर तिस्वका निक्र नाम 'घोशम्' है, जो प्राणी का भी प्राण है, यव इत्य वा स्व प्रवेद का प्रवेद वेपासकों को भी स्व प्रवेद का प्रवेद विकास प्रवेद विकास वा पूर्व धारि प्रकासक प्रवासों के भी प्रकासक, सव प्रकास के प्रवर्भ के बाता, चाहने यो प्रकास कराने को से प्रकास कराने के वाता, चाहने यो प्रकास कराने को से वाता, चाहने यो प्रकास कराने को स्व हत्यों को दूर करने वाते, व्यवसे उतान, ध्वान करने योग्य सव हुवों को दूर करने वाते,

परम पवित्र तेज स्वक्ष्य प्रशास्त्रा का ही हम लोग धपने मन में घ्यान करें। वह परमात्मा हमारी बुढियों को उत्तम मुख्य धौर स्वभाव की धोर प्रेरखा करे धौर हमें दूरे कामों से बचाए।

संस्कृत माया सीखने पर कोई घषिक रुपयाल वैनही करना होता। यह सी बड़ी सरल तथा मधुर भाषा है। जो इस मन्त्र का प्रेम के साथ नावन करता है, यह गायत्री मन्त्र उसके धन्त करण की शुद्ध कर देता है और इस शक्ति के द्वारा यह भाव-सागर से पार हो जाता है। यह गायती सन्त्र तो इंडबर प्राप्ति के लिए एक तीर के समान है। इसका आगव है कि मनुष्य समाज में एकता प्रकट हो। ईश्वर के पूजन में कोई एक मन्त्र और कोई दूसरा मन्त्र न बतावे। हर एक इस गायत्री नन्त्र से ही ईरवर का पुत्रन करे धौर सब में एकता बनी रहे। गावत्री सन को शानन्द के साथ उज्जारण करो। एक सीमन्त्र का जाप करने में क्यादा से ज्यादा २५ मिनट लग जाते हैं। न इसमें कुछ बनावट है न विसावट।

करण का जब विवास होता है। यह बरात के साण विदा होती है। दिखानी सजन नाती है। वह के सजु था जाते हैं। इती सकार रेवबर के प्रेम में जान हो काकी। तथा पार्थना में यह गाज कही कि 'हम तरे विधान में ही जनन-स्वास कम्मार्में में पहें हैं। दबनिया गुक्ते तेरा ही स्वकर वाहते हैं।' यह तसकार कि यह समक धौर विश्वी काम के लिए सामकर नहीं तथा परमारता है जहीं की पार्थना किया करी।

यह मन्त्र क्षोटा ना है, यह समस्कर इसे पुन्त्र म समस्को। इसका महत्त्र नहुत्त नवा है। वर्धों कि इसमें परमाश्या के पुन्त बुधि को आपोना की महिं है। द्वीरा कोटा का ही होता है। परन्तु पुत्त्व में महुत होता है। इसमित् इस कोटे के मन्त्र का सौ गर प्रतिदिन उच्चारक्ष करो। यह पुन्हारे स्वीतन को पविचला की बोर से व्यविगा।

देखों "सोश्म्" खब्द तीन प्रशारों से निजकर बनता है। 'ख+उ+ज् एक सकार, दूसरा जकार सोर तीकर नकार। सकार के विराद, सन्ति और निकद, पर-सारवा के तीन वार्यों की बरारवना होती है। जिल्लों कब जद प्रवेस कर रहा है

भीर जो तन में प्रविष्ट हैं, उकार से हिरण्यगर्ने जिसके गर्म में प्रकाश करने नाले सुर्य भाषि, सब लोक हैं। जो सुर्य भाषि प्रकाश करने वाले सब लोकों का जरमन करने वाला है। जो धनना नवा नाला है भीर सब जगत का कर्ता है।

राम-कृष्ण पादि नाम परमात्मा के लिए कहीं भी वेदों में नही चाये। वेदों में हिरण्यगर्भ, ग्रन्ति ग्रादि सव गौणिक नाम द्याये हैं। स्नादित्य नाम सूर्यका भी है। पण्मोत्मा का नाम यह क्यो हुआ <sup>?</sup> कारण, उसी से तो समस्त समार में प्रकाश फैलना है। इसीलिए परमात्मा का नाम मुर्वे भी है क्योंकि परमात्मा समग्र जगत् में उजालाफैनाताहै। इस प्रकार एक द्योश्म् नाम का उच्चारण करने मे पर-माल्या के १ नाम तसमें का जाते हैं। एक बार गायली का उच्चारण करने से उसमें ध्वार धोष्ण्या जाता है, मानो ४६ बार परमात्मा का नाम विदा गया। यदि इस प्रकार ४५ मिनट तक वडे प्रेम मे बायत्री मन्त्र का जप करो, तो मी बार ब्रथवा इसमे ब्रविक बार इस मन्त्र का उच्चारण कर सकोगे । ४५ मिनट के झन-न्तर तुम संसार के भी र सब काम कर सकते हो।

केवल "झो३म्" "झो३म्" जपना भी है तो सच्छा परन्तु महात्मा लोबों का कवन है कि नायबी के साथ ही 'बो३म्' का उच्चारण करना चात्रिए। यह सबसे बहत सच्छा है। "बोश्न् सू" कहते से इसके पर्य हो बाते हैं कि वह "स्रो६स्" प्राणों का भी प्राण है। "ब्रोक्स् भूवः" के धर्व हैं कि वह "बो देन्" सब दुकों से खुड़ाने बाला है। "बोश्न स्व " के बर्व हैं कि वह 'सो३म्'' स्वय सुन्नत्त्रका है और सबको सूचकी प्राप्ति कराने बाला है। "तत्" सर्वात् वड स्रो३म् 'सर्वितुर्" सर्वात् भव जगत् की उताति करने वाका बीर सुर्यादि प्रकाशकों का भी प्रकाशक है। वही सब का ऐःवर्धदाता है, वरेण्यम् श्चर्यम् वही सबसे बहिया तथा ध्वान करने योग्य है। 'मर्नी' वहीं सब दुर्खी के दूर करने वाना समायर । पवित्र है। "देवस्य" वही कापना करने योग है। ''धीमहि' उसी परमत्मा का हम ब्यान करते हैं। "यो न " वही हमारो 'वियो' बुढियों को उसम मुख, कर्म तथा स्वभाव की सोर 'प्रचीदयात्" प्रेरला करे।

सारांश यह है यह गायत्री मन्य हमें यह बतलाता है कि सब से उत्तम धौर खबरे परित्र म मंग्री स्था है? धौर किय मता बता स्तुति करती चाहिए। यही परंत्र तथा होते करती चाहिए। यही परंत्र माता की पार्च माता स्तुति करती चाहिए। यही परंत्र भारता म जनवंदक प्रता मता सारा है। सेरा धौर धाप सब का जीवन धमनक से बिरा हुया है। हमें उद्य समसम्य परंत्रात्म के ध्यान से ही समस्य स्तुति करती है। इसी त्य हमें बतसे सर्वे कहता है। इसीतिए हमें बतसे सर्वे कहता है। इसीतिए हमें बतसे सर्वे कहता है। स्त्रीतिए हमें बतसे सर्वे कहता हमा सम्मान्य हमें स्तुति करता समस्यकारी हुति के सिए नायसी

### गायती मत्र की महिमा

मात्रद्वारा प्राप्तनाकरनी चाहिए

सपुक्तप्रात मे एक सडका था।
उसका नाम या प्राश्नाव। वह वडा
पुदर प्राप्त प्रयान कका था। प्राय
११ वह यह प्राप्त प्राप्त कका था। प्राय
११ वह यह प्राप्त कका था। भीने भीने
जबर प्रयान क वया। भीने भीने
जबर प्रयान क वया। भीने भीने
वह वहुक दवन हो गया चसे हिमालय
प्रवत पर के गये। मैं भी भ्रमण करता
हुमा वहां जा पत्ना। वन्ने वडी सकाई
थी। सकाई नो हम इतनी रसत हैं पर्यु
जुदा सर्थत हैरकर पुत्र का नाम नहीं।
नाहिए यह कि —

#### श्रध्यल खुराई दक्षए दोयम सफाई।

स्वयंत प्रयम देवन पूजा का ध्यान स्वयं हो किर सफाई सुदर्श का। वस्त सुक के सुके पहलान तिया परन्तु में कि नहीं पहलान तिया परन्तु में कि नहीं पहलान तिया । वसने मुके नवसने की। मैंने उसका नाम पूजा। उसने कहा प्राप्ताय में बक्ति रह स्वा। मैंने कहा माई। पुत्र तो वहे प्रसान मेंने कहा माई। पुत्र तो वहे प्रसान मेंने कहा माई। पुत्र तो वहे प्रसान रहा काने में। सब बतायों क्या हाल है ? कहने लगा सतार में सबब हु ख है। एहने तो मैं सहस्र हार कैं।

एक कारवी किय का कवन है कि
"मूर्व नर शिका बहुण करने नाली सीवों बीव और राजाधी महाराजाओं की बचा केवा हु तो किस गिनती में है। इव मुक्त बीव आकार कर में कसकर कीन कराव नहीं हुआ ? कैवर (रोग के खजाट) के महुनों में तो मकबियों में बाले तान तान कर परवे बाल दिये हैं और ईरान के राजा ध्रक्तरीक्षाव है गुन्वय पर उस्तू नक्कारे कक्क रहे हैं

क्ली का समय सबैव एक सा नहीं पूर्वा । शिता समिनान करता है कि नेरा साक्षपुत्र ऐसा होगा । वह सह सही बानवा कि मैं परसारता से होक बीर हठ कर रहा हूं। उसने बने बनी की हठ तोड़ दी समिनान चूर-चूर कर स्वा। कैसर रोज का एक वहुत बना हमाट वा। सपने समय के उसके महलो मैं वसी भूग पाय ग्हा करती वी किन्तु प्रव उस्कू बोल रहे हैं। सतएक जो पुरुष हुदिसान हैं वे सभिमान से गहता होते हैं।

एक मौर फारसी कवि कहता है कि मुक्ते धपने सन् की मृत्यु से प्रसन्न होने का कोई कारण दिलाई नही देता क्योंकि नेरा अपना जीवन भी तो स्थायी नहीं।

सुनो 'वो बनी पुरुष ये। इनकी पर त्यर वडी सगती थी। सर्वेष जबते क्रगडते इन्हें थे। बाने गीने वासे सार दीस्त उनके पास बाते । एक दूसरे की बडी निदाकरते। घनी लोबो के पीछे ऐसे लोग बहुत लग बाया करते हैं जो उन्ह सडा सडाकर ही अपना उल्लू सीचा करते हैं। एक दिन उनमे से एक चनी मर गया। यार लोग वर प्रसान हुए। खुश स्त्रप दूसरे के पास पण्चे धौर कहने समें कूछ खिलाइए। माज बढा मुदर समाचार सुनायमे। उसने कहा पहल सुम बात तो करो । फिर साभी नेना। वे बोले बापका धमुक शत्रुमर गया है। वह भनी निराबुढ ही नहीं था। ससार वित को जानताबा रुख्ड होकर कहने सवा भरे मूर्की <sup>1</sup> इसमे असनता की बात क्या है <sup>?</sup> मुभे कहते हो कि तुम्हारा सत्रु सर नया परन्तुत्म कभी नहीं मरोगे।

इसलिए हे भाइयो <sup>1</sup> तुस यह मतुष्य श्रीवन पाकर कुछ बुध काम कर जासो। बक्छे पुरुष कास प्रतृक्षी उपायना करना है। परमेण्डर मशलस्वक्षर ₱ बिससे समस्क कर लेखाभी नहीं। यसी का स्थान करों पुरुष्टे सब सुख प्राप्त हों जासेंसे।

एक वासायु। उससे किसी ने पुछा महाराष्ट्रं कुछ साने की इल्हा है उतने कहा सीर कार्येगे। वालीने **बीर मानई। ब**न्न प्रसान होकर साने वने । भूकातो मिट नई परम्तुनीयत नही जरी। उसने पूछा और लोगे<sup>9</sup> उत्तर दिवा ले साधी। दूसरी बार तीसरी बार पूछा सब भी न नहीं की। फिर कहने लगा धव कुछ नमकीन ले साम्रो। तस कीन बाया वहुभी लुब आराया। फिर सवीच हो गया। हाव <sup>1</sup> हाय। करने नगा। यह भी कोई झानरू है ? बच्टे बर खुश फिर धमनसः। दुनिया के सब काय ऐसे ही समयक पूल हैं। मगक रूप तो परमात्मा ही है दूनिका के अनडो को मिटाब्रो परम त्मा ते एकता पैदा करो। जब एक ईन्बर को मानीसे ती बेडा पार ही जायेगा।

मन्दिरों में देखों। एक दूसरे से लोग कहते हैं मेरे सन्दिर का परमेश्वर अञ्चा है। बेरे मन्दिर का ईश्वर अन्छा नही। मूर्को <sup>1</sup>.परमेक्बर तो एक है। बम तो एक है। यास्त्रों से सब ही देखते हैं। सूंचने का काम सब ही नाक से नेते हो। साना मूस से साते हैं। इन सबका साधन तो एक है फिर **दम धन**ग **धनन नै**से <sup>?</sup> सब का चन भी एक ही है। जिसमें भेद भागया वही धपषम हो वया अम नही रहा। चौथे बमुनाकी बार्येंगे अमुनाकी की जय कहेंगे।' 'वगाबी जाए गगाजी की जय कहेंने। कोई कहता है 'नमदा सञ्जी है कोई कहता है गोमती । बस खडाई ही सटाई है। कोई कहेवा सबस का बत क्रम्बाई कोई कहेबा, शुक्र का बत

श्रम्खाहै। कोई कहेगा सनिवार का द्रक्त श्रम्खाहै वा एकादशी श्रम्क्षी है।

कट की गवन टेडी होती है। किसी ने कट से मुखा भाईं। तस्त्रारी गरदन दर्शी क्य है? कर ने उत्तर रिमा नो कीन सायप मेरा सामा है टेटार्गे सीची हैं भवना पीठ सभी कुछ तो टेडा है। इसी प्रकार पुन्हारा भी सभी कुछ टेना ही है। इस गयी ने रूपन का उतार सेंकी। तुम तो मनुष्य हो कर तो नहीं हो।

केला ला। उसका छिसका उतार दी सन्दर से प्रदानिकल स्रायेगा पोस्त ती। उत्पर का छिलका उनार दो। पोस्त के बार्ने पिकल प्रायेगे। परत्त प्रपात्र (गर्) मे से क्या निकलता है 'उसमे नो छिलके की छिसके हैं। तस धाने जेल्यक क छिसके दूर कर ने धौर सनुष्य बन मध्ये।

बाक्टर सम्बदकर ने जो सक्ष्मतों के एक प्रसिद्ध नेता हैं विकासन से कहा वा महाराज बण्यान भी उस समय वही कि जब तक सह वहा व्यवस्था बनी हुई है तब तक हम कपर नहीं उठ सकत। पर त मैं कहता ने ब्यु-यवस्था है कहा? साप में तो जातियों का मेद रता है किवक्षी कोई मिनती ही नहीं । कोई सन्ता है कोई मन्द्रोगा है कोई चढ़वा है तो कोई मूरी इत्यादि। बस इन्हें मिटाओं कम से वर्ण व्यवस्था (स्वाप्ति करी। सब कम्ट दूर हो वार्यों)

तुम लोगछत घछत का शोर मचा रहे हो । एक मुनलमान किसी गाव में चलाग्या। बहाएक घर मे ब्रह्मभोज चा मुसलमान से किसी भादमी ने कहा घर में चले बाफ्रो काफ्राए। भोजन कर रहे हैं दो सडी के लिए बाह्यचवन जामो यदि कोई पूछ लो कह देना कि मैं निकट के ही बाम का बाह्यणा हू फिरमदि पूछें कि कौन बाह्य सा तो कह देना नीड । यह बाह्यासो मे जा बैठा। हाय युलाने के समय उससे पूछा वया तुम कीन हो ? उसने कहा में भूका बाह्य ए हु। इस नांव में बायाचा। किसी ने कहा बाह्य एते का भोजन है यहाँ चला भाया। उमने पूचा कीन बाह्यसा हो <sup>?</sup> इसने बद ब दिया गीड । उसने पूछा कीन गौड तो यह कहने लगा या खुदा गौडी मे भी ग्रौर<sup>?</sup>

यूरोप में ही बेल तो यदि किसी से कमी तुम पक्षे कि नुष कीन हो ? तो उत्तर मिलेगा सीवागर बलक या कोई धौर। परन्तु तुम्हागी यह गुरसता तो समाप्त हो नहीं होती। यह तो उसी दिन सत्य होंगी उस तुम्हारा सम्ब स्थानेशा। परन्तु परमात्मा पर विश्वास रह्यों तो एकता पैवा हो सायेशी।

धावकल के पढ लिखे कहते हैं कि 'यम को बीर ईरवर को छोड दो ।' मैंने कहा सा ध-आर आर देते हैं सब कौन सामाग पकड़ें ? मया प्रम को छोड़ कर प्रमर्थ का माग पकड़ें ? ज्यते कहा नहीं। तो मने कहा प्रम को भी छोड़ र प्रमण को भी छोड़ ? तो न्याकर? मेरे आर्ष कोई यक्क की बात तो करो।

तत सविनुर शिय परमाश्या का नुम स्मरण करते हो वह सारे ससार का उपादक है। यह बना हुआ ससार अपने बनाने बाने की तस्वीर स्थितत है। एक उब कवि का कबन है—

#### चेहरए तस्वीर से शक्ले नुस्तविर देखना।

परमात्माने कैसा ससार बनाया? जगन का चित्र तो देखी कितना ग्रदयत है? ग्रतएव ग्रन्थन ससार की बनाने वाला स्वामी भी ग्रदभूत टी है।

वरेण्यम परमात्मा का अपदेश है कि बन को बहुण करो पर तुउसको ग्रन्मा करने की बुद्धि होनी चहिए। बाहु बल से उसकी र-नाकरो पूभ काथ मे ज्से लगाने की बुद्धि हाना चाहिए मरत समय सब कुछ यही छोड जाना पडगा। सिकन्दर के पास भरते समय कितनी दौलत की यूरोप व ले यूनान को साना गुरु मानते हैं। उहीने उससे बहुत कुछ सीसा। सिक नर जब मरने लगा तो उसने सजाबी मेरे मरने के बाद एक काम करना। जितनी दौलत हाथी घोड इत्यादि हैं सब मेरी घरबी के साथ चलें। एक बार वन दौलत रह बौर दूसरी बोर हाबी घोट। मेरे साली हाय कफन से बाहर रह । उसका भाशय या कि सब यह शिक्षा ग्रह्मण कर किसन कछ, यही रह जाता है मरते समय कछ भी साथ नहीं वाता

एक ज्दूकविने कहा है कि

वेरी का निलान कर माफिल। रक्त तसरकों कि बूचुक्ट्रणा। इतने मेंड्यन वहां में गुबरे करते गहलत किसी कने जगवा। के नया साम्ब कुख्न तिकस्पर हाम काली करन में बाहर था।

धवांत ह मूल । घ ने नियन होने की लिक यत न कर यह सोच गर साला कर से कि नेरे भाग्य यहां वदा थाला वेल सतार म कितने चनपति हा चुके हैं। उनम से किती के पाल भी उनके अन्त समय कुछ चन सम्पत्ति देशी है। सिकदर जैसा म भागाणी महाराजा भी मपने साथ कुछ नहीं से यसा जब वह मरा तो उनके हांग करन से बाहर निकने थे सौर साली थे।

सुदर सकान बनामो घन सम्पत्ति जमाकरो किन्तुयदि तुम उन्ह घपने साव भीने जामो तो नहीं ने जासकते।

(क्षेत्र पृष्ठ ६ पर)

प्रचारायोगी है। स्थान स्थान पर बडी सूस्ववान् जानकारी दी भई है परन्तु हत अब के रचने के तिता शारी उपनन्ध प्रचारित ना सम्मन्तिन तामयी का भी लेवक महानुनावों ने उपयोग प्रयोग नहीं किया। बहु बढे लेट की बात है। कहीं कहीं तो बहुत प्रमुपी आनकारी दी गई है। हुक मून्ते प्रचार है। मुक्स स्तरी है। कुछु गक भूने प्रचार हैं में मुक्सरी है।

१ प्रहृषि दयानन्द जी के विश्वदान के समय स्थापित धायसमाजो की जो सस्यादी गई है। वह सप्रामाणिक है। निश्चय ही तब इससे अधिक समाजे स्थापित हो चुनी थी।

२ बार्यसमाज के प्रचर का इति-हाम लिखते हुए धायसमाज क भजनो-पदेशको की चर्चा नाममात्र की बाई है। कई भजनोपदेशको ने ऐतिहासिक महत्त्व का काय किया उनका नाम तक भी नही दिया । श्री महाणय लाभचन्द जी का नाम मैं उदाहरण के रूप मे देता हू। हरियासा, पजाब के कई बढ़ अजनीपवेशक जिन्हें मैं नेस्थय देम्बा--- उनका नःम न पाकर दुक्त होता है। भ्राय प्रादेशिक सभा पञाव वा प्राय प्रतिनिधि सभा पजाव के भज-नीपदेशको ये स्रतिरिक्त उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश वानिजाम राज्य न भी कई नामी भवनीपदेशक पैदा किय । स्वामी बेनस्क जी, महाद्यसराजपाल, मदव मोहन श्री सन्तराम पुरी श्री इसराज (श्रभी भी बीवित हैं) श्री ज्ञानचन्द, प॰ मेहरचन्द, कर्मचन्द, प॰ धार्यभानु वी वारूर, भी तेजभानु, श्री जसवन्तसिंह वर्मा भादि की चर्चा ही नहीं। कई अजनोपदेशक माज कीति के शिखर पर हैं परन्तु १६४७ **६**० से पूर्व ही कार्य क्षेत्र म थे, उनका नाम भाना चाहिए था। यथा प० म्रोम्प्रकाश वर्मा, प० बेगराज प० नरदेव जी स्नेही, प॰ प्रेमचन्द जी (निजाम राज्य) मपनी सेवाधी के कारण प्रख्यात हो चुके थे।

३ प्रखूत शब्द का प्रयोग न किया बाता तो ठीक था। दलित शब्द का ही हुम प्रायों को प्रयोग करना बचता है।

४ स्वामी स्वतन्त्रशानक जी सह-स्थान से पूर्व ही सार्य विचारों के हो चुके ये। इस प्रथ में शिक्षा नया है कि प्रवम विदेश यात्रा से लौट कर सार्य विचार के बने, यह ठीक नहीं। स्वामी सी को समीक्षा

# आर्यसमाज का इतिहास

(द्वितीय भाग)

लेकक — डाक्टर सत्यकेषु वो व उनके सहयोगी समीक्षक आप्यापक रावेग्द्र विज्ञासु वेद सदन प्रयोहर

सार्थं बनाने वाले महत्त्व विष्णुदास बी का नाम न देना भी भूत है। प० विष्णु दाम जी का ग्वामी देदानद जी, महागय कृष्ण, प० चयु ति जी झादि हव हम्मान कृष्ण, प० चयु ति जी झादि हव हम्मान कृष्ण, व० चयु ति के स्वाप्त स्वी भी उनले वैषक पढते र ।

प्र वीसकी शताब्दी के आरम्भिक वर्षों के प्रवाद के प्रचादकों से वीर सोम-राज मास्टर बच्छीश राम, महाशव चिरुव्जी साल जी प्रेम वा अमृतसर के पर जगननाथ जी के दोनों जाडबों का नाम नहीं।

६ दीर तुलकीराम का विलिदान १६०३ ई. में नहीं हुआ। उन्होंने सन् १६०४ में बीर निर्माश पाई।

७ प० रामशरण जी नस्ता की चर्चा तो है। उन्होंने दलितो के निए स्तियो के निए जो प्रविद्मरणीय कार्य किया प्रोर को यातनाए पहले उनका दर्शन होना चाहिए था। बहुसत्यासी वन सये ये यह भी विकला चाहिए था।

= पृ० १६३ पर प० रलाराज की की प्लेग में खेवा का वर्णल हैं। वहा बिख डंबाई पादरी का वाच्य दिया हैं जब पादरी का नाम नहीं दिया और वास्थ मी ठीक नहीं दिया। वह देशाई पावरी वे स्टोस्स को स्वामी सर्यानन्द वन गये। प० रलाराम जी ने बेहुली रावसपिण्डी स्वादि में भी ज्येन पीडिको की सेवा की वी। इसका वर्णन मुने इन प्रथ ने मिला नहीं।

१ पृ० १३० पर श्री देवीदास भी का नाम है। उनका पूरा परिचय नहीं कि वह कुशल लेखक विद्वान् थे। और उनके भाई दीनानाथ भी भी बेसे ही सार्व निधनरी थे।

१० पू० ७३२ पर समरीका आने वाले सार्यं नीर कानाम समुद्ध दिया है। उनका नाम जेंदाराम था। उन्हें मण्डाराम मी कहा बाला था।

११.स्यालकोट की दलितोद्धार स्वयायों ने बीर सामध्यक का नाम तक नहीं दिया। वहीं तो दलितोद्धार के प्रथम कर्णवार थे।

१२ पनाव में वो दस मूलरास के मण्डेन वायर के मण्डेन वायर के मण्डेन वर्ष कने। बहु तस्य इतिहासकारों को गोटकरना चाहिए। मूलरास बरकार तह वात तिसने से वे दिताह तेसक क्यों जन-जीत है, यह मेरी समझ से बाहुर है।

प्रावेशिक सभा बनने पर श्री प्रावेशिक समाव ले श्री लोगो से मास मझाण खुडारे ये यह श्री इसमें नहीं दिया। धाप सबट में मास के विरुद्ध चोरदार लिसा बाता या।

देव के दिवास को १६४७ तक का दिवा है परन्तु विदेश प्रवार ने कवर्द्ध की वा धोमुक्ताय को स्वामी की नी वर्षा है। यदि ऐसा ही करना वा तो प्रि० राम-सहाय भी की भी चर्चा कर देते। वह जिवाब ने प्रवार करते हुए, वही चस करें।

१४ राजस्वान के प्रचारको की चर्चा में भी कई सहस्वपूर्ण नाम कुट है। जमा मास्टर स्कृतिन जी शाकुरत, हकीय समास्टर स्कृतिन जी शाकुरत, हकीय समास्टर की पिष्ठारी, महना जीवित जी जैसे यदान्यी प्रायं पुरुषों ने राजस्थान में केर प्रचार के सिए प्रमृत्य समार केर कर कीरि राई।

१४ फी नेजपुर के बार्य बनायालय का स्थापना वर्ष ठीक नहीं दिया। उसके सस्थापक मधुरादास जी का नाम ही नहीं दिया। ऋषि के ब्राशीबॉद से उन्होंने यह महान् कार्य हाथ में सिया।

११ पृष्ठ १३६ पर 'मालेमहें प्राम में युद्ध वा वीकातेद्वार के सद्युष्ठ कार्यों को चर्चा है। इस प्राम का नाम मालोमहे या गरू नालोमहेर भी कहनाता वा। इस प्राम के बारे में आचार्य बमुपति जी ने क्लिया है कि प्रामं के बारे में आचार्य बमुपति जी ने क्लिया है कि प्राम के बारे में हमा है कि यहा खुतखात का किसी को ची पता नहीं। यह तम्म दिवार विचा वाता तो अच्छा होता। सामार्य व्यवस्थित जी का लिखा कर्वचा माचार्य है। युक्ते ११-१२ वर्ष की सामार्य है । युक्ते ११-१२ वर्ष की सामार्य है । युक्ते ११-१२ वर्ष की सामार्य है । युक्ते ११-१२ वर्ष की सामार्य होता। सामार्य होता होता कि सिनुष्ठा में कोई सस्पुष्ट की समस्य जाता है। सम्बूत क्या नवा होती है, यह नेरी करना से बाहर की वात ची। येरा क्या इसी प्राम में हारा की वात ची। येरा क्या इसी प्राम में हारा

रैंक पृ० २३%, पर मुरादाबाव की वर्षी में भी पं० क्षेत्रकरख दाख जिनेदी का नाम न देना मूल है।

्द पृ॰ २८० पर जपाध्यान श्री श्री एक पुस्तक का नाम नैविकस्पृति दिना है। नहुठीक न्यूरी। पुस्तक का नाम सार्वस्पृति था।

वहीं पर जिला है कि धापने डी॰ ए॰ वी॰ क्यून की तीस वर्ष सेवा की । यह ठीक नहीं। उपाध्याय वी २६ जुलाई १८१८ ई० से लेकर ११ जुलाई १८३८ तक इस स्कूल की तेवा मे रहे। बीव में एक वर्ष कीव्हापुर वी लवा खाए और हैकरावात सरवासह में भी समस्र विद्या। इस प्रकार यह बीस वर्ष से भी बोडा समस्र इस स्कूल में रहे।

१६ कोल्हापुर के प्रसग में प० सहेन्द्र प्रसाप जी वाज्याच्याय जी का नाम ही नहीं।

२० स्रोतापुर के उपदेशक विद्यालय का बर्सन कही नहीं मिला।

२१ प॰ भाग मुनि जी प्रावेशिक समाके साथ भी काम करते रहे। सह वर्षानहीं। वहीं पशाब भाग प्रतिनिक्ति समाके प्रथम उपवेशक थे।

२२ मार्थसमात्र के दूसरे शहीब वीर विरुज्जीकाल भी की वर्षा तक नहीं गढ़ ऋषि के विषयात्र के दश सक कार्यक्रियात्र कि स्वाप्त कर सक् भीवत वरिक्त मिल ही सकता था। यह व्यूपित की स्वाप्ती अञ्चानक थी ने भा उन पर जो कुछ लिखा है यह निवता है।

२३ मोणकह विप्रोह के समय दुखियों की देश के लिए महता जीवित भाग गये थे। उनका नाम नहीं दिया। महता जीविति सम्बादी बन गये। यह कहीं नहीं लिखा। यह प्रप्रेत्री में जातत है, यह कई बार किसा है। इसकी धाव-स्थकता ही न थी। यहाँ लिखना पर्याप्त था कि वह बी० ए० करके वकील की। वर्षों कालात करते रहे।

२४ केरल में वैदिक वर्ग प्रचार की चर्ची ही नहीं। सी विस्तनाथ स्वामी मुरासाबाद वीरवार काहनवन्द वर्गा, र नारासण्यक्त जो जैसे विदानी ने बहुर वर्णों कार्य किया। हमें प्राज ही सुवना सिती है कि २० नारासण दत्त वी विद्वांत पूर्व सुवना सिती है कि २० नारासण दत्त वी विद्वांत पूर्व सुवस्त करते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के वायरूप बत्या-ग्रह की चर्चा मुक्ते दिलाई नहीं दी। इसमे केरम के महान् नेता मन्नत पदा-्रन ने भी भाव सिया। स्वर्गीय मन्त्रम केरल के Uncrowned King काने काते वे । उन्होंने स्वय मुक्ते यह बताया था । सब स्वामीश्रद्धानन्द जीकी केरल के महान् सुभारक महात्मा नारायण स्वामी जी से भी मेंट हुई थी। यह नारायसा स्वामी श्री की सबजी की एक जीवनी से झाला है। नारायसः स्वामी जी महाराज बढानस्य जी से बड़े प्रमावित हुए। उपाध्याय सी, पं० मदनमोहन विद्यासागर, स्वामी स्वत-न्त्रतानन्य की महाराज (चार वार केरल बये) स्वामी घ्रावानन्द भी भी केरल मे प्रचारार्थं गये। कही चर्चा नहीं सिली।

२४ प॰ चमुपति वी की पुस्तक कानाम योगेश्वर इच्छा था। युक्कुल कीनडी से ही स्त्री थी और खेद है कि युक्कुल के श्रिष्टासकारों ने ही ऐसी अनुद्री

(शेव पृष्ठ १ पर)

### सिख श्रकालियों से सावधान रहें

बायम देश के २६ मई १६८% के ग्रक मे सरनार सत्येज्यालिनह द्वारा लिखित सिक्षो के ग्रपमान का कारहा ग्रकालीन्ल लेख मे ० यक्त विचार तथ -पूरा एव महत्त्वपूरग है।

निइत्यही ग्रकाली तल ने ग्रपने ज म संपदाद में सदियों संचले आप रह प्रवाद निदुसिस सम्बाधों से दरार डाल दी है सन् १६४६ में किय्स मिनन के सामने पद्यक्त मिला राज्य की माग की फिरपञाबी सुब कानिर्माण कर पजाब को और छोटाकर निया १६०० से प्रवास के बल रही भातकवानी गतिविधियों का इयक्ट विरोधन कर उनका मुकसमयन किया फिर ग्रान दपुर साहित प्रस्ताव पर जोर देकर पजाब में नाति स्थापित होन की बागाची परपानी फेरदिया धीर श्वब राष्ट्र विशेषी वक्तव्य दे तथा श्रीमती शांधी के हत्यारों को सम्मानित कर भातकवात्यों को बढावा दे रहा है। स्पष्ट है कि उसकी नीति सिको तथा देश तोनों के निए हानिपद है यदि उनकी पृथकता बाटी नीति क कारण उत्पन्न गलतफहुमी के लिकार सिख युवको ने श्रीमती गाणी

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हुइसन लाइन मे भाय कुमार सभा

किंग्जने का वार्षिक उत्सव श्री सरवारी

काल वर्माभूतपूर प्रदान धाय प्रतिनिधि

सभा की धव्यक्षता में मनाया क्या। धव्यक्ष

शहोदय ने प्राय कुमार सभा के सगठन

को और इड करने पर जोर दिया और

-सभाके सस्ते वैदिक साहित्य की प्रशसा

की आ सरैतीलाल माटिया मत्री पाय

समाज हनुमान् रोड ने भ्रात्मा के विकास

-परहो मानव की उनलि निभर है पर

अपने विवार प्रकट किए।

१८ मई साय ७ बजे घ यसमाज

की हत्यान की होती तो निश्चय ही ही पत्राव क बाहर सम्पूग देश मे बसने वाले सिल्हों को न दो तबाही का सामना करना पडता भीर न भपमानित होना

दूख का विषय नो यह है कि उसका उपरोक्त राष्ट विरोधी गतिविधिया निर तर बन्ती जारही हैं जिनकाहा परि साम है कि उत्तरी भारत के कई नगरों में भातकव दियो ने न सजिस्टर बमी को रखकर सैकडो लोगो को मौत व सह स टकेल दिया तथा पद्माव में धनेक लोगो की हत्याची का नया दौर प्रारम्भ हो चुका है। उनकी चपरोक्त कारगुजारिया यदि प्रविष्य मे पून सिख की न पर मुमी बत लायें तो ग्राइचय नही होग ।

द्मावन्यकत है कि देश के सिम इति हाम प्रसिद्ध महा । जा रहा जीत सिंह तथा महान् गहीत्वर भगतसिंह की महान् परस्पर स्रोका सनुकरण करें तथ सका लियो स साव गान रह।

> लेखक शकुनचाद गुप्त विद्याबाचस्पति नानगत्र जि०-रायबरेलां

कुशलता के लिए सम्मानित किया गया डा॰ साहिस के कर कमसो से पारितोधिक बाटे गये। डा॰ साहिव न कहा कि शिक्षा सस्यानो को शिक्षा के साथ शाय लघ उद्योगों की शिला भी देनी चाहिए। इसमें पूर्व २४ ग्रंपीन को सभाके स्थ पनादि स पर सभा के प्रधान श्री परीश्वित सहगल द्वारा व्यवारीहण किया गरा।इसके प्रचात् । धमाल संत्री धाय प्रति निविसमाने 'मनुसव पर भाषण दिया भीर कहा कि माय कुमार सभा का प्रका गन विभाग पनि उत्तन है। २५ सप्रैल न १७ मर्दतक २४ दिन भिन भिन स्थापो

पर नेद प्रचार होता रहा भीर प० सत्य की देवे इ गुप्ता (स्वागताध्यका) ने काम वेदालकार के प्रवचन होते रहे। सभा की वार्षिक रिपोर पढी इसके पश्चात् उमेश कुबार बत्तरा (मन्त्री) u • सत सचन्द्र पशीजाको उन नी कय

# श्रार्यसमाज दीवान हाल शताब्दी

# एक निवेदन

भाषको यह ज न कर हार्निक प्रसन्नता होवी कि भाय जगत् का विख्यात सस्था बार्यसमाज दीवान हाल दिल्ली सन् १६६४- ५ मे अपनी शताब्दी कह समारोह पूर्वक मनाने का रही है। शताती के भवसर पर एक अश्युत्तम बृहत् समारिका के प्रकाशन का निश्चय किया गया है -- जिसमे धायसमाज वीवान हाल के सी वर्षी का विस्तृत तिहास तथा वैदिक धम के सम्बाध में सप्रहृत्तीय सामग्री होगी । बाबी युवा पीढी के लिए प्रकाश स्तम्भ का काय कर सकती है।

श्रपते स्थापना काल से ही यह अभवसमाज जाय जनत् की मुख्य गतिवि वियो का प्रमुख के ररही है। तवाइस समाज में बाय जनत् क प्रविकांश मूधन्य सामासियो विद्वानों नेताको तथा कायकर्ताको का वनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। बापका तवा बापके परिवार का इस नमाज से विशेष सम्बन्ध रहा है। बाबा है इस समाय की प्रनेकों ऐतिहासिक घटनाएँ जो स्मारिका क सिए खावस्यक हो सकती हैं मापके बनुमव मे आयी होती। यह बापस विनम्र प्रायना है कि धपने नहुमूल्य त्तरमाँ को मिनिवड कर त्रीझातिशीझ विजनाकर कृताथ कर।

मुखबन्द्र बुप्त मधी

#### गायती मत्र की महिमा (पुष्ठ ७ का शेव)

**ण्नपति** मृत्युकाल तक धन का त्याल जी रखना ने उपर मर रना ने इधर कह रहाहै कि मेरे धन क चित्रक स्थयन करना। घोम्ल त्तोमर रहा है ईष्ट्रकर के बरणों में ध्यान लगा। परन्तु क्या करे ? माथा शमता उपे नही छोडती।

बाइर मंद्रापका एक मित्र मिल यया वह एक दकान पर बैठा बा दूबान दार का भी मित्र द्या। धापने उसे धाने नाथ ले जाना चाहा। परन् दकानदार ने उसे रोकना वाहा। उसका एक हाथ भापन पकडा दूसरा हाथ दूकानदार ने। स्चात ी सारम्भ हुई। उह कहता है भार्ड! मु-क् नक्लीफ हाती है परस्त् आप में से कोई भी नहीं मानता यह म**ब** बेममभी की वत है।

यहातो राते धाये वे क्या आधीगे भी गोते ही। चाहिए तो यह बाकि रोते द्याये हो नसते हुए जाघी स्सलिय मेरे भा<sup>री</sup> ससार के सब काम करत जामी परन् मश्न समय उनकी तरक ध्यान न रखो। समार मे जीव सदैव रहने के लिए नहीं बाते। महार को तो एक न एक दिन छोडनाही है प्रतएव परमात्मा को ग्रहण करो वही ग्रहल करने योग्य है। ग्राने विचारों को पवित्र बनामी। परमात्मा के निकट होते जागी। अत्र तक मन पवित्र महो होता तद तक उसकी प्राप्ति नही होगी। धन को दूबल बादमी नहीं सन्नाल सकता। मनुष्य का हृदय महादेव का मदिर है यही नता उसका मन्दिर तो सारा ससार है। सीध माग पर चले चलो उसकी उपासना करो बुद्धि को सुमान पर समाची बस इसी व तुम्हारा कल्याण होगा। यहा गायत्री मात्र का उपदेश है धौर वही उसकी महिमा है।

### आर्यंसमाज का इतिहास

ŧ

(পুৰুত দ্ৰাহাৰ) पुस्तकका ने म अनुदृदिया है। रशीला रसूप की चर्चा Anglo American विचारधारा के इतिहास नेसक प्राय करते हैं इस वित्हाम में भाउसकी चर्ची है। लड है कि इसारे इन म य महानु भावों ने यह नहीं निलाकि रगेलारसुल क्यो चिचागया। न ही यह लिखा गया क्ति जब तक गांधी जी न रगीला रसूल पर सापति नहीं की सी तद नक कहीं भी मूलमानो ने त्य पर ब्रापनि नहीं की थी। यत्र भी निम्ब देने तो इतिहास पुराहोता कि गाधी वावा ने उस्नीसवी मनी का महीव स्नादि सब्लील घटिया निराधार पुस्तक के विरोध में एक भी

२१ एक बान बीर लिखकर समाप्त करद कि गोपीनाय न महामा मूपीराम वा वजीरचार जी पर समियोग वल सा। न्सम् गोरानाय पि गया । इस स्रतियोग के समय धायसम न के नोनो प र डटकर मुीगम जी के पाछ थे। त्नी पक्षी के ग्राप्य बकीलाकामुशीराम जीकासम थन प्राप्त का न्लब नी के उम सूग से भी सिद्धात वासग न पर चो लगते ही दल दो होते हुए भी श्रायों का दिल एक होता थ । इस मिमयोग का बलान कही मिलान्द्री।

न ही १८ ८ ईं० में बम के लिए सद से पहल जेल यात्रा करने वाल स्नाय सुभारक विरञ्जीलाल जी के ग्रमियोग अस्त बगान है।

कोई भी लेखक धपनी पुस्तक से सब कुछ, तो देनही सकताफिर भी को भूलें बीबीर जो बहुत महत्वपूरा क्षिया पुस्तक मे रही मैंन वे सुभादी है।

आशाहै इतिहास प्रमी मरी इस समीक्षाका ब्यान मे रहाये।

### प्रतिक्रिया

हर व्यक्ति के अपने तेवर हते हैं। धरनाचिन्तन मनन भीर उत्तरी पनि व्यक्ति हो **| है। शब्द** तो हम लोग शद को । मे ही लेते हैं पर उनका सयोजन हम श्रपने श्राने उन से करते है। यही शैली कहसाती है। ब्रापक पट चन बीर उनका भयोजन पाना निराली व्यवस्था

#### शिचा सम्बन्धी यावश्यकता

श्री प्राय गुब्कुत तित्तीहरूढ की माद्यमिक कमाधी के लिए प्रस्थित प्राप्त व्याकरलाकाय (प्रातीन) तथा ग्रग्रजी गणित विनान भूगोम नस्कृत एव हिंदी के सिए प्रशिनित स्नातक स्नातकोत्तर ग्रध्यापको के ग्रावेदन पत्र उनकी योग्यता विवरण सहित ३० जून तक बामन्त्रित हैं। बायुसीमा २३ से २४ तक वेतन होकर योग्यतानुसार इच्छक मह नुमान बावेदन कर

मुस्याचिष्ठाता भी वार्व नुरुकुल चित्तीडगढ, राजस्थान ३१२००१

रलनाहं। इनमे पोत्र भी है प्रसाद भी सौर न चुयु गुण भी। सनी साप को इस पत्र को भीर आगे प<sub>ु</sub>च।ना है भाग से बहुत सी घपसाए जुड़ी हुई हैं। व्यय सीकर संघूल कृत हो असती है। बनें बालसी नो बहार सो जानी है।

> शुभाकाशी सारस्वत मोहन मनीवी

# निर्वाचन

घयसमाज महरीलो का वार्षिक चुनाव १६८६ का सम्यान हुना जिसमे निम्नलि कित पटाधि गरी चुने गए —

प्रधान ---श्री बनवारीसान जी गुप्ता उपप्रश्नान ---श्री बार बार बाय

समाय जाकुमार सोहनलाल जी सबबास मन्त्री----श्री मदनसाल जी

श्री इन्द्रक्मार तनेजा उपमन्त्री रमेशचल्य जी कोवाध्यम — श्री बीरेन्द्रकुमार श्राय

> मदनलाल म त्री

# समाचार-सन्देश

## स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वर्ता प्रधानमन्त्री श्री राजीव द्वारा सम्मानित

द्याय विद्वत परिषत् के सयोजक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को त्तनकी तल्बमसि पुस्तक पर उत्तर प्र**देश** सस्कृत प्रकादमी की बोर से प्रधानमन्त्री क्षी गजीव गांधी द्वारा ५०००/ रुपये का विशेष पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह समारोह ७ मई १६८८ को तीनमूर्ति भवन से उत्तर प्रदेश के राज्यात की प्रध्यक्षता में सम्पन्न हमा व मुल्यमन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने सभी विद्वानी का मान्यापर्श

द्वारा सम्मान किया। पूज्यवर स्वामी जी का मरकार द्वारा सम्मानित तथा उरस्कृत किया जाना बार्यसमाज नवा वेदप्रेमियो के लिए गर्व का विषय है।

दिल्ली चार्य प्रतिनिधि सभा स्था दिल्ली की धार्वसमाजी धार्व शिक्षस सम्यामो की भी र से हम उन्हें हादिक तथाई देन हैं तथा जनके दीर्थायुकी प्रमु स कामना करते हैं।

> डा० वर्मपाल द्यार्थ समा महामन्त्री

#### महाराणा प्रताप जयन्ता समारोह सम्पन्न

सण्डवा, दिनाइ ३१-५-८५ माय समाजमदरमेशी गग। वरण जो मित्र पूर्व विधायक को प्रध्यक्षता में महाराचा व्रताप व्ययन्ता का स्नायाजन हुआ। मुख्य ध्रतिबिश्रा राजनारायणसिंह विभावक न सारयभित शब्दा म कहा कि महाराखा प्रताप के जाबन संप्रदेशा वन ध नतमान राष्ट्राय समस्याहल का जा सक्ताह। भा **एन** । एन वसा प्राध्यापक न क**हा** कि इस समय दश म भहुराया प्रताप क्रीसे जनात चारित्र का परम का बध्यकता है। ठा॰ वृज-त्रसिंह न कहा महाराखा प्रताप म हिन्दू एव सपनी मातृभूमि के प्रति प्रवाह नह्या। श्री राष्ट्रवनद्रराव मण्डलाई न कहा कि महाराण प्रताप ने जो ताज पहुना था, वह काटा का था।

वोरेन कहु। कि ऐस भायोजन संसहा राणा प्रनाप क चरित्र का सन्देश फैसाया वा सकता है। भा गहाराम न प्रस्ताव रखा क मध्यप्रदेश शासन माध्यमिक स्तर का पाठ्य पुस्तको म महाराखा प्रताप विवकातन्द, शिवाका जैस महायुद्धी क पाठ जोड । इसका समयन भा हारा-ल लावाय न किया।

मका इता एसा राज्य था, जो सकबर क

सामन नहा कुका । ४१० जनदाशकम्द्र

बातिया का स्वावत पाण्डत राम-चन्द्र धार्य ने किया । संस्था को गतिथि-थियो क। जानकारी मा कैसाशक्रद पालावाल न दा। भामार प्रदेशन आ प्रज-क्शिर सकरनाय न किया।

#### बद्यचये प्रशिच्चण शिविर निवाचन

बात्मशुद्ध बाबम बहादुरवढ जिला राह्यक व रे४ जून स ३० जून तक ब्रह्म-चय प्राधक्या शिवर का बायाजन किया गया है। इस भवसर पर योगिक ऋयाओ का सिसान तथा अवचन के लिए उच्च-कांटिक बंबद्वान् सन्यासी महात्मा पचार रहे ई। इच्छुक महानुभाव को १४ वर्ष का आधुस ऊपर हो अपने भोजन के विस्तर तथा ऋतु अनुकूस वस्त्र सावि सकर पहुंचें। ओजन स्ववस्था नि शुरूक --स्वामी वर्ममूनि

### संवेदना

निवेदन है कि धार्यसमाब के बबोवूट विद्वान् गुरकुल कामड़ी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक १२ वर्षीय सामार्थ दीना-नाम सिद्धान्ताल कार गत सनसन २ सास से रोव पीडित होने से आर्यसवाब की सेवा करने में बसमर्व हैं। मयवान् उन्हें श्रीझ स्वस्य करे ऐसी इम सव प्रार्थवन्युमी की प्रावंता है।

इरिक्रम्स नाम युनेवा, मन्त्री

### प्ररानी पीढी के गायक एं० श्यामलाल श्रार्य का देहावसान

गायक एव उ ।देशक प० दशामलाल सार्य का १ प्रमाई को निधन हो गया। इस समय उनकी बायू ८५ वर्ष की वी सममन नीन वर्षों से वे ग्रस्वस्य चल रहे वे।

श्री पण्डित श्यामसान की नामन र्शंती पारम्परिक भूनो एव लोक भूनो पर बाबारित रहती बी। इसी कारण उनके गायन के सम र जोता जो उनके साथ साथ युनगुनाने भीर गाने लगते वे । वे सदा ईवबर मित राष्ट्रभक्ति भीर महवि दया-नन्द के गुण स्तवन के सरल किन्तु क्रोअस्त्री गीत गामा करते वे । उनके भवन प्राचीन कवियो भीर गीतकारों की रचनाएँ हथा करती थी। पण्डित जी मार्यसमाज के उत्सवों भीर कथाओं के माध्यम सं वेदप्रकार १६२६ से अविरत करते रहे हैं। सगभग १७ वर्षों से वे धार्यसमाज

बार्यक्षमाज की पूरानी पीड़ी के मधूर दीव व हास के साप्ताहिक सत्सगी में वानोपबेस के लिए माते रहे हैं। आर्थ-समाब दीवान हाल उनके सेवामों के लिए उनका सदा ऋगो रहेगा।

> धार्यसमाच दीवान हाल उनकी रामाश्रस्था के उनकी प्रचर मामिक सहा-बता करता रहा है। उनके परिवार में उनकी परनी क्या दो सन्तान एक सुदुक बौर एक सुपुत्री हैं। उनके सुरुत श्रो बनो-राम ने उनका स्मृत में बायसमा व दीवान हास और प्रायसमाज सदर बाजार दिल्ली को पान गान सौ स्पादान दिये हैं। प्रभू से प्राथन। है उनके गुए। कर्वों के धनुसार उबकी बात्मा को सद्वति प्रदान करें ।

> > मूलबन्द गुप्त मन्त्री पार्यसमाब दीवान हुग्ल दिल्ली

### दिल्ली आर्थ प्ररोहित सभा का निर्वाचन

दिल्ली काय पुरोहित सभा का मन्त्री श्रीवलजीत शास्त्री प्रचार मन्त्री श्री वेद । स कोषाध्यक्ष हरियत्त शास्त्री निर्वाचन बायंसमात्र दीवान हाल दिल्ली लेखा निरीक्षक श्री नरेन्द्र ग्रवस्थी । प्रति-में १ जून १६८६ को श्री धाच यें हरिदत्त विञ्ज सदस्य — स्वामी द क्षानन्द श्री, चौ० की ग्रध्यक्षता में सम्पन्न हुमा। सर्वसम्मति शिवकुमार शास्त्री डा० धमपाल । से प० वशपास मुखाक् बार्यप्रोहित समाके प्रधान तथा श्री प० मेघरसाम महासन्त्री निर्वाचित हुए । उपप्रवान अती

निवेदक उपमन्त्री बलबीत शास्त्री

#### निर्वाचन

बार्यसमाज माडल टाउन का बार्विक चुनाव २६ मई रविवार को हुना जिसमे निम्नलिबित श्रविकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित किए गए ---

ठा० विक्रमसिंह भी हरिदत्त सास्त्री, उप

श्री महाबीरप्रसाद प्रवोल प्रकान **अक्टब्स** श्री बदीनाय महायन भी देशराज काम महामत्री भी भी कृष्णपन्द सर्मा स० मन्त्री थो बीनिवास गुप्त जपस भी भी भोगप्रकाश वीर प्रचार मन्त्री श्री क्रमंपाल क्ररोरा मत्री स्वास्म्य सेवाएँ श्री जगदोशवन्द्र पूरी बनी निर्माण भी शादीसास सामरवास कोषाञ्चक भी भोमप्रकाख गोयस पुस्तकासवाध्यक्ष भी सतीस वीर कस्टोक्षिण भी शिवप्रकाश गुप्ता

इस वर्ष दयानन्द परिशक स्क्रूप का प्रद्वाटन सार्वदेशिक सत्रा के प्रकान प्राप-रखीव सामा रागशोपात की शासवासे त्रारा १२, मई १६=६ को हुना। नर्सरी से के बी॰ तथा प्रथम कक्षा के छात्रो को प्राशीर्वाद देते हुए उन्होंने माडसटाउन बार्यसमाज के कार्यकलायों की सराहना की। सैकड़ी रोगियों को पविदिन को सलग लेडी डाक्टरो द्वारा चिकिरता प्रदान करना, भारतो के एक विशेषत का असव प्रबन्ध, ३ वैचों से बोमान्यास का ककाएँ बसाकर इस समाज न बन बन को राह्यत प्रवान की है। सब वैदिक पृष्ठभूमि स आर्थों को बाधुनिक विका देकर ऋषि दयानन्द के विचारों को युवक युवतियों तक पहुंचाने के लिए विद्यालय को माध्यम भूता है। समाज के प्रत्येक सदस्य सद-स्याची व कार्यकर्ताची ने सर्गाठत रूप में प्रवास करने का सकत्य लिया है।

> बीक्रध्यवन्द्र सर्माः मन्त्री

बार्यसमाच प्रमर कालोनी का बाविक पूनाव हवंसम्बद्धि से निम्म प्रकार

तरक्षक---प० ज्ञानकाच की प्रमान-वी मसकराच वी डावर क्षप्रवान—का॰ तीर्वराय **वी बु**खा नी रामराष्ट्र जी नसिक भी गुलक्षराण वर्तहरा

बन्त्री--श्री जोबेन्द्रनाथ स्थास ध्यमन्त्री--धी जितेन्द्रनाथ शाहर भी स्रोमप्रकाश सावटा कोवाष्ट्रक्क -- भी सुरेण्डनाव भी सहसम वेषानिरीक्षक-र्था कुल्लाकास वी वचना बहारी-सी पर कहरतीर की वार्य

> सस्त्री वोनेन्द्रमाय

क्षपप्रधान भी प्रेमनद प्राय था कमसाकान्त जी भी बक्सीनारायण शार्य मत्री श्री कन्हैबालाल बाय उपमन्त्री की राजेन्द प्रसाद की मार्ग ,, कोवाध्यक्ष श्री बुढदेव भार्य क्षी रामगोपाल जी घाय प्रचार मन्स्री भी मदनसास ग्राय उपप्रचार मन्त्री श्री सत्यप्रकाश मार्य पुस्तकाब्यक भी नरेन्द्रनाच झायं ध्रविष्ठा धार्य बीर दस बी रामकृष्ण धार्य धाय-व्यय निरीक्षक

धायसमाज लल्लापुरा वारावसा का

प्रधान

बार्षिक निवासन २६-४-८५ का श्र मेवा

मास बार्य की ब्रध्यक्षता ने आगामी वय

के सिये नान शिवे धनुसार हुआ-

श्री मवासम्ब दार्थ

बुढदेव ग्राम **व्यवस्थापक** 

जिसे बचावे, वरुण, मित्र और अर्थमा उसे मारे कौन ? भवे काम का परामां विकर नहीं (पुष्ठ र का क्षेप) होता। मन इस मनावार संप्रता का

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

23 जड़ी बूटियों से निर्मित

आयुर्वेदिक औषधि

ा । का डाक्टर

COC

देत स्थान

सहार में दी हट्टी (प्रा॰) लि॰ १ वर्ग १९९९ ज्य एस्का कीर्त नगर नहें दिल्ली १५ फोल 539009 537987 537341

अस नये 📑

मे उपलब्ध

राम वि 'पए। से मिल। प्रभिवादन के परचात् हाच पत्रकार कहा — प्राप्तो सत्रेका ' बेरो ! जब सावियो न कहा कि ये लकेश नहीं उसके भाई है तो राम ने उत्तर दिया — मैंने सीच सममक्ट ही सकेग सम्मेचन का प्रयोग किया है ! सम बादित प्रीर चरित्रहोंन व्यक्ति को राज्य करने का कोई प्रमिक्ता नहीं होता, प्रत् साव के हमा प्रिकटिंग नका के सिहा साव के हमा प्रिकटिंग राज्य नहीं, बहिन साव के हमा प्रिकटिंग राज्य नहीं, बहिन विने यस है।

राम का यह कवनयात्र सीजन्य का प्रकाश नहीं था अपितु नीति का एक कुल प्रयोग या प्रमित्र निर्माण क्षाने कि कि सीजन्य का सिमीय प्राप्त के अपने ककन की प्रतिक्रिया देखना चाहते के और इसी पर मकी वास्तिक कुमतना जानी जा सकती थी। विभीयस्त के उत्तर तित प्रयोग का प्रभाव हुआ और कहन लगा कि सी सपने मार्च राज्य के दूराच्या के दूराच्या के दूराच्या के तित प्रयोग का प्रभाव हुआ और कहन लगा कि सी सपने मार्च राज्य के दूराच्या के तित प्रयोग का प्रभाव हुआ और कि सी

भने काम का परामर्ग रिवकर नहीं होना। ग्रन इस ग्रनाचार संप्रजाका बचाने के लिए भीर रावण क विनाश के लिए मैं ग्रापके सहसाग में पूरी शक्ति भीर योग्यता व्यय कर दूगा।

राम इस प्रतिकिया से बहुत सन्तुष्ट हुए भीर दोनो भ्रोर से ही वचनो का पासन बडी ईमानदारी से किया गया।

युद्ध में लक्षण के मृष्टित होने पर राम न दुली होकर जो उदगार ०॥कन किए उनमें विभीषणका राजितलक भी

रावस्य के मरने पर विश्रीषस्य जन दुक्तीह्मातव भी राम ने बडी सहानु भृति ब्यक्त करते हुत कहा—

> मरागान्तानि वै रिश निवृत्तन प्रयोजनम्। क्रियतामस्य सस्कारो ममाप्येष यथा तव।। रामा० ६।११२।२६

हे बार्यं विभीयणुं मृत्युके साथ वैर का बात हो जाता है। हमाग उहेण्य भी पूरा हो गया। बाधी ब्रव मिलकर प्लका अनितास सस्कार करे। यह जैता तुम्हारा भारित संस्कार करे। यह जैता तुम्हारा भार्य है वैसामेरा भी है।

राज्य शक्ति और छेना शक्ति से सम्पन्न होले हुए भी कीन्दो की पराजय और हीन धवस्था होते हुए पाण्डवी की विजय तथा सफलता का रहस्य जी पाण्यवीकी वार्षिकता और सदावार ही है।

महागाज विदुर रहते वे कीरवी के नाय। रात दिन धतराष्ट्र उनसे मनक-रणकी करते रहते वे। किन्तु जब भी दुवा वन कर्णु और पाण्डवी का पदव खावा वा तो सर्वेणा करी करी शना देते के बीर पाण्डवी का "का नेते थे। दुर्घोवन के विषय में इससे सर्थिक भीर कटुसस्य क्या ही बस्ता है कि—

एव दुर्योधनी राजा



धर्मात् यह कबी धालों नाला राजा दुवाँबन प्रपने कुसकालों से केबल धपन परिवार की ही नहीं कात्रियों का सा गान कर देगा। इसी प्रकार कीटम भी पाण्यों के गुणों पर मुख्य थे। कुम्लेज में जब मुधिष्टिंद धपने सब शान्यालय छोड़ कर कीटकों के प्रथम सेनापित के रूप में पुरव के लिए उचात भीटम के पास जाकर नतसन्त्रक होकर कोले—

'हम प्रापने कर्तस्य का पालन करने के लिए उद्यत हो रहे हैं साप हमारे पूज्य पितामह हैं बत सापकी सनुमति सीर साशीवीय के लिए मैं सापकी सेवा मे उपस्थित हम्राहु।'

भीष्म वस थिष्ट और विनान स्थव हार को देखकर गदगद हो गय और पुल-कित हो कर कहने लगे—

> शीतोऽस्मि पुत्र युव्यस्य जयमाप्तुहि पाण्डव ।

महा०६।४१ -४

हे युचिकि र मैं तुम्हारे इस ब्यवह र से बहुत प्रसम्म हू। मैं तुम्हें भागीवाद देता हू। ईश्वर तुम्हें विजयी बनावे।

फिर धपनी दुवलताकी भी सफाई देते हुए बोल----

> ष्रबंस्य पुरुषो बासो बासस्त्रवर्षो न कस्वीबत् । इति सत्य महाराज बळोजन्यवर्षेन कौरवं ॥

महा० ६।४१।३६

—ह युधिकिटर ! मनुष्य धर्म का बास हैं धर्म किसी का बास नहीं । इस-लिए तुन्हें ठीक समक्षते हुए भी मैं दुर्मी-बन का पा नेकर कर रहा हूँ नेवीकि मुक्ते मेरी का सालस्यकताए पूरी करके कीरको ने धर्म से बाम लिया है । धर्म । इस वारोप पर दुर्मोचन का ध्रम्बकार है, किन्दु सा नम्फ तथ्य धीरम्बास की बीर है इसलिए मैं तुम्हारी विजय की कामना करता हूं।

इसके बाद युधिष्टिर दोणावास के पास गये। उन्होंने भी हवस खोल हर विजय का पक्षीबाद दिया। फिर कुपा-वार्य के पास गये। उन्होंने वही धाली-वार्य दिया।

पाण्यको को लिये वे भाशीवंचन फसे भीर वे विजयी बने।

हसीलिए सन्त्र से सहा गया कि निस स्मित के उदान चरित्र से प्रभावित होकर प्रमुद्धकानी वरणीय मित्र मण्डल मीत्र स्माय प्रिय समाज क प्रमुख करणुवार रखक हाल नतकर उसको प्रापति से वणाते हैं, उसे कभी कोई शति नहीं पर्ष्मा सकता। (श्रृति सौरम से सामार)



ठडा गर्म पानी

रजि० न० डी (मी०) ७५६

# श्रार्य जगत की शान 200 विस्तर वाले निर्माणाधीन

# नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रपय) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए दान की राशि अध्यार अधिनियम ी० द० रे ग्रनर्गन कर मुक्त हागा।

सारा दान चैक/मनीम्रार्डर/बक ब्राफ्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी माय धर्माय नेत्र चिकित्मालय, सी-१ जनकपरी, नई-दिल्ली-५= के पत पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

#### निवेडक

रामयोपाल जालकाले सुयवेच प्रोमप्रकाश स्नाब सरक्षक चिक्तिसालय प्रधान दिल्ली **एक प्रधान सा**०मा० धाय प्रतिनिधि साथ केन्द्रीय ।शय चुम्नीलाल चेरि० टु० सौजन्य से महाशिया ी हट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर.

ब्रोद्योगिक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१

दिचिंगा दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान तथा महामत्री





परोपकारी समाजसे भी प्रसिद्ध उद्योग दयानन्द के धनन्य धनुयायी श्री रामशरण पति तथा वैलक्यर एमीनिएशन सप्दर जग एवक्जेव के धन्यक्ष श्री हरवस्स सिंह रवेर दक्षिण बिल्ली वेदप्रकार मण्डल के प्रधान पुन निर्वाचित हुए। हार्दिक शुभ

रामारण दस दर्मा आर्थक्तठ कायकर्ता अनवक समाजसेवी महर्षि

दास १५ वर्षों से दक्षिण निल्नी वन्प्रकार ; मण्डल के महामन्त्री है। इस मण्डल में ४६ सायसमात्र शामिल है। इसके महा-मात्री सवसम्मति स निर्वाचित होने पर श्री साथ को हार्दिक बधाई। इन वर्ष दिलगा दिल्ली में ६० सम्मलन हुए जिलमे आ बाय का शुक्रिका प्रशसनाय है।



लिए स्वास्थ्य काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, फोन । २६६८३८ चावती बाजार, दिल्ली-६





मूल्य एक प्रति ४० पैसे वर्ष € प्रकः ३२

रिवार, ३० जून, १९=६ आय सबस्सर १६६०=५३०=५

धाघाड २०४२

वयामन्दाव्य - १६३

# विरोधी भी मोहित मतिमान

# तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सार्यसमाज के इतिहास से पूज्य पठ रासवन्त्र जो दहलबी का नाम वा कार्य सदा स्वर्ण सकारों में लिखा जायेगा। पठ जी एक सस्कारों जोव वे। उनकी स्वर्णाकिक प्रतिमा, विचा, पाण्डित्य उनकी एक जन्म की सावना कुम सारमा वे जो जनन जन्मान्तरों के कुम सस्कार लकर जन्मे वे। मह्यूचि इयानन्द की जोवनदायिनी विचारसार को पाकर व सार्यसमाज के स्वरूप सरकार व सार्यसमाज के स्वरूप से उनके पूज जन्मों के युग्त संस्कार वांग उठे।

बह बाल्यकाल से ही बड मेधावी के । वह स्वय अपने बाल्यकाल की क्ष घटना सुनाया करते ये। उनके विता जी पहले-पहले भायसमाज के सुरसनो मे भी जाया करते थे और घर पर गरावित जाको पूजा किया करते के। उन दिनो बाजार से एक माना के बाएक पैसा के दो गराश मिला करते थे। एक दिन जब प० जी के पिता जी गराश पूजा करने बैठे तो ए॰ जीको भलमारी से गराख जी की प्रतमालाने को कहा। प० जी से बह प्रतिमा गिर गयी। मिट्टी की वह प्रतिमा हुट नई। पिता जी ने प्त पर रोष प्रकट किया तो सुम- कुम बाजा बासक मट से बोला, कि क्या हमादो पैसे का गए। शा बाजार से और के बावेंगे । साथ ही कहा, "पिता बी साप झार्यसमाज मे भी वाते हैं और घर पर गरोश पूजा

करते हैं। 'शिथिल विचार के पिना जीने कहा, यदि तो मूर्ति पूजा से कुछ मिलता है तो मुक्क भी मिल जावेगा प्रत्यथा प्रार्थसमाज में तो मैं जताही हा'

इस घटना से पता चलता है कि प० जी ग्रारम्भ से प्रत्युत्पन्न मति वाले भीर ऊहा पोह करने वाले मनीषी थे।

प० जी बहुत सुलेख लिखा करते के। धपने सुन्दर हैंडराईटिंग के कारण यह किसी भी सरकारी कारला तम में ऊने हैं छन्ने पर की गा सकते ये परन्तु ईरबर की बाएंगे केद के प्रचार के घरमानों ने उन्हें चैन न तने दिया धौर बहु सुल सुजिया प्र वात मारकर कण्टकालीएँ। मार्ग के पिकक चन गये। उन्होंने ११५३ ई० में इन पित्तयों के लेखक को यह निस्कार दिया कि प० सेखराम को धावर्ष मानकर वह जाति-रक्षा व वर्ष-प्रचार में उत्तरे।

धार्यसमाज के इतिहास में वह एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने लगा-तार १६ वर्ष तक Street Preaching गली कूषों में प्रचार वा फळ्बारा पर व्याख्यान व शास्त्रार्थ करके वैदिक सिद्धान्तों की सच्चाई की सूम मचादी।

कैसे-कैसे कष्ट सहे, इसका एक उदाहरए। प॰ जी ने स्वय एक बार हमे मुनाया। कही शास्त्रायं के लिए उन्हें बुनाया गया। वह रेल पर गये। रेल उस छोटे से गाव तक न जाती थी। वह स्थान या रेलवे नाईन पर। शास्त्रायं का समय नियन था। प० जी उस स्थान के पास वाले स्टेशन पर उतरे। वहीं पता चला कि वहा शास्त्रायं सुनने के लिए भारी भीव जमा है। मौलवियों के दल पहुच चुके हैं। इसम से प्रकेल देहलवी जी को बोलना था। प० जी ने जूता उतारा। रेलवे लाईन के साथ-साथ दौड लगाते उस स्थान पर पहुच गये भीर धार्य-समाज का डका बचा दिया।

पठानकोट में एक शास्त्रायं में मौलबी सत्ना उल्ला साहब मैं कहा, "प० जी सब जानते हैं कि हार प्रापके गत्ते में पड जुकी हैं। 'इक्टम प० जी बोले, 'सब देख रहे हैं कि मेरे सामने खडे होते ही हार घापके गत्ते में पाना गई।'' तथ्य मही बा कि जब मौलाना मठ्य पर खडे हुए तो उनके मुसल-मान भाइयों ने उनके गले के हार डाल दिये थे। जो मौलाना नैगले में रहते दिये। प० जी के इस वाष्ट्रय पर करतल ज्यनि से पण्डाल गृज उठा।

उनका हिन्दी, उर्दू, अग्रेजी फारसी, अरबी का उच्चारण अति उत्तम था। मुसलमान भी उनकी तलावते कुरान पर मुख वे।

उनकी हाजर जवाबी पर मौलाना सनाउल्ला साहब जैसे मौलवी वा बडे बड पादरी भी मुख्य थे। एक घटना देकर इस लेख को हम विराम देते हैं। हैदराबाद मे एक मौलाना वे पूछा यदि देद देवर की बाएंगे है तो बताएँ कि यह किस रात को नाजिल हुआ। 'प॰ जी वे कहा, जानकी एक व्यक्ति बोला 'बोर''। लोग टहाका मारकर हैंस पडे। परन्तु प॰ जी ने कहा, नहीं रात को सार्थनसमाज का उपदेशक भी आ सकता है। ए० जी ने सांगे कहा रात को सार्य का प्रकृति हैं से पर ना को सार्य के सार्य के सार्य की सार्य की

उस महान् मनीषी उस महितीय बक्ता देशमक्त की स्मृति सदा ताजा रहेगी।

#### इस अन मे

सत्सन वाटिका सम्यादकीय प्रायंसमास्न का दतिहास धीर उसके उपादान परोपना? किशोरसञ्च सरव की सहिमा गरीवी व देकारी कैने दूर हो

₹

¥

¥

त्रवाग्रन्य रोचक सामग्री।

### सत्मंग वाटिका

श्रृहिष प्रहोमु वामबे॰य । देवता विषयेषेवा छ द उरिष्टाङ बहती।। धन्यय — सञ्जोषस देवाम यम् सर्यमा मिल बण्ण द्विष प्रतिनयति तम् धह न प्रष्ट न द्वितम् ।

गटाय - (सजीपन) प्रेम से सेवा मे तपर (देव म) विद्वान् (सम्) जिस प्रजा को (ध्वमा) - सायकारी (सन्) सम्बद्धितारी (वरण) अप्ट गुणा वाना राजा (खिड) जबुधी मा (धितन्यित) दमन करके गासन करता है। (सम्) उस खन को (सह) पाप (म प्रस्ट) नहा घरता (न दरितम्) न पापजनित द स ही समती है।

श्यारया— म स मे उलस शासन के लिए तीन बान पाल- प्रक बनायों पर है। पहली ब न यह कि — " सन मे या प्रक्रिय का स्थार पर हो। दूसरी बान यह क राजा प्रयवा शासक बन सारी प्रजा का निज स ता जिस समकर प्रेम से श्यवहार करने वाला हो। तीसरी सात यह कि — " तथी से राष्ट्र की रला करने वाला में ही पी उनमें सह दुरितवृत्र म साइट पाप दुर्गनि चीर साझानित कभी नहीं होगी।

भारत की स्वाधनता से पूब हम ध्रपने स्वाग य के बर्ग रंगीन संपने सकोबा करते य म जाें रे स्वाधीन मारन गंक बार किर स रे समार का पित्र सुख बीगा बहु यथ्य र समार को गिर सुख धीर गानि स जाने क कल विवायेगा। मारत के ग्रहीं यो क पनि वर्ग निरुप्त धव तक भा समस्त समार क विवा को की रही है। यूराक ्क विश्वणीनिवस्मेलन के ध्रम्म पर से बोनने हुग सिस जरूक ने प्रनिर्मियों को नहा गामा

O you assembled scholors of earth if you desire to keep the atmosphere of the world qut and aim go to the calts in the cvs fores of diast at terfect le idve wisdom fror and than proe yourup and Amili

ा न िनी

पि " उ न । । न

रिंट् र च ल्ला नेती

म ी न न न

हुत्म जा ी । म ज प्रान्ट र

उ क " मे उनर उपके बल स्मीर प्रेस । तेति र सनी उनना प्रवार

समार में साहित्सी है सामके

# राष्ट्र की दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय

लेखक-प० शिवकुमार शास्त्रो

न तमहो न दुरित देवासी ग्रष्ट मर्त्यम् । सजायमो यमयमा भित्रो नयति वरुग्गा ग्रति द्विष ॥ सामः ४८६

\*

विवारो से वह सम्भव नहीं है। वस्तृत प्रचन भारत के सुसस्कृत स्राय लोगों ने स्रपने बदत्त साचार और वार से समस्स समाजका जनन ही

 बगर से मयस्त समाज का जल्त ही धममय बना दिया चा। उस पाबन समय की फाके जब हम धयन प्रतीत के दित हास और वार्मिक ग्रंगों से पंते हैं तो प्राप्तय होता है।

खादाग्य उपलिथद म उर ल है कि

एक नार एक पान्त्र य विषय की वर्ध ख्रिक्त पर शाक्षमवासी वनस्थी की वर्ध स्वर के विव र विशिवस्थ से सारोग न हुधा तो महा मा उन लक के नेतर्द से उत्त समय क दिखात विव र क भीर बिद्ध न केम्य देग के भ्रीविश्वर का करने वित्र न ने । राजा ने भ्रतिचियों का वासत किया भीर वस्त्र के पत्र वार्त करने का समय हो गया तो राजा ने मुल्लि मा समय हो गया तो राजा ने मुल्लि स स्नुरोव दिया कि सन भीजन का समय हो गया ही यहन साथ कोजन कर स्वर्ण प्रदेश प्रियं प्रदेश का स्वर्ण के स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर

र बाक भाजन के इस प्रस्ताय को स्तकर एक सहा पानी ने राज का धान तो एक साबक के लग प्रवास होता है। न जान किस किस प्रकार के राजकीय का सन्द होना है। उस प्रकार का धन्न मन पर हीतत प्रभाव कान का। महामा की यह भावता प्रमुद्ध निक्का किस किस किस का गान प्रवास होता है ? इस पर मनु ने व्यवस्था होता है ? इस पर मनु न न सा सम्का विक्रिक स्थान प्रकार स्थान है राजकीय है । स्थान स्था स्थान स्थ

दल्युनास कल्लाचकस्मोध्यकः। दशास्त्राज्ञेनोदशवेशसमोनपः॥ सनुद्रावश्रसोकस्थ

जा / कहाना निवक्ष कमाने हैं जीते ज्वहार गया घर रापार से जारिक करने व घरात नितक कम से जीतिहमा ना बहुत होता है और प्राणिनों के पानन और रक्षण नहीं होता उनके घर को लाने वाले के मन पर बसहत्या करने के बरावर दूषित प्रताब

पडन है। जो शराब निकालकर वेचने वाने तथा घोबी का सम्म वहला करते हैं उनके मन पर चक वाले ग्रन्न की ग्रमेका से दस गुना भी र भविक भर्तत् सी हवा करने के बराबर मन पर दुष्प्रभाव होता है। जो लोगाहर के दिलावे और वेज भूषा बारम्बर झौर ढोन से ज विकोपाजन करते हैं उनका ग्रन्त पहने से दश गुना द्रधिक स्रात् एक हजार जाव हत्य करने के तुरुग्मन को दूरित करता है। व्सी प्रकार कासन व्यवस्था में सावधानी से मर्थादाकी रुगन करने वाले राजाका अन पहले की अपेका और दशबुना **अधिक** सर्भात् दश हजार हत्या करने के समान मन को सदोप करना है। अभिप्राय बह है कि मनुष्य की जीविका इस प्रकार की हो कि जिसमे यून से न्यून प्राश्यायों को कच्ट पत्चे धौर सम्बक्त से अधिक का सरनए और पालन हो वह बीविका उत्तम ग्रीर उनका श्रान ही मन को सुद्ध रस सकता है क्योंकि धन्न का सुक्रम भाग ही तो यन का साचार है। यो तो कृषक के काग में भी हल चलाने सिंचाई करने फसल की नुषाई कटाई भीर झान निका सते समय भी बहुत कीव हिंसा होती है। कि तु कुषक के बन्नावि ने प्रास्तियों का प सन कही प्रचिक मात्रा में होता है यस क्षक का भ्रान पवित्र माना गया है।

तो महात्मा की इन बात को सुनकर धानी शासन श्वयस्था के सम्बाध में राखा धञ्चपति ने भी बात कही वह समस्त सभार के "निहस में बेबोड है। राजा ने कहा—

न में स्तेनी अपन्ये न कवर्यों न च मक्कपः। न नाहितानिर्नाविद्वाल न स्वरी स्वैदिशी रुतः॥

नेर सरे राज्य ने कोई नोर नही है, कोई कनम धीर प्रदानी नहीं है कोई सात्री हिला है। देव न करन वात्रा कोई हो है कोई सुराक्षा है। है कोई सुराक्षा है। है कोई सुराक्षा है। है कोई सुराक्षा है। उन मुख्य नहीं है। जब पुत्रम ही परिन्हीन नहीं है तो स्त्रा के तो दुगक्षा भी होने का प्रत्म है नहीं उठता। आब के बुध में सम्मान बात्रीया है। हो सम्मान होने हैं। में अपने का प्रत्म है। नहीं सम्मान होने स्त्रा का स्त्री प्रसा की देव धायार मुख्या का

कोई दायानहीं कर सकता। बहा भी सभी प्रकार के जबन्य धएराध होते हैं। इसीनिए नहां के देश बादत के सन्त की बादर्वं की बाशा रखते ने । विन्यू स्था भीनता के परवात भारतीयों का जो चारित्रिक पतन हुआ है वह स श्वयवनक है। भारत की स्व बीनता के लिए स्थान और तप करने वाले यवापि बहुन बड़ी सम्बा में बालकवलित ही बये किन्तु सब भी इजारों हैं भीर उनकी सन्तबंदना क्य बात करते ही फूट विकाती है। जासन्धर पवाब से प्रकाशित होने वासे ७ अवस्त सन् = ३ के 'पजाब नेसरी' पक्ष में एक पुराने स्वतन्त्रता मनानी श्री बलवातराध ज्यान का यन यम प<sup>्</sup>रेक्त नामक प्रम-कार के संय हए सामास्कार का विश्वरूष खपा है। "सकी प्रारम्भिक पृक्ति या इस प्रकार है ---

वे भी तक स्वन त्रना सेनानी हैं जिल्लोने धपने यो न का स्नासा हिस्सा स्वतस्त्रता ग्रास्त्र लन में भीक दिया शा-इस निक्षय के साथ कि जिस देख की धाजादी के लिए प्राज लड रहे हैं कल वह हम र धपना नेग होगा। जिसमे संभी को समानता मिनेवी सभी को गुल्ली कुल्ली भीर जुल्ली मिलेबी। प्रशासन नाफ सुबरा होगा । सभी को न्याय मिनेगा सभी प्रसन्त होंगे सभी को भरपेट रोटी मिलेगी। किन्तु ३६ वर्ष बीत आने के बाद भी देश की परिस्थितियों को देखकर निराशा होती है। क्योंकि झाज देख मे के सभी बस्तुएँ प्रभाग हैं जिनकी कि स्वतंत्र भारत ने कल्पना की गयी थी। साम न्वाय कही है ही नहीं। एक व मान्य माव-रिक को कोई पूछ्यानही। गरीब की कही सनवायी नी । पहुन भीर दश्दके वाले दनदना रहे हैं। कानून का डर नशी। बहु बेटियो का सम्मान सुरक्षित नहीं। क्य यह वही देख है जिसकी झात्रादी के लिए बलियानियों ने अपने जीवन की जेंट चढाई भी आज हमे फिर उसी प्रकार के व कलाव को जाने की जरूरत है, जिस प्रकार का हम तन् ४७ में साबे वे ? ' शाख भारत का प्रवृद्ध वग इसी प्रकार की खूँडा से व्यक्ति है।

> जने झावादी लडी तब झपने सबने और वे १ हाल घपना झाल जो है वो कभी सोचा न चा॥ प्रान यह है कि हम देश व

वो कभी क्षेत्रान था।। प्रप्तयह है कि हम देश को इस परिस्थित में कैसे परिवसन लासक से हैं। निराझ होकर व ने स तो हानि ही हानि

> हन कने से हल होते हैं पेचीया मसायल। बर्नातों कोई काम मी स्नासान नहीं होता।

वेद के इस म न में भारत के मान सिंक नमोमण्यल में छायी इन निराशा की काली बदलियों को छाउने के ही महत्त्वपूज उपाय हैं। इनमें पहुजा उपाय (सेव पुष्ठ ६ पर)

# ★ वचन-सन्देश ★ आत्मविश्वास

मनुष्य को प्रात्मा मे एक अपूर्व सलौकिक सकिन भरी हुई है जिसका वह विवेचन नहीं कर सकता, किन्तु समय-समय पर वह उसका अनुभव अवहर करता है। उस शकिन में अद्भुत बल है। वह शक्ति मनुष्य को आगे बढ़ ने का प्रोत्साहन देती है। वह शक्ति मनुष्य को बड़ों से बड़ी कठिनाइयों में सफलना प्राप्त कराती है। वह शक्ति है अत्मित्व है। इसिन है आत्मविश्वास। हमारे प्रत्येक कार्यं की नोव आत्मविश्वास पर ही जमी हुई है। आत्मविश्वास के बिना किसी भी कार्यं में सफलना पाना आकाश के ज्योनिष्मान् नक्षत्र को ताड़ने के समान है।

प्रात्मिविश्वास का दूसरा नाम है इच्छाशिनत। धापका भविष्य कव चमकेगा? धापका भाग कव जागेगा? इन प्रकृतों के समाचान को लोज में कभी धाप दैवजों की शरए। मे जाते हैं, हस्तरेखा विशेषक्षो क पंस बैठते हैं परन्तु यह नही जानते कि इन प्रश्नो का निराकररा ग्रापे हो पास खिया हुआ है। यह सब आपके आत्मविश्वास या हढ इच्छा- शिक्त पर निर्भर करता है। यह एक ऐसा बैजानिक तथ्य है जो आपके मुर्दा जीवन मे अमृन की वर्षा कर सकता है, जो आपके निराशा को आशा मे परिवर्तित कर सकता है, जो आपको निराशा को आशा मे परिवर्तित कर सकता है, जो आपके विपत्तियों के बादलों को तिरोहित कर सकता है, जो आपके हृदयल्पी मन्स्थल मे आशा और उत्साह को लहलहानी खेती उत्पन्न कर सकना है। इसके लिए बस आप अपने हृदय मे दृढ विश्वास परेदा कीजिए। जब आप अपनो आत्मशक्ति पर विश्वास करेगे तभा आपको उन्नति का मार्ग स्पष्ट होता जाएगा।

सम्पादकीय

# पाकिस्तान के जुल्मों से अहमदियों में बढ़ता हुआ आक्रोश

—वार्ता—

पत्राव के जिला गुरुवासपुर का छोटा ता कस्वा कादिया इन दिनो ग्राकोश से छदयटा रहा है। कादिया दुनियासर के दो करोड से प्राचिक ग्रादिमयों का ग्राम्याभितक केन्द्र है और इस ग्राकोश की वस्त्र है गाकिन्नान से रहने वाले ग्रहमदियों पर जुल्म का काया जाना।

कादिया में ब्राह्मदिया फिरके के समीर निर्वावासिस प्रहमद का कहना है कि यह उत्पीदन राजनैतिक है न कि वार्मिक। सहसद साहिब जनाव निर्वा गुलास सहसद के पीते हैं जिल्होंने १८-६ में बहु-सदिया झान्दोलन की जुलसात यह कहकर की थी कि जिस ससीहा ने इन्सान को रजी गम से निजात दिलाने की बात कही है, वह ससीहा

मिजाँ वाधिम साहिब का कहना है कि हमने इस जुल्म के बारे में मानवाधिकार आयोग को भी लिखा लेकिन तेल के बनी भरव देशों के प्रभावहीन होने के कारएग वह हमारा मददयार नहीं बन सका। हम ने प्रधानम-त्री राजीव गांधी को भी इस बाबत लिखा है लेकिन सरकार का कहना है कि यह पाकिस्तान का भदकनी मामला है लेकिन वे भ्रापत तरह से उनको मदद करने। उन्होंने पाकिस्तान सरकार को भी कई पत्र लिखे लेकिन सभी तक कोई जवाब नहीं मिला

पंजा वाधिय का कहना है कि पाकिस्तान से पिछले तीन महीनों से पान बहुमिंडियों की हत्या कर दो गई। इनसे से एक जनाव वाधिय के चनेरे साई ६० साल के प्रालों के डाक्टर प्रकुल विन प्रस्तुल कादिन थे। इस सामले से प्रभी तक कोई गिंग्यमारी नहीं हो पाई है। मिर्जा वाधिस का कहना है कि पाकिस्तान से जब भी किसी सरकार को प्रपात तकना वगमगाता नजर प्राता है तो नह प्रहुमदियों हुमा व १९७३ तथा १९८४ से भी यही कहानी वोहरायी गई। १९८४ में इन लोगो का गर मुस्लिम प्रत्यस्थक घोषित कर दिया गया। इसलिए उत्तरीहर की नजह राजनीतिक है न कि प्रामिक। उन्होंने बताया कि उत्पोदन का नगर दौर १९८३ से गुरू ह्या जनकि लोकनव बहाली के लिए विविक्त नाकरमानी घान्दोलन चुरू किया गया। या।

उस समय पाकिस्तान में एक ध्रफ्ताह यह उड़ी कि जिया साहिब खुद कादियानी थे। वस फिर क्या था वरनल जिया तिलिमला उठे। उन्होंने ऐतार कर दिया कि उनकी नजर में ब्रह्मदिया काफी से भी गये चुलार केंद्र क्षेत्र १९६४ में उन्होंने एक घ्रष्यादेख जारी किया जिससे बहुमदियो पर प्रजान देने सपने वर्मस्वकों को मस्जिद कहने या युसलमानो की तरह से ज्यवहार कृषी पर प्रतिबंध लगा प्रावधान रक्षा गया। भिजी वाधिम नै बताया कि श्रहमदिया धर्म गुरु मिर्जा ताहिर श्रहमद को इस श्रम्थादेख के जारी होने के एक दिन बाद ही लक्ष्म बागना पडा। क्योंकि तैनिक खरकार ने उन्हें भी गिरपनार करने की ठान ली थी।

पाकिस्तान के कटटर मुल्ला चाहते हैं कि ग्रहमियों की जमीन जायदाव कन्त कर सी आये तथा उन्हें सरकारी नोकिरियों से हटा दिया जाए। कादियों में ग्रहमियों ने काशिकारिक पत्र बदर के अनुसार पाकिस्तान में ग्रुल्लाघों ने ग्रहमियों को सनाने का एक नया तरीका खोजा है। कोई एक मुख्ला एकाएक गायब हो जाता है और अहमिययों पर उसके गायब होने का इल्जाम मठकर जनता को अनु-मादी बना दिया जाना है। ऐसे हो एक मौनाना ग्रमनम कुरेसी इन दिनो गायब है और भन मुल्ला लोग यह माग कर रहे है कि इस मामले की तहकोकात करने के लिए मिर्जा ताहिर को लदन से यहा लाया जाए।

'बदर' के सम्पादक लुर्जीद घहमद प्रानवर का कहना है कि उत्पीदन के इम नये दौर में हवारी होते हो के प्रहमदिया तोज हर पाकिस्तान में भाग गए है। लेकिन इसका एक फायदा वह भी हथा कि पाकिस्तान में महमदिया वर्ष प्रसार में बहुत वृद्धि हुई है।

पाकिस्तान में इस समय ५० लाख अहमिया हैं। परिचम्र प्रफोका में ३५ लाख आ न में एक लाख। इसमें में १५ ५०० कादिया में इहते हैं। प्रह्मिया अपने वार्तिक साहित्य के प्रलास आर्मिक माहित्य छापते हैं। अहमिया गुण्यो विद्वान प्रपत्ते नाम के आगे जानी बिताब लगाते हैं। कादिया में प्रहमिया फिरके के लिए सब से पवित्र स्थान मिर्जा गुलाम प्रहम्प की कब है। १० एकड में फंना यह किस्तिकत विहास ती प्राप्ति के लिए सब से पवित्र स्थान मिर्जा गुलाम प्रहम्प की कब है। १० एकड में फंना यह किस्तिकत विहास ती प्राप्ति के अपनी वसीयत के एक तिहाई हिस्से से एक दमवे हिस्से को जमानत के नाम करते हैं।

बहिस्ती मा बोबारा तकरीबन पूरा भर जुका है। बदर के सम्पादक का कहना है कि जब पाकिस्तान में हानात ठीक हो जायगे तो वहा हान में मारे गये धहमदियों की नाशों को यहा नाकर रचना नाकर चना वाजा जाएगा। सम्पादक हारा यू ही हल्के बन्दाज में करी गई यह बात चौकाने वाली है। लेकिन हकीकन यह है कि तर बन्मिदया मासिरी पिट्टी यही पाना चाहता है। कादिया में अन्मदिया नेता सालिस्तान मान्योंकन को मदद देने के मारोपों से साफ इन्कार करते हैं। उनका कहना है हम पूरी तरह से मजहबी लोग हैं नियानन से हमारा कोई सरीकार नहीं हैं।

इतिहास का ग्राप्ता दर्जन होता है। केवल घटनायो ग्रीर व्यक्तियो ने विवरण का नाम ही इतिहास नहीं है मौर न सन् भीर सबतो की तालिक एँ प्रम्मुन करना ही इतिहास का लक्ष्य हाता है। इतिहास लेखन से पूर्व वक को धपनी विचार-घारा भीर इंडिट को मुस्थिर करना पडता है तभी वह इतिहास प्रणान के कार्यको दायित्वपुरा ढग से निभा सकता है। विभिन्न देशों की ही भाति संस्थाओं भीर धान्दोलनो के भी इतिहास लिखे जाते हैं। भार्यसमाज के पूर्ववर्ती नवजागरण के महान भादोलन बहासमाय का इतिहास प० शिवनाय झास्त्रो की यशस्वी लेखनी से लिखा गया । राजा राममोहन राय द्वारा प्रवर्तित उस धार्मिक सुधार धादो लन का यह प्रविकृत एव प्रामाण्यिक दस्ता-वेज माना जाता है। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का विस्तृत इतिहास स्व० डा० पदाभि सीतारामैयाने लिखा या जो इसदेश के स्वाबीनना झारे लन का तथ्य -श्रित इतिवृत प्रस्तृत करता है।

द्यायमनाज की स्वापना का एक शताब्दी बीत गई। जगर से एक दक्षाब्द भी त्यतीत होने जा रहा है। मत संसा-वश्यक है कि बायसमाज के इतिहास के से जब विषयक प्रयत्नी का से साजीसा लिया जाय । हमारी जानकारी के सनुसार ११०३ ई॰ में महतारा**चाकु**च्या जिलित उर्दू ग्रद 'तारी से ग्रायंसमाज इस विषय का प्रथम प्रत्य है। महता जी स्वामी दयानन्द के समकाशीन तो वे ही उन्होंने धार्यसमात्र की स्थारना घीर उसके प्रार स्मिक विकास को प्रत्यक्ष शीके रूप से देशा था। निश्चय ही वे प्रपने इस ग्रव मे विगन शताबनी के यन्त तक का ही इति-बृत्त प्रतुन करसके। मुख्यतयापत्राव के धार्मसमाज का इतिहास हो उन की विवे-चनाकाविषय बना।

ननपदवात् लाला लाजपतराय ने ध र्यसमान तथा उनके प्रवर्शक का ऐति-हासिक बुलान्त प्रस्तुत करने का महत्त्व पूर्ण प्रयत्न किया । जनका ग्रन्थ 'दि श्र यं-समाज १६१५ ईं में लागमैन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी नदन से प्रग्नेजी भाषा मे प्रथम कार प्रकातित हम । लालाओ द्यार्यसमाज के उन घड संसम्बन्ध रखते वे जो वालजदल प्रथमा कल्चड पार्टी के नाम से जानाजात था। फलत उन्होने **धा**र्यसमः ज की स्थापना उसके सिद्धान्ती त्रवा उनशी प्रवृत्तिया का मूल्यः कन उसी इडिटकोमा से किया है जो उन्हें ने मा उनके दल के काय क्ली भी की स्वानाय था। कालास्तर मे इसका एक अन्य संस्करण द्मतरचद क्पूर एण-सन्स लाहौर ने प्रकाशित किया। ११६७ ई० मे प्रिसियल श्रीराम शमाने इस प्रन्य का सम्पादन कर हिन्दी ब्राफ दि ब्रायसमाज' शीवक से इम पूर प्रकाशित कराया। सम्पा-दकने मूल ग्रन्थ मे धनेक समयोजित

## आर्यसमाज का इतिहास और उसके उपादान

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

परिवतन किंग है तथा नुद्ध स्वर्थित परिशिष्ट भी जोड है। यदाँग नाला लाजपत राय ने इस बम्ब को लगमग ७० वर्ष दूर्व रिल्मा भा किन्तु पन की प्रमान का लाजपत राय ने इस बम्ब को लगमग ७० वर्ष दूर्व रिल्मा भा किन्तु पन की प्रमान सर्वोगिर लेखक के इस पायोकन के सर्वोग्यना जुड रहने एव विपय विवयन की वस्तुनिक्टता के कारण माज भी यह प्रमा माज सर्वो स्वर्धित के स्वर्म पाय माज भी यह प्रमान सर्वो स्वर्धित स्वर्ध

षयेजी भाषा से प्रसिज जनता के लिए बाहे लाना नानपनराय की उपर्युक्त पुस्तक उपयोगी रही हो, किन्तु सावस्य-कता तो स्व बात की वी कि भारत की पाउनापा हिन्दी ने सार्यसमाज का प्रामा-पिक दिल्हाण निकद किया जाता।

गुन्कुम महाविद्यालय ज्वालापुर के भूतपूर्व मुख्याबिच्डाता धीर धाचार्य प० नरदेव शास्त्री ने एतद् विश्वयक प्रयस्न किया। उन्होने दो सण्डो मे धार्वसमाज का इतिहास जिलाओ क्रमश १११८ तवा १६१६ ई० मे छपा। वस्तुत नरदेव गास्त्री लिखित यह इतिहास तो इतिहास का विद्यानात्र ही या। प्रथम भागमे पार्यम्याज के प्रवर्तक का परिचय इस मस्या के लिदान्तों का निरूपण तथा द्यार्थसमात्र की ग्रन्थ वत पन्थों से तुलना विषयक कुछ प्रध्याय वे विनमे इतिहास के तत्व तो प्रत्यस्य मात्रा म ही थे। इन श्रध्यायो में इञ्जूकाल अपन तो ऐने लोनो ने किया था जिनका आर्थेसमाज से दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। दितीय भाग में धार्यसमाज की प्रमुख सस्थाधी व्यक्तियो समाचार पत्री धादि का विवरण सग्रह करने में कि'ञ्चत् परिकाम तो किया गया या किन्तुदानो ही भागो मन तो इति गमकार का मूक्ष्य पर्यवेशका ही दिस्या देनाया ग्रीरन इस सस्या के प्रभावगायी एव लोकप्रिय रूप की ही कोई फाकी उभरती थी। इसके विप-रीत लेखक ने इस ग्रन्थ में नुख ऐसे विकादस्यद मही को उठाया जिनके कारण ग्रागे चलकर ग्रावेंसमाअप में लेखक भौर उसकी इस कृति को तीव झालोचना का शिकार बनना पढा। लेखक ने स्वामी दबानन्द के बदमाध्य को लेकर कुछ बालो ननात्मक टिप्पणिया इस सन्य मे

समाविष्ट की।स्वामी जी के माच शिष्य

किन्तु कामन्त्रत से बार्यमान को खोड कर बोरांकि कितिय किया हो बार्न वाले प० भीमनक सर्माका वो जीवन इस सम्य म नकनित किया गया जह सर्मा की के पुत्र प० बहुतदेव मिल द्वारा लिला गया चा। इसमें धनेक धारी-जनक इसम वे। कहा स्वामी जी की सपेका प० भीमतेन को प्रक्रित एक्स निक्र किया गया था। सस्तु प नश्देव साली रिचल नह सम्य धायसमाजियों का कीपभावन ही बन नका।

धार्यसमाज के महान् नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने धार्यसमाज के उपयुक्त इति-हास लेखन की धावश्यकता तथा इस कार्यकी गुस्ता को भनी भौति सनुसद कियाचा। वेस्वयं भी तो धार्यंतमाच के इतिहास निर्माताची मे वै। उनकी हार्विक इच्छा वी कि वे स्वय यह कार्य करें। उन्होंने बार्यसमाज के इतिहास की उपावान भूत प्रभुर सामग्री का सम्रह भी कर रक्का था किन्तु झपनी बहुमुक्ती प्रवृत्तियो तथा स्थम्त कार्यक्रम के कारण वे इसे पूरा नहीं कर सके। तथापि उन्होंने धार्यसमाज के इतिहास लेखन का यह गुक्तर कार्यं सपने योग्य पुत्र पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के सुपुर्व किया। अपने पिना की बाजा को शिरोचार्य कर इन्द्र जी इतिहास लेखन के कार्य में जुट नये। वे स्वय ही दतिहास के गृहन ग्रद्भेता तथा निवाहस्त नेसक थे। फलत १६८१ कि॰ मे उनके द्वारा विकाहपा वार्यसमाज के इतिहास का प्रवास खण्ड प्रकाश में बाबा। कतिपय कारगो ने इन्द्र जी इस इतिहास का द्विनीय लण्ड उस समय प्रकाश्चित नहीं कर पाये किन्तु पर्याप्त समय पक्कात् उन्होने सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि नभा को धर्मनगत्र के इतिहास को प्रकाश्चित कराने का वाधित्व बोच कराया भीर वो लण्डो मे बार्यसमात्र का इतिहास' निस्त कर उक्त सम्या से प्रकाशित करासके। २०१३ वि॰ मे प्रकाशित इस मन्य के प्रवस लग्ड में स्वामी दवानन्द के प्रादु-र्भाव से पूर्व का इतिहास, श्वामी भी के युगकी परिस्वितियों का विगदर्शन तथा उनका बीवन वृत्त दिया गया है। साथ ही धार्यसमात्र के प्रारम्भिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन भी किया गया है। द्वितीय भाग में आर्थ-समाज के इतिहास की उन घटनाओं का विवेचन प्रस्तुत किया नया है जो इस शताकरी में चटी । हैवरावाद विकास के

सरमायह पर्यंता घटनाथक का विवरण वेने के प्रथात में कुछ उपयोगी गरिषियद जोडे हैं विनमें स्वार्थ जाना में कुछ उपयोगी गरिषियद जोडे हैं विनमें स्वार्थ जाना कर कर कर कि मार्थ मार्थ मार्थ के स्वार्थ जाना कर कर कि मार्थ मार्थ के स्वार्थ जाना के स्वार्थ जाना कर कर कर की विवेषना की प्रयोगी की विवेषना की प्रयोग की विवेषना की प्रयोग की विवेषना की प्रयोग की विवेषना की अपयोग की कि जाना कर की विवेषना की अपयोग की विवेषना की प्रयोग की विवेषना की प्रयोग की की जाना कर की विवेषना की स्वार्थ कर की विवेषना की स्वार्थ कर की विवेषना की विवेषना की विवेषना की विवेषना की विवेषना की विवेषना की स्वार्थ कर की विवेषना की की भी पीठ कर की विवेषना की वि

प० इन्द्र जी रिवत इतिहास यश्चपि विवरण प्रधान ही ग्रविक या तथापि एरण्डद्रम न्याय से से सतीयक्षतक बहा जा सकता है। उहोने श्रायसमाजी के विभिन्न सम नो द्यार्थनमात्रो की गिरो-मणि समाधो तथा पूरानी ल्व पत्रिकाधी में उरनब्ध वृत्तान्ती के प्राधार पर ही इस इतिहास का लेखन किया था तथापि इतिहासकार की स्थ्य विवेचना तथा वैज्ञानिक लेखन गैली का इसमे बहुत कुछ ष्माव ही दिन्दिगी नर होता है। उधर भारतवर्षीय भयं कुमार परिषद् की परीक्षाओं ने धार्मसमाज के इतिहास की पाठ्यक्रम के रूप में स्थान मिल चुका बा। फलत एक ऐसे इतिहास की बाबश्यकता बी जो खात्रोपयोगी हो, सुबोध बीबी मे लिला वया हो तथास किप्त भी हो। प० हरिश्चन्त्र विश्वालकार ने इसी द्रस्टि-कोता से प्रायंसनाय के सक्तिप्त व सुबोध इतिहास की रचना की को वर्षों तक परिषद् के पाठ्यक्रम मे नग रहा। सार्य कुमार परिषद् भीर उसकी परीक्षाधो के समाप्त हो जने पर इस उपयोगी सन्य की पुनर् झावृत्ति भी नहीं हो सकी।

१६७६ ई० के बस्त में सुप्रसिक्ष इति-हासज्ञ डा॰ सत्यकेतु विद्यालकार ने बार्यसमा । के इतिहास लेखन व प्रकाशन की एक महत्त्वपूर्ण योजना बनाई। इस योजना के प्रन्तयत ७ कण्डों में बार्य-समाज के समग्र इतिहास को प्रकारित किया जाना है। श्रव तक इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थमाना के तीन सच्छ प्रकाशित हो भुके हैं। प्रथम सन्द के धन्तर्गत भारतीय इतिहास का विस्तृत उह पोह करने के पश्चात् नवजै।गरण के बान्दोलमी की पृष्ठभूमि तथा उनके धाविभवि की परि-स्थितियो का विशद मूल्याः न किया गया है। तदनन्तरस्वमी दयानन्दके जीवन-वृत्तको किङ्मिवत् विस्तार से प्रस्तुत करने के पश्चात् उनके निधन काल तक की बार्यसामाजिक गतिविधियो का सम्बक् विचार किया गया है। इस इति-हास का तृतीय सण्ड १६=३ ई० मे प्रकाशित हुमा, बिसमें पार्यसमाज के शिक्षा विषयक भवदान का विस्तृत विवे-चन किया गया है। प्रम्थारम्भ मे भारत

(क्षेत्र वृष्ठ ११ पर)

बृक्त कब्रहुमहीं फल भर्ची, मदी मंसर्वनीर। परमारथ के कारने

> साधुन घरा सरीर ।। पिवन्ति शव्द स्वयमेव नाम्म स्वय न जारन्ति फलनि वृक्षा । नाइन्ति सस्य क्षेत्रु वारिवाद्वा परोपकाराय सना विद्युतय ।।

यह सस्य है, वृक्ष कभी फल नही शाते, यचारि कम उन्हीं में समते हैं, नदिया जल नही पीती मेच की महत्ता भी धनन की हरियाली के हेतु हैं, पर वह धन्न मही साता। ठीक इसी प्रकार सण्यन पूक्ष्मों का जीवन परमार्थ या परोपकार के निए होता है। यूगो से मानव परोप-कार के विषय में यहा सीचता तथा करता बाबा है। परोक्कारियों ने कभी भी 4इ नहीं सोवा है कि परोपकार के पश्चात उन्हें किस फल को प्राप्त होगी। बे तो निज्हाम आव स लोक हित ने लये रहते हैं। बडारहो पुरालो मे महाभारत-कार महाकवि व्यास के दो ही तो खार वचन है-परोपकार से पुण्य होता है भीर परपीवन स पाप।

परोप्तार पुण्यास पापास परपोडनस्

सबसुष, उनके ये बषन बर ही मुस्य-बान और विस्तास है। परोपकार सर्वात् बुखरों के हुन्न से प्रवित्त होकर उनकी सहायतः करना। यही तो परोपकार है। यदि हम सीच चोनकर देनों तो प्रवृति के स्वर्ज पत्नी पर परोपकार की सनीवनत साकर्षक कहानिया सकित पासेंगे।

परोरकार बहु बगे हैं, जो वसी का वर्ग कहनाता है। धन्य वर्ग मफीन हो सकते हैं विस्तरी पेक से अवे-पुरे का हात होना सम्भव नहीं, किन्तु परोपकार वर्ग महात है, जो जीव मात को सुक मजीव तब धानन धनिक से मोत मीत कर देना है। परोपकारी व्यक्ति स्वय स्वादें हीन होता है। किन्तु उत्वका परोपकार हार ही उच्छी समर निष्ट बन जाती है। विस्तु तका हो है। किन्तु उत्वका परोपकार हो से स्वति सन जाती है।

## परोपकार

#### श्रमित प्रनाप नारायस सिंह

स्वत कर जाती हैं। विकेशन तथा हिंदा मान् को वे उत्पान विश्व में नहीं विकास वह एरोफशाने की निमता है क्वोंकि विकेश को मत की दिन्न वे देखा व उत्पान किया जाता है। दुविशान व्यक्ति उतारी किया को जावना पर छा जाता है। कियु केवल परोपकारी हो वहें (हमारे स्मृह को) जीत पाता है। हरि सनन्त, हरि कवा सनता की माति परोपकार की कवा भी समन्त होती है। वह प्रोपती का जीर है निवका कोई सन्त नहीं।

महर्षि वयानन्द का जीवन परोप-कारी जीवन रहा। उनकी एक घटना समिथे—-

एक बार की बात है कि स्वामी जी युनसाम जगह ने ठहरे हुए थे। वे शीव बारहेवे। एक वैश्याकी एक नाने ने फसी हुई बी। गाडीवान वैसी को शेट रहाथा। स्वामी जी ये देशकर वहा पर पहुचे और गाडीबान से बैसी को बाडी से बोलकर सलव करने को कहा और स्वय बाडी को कवे लगाकर बाहर निकास विया। स्वामी जी के परोपकार के साब बाब उनकी खाँक्तका भी परिचय मिलता है। हमारे देश में सनेक परोपकारी हुए हैं—बैसे किवि राजा। उन्होंने एक पक्षी की रक्षामं भएना मास ही नहीं शरीर तक दान दिया। दशीचि के विषय मे नहीं जानता जिन्होंने जीते की परहित मे धस्मिदान कर दिया। इन महामृपरोप-कारियो की नावा कवियो की वाणी में सवा धमर रही है, केवस परोपकार के कारण-

रहिमन पर उपकार के, करत न पारे बीच। बांख दियो शिवि भूप ने, दीन्ह्यों हाड दवीवि।। निरामा जी का जीवन परा वार का एक सनूठा उदाहरण है ---

एक समय की बात है कि निराता ची पूर्णंत नया शाक्त भोड कर इलाहा बाद में बूम रहये। उस समय सर्दी का मौसम था। एक निकारी सर्दी से ठिठर रहा था। निराना भी न उसके दूस से इक्ति होकर उस धपना नया शास उतार कर उसे बोडा दिया। यही तो परोपकार है। ऐसी प॰नानिराक्षाको के बीवन में कई बार घटी है। ब्रह्लास्था गांधी जी का अम्पूर्ण जीवन परोपकार का ही उदा-हरल है। उन्होंने हरियन वस्तियों मे मूम मूम कर दलित हरिजनो को स्नेष्ठ तमा परोपकार किया। कुळ क रोगियो को सेवाकर उन्हें ढाढस दिवा। परोप-कार की महला का क्या कहना 'यह वह जादू की छड़ा है दिसके स्पन्नमान स कलह, राग स्वाय हिंसा मय लालच चूला ईर्व्या बादि सभी वृतियो का सत हो बाता है। परोपकार से पूग कावारण सेसावारसा भावना भी गौरवपूरण हो जाती है। तुलसीदास जीन कहा है—

परहित सरिस धर्म नही आई पर पीडा सम नही श्रधमाई॥

ये परितया है बोस्वामी सुक्षशीरास की के रामचरित मानत की। वास्तव के परोष्कार स बढकर इस सकार ये कोई वर्ग नहीं है। सकार में सत-प्रवत, मते-बुरे बोनों रहते हैं। एक व्यक्ति दूबरे की सकाई के सिए प्रपता सा कुछ न्योक्षावर कर देता है। धौर हुसा प्रव सर की ताक ये रहता है कि कम मौका सिकों कि दूसरे के सामने की परसी हुई बाभी पर हाथ साफ कर से। हैं सोग दूसरे की भनाई करने को कौन कहे, दूसरो की प्रश्नसा सुनने तक को भी नैयार नहीं होते।

महावीर जी मानव शरीर की सार्थ कता परोपकार में ही बतकात हैं—

परोपकार संहा नतमात ह— परोपकाराय फलिन वृक्षा , परोपकाराय बहन्त नद्य । परोपकाराय बुहुन्ति नाव परोपकारायम्बि गरीरम् ॥

बातन में मानवता का चरितरन ही परोपार की आधार्गामा पर टिका हुग है। बाज तक इस ससार मे जो भी श्रमर हुमा है पशेपकर के ही कारण हरा है। परोपकारा व्यक्ति जन-जन के हुन्य को बिना दिसी प्रयास से जीत नहां है। लोगतत्र के इस युग में बनता जना-र्दन को प्रसन्त भीर वस मे करके स्वतः जनताजन दन वन सकता है। वह कभी कभी कल के अपेट मे नहीं सा सकता। su भी दीति से वह भजर अमर हो जाता है। यरान्कारी व्यक्ति किसी देश भीर श्रीमा के धन्नगत बाजा नहीं जा सबता है। व्हदूती का सुद्धी बनाकर स्वत भी सुक्की होता है परोपकार के "सी महत्त्व को स्वीकार कते हुए राष्ट्र दिव सै चिली-शरण गृप्त ने टीक ही कहा है-- वही मन्द्य है कि ज मनुष्य के लिए मरे।

अस प्रत्यक मानव का क्लोक है कि कह परोपवार के लिए सर्वेश मध्येक्ष्म है कि कह रे । हो स्वता है इसके लिए काटो की राहु पर प्रवाद की की स्वता है इसके लिए काटो की राहु पर प्रवाद की की आवश्यक ता नहीं है। हम परि स्वाच्यक ता नहीं हो परो जार के बाद पर पर पर सर्वे समर्जे। कहा

ह--परोपकरणा गया जानति हृदय सताम्।
नहयन्ति विषदस्तेषा सम्पदस्तु पदे पदे॥

स्थित् – किन सज्यनो के हृदय में परोपकार निवास करता है। उनकी विपत्तियानक होती हैं तथापगपा पर सम्पत्तियों बाती हैं।

ग्रा॰ हाटा, पो॰ नदौली देवरिया

एक बार दिल्ली का मुतन बावशह क्षकार बहुत बडी तेना लेकर वित्तीव सीतने माया। वित्तीव के राखा जब सीतने माया। वित्तीव के राखा जब सिंह बहू देककर वर के मारे पित्तीव क्षोबकर दूसरी बबहू मान गये और उनका केनापति बयनन शहर की राजा करने सबा। पर एक राख की रहा के समझ बाहू से वहें ने निक्का हासा। वित्तीव सिंहासी सब एकरम चकरा चुठे, पर इतने में ही एक वित्तीव का सहादुर

उस बीर बालफ का नाम बा पुरा। उसकी उस केवल सोमह वर्ष की वी। पुरा वा तो वालक पर वटे-वटे वहादुर सारविजों के स्थान वह प्रशासाहती और

सबका स्ववेश की रक्षा के लिए मैशन मे

द्या वया ।

## किशोरमञ्च-

## वीर बालक पुत्त

बलबान् था। उसकी माता थीर बहिन और स्थी ने दुढ़ में बाने के लिए उसे बुती से बाजा दे थी। नहीं नहीं ने भी उस समय घर में न बैठकर हमिबार सेकर सपने देश की रजा करने के लिए बड़े उस्लाह के साब युद्ध भूमि में जा

शक्तवर की सेना वो वानों में वेटी वी। एक बाव पूरा के सामने सबता वा भीर हुवरा नाप दूबरी भीर पुत को रोकने के लिए था रहा था। वह दूसरे नाव को वेगा पुत की ना, पत्ती भीर विश्व का पराइन वेकर विकत हो वती। वीपहरके वो कबदेन बक्ते पुत उड़कों गात पहुँचा, वेखता क्या है कि वहित सहाई में मर चुकी है, नाता भीर क्यो बहुक की गोली खाकर बसीन पर तब-फ्ला रही हैं। पुत को गाल वेककर माता ने कहा— बेटा हम स्वय जा ही है तू
लढ़ाई करने जा। लढ़ ररज म भूमि की
रक्षा कर या मरकर स्वय में जातर हम छै
मिकता। इतना कहकर पुत्त की मानात ने
स्वाभी की और भीर आपने बेसता हुए प्राण
स्वाभ किया। पुत्त का विशेष उरसाह भीर
भीरतास फिर शाबु खेना का भुवाबना
काया। माता की मरत समस की
साम्रायसन करने में उसने तनिक भी
श्रैर पीखे नहां किया भीर ज म भूमि के
लिए सहते-सबते प्राण स्थान दिय। इस
मंदार स्वर्ण प्राण स्थान दिय। इस
मंदार स्वर्ण प्राण स्थान दिय। इस
मंदार स्वर्ण प्राण स्थान दिय।

व्यासपीठ -

#### उपनिषत् कथा माला-७

## सत्य की महिमा

#### प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

बदो ध्रयवा उपनिषदों के समय में उन्दीं के पठन पाठन का विचान था। स्रामार्थ शिष्यों को यही पढाले में। सर्वे भाषारण इन्हीं का उपदेश सुनत थे। इसमें सत्य की बढी महिमा गायन की गई हैं।

#### सस्यमेव विश्वयते मानृतम् ।

धर्वात् सन।ई सदैव विजयी होती है धीर भर सदा पराजित होता है । मध्य-कालाम भूग्यलवन हो अस्य एसाही सकता 🦫, परन्तु झन्त मे सत्य ही की विजय होता है। जिस देग में सस्य का मूण-गान होता है उसकी धवस्थाधच्छी होती जती है। सब सोविए 'सत्य क्या 🖁 ? एक मनुष्य को बोलने में तो देर समानी चाहिए क्योकि बात सदा क्षोलकर बोलनी चाहिए । द्राप कहे, "लाबुजी! मोजन हमारे घर सन्ता।" यदि मेरी उच्छाही तो "हाँ कर देना चाडिए। यदि इच्छा नहीता'ना' सत्य का धनित्राव यही है कि सत्य बोलाभी जाये भीर उसका पालन भी किया जाये। यह कोई कम काम नहीं। भहाराजार सबन्द्र जी जिनके झाण गुण गान करते हैं जिन्हे झाप मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं, भीर रामायण मे जिनका बुल-गान कन्ते हैं जिन्हें चाप ईव।र का धवतार मानते हैं यद्यपि वेद एसा नहीं मानता भीर शास्त्री का सिद्धान्त भी ऐसा नही तथा प्रार्थसमाज भी ऐसा नही कहता। उन्ही राम मे जहा धनेक गुण थे, वहाँ एक बडा मारी गुण यह भी चा कि वे सर्थ-बादी के बीर सत्य के विवा दुख नही बोसते वे ।

स्तरण कं प्रभाव से प्राज्ञ सार्यक्रमाज स्वर होता जाता है। अनुष्य का बीरव बहता है। पर-तुक्व ने जब बहुसन्य बोल्ता है और सत्य का पासक भी करता है। यस व जें ताच से भीर फिर देखें कि उन्ने दों के सिद्धान्त का तारार्ग नश

सत्य नाएक लक्ष्मा और भी है, जो दीनो नालो में एक जैसा रह नहीं सत्य है। सत्य वह है जिस्सा प्राप्त हैन प्रस्ता को पदाथा विजन समय पर बदल जय एक ने 'तन्न कहने हैं। परमात्मा सर्वय एक जैना नहने साला है। वेलिय एक मनुष्प मत्य नालत' है और क्षस्य का पानन भी करता है। परन्तु वह मृति-पूजा

परसारमा तीनो नाल म सन्य हैं परन्तु महांत नहीं। महांत, 446 कार्य-मृद्यं कहते हैं, उबका नाता तो नहीं होता परन्तु बहु बदलती रहती है। कभी बचार के क्य से चा बाती है धीर कभी फिर महांत नन जाती है। यह सर्व्य ही पर-मारवा न विशेष सक्षम है।

प्रकृति भी सत्य है परस्तु उचका परि स्थान होता है। यहने प्रस्तु उचका परि स्थाद प्रदेश स्वकट हो जाने को ही परि-स्थान वहते हैं। जब प्रकृति से ही परि-साम है तो उसकी नगी हुई हर एक वस्तु में भी परिजय प्रवस्य होगा। देखों एक खोटा ता वन्या है उसमें दान नहीं, वशोक स्व , गूठ नहीं बोनता। परस्तु वस वह सुका-सहस्या में सा गया तो उसके वासपन का परिणाम हुता, फिर बुदाये में भावा तो पुत्रा प्रस्थान ना परिणाम हुता। इसिए तुम प्रकृति में काम से सकते हो। पर तु स्थान करने के कारण से ही वह तीन कालों से सस्य भी नहीं।

प्टह वी साल ही बीत है। वहीं बीत से यात्री स्वये से। उन्होंने समनी मारत्वन की यात्रा का दिलहाल विकास है। इस स-य जिनके पान कर पानी मा से मे, इस निजना वा. सड मारतीय मितिस केता किया करते थे। कोई स्वपने पर से ताल नहीं स्वय ता चा। सदि यह यात्री लेसक मैनस्पनीय साल यहा स्वयं तो कहें कि निक्स या, नह निवचन की होत हो या। सब तो यहा किन दहाड सीर हो या। सब तो यहा किन सहाड सीरिया होत है। स्टेसनी पर चपडासी दिल्लात फिरत है कि सपना सामाल साल सर कता। मनु सी में विस्व वैग का इतिह स सिक्सा मा, नह भी सामय

कोई सौर ही है।

कारणक्या है? हमारे उच्चकोटि के सब गुण नाश को प्राप्त हो गए हैं। सब मानो यदि मैं मूर्ति पूजा करता हू, ईदवर के प्रतिरिक्त किसी घौर के सामने हाब जोडता ह तो मैं उच्चकोटि के सस्य से गिर काता हु। क्या जीवात्मा सत्य है निष्वय बह सत्य है, किन्तु उशमे बन्यास धा बाता है। वह शरीर से विकल्पित होकर शरीर के दुल को भपना दुल समक्र नेता है। यिन मैं रस्ती को सांप समम लूतो क्या उसमे काटने की शक्ति धा वायेगी<sup>?</sup> नहीं परन्तुफिर मी मनुष्य रस्ती को साप समभ कर भवभीत हो जाता है। अध्यास में यही दोव है, इस शिए वह सस्य नहीं है। प्रकृति ने परिणाय है और जीवारमा में बच्चास, इसलिए दोनों ही सस्य नही।

#### एक कवि कहता है— बुबा को जिसने विदाया, मिल गया उसको बुबा।

परमेश्वर के किया किकी और के सामें किए कुमाना खुवी है। इसमिए इंट्यर का ही पूजन करों। रंप्यर ज्वन के दूर होते ही इक्के बाब बाब करम-सायज का सम्बाध भी जाता रहता है। बाहे कोई बनी हो वा मिर्चन रूनी हो बा पुरुष, बार का एक ही परपात्मा है। वहा एक्स वहने नाजी बस्तु है। यरणु मारद-वर्ष ने उन भूना दिया। यो जून वाये उसे सटमना ही बहता है। इसीजिए माइसो । एक स्वस्त को मानो। सारे भनड साब ही निट जाते हैं।

 है, उसके साथ उसी का नेस होगा को सम्बादी, सर्थमानी तथा सरकारी हो। सर्थमानी धर्मात् सर्थ के मानने नासे तो साथ मी होंगे परग्तु सन्धरारी होना कठिन है। बच ये सीनो बातें मिस जावें तभी ताथ की पूर्ण होती है।

चपिनवारे में यह भी निला है कि
'ऋषि वह है जो नेव भीर सहनो का
जाती हो, जो दूसरो को सीचे मार्ग पर
जाती हो, जो दूसरा जाते हो भीर
जात का समुक्त करका हो जात पर
आप का समुक्त करका हो जात पर
आप का समुक्त करका हो । मैं मुख्या ह विडान्
कोन हैं ? आप उत्तर सेंगे जो पढा-निल्ला
हो और कन उपार्थन कर लके। परस्पु ऐसे
समय नी बहुत मिल सकते हैं जो बन
जन कमाते हैं ने नी विडान् नही कहना
सकते। इनिलंद वहां है कि—

## विद्याददाति विनयम्।

विद्यः से विनय प्रप्त होता है। जिसने चपने वर्त्तव्य का पंचन किया है, बही मनुष्य बिनील है। 'विनयं' उम हो कहते हैं कि यदि मनुष्य किसी की दुसी देखें तो उनके दूल में प्राप भी दुखी हो जाये। जब दुर्लहोगाती उसकादुःस दूर करने का यल भी धनस्य करेगा। एक बिल्लीरी शीधे का नोमा लो। उसके पास गुक्ताव का फूल रक्त दो । वह उस फूल का प्रतिविज्य ले लेगा, परम्युक्या मिट्टी का देला भी वह प्रतिबिम्ब ले सकता है <sup>?</sup> कदापि नहीं । इसलिए विनयसील पूरव विस्तीरी गोले के समान है और सन्म सब अनुष्य मिट्टी के इसे के समान। विनयसीम ही सच्या विद्वान् भी है, वातें बनाने बाला बिद्धान् नहीं।

महारमा बुढ वन में थे। एक तिकारी ने पत्नी को बाज बारा। बढ़ मिर गया, महारमा बुढ ने उमे बीक्कर कठा लिया। बीर उत्तक बाया निकान दिया। विकारी ने कहा, 'ग्लो मरा है। बढ़ मेरे तीर खे निराहै। 'गहारना बुढ ने कहा, 'बढ़ मेरा है, मैंन क्षेत्र बचाया है।' प्रतिका निराय यह हवा कि मारने वाहे से बचाने बाह का प्रतिकार पिकार है।

यदि वागका वन्तकरस्य पवित्र हो तो वग वे व्यक्त प्रस्तुत हो रह जारें ? की स्तुक्त प्रस्तुत हो रह जारें ? की स्तुक्त प्रस्तुत हो । वहुत सोग कहते के कि यह महास्ता गांधी का वचन है। वे व्यक्त है के दुत्त को कहते के कि यह महास्ता गांधी का वचन है। वे व्यक्त हो के दुत्त को कि स्तुक्त हो के दुत्त को की व्यक्त को स्तुक्त हो के वित्र को । परन्तु ज्यो ही प्रस्तुत वित्र को । परन्तु ज्यो ही प्रस्तुत का स्तुत्त हो से स्तुक्त के स्तुत्त के से स्तुत्त के स्तुत्त का स्तुत का स्तुत्त का स्तुत का स्तुत्त का स्तुत का स्तुत्त का स्तुत्त का स्तुत का स्तुत

बार्यक्रमाम ने दुवंबता है। इतमें

### सत्य की महिमा

द्मजीवल नहीं शाया। पर तुको समाव मन्दर्भों का उपकार करे वह दुवस नही रह सकता। इसलिए धीरे घीरे इसकी कुबलत धवश्य दूर होगी। मैं बरेली बया वहां प्रख्तोद्वार पर व्यास्यान हुए। एक सज्जन ने प्रन किया 'बहाराज । प्रकृत **पै**र को जुती हैं उन्हें सिर के **साथ कै**से मिला सिया जाये <sup>?</sup> सिर पर तो पमडी ह्यीरहेगी। मैंने उत्तर दिया मा<sup>ही</sup> कभी कभी ऐसा समय भी बा जाताहै कि यवडी पैरो प" गिरती है भीर जूट धिर पर पहली है।

यह बढाई का घमण्ड भूठा है। वडा वह है जा बड़ाई का काम करे और अपने अनुसासे बड दीन करे। बड से बडा मनुष्य भी जब मपती बढाई बाप करने समता है तो स्रोटाहो जाताहै सेवासे ही प्रचसा ओती है सन्त्री प्रश्नसा वह है जिसमे आति की महिमा है मनुष्य समाज की -बढाई है। धार मोटरें रखते है वड श्चादमी हैं पर तुजन यह कहा जाता है कि ग्रापका देग द सताकी श्रुसनाधी मे बचाहै तो सबे मनी की निदा होती है। ग्राकी भी। ग्राप उस निन्दा स वक तो नहीं सकते।

ऋि सब को एक समान मानता है न्मविकी इञ्डिमे सब स्रोग समानता रखते है। इस स्थान पर सब ही एक हो बाते हैं वर तुयह देश भाग्यहीन है। बढ वड लोग व माग विकात है परन्तु वह उनके वीक्षेत्रही चलता। समस्त देश सम्प्रदायो स अन्यया है। स्पर्य का ठीक प्रयोग नहीं होता यूरोप कीर समरीका वे ऐसा नहीं बहाजितना रूपया है जाति के उप कार पर ०वम किया जाता है। परन्तु इस वैश्व में सम्प्रवासी बढ़ गये हैं और देश बट त्रया है। इसीलिए काम नही चलता।

सपुरतप्रात में मुसलमान भी हिन्दी जानसें हैं । जिला सागर मे एक मुखलमान इन्स्पनटर थी उसने बूढ का विवाह नाम की एक बढा घच्छो हिन्दी कविता किसी है। एक बाह्यण ने स्पया लंकर -सेठकी शादी कराई । इसमे उसी की दुदशाका वजन है। य<sup>ित</sup> सभी मुसलमान हिन्दी से इब त्याग द ता कितना बमनस्य घट तकता है भीर एक मातृ भाषा होकर देश का कितना उनकार हो ? परन्तु वही श्रम्प्रदाय का मत्यदा बहा भी है।

इन देश के दिझान् ससार को शिका दिया करते थे। इतिहास के नेत्र पाय हवार वय से पीसे नहीं जाते । परन्तु इस केख का विगड साढ पांच हजार से भी आहें क वय हो बये हैं। यह देश महामारत से एक इजार साल पहले से ही विनडने सना थी। अर्जुन के पूजने पर भी इच्या

वेदो का पूरातया अनुसरसा नही करते इसीलिए दुवापारहे हैं।

उपनिचदों के समय में सचाई की प्रश्न बाहुमा करती थी। उपनिषद् पाच हजार वय से पहले के हैं। दशन इनसे भी श्रविक पुराने हैं। इनमें कोई सप्रताय नहीं सारस्वतः वीड कोई हो सब एक समान हैं।

किया से ही कर्मका विभाग है। न तो बाह्य ए ही घण्छा है भौर न शूद्र ही बुरा है। जब से यह सम्प्रदायों का ऋगडा उठा है इसने भारतक्य को कृष्णकर रस दिया धायसमाज को ब्स सभालकर सध माम पर लाना था परत धायसमाज स्वयमेव न गमल सका। इसमे सभनने की शक्ति धवस्य है। यदि यह समल जाये तो बेडा पार है। सतार बातों को बातों के ही रूप में मानता है। काम सर्वेव ग्राचरता से चलता है क्योंकि सदा सत्य की जय होती है चौर बसत्य की पराजय।

धाः कहेने कि शरीर नम नूत्र का स्थान है इसके सवाई कहा व ईरवर सत्य है वही निमन 🤋। परन्तु यदि यान किया भाव तो क्या प्रान्त नहीं हो सकता ? देखो बास विवाह भूठ है। पहले लोग बास विवाह किया करते थे। इसकी प्रशसा भी हाता थी। परन्तु जन यस्न किया गया ता रगही बदल गया। अब यही पाप समका जाता है । हमने घपना कतन्य छोड विया तो दूसरे देशो न बाक मरा किया। सहा बुहोन मुह्मबनीयी ने भारतक्व पर आक बराकरने से पहने बहा दो बादमी मेजे कि हिंदुस्तान का हाल मालूम कर। वे दो बच तक यहा रह यहा बान वा परतु सवाई से फिससा हुना। दो बद तक उद्दोने यहाका हास देशा और धन्त मे यह पत्र सिसा कि हर कई दूसरों के हाथी रोता है परन्तु हिन्दुमों को हिन्दू ही बरबाद कर रहे हैं। यह सात बाठ सौ साल पहले का दश्य है। वो समस्दार है उन्होंने धर्यों को संवाई से बाना है। उसी संवाई का सहारा लेकर ससार वे सुआप पागय धीर सत्य स्वरूप परमा मा से मिल गये।

भाइबो । बाद रखो भूठ बीमारी है भीर समाई त दुबस्ता । समाई से ही मनुब्य की बात बनती है। जो सत्यमानी सत्यवादी भीर सत्यका । है उसकी शक्ति और क्म को कोई भी नहीं रोक सकता। इस बात को सत्य मान लो मौर सब क्रचेरा दूर हो कावेगा । सब काम सचाई म वसते हैं। परमात्मा की उद्योतिया ज्योति कहा बया है। जिसक मन मे वह ने उसी के मन में सवाई है। परन्तु हम तो अपनी पूजा भीर प्रापना में भो श्रुल करते हैं। ईस्वर को न भोग समता है। न उसके लिए पैसे ही चाहिएँ। मूर्ति श्री ने कही है कि कुछ समय से लोग को हम उस बीज का मोन समात हैं जो

हुमे ब्राप कानी हो । यदि पूर्ति ईददर का कप हो तो उसके पुजारी दयावान् हो। परन्तु यहा क्या है ? बाबू स्रोग कहते हैं मनुष्य से भूगा नहीं करनी वाहिए। गाव बाले भी बही कहते हैं। परतुओं नाम मात्र देश्वर का पूजन करने वाले हैं वही कठोर हैं वही मनुष्य को धछुत समक्र कर उससे बुखा करते हैं।

बौद्धो का राज्य था। शकरानाय भगवान् सञ्जीन पहेंचे वहा ईश्वर का प्रचार किया। कई बादिमयों ने रोका न माने। धन्तत दरशार में पहुचे वहा फासीकी साक्षा हुई यह नियम था कि फॉक्नी देने से पहले सन्तिम क्ला पूछी बाती थी। मन्वन् शकर ने कहा

जिसन मुमे फामी का बाका दी है उससे मिलना चान्ता है। शकर राजा के सामने पश हुए और कहा कि हेराजन् । मैं ईश्वर को मानता है। यदिवहन भी हो तो कोई हज नहीं परन्त सवि मेरा रेडबर हुआ। तो तुम्हारा क्या दशा होगी? राजा की समक्ष में यह बात मा गई भीर वे छोड दिय गये।

ऋिंदयानाद ईन्वर की मानने वाले वे ग्राप ५०ट उठाकर ससार को साय म ग दिखलाग्य । यदि तुम भी यह च हते हो कि परमात्मा तुम पर दया कर तो परमात्माकी सृष्टि से प्रमकरो । यही सचार्र है यही घम है।

भगवान वस बदका प्रचर किए जा। है अपून शहीदों का सरोकार किए जा।।

> मनुष्य हा है टेक एक दल भाल ले। मानव की मित का ही सिगार किए जा।

महमा ग्रपार पार नही पा सका कोई। ससार सार सार का विचार कि हिम्मत न हार दार पार हो क रहेगी। भगवान् भरोसे पै तू सुधार किए जा।।

बिलदान शहीदी का रगला के रहेगा। चर्चाय द्वार द्वार बार बार किए जा॥

सन कह रहे हैं धाज धन्यकार छ। रहा। उजियार दीप ज्ञान जना कार किए जा।।

> हरेक कोई प्रपने कारोबार में लगा। उपकारियों के कार्यों से प्यार किए जा।।

माकार निराकार का पतातो समे तक। ग्रभ्यास ग्रष्ट ग्रङ्ग योग वार किए जा॥

> कैसा धर्मोघ धस्त्र बंद शास्त्र सूत्र सहा। ऋषियों की सम्पन्त का अनल्कार किए जा।।

भौरों को नहीं देख तो अपनी ही तरफ देखा। अपवान को ही एक तरफवार किए जा।।

> द्यम पन्त्री रूप इत्म का किसे नहीं नशा। अयाकुन कुमार भर के धुबाबार किए बा।।

> > रचीयता-प्रकाशवीर व्याकुल

#### **श्रमृतक्लश**

खुन्त्रम नेती है क्दम धापके मञ्जिल। धगर वसने वाला हिम्मत न हारे।। वडा रह भाग भ नी पस्तीये हिम्मत से पस्ती मे । रसाई तो तेरी ए काक के पुतले खुण तक है।

> कुतुब ग्रगर जगह ोटने तोटल जाय । हिमालय बार्र की टोकर से भी फिसल अ।ये।।

ग्रवर चिल्लाभी पुणन की इप स जल जाय। धौर ग्राफ्ता। भी कदन सरूव दस जाये।। कभी न साहिब निम्मत का होसला दूटे। कभी न भूस से उसका जबीपै बल माये ॥ उत्साही बलवानाय नास्त्युस्साहात्पर बलम्। सोत्साहृस्य हि लोकेषु व किञ्चिदपि दलमम् ।

भारत सरकार न स्वतन्त्रता के पश्चात् धनेको जन हिन की घोषण एँकी है जिनमें से सबसे सुदर धारा यह है कि सरकार देग स गरीवी और वकारी को दूर करेगी ताकि मभी लोग सम्मानपूरक धपने जावन को व्यतीन कर सकें। इसी के लिए सरकार ने पाकिस्तान की नकल न कर भारत को हिन्दू राष्ट न बनाकर इसे मिश्रित देश घोषिन किया ताकि भारत के सभी निवासी इने घाना देश मानें और सम्मान के साथ पूजा पाठ करें तथा नमाज बादि पड । सरकार ने बानी बोधना के प्रमुखार गरीनी बेकारी की दूर करने का ग्रन्छा प्रयत्न किया । लालो नोबो को गरोबी मिटी तथा साखी की नौकरी मिली परन्तु दुर्माग्यवश समस्या ज्यो की स्थी बनी है।

सरकार को भ्रपने प्रयास में सफ लता मिली परतुदेग्म गरीबी भीर देकारी पहले न समिक है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत की जनता सर कार की घोषणाओं की विताकिए विना सवासार बढ रही है। मूल्य रूप स गरीब भीर वेकारी की सस्या अधिक बढा है। जनसंख्या की बढि के साथ शिक्षा संस्थाओ की सहायता स ब्रजुएटो की सल्या भी बढ वई है। इसके प्रतिरक्त यात्र के नवयुवक भी सब गाव में न रहकर शहर में रहना बाहत हैं। जो बाब में भी रहना चाहत हैं हो जमीन का बोडासाहिस्साजो उन्हें मिल रहा है उसमे उनका निर्वाह भी मही हासकता है। वस शहरा में बाकर सोव नौकरी चाहत हैं। तौकरी न मिल हो वे लोग समाज विराधी काय करत हैं। डकैता में व पढ जन नहां पढ़ांल के लाग

## गरीबी वबेकारी कैसे दूर होगी?

#### -प्रोमप्रकाश त्यागी

हा गह काय वाते हैं।

जन नृद्धि को सरकार ने फेनिकी प्लानिय के कास्त्रम से रोकमा चाहा। परन्तु बेस इस बात का है कि सरकार मुश्रमानों से दर महं तो देश का जनरा के लिए एक फेनिकी प्लानिम बना। मुख्यमानों ने मन गढ त रूप से कह दिया कि यह उनके क्य के बिद्ध है। सरकार के किसी व्यक्ति में यह चानने का प्रयक्त नहीं किया कि मुख्य प्रधान ये को किस बारा का वह विरोध करती है। बैदिक क्या इस वास को ठीक नहीं सममता कि समुख्य के जम्म को रोका ज्याय परन्तु देश की समस्या का स्थान कर उहोंने भी इसे स्वीकार किया है।

गरीबी और बेकारी को बदाने वासी

जब पाकिस्तान, जबला बेछ तथा इ कोलेक्या धपने यहा पंजिबली व्यानित सभी धमी धोर सम्प्रवास के लोग पर स्थान कप से लागू करत है। परस्तु हमारी सरकार ने ऐसा नहीं किया। इसका हुव्य-रिणाम वह हुआ कि कैमिकी व्यानित केवल हिन्दुओं पर लागू हुआ और हिन्दुओं के सभी यह लिसे लोगों ने इसे स्थीकार कर लिया। गरीब लोग बन के लोग में धा गए।

सीमान्यवश स्व • सवयवाची ने इस तथ्म का स्वीकार किया और सरकार के जोगों को बादेश दिए कि सन की फैमिकी प्लारिन हो । उसके विरोक स्वक्य पुनान में इन्दिरा नामी की जाये परानम हुई क्योंकि मुसलमानों का मत सरकार के विरोक में नया।

फैनिनी प्लार्गन के द्वारा हिन्हुको के निनाय की शीवा को देख तोत्रों ने हरका निरोम किया। धायसमास कैसी संस्थायों ने दशका निरोम किया वहां कि फीनवी प्लार्गन सम्बद्धी कहा है परन्तु देश के सभी लोगों पर लाजू होनी साहिए। चर्चनाल समय के निका जकार यह मात्र हिन्दुको पर प्रमानी है दसके सारत का हिन्दु समुदान बस्ती ही समान्य हो बाएगा। यह सरकार को बाहिए कारत का हिन्दु पर पुरान वस्ती हो समान्य हो बाएगा। यह सरकार को बाहिए कारते समझ एक सा कानून बनाइ। धार्मवनाल इसका प्रकल स्वयन करेया।

हमों को सपने टी० मी० चादि के कार्य क्रम के प्रचार कर रही है। सरकार का एक विभाग दश्री काय में नगा हुआ है। वह सब हिल्लुमों को तथाते हैं। सब्य को नहीं। यही कारख है फैनिको प्लानिय फेन हो गया है और परिचाय करपता छे हुए हैं। कारच वह है कि जनसब्या को नुद्धि का यह सामा नहीं कर सकता है। परिचाय यह सिक्त के सरीयों और वेकारी वड़ी हैं। कम नहीं हुई।

सरकार फनिली प्लानिवकी सण्हा

गरीबी और बेकारी के बढ बाने पर देश में एक नहीं धने को समस्याए पैदा होनी और बनता की क्षेट में सरकार **धरफस सिंड होगी। सरकार को विदित** होना चाहिए कि गरीबी और बेकारी की इस करने के लिए चीन सरकार ने एक बज्ने से दूसरे की अनुमति नहीं दी। उनका यह निवम चीन की समस्त जनता पर नानृहो रहाहै। परिणाम यह हुंबा कि चीन की बनता की वृद्धि पर सरकार का नियतम हो नया है। नरीबी तथा वेकारी को दूर करने के लिए सरकार की एक कानून फैकिसी प्लानिंग का दनाना ही होगा। उसे बहु शास बनाये या कम । बनाना ही होवा : वतमान रूप मे वह हिन्दुओं को समाप्त कर देगी भ्रम्य कुछ नहीं। यदि यह जेल चलता रहा तो दो हवार शतान्दी में बेल कुछ भीर ही होना सरकार की अबूरदांखता का ब्यान करते हुए हमें इस कवन में सत्यता मानूम पडती है कि - भारत क मुस्सिम ससद सदस्य हव की सभाषों ने कहते हैं कि वह बीझ-ही भारत में मुस्सिम सरकार बनायें वे। वदि ऐसाहुमा तो फिर सरकार को पश्चताना पडवा भीर उत्त समय वाहते हुए भी कुछ नहीं हो सकेगा। इसलिए सरकार को तुरन्त ही अपनी भूल सुभार कर फीमकी प्लानिंग का एक कानून बनाना चाहिए और जो इसका विरोक करे उसे देशहोड़ी घोषित करके उसके साम किसी प्रकार का समभौता नहीं होना चाहिए।

सरकार ने समय पर गवि इस विद्याः में कानून नहीं बनाया तो कुछ समय के परवाद इसे पश्चताना पढेगा।

लाला रामगापाल शालवाले श्राभनन्दन समिति श्रद्धेय नाला रामगोपान शानवाने के मिनन्दन के मनसर पर

> ११ लाख रुपये की सम्मान राशि सकलित करन के सम्बन्ध में निवेदन

वानेवीयक बाय प्रतिनिक्त क्या के यवस्त्री प्रधान श्रद्धय बाला रामयोगाल बालवाले के प्रतिनायन के प्रवहर पर उन्हें ११ लाख क्यर की वस्त्राम राजि मेंट करने का निरुचय किया नया है। वस्त्रान राजि कीय के लिए कन व्यवह करने का कार्य बारस्म हो पुका है। इस सन्त्र में निम्नलिवित बात बातक्य है।

- (१) अभिनन्दन समारोह के साथ सम्मान राखि मेंट करने के पोखे वह आवना है कि अभिनन्दन समारोह की स्मृति में एक स्वामी कोच की स्वापना की जाने, विश्वके मुद से बहायता काम (विशेषकर आससमान के अवारकों, हुट उपये-शको विश्वमाओं एन निर्माणन महिलाओं तथा सुनोम्य विश्वाचियों की सहा-वता) मोरका प्रकृत्य एव माननीम लाला जो के रिक्त कामों को प्रोत्साह दिवा वा सके। इस स्वापी कोच का निर्माण साववेषिक कमा के अल्पान होता और एत्यन इस स्वापी कोच का निर्माण साववेषिक कमा के अल्पान होता और
- (२) सम्मान राशि के लिए बन संग्रह शावशेषिक तथा की रसीद युक्ते पर किया मारेगा शक्ति राशिक राशाओं को मानकर से सुद्ध का लाग मार्च हो तके। को बन सावशेषिक कमा में सीमा मारच होगा, उसके लिए नहां के से दिखे को बेच दी बाएगी। सावशेणिक समा में चैक सबना कैंक मुग्द हारा ही बन सावशे- खिक साम प्रतिनिधि समा के नाम पर हवके मुख्यालय—सहुद्धि दशानम्य प्रवस्त प्रश्न सावशेष स्वया मुग्द-क्यालय—सहुद्धि दशानम्य प्रवस्त प्रश्न सावशेष स्वया मुगद-क्यालय मुगद-क्यालय मुगद-क्यालय होगे पाहिए।
- (२) आवसमानो तथा प्रन्य सत्याघोँ (विशेषकर शिक्तस सक्तायो) को बाहिए कि वे कनराकि एकनित कर उसे नैक या नैक ड्राफ्ट द्वारा सार्वेदिशक सभा को वेखें ।
   (४) बाव प्रतिनिध समाएँ प्रपनी रसीव कुकों पर कन स्वष्ठ कर सकती हैं। विशेष

मिस बायेगा। अन्यया जिन बाताओं को आवश्यकता होनी, उन्हें आवकर छे मुक्ति का प्रमास पत्र बाद से सार्वेदेशिक सभा की घोर से भेज दिया जायेगा।

- (१) वन समह मनियान में उन स्टरनामों के तकालको एव महानुभावों का सहयोक प्रान्त करना वाहिए विनकी माननीम साला का के प्रति ता है भीर को उनके प्रिय कार्यों के समयक एव सहयोकी रहे हैं।
- (६) जातम्ब है कि बार्च अविनिधि बसा उत्तर अदेश ने १६ मई ८५ को नेरठ के सम्मन पानी अन्तरन बैठक में यह निश्चय किया है कि सम्मान राश्वि के क्य में कम से कम एक बाब क्यों का सहूचीय प्रधान करेंगे। सम्म साथ प्रतिविध्व खनामों से वी प्रार्थना है कि वे अपनी सम्पर्य बैठक के इस मासव का निराक्ष साथ सोम करी । सम्मान राश्वि का सक्य पूर्व करने के लिए हमें उत्साह पूर्वक वन सस्य करना है।
- स्वान-स्वान पर इव कार्य के सिय् स्वानीय और क्षेत्रीय समितिया भी बांठित की बा बकती हैं, परन्तु ऐसी किश्री भी बनिति को बन सम्रह से पूज हम के सबवा उस प्रस्त की प्रतिनिधि समा से सनुवित प्राप्त करना सनिवास है।
- (द) यह समृद्ध के बिए प्रचितन्त्रन समिति ने भी कच्ची रसीवें ख्याई हैं। इस स्त्रीचों पर प्राच्य कन के बिए सार्ववेषिक बना की तक्ची रसीवें नाह में बन प्राप्त हो बाने के कपरान्त मेवी कार्येगी। वह पत्रची रसीव स्ताराधी को प्रवचन वन बस्हीत करने बाली स्वनामी को नेवी कार्येथी। इच्छुक व्यक्ति स्ववचा सन्वार्त्त प्रविचनन्त्र समिति को पत्र निवकर कच्ची रसीवें समझा स्वक्ते हैं।
- (१) वन तप्रह के लिए अपील का जी प्रकाशन किया जा सकता है।
- (१०) वान-वालामों के नाव वार्वविधिक एव आर्ययमाथ की आप प्रमुख पित्रकारों में प्रकाशिक किए बाते रहेंथे।
- (११) इत विजय में सम्य स्वय्योजस्या साथा साथ जानकारिया स्वित्रभ्य स्वितिष्ठ से प्राप्त की वा सकती हैं। अवसीय सोम्बास वारमाह इस नारासम्ब संश्वास सम्बन्ध

#### राष्ट्र को दुरित, दुर्गैति से बचाने का उपाय (गृष्ठ २ का वेव)

है -- देश के दायुमण्डल को सुद्ध करने के किए न्यायन्तानी पक्षपान रहित भीर शीघ्र निर्णंय करने वाली हानी चाहिए। बाब देश में घाराची की बाद सी बा रही है। डाके, बलास्कार, हत्या धीर वोरी के श्रमाचारों से प्रसवार परे पड रहते हैं डाकुमो मे माडित भीर गरीबी से पीडित कोन नहीं हैं। बी०ए० धौर एम०ए० हैं। नई दिल्ली में बैक खजाने को लूटने बाले सम्बन्न घरों के भीर उच्चिशक्षा प्राप्त युवक ही वे । उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के बहुत के डाकुकों की समस्या वहां की सरकारों के मिए बहुत बढ़ा सरदर्द है। इन बुराइयों के बढने में कतियय ग्रन्य कारणो के साथ सबसे मुख्य कारण न्याय-प्रशासी की शिथिसता, त्याय की प्रति-व्यवसाध्यता, धपराधियो को मुक्त कराने के लिए राजनीतिक नेताको के दबाव बादि कुछ ऐसे कारए हैं कि जिनसे बप-राधियों को दण्ड का भय नहीं रहा।

हुने जो ग्रग्नेजो का ढाचा उत्तराधि-कार में मिला है च। हे वह शिया का क्षेत्र है भीर बाहरायालय है हम उन्हें उसी श्रकार वसीटेले जारहे हैं। इसस कितनी श्वानि हो रही है यह विवारने भीर करने का किसी के पास समय नहीं है। प्रधान अपन्त्री भीर मुख्यमत्री जब पहुची बार पद सम्भालते हैं, बढ़ी वड़ी योजनाएँ जनता के सम्मुख रकते हैं। किन्तु कुछ ही समय परकात् कही पार्टी क ससन्तुष्ट तत्त्वो को सनुकृत बनाने में, कही विरोधी पार्टियो की बोजनाएँ ध्वत्त करने में सन्नेप स कशा जाये तो सारा समय भीर शक्ति अपने धविकार की रक्षा में ही निकल चाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम नही हो वाते ।

हुमारी न्याय पढिल हैं साइयों को न्यावना से प्रभावित है। विसके कि पान के ना मुक्य केन्द्र निष्टु यह है कि पान के नक्त हुन से से सिर्फ असीह भूगी पर चड मने ! किसी के मन नो हुन नहीं होना चाहिए! किसी उहूं गायर के लत्यों में उनकी भावना को इस स्थार फकट दिया जा से कार्यों में उनकी भावना को हैं

वय गुनहगारों पै वेकी रहमते परबरविगार । बेगुनाहों ने पुकारा हम गुनहगारों में हैं॥

बन धपराधियों पर प्रभु का विक्षेष कृषामान देशा तो सुद्धपित व्यक्तित सीचने नने कि हमसे तो ये ही सम्बेद एई बोर वे निर्देग होते हुए भी प्रभु के कृपा-पात बनने के लिए चिन्याने सने। हम भी पापी हैं, हमारा भी उद्धार की बिंगे।

चौथी श्रीर पाववीं कोकसभा की श्रदस्थता के दक्षे वचों से मेरे निर्वाचन क्षेत्र में ११ से कुछ समिक कृत्म के केस हुए। मैं उन केसी का साववानी से ध्रध्ययन करता रहा। कर्र-कार्ड वण तक हाईकार्ड न तक केस तत नये। किन्यु परिणाय यह निकसा कि किसी भी केस में किसी को मृत्युवद नहीं जिला। हां, दो धिनयोगों में कुख को साओवन काराबास सब्य सुनने में हा साओवन काराबास स्वय् सुनने में स्वाचित ना ने ममकर तमता है, जनकी स्वयित नीस तथ है धौर बहु कट-कटकर १२ या १५ वर्ष ही रह जाते हैं। जहां केस में बोबी सी गी तरिष्य स्विति साती है कि बक्त न्याया-वीश सब स्वोडकर उसे टोयमुनन कर हैते हैं।

होना यह चाहिए हि गाय के कानन में कुछ धरानी प्राचीन रणडगिकाम के उपादेश करो का समाचेश करके इसका स्वक्थ तेजस्वी बन ना चाहिए जिससे खाराची धानकित हो। उदाहरण के लिए में चाएक्य के चीटिन्य प्रयज्ञास्त्र की एक बात का उटन्य यहा करता हा।

चाणक्य ने लिया है कि यदि चोरी की घटना कही घर जाने तो उस क्षेत्र के पुलिस प्रधिकारी का मादेश होना चाहिए कि तीन माम के बन्दर चोरी का पता लगाकर गये हुए मान को उतके मालिक को दिलदाये और घाराची को उचित दण्ड की ध्यवस्था कराये। यदि अलिस ग्रमिकारी नियत सर्वात में चारी का पता न लगा सके तो कोरी यो हर माल की क्षति-पृति उस अधिकारी के वेतन स करानी चाहिए। यह जान कितनी उत्तम है। इस नियम का पहला लाभ तो यह होबा कि पुनिस जनता के जानमास की पूरी चौकसी से रक्षा करेगी धौर यदि कही दुर्वटना होनी तो पूरी सतर्कता से नाल का पता लगायेगी और दोवी को वण्ड विजयायेगी। दूसरा लाग यह होवा कि जनता का सरकार मे विश्वास बढेगा भीर वह भ्रपने को सुरक्षित कर पूरे उत्साह से स्वोग बन्धे बनायेगी।

इस समय भारत में ग्रन्वेर मचा हुया है। प्रविकाश बारावी वयनी कमाई मे पुलिस को मामी शार बनाकर निर्भयता से दुग्कर्म करते हैं। उन्हें पता है थाने म पहल तो रिपोर्ट ही दज नही होगी। यदि ले देकर रिपोर्ट लिकी भी गई तो उस पर कार्यवाही कुछ नहीं होगी। पुलिस की इस प्रवस्था पर पंजाब के एक धार्य प्रवा रक बड़ी मनोरजक कहानी सुनाया करते वे - "एक मीरासी के घर में चोरी होने पर तसने वाने में रिपोर्ट दर्ज करा दी भीर वहासे तफतीश के लिए पुजिस ब्रायी। मीरासी हुक्का यी रहा या। पूजिस के ब्रविकारी ने मौके का मुबायना किया और मीरासी से पूछताछ करते हुए चोरी में सबे सामान का ब्यौरा नोट करना प्रारम्भ किया । नकवी, वर्तन-भाण्डे, काड लिक्साविये । पुलिस धाफिसर ने पूका और कोई बीज तो लिबनी येव नहीं
रही। भीराती ने कहा यह जिस्ट पुर्फे
एक बार जुना बीचियं। पुलिस वाले ने
तक बीजें पड़ दो। भीराती ने कहा हमने
एक हक्का और नोट कर वीजियं। पुलिस
काले के सारवर्ष से भीराती को देवने हुए
क्या हैं भीराती ने कहा दम वेवकर
सारकी मेंट प्लाककमा भरी धार स
तो नया है। इस बान में कोई सीन से
सोवता है। इस बान में कोई पिट स
सोवता है। इस बान में कोई पिट स
साती हैं वब कुछ जड़ाबा चड़ा दिया
जाता है। तेन देन और परिचय प्रमाव
का क्रम कही-कही तो हाईकोर्ट नक भी
पीड़ा नहीं छोता।

देश की झारराजिक वृत्ति में सुधार के तिए इसम परिवतन करना होगा। हु जिससे को यह विज्ञास होना चाहिए कि इस राजकीय व्यवस्था से सुरन्तित है। सामन में गहनी बात यह कही गई कि स्थाय बीझ सुजन धौर निष्यन होना चाहिए।

सन्ब की दूसरी बात है कि गासक बसें प्रवा को सपना सन्तान के समान रिव समके। वेना कि कालिदान ने रच के राज्य का बनान करते हुए तिबा है 'सा पिना पिनर तामा केवन जन्महेनवा। समस्त प्रवा का वास्त्रीकका निता पड़ ही बा उनके माता पिना सो केवन जन्म देने वाले की शेव प्रनामना के बाता- बरण में प्रकाजन राष्ट्र की रक्ष के लिए बड़ से बड़ा स्थान करने को उद्यन हो जाते के

रामायण भीर महाभारत में हम पढ़ने हैं कि जब राम भीर पाण्डब कर में जन तो पीछे पीछे प्रचा के नोम भी साच चल दिया वह आरमीयता का सम्बन्ध बासनों के सहानुपूर्तिपूर्ण व्यवहार का ही गिंग्लाम था। तो मत्त्र में परापर्य दिया कि जानक वग परिवार के समान भारमीयना से जनता के सथ वरते।

म त्र की तीसरी बात है शासक बाकान्ता धीर शबुबो से राष्ट्र की रना करने वाला हो। राष्ट्रीय सेना वक्षा कीर न देन सम्पन्न हो जो शत्र को सँहतोड उत्तर वे सके। यह शक्ति तभी धाः। गाः जा सवनी घीर वीरपुरुप राष्ट्र की रक्षा-पक्ति को सम्भालेंगे विलासी ग्रीर ग्राशास राष्ट्रकी रतानही कर सकते। मृत्यों के शासन के प्रतिम दिनों में इसी तरत के दुर्गुंगों से राट्ट दुवन हा गया और विदेशी साक्राता यहां की प्रजा को स्र मानिन करके यहांकी संगर सम्पनि को जिन्द भीरतस्तन। उस्म तक को यहाँ म लेगाथ। तो इस प्रकार के दुबल राष्ट्र मे प्रन्य नय दीय भी था जाने 🖡 । धन देण के प्रहरी सबसी देशभक्त और बीर हो तो ऐसे राष्ट्र मे पाप भीर भागित नहीं होती ।

श्रार्यं प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्त्वावधान में गाँव उत्तरीला

## गोण्डा में ११ मुसलमान राजपूत शुद्ध हुए

|    | पुराना नाम  | नया नाम                        | पिनाका नाम<br>वास्ति सभी<br>पति—चन्द्र बहादुरसिंह |             |
|----|---|--------------------------------|---|-------------|
| t  | लास मोहम्मद                                       | चन्त्र बहादुर निह<br>राम सवारी |   |             |
|    |   |                                |   |             |
|    |   | चम्पा                          |   | , ,         |
|    |   | पता                            | ,, ,  | ,           |
|    |   | वेतकी                          | ,   | , ,,        |
| u  | न्र मोहम्मद                                       | धशोक विकास थारा                | भलक शमशर व पा                                     |             |
| •  | न्रवहा  | सरोब देवी                      | प~नी ग्रशोक (                                     | विक्रम थापा |
| 3  | हसी <b>ना</b>                                     | कु॰ भाशा                       | पुत्री धशोक ।                                     | वेत्रम थापा |
| 80 | फरीदा   | कु० बारटी                      | पुत्री,   | , ,,        |
| ** | सरोज देवी को एक बच्चा दो तीन दिन मे होने वाला है। |                                |   |             |
|    | प्रधान बार्यसमात्र                                | मन्त्री प्रायंसमाज             |   |             |
|    | उत्तरीसा (गोण्डा)                                 | उत्तरी                         | ला (गीण्डा)                                       |             |

हे धार्य ! उत्साह ही बलवान होता है, उत्साह से वढकर दूसरा कोई बला नहीं है। उत्साही सनुष्य के लिए ससार से कोई भी वस्तु दुलभ नहीं है।

निक्स्साह निरानन्द निर्वीयमरिनन्दनम्। मास्य सीमन्तिनी काचित् जनयेत्पुत्रमीदशम्॥

कोई भी साता ऐस पुत्र को अन्य न दे जो उत्साह तथा घान-द से हीन हो, जो निर्वेश एवं समुद्रों को प्रसन्य करने दांसा हो ।

ससार मे सबसे कराब दिवालिया वह है जिसने प्रयना उत्साह स्रो दिया है।

## समाचार-सन्देश

### समाधान कब और कैसे ??

असम और रवाद खमस्या का वि-रात कर देखकर कुछ हिना के लिए लागे के दिल से एक दहरात बैठ गई थी। परस्तु क्लके सीझ टल बाने का नोई मार्ग न देख कर सबबूरन कोगो ने इनके साथ सम-फीता करके राष्ट्र प्रमुने घर का सदस्य मान अपन आपको सामान्य करने का प्रयास आरम् कर दिया।

स्रभी क्षोग स्रपने सापको परिस्थिति कै सनुकूत दालने का प्यास ही कर रहे वे कि गुजरान के 'झारकरण विरोधी सान्दो-सन'ने स्रपना सर उटा लिया।

यहाँ प्रदन इस आग्दोलन के घोषित्य या धनीष्म्य का नहीं है, विक्त प्रदन है सोवों को घानित का, सुख चैन का, बोचन सोद सुप्तका का, घाये दिन ने सकस्या प्रदमा नया हो क्य प्रस्तुत करती दिखाई हेती है।' धाव यहाँ दाने मरे, घाव नहीं इतनी वानें गई, घाव खुर घोप कर दर-बाद हो नवे" आदि घाद। इस पर घाकास-बारही सं प्रसादित स्वामारों में भी एक प्रस्तृत्वम होता है। हमेषा यहा सुनाई के में बाब बात व्यक्तियों की मृत्यु हो वह बोर १ = पायल हो गये। इसके प्रतिस्थित किसी प्रथिय पटना का कोई भी समाचार नहीं सिला। कुल सिना कर स्थिति गानित पूरण है।" प्रांतिस ये सामित पूरण स्थिति कर्व तक बनी रहेंबी?

धावे दिन बढती इन बारवारों न सामाजिको का जीवन पूर्युत्सा धसुरिका कर दिया है। शया तराहर के पाव कोई मी ऐसा ठोस कार्युक्तम नही है विश्वके तहत इस सस्या का कोई धौनित्स पूर्ण हल निकाला जा सके? यों तो हमारी सरकार प्रतिदिन विश्वकाशिय की बात करती है, परजु क्या धर्मने कर को क्यान मारत बनाकर विश्व शालिक की करणना की जा सकती है? क्या सरकार पर जन सामाय के कीवन की मुरला का कोई दायिक नहीं है? यदि हैनो धालिय सकता निवांह कब धौर कैसे किया जायेगा?

> प्रेषक— गिरीशचन्द्र शास्त्री ४४२३ द्वार्य पुरा सम्बोग्ण्डी दिल्ली—७

#### सम्पादक के नाम पत्र

विद्मलवेली (तीमलनाडू) से सकर मकोदन तहसील के क्यालुश्ती गांव का यह समाचार प्रकासित हुआ है कि बहु। ईमाई सिवानरी द्वारा स्वात त्याद-सरी स्कूल के हिन्दू दिखार्थियों को स्कूल में साने में दमसिए यनाही कर दी गई कि के सपने मस्तक पर दिसक समाये हुए में। ईसाई सियानरियों द्वारा हिन्दू वर्ज्य मी तितक पौक्षने के लिए मनहुर करन की सह चटना स्रस्यन वोचनोस है।

इसी का उदाहरण यह भी है कि केरल में निलाकका शिव मन्दिर के क्षेत्र में चर्च की स्थापना की गैरकानूनी माग को फिर से उठाया जा रहा है। इसके जिए ईसाई चर्चों की झोर से २ करोड़ क्पये एकांत्रत करने की मशा घोषित हो चुकी है। ईसाइयों की इन हरकतों से सम्पूरा देश में बसन्तोय स्थाप्त है।

इसिलए हवारी सरकार को गम्भी-रतादुर्वक यह सीचना चाहिए कि इस प्रवित्र वेश में विदेशी ईसाई पोच यात्रा की धनुसति देना कहा तक योग्य है? भारत स्वय महान चार्मिक देख हैं। हमारे यहा मानव कत्याण के विए बडे-बडे सायु-सन्त हुए हैं। भारत में उपदेश सेने के लिए हम विदेशी प्रचारकों की कोई प्रावस्वकता नहीं हैं।

सनावनवर्धं बन्दिर, नक्ष्मीबाई बगर, नई विस्त्री कविराज बनवारी लाल

(स्वामी बोबानन्द)

#### गवराज बनवारा लाल शांदा का देहावसान

सार्थं बनता को यह जानकर दु का होगा कि सायसमाज के उपयेशक एव करिय दान जमतीर साल शादा का हृदय गरिव क्या हो जाने से देहास्त्रात हो चया। शादां जी सार्थसमाल माडल नस्सी के वर्षों मन्त्री एव प्रचान रहे और प्रति रविवार की सार्थसमालों में ज्वानोपयेल के सिल जाते थे। समित्रम गोक दिवल जुक्तार २६।६।०६ को सार्थकाम में बच्चे सार्थ-समाण जोकल बस्सी (शीवीचुरा) में

## गुरुकल करतारपुर में अब टाईपिंग की शिचा भी

धार्यसमाज ने जन-जन तक हिन्दी पहुँचाने का वो सराहतीय कार्य किया, भारतीयताको जीवित रखने मे उसका महत्त्वपूर्ण बोगदान है। उसी का परिस्हाम है कि हिन्दी भाषा साज राष्ट्रभाषा के पद को प्राप्त है। यह हम सब के लिए गौरव का विषय है परन्तु प्रग्नेत्री के प्रभूत्व के कारण हिन्दी सभी हमारे कार्यावयों में स्थान नहीं से पायी। दुस्ट की धन्तरग समाकी सत्त्रेरणातया नह-योग से श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महा विद्यासय ने प्रक्तूबर १६८४ से खात्रों के लिए टकण कला (टाइप) का नि शुल्क भ्यवस्था कर प्रशसनीय तथा प्रमुकरशीय पम चठाया है। इतना ही नही सपित् हमे यह भी विश्वास दिलाया गया कि हमाने गुरुकुल से विद्याधिकारी वा लास्त्री कक्षा उत्तीर्वक्षात्रों को बोकि पत्रसेखन कला तवा गणिय में विशेष गति रखते हों, उन्हें अपने भौद्योगिक कार्यासर्वी में स्नातक के समान वेतन तथा सुविधा पर कार्य प्राप्त कराने में महयोग दिया जायेगा। हमें पूरा विक्वास है कि हिन्दी धौर सस्कृत प्रेमी उच्चोगपति हुमारे विद्यार्थियों की अपने कार्यालयो मेन्यान देकर दृस्ट के इस महान कार्य में भपना सहयोग प्रदान करेगे।

हवं का विषय है कि जुनाई ११८ % वे ख़ानों को नुकर्कीरिंग तथा प्रकाउन्हेंसी तिसाने की भी व्यवस्था ने बा रही हैं। इस सभी कार्रक्रमों से जहां एउनों का भविष्य उठक्कल एव समुन्यत होगा बहां राष्ट्र की भी महान् क्षेत्रा होगी।

चस्कृत वर्ष विकार तथा स्कूलों में पढ़ाके काने वाले विज्ञान, प्रशिवा, प्रश्लेषी धार्वि सभी विपयों के नाय नाय उन्दर कोसी का स्त्री विपयों के नाय नाय उन्दर कोसी का स्त्री को बहुत लाम होगा। इस प्रकार इस विद्यालय के खान धन स्कूलों में गिलक के कप में, कार्यकार कराने में पुरोहित के रूप में वार्षिक संस्वाधों में प्रवासक के कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने समाक कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने समाक कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने समाक कार्यक्र में हो स्त्री में स्त्री प्रीष्टित कर सारा कार्याच्या में में स्त्री प्रीष्टित कर सारा कार्याच्या में में स्त्री स्त्

इन्छुक अभिभावक प्रपते बच्चों की वाखिल कराने के लिए नीचे लिखे पते पर तुरन्त मन्पर्क करे। नया प्रवेश १५ जून १६८१ से बारम्प्र है। छात्रो का हिन्दी बाज्यम से कला ५ पास होना जकरी है।

> प्रावार्थ की नुदं विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर, १४४८०१ जिला वालन्यर (पंजाब)

## लिथाना में विशाल वैदिक सत्संग सम्पन्न

बच्चों के बरित्र निर्माण वार्मिक एव नैतिक विका के लिए प्रेम माइल हाई स्कूल लुक्याना में धार्य युवक सभा की भोर से शनिवार १६६ १८०६ को एक वैदिक सत्सय का भागोजन किया गया। सत्सनका आरम्भ एक यज्ञ से हमा जो कि प्रसिद्ध विद्वान् प॰ रामकुमार, जी मार्थने सम्बन्ध कराया। श्री प्रेम जी वर्मा सपरिवार यजमान वर्ने । इस प्रवसर पर भी रोशनलाल जी शर्मा संयोजक बार्य युवक समा पजाब के नेतत्व में बेद प्रवार सजन मण्डली ने प्रभूमनिस, मान-बता तथा देश प्रेम के नीतों एव अवनीं पर श्राणारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया । भी कैसाश जी शर्मा प्रधान श्री मन्दिर कमेटी ने समा की स्रोर से अग्रिम भी वर्मा को वैदिक साहित्य मेंट किया । श्री श्चर्मा जी ने नवयुवकों को धाशीर्वाद देते

हुए कहा कि पार्य दुवक ख्या ने देखिक वर्ष की को ज्योपि कार्य है, हबसे कार्या को एक गया राज्य नियंता । की प्रेस की प्रकार नियंता । की प्रकार कर के एक गया राज्य नियंता । की प्रकार की प्रकार की उन्निति के लिए प्रकार की उन्निति के लिए प्रकार की उन्निति के लिए प्रकार वार्योपिक प्रकार की उन्निति के लिए प्रकार के लिए कार्यक उन्निति के लिए कार्यक प्रकार की भी इस क्षावा के वार्योग कि प्रकार की प्रकार के वार्योग कि प्रकार के वार्योग का प्रकार के वार्योग के वार्योग का प्रकार की वार्योग के वार्योग का प्रकार की वार्योग के कार्योग का प्रकार की वार्योग के कार्योग का प्रकार की वार्योग के कार्योग का प्रकार कर की वार्योग की कार्योग के कार्योग कर कर की वार्योग की कार्योग की वार्योग की

स्रक्तु भारद्वाच, महामन्त्री सार्य युवक सभा, लुवियाना ७६१, सिविल इस्पताल रोड जुवियाना, (पवाब)

#### निर्वाचन

धार्यसमाण जूनामण्डी पहाडगण नई दिल्ली का वाधिक निर्वाचन १,६,८३ रविवार की प्रासः १-३० वजे भी धाचार्य वनदेव ची की प्रध्यक्षता में निस्न प्रकार

हुधा — भी प्रियतस्वासभी स्तवन्तः
उपप्रधान — भी प्रियतस्वासभी स्तवन्तः
उपप्रधान — भी बन्तीनास थी पहुंचा
उपप्रधान — भी व्योज्ञशस्त भी
अप्रधान — भी प्रेतप्रधास भी धोपहा
उपप्रधान — भी बुरेन्द्र भी शहूचा
संगी — भी स्वासदास थी स्वयदेवा

लपमत्रो—सी सतीश सी माटिया जपमत्रो—सी विजय सी राहुसा प्रवार सत्री—भी देवराज जी राजपाल कोषाध्यक्ष—भी विरसीत साल जी दूरा पुस्तकाष्यक्ष—सी घरत्रकाश कपूर केला निरीक्षक—सी ध्वयकुमार कपूर सिष्टाता सार्थ सीरस्क—सतीस जी माटिया सहायक—भी विजयकुमार पाहुसा स्वामसाव जी सब्वेबर

मंत्री

### श्रार्यकुमार सभा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

साय कृमार सभा किन्छने कैमा का विकासित व प्रमान के श्री कि स्वामन प्रमान हम्मा । स्वामन स्वामन के श्री क्ष्मन हम्मा । स्वामन स्वामन के श्री क्षमन हम्मा । स्वामन स्वामन के श्री क्षमन स्वामन के स्वामन स्वामन के स्वामन के प्रमान के प्रवास की । समा हिन्म का कर्ती प्रमान के प्रवास की । समा हिन्म का स्वीप्या व पुनिया की सम्मानिय स्वामन स्वीप्या के सम्मानिय स्वामन स्वामन

रिपोर्ट पढी। वस्ताधो में श्री सरदारी साल वर्मातवाश्री सैराती लाल जाटिया एवं डा॰ सतीश वन्द्र धार्मैंद क्वताये।

इसके पूर्व जावसमाव स्थापना दिवस भी बढी पुत्रमाय स मनाया ग्या विसमी अप्य निवित्ति समा के महामन्त्री ने मनुभैव पर प्रशासपुत्र भाषण दिया। उहीन प्रकाशन विभाग की सरहना भी को।समारोह का उदधारन हुमा की के प्रवान की परीजित सहस्त ने अव्या-



रोहणा स्थि राजिशाल में श्रीप० सत्यकाम बदल कार के प्रवचन तथा श्री महाकीर प्रनाद सागक भाषको का भी प्रभाव साधित उत्तम ग्हा।

> मन्त्री उमेर कुमार

#### सधादक क नाम पत्र

निवेश्न है कि १६ जन १६ द४ के स्रायन दो के सक संपूर्ण संग्रह के एवं स्थान जा प्रत्य सम्प्रताम जी जानती का स्थान क्या का १० ठिज्ञीन पर निहाब क्या करणाय संग्रह स्थानी प्रति प्रतिन तक साम्राय तापड़ा। सादणीय नागती और सके रिज क्या कि पत्र हैं।

वित् नस्य नेव कं कालमः ३ पैरा तान पर न्याप कहाग्र कहाना है आया वेद कं प्रकाश सनि र सन्यवद ना प्रकाश संसुपन साध्य ने प्रकार में सुप्रमासक दवता पर हुए । किल्लाच्य न्याप्य का स्वयवन्त ना छ संस्थान साहण स्वय सारण क्या है। क्या न्याप्य साहण स्वय स्वयंद की स्वयन्त्र सता स्वाकार नहीं करता। इत्यादम पर प्रशा उतिय सौर्यतादये किया हो नेवल तात्र बदो का ही जलक किया यया है।

बद सक सत्य विद्यामों की पुन्तक है।
यहा वद का प्रस्तक करों कहा गया है।
यदा वद का प्रस्तक करों कहा गया है।
यदि प्रस्तक करना हा प्रांममन है ता की
है रक्षा मारिए मक्ष्या का व है रक्षा मारिए मक्ष्या का व है रक्षा मारिए यर मुक्त मह नो है या महींप दयान द की मातभागा हिन्न न होने के कारण है। क्या प्रस्तक के स्थान पर ग्रम्थ या ध्रय कोई पर्याव प्रस्तुन किया जा सकता है।

धाषा हे मेराइस बिक्स सा कापूरा करने। मनी मगल कामनाओं के साथ। वैद्य निरजनशाला गीलव

## आर्यंसमाज का इतिहास

पट ४ काशोष)

को सिम्पात्रसाली का एतिहासिक प्रस वक्षण करने के पश्तान् ब्रिटिशागाननकाल मे विदेती नासको द्वर ग्रानाई गई शिक्षा नाति का भी सतक वि नवण किया गया है। अनक शिश्राग सस्याओं की स्थापना के कला संनेकर उनक प्रद्या विवि वृक्ताला उपस्थित रण्या भ इस ग्रन्थ का प्रमुख लक्ष्य हा है फनत भारत में सरकार के पंचान किं। के क्षेत्र म सर्वाधिक यागनान क श्रायसमाज के एनट विशयत ग्र कासमग्रचित्र प्रतत करा प्र ग्रन्थ का सह व निर्मिशद व विवस का द्विनोय साण्य १८ ४ र्वम प्रका शिल हुआ जिसमे स्वाम त्या त क निधन रालस लेका १ अ <mark>श्र बसामाजिक जगत की गत्वि</mark>ज्ञिया को विस्नारपुवक निर्मात क्या गय है। साय = दिगा म न ति ता नदो म । या प्रथमाञ्च के उमप्रचर ४ यं का स्नित झाकलन भानि चय व इस ग्रन्थमाला के पूर्णवा जान पर सायममाज के प्रयति ग न धीर क्र न्निकारी भागालन की इतिहास यात्रा का समग्र विवरण लखबढ हा जायगा।





श्चार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

## नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि प्रायार प्रचिनियम गी० =० के

प्रतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा बात . चेक/मनीझार्डर/बेक द्रास्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी द्यायं धर्मायं नेत्र चिकित्सालय, सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर मेजा जाए । दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे ।

#### निवेडक

रावधोचाल बालबाले सूर्यवेव महास्रव वर्षपाल सोमप्रकास साथं संरक्षक विकित्सालय प्रवाल, दिल्ली प्रवान मन्त्री एवं प्रवाल, बालबाल सार्य प्रतिनिधि सार्य केन्द्रीय व्हालय बुल्लीलाल प्रति- सार्या तमा सार्या सौजभ्य से महास्त्रियों दो हुट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीर्तिनवर, स्रोबोधिक क्षेत्र, नई बिल्ली-११००१

## "आर्य सन्देश"

वैरिक सम्ब्रुजि के समृतमय जारोच को, पहुँचा पहा है सप्ती रफ्तार तेक कर। वैरिक-सिडाम्य प्रतिसादित पुनीत प्रिम, सिडामी की नेक्सी, सुचीनित हर केच पर।। तर्क का कुठार निये जूषि का जुडाता च्यस, देता है समुची की हुम्म में रेच कर। दिस्सी मार्थ मितिनित समा का है, मुख पत्र, सीम सहक वनित्रे दिस्ते नीत कर नेक्सकर।।

नेसन

—स्वामी स्वरूपानस्य सरस्वती (प्रपिष्ठाता वेदप्रचार)

#### वेद प्रवचन

सार्वेववात बुत्तर्गत पाकं के क्रात्सव-वात में सामवेद वारायण संवर्शियक्ष रिक्शेट्ट गई ८३ के प्रारम्भ हुवा विसकी पूर्वाहृति २० वृत को समान्य होती। प्रकारत विद्वान् विधानम्य मी सरस्वरी सी पर्वारोगे। सार्व वतन् के बीर भी वर्ण-वाल्य विद्वान् नेता पत्तारी।

कार्यक्रम प्रात्त ६ ०० स ११-३० बने तक रहेगा यज पुरोहित विद्यान थी बारत मिन च जास्त्री है। सभी बर्ग-प्रेसी स्व्यानी से प्रारंगा है कि समय से प्रवार कर कार्यक्रम की सीमा बढाएँ एवं बर्ग-साम करें। सन्यवार।

. निवेदक सुदेश चन्द कीगरा, मनी

### प्रवेश श्रारम्भ

विस्ती वार्य अतिनिधि समा से संबद्ध मानु मदिर करवा गुरुकुत ही भ्रेष्ट/१२०, रहें बस्ती, रामापुरा बाराज्य से में दिखु से बाज्य ये कम में श्रेष बाराज्य है। बैदिक कीव कामायों को प्राविकता। उपप्रधी-पीवेंद्र परिवार तथा इरिज्यों की पुनियों को नि चुल्कता से वरीयवा। ह सम्पर्क सुन्न

डा॰ वर्मेपाल झार्चे सूर्वेदेव मन्त्री प्रशास

> डा० पुष्पावती मुल्याधिष्ठात्री

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

वासा कार्यालय---६३, गसी राजा केरारनाय, फोन : २६६८३८ वासरी बाजार, विस्ती-६





# पं० गरुदत्त विद्यार्थी

ले०-सोमदेव आर्य, रिसर्च स्कालर

जो जानि या समाज अपने पूर्वजो एव महाप्तवी को सुना देती है वह समें पथ से ज्युन हो जाती है। कारण यह है कि मनव्य मनुकरणीय प्राणी है। दूसरो के गुभ कमें देल या किसी की प्रश्नसा मुनकर उसे भी सुकर्म के बामिलावा होती है। जिन लोगों के हृदय पटल पर अपने महाचनों के स्कुत्यों को स्मृतियाँ शक्ति रहती हैं वे उत्तरोत्तर उन्नित पथ पर समस्य रहते हैं। पर जिन लोगों के सामने बहो का उत्तम आदर्श नहीं होता उनकी समाज एव जाति का इतिहास अन्दर हो जाता है।

आयंसमाज ने जाति और देश को जागृत करके जगत् में प्राचीन आयं संस्कृति को पुनर्जीवत करने का गुभ कार्य किया है। ऋषि दया-नन्द जी ने बार्य जाति को तप, त्याप, अर्थ, सर्य, न्याय और परोपकार की दीक्षा का आर्ग विकलाया।

राजिका काला कलुषित घोर सम्बकार प्रतिदिन प्रकाश के हाथों पराजित होकर भी खुवन मास्कर को कले ने का कुप्रयास करने का सुघ्टता से बाव नहीं साता। ऋषि द्यानन्द सूर्य को सनेक बार कढि-वाद के बादलों ने दकना चाहा।

जब स्वाधी दम्भी एव दुष्ट जन ऋषि का सामनान करसके तो प्रारा क्षेत्रे पर उतारू हो गये। कितनी बार दीप बुक्ताना चाहा पर बचाने वाना बचाता रहा।

वनाता कु।

पण्डित गुरुदत्त जी का जन्म २६

प्राप्तेल १०६४ तवनुसार ६ वैशाख
१९६२१ को मुलतान मे हुआ। खा

[आपके पिता का नाम रामकुरुए। था।
लाला रामकुरुए। कारसी के योग्य

विद्वान् तथा पजाब शिक्षा विभाग मे मध्यापकथे। गुरुदत्त जी से पूर्व रामकृष्णा जीकी गृहस्थ-वाटिका मे कई पुष्टा खिले परन्तु वे सभी थोडे-थोडे समय के पदवान मुरभागये।

प्रारम्भिक शिक्षा घर पर होने के पर्चात जब ग्राप ⊏ वर्ष के थे तब लाला रामकृष्ण जी ने ग्रापको डिस्ट्रिक्ट स्कूल क्रम मे प्रवेश करा दिया।

जब भ्राप दशम कक्षा में थे भ्राप के साथ लाला चेतनानन्द व मक्त रेसल जी भी पढते थे। ये दोनो युवक भार्यसमाज के सदस्य थे। इन्हीं की प्रेरला से भ्रापको रिल भ्राप्य साहित्य व भ्रार्यसमाज में लगी। परिणाम स्वरूप २० जून १८६० के शुभ दिन गृरुद्दत्त जी ने भ्रार्यसमाज की मद-स्वता का फार्य भर दिवा भौर विध-वन् भ्रार्यसमाज के सदस्य वन गये।

े उन दिनो हिन्दुओं में वाल-विवाह की प्रथा थी। गुरुदत्त जी अभी स्कूल में पढ़ ही रहे थे कि उनका विवाह सेवीबाई के साथ कर दिया।

१८८१ मे गुरदत्त जी का स्कूल जीवन समाप्त हुमा भौर पजाब विश्वविद्यापय लाहौर मे एम० ए० प्रथम वर्ष मे प्रविष्ट हुए। पढने में भ्राप तेज थे। प्रध्यापक व इस्पेक्टर इस होनहार युवक को देवकर ग्राइवर्यवित्त हो जाते थे।

गुरदत्त जो कि विद्यार्थी जीवन के साथ और कई धनो ये उनके जिल्यों में से कुछ नाम पजान के सार्वजनिक जीवन में न्याति पा चुके हैं। साना हसराज दीवान नरेन्स नाथ, लाना मनातराम लाला लाज-पत्तराय ये लोग पहिल जी के केवल कालज मिस्र ही न ये, वे उनके

वार्मिक ऊहापोह के भी कई ग्रगों में साथी थे।

गुरुवत्त जी ने १८८२ में एक स्वतन्त्र वाद विवाद सभा जी स्था-पना की। सर्वभम्मति से गुनुवत्त जी को मन्त्री वना दिया गया। लाजपत-राय मरीके नथा उनके सभी प्रमुख मिन सदस्य बन गये। सब की आयु

१८८३ मे ऋषि दयानन्द जी को दब में काच व विष मिलाकर पिलाया गया। फलस्वरूप उनकी स्थिति चिन्ताजनक हो गयी। चिकि-त्साकी गई पर सब ब्यर्थ। शीघ्र ही यह समाचार सर्वत्र फेल गया। सब स्थानो से श्रद्धाल ऋषिराज की सेवा के लिए राजस्थान की ग्रोर चल पड । लाहीर ग्रार्यममाज की ग्रतरग सभाने जीवनदास व गुरुदत्त को सेवा के लिए भेजने का निश्चय किया। सन १८७८ मे देव दयानन्द मुलतान ग्राये पर बालक गुरुदत्त उस समय ऋगमे वैठा थातव गगा घर **बाई** पर प्यासन बुकापाया। **भव** ध्यासा स्वय गगा के पास जा रहा है। २६ अक्टूबर साय को दोनो अज बेर पहच गये।

मांगरा गेट के बाहर मिनार हाउस में महाराज विराजमान य सारे शरार पर फ्लोले या हिंचिकियाँ मा रही थी। डा॰ लक्ष्मणदास की म्रोषिया बन रहीं थी। गुन्दत्त जो ऋषिवर की भरकर वीमारी के कारण उनसे कोई वातीलाप भी न कर पाये। केवन दर्शन हुए। पर जो बीज डार्बिन भीर म्येन्मर, न्युटन और बेकल से न मिल सकी वह मिल पाई। दर्शनमान से जीवन में शांति

को हुद्या था स्रौर पुनर्जन्म भी मगल-वार को हो गया।

घर ग्रांकर दो कपडो पर ग्रार्थ-समाज के पाँच पाँच नियम लिखवा लिये। प्रात कान जलपान किया। फिर एक कपटा भागे लटका लिया. दसरा पीठ से बाँघ लिया और चलने लगेऋषि सन्देश सुनाने के लिए। देवी ने देखा तो बिस्मित हो गई। हाथ पकडकर बोली---'पनिदेव, यह क्या हाल बनाया है ? क्या कहेंगे लोग ? 'उत्तर मिला' भोली त नही जानती । यह जीवन मेरा नहीं रहा। मैं इसे ऋषि के चरणों में द्यपित कर श्रायाह। श्रव रोम-रोम उनकी घरोहर है देवी । कोई क्या कहेगा कोई क्या कहेगा-इसकी विन्ता कैमी?

पडित गुरुदत्तजी ने ऋषिवर को समभ लिया। वे जानते वे कि लोग श्रभी उस दिव्य देवता की समभ नही पाये । समभ लेगे तो इनका भी यही हाल हो जायेगा। इमलिए आर्थसमाज धमतसर के उत्सव पर भाषण देते हुए उन्होने कहा था। ऋषि के महत्त्व का लोगो को समय बीनने पर पता लगेगा, भौर वह भी जब विद्वान पक्ष त्याग कर उनके प्रन्थो पर विचार करेंगे। स्वामी जी के ग्रन्थों को पढ़ने मे उनकी विशेष रुचि थी। इसलिए वे कहा करत र कि मैने १८ बार सत्याथप्रकाश पटा । पर मेने जब-जब पातव नव नई से नई शिक्षा ग्रौर जानकारी प्राप्त हुई।

१ जून १८८६ का दिन डी० ए० बी० स्कल की स्वापना के लिए निश्चित किया गया। ग्रात ३१ मई

(बोय पृष्ठ ११ पर)

#### सत्मंग राटिका

ऋषि वसिष्ठ।देवतावस्ण स्टब्स् विकट्यः

प्रन्य — य प्राम चक्र व चित मून यानि बन्दा वयम प्रनागा स्थाम प्रदिखे द्रतानि ऋषात यूवम स्वस्तिमि सदा न

ष्यव्याय — (य) जो प्रभु (भाष) प्रस्ताय (बहुव) करन वाल के प्रति (चिन) भी (बण्याति) प्रयत्ना द्याभाव हा स्वताः । (बदण) उस चुनन वोच्य प्रभु कसम । (बयम) हम (धनाया) निष्णाय (स्याम) रहे । (धिन) अन्त्राय (स्याम) प्रयात्म कर्मा क्याल्य करते हुए विद्वञ्जन (प्रयम) धाप सब (स्वस्तिन) ध्रमण कर्म साय्ययण जरूरी प्रयामा कर्म साय्याण जरूरी ध्रीर परामा कर्म (स्या) अन्त्र समयो म (न) हमारा (यात) एका कार्यिया ।

व्यान्या म ज में मुख्य पर्स जी बात कहा गया है। पहला यह कि जा का स्वार्य जी दांतर व का हाथ तो जा हो जीव पर रहना है कि जुमानव जावन का सफलता इसम है कि वह मयादा का पालन करना हुया विव्याग घार पालन करना हुया विव्याग का चार का जानकर खामान्यजना का हितकारक ज्यवस स परिवास न्या का अपन पर नमा वित्यार का अपन म पर नमा विव्याग का मान कर मा पर नमा विव्याग का मान मान करना विव्याग का मान करना विव्याग का मान मान करना विव्याग का मान मान विव्याग का मान करना विव्याग का मान करना विव्याग का मान मान करना विव्याग का मान करा व्याग करना विव्याग का मान करना विव्याग करना विव्याग का मान करना विव्याग करना

म त्र र प्रथम भगम वहागय ह कि प्रनुधनाध कल वला परभी दय भाव रखना **4 हवा**ताड पचाना है। इसका यह भाभाय नहां कि प्रभु दुष्कम क ⊬लानह दन स्रोर पूज पा स्या प्रायाचल मक्षम मिलाजना ै। णास्त्रयविजनना ५ हहै कि स अग्रर नुभ कभा काफल दूख ध।र सूख क रूप मध्यय भाग्ना पडगा न्याभ व का धा प्रयहै। क दूरकम का जा पल कना क सम्मुख कर रूप में ग्रांत है उसमें यह ाहत निा<sub>व</sub>त ह। यन मरे ब्र व म क फल है धन धाग नुस्स व समभ कर पुभ कम चन्त्र स्वा स्वभनाई मारुगता संग्वाल ने पड़गा ম বাব क गला पाभी करतास्त्र स्राप्त <sub>प</sub> कर≢ंटन आसाक ।तक विग प्रय गन्नाम पून न न रने रहे यनप्रकृहिन कैकि िच पस को नित्यनाम न क कुछ धनाय मार विध्याभी की सहायता कर नत है। व धपने मन म यन धारणा बनात है कि हानि तो एक का पहचान धीर लाभ प्रवास को प चाकर उनका ग्रम कामनाएँ प्राप्त की तो अपना तो पुष्य ही वढ रहा

## प्रभु अपराधी पर भी कृपाभाव रखते हैं

लखक-प० शिवकुमार शास्त्री

यो मृडयानि चक्रुष चिदागो वय स्याम प्रस्को क्रनागा । अनुवनानि अदितऋष्टं भन्ना यूय पान स्वस्तिमि सदा न ॥ ऋ० ७।२०।७।

 $\star$ 

है। इस्रो भ्रम मंबे थ्स पाप में लगे रहत है।

कित्वैदिक सिद्धाल्य यह है भीर बुद्धभाइस ही स्वाकार करता है कि ∾ठकानूटन के पण काफल कर्ताको किसान किसी काटक रूप में चहवह कष्टद्रार्थिक शांत रूप में हा या किसी म्रार रूप म सहना पत्रमा । साथ हा पचाम •सक्तियाका जालाभ पहुच या उसका फल भा मुख प्रयानाभ के रूप में उस प्राप्त होगा। प्रभू कमफल का व्यवस्था पक है भत पूरी नापतोल से फल भवश्य मिलगा। वेट भीर सस्कृत साहित्य मे ध्यय शद स्वामा परमातमा धर दुकानदार का बावक है। "न तीना मे एक हानियम काम करता है किये कमक्ल हिसाब से देते हैं अवाषुष नही। किसी मित्र प्रथवा सम्बंधा के घर आराप भाजनकर ताम्रा कलान कलिए गृत्पत भ्रकताकभाजा मि । याभीर पक्रव न तय।र ≉ गान्नोर सब कु∍ करने परभाप्रम भीरनम्रत प्रकट करने क lलएकहगानि समुक समुक कारण **से** भाजन विद्यातानहाबन सका पिर भारुखामूखाजमाहै स्व कार कोजिय। ग्रवभागदिलि ३ कितनान । गपर भी यह कहा जा रहा है कि कुछ नही बन

व्मके विपरीत विगक का दुकान का इ.स.म.ब.ग विपरात हगा। पार्वसा छ रुपय कार्यनी शाम मि ।इ.दन के लिए प्रानहलय से कहा न्तराज क पल में ने से ग्राम डालने ५ बाद स हानराजका गापर दिन्जमादेगा ब्रोर⊣रधार नालता हुमा ना कुछ ह्या शीक्षाहात पर कत्या— लाजिय । ग्रया २ लाम तुलुकमाद वकर स**ह** क्हो क्रमा स्थान साथा कहा है कुछ। ग्रीरानातो वह तुनककर उत्तर देगा का क्<sub>य</sub> टार्टसाग्राम पर सारा माल चाद दूवन ५ - १ ६ ५६ सद नाप ताल पर र ती है। स्वामी भा भूत्य को पर्श्विम के अनुसार हा बतन देता है। ठीक इभाप्रकार प्रभूभाक मानुसार ही पल दनाहै हा प्रमुक दण्ड विधान मे माहित उसा प्रकार समाबिष्ट रहता है वैसे ग्रपराथ करने पर माला बच्चे को चपन लगाती हुर्द मन मे उसके सुघार की भावना ही रखती है और दण्ड देते हुए भी उसका हदय अवित रहता है। ब्से एक उदाहण से समस्तिये।

प्रभुत हम दस ज्ञानेन्द्रिया धपने कम सम्यादन क लिए दा है। मनुष्य का क्तव्य है कि वह पहले बुद्धिपूवक ठीक ज्ञान प्राप्त करे भीर फिर ज्ञानानुसार उसकाफल प्राप्त करन के लिए कम करे। उचित प्रकार से देखने सुनने की मयादा नदने बतायी— शद्र कणसि श्रुणयाम देवा भन् पञ्जमाक्षभियज्ञत्रा । हम कानो से ग्से ग न सुन जा मस्तिष्क भीर हदय में सदिवार उत्पन्न कर भीर भाखाने ऐसे रूय देख जो प्रभूकी महिमा को हत्य पटल पर सन्ति कर। वन उपवन के नाना ग्राकार प्रकार रूप रग गचान सुशोभित पौधे लता सौर पूष्य प्रनुकाक।रीगरी पर मुग्ध करने वाला हो याकिसा स्वस्थ सुदर युवक भीर युवनी का रूप सुधा एक साविक भाइताद मन म उत्पन्न करे और प्रभुके कौशल पर मुख्य शोकर हमार मुख्य से सहसा निकलप --

वो जुब कसा है जिसने इन हसीनों को बनाया है। इह जब वेकते हैं हम तो उसकी याद प्रासी है।

इस प्रकार के सदिव रहते उदान स्राचार के भिन प्ररणा देंगे और हमारी इंग्या वास्तव के इंग्र (साम ) के हित सम्पादन मंग्नायक होगी। इसके विवर्षत रजोजुण और तक्षेत्रण मंग्ना वस्त्रो पर दुनिया बदस जायगा कि सनुसार विचार भी श्वासित और समाव का गिराने वाल होंगे। इस म्यित का किसी नन के गायर ने सच्छा चित्र की सा

> विल के बुश्मन हैं उनके शौक में रहती है श्रीस । जान का मालिक जो है उससे नजर मिलती महीं ।।

जब व्यक्ति एक बार पण भ्रष्ट हो जाता है तो फिर उसे बाव पर सामा दुःसाम्य होता है धौर परिएगसस्वरूप हुने प्रभुकी न्याय व्यवस्थाके सनुसार दण्ड भोगना यदता है।

हम सास रिक न्याय व्यवस्था मे देखन है कि यदि प्राप्त शक्ति भीर सामन का कोई व्यक्ति दूरुपयोग करता है तो उते उस वस्तु का धनधिकारी घावित कर के वह बस्त उससे भ्रीन ली जानी है ताकि उससे वह प्रपना धौर समाज का प्रविक महित व करे। जैसे कोई व्यक्ति भपने जीवन और सम्बक्ति की दध्दों से रक्ता करने ने निमित्त एक बन्द्रक सथवा रिवा ल्बर रखने की भ्रतुमति प्राप्त करने के लिए सरकार का प्राथना पत्र है। सरकार के श्रीवकारी विहित प्राक्रमा को श्रानाकर यह जाच करें कि जिस उदृश्य के लिए गस्त्र रखने का श्राधिकार मामा गया **है,** बहकहा नक ठीक है 'प्राथना उचित्र प्रतीत होने पर उसे शस्त्र रखने का प्रमारापत्र लाइसे स दे दिया जाता है भौर वह उसका निष्ट मर्यादा मे उपयोग करता है। उस शस्त्र से वह न केवल भ्रपने जीवन भौर घन की रन्ताक स्ताहे र्मापतु पास पढ़ीस में सकट उत्पान होने पर उनको सरमण देना है। इस प्राचरण ते उसका विताभी प्रसान होता है ग्रीर समाजभी उसका यशोगान करता है। सप्रकार वह चाह जब नक उस ग्राध कार का प्रयाग कर सक्ता है।

स्रव इसक दुष्पमाय के उदाहुम्छ पन भी विचार की जिया सपन भी वन मोर बान की रखा के लिए किन्तु गन्त्र के सात ही विचार बदल गर्मे सी उस्न सहस कुद्रार दूसरा के बन का भरहरण करने लगे। नैंगन मुख्यक्त सी भी चचा लागे में होने लगी और एक ने साहस करके सरकार में गियोन भी कर सी। सरकार न द्व नकीन करन पर सिका सहन में के पानी से सात देकर उनका लग्तस रक कर दिया और गहन उन कर गहनास में बसा कर न्या।

टीक यही प्रक्रिया हम प्रनुकी व्य बस्थामे नादेखते है प्रपित् ऐसाप्रतीत होता है कि मनाधियो न लोक संसर्यना को बनाप रखन कलिए प्रमुक ० प्रवस्था के बनुसार ही घाना कानन नाया और तदनुसार प्राचरण किया। प्रव इसी उदाहरुए। को अनी इन्टिशो गर घा इय । जैसे पूर्व चित्र उदाहरण में ग्रास का उत्तरहराते ग्रस के द्वाग क्षीर की निक्त का दुब्न योग हम भीर ज्याने द्रवटाके बासनाम / सम्कारो को भड काया। सद्विचार कभी कभी ग्लानि भीर पदकात्ताय का भावन को उमारते हैं कित्व बासना की ग्राप्ती में उड जाते हैं। इस खिन मनोदगा का चित्रण कवि बिहारी ने बड स्वाभाविक रूप में किया

> लाज लगाम न मानहीं नेना मो वस नाहि। (सेष पृष्ठ १ पर)

## ★ वचन-सन्देश 🖈

#### राजनीति और धर्म

मेरी सत्यनिष्ठा मुक्ते राजनोति के मैदान मे खीच लाई है: और मैं जरा भी सकोच किये बिना और फिर भी पूरी नम्नता के साथ कह सकता हूं कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति मे घर्म का कोई वास्ता नहीं, वे नहीं जानते कि घर्म का धर्य क्या है?

ग्रात्मकथा (भ्रम्रेजी) १९४८, पृष्ठ ६१५

मेरे लिए धर्म रहित राजनीति विल्कुल गन्दी बोज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिए। राजनीति का राष्ट्रो के हित से सम्बन्ध है। और जिस चीज का सम्बन्ध राष्ट्रो के हित से है, उसके साथ उस मनुष्य का सम्बन्ध होना ही चाहिए, जिसकी घार्मिक वृत्ति हो या दूसरे शब्दो में जो ईववर और सत्य का शोधक हो। मेरे लिए ईववर और सत्य समानार्थक शब्द है। और अगर कोई मुक्त से कहे कि ईववर असत्य या अत्याचार का ईववर है, तो मैं उसको पूजा करने से इन्कार कर दूँगा। इसलिए राजनीति में भो हमें स्वगं का राज्य स्थापित करना होगा।

---महात्मा गाधी यगइडिया, १८-६-२५

#### सम्पादकीय

## मौसम पर वनों का प्रकोप

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष धपनी ज्ञान विद्या की समद्धि, धन वैभव को समृद्धि के कारए। विख्यात रहा है। यहां की बफ से ढकी पर्वत की चोटिया, उनकी कोख से फटते भरने, बठखेलिया करती नदिया, मीलो दूर तक फैले कचे कचे पेहो से भरे जगल, फसलो फलो से लदे सागर तक फैले मू भाग विदेशियों तक को बाकवित करते रहे हैं। गाव गाव, शहर-शहर, गली-गली, फलदार पेड़ी के कारए। सब कुछ हरितिपा से भरा-भरा दिव्योजिर होता था किन्तु जैसे-जैसे वनो की पेडो की ग्रन्थाव व कटाई होने लगी घरती नग्न होती रुष्ट होती चली गयी। बादल रूठने लगे भीर रेगिस्तान के जबडे फैलने लगे। रेगिस्तान के बढ़ते काले सामे से बचने के लिए सरकार पेडो को लगाने में व्यस्त है। किन्तु जितनी तेजी से जगलों की कटाई हो रही है उससे भारतीय मौसम पर भी काफी असर पडा है। १८६४ से लेकर अब तक हुए अनु-सन्धान से पता चलता है जगलों के कम होने से किसी भी क्षत्र की वर्षा निश्चित रूप से कम हो जाती है। ग्रीर जगलो के बढने से छ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। १६०६ मे मौसम वैज्ञानिक डा॰ ब्लाड नै यह बताया था कि वर्षाजगलों के कारए। १० प्रतिशत अधिक होती है। भारत में प्राचीन काल से यह माना जाता है कि बनो पर ही वर्षानिर्भर है। इम्प्रूवमेन्ट आक इडियन एग्रीकलचर नामक रिपोर्ट में डा॰ विलकर ने नोलगिरि की पहाडियों में कटकमड तथा उसके ग्रासपाम के क्षेत्रों में शांकडे एकत्र कर लगभग सिद्ध कर दिया है कि जगलों से वर्षाका सीघा सम्बन्ध है। नीलगिरि की पहाडिया १८७० के पहले वृक्षविहीन थी। जून जौलाई तथा धगस्त के वर्षा के महीनो को छोडकर यह प्रांका गया कि १८७० से ७४ तक वर्षा के दिनों की सख्या ३७४ थो। इसके बाद यहा वृक्ष लगाये गये भौर जगल फैलने लगे। १८८६ से ६० तक जब काफी जगल फंल गये थे उस समय वर्षा के दिनो की सख्या ४१६ आकी गया। कहने का अभिप्राय यह है ज्यों-ज्यों जगल फैलते गये वर्षा के दिन भी बढते चले गये । छोटा नाग-पुर का उदाहरण देकर मौसम वैज्ञानिक डा॰ रगनावन ने इस बात की पुष्टि की है जगलों का होना वर्षा के लिए ग्रावश्यक है। उन्होंने कहा भाज से ४० या ६० वर्ष पूर्व छोटा न गपुर मे जब काफो जगल मे उस समय यहा गर्म मौसन मे भी दोपहर के बाद बौखार मा जाया करती श्री। इस कारण यहा का मौसम इतनाठडारहताथाकि यहा चाय की खेती भासानी से ही जाया करती थी। जैसे-जैसे जगल कटने लगे

वर्षा की बौधारों का साना बन्द हो गया मौसम स्रौर वातावरण पर प्रतिकूल असर पडने से चाय की खेती भी बन्द हो गयी।

जगलों से वर्षा के सम्बन्ध का ग्रध्ययन इंडियन इन्स्टीटयूट आफ साइन्म बेगजुर की डा॰ सुनीचना गाडगिल ने किया तो उन्होंने कहा — जगलों के कारए। वायुका तापमान घट जाता है तथा पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन के कारए। वाष्प घनत्व बढ जाता है जिससे वर्षा होती ' है। वृक्षों का भूमि पर घनता तथा पत्तियों को घारण करने की अवधि भी वर्षा के वितरण तथा मात्रा को नियत्रित करती है। उन्होंने 🏅 यह भी देला कि पतक्रड वाले वृक्षों की प्रजातियां सदावहार वाला प्रजातियों की तूलना में कम बाईना बनाए रखती है। बत यदि सदाबहार बनों की जगह पनभड वाली प्रजातिया लगाई जाये तो वर्षा कम हो जाती है। लखनऊ के पोलयो बोटेनिक्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजस्थान की खारे पानी की भीलो के नीचे दवे जीवा-श्मो का ब्रध्ययन कर यह पाया है कि पहले इस क्षेत्र में सघन जगल बे। बीरे-बीरे जगल कटते गये वर्षा कम होती गयी भीर रेगिस्तान फैलने लगा। अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह, बिहार के राँची क्षेत्र, श्रासाम के डिब्र्गढ तथा बस्बई के सान्ताक्रुज क्षेत्र मे भी वर्षा की कमी का कारण जगलो भीर पेडो का घटना ही बताया गया है। इयोपिया मे तथा ग्रफीका के २५ देशों में श्रकाल के प्रकोप के कारणों में एक बात यह भी कही जाती है कि वर्षा के न होने मे जगलो की कटाई का महत्त्वपूर्मा योगदान रहा है।

भ्रत इस विषय पर मनुष्यमात्र को विचारना चाहिए तथा नगरो खहरों में फैलते सीमेन्ट के जगलों में पेडों की हरियाली भी बसायो जानी चाहिए।

-- यशपाल सुधांजु



धार्यसमाज के सम्मूख जोरदार चुनी-निया हैं। हाव चुनौनिया कि जिनका उत्तर देना ही होगा यदि न दिया तो इसकी समाप्ति निचित है। यह कटु है पर है संगाकर घोष की तरह इसे पीनाही चाहिए ग्रन्थवा । कोई भी समाज जब तक ध"न घर काधा ने संसमेट कर रस सकताह तब तक बहुसजी नशक्ति से घाष्टावित रहता है धीर जब उसके घटक विजयकर निष्ठावान् घटक ग्रपनी धाकाक्षाची की पूर्ति एवं मुरक्षा के लिए दूसरे समुनायों का मुह नाकने लगते हैं या दूसरे समुदायी का बज्ज बनते हैं तव समभनाच हिए कि उस समाज में रोग मर रहा है उसकी पाचन शक्ति कुटित हो रह है सोर वह दव प होता जा रहा है। जा चेतावनी देने पर भी उसके मुक्तियायाक णधारन चेतें ता समक्रना चाहिए कि राग ग्रसाध्य है।

कायसमाज ने राजनीतिक सहुन्दा-नागाओं को पूर्ति के लिए तो अपने सदस्यों को दूसरे दलों में जाने को खाने छट दे ही रली भी पर अब सस्कृति रला रला — राष्ट्रीय सक्ट के समय भी इसके महित्य घटक आर्थसमाज में काय-को को र जा रहे हैं को आर्थसमाज की रिक्षात कारा है इसका मनुमान सहुज हो सामाया जा सकता है।

सतीत में भी सार्थ जाति के पतन व विष न का वा च मही बा पावन शाविन की क्यों, तत तो अविवेक कारणा विद्या वा। सब तो च्हिंब व्यानम्द ने विवेक तक का बीम्क देकर पौदव स्रोज व तें क वा मन्द्रज बमादिया है पर त सक्वल हुमारे नेन्द्रव मंसे मुद्धित हो एते हैं। नेन्द्रण प्रवान लोगों का यह सनि-वार्थ कर्नक्य ज जगरवायिस्व होता है कि से ममाज में नये मितकोतों का सन्वेषण करे नई-मई प्रतिभागों से इसे मुक्त करें स्वांजानी पीड़ों के निष्य नये प्रकाश-स्तांजीनी पीड़ों के निष्य नये प्रकाश-स्तांजीनी पीड़ों के निष्य नये प्रकाश-

दूसरे शब्दों में जीवनघारा के प्रवाह को सर्वेदा यतिर्शल रखें।

पर यहा उस्टी बात हो रही है। जो भी नया प्रसिद-स्रोत नृतन प्रतिका मार्थ क्षोजती है, जसे निस्माहित करक या तो इस दिया जाता है, या पीके बकेल दिया जाता है स्वयन उसके लिए कोई भूल-भूलीया का जाल रच दिया जाता है क्षियों उलक्ष कर या तो वह कार्यकें न की भीण हुए जाता है या भ्रम्य क्षमुदायों से गीण हुए जाता है या भ्रम्य क्षमुदायों से जा मिनना है।

सगन्त ग्रद्धवा बायुन नेन्द्रव मे कुम्ब-कीय शक्ति होनी है। उसमे उदारता, विकारतीलता एव समन्वयकारिता का गुर्मा होना है। यवायोग्य व्यवहार का

## चुनौतियां और उत्तर

डा० पुष्पातती आचार्या मन्तु मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

ध्य यही है कि जा जिस हम्म की शमता रखता है उसका उसी कार्य में साथ हिना। धारिमक काल ने धार्यवस्ताक नेताधों में युष्ण ये वे क्षीत-कोत कर व्यक्तियों ने साथ उसके प्रोत्साहित करते वे धोर कार्यक्षीत में लगते थे। स्वामी श्रद्धानस्त्रम् इस्ताब नेत्वस्ताम मार्ताहित धारि स्थिता धार्यकामक को हती गुण के कारण मिल सके थे।

वतमान नतृस्व कुर्सीव धन को मुरयता देकर चल रहाहै। कही उन से ग्रागे बढकर कोई उनका पद न हडूप ले। इसलिए वे नई शक्तियों से भयभीत होकर उन्हें बागे बाने ही नहीं देने हैं। स्वय तो वे क्या स्रोजेंगे ? यदि कोई प्रतिभाशाली व कमठ व्यक्ति स्वतं नेतस्य वर्गसे सहयोग की माग करे, तो अनेक नहाने लगा कर टाल दिया जाता है। यदि प्रार्थसमाज के कर्णवार बास्म-सन्तरा (Inferiority Complex) से ऊपर उठकर यन भावना की समन्वयकारी प्रवृत्तिको हृदयगम करके व्यवहार क्षेत्र मे ब्राए और प्रत्येक विवासक्षील कर्म एव प्रतिभाशासीव्यक्तिको उसकी दिव व क्षमनाके प्रमुखार कार्यमे लगा दे, तो उनके पास भ्रपार शक्ति समूह सचय हो बाए धौर उनकी दस गुनी, सीगुनी प्रतिष्ठा बढ जाए।

इसके साय हो बार्यसमाज की गौरव वृद्धि होकर चुदिशि इसका बसीनान फैल जाए।

ग्राड राष्ट्रकी सन्कृतिको, जातीय बीवन को सर प्रोरसे भयकर चुनौतियाँ हैं। सब लोग त्राहि-त्राहि मचा रहे हैं। क्याधार्थीको सामान्य व्यक्तियोकी तरह इरमाया उपकाशील होकर धपनी रोजी रोटी की ती चिन्ता करना शामा देता है। क्या यह प्रायममाओं के शानदार भोजस्त्री व्यक्तित्व के सनुष्टा है। इस समय तो सभी प्रान्तों के आयों को तन कर मैदान में डट जाना चाहिए वा। कन्या कुमारी से काश्मीर तक ब्रह्मपुत्र से सिन्धु नदी तक एक पुकार चठनी चाहिए थी कि दस्यु (ध तकवादी) लोग एक कदम नहीं बढ सकते । यह देश द्मार्थीका देश है। द्रनार्थीके दुस्यप्न यहानही पनप सकते।

क्यातमाणा है श्राव हमारे देज की प्रियम तमाणी के हत्यारों का यहासार्व जनिक श्रीभन्दन होता है। देश को विव्यण्टिन करने वालों की यहा प्वा होती है भीर देश की अनता व सरकार टुकर टुकर देस रही है। भीर आर्यसभाव रूपी शेर की गर्जना भी भीन है।

पर सार्यसमान को सर्वस्य समर्पित करने वाल इसे सक्वे दिल से प्यार करते वाले, पूक कप से ऋषि कार्य की पूर्ति के सपने को होम देने वाले आज मर्गाहत होकर पूक्र पहें हैं कि सप्समाज मीन क्यो है? उनका हृदय चेरकार कर रहा है।

पूक गया धार्यतमाव धाने धनीत को उस धारीत को विसाने वह पस्ती अरे के तरी की तरह प्रत्येक सकट से, विकार के तरह प्रत्येक सकट से, विकार के मारत या की करण वरना करता हुया धाततायियों से जुक्तता था। वह सदा धन्याय दशन धनावार व सत्यावार का प्रतियों करता रहा है। धाव देश की सरकार भी धोवक्ती व्यक्तियों की खोव से हैं। धावस्त्री की तरकार भी धोवक्ती विज्ञास की धोव का पूंच ही है। धोवस्त्री विज्ञास की धोव का पूंच ही साम देश की सरकार भी धोवक्ती विज्ञास प्रतियों का सही साम तरकार है। किर सह मीन हो केवल मूक वर्षक को वन ने देश है।

रूढिवादिता ने सर्वदा समाज की पत्र बनावा है। बाज बार्यसमाज भी रूदियस्त होता जा रहा है। कुछ चिसी विसाई, पिटी पिटाई बातों की नेकर उपदेश करा देना, मनोरजक समन गया देनाही प्रचार नहीं होता। कही कहीं शास्त्रार्थ, की चुटकिया भी ली जाती हैं पर इस उद्यक्त पुरस्तमयी वेका मे जब कि राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन संकट में फसा है, केवल इस बाक् प्रचार से काम नही चलेगा। धार्यसमाज वर्त्त व्यवस्था को मानता है तो वह बाज क्षात्र शक्ति का तेज दिलाए । केदल पण्डिताई भरी कोरी बातों से बीवन नहीं चलने वाला। यह बैनी ही बात है जैसा कि कृष्ण ने धर्वन को उद्दोषन देना ने कहा या कि तुम पण्डिताई की बातें कर रहे हो जो कि कर्तव्य क्षेत्र से भागने का बहाना मान है। प्राव सार्यसमाच को कृष्ण उनकर भागे भागा चा, पर वह सर्थन की सरह विषयम् एव कुँठित बुढिहो गवाहै। सर्जुन को परिजनों का मोह सता रहा बा भौर मार्थसमाज को कुर्ली का मोह प्रपत्ने प्राणी का मोह एव सुख सुविधामय जीवन का मोह प्रतिबद्ध कर रहा है।

आर्थं जनता फिर भी सरल हृदस है त्यास तप से पीछे हन्ने वाली नहीं। वह रणलेज में जूम सकेगी पर नेतृस्व उसको सही दिखा दिखाए तभी न वह आसे सामगी। क्या आर्थं नेतृस्व जायेगा। □

## सुल नहीं मिलता कभी विषयों के ममेलों में

नीय की निशेषी से है प्रयूर का स्वाद वहां, इन की खुबड़ कहां घोड़ों के तक्षेत्रों में । साटी के देखों से है सिश्री का मिठाल कहां, खुदा ची का स्वाद कहां वनस्पती तेको से ॥

दुवेंगों के तब होता प्राप्त सद्धान कहा, बुद्धि का विकास कहा ताल युद्धा बेलों में। तक्या सुद्धा ''स्वक्यानन है हाहाचर्य पातन में, सुद्धा नहीं निकता कथी विषयों के फरोसों में।

> ले - स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (प्रविष्ठाता वद प्रचार)

### दो कुण्डली

- शालेशार के वर्ष से स्वय धने के जिल । ठभी ऋषि दयानक का नही लवाबा विज्ञ ॥ नही लगावा चिल नवाई स्थान वरारी । ये सत्त्यार्थ प्रकाश सुखिला सम्बद्धी वारी ॥ इवसिल फैसन बीटए सी कैसे खुनार के । ऋषि दयानन्त्र के समुद्रासी सर्वशार के ॥
- ताल कटोरा में कवी सजी समंकी ताल। विमें देखने को गए किस्तने बुढे वाल।। किस्तने बुढे वाल शिक्षिका व झस्त्रापक। पाण्यारक का क्य प्रकट नल नस में क्यायक।। कमी रहु गई एक साम की, कुके मोरा। 'ब्याकुल' ऋषि वरका सरना सा ताल कटोरा'।

रपविता- प्रकाशबीर शर्मा 'ब्याकूल'

धाप धार्मसमास के प्रधान है— बात बीत तीय नयं दुरानी होगी। शाकर (बहुरापट्ट) में करवा के यो चुटो में कोई बिशाद बढ़ नया। इस सम्बंद की रिपोर्ट हातम के पाए नई। योगी पता धर्मने धाप को निर्दोग नताते में धर्मर दूबरे पता को होगी। दहराते में। सरकार ने इस विवाद ने पुरन नाम के लिए एक उच्च बहिबारी की साकर नेना।

बहु समिकारी बहुत (हुना। साक्र्य के समिकाश सौंप उसे जानते में कि वह एक उप्प प्रिकारों है परन्तु बहु किस उद्देश्य के बहुत प्रास्त्र है, पह करहे जात मा। उस सज्ज्ञन ने सपनी जान पूरी कर सी दिवाद की जान प्रकास करके उसे पता यस गया कि इस समाने में किस किस का कितमा दोष है। दोगी दोनो

जाव का कार्य पूरा करके वह सिंद कारी बहा के शासेंसमात के प्रयान पठ झायें आह को के पर नया। उन्हें कहा सायें भी पता है कि मैं बहा को सिंद हैं? उन्होंने कहा कि सान करें हिए कैंग झाना हुमा है। तब उट उच्च राज्या किसारी ने नहा, मैं झान के नगर के नो पत्नों के सीच में पत्न रहे लाने विवाद की गुरुत कार के लिए यहा भेजा नया हू। सैने सपना कार्य कर सिंदा है।

साप सार्यक्रमान के प्रधान हैं। साप भी एक पक के साथ यहा जुड़ हुए हैं। मैं भी सायसमान का एक ठेनक हु। साप सार्यसमान के पुराने उपदेशक हैं। साप

असे हिन्दू थम का छत्रपति कहा चाता वा वही कालक प्राच हमारा प्रादर्स है। कठिनाइयो न उसका जीवन निर्मित किया था। शिवा की का बाल्यकाल बहुत बड़ी कटिनाइयों में बीता । शिवनेर के किने में सन् १६३० ईंट में उसका अन्य हसामा। उनके पिता शाह जी बीजापुर दरबार मे नौकर थे। बीजापुर के नवाब की छोर से, जब कि शाह जी झहमदनवर की लढाई में फसे वे, मालदार सान ने दिल्लीक टादशाह को प्रसन्न करने के सिए बालक िया जी तथा उसकी माता जीजादाई को सिष्ठगट के किल में बन्दी करने का प्रयस्न किया, नेकिन उसका यह हुष्ट प्रयत्न सफल नही हो सका। श्विवा जी के बचपन के तीन वर्ष भपने जन्म स्थान शिवनेर के किले ही में बीते। इसके बाद जीजाबाई का धतुओं के भय से अपने बालक के साथ एक किले से दूसरे किले मे भागते रहना पड़ा किन्तु इस कठिन परि-स्थिति में भी उस बीर माता ने भपने पुत्र की सैनिक शिक्षा में तृटि नहीं आने दी।

माना जीजा नाई सिवा जी को रामावला महाजारन तथा पुरालों की जीर नावाएँ सुनायां करती थी। नारां, जीमीज, सुदुमन्त तथा नामा जी नामक शिवा जी के सिक्षक के मीर स्टर्सक थे। प्रज्यक नीर दावा जी कोड देव। इस सिक्साका परिलास वह हुआ कि वाजक तस्यामञ्च-

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-ग्प्त पृष्ठो का अनावरण

## आर्यों की वीरगाथा-३

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञाम्'

के सबनोपदेख सुनकर में सदा प्रत्या नेता रहा हूं। अब आप नहिए कि एक आये के रूप में मुक्ते इस विवाद के बारे में केती रिपोर्ट सरकार को देनी चाहिए? मैं बत्य करण सुचना सासन को हू अच्चा फुटी रिपोर्ट नेज व ?

सासमाज के प्रमान भी प० पार्थ आपु जी नह सुनक र कुल मोक पद परस्कृ प्रमान भी हुए। सार्थसमाज की गौरव गरिका, सार्थसमाज के प्रमान पद की प्रतिकाश सा स्पनी समाज देवा का उन्हें काल सामा। साप्ते जब राज्य-मिकारी से कहा कि एक साम की साम हो नहां माहिए और सस्य सही है कि हमारे पक्ष ना भी हुल सेण है। साप नेरे कारण पक्ष-पार्त न की सेल ।

प्रधान की की यह आयों जित बात पुनकर आपने उन्हें कहा, प्रच्छा यही है कि मिसकर यह विवाद सभी निषटा लें ताकि मैं ऐसी रिपोर्ट भेज सकू। धाकर का यह विवाद निषट गया। कसह मिट गई। प्रेम से रोजो पल रहते जागे। प्राप्त जानना बाहुंगे कि सह उच्च ध्रविकारों कोन वा ग्यह धार्य पुत्र में ध्रायक्षमत्र के काने माने तिकनरी सर्मुल ज्यान्याग्त नित्कालक जीवन वाले भीतातृ बाहु साहुव बार्वमारे जो। प्राप्त घट स्वतार में नहीं रहे। जून मात म आप चल बवे। आप पूज्य शेयराव जो बाधमारे के होटें भाता युंग्य शेयराव जो बाधमारे के होटें

#### बब प० बुद्धदेव जी जुब पिटे

बडी पुरानी बान है कि उत्तर प्रदेश के विबार पबुरा का नीवाव बेरिक वर्म प्रहुश करने वाला था। राजपूरी के इस पाव में भी पठ बुढ़देश भी विवासकार बुलाए गये। प्रावपात के मौसावियों ने पूरा जोर समा विधा कि ये राजपूत पार्य के विवद उक्काया गया। में पुरस्तमान रहने को तैवार हो गय। निक्चय हुया कि जब कोई सार्य पितक सार तो उसकी सरोट रिपाई की बावे। प्रविकार राज-पुत सुद्ध होने को तैवार बंठ के। श्री प० बुढसेव जल सात को जा रहे से। नाव के पास एक बुबक हुल क्षा ने उन्हें पर दक्षोत्रा। सब पीटा कीर पीट पीटकर पूक्षा 'बता तुन्हें कहा पुज्यांक' व्यक्ति का सीवाना बुढसेव बाल, 'बाहें कार पार के पास पुजे मेरे रन राजपुत साहशों के पास पुजे मेरे रन राजपुत साहशों के पास पुजे मेरे

यह उत्तर सुनकर हुव का की रयों में महाराए। प्रताप का बमा हुया रक्ता गर्म हो गया। उसे यह विकार सादा कि इस हम स उतना प्रम है। वह प० जी के पाव पडा धोग उन्हें गाव ल गया। वह गुढ हुया। उमें ही सिंह नाम दिया गया।

वही प्रायसमाज मन्दिर बना। सब राजपुत जाय बन गय । श्रायसमाज मदिर की नीव उसी हरिसिंह ने रखी। पूज्य प० बहादल जी जिज्ञासुइस धवसर परवहा पथारे। हरिसिंह फूट फूट कर रोया कि इन हाथों से उसने प० बुद्ध देव जी की ठुकाई पिराई की थी। प॰ ब्रह्मदत्त जी जिल्लासुधौर भी प०हरिस्त जी (ध**व** प्रावेश्विक सभा देहली में हैं) ने उसे कहा कि तेश प्राथित्वत हो गया । इन्ही हाथों से बापने बायसमाज के मन्दिर की नीव रल दी है। हरिस्टिंह के कुल का एक व्यक्ति द्यार्थसमाज का पूज्य सन्यासी वन-कर धार्यधर्मका सन्देशादेला रहा। शाज यह हुस राजपूती ने शायसमाजियो मे बडा प्रतिष्ठित परिवार माना जाता है। यह बटना हमे श्री प॰ इरिदल जी ने सुनाई ।

## किशोरमञ्च-

## वीर बालक शिवा जी

शिवा जी बहुत क्षोटी प्रवश्या वे ही निर्भीक एव प्रदम्य हो गये। जन्म जात शुरमावली बालको की टोबी बनाकर वे उनका नेतृत्व करते वे और पुढ के केल केना करते के। उन्होंन बचपन वे ही निर्धामयों हे हिन्दू चम देव मरिटर तथा भीको के रक्षा करते का वह सक्य्य कर निया।

शाहु अ वाहते वे कि उनका पुत्र वी सीवापुर दरवार का हुम्पाशा के ने। शिवा वी वद सात्र वर्ष के पंताची उनके शिवा उनको शाही टरवार में के गय। शिवा ने कोचा वा कि दरवार की डाव-उक्त मार्क के सा बादेवा और दर-वार की बोर सार्कायत होगा निक्सु शिवा के ताथ ऐसे चनके विचे पिता के ताथ ऐसे चनके वे वे की किसी सामारण मार्ग पर वा रहे हो। नवाव के सामने कालर पिता ने शिवा जो की पीठ पर हान के से सहर हो । वावाव के सामने कालर पिता ने शिवा जो की पीठ पर हान के से सहर हो । वावाव के सामने कालर पिता ने शिवा जो की पीठ

वालक ने मुखकर पिता की की घोर

देखा भीर बोला— बादणाह मेरे राजा नहीं हैं। मैं इनके धाने खिर नहीं भुका सकता।

दरबार में सनसारी फैल मारी। नवाब सालक की धोर प्रकर देखते जा। किन्दु विज्ञा की ने में नहीं फुकार ना नाह की ने तेम नहीं फुकार ना माह की ने तम नहीं फुकार ना नाह की ने तम नहीं फुकार ना नाह की ने तम किने की उसने पर जाने की आजा है हैं। असक के भीठ करी धौर निर्भावता पूर्वक दरवार से बना जाया। पर जीटकर लाह जी ने पुत्र को उनकी पृथ्दता के लिए बहुत बीटा तब पुत्र के उक्तर दिया— जिता भी थाए मुक्ते बहा स्था न गय के। धार तो आपने ही हैं कि मेरा सरक सुत्रवा जवानी धीर खात को धोवर रही रिक्षी करा निर्मा कुत्र नहीं करवार निर्मा की साम ने फुक नहीं उक्तर दिया— विश्व की साम ने पुत्र नहीं उक्तर दिया— विश्व की साम ने मुक्त नहीं उक्तर विश्व हो तहीं से साम ने भुक नहीं उक्तरा 'बाह्य की पूर्व हो नहीं ।

इस घटना के चार वच ीं हो की एक घटना है। उस समय शिवा जी की सवस्था बारह वर्ष की थी। एक दिन शिवा जी बीबापुर के मुस्स माग पर पूप रहे थे। उन्होंने देसा की एक कसाई एक

गाय को रस्सी से बाचे लिये जा रहा है। वाय थाने जाना नहीं चाहती, डकराती है भीर इधर-उधर कातर नेत्रों से देखती है। कमाई उसे डण्डे से बार बार पीट रहा है। इथर उधर दुकानो पर जो हिन्दू हैं। वे सस्तक फुकाये यह सब देख रहे हैं। उनमे इतना साहसनही कि कुछ कह सके। मुसलमानी राज्य मे रहकर वे कुछ बोलें तो पता नहीं क्या हो। लेकिन सोगो की बच्टि धारवर्य से खुनी की खुली रह गई। बालक शिक्षा जी की तलवार स्थान से निक्स कर जमनी व सुदकर क्साई के पाम पहुँचे भीर गाय की रस्मी उन्होने काट दी । गाय भाग गयी एक श्रोर। कसाई कुछ बोले-इससे पहने उसका सिर थड से कटकर भूमि पर लुटकने लगाथा।

समाचार दरवार में पृत्या। नवाब ने क्रोच से लाल होकर कहा — तुम्हारा पुत्र वडा उपद्रवी जान पडता है शाह जी । तुम उसे बीजापुर से बाहर नहीं मेत्र दो।

साह जी ने साजा स्थिकार कर शी। शिका को अपनी माता के पास भेज दिवे यो, लेकिन भारत के एक दिन बहु भी साथा कि श्रीजापुर-राग्व ने स्ततन्त्र हिन्दू सफ्राट ने ने ते शिका जी को बपने राग्य में समित्रत किया शीन बत विशा जी हाथी पर बतार हान श्रीजापुर के बागों से होने हुन दरकार से पहुचे, तर पहास ने से सारण उनका स्वास्त्र किया भी राग्ने सामन कुलाय। व्यामपीठ -

#### उपनिषत् कथा माला- द

## महत्त्व की प्राप्ति

#### प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

-पनिवयो कंस-त्रो मंपरमः नाका सह व बतान कियागया है भीर यह बत झाबा है कि सकलोग उसी की उपासना करतं है पंतु किर भी प्राप्त क्या नहीं होता?

महन्य का प्रय है बडाई सब खं बहा हाना। रख में एक भेद हैं की यहां पकास साठ महत्य बैंग हैं। उनसे एक पहुनवान भी है। हन कहते हैं कि नह् सब से प्रीचन बलवान है। परन्तु यदि जय म प्रावमी मिलकर उससे नहीं तो बहु उन पवासी के सामने निवल हो आएगा। परम स्वा को मब से नहां इस लिए बन या है कि चाह ममार की सब साईन्या मिलकर भी उसका साइना करें ता भ वह सब से बडा हो रहेगा। यह साई बहुगच्छ स भी बडा है। सारी कृष्टि भी मिल जाय तस भी वह सबसे वहां है। उस से क्षेत्र बडा हो। सारी कृष्टि

मनुष्य मे यह मह-व कव प्राता है?

महिष्य हे सहान की पूजा करें। महुप्य

महिष्ठे है ने बड़ा नना पहला है तो

जनकी नारण ज्ला है जो समे बड़ा हो।

यहों सदार में बीटनों चर होता है। पुर्हें

स्वयंगे पटने के लिए किसी महिर्म स्वारा हो।

सप्त जनीय गी। खटे पहलवान की

बण्य पहलवान के पान जाना होगा।

विजाय समाप कटनपा मान पोर को है

सामा निहा परिनुष्य का भीर नप्त के

ब पन में टूटना चाहने हो तो नम्हें जब परमें चरमा के

परमंचर की उप सना करनी होगी जो

मबर जन्म और मरण के बन्बन से परे

है।

ससार के पदार्थों को देखों कोई छोटा है कोई बडा। जब बाप छोटे-छोटे जोने को देखते हैं तो उनकी घरेजा इसरे जन्तु वड दिवाई देते हैं। जानवरों से कृत वड हैं कृगों से पवत पर्वतों में दिवा सब, दिसालय से भूमि। भूमण्डल को देखा तो सूर्य उस से बडा दिवाई दिया। मुख्य को बेखा तो डॉट प्राकाश पर वर्ड सूर्य से साकास वडा है। साकास में प्रकृति बडी है जो सब में ब्याप्त है। प्रकृति से पडा भरोहरमा होती सिंग से महान् प्रभर र की पूजा करते हैं।

ऋषि याजवल्क्य ने धपनी स्त्री मैत्रदी से कहा कि मैं न्स ससार क सब सम्ब घतोडने लगाहु तुम्हारे निए सब पदाथ विद्यमान है को बाहेल लो। सब मैक्क्यो पूछने लगी - बाप ससार की छोडते हैं क्या भाग यह बता सकते हैं कि इस ससार को खोडकर कहा जायेगे? बता ये आप इस देश को, इस घर की, इस परिवार को क्यो छोडते हैं। उन्होंने उत्तर दिया अमृत प्राप्ति के लिए' मैत्रेयी योजी साप जमूत प्राप्ति के लिए इन बन्धनो को छोड चाते हैं फिर सूके इन बन्धनों से क्यों फलग्ते हैं ? भ्राप यदि मुभे सब कुछ दे जाये तो क्या मैं उस पद को प्राप्त हो जाऊगी? उन्होने कहा जैमा बनी पुरुषो को जीवन का सुख होता है उसी प्रकार तुमे भी हो सकता है पर तुधन से उस समृत पद की प्राप्ति नहीं होती। मैंत्रवी बोसी इस धन की बावश्यका नही।

भाइयों। त्याय से ही समृत यद प्राप्त होता है यह घन से नहीं निसता। जो सच्चा त्यापी होता हैं वहीं सब मुख छोड़ कर समाधि ने बैठता है। एक चित्त होकर उस प्रमाशन को जिल्हा हो किर चब बह उठना है हो। उत हो दशा का किसी कवि ने य स्पन किया है—

समाधि से उठकर यह योथी पुकारा, परमाणु मे देखा है ससार सारा। परमाणु मे ससार सारा समाया है प्रमा उथर ही जिथर को बुनाया।।

ेसे यह सब बाकाश मूई के श्रिट के समान दिकाई देत है।

सनार में होटों को सुख देश्य हो बड़ बनने हैं। एक धादमी दूरा है। घर के यह लोग उसका मान करने हैं क्योंकि वह बाबार से उसके लिए ची काता है। पहने बच्चों को खिलाता है किर धाप खाता है। यदि कोई बबा बुढ़ा व हर धार ही खा धामें बच्चों के लिए न लाये या बच्चों को न दे धीर उसके खामने बैठकर धाप ही खा ने तो नवा उसका मान होता।

प्रभुते तो हमें इतना कुछ सुल धौर धान दिया परन्तु हम हैं को उतका क्यान भी नहीं करते। सोचों तो सही यदि मेरी धालों में बोबा सा फक धा नाये तो मैं बाबार से एक लेकर लगता हैं। यदि वह दूट बाये तो दूसरी ने ल। परन्तु सब मन्द्रप्यों के एक खेते नेत्र हैं दन्हें किस ने बनाया? यह तो सद प्रभु की ही हपा का एक है। जिचर भी धार देखें उछ प्रभुकी ही दया दिखाई देती हैं। समस्त स सार से उसी का प्रवन्त है। तिनक निक्का को देखी। एक दो यह रख को धनुमन करती है। दूसरा कान इसका इससे भी जारी है। वस साथ कुख गोजन करते हैं तो उसमें बात परार्थ दसने कोर कुसनने बोग्य होता है उसे वह निक्का समय करती है बौर दादों में गुड़ेशानी है। शन्य भी मही है। यकारि सन्दर्भ से निकलता है पंग्यु निक्का ही बातु को नियम पूर्वक निकाल हर सब्द का कथ देती हैं। हारमीनियम को ही लो। उसके यह की हवा देसर दशांगी, उसके से सार्थ जा स्थल निकलना। इस सम्बद्धान्य दिलक-

साविकार भाजाये तो सारा ही काम

दक अराये।

ये हाक भी परमात्वा ने दिवे हैं। इन हार्थों से कितने काम होते हैं। सकडी चीरने के लिए हाथ में कुल्हाडी नेते हैं। गहतीर से तसते बनाने के लिए खारा भौर लकडी साफ करने के जिए दवा उसमे खेद करने के लिए बरमा। कुल्हाड के साथ निसकर वही हाथ कुल्हाडा बन वाते हैं और धारे के साथ मिलकर बारा, रदे से मिलकर रदे का काम देते हैं और बरमे से मिलकर बरमे का। प्रश्नुने तुम्हें एक बीजार दिया है तुम्हारे बनाये हुए धीजार तो बदन जाते हैं परन्तु बह नही बदला जाता। प्रभुकी महिमाती वात-बात मे दिलाई देती है। इसलिए उपनिषदौ ने कहा है कि उस प्रयुक्ती पूजा करने स ही महत्ता प्राप्त होती है।

सदा सीचे मार्ग पर वजी स्वयमेव निजय हो बासोचे। परम्बु झापने दो पर-मात्मा ते जुल मोडकर वृत्ती नदियो पूजिमा भादि को पूजना झारम्म कर दिया है। इनकी पूजा ते तुन्हारा हु स दरित बडता हो गया है और बडता हो जायेगा।

यह दुवंशा हुई है।

देखी । पुत्र का अपने पिता के लिए नवा कर्तेच्य है ? धपने पिता का सम्मान करना। पिता को बाजा दे उसका पासन करना। भोजन बने तो पहले गिता की खिलाए, पीसे से बाप काए । बाजकस तो धनी पुरुवो के नौकर ही सब कुछ हैं। न पुत्र ही को पता सगता है और न माता पिता ही को, कि किसने भोधन किया है धौर किसने नहीं<sup>?</sup> मैंने एक युवक को देखा। बहु बी॰ ए॰ पास था बुकान करता था एक कार उसका पिता उसके पास बाबा, उसने जल गाँगा। सहका कुछ लिख रहा या तुरन्त उठा सन काम श्लोडकर पना से पानी लाया और पिता जी को पिलाया। रात को घर जाकर पिता के चरल बोये. उन्हें भोजन कराया। मैंने क्टा नौकर तो हैं उनसे काम क्यो नहीं करवाते ? बहु बोला, नीकर पानी तो घवण्य ला देंगे परन्तु पिता जी के वन्त्रों को बोकर जो झानस्य मुन्हे होता है उसे मैं ही जानता है। यह धानश्य मुक्ते नौकरों से काम करा के कैसे प्राप्त होना ? पिता बी की माजा पालन करना मेरा कर्त-थ है। उनकी साज्ञा पालन करने मे ही मेरा

एक दूसरा युवक वा । उसने माला ले रक्ती थी। पितापिताका नाम रन्ता रहता वा। जब पिताने पानी मौना तो कह दिया कि 'घडे में मरा हुगा? पी को। वह अपने पिता की धारा का वालन नहीं करता था। पिता का नाम ती जफ़्ताथा फरन्तु रिताकी बात कोई भी नहीं मानता था। माइयो ! पिता की प्रस न्नता उसी पर होती है जो उसकी बाजा का पालन करता है। इसी प्रकार परमा-श्यामी उसीपर प्रसन्त होता है जो उसकी प्राज्ञा का पासन करता है। परम त्नासव के सकत्री को सन की भाव, नाधों को जानता है, परस्तु किसी की कुछ कहता नहीं। यदि वताता भी है तो उस सभय वडा वह कोई बुरा काम करने लगता है जैसे मैं तुम्हारे पैसे निकालना चाहता है। तुमने तमिक दूसरी और देशा भीर मैंने हाथ बढावा। परमात्मा ने तुम्हें तो सवेत नहीं किया। उसने मेरे मन मे कहा, कि ऐसामत कर यह काम दूरा है। वस मेरे माई। नेकी कर दरिया मे डाल। यह सब से उत्तम मियप है। प्रपना स्वमाव ऐसा बना लो कि तुम परमारमा की भावात्र सुनकर उसका धनुकरण कर सको। याद रको । सद्वार में वो किसी के दुगुँ सा खिपाता है, वह बण्या है सीर जो किसी के दुर्नुख प्रकट करता है वह बुरा है। धवनुस रहित तो सहार ने कोई भी नहीं। यदि तुम किसी का सुवार करना बाहते हो तो उपकालत में समकाक्री। उसके धवनुस्तो का दिंढीरा न पीटो।

पृथ्वी के लिए सूय वहारा है, परन्तु सूर्य को किसका सहारा है ? उन परमास्का का, जिसने उसे बनावा है। इसी डकार प्रवन होता है कि परमेशवर किखके प्राचार
पर हैं? उपनिश्व बतर देने हैं "वह
प्रथमी महता में घपना याचार थाए ही
है। तुम भी सपने जीवन है दूसरी को
खहारा वो, पर परमारमा के विवास मोर
किखी का खहारा न दूबो। परस्तु तुम हो
किखी का खहारा न दूबो। परस्तु तुम हो
किखी का स्वी ने तो खह माने कर्च कर
विये, पर कभी किखी मिलागे को चार
वैमे भी नहीं दिये जाते। जो विर आये,
खखका कोई ठिकाग है। बह तो दिन
सर्वविद्य परवाल को ही चला जाता है।
परमारमा ही उठाये तो उठे। इस प्रकार
काल नहीं चनता। तुम प्रपनी मोर से
स्व को खहारा दो, साथ ही परमारमा से
जम के लिए प्राचमा भी करो।

तुम हिन्दू हो, बखुतो से चुला क्यों **करते हो <sup>?</sup> तुम्ही ने तो उन्हें ब**लूत बनाया है। स्या कभी किसी मुसलमान ने अभी च्**णा**की है <sup>?</sup> एजिल के महीने मे पूना में एक उत्सव वा। हम लोगो ने वहा देखा गरोश ग्रीर पार्वती की छत्पन हजार मृतियार्थी। उन मन्दिर वे ब्रह्त मी ज्वर्शन करने गये । वहा प्रचास हजार बाह्मण थे। क्या हमा उन्होने सक बछती को धनके देकर बाहर निकास दिया । स्था **उनके** दर्शन कर लेने से सन्दिर सपवित्र **क्ही जाता या उन्हें देखकर पतित पावन** अभू पतित हो जग्ते <sup>?</sup> दूसरे दिन मूर्तियां चुराली गयी। मैंने कहा कि यह क्या हुआ। मनवान् को भी कोई चुरा ले नवा ?

एक दिन हम महादेव को देखने के किए गये। एक पुरुष ने पूछा—"धाप हाय क्वों नहीं जोडते ?" मैंने कहा, "हाय 👉 क्यो जोडू? मनुष्यो को देखी। पति ग्रीर पत्नी दोनों जा रहे हो, यदि कोई पुरुष उसकी पत्नीको इशारा भी कर देतो मरने मारने की तैयार हो जाये। यदि हाम से न्पर्श कर देतव तो उसे भारही है। परन्तुइन महादेव की की परनी तथा युत्र दोनो को ही चोर उठाकर ले गवे स्रोर ये महादेव जी बोले भी नहीं। इनकी युवा क्या भाषको करनी चाहिए ?' इस प्रकार अब प्राप भी सोची तो ससार मे परमेच्बर के गुलो को मानकर उनका ही धनुकरल प्रापको करना होगा भौर उन्हें ही पूजा करने के योग्य मानना पडेगा। छनके सिवाय और किसी को भी नहीं।

देसो, प्रजूनों को सब तुम सताते हो तो प्रत्य मतात्स्वस्त्री उनसे कहत हैं कि हानारी भोर धा जायों। बुद्धसाने केस रहे हैं कि ऐसी प्रदस्ता में उनके दूसरे मनात्स्वस्त्रीमंग्री में जा मिसना कुछ कठन नहीं। इसलिए ने दुमसे कहते हैं कि सम्ब्रुतों के साथ त्याय करो। प्रेम करो। क्योंक दुर्गना तो प्रेम को देखती है। कभी तुमने सननी इस दुर्गनता को वेसा है?

एक फारती कवि ने कहा कि "धपनी बढाई में ही वन भूस का, धपनी बुराई को की देख घोर वसे बुर करने का क्यान्स हरूं।" बुरुक बढ़ने कक्की करने को नहीं कोंका, इसीविया बनाई भी हुनें क्षोक-इर बारी वर्ड, क्वोंकि दुराई और बबाई योगी एक नहन नहीं रह बकती। धव दुविजता तो स्वामें हैं कि मुमुंध धपनी सुरावता केले और दूलरी की बबाई देखे। धननी दुराई खोडे और दूलरों की बबाई सहन करके धपने धाप को बबाई को ध्वास पहन इसे धपने धाप को बबाई को ध्वास कहें ही क्यों ? परन्तु यही तो धार्यक्रवाल बाते भी कहेंगे तो यहीं कहेंगे कि ''धाल विकाशियार की भीटिंग है' ' सुप्तनमान या ईसाई हो बाता है तो क्या ध्वास व्यास्त विकाश भी स्वास व्यास्त स्वास व्यास विवास वी स्वास व्यास व्यास

एक मनुष्य बन मे बैठा रो रहा वा. एक साधु वहाँ या निकला । साधु ने पूछा, "भाई । रोते क्यो हो ?' उसने कहा. दरित है विचार तो बडे-बड हैं। धन है नहीं। घापको सामु समक कर रोया है कोई विभिवतादों तो रसायन पाकर बानन्द करूँ।" साधु ने कहा, यह वृक्ष है इस बिल्य (बल) कहते हैं। ताम्बालेकर उसे लुब गरम करो । जब बहु गरम हो जाये, तो इस वृक्ष के पत्ते उससे लगा दो, वह सोना हो अधिगा। परन्तु उस समय बन्दर का विचार मन मे न भाग, यदि वन्दर का विचार नन में भाग्यातो सोनानही बनेवा। श्रव वह सोना बनाता है तो नही बनता, मट बन्दर का विचार मन से बा जाता है। इसीलिए तो तुम धागे नहीं बढ सकते क्योंकि तुम्हारे मन में दूसरी को बस्त समझने का विवार पुना हुया है। वह तुम्हें उनने प्रेम नहीं करने देता। फिर तुम्हारी उल्लेखि हो भी तो कैसे?

देश्वर के भानन वाले के पास यदि पैसा न भी गई तो उसे सन्तोव रहेगा। उसके हृदय में व्याकुणता नहीं सायेगी। कारण, वह दूतर के अवगुणों की विद्यादा स्मीर उन्हें दूर करने में सहायता देता है? वहाँ तक उसकी पिलत है दूसरों का बेबा पार करता है।

वसी का नाम पवित्र बहा है। बैसे एक जुलर बालक को बेलकर सबके हुस्य में प्रेम जमक बाता है। धाप कल कितारे-कितारे चन रहे हैं, जल बड़ा निमंत्र मोर खुळ है। धारका मन स्वय बहाँ बैठ चाले को करेगा। एक बुल बड़ा ही जुनर हैं। इए-दूर तक उसकी सालाएँ स्मी हुई हैं। आपका मन उसे खेलकर बड़ा झानस्तित होगा। ऐसे ही परमास्मा का पवित्र नाम भी जिङ्का पर साने से जिङ्का पवित्र हो आभी वाहिए सौर मन में उनका स्थान होता हो भन महगद हो जाना चाहिए।

जाहयो । याद रस्ते । जो पवार्ष पवित्र है, जह मन को पवित्र करता है। परमारमा पविज्ञ है, उसके प्यान हे, उसके चित्रतन के संज्ञ मे पवित्रता साती है। निरस्त्र प्रति स्थाने मन को उसके स्थान के दर्शन होने समें नै क्यों कि वह पवित्र मन में बाता है, मैंसे मन मे नहीं बाता।

बाप बीच के तिए जाते हैं, जोटा ले जाते हैं, फिर वहीं मिट्टी से माबते हैं। रूपडा मैना हो जाए तो साइन वे बीच हैं। बीचा मैना हा जाए तो सबिया मिट्टी से साफ करने हैं। सोने के बायूचण को प्रनिन मे तपाते हैं, कराई सनाते हैं। प्रयेक बरतु के प्रविक्त करने के लिए कोई न कोई साइन बरता जाता है। परन्तु जब मन मैना हो जाय, तो उसके सिर पर फूठ बोसने, परस्ती को बेसने का मूत बनार है, तो क्या करोने ? में बताज, रून सातर हैं, तो क्या करोने शे बता करा न नातों की खोड़ दोने तो मन स्वयमेन पत्र कहा हो खोड़ दोने तो मन स्वयमेन

उपनिषदी में सिक्षा है कि जल पडाने से मन गुढ़ नहीं होता केशक शरीर गुढ़ होता है। बदि हमारी दुवंशा होंगे रही हैं तो दलका कारण हुन अपने आप हो हैं। किसी ने हमें दुक्षी नहीं किया, हम अपने हाथों आप ही दुक्षी हो रहे हैं।

वाणी से परमास्मा के गुण वणन नहीं हो सकते । जन से उसका सकल्प करो । उपनिवदों ने कहा है कि सांस पैर झादि वाणी का काम नहीं कर स्कते। कारण, कोई भी कार्यंत्रिसे तुम वाणी से कर बन्ते हो, भास से नहीं किया जा सकता, पैर से धवना भीर भी किसी बन से नहीं कियाजासकता। नीवृकास्वाद यदि कोई तुमने पूछे कि 'कैसा होता है ?" तो तुम पूछोगे कभी लटाई लाई है ? वह कहे 'हा, ग्रम्बी तो लाई है, इमली भी लाई है परन्तु नीवू नही साया ।' तुम कहोते, 'नही वैसानही। ''घावला भी काया है। तुम फिर कहोगे, वैसाभी नहीं। नीबू तो नीबू हो है उसका स्वाव किसी से नही जिलता। दस प्रकार जब पर मारमा के बनाये हुए पदाथ ही ठीक ठीक चित्त में नहीं या सकते तो वह बाप कैसे बासकताहै <sup>?</sup> जब तुन विन्ता को छोड दीगे तभी उसका ज्ञान हो कायेगा। आप कहेंगे, 'विन्ता को खोड देंगे', परन्तु भ्रापको मन की शक्ति का ज्ञान नही। इसका पतानो तभी चलेगा जब तुम उसे रोकने काप्रयत्न करागे। सभी तो तुम मन के पीछे पीछे जाते हो। शाम को तनिक मन को टहराने के लिए सन्ध्या करो । उस समय क्होंगे कि मन नहीं सगता। बुरे विचार पैदा करने हो सो **अट मन लग जग्ता है। परन्तु उसे रोकने** सनीने तब मन की शक्ति का पता लगेगा जन उसे रोकने के लिए बैटोगे, तब जानोगे कि मन को रोकने की विधि तो कोसो दूर है।

मन रोवने की ठीड विशिष का बातु-करण करो । उठते, जैठते, सोते क्षेत्रे अपने कार्य क्षत्रकृत में परनारमा का ब्लान करो । परन्तु जब परमारमा की उपालना करो तो धपने कार्य स्मतृहार से स्नत्र हो बालो । उस कमरे में कोई सम्ब

एक बासन । हाय मुह धोकर स्वच्छ होकर, घपने जीवन रे ४५ मिनट का यह समय जब तुम पूरे प्रेम और पवित्रता के साय परमात्मा के पास बैठकर वितासीने तब बायका मन बपने बाप ठहरेगा धीर भीरे भीरे भापके वश में भाता जायेगा। जिस काम में पवित्रता और प्रेम नहीं होता वह कभी सफल नहीं होता। जो समय इसके लिए सबसे भच्छा है, उसे नीत्म व्यथ स्तो देते हो। एक निवत समय हो जाने पर सन्ध्याका समय होते ही, समय स्वय तुम्हे बुलाने समे। तब समभी कि तुमने पहली मजिल पूरी कर शी। तुम नदी के तट पर मैर करने के लिए जाते हो। पानी मे पैर नहीं बासते भौर फिर पुन कहते हो कि मुक्ते तो जल कुछ नहीं कहता। जल तो तक कुछ कहे, जब तुम उसके सन्दर प्रवेश करो।

सीप नी जब अपनी बांबी ने जाते जगता हैं तो मीचा हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य जब अपने परमारमा के सामन जाता है उतते चरणों में मन लगाता है तो उने गुढ़ भीर पवित्र होकर जगता कांग्रिसा।

जब बातक धपने घर में माता पिता को "जी कहकर सम्बोधन करता है तब बाहर जाकर भी बैस ही 'खी' कहेगा। धरवाजाधिक बात कथा पहल ही दिन स्व कैसे कहें दिस को कभी लगाया नहीं और कहते हो, 'दिल नहीं सगता।'' युवादन्या में कहते हां, 'बूबे होंगे तब सन्ध्या करेंगे। परन्तु एक वहूँ कबि सत्ध्या करेंगे। परन्तु एक वहूँ किस

है सक्या वही, जो कि जवानी में घाया हो। है जोस वही दिसका कि पीरी में क्या हो।।

भवीत् पतित्रता वही है जो युवावस्था मे प्रकट हो भीर भावेश वही है जो वृद्धा-वस्था में भी खिरा न गहे। है भावी परमाश्मा है दूर है दूर परन्तु प्रभागी है तिए। वो बुद्धिमान् है, वसे नियमपूर्वक इंडोते हैं उनके तो वह निकट ही है।

एक माता एक सरीवर में स्नाम करने गर्द। वहा एक वृश्व चा। माता ने धपना धाभूषण उतारकर वृक्ष के साथ भटका दिया ग्रीर स्नान करके घर चली गई अपना धाभूषश वहा से उतारना भूख गई। एक युवक धाया, उसने सरोवर में देका कि एक द्याभूषण जल मे पडा है। वह जल में बुबकी लगाता है परन्तु बाभू-वरा उसके हाथ नही घाता। फिर बाहर बाता है फिर जल मे देखता है, फिर हुबकी लगाता है। कवीर साहव का उधर से गुजर हुआ उन्होने पूछा, 'माई ! तुम इस प्रकार बार बार क्यो हुबकी सवाते हो ?" उसने उत्तर दिया, 'हार दूंदता ह महाराज "" उन्होने कहा, तुभे खाया धीर वस्तुका ज्ञान नहीं। जिसकी स्रोर तु

रिछले दिनो चाव की ध्याली के एक नृष्ण उठा था जो बीकांग छे कुछ के गाय है। यह नृष्ण वा करवा हाई कोर के कुष्ण के गाय के प्रकार के स्वाप्त कर प्रतिक्व स्वाप्त की याचिका के सम्बन्ध मे। क्ष्मीर चाटी जहाँ मुसलमान प्रविक है भीर बगला देंग जो अब इस्लामी देश वन कुका है, मैं इस तृष्णन ने हिंसक कर भी सारण किया और कई लोस मारे भी यह।

इस्लान धीर प्रतिवयों का गहरा सवस है। सवार के लगभग सभी दस्तामी देशों में मूर्ति पूजा पर, मन्दिर बनान पर, पूरान मन्दिरों को मरम्मत पर धीर खुले रूप से कवा-कोठन करन पर प्रतिवय है। बहुत से इस्लामी देशों म बाहु सर्वक एवं रेशा प्रतिवयन है। उन्में मन्क एवं देशा है। जिनन गाता, उपनिवद खादि वार्तिक पुस्तक ल जान पर भी प्रतिवय है। पुर्की सोर देशन न गाता और जवस निवद पर भी प्रतिवय लवाया था। वात की विवादन कामेडी जिसमें ह्वयत मुह्नम्ब धीर हमत्त असी का नरक म रोता हुआ विकास गाया है, पर मा संभी इस्लामी देशों ने प्रतिव-व है।

कालिन सौर लियरका हाल म प्रका-शित पुस्तक 'फीडम एट मिडना-ट विसमं जिल्लाह के सुधार का नास जाने का उल्लेख है, पर पाकिस्तान में प्रतिबंध है। मचे की बात यह है कि हिन्दुस्तान जैसे वर्गनिरपक्ष राज्य में भी मुसलमानो के दबाव के कारण श्री ए० श्रीय की सम-रीका म प्रकाशित पुस्तक 'कुरान एण्ड दकापिर , श्राविशनस्वरूप गायल की दिल्लीसे प्रकाशित पुस्तिका काश यात्राचान कुरान पढा होता। भो< डा रमेश आय की पुस्तिका मैंने इस्लाम क्यो श्राडा ''पर प्रतिबन्ध लगा हुआ। है। जिस मजहब क धनुवासी प्रतिबन्ध के इतन शैदायी हैं, वह कुरान पर प्रविवध लगाने सम्बन्धी याचिता स इतन उद्घिन हो गय, यह भाव्यर्थ की बात है।

याचिका की कहानी भी बढ़ी राचक है। श्री सी० एम० चोपडा नामक एक सज्जन जो कई फर्मों क कानूनी सलाहकार है. ने बप्रैल १९८५ म कलकता हाईकोर्ट मे एक याचिकापेश की जिथमे मागकी मई वी कि घरनी में लिखे कुरान ग्रीर उसके धनुवादो । र प्रात्यव लगाया आय न्यों कि उसमे व्हुत मी एसी बाते लिखी हुई हैं जो कि भारतीय सविधान की धारा १५३ एका स्पष्ट उल्लंधन करती हैं धौर गैर मुसल मानो के प्रति विद्वेष धौर हिसाका प्रतिनादन करती हैं। बाचिका में कुरान के ऐस सभी उद्धरण भी विये गये थे। न्यायमूर्ति श्रीमती पदमा सास्त-गीर ने इमे विचाराय स्वीकार कर लिया भौर पश्चिमी बगाल की सरकार की होद्रिस दिया कि वे इस सुबुर्व में सूपना

## 'कुरान' कानून और प्रतिबन्ध

डा० रामप्रसाद मिश्र एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० लिट

अनेक पुस्तको से लेखक डा॰ रामप्रसाद मिश्र सप्रति डी॰ ए॰ वी॰ कालेज में हिन्दो के विभागाच्यल हैं। दिल्ली विस्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कसाओं को भी पढ़ाते हैं। देश के प्राय सभी प्रतिष्ठित एक-पत्रिकाओं में प्राय के लेख ख़रते हैं। समस्याधों के गहन प्रध्ययन भीर विस्लेखए। के लिए चर्चित डा॰ मिश्र ने इस लेख में कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी यांविका पर देश भर में चनी बहस के सम्बन्ध में एक दिशापरक चितन प्रस्तुत किया है। —सपादक।

पक्ष रखे भीर याणिका पर विचार करने के लिए २७ मई की तिथि तय कर दी।

इस बीच मुस्लिम बकीसी भौर सस्याची के विरोध के कारण यह वाचिका किसा सन्य जज को देने की बात कही गई। मुख्य न्यायाधीका ने इस न्यायमूर्ति बासक का दे दिया। न्यायमूर्ति बासक ने सुनवाई की तिथि २७ मई के स्थान पर १३ मईकर दी। भी बोपडा को इस बदल का सुचना १२ ताराख रात को दी गई तो भी ये १३ मई को बदासत में पेश हुए और उन्होंने साचिका के पक्ष ने क्या तक समत और तब्यपूरा वक्तक्य दिया। न्यायमूर्ति वासक ने उनके किसी तर्क का बारन किय बिना केवल यह कहकर वाविका रहकर दी कि कूरान एक पवित्र पुस्तक हे इसलिए वह कानून बार न्याय-पालकः का पारांच म नहा बाता । समा-चार पत्राम आह्वी रिपार्टी के प्रमुखार कद्राय विवि मत्राक्षी ए० के० सेन भीर भटानीं जनरस भी उस दिन कलकता म व भार सम्भवत इन्हाके कहने पर पहले तिथि बदली नई धौर वाचिका की चसके गुण-दोधो पर विचार किये विना रह कर दिया गया।

इस प्रकार सचाई की परल किये विनाउसे दबादियागया। भारत में सस्य को इस प्रकार दबाया जाना जिसका ध्येय नाक्य सत्यमेन जयते' हैं, हर इकिंग से निन्दनीय हैं।

परन्तु इस बाषिका के पेवा होने से एक साम प्रवरम हुआ है। बहुत ने कोशे को शहरी बार पता क्या कि कुरान की कुछ ऐसी वार्त तिको है वो का नृत्त को सामया कमत नहीं हैं। इस्लाम के प्रवक्ता में वचान में पड गये हैं। वे याषिका में उठाई गई बारों का न सकत कर वांचे हैं भी पाणका माम कर बारों हैं सो पाणका माम कर बारों हैं के पाणका का गाम कर बारों हैं। वारों के प्रवक्ति प्रशासिक में उठाई पाणका कर प्रविचे की प्रवक्ति प्रशासिक में विकास में प्रविचित्त की भी इक्की बड़ी हैं ठी हुई हैं। उनके से बहुतों ने कुरान की पड़ा नहीं हैं, इसलिए से बच्चों के पाणा पर पर हैं, स्वालिए से बच्चों के पाणा पर पर हैं, स्वालिए से बच्चों के पाणा पर पर हैं। वारों के प्रवक्ति का सिरों कर नहीं बच्चों के प्रवास पर पर हैं। वारों के प्रवक्ति का सिरों कर नहीं बच्चों के प्रवास कर कर बच्चों के प्रवास कर बच्चों के प्रवास कर कर बच्चों के प्रवास कर बच्चों के प्रवा

याचिका के विरोध में लिखकर बिख मनोवृत्ति का परिचय दिया है, वह न प्रयतिवाद की परिचायक है और न सेकुलरबाद 'की।

ससार का इतिहास इस बात का साझी है कि इस्लाम भीर कुरान के नाम पर गत १४,०० वर्षों में बहुत मारकाट हुई

है। हिन्दुस्तान को भी गत हजार वर्षी से इसका कट् धनुभव है। बावश्यकता है कि हिम्दुस्ताम के लेखक भीर विचा-रक इस आरकाट की प्रेरणा देने बाले मुल कारणी को समभने के लिए खुले दिल से कुरान का बाध्ययन करें और स्थाह को स्वाह कहने की हिम्मत करें। हिन्दू-स्तान और हिन्दुयो की परम्परा विचार स्वतन्त्रता की परम्थरा है। यहा हर प्रकार की पुत्रा, विचार और मत्रभिन्नता की पुरी श्रुट रही है भीर है। हिन्द विन्तको का विश्वास रहा है कि सत्य छिए नही सकता। इसिनए उन्होने हर विषय पर खुल दिल से विचार भीर खुली बहुस का प्रतिपादन किया है। इस इब्टि से कूरान पर प्रति-बन्ध लगाने की माग हिन्दू परम्परा के प्रतिकृत है। परम्तु कुरान मे क्या लिखा नया है और इसमें कीन सी बातें कानून भीर मान्यता विरुद्ध 🖁 उनकी जानना भीर उसके सम्बन्ध ने सही तथ्यो को पेश करना एक स्वस्थ सोकतात्रिक परम्परा है ।

> वे ३६४, शकर रोड नई विल्ली-११००६०

#### निर्वाचन

धार्यसमाज परिवम विद्वार नई विल्ली ६३ का वर्ष १६८५-६ के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुआ है— प्रवान की बी० एन० चौचरी

प्रधान श्री बी॰ एन॰ चोक्सी
वपप्रधान में राजवरत मिनीचा
वपप्रधान श्री ती वाद्या प्रधानी
वपप्रधान श्री ती द्यारती
वपप्रधानों श्री दिवस सार्व
प्रधारमन्त्री श्री समाहरभाव माना
व्यवनामा श्री हरिस्कात माना
कोवास्माल श्री हरिस्कात स्वयस्य
सम्भन, पुरस्कातम्य
व मण्डार श्री सोन्द्रमुखान वेतिया

भवदीय वर्मवीर झास्त्री, सन्त्री

धार्यसमाब बोहनबब का वाधिक बुनाव दिनांक १६ महै -६ को समाप्त हुमा। भीर सर्वसम्प्रति से निम्नलिसित पर्वाबकारी चुने गय। प्रवान—स्री सिबग्रसाद वप्त

प्रचान—श्री शिवप्रसाद वय्त उपप्रचान—श्री सुशील कुमारजी नामिया श्री हेमसिंह जी

(पृष्ठ ७ का ग्रेष) कुकता है वह तो खावा है, प्रतिबिम्ब है। बास्तविक पदार्थ नहीं। वास्तविक पदार्थ तो ऊपर बुझ पर है उधर देखा।'

इती प्रकार वेसमक अनुष्य भूल में फलकर परमात्मा प्राप्ति के उसदे सामनी का प्रयोग करता है और उसको नहीं पाता, परानु जानी एक ही सन्य में अपना काम नना सेखा है।

> चुन क्ये क्य साम चसु किर कहा दूरी रही। चुरी के मुख है कही की बात को दूरी रही॥ सन्द का सुद्दत है पुरुषा

सन्त्री — की प्रेमबानरजी मृष्य उपमन्त्री — की माताप्रवाद जी धार्य की नारायखदाब जी मितल को बाद्यक्ष — की तृपति राय पुस्तकाष्यक्ष — की कैवाब कृथार

शिवप्रसाद गुण्ड प्रधान

#### शोक-प्रस्ताव

विस्ती प्रायं प्रतिनिध्य समा के समस्य विकासी प्रायं समाप्ती द्वारा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती के सकरमात वेहानतान पर गहरा कुछ एव गोक स्थलत करते हैं कि नहां पर निता परमास्ता से प्राथना करते हैं कि वह विवास का साम्ता करते हैं कि वह विवास का समाप्ती का समाप्ती करता हु सी सहसे समाप्ती करता हु सी सहसे समाप्ती हरना हु से सहसे की साम्ता प्रायन करे वार को इस महान् दु स को सहसे की साम्ता परने।

हा० वर्मपाल द्यार्थ महास्ट्रेडी

बह स्रवानक किल गया। जिसकी कातिर में मटकता या वह मुक्त को मिल गया।।

करेनादान [ यह तो बारीक से बारीक है पर तूनहीं बारीक वीं। वो है वेसता तुष्क को सवा तू वेसता उसको नहीं।।

बहु परमात्मा पवित्र मन मे ही भ्रा सकता है अपनित्र मन मे नहीं। पर-मात्मा-प्राप्ति की परीक्षा पास करने से बचार विनवता नहीं, बनता है। इसिंग् हैस्बर वजासना से बेसा पार होगा इसीं का बहारा सो। अपराधी पर कृपा (पृष्ठ२ का शेष) वे बुहनोर तुरवर्लो ऍबतुह वसे व्यक्ति॥

धाकों के व्यसन से तम धाकर कि कहता है कि मैं इन धाकी को सभार को मर्वादाधों को सम्माकर बहुतेरा रोकता है किन्तु मेरा बग मही चलता। होता बहु है कि जैसे मुह्बोर भोडा बितना करास को सीचें उतने हुट से धामी गति करेतीक क ता चला बता है धीर स्वार करोतीक क ता चला बता है धीर स्वार सीकी में मेरी भी कर वी है।

इस स्थिति से उवरने का एक ही श्रकार है कि दुव्यसन के साधन उस श्रांस को ही सीन सिया वावे । प्रास न रहने से उस दुव्यसन को कियात्मक रूप क्षेत्रे का प्रवसर ही न रहेगा भीर लम्बे समय तक उनकी धावृत्ति न होने के कारलाउन दुसस्कारो का ही परिमाजन हो जायना। इघर झास्रो के झमाव मे जो इच्छ उठाने प उनसे दण्ड भी भूगता वया बीर पश्चाल प बीर प्रावश्चित से हास्त्रिकसम्कारीका उदय भी हुमा। हेसाजीसापूराहोने पर प्रगत जन्म ने ब्रोखें फिर निन गयी और नया जीवन ब्राइम्भ द्वा । यति साथ सद्पयोन करेवा तो बब्दिलाम के प्रानन्त का प्रविकारी रहेगा।

वही है प्रभुकी दया कि उसका दण्ड भी प्रमुख्य के कत्यास्त्र का कारस्त्र बनवा है। प्रस्त प्रन्त में पहली वाल कही नवी कि वह प्रभु यो गुड्यालि चक्के विवास प्रपराच करने वाले का भी कत्याम ही करसा है।

इस्ते साने मण्य ने उससे भी नहरूव पूर्ण नात कही गयी कि वय वहणे सनावा स्थान भाग बीवन के त्वर के सनुक्य तो हिस्सित यही है कि हम वरणीय अनु के दरबार ने निण्याप मौर पनिन रहें। मह नााव बीवन हमें विचारपुर्वक सपनी पाशसी प्रवस्तियों को निपूर्व करने के नियह ही निला है। मुजाबिक पखुता तो मनुष्य के बाथ लगी ही रहती है पर विश्लेक हारा डेसे परिसाबित करना ही मानव-बीवन का लब्य है। किशी उन्न के सावद ने बहुत उत्तम कहा है—

ववाहिर सब हैं इन्हा क्षेत्र बातिन की चुवा जाने। कि हैं इन्हान इनमें कितने और हैवान कितने हैं।

चारी वेदों में निम्म स न साता है एसमें भी बहुत काष्यमय द ग से इस महत्त्व पूर्ण हदस्य की धोर ध्यान सीचा स्था

> सप्तास्यासन परिवयस्ति सप्तसमिव इसा । देवा वद्यम सत्त्वाना अवक्रमन पुरुष पश्चम ॥ ऋष् १०।२०।१५

धर्यात् एक ऐसा भवन अथवा एक ऐसी यज्ञभावा है जिसकी सात परिविधा चारदीवारी (Boundery walls) हैं भीर उनमे तीन स्वानों पर शत सात समिषाए रखी है। प्रभू ने इस यज्ञ का विस्तार करने के लिए जीवरूपी पशु को इसमे बांचा है। इसक ग्रलकार के माध्यम से यह मानव करीर धीर इसमे भीवारमा के झाने के उद्देश का बरान है। समस्त कमकाण्य मे सात परकादेवासी यक्षणालाका वरान कही नही है। चार बारह बीर इससे भी बाधक स्तम्भीवाली यक्रणासाका विचान तो है किन्दुसात परिवियोगाली का नहीं यह सात परिचि की यज्ञकाला मानव शरीर ही है। भागू वेंद के प्रन्य प्रष्टा क्रुहृदय में मानवबेह की त्वचा की सात परतें निनाई हैं— सप्त त्वची भवन्ति ये ही सात चारवीवारिया है। तीन स्वानो पर साल साल समिवाधी का विचान किसी यज्ञ म नही है। ये तीन स्थाो पर सात सात समिथाए सात बातए रस रक्त मञ्जाद्यादि सात हैं। ये २१ समिचाए प्रतीप्त होकर इस सन को चलाती हैं। ग्रर्वातृ इन समिषाधी से ही बहु यज्ञ द्वियाशील रहता है। इस यज्ञ का लक्ष्य यह है कि इस मानव शारी र कपी बन्नशाला में वैंचा हुआ। जीवरूपी पशु पश्चन की बाहति दे दे। बर्यात् विवेकपूरक कम करके काम कोबादि पर विजय प्राप्त करे। विवेक रहित मानव भौर बच्चे को पशानाम से बेद में समि हित किया गया है। बहाचयवतद्भवक गुरु कुल में विद्यापन से यह पश्ता दृटती है

और इसी का एक नाम पखुवाम की है। यह मानव जीवन की सफ्तता है। पूर्वक वर्षांवरता में है। वस्ति विवयों के बचन बहुत जटिन हैं किन्तु विवार में इत्तरी बड़ी सफ्ति है कि दुक्ह मार्ग पर भी उसके खहार बफ्ता प्राप्त की बा सकती है। विवार मुरादावादी ने इस स्वस्त्रण में बड़ पते की बात कही है।

हुत्त की हर अवा वे बातो दिल सबके नगर। खुत्क कुछ बामन बनाकर ही गुजर जाने में है।

सवाप सजार के विषयों में वाषणे की बहुत वही विस्ता है। विषय वस्तुत ने वाला कर की दिन वस्तुत ने वस्तुत निम्न निम

श्रव अनुष्यता की सार्थकता निष्पाप

बीवन बीने में है।

मंत्र के उत्तराध में निल्याप जीवन
में चलने धौर वह रहने के लिए उपाय
बताया क्यां है कि धा-भोरवान के बतो
पर चलने वाले तपस्त्री विद्वालों के जीवन
स्पत्रहार को नेवलर उनन प्ररच्या लो कि
इस दुलिया के फिसलन मरे नाग पर वे
स्थाने पैरो को कैसे टिका पायें? एक
जिजाह यात्री के सिट्हा प्रायं? एक
जिजाह यात्री के सिट्हा प्रायं? एक
प्रदक्षक का मिलना बहुत वा सहारा है।
पिका को समारित पर धान्याय प्रयने
स्नात्रकों को सन्तिय बात शाठ वाधकर
ले जाने के सिए यही कहता है—

श्रव यदि ते कम विविक्तिसा वा क्लविविक्तिसा वा स्यात् ये तत्र बाह्यका समितिनो युक्ता श्रवुक्ता श्रवूला वमकामा स्यु यया ते तत्र वतरत् तथा तत्र वर्तेषा। (स०वि॰ समावतन)

यदि सवार वे तुम्म क्विती कलाव्य प्रोर प्रकल्भव के विषय में सवाय उत्पन्न हो तो को विचार ाल अनुस्था सहस्य प्रोर सम्बद्धित स्वार कर के किया के स्वार कर के किया के स्वार के स्वर

प्रबृद्धवयस पृसो थिय पाक प्रजायते । बीर्तीस्य चन्द्रनतः । द्यानोद उपवायते ॥

परिषक्य प्राप्त के मनुष्य की , कि भी
स्मेल प्रकार के घीर लाने प्रमुपती के
कारण पल वाली है — जिल प्रकार पुराने
कारण पल वाली है — जिल प्रकार पुराने
कारण पल वे सुरान उत्पन्न हो वाली
है। इसके साथ ही मन्न में एक महस्य
पूरा पार स्वतितिति क्या न । " बुबी
का भी सह प्रतित्र करा न ।" बुबी
का भी सह प्रतित्र करा न ।" बुबी
का भी सह प्रतित्र करा न ।" बुबी
का भी सह प्रतित्र करा रहें। समा के
प्रतिक्र प्रसार करा रहें। समा की
प्रतित्र काराया न के
लिए
प्रति प्रतिक्र साराया भी प्रति मही
है। इस विवय में किसी जुर सामर ने
हिना उत्पात कहाँ है—

काम सा करके चुदा के कि चुदा के नजदीक। स्थामे मेहलरन हुई है न दवादत होगी।।

धाज लोग ईववरमधित का घव केवल घपना कल्याण धीर न्यति सम भते हैं। किन्त तत्वदर्शी सामाजिक सरवान के साथ साथ जिससे सान्ति मिले स्ती बात को अच्छ मानते हैं। ऋ दिया मन्द से एक महत्त ने जब यह कहा कि बबान व तुम क्या समाज सुधार के जब पह पह है। कि जब पह पह पह तो कि पह तो पर तो पर तो पह तो पर तो

धाज समाज के वृद्ध ममुदाय में यह भावना जय जाय तो देश की कायापलट हो जाए। हमारे घर स्वत बन जार्वे।

कार्यं निवृत्त वृद्ध भीर वृद्धाए वर मे भागवते रहेग । समबयस्को मे बैठकर राजनीतिक लीडरी की बालोचना करते रहेंगे। मनोरवन के लिए नाज सतरब भीर चौपड लेलते रहग भीर साम प्रात चार सन्त्री का पाठ करके ऋमते हुए शानिपाठका सत्र बोखदग ग्रीर ग्रपने क्ल॰य की इतिश्रासमक्त लगे। यदि ये काग गली महल्ले बान्कर समाज में फैला हुई बुराइयो को दूर करने के निए वज्यो धीर युवको को वार्तालाप में सदिवचार दें तो देश का उद्घार कर दें। भाज एक दूसरे के विगडे हुए बच्चो को दसकर भीर एक दूसरे भी भाषावना करके स तुब्द हो नेते हैं। कित ये नहीं सीचते कि बच्चे समाज धौर देख की सम्पत्ति हैं। इनके प्रबाधक होने से देश दुवस होकर पतनो मुख होता है। इसके अतिरिक्त विवड बुक्क धपने ।रिवारवालो के लिए उतने हानिप्रद नहीं हैं जितने कि दूसरों के लिए सत सार यह निकला कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे होने बाले सदगुण दुगुसा के परिमाम भी सुका धौर दुलाके रूप में उसे घवन्य सहने

> बसर पहलू में दिल रखता है बब तक। उसे दुनिया का यम साना पढ़ेगा॥

स्त्रालिए शांतिपाठ का मन्य इस तन्त्र को समकाता है कि सक्त । जिस शांति को तूमागरहा है बहुतव मिलेवी सब सुनोक से भूतल तक समृद्यमु सौर करण करण में वह समा आयेगी।



## समाचार-सन्देश

## ला॰ रामगोपाल शालवाले द्वारा श्रार्थवीर दल प्रशिच्चण व्यायामशाला का शिलान्यास

सार्वचीर दल के सत्यापक जी सोमप्रकास जी त्यागी एव बालदिशवार हत सत्यादि त्यामें के नव्यक्त हैं कहा किया कि सार्व के निवसमुर्वेक प्रतिस्वाची क्याय के सार्व के निवसमुर्वेक प्रतिस्वाची हैं। सत्यक्त दिवसार्व के परकात् हत्यार विसर्व के परकात् हत्या विद्यापित का सिकार्य के प्रवास किया कि सार्व के रिकार्य के प्रतिक्र किया कि सार्व के एक प्रविक्षण व्यावामशाला की स्वापनी यहां बुरकुल क्षत्रकार के ही की जाए तथा इसके गीम निर्माण की कामना करते हुए लाल सार्व निर्माण की कामना करते हुए लाल सार्व निर्माण की कामना करते हुए लाल सार्व के सार्व नी प्रतिक्र की सार्व नी सार्व की सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व नी सार्व की सार्व नी सार्व नी

केदारसिंह सार्य कार्यालयाध्यक्ष भार्य प्रतिनिधि सभा हरियासा

## श्रन्तर्राष्ट्रीय श्रार्य महासम्मेलन डर्बन (दिन्नण श्रक्षीका) संबंधी सुचनाएँ

वेद निकेनन दर्जन के प्रचान प० गरवेद , विद्यालकार ने दक्षिण प्रकीका से होने वाले सन्तराष्ट्रीय सार्थ महास्थ्येकन के स्थानक में निष्म सुकार्य हुन प्रकार-वार्ष भेजी हैं। तस्तुमार नहा पहुचने वाले वर्षकों के लिए ३० दिव की वजाय १० वित्त ठहरने की म्युमति भारत सरकार-प्रतिनिष्म मन मायविद्याल सम्मय् प्रतिनिष्म मन मायविद्याल सम्मय् प्रतिनिष्म मन मायविद्याल सम्मय् प्रतिनिष्म मन मायवाद्याल करेगी। वैसे विदेश जाने वालों को पासरोग से सामा-न्यात रशिस्य समीका जान की सनुमिन नहीं दा जातो। पिर भी सरकार से पत स्ववहार हा रहा हा।

२— वीखा क प्राप्तापत्र का कार्य ठीक तार न प्रभाव पद, उनने कपना पुसार जिल्ला कार्टन ईकी समावना नहीं है। (बावदन पत्र के इच्छुक बीस्ता प्रमा की काणी इस समासे प्रमास कर सकते है।) प्रनितिश्वि समार्थ इस सम्बन्ध क्षणने प्रदय क्षेत्र म माय सुचनाए प्रका-विश्व कराय ।

६— (१) बीवा कार्म के खाव पास-वोट के पहुन बार पुष्ठों की फोटो। रेटेट कार्पी जिसमें पासपोट नश्वर व्यक्ति की पहुचान साववेशिक मन्ना में प्रवेश करने का अनुमति धार्वि हा, नह ग्रेवना वरूरी हैं। पासपोट भवने की धावस्यकना नहीं है। इस एक स्थावन के दो पाटोग्राफ होने बाहिए जिसके पीछ उसके हुसताबर स्पष्ट मक्तरों में (ममेजी में पूरा नाम तथा जन्म तारोज लिखी हो।)

(२) ट्रेबल एकेन्ट से जॉब करके एलो फीवर तथा कौलैरा के टैस्ट र्टाटिफिकेट वीसा के फार्म के साथ जरूरी मेवी जायें।

(४) पाल पोर्ट में प्रवास के देशों में साउब प्रफोका प्रवेश पर निषेश निल्ला रहुता है। इसको रद्द करवाना प्रावेदक के लिए य-री है। प्रवासों के लिए प्रपर वन पहुचने पर पासपोट फीस अरबी होगी ठा उनकी धोर से प्रार्थ प्रतिनिध्य सभा साउब प्रकोका इस पीछ को भर केंगी।

शात हुआ है कि वस्वई और गुज-रात से दर्शनों का एक अच्छा समूह इस प्रवसर पर वहा पहुचेगा।

सारत सरकार से दिलम प्रक्रीका मे प्रवेश की अनुमति दिलाने में सभावित विजय्ब को देखकर भी नग्देव जो का तुम्भाव हैं कि पाश्योटे के पहले चार गृग्दों की फोड़ों कापी एवं बीसा फाम पहले भेक देता बाह्मिए । बीसा अफोड़ी सरकार बीसा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति वे देती हैं कि वहीं उपस्थित रहने के समय तक सारत सरकार की धनुमति पाख पोर्ट पर मिस सावेशी।

> (धोनप्रकास स्वागी) नत्री

### निर्वाचन

बायसमाज परिश्वमपुरी नई दिल्ली का नवा निर्वाचन १६-५-६५ को हुआ जिसमें निम्म प्रतिनिधि मुख्य रूप से चुने गए हैं— प्रकान — श्री राजमरत मिनोचा मन्त्री — श्री सतीश श्रार्थ कोवाष्यक्ष — श्री झानचन्द

> सतीश मार्थ सन्त्री

### श्रार्यसमाज राजौरी गार्डन का निर्वाचन

प्रधान — की हरिबाज गृप्त उपप्रधान — सर्वश्री गनपत राव वर्मा, बस्ततावर मस, नागपाल व देशराज सैठी मण्डी — की नम्बकिशोर भाटिया

मन्त्री— श्री नन्दकिशोर भाटिया उपमन्त्री—सबश्री तिलकरात्र पुरी, कृष्ण लाल सार्यंव विनीत कृमार

ो मोहनलाल वश्वर सुरेन्द्र हिन्दी

धार्येतभाव (रामस्वरूप हाल) धार्य-पुरा गव्यो मण्डी, दिल्ली का -२ वाँ वार्षिकोस्सद एव खाचारण समा का वार्षिक धार्विकेशन २६ वृत्त १८६५ रवि-वार को प्रात १-०० वसे सम्पन्न हुमा। विकास मान्येत वक्त के सिए निम्म पदाधि-कारियों का निर्मायन हुमा।

सर्वश्रीसन्तोषवीर प्रभान

- ,, राजेन्द्रप्रसाद उपप्रधान ,, स्रोमप्रकाश वर्मा ,, ,,,
- ,, पुरुषोत्तमदास ,, ,,
- ,, रणवीरसिंह मन्त्री ,, स्थामबहादुर सैनी उपमन्त्री श्रीमती राजकुमारी उपमत्राणी श्रीपरणराज कोषास्मत
- भी पुष्पराज कोवाध्यक ,, वीरसैन पुस्तकासमाध्यक ,, श्रोमप्रकाश शर्मा लेसानिरोक्षक

प्रधान बार्यसमाज बार्बपुरा

बायेसमाज बावेपुरा सन्त्री नण्डी, दिल्ली-७

' धार्मसमा बातार सीहाराम देश्मी के वार्षिक द्वाधारण प्रथियेवन में निम्निकित्वत यदाधिकारी व धन्तरम बदस्य सर्वेत्वमति हे निर्वाचित हुए — प्रधान —श्री राजाराम जी सास्त्री उपप्रधान —श्री सुर्वेतिह्ड जी एव श्री वैष्ठ सम्प्रदाण थी सास्त्री

मत्रो—श्री बाब्राम झार्य उपमत्री—श्री किशनलाल जी तारवाले, श्री राजीव खडेलवाल जी

कोवाञ्यक्ष—श्री नरेन्द्रनाच गुरता पुस्तकाञ्यक्ष—श्री कमल मालवीय जी सेचानिरीकक—श्री रावारामींसह ची

क्रमणरा सरस्य — साला - नावरत्मक वृष्ण, जो रोवानवाय पसटा मी सूरक मान वचन, की स्वयमकाय महेदवरी, जी स्वयमकाय कृप्ता, जी राज्यक्र मार, जी किस्तमकात हृषवाले, जी राज्यक्र शिरमी, भी राम्यक्त, जी अकाशक्रम शास्त्री, जी राम्यस्य वास, जीवती शीस गाहेक्वरी, भीमती क्रपावेची, जी क्लप्रकास, जी गोरीनाय गोटेटाले, जी वृद्यप्रकास, जी

विशेष धामन्त्रित —शीमती शास्ता वसत, भी दवानन्त्र खुराना, भी खबदीस चन्द्र बुप्ता, भी सुधीस कुमारी । वाबूराम धार्य, मन्त्री

#### सम्पादक के नाम पत्न-

## हार्दिक बधाई

मैं स्थापितवात कर से धापको 'आर्थे सन्देश' सारवाहिक पत्र के सम्पादक होने की बहुत बहुत मुसारक देता हूं। सापके सम्पादक होने से मुके ऐसा मानास होने हैं कि नास्तव ने धव यह पत्र स्वाकी दयानन्य के धादधों को मूख कर से मसा-रित कर रहा है। सब इस पत्र को पढ़ कर एका सपता है कि इस पत्र का सखा-सन किसी थोग्य तथा पूर्ण विद्वान् के हाथों में है। मैं पुन सापको बधाई देता हूं।

> हसराज मदान सार्यसमाज संशोक विहार तृतीक

## भारतीय जागरण में त्रार्यसमाज का योगदान

महोदय,

श्री महावीर विद्यालकार लिखित उपर्युक्त शीर्षक लेख २६ मई के बाक मे प्रकाशित हुआ है। क्या लेखक महोदक भ्रपने इस कथन की पुष्टि इतिहास 🖣 भाषार पर करेंगे कि स्वामी दवानन्द ने साबुधो की टोली बनाई धौर हाथों में क्मल काफून ग्रीर रोटी काटुकड़ाले कर कश्मीर से कल्याकुमारी तक भ्रमण किया भीरस्वतन्त्रतायुद्धकासन्देशपट्टचाया। श्चायद ही कभी किसी साधू टोली ने दया-नन्दका साथ दिया। वे तो ग्राने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे एनाकी ही विवरण करते रहे। ऋषि ने भी महाबीर जा के अनुसार नाना साहत और अजीमुल्ला आताको सौराष्ट्र जाने की सलाह दी बी। परन्तु इतिहास इस सम्बन्ध मे कुछ, नही कहता ।

> हा० भवानीलाल भारतीय पञ्जाब विव्यविद्यालय चण्डीगड

## प्रवेश प्रारम्भ

अपुलवी शिक्षावियों के नेतृत्व एव विजुद्ध नवीन प्रशासनिक व्यवस्ता ये जुद्धणानित आपके प्रिय प्राय महाविद्या नव किरटल (मेरट) में एक बोलाई वे खार्जी का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। यहा सम्पानित्व सस्कृत विश्वविद्या-लय बाराणबी की प्रपत्ना से पानार्य पर्यक्त कलाओं के प्रध्यापन की पूर्ण व नश्ता है। खिला एव सानात्म की स्वयस्था नि तृष्क है। सास्त्री एव धावार्य के लाओं की सोजन व्यवस्था भी नि सृक्त है। अत अपने बच्चों के चहुमुखी विकास के सिए विद्यालय में प्रवेश कराये। प्रवेश हेत् पुरन्त सम्पर्क करें।

मार्ग-निर्वेश — वेहली से सहारतपुर बाने बाले बस मार्ग के रमाला स्टैण्ड से टाण्डा बाने वाले बस मार्ग में किरठल है।

> प्राचार्य समरभानु झाचार्यः

#### गुरुदत्त विद्यार्थी (पुट्ठ १ का शेष)

को प्रार्थसमाज मन्दिर लाहौर में
गुरुवत्त ने एक सभा बुलाई, जिसमें
स्कूल की प्रावस्यकता धौर उद्दर्श पर प्रकाश डाला गया। तथा अनता में इस पवित काय के निए उत्साह भरा। ग्रावित प्रतिक्षा की घडियाँ समाज मन्दिर गली बच्छो वालो में एक सार्वजनिक सभा करके डी० ए० बी० स्कूल की स्थापना कर दी।

o स्कूल कास्थापनाकर दा। पडित जीने १८८८ में इतना काय किया जितना साधारए। व्यक्ति एक वर्ष में भी नहीं कर सकता। वे कृष्वन्ती विश्वमायम की छुन के दीवाने हो गये। जो ग्यक्ति सम्पन में मा माना उसे नी म्राय बनाने के लिए जुट जाते। न जाने किनने व्य क्तियों को इस प्रकार ाव जीवन

जुलाई १८=८ में वदिक मग जीन के नाम में शाप्त भाषा में एक मार्मिक पत्रिका का सपादन ग्रारम्भ किया। पित्र जी इस पत्रिका में वैदिक सिद्धातों पर क्षोजपूण लेख निकाकरते था। लेख इनने विद्वता पूर्ण होते थ कि देश त्रिदेश मे सवत्र पत्रिका का मान हुआ। पत्रिका चलती फिरती आर्यसमाज थी।

ईश्वरीय नियम अपना वटना लिए विना नहीं ओडते। जो वरमात समय से परले ह्या जाता है वह शीष्ट्र ही समाप्त हो जाती है। पडित गरुदत्त जामे प्रतिभा समय मे पव नी बरम पनी थी। जिस उम्र म नमरे बच्चे गिल्ली डटा खेनते हैं उसमे गस्दत्त जो नै प्रामायाम करना ब्रारम्भ कर दिया था। १० वप की भवस्था का विद्यार्थी पजाब की ग्राय समाज का प्रतिनिधि बनाकर ग्रजमेर भेजागया। २४ वावष परा होता कि नौजवान एम० ए० को पढाने के निए गवनमेट कालेज से साइस का बना भ्रध्यापक नियुक्त कर दिया गा।

फिर पडित जा ने नियमों को तो जिने में कमर न जो जा। जिस काम में लगे उसके सिवा मत बुख थुला दिया। जिन तोगा का उस जानी हैं बे कचा के तरे ब कि जब वे विकास मंग्जीन को लिखन बन्दे खेला के विकास मंग्जीन को लिखन बन्दे खेला के इंटिनों नक घर मं बाह नहां निकलते खाजव पन्ने नगत नव पष्टे नक एक मिनर भर दिल्ए विना पढ चल जाते था जब सोने की धुन सवार नोती थी तब २४ घण्टे को जकरनी समाधि लगनी थी।

ब्स प्रकार के झांतक्रमणों से नोहें का शरार भा झरन ज्यस्त है। मकता है। जवानी में पहित जा का शरार सन्तेन व मजबूत था। पर तु ईश्वरीय निप्मों के उत्सवन न उमें श्विमिक कर निप्ता। प्रतीन नेता है कि गर्क के विना प्राणायाम क परि अस ने भा शरार पर कुछ वरा प्रभाव उपन्न क निप्ता। इन कारणों से स्वायसमाज की झांशाओं के के द्र उस होनहार नव्यवक को क्षय रोग ने धा घरा। फलस्वरूप १६ म ज को प्रभात के ७ वजे स्वासी दयान न के सच्चे शिष्य ने ५६ वर्ष की घरनायु के ही इस लोक से प्रयाण कर दिया। पित न में कि माने में ते ही इस लोक से प्रयाण कर दिया। पित न में कि माने में ते ही कि पठ जो के परवात आध्यसमाय को गोदी में धने कर न जिले जिन्होंने खार्य ममाय का गोरव वडाया। पर कोई प्रवस्ता पित न मिल मका। उनका स्रमाव तो स्रप्ता रहेगा। उनके विनावह सोमा न न हो हो भो के

जिसे रौनक तरे कदमो ने देकर छीन ली रौनक वहलार ग्राबाद नो

उसंघर की विराना नहीं झाइ। प्रमुकरेहन पडित जी के चरण चिह्नो पर चलकर विश्व में विन्क मायनाओं का प्रचार कर सक। यहा उनके प्रति मण्ची श्रद्धाजिल होंगी

#### शोक प्रस्ताव

गरुकुल कागडी विन्वविद्यालय की यह नाक सभा एटलाटिक समुन के एयर इण्टिया जवाजट वायुयान दुघटना मे **३२६ यात्रियों के मारे जाने पर गहरा** गोक प्रकट करनी है। विश्वविद्यालय यह अनुभव करता है कि यह भीषण एव ह्दय विदारक दूघटना एक राष्ट्रीय क्षति कं रूप में हम सब के सम्मूल है। द्वाटना में मारे गए इन यात्रियों ने पर शब्द की एक सम्भ र क्षति टूइ है। शोक के वस सतप्त बातावरए म विश्वविद्यालय की यह सभा न्दवर संप्राथना करती है कि मत ॰यवितयो क परिवारों का इस गहन द खको सहन करने क श्यमता प्रदान करे। यह सभा सरकार भ माग करती है कि इस भीषण दुषण्याक कारही की स्न्मतासे जाचकी जगतयायह सूनि श्चित किया जाय कि कही दुघटना से विवन्नकारी पक्तियो दाता हाथ नहीं — वित्वविद्य लय क समस्त **भ**िकर ⊓व कसचारी

#### ग्राम प्रचार श्रनला

िली स्रय प्रतिनिधि सभा द्वारा वद प्रचार व्यवस्था का कायक्रम अहे य साहपूबक चल रण ह। सभा के बढ प्रचार धारिष्याना स्वामी स्वरून दके द्वारा एक मप्ताइ तक यू लिचडीपुर कालोनी में यो ला॰ दामान्द प्रसार जी आय के निवास स्थान पर २२ जन की बह्दयन व समरोहपूवक सम न हक्या। इस अवसर यज्ञ क ब्रह्मास्व सीस्वरूपा न दनेपचयजीके महत्व धन राष्ट घौर समाज के प्रति हमारे क्या कल्लब्य है विषयो पर प्रकार । ला सभा के भजनो पदशक श्री द्या राम प्रमी सीर श्री इय मवीर के भक्ति स में धोतप्रोत असी न सैकडो नर न रियो को भावविभीर कर दिया। सवाददाता झायसन्देश





रजि० न० डी (सी०) ७५६ अवना ११=४

## श्वार्थ जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायक्र ग्रिधिनियम जी**०** ८० के श्रतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीझाईर/बैक डाक्ट द्वारा

मत्रो, माना चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, मो-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४= के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

#### निवे इक

रामयोपान शासनाले पूर्ववेच महाशाय वर्षपाल भोनप्रकास झार्थ सरस्कर चिनित्सालय प्रधान, विस्ली प्रधान एवं प्रधान, वाच्यान स्तिनिधि धार्य केन्द्रीय महासाय युःगीसाल प्रति ० सना समा सेरि० ço

सौजन्य से महाशियाँ ी हट्टी प्रा० लिमिटेड श/४४ कीर्तिनगर, ग्रीद्योगिक क्षेत्र, नई बिस्ली-११००१

## खिचड़ीपुर चे त्र में प्राम-प्रचार

ला॰ दामोदर प्रसाद ग्रायं द्वारा लिजडीपुर क्षेत्र में ग्राम प्रचार रक्षा गया। जिममे विल्ली आर्थ प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार प्रविष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रचार वाहन लकर साथ संगीत कलाकार पण्डित बासाराम प्रेमी व श्वाम राधव की दारा वैदिक समंका प्रसार ह्या । १७ ६ ८५ को ला० दामोदरप्रसाद भार्यके निवास स्थान पर रात्रि ६ वजे से ११ बजे तक प्रचार कार्य रहा। ग्राम निवासियों ने भारी सत्याने पंचार कर वर्मलाम लिया। १८-६ ८५ की रात्री को सिवडोपुर न० ३ में प्रोग्नाम रखा गया, जिसमें सँकड़ो नरनारी एक त्र रहे। १२ बजे तक कायत्रम जलता रहा । दूसरे दिन के लिए इसी स्थान पर कार्यंक्रम रखने कानिवेदन किया गया। १६-६ ८ ५ को भी इसे स्थान पर इया व उत्लास के साथ प्रोगाम सम्पन्त हवा। २०-६-८५ को बार्य-समाज मन्दिर खिचडीपुर ने सामने नाय क्रम रखा ग्या। यहा ग्रधिक सक्यामे ग्राम निवासियो न भाग लिया। रात्रि १२ वजे तरु प्रोग्राम चलाया गया। संगीत क्लाकारों ने बपने भजनीपदेश से जनता को उत्साह दिया।स्त्रामी स्व**रूपान**न्द जीने महर्षि दयानन्द की विशेषता धीर धार्यसमाज की गतिविधियो पर प्रभाव-

खाली उपदेश और हास्य कविताओ द्वारा खमी को बल्खाहित किया — सोतावलों में एक हुने की सहर रही — बीर सभी ने साम की कि यहा पर है बच्चाह तक प्रवाद को प्रवाद की कि यहा पर है बच्चाह तक प्रवाद को से कि यहां देश की प्रवाद की सिंद के स्वाद की सिंद की

साम प्रकार के लिए बहुत परिस्थम करना पडता है जबिन है - श्रे के तक कार्यक्रम जलना ना चिहुए साम ने रानि है - क्षेत्र चुन होता है और १२ व है क्षेत्र तक प्रीक्षाम जलाया जाता है। हम तमी चुन्नीय देने ना प्यान प्रकार में पूर्ण चुन्नीय देने ना प्यान प्रकार में पूर्ण हम सभी धगठित हो कर वैदिक सम् प्रवार के सप्रकार होने है। तक एक हवर में नहेंगे कि कुल्कारी विन्वतायम् । बोने की सम्भान - वैदिक समी की क्या।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

ाया कार्यालय—५३, गली राजा केशरनाय, भोत २५६६२= चात्रडो याजार, शिलो ३





मृत्य एक प्रति ५० पैसे

वय श्रमक ३४

रविवार, १४ जुलाई, १६०३

द्यार्यं सबस्सर १९६०८५३०८५

बावाड २०४२

वयानन्वास्य--१६१

## महान् साहित्यकार, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

— डा० भवानीलाल भारतीय

त्र्यायंसमाय के प्रदितीय विद्वान लेखक बास्त्रार्थं महारथी और वक्ता स्वामी दर्शनानम्य का जन्म माथ कुम्प्ता दशमी १६१८ वि० को लुधियाना जिले के वागरावा नामक याम में हुआ। इनके पिता कानाम प० रामप्रताप क्षर्मा को भीदगल्य गोत्र के सारस्वत बाह्य व थे। माता का नाम हीरा देवी था। पुरानी प्रवा के धनुसार इनका नाम नेतराम रक्ता गया किन्तुशी झही इसे बदल कर इन्हें कृपा दान के नाम से पुकारा जाने लगा। कुपाराम की प्रारम्भिक दिशा निता के निकट ही हुई तथा उन्होंने फारसी प्रन्य गुलिस्तौ तथा बोस्तौ पढे। साथ ही सस्कृत व्याकरख के ज्ञान के लिए सिद्धान्त कौमुदी पढना बारम्म किया। तत्वालीन प्रयाके अनुसार इन का विवाह वैशास कुच्छा पथमी १६२६ वि० को नात्र ११ वर्ष की भागु में पार्वती देवी नामक कत्यासे कर दिया गया।

 इस समय उन्होंने विने सावादी नामक २० पृथ्वों की एक पुस्तक सिका को उन्हें पक में नी । वब भोना नगर (पजाल) में वे एक पाइटी से कहत कर रहें ने, उनके वाचा वचराम ने उन्हें जा पकडा थीर पर चनके के सिए विवध किया क्रिया गर कर के मिए तैयार तो हुए, परन्तु तीन गर्तों के साव — (१) नेयने वरक नहीं उतारेंगे। (२) पर में न रक्ष कर बैठक-सान में रहेंगे। (३) स्वामी वयानक के समस्त प्रमा कर करेंगे। कर में स्थान स्थान

प० इताराम के पिता प० दौसतराम भ्रापने जीवन के भन्तिम भ स से काशी रहन समे था यहा उन्होने एक क्षेत्र चनाया जिसके माध्यम से सस्कृत पढने के इच्छुक छात्रों के मोजन मादि की व्यवस्थाहोतीथी। पितामह के दिवयत होने पर प० कुराराम को काशी रह कर उनकी सम्पत्ति भादि की व्यवस्था करने के लिए कहा गया। यहा उन्होंने तिमिर नाकक प्रेस की स्थापना १० दिसमार १८८६ की की तथा इस प्रेस के मान्यम से वे संस्कृत शास्त्र प्रयों का प्रकाशन कर उन्हें सस्ते मूस्य पर आहात्रों को बेने लगे। वहा रह कर ही उन्होंने स्वामी मनीपान-द नामक विस्वात विद्वान् का शिष्मस्य ग्रहरा किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निगड श्राच्ययम किया। सन वे इड ब्रायेसनाजी विचारों के बन चुके वे। काशी में रह कर विद्याष्य्यम करने वाले धार्वसमाधी उन्हों को सनेक कठिवाहयों का सामना करना पडताथा। प॰ क्रपाराम ने इसे धन्मव किया और उन्होंने एक वाठवाका स्वापित की बिडमें आर्यवनाओं विचारकारा के सानों के पढ़ने की सुनार स्वदस्वा की। प॰ काशीनाप सास्त्री इस पाठवाला के सम्बापक वे तथा प॰ वनादस सास्त्री एवं प॰ भीमतेन सानी (सागरा) सादि उन दिनों विचार्ती वे।

भीरे भीरे प**॰ क्र**पाराम का क्षेत्र धविक व्यापक होता गया । धव वे वैदिक वर्ग के प्रचारक बनकर प्रजाब तथा संयुक्त बान्त मे भ्रमण करने लगे। १८६३ से १८६ तक का काला उक्त दोनो प्रान्तों में व्यनीत किया। १८६७ से १६०० तक मेरठ मुरादाशव, दिस्ली भागरा भावि नगरी मे रहे। नियमित रूप से शास्त्रार्थ करना व्याख्यान देना एक टुँक्ट रोज निसना श्रकासमाधान करना ग्रादि कार्य-- उनकी दिनचर्या के ग्रग थे। स० १६० में पर क्याराम ने सन्यास की दीका स्वामी प्रनुभवानन्य मे सी धीर दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। धव के सवतत्र स्वतन्त्र परिवाजक होकर निद्वन्द्व मात्र से विकरण करन चये। स्व मी दशना... नन्द की प्रवृत्तिया निम्न प्रशार से बरिएद की जा सकती है---

- १ प्रतिद्वन्त्री धर्मावसन्त्रियो से शास्त्राय — उन्होंने पौगाणिक जैन, न्साई तथा इस्नाम मनो के प्राचायों से सुक्रदो शास्त्रायं किये।
- २ गुक्हुनो की त्यापना—सिक-न्दराबाद (उत्तर प्रवेश) बदायू तथा क्वालापुर में गुक्कुको की स्थापना का श्रेय

चन्हें ही है।

- ३ विभिन्न पत्र पत्रिकाक्षो का सपा॰ दन एव प्रकाशन—प्रपत्ने जीवन काल जै उन्होने कोई एक दर्जन पत्र प्रकाशिक्त किये।
- ४ लेखन कार्य-व्यामी जी ने १८६६ से एक ट्रेस्ट प्रतिदिन लिखने का नियम नेना लिया था। इस प्रकार उन्होंने लेखनी से सैकडो ट्रेस्ट निकल । उन्होंने प्रतेक दर्शनों का माध्य किया, उपनिवर्षों पर टीका लिखी। क्या कहानियों के माध्यम से वाम्कि विद्यालों का विषेक्य करना उनके साहित्य लेखन की एक प्रान्थ विद्याप्त भी। ११ मई १९१३ को हावस्म य उनका निवन हुया।

स्वामी दर्शनानन्दका साहित्स मुक्त उद्मे किस्ता वया है। कालान्तर मे उसका हिन्दी धनुवाद भी हुमा। यहा उनके इत्तरा किस्ति एव प्रकारित सभी कृतियो का स्वोपनन्य विःरस्त विया चारहा है--

धयने काशी निवासकाल से प० कुपाराम ने जिन शास्त्र ग्रयो को स्वस्थय ये प्रकाशित किया जनका विवरण स्था प्रकार है—

- १ सामवेद सहिता---विक्नोरिया यत्राला काक्षीम मुद्रित।
  - र भाटाध्यायी काशिका वृत्ति
- ३ धाष्याया सहाभाषा । उनके समस्त ग्रन्थों की सस्या सैकडों तक पहुँच चुकी है।

### सत्संग वाटिका

₹

प्रमुकी इस सुब्टिका कौन साऐसा कोना है जो बारवर्ग से परिपूर्ण वा बद-भूत नहीं है। इस सुब्दि ने दश्यमान कीन सी ऐसी प्रक्रिया है जो ज्ञान से यूक्त नही

वास्तव में धारमा को ज्ञान से परि-चित कराने का माध्यम ही यह वह जनत् है। ससार के समस्त पदार्थ मनुष्य की ज्ञान वेतना को जागृत करने के उद्देश्य से ही रचे गये हैं। ज्ञाब का व्यावहारिक स्वरूप ही सुव्टि है।

स्रष्टा द्वारा सजित यह ससार वास्तव मै एक विश्वविद्यालय है। जहां जन्म नेकर हमारी धारमा चेतनायुक्त होती है। चिति समाने चातु से ही बेतन सब्द बनता है। स्वरूप से धारमा चेतन होते हुए जी सजा जून्य ही होती है। इसमे वेतना का स्फुरन भी उस बहितीय तत्ता द्वारा ही होता है जो इस समग्र सुष्टिका नियामक या कर्ता है।

कार्य ते ही कर्ता के बस्तित्व का बोच होता है। सृष्टि से लच्टा का बोच होता है । बीवारमा की चेतना केवल ज्ञान बहुल करने ने सामध्यें तक ही सीनित है। यह सामर्थ्य ही उसको वड वनत् से था तत्व से जिल्म करता है । जब प्रकृति से भारमा की मिन्नता या उसका सपना पुषक् अस्तित्व ज्ञान ग्रह्मा की मूल चेतना वे युक्त होना ही है।

बान को प्रस्तुत करने भीर जान को ग्रहण करने के लिए जड जगत् की प्रति-बार्य भावस्थकता है। ज्ञान क क्रियान्य-थन के लिए ही वह श्रद्धितीय सत्ता बड बगत् से माबद है हिरण्यगभ है। जान की प्रह्म करने व प्रहुम करने की प्रक्रिया के बारम्भ के लिए ही बात्मा की वड वयत् के पिण्ड से झाबद्ध किया जाता है।

इस प्रकार हमारे जीवन की जन्म-गरसाकी प्रक्रिया या बन्च सोक्षाकी प्रक्रिया का मूल कारण ज्ञान ही है। ज्ञान प्राप्ति के लिए ही हमे जड शरीर से धावेष्टित किया जाता है। क्योकि हमारी चेतना जब जगत् के बिना जागृत नही हो सकती। साथ ही जान की पूर्णता भी विना अब जगत् से मुक्ति पाये नहीं हो

इस प्रकार धामाकी जीवन बात्रा ज्ञान यात्रा ही है। ज्ञान ही जीवास्मा का लक्य है। जो जितना धविक जानाजन करता है उसका जीवन उतना ही श्रविक सपल होता है।

इस परिप्रेक्य में हुमें इस लक्ष्य की धगीकार करना होगा कि कार्य मे पहल उसके उपादान कारण का होना बनि-बार्य है। जिस प्रकार एक कुम्हार के वटा बनाने के लिए घड का उपादान कारण मिट्टी पहले होना बकरी है। नयोंकि वडे का निर्माण ही मिट्टी से होना है। सृष्टि

## महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय वेद मन्त्र-एक मनन

ग्राचार्य वेदभ्षण अविष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेष प्रतिष्ठान, हेवराबाद

विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न ग्रामुब ॥ यजु० ३०।३।

की समस्त रचना ज्ञान पूर्वक है बत सृष्टि रचना से पूर्व ज्ञान का होना आव-श्यक है। ज्ञान एक क्षमता या सामध्यं है उसका अपना कोई भिन्न अस्तिस्व नही है। बिना जानी के ज्ञान रह नहीं सकता। क्योंकि ज्ञान ज्ञानी का गुण या सामध्यें ही

इस सिद्धान्त को समझ लेने वा जान लेने पर हमें यह स्वीकार करना होगा कि ज्ञान सुष्टि के सर्जन से पूर्व ही अच्छा के सामध्यें ने निहित होता है। यह कल्पना कि सृष्टि के बाद ज्ञाम बना वह बात हास्यास्पद होवी ।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि कार्य से पूर्व कार्य का ज्ञान कर्ता के पास होता है। सुष्टि के सर्जन और मस्तित्व कोच के सिए जो ज्ञान बावस्यक है उसी का नाम वेद है। वेद सम्ब का अर्थ है जान । जान ज्ञानी का गुरह है। इसीसिए ज्ञान को ईरवरीय माना बाता है। क्यों कि वही ब्रम्य विश्व का कर्ता है।

जिस प्रकार वस्तु के निर्माण के लिए उससे सम्बान्यत ज्ञान की प्रतिवार्यसा होती है वैसे ही वस्तु के प्रयोग या उप-बोब के सिए भी ज्ञान एक अपरिद्वार्थ "भाषश्यकता" है ।

वैसे किसी ने किसी रोग की एक धीववि का निर्माण किया। श्रीविच का निर्माश करने से पूर्व उसे भौषषि निर्माश का जाम भावश्यक है। जान से सखने धीषचि बनाई । शब जो व्यक्ति उस धीवधि का सेवन करेगा उसके लिए सेवन विधि के ज्ञान की बाबरयक्ता होती है तभी सेवनकर्ता उसके लाग से सामान्वित हो सकेना। इसलिए सेवन विवि भी भौषधि के साथ घोषित की जाती है।

**अच्टा का ज्ञान धनन्त है किन्सु धारमा** के लिए जिसने ज्ञान की ससार में भाव-श्यकता होती है उतना ज्ञान सच्टा मनुष्य को देता है इसी ज्ञान को हम बेद या ज्ञान कहते हैं। वेदों में मन्त्र हैं। मन्त्र शब्द का वर्ष है फार्मू साया ज्ञान का बीज।

जिम प्रकार वड वृक्ष का सामर्थ्य छोटे से बीज में घन्तर्निष्ठित होता है बैसे ही बेद के मन्त्रों की स्थिति है। मन्त्र उसे इसलिए कहा जाता है कि उस पर हुनें

यह विद्वान्त अपने भाप ने कितना स्यष्ट धीर सरक है पर हमने धनेक उपाधिकारी विद्वानों के मुख से सुना है कि-वेद ईश्वरीय ज्ञान है वह ऋणियों की पाणी से प्रकट हुए प्राप्ति बातों पर वे विश्वास नहीं कर पाते । इसका एकमान

महर्वि स्वामी दयानम्द ने खाधुनिक मुग मे इस सस्य को समकाया और सस्य का प्रकाश किया।

कारण विन्तन ने सुध्यता का न होना ही

**भाज जब हुन एक विश्व को देखते हैं** भीर नेदों के मनी पर जनन करते हैं तो हमें स्फटिक मणी के समान वेद के सिद्धान्त शरवन्त तत्य भीर सटीक प्रतीक होते हैं। विस प्रकार ससार के किसी भी पदार्थ को हुव अच्छा या बुरा नही कह सकते क्यों कि श्रव्याना बुरासापेक्ष होता है। बैसे किसी पदार्व को छोटा या वहा किसी धन्य की अपेक्षा से वा मुकाबसे में कहा बाता है अन्यया स्रोटा बढा या श्रन्छे बुरे का प्रधन ही पैवा नहीं होता।

यही बान वेद मन्त्रों की भी है। वेद को कोई सन्त्र महत्त्वपूर्ण या महत्त्वरहित नहीं होता। हमारी अपनी अपेक्षा से ही हम किसी को सारगणित कह सकते हैं या कह देते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्य सरस्वती ने भपने बेदगाध्य मे प्रत्येक साध्याय के सारश मे विस्वानि देव सविवरः इस मत्र का प्रयोग किया है। इस हेतु से हम कह सकते हैं कि महर्षि को उक्त मत्र सर्वाधिक प्रिय **47 I** 

वास्तव में इस छोटे से मन्त्र में जो सार निहित है वह मस्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सारे विद्य में हमें इस मन्त्र का विस्तार बष्टिगोचर होता है। बाइए हम इस मन्त्र पर सक्षेप मे विचार करेंगे।

यह मत्र यजुर्वेब के तीखरे घट्याय का तीसरा मन्त्र है। वो इस प्रकार है।

विश्वाणि देव खवितर् दुरितावि

परासुव । बब्बर्ड तन्त्र सासुव । वषु० ३०-३

इस प्रव्याय का प्रथम गंत्र है--हेब ननन करना होता है, ननन के करने ते विवत्त प्रसुद वस प्रसुद वसपति •⊷। दूसरा मध्य श्रकृरित पुण्यित व फलित होता वय है-तस्वविदुर्वरेष्य वर्वे वेतस्व । वावजी मन्त्र है धीर तीसरा मत्र है विस्वानि देव । इन तीनों नचों के ऋषि बारावसा भीर देवता सविता हैं।

"सविता शब्द का मुख्य धर्व है "सत्पादिनी शक्ति"

उत्पादक तरब ही संशोधक होता है। क्कोकन की प्रक्रिया ही यह प्रक्रिया कहाती है। इस प्रकार यजुर्वेद के तीसर्वे धन्याय के ये तीनों मत्र सुद्धि की प्रेरला देते हैं। 'केतपू' केत न पुनातु" मे खुद करने की बाबना स्पष्ट है। नायली सब में भी मर्व भीमहि बर्थात् उस दिव्यगुर्खों से युक्त देव के उत्तम मुख्य कर्म स्वभाव को भारण कर हम भी भर्ग शुद्ध स्वक्स हो चाएँ। यही भावना इस तीसरे मत्र में है कि - दुरितानि परासुव "वव्यक्ट तस्त बासून" धपवित्रता को दूर करें बीर उत्त-मताको बारण करें।

वदि हम नम्भीरता से विचार करें वो यह बाव स्पष्ट हो बाती है कि समस्त संचार में बढ़ भीर चेतन में एक प्रक्रिया निरन्तर वारी है और यह सबसे पहली प्रक्रिया है वह प्रक्रिया है शोधन की। पवित्रताकी।

जड और चेतन दोनों से समान अध्य से निरन्तर यह शोकन की प्रक्रिया क्सती रहती है। हम जितना विकृति से दूर रहेंके उतने ही बीवंबीकी और मुली रहेंने।

पवित्रता दीवं जीवन और संख्ञायित की पहली और महत्त्वपूर्ण वर्त है। दुरित के सपहार के विना भद्र की स्थापना संशव नही है। इसी मौसिक सिद्धान्त को प्रस्तुतः भन जवाबर करता है।

भागव समाज में वर्ष के जितने निवस बर्वन सिदान्त है उनका मूल बाबार भी सशोधन है तथा भद्र की स्थापना है। जो धम दुरित के त्याव के नियमी की उपेक्षा कर मद्र स्थापना की बाल करला है वह वर्ग नहीं किन्तु सम्प्रवाय कहोता

सम्प्रदाय मानव बाति से सहला उत्पन्न नहीं कर सकता । जैसे मलिन पास में हम कितना ही उत्तम श्रोजन रक्वों बड उत्तम भोजन भी प्रवित्र धीर हानिज्ञह हो बाता है वैसे ही दुरितों के त्याने विना इब बाहे जितने सद्गुत्ती वन बाएँ हमारे वे सद्गुण भी हमारे लिए सुसदायी नहीं हो पाते ।

माजकल बहुत से तथाकवित वर्मा-वार्य और वर्मगुरु अपने वेसे वेलियों को भ्रमवास में फंसाते हैं कि-धाप कुछ भी बाइये पीजिए जो मर्जी माए सो की जिसे वस प्रमुख्यात को धारला कर शीकिए प्रापका कल्याण हो जायेगा यह सिद्धान्त अमपूर्ण है इससे कभी भी सक्य की प्राचित नहीं होती।

बुरित को दूर करने का उपाव है बण्डन, बोट, प्राचात । सर्वात् वद तक हम बुराई को वढ सकल्प व क्सपूर्वक प्रताकृता वा बर्सना से नहीं निकासते तक तक वह दूर नहीं होश्री।

(बेव पृष्ठ १ वर)

## 🛨 वचन-सन्देश 🛨

मषु-पूरित हो मेरी वाणी '
मषु-पूरित हो सप भाग मेरी जिल्ला का सौर मूल भी इसका हो मषुरिम कत्याणी मषु पूरित हो मेरी वाणी '। मषु पूरित हो पात्रा मेरी निकट-पूर्व का गमन-सागमन ' सब को प्रमन्नता पत्र वाकर में सबका प्रियवर बन जाऊँ मधुरिम प्रवृत्तियों का उद्गम <sup>1</sup> मैं मधुसे भी घषिक मधुर हो बन मधुरनर और मधुरतम <sup>1</sup> जग के हर पदार्थ सेमोठी हो मेरी वालो कन्याली । मधु-पूरित हो मेरी वाली।

कवि बशीर ग्रहमद मयूख

सम्पादकोय-

## सिख आतंकवाद का भयंकर जाल

लुशियो से भग्दुसव कामन !

विश्व भर इस समय बातकवाद की चपेट मे है और यह द्यानकवाद बटना हा जा रहा है। भारत मे यह और भी श्रधिक विक-राल रूप से भपने जबड खोले हुए है। भानकवाद का यह खनरा केवल खालिस्तानियों से ही नहीं है बल्कि काइमीर मुक्ति मोर्चा, मिजो सगठन त्रिपुरा वालटियस तथा नागा मुक्ति मोर्चे जस झनेक उग्रपथी सगठना से हैं। इस अनिकवाद का सामना करना आ सान काम नही। विदेशों में उप्रपथियों को सहया कम नहीं घौर न ही साधनों की कमा। साथ हा इनका पाठ थपथपाने वाली ताकत भा कम नही है। इस सम ब खालिस्तानो उग्रवादिया के क्रूर कारनामा से सारा विद्व दहन उठा है। भारत से बाहर सिख भारो सख्या मे है। यूरोप और पश्चिमी देशो में यह सब जगह पहुंचे हुए है। सब से मिबिक यह ग्रमेरिका भ्रोर कताडा मे बाबाद है। ब्रिटेन मे भा इनको सख्या काफी है किन्तु इनमे उप्रवादी सिल बहुत कम हैं। प्रधिकाश सिल तटस्थ प्रपने व्यापार पेशे में सलग्न है। यह भो स्पष्ट है भनेक व्यापारी सिखो का इन उग्रवादियों को बढ चढकर सहयोग मिल दहा है। ग्रमेरिका में कई ऐसे स्कूल चल रहे है जहाँ दुनिया भर की सरकारो के विद्राहियों को मातकवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। 'न्यूयाक पोस्ट' ने अलवामा के एक स्कूल का ब्यौरादेते हुए बताया है कि एयर इण्डिया के जिस बाइग बिमान को दुघटना हुई है उसके लिए जिन दो व्यक्तियो अमन्द सिह और लालिमह पर सन्देह किया जा रहा है वे इसी स्कूत म प्रशि-क्षित किए गए थ । सस्था के डायरेक्टर फक कैपर के अनुसार उन्हें किसो म्रान्तर्राष्ट्रीय सिम्ब सक्रिय सगठन न दस लाख डालर दिये थे। इसमे छ सिख धानकवादियों को प्रशिक्षित किया गया था। इस प्रोश-क्षा म विस्फोटक बनाने पानो मे जहरामलाने तथा उच्च सुरक्षा के रहते हुए किसा उच्च व्यक्ति तक पहुच पाना ब्रादि का प्रशिक्षण भी शामिल था। विदेशों में भारतीय मम्पत्ति को हानि पहुचाकर ग्रानक मचाने की योजना भो इसके बन्तगत थी। इस योजना को बनाने वाले स्कूल के निदेशक भीर भगरीकी गुप्तचर सस्था एफ बी० ग्राई० के छिपे जासूस है। कहते हे इस तरह के अमेरिका मे दो दजन स्कूल हैं। सेना या गुप्तवर सेवास अवकाश प्राप्त अधिकारियों को भाड़ के सनिक सप्लाइ करने से लेकर आनकवादियों का प्रशिक्षण देने तक की दुकान पश्चिम के अन्य लोकतन्त्रीय देशों में भा है परन्तु धमरीका धौर भन्य देशाका ध्यान इस तरफ नही जाता। कह दिया जाता है कि लोकतन्त्रको कुछ मजबूरिया हैं। प्रत्येक पश्चिमासरकार मिखो को गतिविधयो को नजर अन्दाज करता रही है। यही हाल कनाडा का

कनाडा में बसे डाई नाख भारतीयों में ४० प्रतिशत सिख है। सालिस्तानी समर्थक तो इनसे भी कम है परन्तु इन लोगों को कनाउ। सरकार का निरन्तर समर्थन मिलता रहा है। इससे बहा हिन्दू सिखों में सदा दरार जीडी होनी जा रही हैं। कहा जाता है कनाडा सरकार गुप्त रूप से उदावादियों को आर्थिक सहायता भी देती रही है। बिटेन में भी उग्रवादी बढ चढकर अपना काम करते रहे हैं। वहा को सरकार ने उन्हें रोक्तने के बजाय प्रोरसाहन दिया। शाउयल में जगजीत सिंह बौहान अपना आफिस बनाने में सफल हो गया। उसने जुल आम बीं बौहान अपना आफिस बनाने में सफल हो गया। उसने जुल आम बीं की। सीं से यह मोचणा की कि जो कोई भी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा साथी या उनके परिवार के किसी सदस्य की हरा। हरेता

उसे लालो पीण्ड का इनान मिनेगा। जगजीनिमह चौहान को कई सा यमा से ग्राधिक महायता भी मिननी नही है। जिल्होंने राले साम भारतीयों के प्रति हिसक ब्यवहार किया उनके विरुद्ध भी कोई नारवाई नहीं की गयी।

समेरिका, ब्रिटेन कनाडा के बाद नार्वे भी मिन्न स्नातक-वादियों का केन्द्र बन गया। इससे बहा गेर मिन्न भारनीय परेशान हो ठे हैं। इस तरह की गतिविधियों के मरगना वहाँ हिरिन्दर मिन्ह थे। यह वो ज्यक्ति हैं जिसने पजाब में मैनिक कार्रवाई के विरुद्ध विरोध प्रकट करते हुए सोसली के भारतीय दूतावास के प्रथम मिन्न के पद से स्यागपत्र दिया था और इसी देश में उन्होंने राजनीतन शरए प्राप्त करते का प्रयान किया था। सारा मिन्न जाने के बाद वे यहां के उप-वादिया के नेता बन गये। सनेक प्रवासी भारनीयों के शिष्टमण्डलों ने नावें सरकार से स्रपील की कि इस व्यक्ति को राजनीतक सरगा वायस के नी जायें परन्नु नावें सरकार ने एक नहीं सुनी भीर उसे रेनीडम परिसर्ट देकर समने देश में रहने दिया।

पिछने दिनो भारत सरकार ने पाकिस्तान से लगी भारत की सीमा को सील कर दिया तो सिख उग्रवादी पाकिस्तान मे जाकर शरण लेने मे तनिक खनरा महसूस करने लग गए । उन्होने ग्रपना रुख नेपाल की तरफ कर निया। वे नेपान को ग्राना केन्द्र बनाने के प्रयास मे नग गए। नेपाल और भारत की सोमः। १५०० कि तोमोटर तक लम्बी है। भारत ने इस लम्बी सीमा पर अपनी २०० चेक पोस्ट स्थापिन की हैं। लोग वैघ तरीको से भी नेपाल ग्राजा सकते है मगर यह सारी सोमा लुली है। कई एक ऐसे स्थान है जहां से लोग ने गल आते जाते है। नेपाल मे सरदार प्रीतमसिह उग्रवादियो कासरक्षक बनाहुन्नाहै। कहते है पहले लगभग ३० वय पूर्व यह माबारए। मकेलिक बनकर नेपाल ग्राया था भीर भव वह समृद्ध हो चुका है कि नेपाल मे परिवहन सेवा की ७० प्रतिशत गाडिया उसकी है। नेपाल के ग्रधिकाश पेट्रोल पम्प भी उमी के है। उसने अपने विज्ञान घरको गरद्वारा बनादिया है। उसमे अने क ब्राघुनिकतम बन्द स्थापित किए जिन से पत्भर मे श्रमेरिका कनानाओं ब्रिटेन से रन्देश श्राजा सकते है। गत वर्ष जगज न सिंह चौडान भो इसके पास कुछ दिन गजार कर गया था। कुछ समय पूर्व एक ग्रानकवा ग पजाब पुनिस का भूतपूर्व डो० श्राई० जी । एस । एस । मान अपन कछ साथियों के साथ जोग बालों के रास्ते नेपाल जाता हुआ गि~पनार कर लिया गया था । समका जाता है यह इसी प्रीतमसिंह के पाम शररण लेने जा रहा था। भारत सरकार के दबाव डालने पर यह प्रीतमन्हि भ्राजकल कही जा चुका है। कहा जाना है उसके इस महत मे ग्रज भी हजारो "ग्रवादी जो कनाडा ग्रीर अमेरिका से ग्राए हुए हे नरए लिए हुए है। इस प्रीतम सिह के राज परिवार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारए। पुनिस भी हाथ डालने में सकोच करती है।

विदेशों में सिक्षों को गुमराह करने के लिए प्रचार भी कम नहीं किया वा रहा। इसलिए फावस्यकता है इस समय अपनी गुप्तचर एजेंसियों को मजबूत करने की। साथ ही इन उपवादी तत्त्वों से निप्तक के लिए हर हिषयार को घार देने की फावस्यकता है। इस आतकवादी विकराल अपल को साफ करने की हर सम्भव कोशिय करनी होगी।

— यशपास मधान

## भारत के रष्ट्रीय संगठन में धार्मिक उन्माद सबसे बड़ी बाधा है

महावीर 'नीर' विद्यालकार, गुरुकुल कागडी

जब हम अपने प्यारे भारत राष्ट्र के इतिहास पर इष्टिपात करत है ता इसके संस्कृति भीर सभ्यता पर भी हमारी विष्ट धनायास ही चली जाती है। प्राचीन काल से ही वहां का निवासी घम भावना से भ्रोत-श्रोत रहा है। गगा, गौ गायत्री उसक व्यक्तिमत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन के बाबार रहे हैं। प्राचीन भारत का नाचा ही धम मूलक बा। राजा और प्रजा धार्मिक प्रवत्तियो में भोत-प्रोत रहते थे। धर्म के लक्षणी को वे भपने जीवन की आचार सहिता नानते थे। ईश्वरीय शक्ति को मानते हुए समस्त प्रालियों का पालन करना राजा भौर भविकारी गण भपना कतव्य समभते थे। किन्तु मुस्लिम भीर भाग्ल श्रमाव मे शान के पश्चात् हिन्दुस्तान का समस्त ढाचा ही बदल गया है। माज आ जादी के बाद के भारत की हम केवल हिन्दुम्रोकाहि दुस्तान नहीं कह सक्ते। धाज विभिन्न मतो सम्प्रदाया, फिरको को मानने वाल विभिन्न जातियों के लोग बहा निवास करत है। इसलिए सविधान मै इस राष्ट्रको धर्मसापेक्षन मानकर 'खर्म निरपेक्ष' माना गया है। यदि हम इस बात को यो वह देकि राप्ट्रीय स्तर पर हमारा कार्ड बम नहीं है तो इस मे कुछ भी गल्न बात न होशी किन्तुदूसरी भोर गण्डुके झाटरल में निपटी प्रजा विविध धार्मिक भावनाधी को व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक व जातिगत ग्राध र बनाये बैठी है। इसलिए झाये दिन वामिक विवाद, राष्ट्रीय विवाद बनकर हमारे बानस की भिभोडते रहते हैं धीर जब राजनीति निपूरा नेनाओं से वे प्रभावित हीते हैं तो दूसराही गूल खिलादेते हैं इसलिए जब हम साम्प्रदायिक सदभाव या सौहाद की बात करते है तो हमे वार्मिक वट्टरपने के पिशाच को नजर-अन्याज नहीं करना होगा। देखा जाए तो भर्मका सीधासम्बन्ध एक ईश्वर, खुदा या गाड की प्रार्थनाया इबादत से है। इबादत नहीं कर लो कुछ फर्क नहीं पहता। वस्तृत भगडा उसकी इबादत का प्रार्थना करने भववान करने का नहीं है। भिन्त इसके मूल मे दूसरे ही कारण हैं जो भाई को भाई से भौर मानव को मानव से धलग करते है।

स्पट रूप से देखा जाए तो वर्त-मान भारत के राष्ट्रीय सगठन से वासिक उन्माद सबसे बडी वाचा है। सनित समस्त मान्तवासियों को दसका हल सोमना ही होगा। सन्यया बट-बड बलि- दानो से प्राप्त यह स्वतन्त्रता विसर साएगी। टूट साएगी। याद आ बाते हैं प्रसिद्ध दार्शिनक फॅकांसिन के से दा द कि 'यदि मनुष्य समें की उपस्थिति मे हतने दुष्ट हैं तो बमं की सनुपस्थिति मे उनकी क्या दशा होगी।'

भारत का ही नहीं भपित संसार का इतिहास भी हमे पुकार-पुकार कर कड् रहा है कि धर्म के डकीसलेबाओ धौर वार्मिक उन्मादियो ने सपनी महत्त्वाकौ-क्षाभोकी पूर्विकेलिएक्यानही किया। एक खुदा या ईव्वर का बन्दा होने पर भी इन्सान वर्ग की दीवारी में बटकर जडता भौर कगडता रहा है। अपने वार्मिक विवेक को लोकर वर्माम्बता की सडान्ध से मानव इतिहास को कल कित करना रहा है। यदि ग्राप जानना ही चाहते हैं तो जाकर पूछो उन यूरोपियनो से जिनके रक्त से रजित इतिहास के पन्ने माज भी धर्मान्धता की गवाही दे रहे हैं। फास मे फ़ासिस प्रथम ने १५४५ ई॰ में **अ**पनी मत्यू से पूर्व भारपस पर्वत माला के तीन हजार निरीह कृषको के कल्लेग्राम की बाजा देकर शांति प्रदान की । उन क्रुपको का एकमात्र धपराध यह था कि वे ईसाई मत के मून विद्धान्तों में विश्वास रखते हए पोप तथा पादरियों की प्रभूता नही मानत थे। धाज भी धनेक राष्ट्र वार्मिक कटमुल्लाधी से तग हैं । धार्मिक ढकोसले-बाओं के धिनौने रूप को यदि देखना चाहत हो तो याद करो १६४७ का वह दुर्दिन जब लग्हीर दिल्ली और पजाब की बलियों में एक बर्म के मानने वाली ने दूसरे वर्म के मानने वाली पर भवकर बस्याचर किए। कितनी मौ बहिनो के श्वतीत्व लुटे, कितने भाई बहिनो से विलव हो गए। कितने स्तन पान करते बच्चे अपनी मासे छीन लिए गा। कितनी तदिणया विश्ववाए वन गई। कितने घर उजह गए, जिनके बासू वौद्धने वाका भी कोई न रहा। वस्तुत धार्मिक जन्माद की परिशाति विनाश में ही होती है। यह उन्माद मानव जाति को गहरे गर्तमे हुवाकर मार डाबसा है। इसलिए इसका उपचार भावश्यक है।

तम है पान से ३७ वस पूर्व हम जनने करने स्थान बनोबा करते थे। करना के मन नाहे पिन बीचा करते थे। बेस के बीकनो में बन्द रहुकर और जावी का मूना मूनकर भी हम चातक की माति स्थानतम्ब युवा रस का वान करने की बाबा नगावा करते थे। समय पण्टा, पुतामी की निया का घरत हुया, स्थान फूले, घाकाक्षाए फन्नी, कल्पनाए साकार हो उठी । घाजादी का मगस प्रभात भूमता हवा था पहेंचा। बाज वह ३७ वर्ष पुराना हो जुका है किन्तु ग्राबादी के इस पावन काल मे भी आज भारत का मानव जहा वैज्ञानिक चकाचींव से तस्त है, टी॰ बी॰, विडियो झादि भौतिक साधनो की उपलब्धियों से जीवन मे बानन्द जुटाने मे लगा है। वही भूखा है नगा है, धसहाय है। वर्ग के जवाल मे भटका है। भाषसी वैर व वैमनस्य मे जकडा शकित भीर भयभीत है। काश्मीर से लेकर कन्याकृतारी तक और राजस्यान से लकर बगाल की खाडी तक फैले इस देश में हिन्दू मुखनमान, पारसी सादि सभी जातिया व वर्मों के सोग निवास करते हैं। सब के ध्रपने-ध्रपन विशास मन्दिर हैं। गुम्बदाकार मस्त्रिदे है। क्रास के चिह्न ने श्रकित गिरजावर हैं। सत्थी धकाल के उद्योग से धकिन गुरुद्वारे है। यहा सब के घपने मजहत्र है, फिरके हैं। रहने सहने व स्वाने पीने क डग है — ऐस मे क्यायह भाषाकी जा सकती है कि राष्ट्र के सगठन में धर्म साधक होवा?

हमारा विचार है कि विव ये बन्दिर, सरिजय, पुरुक्षारे पिरकायर साथि न हो, होर इस्पक सनुष्य सपने जुदा के हंदनर को सद्योग सकाल को, पिछु को सन बहुत जुछ समान्य हो सकते हैं। वस्तुन कन प्रवाचरों को उत्पाच सामव लाहि को सराव्या, वस्तुन, प्रेस, साईचारे साथि के निय हाता का किन्दु सब प्राय कन पुजारों से राजनीतिक सजावेशाओं ने वर कर विधा है। इसलिए केवल सहि-स्मुता ने वालें कहता हम वस्तु से में महारा नहीं वालंकित हम वस्तु से में

सरा तो यह है कि वब वब इस राष्ट्र के धन्दर एक मध्युत एक्तिताली सेन्द्रीय साक्षम रहा। तन-त्व किसी भी धर्मीन्व की हिम्मत नहां के समुद्र को नहां के दि की वहीं हुई। धान भी पनाव जल रहा है ससम जल रहा है, कास्मीर जल रहा है प्रसम जल रहा है, कास्मीर जल रहा ही पुत जिल रहा है—स्पी वर्मान्वता में र सकीएं मणोवृत्ति के कारण। राज-मीरिक में मिनीमी मिलानट के क रण तबा एक मजबून राष्ट्रीय चकरण के न होने के कारण।

कहा जाता है कि घमं धपने धाप से सत्य का रूप है। ईश्वर का रूप है। वर्मों रक्षति रक्षित । यतो घमंस्ततो सव । यह विकान्त रूप से ठीक है। सार्यावर्ते से एका ही होता था। तब वर्स से तीति धीर
नीति से राब बना करते के, ध्रव विस्कृत
विपरीत है। ध्रव राज से नीति धीर
के ध्रमं कर रहा है। इतिमार स्व वावकर
है। साभारण लोग वर्स के ध्रस्तलों भागे
को न सममकर उसकी मबहुती बाख
वालों पर समक करते हैं। धर्म के गाम
पर बड़े हैंटो के महुल, मानारे चोटी,
जनेज, सुन्नत, तुकीं टोपी विश्व कास।
ध्रासमी को धारमी से राष्ट्र को राष्ट्र के
धेवते हैं। ये ही भावनाए राष्ट्र के धदर
कभी पाकिस्तान कभी साजिस्तान कभी
पावरी क्षेत्र, आदि की सांग कर देश से
पुनविभावन के साज सजाने को तीयार
पहती हैं।

कहते की तो कहा जाता है कि सब-हव नहीं विकास सायण में बैर रक्कारों किन्तु समय स्व ने पर ये सभी नोंग सम्बन्ध करें में बटकर, सनते सपने वर्ष की दुहाई देकर प्रथनी सपनी सपनी स्थना पपना राग सनाथने सपते हैं। सत रस समय वर्ष से राष्ट्र के उदार या सम-न्य की बान करना अपय गाल बजाना है। यह भी कहा जाता है कि राष्ट्र वर्ष से ही धारित रहा करते है कि राष्ट्र वर्ष से ही धारित रहा करते है कि सुब्ह मन् महाराज के मनुसार सर्थ की, यह सन्त के मनुसार पर्य के रेज करता है। सनु ची के मनुसार पर्य के रेज करता है। सनु ची के मनुसार पर्य के रेज करता है। से से

शौवमिन्द्रियनिग्रह् । वीर्विद्या सस्यमकोको

दशक वर्ग लक्षणम् ॥

वर्षात---राष्ट के प्रत्येक विवासी वे (बृति) वैर्यहो (असमा) क्षमा की शक्ति हो, (दम) अपने पर नियन्त्रण करने की श्रामित हो, (प्रस्तिय) चीरी की शायका न हो, (इन्द्रिय नियम) इन्द्रिकी वर निय-न्त्रण की सक्ति हो। (इससे परिवार-निवीषन की भी बस प्राप्त होगा) (थी) बुदि ही (बच्छे भीर पुरे की विचारने की शक्ति हो),(विद्या) राष्ट्र निवासियों में ज्ञान-विज्ञान की शक्ति हो, (सस्यम्) राष्ट्रकतियों में सत्वाचरश की वृत्रित हो। (बरवंगिय वर्षते, केवल बीवार की शोशा व ही), (बक्रीय) बकारण क्रीव न करना वर्वीकि कीवे सेमस्त विकास की बंध है। वह है राष्ट्रं निवासियों का अपने 'लिए धौर राष्ट्र के लिए सार्वधीय धर्म। वास्तव में देला जाए तो यह किसी भी राष्ट्र के निवासियों की धाचार संहिता है। इस पर चलने पर ही राष्ट्र संगठित रहते हैं। धर्म की साबारण परिभाषा है 'बारमन प्रतिकृतानि परेषा न समा-चरेत्।" धर्मात् जो बात धपनी खात्मा के प्रतिकृत हो वह दूसरों के साथ जी न करें। किन्तु बाज ठीक इसके विपरीत हो रहा है। मनुष्य प्रवने स्वार्च के वजी-भूत बुरे से बुराकार्यं करने में भी नहीं चुकता। राष्ट्र के ग्रम्दर चोर-वजारी, बूसकोरी, रिश्वतकोरी, भ्रष्टाबारी,

(क्षेत्र पूष्ठ १ पर)

कोष समुख्य का एक बहुत ही अपकर रोव हैं। कोष का सम्बन्ध हिला से हैं। में मुख्य कारते हैं, वे स्वय ही अपनी बुद्धि की नट कर देते हैं। कोष ममुख्य के वारीर में एक बहुत कारी प्रवन्तुण हैं। कोष सीम्बर्ध की मध्य कर देता है। बुद्धि को अध्य कर हेता है। बुद्धि अध्य का पूज्य को बुद्ध वना देता है तथा मनुष्य का बुद्ध को प्रवट्ध के प्रवन्ति हों है। इस अध-कर रोग से मनुष्य को वारीरिक, मान-विक, सालमक हर प्रकार से प्रवनित होंची है। कोष के विषय में किसी सस्कृत के कार्य ने कहा है—

क्रोधो नाशयते वैगंम्, कोधो नाशयते श्रुतम्। क्रोधो नाशयते सवम्, नास्ति क्रोधसमीरिय ॥

कोष, पैर्य, निवा धौर शास्त्रजान सबको नष्ट कर डाजता है, कोष के समान दूसरा शत्रु नही है।

कोष किसी भी कारण से क्यों न पैदा हो—कारण कितना भी बदा क्यों न हो, आप जितनो बार कोचित होते हैं, जतनी बार भवनी हानि करते हैं। कोच वारीर से हुक्के ज्वर का काम करता है। इसे महाचाण्याल कहा मया है।

किसी समय की बात है। एक ब्राह्मण कालाव के किनारे अपनी कृदिया कालाक र कार्य अपनी कृदिया स्वाच्या रहता था। वह निरव स्तान कर अपनी बोदी तालाव के किनारे पदारका था। वहीं पर एक थांण्डाल प्रांकर तालाव में स्तान करने लगा, जिसके कीरेस सहा कर बोची पर पानी का खीडा पर पदा। उसने कुरले सपनी कृदी से निक-सकर पाण्डाल को गीटना शुरू कर दिया। जिसके बाण्डाल को गीटना शुरू कर दिया। जिसके पाण्डाल का गीर पदीने से लग्ध हो गया वह गर्मी से परेशाल हो कार्य

क्रोध मत कीजिए

राजेश प्रताप सिह

बाह्मण भी नवी के किनारे पहुँच यया। बाह्मण को दया था गई। तब उछने चाध्या गई। तब उछने चाध्यान से पूर्व हतनी गर्नी में क्यों स्नान कर रह हो?" तुन्हें नुबार हो खायेगा। खाण्यान ने कहा— सापने क्यों स्नान किया है? बाह्मण ने कहा, मुक्ते खाण्डान ने खूदिया। इहिसए मैंने स्नान किया है। इस पर बाखान ने कहा कि गुक्ते ने बहु हिया। इहिसए मैंने स्नान कर रहा है।

क्रोण से स्वभाव दूषित हो जाता है।
वृत्ति सिविस यह जाती है और प्राकृति
सूर हो जाती है। क्रोण से स्वणाव स्थित स्वर हो जाती है। क्रोण से स्वणाव स्थित स्वर हो जाता है। संगाव में कृद्ध मनुष्य सत्ता मूह की साता है और स्थित तथा सात्त प्रमुख्य की सदा विवय होती है। हुसरा होथ में हो और प्राप्य यदि सान्त हैं तो सात्त सबस्य वांबी मार से वांविं।

"ब्रक्तीचेन जयेत् क्रोचम्। ब्रक्तीच से क्रीच की जीतो ॥

कोष एक एसा सनोभाव है जिनमें मनुष्य बोडी देर के सिए सपने को मुस बाता है और सकार्य की करने सन पडता है। क्रीच उदेश है और उदेश सम्बा होता है। सब उदेश सम्बे होते हैं। क्रोच के उद्यास होने का उरीका भीता में बताया वया है—

ध्यासतो विवयान्युष्तः, सञ्जलतेषूपजायते । सञ्जलसंजायते काम

कामातकोषोऽभिजायते ॥

कोषादभवति समोह समोहास्स्मृतिवि भ्रम । स्मृतिभ शाद बुद्धिनाशो

मुद्रिवाशास्त्रमध्यति ॥
मन सहित इन्द्रियों को बात्र में करके मन के द्वारा विषयों का विच्तन होता है भीर विषयों को चित्रमत करने वाले पृरुघों की उन विषयों में भ्रासिन हो जाती है भीर भ्रामित से उन विषयों की कामना उपन होती है भीर कामना में विपन पड़ने से कोब उपस्पत होता है।

धौर कोष से सविनेक सर्थात् मूड-भाव उत्पन्न होता है भीर प्रविनेक से स्मरएखिल भिगत हो जाती है भीर स्मृति के भिगत हो जाने में बुद्धि मर्थात् ज्ञानखिल का नाश हो जाता है भीर बुद्धि के नाश होने से यह बहु पुरुष धपने श्रवखायन से गिर जाता है।

युनाम क महापूर्व शुकरात की स्त्री बडी कलहकारिणों की। एक दिन उमने के बरकर पठि पर कुठे वानी का क्षेत्र उसके दिवा। इस पर कुठ वानी का कोश उडल दिवा। इस पर कुठरात ने ठडे निवास के हुँगकर कहा, परवने के बार पानी बरसा ही करता है। 'एक दिन बहुत के बन्दु-बागववी के लागने उसने कुकरात के मृह पर तमाचा मार दिवा। बन्दु-बागववी ने क्षी को वण्ड देने के लिए सुकरात को बहुत चकसाया, परन्तु उनको क्रोय नहीं बाबा धीर उन्होंने कहा—मैं तुम लोगों के सामने तसाया नहीं करना चाहुवा कि तुम लोगे दूर कर बेकरे देह और प्राथम तसाय के सुना को बहुत करने के इस बेकरे देह और प्राथम ते बहुत करने के स्वार्थ के दूरने को

सब्दे देलकर जैंगे बच्चे साली पीटा करने हैं, वैसे ही सालियाँ पीटो ।

क्रोध एक बहुत वडा ग्रमिशाप है। यह सभिशाप ही नहीं बल्कि मनूष्य की उच्चको भी तम कर देता है। उससे मनुष्य को हर प्रकार से हानि ⁻उानी पढती है। कोघ करने से शरीर का विकास दक जाता है। कीथ मार्म का एक स्वमाविक मुख है। क्रोध के कारण ही मनुष्य एक दूसरे से भगडा कर अपने तथा इसरे के जीवन की नष्ट कर देता है। बहुत से लोग तो किसी भी बात की पर-शानी के कारण अपन घर वाली उर काधित हाकर सना पीना छोड दन हैं। इस भयकर रोग से मनुष्य क कही भी भादर नहीं होता है भीर मनुष्य सप्तकी दृष्टियों में पिर जाता है। क्रोधा स्वभाव का व्यक्ति कभी सज्जन व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता है। वह प्रपना जीवन क्रोधमे ही व्यतीत कर देता है। काची व्यक्ति के चेहरे पर कथ मुन्कान ही नहीं रहती है। कोच जीवन को नब्द कर डालता है। यह मनुष्य के जीउन का महा-चाण्डाल शजू है। जो मनुष्य इस शतू के बबीन हो जाता है तो उसको न सुख मिलता है, न शान्ति । वह प्रपन जीवन मे शानन्द की प्राप्ति नहीं कर सकता है। उसका तो जीवन द नमय हो जाता है। वह अपने की असह र अनुभव करता है, धौर भ्रपने जीवन को नष्ट कर देता है। इसलिए क्रोध को महाविनाधकारी कहा गया है। इसकी कोई बाकृति नहीं होती है। यह केवल भन्या होता है। क्रीभंकी कोई देख नहीं नकता, लेकिन मनुष्य के धन्दर यह मनोभाव विश्वमान रहता है, तथा अपनी परिस्थिति के अनुसार जागृत हो जाता है। धनर कोई व्यक्ति इसके ग्रंभीन हो गया, तो ग्राप समित्रये कि उपका जीवन जून्य है। वह अपने जीवन-काल में कोई उन्तिन नहीं कर सकता, बल्कि वह अपने को बन्धाद कर देता है। इसलिए हमे क्रोच नहीं करना चाहिए।

किशोरमञ्च-

वीर बालक छत्रसाल

बहा अध्य पुस्ता तृतीया विन्द्रात १५०६ । १५०६ को बालक खनताल का मार पहाली के अवल में जन्म हुआ। मुग्न वामार शाह-बहा की देना चेरा डालने के प्रमान में ने बी। छिपे रहुना झावरयक समस्त्रकर पुत्र के कल्म पर भी महाराज ने कोई उसका नही समाया था। एक बार तो यजु इतने निकट था भर्ग कि कोगों को साय अवाने के लिए स्थर-उथर खिपने के लिए जागना पड़ा। इस मान दौढ़ में गिंधु इससाल सकेते ही मैदान में छून पो किन्तु— जारे एक नहिंदी की।

पत्ना नरेश महाराज चम्पतराव बडे

ही बर्मनिष्ठ एव स्वामिमानी वे। छन्ही के

जाको राखै साइया मारसके नींह कीय। बाखन बाका करिसकै खोजन बेरी होय।।

बालक क्षत्रसाल पर धनुधों की विष्ट नहीं पड़ी। जगशन ने शिखु की रखा कर सी। बार बच की प्रबस्ता तक इन्हें निवहाल ने रहना बचा और फिट केश बाद वर्ष की प्रवस्ता तक दिवा के साथ रह बुके। यौच बचे की प्रवस्ता में भी राम को के सन्दिर में इन्होंने मनवान राम (हज्ज की) लड़मए की मुदियों को प्रमा बेहा बलक समफ़र उनके साथ बेहना बाहा घोर कहते हैं मनवान सक्ष्मुण इनके साथ बेहें। पिना जो की मुत्यु के एक्शाद तरह वर्ष की घारचा तक छन्छाल को मिताल में रहना पड़ा। दक्के बाद वे पन्ना बने घारे घोर बाना मुखान राम ने इन्हें वही सावचानी से उन्हें सैनिक सिता दी। घरने पिता का बीत खुनसान को पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुया या। घपने बीनन में उन्होंने पिता के सक्स्मों को पूर्ण किया। एक्ना राज्य खुन-सान को पाइर कम्म हुया। पाइस खुन-

वेहुणी के विहासन पर धौरनवेन मैठ पुत्रा था। उसके सन्याय का दौर सारे वेश को सातकित कर रहा था। सनसाल की सनस्था उस समय सनयन १३-१४ वर्ष की थी। विन्य्यवातिनी देवी के प्रदिर से मेला या, जारों और जहल पहल थी। हुए-दूर से लोक भववती के दर्यंत करने धा रहे थे। महार क खुतानराथ मुख्ये सरवारों के संप्य वार्तालाथ करने ने लये थे। मुद्राम क्षत्रवाज ने खुते उतारे, हाज पैर कोये और एक डिब्या नेकर देवी की पूजा करने के लिए पुण्य चुनने ने बाटिका से पहुचे। उनने बाख उत्ती धवस्था के दूखरे राजपूत्र वासक मों थे। पुण्य चुनते हुए के हुछ दूर निकल नवे। दतने ये कुछ मुख्यमान सैनिक नहां थोडो पर चडे हुए धाये। पाछ धाकर के थोड से उतर पड़ और पूछले जमें किन्यवाधिनी देशों का सीर पूछले चने किन्यवाधिनी देशों का सीर पूछले चने किन्यवाधिनी देशों का

खत्रसाम ने पूछा क्यो तुम्हें भी क्या देवी की पूजा करनी है ?

मुससमान सरवार ने कहा---'खि ।

हम तो मन्दिर को तोडने सार है। खनराल न कुलो की डिलिया दूसरे बालक को पकड़ोंगी सौर गर्ज उठ मुह समाल कर बोल। किर एसी बान कही तो जीम लीच नृगा।

खरबार हवा धीर कोशा — तू नका बबा कर सकत है। तेरी देवी भी । नै नेकिन केवारे का बावस पूरा नहीं हुमा। खत्रवाल की तल कार उसकी छाती के होकर पीछ नक निकल गई। एक युद्ध खिड गया उस पुग्व पिका मे। जिल बालको के गास तलवार मही घी वे सक-वार केते वीद पड़।

मन्दिर में इस युद्ध का समाचार पहुना। राजपूती ने कवन पहने और तत्वार सम्माली, तिन्तु उन्होंने देशा कि युद्धराज खुत्रसाल क हाम में रहत से भीगी तलवार तथा दूसरे में फूनो की बिला किया तथते चला के सार है है। शक्त युव्धराज के सार से साम की सुव्धराज के साम की सुव्धराज के सुव्ध

व्यासपीठ---

### उपनिषत् कथा माला- ६

## धर्म क्या है ?

#### लेखक-महेन्द्रदेव शास्त्री विद्याभूषण

मजहब, सम्प्रदाय, मल, पन्च, मार्गे इन सभी को लोगों ने अर्थ समग्र निया है किन्तु ये वर्गनही हैं। इन सब की बनाने वाले और चलाने वाले मनुष्य हैं, भौर ये सभी किन्ही विशिष्ट व्यक्तियों की मान्यताची के लाथ दुख जनसमूह द्वारा श्चपनाए गए हैं, भीर प्राय उन सभी के पहले उन-उन सम्प्रदायों के संवासकों के नाम जुडे हुए हैं। जैसे कबीर पन्थी, दादू पन्बी, नानक पन्बी, बैध्यब सम्प्रदाय, रामानुज सम्प्रदाय, बल्मभ सम्प्रदाय जैनमत, बौद्ध मत, राषा स्वामी, मुहम्मदी मजहब, ईसाई मजहच, धानन्य मार्गी भादि । वर्म तो वह है जिसकी भावश्य-कता समान रूप से समस्त मानव बाति को है। इसीलिए सबसे अच्छा और बास्तविक धर्मका सक्षणः।

"वतोऽम्यूदयनिश्चेवससिद्धि स वर्मः।"

ऐसा कहा है। घर्यात् जिससे किसी श्वास तक्के का नहीं घपितु समस्त मानव चाति का सम्युदय हो, उन्नति हो तथा जिसके द्वारा सारी मनुष्य जानि के दुःश्रों की ब्रस्थम्त निवृत्ति हो जावे, यांनी मुक्ति (मोक्ष) हो जावे वही धर्म है। इन नीनो बातों की चाह सुध्टि के समस्त मानव समाजको बनीर््ती है वदि इस धर्म के लक्षण को सभी समक ले और मान लें तो बसार के सारे भगडे ही दूर हो बावें भीर धर्म ही ऋगड़े कराता है, यह आवना मनुष्यों के हृदय से निकल जात्र। वास्तव में धर्म तो भगबों को नष्ट करने वाला है। वर्गशब्द का सथ भी 'घ।रणाद् धर्म इत्थाहु 'सारा संमार जिसकी वजह मे कायम रहता है वही धम है। उदाहरण के तीर पर सत्य एक धर्मका शङ्ग है। बिना सत्य के मसार का कोई कार्य सुचार रूप से नहीं चल सकता। सारे राज्य सत्य के सहारे ही चलते हैं, घसत्य भी सत्य का सहारा लेकर चलता है। सत्य वही है जिसको घारमा सस्य समऋता है। केवल वाणी से कहा सत्य सत्य नही माना जा सकता।

दुव मे मिला पानी सत्य रूप का द्याश्रय लंकर के ही दूध की जगह विक **जाता है । मूटा मनुष्य भी सत्य की** इस्म लाकर ही ग्रसत्य को सन्य बनाने की कोशिश करना है। अहाँ व्यक्तियों में से, वातियों में से, देश से भीर राष्ट्र से सत्य चंठ जाता 🖁, वे व्यक्ति, जाति, देश धीर

नष्ट ही हो बाते हैं। इस ही लिए

''नहि सत्यात्परो वर्ग नाऽनुवात्पातक परम्।"

सस्य से बढकर कोई वर्गनहीं ग्रीर मूंठ से वहकर सद्वार में कोई पाप नही है। भूँठ का बाध्य लेकर यद्यपि लोग फलते फूलते नजर धाते हैं, धौरससार ने बडे ठाट-बाट के साथ रहते दिलाई भी वेते हैं, किन्तु वह बहार बोडे समय ही रहती है। मनु कहते हैं-

बबमें जैवते ताबततो भद्राणि पश्यति। तत सपत्नान् जबति समुसस्तु विनश्वति ॥

प्रवर्ग करने वाला बादमी पहले खुब बढता है फिर उस सम्पत्ति से धनेक प्रकार के भोगों को भोगता है। उसके बाद धन की शक्ति से धनने शत्रुकों पर भी विजय बाप्त कर सेता है, किन्तु फिर समूल नष्ट हो जाता है।

ससार में इस प्रकार के बहुत उदा-हरस हैं जिन्होंने फूठ बोलकर, बेईबानी से, बढ़ा वा कनाया, जोगो की मार करके भी धनी बन गये किन्तु फिर वे ससार से ऐसे मिटे कि उन्हें कोई पानी देने वाला भी न रहा, वका के वशा समाप्त हो वये।

> 'धम्यायोगाजित विस दशवर्पाणि तिन्ठति।'

पाप भीर भन्याय से कमाया हुआ वन दस वर्ष ही टिकता है। कुछ इससे ग्राधिक मी टिक जाता हो तो बारवर्ष महीं किल्यु इसका धन्त ने परिशाम कभी ग्रम्हा नही निकलता । यन्त मे तो-

'सस्यमेव जयते नाडन्सम्।'

सत्य की ही जय होती है। इस समय भारतीय प्रजा में बसत्य का बढा बोलवाला है, हजारो व्यक्तियों वे भी बापको कोई कोई ही सत्यवादी नजर द्मायेगा **भूँठ के बाद वेई**मानी का नम्बर मा बाता है। बेईमानी करने के लिए ही भादमी भूँठ का भाश्य लेता है। बाजार मे भ्रापको चीओं मे प्राय मिलावट मिलेगी। स्वारच्य के लिए धस्यन्त हानि-कर वन्तुएँ भी लाख पदार्थों में मिलादी बाती हैं। दूध, बी, तेस बादि गुढ़ मिसने

वडे कठिन हो गये हैं, उसका ही परिशाम यह हुआ है कि लोगों में अनेक प्रकार की बीमारियाँ कूट निकसी हैं और स्पष्ट बीख रही हैं। जीवन जी सोवों के कष्टमय होकर भीववों के सहारे ही वस रहे हैं। यह सारा प्रकाप शसत्य का ही है। महात्मा बाधी ने सस्य का धौर ग्रहिसा का ही सहारा लेकर देख भाजाद कराया । जेनवान् नहावीर तथा भववान् बुद्ध ने भी बहिता को ही बपनाकर सोवों को धाइसक वृत्तियों से असने का उपवेश दिया और 'बहिसा परमो वर्म ' के हारा महिंसा को परजवर्ग बताया जो शब्दाङ्ग योव के प्रयम शङ्क यम का प्रथम सम्बद्धी है ।

'ब्राइसा सत्वास्तेय-बहावयपिरिप्रहा यमा ।'

बास्तव में जिससे घपना तथा दूसरों का कल्याण हो वही धर्म है और वर्गदर चलनाही कल्याच का नार्व है।

ब्रह्मचर्य

इसके महत्त्व को लोगों ने विस्कृत ही भूला दिवा है। ईश्वर के प्रतिरिक्त बह्य सन्द का सर्व वेद भी है और वेदाउच्य-यन के लिए बत को भी बहु कहा है। "ब्रह्म वेदस्तदध्ययनार्षं बतमपि ब्रह्मा" उसका पूर्ण रूप से पालन करना ही बहा-चर्य है। वास्तव में ब्रह्मचर्य से मनुष्य की महाशक्ति प्राप्त होती है। बरीर, मन, बुद्धि तथा बास्मा सभी निर्मेस तथा बस्यन्त शक्ति सम्पन्न हो बाते हैं।

> "ब्ह्यचर्येच सपसा देवा मृत्युश्याच्नतः।"

बहावर्व के प्रताप से ही देवों ने मृत्यु **पर विजय प्राप्त की । समस्त व्यसन ब्रह्म वर्ष** के चोर विरोधी हैं अस बहुत वारी को व्यसनों से दूर हो रहना पहता है। यहविका---धर्यात् स्कूलों मे, काले जों में सब्के सब्-कियों का एक काथ पढना धत्यन्त हानिकर है। सडके सडकियों के पार-स्परिक सपर्कते सङ्ख्याचर्य कत का पालन कभी नहीं हो सकता। पारशस्य शिक्षा प्रतासी को अपनाकर हमारा देश उसकी ही नवल कर रहा है, विश्व सबके सड़-कियो के कीवन नष्ट हो रहे हैं। यौबना-बरबा मे भनोवेष को सम्हानमा अस्यन्त कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति वें स्नाव कूस को साथ रसक्र हम आहें कि सार

न वर्ग तो यह कैसे संभव है । धतः बद्धावर्य का पूर्णक्येस सरक्षण ही कल्याण का मार्थ है। निर्व्यसन बनाने के लिए प्रध्य-यग 🗣 साथ आव छात्राची की पृथक् पुत्रक् स्कूल तथा कालेओं के आत्रावासी मे ही बड़े कड़े निवन्त्रस्य के साथ बस्तियों से दूर एकान्त शान्त स्वानों में रखना ही परमावदयक है। पवनंत्रेष्ट को भी शारम्भ से बन्त तक समस्त बान तथा आपत्राचों को नि सुरूक शिक्षा देने का पूर्ण प्रबन्ध करना चाहिए । इस स्थिति मे स्नातक होने वाले समस्त छात्र आकार्मी को १ वर्ष के लिए विना वेतन के काले जॉ वें अध्यापन कराने का नियम भी होना बाहिए। इससे छात्र सात्राधों को टेनिन की शिक्षा मिल जायेगी तथा स्कूलों, कानेको के सर्वभी घट जाएगे। अब अन्होने मुप्त शिक्षा प्राप्त की है. तो चनको साचारसा सा स्वाग तो करना ही चाहिए। केवल भोजन बस्त्रों के सीर सामारण निवास स्वान के ही वे समि-कारी हों वही कस्याच का मार्ग है।

जीवन मनुष्य को उत्तरि करने के किए निका है। पशुपक्षियों की भौति बहु केवल साम पान कर जीवन की समाप्त करने वासा प्राखी नहीं है। **अभ्या** जीवन सारचर्याद्वाराही बनाया जा सकता है। प्रथम तो जीवन के प्रत्येक प्रकार में बादवी का होना जरू री है। हमारा जान पान और निवास तथा रहन सहन सभी सादवी के साथ- पाँव बता से मरे होने चाहिए, जिसे सावा जीवन एक्य विकार के नाम से पुकारा जाता है। इस समय हमारे देश में इन सभी बातों का सर्वेचा प्रमाव है, और हमने केवल धाड-म्बरों को सपना किया है। हम सब्हे, मॉस, मख्यियां शीक से सेवन करते हैं किन्तु हम बह समझने की कोशिश ही नहीं करते कि ये चीजें कितनी मन्त्री हैं, तका शरीर मन, बुढि, बास्मा पर इनके सेवन चे क्या प्रभाव पड़ते हैं। किन निरपराध बीवों को सताकर धीर मारकर हम इन्हें प्राप्त करते हैं, यदि हमारे साथ भी कोई ऐवा ही व्यवहार करे तो हमें कैंवा महसूख होना। विवारे पशुपक्षी वे जुवान हैं, बौर कमकोर है, इसीलिए मनुष्य अपनी दुर्वृद्धि का प्रयोग कर सारि धीर बन्यूकों से इनके प्राणु नेता है। परमात्मा की बी हुई अञ्झी बुढि को भी, हम शराय पीकर भीर धनेक प्रकार के नही, जैसे सुरूफा, भाग चरस, ग्रापीय-- चण्यू सदक, कोकीन शादिको सपना कर धौर इनके व्यसन में लिप्त होकर नष्ट कर डामते हैं। श्चिमरेट, बीड़ी, तस्वाकू, हुक्का सादि सी फिर बीवन में इस्तेमास की जाने वाली सावारण जीखें हैं। इस ही लिए मनुष्य बुद्धि कोकर ऊँची शहों को समझने की क्षमता को बैठा है। पशु हमारी धीर देख की सम्पत्ति हैं। उनः गिका करने से बूध

बी मन्द्रन मनाई प्राटि पौष्टिक पदार्थ <sup>1</sup> जो हमारे चीवन के लिए परम उपयोगी हैं, द्यासानी से लिस सकते हैं। देश की साद्य समस्या मी किसी हुए तक बासानी से सर्माप्त हो सकती है, रिन्तू पशुधो से इन यदाओं को न सेकर हम उनके मास को ही प्रविक पसन्व करत हैं। जिससे देश श्रमेनि को प्राप्त हो गया है और इनकी हिसाका पाप हम अपने उत्पर लेकर बनेक प्रकार के रोगो और कटने में उसम्ब वए हैं। इसिक्ए कस्यास का बार्च यही है कि हम हिसा के कशक से वच-कर धपने कल्यास की भावना को आयुक्त करें। ऋषि दयानन्य ने इन समस्त बातों पर बहराई से प्रकाश टामा है। वे भारत मे सबसे बडे सुबारक हुए हैं। कल्यान , को चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को छनका विज्ञा समर प्रन्य 'सत्यायं प्रकाश' सवस्य पत्रमा चाहिए।

कस्याच मार्गका पविक बनने से पहले हमे यह जानना बावस्यक है कि किन साधनों से इस कत्यान ने मार्च पर चल सकते हैं। कल्याण का मार्ग बढा <पवित्र है और किसी भी पवित्र वस्तु की ब्राप्ति के लिए पवित्र नाघनों की ही साव-श्यकता है। बगवित्र सावनो से हम किसी भी पवित्र साध्य को प्राप्त नहीं कर शकते। यदि हमने जिना पूरी जानकारी श्राविक किये सकस्याए। ने मार्गको ही कल्याच का मार्व समम्कर प्रपता लिया शो हुमारा धनिष्ट ही होया धौर अयानक बुख भी उठाने होने। विद्वान् शस्त्रत कहते हैं कि घर्म ही सुको का मूल है। ऋषि चाणस्य प्रपने कौटिनीय प्रवंशास्त्र ने सब से पहला सूत्र शिखत हैं--- शुबस्य-मूल वर्ग किन्तु इससे पहले तो हमे यह जानना है कि इस किस साथन से थर्म करें? बीर सर्वप्रथम उस साधन को ही ऐसा पवित्र बनावे विश्वते जनके द्वारा हम सर्वेद सुभ कार्य ही करत रहें। सद से पहला मुख्य साथन हमारा शरीर ही है। 'सरीरमार्थं सलु वर्मसायनम्। इसके -द्वारा ही पवित्र चार्मिक कार्य करते हुए भीवन में कल्यास होता है। बास्तव मे तो शरीर एक डाँचा है और जड है, यह -स्थम अब होने के कारण कुछ नहीं कर सकता। इसके प्रस्वर इन्द्रियों का भीर श्चन्त करण का निवास है, ये सभी जब हैं। इसके अतिरिक्त खरीर ने एक चेतन बात्मा त्री है जिसके ब्रधीन ये सारे यन्त्र 🖁 धौर कर्म फली के उपभोग तथा कर्म करने के सिए ही बात्मा को दिए गए हैं। बे सभी वारीर द्वारा ही वाक्ति सम्पन्न होते हैं वदि शरीर मे वामस पदार्थों का प्रवेश होना तो हमारी ये सारी शक्तियाँ तामसी हो बावेंगी । सास्त्रिक पदाबों के श्वेवन से सास्त्रिक बनेंगी । तभी हम निर्दोव सास्त्रिक कार्यत्री कर सकेंगे। बहुत से विद्वानों ने सरीर की बड़ी निन्दा की है और इसको स्थान्य बसाया है। उनका कश्चा है--

पस्य स्प्य स्नाबुद्धतः मामशोणतसेपनम् चर्मावनद्व दुर्गेन्धिपूर्णं मुत्रपूरीवयो । जरानो इसम विष्य

रोगायतनमातुरम र बस्दलमनित्य व

भृतावासमिम त्यजेत्॥

मर्थात इस शरीर मे हडिडवो का

टाचा बना हुआ है, जैसे मकान बनाने के लिए पहन सोहे के गढेरो का दांचा खबा करना पडता है। फिर यह शरीर नसो से जकडा हवा है जैसे बोहे के दांचे को पहले-पनल तारों से बाध विया जाता है। फिर मास और खुन से इस पर लिप्पी की गई है, जैसे मकान पर सीमेट, रेता धौर सतने के पानी से की बाती है। ऊपर से यह चाम से उका हमा है। जैसे नकान को ह्याइट वाश और रग रोगन से सवा दिया जाता है। पेशाब भीर पालाने से परिपूर्ण है। बुढापा भीर शोक इसको समे हुए हैं। रोगो का यह बन्दिर है मूच धौर प्यास से सदा व्यादुल रहता है । जैसे रजस्वला स्त्री रको वर्ग से अपवित्र रहती है, उस ही बकार बह भी दूचित रजो गुणी पदाची से भराहृधाहै। पृथ्वी, वस, धन्ति वायु, बाकाश इन पाँच बहासूती से यह बना है और यह अनित्य है। इसन्निए ऐसे गन्दे बारीर को खोंड देना चाहिए। किन्तु हुन कहते हैं कि को स्थिति शरीर के ऊपर बताई है, वह ठीक है । किन्तु इस ही शीर क्यी सोल में हवारी अमूल्यनिकि इन्द्रियां, बन बढि घौर बारमा भी तो स्थित है जिनकी यह रक्षाकरता है। जैसे साद बढा शानित्र हुगन्धयुक्त होता है क्लियु बूर्शों से उसके प्रयोग के बाद, कितने कीमल सुगान्धत पुष्य गुलाब चम्पा बमेली स्वका रात की रानी द्यादि विकसित हो जात हैं। धनेक वृक्षों के मुदर स्वादिष्ठ ०ल देने दान पत्न भी पैदा होत हैं। रज एव वीय भी एक प्रकार का गरीर का मन ही तो है धीर धप-विव भी है किन्तुइस स ही सासारिक समस्त प्राणियों के सुन्दर और सुन्दरतम शरीरों की भी रचना हुई है। इसकिए शरीर को निन्दा के योग्य नहीं सममना चाहिए, प्रपितु यह कोश्विश करेंगी चाहिए कि हमारा शरीर पूर्व युक्तोपयोग तथा धानन्द प्राप्ति (मोक्ष) का भी साधन बने । इसकी धावक से अविक पवित्र रसकर इसके द्वारा ही हम बाहर के बन्त्र (बाह्य करल्) भीर भन्दर के बन्त्र (भन्त करता) आदि को भी निर्मंत तथा निर्धेव बनावें। हमारे शरीर में मन, प्रास्त और वासी सक्तिया समूल्य हैं इनके बण्डि भीर दोष रहित किये बिना हम कभी **अच्छे कार्य नहीं कर सकते औ**र ससार मे सुब्ती जीवन भी नहीं बिता सकते। मन ती बारी बुराहबी बीर भसाहबों की जब है, बर्बात् मन की पवित्रता स ही सकार मे पविता कार्य होते 🕻, उसके अपवित्र होने से ससार के समस्त कार्य प्रपावत्र हो बाते हैं क्योंकि "मन एव मनुष्यासी

बन्धन में डालने वाला धीर घारमा की मुक्ति दिलाने बासा मन ही तो है। घर सोचना यह है कि मन जैसा शक्ति सपन्न इथ्य धपवित्र भीर पवित्र कैसे हो जाता है ? इसका उत्तर यह है कि हमारा मन प्राकृतिक पहाचीं से ही बना है। उपनिषदी मे इसका वर्णन इस प्रकार है - बन्नम-शित त्रेचा विचीयते, शस्य य स्वविड्डो बातुस्तरपुरीव भवति यो मध्यमस्तन्मांस योऽणिष्ठस्तम्मन ।

गर्थात् हम जो कुछ काते हैं उसके सब से मोटा भाग विष्ठा के रूप में शरीर के बाहर निकल जाता है, जो मध्यम भाग है उसमे मांस बन जाता है बौर जो बन्न का धत्यन्त सूक्ष्म भाव है उससे मन बनता है। इस ही लिए लोकोक्ति है कि जैसा साम्रोगे मन्त्र, वैसा बनेगा नव । इससे बह बात स्पष्ट हो गई कि हम तामसी पदायाँ का सेवन करेंगे तो हमारा मन भी तामधी ही होगा जिसके द्वारा हम कभी शुभ कार्य नहीं कर सकते, इसलिए जो कुछ हम साते हैं उस पर हम की बड़ा ध्यान रसना चाहिए। साई वाने नासी चीओ मे तीन बातें भावस्वक हैं ---पहली बात हमारा खाद्य प्रत्यन्त पवित्र हो, यानी वह पवित्र बस्तुओं से ही बना हो। दूसरी बात वह बलिष्ठ हो यानी उसमे ताकत देने की शक्ति हो। तीसरी बात यह है कि हमारे बाने की सभी वस्तुएँ सास्विक हो। सास्विक वस्तुएँ वे कहमाती हैं जिनके इस्तेमास के बाद बुद्धि में किमी प्रकार का विकार नही पैदा होता। बुद्धि इमेशा सही सोचेगी आपको कभी स्वत रास्त प नहीं जाने देगी भीर उस पवित्र बुद्धि से कार्य करते हुए भाष परमात्मा को भी प्राप्त कर लेंचे। मनुष्य जब इन बातों का विवेक **छोड दे**ता है ता वह भा<sup>त्र</sup>, मास मदली नके की जीजें साने समता है, उसे यह ज्ञाम ही नहीं होता कि इनमें कितनी गन्दनी गरी हुई है, और य वस्तुएँ हमारे शारीर में कैने-कैसे विकार पैदा कर देती हैं, पहले तो हमारे शरीर पर ही इनका बडा बुरा बसर पकता है, बनेक प्रकार के बुरे से बुरे रोग इन धपवित्र वस्तुधी के लाने से हो जाने हैं। बाजकस हजारों ब्रादमी व्वेत कृष्ठ से पीडित चितकवरे नकर ग्राते हैं शलाध वस्त्रग्रो के सेवन से ही भिन्न जिन्न प्रकार की बीमारियाँ भी मारत ने फैल गई है बाबु भी बनेक रोगे के कारण घट जाती हैं और कड सब ही व्यतीन होती है। भारत में पिछले ३० वर्षी मे स स अक्षण का वहा प्रचार हुआ है चुकि ससार के धन्य देशों में मासा का बढा प्रचार है इसनिए भारत भी उन देशो की ही नकस कर रहा है जो भारतीय सस्कृति भीर सम्मता के प्रतिकृत है। हमारे ऋवियो की भीर मूनियों की बायू बढी सम्बी होसी बी घीर वे नीरोन भी रहते ये भीर पवित्र वृद्धि से युक्त भी कारल बन्धनोक्षयो ।" प्रचात बरीरो को होते थे स्थोकि रूप, यस फलो का वे

ग्राचिक सेवन करत ये। ग्राचम में हुआरों की सरुवा में नौएँ भी रहती वी विनका धमृत समान पवित्र दूव भी प्राप्त होता था। उस ही दूव से मक्कन मलाई, दही तवा बृत भी ब्राप्त होते वे । ऐसी पवित्र वस्तुओं के सेवन करते हुए रोग और बुद्धि एव बन के विकार पैदा ही नहीं हो सकते थे । इसलिए स'स्विक भोजन के द्वारा सात्त्रिक मन को बनाना ही कल्यास का मार्ग है।

दूसरा तम्बर हमारी प्राण शक्तिका तीन भाग हो बाते हैं। लाये हुए पदार्थों का है। इस शक्ति से ही हमारा शरीर चलता है। जीवन शक्ति को विकसित करने के लिए सब से बड़ी महत्ता प्राणी को ही है। पीने की जितमी चीजे हम पीत हैं उनमे चाह अल हो दूध हो फ्लॉ का रस हो, शबंत हो समबा कोई भी पिये जाने वाली चीज हो उसके भी ३ माय हो जाते हैं। सब से मोटा चाग मूत्र रूप मे शरीर से बाहर निकल जाता है सब्धम भाग से ख्न बन जाता है और सब से सूक्ष्म सर्वात् सुदमतम हिस्से से प्राण शक्ति बन बाती है। इसलिए हम यदि पूर्ण नीरोग रहना चाहते हैं अपनी आयु बढाना चाहते हैं भीर भपने भन्त करण की वृत्तियों को पवित्र रक्षकर पवित्र कार्य करना चाहते हैं तो हमें पिये जाने वाले पदाकों पर काफी ध्यान देना होया । हम जैसा भी जल हो, शुद्ध हो या प्रसुद्ध एक दूसरे का म् ठा तक पीने मे परहेज नहीं करते । माता पिता घपने बच्चो को घपना मुठा जल विलाते हैं उनका भूठाजल स्वय भी पीते हैं वे नहीं समभते हैं कि इससे जल के उन्दरप्रविष्ट अनेक प्रकार के कीटाए भी दूसरों के सब्छे वारीर में जाकर धनेक प्रकार के रोग और विकास पैदा वर देने हैं। यनु भी ने कहा है---नोज्डिय्ट कस्वचित दशात्, भारत मे सूक का भी बडा प्रयोग होता है जो ब्रस्य-त हानि-कारक है। जल की पविव्रता नव्ट होने पर प्राण शक्ति भी कमजोर सीर सप्रवित्र हो जाती है। इयसिए घत्यन्त सावद्यान रहते की जरूरत है। हमारे देश मे सराब का इस समय वडा प्रवार है। इस पवित्र देश में कभी लोग महिरा पान से वडी भूगा करते ये किन्तु इस समय समस्त राज्य सरकार गराव के वड से बडे उके देना हैं भीर देश से अधिक से अधिक रपमा बटोरन की कोविश करती है किन्तु देश के शासको का जरा भी ब्यान नहीं होता कि इसस लोगों के शरीर मन बुद्धि पर कितना बुरा प्रभाव पडता है। यही दशा रही तो भागत कवाली का तथा दुक्षियो नादेश बन कर रहुआ थगा। शास्त्रियों में कई गुरा किस को प्राप्त नहीं हो सकते। शरावे सारी सम लिकी शराव में ही पूक देता है धौर उसकी स्त्री भीर सम्तानें वह दुखो भीर निर्ध-नता का जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो बाती है।

(शेव पष्ठ ६ पर)

**शायसमाज के सी वर्ष तक कार्य** करने पर भी देख के विभिन्न भागों में सभी सन्धकार का पूरा साम्राज्य है। इस का बहुसास मुक्ते तब हुया जब मध्यप्रदेश के एक प्राम वारीयढ में जाने का अवसर प्राप्त हवा? बारीगढ जान का सीभाग्य, कैसे मिला यह भी एक दिलचम्प घटना है। मैं बायममाज पन्धरी (हमीरपुर) क उत्सव पर गया हुन्ना था। एक प्रात को उठते ही एक सन्यासी ने सौ काये का नोट मेरे सम्मुख बढाया। पूछने पर पता चला कि युवा सन्यासी शिवो हम् का उपासक था। अभी-ग्रभी प्रायसमाज के विचारों से परिचित हुमाहै भीर काफी हद तक प्रभावित हुआ है। उसकी इच्छा थी कि उसके बाधमस्थल बारीगढ मे बार्यसमाज की विचारधारा एक यज्ञ के माध्यम से दी जाए। इसके सिए उस ने मुक्ते खप्युक्त समका। मैं असमजस मे पढ गया सुना वापिसी दबाई तवाबुटे साधुका क्या विश्वाध एकदम इन्कारकर दिया और कहा कि इतनी दूर मैं न बासकूंगा। साबु ने फिर भी साहस न खोडा भीर एक भाग मजनोपदेशक के द्वारा मुक्ते प्रेरित किया। श्रपने साथीकी बात मुक्ते माननी पडी धौर ४ जून को मैं कानपुर महोवा धौर फिर बारीगढ के ऊबढ प्राम में जा पहुंचा। बैठ सकता, और वह उद्दृष्ट समुदाय यज्ञ षव सुना यह माल्हा भीर ऊदल की विक्रम स्थली है तो मुभ्ने यह ग्राम प्यारा लगने सवा रिप्र पानहर का प्रसर सूर्य घूली-घूसरित नार्ग और यज्ञ-स्थल का अपरि-चिंव हदव में क्षीमं उत्पन्न करनै रहें। सोचतारहामेरा ऋषि भीक्या इस छे ग्राधिक रेगिस्तानो ग्रीर बीहड बनो मैं घूमा होगा घौरफिर उसका ने कोई एक भी साबी नहीं था, हाँ विरोधी पन पग पर थे। उस साहस के पुतल ने किस वैर्य से पग बढाया होगा ? मन ही मन मे अपूर्विके साहस को नमस्कार कहता, यज्ञ स्थली पर पहुन ही गया।

## कोई चिराग जलाओ बहत अन्धेरा है

उत्तमचन्द्र शरर

एक वीरान सी बज्ञभाषा, स्कूल के प्रावस में मूक भाव से अनता की उदासी नताका परिचय देरही बा। मुक्ते तलाश बी क यहाँ कोई परिश्वित व्यक्ति मिले, वह साधुमी तो नहीं या। कुछ कास पश्चात् कुवर महीपाल (भवनोपदशक) क दर्शन हुए मन शान्त हुआ कि कोई परिचित दो मिला । इतने मे एक मस्त सन्त स्वामी सत्यानन्द की बो३म् सम् की व्वनि सुनाइ दी बस फिर तो मैं अपने साथियों में ही

पदा बला ग्राम वे ठाकुरी का भातक फैसाहुमाहै। हरिजनो को यज्ञ करने, यज्ञापवीत लेने का अधिकार तो क्या, इज्हा भी दण्डनीय है, ठाकुर साहब के सम्मुख हरिजन बन्धु चारपाई पर नही का विरोध कर रहा है। हरिजन बन्धु यदि यज्ञ में सम्मिलित हुए तो न केवल ने पीद दिए बाएगे, धपित यत करने बाले भी न बच सकेंगे, भीर इस बिल के लिए हम ती बाही गये थे।

राजी का प्रवार कार्य प्रारम्म हुंचा, स्वा० सत्यानन्द जीक भाषांगु मे एक उद्दण्ड ब्यक्ति शराद के नक्षे में धूत्त लगा यनापशनाप बकत मैं उसे समझाने को उठा तो कुछ सावियों ने रोका, इधर स्वामी जी ने हवा का दल देखकर 'राम-धून प्रारम्भ कर दी। (उन्हेसह बन्दाज भी बाता था।) सभा जान्त हो गई, भाषरा भी

रामकी यहिमापर हो गया और इस प्रकार स्वामी जी विरोक्तान्त का समन कर पाये। अञ्चन ठा० बहीपाल के थे, वे तो ठाकूर वे । यत क्षत्रियोचित खब्दावली का प्रयोग करते हुए, ठाकुर बन्धुको के स्वाभिमान को समकारते रहे। जातीय बन्बुधो के कारण, उन्हें किसी ने नही रोका। यन मेरी बारी बी में हिन्दुओं की दुरबस्था से दुश्री तो या ही, जाति के पतन के कारणी पर प्रकाश डालने लखा। बापस के मतभेव, विरोषियों के वहबन्त्रो पर बोला विससे जनता मेरे समीप 🚅 सके। सभा समाप्त हुई, हम मोबन को बले, हरिजन बन्धु क्या और कैसे भोजन करते हैं यह उस रात्री को धनुमन हुआ। काश्च! हरिजनों के उद्धार तथा बीरों के ठेकेदार कभी इसका धनुभव कर पाते।

दूसरे दिन प्रात यज्ञ हुआ, सब नर-नारियों को बाहति 🏞 का अधिकार दे दिया गदा । कुछ बज्ञोपनीत भी दिये गये, भौर हमने सोचा कि मैदान मार सिया. परन्तु यह हमारी कोरी कल्पना थी। दोपहर को बात हुमा कि हरियनों को विये यज्ञीयवीत ठाकुरी ने लोड दिय हैं कूछ की पिटाई भी हुई है, भीर कम के वज्ञ को राक्षसवग'विष्व# करक रहेगा। राक्षीका प्रचार काम शान्ति से चन गया क्योंकि हम श्री कृष्ण जी की महिमा गाते रहे। बीच बीच में दयानन्द भीर उस की विवारणारा का पूट भी दे जाते, परम्तु इस श्रम्याय से कि भोड़ा सवार से विदय न बाए।

धगले दिन के यज्ञ में केवल संख्यात. को डी बाहरित का ब्रधिकार दिया नया। मैंने कहा भी कि ऐसा क्यों ? परन्तू स्वामी जी ने अनिष्ट कस्पना के भव से मुफ्ते चुफ कस दिया। यज्ञ हुमारी नीति प्रथवा मीक्ता से निर्विष्न समाप्त हुखा। रात्री के प्रवचन भी हुए। प्राच प्रक्तिम रात्री बी मत धार्यसमाज की विचारकारा का खुलकर प्रचार हुआ। खीमान्य से बाम के कमेटी के वैसरमैन प्राय विचारों के निकले उन के धानमन से उग्रवादी कुछ दक गये। पूर्णाहुति क दिन यजमान ने (जो ठाकूर या) बाबह किया कि किसी घन्य से बाहुति न दिमाई जाए। हम ने उसे तसल्ली वी उस यज्ञ सम्यन्त करने के पश्चात् उस के स्थान पर वैयरमैन साहब की विठा कर सारे ब्रामवासियों से ब्राहुति दिसाई गई। इस कशमकश मे बा॰स॰ सुमेरपुर के उत्साही कार्यकर्ता पूरा साथ दे पाये, श्री सम्माधीन तो यज्ञकार्य के प्रात्त ही वे। यज्ञ समाप्त हुमा भीर हम वापस भौटे। महोबामे पता चला कि हमारे धाने के पश्चात् वह सामु पिटाई के बद वे ग्राम वे माग गया है। भण्डारा नहीं होने विसासका। याना सर्वेचा मौन भाव से दर्शक रहा और वो खायुओं की पिटाई

पाठक सनुसान समायें कि साम श्री कितना अन्यकार है और इम परिस्थि-वियो ने हिन्दू वावि के जीने के किलते दिन क्षेत्र हैं ? बन्धवाद है ऋषि वसानन्द का जिसके सद्ग्रयास ते आर्यसमाज क्यी वीपक इस प्रत्यकार को दूर करने का प्रयास कर रहा है परन्त क्या यह छोड़रू साबीपक इतने वड अन्धकार को चीर सकेगा? यह प्रश्न है जो हर ऋषि प्रकार को विक्कत कर देता है।

## लाला रामगोपाल गालवाले श्वभिनन्दन समारोइ समिति

मर्हीप दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा के यशस्त्री प्रधान श्रद्धेय श्री रामगोपाल शासवाल का सार्वजनिक प्रमिनन्दन करने लबा इस धवसर पर उन्हे ११ लाख ६० की सम्मान राशि मेंट करने सम्बन्धी कार्यक्रम की तैयारी निरन्तर प्रवति पर है। इस विषय में मार्थ प्रतिनिधि समाम्रो के श्रविकारियों के नाम भनेक पत्र भेजे चाच्के हैं। विशेष कर यद्मप्रैल य् समा ५ जुन ८५ को भेजे गये परिपत्रों में हमने ग्रभिनन्दन समिति के निश्वयो एव सम्मान राशि हेत् धन सम्रह् से नवधित विशेष जानकारी से बापको धवनत किया जा। यह बात बुहराने की भाववयकता नहीं कि सम्मान राशि के सहय को पूरा करने वे धार्य प्रतिनिधि सभाधों से विशेष सहयोग

सस्याची के सचालको एव महानुभावो का भी सहयोग प्राप्त करना चाहिए जिनकी माननीय साला जी के प्रति दा है भीर जो इनके प्रिय कार्यों के समर्थक एव सह-योगी रह है। उपरोक्त दूसरे परिषत्र का प्रकाशन सार्वदेशिक पत्र के १ जून के श्रक मे मुख पृथ्ठ पर शी हुआ। है। अन आ पक्षे प्राचना है कि शीझातिशीझ अपनी प्रति-निविश्वमा में निश्वयं कर सम्मान राशि के लिए बन सम्रह करने का कार्य सारम्ब करले की कृपा करें।

इस प्रभिनन्दन समारोह की तैयारी के लिए प्रमुख सार्थ बनो का एक ध सदस्वीय कार्यकारी दल पिश्वले ६ मास है कार्यं कर रहा है। इस कार्यकारी वस के सवस्य नग शव तक शनेक बार विस्थी वे

सबह उपसमिति का भी गठन किया गया है जिसके संगोजक गामनीय श्री सोमनाय मरबाह है। साथ ही एक परामर्शदात्री एव कायकम उपसमिति का भी निर्माश हो रहा है जिसके सयोजक वाननीय भी रामधन्द्रराव बन्दे मातरम् हैं। समारोह के जिए मुख्य समिति धर्षात् समिनन्दन समिति का बठन किया जा रहा है, जिसमें सार्वदेशिक सभा के अधिकारी नता समस्त बार्व प्रतिनिधि समायो के प्रवान, देश विवेश के प्रमुख आर्थ जन एव अदेव सामा भी के कार्यों से संबंधित शनेक वध्य मान्य व्यक्ति होने । इस समिनन्दन समिति की सदस्यता स्वीकार करने के सम्बन्ध में पत व्यवहार किया वा रहा

बाप से साम्रह प्रार्थमा है कि प्रक्रि-नन्दन समिति की स्वस्थता के जिए वार्ष बक्ते प्राप्त हे हुन अहानुवानों हे स्वी-

नाम के साथ ही उनका पूरा पता और जिस प्रमुख स स्वा से उनका मुख्य क्या से सम्बन्ध रहा है एस सस्था का नाम श्री क्रियाने की कृपा करें। इस स्राधिनन्दन समिति का बठन राष्ट्रीय स्तर पर किया का रहा है। यत देश के सभी प्रान्तों एव श्रदेव सामा जी के प्रिय सामाजिक हो मी का प्रतिनिधित्व इस समिति में हो सके, इसका ध्यान रसना उचित होगा।

भावर सहित ।

डा॰ धानस्वप्रकास सबोजक एव मनी वशिनन्दन समिक्ति



:यानन्द का ब्रिय वेद मस (पच्ड २ का शेष)

श्रहींच दशान द ने इसी हितभाव से ब्रवने ग्रामी में बसस्य का रहसा से खण्डन (क्रथा भीर सत्य का मण्डन । **श**न्धकार धौर प्रकाश एक साथ नही रह सकते। ठीक ऐसे ही ग्रपिकता से पवित्रता नहीं क्षप्रसक्ती जैसे मूलताधीर बुढिमत्ता बाद्यजान भीर ज्ञान यूगपत् नही रह सकत वैसे ही दुरित स्वीर भद्र भी एक श्राचनही पनवसकते। भन्की स्थापना के जिए दरित का अपहार धनिवास है।

ससार में हम देखते है कि गतिशील यद व मे निरतर बाहर का प्रभाव पडता है उससे वचाव व सुरक्षा के लिए घोर श्रम करना होता है। पवित्रता ही जीवन 🐐 भौर भ्रपवित्रताही मृत्यु है। इस सिद्धात को इमे भगीकार करना ही होगा क्यों कि यह बदका द्वादेग है। यह वह प्राकृतिक ज्ञान भयवा स्व भाविक नियम है जिसकी अवन्तिना में सिद्धि समय नहीं

जब मनुष्य किसी भी मात्र को विचार को नियम यासिखात को जीवन मे धारण कर नेता है लभी वह मन्त्र सिख होताहै न्साका नाम है सिखि। मच के सञ्चार झाचरला करने से मत्र सिद्धि होती है।

द्याज मनुष्य के मस्ति कमे थम न म से एक ऐसी फ्रांत घरणा उभरती है कि इस कोई सलौकिक व तुहै। सासा रिक अधवहारों में सम की साबस्यकता मुद्धी। अब कि सत्य तो यह है कि हमारे **अ**किक यवहारों में हमारा सहायता

करने बाता नियम ही बम है स्मरग् रिलये कि—भौतिक जनत भीर बाध्यात्मिक जगत दो मिल्न बाराए नहीं हैं। भौतिक जीवन नी घाटवारिमक जीवन की बारनिक सोपान है। भौतिक क्वाच ग्राध्यात्मिक सुख प्राप्ति का माय प्रशास्त कारते हैं।

बाब तक इस सत्य को हम बान नहीं लेंगे तथा तक हम अपने पण को स्वक्ट रूप से समक्त नहीं शर्वीये।

'बेट ज्ञान क्ष्में इसी सत्व माव की द्वेरणा देने हैं। ससार का सारा कम जान क्षेत्रशी सस्य प्राकार पर ही अन नहा है। बहां हम इन नियमी का स्ट्लंबन करते हैं वही हम मार्ग भटक जाते हैं और दुस पाते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र काविस्तार भी मनन्त

बुनिस्तानि परासुव । बद्भद्र तन्न बासुव ॥ की कियान्त्रिति हमें पग पन पर देखने को मिमती है ।

बात उठते ही मल त्याग करने व्याना स्नान दन्त शावन करना इसी **बु**रितानि परासुव के मावेश का पालन है। चाहे दुकान हो या मकान चाहे बायन हो न्याह बाब पहले इसे स्वच्छ किया ही व्यक्ता है। मही बाद दुरितानि परासुव में कही गई है। अब इससे झागे बढिए---स्नार लुहार बढई या जुलाना या किसी भी उद्यागमे सव तपहला क्रिया दूरि बानि परास्व की जती है। साने की तशना लक्षा क्षा छ लना कपास का ष्त्रता क्या है ? पहले वस्त के शय की दूर किया जाता है तभी उसमे भद्रता

ये सार किया कलाप श्रीतिक स्टर पर किए जात हैं। यही काय हमे झाच्या रिमक सत्र वे बामाके स्तर पर करना होता है। प्रथम धारमा की मलीनता को दर कर तब सम भन्ता ग्राएगी। भद्रता का बाधान होना।

एक ही नियम एक ही सिद्धात घर धागन बाजार म चलता है धीर व ही नियम भीर सिद्धा त भाष्या मिक जगत ने वसे ही लागू होने हैं जैसे भौतिक व्यवहार में। केवल स्तरका स्नतर मात्र है।

इस मत्र में एक शद ब्यान देने योग्य है विश्वानि विश्वानि दरितानि परासुव सपूण इरितो का दूर करना। रच भात्र भी दूरित शय न रहने पाए स्मरण रखिए कि इस नियम म जितन प्रतिश्वत का कसर रन्गांशिक उतने ही प्रतिशत का कभी भन्तामे बाजाएगी।

सारा जीवन गणित के बाधार पर चलतः 🧎 इसमे किसीप्रकार का भुविचा घट बन के कल्पना कलानामात्र ही है। महर्षि ने इसीलिए यस सात्र की

सबप्रथम रक्ताहै। यहक्रम सृष्टिका एक मिद्रात रूप ही है।

धाने वेद भाष्य में इसे बार बार लिखने का स्रभिप्राय यही है कि ज्ञान में कहा दोवन झाने पए क्योकि व्यव्हार का मूल बाघर ज्ञान ही तो है। ज्ञान की

धाय है महर्षि दयानाद भौर घाय है बद भान धर घंय हैं प्रभू जिन्होंने

प्रत्येक मनुष्य को इस म त्र को जीवन में चरिताय कर सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए प्रन् क्रुपा करें कि --

हे सक्ति। देव धाप हवारे सपूण दुरिलीं को दूर करने में हमारी सहायता क्लेंबिए और बद्र की बारशा हम में होती रहे ऐसी प्रस्ता व ऐसा सामन्य हमें

भौ३म'विश्वानि देव सवितदु रितानि परासुव । बद्भद्र तन्न बासुव ।

> धर्म क्या है (पुष्ठ ७ का शेष)

मा**स मदि**रा जुशाशीर व्यक्तिचार य चार बड दोव ससार ने बोव माने जाते हैं। आपत में ये कारों ही वृद्धि पर हैं इस क्षिए देश अधामक पतन की तरफ आ रहा है। ऋषि मुलिको ने तथा ऋषि दया नम्द ने इव समस्त बासी पर सत्याय प्रकाश 'ग्राम ने पूज प्रकाश ताला है प्रस्थेक व्यक्ति को बहु संब परता राष्ट्रीय-सगठन म धार्मिक उन्माद बाधा (पष्ठ ४ का शेष

मारकार सब इस फिरकापरस्ती की दन है घामक मताघताने ही इस राष्ट्र के बड बड नेताक्षो की हत्यातक करवा हाली है।

सचमुच यदि देखा जाए तो यहा के लोगस्त्र थवशा भयवश ग्रमवा शक्ति के करण ही समध्यि हुए या एक हुए है होते हैं भीर होत रहेंगे।

य वर्मिक उन्माद की भावन ए ही ब्रह्मनपन या ब्रस्प्रयता को बढावा देती ‡। सदिरो भीर देवालयो पर पृष्प चनाने को मना करती हैं। व्ससे समन्त्र में विघ टन ही पैदा होता है। स्वामी विवेकान द ने कहावा मैं उस घम को घम नही मानताजो भूसे को रोटी नहीं द सकता स्वामी दयानन्द ने भूदी और नगी भारत जनता को देखकर ब्रह्मान द भीर समाधि क विचरछोडसमाजको जगने का जीवन भर प्रयत्न किया सात्र हम रे राष्ट्र का एक जीवाई से भी प्रविक हिस्सा इसी मुख्यागरी नी से तग आसर चम परिवतन का शिकार होता है और जब धम परिवतन हो जाता है तो नेनाओं की ग्राल खुलने लगती है क्यों कि वह गरीब भूला नगाइ सान यह सोचने को मजबूर हाजताहै कि इस घम में क्या रसाहै जो भूखे को रोगी नही देसकता इस लाचारी का लाभ उठात है विदेशा भीर देशी धम के एजेण्ट जो भ रत राप्ट के सगठन को जजर करने में लगे रहते हैं **बत** भूगीर ख (घरत भीर प्राक्तश) के मध्य रहने वाले इस भूसे मानव का समस्याका समाधान राष्ट्र क करा ६ रो विकृति हो व्यवहार की विकृति बन जाती है। को करना ही होगा स यथा समाज का ढावा चरमाराकर र प्टटक टक हो जाएगा।

इसी सदन में यदि हम इस र प्र मे सनाये जाने वाले त्योहारो या पर्वो ३ चर्चाकरें तो वहा भी हमे गडवड नज धाती है। मनुक्य कास्त्रभाव है कि वह ग्रफ्बी वासिक रूडिताको छोडने में ब कच्ट का बनुभव करला है। त्योहार भा रह्ट के अधारिक की बन का श्रीमन श्रम है। त्यौहार यापव किसी भी राष्ट्र की सस्कृति व सम्यता के अतीक हुन्ना करत है। जागरूक जनसा के बम भीर साईच रे के प्रतीक हुयाक रते है। राप्ट को एकता धीर सगठन के सूत्र में पिरोने वाले हुआ। करते हैं कि तुइसास दभ में भी हम जब गढनारे विवार करते हैं तो हमारा मन भीर मस्तिष्क फन फना उठता है। हृदय वेदनामे भर जाता है। इस राष्ट के ग्रन्दर अब त्योहार मनाने का समय ग्रासा हैतन बड बड नगरी में धारा १४४ लगनापडती है। पी • ए० सी० ग्रीर पुक्षिस का इत्तजाम करना पडता है। यह सब क्यो करना पडता है <sup>?</sup> इस क्यो काउत्तर एक ही है— हुम शाकित हो बठते हैं कि कही भगकान हो जाए। सम्ब्रदायिक उपद्रव न हो जाए। इस

लिए वार्मिक त्यौहार भा हनारे गब्द्रीय सगठन से एक बड़ी बाध बनकर हमारा बटटहास कर रहे हैं।

वस्तवमे भारत र इन्केस उन मे षार्मिक-उमाद एक बडी बाबा ही नहीं घपितुराय्टके लिए चुनौती भी है। जिसे जिसे समय गहते हमे स्वीकार करना ही होगा। राष्ट ग्रौर धम दोनो मे ग्राज सम वय नही है। एक रूपता नहीं है। क र धमवादी ग्राज भी ब्म राष्ट की राप्टीयताको स्वीकार करने को तैयार नहीं अपन को अलग कीम बताकर नया ह गुन विजाने को तैयार हैं। घम निर पेक्षताकी बाड में बाज देगताही पच उग्रवादी द्यातकवादी व्यक्ति से य<sup>ि</sup>नत के परिवार के शाष्ट्र केटक न टकड करने को कटिवढ़ हैं। यह उ मादी मा। ऐसी ग्रंगे तक घषक जती है ती न गरीब का कोपडा देखती है न समीर की घरालिका धन हमे रस वासिक उमा नाका जिससे साम्ब्रदानिक विद्वय <ावत तती तसमूल विनष्टकरनाह होग। पर पर प्रमाव सीहरू का बटाना ह हगानन्ताना विभाजन के कगार पर ज हाहै बाबा एक जुग्लाकर इस सबल स्राव्यन न कासकल्पल

श्रीला हसराज गुप्तकानि**धन** सभा द्वारा शोक सबदना



िल्ली की समस्त बायसमाओं की मोर से उनकी शिरोमणि समा दिल्ली म य प्रतिविध सभा के प्रधिकारी एव कासकना दिली के भूतपूर महापीर प्रसिद्ध उद्योगपति दानबीर समाजसेबी ध्रायसमाज ने कमठ कायनत श्री साला हसर ज जी गृप्ता के स्रकस्मान् देहाव सन पर गहरा द स एव नोक यक्त करत है। स पने सपना समिकाण जीवन भ्रायसमाजनया भ्रय स माजिक सस्या द्यो की याम लगदिया द्यापक चले जाने स भायसम ज का जो क्ष्ति हुई है प्यकी पूर्ति होन असम्भ**ं र परम** ति। परमामा स प्राथना है कि बह दिवगन ग्रामा नो सदगति प्रदान करे उनके दुख परिवार का व्स**महान्द्रस** को सहन की शक्ति तथा सामध्य प्रदान करे (सूय देव)

## समाचार-सन्देश

## पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक का श्रभिनन्दन एक सराहनीय प्रयत्न

वैदिक वाडमय के लाघ प्रतिप्ठ विद्वान् मानवता कं पूजारी धार्यविद्या के तपस्वी प्रचारक प० युविहिन्द मीमासक का भायसमाज साना क्रूब बस्बई म भ्रव्य ग्रभिन दन क्यि गया । टनो ज्लो क न्द्र संद्वर तथा मच सत्राया गया 🗊 । विशिष्ट गण्यमान्त व्यक्तिया स यवीरदल के सैनिको न सादर अभिवादन क साथ द्याचण्य मोमासक जाको सचपर त जाया गया। मच पर मुन्य पक्ति मश्रीप० बुधिष्ठिर मीमानक नी बलर'म जलड एव श्री प्रा० वद ० यास थे। सचपर उप स्थित थे भाग प्रतिनिधि सभा गुजरात महाराष्ट्र भीर वस्वई के प्रधान क्रमश श्री सगलसैन चोपडा श्री दौलतरास चड्ढा सीर श्री सोकार नाथ साय धाचाय सोमदेव जी शास्त्री प्रादि महानुभाव थे । धार्यसमाज सान्ता कुज के प्रधान श्री देवेन्द्र कारूर ने श्री बलाराम जालंड की अध्यक्षता में अभिनन्दन समारोह के प्रारम्भ होने की घोषणा की। इस समाज के यशस्वा महामत्री कैप्टन देवरत्न साथ न जनसमुदाय का साय समाज के द्वारा किये का रह कार्यों का तथा गतिविधियो का परिचय दिया। बन्होन श्राबल राम जासड की नस्त्रिम कहा द्वमार लोकसभा ग्रध्या भारतका संस्कृति धौर सभ्यता की जननी दन भाषा संस्कृत के महान पुजारा है एन भादशैं व्यक्ति द्वारा इस समारोह की भ्रष्ट्यक्षतः। करना गीरव का विषय है। भाजाय साम देव ने श्री प० यूजिव्डिंग् मीमासक की तपस्या प्रकाण्ड पाण्डित्य का चाराप्रवाह भाषण मे जब परिचय दिया समागार रोमाचित होकर करतल व्वति कर उठा। श्री बन राम जासाद नेपज्य पण्डित जी की

श्रानिनन्दन पत्र मेंट किया। इस श्रवसर पर एक स्वर्णिम टाभी भी पण्डित जी को भेंट की गयो । इस पर लिखाया—

जीवन पयन्त वैदिक धनुसन्धान श्रीर श्राय चगत् की सेवाय समर्पित जीवन के प्रतिकृत∞ता के प्रतीक स्वरूप पण्डित युचि डिंग्र मीमासक को उनके ग्राभिनन्दन समारोह पर ५/६००० रुपये की बैली सहित सादर भेट--१६ ५ मर।

७४००० इपय की यैली भट करने के पश्चात पुज्य पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती बशोदा को भी शाल एव पूज्यमालाश्री से सम्मानित किया गया।

श्री बलराम जाखड ने अपने अध्य-क्षीय भाषमा मे कहा-श्री कैप्टिन प्रार्थ न मेरा परिचय देते हुए मुक्ते सस्कृत का पूजारी कहा। संस्कृत तो हर भारतीय की मा है। मा का पुजारी होना हमारी संस्कृति है जो धपनी मा की सेवा नहीं करता वह कृतध्न है। मैं सस्कृत की सेवा नहीं कर रहा भपनी मा की सेवा करताहू। उन्हाने भागे कहा मैंने प्रवानमती श्री राजीव वाधी को लिखा है—कि इस दश की ग्रलण्डता को बनाये रसने के लिए मस्कृत नावा के पठन को समस्त भार-नीय विद्यार्थियों के लिए प्रनिवास घोषित कर दिया जाए । यदि श्रनिवास न किया अ। सके तो सस्कृत पढने वाल विद्यार्थियो को उच्च शिलाम ब्रध्ययन के लिए प्रवेग हतु १० सक स्रतिरिक्त दिये जाएँ। श्री जाखड ने भ्रायसमाज साम्ताक्र्ज के ग्रविकारियो का इस प्रकार का समारोह धायोजित करने पर तथा संस्कृत के प्रचा-रक नपस्त्रियों के सम्मान करने की मुक्त-

सम्पादक बार्यमन्त्रेण

## श्रार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन १८ श्रमस्त ११८४ को

कठसे प्रशसाकी।

बार्य के-ीय सभा दिल्ली राज्य की धन्तरगसभाकी एक बैठक शनिवार ६ जुलाई को सभाकायालय व्युमान रोट में हुई। इस बैठक में निराय लिया गया कि भागामी वष १६८५-८६ के लिए सह-युक्त सदस्यो का निर्वाचन २८ जुलाई १६ = ५ को तथा वर्षिक श्रधिवेशन एव निवासिन १८ घगस्त १६८५ को किया जाये । विल्ली की सभी सम्बन्धित द्यार्थ-

समाजो क प्रधिकारियों से निवेदन है कि वे सम्बद्धना शुल्क ३० रुपये तका दो प्रतिनिधियों का सदस्यता शुरुक संज्ञा कार्यालय में प्रतिनिधियों के नाम सहित शीन्न भिजवाये।

> भवदीय सर्वदेव महायंत्री

## भजनोपदेशक संगीत प्रशिच्नगा शिविर १४ से २८ जुलाई. ११८५ तक

धार्यजनत् के सुविस्यात सगीताचार्य प॰ पन्नालाल जी पीयूष' तथा प॰ धर्मि-विनव जी भारवी द्वारा एक 'सबने प-देशक संगीत प्रशिश्ल शिविर" का सायी-बन हो रहा है। इसम शास्त्रीय सगीत के साथ स्वर्गत प० बस्तीराम जी, ची० तेजसिंह जी कुवर सुबानाल जी धार्य मुसाफिर एव कविरत्न प० प्रकाशचन्द्र जी की शैलियो व प्राथनिक सरल सगीतो का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। निवास व मोजन नि शुल्क रहगा।

ऐसा ग्रामोजन प्रथम बार दिल्ली मे हो रहा है। बार्यसमाज के भजनोपदेशक

### श्रायंसमाज सान्ताऋज द्वारा चिकित्सा कैम्प का श्रायाजन

ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द के इस बादेश का पालन करने के लिए बार्य समाज सान्ताकुज न रविवार दिनाक २० बर्पस १६=५ बाय मेडिकस रिलीफ मिशन के तत्वाववान में नि शुस्क नेत्र विकित्सा एव बाप्रेशन कैम्प का बायो-

शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण राज्य मत्री डा० भ्रमिल वरहाडे ने किया । भार्य समाज के योग केन्द्र को वातानुकृतित भाप्रेशन वियेटर मे परिवर्तित किया जिसका उद्वाटन भी मन्नी महोदय ने

सावंदेशिक बार्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री गजानन्द जी बार्य मुख्य श्रतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस सवसार पर श्री सत्थप्रकाश जी द्यार्थं ने अपने व्यवसायिक प्रतिप्ठान इक-नामिक ट्रान्सपार्ट धार्गेना ब्लेशन की धोर से भाय मेडिकल रिलीफ मि।न को ज्ञाय भग पौने दो लाख की एक नवीन रुग्गाबा-हिका बान स्थाप भेंट की।

राज्य मत्री श्री डा० ग्रनिल वरहाडे ने रुणवाहिका का फीला काटकर जुते उतारे भौर रिलीफ मिशन के सस्थापक स्वामी रामानन्द की शास्त्री के चरण खकर उसकी चाबी उन्हें सीपी।

इस कैम्प में लगभग ४०० रोगियों के नेत्रों का परीक्षण किया गया एवं लयभग ५० रोगियो की आसी का आप्रेशन किया गया। एस गरीय व्यक्तियो की बार्सो का बाप्रेशन हुवा को इलाज का व्यय तो दर दो समय अपना पट भी नहीं भर सकते

बाप्रेशन के पश्चात् रोगी एक सप्ताह धार्वसमाज अवन वें ही रहे, वहां उनकी देखणाल की गई। उनके भोजन व दवाई की व्यवस्था एव स्थस्य होने पर सन्हें चरमा बादिका वितरन नि चूल्क किया गया 🖆 • वरहाडे ने कहा मैं बार्यसमाज के इस कार्य से बहुत प्रभावित हूं । सार्य समाज बाँद इस प्रकार के परीपकार का

तथा धर्मप्रचार मे रुचि रखने वाले सम्पर्क करें। सम्पर्क व पत्रव्यवहार का ाहा श्रीमहयानन्व बेद विद्यालय १२६ गौतमनगर नई विल्ली-४६

दानी सञ्चनी व समाजो से निवेदन है, कि भाषिक सहयोग तथा साथ रामग्री (बाटा चावस, दास, दूब, भी भावि प्रदान कर पूण्य के भागी बने।

चित्रे एक

स्वामी दीक्षानस्य सरस्वती धाषाय हरिदेव

स्थान श्रीमट्यानम्द वेद विद्यालय, गौतमनगर-नई दिल्ली।

कार्यं जन साचारता के लिए करता है तो मैं सरकार की स्रोर से पूर्ण सहायता करने को तैयार है। श्री सत्यप्रकाश जी के भाग्रह पर उन्होंने कहा मैं भ्रस्पताल स्रोजन के लिए बम्बई उपनगर म सरकार की बोरसे जमीन भी देने को तैयार हैं। मृग्य प्रतिथि श्री गजानन्द जी पार्थ

ने कहा इस शिविर को देखकर मुक्ते आर्थ समाज ने प्रारम्भिक इतिहास की बाद बा रही है। जब इसने जन सामारण की नि स्वाय भावना से सेवा कर सार्थ नमाज को विकसित किया या । सायममाज साताकन्ज ने हमे बाज नवीन दिसा का बोध कराया है।

श्री सस्यप्रकाश जी आय ने कड़ा यदि सरकार हमे जमीन देती है तो हम दो करोड़ की लागत से ग्रस्पताल के निर्माख हेतु विल्कुल तैयार हैं।

माय मैडिकल रिलीफ मिशन के सस्या-पकस्वामी रामानन्द जीने **शवके वक्तव्य** मे कहा कैंटन देवरन ग्राय के श्रयक प्रयास से इस निवान की स्थापना हुई घीर भौर हमने पिछल एक वर्षमे पूरे महा-राष्ट्र मे लगभग ५०० धापरेशन धीर ३०००० रोगियों का नि शुरुक परीक्षण किया ।

समारोह का सयोजन महामत्री कैंप्टिन देवरत्न बार्य ने किया । प्रधान श्री देवेन्द्र जी कपुर ने लक्टरो एव नखीं जिनकी नि शुरूक सेवा प्राप्त हुई एवं कार्यकर्तामी का, प्रतिवियी का घन्यवाद किया । **भवदी ब** 

देवरत्न धाय महामत्री

### श्रार्यसमाज हनुमान् रोड द्वारा वेदप्रवचन

धार्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्सी द्वारा १ जीलाई से ६ जीलाई तक श्री प० श्यामसुन्दर स्नातक की वेदकथा सम्पन्न हुई। इस प्रवसर पर श्री प० गुलावसिंह राचव के मधुर भजन भी हुए। यह ग्रायो-जन बाबा जडकसिंह रोड पर खुले स्थान पर जन सामारण को वैविक सन्देश देने के किए किया गया वा, जो सफस रहा।

मन्त्री, बैरातीकाच माटिका

#### प्राम प्रचार

स्वामी स्वक्यानन्य सरस्वती स्विध्
काता वेद प्रवार हारा १६ जून रिवार
को साथ १ वर्षे ते १० वये तक साम
महीत्रव (रावनाइ) में श्री कम्मेयावाल
साय के निवास स्वान पर यज रखा गया
यज के प्रवार (प क्यानाप्त प्रशी और
सामवीर रावच हारा भवनीपदेश रहा।
विवर्षे साम के नर-नारियों ने सारी
सक्यों साम के नर-नारियों ने सारी
सक्यों साम के नर-नारियों ने सारी
सक्यों साम के नर-नारियों है सारी
सक्यों साम किया। और निवंदन किया
कि हमारे वहाँ कम से कम एक स्वाह स्व का सार्वकर रखने का स्वयः वरं । हमारे
वर्षा पर रहारियों का प्रविक प्रवार द्वा

का प्रचार करते रहते हैं। और वर्ष परिवर्तन कर रहे हैं। हम व्याहते हैं कि हमारे वर्तन कर रहे हैं। हम व्याहते हैं कि हमारे वर्रम में मशारि मेंट्र कमें द्वारा वेदिक कमें का प्रमार-प्रचार आरी रहे। इस कार्यक्रम के बनाने के लिए भी रामप्रताप भी का प्रमल रहा। भी रामप्रताप भी सपने साथ हवन कुछ, शामित्री, ररी, भी सपने साथ हवन कुछ, शामित्री, ररी, भी स्वादि साथ रहा कर ने नाते हैं और हरियन वस्तियों में कार्यक्रम निश्चित करके समा का पूर्ण सह्योग चाहते हैं। भी रामप्रताप की का यह सरहानीय कार्य है। देवनर इनका प्ररोक शक्ति से कार्यक्रम करें साथ कारणना प्राप्त करते रहें।

स्वरूपानन्द



### गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार प्रवेश पुचना

निम्न विभावों में जुसाई १६८६ से प्रवेश प्रारम्भ हैं—

(१) विश्वाविनीद (इष्टरमीडिएट) प्रवेसार्व बोम्बता-

१ विवासिकारी (पुरुकुत कानड़ी) २ हाईस्कूत शस्क्रत वहित ३ पूर्व मध्यमा प्रवेशी वहित (बारसण्डी) ४ निवास्व (पत्राव सूनिवहिटी) प्रयेशी ने वैद्रिक वहित ५ विवास्त (पुरुकुत महाविवा-तम क्वातापुर)।

(२) ग्रमकार (बी॰ए॰)

प्रवेद्धार्थ योग्यता —
१ विद्याविगोद (गुरुकुत कांगडी)
२ इच्टरमोडिएट व्हेंस्कृत सहित ३ उत्तर
मध्यमा प्रप्रेजी सहित वारावसी) ४
विद्यारद (प्रजाब यूनीविटिटी) प्रप्रेजी में

इष्टरमोडिएट सहित। (३) बी॰एस-सी॰ (प्रवम एव डितीय वर्ष) युप १ कैंमिस्ट्री, बौटनी, जुलीजी।

मूप २ कॅमिस्ट्री, फिजिक्स, गश्चित । प्रवेकार्थ योज्यता—

इन्टरमीडिएट या समकक विज्ञान बहित।

(४) एम० ए०

.

 बैदिक साहित्य २ नस्कृत साहित्य ३ दर्शन शास्त्र ४ प्राचीन मारतीय इति-हास सस्कृति तथा पुरातस्त्र ४ हिन्दी साहित्य ६ मनोविज्ञान ७ प्रग्नेजी ८. गिरात ।

त्रवेशार्थं बोष्यता —

१ धलकार (गृरकुल कामकी) २, नौ०एस-सी० ३ बी०ए० ४ बी० काम० १ निवामास्कर ६ खास्त्री ७ धामार्थ द साहित्यरत्न।

नोट—गणिक तथा मनोविकान विषय में बी०एस—सी० परीका उत्तीर्ण छात्रों को एम०एस०सी० की उपाचि प्रदान की जाती है।

(४) एम० एस-सी० (माइक्रोबायसीजी) प्रवेक्षाचं बोग्यता—

बी०एस-सी० वासनीकी मुप (बी० एस-सी० में न्यूनसम् ५० प्रतिशत सकर्मे छत्तीकों)।

(६) पी० एव० डी०

बेर, सस्कृत, हिन्दी, प्राचीन चार-तीय हतिहास सस्कृति तथा पुरातस्व, भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान एव प्रश्नेची विक्रयो में पी-एच०बी० की व्यवस्था है। रिकट्लेशन फीस ४० रपये है। प्रवेश फार्स तथा निवसावली शुल्क डाक व्यय सहित ६ रुपये है।

धन्य विशेषताएँ--

१ सुयोग्य शिक्षक तथा सुसज्जित प्रयोगकालाए पुस्तकालय, एन सी०सी॰, एन०एस०एम०, नीडा भ्रादि का उत्तम प्रयन्थ।

(२) निर्धन एव योग्य छात्रों को शुरूक मुक्ति तथा छाजवृत्ति भी दी जाती है।

हिप्पस्ती—

विश्वविद्यालय अनुदान धायोग की बारा ३ के प्रन्तमंत गुरुटुल कामडी विश्व-विद्यालय भारत सरकार से मान्यना प्राप्त है तबा उपाधिया सरकार ने प्राय सभी विश्वविद्यालयो द्वारा मान्य है।

प्रवेश पत्र तथा पाटिशिष कार्यालय से प्राप्त करे। प्रवेश की धन्तिम तिथि ७-६-१६६५ है।

> (रामप्रसाद वेदालकार) (सुरेशचन्द्र स्थानी)





एम डी एव

रजि० नं० ही (सी०) ७४६

धार्यसमा व दीवान हास के जलाक्यो समारोह वर्ष पर विशेष धारोजन मानसिक तथा शारीरिक लाभ उठाइयं हुदय रोग रक्तचाप (अलड प्रेशर), मानसिक तनाव दमा, पूटने, पिडली, कमर, वर्षन आदि के दर्व से छुटकारे हेतु

## योग साधना शिविर

विनाक--१० ७-८॥ से ४१-७ ८४ योगीराज स्वामी शक्तीश्वरानन्द सरस्वती

द्वारा

स्थान--ग्रायंसमाज दीवान हाल समय प्रात भू बजकर २५ मिनट पर (समय का विशेष ज्यान रखें) (लगभग एक घण्टा)

निवेदक

सुर्य देव

ग्रायंसमाज दीवान हाल दिल्सी <sup>६</sup>

मूनवन्द नृता

दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मनारी आये प्रतिनिधि समा हरियाला के गला भी नवाबसिंह जी के सकस्मास देहाबसान पर गहरा दू स एव शोक व्यक्त करते हैं। श्री नवाबसिंह जो ने सभा को को सहयोग भीर सेवाएँ भगनी वीं वह कभी भूलाई नहीं जा सकती । परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवबत घाल्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके विवीग में सतप्त दुक्की परिवार को इस मदान् दुक्क एव विद्योग को सहने की सामध्य एवं शक्ति प्रदान करे। हा । धववान प्रार्थ महामन्त्री

#### शोक-प्रस्ताव निर्वाचन

बार्यसमाज होज सास नई दिल्ली-१६ का भूमाव नवीन वथ(१६८५, १६८६) के सिए इस प्रकार हुया है। प्रवान-श्री बनवारी कास बुप्ता उपप्रवान - नरेन्द्र विद्यावाचस्पत्ति ,, — सामपतराव मदान

मन्त्रिकी - श्रीमती सीता देवी उपमन्त्रिकी ---क्षकि गय्ता

— राज तनेवा कीवाध्यक-धी वनवीर बी

> जीवा केवी मन्त्रिकी, प्रार्थसमात्र हीज सास

क्षेत्रीको संबंधाः प्रावृतिकका इसे शीर डॉबर्ड चबदवा की श लबंध से महत्वास्त्र । एद जिल्ला ने लोकरा र

्रान्त है तया जह प्रकृतिस् कारा समिश्रत **व स्वस्थ** जन्म है तया जह प्रकृतिस् कारा समिश्रत **व स्वस्थ** जन्मण है।

क्षिकण्याई ीठ प्रावला हाउ वहुडा अपवल व कल्य समिवित असी प्रतियों से प्रसाद समाएव की एक जाई वाउट एक अयत सम्माी शक्कतिक दे**म** है इसमें कोई रातायिक प्यास तहा है।

एम की एक शिकाकाई पाऊडर का साम से नियमित प्रयोग की सिये।

महाशियां ही हरी (प्रा॰) लि॰ 9 44 ब्राइटिट्यल एरिया क्लीते कला जर्म विक्ली 110015

**TIT 539609 537987 537341** 

लिए स्वास्थ्य

काँगडी फार्मेसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारनाथ, पोनः २६१८३८ चावडो बाजार, दिल्लो ६





बुरुव ल्क प्रति १० पैसे वय १ श्रक ३५ र्.

रविवार, २१ जुलाई १६=५

मुच्टि सबत् ११७२६४६०८६

वावए २०४२

वयामन्दाव्य-- १६१

# त्यागमूर्ति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

—सच्चिदानन्द शास्त्री

महाराष्ट्रियन बाह्याण बच्चन में माता पिता की छत्रश्राया से दूर पजाब के लाहीर में सस्कृत का गहन श्राध्ययन कर शास्त्री परीक्षा पास की. प्रग्रेजी में भी वे निष्णात थे।

आर्यसपाज और -वामी द्यानस्य का व्यापक प्रभाव उनके मन का व्यापक प्रभाव उनके मन स्वादितक पर छा चुना या। अत लाहौर से विकार पाकर उत्तर मग्दत हरिद्वार का गये। आर्यसमाज की विद्वहनच्छती हरिद्वार क्षेत्र में जम जुकी थी। आप भी उसी में सम्म-लित हो गए। स्वामी अद्धानस्य ने गुरुकु का पड़ी की स्थापना गगा के पार का गड़ी की स्थापना गगा के पार का गड़ी की स्थापना गगा के

परन्तु कुछ सैद्धात्तिक तथा व्यान वहार्षिक मतसेदों के कारण स्वामी दर्शनान द जी के साथ घावार्य जी की घायये और ज्वानापुर में पुरुकुल की स्वापना की गई। प० नरदेव बास्त्री भी म० वि० घा गये और जीवन पर्य न युरुकुल ज्वालापुर महा-विद्यालय की नि खुक सेवा की। परिगामन गरुकुन के घावार्य जी प्याल नि के थे। प० जवा-कुण्याल नेहक घालके स्वीहरूव से कुण्याल नेहक घालके स्वीहराव से ही स्वर्णं जयन्ती पर महाविद्यालय भवारे।

त्यानमूर्ति-अपने पास कुछ भी है वह सब दूसरों का है। एक बार एक किसान चाह में ठिठरता खाया। आपने प्याहें, गद्दा सभी कुछ दे दिया। अपने आप आग तापकर रात काटते थैं। कोई व्यक्ति कुटिया पर से बाती हाथ नो जा हो नहीं सकता था।

सामाजिक जीवन में धार्यसमाज से वथ हुए थे। लेख िलने के घनी थे। सकरो लेख द्वायमित्र व विभिन्न पत्रिकाधों में सुरक्षित हैं।

गीता - विमर्ज ग्रात्मा रोचन ञ्चबोध नीर्थ श्र ि सनेक पुस्तकें भी लिखी। लेकिन वास गरकुल ही रहता था। सैको 'वद्यार्थी सदा ही उनसे प्ररशा पाना रहा उनमे एक मैं लेखक भी हा जीवन मे न जाने कितनी घटनाए नती हैं पर कुछ स्मरगीय होनी है हैदराबाद का भार्य सत्याग्र रहा था। धच्छे धच्छे कावमी कण्यम से त्याग-पत्र देकर सत्याग्रन मे भाग ले रहे थे। काग्रेस से निकाले जाएगे इसकी उन्हें चिन्तान थी। राजी भी सत्या ग्रह मे जाना तो 🛪 ्ते थे पर काग्रम की धनुमति पर । अत आपने म० गाधी को स्वीकृति के लिए पत्र मेंजा। बह सचना जब समाचार पत्रो मे छपीती बढीले देमची। परन्तु धापने इसकी परवाह नहीं की । बाद मे ग्राप हैदराबाद की जेली का निरी-क्षए करने गये।

राजनीति के परिश्रेक्ष्य मे सामार्थकी का राजनीतिक नीवन देहराहून क्षेत्र ही रहा। वहीं से सदा कारा के बन्दी बनते रहे। चेहराहून मे वनस्पति भवन के श्रद्धेय स्व० प० अमरनाथ वैद्य का साम्मिध्य दोनो में अन्तर्समय तक प्रगाद रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विशिष्ट बनो वे आवाय की की उ० प्र० विवानक्षम के लिए प्रत्याची बनाया और वे क्षियायक हो यी गये। यर विवायक निवास थे न रहकर काय प्रतिनिश्च समा उ० प्र० सवन के एक कम्म मे परिव वर्ष बिला दिये। खाव ही मोजन प्राप्ति का प्रवन्त्र उनके शिष्य प० गोपालदल जी जास्त्री सम्पादक प्राय्वित्र के हो यही रहता वा। जो पेसा मिला उसे जिसने उनके निए ज्या किया हुरान थे। वापस कर दिया। लोग हुरान थे।

एक बार गो रक्षा पर एक भागण छापकर सभा में विनरित कर दिया बनी कानाफूसी हुई। परन्तु राजाँव प्रचान तथा प पन्त की सुम कुफ ने सब को शान्त करके कोई खवाब तलब नहीं किया। यह उनके व्य वितत्व की निशानी थी। यलत कार्य के निए या किसी काम के लिए कभी भी किसी मधिकारी के पास कभी नहीं गये।

अगने चुनाव के समय पुन म्राप से प० महावीर त्यापी बादि ने खड़े होने हेनु प्रार्थना की। म्रापने -पघ्ट कह दिया। क्या मुर्भ कनकर से कान्त गो बनाते हैं। अब मैं ऊचे पर बैठकर सब की डौटता हू। तब सब मुफ्ते डौटते हैं। बस सब बाज स्वाया स्रोर वह प्रत्यासी नहीं बने।

साबारण सा व्यक्ति पत्र लिखे,

उसका उत्तर धनक्य मिलेगा। एक भार बीसार हो गयै। धनकार में जुप गया कि कह चूल हैंडलाल पर हैं। बडा सरकारी स्तर पर कुला मना। दिल्ली से मनीमण भी महा विद्यालय प्रकृषे। जब बस्तु स्विति का कान हुमा कि सुक्त इंडलाल नहीं दरण खाला हुमा।

इस प्रकार दक्षिण के बाह्यण ने उत्तर भारत को कार्य क्षेत्र बनाकर जीवन का पटाक्षप किया।

वृद्धावस्था आहै शरीर को विवा हुई। एक दिन वह अपने आस्मीय प०नम्दिकशोर शास्त्री से बोले — देका स्वामी ग्रानस्त्र प्रकास की प्रयाण वेला पर एक वेण्ड बाजा था। मेरी विदाई वेला पर दो वैण्ड करना। प्राक्षित वह ममस भी आया। सारे जीवन वा निर्मोही त्यामी नपस्त्री सन्त भो चलते को त्यार। जैसे ही पूर पचपुरी मे त्यवर हुई स्कूल कालिज बन्द कर प्रिय ग्रावार्य को चले प्रनिम्म विदा देने चिता की कर प्रशाम किया।

योगेइवर श्रीकृष्ण विशेशंक

आपणी पव पर म तितम्बर को धार्यस-स्था का वीधपुण नवीन सामग्री से मप्पूर एक धारवक विनोधक प्रकाशित किया जा रहा है। जिससे श्रीकृत्या के जीवन दशन मात-श्रीपर विशिष्ट सामग्री लेखक महानुवाची से प्रशिक्त हैं। विद्वान से प्रकाशित से स्थानिम पर्दे पर कीक्षर प्रकाशों

> सम्पाद १६ हनुमान् रोड

#### सत्संग वाटिका

उपरिक्षित्वत वेदमन्त्र मे परमपिता परमेदवर के दिल्य गुरा कार्य तथा प्रभु-भक्तो को परमपद-प्राप्ति के विषय से सर्गान है।

स नो बन्चु— अड वेतन ससार का एकमात्र प्रविपति हुम सबी का सर्वप्रथम बन्धु है। 'स सस्कृत भाषा का एकवच-नान्त पुल्लिङ्ग सर्वनाम-पद है, जिससे स्पब्ट है कि ईश्वर एक ही है। 'न पद बहुवचनान्त है, जो जीवात्माधी के लिए यहा प्रयुक्त है भ्रमीत् उस एक सर्वाचार पिता की हम अनेक अमृत सन्तानें है। "हम सब एक पिता के पूत यह अव्य अञ्चलभावना प्रथम पदत्रयी में कितने कौ शक्त से भ्रमिञ्यक्त की गई है। पार-स्परिक राग-द्वेषान्ति मे असता हुमा यह मानव-समुदाय यदि इस सावंभीम वर्ग के मर्म को समक पाता तो क्या गृहकलह, वर राष्ट्र-कोटिल्य एव विश्व-सवर्ष की श्रिशापिनी विभीविका हमें सनस्त कर पाली ? समवत कदापि नहीं?

महाजारतीय कीरन पाण्डको की वीचण सनर-रासि में बन एक दिन एकाल्य स्मार पाइन्दी ने बाद एक दिन एकाल्य हुन्ती ने सपने सदुव पराक्रमी से माता हुन्दी ने सपने सदुव पराक्रमी सिर्मुक्त पुत्र कर्ण की यह गुरुत रहस्य सुनादा कि महावणी पाण्डव तथा सञ्ज-रास कर्ण एक ही माता के पुत्र है तो उस पाण्डवर्द्रोही, कीरवपकाराधी महावीच कर्ण का हदस सहसा गरिवर्तित हो गया। पूत्र प्रतिका के कारण दुर्गोवन के पत्र से युद्ध करता हुआ मी वह पाण्डवो का वास्त-विक सहित न कर सका। यही व्यापक पत्री स्मार करें सिर्मु देश हो से प्रतिका के कारण दुर्गोवन के पत्र से युद्ध करता हुआ मी वह पाण्डवो का वास्त-विक सहित न कर सका। यही व्यापक क्षेत्र पत्र से नोवन्तु "समस्त ससार के लिए देश है।

बन्धुः-द्वितीय प्रत्यन्त मर्मस्पर्शी भाव इस मन्त्र-भाग मे निहित है कि वह अवत् पिता सब से पहल हमारे समक्ष भागना कल्याणमय बन्धु स्वरूप ही प्रकट करता है, जिससे हम उस गम्बीर प्रेम-साबर में सानन्द धवगाहुन कर उस मञ्जू-मूर्ति के निरातक हो दर्धन कर सकें। कोई भी दुवस जन घपने प्रेमास्पद से कभी भयभीत नही होता। यत निभैयता के लिए प्रीति-भाव का प्रदर्शन घरयन्त घाव-श्यक है। सस्ति के करा-कण मे उसकी स्निग्ध बास्सल्यमयी खाया प्रतिबिम्बत हो रही है। अक्त नहीं अपितु अगवान् धपनास्तह-सौरभ लुटाने के लिए व्याकुल से दीख पडते हैं। अन्य-तम की विरन्तन प्रम-विवासा के शान्त्यर्थ वह स्वाति का धनस्याम धमुतवर्षिणी धविरस घाराएँ बहारहाहै। चतन ही नही, जब प्रकृति भी उसके ही धनस्त प्यार से बाज विविध मोहक रूपो में बलकृत होती हुई सबीव बी प्रतीत हो रही है। उसका प्रथम सुन्दर

## परम पद की प्राप्ति

#### वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा

स न बन्धुर्जनिता स विधाता घामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा ग्रमृतमानशानास्तुतीये घामन्नस्यैरयन्त ॥



स्वरूप है निश्चाल बन्धुना की ग्रहेतुकी कृपा।

प्रभूके उपासको मे भी मक्ति के पलस्वरूप विश्वप्रेम के रूप मे (यही गुण) प्रकट होता है। सन्तो का मातृहृदय चेतन मानव-सीमामो का मतिक्रमसा कर भाव-विश्वल हो पुकार उठता है - 'नित्रस्याह बक्षवा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । 'रवु-वश के पञ्चम सर्ग में कवि-कुल-कमल-दिवाकर विश्वकवि कालिदास ने महाराज रघुके भावप्रवस्य ह्वय मे विश्ववन्धुस्व का कैसा अनुपम दर्शन किया है। ब्रह्म-चारी कीत्स महर्षि वरतन्तु के प्राथम से भूपति रषु की राजधानी साकेत मे ण्यारे। सम्बद्ध सत्कार के समन्तर रघुराज ने द्राध्रमवासियो की कुश्रस पूछी । 'सानन्दा गृद्धवरा सकुशला बाधमकासिन वन्य-वसुबु झाव्यमवासिवु किञ्चित् सक्टुटस्तु नैवापवित पत्रसतातरवर्व विम्लाबास्तु न, बाधमस्य जनाशय तु वतते बारिपूखं ?' समस्त संसार के प्रति ऐसा सीकोत्तर उदारभाव जावृत होना ही प्रभु-मामित मक्तो का प्रथम लक्षण है।

'जनिता" वह प्यारा प्रभु सकारण बन्ध् प्रतिशयकक्णा-प्रेम से प्रेंग्त होकर इस सृष्टि का 'जनिता ह धर्यात् उत्पादक यारचियताके रूप ने प्रकट होता है। स्पष्ट है कि किसी भी रचनात्मक कार्य तथा व्यवहार के जिए प्रीतिपुरस्सरता प्रथमत अपेक्षित है। यदि वन्युता हुए विनाभी कोई 'बनिता' होने का निष्फल प्रयास करेवा तो व्यस-कार्य में ही निपृश् हो सकेगा, सुन्दर निर्माण मे नही। उसमे उसका किसी प्रकार का सहयोग न होगा। हमारे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सातवें नियम में लीकिक व्यवहारों का ज्ञान करते हुए लिखा-"सब से प्रीतिपूर्वक वर्मानुसार बचायोग्य व्यवहार करना षाहिए।"

कोई भी निर्माता सहदयतापूर्ण एव विष्वकल्याच भावनामो से प्रेरित हुए बिना बीवन क्षेत्र वे सफल न हो सकेवा।

ससार में 'जनिता' रूप में सर्वोत्कृष्ट उदाहरण ममताबयी मातृशस्ति का है थो निष्काम भाव से प्रशीषिक बारसस्य हुव्य वे प्राप्त करती हुई प्राचीवन संतरित का निर्माख ही प्रपन्ता सक्य सबकाती है। शिष्यवस्ताल गुरु एवं प्राचार्यवान ही विधारु एवं हात्योधिन की मीति रास्त्रमण्य विदे हुए वास्त्रमण्य निर्दे हुए वास्त्रमण्य के 'वितिता या निवांता वन सकते हैं। एक व्यक्ति व्याधि-प्रस्तित रोगी की सफल चिक्रस्ता करुवानियान सोक-वन्तु वैद्य ही कर सकता है—सब पर प्रस्ता करिंग्सल करें। विकास पर प्रस्ता है एक स्वांत्र हुव विकास करवा है स्वांत्र हुव विकास करता है।

नहीं ऐसी निष्काम विश्वप्रीति न होगी, नहीं उत्तम सतिह, सरावारी, तबस्थी खात, परिज्वान् नागरिकों का निर्माण नहीं सकेगा। ऐसा समाज चरित्र स्थाति से होन होकर विनास को प्राप्त होगा सेशा कि साज सर्थोंमुखी राज-ज-सस्या ने जयकर परिणामों से स्पष्ट हैं। सत वैदिक सर्वास गहीं है कि प्रञु के सस्य सादसं पथ पर चलते हुए हुम "वसु-पैब कुट्टमकम्" का उदात्तकाव प्रयस्त सराय, करं, पश्चाच् यसाति "विनारं बनकर इस बोक का निर्माण करें।

'विवाता' सर्वेहितकारी प्रभूजगद-बन्युहोकर बपनी जनित्री शक्ति प्रकट करता है, फिर स्वरवित पदार्थों का वया-तोग्य विभान करने से हमारा 'विभाता' कहलाता है। समुनिष विधान ही प्रत्येक बस्तुको मर्यादित करता है। ग्रन्यशा श्रव्यवस्था एव श्रनीचित्व पदार्थं का विनाध कर देता है। किसना वैज्ञानिक वर्र्शन है। जो जनिता है वही योग्य विचाता हो सकता है। अत अनिता (निर्माता) को विषान हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए क्योंकि यदि बासको के व्यनिता माता-पिता हो तथा नियम विवासा प्रतिवासी (पड़ोसी) हो तो परि-स्थिति सभाने नहीं समलेगी। आत्रों के 'जनिता' या ज्ञान-जन्मवाता धाषार्य हो श्रीर उनके धव्ययन, दिनवर्या, धावार धादि की सहिता बनाने बासे 'विकाता' कोई दूरस्य शिखा विभागीय अधिकारी हो तो फिर बर्तमान दुर्वतिपूर्ण प्रम्यवस्था द्वाप से खिपी नहीं है। विशेष विस्तार की धाव-श्यकता नहीं है। सभी विभागों ने बनिता विवाता की नेक्पूर्ण नीति के बुष्परिसाम दर्शनीय हैं देखने में 'बनिता स विवादा' कितनी बोटी बात प्रतीत होती है किन्तु इसके प्रतिकृत पाचरण ने हमारी वर्ति-विविधों को बामुख परिवर्तन कर बोर

श्रशान्ति उत्पन्न कर दी है।

"बागानि वेद पुत्रनानि विदवा" — व्हकृपासु परमेश सकल पदार्थ-विज्ञानो का
कनिता या विधाता है धव (विदवा)
समस्त (वामानि) तेषोमय (पुत्रनामि)
मुदनी को विद, असी प्रकार जानाता
है। इस मन्त्रमान से तीन सर्थ विज्ञेव रूप से प्रमतित होते हैं— १ वह देखर सर्वेग
है, २ उसकी पृष्टि आनिवानों के तेथाय स्त्रप्र है, तेवस्त्री विचाता के तेथाय स्तरप्र पुत्र है, देसस्त्री विचाता के तेथाय सत्तरप्र पुत्र है, देसस्त्री वोचानों का स्त्रमाना प्रहिक-पारतोष्टिक पद्मी का सच्चा तर्योक्ष हो सदता है। मृत उसी की उपासताकरी चाहिए।

' बन्न देवा समृतमानशानास्तृतीये भामन्त्रस्मैरयन्तः।"

(यत्र) जहाँ (देवा ) दिवः गुण-सम्बन्धः जितेन्द्रिय योगीजन (अनुवस्-धनावाला।) -लौकिक धावागसन से मुक्त हो धनुवत्व को भोगते हुए (तृत्येये बासन् अध्यरयन्त) सोझ पद में रमण करते हैं।

म्पष्ट है कि दुर्लम मानव-बीवन को प्राप्त कर जो नतुष्प दिल्य पुणी का जयव करते हैं, मनवा नावा कर्णा छल-जव-पाकन एव हहाववादि के देवन के परोमंत्रीराप्ताना की गोमवान को बारखा करते हैं वे ही जग्म-मरण के दु बाद पात्री हैं। इवीलिए मध्यारन विद्या को क्रांत्वि-वर्षी महतीय ज्यापन विद्या को क्रांत्वि-वर्षी महतीय ज्यापन विद्या को क्रांत्वि-वर्षी महतीय ज्यापन विद्या का व्यापन पर-प्राप्त का पब छुरे की तीक्षण बारा के समान बताया है यह ससुर, मानव वक्षा वेव-कोटियों में से यह पब देवों से ही प्राप्त

ऐसे वेवगए। जीवनमुक्त होकर सरीर त्यान के अनन्तर उस दिब्ब लोक से रमण्ड करते हैं, जिसे वेद की माथा मे मुक्ति-पद कहा गवा है।



सम्यादकीय-

## पाकिस्तान का परमाणु बम-भारत चितित

जुल्फिकार बली सुद्री ने १६६५ में कहा वा ग्रगर भारत न्युक्लीय बम बनाता है तो हम चास खाकर, भूखे रहकर भी अपना बम बनाय गे। ' भारत ने तो परमाण बम बनाया नही और न ही इस प्रकार का रिटकोस हो रखा किन्त पाकिस्तान तभी से परमास कर्जा के विष्वसक उपयोग में निरन्तर आगे बढ़ा है। इस बात को सारी दनिया जान चका है। विशेषज्ञ इस सभावना से इन्कार नही करते कि पाकिस्तान परमास्य बम बनाने की तकनोक जान चुका है और शायद बम भी बना चुका है। गत वर्ष अमेरिकी श्रविकारियों ने पाक व्या-पारी को टेक्सास से इसलिए रवाना किया था कि वह अबेध रूप से प्र• इलक्टोनिक खटके [या घोड ] पाकिस्तान भिजवाने के प्रयहन मे सलान था। सम्प्रति ये खटके किसी भी प्रकार से पाकिस्तान की प्राप्त हो गये हैं जो परमास बम के विस्फोट मे प्रयोग किये जाते हैं। सारा विश्व हैरान है कि यह लटके अमेरिका से पाकिस्तान कैसे पहुंच गये ? जब कि समेरिका पाकिस्तान के मसुबो से वाकिफ है और यह लापरवाही कितना बढा कहर ढा सकतो है। ये सहज ही अनुमान-गम्य है। इन इलेक्ट्रोनिक खटको के सफल परोक्षण कर लेने से यह भी स्पष्ट है कि पाकिस्तान बिना विस्फोट के बम बना रहा है हर चीज का मलग-मलग परीक्षण कर बम बनाना इस साजिश को भी उजागर करता है कि पाक विना बमाके शोह के दूनिया की पता न चल सके और काम हो जाये।

अमेरिकी राजनीतिज्ञ जो ग्लोन ने कहा या-- मैं किसी को भुठा तो नहीं कहुगा पर पाकिस्तान जो कह रहा है उससे कही ज्यादा उसके काम बोल रहे हैं। अमेरिकी प्रतिरक्षा न्युक्लीय ग्रिकरण को प्रस्तुत की गई विशेषज्ञों को रिपोर्ट के अनुसार अनुमान है कि पाकि स्तान इस दशक के उत्तरार्ध मे प्रतिवष ख न्यूक्लीय बम बनाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है भीर १६६० तक तीस यूरेनियम बन बना चुकेगा। भूखे रहकर धौर वास खाकर वस बनाने की योजना श्री युट्टो ने १६७२ के युद्ध हार जाने के बाद प्रारम्भ कर दी थी । राष्ट्रपति के तुरन्त बाद इन्होंने भ्रपने वज्ञानिक बुलाकर प्रोजेक्ट ७०६ का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रोजेक्ट के भ्रन्तगत १६७३ तक पाकिस्तान ने प्राकृतिक यूरेनियम के इधनवाला व्यवसायिक इधनवाला व्यक्तीय रियेक्टर स्थापित कर लिया था इसम कनाडा का भी सहायता ली गई थी मुद्रो ने फान से भी सौदा किया एक ऐमे व्लुननियम पून ससा बन समझ का जिसमे प्रतिवष ३०० पोड प्लुटोनियम संशोधित ही सकता था। इतने प्लुटोनियम से ३० परमाणु बम तयार हो नकते हैं। १६७६ के समभौते के बाद फास ने इस सयत का काम बन्द कर दिया था परन्तु कुछ फाँसीसो कम्पनिया गुपनुप इस कार्यक्रम को सह-योग देती रही। पा कस्तान ने इस साम के ६५ प्रतिका ना नक्शा बहुत ही गोपनीनता से प्राप्त कर लिया। इसी काल मे पाकिस्तानी बम के निर्माण करने मे जी जान से जुटे डा॰ ब्रब्दुल कदीर ला हालेड की फिजिकल डायनेमिक्स रिमच लेबोरेटरी से न्यूक्लीय रियेक्टरो के उपयुक्त यूरेनियम को तैयार करने का जानकारी लेकर पाकिस्तान लौट चुके थे। पाकिस्तान मे डा॰ ग्रब्दुल को इस चोरी की महानता की उपाधि दी गयी भीर इस सम्मान का भीर अधिक विरस्यायी बनाने के लिए काहटा परिक्षोधन सयत्र का नाम बदल कर डा० मब्दूल कदीर सौरिसन लेबोरेट्रीज रस दिया गया। डा॰ मन्द्रल कदीर ने ऐसी १०० यूरोपीय, कनाडियन भौर भमेरिकी फर्मों को सूची भी प्राप्त कर ली थी। ये फर्म पाकिस्तान की मावश्यक उपकररण उपलब्ध करा श्रकती थी। नकली घन्त्रों की झांड में पाकिस्तान ने उपकरण प्राप्त मी किये।

१६७६ में लीबिया की सहायता से पाकिस्तान ने नाइजर से ४०० टन यूरेनियम बक्ष्माइड लिया। फरवरी १९८४ में डा० कबीर खा ने बीचगा कर दो कि पाकिस्तान ने यूरेनियम सवर्षन प्रक्रिया की तक्षी नीक प्राप्त कर सी हैं। गरन्तु पाकिस्तानी राजनेता हमेशा इस बात का बच्चन करते रहें। युट्टो ने स्पन्तु सस्मरणो में निका था—'हम जानते है कि इलाइन और दक्षिए। अभीका के पाम प्री न्युक्तीय समता है। ईमाई यहदो और हिन्दू सभ्यताओं के पाम भी यह समता है। साम्यवादी ताकतों के पास भी हैं पर- इस्लामी ताकत ही इनके विचत हैं। परन्तु कीझ ही यह स्थित बदनने वाली है। राष्ट्रपति जियाउल हक ने भी इसो बान को दोहराया चीन भारत रूस और इस्लाइन के पास परमायु हथियार हैं बगब पाकिस्टान के पास भो ऐसा हथियाद हो सकता है तो इससे इस्लाम की ताकन बढ़ सकती है।

भमेरिकी सीनेटर एलन क्रस्टन ने पिछले साल जून मे सीनेट में प्रस्तुन एक रिपोर्ट में पाकिस्तान द्वारा परमाणु बनाने की दिशा में की गयी प्रगति के खनरों से प्रागाह करते हुए कहा था कि इस प्रान के बहुत से मुद्दत हैं कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बनाने की पूर्ण क्षमता विकसित कर सी है। एलन क्रस्टन ने पाच मुद्द ग्रपनी रिपोर्ट में उठाये के।

१ पाकिस्तान के पास काफी न्यूक्लीय वैज्ञानिक हैं भौर न्यू-क्लीय वस बनाने में पाकिस्तान ने सभी उपरक्षण जुटा लिये हैं। कुले बाजार में उपकरण खरीदने के झनावा हालेष्ट से वह गोानीय सामग्री जुराने में सफल हो गया है। परिचम ज्यांनी भौर फाँस की कम्पनियों का माल तुर्कों के जरिए चोरी खिये पाकिस्तान पहचाया जा रहा है।

े पाकिस्तान घरनो डालर -पूक्तीय समता पर लर्थकर चुका है। लोबिया धौर सकदी घरन ने भी पाकिस्तान को घार्यिक प्रदद दी है। १८८५ से घन तक घनेरिका भी ३२ घरन टालर नी पाकि-स्तान को मदद दे चुका है।

स्वापित परमाणु सथन्व जिसकी के प्राधार पर काहुटा के स्वापित परमाणु सथन्व जिसकी वर्तमान समता २००० से ३००० ऐनरेटिव वर्क युनिटस है। इसका मतलब तीन -युक्तीय बम बनाने की समता।

४ पाकिस्तान को चीन को मदर मिलने से बलुचिस्तान के पहाडी क्षेत्र मे न्युक्तीय परीक्ष सारक्षित विकत्तिन कर लिया है।

पाकिस्तान को ग्रमेरिका से एक १६ लडाकू बनवषक मिल

चुके हैं। साम ही यह भी कहा गया कि हम तीमरी दुनिया की न्युक्तीय

साय हायह भाकहा गया कि हम तामरा दुनिया के त्युक्तिय शस्त्रों को ऊची होड़ के कगार पर खड़े हैं। जो दुनिया के विनाश में सहायक है निर्माण में नहीं।

बनरल जिया ने लन्दन से प्रकाशिन एक प्ररवी पित्रका के माथ साक्षास्त्रार में कहा— पाकिस्तान की परमाणु बम बनाने का प्रिष-कार है भीर इस बारे में कोई वंश उस पर दवाब नहीं डाल सकता। उन्होंने कहा पाकिस्तान अभीरका के इस दवाब के मानने चुटने नहीं टेकेगा कि वह परमाणु बम न बनाए। हम इस बारे में भ्रमेरिकी आग्रह मानने के निए इसलिए भी बाल्य नहीं हैं क्योंकि अभेरिका ने परमाणु प्रमार पिनोमान सिंगर हस्ताक्षर करने के लिए भारत इस्राइल भीर दक्षिण अफोरा पर वह वनहीं हाला।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने झपनी चिंता प्रकट करते हुए कहा है, 'पाकित्सात हारा परमाग्युत्रम के बनाने प्रयत्नी से भारत बहुत वित्त इसलिए है क्योंकि पाकित्सात मारत पर कई बार हमले कर कुका है। यत इसले म्लट है कि पाकित्सान का बम किसके खिलाफ इस्तेमाल होगा। भारत को पाकित्सान पर शोझांतिशीन्न प्रधिक संस्थिक झन्तर्राष्ट्रीय बवाव डलवाना चाहिए और पाकित्सान को हमले अधिक झन्तर्राष्ट्रीय बवाव डलवाना चाहिए आरे पाकित्सान को हमले साहित करने की हरसवव कोचिया करनी चहिए। समस्त प्रयत्नो के निष्कल होने पर यदि विवेक झाजा दे तो मैं कहुगा, इस्राइल ने जैसे इराक को रोकने के लिए जबरदस्त कार्य किया या वह प्रयोग भी झाजमाना गलत नहीं होगा क्योंकि परमाग्रु झातक को झन्धी दौड को पहले ही रोक वैना मन्त्र्यता पर उपकार होगा।

—यशवाल सुषाञ्

यह नव्दर समार एक एसी धर्म शाला के समान है जिस में नित्यप्रति हजारों की सस्यामें नये-नये मनुष्यों का धाना आना लगा रहता है। जाने वाल इन अविशास मनुष्यों मे दो एक ही ऐसे होते हैं जिनका स्मरण दीधकाल तक बना रहता है। गुणा पूजास्थान गुणियु क अनुसार इन स्मरएाय व्यक्तियो का उनके त्याय तप सयम परीपकार रह सकप सच्चरित्रता द्यादि विशिष्ट गुर्गो के प्रघार पर ही मह व दिया जाता है। वास्तव म मनुष्यों की श्रष्ठता का ग्राधार न उना "र रिक सी दय है न घन वनव रे धैर न उनकी भौतिक साधन सप नता ही है क्यों कि सभी प्रकार से सम्यन्त होकर भी यदि कोई व्यक्ति चरित्र वान् नही है तो जस का जीवन ज्यव है। उसे कभी भा भ्रान्तरिक शान्ति नहीं मिलेगा। मनुष्य की प्रतिष्ठा का महत्त्व पूगा साधन उसका चरित्र है। सञ्चरित्र व्यक्ति धपनी तथा धपने समाज की व स्तविक उन्नति का मूल होता है। चरित्रवान व्यक्ति का जीवन ही सर्वांग पूग तथा लौकिक और ससीकिक चन्नतियो का जनक होता है। यत मानव अ।वन को उपनत बनाने के सिए व्यक्ति का चारित्रिक विकास परम भावश्यक है। प्राय हमारे सभी ग्रन्थों में चरित्र सरकाए की ग्रावदपकता पर विशेष बल दिया गदा है । वर ०यास जी कहते है —

> वृत्त य नेन सरकाद वित्तमेति च याति च। शक्षणो वित्तत लीएगे वृत्तसस्य इतो हत । मिहाबारत उद्योग पव ३६३ ]

सनुष्य को परिश्रमपूत्रक अपने आवरण को रक्षा करनी चाहिए। द्माचरण का तुलना से धन काविशेष महत्त्व नहा گ । धन ग्राने 🥆 ने वासी बातुहै। झत उथ से हीन होने पर भी व्यक्ति भी सामा ना होता कि त बाचरण के नप्ट हो अन पर ०४ वन का सवधा विनाश हो जाना है। इसा प्रकार श्रमजी में भी क्हावत है

'Wealth noth ng is lost, Health at

meth no is lost Iost

Charac everything is lost

श्रदात धन के नध्न हो जाने से कोई विशेष हानि नहीं होती। स्वास्थ्य के नष्ट हो जाने का अप है व्यक्ति की कुछ हानि हो जना किन्तु दुभाग्य से याद चरित्र न रहो बाता है तो फिरतो ० यक्ति का सवनागहाजता है।

प्रत्न यह उत्ता है कि यह मृख्यवान वस्तु जिसे हम चरित्र के नाम से श्रो लालमन द्यार्यं निबन्ध प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त-

# वर्तमान चारित्रिक संकटः समस्या और समाधान

—महेश कुमार **कौ**शिक प् प्रवित्त भवट देवपुरा भाश्रम हरिद्वार

सम्बोधित कर रहे है इसका स्वरूप क्या है ? चर वात् से इत्र प्रत्यय के गोग से चरित्र शब्द निष्यन्त होता है। इसका **•युत्पत्तिपरक श्रथ है कम का प्ररव ।** इसी को सकल्प शक्ति इच्छा शक्ति ग्रम्बा Will Power के नाम से भी जाना जाता है । बाचरल या वृत्तमनुष्य का ऐज्छिक कम होता है। तभी तो विद्वानों ने इसकी रक्ता के लिए उपवेश किये हैं। व्यास के वचन 'वृक्त यत्नेन सरक्षेत का यही माव है।

#### चरित्र तथा म्राचरण

दैनिक स्थवहार मे चरित्र तथा भाचरण दोनो को प्राय एक ही भव मे ग्रहण कर लिया जाता है जब कि चरित्र •यक्ति के **चिन्तन मनन का मा**ग्यम्तर प**क्र** होता है और साक्यण उसके नाता पक्ष की नजा है। बाबरता के भी वरित्र के समान ही सदाचरण तथा दुराचरल नाम स वो प्रकार हैं। हमारे प्राचार्यों तथा सर्वों ने सदावार पर भी पर्याप्त बल दिया है। •मक्ति के नित्य प्रति के जीवन में हम उसके बाचरण को देखकर टीका टिव्यकी किया करते हैं। अनुस्मृति ने बाचार परमोजम तथा महाभारत मे सावार लन्याोचन से इसकी महत्ताका प्रति पादन होता है। आवरण वरित्र से भिन न होकर उसकी सापक एक इकाई का काय करता है। सदावारी व्यक्ति ही चरित्रवान हो सकता है।

#### चरित्र तथा व्यक्तित्व

परित्र शब्द काप्रयोग मनुष्य के •यक्तित्व की मान्तरिक बनावट के मथ मे होता है। चरित्र के मातवत व्यक्तिगत चरित्र सामाजिक चरित्र राजनैतिक चरित्र •यक्तिकी धम भावना द्यादि सभी पर विचार किया जाता है। हम प्राय चरित्र नवा व्यक्तिरव को समाना वक मान पते हैं अब कि इन दोनों मे पर्याप्त ग्रातर है। चरित्र के ग्रातगत मनुष्य की स्वामाविक तथा ऐच्छिक कियामी का योग रहता है। दूसरी भ्रोर ∘यक्तित्व मे ऐन्छिक श**नै** छिक सभी प्रकार की क्रियाए सनुष्य की भावनाए उसकी बोल चाल ज्ञान प्रव्यवन तथा कार है जो इसने प्रधिक का सम्रह करता है शरीर की बनावट आदि सभी का समावेश

हो जाता है।

व्यक्तित्व के निर्माश में मनुष्य के वशानुक्रम तथा उसके परिवेश का भी सहत्त्वपूगा योगन्त होता है। स्यक्तित्व एक प्रकार से काय नारश के नियम से बघाहोताहै जब कि चरित्र के निर्माण में •यक्ति को पूरण स्वतत्रताहोती है **।** ·पन्तित्व मनोविज्ञान का विषय होता है तवा चरित्र का सम्बच नीतिशास्त्र से रहता है। जिन व्यक्तियों में इच्छाणकि ग्रमाव होता है उनका कोई भी वरित्र नहीं होता जबकि व्यक्तित्व ऐसे व्यक्तियो में भी अपनाकाम करता है। इञ्छाशक्ति के वनी व्यक्ति प्राने सभी कमों को सुविका रित क्य से सम्मन्न करते हैं। सतकोटि के ऐसे महान व्यक्ति बदापि व्यक्तिस्य की जपेशा करते हैं तथापि उनके किए वरित्र की प्रधानतारहती हैं। हम व्यक्तित्व का नाक्षात्कार कर सकते हैं किन्तु चरित्र का केवल ब्रष्ययम ही किया जासकता है।

#### हमारा वर्तमान चारित्रिक सकट

चरित्र जिसके सम्बन्ध में हमारे सभी म्म चार्यो नतों तथा विद्वानी ने इतना बस दिया के बाज दुर्भाग्य से सभी क्षेत्रों ने उसका पतन हो रहा है। चरित्र निर्माण का साथक एक तत्त्व भी समाज मे कठि— नाई ने दिलाई पडता है दूसरी भीर उसका हुनन करने वाने हवारी प्रकार के प्रभाव व्यक्त को प्रबच्च्छ करने की उद्यत रत्ने हैं। भारत मात्र अपनी सुसम्यन्त चारित्रिक परम्परा की उपेक्षा करके नस धमेरिका इग्लैंड सवा जमनी की सम्यताधी का ब्रधानुसरण करने मे लगा है। हम आक्स भादि के द्वारा विवे गये समाजवाद के नारो पर लुमा रहे हैं। रूस के साम्यवाद की प्रशासा करता हुधा भारतीय श्रीमद्भा।त के इस स्लोक को क्यो भूज जाता है --

> यावद भ्रियत वटर तावतं सत्त्व हि बेहिनाम् । ग्रविक बोऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमहिता।

'शरीरवारियों को स ने उदर की पूर्ति तक ही पदार्थों को ग्रहण करने का श्रवि वह चोर है तथा वण्ड का समिकारी है।

भारत का शितहास बहुत श्री बीरब पूज चरिकों से धनस्यूत है। पूरे ससार को प्रकाश देने वाले जगदगुर मारत का भाज अव पतन हो रहा है। इस अवनति का मूल कारण है यहा के नागरिकों का बारिजिक पनन । बाज सभी बोर रिश्वत चोर बजारी लूटससोट, उददण्डता तथा उच्छङ्गलताका दूषित वातावरण बना हुन्ना है। स्व स्व वरित्र शिक्षेरन् पृथिक्यासवमानवा की स्थिति सदसकर आज एमा वातावरण बना हमा है कि हम दूसरों को ताचरित्र की शिक्षा क्या दमे इस देश के चरित्रदान व्यक्तियो को भी यहाँ क बाताबरसा मे दबास लेना भारी पड रहा है। हमारे वस शास्त्रों ने बीवन की नग्वरता का सकेत करके प्राणियो को परलोक का भय दिलाकर स माग पर लग न का जो प्रवास किया था, वह बाज निरथक प्रतीत हो रहा है। भौतिक सुखी की दौड में हमारी ध्रम्यात्म की पूँजी विकार रही है। इसके प्रमुक्त कारण निम्नशिक्ति है --

#### १ भ्रष्ट राजनोति

हमारे चारित्रिक पतन का सब से प्रमुख कारए। माज की भ्रष्ट राजनीति है। जिस देख में कभी राम राज्य का उच्च धादर्शका वहाँ आज वतन की चरम पराकाध्ठा है। राम राज्य की प्रसिद्ध चटना है कि एक भोबी के द्वारास ता के चरित्रको साश्चित कर देने माम से राम ने सीला भी का परिस्थाय कर दिया था। समध्य सीता की के पक्ष में थी। हुनुमान जैसे प्रत्यक्षदर्शी सन्वरित्र सेवक सीता के निब्कतक जीवन की घोषणा कर रहे वे। धनेक वानर जो सीताकी धनिन परीकार के समय उपस्थित वे रो गेकर उस देवी की पवित्रता की यहाई वे रहे ये किन्सु राम ने व्यष्टि की धालोचना के सामने भी समिष्टिको परवाहनहीको। असंही पूरा समाज सीता की प्रशसा कर रहा वा लेकिन समाज का एक प्रग उसकी एक छोटी सी इकाई सामान्य सा बोबी व यदि सीता के बाचरण पर बाखेप करती है तो राम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते थे। माज स्थिति सबचा विपरीत है। व्यक्ति की बात चोड़िये भाज समस्टिका ही कोई ठिकाना नहीं है।

राम के चरित्र रियथक इस महान् उदाहरण के समक्ष जब हम धात के शासकों की चरित्रहीनना को देखते हैं तो देख के श्रष पतन का करण स्थल स्ववस्ट हो जाता है। प्रजा के जुने हुए प्रतिनिधि, इस समाज के नेता अपने सकुरिहा स्वार्थों के लिए सत्ता इधियाने की विसें, कुर्मी पाने की दौड मे स- नितक भिद्धान्ती को डके की चोट पर तिसामि देरहे हैं। श्री राजीव गाथी द्वार नम-बदल विरोधी कानून नाने में एवं हमारे

(बेब पुष्ठ - पर)

पहले प्रचार करवाग्री-

सीमान् बापुराव जी बादमारे सब हमारे मध्य नहीं रहे। १९६४ हैं वे यह हिसी सरकारी काम के लिए वांजापुर पयारे। पुत्रे मिसने के सिए नगर से बाहर डी०ए० वी० कालेख पयारे। दोप-हर डा समय था। मैंने प्रोधन करने के लिए प्राथना की। वापुराव जी ने कहा, पहुले मेरा स्थायमा करवारों किर घोजन करू गा। मैंने यहुत कहा कि प्रोधन का समय है साथ पहुले सोखन तो करें परन्तु बहुन मानं। मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा वर्ष पर सारों। मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा

भूलो मत । भूलो मत ।

धार्यसमाज बाजार सीताराम में १९५२ ई० में आवशी पन पर चार स्थाल्यान वेते हुए भी प० रामचन्द्र भी बेह्नची ने एक घटना सुनाई पी। धार्य क्षेत्रीय सभा देहसी ने ऋषि बोध पर्य मनावा। भारत के तत्कालीन मुख्य न्या-धार्मीय पितळ्डालि वास्त्री की को

#### तस्यामञ्च-

हमारे मध्य नहीं रहे। १९६४ ई० मे वह आयेंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

# आर्यों की वीरगाथा-४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सामन्त्रित किया गया उन्होंने सपने व्या-स्थान से कहा ऋषि दयानन्त की सब बाते ठीक व हितकर हैं परमु एक बात उनकी ठीक मही। ऋषि दयानन्त के मुर्तिपुत्रा का खण्डन किया है। जब मुर्ति से भी भगवान् है तो मूर्ति पुत्रा से क्या दोष है। इस विषय से स्वामी विवेकानन्त का मत ठीक

यह बात सब ने सुनी । धार्यसमाज के सिद्धान्त प्रेमी सज्जनो को यह भत्रामाणिक बात पुत्री। श्रीप० रामचन्द्र वी देह्नसवी बञ्च पर विराजमान वे। प्राप वठे धौर बपनी सुन्दर शैली मे बोले - ईरवर खब व्यापक है। यह ठीक है। वह मूर्ति ने भी है, यह सत्य है परम्तु परमास्मा का झारमा से मूर्ति में मिलाप असम्भव है। कारण परमारमा तो वहा है, बात्मा मेरा या बापका तो मूर्ति ने भुस नही सकता, घत मूर्ति पूजा निरयंक है। वहा बात्या व पर-मातमा दोनो हैं बड़ी दोनो का मिलाप होना, धौर वह स्थान है हृदय मन्दिर। प० जी की इस निर्मीकता व सिद्धान्त रक्षाका सब पर मज्हाप्रभाव पडा। धार्यसमाजकायश फैलाने के लिए हुमे ऐसे विद्वानो का अनुकरण करना होना। रावनेतामो की चादकारिता से तो हम दूबेगे, उमरेगे नहीं।

कत्तंव्य की पुकार विवाह पर नार

शास्त्रायं महारथी की प० शास्त्रित्रकाशका विवाह था। श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार विवाह सस्कार के लिए वए। मार्थ प्रतिनिधि स्त्रा प्रजाब को विवाह के सारे कायक्रम का पता था।

विवाह सस्कार हो रहा या कि की स्वामी स्वतन्त्रानम्य की का तार पहुँच गया। भी प० बुबबेव जी ने तार खोल्य पढ़ा व सुनाया। तार में तिब्बा या कि लाहोर में शास्त्राएँ है बीझ पहुँचे। प० शान्तिप्रकाश की पत्नी को घर पहुँचा कर बहातनिक न दके। एक दम जाहोर को प्रस्थान किया। साक्ट वहाँ खास्त्रार्थ को प्रस्थान किया। साक्ट वहाँ खास्त्रार्थ को स्वामा।

पाठकवृन्द । क्या इस घटना पर विष्णपाठी की सावस्कता है। साज के सोवावादी जुम में Honey moon (विज्ञासवाजा) के फैशन से हम इस घटना का मुस्माकुन करें। धार्यस्वराज का यहो-वाहस्माकुन करें। धार्यस्वराज का सहो-सोर सागे ती होता।

"मैं विकाऊ माल नहीं"—
महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व व

साध्यात्मिक प्रभाव से रावस्थान के एक तपस्यी महारमा कानुस्तम जो योगी पार्य-समाजी बने। साथ ने सार्यममा जो सो सेवाएँ भी हैं वह सदा स्विस्सरणीय रहेगी। बोचपुर के महाराजा सर प्रताप तिह व प्रयेज भन्त थे। प्रयेज की उन पर ऐसी कुरा दिल्य थी कि गोगो ने जितने Tilles (निताब) एन्हें दिये, उतने किसी भी और राजा, महाराजा, नवाज व निजान को न दिये। इसका रहस्य ता प्रतायतिह का गुणगान करने वाज जानने हों होगे। मही महाराजा सर प्रतायतिह सपने को सार्यकामाओं भी कहन थे।

इन महाराजा साहब क प्रेमी भक्त वे स्वामी प्रकाशानन्द जी। उन्होने महा-राजा साहब की घोर से महात्मा कालू-राम जीको एक पत्र सिखाकि साप जोघ-पुर महाराजा साहत के साथ जुड़ जावें, भापको बहुत धार्थिक सहायता दी जावेगी। प्रतिमास ५०६० रुपये मिला करेंगे। महास्माक। लूराम जी ने स्रविलम्ब उत्तर दिया कि मैं विकाऊ माल नहीं। मुक्ते बन भीर ऐश्वयं नहीं चाहिए। मुक्त तो बेद का, प्रभुका और ऋषि गाक्य रना है। दु स सुस सहकर प्राजीवन पार्यसमाज की सेवाकरने वाले, प्रलोभनों को ठक-राने वाले सुला-साज पर लात मारने वाले पूज्य महात्मा कालूराम जी का यह उदा-हरण धार्यसमाज के प्रत्येक सेवक की कर्तव्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ईश्वर करे कि हम तुच्छ स्वायों के लिए वेद मार्गसे स्युतन हो । स्रथ के दास न बने कार से न प्रवरायें। वेद प्रश्न पर कुछ कष्ट सहन करना भी पड तो विचलित न हो। यह घटना तत्कालीन पत्रों में छपी भी। महात्मा जी का सह पत्र हमारे रिकार्ड मे है।

# किशोरमञ्च-

# चीर बालक दुर्गादास राठौर

कोवपुर नरेज महाराज यवावत (वह बी के पार उनकी सींविनियों (उटनियों) के रक्षानें ने यह पूजना पहुजार कि एक सोबारण किसान के जबके ने एक साविनी को मार बाला है। महाराज ने उस किसान को पवककर साने को कहा किसान का नाव मा साविकरण, नह राठीर राजपुत ना। महाराज के सावने साने पर उसने सपने साजक को सावे करके कहा— ीसान् का सपरायौ यही है।

महाराज ने कोच से डांटकर पूछा— 'पुमने खाडिनी मारी'' वासक ने निर्म-यता पूर्वक स्वीकार कर सिवा। पूछने पर पर छसने कहा—'मैं सपने खेत की रखा कर रहा था। शाविनियों को आते देव-कर मैंने जाने दोडकर परवाहे को मना हिमा, परन्तु उसने मेरी बात पर क्यान हो नहीं दिया। हमारी क्यस नष्ट हो बायेगी हो हम बायेंथे क्या? बन इस साविगी ने मेरे बेत में नुख बासा, तन मैंने उसे भार दिया। दूसरी साविनियों और चर-बाहा भी मान यथे।'

एक छोटा सा बालक एक मजबूत उन्ह को बार बकता है, यह बात मन मे बनती नहीं थी। महाराज ने पूछा-'तुमने साहिनी मारी कैसे ?'

बानक ने इबर-उबर बेसा। एक पत्तासिया क्रेंट सामने से बा रहा वा। बह उस ऊट के पास बबा और कबर से तल- बार की कर उसने एसा हाय भारा कि उट की गरेंग उस गई। उसका सिर गिर पड़ा। महाराज उस बालक की बांरता पड़ा उसला हुए। उसे उन्होंने अप पास रक मिला। यही बालक इतिहास प्रसिद्ध भीर बुगंदास हुए। धौरण्येब जैसे

कूर बादसाह से इन्होने यशवतसिंह की रानी तथा राजकुमार ग्रजीवसिंह की रक्ता की। मारवाड राज्य का यवनो के एजे से इन्होने ही उद्धार किया।

---प्रस्तोता बलजीत शास्त्री

#### श्रमृत कलश

उपका

वों रहीम सुख होत हैं उपकारी के सज़्ता। बाँटन वारे के लगें ज्यों मेहदी का रक्का।

बीका नो जनसर से उपकार बन्धुमो। जो समुद्र से नियाहम पेंद्वी वरसायमा॥ उनसीयासस्य प्रेस्पाचरन हैं साम स्वसङ्गतियौरहरिजञन, दया, पर्मे उपकार॥ मिलाकम उत्तम जुके, कर के कुछ उपकार॥ समयन यह फिर सिकसके, जीवासन नहार॥

श्रीकारपद प्राप्य नोपकार करोति य । सकारी कोपमात्रेश ककारतित्वता त्रजेत्॥

को समिकार पद को प्राप्त करके नी उपकार महीं करता उसके जीवन की विक्कार है। व्यासपीठ--

#### उपनिषत् कथा माला-१०

# परमात्मा विचार

#### लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

इस भद्नुत भ्रपार ससार को देख कर परमानाकी महान महिमाका ज्ञान मन मे स्वय उत्पन्न होता है। वह इस सव मसार का घाषार है। उसके ही प्रभाव से हर एक वस्तु में प्यार है और उसको भूलकर मनुष्य हर प्रकार से दुसी होता है। जीवन क निए सामग्री की थकरत थी। उसने सपनी कृपा से हर एक को उसका दान दिया भीर साथ ही यह भी बता दिया कि मुक्त को भूलकर धपने जीवन को न विद्याना । भक्ति वह सुप्रकर्महै कि सगर काकोई भीकाम इसकी बराबरी नहीं कर नकता। सासा-रिक वस्तुकों के सेवन से जो फल प्राप्त होता है उसका सम्बन्ध ससार के साथ ही है। वह ज्यादा देर तक नहीं रहता, वह नाशवान है भीर जो परमात्मा की बाद से पल निकलना है वह सर्वेव स्थिर है भीर उसके बराबर का कोई नहीं है, परन्तु मनुष्य उसको भूल जाता है। परमे इवर की यान्य मनुष्य को प्रसन्त कर देती है भीर इसको शुभ कम करने के लिए झागे बढाती भीर बुरे कर्म से पीछा छुडाती है। उपकार भूलादेने वाने का सशार मे नाम नही होता, वह इससे स्वय सताया जात है भीर भन्त मे पञ्चात्ताप करता है। परन्तु क्रिर भी कुछ, बन नही पाता है। कोई मनुष्य किसी का उपकार करता है भीरकोई किसी वे साथ सहानुभूति करता है कोई किसी को जरूरत के समय बाराम पर्वेचाता है बीर कोई विस्ते हुए को हाय का सहारा देकर उठाता है। किसी ने किसी को बन से सहायता दी भौर किसी ने दूसरे को नेक राय दी। ऐसा देखने मे आता है भीर समार का कार्यक्रम इसी से अच्छा चलता है। कोई एक मनुष्य न सब से सहायता ले ही धकता है भीर न कोई सब को सहायता दे ही सकता है। यह बात किन है भीर न सब मिलकर सब स सहायता न सकते है भीर न दे ही सकते हैं। परस्पर महायना से समार चल रहा है।

पर तुएक परमात्मा सबका कल्य रातमा प्रणीमात्रका सद्यारा सात्र में त्यापक ग्रीप्त सात्र में स्थापा है। कोर्ने भी श्रीज एसीन ने जै जो ता इसको सहा स्वता कं स्थापने स्थापी (अर्थिसस्व) के कियर स्वासके पिर एसे दता के दान को भूळ आगाएंगे 5-भूको स्थान में स्व लाना स्वय ही घपने को प्रमाद के फताना है। यह दुदियानों का काम नहीं, यह हिंग की मानदेश नहीं। यह काम की सहन्त्र पारर क्षती है घपने विचार को दघर से हटा सिवा, जिससे सुभ काम में सुरती घोर उरे काम में पुरती होना करते या। समय हाय से जाता रहा घोर दस प्रमात किनों को स्टाकर वैरियों को हमाता रहा।

सत्य है भूल से जो कार्य किया जाता है उसका फल कब सामने बाता है यह मनुष्य नहीं जानता । यह भी सत्य है कि सासारिक लोगसब को इस सदारकपी जाल में फवाता है। अपनी चतुरता से सब को सस्य पत्र से हटाकर कुमार्ग पर ले बाता है। यह सासारिक लोभ हर समय मनुष्य को प्रथमी घोर बाकवित करते रहते हैं। मनुष्य जानता हुआ भी इनके फेर मे पड़ा रहता है। यह सोम हर समय मनुष्य को घोडा देते हैं यह मनुष्य के क्षिए मिल के मेव वे शतुई । जब पहले पहल मनुष्य ,नके चक्कर में फँसता है तो ग्रास्तिकताको छोडकर नास्तिकताकी धोर बढता है पाप पुण्य में भेद वही कर सकता। तृष्णादेसने मे समृत, परन्तु धसल में विष से भी बूरी है।

विद्वान पुरुष सम्बोसते हैं। उनको सत्य से प्रेम होता है। प्रभू को सत्य से प्रेम है इसलिए वे परमात्माके समीप होते है। उनका कथन है कि अब सासारिक क्षोभो की वासना जाती रहती है, तो यनव्य के भीतर ज्ञान की वृद्धि हो जाती है। किर उसको हुर वस्तु भ्रापने वास्तविक रूप मे इष्टिगोचर होती है, प्रन्तरात्मा की शुद्धता धारमा को परमास्मा से जा मिलाती है। मनुष्य का वास्तविक रूप यही था। यहापर ही मनुष्य का कार्य समाप्त हो जाता है। परन्तु इस कार्य के लिए जिनना परिश्रम करना चाहिए यह इसका इतना प्रेमी नही । जितनी चाह से ष्म ग्रोर बढना चाहिए। यह इमके लिए सैयार नहीं। इस समस्या को इस करने के लिए केवल घत्माकी खुद्रि चाहिए, इसके निहर गरित्रम निष्कल है। यह मूल्यकी बस्तुननी यह बहरी योजना नहीं प्रत्न नो यनस्य के प्रन्तात्मा को द्मावाच ै जो सरो नरपकदनादैती है। 'इत्र ण तिको ने गिन तो वहाँ रे बना है और न नास्तकों से परे हट कर कही जाता है। यह तो सर्वच्यापक है, हर स्थान पर हर समय करस्वित है। मनुष्य ने तु उसको पाने के लिए कही हूँ कर हा है ? बास्तव में तह हो हैं दे सीवर ही है, परम्तु तु उसके ससावचान है, वह तो तेरे की तर से हैं परन्तु तु उसे हूँ हो के लिए बाहर पूम रहा है, वह तो हर पमय वेतन हैं परन्तु तु उसके हैं, तु ससार में स्थान है परन्तु तु उसके हैं, तु ससार में स्थान है परन्तु तु समय है के सह पाने साव प्रकार से ही परन्तु तु समय एक स्थान है परन्तु तु समय एक स्थान है परन्तु तु समय एक स्थान स्थान

गह सब भूमण्डल उसी से उत्पन्न

भौर उसी ने समाप्त हो चाता है परन्तु वह इन दोनों धवस्याओं से विरक्त है। वह एक है क्यों कि दूसरा कोई उस जैसा नहीं है। वह दूर से दूर धौर समीप से समीप है। वह बड़ से बड़ा और छोटे से ओटाहै।यही कारण है कि को सुक्त रुष्टि वाले हैं वे उसको देख सकते हैं परन्तु को स्थूल इच्टि वाले हैं इनसे वह दूर भागताहै। जो इसका इच्छुक है, वह साहत वाला है, क्योंकि बालस परमात्मा को नापसन्द है। विद्या, सन्तोष भीर नम्रता नाहस को बढाते हैं। ईर्ष्या, द्वेष भावि साहस को चटाते हैं। इसलिए मनुष्य को सुनकर्नों में मन जनाना धौर दुष्कर्मों से मन हटाना वाहिए। मन्त्य को ऐरवर्य थन सुझ सम्पत्ति भोवते हुए परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए धौर दक्षित स्वस्था ने भी सतीय को कभी हाथ से नहीं छोडना चाहिए। इस प्रकार रहने से हृदय दर्पण जुद्ध और मन साफ रहता है। शहकारी और लोगी पुरुष यह सुनने ही डरता है। जोभ एक प्रतार का व्यतन है, विससे अलाच्या मनुष्य भी व्ययनी होकर उल्टे नार्ग पर चल पहता है। व्य-सनी पुरुष की तृष्णा बहुत बढ़ न त है। वह दूसरों को सुख में देखकर ईर्गावश होकर ववराता है। जैस मिलानी का पात्र क भी नहीं भरता, वैसे ही को भी पुरुष को कभी सतीय नहीं होता । ऐशी अवस्था में परमात्मा का मिलाप कहा ? तुथ्या, लोग एक प्रकार का फन्या है, जिसमें एक बार फैंसकर फिर उससे खुटकारा घसम्भव है। सतोपी पुरुष को इसका ज्ञान है। प्रमू अक्तो के लिए वह हर स्थान पर है। वह एक देशी नहीं परन्तु हर देशा व हर वस्तु में हर समय रम रहा है। परमात्मा सत्य है, बहु प्रेम है, तुम भी इससे प्रेम करो।

समलने का समय है समलो और अपना जबार करो । यह एक रस रहने बाला है, कभी नहीं बरकता । इसर-उपर विवार याही दूरों, परन्तु वस तक सम्बरास्मा की सुद्ध नहीं होती तह तक उसरे सिवाय गढ़ी हो सकता । जो बिहासु उसको पनित्र तत तथा सन्ये मन से चाइता है, किसका हुन्य भूत तथा मन सन्तरास्मा इन सावारिक प्रकोशनों से दूर है को मनुष्य उसके प्रेम हर समस सन्त है, वह उस की सपने सन्तरास्मा के शीतर ही देख लेशा हो तस स्वारास्मा के शीतर ही देख लेशा हो

ऐसा शक्तिशाली व्यक्ति जो हर प्रकार से सम्पूर्ण है, जिसमे कोई जुटि नहीं---उस का पता सब से पहले हमे बेसी ने विया । वेदों ने हमें बताया कि यही ६०८ है, यही पूज्य है इसी की ही उरासना करना हमारा भनिपाय है, इसी को पाने का यत्न करो । वह एक है, वह सांसारिक तथा जाति बादि के बन्धनो से स्वतन्त है। ईरवर की सामन्यं में यह बात मामूली है कि उसने सर्व ससार को रवा परम्यु स्वय रवनामे न भाना उसका एक सर्व-श्रेष्ठ नियम है। सुष्टि उत्पत्ति के श्राव भने बुरे का ज्ञान कराना धीर बाद में कर्मानुसार बैसा किसी का कर्न है, न्याब पूर्वक दण्ड या फल देवा, उस काडी कर्लब्य है। वह अपने श्रेष्ठ मुणो के कारण सवा अवेक्ट है। परन्तु मनुष्य को भूस खताती है भीर प्रमुख्ट कर देती है। परमेश्वर के ब्रस्तकी स्वरूप की न जानने के कारलाप्रकृति तथा वह पदार्थी की पूजा धारम्भ हुई।जो मनुष्य ग्रसली तत्त्वन जानते हुग्गुमी को ही अपना ... चपास्य देव मानना सपना कत्तका सम-मते हैं वे बार-बार इसी ससार मे चक्कर नवाते रहते हैं। सस्य है को मनुष्य श्रस्य मार्गको छोडकर कुमार्गको सपनाता है, उसको कथी भी निर्दिष्ट पथ प्राप्त नहीं होता, जो मनुष्य सत्य और ग्रसस्य के मेर को जानकर सत्य को धपनाता है उस से कभी दुष्कर्म नहीं होने पाता न्योंकि उसकी ज्ञान है कि मना कार्य प्रकृति के नियम **सनुसार है भी र दुष्कर्म प्रकृति के नियम** 🕏 विपरीत है। इस निए शान प्रकास मनुष्य को अपर चठाता धीर प्रज्ञान कपी धन्यकार मनुष्य की नीचे विराता है।

बृहता, साहस तथा स्क्रांत साम करू परिखाम हैं। दुष्कर्म, का दरतः भीर आवस धन्नान से उत्पन्न होने हैं। इसी कारख जान से अन और धन्नान से घृणा पैदा होती हैं।

भारतनर्ष वेषो का मान रखता हुआ में स्थाप मार्ग की ऐसा पूसा कि प्रकास में भी हुआ भी पूसा कर राज्य है। कि प्रकास में में कि प्रक्षा कर राज्य ही कि प्रकास केंग्र हिस के दे चोरे भेव बढ़ने लगा। किसी न एक एकार की मूर्कि बगाई तो दूसरे ने उनभो इसरे ही डब में बारा किया है। इस के बात किया। इस प्रन्य रूपस्था ने बढ़न कर देव को बुठ है होगा खुड़ साई, बैड

#### परमात्मा विचार

को हर प्रकार के कब्टो ने भर दिया। कोई शिवपूजन मे कल्लाण मानता है तो कोई बिट्स के दर्जन से मील मानता है एक गरोग के बागे शीश भुकाता है तो दूसरा देवी की चौखट पर मस्तक रगडताहै, कोई इनमान को प्रयना इटर मानता है तो दूसरा यङ्गा स्नान में ही मुक्ति ढँवता है। भारतवर्षं की इस बेडबी वाल का कोई पतानही चलता कुछ तो सतोय होता सदि देश भर में एक प्रकार की मृति का ही निर्माण होता एक ही प्रकार से पूजन होतातो भी कुछ प्रशःक एकता बनी रहती। धार्यसमाज तो मृति प्रजन के बिरुद्ध है। इसकी दृष्टि में यह असत्य है, आरत के मनुत्यों ने करोड़ो रुपये के रुपय है मन्दिरों को बनावा फिर बापस में हेच बढ़ने के प्रतिरिक्त हाथ कुछ न बाबा । यह सब जात है कि इस समय देश की नया भवस्था है न घन है न बस भीर त बृद्धि। स्रविक कहने की भावश्यकता नहीं, दुर्वलता के कारण प्रव इसका समा-सना कठिन है। वह अपने बबार्य स्वान पर कैसे था सकता है जब कि कुछ ही समय के पश्चात् कोई न कोई सम्प्रदाय इसडाहो बाताहै भीर सहस्रो नरनारी बिना सोवे समभे उसके पीछे सन जाते हैं। ईदवर प्राप्ति भीर इस ससार से खुटकारापानाही सब की इच्छा होती हैं। श्रज्ञानी होने के कारण न तो कोई पूछता है सौरन इस पर विचार ही करता है कि यदि जिस पथ को उसने अब अर-नाया है सत्य है तो वह पहले गलन पय काही परित्यागकर देपरन्तु ऐसा नही होता । वह पहले पब का भी परित्याम नही करता और नवीन से भी चित्रटा रहता है। इस देश में यह एक अद्भृत बखेडा है, श्विसका निर्णय होना कठिन है।

विचारने से पता चलता है कि जिया प्रकार युद्ध रोड ने बार मोडे को खाइमा खाबा टट्टी पार करनी होती हैं, उस समय चोडा स्थाने पूर्च बस और वेब को लगाया है। ठीक इसी प्रकार से पिरकास से मार्च-खाति के साथ प्रतान लगा हुआ है। इस स्वाम के हाथ धन समय ध्याप है और स्वया को पाकर समया ध्याप है और स्वया को पाकर समया ध्याप है और स्वया को पाकर समया ध्याप है और स्वया करते में लगा रहा है। साथ विचार करते से कि हिन्दू मार्च जाति का नमनवा दिन प्रतिदिन कीत हुन्त होने बा रहे हैं?

हे मित्र ! यदि इस ग्रज्ञान से धाप श्रपना सुरकारा चाहते हैं तो एक "दश्वर के पुजारी बनो यह दु खहर्ता और कप्ट-प्रोचक है।

सपने जन्तों के कच्छों को यीछ दूर कर देता है, यदि सक्त बनायटी नहीं। संहु वेदों का उपदेश बड़ा हितकापी है। अध्यान का इस देख वा हिल्लू वालि ने वस

क्तिना उढा हुमा है, भाग विचार ह<sup>िट</sup> से वेस्रो।

- (१) जो सब बह्याण्ड का स्वामी धौर सब को अपने यह से रखता है, उसका नाम गएते या निष्पति है। यह तो ठीक है परन्तु जा पूछा जाय कि मन्दिर में एक मूर्ति दिखाकर यह कहना कि वस, गह मूर्ति ही जनता निकार है। यह एक पूछा करने से कल्याए होता है। यह एक एसी कल्याना है तिने कोई सी बुद्धिमान् एसा जानाने से इन्कार करेगा।
- (२) जिव वा महादेव उसे कहते हैं जो बरवारा का स्तरूप हो और स्वास्थ्य हो जिसका स्वरूप अञ्चल करण और समञ्जल हेप्ण है। उस विषय में वेद शास्त्रों की तो यही सम्मति है। पर, साजकल लोग एक पावास-पिक स्वरूप मन्दिन से पहल उसे ही महादेव कहकर पूजते हैं। देखिए कैंग्रा उस्टा गा है?
- (१) विच्या सर्वेच्यापक परमात्मा का न म है। यह सर्वेच्याद का प्राचार, निराकार धौर निर्यिकार है। उसका क्ष्माक कला मनुष्य के नियर कम्बायकारी है यह सर्व बिल्कुल सन्य है। परन्तु एक मन्दिर मे सुन्दर बतुर्जुंच प्रति को विच्या बनाकर पुत्रना कैसी मुस्ता है ? स्ती क्षकार धौर भी कई बातो में धावकस उस्टी गगा वह पूर्व है।

तीर्ण स्थानो की भी ऐसी ही व्यवस्था है। नहा धन्य विरवात ने राज्य जनाया हुमा है। लोग दूर दूर से बडी जनाया सैकडों कोस चलकर, धन वर्ष कर तीयों पर पुण्य तिजन करने जाते हैं परन्तु उहें दूरी नाह निराश होती है। पुराणों की निम्प्या वर्ष सुनने से विदिक का गन्न हास्त्री के नाता रहना है। हसी का पुण्यरिणाम बाज हम देशा है है। पहले का समय बार्ज वस देशा है है। पहले का समय बार्ज वस तो उसका व्यान में बाना सुक्रमय वा, धव तो उसका व्यान में बाना ही दूर की बात है। धारों की बन्नति के

(१) सब सवार का रचिता, सर्व प्रकासक, सर्वालयांकी, सर्वज, सर्व व्यापक परमेन्यर ही प्रायों का उलास्त वेब या उनका यह यटल विकास था कि हर्श्वर सारीर-रहित भीर शहितीय है। सतार की उन्नंति स्व पना धोर नास उली के हाल से हैं। न्यायपूर्वक सब प्राणियों को कर्मान्यार एक बेना उसका स्वमाप है। इसीनिए उक्की धात्रा का प बन करना समुध्य मात्र के लिए करवाएकारी है। इसी कारस्य उस प्रमुख सामते से शीर उन प करना वे कर्सव्य सामते से शीर उन प करना वे कर्सव्य सामते से शीर उन प करनी से हुए ही रहते थे। जो प्रमु- स एव एक बृदेक एव ॥ झ०१३।४।२२॥

यह मन्त्र भी उपरोक्त नाम का सूचक

(२) अर्थे सत्यवादी और सत्यकारी वे। रागद्वेय से भी नुठ बोलना इनका स्वमाव न था। इसी कारण प्रतिका पालन करना उन्हे प्राणों से भी अधिक प्रयथा। विस्नतिस्त मत्र इसी बाग का बोधक हैं—

इदमहमन्तात्सत्यमुपैमि ॥ य० १।५ ।

(३) क्लंब्य पालन तो उनके बिए निरम का हरमाव हो गया था। सलार की कोई मी वर्तु उन्हें नहीं हटा सकती थी। इस कर करण्य वह चा कि वे कार्य करने से पहने उसके परिचाम की घ्रवन्य ब्यान में रख लेते के चौर उस वक्त को मुद्द से निकालते ही न वे जिसे पूरा करने में बे सार्य न हो। निम्न सन्त्र इसी बात का जायक है—

कुर्वन्नेबेह कमिशा। य॰ ४०।२॥

(४) सनुष्य समास में "हरूर किसी को सम्याय से कच्ट न पहुंचे, सदा उन्हें इसी बात का विभार रहना था। उनके सन्त करण पतित्र में, उनकी मायना उच्च सी। ये परोपकार को कर्तस्य सौर उप-कारन करने को पाप समस्ते थे। कहा भी है—

बायुर्वज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ य० ६।२१ ॥

(x) वे स्वय न्याय का खनुबरण करते वे और प्रत्यों को कराते वे। उनका यह घटन विदवास का कि बहा त्याय का प्रकाश है वहीं प्रभुका निदां है। इस्तिए प्रत्यायम्क पत्रपात से हुए पहना, मनुष्य जीवन का एना मानते थे।

धाने नय स्पथा। य०। ४०। ७।।

(६) दुराचार के दूर करने धीर सदाचार के बढ़ाने में सालस्य को त्याव कर सरू करणा स्वधान वा। उनका सन् स्वसाख परिवृद्ध हुगचार में रक्कर मनु म समाज परिवृद्ध को सार है और स्वा-चार से उत्थान की बोर निरन्तर बढकर स्वाचीन हो जाता है। सत स्वाचार से सिस प्रकार उनकें पार या उसी तरह दुराचार से वेर था—

त्तनमे मन जिवमक पमस्तु। य० ३४।१॥

(७) प्रायों ने निरस्तर बदादि सारवों के प्रत्यात ने दानात्म के नतीत्म नियमों पर स चण्ण करना प्रथम सर्वे मान रखा था। और टसीनिये ने नीरोब, सुन्यर सौर सुरील करे रुगले वे धीर कभी बीमार हो जार पर भाषाराय, दसी समझा थोड परहेर से ही उनकी सबीसत ठीक हो जाया करती थी। उनका सह

पूर्ण विक्वास या कि दुवंतता हो सब दुर्लों स्रोर पायो का कारण है। इसीलिए स्वा-स्प्य को विवाडने वाली वानो का कभी साथ नहीं देते थे। इसका प्रमाण यह है—

वलमसि वल मयि घेहि ॥ य० १६।६॥

- (c) उदारता धार्यों के स्वमाय में उनके नियमों से प्रकट होती है। कोई भी पूरव धपने पुरुषायें से खंदा गुण करें, दमाव बना लेता वा समाज में उसे में ही स्थान दिया जाता था। इस प्रकार हर एक को उन्तर्ति करने का धिवकार था, धौर वर्णस्थवस्था की मर्यादा का मार्ये वहा ही सरल था। विद मूल प्रयदा प्रमाव से उनने कोई दोव धा जी जाता था वो वे बड़ी सावचानी में धगना पीखा खड़ा लेते थे।
- (१) बायं पुरुष कभी भी प्रमू उपा-सता में किसी सासारिक स्ट्रू की याचना मही करते हैं। उन्हें निरचम या कि मो बस्तु सपने पुत्रवाणें से प्राप्त हो समती हैं उसे परमेश्वर से मीनना पूक्त हैं। सत प्राप्त साथ ने ऐसे वचना पूक्त निकासने में कि हैं प्रमू प्राप्त का वियोग हमें बार-म्वार सवार कम पे प्लाना है सौर साथ सा सबोग मोल में लें जाकर नया हसाता है। इसीलिए हमें पापके दर्शनों की बडी समितारा हैं।

यस्तन्त वेद किमृवा करिव्यति ॥ ऋ्राः१६४।३६॥

(१०) प्रायों ने वैश्कि जान से प्राप्तमों के नियमों को इतना सरन बना दिया था कि जिनके पानन करने से चय, प्रयंकाम मोक्ष की प्राप्ति में नक से प्रचार के प्रचार

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति ॥ म १८।४३।८॥



मसल वे
मत्सद ग्राम अपकारको
कुचल वे
पातक प्रिम दुःग को,
उठा ले,
पाल क सहिनी बढ तू,
अवा वे,
जवती के उत्कव को।।

विभव साधन से ही रीता चल कब्ट की कड़ वाहद गीता चल लक्ष्य पर न्योध्यवर होते ही, असून प्रिया सन्तत जीता चला।

---भैरवदश शुक्ल

## पुष्ठ ४ से झागे वर्तमान चारित्रिक संकट: समस्या और समाधान

विधायक तथा सासद एक ही सत्र मे खास्त्रो लास्त्रो रुपयों में कई कई बार बिकते एते थे। ताममी लौह बुद्धि के ये नेता सत्तारूपी चुम्बक से बिच हुए अपने उन सिद्धान्ती की जिनके धाधार पर जम्होने जन।देत प्राप्त किया था निर्लेप-भाव से ठूकरा रहे थे।

भाज के हमारे भनेक नेता भसामा-जिक तत्त्वो को सरक्षण दे रहे हैं। भुनाव की राजनीति में गुण्डो का समयन मावश्यक हो गया है। कुछ नेतामी के भूनाव मे तो कभी कभी डाकू लोग भी ग्रच्छी भूमिका निभाते सुने गये हैं। ग्राज की न्याय व्यवस्था भी अस्त व्यस्त है। धनेक व्यक्ति धपने पद समवा पैसे के प्रभाव से त्याय को सरीद कर राष्ट्रीय चरित्र का हनन कर रह हैं। कहाँ तो राम के राज्य मे एक विगडी हुई इकाई को भी महत्व देते हुए राम ने सीता का परित्याग कर दिया था और कहाँ साज की बीमस्स स्थिति है, जिसमे सामूहिक रूप से चरित्र कापतन देखाजा सकता है। प्राप्त कठिनाई स ही कोई व्यक्ति क्षण्यरित्रदाका भादर्शप्रस्तुतकर पाता है। जब हमारे शासको, नेतामो तथा कराँचारो की ही स्थिति विगडी हुई है तब सामान्य नागरिक की तो बात ही क्या है। कहा है---

> 'राज्ञि घर्मिण घर्मिया पाप पापपरा सदा। राजानमनुबद-न यथाराजातका प्रजा ॥

'प्रजा घपने शासको का प्रनुसरसा करती है। यदि राजा धर्मात्मा है ता प्रजा मे घम बुद्धिका विकास होता है। जब राजा पापकार्यरत होता हे तो उसकी प्रका का भी पाष कार्यों म सलग्न होना स्वा-भाविक है। भाव दुर्भाग्य से हम दूसरी स्थिति के वातावरण में जी रहे हैं, जिसके परिवाम स्वरूप समाज का सामूहिक रूप से चारितिक पतन हो रहा है।

#### २ ग्रायकरादि की चोरी

प्राचीन कास मे प्रजा शपनी शाय का क्षठा अश राजा को सहच प्रदान करती यी । इस लेन देन मे राजा-प्रचा के सम्बन्ध बहुत मधुर रहते थे। प्रकाजन इस प्रतीक्षामे रहते थे कि रावकमवारी भाकर त्नसे राज्यका मध प्रहुण करने की कृपाकरे। सभी लोग वानत वे कि यह पैसाप्रजाके हित के लिए ही आपर्य होगा। जैसा कि कालीदास ने रघुवशी सम्राटो के विषय में लिसा है-

> 'प्रजानामेव मूत्यर्थं स वाम्यो वशियग्रहीत् ।

सहस्रगुरामुस्स्रप्टू बादते हि रस रवि ॥

धर्मात रमुवशी सम्राट प्रजा के कत्याए के लिए ही झाय के खुठे भाग के रूप मे उनसे कर ब्रहण किया करते थे। इन राजाओं का यह काय भगव न सुर्य के समान ही होता या, स्थोकि मूर्यदेव भी पृथ्वीसे बाब्प करूप में जिल्लाजना ग्रहुगा करते हैं उसस कही अधिक शस्य स्रोतो समुद्र, भील भादि से प्राप्त करके वह है—विटामिन वी के कैप्पूल में हुल्दी सारा का सारा जस पृथ्वा क कल्याण के लिए विकास देते हैं। रघुवशी समाट् भी इसी प्रकार से प्रपनी व्यक्तिगत सम्पत्तिको भी प्रकाके हित में लगादेते थे। महामारी बादि फेसन शयवा धकाल की स्थिति साजाने पर वे प्रजाको करमुक्त करके रावकोश से उसकी सङ्गायता किया करते थे।

बाज स्थिति बदल चुकी है । नदागण धपनी चुनाब की विजय को पाच वय तक मीज उडाने, यदा तथा अपना तथा अपने कुदुम्बियो का पेट मोटा करने तथा यन-मानी करने का आजापत्र मान लेत हैं। दूसरो झोर प्रचाकी स्थिति भी एसी है किलोब अपनी आय को छिपाने के सिए दोहरे बही साते बनाते हैं तथा अनेक प्रकार के काल धन्धे करते हैं। भ्रायकर विभाग के समक्ष उत्तरे साथे भाकड प्रस्तुत करक सरकार को भासों में घूल फाँकी वाती है। यही स्थित मायकर मणिका-रियो की भा है। व कुछ, चालाक सोगो की करनी क बाधार पर दूसरे सन्व-सीधे **- यक्तियों को भावका की द**ब्टिस देखते हैं भीर भनेक प्रकार सं उन्ह् उत्पीडित करत है। कुछ सीय जा दने-तन की कसाम नियुव होते हुव सरसवा संही इन समिकारियों से बुक्ति पा जात है। परिणामस्बरूप समाज से ऋष्टाचार पनप रहा है । तुलसा के मनुसार-

> 'सोइ सयान जो परवन हारः। जो कर दम सो वड भाचारी।। को कह कुठ मसक्तरी जाना। कवितुत्र सोइ गुनवत बबाना॥" [मानस ७।६७।३]

की स्थिति वनी हुई है, हुमारे चारिकिक पतन का मुक्य कारश है।

३. खाद्य सामग्रियो तथा भ्रीष-षियो मे मिचावट

भाजका व्यापारी इतना वालाक है कि पैसे के ब्राविरिक्त उसे कुछ सुमता ही नहीं । उनकी उस्टी-सीबी करतृती से वेशवासियों का कितना बहित होना, इस बात की इन व्यापारियों को कोई चिन्ता नहीं है। श्रीविध के का ने काम श्राने बासी कालीमिकों में प्रपीते के बीख, बन-स्पति भी में चर्बी, चाय की पश्चिमों में

सकडी का बुरावा, चावस, चीनी तथा दासों में सगभग उसी धाकार प्रकार के पत्यर 🕏 छोटे छोटे टुकडो की मिनावट की जारही है। इस प्रकार के कुकर्मों के परिलाम स्वरूप व्यापारियो को जिल्ला वन वचता है उससे हवारो जःसों गुणा जन-स्वास्थ्य की हानि हो जाती है। श्रनेक प्रकार के ऐसे रोगो का जन्म हो रहा है, जिन्हें हमारे चिकित्सकम्या कोई सजा देने वे भी ससमय है। कैसर, कुष्ठ, सधुमेह बादि भवानक बीमारियाँ व्यापारियो की इस बनलिप्सा का प्रतिफलन रहती है। इनसे खुटकारा दिनाने वासी भौविषयां भी इस मिश्रण के रोग से बाखती नहीं मिसाना, व्यवनप्राश में बावले की पिडिट के स्थान पर उनसे हुए धालू या सकरकत मिलाना, ज्यवनप्राश तथा विविध सव-लेहों ने मूल्यवान् पदार्थों को न मिलाना, ये सब ऐसं ही काय है। मिलावट की नेकर हमारे लमाज का जो साज चारित्रिक पतन विसाई पढ रहा है, **उसकी बीमस्सता को लेकर सैकडो** पृष्ठी को रनावासकताहै।

#### ४. शिक्षा तथा चिकित्सा मे भ्रष्टाचार

शिक्षातथा चिकित्साके क्षेत्री से भी बढ भवानक दग से हमारा चारितिक पतन हो रहा है। शिक्षक जिन्हे साज श्री नई पीढी का निर्माता तथा समाज का नुष कड्कर पुकारा जाता है, उनमे से ब्रब अनेक गुरुवण्टाल बन चुके हैं। एक भी बण्टा न पढ़ाना उनकी दादागिरी तथा प्रतिष्ठा का सूचक होता है। शिक्षक का व्यवसाय भव से कुछ वय पूर्व तक बहुत ही पवित्र तथा ईमानदारी से मराहुआ। माना जाता या। विकास की साथ सपने परिवय की तथा बहुत ही सुद्ध होती बी। साम नये प्रकार के शिक्षकों ने इस क्षेत्र मे प्रवेश करके इसे भी दूवित बना विधा 🕻 । ट्यूचन के नाम पर आहतो की सन्धा-शुँच जुटाई की जाती है। ट्यूशन पढाने बाले बन्यापक भूखे भेडियो की तरह से धपने आयो को देसते हैं और उन्हें ची झातिसी झ अपना शिकार बनाने के सिए विविध प्रकार के हुमकण्डे सपनाते हैं। प्रयोगात्मक परीक्षा में सन्हे सक पाने का यह ट्यूशन एक समोजमत है।

बाव की परीका पढ़ति भी ऐसी विकृत हो चुकी है कि उसमे इन नये प्रकार के शिक्षकों को अपनी मनमानी करने के चुने सनसर मिल जाते हैं। परीक्षा में कहाँ सीट समेनी, साल को केवल पास होना है या ब्रितीय समया प्रथम नेखी की विश्वताचा है, इन सबके समय-असम भाव रहते हैं। ह्यारों क्पवे बेने में समर्थ करीकाणीं विशेष परीका-क्या ने बैठने का समिकारी होता। उसकी सेवा में विशिम्न विषयों के शब्दा-पक सबस्यमुक्त स्पत्तित रहेंगे।

कभी कभी प्रश्न पत्नो को समय से पूर्व वितरित करके भी प्रभूर मात्रा मे थन कमा लिया जाता है। 'श्रवध विश्व विवासय द्वारा संवासित १६८४ ई० की सी॰ पी॰ एम॰ टी॰ की परीक्षा वी बार हई थी तथा फिर भी वैसी हो पुनरा-वृत्ति होने पर किन्ही कारणी से उसे वीसरी बार भायोजित करने की माग को नकार दिया नया था। १६८४ ई० मे इसी प्रकार दिल्शी विश्वविद्यालय' की पी॰ एम॰ टी॰ की परीक्षा में भी अनेक घोटाले पाये गये थे, किन्तुवहाँ के कुशस **बिलाडियो ने यथा-तथा दूसरी बार**ी परीक्षाहोने की स्थिति को बचालिया आहा जब विश्वविद्यालयो की ऐसी स्थिति है तो विभिन्न बोर्ड जो उनक खुटमस्या है, उनकी करतुती पर प्रकाश डालने मे ती सम्भवत वेद व्यास जी भी समर्थ न हो

शिक्षामन्दिर, को कभी वरित्र निर्माण के मुख्य केन्द्र होते थे, वहा चरित्र हनन का एक इस से भी कुरूप तथा वीत्रत्स रूप देसने मे भारहा है। सह-शिक्ता के नाम पर धनेक सस्याक्षी में इतना भ्रष्टाचार चल रहा है कि प्रति-वर्व लडकियों के विवाद को लेकर दो-चार हत्याएँ प्रथवा झात्महत्वाएँ हो जाती है। जिस देश में महर्षि दयानन्द औसे तपस्वीर हुए हैं जिनके जीवन में सबस ही सब से बटाघन रहा है वहाउनकी भावनाओं के विपरीत प्राय सभी सस्याओं ने सहस्थिता चल रही है। स्वामी जी एक बार बगा में स्नाम करके उसके तट पर ध्यानमान बैठे वे । उनके सन्यासी वेश तथा तेज से प्रभावित है कर स्नान करने के पद्यवात् किसी नारी ने अपन मस्तक से उनके चरलो का स्पर्ध कर दिया। स्वामी जी हडवडा कर उठे, मा माँ कहकर उस मुक्ती की इस चेव्टा पर बायित की और प्राय-विकत्त स्वरूप तीन दिन भोजन प्रहरा नहीं किया वा। उस महापुरव के देश मे विद्या की प्रधी उठाने वाले तथा शिक्षा का दिवासा निकासने वाले खात्रों की सस्या धाज दिनो दिन वढ रही है। इस बीजस्स प्रसग में इस से प्रचिक कुछ सिकाने में मुक्ते सकीच होता है।

शव एक बृष्टि अपने देश के चिक्रि-त्सालयो पर भी डाल रहा हूँ। जीवन दान देने वासी, जनता के दुक्त दर्द को कम करने वासी इन सत्वाओं में भी धनेक प्रकार का भ्रवटाचार पनप रहा है। निस्प-व्रति समाचारपर्वो मे चिकित्सको द्वारा किये गए दुव्यंवहार की चर्चा होती रहती है। सनेक राजकीय विकित्सासर्वी से केवन सम्पन्न व्यक्तियों को ही सुविवाएँ निसती हैं। नरीन भादमी अपके साकर, बाक्टरों तथा नसीं द्वारा प्रतादित होकर प्राय, निरास ही सीट बाला है। धारीन्व-प्रव मूल्यवान् घोषणियां इत प्रस्पतासी वें नवारव रहती हैं। नरीकों की सम्बी साइनों को निपटाने के बिए डाक्टरों के

#### ५ रिश्वतमोरी तथा भ्रष्टाचार

प्राय सभी राजकीय कार्यालयो की क्राज ऐसी स्थिति है कि 'बिन रिस्वत या विना भिक्तारिया, बनता कोई काम नही है किसी भी कार्य के लिए बावदन कर्ता द्मपने प्रार्थना पत्र के साथ कुछ भेंट पूजा श्चवःय करना चाहता है। हमारी मानसि-कताइतनी गिर चुकी है कि यदि कोई क्यक्ति अपने सिद्धाती के प्राधार पर वा किसी अन्य कारसा से रिश्वत नहीं लेता, तो बावेदक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह काम होना ही नही। इस प्रकार की मानसिकता के पर्याप्त कारसा है। अनेक ब्रार्थनाः व दफ्तरौं की फाइजी में रखे-रहे ही गल जाते हैं। भेट-पूजा के विना कोई पाइस एक मेज से दूसरी मेज पढ़े-चनी समव नहीं होती। समी दफ्तरो श्रदासनी तथा मंत्रालयों में बाज सुविधा हो "लगी है। यह सब हमारे सामूहिक बारिजिक पतन का क'रण है, जिसका अवेव प्रमारे खासको को जाता है। इस कुरूप काभी में सकेतमात्र कर देना ही यद्योप्त समझता हू। हमारे ग्रहमत्रालय विदेश मत्रालय तथा प्रचानमत्री के कार्या-अन्य तक विद्याहमा गूप्तवरो का जाल हमाने इस चारित्रिक पतन का ज्वलत उताहरच है। भाज के हमारे न गरिक को धपने सकुविन स्वायं के लिए समाज क्यापुरे राष्ट्र के विनाश की भी नोई चिन्सा नही है।

#### चारित्रिक सकट की समस्याग्री का समाधान

सम्प्रति हुमारे देश मे पारवात्य सञ्चला के प्रभाव तथा हमारे दुर्भाग्य से ऐसी स्वित बनी हुई है कि प्रशिक्तियों का द्मावरण कुछ प्रयों में शिक्षितों से प्रज्ञा है। परित्रहीन न्यक्ति ग्राज समाज मे धारना मस्तक ऊँचा उठाकर गर्व से चलता है। मन्द्य पैसे के पीछे पामल हो रहा है धीर समाज के पश्चद्रष्टा हुमारे नेतावस्य ही पबच्चष्ट हो रहे हैं। मत चारित्रिक सुभार भी तभी समव दैजन नेताओं के चरित्र का प्राम सुधार होगा। हमारे श्वासव तथा विद्यायक गण देश की भनाई के लिए प ने चरित्र की रक्षा को सर्वो-परि महत्त्र दे। ये नेनागण भगवान् को ाक्षी करके गिश्रान की रक्षा का जो सकल्प केते है तथा मिलमण्डल में प्रवेश पाने से

पूर्वको कुछ प्रतिकाएँ दुहराते हैं, उन्हें पूर्णकरना धपनानैतिक दायित्व समर्भे। ऊपर से प्रकाश सिक्षने पर प्रजाका करियकल स्वन ही बढगा।

हुमारे उद्योगानि तथा व्यापारियो की साठ गाठ भी ऊपर तक रहती है। चुनाव के नम्म पर लाइको रूपय देने वासे उद्योग पति ही धपने व्यवसाय मे सुलकर मनमानी ररते है। यदि इश क्रुना से हमारे नत'न्नो का चरित्र सुधार जावे तो इन उद्योगपतियों की बुद्धि ठीक होने से फिर श्रविक समय नहीं त्येगा। करों की जोरीका **बहुत कुछ**, सम्बन्ध स्रायकर, सम्पत्तिकर, विज्ञीकर आदि के अधिका-रियो से होना है । सार्वजनिक निर्माण मे ∎मारी सडको तथा पुलो के बीघ नष्ट होने का विशेष उत्तरदायित्व उन प्रशिय-न्ताओं का होता है, जो धपना सुविधा मुन्क लक्र बिनानिरीक्षण परीण स ही ठेकेदारी के बिली हा भुगतान करा बेते हैं। जिस दिन श्रीभयन्ता गए। तथा दूसरे उच्च ग्रधिकारी ग्रपना सुविधा गुरुक समाध्य कर देंगे ठेकेदारों की बुद्धि स्वत ठीक हो जावगी।

जहा तक हमारे शिक्षालयों के दूषित दातावरण का प्रश्न है शिक्षा पढित नवा परीक्षा पद्धति मे आमूल-च्ल परिवर्तन करने की चर्चाइन दिनो सभी मोर है। सभी विश्व विद्यालयों के कुलगति, हमारा जिलाविभाग, जिलामत्रासय तथा देश के प्रधानमंत्री तक इस विषय ने चिन्तन बीत हैं। पण्मात्मा उनके परिश्रम को सकन करे। इस सम्बन्ध में मैं यह भी धानस्य कहना चाहूना कि सहशिक्षा कम से कम माध्यमिक स्तरपर किसी भी कप में स्त्रीकार नहीं की जानी चाहिए। स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी ने हमार जीवन व उत्थान के निमित्त सनेक उप देश दिए हैं उनमें स्वामी जी ने सर्वाचिक वल इस । तपर दिया है कि नारी शिक्सा की पूरातः पृत्रकृब्यवस्याहो । भावी पीडी के चरित्र-निर्माण के लिए वह बहुत धावश्यक है। हमारे धनेक नवयुवको का पत्तन यही सोवत सोखते हो बाता है -श्रयो क्यो धनवाहत को सग<sup>7</sup> धनेक कि भोग सूर के इस पद को दुहर ते हुए---बा २० भी प्रीप्त कही सालि कैसे खुटै समाज के सामने चरित्रहीनता के कुल्सित प्रदशन ॰ ग्ते हैं तथा बनेक बार भारम हत्या कर गर भी विवश हो जाते हैं। सहिक्तिकाही इस कुरू ताका मूल है। उसको समाप्त कर देना नितान्त भाव-स्यक है।

णिणा से नैतिक जिला तथा वार्षिक चित्रा का भी उदित सक्येचेश होना स्व ब-त्यक है। हानादी सिक्षा भारतीय परस्परा के भनुकूल हो सौर पाठ्यकम से च्यारिकिक गुणों पर विभेव ज्यान दिया जाना साव-स्वक है। दितता सच्छा हो यदि हमारे बालक 'देंडी-मन्मी' को परस्परा मुझाकर सपने वरो में विपुक्त मारतीय परम्परा की सहुए करे सीर िलालयो का वातावरण प्राचीन प्रवीचानन के निर्मल सांव 
हमारे नमाज में सप्रे में निर्मल सांव 
हमारे नमाज में सप्रे में निर्मल मानता 
को मी नाट करने ने निल् हिनी के 
विकास की सोर च्यान देना होगा। जिस 
दिन हम सहकृत भाषा तथा सपनी सक्कृति 
का धाइर करना सीखेंगे वह निक्यम 
हमारे देश कर इतिहास में सुभ दिन होगा 
और चरित गामां में दिशा में बटने के 
सवसर भी हमारे दिशा निर्माण 
स्वीच रच्यकर से चरित निर्माण 
स्वीच रच्यकर से चरित निर्माण 
स्वीच रच्यकर हो चरित निर्माण 
स्वीच हम्यकर हो चरित निर्माण 
स्वीच 
स्वीच हम्यकर हो चरित निर्माण 
स्वीच 
स्

- १ विष्यं कल्यासः की भावना भ्रमनं सन में रखनाः।
- २ धात्मबल तथा धात्मज्ञान के विन्तन पर ध्यान देना।
- ४ ज्यसकल्पी वर्ने शास्त्री में स्ट्रा है — क्रजुमयोध्य पुरुष सर्वात् मनुष्य जैवासकल्य करने नता है, वैद्या ही वसका झायरण हो जाता है धीर जैवा सह झायरण करता है, बीरे-योने वैद्या ही बन जाता है। इस प्रकार स्पट्ट है कि स्थाने चरित्र का बनावा-विवादना हमारे हाय है। कहा भी है—

'यादशै सनिविशते यादशास्त्रीपसेवते । यादग्यच्छेच्य अवितु सादग्रम्भवति पुरुष ॥

- १ प्रसबद्धांक से लीन रहना हैस्बर को मानने वाला अस्ति, जो यह समफता है कि प्रवान जबके प्रयेक भन हुरे का को देखता है, हमेशा पान से वचने का प्रपास करेगा। कहा भी है— मनुष्य हर समय प्रवान कोर मीत को स्वाद रखे। इस प्रकार के निज्ञत से ब्रा पाइकस से निवदय हुंदूर दूशा है।
- ६ व्यक्तियत सदावारमय जावन ससार के मनेक कुकम प्राय क्रिया-प्रति-क्रिया का प्रतिक्लन होते हैं। जो व्यक्ति सुद्ध सकटन के साब सिक्सी आ स्थिति से दूसरो का श्रहित न करन का सक्स्य नेता हैं। यह प्रतेक लोगा को सक्स्यितता का साठ प्रता दता है।
- ७ दुढि पर नियत्रण रक्षना—एक प्रसिद्ध क्हाबत है - दुद्धि से दिवार, चित्रार से क्रिया, क्रिया से प्रदृत्ति, प्रदृत्ति से सुक्षा सक्षा गुणों से स्थक्ति के परित्र का

निर्माण होता है। अत व्यक्ति के लिए अपनी पुढिपर नियतण रखना नितात आवस्यक है।

- प्रयाग जीवन का मधुग बनाता— प्रत्येक व्यक्ति का ध्रपना जीवन सिधक से स्रियंक मधुर बनाते का प्रयाम करना पाहिए। यदि वह धपने स्वभाव को उदार, दयानु सहिरागु तथा नम्न वना ते तो उसका स्वय का तथा दूसरे धनेक मनुष्यो का जीवन सुलमय वन सकना है।
- ६ तारीरिक स्वास्त्य का ध्यान— मानव घरीर ईश्वर का मन्दिर मी है और यहां ज्याबि मन्दिर भी है। त्वस्थि के नियमों का पालन करना वाला नारिक न्वय प्रसन्त रहता है तथा प्रयन परिवार सम'ज और पूरे वालावन्या को प्रसन्त रचना है। स्वस्थ घरीर से ही स्वस्थ मन्दिनक सम्मब होता है तथा खबी संस्थान में सम्बर्धित से तथा बची सामित में सम्बरित्या की भावना साती है।

म्सने वाविरियत निस्दु प्रेम तथा मधुन वाली का प्रधोन भी सम्मरितता हुर्गुली का लग्या है। परित्रसार व्यक्ति हुर्गुली का निज्या करके सपने बाद उत्तम मुख्यों का विकास करके हिंदी । परित्र एक हीरा है। प्रधेक व्यक्ति का समें है कि वह हमें यस शक्ति एउउदल दनाये। यदि व्यक्ति नाल के पुष्ठ पर सपना कुछा विदेश पिल्ल लोका चाहता है तो सम्म-रित्रता उसकी प्रथम सावस्थका है।

धाज अनेक मनुष्य शका करने हैं कि यह कलियुग है और इस यूग में चरित्र वान् बनप्ररहनातथा धर्मका पालन चनासभव नहीं है। वस्तव में यह घार निराधाकी बात है और चरित्र हनन के लिए इस प्रकार के विवार सब से वातक सिंख होते है। यदि हम ऐसा सकल्प करे कि चरित्रहीनताका सार्गव्यक्ति सद्या समाज के लिए वत्याणकर नहीं है भीर स्वधम निधन श्रेय का सकप लकर रदताम उपयुक्त किद्वातो ५**र इ। चरण** करे ता मारम्भ पे कठिनाइयाँ नन ही रहें विन्तु बाद मे इतना सुख तथा सुबक्ष मिलेगा कि हम उन प्रारम्भिक कठिना-इयों की विल्कुल भूल आयेगे। प्राच हमारे लिए परमावश्यक है कि हम सभी दढस करप ले – 'चरित्र ही कीवन है। ●

# निर्दाचन

प्रायंसमात जारी सामपुर का वाधिक निर्वाचन १२ ६ ८५ को ओ प० हरदेव जी को प्रध्यनता से सम्पन्न हुमा । प्रधान — श्री वेश्वनत्व जो उपययना — श्री वेश्वनत्व सम्ब्री — ककाराम उपसन्ती — सुधीराम जी कोषाध्यक्ष — श्री सती प्रकाश देवी पुग्तकाध्यक्ष सोमप्रकाश कलागम जी (सम्ब्री)

धायसमाज शादी स

महामन्त्री श्री स्रोमप्रकाश त्यागी (भू०५०

सासद) ने घरने घष्यक्षीय भाषण में

मज्मर में स्थायी रूप से स्थापित किए जा

# समाचार-सन्देश

# सार्वदेशिक त्रार्यवार दल प्रशिक्तण शिविर मथुरा उत्साह पूर्ण वातावरण में सानन्द सम्पन्न

गुप्तवर विरज्ञानन्य साधना धाश्रम (बेदमन्टिर) वृत्दावन माग शबुरा क विकास प्रावता में सावदेशिक प्रार्ववीर इस प्रशिक्षण शिविर डा० देववृत व्यामा-माचार्य उपप्रधान सवालक सार्वदेशिक द्यार्थवीर दल को देख रंख मे सबधी कृष्ण वास सिंह, सस्यवत सत्यम्, श्री ऋषियास बादि शिक्षको द्वारा सानन्द सम्पन्न हुसा। इस शिबिर के भोजनादि के समस्त उत्तर-दायित्व महर्षि दयानन्द निर्वाण सताव्यी बमारोह समिति ने समाले हुए थे। शिविर बे बस्सी बुबको न घन्त तक नाग लिया। बौद्धिक शिक्षण भी नहारमा प्रम भिन्नु जो बहारमा बार्य भिक्षु जी, बच्चक वानप्रस्व ब्राधम ज्वासापुर, भी बासकृष्ण विन्दकी भी रामाज्ञा बैराबी[मुबक्फरपुर] विद्वार क्षी जयनारायण आर्थं (प्रसीगढ) घादि बहानुभावो ने किया।

बीकान्त समाराहु बढा ही प्राक्षक बा। सस्त्री वीरोन यज्ञोपबीत वारण हरके सावदेशिक आर्यवार दश का धनु-शासन स्वीकारते हुए राष्ट्रीयता क प्रांत सर्वेव करंट्य परायण रहने की शपय सी। सार्वदेशिक बायबीर दल के प्रधान सचा-लक भी प० वालदिवाकर हस ने दीक्षान्त भाषण करते हुए कहा-देश के सांस्कृतिक भीर वार्मिक मृत्यो का हास हो रहा है। मत मजहबो को धर्म की सजा देना एक सतरनाक बात है। इस दिशा ने झार्य बीटो को सबग रहकर मुद्रा पीढी का वेद को बाध्यम मानकर मार्ग दर्शन करना है ग्रन्थयादेश रसातस को चला जावेगा। आपने महात्मा प्रेम जिला के सत्त्रमासी की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए उन्हें बावें वीर दल प्रशिक्षण शिविर प्रायोजित करने हेत साथ बाद कहा और प्रत्येक मार्यवीर तथा बाबों को उत्साह परिश्रम, धनुषासन बात्ना से स्वीकार कर कर्म पव पर सम्र-सर होने की प्रेरका दी। धनेक नेतामी ने भी बार्य बीरो को सपने भाषण स प्रोत्सा-दित किया।

> प्रचार विभाग सावंदेशिक मार्थ प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

कि गत वर्षों मे देखने मे बाता था। मैं

सभा प्रवान को एव समोजक को बचाई

देताह भीर प्रायंना करता है कि इसी

प्रकार से उत्साहित होकर काय करते रहें

भीर महर्षि निशन को साने बढाते रहें।

धार्य बन्धुयो, सार्यसमाजो, श्रायं

प्रतिनिधि सभाग्री से प्रार्थना है जिनके

पास सस्कृत भीर भाषाभाष्य के सहल %

से ७ तक हो वे सभा को सुवित करने की

क्पाकरे। सभा भ्रपनी जिम्मेदारी पर

काम होने के बाद सुरक्षित रूप से उन्हें

श्चवस्य लौटा देनी। उपरोक्त मडल व

कार्यासय सचिव

सार्वदेशिक सार्थं प्रतिनिधि समा

नई दिल्ली ११०००२

होने से कार्य मे बाबा बा रही है।

सरेशचन्द्र

### श्रायंवीर दल शिविर का उत्साह

दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा दारा ब्राबोबित बार्यवीर दल के शिविर के समापन नमारोहको देखने सुनन का ग्रुभ श्रवसर मिला। मुभे प्रसन्तता है इस बात की कि इस समय दिल्ली के युवक इस घोर भाकवित हो रहे हैं। विशेष बात यह घी किये यूवक भीर किशोर गुरुकुल भीर धनाचालय से इकट्ड नहीं िये थे जैसे

# एफ बी-३६ कैसाश कालोनी, नई दिल्ली ऋग्वेद का ग्रंग्रेजी श्रनुवाद एक निवेदन

व्यक्ति ले गय है।

समस्त ग्रायं जनता को आत होगा कि सावदेशिक बाय प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्त कृत ऋग्वेव के प्रग्नेकी प्रनु-बाद का प्रकाशन कार्य गत दो वर्ष से कर एडी है। बाब तक ऋग्वेद की मग्नेजी की तीसरी जिल्द तैयार होकर विकी के लिए कार्यालय म उपस्थित है। चौथी जिल्द तैयार हो रही है और बाक्षा है दीपावलि तक यह तैयार हो जायेगी।

इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए महुर्षिकृत ऋग्वेद के महल ४,६, और ७ के संस्कृत भीर भाषा भाष्य (प्रकाशक वैदिक यत्रालय, धजमर) की धावश्यकता है। सभा के कार्यालय से य मउल कोई

दिन समन्त रहने पर समाज सेवी उपाधि

भावं बुवक परिवद् (रवि•) विस्थी

# सार्वदेशिक श्रार्थवीर दल दिल्ली प्रदेश के प्रशिचाण शिविर के समापन समारोह पर भव्य श्रायोजन

सावेंदेशिक सार्थ बीर दल दिल्ली प्रदेश के रममल बार्व कन्या विद्यालय, राजा बाजार में बायोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह पर यज्ञ के चपरान्त सार्वदेशिक बार्ववीर दस ने प्रचान संचालक भी बास दिवाकर हस जी ने सभी प्रशिक्षित सार्यवीरी व कार्यक-र्ताचों को जपब दिलाई धौर खार्य वोर दल को सशक्त बनान व प्रत्येक बार्यसमाज ने इसकी शासा सोसने का बाह्यान किया। इसके बाद लगभग ८० प्रशिक्तित सार्थ बीरों ने तसवार चनाने, लाठी चमाने, धाग के बोले में से कूदने व बोगासनी का एक मध्टे तक भव्य प्रवर्शन करके दर्शको को नन्त्रमुख कर दिया। उनके सम्यास के विभिन्न प्रदर्शनों का बार-बार करतन क्वति से स्वातत किया गया। दिल्ली प्रदेश के व्यक्तिकाता श्री प्रियतक दास रसकत जी ने ग्रीव्यकास में भ्रायोजित इस दूसरे शिविर की उपलब्बियों न धार्म बीर दस की सक्रियता व जाबी कार्यक्रमी की कपरेका पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने प्रत्येक बार्यसमाज ने ब्राध-ष्ठाताकी नियुक्ति व सभाकी स्रोर से हर प्रकार के सहयोग देने का बादवासन दिया । समा के बहामन्त्री हा० बर्मपाल धार्व ने दिल्ली में बार्यवीर दल हेतु एक शिक्षक की नियुक्ति करने की घोषणा की एव शिविर में दिये गये प्रशिक्षण की सराहना की । श्रीमती प्रकाश सार्या, बन्त्रासी प्रान्तीय धाय बहिला सभा विक्ली प्रवेश ने कायकम की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करत हुए महिला सभाकी स्रोर से यथोचित सहयोग देने का साहदा-सम दिया ।

सार्वदेशिक आयं प्रतिनिधि सभा के

रहे बार्य वीर दस प्रशिक्षण केन्द्र का उल्लेख करते हुए भार्य वीर दल के लिए स्यायी कोच बनाने पर विकार प्रकट किया । उन्होने देश की बतंमान परिस्थि-तियों मे जबकि सामाजिक म्ह्यो का हास व सबगाववादी सरवो का सासक बढ रहा है, राष्ट्र रक्षा हेतु बार्यवीर वस की महत्ता पर प्रकाश डासा। असे त्यांकी जी ने सार्यवीर दल की निर्दिष्टियों में सक्रियता लाने के लिए कई महत्त्वपूर्ण सुकाव विए तथा प्रत्येक आर्यसमाज में एक समिष्ठाता की नियुक्ति वर वस विया । अध्यक्ष महोदय के करकमसी द्वारा सार्थ नीरो को प्रमास पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गये। सभा ने सर्वेषी सासा इन्द्र नारायशा जी हाणी वात वासे, माचार्य देवव्रत जी, रचवीर सिंह जी राए। सादि ने भी सपने विचार प्रस्तुत किए। शिविर में प्रवस पुरस्कार विजेता सार्यसमाच बना मण्डी, पहाड गज के भी सतीय कुमार, द्वितीय परस्कार विजेता बार्यसमाज नारायण विहार के वी मार्थासह जी यादव, तृतीय पुरस्कार विजेता धार्यसमाज मण्डावकी के की धतुल कुमार रहे। सनुशासन मे प्रवक पुरस्कार विजेता प्रार्थसमास कृष्णनसर (यसुनापार) भी कृष्णमित्र कौशन रहे। कार्यक्रम मे झार्यसमाज के कई शीर्वस्य नेता, उपदेशक धायसमाब के प्रताब-कारी, कार्यकर्ता व पत्रकार स्नाति और उपस्थित वे। समारोह के समापन के पश्चात ऋषि लगर का ब्राबोजन और

किया गया। श्याससुन्दर विरमानी मन्त्री सावदेशिक मार्थे वीर दन, विल्ली प्रदेश

## बोट क्लब पर वेदप्रचार

दिन्मी घार्य प्रतिनिधि सभा दिल्मी के तत्त्वावचान मे वोट क्लब पर श्रविरत वेदप्रचार का कार्यक्रम चल रहा है। वन दिनो प० धर्मवीर शास्त्री के हारा प्रवचन काकार्यक्रम दिनो दिन प्रवृति पर है। भारी संस्था मे श्राहालु जन वेद उपनिषद्, गीता, सस्यार्थप्रकाश धादि धार्मिक सन्यों से उपदेश को भवला कर रहे हैं।

सवाददाता बायंसन्देश

# श्रार्यसमाज बांकनेर, दिल्ली ४० का वर्ष १६८४-८६ का निर्वाचन त्रवान-वी नानेराम खार्य,

एम ए वी एड -भी घोमप्रकास बुप्त वी. ए. क्त्री-भी बेहरताचे प्रवार

एम ए की ए

उपमन्त्री—की रामकरण एम ए बी एड कोवाव्यक्ष- जी हवासिह सत्री की ए पुस्तकाष्यका-- श्री जिलेसिह झार्य

एम ए बी एड. लेसानिरीक्षक— भी गुद्दवसन सिंह बीए डीपी एड तिवेदक

मेहरसास पवार समाच मन्त्री

बार्य महिला समाव, सोहन संब, विल्लीका वार्षिक चुनाव १६-६-८१ को निम्न प्रकार हुमा---प्रभान श्रीमती सुनीति गुप्ता

**उ**पप्रश्नाम कु० सुमित्रा संत्री बीमती प्रेमकुमारी चपमन्त्री स्त्रीमती रजनी कोवाध्यक्ष कीमरी कमसेश नामिया

# 'धर्मेन्दु जी सम्मानित'

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के सरक्षक प्रार्थ प्रनामालय के मत्री तथा द्यार्थं युवक परिषत् के प्रधान वयोवृद्ध धार्य नेता श्री प॰ देववत जी वर्नेन्द्र को "बाल हितैयी सम (रिक•) दिल्सी" द्वारा विल्लीनगर निवम रक्शाला के सुख्जित मच पर भारी जनसमूह के बीच उनकी साठ वर्धीय समाज सेवा के कार्यों में रात से समावकृत समसङ्कृत किया गया।

महर्षि दयामन्द भवन, रामबीका मैदान

कमस कियोर सार्व

### दिल्ली की आर्यंसमाज मन्दिरो के लिए एक आवश्यक निवेदन

दिल्ली मार्च प्रतिनिधि गमा के मार्च तत चन रही मार्च समाची म कभी कभी सापती विनाद विक्र कर पारत कर लेते हैं। इन विनादों का कोई विशेष ठास साचार भी नहीं होता। मार्च स्मानी के साचकारी पहल ही निगाय लेल्त हैं और साद में समस्या न मुलम्मन पर भणा के सावकारियों त सायह करन है कि वे दन। विकारियों ते सायह करन है कि वे दन। सावस्थकता हम बान की है कि सादी-

खोटी वाता को पोर न्यान न दिया जाये पौर पार्यन्यान के जो मूल उद्देश्य है उनकी खोर ध्यान रक्षा खाव । नसार का उपकार करना इस सवाब का मुख्य उद्ध है। किसी भी विज्ञाद को गहुरा होते से पहुन, खाप स्था के प्रविकारियों से तवा धार्यविद्वानों से विकार विशव कर न तथा विवाद प्रारम्भ में हो समाख कर न तथा विवाद प्रारम्भ से से समाख भाषियों को बनाय रक्षान परमास्थक है। छोटी छोटी बातों को प्रतिष्ठा का प्रस्त न बनायें और उने बारखों की प्राप्त के लिए सपने बायह को छोड़ ने किए सदा तरपर रहें। हम 'नगन्छान्त, सवक्व के आवानों से काय करें। ऐसा भी पना पत्ता है जिया करें। ऐसा भी पना पत्ता है जि बापसी सतभेद के कारण कुछ ऐसे व्यक्ति विनकी बायसमान में पूसर्पठ करने मनठन को खाराब कर रहे हैं। बाप ऐसे लागे मा साववान रहें।

हमने बापसे पत्र दिनाक २५२ १६८५ भीर २४ ४ १६०४ के सनुसार प्राथना को है कि ग्राप ग्रानी मार्थसमाज को वापिक विवरण सदस्यताशुल्क कादशाश वदप्रचर नदा आयसन्देग का गुल्क सदस्यता सुची प्रतिनिधियों के नाम व पते द्यादि सभाकर्यां नय मेज दें। बहुत सी समाजो की छोर ने ग्रमीतक इन भौपचारिकताभी का पूरा नहीं किया गया है। बापका ध्यान दिल्ली आय प्रति-निविसमा क नियम सरूपा— ५ की घोर आकिष्ठिकरते हुए ब्रापसे विश्व अनु-रोष है कि भाग समय पर उपरोक्त भीप-चारिक्ताचो को पूरा करके सन्निय सह-योग देने की क्रुपाक दें। बदि खमय पर यह भीपचारिकताएँ पूरी नहीं होती वो वार्षिक प्रचिवेशन में विलम्ब होना प्रव-स्यम्भाषी है।

दिल्ली बार्य प्रतिनिध हमा क मुख्य एव बाय जन्देग में निश्चय ही बाप कुछ परिवर्तन समुग्य कर रहे होंगे। बाप इस्तो स्वादी खाशर दिलाने में मी हुमारा सद्योग करने की क्या कर। इसके लिए बाप यांपिक से बाहक बायो-वन तथा वार्षिक बनवाये ववा ब्यापारिक स्वानों के विशापन दिखनाने में सहयांग देने की कृपा करें।

दिन्सी मार्गप्रतिनिधि सामा के भन्तर्गत सायवीर दस भी साक्य रूप से कार्यकर न्हा है। इस वस तीन प्रशिक्षण शिविर भी मायोजित किये गये हैं। माप इस कथ्य के निए धार्षिक मह्योग भी देन की कृषा करें तथा सभा प्रधान की के पूक पत्र में मभी धार्षभाजी की निर्देग दिवा यदा सा कि वह धपनी मनाव से धार्य कीर दल के लिए एक धरिक्छाता का चयन कर में धीर उसका नाम निवास का पना तथा दूरभाव सभा कार्योल उन्नो भिज्ञवा हैं।

दिस्सी धाय प्रतिनिधि सभा से सब-भित जिन आर्थसमात्रों से माय दिक्कण सरसाएँ चन री है उनका प्राप्य विद्या परियद दिल्ली से विधिवत स्ववित होना मनिवाय है। सभा प्रत्यक विद्यालय से नैतिक विद्याल की पुरतक मित्रवातों है, तथा वब वरसान् उनकी परीक्षण निल्ला करती है। धारा सपने विद्यालय क स्वबंध मार विद्या परियद् स स्ववंध सार विं

मुक्ते आचाही नहीं पूराविस्तास है कि आपका सकिय सहयोग सभा की प्रवित्त के लिए सवस्य मिलेगा।

> भवदीय (धनपाल धाय) महामन्त्री काय लय १६ हनुसान रोड, नई जिन्मी १० ००१

# "त्रार्यसमाज सान्ताकुज वेद वेदाग पुरस्कार"

कार्यसमाज सान्ताक्रज की साधारण सभा दिनांक १६ ६-०६ ने कैंप्टिन देव-रत्न बार्यं के इस प्रस्ताव को सवसम्मति से पारित किया कि बायसमाज सान्ता-कुज एक स्थायी पुरस्कार की घोषणा करे जिसके धन्तर्गत प्रतिवर्ध ग्रायं जनत के एक विशिष्ट विद्वान को उनकी वैदिक थम एव बायसमाज के प्रति नी नई सेवाबो क प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेत् "बायसमाज सान्ताक्रज वद वेदाग पूर-स्कार दिया जाए । इस धवसर पर पुरस्कृत विद्वान को २१०००/ रपमी की यैकी. सन्धनन्दन पत्र रखत टाफी व शाका से सम्मानित किया जाए। विदान का चयन एक समिति करेगी जिसमे बार्य-समाज के प्रधान एवं महामत्री धार्वदे-शिक बाय प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव बस्बई ग्रामं प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा धायसमाज सान्ताक्रज की धातरय सभा द्वारा मनोशीत तीन खदस्य होवे । इस धवसर पर सन १६८५-६६ हेत् वाविक निर्वाचन बड सीहादपूर्ण वातावरण मे सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हथा -प्रधान

प्रवेशन्तिक प्रत्य कर्याः प्रवान की बोलाइनाव य यं उपप्रपान श्री वन्द्रमान मल्होत्रा ,,, हीट्यन वेश्यरन प्रार्थ महामनी व्यो विकासम्बद्धमार पर्येत श्री नेश्यरुमार पर्येत ,,

> निवेदक (कैप्टिन देवरन्न महामन्त्री





एम डी एवं

COGO

TIPLED

रजि॰ न॰ डी (सी॰) ७५६



एम डो एक दिकाकाई वाऊवर वालो की सीकरी दूर करन के तथा यह प्राकृतिक काला सुमन्त्रित व स्थरण बनाता है।

शिकाकाई 'रीठा ग्रावला हरड बहेवा चन्दन व सन्द सर्गाचित बढी वटियों से बनाया गया एव डी एच विकाकाई ब्राउटर एक बस्यन्त लामकारी अल्ह्य है। इसमे कोई रालायनिक पशब्द नहीं है।

एम की एम किकामाई शासकर का साम्र है। ही निर्यासस प्रयोग कोडियो ।

महाशियां वी हुट्टी (प्रा॰) स्ति॰ a 44 क्णानिहरात एतिका, कीर्ति कान्द्र वर्ग विकास 110015 ein 539609 537987, 537341

# महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

मत्रीय द्यानस्य परिलक स्कल का उदयान्न ग्रायनमान मन्दिर राजीरी गाइन मे १७ जीलाई को स्त्री राम गोपाल शासवास के कर कनलों से सम्पन्न हुपा। इस प्रवसर पर महाक्षय घनपाल श्री ग्यदेव श्री रा० धर्मपाल श्रास्भाप द्याय श्रावधवा जी द्यादि महानुभाव उपित थे। बच्ची के ऋषि दयान द महिमा तथा प्रभू मिन राष्ट्रभन्ति के गीतो से जनसमृह भम उठा। श्री शालवाले ने वैदिक मन्तव्यो और ऋषि दयानन्द की शिशा प्रणाली को बपनाने की भी घेरला दी। उन्होंने कहा हमें बग्ने वो भाषा की गुनामी से दचना चाहिए और हिन्दी भाषा के उत्थान से सहयोग करना चाहिए । उन्होंने उदा-हरण देते हए कहा-जब विजय सक्सी पहिल मास्को प्रवास के लिए सबी उन्होंने स्वालिन को अपने परिचय पत्र दिखाये जो असजो मं बे स्वालिन ने कहा या तो हिन्दी ने विश्वाधो या इस की भाषा ने । उन्होंने फिर भारत ने हिन्दो म प्राने परिश्व शिकाये ।

— सवाददाता

# श्री जागेराम की इत्या का हार्दिक शोक

दक्षिण विस्ती वेदप्रवार मण्डम के महामन्त्री भी रामसस्म दास था ने श्री वागेराम श्राम की हत्या पर महरा दुःस व्यक्त किया है। मास्टर जाने-राम ने गुब्कुल बौतम नगर में कनावें ४० हवार स्पये दान किये थे। और भार्यसमात्र नासवीय नवर भौर काकेल के भवन निर्माश काय के सिए हजारी क्ष्य का दान किया था। वे वेदप्रचार के कार्यों में सदा सहयोग करते पहले वे। वेदप्रकार मण्डम ने दिवनत भारमा के प्रति एक शोक प्रस्ताव द्वारा श्रदा-ञ्जलि वर्षित की है।

लिए उत्तम स्वास्थ्य कॉगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

भेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, चावडी बाजार, विल्ली ६ फोन २६६५३६





# स्वामी अभेदानन्द

—ग्राचार्य देवेन्द्रदत्त द्विवेटी

करुए। की जीवित प्रतिमा लोक-कह्याण के निमित्त निरन्तर विन्ता-श्रील त्यागमूर्ति अपूर्व अपरिवही, मपोचन एव बतिसय सनासकत तथा करबेंटेजिक बार्य प्रतिनिधि समा के विवसत प्रधान स्वा० घमेदानन्द सी अरस्वती के जीवन से सम्बद्ध अनेक प्रसम विस्मति के नहार में क्रमक सीन होते जा रहे हैं। उनके वित्य में बहुत सी बातें मृष्य है। उन वर बबावत प्रकास हालना बाज नितात श्रदेखित है । उनका द्वास्त्विक जीवन वल बार्यसमाज के इतिहास की अनेक विच्छित्न कडियों को जो ने में समब होया । सार्वदेशिक आर्थ प्रतिनिधि सका के प्रधानों में खायद ही किसी प्रधान का नये एव पुराने कानिका-रियो से इतना चनिष्ठ सपर्क रहा हो ।

में स्वामी जी के जीवन की करि वय सन घटनाओं को निपिबद्ध करने आ रहाह जो मेरी उपस्थिति मे

#### विचित्र दानशोलता-

एक बार मैं पटना बायें प्रति निधि सभा के प्रागरा में बैठा स्वामी श्री से बात कर रहा था। स्वामी जी पजाब से नीटे थे। वे भपने साथ 'बाबु गोशा भीर निन्ती से गये थे। उस समय प्रतिनिधि सभा के सभी उपदेशक बाहर गये वे। बोड से लोग वषस्थित वे। धत स्वामी जी को जिल्ला की कि वे जो सीगाल प्रकाब से लेकर गांगे हैं उनका क्या किया बाये। उन्में मे पके की कुछ मिला शीर धार मन्दत्तरे लोग जी वहाँ उपस्थित वे उन्हें भी स्वामी जी ने 'विवा । हवामी जी के लिए वह मान

इयक नहीं था कि उनसे कुछ पाने बाले लोग परिचित ही हो। उनके दरबार में सभी तरह के लोग उप-स्थित रहते वे।

इमी बीच पटना कालेज का एक विद्यार्थी भाषा । उसने स्वामी जी के चरसा स्पर्ध किये। स्वामी जी ने उस से प्रधा- कियर चले ही? उसने थाओं ने बाबू भरके कहा - मुक्ते एम ० ए० की परीक्षा देनी है। बेरे पास रुपये नहीं है कि परीक्षा शुल्क दू। में सदैव प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होता हा ह। पिछले वर्ष मेरी मा ससार से चली गयी । और इसी वर्ष चार महीने पहले मेरे पिता जी । वाक्य पूरा करने के पूर्व ही वह फुट फटकर रो पडा। स्वामी भी की भो बालें भर आयों बीर रणते ग्रपती जेव में हाब डाया-- को कुछ वा दे दिया मिना नहीं । रुपये देते समय स्वामी जी ने उसकी घोर मे मह फर लिया था। इसी बीच टैनीफोन की घटी बजी स्वामी जी मृतने चले गये। बाहर से दक्तर में आये लोगो से बातों में उलम गर्थ। मैं ने उस विद्यार्थी से कहा मिली ली स्वामी जी ने तुम्हैं कितने रुपवे वि। वह बरता हक्षा गिनने लगा वह इस-लिए डरता था कि नहीं ग्रधिक स्पवे होने पर में लौटाने के लिए न कह द्। उसे मानूम नहीं वाकि यदि मैं रेंसा कहना तो स्वामी जी की दर्दिन मे मुक्त से बूरा कोई मादमी नहीं होता। स्वामी जी ने उसे पन्तह सौ रुपये दिये थे। उस लक्के का नाम मैं लेना नहीं चाहता । वह शांव एक बार्त बड़े सरकारी पद पर है। स्वामी जी दफ्तर से बाहर बाये। उसे कहा - पर तरन्त ही यह बात सामन धाई

के जाने के बाद मैंने पुछा 'उसे रु० देते समय बापने मुंह क्यो मोड लिया ?' उत्तर मिला यदि मैं उसकी भोर देखता तो उसमे हीनना की भावना धाती और मुक्त मे मिथ्याभिमान की। वह सडका जब भीजन करके जाने लगा तो मैंने उस से जानना चाहा कि वह स्वामी जी से कब से परिचित था। उसने कहा में स्वामी की को नही जानता वा मुक्ते पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के धध्यक्ष डा॰ ईववरदत्त नै इनके विषय में मुक्त से कहा कि विना किसी की सिफारिक के स्वामी की से मिलो। वह या तो स्वय सहा-बताकर दगेया किसी से करा टमें ।"

स्वामी जी मपने फटे कपडे पहने रहते वे। उनके फटे कम्बल होते वे। पर नये कपड नये शाल नये कम्बल दमरों को दे देते वे । उनके पास रू तथा सामान ग्राये नहीं कि बाटने की उनमें बेचैनी पैदा हो जाती ही।

#### राजनैतिक जीवन-

काग्रेस के मान्दीलनो में स्वामी जी धनेक बार जेन गये। यह उनका बानप्रस्थी जीवन था। उस समय बेववत या। जनका नाम भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरतन बार राजे द्वप्रसाद जी ने स्वामी जी से धनेक बार विद्वार ग्रायं प्रतिनिधि सभा के कार्यों से विरत होकर विहार प्रदेश काग्रस कमेंटी के कार्यों मे रुचि लेने के लिए कहा था। दो बार तो बिहार के मार्थममात्रियों में यह वर्जी बली कि स्वामी जी का बिहार काग्रम का श्रव्यम होन निविचत है। 'भोजन करके जाना।' उस लडके कि स्वामी जी न राजेन्द्र बाद के

प्रस्ताव को मस्वीकार कर क्रिया। यदि स्वामी जी चाहते तो अक्तिले भारतीय काँग्रस कमेटी की कामका रिएी तथा विहार प्रदेश के मंत्रि-मण्डल के सदस्य सरलता पूर्वक तैयार है जाते उनकी रहिन में बार्बसवाज उनकी मा बी 1 वे उसे छोड नहीं सबते वे ।

#### कान्तिकारियों से स्वामी जी के सम्बन्ध-

स्वामी की बड़ी खोटी उस से प्राने एक नके क्रान्तिकारियों सोध-निस्ट रिपब्सिकन सार्टी तथा श्रमास के 'बन्द्योलन दल सब के सम्पूर्क मे था चुके ये। सर्वजी इस्फाक उल्ला स्तान रामप्रसाद विस्मिल चन्द्र शेखर आजाद मनवेद्र नाथ राय, सबसेन मोकनाथ बल योगेश चटर्जी वैकुष्ठ सुक्ल कमलनाव तिवारी. केदार मिण सक्ल बादि सभी स्वामी की को किसी न किसी रूप मे जानते वे। इस विद्याल परिचय का रहस्य क्या था, यह श्रमी तक श्रजात है।

#### दो ग्रविस्मरलीय घटनाए"-

१६४६ की बात है। उस समय में भारत के सर्वब्रष्ठ हिन्दी दैनिक विश्वमित्र का सपादक था। उस साल बढ दिन की खुट्टियो मे कल-कसा आयसमाज का वार्षिकोत्मव हो रहा था। स्वामी जी निमत्रित थे। वे क्लकता में सेठ ग्रान दी प्रसाद पोहार की सटल एवेन्य वानी कोठी मे ठहरे थे ! उनके साथ प० रामा नन्द शास्त्री सावदेशिक सभा के भ० पू॰ वर्माध्यक्ष भी थे। शास्त्री जी भभी भभी जवान हो रहे वे मुक्ते स्वामी जी तथा शास्त्री की के साथ भोजन करना था। अनेवनोपरान्त नालेज स्ट्रीट में काफी हाउस के (क्षेत्र पूच्ड ११ वर)

#### सत्संग वाटिका

समस्त वैदिक पर्व, त्योद्वार उत्सव, सस्कार बादि कर्म यज्ञ से ही प्रारम्भ किए बाते हैं। भीर जनकी समाप्ति पर 'बान्ति पाठ किया जाता है कि परमारमा को धन्यवाद है कि सब कार्य विध्न बाधा रहित शान्ति से सम्पूर्ण हुए हैं। इसी प्रवा तथा पद्धति को एक्टि में एख दोनों का समन्त्रय कर उपसहार के ब्राव से यहा पर रखा है। वैदिक जीवन दर्शन मे यज ही भूनाधार है। सतपथ बाह्यस कहता है यज्ञा वै अवे ब्ठतम कम । यज्ञ सब से अब्ट कम है। ससार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋष्यदका गुभारम्भ ही यज्ञ शब्द से होता है। प्रथम मत्र वहता है - अनि-मीड प्राहित यहस्य देवस्त्वित्रम् । होतार बन्द्रसात्मम् ।

यज्ञ द्यान्य यज्ञ आस्तु से बनाहै विसका मध देवपूजासगतिकरणदानेयु अयाकरण कहता है। जिसकी ∘या⁻या साधारण रूप मे (१) देवपूत्रा धवात् विदालो का यथाथान्य सत्कार (२) सन तिकरण का अथ सामाजिक एकीकरण सहस्रस्तित्व, सगठन, सत्तन समन्वय स्रादि है। (३) दान की अमान्या अपनी शक्ति के बनुसार यथायोग्य समय शाति धन भादि का मनसा, वाचा कमए।। शान देना। देव शब्द दिवु घातु से बना 🖁 जिसका सक्षिप्त भ्रय दिव्य गुरा युक्त, जी सदा विना मागे सब को समान कप से देतवा दिना मूल्य देता रहे। प्रत यज के इन धर्मा कं अनुसार अपने जीवन को यज्ञमय बनाता रह। यहा वैदिक झादेश तया भारका है। भन यज मानव को भपने कीवन के दिव्य माग का बोध कराता है। यश के वही तीनो भाव दावानिक दिंग से मानव समाज म तीन रूप ले नेतं है। (१) समन्वय (२) सगठन (३) सतुसन । सृष्टि मे सब बढ बतन पदाय एक दूसरे से सम्बन्धित है। एक दूसरे पर सतत, बनोचित तथा पूरा रूप स निभर है। न कोई पूरा रूप से स्वतन्त्र (Independent) है, न कोई पूरा रूप स दूसरे पर भाषित (Dependent) ह परन्तु श्वापेक्षरूप से परस्पर एक दूसरे पर निअंद (Dependent) है। सब में समन्वय मतुलन व सगठन है। उदाहरण रूप, सूय व चन्द्रमा दोनो घपना घपनी प्रकृति तथा गरा घम व काम की दिट सं प्रतिकृत प्रभाव प्रत्येक जब चतन पर कर रह है। सुय प्रचण्ड ताप ऊच्मा तथा प्रकाश का स्रोत ह । इसके प्रतिकृत चन्द्रमा शांतल-वाप रहित शान्तिदायक बादनी छिटकाता है। परन्तुदानो ही अपनी अपनी कक्षा मे परिश्रमण करते हैं, काई किसी के कक्ष का अतिक्रमण नही करता है। कितना सगतिकरण, सहग्रस्तित्व, सामबस्य ग्रादि चलता रहता है। मानव हेतु सृष्टि कितना

# यज्ञ और शान्ति

—प्रो∘ प्रतापसिह

म्निनिमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतार रत्नघातमम् ॥



उज्य भादश उनस्थित कर रही है।

वही सहयोग सगठन समन्वव प्रावि मानव को धाने शरीर विज्ञान द्वारा घगों मे मिलता है। मुह भोजन को चवाकर उदर की भोर इंद्र न मम' कहकर सरका देता है। इसी प्रकार सब ग्रम ग्रपना ग्रपना कम कर शोजन से सार ग्रष्टण कर पूर्ण शरीर को पत्चाते है। पेड पौधे वनस्पति औपधि विज्ञान भी यही धादश मानव को दे रहे है। सुष्टि भ्रपना प्राकृतिक सतु-लन सदा बनाए रखती है। जीव सास द्वारा वायुसे भोषजन लेकर कार्बन डाई बाक्साइड खोडता है। वनस्पति इसे ग्रहण कर मोयजन निकासती हैं। बायु से गैसो का अञ्चपात तथा सतुभन सदा चलता रहता है। परन्तु इस कलपूर-मधीन-युव मे नानाप्रकार से वायु, जल,भूमि द्यादि मे प्रदूषसामानव द्वारा हो रहे हैं। जगलो को बिना विचारे काटा जा रहा ह, शिकारी जन्तुबाका नष्ट कर रहे हैं तथा सारह है। जब यह असतुसन मानव-कृत अति कर लेता है तो ससार में रोग युद्ध सूक्षा प्रतिवृष्टि प्रावि का बैबीय प्रकोप के रूप म मानव का श्रीमना प्रका

दानदाता का यह ध्यान रखना भाव-श्यक ह कि दान सुपात्र अथवा कूपात्र को जाता है। उस सदुपयोग तथा दुरुपयोश का विचार रखना है कि दान का उपयोग समाज विरोधी कार्यों मे तो नहा होता है। यज से यह श्रेष्ठता है कि पासता का प्रश्न ही नहीं उठता है। यज्ञ से उठी सुगन्धित वायुस्य दिशाधी में सुक्स इत्य से प्रसारित हो समान रूप से नित्र, शत्र, ऊष-नाच ब्रादि सन का प<sub>0</sub>चती है। क्योंकि अस्ति ने को बाहुति वा जाती है उनके दो रूप हो जाते हैं। बाहुति की सामग्री घी, समित्रा बादि का सुद्ध रूप होकर समस्त वायु मण्डल मे फलकर शुद्ध तथा सुगन्धित कर देता है। दूसरा लाभ वज करने वासो तथा ब्राष्ट्रति देने वासी के मन व हृदय पटल पर सूक्त प्रभाव पडता है जो सुद्ध मन, श्रद्धा, अस्ति, तन्त्र-यता से मन के कलुचित दूचित विचार नष्ट कर पुनीत पवित्र भावनाएँ उभारते हैं। यह शाहृतियां यजकर्ता के सस्कार बन धर्मकारूप वारण कर लेते हैं। ग्रीर सुक्तन शरीर का धन वन वाले हैं। मृत्यू पर यही सस्कार भारमा के साथ पुनर्जन्म

ने शाय बेते हैं। जैशा मनु जी ने यसरत-मनुम्म्ब्रित कहा है कि प्रमुक्ता में वर्ग है। साब बेता है। यह में कमंकाम्ब तथा उपाधनाकाण्य दोनों का समन्यव है। इस यह ने परमाथ तथा लोक अवहार दोनों एक साथ प्राप्त होते हैं। वेदिक जीवन यहन में नग्म से मुन्यु तक सोलह सरकार है जिन सब का प्रारम्भ प्रकृते होता है। जीवन में पाच महान् यत्नी का विद्यान है। जो बहु। यह देव यह, प्रतिक्रिय यह, तत्त्व न वित्त वेदक देव यह सम्बद्धान्य सन्त तथा तथा क्या से उपा-सना तथा क्या देव यह सम्बद्धा है।

यज्ञ में चार प्रकार की सामग्री का विषान है। सुगन्बियुक्त, मिष्टान्नयुक्त, पुष्टिकारक तथा रोगमाशक। इनसे वास् युद्ध होती है तथा भाकाश में वृष्टि अल मे पुष्टिकारक तत्त्व भिनते हैं। इस वर्षा वस से भीवविवा व वनस्पतिया सुद्ध पवित्र तथा पुष्टिकारक होती हैं। जो जीव हितकारी होती है। मानव के शरीर से मल, मूत्र, पसीना ब्रादि निकलने से बायु, जल तथा भूमि भी दूषित तथा दुगन्धयुक्त होती है अत जो इन तथा अन्य प्रकार के प्रदूषणों को यक्ष से दूर करने का प्रयत्न व प्रयास नहीं करते वह सम्भी तवा पापी हैं। महींव दयानस्य ने इसी प्रकरण ने सभी खकाधी का बढ़ी यक्ति-पूरक तथा सतक समाधान किया है, वैसे हाब से होम करते हैं, सांस से देखते और त्वचा से स्पर्ध करते हैं, वैसे वास्ती से बेद मन्त्रों को भी पढते हैं। क्योंकि उनके पढने से वेदो की रक्षा, ईक्बर की स्तुति प्राथना भौर उपासना होती है। तका होस से जो को फल होते हैं उनका स्मरण भी होता है। वेद मन्त्रों का बारम्बार पाठ करने हे ने कठरन भी रहते हैं। और ईरवर का होना जी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो बाए, क्योंकि ईश्वर की प्रार्वना-पूर्वक ही सब कर्नों का बारम्भ करना होता है। सो बेद मन्त्रों के उच्चारण से यह यह में तो उसकी प्रार्थना सम्प्रका होती है। इस बिए सब उत्तम कर्म देव मन्त्रों से ही करना उचित है।" नीता मे त्री वस को 'कानवेनु' कहा है।

महाजारत काल तक यतो की सहिमा महान् थी। तथा सब सत्कर्मों के खिए किए जाते वे धीर कहाबत बन नहीं बी कि "स्वर्गकानो बकेद" बो सुख बाह्या

है वह यज्ञ करे। राजा दशरव ने पूर्वेष्टि यज्ञ से बार पुता रतन प्राप्त किए ने। इसी प्रकार राजसूब, बाजपेब, धन्निष्टोम, बश्वमेष, बन्निहोत्र, शन्न्याथान, चातू-र्मास्य प्राप्ति यज्ञों का विवास है। इनका सर्वन समस्कर यज्ञो कारूप विकृत हो क्या । पशु भावि काटकर उनके धवों से यज्ञ होने सबे, तथा नरवित भी होने सवी। यत बाममार्गियो के कुश्रमाब से यज्ञशासा वक्शासा तथा कसाई साना बन नई। तभी बीख, जैन तथा शकराचार्य ने इस कर्मकाण्ड की हीनता बताकर उपा-समाकाण्ड पर घरपविक वस दिया तथा फलस्बरूप यज्ञ सस्था विकृत होकर पतन को प्राप्त हुई। सर्शव दयामन्द 🕏 पूण्य प्रताप तथा प्रयास से यस के प्रमुख्धान का क्यंकाण्ड मे प्रमुख स्वान हो बया। उन्होंने यज को महान् निष्काम कर्म सिद्ध किया जो मुक्ति का मार्ग प्रवृश्चित करता है। उन्होंने कहा 'अब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक मार्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैशा हो जायगा।

प्रात काल एक दिन अब सन्त कबीर सपने पुत्र कमाल के खाद असण को बा रहे वे तो माग में देला कि उस सुहाबने बाताबरण में कही स व्यक्ती चलते की क्यपराहट आ रही है बोल उनकी 'सटपटी' वाली कुट पड़ी—

> चलती चाकी देसकर, दीन कथीरा रोग । दो पाटन के दीच मे, सावित दयान कोय।।

इस ससार ने जन्म मृत्यु सुक्त-दुक्त रूपी इन्द्र के चनकर में मानव पिसता रहता है। तेल, नोम लकडी की विन्ता मे परेशान रहता है। बर, अमीन तका जन के कराट में फसा रहता है। कचन व कामिनी की फिक में दुवला होता वाता है। इस प्रकार ससार में विषय वासनाओ पुत्रीयस्मा, वित्तीयमा, लोकीयमा के चनकर म रात दिन व्याकुल फिरता है। परन्तु भूपूत्र कमाल ने सरल समाचान किया कि जो दाने की की पास रहते हैं वह इस चक्कर ने नहीं भाते, न पिसते हैं परन्त कीली के पास सुरक्षित रहत है। इस सामारण उद्गार मे एक महान् साम्या-त्मिक सन्देश खिपा है। वह सत्य है कि जो अपनित ससार के विवयमोग में सिप्त रहता है, वह जन्म-मृत्यु के चक्कर से पड़ा दुस दर्द में फसा रहता है। जो पर-मात्मा के पास है वह जन्म मृत्यु के चक्कर से मुक्त हो जाता है। जढ वानी को नही मालूम है कि वह की सी के पास होने से दोनों पाटों के बीच मे आकर पिसने से वच वाते हैं। परम्तु अथववेद का सब 'बन्ति सन्त न बहाति सचेत करता है कि को उस परमात्मा रूपी की सी के पास हैं चन्हें परमारमा नहीं स्रोक्ता है तो बह्

(खेष पृष्ठ ७ पर)

# धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

### लेखक-रामगोपाल शालवाले

चेव प्रतिपादित पार्य पर्य एक घरव स्तान के कोड उनलीत साथ उनचाव हवार पिवासी वर्ष पुराना है। कुरान के प्रयुवार इस्साथ यत की बाबु बनघन तेरह सी नक्षे वर्ष की है। ईसाई वत इंसा के बन् के प्रयुवार १८८४ वर्ष का है।

आब हुनें विचार करता है कि बार्य वर्ष वो सहार वे सब से पुराना है, विसका चकर्यों डाझान्य पुराठन काल से समूचे बतार पर बासन करता सा, दिखेले दिखान दिखाने के बार प्राणियान को वर्ष की सीवा विचा करते से, जिबका बैसम भगवान् मनु ने निन्नतिसित्त सन्यों में बार्टीन किया है—

> एतह्रेशप्रसुतस्य सकाशाद् प्रग्रजन्मन । स्व स्व चरित्र शिक्षेरत् पृषिव्या सर्वेषानवा ।।

कभी ऐसा स्वर्णिय समय था, जब ध्रपनी-श्रपनी रुचि के धनुष्ठार विदेशों लोग इस पबिल भारतभूमि पर हर प्रकार की विद्या पश्चे के लिए धाया करते थे।

क्षमय बदल गया। राज्यसता क्षित जाने स साग डाला उलट गया। स्रमेत्री राज्य के प्रभाव से भारतीय विद्यालियों को बडी-वडी डिग्निया लेने क क्षिए इस्लंड का दरवाजा दलना पडता है।

पुशातन काल से हमारे नुष्यन विदेशों से आकर घन भीर नांति का प्रवार किया करत में। सहाराज दशरण न पुतिष्टियम के निमित गुरु विशब्ध से पूछा। कि इस सहान् यम का बह्या किस बनाया जाय? उत्तर मिसा—बाल सहायारी ऋषिप्रज्ञ हा इस महत्व गुण्या का सम्पादन कर सकत है। सहा-राख ने पाताल दश [समरीका] के सहिंद ग्रुपे यो को पुत्रेष्टियज्ञ सम्पन्न करते के सिष्ट निमान्त्रत किया।

इस प्रकार वेदिक विचारवारा का प्रमाव भारत हो नहीं, सबूच ससार वर फैला हुआ था। हमारे लड़ान् प्रचारक विश्व म वेदिक सस्कृति के प्रसार मे ससान वे। बारे ससार में आनन्द हो बालन्द वा। मानवता फल फूल रही थी।

समय ने पलटा साया। महाभारत के युद्ध में भाई ने आई का गला काटा, ग्रह कसह का प्रारम्भ हुमा। परमाथ का स्थान स्वामें ने सिया। विदेशी म प्रभार एव राज्य करन का बात ता दूर रहा, मपना दश ही विद्शायों के पादाक न्त हा गया । सातवा शताब्दा म भरव क १८ वर्षीय युवा मूहस्मद ादन काशिम ने इस्लामा साम्राज्य के लोभ से सिन्ध पर माक्रमण किया और सगम्ब १-४ हकार झरबी मुसलमानो न भारत-मूमि पर पर रखे। हमारे देश पर बबनो का बहु पहुला भाकामण था, तत्रश्यात् दर्श खैवर के सीमान्त के रास्त इस प्रकार क इस्लामा बाक्रमण होते ही रहे और सारे भारत पर इस्साभी साझाज्य छा गया । राज्य सत्ता के वस पर इस्नाम का प्रचार किया बया। तलवारों को खाया से कलमे पढाए गए और माथ वर्ग की पुरानी मर्यादामी को नष्ट भ्रष्ट किया गया। महाविनाश भीर पराजय क महान्वकार-मन बाला वरण में खत्रपति शिवाजी, बहाराए। प्रताप बन्दा वार वैरागी भौर कितन हो हिन्दू बीरो ने भाग बढकर भनेक प्रकार की यातनाएँ और दूख सह-कर राष्ट्राय नर्यादा और घर्न की रक्षा की । औरगजेब की धर्मान्यता से देश का हिन्दू प्रजा विक्षु व्य हा उठा था। खत्रपति । श्रव जा की वोरता और नीति से इस्सामी साम्राज्य पैर सुकेडने लगा, किन्तु अपनी ही बान्तरिक फूट भीर स्वार्वपरायणता से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप मे व्यापारी बन कर अग्रेज ने भारत म पर जमाए भीर देखते-देखत सारे देश पर यूनियन जैक फहुराने लगा। अग्रेजी राज्य के साथ ईसाई मिशनरी भी गरीशे की सेवा और वर्ष का बहाना बनाकर भारत में कार्य करने लगे। इससे पूर्व सन् १२६१ ईस्वी ने पीप निकोलस (चतुय) ने कोहन कार्निनी नामक ईसाई मिसनरी को चीन देश ये भेजाबा। चीन जाते हुए वह जारत मे ठहरा बौर यहा १३ मास तक रहा। भारतमूमि पर पाव घरने वाला यही पहला ईसाई मिशनरी था। अपने निवास-काल में इसने भिन्न भिन्न स्थानों पर संग्रंग १०० व्यक्तियों को ईसाई बनाया ।

इसके परवात् भेव मिखलरी झावा। वह सन् १६२३ में बन्नई के तट वर उत्तरा, परन्तु वोबहुवी सती के समाप्त होने से पूर्व ही सूरीप के घनेक ईंगाई विक्रमरियों ने बन्बई सीर टुब्बनकोर के मध्य के परिवसी वाट पर कई ईसाई वयनिवेश स्वापित कर निये थे। पूर्तमान का कूर लुटेरा वास्कोटियामा वस् ११०२ ६० से सुसरी बार कारत ने माया हो जने भारत के पदिचमी तट पर हैवाईयो की विस्तवा देवकर वास्वयं हुमा। इच हैवाई वग न माने राजा सीर यनने प्रदेश से विस्वास्थात करके हैवाई नृटेरे की म्रापीनता स्वीकार कर सी।

भारत में पूर्वनाल साझाज्य के सस्यापक सलई-सी सव्तवस्त ने १ १० से लेकर १११६ तक बांबा घोर लगा के मध्यवर्धी समस्त मानूनी तट पर दासन किया, उसने नक्ष्यार और खाग के नल पर ईमान्यत की जह जमाई, उसने परिवारी तर के मुसलमानी को सपने प्रनियोध का लक्ष्य बनाया।

पर्नेमाल के राजा को गोवा से भेजे गा झपने एक पत्र में बह गोवा के साक्रमस्य का वस्येन इस प्रकार करता है —

'तब मैंने नार को जलादिता धीर जान मन स्रयादला को मौत के बाट उतार दिया। भ्रावेक लोगो न लगलार कई दिन नक लून बहाने का कास बालू रका। जो भी सामने भ्राया धीर जहा कही पत्र का गया, बही पर मार डालागया। मुललानात तादायद ही कोई वया हा। उन की महिनदो म भ्राय लगाकर उन्हें नट भ्रटर नियागय। हनारी गणनाक मनुसार ६००० व्यक्ति मार डाल यर बहुत से मुल्यिन पुलर दिन्यान। अञ्चयर मरे।

मेर न्यामी 'यह काय महन्या जा सब्धी तरह हव म निपासीर पूरा किया गया। मैं मुनलस नो ना निसी ⊾गरन या कव र यहानही रहने देना। जो जीवित बनी बनाए गये मैंने उन्हें साग ने सूनन का स.सा दे दी है।'

(श्रीयुत मिलाल सी० पारिल कृत भारत में ईसाःयो द्वारा घम परिवतन पृष्ठ ३६३७,१६४७ कासस्करण)

(जसश

# श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक महमम्यादक मार्वदिशिक को श्रद्धाञ्जलियां

स्नायसमा ज वीवानहाल दिल्ली में भी रपुताव प्रताद र ठक की श्रश चित्र सभा प्रायाजित की गयी। इस अवसर पर श्री रामग पाल जालवाल श्रा सामग्रकाश त्यांगी, श्री सीमगाथ मरवाह खी न्येंद श्री मुलबर्ग गुल्न स्नादि सहानुभाव उपिथ्यत य। सार्वेदील क्षण २० ४० सभा के प्रय न श्री र नाो ाल खालवान ने कहा वे सनीसे विद्वान् लेवनी के बनी सौर प्रायसमाज के दावान वे। सायसमाज के टिलिहास का उन्हें भनोला न गरी र मृति थी। बुद्ध हो आने पर सी व सनिस समस तर क कमशील वने रहा।

श्री स्रोमप्रकार त्यांगी ने कहाशी पाठक जी के साथ एक युग को चनेक स्पृतियाँ जुझी हुई है। वे मुखोय पत्रकार तो ये ही जुखन कार्यकला नी थ । उनके सानिश्य स्रोर तह्योग ने मचा के प्रमुक्त पत्र का कास प्रगति पर रहा। वी सोमनाव मरवाह स्रोर श्री प्रवेदेव, श्री प्रसन्तर गुप्त ने भी घर्मी श्रद्धा ज्वानि व्यक्ति की।

श्री रखुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति को विरत्यायी करने के लिए सावदेशिक समा में पाठक जो कनाम पर पाठक स्मृति निधि स्थापित की गई। इस निधि में सनेक लोगों ने श्री रामगोपान सासवाल श्री सुमनारायण पार्मा, श्री केशवचन्त्र पाठक, श्री राधाकृत्या श्री बहुसदत स्नातक श्री कम-नेया कुमार, क्षी सायुदेव विद्यार श्री कुनवक्ट नो सादि ने एक हजार में सेक्ट एक सी एक तक की दान राजि प्रसान की।

### डा॰ सत्यकेत विद्यालंकार गुरुक्कल कांगड़ी के कुलाधिपति

नई दिस्सी १८ जोबाई । गुरुहुस कागडी विश्विण्यासय हरिद्वार के कुलाचिपति पद पर भी बाक सरवकेंद्र विद्यालकार नियुत्तत हुए। भी बाक सरवकेंद्र विद्यालकार नियुत्तत हुए। भी बाक सरव-केंद्र दिवहाब के प्रविद्य विद्यान, प्रजेक प्रत्यों के लेलक गुरुहुत कागडी के पूर्व कुलपति, वर्षनी से वैं। नितट की जाविष्ठ प्राप्त है। उनके कुलाधिपति नियुत्तत किंद्रे जाने पर पार्यवस्त से हुई की सहुर लेल नथी।

-सवाददाता

कुण्वन्तो विश्वमार्थम् 'के स्वर को निनादित करने वाले महर्षि दयानन्द एक यूग-द्रष्टा थे। उन्होंने यूग-बोध की स्थी-कृति ध्रपने जीवन द्वारा प्रदान की है। चनका जीवन ज्योति पँज रहा है तथा वह न अ ने कितनी जीवन -ज्योतियों को श्रदानन ज्योतित करता रहा है। उनके भीवन का ध्यय व्यक्तिगत नहीं, प्रवितु समध्यात है। उन्होने स्व को नहीं भ्रमितु पदाथ को ही साधन एवं साध्य बनाया। ऋर्षित जीवन को एक सजग प्रहरी के रूप मे देखा। वे निद्रा एव सानी से प्र दूर भागते रहे है । दयानन्द सपनो पर नहा प्रपितु सतन कर्म पर विश्वास करन वाला एक सज्य योद्धा था। कर्मठ का एक बादर्श होना है सरना नहीं। बत हुम यह भी कह सकते हैं कि महचि दया-नन्द कं बादशों का भारत।

विव्व को भाग बनाने का सकत्न ऋषि दयः नाद राजा। भागे से तास्पर्य ही किसी एक वन से नहीं प्रतितुक्षेष्ठ मानव के निर्माण से था। मानदोत्तर संस्कृति की सरवाना ही धादकं था। मानवोत्तर संस्कृति का निर्माण मानव को केंद्रतर बनाने से ही सम्भव था। भानव जीवन में मानवीय मुल्यों की स्थापना युग की महती प्रावश्यकता थी। म नवीय मून्यो का ह्रास होताजा रहाया, जो भारत की गरिमा को नव्ट कर रहा था। ऋषिकाजीयन,चिन्तन दर्शन एव व्य-वहार भारत की मृत्राय आत्मा के लिए सत्री नीसिड ह्या। विभिन्न प्रशार के बाद विवाद एवं मत सना-तर में उल भा भ।रतकाभवित्यप्रवक्तरसम्बद्धाः उस भाषकार में ज्यानि वय त्यानन्द का उदय द्याशाकी किरण के रूप में प्रस्कृटित

मतमा,वावा कर्मणा ऐक्य के स्थिति ही पुरुष को गहापुरुष बना देती है। ऋदि दयानन्द्र मन वचन एव कर्म से एक रूप थे। कही भी उनके जीवन में बदलाव व बिसराव नही रहा। मन से एक दढ सकल्पवान् भाजेय, वाणी से भो अस्ती व तेजस्वी तथा कर्म से भटल प्रुव योगी ऋषि दयानन्द थे। ''तमसो माज्योतिर्ग मय" के न्यहार साधक ''धसतो मा सद्ग सब की प्रतिमृति दन गये। "त मे मन बावसकरूपमस्तु" की कत्याणी भावना स युक्त 'सर्वे भवन्तु सु<sup>श्</sup>वन" का साकार **₹र प्रतिष्ठित करने वाले ऋषि दयानन्द** ही मे । ऋषि दया न्द ने उद्बोधन का कार्यं किया। उहीन एक नयं भादर्शंका सन्मार्ग प्रशस्त किया। वस्तुन दयानन्द द्यानिचान ग। वही उसका ग्रामन्द तथा वही उसका मृत्व था। वह जो चाहता था वही करता तथा उमकी ही उसकी भ्रापेक्षा ीयी।

स्त्र- याने प्रतिसञ्ज्ञाता के माव काल्यम सा ऋषि दयानन्द से ही श्री लालमन गार्थं निबन्ध प्रतियोगिता मे द्वितीय पुरस्कार प्राप्त-

# "महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत"

--- डा० सूर्यप्रकाश विद्यालकार के० एव० १५७ कविनगर, गांवियाबाद

हाता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से सर्वेप्रकम उद्यभीयत किया कि भारत की स्वतन्त्रता प्रति सालयक है। उनका यह कवन बीज भन्न तिय हुवा कि विदेशी राज्य अच्छे से प्रज्या तथा स्वदेशी राज्य हुरे से हुरा बयो न हो? पर तुस्वदेशी राज्य ही भेष्ठ है। देश प्रेम का उक्काम भाव स्वानम्द के द्वारा प्रकारित किया बया। स्वतन्त्र कारत का मपना ही स्वानन्द का महत्त्व पुण साला था।

जनने व जन्म मुनि के प्रति गौरव-प्राव पर्रव करने वाले द्वानन्द ने विदेशों गावा का पूर्ण रूप से विद्वानन्द ने विदेशों गावा का पूर्ण रूप से विद्वान्द किया है। वे राष्ट्र गा दिन्दी के प्रेमी वे। उन्होंने प्रवे प्रन्ती का प्रययन सस्कृत प्रवान दिन्दी में ही किया है। वे इस सदम म 'सत्यार्थकतागं 'की भूमिका में लिखते हैं, आ समय मैंने यह मारावश्वकाय बनागा या उत स्वया उतसे पूर्व सस्कृत भावक करने पटन पाठन में सस्कृत ही बोलने मोर जन्मभूमि की भागा गुजराती होने के कारण गुक्र को इस भागा का विशेष परिजान न या। प्रकाशन निक्रने सौर बोलने का सरमार हो गया है '

कवि दवानन्द की सपेपा भारत को टजप्रका एवं प्रणान कप में देखने की सी। वह भारतीयों के ज्वज्जन्त करिय क द्वारा है सजस्व थी। चरित्र निर्माण ही ऋषि का उद्देश था। चरित्र का पतन निम्नत्तम कि नतक उस समय पहुन गया सा। 'सरय पंजकाश की रचना द्वारा ऋषिने पन पंजकाश की रचना द्वारा ऋषिने पन पंजकाश की स्वर्णक की स्वर्णन । व होने भारतीयों के चारि-दिक्त न व निष्दारण य जान को पन्म गरमा।

न प्रिताश्चाकः प्रयत्न स्वाधी जा के प्रस्मा नस्ताधकणा वे नज्ञ हा जाना है सरपोव जयते नज्ञ हा जाना है सरपोव जयते नज्ञ हान्य प्रमा वितान देवचान " प्रवाद् सर्वेदा सत्य की विजय तथा प्रसत्य की प्राज्य होती है तथा सत्य के विद्यानों का भाग प्रभात होता है। इस व्यवस्थानी सभवत पत्रने विय सदस जा को, पर-तु परिणान उक्कम सर्वेद प्रमुगोपन पहा है— यान्वय विपत्न परिणामिञ्जानोम्, भारतीय धारण यथ्य सस्योव प्रयोगि ऋषि दयानन्य से प्रेरित तथा उनके भादकों काही मूर्तीकरण है।

ज्ञान एव निष्ठा से जीवन एक सावर्श को प्राप्त करता है। उसी खदर्श की स्थापना के दिस ऋषि ने जीवन की प्रारम से ही सवारने का प्रयास किया। जान के क्षेत्र मे द्यानन्द के इस विचार ने का वि-कारी परिवर्तन किया कि 'बेद सब सस्य विचामी का पुस्तक है।"वेद जो गडरियाँ के गीत बताये गये वे ज्ञान की ही नहीं, अपितु सद्ज्ञान का भी आदि स्रोत बन यथे । वे ज्ञान-विज्ञान के सक्षय भण्डार बन गये। वेदो की श्रवस्न लीति की वाराको पुन प्रवाहित किया गया । वेदो की मदाकिनी कल-कल निवादिनी बनकर जिज्ञासुची के जीवन की सगीतमय बनाने लगी। वेदो की पुन स्थापना ही ऋषि दयानन्द का स्नादर्शया।

महर्षि दयानन्द वेदों के परिप्रेक्ष मे बादशं मानव एक चरित्रवान् भारतीय की सृष्टि करना चाहते थे। भारत से नान एव शिक्षा के क्षेत्र में पाञ्चात्य भन्धानु-करण या इस ग्रन्थानुकरण की भावना काऋषि दयानन्द ने प्रवस विरोध किया। उन्नोन भारतीयों को धवने ही दर्शवामे देखने का सुकाव दिया। दूसरी के रतीन चरमो ने जहा मत्य झमस्य हो जाताथा बहा बसरा मत्य प्रतिभ सित होता था । सत्य का गोपन ही घात्य हुवन है। इससे "का काई ग्रागंध संभव नहीं है। सत्य का बारानच्य प्रस्तुनीकरण ही दवानन्द के जीवन का ध्येम था। इसी मादर्श पर भारत का पुनिर्माण करने का प्रयास ऋषि दयानन्द ने किया। सदैव ही उनके विचार कर्म तथा सकस्य इसकी पृष्टिः करते रहे हैं। भारत के पूननिर्माण के लिए उन्होंने वेदानुसार वर्माश्रम व्यवस्था को स्वीकार किया।

वैदिक वर्णात्रम व्यवस्था की स्थी-कृति वैद्यास्त क एव साम जिक बीवन को क्षेत्रपूर्ण बनाना था। वर्णु जहा क्ष्यास्त्र का सामानिक प्रतिकाशन है वहा खाल्य उसके समाज का वैवित्तकरण है। वर्ण विज्ञावित कर्मानसार हो, यह क्षमि का सर्वमा था। वही वैदिक व्यवस्था है। जान का स्विक्तवादा बाहुरण, पौक्य प्रवास अर्थिय, कर्मठ वैदेश एव सेवा-बाब को स्वीकार करने वाला जूद वा। मध्यकुत में बहा वर्षीकरस्य लम्ब दे सहन विवा माने लगा। माहस्य का देटा माहम ही रक्का, गहे यह कमें से सुद हो। ऐसी निवित्त वारित्वतियों में मानि दवानन्द ने नर्वहीन समाल की स्वीकृति दी। सन्होंने जातिनत मनोकृति का नाश करके सभी को आयंव्याति में ही समाहित किया। उनकी सिट में ऊक मील कर को नहीं जा। उन्होंने स्मद्रमा नेदिक स्वरचा वला के स्वर को ही साक्र स्थ दिया। ''आसमन प्रतिकृत्वानि परेवान समावरेत्' तवा ''आसमन प्रतिकृत्वानि परेवान समावरेत्' तवा 'आसमन सावकृत्वान को मान स्थान्वते अर्थन

जीवन को चार सोपानो, ब्रह्मचर्च, नुहृस्य , बानप्रस्य एव सन्यास बाश्रम से विभाजित किया गया। ब्रह्मचर्य द्वाश्रम ज्ञान एव निर्माण का धाश्रम है। गृहस्थ माञ्चन कर्म का ग्राथम है। वानप्रस्थ सामाधिक कल्यासा का बाश्रम है तो सन्य स उपासना एक द्यानस्य का साध्यम है। जन्म लेते ही शिशु ब्रह्मचर्य साधम मे प्रविष्ट हो जाता है। माता निता एव बाचार्य उसके क्रमश गृह है जो उसकी ज्ञानार्जन में सहायता करते हैं--- 'मातू-मान् पितृमान् सावासंवान् पुरुषो वेद। धावार्यं का स्थान माना-पिता के सनग्तर है। प्राचार्यकातास्पर्यक्षेष्ठ श्रावरण गला है। प्राचार्य के पास गुरुकूल से वालक ध्वय के सगभग पहुँच आसे। वहीं वह उच्च शिक्षा एवं दीका को प्राप्त करे। शिक्षा जहा पथ का विस्तार करती है वहा दोक्षा उसको सत्कार देती है। बाज शिक्षा का तो अथापक प्रचार है परन्तु वीकाका नही। विनादीकाके जिल्ला जीवन का स्थावहारिक स्था नहीं वन सकती। जिलामे बहा प्रदण करने की भावना है वहा दीला में त्याय एव समर्शन की नावना है। बाज दीना प्रारम किय बिना ही दीक्षान्त समारोह प्रायी-जित हो जाते हैं। किमनी बढी विस्नवसा है यह दीका की भावना को पूर्ख रूप से ग्रहण करना ही पूर्ण शिक्षा है।

ऋषि दयानस्य गुरुकुकीय शिक्सा पढिति के सम्बंध थे। गुरुहुस में बाचार्य के पूर्णसन्धरण में शिष्यक निर्माण होता है। उमे कठोर धनुशास्त्र में सहकर जीवन का निर्माण करना होता है। खिच्य बहा गुरु को धननी से एवं महित से जीतता है, वहा बुन विख्य का पालन पोपण प्रपनी सतान की तरह करता है। वेद में गुरु शिष्य का पालन पोदशा झपनी सन्तान के समान करता है। वेद मे गुढ शिष्य के सम्बन्त को न्यन्ट करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार मन्ता-पूत को गर्म ने बारण कर पानन दोवता करता है, उसी प्रकार नद शिष्य का पालन पोचल करे। पासन पोन्क नि धनुशासन के (शेष पुष्ठ ८ पर)

इतिहास की एक मभूतपूर्व

२६ विद्यान्यर का दिन हुम झायों के सिए बड़ा ऐतिहासिक सहस्य रसता है। । यह वह दिन है वब झायेवमान के एक लोकिएन विद्यानिक विद्यानि

२३ विसम्बर १६३० को पत्राब विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह या। डा० राधाकुष्णन ने दीक्षाम्त भाषण देना था और पवाब के तत्कालीन गवनैर SIr GEOFFREYDE -- MONT-MORENCY सर गोफरे इस समारोह के बाध्यक्ष ये । समारोह एक हाल में रखा गया । सुरक्षा के कडे प्रवच किए गये । फिर भी पुलिस वा गुप्तवरों से वयकर एक क्रान्ति बीर स्नातक के देश में शब्दकीय में पिस्तील द्विपाकर मन्दर चला गया। इस कास्तिवीर का नाम या हरिकिशन। बहु कुर्सी पर उठा भीर गवर्नर पर निशाना समाया। गवर्नर घायस हुमा। उसके साथ उस का बचाव करने वाले पुलिस कर्मचारी भी हरिकिशन की गोलियों का निशाना बने ।

गवर्तर वस गया क्योंकि उसके साथ द्वाः राजाकृत्यान से। कान्तिकारी बाः साहब को स्थाना बाहता था। बाः राजा क्रम्यन ने स्वय १८६६ में कहा था क्रिक्र क्यां के सिए उस विद्रोही बीर युवक ने सावधानी वस्ती। इसलिए नवर्तर सायल तो हुमा परन्तु वस गया।

इस घटना का प्रत्यन्त गौरवपूर्ण पहुनु
यह है कि बीर हरिकिशन को उसके
पिता सात बुरबास मन की ने स्वय इसके
निसानेबान बनाया था। नात गुरबास
मन ने १२ विसम्बर ११३० की प्रिय
पूत्र को साहीर के लिए स्वय दिशा
क्रिया। यह नीसहरा तक उसे क्रीवने
स्वय प्राप्त और सुक कुक मा वकता का कार्यसिक की प्रेरणा देते हुए यहा तक कहा कि यदि कार्य में सफन न हुए तो बर मत सान। मैं तुन्हें नोसी से मार

### तस्यामञ्च-

२३ विसम्बर का रिन हन वार्यों के आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

# आर्यों की वीरगाथा-४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

द्वा। पुत्र ने रिताको बादनस्त किया। रिता बानता वाकि पुत्र मृत्यु के अवडों में बारहा है तवापि बीर पुत्र को इस प्रकार विदाकरने का दूसरा उदाहरसा मिलना इस पुत्र में प्रतिकटिन है।

जब हरिक्खन की को नी जून १६३१ ईस्वी को मियावाली जेल में कांसी बण्ड दिया बया। उसके २७ दिन पण्डात् की गुरवास्थम की भी घरोजी शासन से जुमते हुए मैदान में जल बमे । सात जलाई १६३१ हैं० को नह प्रायेज हारा बलाए वये धर्मियोगों के निए मर्दान गये थे। ला० गुरवास्थम की ने घरने बच्चों को देशभक्त, बीर, शिस्ट व धार्य बनाने के लिए सदा यन्त किया। वह सीमा प्रान्त में हत्वे परन्तु बच्चों को धार्य स्कार देने के लिए सीरोजपुर के एक धार स्कृत में भेजा।

वह रहमत लाकौन था?

प्रसिवयं नेता की सुभाव कर बोस के जम्म दिन पर खरने वाले तेकों में एक ब्यानित रहमत को की वर्जा होती है। यह वह व्यक्तित पा विवने नेता जी को एक मुख्यमान पठान के बेदा में देख ते विवेध पहुँचा । इतंत्र पर नेदक करने का यात्रा । स्थान स्यान स्थान स

यह रहमत का कौन या? यह दीर हरिकिशन के सगे भ्राता भ्री अस्तराम भी थे। भ्रापभी फीरोबपुर में भ्रायं कृमार समाके मन्त्री भी रहे। इन प्रसा-

नीरों की झौबंगाया पर किस देशभक्त को अभिमान न होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि घन की कोलुपता को तज कर आर्थ सन्तान अपने शात्र नेज को जनाए।

ग्रौर वह भी बन्दी बन गया —

इन्ही हरिकिशन के एक और भ्राता श्री ईश्वर दास भी सभी किशोर सवस्या में थे कि मम्रेज की जेली मे बहा बन्दीवनाए गये। ग्राप एक दिन बायसामाजिक कार्य के लिए मेरे गृह पर पचारे तो एक घटना मुनाई। प्रापने कहा कि एक बार मुक्ते ग्रीय्म ऋतुमे जेल की कोठरी में बन्द किया गया। राति के समय मैं मूज की चटाई पर सोबाहुमा थाकि मुक्ते ऐसासगा कि मेरे सिर के नीवे कोई जन्तुसरसर कर वल रहा है। मैं उठा भौर भपनी कोठरी के बाहर खनाकों के पास लडे सन्तरी से कहा, मुक्ते भापनी टार्च दो, यहाँ कोई बन्तु है। उसने मुक्ते टार्च दिया। मैंने देखा कि नेरी चटाई पर एक मोटा विच्छू था। मैं इसे जूते से मारने लगातो उसने मुक्ते भपनी सगीन दे दी। मैंने उससे कहा, रहने दो। प्रात यदि इसका पता लगा कि तुमने हरिक्शिन क्रातिकारी के राजदोही भाई को कोठरी में समीन उतार कर दी तो तुम्हारी नौकरी भी वावेगी।

परन्तु वह सन्तरी बायुक होकर होना, क्या पता मैं कब तुम्हारे साथ झा बाक। किच्छु बारा क्या। बोठे ही दिन में बह सन्तरी गोकरी छोड कर राज्योत कन गबा स्नीर वही दिवस्त स्व के पास केल में पहुँचाया गया। तब युवा वर्ष

नीरों वा देखमक्तों से प्रेरशा पाता था। श्रास सोगवार के कारण किसी पुत्रक पर तिकक, सावपत, सावरकर, सुभाव, पटेल वा रामप्रसाद भादि बोरों के बीवन का प्रसाद पढ़ता ही नहीं। यह प्रदृत्ति बदलनी होंगी।

यह थे चन्द्रदेवसिंह सिद्धान्त किरोमणि

'आयंभित्र' से तैने एक लेख में रकत साझी बीर रोजनिंग्यह की सन्योध्य की वर्षा की यी। उन्नमें विश्वप्रकाश से हुई अपनी बातचीत के साभार पर निला वा कियालय ज्वालपुर ते प्रयाग से अन्तिस सहकार के लिए आए थे।

माननीय श्री बहादत बी स्नातक ने सावंदेशिक सभा से मुक्ते लिखा है कि बीर रोशनसिंह के सुपुत्र का नाम चन्द्र-देवसिंह मिद्धान्त शिरोमणिया । वह गुरुकुल बृत्दावन में स्नानक जी के सहपाठी वे ग्रीर गुरुकुल वृत्दावन मे तब शोक सभा भी हई भीर शहीद की ग्रन्त्येष्टि का प्रयाग में लिया चित्र शहीद ने पैत जगदीशिंड के पास स्नातक जी ने देखा। श्री विद्वारकाश जी को भी त्व पक्का याद न या कि शहीद के पुत्र किस गुरुकुल में पढ़ते थे। मैं पुराने मार्थी से शहीद के पुत्र का नाम वा उनके गुरुकुल कापता करता रहा। ग्रच्छा हुआ। जो मान्य स्नातक जी ने सारी प्रामाणिक वानकारी देवी।

वीर लेखराम का चरणानुरागी छोटे व्यक्ति भी कई बार बडा घदभुत कार्य कर दिखाते हैं। श्री प० घगतराम जी हरियाएग के एक खरक

प्रतर्त न जी हरियाएं। के एक धरक प्रकृति के सन्नानेश्वक थे। वह प्राय पठ स्क्तीरास जी के भजन गाया करते थे। उनके एक प्रतिपत्त की माना करते थे। उनके एक पुत्र का निषम हो गया। धरवेरिट करते ही पामीगत धार्यक्षमां के नगर कीर्तन से भाग तेने चने गया। उन्हें रोका गया तो वह ने को यो। उन्हें रोका गया तो वह ने को यो। धार्यक्षमां का उत्तर नहीं विस्तृता । धार्यक्षमां का उत्तर नहीं विस्तृता वाहिए, धर्म ये चनता है। हम कि कहना चाहिए, धर्म ये चनता है। हम कि कहना है। हम कुट्या है, इन पूज्य पुत्रों के।

# किशोरमञ्च-

# याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी

प्रस्तोता बसचीत शास्त्री

याज्ञसस्य एक ऋषि थे। वे बने पितान के। उन्होंने अच्छी तरह दे विश्वा प्राप्त की थी। धपने समय में वे बने प्रतिब थे। राजा जनक के दरदार में जी गये। वहां पर भी उनका बना सावर हुवा या। उनके वे। दिकार्ग थी। एक का नाम कालावनी या और हुवरों का नेमेपी। कालावनी खकके बाद अवस्तुर करने में चतुर थी। ऋषि उसे बहुत बाहुते वे। मैंत्रेमी का मन ससार के कार्मों में नहीं जगलाया। वह आरखाकी उन्नति के बारे में सोचाकरती थी।

बाइबरूव्य जी ने बहुत से बज कर-बाये ने । उन्होंने बहुत से पण्डिकों को हराबा जा। बहुत से राजा महाराबा उन्हें कुछ बागते के। उन्होंने बहुत जम कमावा या।

त्यात में में मिलता है। हमें खन्यात सेने के सिर, सब चीजों से मोह छोड़ देवा गाहिए। जब तक हम पन दौसत से प्रेम करते हैं, तब तक सपस्या नहीं कर एकके। मैनवी ने कहा - 'यदि घार इस चन दौलत ने मुख्ती नहीं बन सकते तो मैं केंद्रों बन सकती हूं। मैं भी ये सब चीजें नहीं लूंगी और तपस्या करनी।

साज्ञवस्थ्य जी यह मुनकर वडे प्रधन्न हुए । उन्होंने कहा-'तुम ठीक कहती ही । संसार की चीजों से भारमा की उन्मित करना चाहती हो तो सब चीजो का मोह

(शेव पृष्ठ = पर)

व्यासपीठ---

#### उपनिषत् कथा माला-११

# निर्लोभता

#### लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

बात की अरूरत नहीं। उनके लिए तो

वेदों से सनुप्य जीवन के सुवार के लिए लोको प्रकार के सावेश किए हुए हा कांग्ज यह है कि विद सनुष्य-जीवन सुप्य ज व तो सखार के समस्य प्राणियों को सावेश किए सहस्य का जीवन विकृत हो जाए तो उसके जीवन का प्रभाव प्राणियों के सकत्य सनुष्य सन्य प्रभाव प्राणियां कर चुरा प्रकार है। प्रस्य सन्य सनुष्यों ने एक साव मिसकर, साथ में बैटकर हानि सीर लाभ का विवार कर रक्ता है। जीवे वेसों —

एक मनुष्य ने मच्छा सकान वनवाया। उसके दिल में खयाल भाया कि इसके कमरों मे हरिए। के सीगों की स्रटियें लगवाए । इस तरह का मूजी अयाल उसके दिल मे मा गया । भव यदि वह शिवारी है ौर उसके पास बन्दूक है तो अगल में जाकर हरिएों को मारना शु<del>र</del> कर देगा। यदि खुद शिकार नही कर सकता है तो दूसरे शिकारी सोगों से कहेगा कि तुम मुक्ते बदि हरिण के सीव लाकर दोगे तो तुम को एक-एक सीग का एक-एक रुपया दूँगा। ग्रव ग्राप ही विवार की जिये सीगो के लिए निरराधी हरिण यों ही मारे ज वेंगे। कमरे में खूँ टियें तो चन्दन की भी लगाई जा सकती बी, जिनके भ्रन्दर से खुतबू भाती है भ्रवता किसी दूसरी जरूडी वादिसी चातु विशेष की स्तृटियों से भी उसके कमरे की बान बढ सकती यी क्योंकि उसकी सूरियो ५र कपडे ही तो टाँगने ये, लेकिन उनने दिल मे यह खयाल पैदा हो गया कि नही कमरे की सवाबट तो हरिए। के सीनो संही हो सकते है। उसके दिल में ऐसी भावना पैदा हुई, पर वे बारे जानवरों के ऊपर मुसी-बत था गई। मनुष्य की भावना का कैसा दूरा प्रमान पडा<sup>?</sup> ग्राजकल तो अनुष्य का जीवन बहुत ही कटू हो रहा है, उसकी कट्ताका बुरा प्रभाव मनुष्य पर भी है और वेचारे दूसरे पद्मियो पर भी। धागर उसको सीयो की जरूरत होती है तो बहसीग उसाड लेता है। अगर उसकी चमडे की जरूरत है तो वह फौरन चमड़ा विचवा लेता है और प्रगर उपको गाँस आने की बादत है तो वह बेकारे निरमशाध हजारों पशुर्घों को मार डालता है। धन धाप देख लीजिये कि वह सृष्टि परमेश्वर की है। उसने मनुष्य और पशुक्रों को बनाया है। पशुर्यों पर मनुष्य क्तिने ग्रत्याचार कर गते हैं। पशुर्यों ने कीई वसीय वहीं चौड़नी। उनको घौर किसी

जगल के अन्दर साना मौजद है, परन्तु बॉटना है तो अनुदर्शों को, धन की इच्छा है तो मनुष्य को। यदि कभी शढ ई होती है तो स्तृष्यों सन्त्यों में प्रापस में होती है, परन्तु उनकी लड़ाई में बेवारे निरपराध पशु हो मारे जाते हैं। मनुष्यों ने ही दूसरों के बन के हरण करने को इञ्छासे मैय, तोषे, बन्दुकें, बम धादि बनाये हैं। इनकी धापश की लड़ाई से हजारों निपराध पश मारे जाते हैं। इसीलिए वेदों में उपवेश विधायवाहै स्रोर साल भी उपदेश का सिलसिला जारी है, तो इस उपदेश का मतलाव यही है कि किसी भी तरह से मनुष्यों की भावनाओं में सुवार हो। मनुष्यों की भावनाओं के सुवार में समस्त विश्व के प्रास्तियों का कल्याण है और उसके दिवाड में प्राशिमात्र की कब्ट ही कच्ट है। यह दुश्च इतने क्यों होते हैं? भाव दुनियामें स्वार्थका बाजार बहत गर्म है। स्वार्थ दुनिया में बहुत ही बढा हुआ है। स्वार्ण ने बढ़ करके इन्सान की विचार शक्ति की मनिन और विकृत कर दिया है। हर एक न्सान को लोभ और लाल व ने इतना नीका गिरा दिया है कि कहने की कोई बात ही नहीं । यह कम्बक्त सोम भी मावना कब तक बढ़ती जावेगी? बाज हर एक मनुष्य में बैश्यवृत्ति काम करने लग गई है। लोग कहते हैं कि यह बाह्यसा है पर वह बाह्यम कहा। वह कभी बाह्यए। नहीं हो सकता जिस के ग्रन्दर वैश्यवृत्ति हो, जो वन के साम व मे पड़ा हुआ है। लोक कहते हैं कि यह राजपूत है, परन्तू वह राजपूत है कहां! वह कभी राजपुत नहीं हो सकता जिसके बन्दर वैश्यवृत्ति नाम कर रही है। बाह्याए। में वैदयवृति क्षत्रिय में भी वैदय-वृत्ति हो नई है। बैश्य में तो बैश्ववृत्ति बाहिये ही बी। यन में लोग होना ही वैष्यवृत्ति है, वैष्य का तो काम ही वन कमाना है परन्तु धावकल तो शूदों में भी बैक्यवृत्ति हो गई है। प्रव धगर सवास करके देलों तो अन कोई बुरी चीज नहीं है, लेकिन बच्छी चीज होने पर भी यह तीमरे दर्वे की चीत्र है। यह तीसरे दर्जे पर ही धन्छी सगनी है, पहले दूसरै बा चौथे दर्जे पर नही । जैसे –

एक बालक है, उसना काम है विद्या पढ़ना और धारीनिक शक्ति बढाना। जब धारीरिक शक्ति खब बढ़ बावे और

बालक बवान हो जाय तब उसकी वासी की बाती है। बाली कुछ दूरी की नहीं है, परन्तु बहु जवानी में सक्की रहती है। सगर जवानी साने से पहले बालक्यन में ही घाटों कर दी जाने तो बहु बहुठ गुरू-सान देने वाली है। पीछे की चीज को पहले सौर पहले की चीज को यों करने में ही दुराइमा सौर सक्कीयें होती है।

एक लड़का है, उने पाठवाला में बार की जंदबाई जाती है। पहले जमा और फिर तकसीम। सबके को पहले जमा भीताने के बाद में ही तकसीम रिवक्ताई जा सकती है। सबर जमा के पहले ही बालक को तकसीम दिखायें को वह सकट में पड़ जायेगा। कायदे के पुताबत पहले लड़के को जमा का कायबा ही सिलाते हैं भयांत् पहले जने मिनती सिलाते हैं १, २, ३, ४, ५, ५, ५, ८, तक। सक्या वो एक ही है। उनी से १ तक बनी है। परवास्था भी एक है। वेद मन्तों में भी बड़ी बताया है।

न डितीयो न तृतीयो न चतुर्थो न यचन इत्यादि ।

बागा शिकाने में पहले एक से सिकाना बन्ता है। सौ के बादि में भी एक है मन्य में श्रीएक है सीर **घला** में भी एक है। परमारमा भी एक है। श्रसल संस्था तो एक ही है। एक सब में मौबूद है, तीन मे दो मौजूद है लिन २ मे ३ मौजूद नहीं है। ऐसी कोई भी सस्या नहीं है, जिसके अन्दर एक न हो। तीन, कार और नीइन त्व में एक-एक मौजूद है। वह समक लीबिए कि एक भीर एक दो होंगे। बास्तव में तो एक ही एक है, अब देखें कि साने चलकर सऱ्या शतक ही है। द्याप पूछे वे क्यों <sup>?</sup> तो इसका उत्तर **है जो** तंत्र्या है वह पूर्ण रूख्या है। एक को सस्या है यह सबंतन्त्र स्वतन्त्र सक्या है, क्योंकि बहद में, १ में, ७ में, ६ चें, सब में ही पाई जाती है क्योंकि ८-१ वर्गेरह संख्याओं की ब्यावहारिक सत्ता है, पर-मार्थ में तो एक ही एक नजर सन्ता है। एक बात तो यह हुई, बब दूसरी बात वह है कि यह सर्वतन्त्र भीर स्वतन्त्र क्यों है ? जो सस्या मादि, जन्त भीर मध्य में तथा सब बन्ह रहेनी बहु सर्वतन्त्रं और स्व-तव कही जायेशी । १ को पूर्ण सस्या क्यों कहते हैं ? पूर्ण संस्था बही है जो अपने

में न्यूनतान वाने देवे। वाकीकी नोव, वो सीमा पर रहते हैं उनके एक बज्ये ते किसी ने पूक्षा कि —

तुम यह बठाओं कि तुम धपनी कीत में कवी धपने स्वार्ष के बिए हानि करते हो वा नहीं ? तो उस नव्यमें ने बवाद दिया की हुमारी कीय धनर दी वर्ष तक कियी की मुसाबी में रह बायेयों तमी हम में ऐसे समास देंगा होंगे। वो स्वतन्त्र घायमी है क्या वह कभी परतन्त्र हो सकता है ? वह हर तरह से धपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करेवा।

हम सोग वेद की मानने वाले हैं। हम अपने को ऋषि मुनियों की सन्तान कहते हैं। सोदेस का जप करते हैं परन्तु जब तक हुमारा व्यवहार न सुधरेगा, घोन् हम को ऊचानहीं उठा सकता। अगर हमारा व्यवहार ऊँवा उठ जायेगा तो हम भी कने उठ जायेंगे। भगर हमारा व्यव हार नीचे गिर कायेगा तो हम भी नीचे गिर जायेंगे। धाप कहेंगे कि व्यवहार तो सैक्झों प्रकार के हैं। हम किन किन को बुद्ध करें ? तो मैं ब्राप लोगों से कहता है कि झाप तीन वातों को बुद्ध कर में तो श्चाप के सब व्यवहार सही हो जार्येथे। जो क्षोटे सर्थात् बच्चे हैं उन पर झाप दवा रक्कों और जो जवान बादमी धर्यात् बरा-बर वाले हैं छनसे प्रेम रक्कों भीर जो बुड्ढे लोग हैं जनकी इज्जल करे। इन तीनों बातों पर जब साप सञ्ची तरह समझ करेंगे तब फिर माप देखिये कि कीन सा **बूराकाम कर सकते हैं ? शब जो श्राप** से बड़े होने उनकी तो साप इज्जत करेंने इसलिंग उनके साथ कोई भी दुराई नहीं कर सकते। भीर वो भारकी बरावरी है है जनके साथ बार प्रेम करते हैं। इसिक्ट जनके साथ भी भाग छल कपट नहीं कर सकते. क्योंकि मोहब्बत के साथ क्यह कैसा, भीर भार ने जो छोटे हैं उन पर आप दया त्वलोगे । कोई भी चीज आपके पास बाई तो घाप उसे पहले बच्चे की दिये बिना नहीं का सकते । इन तीन निवर्मों पर चलें तो संसार वच सकता है। और काम, कोथ भीर लोग इन तीनों को त्याय देवें तो संचार बन सकता है।

#### काम कोषरतया सोभस्तस्मादेतस्यव त्वचेत्

बीकृष्ण भी ने गीता में कह दिया है कि काम, कोच भीर लोग इस व्यवनों को त्यान देने से मनुब्द सुनी हो चक्का न मुख्य कह एक इस्तान में जोग बढ़ बचा है। वैचा होगा तो मोटर से लूबा, बिनेमा देख आर्क्मा, धानन्य से प्रहुता, जोग करूंवा शादि-शादि। धान ये के इस्ती कार कर गई है। इसी से स्पने कुख इस्ती कार कर गई है। इसी से स्पने कुख पहुंचा दर्जा है। यह से स्वान के स्वान पहुंचा दर्जा है। यह नियम के सिद्ध के क्षिए बना है। इस ने में न्या से से सं,

#### निर्लोभता

मैं साप के पास से से लूं, मनर पैसा है ---बहु ज्ञान के साथ धाता है। मनुष्य को धवर जान पैदा होना तो पैसा घपने घाप मा जायेगा, फिर वह किसी के रोकने से मही दक सकता।

धनर ज्ञान नहीं, तब वह ईववर को नहीं देख सरता। देखी। एक सेठ नै उसके को मुनीम हैं। एक की सायु करीव २४-२५ वर्ष की है भीर दूसरे की करीब २० २१ वर्ष की : दोनो ही होलियार हैं, क्षेकिन नेठ एक को ४५) २० धौर दूसरे को २४) ए॰ मासिक देना है। एक दिन २५) पाने व ले मुनीम न कहा - सेठ साह्य । मुक्ते २५) देते है घीर उसका ४५) द : इस रावया मतत्व ! देखो ? हम दोनो बराबर हैं। दस्तलत देल लीजिय दोनो के बरावर हैं। जितनी देर यह काम करता है उतनी देर मैं भी काम करता हू। हम दोनो ही बापके नौकर है। जैसा यह इसीर से पुष्ट है वैसाही मैं भी हू तब यह भेद क्यो ? सेठ ने कहा --- इसके पास को चीज है वह तेरे पास नहीं है। उपने कहा - क्या ? सेठ ने उत्तर दिया, यह तेरे से बुद्धिमान् ज्यादा है। मुनीम ने कहा---द्याप इस बात का इस्तहान कर लीजिये। सैठने कहा -- मच्छा फिर नाराज तो नहीं होगे<sup>?</sup> नहीं, तो ठ र है मौका धाने पर कर लोंगे। योडे दिन बाद जायपल सदै ऊर भाषे। सेठ ने उसको कहा कि चाकर पूछो कि ऊट पर क्या कीज प्राई है और बेचना है या नहीं ? मुनीम उसके बास नवा और बोला-तुम्हारे पास क्या है रियने कहा, जासफल है। वेने गा<sup>?</sup> ह्ना. बेव लेगे। वस इतना पूछकर वह चला साया भीर सेठ से बोला-जायपस है सीर वह बेचने को कहता है। दूसरे को कहा- श्रव तुम नाकर पृथ्वो । दूसरा उध धौर माव बाजार ने पूछता गया कि जाय-फल क्या भाव है ? एक ने कहा १॥) सेर नदातुम जायफल डेड स्र के भाव से सीस से लोगे ? उन्होंने कहा - नहीं। श्राचिर खटांक ऊपर १।।) सेर पर तय ह्याः प्रचास ६० का जायफल उस न्या पारी का नोट किया। फिर दूसरे वो पुछा तीसरे को पूछा, इस प्रकार सन का भाव किस सिया। तब भुनीय ने उसकी जाकर पूजा-- क्या आयफस है। उसने कहा, है। बेचेगा ? हा। किस भाव बेचेगा ? जैमा भाव बन बायेगा, बेच देंने । प्रच्छा दो सेर दोने ? नहीं इतना नहीं देंने। धन्त मे एक खटाक कम दो छेर तय हुया। प्रत बहुतन सब दुकानदारों को बुला साया धौर सबी को जितना जितना कहा वा, होस दिया भीर उनके पास से दाये लेकर ब्रस्ट कर वाले को दे विये। खु खु खरांक का उसे मफा रहा चौर उसको लेकर उसने क्षेत्र दिया। तो इस्र तरह वो सी दपये का मका क्षेत्रवा। यह दी सी वाये दुकान

पर साकर रस दिये । श्रव सेठ ने पृक्षा — बहु कैसे रूपये ? उसने कहा कि मैं अब नवा तो सब दुकानदारों से बाद पुछ लिया भीर पूछ करके इसका स्थापार किया जिसमें सा सा सटाक का नका रहा, उसकी बेचकर यह दुपया लागा ह । तब उसने दूसरे मुनीम से बहा कि सुनो, तुम भी बये के और यह भी बया, परन्त इसने भाव पञ्च सिया, वेश भी दिया धीर वाहर ही रूपया भी चुका दिया और उल्टादी सी रुपया नफाका ज्यादा लेक्टर स्नाया। वहीं कारता है, जिससे इसकी ४४) द० मिलते हैं। वह शरमिन्दा हो गया। यह तो एक मामुली बात मैंने बापको बताई। ज्ञान जिस वक्त विमल हो जारेगा घापको हर एक चीज ग्रसलियत मे नजर ग्रावेगी। **व्यवहार में धापका ज्ञान धन्धा है। वह** ज्ञान प्रन्था है। वह ज्ञान जिस दिन्ट से निकलता है परमात्मा को नहीं देख सकता। जब हम रोज पढते हैं कि भाई-नाई को प्रेम के साथ रहना चाहिए पर दिन भर प्रेम करे थोर शाम को रोज हमेशा लड लेबे, इसका तो कोई ठिकाना नहीं । उपदेश लाभकारी तो सिक्क है सबर जब उस पर ग्रमल किया जावे तो तुम्हारा जीवन परमेश्वरमय बन जाव । क्या लडना भच्दा है ? ज्ञान से सोबो। ग्राय

समाच भाव काम कर रहा है उसका काम कुछा बढा, वह मुश्किल मे पढा धीर उसका सामनाभी किया। परन्तु यह ठो इतना ही है जैसे एक मादमी को समेत करके कह दिया, यह मजिल नहीं है इस मजिल से जाभो । भव तुम ठीक मजिल के सामने साडे हो पर मजिल तम करना बाकी है। धगर धाप भी यह सबक लो कि यह उपदेश हमारे हित के लिए कर रहे हैं। उस पर चसने लग जाओ तो कितना साम हो जाने, लेकिन जो बोले सो कुल्डा खोले, जो कह सो करे, हम से तो नही होता । भाई <sup>।</sup> यह बग्त नहीं बनती । सुनो, ज्ञान का तकाजा है जिस दिन तुम ज्ञान-मय उपदेश पर चलने में कामबाब हो वाबोगे तो तुम्हारी ताक्त नही दक

> मुक्ति मुक्ति मागु नही भक्ति दान देशोही। भौर कोई याचुनही, निश दिन याच् तोही ॥ का गयातेरी शरण त्रव, तो मुभे बब भय कहा। मैं नेरा, किस्ती तेरी, साहल तेरा दरवा तेरा॥ तेरे दर को छोडकर जये कहा हम बेनिग। याबनादे भ्रपन जैसा भौर वर्डदर हमे॥

रहस्य खिपा है कि सुष्टि की यतिशीसता में कोई गति रहित बाबार है। यत सापे-क्षवाद में सदा कोई निरपेक्ष द्विपा रहता है। इसी निरपेक्ष प्राधार को वैदिक्दशन 'परमात्मा कहुता है। यही वेदान्तदसन कहता है 'जन्माचस्य यत ' वही बहा इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रसय करता है। प्रत इस विविध सुष्टि में उसी बाधार पर परमात्मा के दर्शन होते हैं। देखन वाले को ग्रास चाहिए।

मानव समाजरूपी वृत्त मे व्यक्ति एक केन्द्र-विन्दु के समाम है। यही समाव रूपी वृत्त मानव को ध्रपने बने बनाये चौला में बाँचना चाहता है। इसी सक्-चित्र सथा सकी साँपरिधि को मानव श्रपने व्यवहार, ग्राचरता से विशाल तथा विस्तनकरना चाहता है घन उसकी ग्रात्मा का विकास होता जाता है। तब वह 'ब्रात्मवत सव भृतेष् श्रपने समान सब जीवो को समक्र तथा अपन चारी तरफ सब दिशाओं में भ्रपने मित्रों को समऋता है नभी सर्वेश्वन्तुसुखिन सबकेसुका ान्तिकी भावना तरता है। इसी ध्येथ व लक्ष्य को प्रय्त करने हेतु वैदिक जीवन दर्शन ने नीनो पुत्रैयसा, वित्तैषणा तथा लोकंपणा का उध्वींकरण कर मानव को मानव बनाने का ग्रादेश निया है। धन वैदिक सम। रोह उत्सव त्यैहर द्यादि की समाप्ति पर सातिपाठ 'मो बी भान्ति भन्तरि गान्ति सत्रम् ज्ञान्ति ।" का पाठ होता <sup>के कि</sup>सब जढ चंतन गान्तिदायक

विश्व के सभी राष्ट्र शान्ति के सम-थक है परन्तु उसका प्राप्ति हेतु स्रशान्ति तब हिना उत्पन्त रुपने वाने ग्रम्म शस्य ब्रएबम ब्रादि के निर्माण हत् दिन-रात जिल्ल हैं कमो के स्थितोश की शेशनी की चकाचींत्र में ग्रन्थे हो रहे हैं। विद्युत् प्रकाण के कृतकुमी की रोजनी **वसव**मा रही है परन्तुएक दूसरे के मन भय धन्य-विषवास, घुएता झावि से भर रहे हैं। दुनियाविनाञ, प्रश्यकार की तरफ बा न्ही है। किसी ने सुन्दर कहा है-

कल्याएकारी हो।

बाहर रोशनी खुत हो रही है. दिस हो गहे हैं मैंने। भ वेरा आया जानगा जहां में, थर यही रोजनी रही ॥ 🦼

धन इन सावनी की होड में नोस मज कॉफों में भी विदव शान्ति स्वापित करने में समा नहीं हो सकती। ससार का नियम है कि साधारण अवहार में भी गले भिन्नने में भी दोनों को भुक्ता पहला है। इसी प्रकार एक राष्ट्र को ,इसरे का समान प्रविकार सहप्रस्तित्व समानता बादिका बाबार मानना होगा। यही बादर्श महर्षि दयामन्द ने बार्यसमाज के दसर्वे नियम 'सर मनुष्यो को सामाजिक सर्वेहितकारी नियम यासने मे परतत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी निवस वासने में सब स्वतंत्र रहें।' तभी विषय

(पुटर २ से बागे) यज्ञ ग्रीर शान्ति

ससार के जन्म मध्युरूपी वक्कर से छुट बाते हैं, तथा परमानन्द मे रहते हैं। मत्र बागे चेतावनी देता है कि 'ब्रन्ति सन्त न पश्यति ' जो बस्तु हम'रे धत्यन्त समीप सम्बन्धे मे होती है उसका ब्यान नहीं रहताहै। मानव शरीर के 'हिरण्यमय वैश हदय गुहा पुरीतत' में बात्या पर-मात्मा का मिलन खाशात्कार होता है, इस प्रति समीपता को मानव नहीं अन्तता है। इसलिए ससार के जक्कर में उसे उडता फिरता है। जैसा कहा है---

मैं सरे धर्मवरी दुव रहते वा तुमको। तेरे कदमों ने थी ज़न्नत,

मुक्ते वालूव न या॥

वजुर्वेद इसी भाष्यात्मिक रहस्य की स्पष्ट करता है---

'हिरण्यमयेन पात्रेश सत्यस्यापिहित मुलग।' न्स सत्य स्वरूप परमात्या का द्वार ग्रवात मोल का द्वार स सार के सुवर्श मादि चमक दमक विषय भीन मन सम्पत्ति से सिया रहता है। मानव इस सृष्टिकी कीली रूप परमारमा की नही देख पाता है । मान्यताओं, मर्यादाधी सीवाओं ग्रादि रूपी वने बनाए चीलटो में बचा रहता है। यह चौलटे हाव तीन मुख्य रूर में पाये जाते हैं --पूजीबाब, खाम्म-बाद त दा समाजनाह । तीनों धपने सपने

डम उरगप नरीके से समाज मंस तुलन समानतासुक शान्ति लाने का प्रयास व प्रयत्न करते हैं त्या इसके हाभी हैं। एक पार्टी दूसरी को हरने का प्रयास इसी भाषार परकरते है कि वही समाज मे सुन द्यान्ति ला नकती है। वही मानव कासटी नागदधन कर सकती है। मैंने वर्णाश्रम के विवेचन में इनका कुछ तुल नात्मक विश्लेषण कर प्रतियानित किया है कि वैदिक सपात्रवाद ही इन समस्याम्रो का उचित समाधान करता है। जो व्यक्तिगत विभिन्नता, समानता स्वतवता सहप्रस्तित्व विश्वतम्बुत्व विश्वशान्ति का भाषार है।

क्वकी की की ली सदा स्थिर रहती है जिस पर पाट घूनता है। ससार मे ऐसी कोई मधीन नहीं है जो विना कीली के भूमतीहो यद्मपि वह की भी प्रत्यक्ष व परोक्ष हो। इसी प्रकार सुब्दि के स्वयंतम इलैक्टोन से लेकर सूर्य, चांद पृथ्वी, निहा-रिकामो मादि माकाशीय विण्डो की स्थिति है। प्रत्येक पिण्ड दूसरे के सापेक्ष से चूबता है। यही सृष्टिका निवम है कि प्रत्येक धन्यायी नतिशीन पिण्ड स्रोटा बा अका दिसी स्वाबी धाखार के बिना टिक्स नहीं सकता है। विज्ञान गति की परिभाषा करता है कि अब कोई बस्तु अपने पर्या-वरण की धन्य वस्तुओं के सापेक्ष से स्थान परिवर्तन करती है नो उसे गति कहते हैं। बैशानिक परि नाषा के समानात्वर उपनि-बद्की माथा वे भी सुन्दिका बहु सूड

(क्षेत्र पृष्ठ = पर)

(पष्ठ ४ ते झागे

# महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

सम्बद्ध करी है। अनुशास्त्र विना दण्ड के सुबाद करेता स्वाधित नहीं हो सकता! स्वस्त्र के नित्र वेद से स्वद्भवाता है। ही है। इसे ता स्वस्त्र के नित्र वेद से स्वद्भवाता है। कि साम हो स्वस्त्र करार एक कुम्हार वह का निर्माण करते समय करने परे को परकी मारत समय करने परे को परकी मारत समय है। साम ही बहु वपकी मारते समय इस बात का पूर्ण व्याग रखता है कि नहीं पड़ा टूट न बारे। इसी प्रकार वरवे समय मुद्र भी गिरास के निर्माण से स्तेह का पूर्ण व्याग रखें।

**ध**नुशासन मे विकसित बालक, जब मुवाबस्या को प्राप्त करता है सो बह बात्म बनुशासन स प्रेरित होता है। उसमे सोचने समभने की मेघा उत्पन्न हो बाती है। वह सत् असत् का निणय करने की क्षमताको प्राप्त कर लता है। वह हम के समान नीरक्षीर विवकी बन मुक्ता को प्राप्त कर लेता है । गुस्कुल मे रहकर धध्ययन करन वाले बालक मे घाल्मनिभ रताकाभ व उत्पन्न होता है। जो उप जीवन म सदैव उच्चताभी घोर ले जाता है। धारमनिभरता के कारण ही उसे कभी जीवन मे पराड्मुसी नहीं होना पडता है। साथ ही वह कर्मशील हो ध्येय की प्राप्ति मे बग्रसर होता है। ऋषि दया-मन्द के अनुसार गुबमात्र गुरु नहीं अपितु वह बाचार्य प्रथम होता है। बाचरस की प्रतिष्ठा को प्रयने से घड़ मानते हुए वह बुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर विदा होत हुए शिष्य से कहता है - यान्त्रस्माक मुचरि-तानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। भवति हेशिष्य <sup>।</sup> जो भामेरै सच्छ गुण 🖁 उन्हें ही तुम प्रहण करनातथा अन्यका नहीं। इससे बहान् गुरुका बादर्शें दूसरा कोई नहीं हो सकता। गुरु त्यान की बावना से ज्ञान प्रदान करता है तथा खिच्य सेवा एव समर्पेख की भावना से उसे ग्रहण करता है। यही सूख तत्त्व गुरुकुलीय शिक्षा पढित को है। इसी को ही स्वामी दया-मन्द ने आर्थ पढित स्त्रीकार किया है। विका के लिए गुरुकुलो के विकास पर ऋषि दयानन्य ने बल दिया । इनकी इंटिट में भारत के अन्तर्गत इसी सिक्षा प्रणाली का प्रयोग होना चाहिए ताकि भारत की सन्तान भाषरणवान हो सके।

ऋषि वयानन्य यह खिला के प्रकार महीं थे। इनकी विष्ट में शावक एवं वार्षिकांशों के लिए पुषक पुषक् मुद्दकुनों की व्यवस्था होनी चाहिए। वह-खिला नैतिकता पर सर्वत्रकम कुठाराधात है। वालक के निर्माण की वब श्रवस्था होती है बस समय कही वह बाह्य आक-चंद्र के बीकर पाने तीन की नष्ट क्या च चरवे। इसकी सावका बही सर्विक ची। वयम एवं प्रमुखासम के ही निर्माण समत है। चीव तो जीवन का हातकारी पत्त हैं भीव की प्रावना चाहे मानिक ही क्यों न ही? उसको पत्तन की चीर का महार करती हैं। जीव मौजने से खान्त नहीं धरितु धरित में बुत के समान चौर धरिक प्रज्ञतित हों चाते हैं। बस्तुत "Prevention is better than cure धर्मात् उत्पार ते तो रोज की पहले हो रोज्ञान बेहतर है। जीवन के उच्चतर विकास के लिए सह-पिशा विधेष कर से किशोरबन के जुक्क-पुल्लियों के लिए मृग मरीचिका ही हैं। जिसने प्रपन होता है जसे भी वह संवा बेटता है।

गृहस्य धाश्रम ब्रह्मय भाश्रम के उपरान्त बाता है। ब्रह्मचर्य की नीव पर ही गृहस्य का प्रासाद मावारित होता है। गृहत्य ब्राधम कम प्रवान ब्राधम होने 🕏 कारण शेष्ठ बाधम है। गृहन्य बपने कम के द्वाराशेष सभी ग्राथमी का पालन **योपण करता है। इसमे 'विवाह द्वारा** विशेष भार का वहन करना ही समिप्रेत है। विवार उसी भायु में होना चाहिए जिसमें बहु भार बहुन करने का सामस्य हो। ऋषि दयानन्द ने बाल विवाह का सबत्र जहा विरोध किया वहा पुन्व के लिए न्यूनतम विवाहकी सायु २५ वर्षतया स्त्री के लिए १६ वय रखी है। साथ ही इसे बायु की दृष्टि से निकुष्ट कोटि का विवाह माना है। सध्यम श्रेली का विवाह ३६ वर्ष के पुरुष तथा २० वर्षकी स्त्री तथा उच्च श्रेसीकाविवाहु४ = वय पुरुष तथा २४ वर्षकी स्त्रीकास्वीकार किया गया है। यदि ऋषि के प्रस्ताव को वावहारिक रूप देविया जाता तो भारत का परिवार नियोजन कार्यक्रम स्वत ही पूर्ण हो जाता। भारत की बाबावी सुरता के मुह के समान विकराल एव समकर रूप ही बारण नहीं कर पाती।

ऋषि दयानन्द स्पष्ट रूप से सब्बो-प्या करते हैं कि यदि विवाह के बाद भी कई वर्षी तक बहावर्य का पासन कर सन्ताम की प्राप्त किया जाये तो बह निरोगी, स्वस्व, पुष्ट एव बुखी होती है। श्री कुष्ण ने विवाह के बाद बारह वर्ष तक श्रवण्ड ब्रह्मचर्यकापालन कर सन्तान को प्राप्त किया। मर्वादा पुरुषोत्तम राम-चन्द्र भी सन्तान को विवाह के १४-१६ वर्ष बाद प्राप्त करते हैं। दबानन्य के बादश एवं सपनों का बारत निसन्देह एक सुरुव भारत होता । जहा बाह्य साधनों पर कम धास्या रक्तकर बास्य-सयम पर प्रविक वस दिया जाता। तथी वैदिक माता की सिंह वर्जना चरिताचे होती कि "मसपुत्रा शत्रुहणो श्रवो ने दुविता निराद्" चर्चात् मेरे पुत्र तेजस्ती वर्षस्यी वनकर समुखों का हुनन कर बखें

एक मेरी पुत्रियां भी मेरे समान विराट् युरावती हों।

वावप्रस्व तथा लगात की स्विति
पृष्ट्रस्व प्राथम के प्रान्तर है। श्रीवत
वरती उस के कारण मनुष्य की श्राप्त को
२०० वर्ष तक स्वीकार नहीं किया जा
सकता। केवल 'बीवेम सरब चतम्" की
सार्थना ही की जा सकती है। खासायत
सह समस्रान चाहिए कि सेवा-निवृत्त होने
के सनस्तर प्रपने चीवन की चपनी गृहस्वी
मे ही बही सपाना चाहिए, प्रपितु उसका
विस्तार सोक करवाण से करना चाहिए।
"वसुवेद कुटुम्बकम् की जावन का
है। प्रचां एक से प्रपन्न जुरूब
है। प्रचां एक हो पुषक् कर पर उपकार
की मावना से गृहीत ही जीवन-पायन

ऋषि के धनुसार वानप्रस्य की स्थिति ५० वर्ष की बागू के पूछ होने पर है। ऐसी स्थिति में यदि व्यक्ति दाने के कान करवाण में लगाता है तो इससे देखा का भी कत्याण होगा। सेवा निवृत्ति की बागु यदि ५८-६० वश्व कम के कम करके ५० वश्व कर दो खाये तो इसमे देखा मध्य झमता का विकास होगा। साथ हो नव्युक्कों को रोजवार के स्विक्त एव सुन्नम साथन उपलब्ध होगे। परिणामत जीवन के सन्तिम साण तक बोव की वितृष्णा से मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकेगा।

द्याज बनरेखन गैप का नारा दिवा बाता है। पिता-पुत्र में संघर्ष की भयावह स्चिति पैवा होती है। सास-बहु के ऋगड सामाजिक बनते जा रहे हैं। बुढ बाता-पिता बहाबर ने झनादर के पात्र बनते हैं बहा वे समाज में लोक-कल्यास की भावना से महती प्रतिष्ठा के पात्र वन सकते हैं। पौत्र होने पर व्यक्ति अपने को वर के सकीशं दावरे से निकालकर समाव के विस्तृत दावरे में ले जाये । ऋषि दया-नम्ब का बहुकचन बाज के युग में बढ़ते हुए सवाबह पारिवारिक सकट का समु-चिता निवास है। बानप्रस्य में तो सोच-कल्याच के साथ साथ भपनी खन्तान को बदाकवा अचित परामशं एव निर्वेश देते रहें परन्तु सन्यास तो मानबीय जीवन की उत्तरोत्तर चरम अनासक्ति की परम श्रेष्ठ स्थिति है।

महर्षि दयानस्य ने राजनैतिक बस्टि को वी वामाजिक दिन्दि के समान ही वर्षज्ञन-विद्य-पर्य रखा। राजा एव प्रजा के बस्त्रन्य को पिता-पूज के क्या में रखी-कार किया नया है। व्यक्ति वनवानिक राज प्रणावी के समर्थक ने। वे राखा पर पूर्ण मकुछ के परापाती थे। वे सत-प्रच काह्यण के इस क्या के दुर्युत्य सहु-क्या के कि जो राजा स्वतन्त्र पूष्ट क्याकीन होता है, वह क्या को नावक होता है। वह क्या होश्य स्था को गीवित करता है। बीचे सिंह भादि सन्व पसु को नार कर का जाते हैं, उसी प्रकार स्वतक रावा प्रवाका नाश करता है।

कर व्यवस्था के विषय में स्वामी बी का मह मत है कि बो भी कर राबा के हारा बहुए किया जाये, उसका उपयोग पूर्ण क्य से बन करवाण में हो हो। बिड प्रकार सूर्य पृथ्वी से जब बहुण करता है, परस्यु उखे पुन पृथ्वी पर समान क्य के समृत-वर्षण करके प्रस्थावित कर बेता है। उखी प्रकार राजा को भी कर का सहुपयोग करना चाहिए। ब्रति लोज से वह दूसरों के सुक को नष्ट करने का उपाय न करे। इससे राजा प्रचा के प्रेम एव सम्मान को बो देश है।

राजा के लिए वण्ड व्यवस्था समु-चित विचार पुत्रक प्रहुण करती चाहिए। स्वोकि वण्ड ही समत प्रजा का पासन प्रव स्वकी राजा करता है 'व्यय जातित प्रजा सर्वा वण्ड प्रवामिराति।'' परिणामत राजा को परम वण्डाधिकारीः की सज्ञा दी गई है। वण्ड-मयदाबा से ही सण्डमों की राजा एवं हुस्को का निजाक हो सकता है। इस सब्में में राजाक शास्तिशाली होना परम सावस्वक है।

ऋषि दवानन्य एक युक्त सन्दा थे।

जन्होन मारत का निर्माण धार्यावर्त के

रूप में रूप के प्राप्त किया। गार्यावर्त के

रूप में रूप के मार्यावर्त किया।

स्वार्य में मार्यावर्त क्या के स्वार्य सम्बद्ध के प्रयाप्त किया।

स्वार्य के मार्या स्वार्य के ही 'आयं'

स्वार्य में मार्या। स्वार्य के स्वार्य के सामा
विकार राजनीतिक एव सास्कृतिक स्विट से

एक विराट सदम्में में देसना चाहता था।

सारत में सारवा की उच्चतम मनी
मुमका का निर्माण ही ययानन्य मार्यावर्ष अथवा सरना था।

(पृट्ट ७ का लेव)
वालि, विश्ववन्तुरः, विश्व प्∗ता, एक
सानव समाच, एक मानव राष्ट्र का स्वयन
पूरा होवा तबी 'क्रण्यन्ती विश्वमार्थम्' का
वारा सकत होवा तजी शानव को
साविवीतिक, सावि दैविक तवा साध्यारिक्क सानि विकास को

वों वान्ति वान्ति ज्ञान्ति ।

# गुरुक्कल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्त संगोध्धी

राष्ट्रीय पुस्तकालयाच्यक्ष सघ के तत्वाबधान मे बुरकुस कागडी विदवविद्या-सय हरिद्वार मे पानवी राष्ट्रस्तरीय पुस्तकालय सगोष्ठी का शुमारम्भ २३ मई १६८५ को त्था। सम्मेलन मे देश के विभिन्न पुस्तकासयी म लगभग ६० पस्तकालबाध्यक्षों ने बान लिया। गुरुकुल कौगडी विश्वविद्यालय के मुखाति, श्री बल भद्र कृम रहुजाने सम्मेलन में भ्राए प्रतिनिधियो का स्वागम करते हुए कहा कि "बाज गुरुकुत की देग के बनेक भागी से बाए हुए पुस्तकालयाध्यक्षों के सम्मेलन के झातिच्य का गौरव प्राप्त हो रहा है। आची हुआ। अपी ने याद दिलाया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती इस युग के सबंप्रथम जननायक चे जिन्होने राष्ट्रीय जीवनचारा में पुस्तकालय के महत्त्व को समका तथा बार्यसमाज के सविचान मे उन्होंने जिन कुछ पदो का बठन किया उसमे एक पद पुस्तकालयाध्यक्षाकामीथा।स्वामीजी की मान्यतामी के धनुरूप एक मादर्श समाज के लिए पुन्नकालय का उतना ही महत्त्व है जितना कि जीने के लिये धच्छे बाताबरण की भावस्य क्ता होती है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान है जिसके सम्थापक स्वामी श्रद्धानन्य जी न लोगो मे स्वाध्याय को जप्तत कियातवाउन्होने गरकुल के द्वारास्वाध्याय की परम्पराको जारी रखने के लिए पुस्तकात्रय की महत्ताको सर्वोपरि रत्ना । जिसके परिशाम स्वरूप मृहकुल कागडी विश्वविद्यालय पुरुष्कालय का भारत के पाच विश्वविद्यालय पुस्तका-सयो मे से एक प्रमुख स्वान है । श्री हुआ श्री ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बो-भी**वत क**रने हुए कहा कि मुक्ते बाज शी धपने सालेज के पुश्तकालयाध्यक्ष की याद है, जिसके दर्शन होने पर उनके पैर जुने में मुक्ते कुछ भी सकीव नहीं होगा। एक श्राच्या पुस्तकासयाध्यक विश्वविद्यालय के सामार को सुद्द करता है। किसी विष्व-विद्यालय के स्पर की जानकारी प्राप उस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से प्रासानी से समा सकते हैं।

राष्ट्रीय पुश्तकालय सम्मेशन के इस स्वचर पर गुरुकुल कानकी में 'रा पुश्त-कास्य के सनियं प्राच्यायक की डो-ब्राट- कालिया को मारत सरकार पुस्त-वासवाध्याल सब की घोर से एक मान-पन्न भी मेंट किया गया। इनको यह मान पन्न ब्रीवन पर्यन्त पुस्तकालय की वेब घो के सब्दें में दिया गया।

सम्मेनन के मुख्य प्रतिषि वी छी। पी। बुप्ता कुपपति कडकी बिख्नविद्यालय के कहा 'पुस्तकावय ज्ञान का एक एसा खावार है वहां खोच एवं शिक्षा का उन्न--वन निरुद्ध होता रहुता है। एक प्रचक्का पुस्तकालय बोच एव शिक्षा की श्वारी रक्षने में सब से प्राचिक बोगदान बेता है। पुस्तकालय की भूमिका पूरे जैलिएक बातावरण ने बारीर में रक्षत के समान महत्त्वपूर्ण होती है।

इस सम्मेलन का उद्वादन की टी॰ सार अन्द्रोक्षण महाप्रश्यक, मेल रातीपुर, हिंदार हारा किया गया। उन्होंने प्रतिनिधियों को संशोधत करते हुए कहा, कि 'पुस्तकास्त्र की प्रीधका धोसन के हर कीन से व्यक्ति समाज एव राष्ट्र को उन्नित्र निर्णंत जेने में सहायता करती है। ज्ञान सम्पदा के इस बाताया तें हर व्यक्ति कमाज पर न ते निर्णंय सामग्री प्राप्त होती है। बात माजवय-कता इस बात की है कि पुस्तकास्त्र वैज्ञानिक सोच कार्यरत लाखों वैज्ञानिक ने उनके विषय से सम्बन्धित नजीवतम मुजना सामग्री उनके प्रयोगसात तक

पहुँचाए ।

भारत सरकार पुग्तकालयाध्यक्ष सभ के शब्यक्ष भी एम०के० जैन ने प्रतिनि-वियो को कहा कि प्रव धीरे-भीरे शैक्ष-णिक वातावरसामे तो पुस्तकालय वैज्ञा-निकी की उपयोगिता महसूस की जाने श्रगी है। ज्ञान का विस्तार इननी तेजी से हो रहा है कि पुस्तकालयों पर उसे विश्ले-सित करने की जिस्मेदारी बागई है। पुस्तकालय राष्ट्रीय ज्ञान समादा के प्रतीक हैं। भावश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय ज्ञान सम्पदा को पुस्तकालय सदर्भ सेवा के मानदण्ड मे एकीकृत करके राष्ट्रीय सूबना सेवाधी की सुनियोजित प्रखाली धपनाई जाए। पुस्तकालवाध्यक्ष का प्रारम्भिक दायित्व पुस्तकालय वैज्ञा-निकी द्वारा सम्पादित साहित्य की सूलभ जानकारा सम्बन्धित व्यक्तियो तक पह-वाने का हो गया है।

इस समारोह के उद्घाटन के धवसर पर गुरुकुल कागडी विज्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगरीय विद्यालकार ने विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हुआ जो को यह विश्वस दिखाया कि महाँव दयानग्द सरस्वती ने पुस्तका-स्रयो के महत्त्व को सर्वोपरि करने का जो जनमत बनाया या उस भावना को कायम रक्षा जाएगा।

उक्त सम्मेलन मे सनेक गोप्टियाँ हुई । विज्ञानी सम्प्रताता, श्री टी॰ एस॰ राज-गोपालन निर्देशक राष्ट्रीय ज्ञितन प्रलेखन सस्यान, श्री एस० एस० मृति निवेशक रच्हीय रपा प्रलेखन सस्यान एव पी॰ पी॰ माना टीन क्ला सकाय दिल्ली विश्वदिश्वालय ने किया।

सम्मेलन से सब हे सर्चिक बोर इस बात पर दिया गया कि विश्वविद्यालय एवं होने सरस्यानी से पुरुक्तालय की बढती प्रिकाशों को स्वीकार किया बाना वाहिए। पुन्तकालय बैतानिकों की म्वाए वोच प्रयोगवाला से कार्यन दैतानिकों की म्वाए वोच प्रयोगवाला से कार्यन दैतानिकों को निका को उनके दिवय से सम्बन्धित सुवनाएँ पृत्व ने की है। इसी गिए प्रत्येक बोच सम्बालों से कम्प्यूटरों द्वारा सूचना सेवाओं को प्राप्त स्वालों से कम्प्यूटरों द्वारा सूचना सेवाओं को प्राप्त की स्वालों से कम्प्यूटरों द्वारा सूचना सेवाओं को प्राप्त की स्वाला वाना बाहिए।

सम्पादक के नाम पत्र

सादर नमस्ते <sup>।</sup> मैं १० मई स १६ जुन तक बाहर गया था। मेरी अनुप-स्थिति में भाये 'भायंसदेल' के मक मिले। इस साप्ताहिक वारूप निसार रहा है भीर सामयिक तथा उपयोगी मामग्री पाठको तक पहुचरही है। २३ जुन के त जे श्रक मे श्रमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल' के उदगार पटकर बटी प्रस-न्नता हुयी। प्रो॰ बलराज मधोक का लेख भाक्षण नीति पर पुर्नीचार अरूरी ' सामयिक एव राष्ट्राय समस्यापर सभी को पुनर्विचार करने का प्रेरणा 🦟 देता है। बार पर्णकी नीति घटिया राजनेताओं की चान की के कारण ही हमारे देश में जारी है। नौकरी में इस नीति के कारण योग्यता धौर वरिष्ठता कूटाग्रस्त हो रही हैं। कर्मचारियो ने इस कारण बापसी मनमुगव भीर वैमनस्य देखे जारहे हैं जो किसी भी प्रगतिशील दे के लिए कतरनाक कहे जा सकते हैं। देवल राष्ट्रीय असण्यता और एकता का नारासमादेने मात्र से कोई देश सुरक्षित नहीं हो जाता। राजनेताओं को समय रहते गलत नीतियों के पलस्वका गुजरान में हो रहे इत्याकाड के लतरे को समक नेमा चाहिए भीर पूरे देश में फैनने से पहले इस माग को बुभाने की चेच्टा करनी चाहिए। राष्ट्र के हित मे भूस सुधार के लिए किसो भी सकी व की धावश्यकता नहीं होती, तभी तो, बहुजन हिताय, बहुजन सुस्ताय का उद्देश्य पूरा हो सन्ता है। --- त्रजशूषण दुवे

धारक कुशक्त व अच्छ सम्पादन में सायसन्वेश का रगस्प दिनो दिन निजरताजा रहा है। पत्रिकाका छुपाई व सफाई धपवे सुन्दर कलेवर के साम

-३ कोराचदरोडकलक्सा७०००१४ वेबोड है। गाप जैसे विद्वान् सम्यादक की कर्मन्ता एवं न जी समन वा ही प्रतिपत्त है जो धायस-देग की गूज दूर दूर तक फैलती जा गही है। जिसके निष्धान वधाड क्यांच है।

मैं वर्शे संप्र- ग्रायंपत्र पत्रिक भो कस च प्रायंस-देश' भी मगासा रहा हैं पर प्रन्यों के मलावा इसकी शान ही नुख भौर है। हर घक की प्रती ना बनी रहती

> भवदीय भोहनलाल शर्माण्टिम

पायके द्वरा प्रकाशित 'धायसम्बेश का वर्ष १ धार ३२ मेरे सामने है। वस्तुन यह पणिका मानव जीवन को नया धालोक वेने मे प्रकाशपुज के समान है। इस पीका में उपनिषद कथा माला ७ "स्टब की महिला" एवं मनेवी व वेकारी कैंग दूर होगी? श्री धोमप्रकाश न्याणी द्वारा जिक्कित लेल कहत ही धल्छे कथे।

बाप जिल सुम्बर्गेक, लगन, कोयल ब मेहनत से दश पिका का प्रकारन कर रहे हैं उबके लिए में बातको द्वस्य के बमार्ट देता हु। शायलब्देश पिकार राष्ट्र विरास को गतिशील बनाने में सपनी यह मूमिका निमाती रहें। इसके उञ्चल सविद्य के लिए में से हार्दिक मगनकान-माए स्थीकार कीवियेगा। मबसीय

> श्यामसुन्दर शर्मा (सम्पादक-पालिका समाचार)

साजकस नई शिक्षा नीति बनान की चर्चा ज्वा रहा है। प्रायसन्देश में भी पत्रो एक सम्पादकीय द्वारा इस विवय पर विचार प्रकट किम गए हैं। एक उचित्र स्बपूरा स्थान है। भार्यसमाज क पास शिक्षा का पर्यान्त अनुभव है भीर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनान म वह महत्त्व-पूरा योगवान कर सकता है। अत सार्व-विभिक्त सभा सथवा दिल्ली झाय प्रतिनिधि सभाएक विचार गोध्नी का सायाजन करे जिसमे क्षित्र नीति के सभी पहलुको ५र विचार विनिमय क क एक सम्पूग्ग शिक्षा नीति का मसीदा सरकार को दिया जाय भौर उमे भ्रयमाचे का भ्रमुराध किया जाये। मर्यमन्देश भी इस विषय पर ल्ख ग्रामन्त्रित करके एक विशेषाक की योजना बनाय ता उचित हगा। इस समय सही शिया नीति के निर्धारण करन स गण्ड की कई समस्याओं का समाधान होगाधीर राष्ट्रस्कीर-ी शताब्दी से धिक धारमविद्यास एव धानम गौरव लकर प्रवेश करेगा।

योष्ठी में शिक्षानीति से सम्बन्धित निम्न वातो पर विचार किया जा सकता

- १ शिक्साकामूल उद्देश्य। ९ शिक्साकाविमागएव प्रत्येक
- विमागकी श्रविधा
- ३ मिक्षाकामाध्यम ।
- ४ प ठय क्रम ।
- ४ िक्षण सस्यामीकास्वरूपः। ६ मध्यापकोकाच्यनः।
- ७ प्रध्यापको को तैयार करने की

योजना। स्थानाभाव के कारण यहा विस्तृत

स्थानाभाव क कारण यहा विस्तृत रूप से उपरोक्त निषयो पर विवार प्रकट करना सम्भव नहीं है अत सक्षप मे प्रपत्ने विचार दे रहा हूँ।

विशा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माणान्य ज्ञानवर्धन होना चाहिए। विक्षा का प्रवस च व जिसे जूज विक्षा कह सकते हैं, चरित्र निर्माण के

# समाचार-सन्देश

# दिल्ली-श्रायंसमाजों के साप्ताहिक कार्यक्रम

२८ जुलाई ८५ रविवार

धार्यसमाञ्ज प्रतायनगर-प० हरि-सगीत कलाकार । किंगज्यकैम्प -- महारमा देवेश भिक्ष । किशमगत्र मिल एरिया-मा॰ मोहन गांधी। गीता कालोनी--प॰ ब्रह्मप्रकास शास्त्री । गुडमण्डी — स्वामी प्रकाशवती शास्त्री । तिमारपुर-प॰ बसवीर वास्त्री। तिलकनगर डा०--रघू-नन्दन सिंह । देवनगर - पण्डित मुनिदेव जी भजनीक । दरियागज —प » समरनाथ कान्त । नगर शाहदरा- प वेदप्रकाश शास्त्री । नारायण विहार--हा० वेद प्रकाश महेश्वरी । प्रीतमपरा---पः विदव प्रकाण जास्त्री । प्रवासी बाग-प० रमेश चन्द्र वेदाचाय । पत्राबी बाग एक्स टैन्शन-प० बीरेन्द्र बहादूर। भोगल-प असेमदेव शास्त्री । महरौली---प०

धाशाराम प्रेमी । मौडलबस्ती-प० नेत्र-रुवन्द्र ग्रार्थ । ग्रमरकालोनी-पडित वेदस्थास पाल ग्रार्थ । मोती बाग-प० तुलसीराम धार्थ । राजौरी गार्डन - महारमा मुनि-शकर वानब्रस्थी । रमेश नगर--प•मीष्म शास्त्री । लहु घाटी- प० ग्रमी चन्द्र मत-वाला। विनय नवर-प० कामेश्वर बन्नानन्द सरस्वती। गोविन्द भवन-स्थीमती शास्त्री । साकेत- १० जब अववान मण्डली । सोहव गय-धावार्यं वयामसास व्याकरणाचार्य । शाशीयार पार्क-स्वामी जनदीववरानन्द सरस्वती । सदर वाजार-महात्मा राम किशोर वैश्व । हीअखास---प० जुन्नीलाल बाव । त्रि नगर--बार्य-बीर रणजीत राणा । रभुवरपुरा -प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार । चना मण्डी--प० घनोक विद्यालकार।

> का वस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ग्रधिकाता वेद प्रवार

बायसमाज वडा बाजार पानीपत का वाधिक निवायन वर्ष १६०६-०६ के लिए रविवार दिलाक ७ ७-८५ की झाये समाज मन्दिर में सम्पन्त हुआ।

सभी प्रविकारी सवसम्मति से

निवाचित हुए। प्रधान-श्री रामानन्द शिगला उपप्रधान था बाबूराम जी मित्तल मन्त्री —श्री राहुरदान जी बन्ना उपमन्त्री श्रामदनशहत तो काषाध्यभ—श्री कुलभूषराजा पुस्तकाध्यक्ष-श्री दावनव निर्मोही

धन्य घतरगसदस्यो को चूनन का समिकार उत्तरोक्त ब्राधकारियों को विया गया। इस चुनाव को सबसम्मति से कराने के लिए मूतपूर प्रधान भी दलीप सिंह जो धाय जिन की शध्यक्षता मे चुनाव सम्पन्न हुसा की भूरि भूरि सराहना की नर्दा

ठाकुरदास बना मन्त्री

भागसमाज्याची नगरका वार्षिक चुनाव १४ जुलाई ८५ रविवार की सत्सग क पञ्चात श्री हरिदेव जी शास्त्री, सभा प्रेक्षक की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित ग्रथिकारी चुने गये। प्रधान-श्री यदुनन्दन जी झवस्बी उपप्रधान--श्री महेन्द्रपाल वर्मा

श्री रामलाल मेहदीरता मत्री-शी स्यामसुन्दर विरमानी सपमत्री —श्री शिवशकर गुप्ता भी बोमप्रकाश गुप्ता

प्रचार मनी--- भी रामभज

सेवा निरीक्षक-धा हरवसनाल पुस्तकाष्यक्ष-श्रीरामचन्द्र गुलाटी बायंबीर दश बाधकाता-श्री प्रमोदकुमार

श्यामसुन्दर विरमानी

न्वीन धार्यसमात्र कृष्णनगर, दिल्ली **५१ का वार्षिक जूनाव दिनौक १६६** ८५ को सर्वसम्मति से हो चुका है। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये है---१ प्रचान—श्रीनेतराम शमा २ उपप्रवान—श्री गिरवारी साल

३ मत्री --श्री दोनानाथ सन्ना ४ कोवा यज-जी सस्यप्रकाश ग्रग्नवास ४ नेकानिरीक्षक—श्री नारायग्रदत्त बहन्त

> भवसीय दीनानाय सन्ता (मत्री)

### "कवियों से"

परोपकारिणां यज्ञ समिति दिल्ली के सरसक धार्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् नेताश्री प० देववृत की 'घर्मेन्दु के साठ वर्षीय सामाजिक जीवन की एक हरकी सी असक से जनसामान्य को प्रेरित एव उत्साहित करने हतु स्विरिक्तिसत समिति द्वारा 'कवि की कविता नामक समह शीघ्र ही प्रकाशित किया जारहा है। धार्य जगत्की शोभाएव राष्ट्रके सजग प्रहरी कवियों से नम्न निवेदन हैं कि वयो-वृद्ध मार्थ नेता के जीवन से सम्बन्धित शपनी रचना शेख कर क्लंब्स का पासन करें ! चन्यवाव !

> भवदीय क्मनकिसोर वार्व

#### श्री रघ नाथ प्रसाद पाठक का निधन

सावदेशिक अध्ये प्रतिनिधि सभा के भू०पू० कार्यालयाध्यक्ष तथा सार्वदेशिक वत्र के सह सवादक माननीय श्री रचनाव प्रसाद पाठक का ८५ वर्ष की सामू मे १६ बुबाई, १६=५ को शाहदरा (दिल्ली) मे निषत हो गया है। उनके निधन का समा-वार सुनकर बार्य वगत् को एक गहरा बावात पहुंचा है।

सारंदेशिक श्राय प्रतिनिधि समा के कार्यालय में एक शोक सभा में दिवगत बात्मा को श्रद्धाजनि धर्षित करत हुए साबदेशिक धार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान भी रामगोपाल जी शालवाले ने श्री पाठक जी के निधन को सार्वदेशिक सभा के इतिहास मे एक प्रपूरशीय श्रांत बताया । उन्होंने बताया कि श्री पाठक जी १६२६ में महात्मा नारायण स्वामी की प्ररणा से सार्वदिशिक सभा के कार्यालय म बाए भौर तन से भन तक लगातार ६० वय तक उन्होंने सावदेशिक समा क कार्याक्रय कासप्तापूरक स्वासन किया है। किसी भी वार्मिक तथा राजनीतिक क्षत्र में इतने लम्ब मनय तक एस महत्त्वपूरा पदो पर कोई दूसरा सफलता पुत्रक काम करता रहा हा, यह असम्भव है। श्री पाठक जी स्वय साववेशिक समा ब, साव देखिक समाका पाठक जी से सलग करके सोचा भी नहीं जा नकता था। बद्धपि पाठक जी को सार्वदेशिक सभा की अन्त-रग ने उपमन्त्री नियुक्त किया था. परन्त उन्होंने इस पद का अपने नाम के साथ कमी प्रयोग भी नहीं किया। उन्हें श्री

महात्मा भारायस स्वामी, स्वामी श्रदा-नन्द की महाराज वैसे प्रमृति उच्चतम कोटि के नेवाओं का सान्तिष्य एवं मार्ग-दर्शन व शुभ ब्राशीवदि प्राप्त वा।

साबंदेशिक साप्ताहिक भी सन् १६२७ मे मासिक रूप में निकलना खुक हुआ वा, तब से ही यह कार्य पाठक जी के बाथ में रहा वा भीर १६६३ से यह साप्तातिक निकलना शुरू हुआ। इसके सर्विरक्त सभा के भग्नेजी बैदिक लाइट के सपादन मे जनका मूल्यवान् सहयोग प्राप्त रहा। की पाठक की सिबहस्त लेखक, भीर कुशल प्रशासक भी थे। हिन्दी, प्रमेजी, उदू तथा संस्कृत पर उनका पुरा निमन्न वा। उन्होंने कई उपयोगी पुस्तक भी सिसी। सावदेशिक समा के लिए भी उन्होने कई प्रमुत्य रचनाएँ प्रकाशित की की। उनका रक्ताए तथा लेख मारत के समस्त हिन्दी व सम्रेजो दैनिक व साण्डा-हिको में भी प्रकाशित होते रहते थे।

भी पाठक जी न निवन से सावदे-शिक सभा भपने को ग्रनाथ समऋती है। यह सभा स्व॰ पाठक जी की समूल्य सेवाओं के लिए सर्वेव ऋणी रहेगी।

भन्तमे शाक प्रस्ताव पारित करके दिवगत बात्मा की सद्गति के लिए पर-बात्मा से प्रार्थना की गई और शोक सतस्त परिवार के प्रति हार्दिक सबेदना प्रकट की

. इसके उपरान्त सार्वदेशिक सभा का कार्यालय बन्द कर दिया गया।

सञ्चिदान-द शास्त्री (उपमन्त्री)

# ऋषि भक्तों के नाम एक अपील

भाषा पाक, फ्तह नगर के साथ सनती एक नई कालोनी है, जहा पर सिख भाई भी पर्याप्त सस्या मे रहते है। फतेह-नगर वेश के बँटवारे के बाद बसा था। इस नगर मे बुरुद्वारा भौर सनातन धर्म वन्दिर तो बारम्भ से ही वन गय थे परन्तु बार्यसमाज मन्दिर सभी तक नहीं बन सका। यहा के जब्द बार्य परिवार बार्व समाज प्रयोक नगर मे जाते हैं घौर इस समाज के ही सदस्य है। बाशा पार्क कालोनी बनने से कुछ बार्य परिवार और बहा पर बस गये हैं बिनके यत्नी से १३-८-६३ को एक नई बार्यसमाज की स्वापना की वर्ष है, जो पारिवारिक सस्तानो हारा ही अवार कार्य कर रही है। हमारी प्रवस रच्छा है कि इन वो कासोनियों का एक सीका भावंसमाच मन्दिर बन जावे

शका व समयमा है विषयाह करने

जिसस कि वैदिक धर्म का प्रचार इस क्षेत्र में हो सके। यहां का सावादी निम्न साथ वर्गके लोगो की है और वन की कमी के कारता आर्यसभाज मन्दिर बनाने मे कठि-नाई प्रमुभव की जारही है। वैसे साथ लगते ही ब्डी ब्ए के भीर दिस्ली कार-पोरेखन के खाली प्लाट पड हैं उन को ऐसाट कराने का यत्न कर २ हे हैं। साम समते डी०डी०ए० पसैट हरिनयर के झाबं सज्जन भी हमारे सदस्य बन रहे हैं।

धार्य जनत् के दानी भाइयों से प्रार्थना है कि इस शुभ कार्य मे यहाँ के मार्थ भाइयो की चन से सहाबता करके पुष्य के भागी बने।

गान्तिप्रकाश नारव प्रधान बार्यसमाच बी-१६ बासायार्थ बेल रोड नई दिल्ली-१८

# सरकार श्रकाली दल से समभौते के लिए गिड़गिड़ाये नहीं

कानपुर । धार्यसमाज के तत्वावधान वाले शकाशी दल से सममीता करने के लिए विकृतिकाना कोड दे। प्रकाली दल में एक भाग सभा प्रभान जिला सार्थ प्रति-के नेता जब स्थय बात करने की प्रार्थना निधि समा कानपुर के भी देवीवास धार्व करें तब उनसे प्रवास के हिन्दू प्रतिनि-की बञ्चसता ने बार्वसमाच नोविन्द नगर वियों के साम बैठ कर एक साथ बात वे हई, जिसके प्रस्ताव पारित कर भारत करे। सभा ने सकाली नेता श्री हरचन्द सरकार से बाग की गयी कि वह अपनी सिंह जोगोबास के कानपुर झाने पर विरोध करने का निरुष्य किया। वरिया को कायब रखते हुए वेस की

मन्त्री प्रावंद्रमाच नोविन्यनगर, कानपुर (पुष्ड ६ ते बागे) सम्पादक के नाम पत्र

क्षिए ही होनो चाहिए । वासको-बालि-काक्षो मे निम्न दसीको का भाव उनके वरिजका सगबन जाये—

- (१) ग्राच्डेण्डामो सकनिष्ठास एते स भ्रातरो नावधु सौभगाय।
- (२) ध्रय निज परो वेति भणना सम्बेतसाम्। स्वारवितानान्तु वसुर्षेत कुटुस्वकम्।। (३) ईसा वास्यमिद सर्व यस्किन जगत्या जवत्।

तेन त्यक्तेन भूजीया मा

(४) निज्यन्तु नीतिनपुरा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविष्युत् पश्चतु वा समेवट्य । श्राचैव वा गरणनस्नु सुवान्तरे वा न्यास्यारपव प्रविकारित वद न शीरा ।।

विशा का हूबरा मान जिसे हें निन स्वार में जा सकती है आशीनका सर्वेन से सन्दर्भ रख्यें पान यह की बायु से फरह वर्ष की बायु तक सामान्य विश्वा (मूल पिला) सी माने विश्वके स्वत्यर्गत करिन निर्माण पर बन देते हुए भाषाओं का जान गणित, हविहास, मुगोल, समें के मून विखाला, प्रारम्भिक विज्ञान इरवादि की रियान का प्रवन्त ही तथा परिवास का नरीश क्या स्वार्गिक हो न कि पुरत्यक बाता । इसके परवाद इसकीय वर्षे की बायु तक एक विशेष क्यान्या की शिखा थी जाये और स्वच्याय के की प्रवचाद किशी विषय में विशेष योग्यता प्रारम्म की जारे । इसकीय कर्षे की बायु के परवाद किशी विषय में विशेष योग्यता प्रारम करने का प्रवन्त ही । दालकी की शिखा धनित्राल हो । किस प्रवन्न धन्म विद्या वित्र विश्व कर कर ने स्वर्ण की स्वर्ण हो । विश्व कर कर ने की की का मन सायुव हो । विश्वण बरकार तहरे के दूर होनी चाहिए एव उनमे विद्याविधों के रहने का प्रवन्य हो। प्रध्यापकों के चयन में उनके चरित्र पर विशेष बल देना चाहिए तथा सामु भी कोई सोमा नहीं होनी चाहिए।

नई शिक्षा नीति को सफल न्नाने का दाधित्व अध्यापको का होगा। प्रत्य सम्बद्धित हव योग्य प्रध्यापक तैवाद म्हान के लिए भी एक योजना की प्रावस्थकता है। नहीं तो शिक्षा नीति बनाने का कोई साम नहीं होगा। भवदीय

हवंदेव सिन्हा मन्त्री, झायसमाज डी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-५व

(पृष्ठ १ से बागे)

क्रान्तिद्त स्वामी ग्रभेदानन्द

उपरी तत्त्व पर स्थित रेडिकल जैमाक्रेटिक पार्नी के दफ्तर में गया। पार्टी के काला पानी से जौटे चटगाव शस्त्रागार-लूट काण्ड के प्रसियुक्त भी लोकनाथ बल के स्वागत का ग्रायोजन था। द्वितीय महायुद्ध के बाद झण्डमन से काला पानी की खजा साग रहे भनेक भनियुक्तो को मुक्त कर ⊾ियागया था। ग्राने समावार पत्र की ग्रार स्थी बल से साक्षातुकार के निमित्त मैं मा गया या। जब मैं रेटिकल पार्टी के दफ्तर में पट्चातो बहा मुभे पुराने कालिकारी सर्वं श्री निवनी सेन, रखनी मुखर्जी, श्रमिक नेत्रीतदानेता मणिबेन कारा गव ह्वी० बी० कार्रिक, प्रविवना ह्वी० एम० सारकुडे बैठे मिल थे। श्री मानवन्द्र नाय भी उपस्थित वे को बलग किसी से बार्ने कर रहे थे। श्री नलिमी सेन ग्रादि के मध्य मंही एक गोरा एवं गठीले बदन का व्यक्ति बैठा या। मैंने श्री सेन से कहा, 'शामी श्री बनेर समे साक्षानुकार बाई। 'गोग व्यक्ति बोल उठा — मामो नन । पिरशीवन ने मुक्त से परिचय पूछा। मेरे जन्म स्थान के वारे मे जानना चाहा। मैंने ग्रपने को विहारवासी वतलाया। तस्काम श्रीत्रम ने स्वामी ध्रमेदः नन्द जी के विषय में पूछा। मैंने, स्वामी जी के कलकत्ता निवास के विश्य मे बत्तमाया । तथा श्री वस से स्वामी जी के पास साथ चलने के लिए बाबह किया। वह तैयार हो गय। रास्ते में मैंने श्री बन से पूछा-- 'शाप से अब स्वासी जी का परिचय पहली बार हुमा होगा, उस समय तो बहु "राम समुद्र पाण्डेय थे। लकिन, धापने स्वा० धमेदानन्द जी को क्य से जाना <sup>?</sup> उत्तर मिला – 'झामादेर निरतर सम्पर्के छिलो। भैं प्रवाक् रह गया। मैं स्वयत सर्कं करने लगा, "ब्रह्मेजी के शासन में श्रहमन से निरन्तर सम्पक कैंथे सभव हुवा ?"यह रहस्य बाज भी बना हुवा है। जब श्रीबल पोहार भवन पुचे तो राम अरस मिलाप का स्थ्य उपस्थित हो गया । दोनो की शास्त्रों ने शानन्द के ग्रांसुवे।

क्षां मानवेन्द्र नाथ राथ १६४८ के फरवरी में पटना भागे थे। मैं पत्रकारी के बीच को राय की 'राष्ट्रीय ग्राधिक योजना' (National Planning) तया ' राष्ट्रीय सविधान निर्माण' (Formulation of National Constitution)क मुखर समयक था। अत श्रीराय स मरा पनिष्ठ सम्पकस्थाति हाग्याथा। श्री राय पटना के बुद्धिवादी वग से मिलाना चाहते थ। उसी दिन उनका ह्वोलर सिनेट हाल मे आर्थिक-योजना एव सिव-चान-निर्मण् पर भाषण होने वाला वा। उसके पूर्व वह पटना के बुद्धिवादी समुदाय संभित्तने बात थे। निमत्रण मिला बोर मैं स्वाभीओं तथाश्री रामानन्द नास्त्री क साथ आरो राय की गौब्दों में शःमिलाहोने गया। स्वामी जो को देखन ्ी श्रीराय ने उन्हें भग्न गस बिटा लिया। भीर चात्र र्कचुस्की नत हुए स्वामी जी से पूछा---बाप रामसमुद्र पाण्य तो नही हैं ? स्वामी जीन कहा— हा मै साचता रहा, जार दमी प्राधुनिक क्स के पिता लनिम का कभी दाहिन। हाब था, उससे स्वामी जीका पुराना परिचय कैसे ? स्व।मीजीसे पूछन पर पता चला कि यार्डेनरिच डकैती काड के बाद किशोर वय-क नरेन्द्र भट्टाचाय (श्रीमानवेन्द्र नाथ कापडला नाम) जब प्रनामे एक प्रेप कम्पो बीटर के रूप में गुध्त जीवन विता रह थे, तास्वामी जीकाकाम उन दिनो द्वान्तिकारियों के युप्त पत्रों को विभिन्न केन्द्राम प<sub>ट्</sub>चाना या पहुचवाना था। यूनाइटेड प्रेस (यू०प्र०) नाम की सस्या को धन नहीं है, की पटना शास्ता क प्रभारी दिवगत श्री पणीबाबू श्री राय के साम उक्त अस म प्रूप रीटर का कम करते थे। पणीबाबू के माध्यम से स्वामी जीकाश्चीनरेन्द्र भट्टाचाय संपरिवय हवा पा।

ग्रजीब दरबार-

स्वामा जी के दरबार म विक्रिन्न राजनैतिक, सामाजिक, एव धार्मिक (शेव पृष्ठ १२ पर)





एम डी एव

TIGGO



त्रिकाकाई रोठा प्राप्तना हरण बहेडा कन्यन व क्रान्त सामित जणी बटिया से बनाया गया एक की क्ष्य-णिठाकाई पाठकर एक प्रत्यन्त साधकारी प्राकृतिक वैत्र है इसके कोई रासामनिक प्याप नहीं है।

एव डी एक तिकाकाई पाउन्डर का आ**स से ही** नियमित प्रयोग कीजिये। निर्माता

निर्माता महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) **लिं॰** ३ ४४ इण्डान्द्रवल एरेना कीर्त कार को दिल्ली 110018 पात 539609 537987, 537341 (पुष्ठ ११ से सावे)

विचारों के जोन समस्वित रहते थे। स्वामी जी की सबके प्रति समबुध्य रहती वी । यह कहा करते थे, देश का कस्वाच धनेक विविधों से किया का सकता है। येरी चर्चिट में कोई वार्व हेव नहीं है न खेष्ठ है । वाबेशी सोसांतरट कम्यांतरट सभी स्वामी जी के सान्तिक्य में बाकर उनका धनुवह प्राप्त करते थे। कालापानी या कासग्रह की सचा वाने वासे प्रनेक परिवारो की बाविक सहायता स्वामी बी करते वे। क निकारी वैकुष्ठ शूक्त वि हैं फासीकी सजा मिसी थी की विद्यवा पस्नी की सहायता स्वामी जी किया करते थे। यह मैंने प्रवनी प्रांखों से देखा था। स्वामी जी का समना का व्यवहार यह कहने के सिए बाध्य करता है कि वह सवमूच अमेदानन्द थे।

#### विहार की आर्यसमाज-

 यही कारता है कि उनके विकास में बहुता सी बातों सभी भी सशात है। सच्चा सन्यासी—

स्वामी जी सक्ते धर्व में सम्वासी है। वों तो वानप्रस्थी बीवन विताते समय ही बहु पूर्ण सम्बाही हा प्रावरत करने सबे वे। वह नहीं चाहते वे कि अनके एक-साम पूता कृष्य भी भी उनसे सिसे। बन, मौतिक गरिमा लोफ क्यांति धार्वि किसी के प्रति उनकी जवासीन प्रवृत्ति बी मीरियात बाते समय उनसे उनके किसी प्रियतम स्पक्ति ने भी यदि यह सबा कि बापकी खारीरिक धवस्था विवेश वासा के अनुकूल नहीं है तो उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि न वासी भारत में मरे या बाहर रममे कोई चातर मही पहला । मीरियान जाते समय बद्ध धारेक साम तिक रोगो से बन्त ने। नहीं नवे इहसीसा समाप्त कर वी। ऐने वे स्वा० शभेदानस्य बी ।

(समीदतनाही फिरकमी)



उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली राजा केशारनाय, फोन : २६६८३८ वाचडी बाजार, दिल्ली-६





# साप्ताहक कृष्ण क्षिमार्ग अस्य सन्दर्श

इष ६ घक<sup>ु</sup> । सूरक एक प्रति ५० पैने रविवार, ४ सगस्त १६६६

वार्षिक २० स्पये

सृष्टि सबत् १८७२८४ ०८६ शाजीवन २०० स्पय बावसा २०४२

दयानन्दाव्य--- १६१

विदेश में ५० डालर ३० पाँड

# प्रभात की प्रतीक्षा में पंजाब की धरती



८ जौलाई को सम्पूर्ण देश से मन्त्री श्री प्रजाब के समभौते कं समाचार से पान है। इस की लटर फैल गयी। चार म लसम

के बाद पजाब में पी फूटी है। हिन्दू और मिलो के वीच उपती करीनी फाडिया सुलती दिखायों दी। पजाब समस्या के समाधान के लिए ऊची राजनियक्ता और बढ साहसिक कदम की जरूरत थी। युवा प्रधान-मंत्री श्री राजीव गांधी ने निजी प्रधासिक कोर गजनितक बाधाओं को एक छलगा में पार कर सफ्नता प्राप्त की है। विचटन और सलमाव के कागर पर पहुंचे देश को थामने में एक कारगर कटम उठाया है। प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी वयाई के

समभौते के खास मृहे इस प्रकार

<del>2</del>—

ा मशस्त्र सेनाओं को विशेष ग्राधिकार देने वाला कानून रह।

□ चण्नीगढ पजाब को २६ जन वरी १८८६ को दिया जायेगा।

☐ ग्रानन्दपुर साहब प्रस्ताव के
केन्द्र राज्य सम्बन्धों के बारे में सरकारिया आयोग विचार करगा।

चण्डीगढ के बदले हिन्दी इलाकेहिंग्याणा को ३१ दिसम्बर १६८४ तक।

ानदी जल विवाद सर्वोच्च न्यायानय के न्यायाधीश की प्रध्य आता में गठिन एक न्यायाधिक रा को सोपा जायेगा।

्रिटल्ला में हुए नवम्बर के दमें की जान करने वाले रमनाथ आयोग बोकारों और कानपुर दमों की भी जान करेगा।

श्रिलल भारतीय गुरुद्वा ।
 कातन बनाया जायेगा ।

्च फीज में भर्ती योग्यता के आधार पर।

 फीजी मुकदमों में कोई हस्त-क्षप नहीं बर्सास्त लोगों को बसाया जायेगा।

विशेष सामग्री प्रनिक्रिया तथा वस्तुस्थिनि पर एक द<sup>ि</sup>ट सम्पाद-कोय लेख देखिये।

# गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति

# प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार



हिन्दी लेखको में डा० सत्यकेतु विद्यालकार का ध्रपना विशिष्ट स्थान है। १६ सिलम्बर १६०३ को विकासहारनपुर में जन्मे भीर १६१० मे गुरुकुल कागडी मे प्रवेश स्वीर १६२४ मे स्नातक हुए।

उच्च शिक्षा के लिए भ्राप योख्य गये भीर पेरिस यूनिवर्सिटी से इति-हास वि त्य में डी० लिट की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की।

१३ वर्ष का गरुकुल में इतिहास के प्रोफसर भी है। जीवन का अधिकाश समय माहित्य लेखन में य्यनीत किया ग्रीर गरुन के विभिन्न विद्यविद्यालयों में व्याख्यान देने हेलू बुलाये जाते रहे।

ग्रनेक राजनैतिक वार्मिक साकृ तिक साहित्यिक सस्याधी के साथ सम्बन्ध रहा। १९६२ उ०८० विधान

परिषद के व्हेलखण्ड म्नात्र क्षत्र से सदस्य बना नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग गम् कुन विव्विव् की सीनियर के सदस्य भी हैं।

विदेश भ्रमण में चीन इन्ली स्विटजरलण्ट फान्स अन्बिटेन ग्रादि देशों की यात्रामी कर चुके हैं।

डा० सत्यकेतुजी का कार्यक्षत्र साहित्य मृजन ती है।

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो मे

१ प्राचीन भारतीय इतिहास पर ग्रनेको ग्रन्थ लिखे हैं।

२ आधुनिक इतिहास पर भी आपने भनेको भन्य लिखे हैं। ३ राजनीतिज्ञ शस्त्रपरश्चन्तः र्राष्ट्रीयस्तर परग्रन्थरचे हैं।

४ उपन्यास यह अप ती एक पृथक तिवाहै इसमे आपने अनेको पुस्तकें निवीहैं।

सावदेशिक प्रायप्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्रीलां राम-गोपाल जी शालवाले की प्रार्थना पर प्रापने प्रायसमान का श्रादि से प्र तक का इनिहास लिखा है। जिसके वार भाग हजार हजार पृष्टी के लगभग खुगक जनता के हाथों में पहुंच चुके हैं और मांगे कार्य लेखन प्रगति पर है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

#### सत्संग वाटिका

हे (हम स') एक विचार से मुक्त धौर (सलाय') एक प्रकार के शान से मुक्त संगो ! (वर्तुवास्त्रम्) उठा ! वालां धौर वालो ! (सलीवा) एक पर से मुले वाले (बहुव) अस सोग विक्तफर (धॉल्) ईरवर को शानों को स्वया जान को (इफ्डम्) उत्तम रीति से प्रवीप्त करो । (इफ्डम्) उत्तम रीति से प्रवीप्त करो । (दिक्का) वारण शक्ति के साय प्रगति करने वाले (धॉल्) ते सत्ये धौर (उल्ल क्षेत्री) चौकसों को सुचक दिवस ग्रांकि इन को (इस्तावत) प्रमुख वाहने वाले (व) धार सबकी (सप्ते रक्षा के लिए (लिह्नुये) शास्त्रण करवात ।

बहा ही प्रराशायक मन है माव यह है कि उठो जाये है बाहयो। मनो बल से अनुपाषित हो जायो। एक राष्ट्र के बाही तुम नव पाने प्रमण्ड करी साल को प्रतीयत करो। तुम्हारी रण्या सै उस प्रमित्त करो। तुम्हारी रण्या सै उस प्रमित्त करो। तुम्हारी का बारणा करते ही मनुष्य क्रियाशि हो क्यान है तुम्हारी रणाय सै प्रकाश से बायमाती हुँ उस उषा का बाह्यान करता हू (असमे जीवन योगिस्य हो उसे है। प्रयोग जीवनों को प्रतिसमय बनायों।

इस सत्र में बारग शक्ति के साम प्रवृति तेबस्थिता सनेनता भीर प्रभुत्व शक्ति इन गुणी में सबारक्षण होता है बह बतलाया ग्या है। सभी मनुष्यों को राष्ट्रसमाज ौर झामोनित के लिए एक संद्रियकर उप सनादिका निदश दिया गया है एक घर संस्केताले सभी मिलकर उपासा कर हिटूजाति र्चन्वर स्वत है ारितक है वार्मिक सार्थों के प्रति समित्व बहुत संख्य रखती है पर इस्मारणमा लिक प्रारने क विधानन न। सकापरिणास यह हा । है कि जिल्जाति एक संस्ल कर कोई का प्रमह कर पती सम इस के नाम पर भी एक्त नहीं शापाती इसम छोटे गीर व का उत और भाउन का भन बना रहता है। हम यह नही कहत है कि मुसलमानों मंयह भन्तहा है पर नन धत्र य कहत है रिह्म री भूपोला उतम की श्रक्षिक ए ता एक साथ मिलकर बाय जरत की भावता चुनाव द्वादि मे एक संद्र्य मिल ४ र वाट देन काप्र माविद्यम न है। क्या क्योकि ब प्रतिनितात्र बारणकस्य मिलकर ममाज पढते <sup>के के</sup> बर का प्राथना करते है। इसलिए ५ उन्दर हैं जनके श्रीष कारो का हनन नहां किया जा सकता इसका मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि ईश्वर के नाम पर एक त्र होने वाल व्य स्रोगो मे प्रास्मशक्ति का उदवीयन हो - - - - त र (तमरी स्टेशकिन एक कप

# उठो ! जागो और ! जानो !

सुरेशचन्द्र वेदााकार एम ए एल टी

उदबुध्यस्य समनस सरााय समिनिमन्द्र्य बहुव सनीडा । दिषकाममिनमुषस च देवी मिन्द्रावतोऽवसे निह्नयेव ॥ ऋ०१०-१०१-१



हो ज ती है। यत वद कहता है 'एक यर के रहते वाले तब लावा मानकर है वर को भानी को वा साम को उत्तम रीति से प्रदीत करो थें, या मा खानिक को उत्तम रीति से प्रदीत करो थें, या मा खानिक को उत्तम रीति को उत्तम रीति को उत्तम रीति की रीति कि सिक्त को हुए समय करा करा के सामिक्टा खाना के एक साम उर्ज करा करा है एक बार उठकर क्यो नही देख लेता है कि सब धरना ही धरना है यहाँ कोई स्पर्या नही वसी अभी सम्मान है विकक्षी उपायना करो हम सबके साम एक हुए हैं। यहाँ ध्रम की हम सबके साम एक हुए हैं। यहाँ ध्रम देखा रे बही निकास में मी फिसी का सन रमाए करें हो सकता है रिकर हम रमण्डन्ता करा है रा सरका है रमण्डन के मी फिसी का सन रमाए करें हो सकता है री कर हम रमण्डन्ता करा है री कर हम रमण्डन्ता है री कर हो सर रमण्डन्ता करा है री कर हो सर रमण्डन्ता करा हम रमण्डन्ता है री कर हम रमण्डन्ता करा हम रमण्डन्ता हम रमण्डन्ता है री कर हो सर रमण्डन्ता स्वाचन के करी रही

वेद अन कहता है जागो घीर धरिन को प्रवीरत करो। धरिन कीन हैं? अगि नाम परमेरतर का है वेद ने स्वय कहा है तहेवागिनस्तदा दिस्य (अजु० १२१) घरिक का यय करते हुए बास्काचाय निवाने हैं (धरिन कस्मान् ध्रमणी अवित निम्म्स ७ १४) परमास्मा धर्मना है स्वयीकि वह ध्रमणी है। सबसे घागे रहने से घीर सब के घागे चनने से परमास्मा का नाम घरिन है। परमास्मा परम धरिन हैं। वह ध्रमणियों म खरणा है।

निभय हो र घ्मता है

निसंबज्ञहोता है। मानव के गरीर के भगभगमें बज्ञ हारहा है। आखियत कर रही हैं कान यज कर रहे है प्राण बज कर रहे हैं व्वास प्रवास यत मे लगे हैं। और वस बज का होना प्रह्व-दता व्यक्तिदेव है। व्यक्ति द्वारा पुरारे गए देव यजमान बनकर अपनी **प्रपती स ह**ित यज्ञ मिन में छोड़ रहे हैं। चम अग्निको प्रदीप्त करनाह म नव का बहुत्य है। इसलिए भनत सनि को प्रश्नित करने की प्राथनाकरता हथा कहता है हमेर हृदय के तिनके से उठी वज की भाग । प्रदीष्त हो । प्रदीप्त हो मेरे टिब्स ज्वानामुखी श्रपनी उज्ज्वन ज्वाला भी के मुझ से मेरे रोम रोम में बज का सदेश पट्टना दे। धपनी दिव्या पुकार से मेर राम रोम को बझ की काय का तिनका दना दे। ये सूचे तिनके तेरे भली किस समय से यह देती की क्यकती हुई

चिनगरिया बन जायें।

धाधो यत्र की घाण धायो मेरा धातिष्य स्वीकार करो। मैं एक बीन से नहीं हवारों बीन से तुम्हारा धरिनन्दन करता हूं। केवल एक मुझ की बीन से नहीं घर प्रव की नस्त नस्त की नासी नाडी की बीन से युम्हारा धरिनन्दन करता हैं। धाल बीवन मे धाने बढ़ने के लिए प्रभुख की प्रति के निष् युम्हारा स्वानत करता हैं। मेरा स्वानत स्वीकार करो। स्वीकार करो इस स्वीकृति से युम्हारी कमी धीर धोषा बढ़नी।

यह सन्द्रा पाने बढने की कामना के सिए जहाँ ग्रानिदेव को पुकारता है वहाँ चौकसी की सूचक दिव्य शक्ति कथा का भी बाह्वान करता है। दिन के उदय होते ही ऊपा का धानमन होता है। उस समय एक घत्पन्त मनोरम बक्छाई चाऱों धोर का जाती हैं। बुओं के हरे हरे पत्त नाल लाम बनय से विर जाते हैं। पानी के तस पर एक चन की मी माल चादर बी बिखुजाती है। झाकाश में महराती दवेन भीर यामसभी बदलियाँ एक हल्का सा गुलाी शा**चल भो**ढलती है। भीर उस समय चौक्सी करने वली ऊपादेशी हल्क हा की भौकी दे जाती है वसी ऊषा की गोर सर्जिका महानुप्रही साम कार का दरकर वारी कोर वर्ती को भगाने प्रवास्य जाम देता है। उसका श्रद्या वसा दिन्दिगल मे प्रातभासित होकर हम को जगत रहकर कम करने की प्ररणा देता है। इस पुण्य प्रनात मे उद बुद्ध हर्न प्रजा ो का प्रकाश के राजा का यह सन्देश है यो उमाव।दित्य पुरुष सोऽमावहम् प्रको झत्मा मैहू-- यह इ प्रभूकास दन । यह सूय य**ह प्रभूकह** रहा है ---

ऐ प्रस्त प वित धो के आ र से ब्या कुल मनुष्य उठ। जाग भीर प्रपने उस सवन्क्षक नविचनक सवदानक के कम्मों पर न्हें परसन्नदां से श्रीपत कर निष्यक्त क्षेत्रों है। जाता। इसलिए वेदस म कहता है—

हे कर्पबीर <sup>|</sup> उठो <sup>|</sup> जानो <sup>|</sup> तुम्हारे निष्यसारका कायसेस स्था पडा है। तम विश्व भी कम को हाथ में लोके तुम्हारे स्थल से कही महत्त्वपूर्ण कन काएमा। तुम सानत सेवा के लिए बाए से। तुम से महत्त्व बीत हित है। तुम अपनी बात्ति को पहुंचानो। उठो। आब विश्व को तुम्हारी म बदयकता है। समस्त ससार तुमसे क्योंति प्राप्त करने की प्रतिक्षान में है। तुम ससार का कत्याण करो।

इस प्रकार यह वेद म त्र कहता है उठो । जागो । फ्रोर धानि को धपने हुदय में बाबृत करसमाज को बाबृत करो। राष्ट्रका उठार करो। निराधा को दूर कर बाजा का प्रसार करो।

इस न्मृति में एक सत्य है-

मनुष घाय म हाज है सकी बहुबन में नर ने तो प्रस्तत हीरो का बहाताज है सखे प्राज के इस प्रमात में नमें घाज की सब्द प्रोजना फिर कल खा तुमको कोर्जेंगे तुन्हें पड़गा कुछ न बोलना स्वर ऊपा के सुनो सुनासी। साज घाज तुम खुजी मनासी।

हमारे कार्य हो मानवमात्र के लिए

साहित्य वह है जिसस हो सवका क्याण विषक्षे हो नितकत का प्रगार व व केप्प्रव का ह तथार उपन हो सद्यान सर्वकण दिन मिन हो नुस्कार पिट बाये उचनीय की बाबना का जाया पर्वक तस्यासना। वो करे सत्युग का निर्माव साहिय पह है कितस हो सबका करवाण।

हुय वह है जिसस हो सबका कस्याण । — गकुनचंद गृथ्त दियः स्पति साझयज जिल्लाम सा(४०)

(पष्ठ १ से घ ने)
स्रायसमाज का यह विस्त त
इतिहास यथार्थ में नारा के पुनन्द जागरण स्रोर उसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा स्रायसमाज के जन-जन का योगदान सजीव बना है।

पजाब दिस्ली और हरियासा को झाय प्रतिनिध्य समाधी के तीनो झायको के झागामी वयों के लिए उन्हें कुलाधिपनि चुना है। बाठ सत्यकेतु विधानक र सक्षम विद्वान व्यक्ति हैं जो इप न्वीन गुरुतर सार को बहनकर गुरुकुल का नवनिर्माण करते। सम्पादकीय--

# धरम जुद्ध मोर्चा वापिस, नये सर्वेरे की तलाश

पजाब में चार साल से खुन की होली निरन्तर सेली जाती रही। हर रोज सबेरा नये खुन की लालिमा बेगुनाही की चीख लेकर उगता। दहसत और आतक से दिशाये सन्न होती रही। ढोल ढमाको भीर भगडों के स्वर सो गमे, सदभावना एव प्यार प्रीति के गीतो के बोल नफरत के जबड़ो में स्रोते गये। दिन प्रतिदिन स्थिति विगडती रही। खून भीर भाग के दरिया को पारकर २४ जौलाई को प्रधान-मन्त्री समस्त्रीते के किनारे पर पहुचने में सफल हुए। सारे देश ने एक स्वरसे समभौते पर प्रसन्नता व्यक्त की । किन्तु सद्भावना एवं सदास्यता से हुए समफौते से कुछ काले दिलो के कोने में ग्रगारे सूलग रहे हैं। इस को हवा से चिगारिया फूटने लगी हैं। यद्यपि श्री लोगो-वाल ने तीन वर्ष पुराना घरम जुब (धर्मगुद्ध) वासस ले निया है परन्तू जरबेदार टोहरा और सरदार बादल ने समभौते पर तीव ध्रसन्तोय जाहिर किया है और यह भाग निरन्तर घषक रही है। जत्येदार टोहरा ने मानन्दपूर साहब में हुई सभा मे समफौते को पजाब के सिखों के हिनों के विरुद्ध बताया। उन्होंने कहा मैं सनमौते से कनई सहमत नहीं ह पर अधिक ज़ुछ नहीं कहूगा कही ऐसान हो कि सम सौते से हमें जो कुछ निलने का आशा है वह भो न निले। हमने तो मागकी थी ब्ल्यूस्टाइ श्रापरेशन में गिरपनार लोगों को श्राम माफी दी जाये और उन्हें रिहा किया जाये (जो की हुमा हो नहीं) सरदाद बादल ने कहा कि मगौडे सैनिको भौर छात्रो को हम रिहानही करा सके हालाकि इन लोगो ने हमारे लिए कुर्वानिया दो है। इस सम्मेलन मे आये २०० प्रतिनिधियों ने सत लोगोबाल के साथ तथा समकौते पर विश्वास प्रकट करते हुए हाय उठाकर सहमति प्रकट की, केवल टोहरा और वादल हो सिर भुकाये बंठे रहे।

सत लोगोवाल साहसी नेता एवं सुफबूफ बाले नेता के रूप में उमरे हैं। मकाली दल में को नेता तत हरवन्द शिव्ह के समर्थक है उन्होंने इस ऐतिहासिक समझीते पर फूल बढ़ाये हैं। ऐसे नेनामों में पूर्व मन्त्रों शुक्ष ऐतिहासिक समझीते पर फूल बढ़ाये हैं। ऐसे नेनामों में पूर्व मन्त्रों शुक्ष देव सिंह डो डसा दन के कानूनो सलाह कार डा॰ गुरनाम सिंह तीर दो पूर्व विवासक झानों सब्दु ने सिंह मोर एस एन धुनी ने कहा है इस समझीते से पजाब में ज्याप्त सभी सकट दूर होगें झीर विकास का एक नया प्रज्याय शुरू होगा।

समकौत को देश व्यापी समर्थन मिलने से उपवादी लीक से जर गये हैं। इथर बाबा जोगेन्दर सिंह इस ताक में है कि कब बादल भीर टोहरा उघर से बीलला कर उनकी भीर मुल मोडे। अमृतसर स्वर्ण मन्दर के हन दिनो दोनो युंगों में नारे बाजी और तीलो फड़पें होने से तनाव बना हुमा है भीर बाहर पुलिस सुरक्षा बल चौकसी के लिए तैनात है।

हरियाणा और राजस्थान, जण्डीगढ तथा पानी के बटनारे को लेकर आक्रोध में भरा हुंगा हैं। राजस्थान विभाग सभा में भरता विये बढ़े भरों सिंद वेंसानत का कहना है हुई ऐसा प्रतीत है प्रकालियों की सन्तुष्ट करने के जक्कर में राजस्थान के हितों की वानि हो रही हैं। राजस्थान का विपक्ष प्रधानमन्त्रों से हो आदवानन चाहता है। इधर हिरायणा में भजन लाल के आवश्यत होने पर भी विषक्ष के मन में रावी व्यास के पानी भीर चण्डीगढ़ के बदले में मिनने बाने इसाली को लेकर बाका बंदी हुई है। इसिलए विरात के २६ विचायकों ने अपने इस्तीफं अपने अध्यात के ती हुई है। इसिलए विरात के २६ विचायकों ने अपने इस्तीफं अपने अध्यातों को साँप दिये हैं। शुनाई को हरियाणा बन्द का भी प्रेलान किया जा चुका है। इसर आजपा ने समस्तिते के स्वस्थ पर बापति प्रकट को है। अपनुस्त आपत्तिया इस प्रकार होता हा आधीन ने चण्डीगढ़ हरियाणा का रिया वा लेकिन इदिरा गांची ने इसे प्रवास को दिया चा हरियाणा का स्रात्त व

बीद फाजिल्का मिला था। लेकिन नए समक्रीते मे वण्डीगढ़ पजाब को दे दिया गया। पर प्रवोहर और फाजिल्का हरियाणा को नही दिया गया। (२) प्रक्षित भारतीय मुख्द्वारा कान्त वनाने से भारतीय राजनीति में साम्यदायिता बढेगी। (३) सरकार ने अकालियों से हिसा मातक या गुख्दारों के दुरुपयोग के सिलसिले से कोई लिक्षित भाष्तासन नहीं लिया।

(४) नथे समक्रौते के तहत दिल्ली दमें की जीच को दायरा बनाकर कानपुर और बोकारों करा दिया गया है लेकिन इसका दायरा पजाब में हुई हिसा तक नहीं बढाया गया।

(५) त्रिपक्षीय वार्ता ३ जनवरी १६=३ मे पानी विवाद पर लम्बी बातचीत हुई थी इसमें प्रकालियों ने कहा था कि पिर्फ समस्या हरियाएग के साथ ही नही राजस्थान के साथ भी है। उस गमय गर-कार ग्रीर मभी विपक्षी पार्टियों का कहना था कि १६५५ के समक्रीते के तहत ज्याम ग्रीर सतलज से राजस्थान को पानी मिलता है फिर से लागू नहीं किया जाए, लेकिन नए समग्रीते ने इस मुद्दे को फिर उमार विया है।

इस प्रकार इस ममफीते की विजया उचे व वेने की हर तरफ से कीश्रिय हो रही है अविक आग जनता शान्ति हो जाने की समावना हो उपने कि है। प्रकाशित हा बाव और पुष्ट चरणाहिंद टोहरा नै आगामी रखनीति निर्धारित करने के लिए आपस में बातचीत कर वकीशो और बुढिजीवियों की एक बेटक बुनाई है। बाडा जोगेन्द्र सिह-जब तक सेरी पार्टी से सरकार वातचीन नहीं करेगी नव तक पत्राव में शान्ति नहीं होगी। वे कहते हैं मन्त हों करेगी नव तक पत्राव में शान्ति नहीं होगी। वे कहते हैं मन्त लोगोबाल अब दल के अध्यक्ष नहीं हैं जन से छुटते के बाद उन्होंने दल से इस्तीफा वे दिया था। इस्तीक से बुदते के बाद उन्होंने दल से इस्तीफा वे दिया था। इस्तीक से बुदते के बाद उन्हों हैं और न ही दल की तर्य सीनित के मदस्य। उन्होंने कहा, अभी हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हु जा हम उसकी प्राप्ति के लिए जो टीक समभेगे करेंगे। आल इध्डिया सिल स्टूड फेडरेशन के छाता भी इस समभोते की नीव में पत्रीना लगाने के निए कमर करें हुए हैं।

इन समस्त परिस्थितियों को महेनजर रखते हुए समस्या की भयकरता ग्रीर गहरी जहां का एडसास होता है लेकिन ठडे दिमाग से विचार करें तो समभौता कभी भी बिना लिये दिये नहीं हुआ। करता । समभौते से कभी भी कोई पूर्णत सन्तुष्ट नहीं हमा करता इस तथ्य के अनुसार इस समभौते से समस्या के अगारी पर पानी डालने की भच्छी कोशिश हुई है। हालांकि स्थित यह है भकाली घडा वहना है हमें नया कछ नहीं मिला भीर विपक्षी राजनैतिक दला का कहना है सरकार ने काफी हद तक भक्त कर अधिक उदारता के साथ सम-भौता किया है। इवर पजाब मे शोझ ही चुनाव की घोषणा किये जाने की सभावना है, जबकि शीघ्र चुनाव कराये जाने से पजाब का माहील बिगड जाने की भी समावना है। समस्त स्थितियों को ध्यान में रखकर प्रजाब के तपते लोहे को शान्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। साथ ही पजाब को शान्त करते करते दूसरे प्रदेश कुछ न हो आये यह भी सरकार को ध्यान रखना चाहिए। सद्भावना भौर सदाइयता से जो नमकौता एक पूरत में ही कर देने का साहसिक कदम श्री राजीव गाघी ने उठाया है, देशहित में सभी को उस पर फुल गिराने चाहिए न कि घूल।

—यशपाल सुषांशु

# धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

#### लेखक-रामगोपाल शालवाले

[गताक से धावे]

सेवाग्रीर प्रेम काएक नमना

शोबा का पानिक स्थायास्य वहा बदनाम स्थायालय वा। वह स्थाया-सद उन स्थियों को भी जेल जेवने के लिए बदनाम वा वो हुंबाई जनने से इनकार करती थी। जेल में उनके साथ बहुतास्का किया जाता या ग्रीर पायादिक वृत्तिमों की सन्तुष्टिक नाव वे वर्ष विरोधनी बहुते जाकर वीवित जला दी बादी थी।
(सीमुन वारिक की पुस्तक पुरुद २१-२२)

स तर् १४६० में गोवा के समस्त नाहामों भीर स्वर्णकारों को साजा वी स्वर्णक में देनाई स्वर्ण को स्वीकार कर में सम्मा गोवा होड़ कर चले जायें। १४६७ हैं में हिन्दुओं के साजिक उन्य कला कर निए तथे और उपनवन निवाह और अवस्था होड़ इस को उन्योद के सिंह प्रतिक प्रत्य कला कर निए तथे और उपनवन निवाह और अवस्था है के सिंह प्रतिक के सिंह प्रतिक के सिंह दिवस किया गया। शिक्तुओं के प्रतिक निराय जाकर उनके स्वाम पर गिरामापर बनावें पूर्व । १६६४ है में एक रावकीय आजा के हारा गोवा के लोवों के लिए तनकी मान्या मान्या का उपयोग निविद्य दुर्गाया गया। उन्हें ६० वर्ष की प्रविधित के सिंह के पूर्व पास देश मान्य सींका में, पत्या उनके विद्य कानूनी मार्थवाही की वायेगी। १६ सकार उन पर बलात पूर्ववाली मापा ठीवों गई। इस वह कानूनी का सावाय बया गर्न यही कि या तो वे देशह के स्वित्य कर रहे एक स्व

#### रोम का ईसाई (ब्राह्मग्)

मानवीय प्रतिया का नाटर्कर रचने के लिये ईशाई मत दिननी जुट देता है, इस बात को राजटे की - नोरिस्ती ने निद्ध कर दिस्साय था, जो १० औ शती के प्रारम्भ में भारत में घावा वा। इसका जन्म इटली के उच्च पराने में हुआ वा। यह बड़ा बुद्धिमान घोर फर्णन धर्म का बड़ा बारी मेमी था।

उनने देशा कि राज्यसत्ता के यह पर आदिवासियों और होटी जातियों के लोगों के सार्ग्हित घर परिवतन की नीति पात ह है, जिसका वाश्यय काशियी और धन्य केशोंकिक दीशाने नेने रहे वे । इसके स्पष्ट अनुसब हुआ कि जब तक उच्च पर्य के हिन्दू देशाईन बनेगे तब तक भारत की श्रुप्य में ईसाइयस की जब्दें गहुरीन बस सकेशी

सत सबने कार्याची गीति का परित्याय करके सामा गीति सरनाई। यह रोमन मैंची तिक सामु दुर्गवात से महा हुआ। इसने मामदे बत्त सारण विके । साचे पर बत्त सामा त्रा की साम्याची कारण सिंहा । साम्याची कारण स्वाचा । उसने कहा पा कारण हुआ था। यह पहुरा के ब हारणों के गुरूरने में मकल केकर रहने तका। उसने कहा मी रोम का कारण हु। सार्वाची के एक प्राचीन हुन से सम्बद्ध हु। यह ते तिसन निम्मू सीर सम्झत पढ़ी, साकाहारी का गीर साहस्थी के इन से स्कृत लागे। उसने कारणों के वे ने से स्कृत लागे। अपने साहस्थी के स्वाची के सिंह से क्षा स्वच्याना नावक एक सावना पुस्तक तिमी। इतना ही नहीं उसने येचुवेद नावक एक सम्बद्ध स्वच्याना (एक स्वच्या स्वच्याना)। एक त्र तह स्वच्याना पुस्तक सिंहा का स्वच्याना (एक सावना पुस्तक सिंहा का स्वच्याना सावाना हु। इसने हैं हा का स्वच्याना स्वच्याना सावाना हु। इसने हैं हा का स्वच्याना सावाना हु। इसने हैं हा का स्वच्याना। सब शोटन्टेस्ट पायरियों ने इस रहस्य का सम्पराहों के ह्या तथी रह सम्ब की मानवात कर हुई।

हर्वे हर्दर तह भवा में विकास में कि का बाह्यणों को ईमाई बनाया। यह मोधिबी की बहुन बडी दाजराजा थी, जिसके उडको प्रविद्ध बढी। हर बन्हाम साजु ने भवर तह कार्य किया जो सपना वारोमन बताया करता था। सपने कुल-प्राप चीर व्यक्तिमन में है लाल तोयों को ईसाई बमाया। सन् १८६६ ईक में टर्ट वर ही पांचुने उसका देहाला हो बया।

इस प्रकार तलवार और छल से विदेशी मिशनरी बारत में खपने वर्म का प्रसार करने में सफल हुए।

अमेजी राज्य में इन लोगों ने सेवा, प्रेम भावि श्रेनेक प्रकार के ह्वकण्डों से ध्वनी सल्या बढाने का प्रयत्न किया।

सदेवी बरनार सनी यनार जानती थी कि सपने राज्य की बढ़ें सद्दून रूप ने लिए दिनारों की स्वया बनानी वाहिये । वत बरकारी कोए स कोडो रूप न वर्ष करके हुआरों हुन, काबित, तिरवापर, हरातास स्वावायस, निरंग होम आदि वस्थाए देश के कोने-कोने में कोसी वर्ष । इन सक बाएक ही उद्देश मा—सेवा के नाम पर वर्ष परिवंतन । पादरियों का सपने परकारों के म व विधिवत संगर्ध राजा बाता था, कहीं-कही तो प्रवान वासरी के मिक्टार किटरी करिमार के बराबर होने थे। इस खबार वा १२५७ की राज्य- कारित के परवात् सेवा, शिक्षा और सरकारी नौकरियों के माध्यम से भारत की हिन्दू बनता को ईसा की नेवों में सम्मितित किया जाता था ।

भारत ने ईसाइयों की संख्या

सन् १२६१ में केवल १०० हिन्दू ईसाई बने ग्रीट सन् १६५१ तक ८१ नाक ६७ डबार १४ सी ६४ लोग ईसाई बनाये वा मुके थे।

पवेब गारा खोक्कर चले यथे। उनके साव-वाय विदेशी मिसनारी भी विस्तर वेष विद्या निर्माण कर के पूरिक की धोर जाने की तैयारी करने सने ! कई मिरवाधर के विद्या निर्माण कर के विद्या निरम्भण करना निरम्भण निरम्भण कर के विद्या निरम्भण कर के विद्या निरम्भण कर के विद्या निरम्भण करना निरम्भण कर के विद्या निरम्भण करना निरम्भण कर करना निरम

पाकिस्तान वनने का प्रवान कारण हिम्दू का बमें परिवेतन करके मून-सार्ग वन जाना ही बा। विदेशी पितृतदी नाम भारत निरोधी विदेशी रावती-तिज इस तत्व को भंकी प्रकार जानने हैं और कागरी सरकार के प्रवान कहा-नीति का ताथ उठाकर वार्ष पाकिस्तानी जुटे दिन वहां से सामार्ग भारतीय क्षेत्रों में पुनकर बुली तृट प्रचानकर सामन्त्यूबंक और भाने हैं वहां समाचार पितृते पर दूसारे प्रधानवारी एक वेत नोट चारी कर बेते हैं, समया पाकिस्ताम सरकार को वोरवार कानजी प्रोटेस्ट भेजकर स्वाने राष्ट्रीय कर्तक्य का पालन करके निकित्तन हो जाने हैं।

इस निर्वेश नीति को विदेशी मितागरी वली प्रकार जानते हैं और बड़ी नन् १६४७ में प्रवेशी रच्यानिकारियों के ताथ बाद बारत खोडकर जाने की तीयारी कर रहे दे, वहां भाव अपने गैर नवांकर कई मारतीय संत्रों को ईसाई स्थान नवाने की नैवारी कर रहे हैं।

कर की पिन्नों में कताया जा पुका है कि तेया का बटवारा होने के कम जन १९५७ में विदेखी गवरियों की सक्षा २०६७ थी, हिन्नु नेहक राज्य के इन १७ कों में वर्ष के नाम पर राज्यतना हमिलाने कारे विदेशी अपास्त्रों की गच्या तरकारी धौकहों के सबुबार १९१६ में ४,७७ हो गई। खोटे बड़े ईनाई सदशारी में प्रचारक का काम करने जाने पार्शपों की सस्या बनि जोड़ नो जोने तो द हमार से धायिक गोरी चमझी बाने विश्वनरी भारत के कोने-चौने में के हुए हैं।

इन गोरे प्रचरकों की ईसाई संस्थाओं को परिषय के २० विदेवों से भारी बनराबा भारत की नरीर जनता को ईसाई बनाने के लिए भेनी जाती है।

रिवर्व नेंक पाठ एण्डिया के द्वारा बनवरी सन् १८५० से बूब सन् १९५४ तक २९ करोड २० लाख १९ हजार वचवा निवेची सिशनरियों को बाहर से धाया।

किस देश से किनना इपया आया

| ाकल दश स        | किनना रुपया स्राया |
|-----------------|--------------------|
| भ्रमेरिका       | 90,44,43,000       |
| क्नाडा          | 8,80,28,000        |
| वैस्रजियम       | \$ X0,000          |
| <b>हेनमार्क</b> | 73,58,000          |
| फांस            | 6,52,000           |
| ज <b>र्म</b> नी | 17,15,000          |
| नारवे           | 20,60,000          |
| स्वीडन          | £X,Y2,000          |
| स्विटअरलैण्ड    | \$2,99,000         |
| इ ग्लैंड        | ¥,53,58,000        |
| भन्य बेखों से   | 88,62,000          |
| विविध           | 000,35 86          |

बूल बोब २६.२५.३६.०००

कुछ लोगों को सस्य का तस्य छिपाने में ही धारनी योगवा की सार्यकता सेवारी है। तस्यों को तोड यरोवकर प्रस्तुत करने में उन्हें धान-र धाता है। धावकस सी खुगवन्त सिंह, डा॰ महीन सिंह धार्सि कई सिंक्स एक्यम यही कार्य कर रहे हैं बादा अर्जुनिह्स (वीर भगत सिंह ची के दादा) ने निकार है कि सिंबों को हिन्दुधी से पुत्रक करने का वदय-न जन्नीसभी बातानी के ग्रस्त में बसा। यह स्व कुछ सम्बन्धी साननीति से इसा। सिंबों में पुत्रक सर्तन का सा। यह। सिंबों में पुत्रक सर्तन का सा। यह।

इतिहास का तथ्य बहु है कि महर्षि दया मनद के विकारों जा व्यक्तित्त्व से प्रभावित होकर स्वान स्थान पर सित्त धायसमात्र में पाए और तम मन चन से धायसमात्र की तथा करके जीवन को वक्तन बनाकर गौरवान्त्रित हुए। परदार स्वाकांतिह जी ने तो लाहोर के उन्हेशक विचालय में एक खाजबृति भी लगा रखी थी।

बायसमाज को देव देते है।

> जप ईश्वर को जप ईश्वर को 'खुश होकर प्रशुबेक ख की विनतीसुनले

यह उनका वडा कोकप्रिय भवन या। सार्यक्षमाण वच्कोवाकी लाहीर ने तस्यामञ्च-

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण रावजी ऋषि दवानन्व के वर विरोधी थे।

# आर्यों की वीरगाथा-६

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

चिद्धान्त के अनुकूल भवनाका एक सम्रह 'आयं सगीत भवन पुष्पावशी नाम से खापाना। उसमें उपरोक्त भवन के प्रति रिक्त और भी रचनाएँ भ्रापकी सम्मि सित की गईं।

धार्यसमाब की मानी पीढी को सर-दार कातनिवह जी नरीले धार्मी के उत्साह कान से प्रणा लेगी नाहिए। धार धारसमाब के सब कार्यों को धारने हाब स करते हुए मान विभोर हो जाते थे। आहु लगाना पढ़ या दरी विश्वानी पड़ वह सब कार्यों में भागे रहते थे। बार प्रमल से। सीच लावकर कोगों को समाज से साते थे।

पुलिस काभय नही, लाभचद काभय ग्रिषक था।

आगयसनाथ के आगरिन्यक युव में लामभ्यत्व जी भी एक नाभी अधनोपदेशक हुए हैं। उन्होंने धृतकात की जब उनावने का बड़ा गौरनपूर्ण काव किया। वह स्यन्तकोट के निवासी थे। हुन।नदारी भी की भीर किसी वक्षील के मुल्ली भी रहे कभी जुड़ा बेलन के भी उस्ताद मान बातें थे। आग्रंबने तो जीवन ही एकट यहा।

मेको पर प्रकार करने में बड दल वे। उनकी लग्न व निर्मीकता का श्रोताघो पर बडाप्रभाव पडता था। उन दिनो मेको पर ठग लोगताघ के पत्तो कं खेल से धोले माले सोबो को खुब जुटा करते वे। जब लामचन्द किसी मेने पर पहेंच चाते तो ये जुड़ा चेतने वाचे उनका नड़ा सम्मान करते थे। वे समस्ते थे कि वह स्थित उनसे निकलकर एक उत्पामानव उन गया है। यह चम व जाति संवा का यग नट नहां है।

प० विष्णुदत्त वी प्रवाद क एक वण्यास्त्र स्वाय त्या स्वाय की प्रवादसमाय के प्रवादासमाय के प्रवादा की प्रवाद की प्रवा

निम्न वय के लोगों के जीवन मुखार के लिए लाभवन्य जी जैसे खाय थीरों ने जो ऐतिहासिक काय क्या है उसका सूल्याक्कन करना बति कठिन है।

एक ग्रार्थ सैनिक

विवनत शायार्थ नरदेव जी बहतीय के चिता जी भी निवास गत जी एक प्रसिद्ध सायवाशां है। उनके सार्थ समायार्थ वनने की कनानी वहीं रोचक है। सायाय नरदेव की न धपनी सापबीती से सह कहानी पूरी आय पढतात करके नहीं से मुक्ते भीमान् भीनियास राव जी के एक लेख हे इस कहानी का प्रामाधिक विवरण मिला है।

षटना इस प्रकार से है कि श्रीनिवास रावनी क्ष्मिर दागनय के बन विरोधी थे। सार पर दूना के श्री विच्छा सारती बन्न जुणकर का गृढ रान वहा हुमा था। सत सार को विष्ठुलकर रका जातिस्रमी व धन रक्षक मानते थे। एक मित्र गोविन्द राव ने श्रीनिवास राव जो को क्षांकृत्व सन्य विषे परन्तु मुठ शोक देते कि हाई पर रहा हा एक बार पार पुता गये।

बहा सपने गुरु विचल्लाएकर के पास बैठ वे कि एक सीतक हाया। उसने साते ही नमस्ते कही। नमस्त बच्च सुन्त ही विज्ञालाकर ने ऋषि नय भन्न प्राावन व सन्त्यो पर सपना सनाय नाया का माजित से बच्च कुर्नाता रहा। प्रविचल गानि से बच्च कुर्नाता रहा। प्रविचल स्मापनियों का उत्तर दहर साथ भियात। का याग्ना से मण्डन देवा इससे आविनास गाना से मण्डन देवा इससे आविनास गाना से मण्डन देवा इससे

धा क सन पर कि न्यक्त औ का ओ प्रभाव था सब दूर हो गया। घर सोदकर ऋषि के प्रन्य पड़। एक एक वाख काज क पवल ल की धोर धा बहु धाय समज के दीवाने सैनिक का नाम नहीं दिया। क्या धाय सैनिक का नाम नहीं दिया। काखा है कि वह हरियाणा प्रचान क्या कंश्मक काथ जवान होगा। पूना से सैनिक खावनी तो है ही। अ निवास राव जी मब सदा के निक् सायसमाज के हो यथे। वीरवर पठ लेक्सराम की समिति ने सीन पर सहाये काथ किया।

ण कवृद माज भी हमें यह सब-फ़ना चाहिए कि वैदिक बम का प्रचार करना केश्य हमारे उन्हें नको माय पुरो-दिनो व साधुकों का ही काय नहीं। प्रत्येक स्थाय का कल-प है कि वह वेद के प्रचार म सत्पर रह।

किशोरमञ्च-

# नचिकेता

वस्तीमा बन्नकीम गास्त्री

बाध्यभवा नाम क एक ऋषि थे। एक बार उहीने सर्वमेण यज्ञ किया। इस यज्ञ को थो व्यक्ति करता है। यह सब कुछ बान कर देखा है। यह मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

यज्ञ के प्रास्तिरी दिन वावस्था ने दान देना गुरू किया। उनके पास गार्थे प्राथक थी। बान देते देते वे सोचने सर्थे कि बांद इस प्रकार सारी ग्रन्की गीए वे दुनाओं मेरे पास कुछ भी नहीं वचेना। वे बूढी नाथो का दान करने सने। यह बात उनके सबसे को ध-श्वी नहीं सनी। सबने का नाम निपते ना था। वह सोधने स्वा- कहीं पिताओं मेरे लिए तो ऐखा नहीं वर रहे हैं। यह दौबता हुआ पिता के पास गया और बोला— पिता वी। ये दब नौएँ तो प्राप्ते का सुष्ता को है बाली और मुक्ते कि है वोगे।

यह सुनकर पिताको बढा गुस्सा आया और ने निकेताको डोटने सने।

जन्होन ड<sup>ृ</sup>ते हुए कहार्में तुभे यमराज को टगा। यहसुनकर निकेताने यम राज के पास जाने की तैयारी कर ली। उसके पिना जीको यह नान मालूम हुई। उन्हें बढा दुल हुमा क्योंकि उहीने भावेश म यह कह दिया था। नविकेता की विल्कुल डरनही लगाधीर वह यमराज क पास जाने के लिए तैयार हो गया। पिताने उसे रोकने की कोशिश की। निविकेताने एक न सुनी धौर कहा मुक्ते यमराज के पास जाना है। उनसे साक्ष्य-त्कार करना है डरना नही है। हम समने पापो के कारण उनसे डरते हैं। इतना कहकर निवकेताने पिताके चरण छुए। वह वहाँ से चल पडा। बहुत दूर चलने **पर वह बजराज के द्वा**र पर प<sub>ट्</sub>जा। बज राण कही बाहर गये हुए थे। निचकेता बाहरही ठहर गया। जब यमराख सौट कर आय तब उहीने भ्रान चबूनरे पर मुनिकुमार को देवा।

यमराज ने पूछा — तुल कौन हो ? निकित्ताने नम्नतापूतक कहा में बाज अया मुनि का प्रत हैं। मेरा नाम निक-केता है। मेरे पिनाजी ने सबनेत्र यज्ञ किया था। जन्होंने स्वस्त को दक्षिणा मे मुक्ते आपके सुरव किया है।

यमराज को बडा प्रास्तर्य हुया। उन्होंने निकत्ता से पूझा — पुन्हे मेरे पास प्राने में डर नहीं लगा? निकरता ने विसा — भगवन्! सोसारिक मनुख्य सुमें डरा देन हैं। हुमें बरना नहीं चाहिए। प्राप तो सब की भवाई करते हैं। मुदि

(क्षेत्र पृष्ठ ६ पर)

व्यासपीठ---

### उपनिषत् कथा माला-१२

# पवित्रता

#### लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

दो जीजो के साथ मे दो चीजे बधी हु है, जबतुम उन चीजो को हाय मे क्षोगे तो स्वयमेव ही ग्रसकी दो चीजें प्राप्त हो जायेंगी सफाई भीर सादगी। जिस समय यह दोनो तुम्हार कब्जे मे हयी उस समय इसका पारितोपिक क्या मिन्या <sup>?</sup> तन्दुरस्ती और सावगी, तो निके साथ धपने भाष बा जावेगी । सफाई क्या है? एक तो सफाई है क्पन्की चाह कपडाकी शतीन भी हो पर साफ होना चादिए च ॰ वह दी भ्राने गज का ही **म्**यो न हा। यहा नो सफाई चाहिए। स्राने मे तुरु दो दल रोगेचाहिए। पर दाल ग्रन्धी ग्रीर रोटी ग्रन्छी हो, सिनी हो। प्राचीन सममदार माताए इस कायदे स भोजन "न लाजननी थी। उनको पना या कि फल्पुन ग्रीरचैत्र में किस चीज का उपप्रोय करना चाहिये। उदेव्ड-धावाढ में किस चीत का बीर श्रावशा से किस चीज क यह भी हजनती थी। बहु घ जकत की न″ह ग्र।दमियों से यहकी नही पृष्टनी भी कि ग्राज बया बन।ऊ यह वह स्थामेव ही जानती थी। प्रकृति ने दुनिय की रचना तनी बच्छी की है कि मनुष्य बीम र नहीं हो सकताः जिस मौसम में ग्राम होता है, ज्यादा खाने से द्वर्गर्गहो जताहै। ब्राय के साथ यदि दस पात्र जामृत लाले तो स्नाम का दोप दूरहो जो येगा। काल्युन स फोड फुन्मा हो जाने हैं ~स ~सो के सथ बेर हते हैं जो पोड़े पुन्नी को दूर करते हैं। मातासी को उन जानी की जानना चाहिए। इस प्रकार यदि यत्र वाने व्यवहार में लाई जायें तो रोज इस प्रकार नाये से १० आने बाम हो जाये। सराई क्या है ? माफ रहने को सफाई कहते हैं।

मैं एक दार पत्राद से आयुहोन सण्डी त्या जल बाह समाई नहीं थीं। बहा स हाश्लों से राटी लान है, साथ से साम भी होता है। यहा कोई एगा बल-र-बीलाता नहीं जहां सास न हो, समात्र के पार पर हमात्र विद्या एक नौजवान सहका वें हुंदा साथ ला रहा था जनके नव्यत्ति हुंछ का बादमी जूनी पहुन वर-लग्न बात पत्रा पायोद जने मचे हुए पात्रों से लग्ग से अस नौजवान ने पहा स्वा पार्य प्रमानवाह है कहोरों और रिल्ह से में ने ने जने लग्न हुँहैं। हतर्ग से एक हुमरा बादमी उस नीजवान से बोका--

चमडाहै, इसको सिर्फल गताहै पर जो तूलारहाहै बहुतो भीतर का है इसमे उनमें कहासूनी हो बयी, फिर तो लट्ठ वल गय, मो बात क्यां है? दुनिया का नियम है कि साने में सकाई होवे। घ॰ में सपाई होनी चाहिये। यह तो हुई सफाई बाहर की। प्रवासन की भी सफाई हानी वाहिए। दिल के दोषों को साफ करों। फिर परवात्मा का साक्षात्कार हो बावेगा। दिल जिमका मलीन है, उसका क्या रिकामा । दिस की सफाई होतो चाहिये। लेन-देन मे सफाई होनी चाहिए। पहली में सफाई ग्रीर दूसरी सादगी से क्या मत-सद ? जो इन्सान तबियत का सादा होता है वह गुणपाही होता है यह नियम है। दिल भी सादा होना चाहिए, कपडा भी सादा होना चाहिए, जैसे सादे नागत्र पर का लिनते है बहपढ लिया जाता है। पर यदि विश्वे कागज पर फिर लिख दिया अराव तो पहले कालि आता हुना भा गया भौर दूसराभी गया। तो । जसकी तकि-यत्र में सादगी होर्न है। वह गुणग्राही होता है। हम मृताबाही है। नही, यूरोप देश में जिस तरह के कपड बनते हैं वैसे हम भी बनाने लगे। वे हैट लगाते मे हमने भी हैट लगा शिया । वे टाई लगाते थे, हमने भी लगा सी। सत कुछ किया, पर क्याडनके गुलाभी हमारे मे बाये <sup>?</sup> जैस वे टाइम के पावन्द हैं वैसे हम नही हैं। जैसे उनको देश का प्रेम दै वैसा हम में नहीं। जिस प्रकार वे कवडे ग्रादि से साफ रहते हैं क्या हम वैसे हैं? नही। वो नही हुन गुणो को ग्रहण करते। हुन।रे में सादगी नहीं, घगर सादवी होती तो वे गुराबाजाते है। मुण बहुव करना तो बहुत झन्धी बात है। माई ! कोई परमे-इवर ने उपमे गुरानही डाला दिये हैं। टमने सि इजिय हम है बैंने ही उनकी वनाया है। परन्तु देखो भाज हम कैसे हैं

> ो यूक्ष्य करेगा वही हम करेगे। जिथर व्ह चलेगा उचर हम चलेंगे॥ बह पंगा हम भी पढेगे। वह सडायेगा, हम सडेंगे॥

या बान है। गठ वाबिन्दिसिह बी ने सिमो दो कन्छा (जाबिया), कड़ा, वेश छोर कृषण ये पान चीचें दी बी, पर बिसो ने मही धप्नाया। वेश्वन कब यही न्विसर यूक्प वाल्य पहनने स्वे सी हम

रिका में सबाई हुई, बहुं। यत्यून बहुनते से । इससे उठने में बड़ी मुस्किस होती थी। बब खिपाही सबाई में मिर सादे तो पात्यून के कारण उनसे बस्दी मही उठा बाता था। एक बार कच्चान ने एक सिपाही के मिर बाने पर उसने पत्यून को बुटने के नीचे नीक से बाट डाला। तब बहु उठा। सब से नीचे तक का हो बचा नीकरा धार इसको धार पहुनने कब पढ़े। हम सादी तबियत के नहीं हैं। धारतरिक मुण हो हमारे हैं ने हुझ सेने हैं। इसको खाफ करने वाली सावधी है इस समें यह मुण है।

'साफ कर दिल को तूधाने सिकन्'र हो जमाने का।'

स्वक्तमन्द धावमी वज्ये के भी सच्ये ज्यदेश को सहुए कर सेता है। हमें गुक-ग्राही होगा चाहिये। विस्त समय सफाई और बादमी हमारे पाछ होगी, जब समय हम में तज्युक्तरी और सावगी चपने साप सा बावेगी। यही ज्ञान का तकामा है। एम साबे मत पढ़ी नकाई से मत पढ़ी तो। इन्हारी तन्दरुली धवक्य निमड कायेंग। सावगी गृही भा ती है। इस बाल्ने मेरे माई ज्ञान का मकाजा है कि विसके पास सादगी है जसको प्राज्ञामणी सेने में बड़ा घोर नहीं सवाना पढेगा। घोडी ही हिम्मत से

ज्ञान के पीखे ताकत, बस है। बस कई फिरव का है। एक है विस्थामी ताकत । जिस इस्थान की विस्सानी ताकत ठीक है, वह इस्थान वीमारियों से बचता है। विकक्षी विस्सानी ताकत ठीक नहीं है वह बार बार बोगार होगा।

दसरी है भारिमक शक्ति भीर ती करी है सामाजिक ताकत । ऋषि दवामन्द जी ने कहा वा कि मार्यसमाज का मुक्य उद्देश्य ससार के प्राणिमात का उपकार करना है। ऐ भार्थों <sup>।</sup> इस शत को जान लो कि ससार का उपकार करना तुम्हारा प्रदेश्य है। कितनाबोक प्रार्वो के कन्थ। पर रख बिया है। इससे ऊँचा कोई उद्देश्य, इन्सान नहीं बना सकता। कोई अपने मूल्क की भनाई करेगा, कोई मन्त्य वाति का। पर ससार का उपकार करना धार्यों का मुख्य उद्देश्य बताया । इस उद्देश्य मे हम काम-बाब तब होगे जब पहले हम अपनी खारी-रिक उल्लेति कर लें। फिर घरिनक उन्नति करो। पीछे से सामाजिक उन्नति करना। कीन पुरुष व समः त ससार का उपकार करन में समर्थ होगा। वहीं पुरुष भौर समाज जा बानी जिस्मानी ताकत को पैदा करेगा। जिसकी जिस्मानी ताकत ठीक होनी, उसकी मास्मिक मदस्या ठीक होगी । तीसरे बारियक बल भीर जिल्लामी ताकत मिलकर उससे जो समाज वनेवा, बही समार वा काम करेगा। जो स्मयस मे ही सहते हैं वे वया समार का नाकार करेंगे, इसलिए इन तकती की हमें सग-टिस करना चाहिये।

(पृष्ठ १ से बाये

कोई मनुष्य मरे नहीं तो उनके दुल भी नहीं दूर हो सकते।'

यमराज वहें प्रकल्म हुए। उन्होंने निकड़ेता से कहा -- तुम युक्त से तीन वर शाबो।' निवनेता ने कहा येरे पिता मेरे से प्रसन्त हो बाएँ। यसराज ने कहा, ठीक है ऐसा हो होगा।

पिर उसने यहा क्या करके सुके स्वयं प्राप्त का सार्व बना दीजिए। यह विद्याभी उतका देवी। स्वयं बाद निष-वेता ने कहा मुके शाला के स्वयंप के वे दे वे बतकारिये। सरन के बाद समुख्य का बया होना है?

यह लु-कर यमराव को बडा धारवर्ष हुया। उन्होंने कोई हुसरा वरदान मागन को बात वहीं। नविकेता न कहा, सब कुख नस्ट हो बाने वाला है। साथ मुक्ते कुख करके बड़ी बताइये। ममराव ने सबे सबो-मन दिये। एक, हाथी घोड़े, बाय-बसीये, महन्द, बास, बासी, रामी, राज्य मांबी पर

निषकेता मो यह सुनकर वडी प्रस-लागा हुई। उसने सासारिक सुक्ती के रवाम में भ्रारमा की उल्लेति की ही घच्छा समक्ता। यक्षाज ने उसे घारमा करकरूर कुली हो नया। रम भी ऐसे जिज्ञासु वर्ने स्वीर ससार में भ्रापने की स्वस्य क्यांसें।

# क्या आर्यसमाज यह वर्ष युवा वर्ष के रूप में ले सकेगा ?

ग्रायंवीर दल-मार्यसमाज का भविष्य।

(उत्तमचन्द्र शरर)

मार्यममाच बालबहाचारी दयानन्द की बनाई सस्या है जिसका सक्ष्य ऋषि राज ने ससार की शारीरिक मार्तिमक तथा सामाजिक उन्नति लिखा है। ऋषि ने स्वयं भीवनं भर इस लक्ष्यं की पति क चित्र सतन सचय किया धार्मिक क्षेत्र म पासप्ड का सण्डन कर बदोक्त धम का प्रतिगदन विया। सामाजिक क्षत्र मे पिछडी तथा प्रसहाय जाति यो तथा वर्गो का सरलण किया शारीरिक उन्नति के फिए बहा<del>व</del>य पातन का उपदेश दिया ऋषि केस्वर्गतास के पदवान द्वायसमाज ने इस काय को सवाशक्ति सम्यन्न किया। द्याज का भारत शार्यसमाज का ऋणी है। देश की सामाजिक व्यक्ति रतया राष्ट्रीय ~न्नति के लिए जो प्र**यास धार्यों** ने किया बह जायद किसी धन्य सस्या ने किया हो। द्यार्थीको इस पुनीत कार्यमे नानाप्रकार की बायत्तियों से जुम्मना पड़ा कई महा-मुख्यो का बलिदान भी देना पडा परन्तु बिलानी बीर सदाधागे ही बढते रहे। यह भी एक सत्य है कि बायों के इस सर्न-तोमुखी उन्नति के कार्यक्रम को कुछ श्रीमाधों में बाध कर रख देना स्वय ऋषि के मन्तव्यो को पूरान सममना ही है। शदि हो या गोरक्षा, वेदप्रचार हो अथवा यालड लण्डन वलिनोद्धार हो सबवा विदेशी सस्कृति का विरोध यह सारा धार्यसमात्र का ही कार्यक्षेत्र है, उस एक क्षीमा में बौधना शायद ग्रायसमाज के साथ धन्याय होना ।

धार्यसमाय तो समय की धारस्य-कता है, प्रधी पार्य - हुत तेथ है प व तवा अतो के धारम्य कुछ कम नही हुय, 'सबड कोते पर है। बात पात की बब रे क्य बदस कर सुबंद हो रही है, कुढि क सुद-संन कक को चमाने के लिए कई खडा-मन्द धोर लेक्साम चाहिये, धामानिक कुचीतियो ने धायजाति को धत्यहीन बना विया है राष्ट्र चरित्रवान देखनतो की अशीक्षा मे है, प्रत धार्यसम न का मिधन ती दूर करना तेथ है समे कोई सम्बेह नहीं, कि यह सब कुछ वेस सम्मत मार्य पर चसकर ही सम्मव है।

प्रध्न होता है ऐसे उपयोगी समाब का को मानवता का उपावक है राष्ट्र की हर प्रकार की उन्नित का बानिब है, ऐसे सगटन का भविष्य की सगवा है को क्यां पहले कम की, सब धरिक है और पहांतक केवा नवा है (समीय) के नेहरे

#### भी उत्तरे हुए हैं'।

भावसमाज म युवक कम भा रहे है द्यत अविष्य धूमिल सा है। परन्तु यदि युवको को ग्रायसमाज मे लाने का सफल प्रयास किया जावे तो धाना का प्रकाश निराशाके तसको दूर कर सकता है। मेरी इस विषय में सावैदेशिक सभाक कणधारों से प्राथना है कि यदि वे स्वी कार करेतो यह बर्ज ग्रायंसमाज मेमी युवावर्षं के रूप में मनाया जावे। राष्ट्र तो युवाशक्ति को झनुशासन का पाठ पढा कर गध्दीय स्वाभी के लिए तैयार कर रहा है बार्यसमाज भी बार्यजाति के पहरूको को धनुशासित और सगठित करे। उसके लिए ध येंव र दल से उपयोगी सगटन को कयें का माध्यम बना दिया जावे। प्रत्यक समाज ने वय भर की शाय का चतुर्घाश युवाशवित के सगठन पर व्यय हो प्रत्येक समाज में ग्रायवीर दल तथा बार्यक्रमार सभा की शासाएँ स्थापित की काएँ समाज के ग्राधिकारियों में भी श्रमुखा-सित तथा कर्मठ युव भो को स्थान दिया आवे । धर्मानियान के समान वह वर्ष युवाभियान के रूप ए परी श'क्त से चलायाजावे यदियुत्राशक्ति का हम वर्ष भरमे कुछ भी सगठन कर पाये तो यह एक उपनिध्य हो होगी। 'कुछ सार कम तो होंगे, गुजरेंगे हम जहाँ स । बायवीर दल बार्यसमात्र क अभिव्य है। इस सस्य को स्वीकार कर लेना चाहिये कि जो कार्यएक युवक कर सकता है वह बुढ़ो से सम्भव नहीं भीर यह भी सस्य है कि जो भनुग्व बुजुर्गों के पास है वह नव शिक्षित युश क गम नहीं। युवक बडी का बाशीर्वाद बाप्त करे, वड बपना स्वान युवको को देने मंत्रसन्नता धनुभव करें 'वरस्पर भावयन्त वाली बात वन आये शो निराधा के बादश खट सकते है। धन्त मे एक शा**वश्यक शा**त यह कि सार्य-देशिक सभाके सगठन से जुदा नोई भी व्यक्ति गत अवना समूहगत सनठर पार्यो में विरोध तो उत्पन्न कर सकता है सग टन को बढ़ावा नहीं दे सकता ग्रीर सार्व-देशिक की धोर से युवाों का एक ही सगटन है -- प्रायंवीर दस ।



# त्रोश्म ध्वज ले जाग उठना धर्म है

भैग्वदत्त शुक्ल

महाराजा मग्रसेन विद्यालय, पो० तिहुनिया २:२१०६ जि० सीरी, (उ० प्र०)

वास ऋषि का प्रिय सहजे, स्रोत्मुख्यक ले जाग उठना धर्म है!

राजनीतिक करमयों से
वित्रक के सक राष्ट्र अरते जा रहे।
वृद्धता प्रिय जीव चारो हो।
वृद्धता प्रिय जीव चारो हो।
वृद्ध-उपस्थित चरते जा रहे,
स्थागियों को तोड मोगी
पामरी के दल उमरते जा रहे,
समन्वन होते हुए
विश्व मुक्क तर नारि मरते जा रहे,

बक बये सचार साधन बी गये स्वर वन निरयंक स्थान में स्थान कुछ देता नहीं मानब हुचा इतना कुटिन बेशमें हैं। बोह्म इतक से खान उरना धर्म हैं।

क्या हुमा, यदि निक्त न पायी तोल प्रिय निकारन की सननाहर्यों क्या हुया यदि कत न पायी हुर्य पनी साथ की शहनाहमा क्या हुमा यदि कत न पायी लक्ष्य के उल्लाह की समराहमा नया हुमा यदि क्या न पायी मुक्त भरे हतिहाल की पहनाहमा,

वैसं-समं उर में भरे प्रिय त्थाव के सकेत सारे मान कर दिश्वमित वड सशयों का दूर करना ही प्रथम युग-कर्म है। स्रोहम् व्यव के जाग उठना यम है।

पढ खुवाधों के स्वरों को,
तुब धयुव के बाग सग पर बढ वती,
ताम उराम के 'स्वयूप्त'
के महत्र प्रमुख पित पर वढ वती,
सह प्रमुख पत्र प्रमुख प्रमुख पत्र प्रमुख,
तिम प्रमुख पीतिक प्रमुख प्रमुख पत्र प्रमुख,
ताब प्रमुख की पीठिका प्रमुख वती,
से तभी विद्याल-पानन मुद्र वती,

बाह्यासो-स्वारत्यको का ले विभव सब उपनिषद पहिचान कर वर्षनो का खौच पाना, स्मृति नियोबित बुद्धिवादी द्वार वर्ष है । स्रोहमू व्यक्त के जाग उठना वर्ष है ॥

कर निष्या कुण्यायों के मयावह से हरी प्रतिवार तुम कियों के वीच उनकी पुन-मतीय का करी उडार तुम उपरते प्राक्षामको का एस-स्न से जम करो प्रतिकार तुम लाम्य की तस्मी क्षोंनी व्यावहारिक हिंद करो तीमार तुम,

बाक्यमो की मजुसीमा बेसमी पुरुषार्थ के नकता घर ग्रम्त करता कटुवि⊀ल्यो का सबीमासटा पाला सर्महै। बो|३ मुख्यक लेबाग च्ठना धर्महै।।

# त्रार्य प्रतिनिधि समा, दक्षिण त्रफ्रीका द्वारा विश्व त्रार्य सम्मेलन

प्रापको यह जानकर प्रसन्तर। होगों कि उपरोक्त सभा सारी सारे १४, १६, १६, १६, १६-५ को ध्राने हरएक सहो-सब धौर विश्व सार्थ सन्मेशन का ध्रायोजन कर रही है। जिसके लिए सार्वेदीयक पानं प्रतिनिधि समा नई हित्सी को अनुमति मिल चुकी है। हम पागा करत है कि भारत से धौर धन्य देशों से ध्रायक से ध्रायिक स्थायित यहा चुचे कर इस सक्य बनाये। इसके लिए निम्नतिस्तित सैवारियों इच्छुक यात्री ध्रामी से कर से।

- १ धपना पासपोट बनवा लेवे। उसमे प्रवास के देशों में साउथ ध्रफीका का नाम ध्रवस्य विज्ञाता लेवे। वेसे सामान्य करना साउब ध्रफीका के लिए भारत सरका ध्रमुमित नहीं देनी हैं। पासपोट का सम्बन्ध में ध्रापको स्वामीय ट्रेक्स एकेस्ट मां लेवेय पासपोट कार्यालय ध्रापको साप-देशन दे सलेवे। प्राप हमें भी लिखें जिससे यहाँ की वीसा प्राप्त भागां-दशन दे सलेवे। प्राप हमें भी लिखें जिससे यहाँ की वीसा प्राप्त भागां-ध्रम प्राप्त में प्राप्त में भागां-दशन हो सलेवे।
- २ भारत की प्रान्तीय ग्रायं प्रतिनिधि समाएँ सार्वदेशिक समा से सम्पर्क स्वापित करे। सम्भव है उन्हें यात्रियों का कोटा अधिक न मिले, तो ग्राप स्वतन्त्र प्रयत्न करें।
- इ. झम्म आई बहुनि भी स्वत-त्र रूप से पास्तपोर्ट और यहा के प्रवेश पाने की सनु-मति के लिए प्रयत्न करे;
- ४ धपने मार्प व्यय और प्रवास क जिए धावस्यक बन राशि इकट्ठी करें भीर एक्सचेज के नियमों का समझ नव। त्वार्ट बात्राक जिल्ह 'वापसी टिकट' बनवाना धावस्यक है। निकों से इरवन का एक तरफ का किरावा लगम ग १६००। त्यय का दक्कित का बन्दन वा किरावा लगभग १७,५००। वाये होगा। निर्वाल किरावा खनन हुंबल एकेण से माल्य कर नें।
- इसारी राय यह है कि प्राने वाने प्रतिनिधितक। प्रवासी वन्तु भारीशक होकर करकन पहुने। लीन समय 'नुसाका तथा नेरीशी होन हुए वायस भारत प्रानकन हैं यदि वे गहें। प्र-यथा मारीशस होकर ही वायस सा सकते हैं।
- ६ प्रवासी भाई बहित यदि व चाह तो, होत्ल से उहर सकत हैं। जिसका किराया स्वयक्त १२ ५० क्रिनेष्कत बालद क्रित क्रांसित क्रित होता। वेश्वे खभा स्था-नीय ब्राय क्षत्राचालय से भ उहरने की व्यवस्था कर रही है। विश्वका किराया सात्र ५ क्षेत्रेरिकत डालद श्रिपित होता।
- ध्राप पाह तो दरवन मे तीन मप्ताह तक ठहर सकत हैं। वैसे सम्मेखन का काय ४ ५ दिन मे समाप्त हा जाएगा।
- द्र यदि धान मन्मेलन ने कार्यक्रम मंसनीत नृत्य ध्रयवा घिमनय के कार्यक्रम केने में विचरतने हो तो इसकी मूचना हुने सिडम्बर १८०५ से पूज ध्रयस्य भेद दें विद्यसे घ्राप को उन् प्रोधामों से शामिल कश्न पर विचार किया आ सके।
- ह बीक्षा के कार्य की कार्या तार्वदेखिक बायें प्रतिनिधि सभा देहनी से प्राप्त की जा सकती है। बीता पार्य के ताय पासपोट क पहले बार पृष्टा की कोटो स्टेट कार्यी जिससे राखपोट नम्बर व्यक्ति की पृह्वान, साउच बाकीका से प्रवेश करते की प्रमुमति बार्यि हो भेजना बाबस्यक है। पासपोट भजने की बाबस्यकता नहीं है। हर व्यक्ति के दो पोटोश्वाफ होने बाहिए जिससे पीखे उसके हस्ताजर स्पष्ट बारों में (समेबी में पूरा नाम ब बन्म तानक तिस्ती हो)।
- १० ट्रैवल एकेंग्ट मे बाव करके यली भीवर तबा कोसरा के टिको का सर्टिफिकेट फार्म के साथ भेजे जावे।
- १२ पासपोर्ट में प्रवास के देशों में 'सावय संप्रीका प्रकेश पर निपम, तिसा पहुंचा है। इसको पद्र करवाना, प्रावेदक के सिए वक्तरी है। मारत सरकार से बतिला प्राप्तीका में मेशे को सद्भार्तित निक्तने म प्राप्त कुछ वित्तम्ब होता है पत्र हमारा सुमाव है कि बाप पपन पासपोर्ट के पहुंत चार पुष्टों भी कोटो काणी एव बीझा काम पहुंचे ही मरकर हमें भेज वें। बतिला स्प्रीक्षी सरकार बीसा फार्स पर सहु मानकर सनुमति दे देती है कि बार पुष्टचन के समय तक भारत सरकार की सम्माति पासपोर पर मानकर सनुमति दे देती है कि स्प्राप्त पहुंचन के समय तक भारत सरकार की सम्माति पासपोर पर मान जायां।
- १२ बरवन मे विसम्बर मास म हल्की गरमी पबती है। बहाइस समय मध्य बोध्य ऋतुका मौसम होता है। धात पहनने के लिए हस्के कपडो की ही धावश्यकता होती है।
- १३ इस सम्बन्ध मे प्रथिक जानकारी प्राप्त करने और मार्ग दखन के लिए हमसे भी जीझ पत्र व्यवहार गुरू कर दे।

भी एस॰ रामभरोसे, प्रवान — बार्यप्रतिनिधि सभा साडव अफ्रीका ३५ कास स्टीट डरवन (साजव बक्रीकर) प० नरवेव वेदासकार समापति, वेद मिकेतन

#### वन हमारे अस्तिस्व के लिए आवश्यक

प्रायंत्तन्तेल के ७ जुलाई, १६८५ के प्रक में ''मीसम पर वर्तों का प्रकोप'' शोषंक से जिलित सम्पादकीय के व्यक्त विचार महत्त्वपूर्ण तब्ध्यूर्ण एवं प्रेरणा-दायक रहे।

निस्स-देह वर्षा एव प्रावादी की दिव्ह से बनो को बत्यधिक उपयोगिता है । यही कारता है कि हमारे देश से वनों का महत्त्व श्रति ब्राचीनकाल से रहा है। वन हुमारी सस्कृति के महत्त्वपूर्ण ग्रग रहे। ब्दा-वस्था मे बनो मे जाकर शानि प्राप्त करने तथा भगवान् के भजन करने की एक गौरवशाली एव सम्मानपूरा परम्परा रही । हमारे ऋषियो एव मुनियो के ब्राध्यम इन्ही बनो में स्थित थे। सदैव बुक्षो का लगाना एक पुण्य कार्यसमभा जाता रहा है। इसी से हमारे देश में वर्षा ठीक समय पर होती रही, देश सदैव बन-वान्य से परिपूर्ण रहा, बनो मे लगाये गये ब्राम जामुन महस्रातवावेर ब्रादि के वृक्षाहमे उचित समय पर फ्ला देकर हमारी लाद्य समन्या को सुलक्षाने वे सहायक रहे। नीम एव चन्दन ग्रादि के वृक्ष हमारे स्वास्थ्य को ठोक रवस तथा धने कपड एवं वन-पनियाँ श्रीषिष्यों के निर्माण मे महत्त्वपूरण भूमिकाएँ श्रदा करती रही।

यही नहीं, उपरोक्त वन हमारे ऋषियो, मुनियो योगियो एव चिन्तको के जिए भावास, भ्यान तथा ज्ञानकी प्राप्ति के मुख्य स्थल रह। कीन नहीं वानता है कि ऋषियों की अन्तरात्मा में वेदो काप्रकाशाइ-ही वनो में हुमा था। भगवान् राम ने भागने चौदह वच इन्ही बनो में बिताये थे । पाँडवो ने भ्रपने राज्य त्यागके १३ वर्ष इन्ही वनो में विसाये। भगवान कृष्णा की मृत्यु वन मे एक वृक्ष के नीचे चितन करते समय एक बहुलिए के तीर से हुई थी। राजकुमार खिदार्थ बोषिगया मे एक वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त कर धगवान् बुद्ध वने वै। हमारे देश मे गुहस्थभात्रम समाप्त कर वानप्रस्थ बन-कर बनो में ही जीवन विताने की पर-स्परा वी। यही कारण वाकि वहावृक्षा-रोपण, बाग लगवाना शया बनो का विस्तार पुण्य कामं समन्ता जाता रहा है। इसी से इस देख के नीर्थ, गुप्त तथा राज-पूत बादि सभी सम्बाट्व राजे वृक्षारी-पण को पुष्प कार्यसम्बद्ध जन-कल्याण की बच्टि से उसमें विशेष रुचि सेते थे। उपरोक्त बच्छान्त इस बात के स्पष्ट सकेत हैं कि सम्यता के उदय से लेकर अग्रेजो के बावमन के पूर्व तक हमारे देश में दनों एव बन्यजीवन का विशेष नहस्य रहा। धविकाधिक वृक्षों के संगाने की परस्परा रही। जिस प्रकार कि ये दन हमे जवाने. इमारतो के निर्वाम, बैसगाडी, रव तथा रहस्वी के बिए बावस्थक बन्य वस्तुक्षों के बनाने के जिए प्रभूर बाजा में सकती देते उपरेवर हिवित के विपरीत बनी की उपराजित की सन्द्र शांधीन सम्प्रदास्त्रीं के लिए गता कि दिहुं हुया | तिक्र प्रकार कि बहुं बनी के सबार वे ब उपलाए की आर - प्रुक्ति ट्यान नहीं दिया नया मिल मेमोनोटीम्बार तथा रजवापरात की सन्य सम्प्रताए विनस्ट होकर इति सा की सामग्री नहां हुने

दुल का निषय है कि सम्रेजी साम्राज्य का स्थ पना क बाद हुमारे देश में भी बनो के विनाश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सई। दसका कारण धरोजा दारा बनाई गई रेल लाइनें सबके कारमाने दथा बसाय गय नय नय नयर भादि थे जिनका निमाण बनो के विनाश के बाद ही सम्भव हो सका। नि सन्दह उपराक्त काय जन्-हित की दृष्ट म भावश्यक य परन्त ऐसा करत समय यदि बग्नेज शासको ने वृक्षा-रोपण के कार्यक्रम की बढाबा दिया होता तो बक्षो एव बनो के विनाश की वर्तमान स्थिति कदापि न होती । दुख का विषय है कि स्वाभीनता के बाद हमारी राष्ट्राय सरकार ने भी इस बोर समुचित ध्यान नहीं दिया। जिसके पसस्वरूप वृक्षी की सख्या नवा बनो का क्षेत्रफल घटता गया।

प्रसमनता का नियम है कि बैशानिक में ने वन सनवी रिपोर्टी तथा मुजरसास बहुपुणा ऐसे महानुनाको द्वारा जाने समे पिपको प्रान्तोसनो के एकस्वकप साकार का प्यान इस धोर विशेष क्या से प्राक्त-रित हुमा तथा वह इस विशा से विशेष समित्र हुमा तथा वह इस विशा से विशेष समित्र वहुँ । प्रतिवर्ध मनाये काने वन-मेहोस्सव, वृशो के कटने पर प्रतिवक्ष तथा बुकारोपण पर विशेष कोर इसके प्रमास है। सावस्वक्रता है कि उस सम्बन्ध के निम्म सुक्रायों की घोर ब्यान दिया जाव-

(१) प्रतिवर्षं वनमहोत्सव मनाकर प्रधिकाधिक बुक्षों के सवाने की प्रवृत्ति को बढाबा दिया जाये। यह कार्य केवल सरकारी स्तर पर न कर अधिकाधिक बनता को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्सा-हित किया जायः (२) ए० वृक्ष काटने वाले के लिए उसी बीब के इस वृक्ष सनाने का कानून बनाकर उसका पालन कठोरता के साथ कराया जाय। पीधी की अवाने वाले ही बुक्षों के मालिक पजीकृत किये वार्ये । उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी उन्हीं पर हो। (३) सरकार हारा सबको तथा रेलवे लाइनों के किनारे सकि-काषिक बुख सगवाये बाये तथा उनकी रक्षा के विशेष उपाय किये जाये। (४) इंबन निमित्त सकडी के प्रयोग को सीमित करने के निए सरकार शीझातिसीझ सौर ऊर्वाके विकास की धोर विशेष ध्यान दे। (४) दूरदशन तथा भ्राकाशवासी द्वारा वृक्षारोपण तथा वृक्षों के सङ्ख्य के सबय में विशेष कार्यक्रम एव बार्ताएँ प्रसारित की जायें।

सरकार को चाहिए कि वह उपरोक्त सुकाबो की बोर क्यान हैं।

सक्तवन्त्र सध्य विकारस विकास्त्रकार

#### (पुष्ठ ४ से बागे)

इस प्रकार जनवरी सन् ११५० से जून सन् ११५४ तक २६ करोड़, २० लाल कावा पारत में निवेशों से सावा। इस क्लाराबि से वर्तपरिवर्तन वेश में प्रतेल मानों से बड़े वेथ से होने ज्या। धारण्यंत्रक कर करनता को वेसकर नत्र विवेशी व्यवस्था नहां भा बचों में २६ करोड़ २७ लाल की बहा स्थाचार पत्रों से सरकारी से जों से बताने गये स्थों के धनुसार मत २॥ वर्षों में ३४ करोड़ हो गई। १९७६-७० में १४ करोड़ ४० लाल ३३ हवार १५ २० विवेधों से मित्रनिर्मितों को भारत हुए।

सम्ब्री राज्य के १३० वर्षों में इतनी तील वित से ईसाइयल नहीं वडी भी जितनी नेहरू राज्य की वर्षेनिरपेक्षता की नीति के कारण स्वतन्त्रता के इन १७ वर्षों ने वडी है।

पुराने काग्रेसी नेता पवान के ब्रू० पू० राज्यपाल माननीय श्री वाडियन महोदल ने १ फरवरी ११५१ को जागवरी में प्रेल वायटेरियन वर्ष की स्वर्ण खयमती के प्रवत्तर पर विदेशी रावरियों को समय बान देंते हुए कहा वा कि हैशाई मिनारियों ने जितना काम स्वतन्त्रता के डन १० वर्षों में किया है उतना काम पराचीन सारत के ४० वर्षों में भी नहीं किया था।

#### द्वविड कडगम तथा बौद्धमत

द्रविक करवाम के नेना दक्षिए। में बाह्मए। विरोधी योजना की झाड में खुसकर हिन्दुल का खर्नेनाण कर रहें हैं। मधनान राम के विश्व जलाये जा रहें हैं। इसके सितिस्त जतर भारत के हिप्जनों की समाह थी जा रही है कि वे निन्दु धमें ख़ीड़कर बौद्ध कन जायें। घमी सभी कम्मपुर से राज्य की रिप्तिक पार्टी की शासा में भाषण वेते हुए द्रविक नेता औं 50 वी० राजस्वामी नायकर ने कहा कि आपको साहण देवनामों ने कुम्मारा प्राप्त करता होगा अत्यवा साथ इस निन्म पद से ऊपर उठकर देवी गद प्राप्त न कर सकेंगे। यत विश्वश्री जातियों की हिन्दु भजनक खोड़कर बौद्यनद प्रभाव नेना चाहिए।

स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् सरकारी स्वजाने ने करी हो रुपये स्वव करके बौद्ध वर्म का प्रचार किया जा रहा है। इन १० वर्षों में सरकारी तथा वीर मरकारी सरवाधों से विननन माहित्य कात्रता किया गया, उनमे साथे दिख् मानवाधों पर भारी चौटे की गई हैं। 'ममवान दुव' मानक पृक्त के से शाहित्य सकादसी हारा प्रकाशित की गई हैं कता की सहितक मानवाधों को बदसकर मासाहार का प्रचार करने के निमित्त लिखा गया है। मगवान दुव, महाचीर स्वामी मास खारी वेतया प्राचीनकाल के बाह्यता गोमात मन्नी थे। इस प्रकार का साहित्य बहुत वही चनरानि व्यय करके प्रकाणिन क्रिया जा दहा है। सी जुन के० एम० मुक्ती हारा निस्तत बैटिक एवं वचा सम्य पुस्तक इसी मनोहति का एक नमून। है।

#### कम्युनिस्ट पार्टी

हिन्दू जाति की सल्या की भारी अति पहुचाने वाली उपर्युवन सन्धाओ का चौडा चौडा उल्लेख हम ने ऊपर की पनितयों में करने का यत्न किया है। किल्तुरोटी भौर भर्य के नाम पर एक भौर वहत वडी जॉक पुराने आरतीय द्मार्थ हिन्दू विचारों में लगी हुई है भीर बडी तीत गति से नवयुवको में परिवर्तन करके कार्न मार्कतया लेनिन भीर स्टालिन के रूसी विचारी का प्रचार कर भारतीय परम्पराको सोलला कर गही है उसका नाम है - कम्यूनिस्ट पार्टी। वैका के कारकानी में हडताले करवाना, मिल मालिक बीर मजदूरों में ऋगडे पैटर करना 'दुनिया के सबदूरी एक ही जाझी' का नारा लगवाकर काफी यूनियन, ठेला यूनियन, अमजीवी सम नाई युनियन, चोबी यूनियन ग्रादि धनेक प्रकार की युनियने बनाकर भीर चलते काम तथा लगी नौकरियो को हटवाकर हर मामले में हडताल करवाकर स्वय चौचरी वन जाना इस पार्टी के नेतामी का प्रचान काम है। जो स्रोग इस पार्टी के चक्कर में पड जाते हैं उनका वर्ग कर्म **संस्कृति, स**म्यता ग्रादि सन काफूर हो जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भारतीय सम्मता, सस्कृति तथा रीति रिवाजी एव पूर्वजों मे विश्वास नही रकते । होसी, दीपावसी वशहरा रामनवमी कृष्ण जन्माष्टमी मादि त्योहार सनाना ठीक नहीं समझते। हा, यदि कोई त्यौहार मनाना हो तो मई दिवस ग्रयवा नेनिन, स्टासिन मादि रूसी नेनाग्रो का जम दिवन बडी भूममान स सनाया जाता है। बलूस निकाल जाते हैं, जलने किये जान है। इस पार्टी का **बहेर्य है-धन्त जाना भारत का भीर गीत** गा क्स के। ईमाई पिशनरियो की तरह यह पार्टी ती आर्य हिन्दू विवारी तथा परम्परा नी नच्छ अन्ड करके क्सी साम्यवाद के प्रसार में पूरी शक्ति सना रही है। कोई नहीं जानता इस बार्टी के नेता राजनीतिक यक्ति हुविया नेने पर नया रव बदलें ।

हिन्दू जाति के जिए यह पार्टी भी एक भारी खतरा है।

उत्पर की पिक्तवों में झाने वाली अथकर विपत्तियों की झोर सूत्ररूप से कुछ सकेत किए गए हैं।

धार्यं वर्षं तथा बारतीयता-विशोधी प्रमरीका इस्तैण्ड धार्षि यूरोपीय वैचाँ से वर्षायत ईवाई मिशनरी धाक्रमहास्वक योजना, नाकिन्तान से सहायता प्राप्त मुस्सिम तवसीय तथा क्यी द्यारी पर नावने वाली कम्मुनिस्ट पार्टी का क्यांनैका स्वन्नतीयत्वा इन सब का हम क्या है? धार्यं जाति धौर भारतीयता कैसे सुरक्षित हो सक्ती है?

#### भयानक सर्वनाश की समस्या का समाधान

षाज से ८० वर्ष पूर्व महरिव दय नन्द सरस्वती ने सब प्रपता प्रचार कार्य सारम्भ किया धीर सार्यसमाज की स्थापना नर दी वी नव कृष्क जीगो ने महरिव स्थानन्द से प्रका किया कि क्ष साथ भी एक नवे सन्द की स्थापना कर रहे हैं? महित ने उड सारम्भाव ने उत्तर दिया कि— बहुता से नेकर जैमिनी सुनि पर्यन्त जिस पुनील वैन्नि वर्ष का हुम रे पूर्व र पानने चने पाये हैं उसी के सवार्य मजक्य के दिल्लान सीर रूपण के सिए सार्यसमाज की स्थापना की जा रही है। कोई तथा यत अचनित करने का मेरा ०-गय नही है जैन्कि समाजकारों ऋषि मुनियों की परस्पार सुरस्तित रहे पहिंदाकि उच्छा है।

महर्षि की उपयुक्त ग्राकाला को पूर्ण करने के निमित्त ग्रग्नेकी राज्य की शुत्रश्रावा से बतने वाले वितेती लातियों में बडी वीरता के साथ ग्रार्थसमाज ने टक्कर ली। ईसाई मिणन का खुजा मुकाबल करने के लिए करोड़ो ज्यय खर्च करके समये देश में हजारों स्कल कालित गरुपुत धन वात्रय बनिता प्राथम द्योषधालय स्रोल दिय । खुले मैदान मे "गप्त्रार्थं करके ग्रार्थं विद्वानो ने पद-रियों के छक्के छड़ान्यि । प्रार्थसमाज को विश्वास ाकि प्रग्नेजों के चले जाने के बाद ईसाई पादरियों की स्तिविधिया स्वय ज्यान हो जायेगी। किन्तु भारत सरकार की सैक्यू पर नीति भीर भ्रमेरिका इ नैपर भावि की कुटनीतिया तव सामने बाई जब न्जारो गोरे पान्नी करोडो रुपय की सह यना से देश की पि इही जातियों को इसगित से ईमाई बनाने लगे। नावा प्रदेश में पादरियों की बन्धिया से लग्न सरकार परिजिन के बहा सरकार के प्रति प्रदय-जकारी विद्योद किया जा रहा है। इसके साथ ही हिन्द्यों की सत्या घटाकर किस प्रकार। विदेशी तत्त्वो को प्रोत्साहन मिल रहा है यह हम उर बता चुके है। एसी स्थिति में हिन्दू नाइत का परमधन है कि इस पवित्र कय से प्रार्थनमाज को योगदान दें। प्रत्येक प्राम भीर करने में भार्यसमाज स्थानित हो । समाजकपी पुरिस चौकी की स्थापना के पञ्चात कोई विदेशी मिशनरी भारतीय परस्परा की कोरी नहीं कर सक्ता। इसलिए आयसमाजो की स्थाना सबंद होनी चाहिए।

प्रत्य क हिन्दू प्रपनी बायका कम से कथ एक कायान्स पवित्र कार्य के जिलाग्रायंगमात्र को न्यन दे जिसने विदंगी बन गा मुकादना य्याजा

गव गाव मं संस्कृत ग्रीर हिन्दी की राग्णालामी की स्थापना की आराध जिनमें प्रारम्भिक कक्षामी में बालको की मार्मिक शिक्षा का प्रश्नम हो।

देगम ७० लाल नामघारी साधु है यदि ज्लोसे से कुछ। हकार भी इस पवित्र काय से लगने का प्रयत्न करेती गाष्ट्र एवं धर्मका झानेवाली अयक्र आयाति संवर्णमा बालकता है।

देश कं विभिन्त प्रान्ती । एमंपडे निश्चे विद्यार्थियों को ट्रॉन्स देकर प्रयनं अपने क्षेत्री से कार्यों पर नियुक्त करने की योजना पर प्रवित्यस्य शाखरण होता धारवाबस्यक है।

बेर की समस्य अपनेमामाजिक सनावनवर्मी जैन एव हिन्दू सत्याओं की बोर से सामूहिक मान्त्रीनन प्राप्तम कर देना चाहिए, विश्वके द्वार सरकार से सम्पूर्वक मान की जान कि निज्यों पार्थारियों की प्रराष्ट्रीय प्रश्नुतियों को रोकने के तिए उन्हें भागत मानिकत्व निक सन्द स्थारियम करित होन बाले स्वाप्तक पहुसन्त्रों से गरीब प्रमा की रक्का करें।

पिछडी बातियों के निवास स्थानी पर जाकर उनकी पुगाना धार्मिक प्रवृक्तियों को बागुत करप दरियों की शतिविधियों से उन्हें सतक करना छोर उनमें वार्मिक विवारों का प्रमार करना प्रत्यन्त प्रावस्थक है।

हम जानते हैं कि इन महान कार्य के सस्यादन में चारत सरकार अपनी दक्तू नीति के कारण सायद कुछ न कर सने किन्तु महाचि दयानन्द का सार्य-खनाय मार्यवीरों के दल-वन्त को केकर इन महान् कार्य में जुट जाने के लिए सम्बन्ध है। दक कार्य के प्रकार के लिए देश के सेठ, शाहुकार, व्यातारी और साथारण बनता सभी को निलक्त सार्यक्षमां की सहायता करनी चाहिए। अन्य किसी संस्था का इस और ज्यान नार्यों।

# समाचार-सन्देश

# दिल्ली श्रार्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संग कार्यक्रम ४ श्रगस्त ११८४ रविवार

प्रतापनवर---प॰ बाशाराम प्रेमी। ब्रह्मोकनगर---प॰ देवराज वैदिक मिदा-नरी । प्रार्थपुरा-प॰ बलबीर शास्त्री । द्यानन्द विद्वार-प० जयभगवान भजन मण्डली । विवेक विहार-स्वामी जम-बीववरानन्द सरस्वती परिवाबक । किञ्चन वज-प॰ घोमप्रकाश शास्त्री । कासका जी-प॰ नत्रपास द्वाय । किंगज्वे कैम्प -बद्धावारी मनुदेव शास्त्री । गाधीनगर--प॰ माशानन्द भजनीक । गीवा कासीनी-बार्यवीर रणजीत रामा। गोविम्दपुरी--प० तुलसीराम आर्थ। गोविन्द भवन --प० धमरनाथ कान्त धार्योपदेशक । जनकपुरी बी-५--महारमा मुनी शकर। जनकपुरी सी ३ — डा॰ सुसदयाल भूटानी । टैगोर बार्डन-प० चुन्तीलास झाय। तिमार-पुर-प • सोमदेव शास्त्री । तिल हनगर -महास्मा रामकिशोर वैद्य । देवनगर-ए० रमेशचन्द्र बेदाचार्थ । न्यू मोतीनगर -प॰ बदप्रकाश शास्त्री । नारायण विहार-

व । रामवीर । प्रीतमपुरा-पः सस्पदेव स्नातक रेडियो कलाकार । पजाबी बाब-प० उदयक्षेष्ठ धर्माचार्य। पत्राची बाक एक्सटेन्सन ---डा॰ रघुनन्दन । वसई दारा-पूर-मा॰ मोहनमास गाथी। महुरौसी-स्वामी बज्ञानन्द सरस्वता । महावीरनगर--प० धमीचन्द्र मतवासा । मोडसबस्ता-महात्मा वेवेदाभिक्ष । मोतीवाग-बहा-चारा नरेन्द्र शास्त्री । राखात्रताप नगर--प॰ नमनलाल साथ। रथुवरपुरा---न॰ वेदब्बास बार्य । रमेशनगर-भोजमनत-शास्त्री। साजपत --प० वर्गवीर सास्त्री विद्यावाचस्पति । लड्ड्घाटी--श्रीमतो प्रकाशवतो शास्त्री । विनयनवर---श्राचार्यं क्यामलास जी। जीनगर-प० मनोहर साल ऋषि । ही बसास-प॰ हरिश्यन्त

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्रमिष्ठाता वेदप्रचार

### श्रार्यसमाज की गतिविधियां

प्रान्तीय ग्रार्थं महिला सभा दिल्लो का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

सहिलाधो का परिवार व राष्ट्र में सानित क्या एकता रखने में बड़ा योगदान रहा है। सौर भाव भी इस को ने उनको भूमिन। निमानी है। या न्य प्रधान मन्त्री भी रार्थ व गाभी न प्रान्तीय साथ महिला सभा के सिर- श्रण्यत से कहा उन्होंने नारतीय नस्पृति के प्रधानतम व साबार भूत मूर्यों का सुरक्षा को क्रियन-

#### प्रचार वाहन द्वारा प्रचार

वि०१ जुलाई दोनहर १०वे से २ बजे तक सेवाकेन्द्र कार्याक्षय मण्नी हाउस मे प्रचार रखागया प्रहाक इन्लार्जशी प॰ रमेशचन्द्र शर्माणी के निमत्रण पर सह प्रवार काम रतागया वा। जिसमे प॰ माशाराम प्रेमी, श्याम राचव प० चुनी-सास, प॰ जातीप्रसाद द्वारा सगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत हुन्ना । यह कार्यक्रम ज्ञित मन्दिर के प्रागण में सधन वृश्यों की खाया मे सम्पन्न हमा। स्वामी स्वस्थानन्द सर-स्वती वेद प्रचार प्रविष्ठाता र धाय-समाज भीर महर्षि दयानन्द सरस्वती 🕏 जीवन पर प्रकाश डाला भीर हास्य कवि-ताधी द्वारा मनीरणन किया। कायालय के सभी कमचारियों ने विशेष माग प्रकट की कि ग्रयले सुक्रवार को भी ग्रवस्य ग्रायें। श्री रमेशचन्द्र की शर्माने ५१) दान दिया भीर श्रीमती गुलाबदेवा ने १०) दान दिया हुवं उल्लास के साथ सभी ने भाव भीनी विदाई बेक्र स्थागत किया।

वारी जी महिलाधी को बताई और उनके कार्य की राजक के कम में महिलाधी की विम्मेदारी को बर्वाधिक महत्वपूर्ण बत-जाया। प्रात्तीय साथ महत्वपूर्ण बत-काया। प्रात्तीय साथ को बेद तथा वहां की राजान गांधी को बेद तथा मैंदिक साहित्य भी मेंट किया गया।

सवाददाता

### सत्यार्थप्रकारा की पराचाएँ

सानव जीवन, सद्युह्स्च व सहनाव-रिक बीर राष्ट्र निमास्त्र के कार्य के स्वस्थल उपयोगी, सहिंद स्वागन्य कृत पवित्र पत्रच ससावश्रकाश को चार प्रकार की परीकाएँ, ग्व वो स्वको से पुरे बारख देश में बार्य पुषक परिष्यु दिस्सी, (र्जि॰) हारा कराई वार्यी हैं, जिनसे लाको परि-वारों को साम पहुंचा है।

इन वर्ष ये परीकारों २२ वितस्वर को होगी। सह त्रव स्वत्तर्गस्त्रीय युवावर्ष है। सत व्हर्षि स्वानस्य के स्वन्तों को सावार करने हतु इस बार सम्बद्ध से स्रविक युवा बाल वृद्ध, नती-पुरुष इन परीसाओं में हैठ कर सपने क्लीव्य का पासन करें।

पूरी जानकारी के लिए परीक्षा सभी समनलाल एम० ए०/एच-६४, अशोक विहार फेज I, दिल्ली-५२ से सम्पर्क करें।

वमनसास (परीसा-अन्त्री)

### दिल्ली श्रार्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार कार्य

विस्थी तमा के प्राय अवनोपदेशक पर प्राशाराम प्रेमी स्थाम रायव द्वारा धार्यस्थान सराय रोहमा भी ज्ञानवद्यार्थ के निमलकुण पर २७ जुलाई को सास्थीनगर मे प्रवार रखा कवा विश्वके फ्लस्वरूप ११) समा को दान प्राप्त हुआ।

साप्ताहिक 'ग्रार्यसन्देश'

२५ जुनाई रिवचार को श्री होशिय-यार्रीबहु की द्वारा खर छोटूराम सरक इस्स्टीट्यूट एण्ड टॅकनोलीबी कफंकारा रा सिस्सी ११००१ में बेटप्रचार रता गया। जिसमे १०० प्राचाराम प्रेमी की चजन गण्डली का सावकाल ३ वजे से ३ वसे तक प्रवचारेच्या रहा। हुबारो श्रोतावणी ने प्रचार से संस् एउटावा और १०१) सवा के सिर दान प्राप्त हुछा।

स्त्रामी स्वक्पानन्य सरस्वती वेद प्रवार प्रविष्ठाता द्वारा २० जुलाई प्रात वन्त्र धार्य विद्यासय सूरव पर्यंत में यज्ञ के परवात् खात्राओं के मध्य में शिकाप्रद

# श्रमदान श्रौर सेवा का श्रादर्श रूप

२० बीनाई, दिस्सी मार्थ प्रतिनिधि त्रवा दिस्ती के महामन्त्री थी। वा० वर्ष-पान के बाबद पर त्रवा के बिकारी पूक-कार्यकर्तामों ने सवा कार्यावय की पूक-स्त्रवा एवं स्वच्छता के लिए अमसान एवं वेवा का भावसे जवाहरण प्रस्तुत किया।

इस समस्य पर महासन्त्री डा॰ वर्ष-पान, जी नेवतत सर्मा, जी राजेन्द्र दुर्गा, जी सुरेन्द्र हिन्दी, जी विश्वत बाद रस-बन्दा, जी बगावीम, जी राजनिकर, जी वर्षनीर सास्त्री प्रादि स्वविकारी एव काय कर्षामी न मान निवा।

इस समदान में विशेष बान यह थी हभा प्रविकारी फाड़ क्या प्रादि लेकर सम्बंधि धीर मिकाड भी स्वयःवा के सिए पूल में गन कार्य कर रह थे। दिना किसी मेवनाव के मिलजुक्कर देवा कार्य करने का यह जवाइरण, स्वाधनीय है।

#5(P#B---

ज्यवेश हुमा। २०) समाको दान प्राप्त

२८ जुलाई को गाँव श्रसावती में स्वामी बी द्वारा यक व उपवेश हुआ जिसमें कई व्यक्तियों को यहांपती कारण कराया और मझ-मास का सेवन बन्व कराया। सभी ने घटन यत निवाकि प्रमुख्य प्याप का न्यन नहीं करेंगे। साझ साम हुँ एक सिक्कु का नामकरण सरकार भी कराया। थया।

सलित मोहन नाम रखा गया। इस धावहर पर गाव के प्रतिष्ठिय व्यक्ति और महिलाएँ भारी सस्या में उपस्थित है। महाख्य भजनमान जो ने कार्यक्रम के परभाद मध्य निषेष का उपरेख दिया और सभा को ११ र० दान दिया। सभी महानुमायों ने मानयोगी दिवाई देते हुए सम्बद्धी द्वारा कार्यक्रम रखने की मान करी।

# श्रीमती नेमवती धर्मार्थ द्रस्ट ६९ ई कमलानगर दिल्ली-७ द्वारा प्रचलित त्रि-सूत्री स्विंगम योजना

१ देश भीर जाति छल्बान हेतु प्रचाराचे भपनी जीप बाहुन की नि।शुरूक सेवा प्रदान करना।

२ बैदिक सिधानरी निर्माश केन्द्र सबुरा में, युवक एव प्रीड जीवन दानी व्यक्तियों को नि शुक्क प्रश्वितित कराकर ससम्मान उपयुक्त नार्येम्पेन और समुचित दक्षिण की अयवस्था कराना।

३ बुढ साहित्य एव तथा भूमि साईफ नेषुरल सादि मासिक मृत्यवान पित्रकामों को उन व्यक्तियां व सत्सामों को, बामूस्य देने की दिवति से नहीं हो, उन्हें नि खुल्क सथवा सहा मृत्य पर प्राप्त कराना।

> सम्पर्क करे—स्यामसुन्दर आर्थ ६६ ई० कमलानगर, देहली ७

## पं॰ रघुनाथ प्रसाद पाउक की स्मृति में स्थिर-निधि

धार्यसभाव दीवानहांच की मह्यूची नमा ने भी पाठक भी को गोक श्रद्धांजलि दी वई। हाच ने बी पाठक ची की स्त्रूचि के एक म्यापी निष्क कोमने का प्रस्तान पाछ किया गया जिसके द्वारा उनकी जिब्बी हुई दुस्तके एव नेस्त्री धादि का प्रकारना विषय में भी किया जाता रंग प्रस्तान पारित्त होने पर निम्मितिक नका-पुनानों ने प्रयानी होर से कम देने का धारबाहन विषा है। धार्य जनता से निवेदन है ग्ला निष्कि को स्था-दिस्ता को हुँदु बाप अध्यक्ष से धाषक दान सार्वदेशिक सना कार्यालय दिस्सी को मेजने भी कार कों

| कृपाकर।   |       |
|---|-------|
| <b>१ दयानन्द सेवाश्रम सम की धोर से</b>                    | ५०००) |
| २ भी रामकोपास जी शासकाले प्रवान सार्व० समा                | 2000) |
| ३ श्रीसूर्यनारायसाकामा                                    | 2000) |
| ४ भी के <b>श्व</b> यचस्य गाठक                             | (000) |
| <ul> <li>श्रामैसमाव दीवानहास प्राप्त (वनराधि)</li> </ul>  | 2008) |
| ६ भी बहुाबत भी स्नातक                                     | २०१)  |
| <ul> <li>ी रावाकृष्ण वर्गा C/o का॰ स॰ रीवानहास</li> </ul> | २०१)  |
| E. जी सम्मेश क्यार C/o आ• स॰ दीवामहास                     | 102)  |

# श्रार्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ का ११वा श्रिविशन तथा वार्षिक निर्वाचन

धाय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का १९ वा वार्षिक प्रधिवेण्न २७ २८ जुलार्ट उपमात्री १ श्री जयनारायण प्ररुष विजनीर १६८५ को डी ०ए० बी० कानज ससनऊ मे हुया। साबदेशिक द्याय प्रतिनिधि समा के प्रधन लाला रामगोपाल जी शालकाले का पूर्ण निद्यन इस ध्रवसर पर रहा श्वमस्य उत्तर प्रदेश में घायसमाजी से १ ५०० के समभग प्रतिनिधि उपस्थित थे। भूतपूर्व ससद सदस्य प० शिवक्रार शास्त्री जीव्स सवसरपरपथारे भीर बाय जगत् के श्रष्ठ विद्वान् भी सम्मिनित

सावदश्विक सभा के प्रधान थी गाल इताले की ने इतने इस्जरनी भाषता ने ब्रदेश के या या समाजियों में नवीन प्रश्ला भीर जागति उत्पन की नया धर्मात रण के विरुद्ध सर्गति होकर काम करने की प्ररणाकी

#### वार्षिक निर्वाचन

१८८४ के लिए सबसम्मति र निम्न सिक्रित पर विकारियों का चयन किया

47477 प०इ राजजी मरङ उपप्रधान १ श्री देवी नस भाग कानपुर

२ श्री प्रमच चर्माह यरस

३ श्रीमती सतोय कपूर (एम०एस०सी०) मिर्जापुर ४ प० सच्चिमान माहकी दिल्ली

५ की धमाद्रसिंह

UBSE

श्री सममोहम तिवारा लखन अ

२ श्री देवपाल घाय मुजफ्फरनगर

३ श्री बाकेलाल दसल ननीताल ४ डा० विनय प्रत प गा सपुर

५ नीजित कुमार जलाली श्रसीवढ कोबाध्यक्ष श्री कृष्ण वसदेव महाना

सहायक कोपाध्य र श्चीवीरे प्राय

ग्रमर हा पुरतकालयाच्यास श्राविजयपास गरता

कानपुर उप पुस्तकालयाध्यान श्री सुरेड स्न तक मनमोहन निव री

म नी धा∘ प्र∙सभाउत्तरप्रदे⊺ लक्तन»

# श्री योमप्रकाश गुप्त का निधन

बायसमाज बहापुरी (वी ) दिस्त्री के प्रधान श्री घोमप्रकाश गुप्त का १८ जील ईको ग्राकमिक निघन हो गया। न्दिबत बामा के प्रति बायसमाज के सन्∓रो ने प्राथनाश्चरा⇒त्रलि ग्रपित को २६ जौलाई को उनकी स्मति मे यज तथा भोक समाधायोजित की जिसमे श्रो गुप्त के ब्रायसमाज ने किये सेवा कार्यों नी सराहता की गयी।

स की क्रिन्त्रसाल ग्राय



सावदेशिक बाय बीर दल समापन समारीह की कलकी मञ्चल्य दावें श्री सा० इन्नारायण श्री वासकिशन वरानी श्री सुबदेव श्र डा॰ वमपाल श्री बाल दिवाकर हस



शिविर मे प्रदलन करते हुए बाय बार



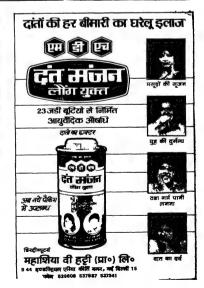
एम डो एव जिरुकाई पाऊडर वालों को सीकरी दर करता है तथा उर्देशकृतिक काल सर्गाचत व स्वरूप

तिकाकाई रीठा भावता हरड बहेडा चम्पन व अस्य तर्गाचल जडी बटियों से बनाया गया एम डी एवा विकासाई गऊडर एक अस्यन्त लाभकारी शाहतिक देव इसमे कोई रासायनिक पदाय नहीं है

एम दी एव शिक्षण्याई पाऊकर का आवा से ही नियमित प्रयोग की जिये

निमाता महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लिं॰ 9 44 क्**प्रहरिद्र्यस एरिया मीर्ति क्**न्यर

Revil 110015 कोर 539609 537987 537341



समीक्षा

महान शिक्षा शास्त्री महातमा हंसराज

धार्यम देश के १६-६ = ५ क प्रकार पुरुषक बध्वर थी मनी री जी द्वर "प-कोलापुरत कसर्ग पर्ने। पुरा के प्रकासन र चा प्रशाह स **मैं** शीच घर्ष देता है। मेरीत सदैद यह चह "ी "हिम " महपुरती प श्रिष्टिस प्रिक्त जन्मियों छये। --पुस्तक वे वियमे मनीया भी संबहत **सुन्दर** करो में बहुत हुछ लिखा है तथापि मैं भी कुछ निवदन करना चाहता हु। लेखक व प्रकाशक उचित समभी तो मेरे निवेदन पर विचार करके बगले सस्करण कासुबार कर ले।

पृ० ५६ पर लिखा है कि ऋषि जी खब पजाब पचारे तो उनके व्याख्यानी का सहात्साहसराजपर बढा प्रभाव पडा। यह भी लिला है कि लाहीर में महात्मा चीने ऋषि के ब्यारयान सने । यह बान **इप्तब्य है। महात्मा जी ने न तो ऋ**षि के प्रवचन सुने न ही ऋषि जी के दर्शन किए महात्मा जी तो ऋषि के लाहौर धागमन के बहुत देग्बाद लाहीर में शिक्षा के बिए धाए।

एक स्थान पर महास्मा अी को "मखीडा" भी जिला है। लेलक ने महात्माजी धौर मसीह मे क्या समानता देखी <sup>?</sup> यूँ ही मसीह की बढाई कर दी। प्रच्छा होता लेखक महात्मा की के मसीह पर विचार प⁻लते ।

Post in DPSO on 1-8-85

प्राचीनकल की जिला से व्यवसास −ि⊤ग्प्तका मं६४ ≭लाए मि**खा**ई पट ः जभी र्रे, लेखक ने इसका उल्लेख

न करके एक भूल की है। ीकानर के धकाल के समय सेवा कार्य में अग्रसी लाव लाजपनराय जी की चाती नही।

महात्मा जी को या तो शिक्षा शास्त्री के रूप मे ही प्रस्तुत किया जाता-यदि जीवन के धन्य पक्ष छुए वे तो जनकी वेद प्रचार के लिए सतत साधना वा उनके द्याध्यास्मिक जीवन पर भी द्यवन द्यवन ग्रद्याय लिख दिये जाते । महात्माकी के पाण्डित्य, गहन घट्ययन की भी कुछ तो चर्चा की होती। सेखक के सत्प्रवास पर पुन बचाई। — राजेन्द्र जिज्ञासु

# त्रार्यसमाज दुर्गांपुरी लोनी रोड शाहदरा दिल्ली का वार्षिक चुनाव

बाज दिनाक २१-७-८५ को वार्षिक चुनाव हुआ जिसका विवरण इस तरह है--प्रधान-श्री देखपास सी उपप्रधान-धी पुरुवोत्तम बी सन्त्री —श्री रघुवीर सिंह जी

पुस्त्रकः समोक्षाः

वेद बाह्यण उपनिषद् गृह्यमुत्रादि के सविकारी विद्वान् डा० कृष्णलास द्वारा पूर्वक कहने से समय हूँ कि नास्तिक पूरुष लिखित विभुवैभवम् विश्वनी उई० ६३७ में भी इस पुस्तक से बास्तिकता के भाव सरम्बती विहार, दिल्ली ' द्वारा प्रकाशित एव सम्कार जाग्रत व उद्बुख होने ने विलम्ग व न्ना' नंपमक पुस्तक इंटिएय में स्नायी 🔝 नहीं होना चाहिए। यह पुस्तक जहा याद्य ब्राह्म से सादगी को प्रस्तुत करती है वही प्रथम पृष्ठ संही पढने की तीव धाकाक्षा इसकी विशेषता को प्रकट करती है। इसमे विद्वान लेखक द्वारा वेद रे चुने हुए पैतासीस मन्त्री की सरल सुबोध पदच्छेद, धन्वय, पदार्थ एव भावार्थ के माध्यम स हृदय स्पर्शी प्रभाव-नाली शैली युरत घाच्यात्मिक भावना से बनुप्रास्तित एव बीतप्रीत ज्ञानपिया-सुधो भीर श्रद्धालुधो की परमात्मा मे परमश्रद्धातका प्रकृति के क्यमान् समूचे म्बावर बङ्गम पदार्थों मे उस नियन्ता की विराजमान सत्ता के प्रति प्रगाढ निष्ठा

उपमन्त्री — श्री मूलचन्द गम्भीर कीय व्यक्ष - श्री रामनारायण सर्मा उपकोपाध्यक्ष — श्री चन्द्र भानु सुमन पुस्तकालयाध्यक्ष -- श्री सुलवीर सिंह जी ले लानिरीक्षक — श्री ऋषिपाल जी प्रकार मन्त्री — श्री विष्णुदलः जी

> विल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई विल्ली-१

बलवातर होती जाती है नि सकीय साहस

दसका ग्रावधार इतना उध्यस्तरीय है यह निस्सन्देह जिथा संस्थानी सामा-जिक न्यक्तिगत जीवन में प्रतिदिन सश्रद बोलकर सनमकर सूख शान्ति की प्राप्ति की जासकती है। प्रत्येक परिवार में धाबाल बढ द्वारा इसका लग्योग कर जीवन को सरम वनाया जा सकता है। स्वामी विद्यान द सरस्वती जैसे प्रसर् वेद एव सिद्धा तममज निद्वान् सन्यासी द्वारा इस पुस्तक की भूमिका लिखा जाना उक्त विशेषतात्री को प्रमाशित करती है।

> समीक्षक रूपकिशोर शर्मा

#### वार्षिक निर्वाचन

दिनौक ७ जुलाई ८५ को महिमा बायसमाज हरीनगर घण्टावर का वार्षिक निर्वाचन सबसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्त

प्र घान उपप्रकान मन्त्री **कोवा**च्यक

श्रीमती प्रकाशवली वर्मी श्रीमती स्थानदेवी खन्ना श्रीमती राजरानी सूदन श्रीमती सत्या चौधरी

🔨 🥄 चनदीय (बानस्य प्रकाश वर्मा) मन्त्री

लिए स्वास्थ्य

कॉगड़ी फामसो.

हरिद्वार की औषधियां

क्षेवन करें

शाला कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, वाबडी बाजार, बिल्ली-६ फोनः २६६८३८





ह सक ३६ मृत्य एक प्रति ५० पैसे

रविवार, १८ झगस्त, १६८६ बार्षिक २० वपये मृष्टि सबत् १६७२६४६०८६ माजीवन २०० रुपये जाबस २०४२

दयामन्त्राव्य १६३ विदेश में ५० डालर, ३० पींड

# पर सवस्व

कई शताब्दियों की गलामी की जजीरों को तोडकर धनेक अन्यड तुफानो का मूख मोटकर भारत देश में स्वाधीनता प्राप्त की । इस स्वा-भीनता के लिए कितने करे काति-कारी बीरो, शहीदो ने धानी जान कुर्बान करी, कितनी चढती बवा-नियों ने अपने जिगर के खुन से सीच तर भारत के नन्दन वन को सब्ज किया। ये स्वाधीनता दिवस समर शहीदो की स्मृति का, उनके नगमे मुनगुनाने का, बलिदानियों की दैरा-गिन भावनाओं का सत्कार करने का दिन है। सर्वप्रथम स्वराज्य भीर स्वाधीनता की चिन्गारी फोडने वाले महर्षि दयानन्द स्तुत्य है जिनके सर्वभाग प्रेरणा पर १०५७ के बीरो नै झाजादी की प्राप्ति के लिए भग-ढाई ली, देश के कुण्ठित मानस की भक्तभोरा। अपने प्रिय विख्य व्यान जी कदण वर्माको विदेश भेजा जो क्रान्तिकारियों का प्रबल उन्नायक बना । बोर बीरांगना फासी की



रानी लक्ष्मीबाई, शुरवीर तात्या टोपे मगल पाण्डे, चन्द्रशेखर बाजाद, वीर भगतसिह, राजगुर सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, रोश्वन सिंह, धरफाक उल्ला. मदनलाल धीगडा, उधमसिह, करतारसिह सरावा पादि धनेक महान् क्रातिकारी जिन्होंने ग्राग्रेज सरकाद को प्रकम्पित किया। भ रत नाता के ये दूलारे स्तुत्य हैं। श्रद्धानत है मस्तक उस बगाली बोस

नजरबन्दी तोडकर, छिपते छिपाते भफगानिस्तान से जर्मनी भौर फिर जापान पहुचकर दुनिया को हैरत मे डाला और सिंगापुर पहुंच झाजाद हिन्द भीज बनायी। एक पूरी फीज नेकर अग्रेज फीजो से मुकाबला करने निकल पडा बीर बहादुर । उस केहरी शेर की दहाड से भारत का बच्चा जाग पडा, प्रग्नेजी साम्राज्य की नीव हिल गयी। सम्मान का अर्घ्य है उन नर केहरियों को जिन्होंने अपने तप बलिदान यातना, त्याग भीर खुन के छीटो से भारत माके गौरवपर्शा मस्तक पर कुकुम लगाया। वेतप -पत जननायक स्वामी श्रद्धानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी, सरदार पटेल, कत्रीन्द्र रवीन्द्रनाच टैगोर, लाला लाजपतराय शचीन्द्र

सुभाषनन्द्र पर जिसने खबेजो की

के तमाम प्रबुद्ध जन जो स्वाधीनता धान्दोलन के लिए जेलो मे गये। धन्य (शेष पुष्ठ ११ पर)

नाय, जवाहरलाल नेहरू तथा देश

# अपने उपदेशक विद्वानों का सम्मान अवश्य

—सुयदेव

४ अपस्त (१६५ को दिल्ली पार्य प्रतिनिधि सभा के सन्तर्गत वेदप्रचार कार्य में सहबोग देने वाले आर्य विद्वानों की एक बैठक शार्यसमाब मन्दिर दीव'न हास दिल्ली में सांव ४ बजे सपन्न हुई। सर्वेत्रवम सभी उपस्थित महानुमार्थी का स्वामत करते हुए महामन्त्री डा॰ धर्म-पास ने इस बैठक के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भागकी बैठक मे निम्नसिसित बार विवयों पर मान्य उप-दिवत बन्धुओं के सुमाव बामनित किये बार्वेन तथा विचार विमर्ध के करवात् भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की

१ वेदप्रकार कार्यक्रम---धार्यसमाज मन्दिरों मे, सार्वजनिक स्वानो पर, विचा-सयो ये तथा साहित्य प्रकाशन, विक्रय श्रवया नि शुल्क वितरण द्वारा।

२ सभा का वेदप्रचार विमाग-स्राय-श्यकताएँ तथा सभावनाएँ ।

३ बार्य विद्वानी तथा उपदेशकी के प्रस्ताव।

> ४ क्रियाण्ययन प्रक्रिया । (क्षेव पुष्ठ ११ वर)

#### सत्संग वाटिका

वेद में कई स्वानों पर वार्षनिक तस्यों का विश्लेषण करते हुए सास्य-मीनाखा की प्रेरणा पाई वार्ती है। यो बोद सारविवान के हुब में महुत्य न देकर इसर-उधर की वार्तो में बीवन मना बेने को ही परस दुब्बार्य वाम बैठते है। उनकी भ्रान्य चारणा को हर करने तथा युग प्रान्तर से प्रमुक्त निकासा को बाबुत करन के लिए मनवान् बेद धनेक मननों के बारा उपयेख हैं। उपयुक्त मननों के कार्यन वीस्थे।

(१) क प्रथम दवर्षे — किसने वरीर की उत्पत्ति से भी पूर्व विक्रमान रहने वाले सारमा को देखा प्रधाद रुद विष्यप्त पूर्वक बान निवा कि यह जीवारना पहले ही वर्तमान वा धीर सारीर की रचना का उपक्रम बहुत ीके की घटना है। इस सारमा की विकित भीर धारवर्षकारियी वालित को देखा कि वह धनावि धीर स्विकाशी धारवा —

(२) यत् प्रमस्या भावनागम् अस्य-न्यन्य विवर्ति—स्वय तो प्रस्थि से रहित है परन्तु छत्पन्न होने वाले खरीर को व्यस्थियो से प्रस्पुर कर देता है और दिन प्रतिदिन सरीर का पासन-पोषण करके खसको सुरह भीर बनवान् बना देता है, बैंसे कोई जबन सम्भी वर सवा होता है, वैसे ही हमारा सरीर सस्थिपञ्चर पर बडा है। उत्पत्ति के समय से लेकर धस्त्रियों का स्वम्त्र भी उत्पन्न होता रहता हैं और सरीर के मन-प्रत्यन भी समून्नत होते रहते हैं। यह सब बीबारमा की ही महिमा है, परम्तु बाश्चरंबनक बात यह है कि जीवास्मा स्वय तो इतना सूक्ष्म है कि उसके स्वरूप ने शस्त्रिक के लेखनाज भी नहीं और सरीर प्रस्थितों से भरपूर है।

वन में सकेत किया है कि वरीर को अस्त्रम्बन्दम् अर्थाद् अस्त्रयो से वसिष्ठ वनाने वाला सरीर से सर्वता पुरुष बो सरीर को निर्माद पान-गोवल द्वारा द्वस्ट पुस्ट करता है, 'विमर्ति' किया का कर्ता कोई थीर ही तत्त्व है वो सरीर की पूर्वक कोई येतन प्रास्ता न होता तो सरीर की जरारोसर वृद्धि कवाधि न हो साला केन राहने पर मुक्क सरीर की कर्ती प्रकार की हृदि नहीं होती क्योंकि वृद्धि करने वाला वहां वे बना साला है।

कई सोग विचार किया करते हैं कि-

(३) असु असुक् अस्याः—'आव और रक्त' वे तो भूमि अर्थात् ववसूतो के स्था-वाल से बनते हैं और वे ही सरोर में वीवन के कारण हैं। इस से पृथक् आस्वा । विवाह कर स्वागत क्या

# वैदिक आध्यात्म विज्ञान

#### सेखक---इन्द्रराज

को ददशै प्रथम जायमानमस्यन्तन्तः सदनस्या विवर्ततः। भूम्या प्रसुरसृगारमा ववस्वित् को विद्वासमुपगात् प्रष्टुमेतत्।। ऋ० १।१६४।४

\*

के निर्माण से प्राण और रख्त का साराया ग्रह्मप्यूपी स्वाम है और बाझ विध्य है ग्रही नो उत्तर कारीर की सामित्रकि मोर दिवादि के प्रवास कारण की प्रतीत होते हैं, परस्तु ने दो कार्य हैं और इस के कारण पूर्व्यी व्यवित्य महायुद्ध हैं। यह नह तो सबस में मा बकता है कि प्रभावी के कार्य क्या बकता है कि प्रभावी के कार्य क्या क्यांकि प्रेण कीर एका की करारित होकर सरीर की एकार, मृद्धि और पुन्टित होती है वसी हेतु सरीर मान-ग्रम, रक्तमस है।

परन्तु सरीर नेवस प्राय, रक्त, नाव स्रोद सस्य सारि गांव वांदिक तत्वाँ के स्वात ही का नाव नहीं है, सरीर में कोई सीवित बाइत उरच भी है। यब सरीर एक बीता बायता नास का पुतना है तो बीवन कहीं के साया ? हर प्रश्न का उरान्त होना नी स्वावायिक है। यब नय कहुता है कि वह भी विचार करों कि—

(४) **शारमा क्वस्वित्--वरीर** में जीवन की क्योंति जनाने वाला, धनेक क्रियाओं का सचासक और अवन्त प्रेर-खाओं का प्रेरक 'बात्वा' कहा वे बावा ? इस जीवन का कारण कीन है? क्या प्रासा बीर रक्त बादि के समान जीवन तत्व का भी पृथ्वी बादि पचमूत ही कारण हैं सचवा उस करव की कोई शपनी स्वतस बत्ता है भीर यह भारता तत्त्व किसी नी उपावान से उत्पन्न नहीं है। नत्र ने कहा है कि शरीर को यवार्य तया समझने के लिए खरीर के मूब वस्त्रों पर द्विट डालगी चाहिए। सरीर की स्थिति से प्रतीत होता है कि गरीर एक मस्मिपिञ्जर है। इस धस्विपिञ्चर मे प्राणु भीर रक्त का समार हो रहा है भीर इस समार से जीवनसीला वस रही हैं, परन्तु इस पुतके में कोई 'बारमा' नाम का समीतिक तत्व भी विराजनान है जो इस सरीर से. इक शरीर की किया से और इस सरीर के जपादान से या भूज कारता से करपन्न नहीं हुमा है किन्तु उस की उत्पत्ति होने के समय से बहुत पहले से ही विश्वमान गा। इसलिए मॅत्र ने उसे 'प्रथम' कहा है। यह सरीर के सन्तर है और शन्दर रहकर सरीर का 'विमर्ति' सर्वात् पासक पोवन करता रहता है। देख सीविष्ट कर बहु पासक, पोबक, बीवनदावक तत्त्व बनवलाल (परासा-बन्द्रा)

के चिल्ल समाप्त हो जाते हैं, यह वासन-कर्ता, पोचलकर्ता और जीवनवाता सरीर में कही से बाता है और किसी स्वान की फिर प्रस्वान कर बाता है, बारमा की इस उत्कादिवदि भीर संबीत के भाव को स्पष्ट करने के जिए गण ने वयस्थित् धर्वात कहाँ से तथा कही न कहीं से अवस्य बाता है। इस बब्द का प्रयोग किया है, मम ने उस बाने बाने वाले और सरीर के बरल पोषक करने वाले समिनास्ट्री सनीतिक तत्त्व का ग्रुम नाम भी बता देने<sup>7</sup> की क्या की है। शरीर की ब्जर चूमि के हरा-भरा करने वाले हाड़-मांच तथा रक्त के बने प्रपत्तित्र पुराने को जीवनामृत प्रदान कर पवित्र करने वाने तथा इस जड़ श्वरीर की जूनी बस्ती के करत करत में ज्योति को बनाकर चकाचीय कर शसने वाने का बाब बारमा है बारमा।

मात्वन् सन्य का सर्व ती वड़ा विचित्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि पर-मेस्बर ने इत तत्त्व को जैसा पाता बैदा ही इत का बाम पत्ता है। निरुक्ताचार्य महर्षित्र सरक ने धात्मन् का निर्वेचन करते हुए विकाह कि---

> भारमा भक्ततेर्वा साप्तेर्वा स्थाधिकर्वमः । निरम्स

उसका नाम बात्मन् इसमिए है कि वह सवा ही एक शरीर में निवास नहीं करता किन्तु एक को खोड दूसरे में और दूसरे को क्षोड तीसरे में तथा तीसरे को कोड़ भीने शरीरमें जाता है धौर इस तकार निरतर वर बदसता रहता है। इसके बात्वन् नाव रखने का दूसरा कारण वह नी है कि नह बन सरीर में प्रवेश करता है वो तत्काल सरीर के प्रत्येक शव को नितमानुकर देवा है और जब तक सरीर ने रहता है तब वक बनातार वित देता रक्ता है जिस से बचीर की जानिवृद्धि डोती यहती है। इस तत्त्व को बारमन इस शिए भी कहा बाता है कि वह तत्व जब शरीर में बबेश करता है तो उसी समय शरीर के कथ कथ में जीवन ज्योति फैल वाती है और करीर का कोना-कोना जब-नवा बठता है बीच बच तक वरीर में पाता है बन बक क्यों का नगरी की बीवन क्योंकि के प्रकाशिक किने प्रका

वह योजन न्वीति का प्रकास करने वाला, सारीर के कोमे-कोने को बाइत रखने वाला और निरंदर बंदि करते प्रश्लाव वाला व्योदिक सारमा कही है जाता है और क्यों साता है तथा क्ये से साता है और क्ये साता है तथा क्ये से साता है और क्ये साता है तथा क्ये से साता है और क्ये तथा है तथा करता रहे साता है है जिन यर विचार करता ररमा बायक है परस्तु कुख और सारवर्ष की बात है कि-

एत द अध्युम् क विद्यासम् उपनात्-इत वार्षी को पूक्षने के लिए कोन विजास् हो। सम्बारम विद्यान के पाल पहुचा हो। सम्बारम विद्यान के पाल पहुचा हो। सम्बारम विद्या के प्रका साम्ब्राः हो विद्यान के पाल पालप ही करने चाहिएँ और वही इत प्रकार को किल्म समस्यासि का स्वत्यता समाधान कर सकता है परस्यु वह विज्ञाना सर्वशास्त्र को बारित्यक में नहीं उपजीत और नताने वाले है। इतके लिए तो पूक्त और नताने वाले सोनों समाचारण होने चाहिए। कर -विद्या के सकतें में---

सारवर्गेऽस्य वस्ता कुछसोऽस्य सन्ता सारवर्गे जाना कुसलानुशिष्ट ।

कठो० हितीय वस्त्री ६

सर्पात् इस वारणकाल का (वस्ता) वस्ता (धामलर्प) कोई विरक्षा ही होता है। (वस्त) इसका (तस्ता) पाने बाता (कुछव) ओर मगेल हैं होता है। (कुछ-बातुविस्ट) अमील पुरूष के वसके पासा हुआ (बारा) जामने बाता (बारवर्प-) कोई विकेस ही होता है।

जनवरी जुिंद रच जारण को बर्युक है जानने के लिए उत्तरिष्ठ कर रही है। है। वह जामास्त्रिक विकास कार्र होंगे के स्वाह्मा क्यंक ही बना सकता है परन्तु पूकने वाला तो होना जाहिए। वेद महता है इस जारण तस्त्र को पूक्त के लिए कीन किसी था गानी के पास जाने का उपक्रम करता है।

पुन कठ मुनि यमात्रायं के मूल से नित्रकेता को समझते हुए सारे सतार के सारमिकतासुषों को सम्बोधित करते हैं— जिल्लाक मात्रत प्राप्त करता हुन ज्ञान सारा निश्चित दुरस्थया दुवै प्रस्ता सारों में स्वतिन ।।

कठो० तृतीय बस्सी १४

ऐ कम्म-कम्मानारों से जोड़ निवा में रोवे हुए विज्ञासुमनो ! "उत्तिस्ट्य" उठी केषम चठी ही नहीं यपितु "वाहत" बामो चीर वहा को वामने वाले योग्य विद्यानों के पास बाकर उक्त साम्यतस्य को बानो ! निरम्बद ही वह साम्यास्थिक वार्ष कुरै की बार के स्ववान कठिन हैं। केषम दुरमवर्षी कवि, वनीकी सोव ही इस कठिनता से प्राप्त होने वाले बास्य-सर्प की बता सकते हैं।

बाइए, वैषिक बाज्यात्म के इस रहस्य की किसी बाह्मकर्सी से पूच कर और उसे बानकर बनस्य देश विषय का कस्याक सम्पादकीय--

# सांस्कृतिक अस्मिता और स्वाधीनता

सारा ससार चमत्कृत है भारत की सस्कृति भीर सम्मता पर। हिमालय से भो कची प्राकाश को खुती, सागर की गहराई से प्रधिक गहरी हमारी सस्कृत सब से पुरातन भीर सब से नूतन है। इसोलिए मानव की सम्यताधों के इतिहास में भारतीय सम्यता की एक विशेष पहचान भीर मास्मता हु। ससार में सभ्वता मोर सस्कृति के कई प्राचीन केन्द्र रहे हैं किन्तु उनमें स भाषकाश को ग्राज हुन भग्नावशेषी के माध्यम संहो जानते हैं। भारतीय सम्यता मे एक श्रांवच्छृह्वल निरन्तरता है। भारत पर बाहुर से प्राक्रमण हुए, अन्दर से कृतघ्न राष्ट्रवर्शातयो ने चाटका, जात-पात, ऊच-नाच खूबाळून के विषवर सदव इसत रहे फिर भा हुमारे अन्दर ऐसा शक्ति रही है कि हुन पहले को भवेक्षा अधिक संगठित, जाग्रत भीर विजया बनकर लड हुए। हमारा सामय्य है कि धनेक धवराषों के बावजूद हमारा हस्ती कमा मिटो नही और न मिटेगी। इसका मूल कारण है हमारो मनीबा। सना-तन की लोज मनावा से जुडी है। हमने घम को भी पराक्ष ए। को कसौट। से ऊपर नहीं माना। भारतीय संस्कृति का बचाये रखने से उसके प्रश्न, शका, प्रसह्यति, विराव, सुवार मीर विदाह का परमारामी का बडा हाथ रहा है। इसानिए हम आज मा नियमान है। पराजीनता के युग में हम सजग थे, ग्राज मो है।

हमे स्वाधानता मिलां। इसमें हमन वनस्व न्याखावर किया। हमारे ,हाया क्रांतिकारां भी में और धान्तिपूरा सर्याग्रह आप्योलन चलाने वाल भी। क्राग्रस ने यावनावत रूप से कार्य किया और प्राव्य भी हमारा सरकार राष्ट्र । नमारा के काय में लगा है। हमारो सरकार स्वतन्त्र वेद्य स्वयोन् वयलावत क सूजन में भी भाग ल जुका है। गोश्रा आर पाडवेरा तथा विनिकत का राष्ट्र का अग वना चुका है। भारत का ख सी रियावता का राष्ट्र में बिलय कर चुको है जा स्वाता काम नहा था। इस सरदार वल्लमभाद पटेल खेसी मेघा का व्यक्ति ही कर सकता था। असक हाय भूरा सगठन का बागकोर थी। प० नेहरू गाखा के बार राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी प्रारे ाध्या का विराव पटेल निर्मात काम नहा था। असक हाय भूरा सगठन का वागकोर थी। प० नेहरू गाखा के बार राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी प्रारे ाध्या के बार राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी प्रारे अध्या का विद्या थे। पर उस समय के राष्ट्रनेताओं में सहनवीतता था। व सब एक दूमरे का बान का राष्ट्र हित में सहन करते थे। हमारे दक्ष म नेता थ, हमारे हाथ में पा पिकस्तान में नवाब और सेनापित। पारणाम प्रापक्त सामने हैं।

परिवतन झावस्यक है। साप भो कचुल खांडता है, यद्यपि यह कष्टप्रद प्रक्रिया है। भारत को दाजनीति में भी बदलाव झाये हैं। काम्रस में भा।गांची के युग में भी और इन्दिरा नाची के युग में भी। पर इस बदलाव स नवजावन का हां सचार हुआ है।

गांघा के पहुले भी स्वाधोनता के लिए खबक्त प्रयास हुए हैं। पर वह युग भिक्षा युग बा—प्रावदेन, प्रतिवेदन का युग। गांची युग धाया, पर अचानक नहीं, धीरे धीरे। जब महात्मा गांघी भारतीय राजनतिक गांन में सूर्य बनकर चमके और धीरे धीरे धपने कार्यक्रम की पखुटिया खोलकर खामने रखने लगे तब उनके बहुत से कार्य ऐसे थे, जो पहले भी बय-भग या स्वदेवी झान्दोलन के रूप में सामने झा चुके थे। शक्कारी धिला सस्वाधो का बायकाट और राष्ट्रीय विचान लगे की स्वापना हो चुकी थी। कागडी, बनारस, स्रतीयड, दिल्ली की

सस्थाएँ, इसी कडी मे बाती है। विपिन चद्रपाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एनी बेसेन्ट, ग्ररविन्द लाजपतराय, तिलक, सावरकर श्रचीन्द्रनाथ सान्याल इसी दिशा मे पहल कर चुके थे। कवीन्द्र ग्वीन्द्र का 'एकताचलो रे' उस समय का क्रांति गीत था। जो स्वा घीनता सम्राम के लिए लज्जारता था। श्रद्धानन्द का सीना सगीनो के सामने खुलाया। तिलकाका स्वराज्य मेरा जन्म निद्ध ग्रिविका है युवको मे प्रारा फुकता था। गाघी भारतोय राजनीति के भगीरथ हुए। वे राजनीति को उच्च ग्रौर मध्यवर्ग के स्वर्ग से उतारक साधा रए। जनता की घरती पर ले आये। उनकी कार्यप्र गाली से कई बार नैहरू जी भी क्षुब्ध हुए। जौरी चोरा ब्रान्दोलन के त्थान पर उन्होंने स्वय लिखा है, 'मैं समभता हूँ सभी प्रमुख नेता क्षुब्य हुए, हा गौंघी ी के मलावा। पिता जी, जो उस समय जेल काट रहे थे वे बहुत परेशान हुए। रहे तरुण लोग व बहुत उत्त जित हुए। हमारी बाशाको का उठता हुमासीघ एकाएक घराशायी हो गया।' महात्माजी के विचार 'यद्यपि जीवन के सम्बन्ध मे हमारे इष्टिकोण के फासले निश्चित रूप से बढते चले गये पर माज हम एक दूसरे के जितने करीब हैं, कभी उतने करीव न ये। 'महत्त्वपूर्ण हैं। ये उद्गार निर्लिप्त युगद्रष्टा 帝費!

प० नेहरू का झनेक बार विरोध हुआ पर देश की बेहतरी के लिए, व भी नझतापूर्वक इस विरोध के सामने मुकते गए। इसीलिए आज इसारा दुनिया में स्थान है। हमारी महान उपलिक्सम हैं— बचालोदेश की स्थापना, साध में पूर्ण रूप से निर्भरता, हिन्द सीवियत सिंग, द्वारवंग का प्रारम्भ, गुटनिरपेक्षता की सम्यक्षता, देशी राज्यों का भारत में विलय, गीवा की मुंबत सिक्सम का विलय बंकों का राष्ट्रीयकरएं, स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान।

माज हम घम निरपेक्षता की बात कह सकते हैं, पर इसमे हम कहा तक सफल हुए हैं। हिन्दू कोडबिल ने हिन्दू स्त्रियों को अधिकार दिए। मुस्लिम औरतों को कौन अधिकार दिलायेगा? गांधी बर्म-निरपेक्षता के लिए शहीद हो गए। रोम्या रोला ने कहा था—'गांधी कूस के बिना ईसा है। इन्दिरा की शहादत ने राष्ट्रीयना की आवना को ऊवा उठाने की देश को शक्ति दी है।

धाज देश की बढती हुई मावादी घोर गरीबी जातिवाद, क्षेत्र-वाद, आतकवाद का विष चारों भोर फैल रहा है, हमें इससे निपटना है। हम प्राचा करते हैं कि एक नई सस्कृति एक नई शक्ति के प्रतीक के रूप में युवा प्रधानमन्त्री राजीव गांधों के नेतृत्व में स्वाधीनता दिवस के प्रवसर पर प्रएा करने की धावध्यकता है कि हम देश को सभी बुराइमों को दूर करके ही रहेंगे। मारत को सबल एव सम्पन्न राष्ट्र बनाय में। १८५७ का जेहाद अग्र जो के लिलाफ या, पर यह धाज का जेहाद इन बुराइमों के विरुद्ध होगा। हम आक्रीश मातक और हिंगा पर नियत्रण कर लो। हमारी प्रपत्तियात्रा नमें स्वितिज की भीर वढ रही है। हम सभी क्षेत्रों में उच्चतम टेक्नोलोजी धपना कर जापान की तरह अन सस्कृति का विकास करके मन्य देशों के समयुल्य न होकर बागे बढ़ निकलेंगे। इस प्रावाभगे परिकल्पना को साकार करने के लिए ससार में भीर विशेष रूप से सारतीय उपमहादीप में शान्ति नहें।

—हा० धर्मपाल

## फांसी का फंदा चूमनेवाली हंसी

१६ प्रमस्त यानी भारत की घाषादी का दिन भाज से ३८ साल पहले नुलामी की जजीरें काटकर भारत ने बाबादी की श्रास्त्र सी वी। प्रत्येक अरुरतवासी का मस्तक छ । दिन गर्वसे अच्चा उठ सवा या। हरेक चहरे पर मुस्कान थी। लेकिन इस खुशी के धवसर पर देख के उन हजारों वासी लोगों को भी हमने याद किया बा, जिन्होने बाजादी की लडाई लडते हुए श्चपने प्राशो की बलि चढादी भी भीर ग्रपने जून से ग्राजादी के बीज को सीवा था। जाने ऐसे कितने किशोर धौर युवक वे जिन्होने सुब सुविवासो से भरी विदगी के मुकाबले काटो भरी राह को चुना, ग्रमेजो के दिल दहलाने वाले ग्रत्याचार सहे और इसते इसते फाँसी के फदे की भूम सिया। भगतसिंह चन्द्रशेखर बाबाद रामप्रसाद विस्मित, प्रश्नफाक उल्ला, राजनुर, सम्बदेव करतार सिंह, दलीप सिंह हेनू कालानी, ऊषमसिंह भीर न जाने कितने ऐसे नाम हैं, जो अपने नतन की भावादी के लिए मर मिटे। १५ धवस्त का विन उन्ही के सपनों उन्ही के सकल्पों भीर उन्ही के बनिदानों का प्रतिफल है।

ऐसे युवको मे एक था खुदीराम बीस जिसे १६ प्रमस्त १६०८ की प्रमेणों ने फौसी पर चढा दिया था। उस समय ब्रोराम की उम्र वी कुख १० तास। लकिन सुदीराम बन १३ सास का ही या तनी वह मानावी की इस बकाई में कृद पुका था। एक बन्धेरी रात को पर्वे जगल के बीच मां काली भी विकरान मूर्ति के सामने उसने क्रांति की दीवा औ थी। प्रतिका की बी कि देख की धावादी के लिए प्राची की बाबी समाने से भी वह नहीं हिचकेगा।

उसकी प्रतिका पूरी हुई पाच सास बाद बटना मुखपकरपुर की है। बहा का जिला नजिस्ट्रेट वा किन्स कोई नाम का एक निर्देशी प्रमेख देशमक्तों धीर ऋति-कारियों को वह कठोर से कठोर सवाए विया करता वा। यातनाए देने में छसे बुक्त मिलता वा । देखमन्ति उत्तकी नवर ने सबसे वढा प्रपराच था। धासिरकार काविकारियों ने इस बांस की विरक्तिरी को दूर करने का निर्णय सिया। उसे नौत चाट उतार देने की जिम्मेदारी सींपी नवी खुदीराम बोस को।

बुवीराम बोस धपने एक साबी के साम मुजपकरपुर पहुँचा। व्रिपे तौर पर किंग्स फोर्ड की विनचर्या का पता सवाया। बाजूम हुआ कि किंग्स फीवं रोज साम को गोशा नाडी से नैठकर बनोरजन और बामोद-प्रमोध के लिए बीरे वैनिकों के

नवय में बाता है। बोनों क्रांतिकारियों ने तब किया कि स्थाप से बौटते समय की बन है उस दिना बादे । ३० मंत्रैं १६०८ फुसलाने की कोशिश मी की, किर बी उन्हें को उन्हें बबसर मित्र बना धौर उन्होंने गोक्ताकी का का जेंक कर करे प्र-पूर कर अच्छा । दर एक वसती हो नई । बैधी बाक्री किंग्स कोई के बास बी उसी तरह **की बाक्टी क्छ बडोब बडोब केनेटी की** भी भी। हुस्तीन के सूचीराय में केनेटी की वल्ही को ही किन्य कोई की बाबी समन्द थिया । इस सर्वा किन्द्र फोर्ड हो वस बया पर क्येकी की पत्नी की मदनास्थल पर मृत्यू हो क्वी

वय फेंकते ही खुदीराम भाग निकला वा। जनस-जनस आह असाह प्रराद्ध मीस का रास्ता बौडते हुए उसने तब किया पर अवल पकडा वया। धदानत में उसने निडर होकर बयान दिया कि बहु प्रत्याचारी किंग्स फोर्ड की हत्या करना चाहता वा। वेकसूर भीमती केनेडी को नारने का इसका इरादा नहीं था। भीमती कैनेडी की मौत पर उसे सफसोस

क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में सूचनाए भीर दश के सक्त्यों तथा नेताओं के नाम जानने के जिए बेल ने सुदीराय को कठोर यातनाए वी वर्जी। सेकिन मारत के उस बच्चे सपूत ने इसते इसते सारे घत्याचार सह विषये । व तो उत्तके नुवा से उफ

निकली, न क्रांति दल के बारे में कोई जानकारी। जेस के प्रविकारियों ने उसे सफलता न मिली।

वासिरकार सुदीराम बोस की फासी की सवासूना दी गयी। उस समय भी ब्रुवीराम के होंठों पर मूल्कान विरक रही थी। अपने फैसले में क्या ने कहा कि अगर वह बाहे तो एक सप्ताह के भीतर हाई कोर्ट में अपील कर सकता है।

'नही इसकी कोई जरूरत नही है। खुदीराम ने कहा अग्रेज मेरे देश के दुष्मन हैं बुरमन की घदासत कभी इन्साफ नन्द्री कर सकती। फासी मेरे लिए सजा नहीं है, बल्कि सबस व्हा उपहार है और इसे में खुशी से स्वीकार करता हु। हा प्रगर बाप इजाबत दें तो में श्वामत में -उप-स्थित अपने देखनासियों को सम बनाने की तरकीय बताना चाहुगा, नाकि आरत मा का कोई लास उस काम को पूरा कर सके जो मैं नहीं कर पाया।

भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में मक्ति १'द्र धयस्त का दिन बाच वी सूरव की तरह चनकता है। सर्वस्य त्यान धीर वसियान का जीवत प्रतीक साम भी इन सकरों के पीखे फांखी का खदा चूमते समय सुबीराम बोस के होंठों पर साबी मुस्कान फिलिमिलाती है। १ ध्रुप्रमस्त सहीव दिवस नही, एक प्रेरणा दिवस है।

### मनुभव

इन्सान को पत्नी धरे इन्सान बन के देखा। घरती की शाम बेजुवान की जान बन के देखा।

> र्रमान तेरा बेजुबान की बता नावान चार रोज का मेहमान वन के देखा।

चुन ऐसी सभी चन की रतन को गवा रहा। कुछ सुन सके तो सुन ले एक कान वन के देखा।

> भगवान भीर कीन है अनवान के पुतले । भगवान है तू ही धरे भवतान बन के देखा ॥

सज्ञान या प्रज्ञान व विज्ञान ज्ञान कर्म। त् वर्मका है मर्मशर्मपान बन के देशा।

> द्यान्यायियों के मान भरे कुल वहान में । भीरक्रुवेन की तरह सैतान वन के देखा।

जीवन की शहमियत को विस्त्रवी नहीं समक्र। दिल में किसी के दर्द का तूफान बन के देखा।

> क्या सोया धीर शया रिवस्टर को तो टटोस। मत्त नोल करेमोस की दुकान दन के देखा।

'बाकुल' कवि के गीत सुने अनसुने न कर। कवियों के कलम तीर की कमान वन के देखा।

रविवतः प्रकासबीर अञ्चलका

#### ओ छन्न उजालो!

-विवेत्त्र कुमार 'वेव'

धो खुरा क्यांनो ! हमें साम गत विश्वनाधी। हम स्वय तिमिर को बसने के धम्यासी हैं।।

> तिकडमी हवाओं के बस पर उठकर तुसने, लु सिया व्योग को, इसमें कोई बात नहीं। नत समक्रो तुम पर ही निर्मर है विश्व क्योंकि इस बरती पर हर पम रहती है रात नहीं ॥

बहुकाची नत धपनी अजमपुर चृतिमा से। हुम श्रपनी पहुचानों के दढ विश्वासी हैं।।

> इमने देखे हैं अनश्चित युव के परिवर्तन गर्वोत्मत वैभव देखे हैं चठते--गिरते । हम महाहठी हैं, महाकास के प्रामत्रण, को टाल दिया करते हैं वॉ चलते फिरते।।

वय बचाय की बीहरता का दो हमकी। 🕶 वहीं क्से हैं, उनके ब्रावि निवासी हैं।।

> को कभी समय का सूर्य स्वय को कहते थे, साधीत वने झाखा में ही डरकर मान वये। ग्रजसाये जोचन, बव्चिर कर्स नगराजों के, नेरी ही हुँकारों की सुनकर मान वने ।।

तुम जिन्हें सफसका, युवा-सुविधा कहते हो, वे । मेरे बीबट के राजमहब की वासी हैं।। हम वीर हैं डरना क्या जानें ?

देश की इस समय की सब से बड़ी भांग यह है कि देश को वीर वित्र चाहिए। वह मांग कौन पूरी करेवा ? प्रार्थसमाज को ही यह कार्य करना है। राष्ट्रद्रोही क्रर हत्वारे वैंक सूट में, जूक खपकर सोवों की स्टेननमों से हत्या कर दें, बम फैक्ट-रियां बना में, दी इन में से किसी को फांसी नहीं दी जाती। सदभावना वा एकता के नाम पर ऐसे लोगों को खोड़ा वाता है। इस प्रकार देश क्या वचेवा ? झावरयकता है देश को श्रद्धानन्द, साजपत, सुमाष, सावरकर, स्वतन्त्रानन्द, नरेन्द्र (सोमानन्द) जैसे प्रणवीरों की। सकुटों , के सामने खाती तानकर हुकारने वाले धौर वातकों को ललकारने वासे इन तेजस्वी पुरुषों का स्मरण करके मार्च जाति कायरो की 'महिंसा' से मुक्ति पाए।

हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों की बात है, पुज्य श्री महात्मा नारायश स्वामी जी महाराज रेस मे यात्रा कर थे। श्री महा-्राज एक पेसेंजर गाड़ी से पूना वा रहे बै। ब्राप बर्ड क्लास के डिथ्वे में विस्तरा विश्वाकर सेट गये। सभी गाडी छोलापुर से नहीं चली थी। प्रायजन जो विदा करने धाए, वडी सडे वे कि एक व्यक्ति महा-राज के पास धाया और कहा कि विस डिब्बामें बहुहै, उसमें और कोई नही इसलिए प्राप वहां चनकर लेटें। महास्या ची सतर्कवे ही। एक धार्यको नेवा, बाबो इसका डिन्बा देखकर बाघो, क्या इससे प्रच्छा है और वहां धौर कोई बी है <sup>?</sup> उसने सौटकर बतसाया कि खोडा सा डिन्बा है। वहा चार, पांच हैदराबादी मुसलमान हैं। उन्हीं के सिकाने पर वह पाची महात्मा जी को उस दिव्या में क्रिवाने के सिए भाषा था । ऐसी घटनाएँ त्तव घटती रहती की परन्तु इमारे नेता व क्षार्यंत्रन शीश हथेसी पर वर कर आने बढे। शत्रुभी हाय डालते हुए सोयता वर >व्यक्ति दयानन्द जी से लेकर कृष्ण-राब इटेकर वा उनकी पत्नी माता वादा-बरी देवी तक न जाने कितने आयों ने बीर गति पाई। फिर भी देख जाति के

तस्यामञ्च-

आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

### आर्यों की वीरगाथा-७

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञास'

सल बार्यसमाज से समजीत वे। बार्य-समाज बातकित न हुवा।

महात्मा नारायरा स्वामी जी के शब्द हैं---

"शोलापुर निवासियों में से शनेक हमारे गुभिषन्तक हमारे पास बाते बीर कहते थे कि मैं कभी कहीं बकेला न जाया करू क्योंकि यह बात सतरे से साली

फिर आरो लिया है कि मैं भीर स्वामी स्वतंत्रानन्द जी निस्य प्रात ४ बजे चठकर जंगल वसे काते वे। ढाई तीन शीस दूर वाकर सीच स्नाम धादि से निवृत्त होकर प्राय सात वने के सनगन नीटा करते थे।

बच्टों नगर के बाहर बार्यनगर में ये महात्मा कार्यकरते थे। जब नारायण स्थामी बेल बले गये तो स्वामी स्वतन्ता-नन्द जी प्रकेले बाहर भ्रमण को जाते। बोबापुर निवासियों ने मुक्ते स्वय बताया कि हमने कई बार श्री महाराज को रोका दरन्तु शीह पुरुष स्वतन्त्रानन्द का एक ही क्तर वा कि "डरना किस बात से ? दस बीस के लिए तो फिर मैं बकेसा ही पर्याप्त है।" मैंने विस्तार से ये बातें सीहपुरुव र्यंच में सिकी हैं।

महारमा नारायण स्वामी जब जेल बये तो वह प्रपना मृत्यू पत्र DEATH WILL लिख कर गये। इससे स्पष्ट है कि महाराज इस वर्ग युक्त में जीवन बाहुत करने की पूरी तैयारी करके गये वे। बाज धार्यसमाम को ऐसे महान् तपस्वी, निर्मीक

मत्युञ्जय महाबस्ति नेता चाहिए। राज-नेताओं वाद्यासन की परिक्रमा करने वाले समाज का कुछ न संवार सकेंगे। तभी तो बार्यसमाञ्च के बढे बडे कार्यक्रमो में रौनक के लिए शासक बुलाने पहते हैं। डोंगी गुरुषों की भीड़ कितनी हो जाती है। ऐसा क्यों ? बाज प० लेखराम, बायमुनि, रयाम बाई वाली झलण्ड निष्ठा वाले व्यक्तियों के हाथ में हमारी बागडीर

धाषी पार्यवीर दल, धार्ययुवक समाजें, बार्यकुमार सभाएँ बीर व्यायाम-शासाएँ स्वान स्थान पर स्रोलें तभी हम समय बन सकेंगे।

एक वे दिन थे-

लीह पुरुष सरवार पटेल को जमकी भरे पत्र विसने समे । मुस्सिम सीवी गुण्डे उन्हें जान से सारना चाहते थे। गुरुकुल कांवड़ी के कुछ ब्रह्मचारियों ने उन्हें पत्र निसकर उनकी रक्षा के लिए अपनी सेवाएँ मेंट कीं। सरदार पटैल ने ऋषि के शब्दों को उद्धृत करते हुए उन मार्थवीरों का धन्यवाद किया। उन्होंने ब्रह्मचारियो को मिला, "प्रमु की इच्छा ही पूर्ण होगी, मृत्युसे मैं डरतानही।"

बाए दिन बार्य जाति के निदांव सास बारे वा रहे हैं। गुरुकुओं के बहाबारी, ही • ए • वी • काले भों के काल शब कहा है। वे दिन फिर लीट सकते हैं। सीया तप तेब फिर बगाना होगा ।

'म्रायों' को निकाल दो-

लासा साजपत राव के निष्कासन के

दिनों की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द की ने (तव महात्मा मुशीराम थे) एक ऐति-हासिक भावता दिया वा । उसकी चर्चा उनके कई जीवन चरिशों में है परन्तु पूरा माष्या सम्भवत किसी ने नहीं दिया। सौभाग्य से मुक्ते वह ऐतिहासिक भाषण मिल गया है। भाषण क्या है सिंह की वहाड वा हॅकार है।

उसी ऐतिहासिक मावण मे स्वामी जीने एक घटनासरकार के दमन चक की दी है। हरियाएगा के एक ग्राम मे डिप्टी कमिश्नर साइब गये । भासपास के नम्बरदारों, जैलदारों को बुलवाया गया। भ्रमेज साहब के बूलावे पर सब मा गये। साहब ने विशेष बात यह कही कि देखो भपने भपने वामों मे बायसमाज को वसने न देना। यदि कही कोई भायंसमाजी है तो उसे प्रम से निकाल दो । साहब को यह पतान या कि जिन चौधरियों से वह बात कर रहा या उनमें समिकांश सार्थ-समाजी वे।

सुक्तबुक्त वाले एक चौघरी ने **दकी** नीतिमता से कहा कि यदि हम किसी की ग्राम से निकालेंगे तो ग्रापकी सरकार हमें ही दबाएगी। इसलिए साहब बहादर भाप ही इन बायों को हमारे वहां से निकालेंं। इस पर साहब बोले, "नहीं हम तो इन्हें नही निकाल सकते । ब्राप निकालें हम भापको कुछ न कहेंगे।"

इस पर वह भायं चौवरी बोला---"साहब जिन भायंसमाजियों पर हाथ डालते हुए बाप की सरकार डरती है, हम उन्हें कैसे निकाल दें।" यह वा झार्य-समाज का तेज । खेद है कि स्वामी आद्धा-नन्द जी ने उन चौषरियों का नाम बहां नहीं विया । स्वामी स्वतन्त्रानन्द की छनके नाम बताया करते थे, हमें उनमें से केवल चौचरी जुनला का नाम ही याद है। शेष नाम स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के लेखों में क्लोजने पर्डेंगे। झार्थो । झाझो प्रभूकी वासी वेद की विमल रचनाओं को सनें व सुनावें और उस मतीत को फिर वर्त-मान कर दें।

किशोरमञ्च-

### अंगिरा ऋषि का उपदेश

प्रस्तोता-अलबीत बास्त्री

🗣 पास गया और बोला गुरं की मुक्ते ससार सोचता था। ससके पास बहुत वन वा, से विरक्ति हैं, मैं चर-बार छोड़ कर संन्यासी बनना बाहता हूँ । गुरु जी बोले-'बर ग्रहस्वी में रहते हुए भी भगवान का भवन किया वा सकता है।

गुरुवी का उपवेश सुनकर सीनक बुहरण जीवन व्यतीय करने सवा। वह में पूछा। बाल्मा को बहु जानने की इच्छा

सीनक नामक विद्वान् ग्रंगिरा ऋषि सदा अपने ग्रात्मा की उन्नति के बारे में किन्तु वह उस सारे सुल को मूठा सुल बनकता या।

> एक दिन उसके घर मगिराऋषि बावे । शौनक ने प्रसम्म होकर उनका स्वा-वत किया । प्रात्मा की चन्नति के विषय

की। भंगिरा ऋषि ने कहा—'पहले एक वर्षे तक ब्रह्मचर्ये वस चारण करो । सपस्या करो। बाद में तुम्हें ज्ञान मिलेगा।

मनिरा ऋषि चले गये। बाद मे शीनक ने तपस्या की। एक वर्ष बाद वह भविराऋषि के श्रास्त्रम में गये। ऋषि ने सन्हें बहुत सी ज्ञान की बातें खिखायी। उन्होंने कहा-'विद्या दो प्रकार की होती है। एक विद्यासे हम ससार के सुख प्राप्त करते हैं, परन्तु सच्चा सुम नही मिलता । दूसरी विद्या हमें घारमा के उन्मति की कोर ने काती है। उसी के द्वारा हमें सच्या सुख मिल सकता है।'

शौनक की समक्ष में ये बार्ते नही

भाषी। उसने इनके बारे में फिर पूछा। ऋषि ने कहा--'लाशी वेदों के पढ़ने बा यज्ञ करने से मनुष्य बास्मा की उन्नति नहीं कर सकता।' इन सब को ध्रपने जीवन में उतारे और उसी प्रकार ग्रपना जीवन बनाये। कथनी और करनी में ग्रस्तर न

शौनक ने फिर झात्मा की उन्मति का उपाय पूछा। ग्रगिरा ऋषि ने कहा----'ईंग्वर का कोई रूप नहीं है, फिर भी वह सब जगह, सब चीजो में मौजूद है। उसी ने सारा जगत् बनाया है। वह सब को विसाई नही पडता। वह सब वस्तुमी में समाया हुआ है। उसे तो वही देखता है जो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

व्यासपीठ---

#### उपनिषत् कथा माला-१४

## वेदामृत

#### लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

धोरम् अन्ति सन्त न पश्यति, इन्ति सन्त न जहाति । देवस्य पश्य कान्य, न समार न जीव्यति॥

बह देद मन्त्र है। कोई भी ऐसा नहीं है जो साशात् प्रवादा परम्परा खन्मन्त्र से रंदर का धनुनव ही न करता हो। सब बाहे सोक ख्यवहार के बताने वाले हो, बाहे विज्ञान के प्रराप्त एक परम्परा स्वाप्त का परम्परा सम्बन्ध के प्रवेद परमेश्वर की प्राप्ति में ही देदमन्त्र बतावें। सालाल् सन्वन्त्र होता है। खेंदे साम से विक्षी ने पूरतक साथी। सावने उसको पुरसक पर्का सी, बह तो हुआ सालात् सन्वन्त्र । पुरसक मैंने किसी को सी प्रोर उसने उसको री, यह परम्परा सम्बन्ध है। बाहे मुक्त कर है, बाहे गीज कर से ईश्वर की ही विवक्षा

श्रन्ति सन्त न पश्यति ।

स्रविश्वा प्रस्त जो मनुष्य है वह पर-ग्रास्ता के स्वर्षि प्रस्तव्त निकट है फिर मी नहीं देव चकदा। एक दो प्रवात, दुवरी बाव यह है कि 'स्रत्ति प्रस्त न बहाति' इचका इतना पट्तम सम्बन्ध है कि उससे सम्बन्ध हो नहीं दकता। इसको बाद में कहा।

> देवस्य पश्य, काव्य नममार न बीर्यात।

वस परमात्माको जानने के लिए उस देव का जो काव्य है, उसको देखों <sup>।</sup> उसका फल क्या होगा<sup>?</sup> न फिर मृत्युका श्वन्यन्य है न कीर्याता का। कारता यह है कि जरा मृत्यु व्याधिया, ये सब ससार के मार्ग मे हैं। ससार के मार्ग से पृथक् होने पर बह तीनो चीजें नहीं रहती। फिर धारमा के साथ उनका सम्बन्ध नही होता । ससार के मार्ग में कही गयी उन वस्तुओं से पृथक हो जावे तो वह उस पूर्ण शक्ति को पहुचान सकता है। इसका कारण यह है कि ससार के घन्दर हरएक चीज जो बनी हुई है उसका धवश्य ही कुछ न कुछ परिणाम है। कोई भी चीज ऐसी नहीं है विसकानुद्धापरिणाम न हो । ससार के झन्दर जितनी चीजें बनी हुई हैं वे सब परिवर्तनधीस है। किसी फारसी कवि ने कहा भी है---

> जमाना यक बबाबूदे प्रनर नमेबाफ फरवन्द बाफर

धवर जमानाएक रख रहने वाला होता तो भाज जो बच्चा है वह कस बाप नहीं होता। जमाना बदलने पर छोटा बच्चा बाप की जबह से लेता है धोर बाप रवाना होता है। समय एक रस रहने बाबा नही, बहु परिवर्तनशीस बसार एक रख कभी नहीं रहसकता, एक एक क्षण बीतने पर ससार बीत जाता है। इस परिवर्तन प्रवस्था को १ प्रश्व ६७ करोड वर्ष के करीब बीत गये हैं। दिन गत के चक्कर ने इतना सम्बा जमाना बीत गवा । दिन रात तो मोटा परिवर्तन है। दिन और राष्ट्र मिलाकर २४ वर्ण्ड होते हैं। १ वंटे के ६० मिनट होते हैं। १ मिनट ६० सैकिय्ड होते हैं । सेकिय्ड से भी खोटा समय कासवित् पुरूष ने काए माना है। इस अपन का कोई भी विभाव नहीं किया वा सकता। एक अरण बीता, इसरा क्षण बीवा धौर तीसरा क्षण भी **बीत बया। इसी तरह क्षण क्षण करते** इस सृष्टिको १ प्ररव १७ करोड वर्ष बीत गये । सस्कृत का एक एक शब्द बहुत मतसब रसता है। समस्त ससार को कन-भगूर कहा गया है। एक एक क्षला ने भी इसका परिवर्तन होता बाता है। इसके नाम से ही इसका धर्म भी मालून हो वाता है। जैसे भूगोस का नक्या। इस नाम के कहने के साथ ही यह जी सबूत कर विया गया कि पृथ्वी गोस है। सारी की बारी बायु इसी क्ष्मण से ही बीती आती है। मनुष्य का एक एक क्षरण परि-वर्तनशीस है। को चीजें बनी हुई होती हैं छन सब में परिवर्तन होता है,। जो बीज वनी ही नहीं स्थके भन्दर तो परिवर्तन की शाकत सग ही नहीं सकती। जैसे कमाद ऋषि ने कहा है--

> नित्येष्यमावात् धनित्येषु भावात् कारखे कासास्य ।

इसकी वाकत वाहिर कहा है ? नित्य में तो बाकर यह काल धार ही युन हो बाह, हो । धनित्य में यह बाहिर होत है, हो पैदा हो नहीं हुई है उस पर काल की गति का धसर नहीं होता। एक बीव पैदा हुई, उसको दस वर्ष नीत गये, ऐसा कह सकते हैं। इसके धन्दर पुरकाल जीत से में बीव नीत में मिल्या होती यह कदीनी दिस ही है। नित्य पदानों में काल का धनाव रहता है धीर धनित्य में काल का धनाव रहता है धीर धनित्य में काल

का साथ।

भाइयो <sup>।</sup> संसार के अन्दर को कोई चीज बनी है वह काल के प्रमाव से ही बनी है। बिना कास की सहायता से कोई नहीं बन सकती। इससे काल की महला वाहिर है। ससार में विसने बहुवान शिथा कि समय एक वस्तु है, उसने समय व्यर्थ नही स्रोया । जिसने समय के महत्त्व को नहीं समक्ता, परन्तु समय तो बीएसा ही चना गया, वह समय ठहर नहीं सकता। जैसे एक बज्बा १८ वर्ष का हो गया भीर ससने बी० एस-सी० पास कर निया और जिसने नहीं पढ़ा वह भी १= वर्षं की सायुका तो हो ही शया, उसकी बापरवाही से उसमे फल नहीं आया. परन्तु विसने बी॰ एस-सी॰ की पढाई की तो एसको फस की प्राप्ति हो नई। समय दोनों का बीता । इसका मतसब यह है कि समय की कीमत को पहचानना चाहिए।

'समय एव करोति बलावसम् ।'

समय ही मनुष्य को बलवान् और निर्वत कर देता है। जिसने केशने-कूदने ने ही समय विता दिया, समय का महत्त्व नहीं समका सो वह दुर्वत हो जाता है। धगर समय को समक्र सेवा तो वह बस-बान् हो जाएवा। समय तो दोनो का ही बीतता है, किसी का नहीं ठहरता, इसलिए वो धक्लमन्द बादमी हैं वही समय का उपयोग ठीक रीति से करते हैं। क्योंकि-'गया बक्त फिर हाब प्राता नही, बया ऐश धाराम पाता नहीं, यथा वक्त हाथ ने मही बाता इसलिए ज्ञान को प्राप्त करने में समय को विताना चाहिए, क्योकि ज्ञान नित्य वस्तु है। मित्य वस्तु पर काम का प्रमाव नहीं होता। इससिए कहा है কি---

'देवस्य काच्य पश्य'

वह परमेश्वर, वो देव है, उसके काव्य को देख । उस देव का काव्य वेव ही हो सकता है और वह वेद नार प्रकार के हैं—

ऋब्, यजु., साम स्रीर सवर्ष० ।

धव हुव तो वेदों को आवते हैं, परस्तु दूसरे नहीं बानते, मुसबबान नहीं मानते, ईसाई बही मानते । बह कहेंगे कि हुम तो वेद को वहीं मानते तो यह ठीक है। वेद

नान ज्ञान का है। कोई भी दन्यान यह नहीं कह सकता कि मैं बान को नहीं मानता। प्रगर कोई ऐसा कह देती क्सकी मुक्ता होनी। तो वह ज्ञान चार बकार का है---ऋष्, बबु, साम धीर धवर्ष । जैसे विशास के चार तेव हैं--बोड, बाकी, गुला और नाव, इनके सन्दर ऐस-बचा वर्गेरह सब धा बाते हैं। इसी तरह ज्ञान के भी चार भेद हैं। को धादमी सन्तिकी तरफ बायेगा वह देखेगा कि हिन्दुस्तान पविताबस्या मे है। मैं तो कहुना कि हिम्दुस्तान पतिसावस्था मे नही, वष्ठ तो धीर सब देशों की मालामाल बनाने बाला है। जुगराफिये में ग्रगर ग्राप देखेंगे तो बायको मालून होगा कि जैसा यह है वैसा भीर कोई दूसरा देश नहीं है। परन्तु बावकल के इतिहास में विलक्ष निकम्मा सिद्ध होता है, क्योंकि हमारे मे बासस ज्यादा है। वो काम जिस समय करना चाहिए, उस समय नही करते. बेमतसब के सडाई-सबडे करते हैं। सब श्रादमियों को श्रगर कोई एक विद्वान्त्र\* भावमी भ्रच्छे रास्ते पर ने जाना चाहे ता वह भावनी अक्लमन्द भीर ज्ञानवृद्ध होना चाहिए, तभी ले जा सकता है।

भव हम "ऋक्" को लेंगे। ऋक नाम स्तुतिकर्मका है। वेद तो सामान्य सब्द है। उसके साथ में ऋग्, यजु, साम बीर अवर्वये चार विशेषक लगे हुए हैं। ऋष् जो है वह स्तुतिक में है । बब कोई प्रवस-मन्द धादमी होना वह पहले परमेदबर की बनाई हुई चीजों की तारीफ करेवा। सूर्तियों को हमने बना जिया और कह दिया कि यह परमेश्वर हैं, लेकिन जब परमेश्वर की तारीफ करेंगे तो कहेंगे कि परमेक्वर सर्वव्यापक है, सर्वधक्तिमान् है, सर्वेज है, सर्वेत्र स्थाप्त है। इन विके-वसी से अब हम परमात्मा की स्तृति करेंगे तो पता मगेगा कि मूर्ति ही ईश्वर है याकोई भीरही शक्ति। यह वो ज्ञान है ऋगू है। अब हम सोसारिक पदाध, में यो ही चले घाते हैं। एक प्रादमी ने गुलाब के फूस को देखा उसमें सब बज्ही सुगन्य है, रंग भी बहुत घच्छा है। इसे देश कर बहु बादमी कहता है कि यह फूलों का राजा है। पहले तो उसने सुवस्थिकी तारीफ की। इसके बाद में उसने विचारा कि यह दिमाग को तर करने वासा है, मनोहर है, सुन्दर है। जिस बमीन पर ये परियाँ निर जाती हैं उस समीन की मिट्री सुगन्धित हो जाती है। यह खारा 'ऋग' का स्थान होगा । दूसरा है 'यज् ', उसमें यह विचार माता है कि यह सुवन्धि है तो सम्बद्धा, परन्तु यह उस फूम से समय रहते हुए भी घरियर रह सकती है बा वहीं। यजुष का काम यह है कि वह जिन्न बस्तुओं के योग से कोई उपयोगी पदार्थ बना सके। उसी को लेकर 'यजू ', ही के ज्ञान से बन से तरह तरह के इस हिना वगैरह तैयार किये जाते हैं। वे संदन की भूमि पर बनते हैं। इस कैसे

#### वेदामृत

विश्वसता है ? वैसे सौंफ का सके निश्वासा बाता है, ससी तरह से सबर तो तीन-बार तोसे सदन का तेल डास देते हैं सौर इवर गुणाब के फूल डाल देते हैं। सदल के तेल का वह स्वभाव है कि वह अपनी सुगन्ध को छोड कर दूसरी सुगन्य को तत्काल प्रहरण कर लेता है। सदल का तेल १) तोला मिनता है और वह १ तोले की कीमत से १०) व० तोका कैसे हो गवा<sup>?</sup> उसने घपने घापको खुपाया। अपने को जाहिर नहीं किया। दूसरे के गुर्गों को प्रहरा किया। अपने आपको छुपाकरके जो दूसरे के मुल्तों को प्रकट करता है, उसकी कीमत इसलिए बढ बाती है। सदस के तेल की कीमत इस-क्षिए बढ जाती है कि वह प्रपने गुणों को छुपा करके दूसरों को जाहिर कर देता है। बगर उसमें हिना टाल दो तो वह हिना हो जाता है, मोतिया बाल दो, मोतिया बेल बाता है। इसी वरह को इन्सान दूसरे के वृक्षों को दिलाने वाले होते हैं, उनकी कीमत बढ जाती है। वो अपने ही को विश्वाते रहेंगे, उन लोगों की कीमत नहीं बढ सकती। जैसे सरसों का तेल है, उसमें कितनाही हिना बास दी, तो भी वह धपने रोगन धीर धपनी वूको नहीं क्षोडेगा। सरसों के तेल की कीमत इसीचिए वहीं बढती कि वह प्रपने प्रापको विकासा है। तो इस तरह यज़्ब का स्वान है मोन करना । किसी चीच के मिलाने से कीन-सी ताकत होनी? यह है यजुः का काम। बैसे गुलाब की सुगत्व में सदल मिला देने क्षे इत्र बन बया, वस इसी ज्ञान का नाम बजुर्वेद है। प्रव साम क्या है। ऋब् प्रश्वसा करता है। उपयोग बताना काम बबु का है। उसका को नतीजा निकसा, वह बताना साम का काम है। हरएक बादमी नतीबे को देखता है। बगर कोई ने तहान देता है और वह असके अन्दर फर्स्ट डिबीजन में था जाता है, तो उसको बहुत ही खुशी होती है। परमेश्वर के श्रुप्ते स्वरूप को जानने के लिए जो कोशिय करता है और जब वह परमात्मा के स्वरूप की पहिचान बेता है तो वह परमात्मा स्वरूप वन बाता है। यह साम है। अवर्व का कोई स्थान नहीं है। सबने देशा है। बजुको मूल में रसकर जोड़ा है। श्रायन की निवासी को नेकर उसी में कुछ, न कुछ, उम्मति करने या बढ़ाने को श्री प्रवर्ष कहते हैं। जैसे प्राजकस बड़ी साइन पर बडे बडे इञ्चन बीड़ते हैं। वे ४० फीट बम्बे और १६ फीट चक्करवार होते हैं। सगर गुर्लों को न लेते बये होते क्षीर कुछ। न कुछ। बढ़ाए नहीं सबे होते तो धाज क्या इतने वहे इञ्चन नचर घा सकते वे? पहले के वो इञ्जब वे, वे विवक्त छोटे छोटे वे । अवर्थ कोई निव की बस्तुनही रसता, परन्तु वह साम के नतीया निकासने के परवात् को वो उसके

धान्यर स्कावटें डालने बाली वस्तुएँ है, उन सब को इटाता है और उनकी सहाबक बस्तुओं को इकट्ठा करता है। इसीमिए कहा है कि---

#### "पश्य देवस्य काव्यम्"

देव का काव्य क्या है। किसी ने कह दिया कि बीवालहास बाच्या है। यह गी करा सम्बन्धान हुआ, परन्तु मैंने बेहली में आकर बीवानहास में बाकर दीवान हाम को देखा, यह मेरा देखना हुआ। इसी तरह से परमास्या का जाब यहां पर वेद में विद्यान है। मैंने विश्वकर जबन किया वह परमास्या सारी सुष्टि में विद्यान है।

किसी भी चित्र को देखकर तीन बातों का जान होता है। विस्तका चित्र होया, उसके बरिज का जान होता, चित्र-कार चित्र वमाने वाले के चरित्र का जान, तीलरे उस चित्र का जान होना। इसी तप्छ चित्र देखने हैं। तिस्का चित्र होना, उसकी दसवीर मालूम होगी। व्यक्ति किसी वसी की तस्वीर मालूम होगी। व्यक्ति होना पत्र चित्र की को दसवीर है, मालूम होगी। मही ही मोजूर है, उसको देखने के जान होता है कि १ को हैं। उसार की विस्ता भी मस्तुर्ग है, उस सम से जान का विश्वस सम्बन्ध है, परन्तु को परमात्मा है, प्रसक्ते प्राप्तर ज्ञान का स्वकृत सम्बन्ध है। संसार बाह्य है। ससार का कोई न कोई तो कर्ता अवस्य है। वैनी नोन कहते हैं कि बंसार का कोई कर्ता नहीं है तो यह कैसे हो सकता है? किसी कारीनर ने एक भट्टी तस्वीर बनाई, चलता हुआ एक छोटा सडका भी विसको देशाकर कहेगा कि यह मही तस्वीर किसने बनाई है? तो फिर जो सुष्टि चित्र, विचित्र, सब्भुत, सनुपम बनी है, बह किसी न किसी की बनाई हुई धवदय है। ने किन देखने वासाहर एक व्यक्ति सुष्टि के सौन्वर्व धौर वित्र-विचित्रता के शब्दर ही मोहित हो जाता है, क्योंकि ससार तो बड़ा विचित्र है। एक से एक खूबसूरत चीजें हैं, जब बादमी उनको देखता है, तो बहुउनकी सुम्दरता मे फस कर उसके बनाने वाले को भूल जाता है। उसका जो मुखब्बर परमेश्वर है, उसके पास नहीं ले जा सकता। एक पुरुष ने एक बहुत सम्खा बनीचा लकाया, उसके प्रन्दर कई प्रच्छे-श्रच्छे सकान, पन्दारे, पौषे, फुलबारी ववैरह लगाये। श्रव उसके प्रन्दर जो बादमी देखने गये, उनमें से एक ने कहा कि यह फव्वारा कितना बच्छा बना हुआ है। एक ने कहा--पानी कितना ठडा है। एक ने कहा कि ये फूल कितने अच्छे हैं। बह्वापर एक बादमी श्रामा और उसने कहा कि घरे तुम सोग इन चीओं की क्या प्रश्नक्षा करते हो, बनाने वाले की प्रश्नवाकरो। जिस्त तरह वे लोग वगीने को देखते हुए भूस गये, उसी तरह ससार

की थीजों को वेसकर मनुष्य उचके कर्या को मूल बाता है। वही मनुष्य विद्वात है, स्वस्त्रमन्द है, विश्वने स्वद्वार को वेसकर उचके करवे वाले को पहचाना है भीर उसको नहीं मूला है। सत्तार क्या है? स्वत्तार को एक स्वारा है। सत्तार की हर एक चीज स्वारा कर रही है। जो विद्वान् होता है वही उसको पहचान सकता है। जो सहितीय सनुष्य कर्ता को पहचानता है, वही विद्वान् है।

#### प्रभु विश्वास

विषर देखता हु खुदा ही खदा है। खुदा से नहीं चीज कोई जुदा है।। जब सन्वल सौर प्राज्ञिर

खुदाही खुदा है। दो श्रव भी वही कौन उसके सिवाहै।।

सर्वे मरोसे छोड के, भाया नेरे द्वार । मेरे कर की तार है,

कर तेरे करतार॥ कहते हैं प्रभु इसलिए,

तुमको सब करतार। रहत सदा है जगत् का,

तेरे ही करतार ॥ नहीं सबस. वहीं साधना, नहीं तीर्व प्रतवान।

मात ६ रोतं **पह**त है, ज्यों बासक नादान ॥

## बाली एक सांस्कृतिक केन्द्र

#### ले ० – रामाज्ञा वैरागी

वाली पूर्वि पर बव सूरण की पहली किरण उठारती है, तो एक वयकदार एतर्सव इन्त्रवनुत का रूप से सेती हैं सास सुबह उठा तो बहर कुछ ऐसा ही एस नजर भाषा और मेरी आंखें वेसती रह बयी किरणों की और । वे किरखें ठीव वेंद्र ही हस पद्मी थी, जैये वाली के सोस मुख्युराते हैं। सूरण की इन वय-वमाती किरखों के साम वाली के लोगों का जाना सन्तन्त है। भाष्य सुबह उठते ही बहुत के किनारे टक्कने नया। सूरण की किरखें समुद्र की उठती निराती नहरों के साच वेंद्र पूर्वी थी।

सूरब कितना जवार है, यो तमी पर समान डॉट रखता है, बमान व्यवहार करता है। कुख में ही सोचना-पुनवा स्वाम संख्या खायन व्यायान करता रहा। इसने में हमारी पुन बीटर तथा वी ने सूचना वी कि हम बभी अस्पाहार के लिए रेस्टोरेस्ट वर्जे। बेंड, बटर, वात तथा फर्जी स्पीता, पंपीता, पंजुब सल्याहार के बाद खाव वर्जे वें बहुत कर सुन के बाद खाव क्षा

निसने बाना है। इतने में १ वसे ठीक नवनैर के निजी सिविब गाडी लेकर हम सभी को लेने झा गये। हम उनके साथ बासी के गर्वेनर श्री मन जी के झावास पहुँच वए।

बासी के गर्वनर श्री मत्र श्री का बैठक-काना देखकर इव सभी चकित रह गए। पूरे बैठक साने ने रामायसा की सम्पूर्ण चित्रावली संकित है। कही राम, कही सीवा, कही सदमण तो कही हुनुमान का चित्र। एक बहुत ही साकर्षक चित्र था सक्तम को अभित्रवाण सबने बाली घटना का। सामने की बीवार पर सेतृबांध के बंधने के समय का चित्र जिसमें बन्दर पत्थर समुद्र में डाव रहे वे । कई आक-वैक वित्र रामायण तथा महाभारत काल के भाकित देखें नये। कुछ ही देर बाद धन्वर ने बुसाहट या गयी और हम सभी ने सन्दर की बैठक में प्रवेश किया, की मल बी ने हमारा सादर स्वागत किया, विस्कृट के साथ चाय पितायी। श्री सत्यकेत् विकालकार ने बातचीत करते हुए इम सभीका परिचय करायाः श्रीमंत्र वी

के मशुर व्यवहार से हम बहुत प्रवासित हुए। प्रान्त में उनने साथ सामूहिक विश्व भी सिबे गए। उसके बाद उन्होंने पुन हमें प्रपनी वाड़ी से देन पसार बाबार तक कोड़ने की व्यवस्था की। इसने कई दर्ध-नीय स्थानों का प्रमण विश्व।

कला वाली के जीवन का स्रक्रिक भग है। वहां के लोग कला के प्रति सम-पित है। बाली के लोग प्रपने जीवन को नाटक समक्त कर जीते हैं। कहने का सर्व है कि धपनी जिन्दगी को हवें और उल्लास के साथ जीने के अस्यासी हो गए हैं। बासी के लोग मुस्करा कर जीते हैं। वहां मैंने कहीं भी ऋबढते नही देखा। परस्पर विवाद नहीं देखा। किसी के चेडरे पर चदासी या शिकन नहीं देखी । यहां एक सोनों का कहना है कि यदि दो मोटर खाइकिलें ब्रामने सामने टकरा भी वयी तो दोनों के चालक मुस्कराकर चल देने किन्तु परस्पर विवाद ऋगडा सम्बं नहीं करेंने। यह बहुत बड़ी बात है कि बासी के लोग हसी खुषी की जिल्दगी विता रहे है। बाली द्वीप मदिरों की नगरी है हवारों विख्यात मन्दिर हैं।

नोट—विशेष विवरण के सिए मेरी 'दक्षिण पूर्व एशिया यात्रा' पुस्तक पढ़ें।



धार्यसमाञ्ज यद्यपि एक सार्वभीम बाम्बोस्न है तबापि बार्यावर्त देश की उसने कभी भी उपेका नहीं की। उसके सस्थापक ने तभी जिल्ला था कि जैसा धार्यसमाच धार्यावत्तं देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि बार्यसमाज बार्यावर्त देख की उन्नति की धवडेलमा नहीं कर सकता। बह उसकी सर्वागीण उन्नति चाहता है। बह चाहता है कि आयों का यह आदि देश सभी प्रकार से समृद्ध, सम्पन्न एव शक्तिशाली बने। किन्तु आज देश के सम्मुल जिस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी है वह इसकी समृद्धि सम्पन्तता एव समर्थं बनने मे बाधक है। द्याज द्वलवाबवादी प्रवृत्तिया जितना खुल कर कार्य कर रही है उतना पहले कभी नहीं कर पाईं। कही साम्प्रदायिकता, कही प्रातीयता, कही जातीयता तो कही भाषायी भाषार पर सलगाव की प्रवृत्तिया दिनो दिन बढती दिखाई दे रही है। धार्यसमात्र एक देशभन्त सस्वा है। यत उसका चिन्तित होना स्वामाविक है। इसी लिए ग्रायसमाच सभी राष्ट्रवादी शक्तियो को इनके विश्व प्रवल समय करने का बाह्यान करना है।

बोट की राजनीति को प्रभावित करने के लिए सामृहिक धर्म परिवतन की विनीनी घटनामो स भी मायसमाज मस्यन्त कद्विग्न है और इसका प्रवल विरोधकरता है ग्रायसम् 1 श्रमपरि-वर्तन के पी जानदना शाक्तयों के हाथ और वन की धीर ब्यान दिलाना वाहता है भीर भाग करता है कि देश के ईसाई भीर इस्लामीकरण के लिए विदेशों से माने वाले वन पर श्रविलम्ब रोक लगाई वावे । साथ ही धार्यसमाज यह भी बाहता है कि सामूहिक धम परिवतन पर कानूनी प्रतिवध लगे । भागंसमाज भ्रत्य-सक्यको के नाम पर किसी वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की शासन की नीति को देश के लिए वालक समकता है। भौर इसमे श्रविवस्य बामूसचूल परिवर्तन की मांग करता है। साच ही भायसमाज वेश के तवाकवित पिछड बग पर सवर्णों के धरवाचारो की घोर निन्दाकरता है। धार्यसमाज बाहता है कि बस्प्रवादा बादि की घिनौनी मावनाए उन्मूलित हो बागें भौर सभी वर्ग विना किसी भदभाव के परस्पर प्रीति प्रेम एव माईचारे का व्यव-करें। भार्यसमाज यह भी चाहता है कि समाज के दूबस वर्ग का दुबलताओं का कोई भी राजनीतिक दल लाभ न उठाये भ्रपित् उन दुवसताश्रोक निवारण के सिए ठोस उपाय एव उद्योग करे। प्रायं-समाज चाहुता है कि सभी देशवासी बातीयता, प्रातीयता एव स्वार्थपरता धादि की घति सकीर्ण एव क्षुद्र भावनाधी से ऊपर उठकर सम्पूर्ण देश के हित की बात सोचें। बार्वसमाज देश मे राष्ट्रीय एव माववात्मक एकता का सम्पादन

## वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में आर्यसमाज क्या चाहता है ?

लेखक-यशपाल ग्रामंबध्

करना की प्रवृत्तियों एवं नावनाओं का प्रवृत्तियों एवं नावनाओं का उप्तृत्तियों एवं नावनाओं का उप्तृत्तिन कर समस्त देखानीं। एकता के शुत्र में प्रावद एवं निवद हो बाये। यह कार्य देखानिक की भावनाओं को उज्जापर किए बिना सम्भव नहीं। यह धार्यस्त्रात्ति की स्वाप्तित्त की भावनाओं के देखानिक की भावनाओं कि स्वाप्तित्त्र के सस्ता के ने धपने देखानीस्त्रों के लिए उद्योजन दिया वा कि—'हम और प्राप्ति की सित विवद है कि जिस देख के पराचों से प्रपत्ता सारीर बना, अब भी पालन होता है धाने होगा उसकी उन्नित तम मन धन ने सब जने मिलकर बीति के करें।

सार्यसमान गो को राष्ट्र की वार्षिक एव सारकृतिक वरोहर समस्ता है। गों के सार वर्ष समस्ता है। गों के सार वर्ष समस्ता है। गों के सार वर्ष सार्य सार्व नायों को सेवल हुए सार्य क्षमा को सेवल निषेष की मौग करता है। वार्षिक वर्ष से सार्य सार्व हिए से सी सम्पूर्ण गोवा के कब पर पूर्ण प्रतिकर्म की सार्य सार्व है। वह व हता है कि यो सार्व सार्व है। वह व हता है कि यो सार्व सार्व सार्व सार्व सार्व है। वह व हता है कि यो सार्व सार्व सार्व सार्व है। वह कि यो का सार्व सार्व सार्व सार्व है। वह कि यो का सार्व सार्व सार्व सार्व है। वार्ष सार्व है सार्व सार्व सार्व सार्व सार्व सार्व सार्व सार्व है। सार्व सार्व है सार्व सार्व सार्व है सार्व सार्व है सार्व सार्व है सार्व सार्व है सार्व सार

बार्वेलमाज का बद्यपि प्रत्यक्ष कृष से राजनीति से कोई सीवा सम्बन्ध नही तथापि वह राजनीति की उपेक्षा भी नहीं करता। वह राजनीति को स्वार्वपरता, साम्प्रदायिकता, प्रातीयता, बातीयता, धादि की सकी गेंता से तथा भ्रष्टाचार, मनाचार मादि से सर्वेदा उन्मुक्त देखना बाहता है। वह बाहता है कि देश का शासन सदैव ईमानदार, सदाचारी, बोग्य तथा नीतिमान् देशभक्तो के सदल हायो मे सुरक्षित रहे। मार्यसमाब रावनीति के वर्तमान अष्ट तौर तरीको की निन्दा करता है। वह चाहता है कि राजनीति अनीतिकाशिकार न हो। राजनीति के क्षेत्र मं बार्यसमाज बविकार बौर कर्लब्य दोनो को महत्त्व देता है। वह चाहता है कि अधिकार के नाम पर कर्सक्यों की विचन दी बाये एवन ही कलंब्य के नाम पर किसी को उसके अधिकारों से विश्वत

रका नाये। शायंतमाक चाहता है कि राजनेतामण देश के दिन को सर्वाचरि समर्फे धीर जनता के करनो के निवास में सर्वेद तरपर रहें। आयंत्रमाक चाहता है कि देश की समस्त सम्मदा एवं सामनो का उचके सभी नागरिकों को समान क्य वे उपभोग का समिकार हो एवं प्रत्येक क्यांति की उन्तरि के समान स्वसर प्राप्त हों।

धार्यसमाच वेद प्रतिपादित समाच-वाव साना पाहता है। यह प्रधातत का तो सनयंक है, पर मूलों के बहुमत का समर्थन वही करता। उसकी मान्यता है कि बोटो को मिनने की प्रपेक्षा तोलना श्रविक उपयुक्त एव श्रेयस्कर है क्योंकि एक मूर्च और एक महाविद्वान् की सम्मति एक समान कभी नहीं हो सकती। सौ मूर्जभी वदि किसी बात को निलकर कहे तो भी वह एक विद्वान् की बचार्य बुक्ति-युक्त बात की समता नहीं कर सकती। वत वार्यसमान बाहता है कि सविवान का दाचा कुछ इस प्रकार का बने कि विद्वानी की सम्मनि का विशेष सादर हो सके। बदाहरए। के लिए बैकों के राष्ट्रीयक सा के लिए एक अर्थसास्त्री प्रथवा नीतिनिषुण व्यक्ति की सम्मति एक रिक्सा चालक प्रयवा प्रनपट मजदर की सम्मति एक तुलापर नहीं रस्ती जा सकती ।

वार्यक्षमान ससार में न्याप्त सामा-जिक विषमताधी को दूर करना चाहता है। वह चाहता है कि बन्ध, जाति, कुस,

रंग तथा चन शादि के बाधार पर ऊच-नीच की मेरमूनक भावनाएँ परस्पर बन्ध हो जायें धीर मानव-मात्र एक ही परम पिता की सन्तान होने के नाते परस्पर मेम प्रीति. समता एव सह-प्रस्तित्व की भावना से रहें। बार्यसमाच प्रातत्व का पाठ पडाना बाहवा है। यह ऐसे समाच का निर्माण करना पाहता है कि वहाँ न वो कोई शोवक हो न कोई शोवित। बार्य समाज धस्प्रस्थता के कलक को सवा सदा-के लिए मिटा देना चाहता है। आर्यसमाक बाहता है कि प्रत्येक देश में वास-विवाह. वृद्ध विवाह, धनमेल विवाह एव वह विवाह भावि पर पूर्ण प्रतिवय समे और विवाह गुण. कम धीर स्वशाव के बाधार पर हो न कि जन्मयत जाति-पाति के बाबार पर । बार्यसमाज यह भी बाहता है कि ससार विवाह के बादशंको समसे क्योकि विवाह एक उत्तरदियत्कपूर्णं मर्या-दित कर्म है। दायित्वहीन धमर्यादित भोष-लिप्सा नही । यह एक पवित्र बन्धन है भोग का की नाइसेंस नहीं । शार्यसमान चाहता है कि सम्पूर्ण मानव समाच समुन्तत हो। मानव समाज एक धावर समाज बने। समाब की जन्मति के लिए बार्यसमाज व्यक्ति की उन्नति पर ब्राधक बस देता है । न्योकि सामाजिक इकाइयो का सामृहिक रूप ही तो समाब है। व्यक्ति के स्वरने से ही समाव स्वर सकता है। बार्यसमाय पाइता है कि प्रत्येक व्यक्ति भगनी ही उन्नति से सन्तष्ट न रहे किन्त सब की उन्नति में अपनी उन्नति सबसे यही सामाजिक उत्थान का मुससन्त्र है। मार्यसमाज चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति सही अर्थों में मानव बने अपने परिवार भीर फिर समाज को मानवता का पाठ पड़ाया । व्यक्ति-व्यक्ति के सुखरने है समाज, फिर राष्ट्र धौर शन्तत विश्व समर सकता है। और प्रार्थसमाम विका को सुधारना धपना परम कर्तव्य समस्ता

> इत्योम् सस् (यद्यपास शार्ववंतु) भार्य निवास, चन्द्रकार, मुरावाबाद-२४४००१

#### विश्वासहीन

के॰—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, प्रविच्ठाता वेदप्रसार

चोर सीर ज्वारी के, सराबी व्यक्तिचारी के, चरित्रहीन नारी के साथ नहीं रहिये।

बार दगावाज से, सारी वे सिहाच से, सामू नधेवाज से, बात नहीं करिये॥

नुष्डों की जमात में, छोसों की बरसात में, ऋगडे की बारात में, पैर नहीं घरिये।

कोडी की काया का, सपने की नाया का, बादस की खाया का, विश्वास नहीं करिये।।

इक भ्रान्त बारखा बप के सम्बन्ध अ ब्राव ब्रमारे समाज मे(हिन्दू समाज में) श्रमी सम भी वनी हुई है कि

> राम नाम का गिद्दा, बाहे पृक्षा बाहे सिव्धा ।।

क्यांत राम के नाम का जाप बाहे क्रमा क्या बाये चाहे तस्टा इससे कोई को पहला परमात्मा धवश्य प्रसन्न हो बारी हैं। इस सन्दर्भ में कुछ जीन कियी कृषि का यह कविता का अस अवस्य क्य वे प्रस्तुत करने हैं।

> क्रमा नाम थपा जग जाना। बाक्जीकि भये बहुा समामा ।।

श्रवीत् वह सर्वविदित है कि राम के बास का उल्टा जाप प्रचति राम राम राम ऐकान कहकर गरा गरा, गरा करते रमने से वास्मीकि ऋवि जो हुए हैं, वे बहा के समान हो गए वे। इस प्रकार के और भी सनेक प्रमाण पुराणों के समावा तुससी 'रामचरित मानस मावि के प्रस्तुत किये वाते हैं। साथ ही धनेक पुरावों की कपाएँ भी जो सर्वया अवैदिक हैं और विज्ञान सम्मत नहीं हैं प्रस्तुत की बाती हैं विनक्षे यह सावित करने की कोशिय की बाती है कि जूस से जी यदि किसी ने 'बारायण' वा 'राम' बावि सम्ब मुख से बोच विया तो मृत्यु समय में वह सब्मति को प्राप्त कर लेता है।

सबि उपरोक्त भारता बनक इन बाक्बों की बास्तविकता पर विकार करें को पता चलेवा कि ये मान्यताए अवैदिक बीच वर्णहीन हैं।

वर्वप्रथम को बप की बस्टि के राम बाब ही उपयुक्त नहीं है उसके लिए 'ब्रोडन' सन्द है और प्रत्यों के ऐसे अनेक अकास्त दिए वा सकते हैं को कोश्नृनाम भी महिला है भरे पढ़े हैं तथा की देन नाम े क्य का ही विचान करते हैं।

> धोरम् प्रतिष्ठ ॥ वेद तस्य वाचकः प्रख्वनः ॥ योव भोत्रम् इत्येकासरं पर वहा ॥ वीता

इत्यादि सद् ग्रन्थों के बाक्यों का इस दाम बाम से विरोध है। धौर फिर दूसरी बास बहु है कि बिका विचारे ही नाम स्वरूप (बप) करना कहां की समझदारी 🛊 ? इसके प्रतिरिक्त संस्टा नाम जपका वो **अरे** छपयोगी हो सकता है ? वह बात वो व्यवद्वार के भी विदद है। अवर कोई किसी का नाम सक्टा सेकर पुकारे तो क्या बह कुनने वासा एस पर गीर करता 🛊 ? नहीं। बल्फि बच्च सस्टा नाम सेने बाबा स्पष्टास का पात्र ही बनता है।

इस इस्टेगाम के जप वाली वसव क्या प्रमार्थ-बारका का निवारण करने 🗽 है केवल एक सुच को बोद सारत का

### जप का शास्त्रीय स्वरूप

#### धर्मवीर शास्त्री, विद्यावाचस्पति

है स्वाध्यायशील पाठको के सामने रख रहा ह पाठक विचार करे। सूत्र इस प्रकार है---

तज्जनस्तदर्यभावनम् ॥ योग १-५८॥

इस सूत्र में पतञ्जलि अध्ि जी अप की परिभाषा बसला रहे हैं। वे कहते हैं--'तत् जप ' उस परमात्मा के नाम का जप क्या है ? तदर्थभावनम् उस नाम के झर्यं की आवना। यह है जर। इसे हम एक उदाहरता से समर्भेने । जब हम 'जल शब्द का प्रयोग करते हैं तो 'जल कहते ही हमारे मन मस्तिष्क मे बल के गुली का बैसे बीतबता, तरसता, उससे व्यास के बुम्हने का, इत्यादि का विचार भी तुरन्त सा वाता है। 'सन्नि' शब्द को कहते ही सोवते ही इमारे मन में उसके बुज प्रकाशधीलता, उच्छाता बादि बुखो का तुरस्त ब्यान हो जाता है। किसी व्यक्ति को हम बुसाएँ तो उसके मुखो का हमारे जन मस्तिष्क में तुरस्त बामास होने सवता है। ऐसे ही परवात्मा का नाम, मुल्य नाम तथा जप की सन्दिते जो बिल्क्स उपयुक्त नाम 'घो३म्' 🖁 उसका बाप करने से उसके सर्व का भी चिन्तन होते रहना चाहिए।

परमारमा का अप की बच्टि से तो 'बोदम' नाग है वैद्या कि नोनदर्शनकार कहते हैं--तस्य बाचकः प्रसाव ॥ योग १।२६ उस परमात्माका बाचक मो ३म् नाम है तो जो वाचक है वह ही बन से विन्तनीय भी है। वैसे बाज वप के किए स्रोम प्रसान प्रसान नाम बताते हैं। कोई राम राम वपने की बात कहता है कोहें। नम सिवाय, कोई नमी जबवते बासुदेवाय कोई नवी जनवते, शादि धनेक नाम वप के लिए श्ताते तथा करते भी हैं परन्तु भोश्य नाम ही वप की वृष्टि से उपयुक्त है जैसा कि बोन वर्सनकार ने ज्यर 'तस्य बाचक प्रसाव ' में वर्शन किया भीर वह क्षप भी वैद्या हो "तञ्जपस्तवर्यभावनम् चल बोहन नाम का जप उसके धर्च की बावना पूर्वक करना चाहिए। उत्पर दिये वये स्वाहरली से हम वह समझ बये हैं कि किसी बस्तु के नाम का प्रयोग करने से उस बस्तु के गुज-वर्ग मन में बा जाते है। वैसे ही परवारमा के नाम बोरेम का भी जिल्लान जब हो तब वर्ष पूर्वक हो। 'बोइस' का धर्म मुख्य रूप है रक्षा करने वाशा होता है तो इस घोरम् नाम का बप करते हुए इस का सर्व "सवकी रक्षा करने वाला" जी जप का विवय होता थाडिए। 'क्रो३म्' का विचार मन में कठते ही हम सोचें कि वह परमारना सब

बसुधसुमे प्रविष्ट होकर मेरी रक्षाकर कर रहा है। यदि मैं बीमार हतो मेरी बीमारी दूर हो रही है। मेरी हर चीज की रक्षा का भार उसी का है। देवल शरीर ही नहीं बल्कि मेर मन मेरी भारमा है। श्रव मुक्ते कोई नहीं मार शकता, कोई नहीं सता सकता, भव मैं उसकी गोद में है मेरी भवभूत रीति से रक्षा हो रही है। मैं उसके सहारे पर हैं, ज्सके बाश्यय मे ह। उसकी स्नाया (सहारे मे) हु भीर को उसकी खावा में (बाश्रम मे) वा जाता है अनुतक्" सर्वात् विसकी खाया ही अनुत है विश्वका सहारान लेना मृत्यु जैसे कष्ट का कारता है सो मैं तो सामा में हूं। जसी को में पुकार रहा है। वह मेरे शरीर मे मेरे धाने पीछे दावें वॉर्थे ऊपर नीचे सभी बोर होकर नेरी रका कर रहा है। ऐसी भावना के साथ अप किया जाना चाहिए। धीर वास्तव में ऐसा जय ही ईस्वर के नाम का सच्या जप कहला सकता है।

कारक है, मेराभी रक्षक है। मेरे की रक्षाका कार्यभी वह कर रहा है। प्रव मेरे मन में स्वस्थता है। ब्राटना मे स्वस्थता है। बारीर में स्वस्थता है मेरी रक्षा हो रही हु। उस सर्वे रक्षक की जिसका नाम धी ३म् उसे जिलता है अन्त सुन । ''यस्य ञ्लाया

सन्नेप में कहे तो यो कहूना पडगा कि बोग दर्शनकार ऋषि पतञ्जलि प्रभू नाम के साथक अप के उद्वाटक व सम-यंक है।

हमे एक वात और घ्यान में रहानी होगी कि महर्षि पतञ्जनि योग (नपासना के) मामले में हमारे खिए प्रमाश हैं। क्योकि वे उपासना के विशेषज्ञ (स्पेश-सिस्ट **के। जैसे कोई बाल का** स्पेशनिस्ट डाकर होता है तो वह आस के बारे मे विजेष ज्ञान रसता है। कर्श रोग विशेषज्ञ कान के विषय में, हर्डी का विशेषज्ञ हुट्टी के बिपय में, पेट का विशाश पेट के विषय मे भा रेशन के मामले मे शस्य चिकि-स्सक विशेष जानकारी रखता है तथा ध्रपने विषय में प्रामाणिक माना जाता है। वैसे ही जप के बारे में योग दर्शनकार पत्तञ्जनिका बचन हमारे लिए प्रमास्त की की बड़ो जाता है। और वे कहते हैं--

्' सज्जपस्तदर्यभावनम्'' उस पर-मात्मा के नाम का अप उसके धर्म की माबना सहित होता है तो हमे चनकी बात को चप विशेषज्ञ समक्ष कर छो ३म नाम का सार्थंक मावना से जयकरना चाहिए। वाणी से नहीं मन से मनन पूर्वक अप करें। वही जय का शास्त्रीय स्वरूप है। नाम का 'उल्टाजाप या मूझ से लिया गया 'प्रभूनाम' जप की (स्थरक की) कोटि में नहीं बाता। बत- यह उल्टे 'नाम जप' की बारसा त्यान कर हमे धोदेम्' नाम का सार्यंक, भावना से अप करना चाहिए।

अंगिरा ऋषि का उपदेश (पृथ्ठ १ का श्रेष)

प्रकृति के प्रत्येक रूप की उसका रूप जान-कर उसे देखता है। धपने समान सबको समस्रता हैं। सारी प्रकृति की झारवर्ष वनक ्वार्ते उसका ही स्वरूप हैं, को जन सामान्य को दिखाई नहीं देती हैं। जानी पुरुष उसे शाव नेवों से देवता है। दूसरी विधा बात्मा की चन्नति का तरीका बताती है। उसी के ब्राप्त हमें सच्या युक्त मिल सकता 81

यज्ञ के विषय में शीनक ने पूछा---शंविरा ऋषि बोले-केवल सामी यज्ञो के इरने से भी हम उस उन्नति को नहीं कर सकते जिससे सच्या सुख मिनता है। केवस दान करने से भी उस सुब की प्राप्ति नहीं होती जिसे बानन्य कहते हैं। ये सारी वार्ते तथी जीवन में भाती है। जब बादमी कृठ न बोले, हिंसान करे, चोरी न करे, कोचान दे, इसन करे, घपनी बात्मा के समान सब की भारमाधी को जाने । यही बन्न करने का साम है, दान देने का उद्देश्य है। आसी यक्त किया, बासी बान दिया । बीवन में इन वातों को नही उदारा, वो सुब नहीं मिलेमा ।

दूसरे दिन वह फिर ऋषि के वास नया, इस बार ऋषि ने बताया--'अनवान खब के मन की बात जानते हैं। हमें बदा सस्य बोसना चाहिए। मन को बश से रकता चाहिए। कभी बुरे काम नही करने वाहिए। सासारिक सुक्रों के स्वान मे बाल्या की सम्मति पर व्यान देना बाह्यि।

यह सुनकर शीनक को सुझ मिला और ज्ञान मिला, ज्ञान नेत्र सुस वये। उसने धनिश ऋषि को प्रमाम किया। **घर सौट बाबा, उनके बताये हुए उपदेशों** के धनुसार विन विताने लया। एसका बीवन एव ग्रहस्य जीवन सुक्री हैं। गया । इस रास्ते पर जो भी चलेगा उसे ही सुक की प्राप्ति होगी। इस योकी देर के लिए मिलने बाला सुबा डूंडते हैं। बाद में हु बी होते हैं। क्यों न ऐसा सुख दूदें जो कमी समाप्त न हो धौर वह सुख है बास्मा एव परमात्मा को बालना। बाबो हम सब इसी रास्ते को हुई जिस पर कसने को धविरा ऋषि ने शौनक ऋषि को कहा वा।



### समाचार-सन्दंश

#### दिल्ली त्रार्यसमाजों क साप्ताहिक सत्सग कार्यक्रम १८ श्रमस्त ११८४ रविवार

**" इतापनगर- श्री भीवमदेव शास्त्री ।** ग्रहोकनगर—प० चुन्नीकाल ग्राये। धमरकासीमी- प० सदयश्रेष्ठ वर्माचाय । बार्यपूरीं - बहात्मा मुनिशकर जी। ग्रानम्बविद्वार-- प० विदेवप्रकाश शास्त्री सार्वोपर्वशक । इन्द्रपूरी- महास्मा राम किशोर वैश्व महोमदेशक। किंग्जवे कैम्प---प॰ क्रोमप्रकाश शास्त्री । ग्रेटर कैलाख न०१-प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री । गुड-मर्था-- प० वेदप्रकाश शास्त्री । योविन्द-पुरी-प न मरेन्द्रकृमार शास्त्री। चुना-मण्डी--- प० आशाराम भजनीक । जनक-पूरी बी-२-प० रमश्चम्ब वेदाचार्य) व्यवपुरा-धार्ववीर रखबीतसिंह राखा। टैगोर गार्डन-प• देवराज वैदिक मिश नरी । देवनयर-अभिती प्रकाशनती शास्त्री धार्य प्रचारिका । दरियायच--- प० समरनाथ मान्त सार्वोपदेशक। न्यु मोती-मनर--डा० वेदप्रकाश महेश्वरी । श्री निवासपुरी-डा० रघुनन्दनसिंह महो-प्रदेशक । नारायसाविहार-प० मूनीदेव भवनोपदेशक। श्रीतमपुरा - मा० मोहन काक गांधी जी। पंजाबी वाग---प० वर्म-

'म्यार्ग 🗀 दिवस : हमारा संकल्प'

माज हम भपने स्वाभीनता दिवस की शहतीसबी वर्षमाठ मना रहे हैं। नि -सन्बेह हमने भौतिक क्षेत्र में बसीमित प्रमति की है । निर्माश, विज्ञाम, टैक्ना-साबी, सेना व साखान के क्षेत्रों ने भाष्ययंत्रनक विकास हुमा है। राष्ट्र का बाह्य स्वरूपं पूर्णतया परिवर्तित हो गया गया है। उद्योगों की प्रयति भी कम गौरक की बात नहीं हैं। लेकिन इसके विपरीत उसी वित से राष्ट्रीय करित्र का भी पतक हका है। ऋषि मूनियों की पवित्र संस्कृति के देश में ग्राज मानवता कराह रही है। सारे देश से निम्न स्तुर से लेकर उच्च-स्तर तक, प्रत्येक क्षात में भीवता भ्रष्टा-चार, श्रकमण्यता, स्वार्धान्वता का साम्राज्य फैला हुआ है। भाई भाई के श्चन का प्यासा हो गया है। साम्प्रदायिक तनाव. श्रराष्टीय गतिविधिया राष्ट्र के माबे पर कलक बनी हुई हैं। वृसकोरी का बाजार गम है। तस्करी, कालेवन की बहतायत है। भपहरता, बलात्कार, बकैती, **ह**रया श्राच के युग में साधारण सी बात है। बहुआ के नाम पर इत्याए नियम्तर हो रही हैं। स्पवस्या, शान्ति की जिस्मे-दार पुलिस स्वय भ्रष्टाचार के शिक्जे से फसी हड है । नैविकता, मानवीयता, सञ्चरित्रता, सद्भावना लुप्त होती जा रही हैं। यदि इन्सान की इन्सानियत नहीं रहेगी, तो इस घसीमित भौतिक

वीर शास्त्री विद्यावाचस्पति । प्रशान्त विहार-स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती। पञ्चानीशाग एक्सटेन्सन- प० सत्यदेव स्ना-तक रेडियो कसाकार साथ प० जोती-प्रसाद डोसक कलाकार । वसई दारापूर-प० बलवीर शास्त्री । भोगल - अ० मनु-वेब धास्त्री । महरौली- -प० धमीचन्द्र मतवाला। मौडल बस्ती - प० तुककीराम द्यार्थं प्रचारक। सोतीवाग-- प० वेदव्यास भजनोपदेशक । राणाप्रताप बाग---प० प्रकोक विद्यासकार । रववरपुरा न० २--प० वयमगवान मण्डली । राजीरीगार्डन-महात्मा देवेशनिक् । लक्ष्मीवाई नवर ६०१२०८-४० सुबीलकुमार बास्त्री। सब्ब्याटी पहाबगज-प० नेत्रपास शास्त्री सोधनगण---प ० सोमदेव सास्त्री । भीनगर पण्डित प्ररिक्षन्द्र शास्त्री । शासीमार बाग- प॰ मनोहरशास ऋषि । हीवसास-क रामवीर हास्त्री ।

> क्यवस्थापक स्वामी स्वक्यानन्य सरस्वती प्रविष्ठाता बेक्प्रचार विशास

विकास का क्या होगा ? बाइए। हम बारत के लोग, स्वाची-नता दिवस 🕏 पूज्य पर्व पर सकल्प तें एक महान् राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी अवृत्तियों को समाप्त करने का। यही स्वाधीनता के लिए गर मिटने वास्ते के प्रति सन्त्री सदाञ्जनि

भववीय.

#### चतुर्वेद पारायगा यज्ञ

२१ मगस्य १६८५ प्रात काम १ सित्तस्वर तक यज्ञ भवन प्रयाग निकेशन जवाहरनगर विल्ली ने श्री स्वामी जीवना-नन्द एव प॰ सम्रपति शास्त्री की भष्यक्षता ,से चतुर्वेद पारायण यज्ञ का धायोजन किया गया है। श्रद्धालुखन जारी सस्यामे प्रवार कर वर्गसाम चठावें।

Cohen धर्जु नदेव

#### वेद कथा---

धार्यसमाज लाजपत नवर नदी दिल्ली मे २६ धनस्त से ३१ धनस्त तक रात्रि १ ते १० वजे तक कथा प० सिव-कुमार जी शास्त्री मूतपूर्व सांसद द्वारा होगी। अवन रात्रि दसे १ वर्षे तक श्री नुसावसिंह की रावन के होंने।

> प्रेवक प • नेवरवाम

#### श्रार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पंजीकत) १४ इनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सूचना

धार्वे केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, की सामारण सभा की बैठक रविवाद १८ बगस्त १६०६ को साथ ३-३० वर्षे बार्य समाच मन्दिर हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ मे होगी।

विचारगीय विषय-

१ कोक प्रस्ताव

ए गत बैठक की कार्यवाही की सम्पृष्टि ।

> ३ वार्षिक विवरण (रिपोर्ट) ४ नत वर्ष के बाब-व्यय का व्यौरा

इ नये वर्ष के लिए धविकारियो एव धम्सरम समा का निर्वाचन ।

६ श्रान्य विषय । बाप इस सबा के माननीय **श**बस्य है। कुपया धवस्य दर्शन दें।

#### वेढ प्रचार सप्ताह

भारत की समस्त बार्यसमाजें वेद प्रचार सप्ताह सगस्त सितम्बर में धपनी-धपनी धार्यसमाजी में वेद कवा कर मनाती हैं। बापसे प्रावंना है कि इस वर्ष भी यह कार्यक्रम अवस्य रखे । इस उप-सक्य में धापको किसी विद्वान की धा-वस्यकता हो तो बाप हमें सूचित करने की क्रपा करें । बापसे एक प्रार्थना सौर करनी है। जैसा कि दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सन्ना की मार्थसमाजें एक सप्ताह रक्षा-बन्धन हे नेकर जन्माष्टमी तक देव कवा हप्ताह मनाती हैं। अञ्झाती यह रहेगा कि इस सप्ताह से एक सप्ताह पहले व दो सप्ताह

### श्रार्यममाज की प्रधान सङ्क दुर्घटना में घायल

बार्यसमान, उदयपुर की प्रधान रावेश्याम 'बार्व' एडवोकेट "बीमती मामती बग्रवाल कल १-द-दम् राति चरक सात्राबास के पाब कार पेड से टकरा जाने के कारण धायल हो यह । ततकास उन्हें सामान्य चिकित्सामय के भाषातकालीन कक्ष पहुचामा नया जहाँ उनकी धास्त्रों में शीशे चले बाने के कारण राजि को ही भापरेशन कर निकासा गया दुर्बंटना का कारण ज्ञात करने पर बालूस हुमा कि सामने से सारही बस से बचाव करते समय यह दुटबैना हुई।

बार्यसमाज के मनी ज्ञानप्रकाश मुप्ता ने एक विज्ञप्ति में बतकाया है कि आज धार्यसमाज मन्दिर मे होने वाली बतरम की मासिक बैठक स्थगित कर बी नई तना साप्ताहिक सत्सव के उपरान्त समस्त सदस्यों ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य साम की ईक्कर से पार्वमा की ।

श्रीमती अग्रवास सामान्य विकित्सा-सब के महिला नेत्र कक्ष के प्रस्त न० १ (एक) में नवीं हैं उनकी तबीयत पहले से सुवार पर है।

> (ज्ञानप्रकाश मुप्ता) धन्त्री, बार्वधनाथ सरवपूर

नोट १ सहयूक्त सदस्यों से विश्वय भनुरोष है कि वे अपना सदस्यता शुल्क 1/- रुपये कार्यालय में जमा करा दें धववा १८ धनस्त १६८५ को साथ सते बावें।

२ जिनसमाजो ने सभी तक दश-द ६ का सम्बन्ध शरक ३०/ रुपवे और २ प्रतिनिधियों के नाम, घर के पते सहित. सदस्यता बुल्क १०/- रुपये प्रभी एक वहीं नेजा है, वे भी कार्यासय ने जमा करा दें समना सामारता बाविक समिवेकन ने साथ नेते वाने ।

३ समा कार्यासय सभी कार्यदिवसीं पर अपराक्ष ३ से ६ बजे तक स्वा रहेगा।

> घवदीस (सूर्यवेव) महामन्त्री

### श्रवश्य मनाइये ।

बाव भी यह प्रोग्राम बना ६ कते हैं। इस उपलक्ष्य में हम बापको बच्छे विद्वान उप-तक्य करा सकते हैं। दिल्ली की मार्थ समाची बौर स्त्री धार्यसमाचाँ मे हर रविवार को सत्सग होते हैं। धगर रवि-बार या किसी धन्य दिन के लिए छपदे-गको मजनोपवेशको की धावस्थकता हो तो सभा कार्यासव को सुवित करने की कपाकरें।

> महामन्त्री डा॰ वर्गपास विल्ली धार्य प्रतिनिधि समा १५ हनुमान रोड, नई विस्ती-१

### योग्य रिश्तों के लिए मिलें

भाषकस योग्य वर या सुधोरव वध को लोब पाना, उत्तम कूलो का निस पाना, विना बहेब के विवाह इच्छुकवर प्राप्त कर सेना अस्यन्त कठिन कार्य 🌡 सुशील गुजवती सुन्दरवधू को इ.ड पाना श्रसाधारता कार्य है। अनसेवा को ध्वान मे रसते हुए दिल्ली बार्य वितिष्धि समा ने वयस्क लडके लडकियों के मेस विसान के बिए धावसे बार्य विवाह केन्द्र की क्यापना की है। बत बाप बपने सुपुत एवं सुप्रियों के नाम बीझातिबीझ सभा कार्यासय मे पजीकृत करायें। धपने परि-चय पत्र मे निम्न जानकारी देना न मूर्वे-

१ बायू, कद, शिक्षा, वर्श, व्यव-साय, फोटो कापी ।

२ भपनी इच्छा-नया धाप बाहर नेवन के पक्ष में हैं<sup>?</sup> परिवार के खबस्यों का परिचय शाकाहारी समबा "'क्या कोई रोग वो नहीं है ? क्या चन्तरवासीय विवाह करना चाहेगे।

> सयोजन धादर्श धार्य विवाह केन्द्र दिल्ली आर्थ प्रतिनिधि संबा १६ हनुमान शेड, नई विक्की

#### उपदेशक विद्वानी का सम्मान करे

(पुष्ठ १ हे बावे)

वेदप्रचार विभाग के व्यविष्ठाता स्वामी स्वरूपानद वी ने अपने यत वर्ष के कार्य का विवरण दिया धीर बताया कि दिल्ली सभा ने इस वर्ष प्रायंसमाबी एव विद्यालयों के प्रतिरिक्त बार्यों में, पुनर्वास काकोनियों ने पिस्तकी बस्तियों में फुली फोंपडियों में तथा सार्ववनिक स्वानों पर सफलता पूर्वक वेदप्रचार कार्य किया है। इसके बाद उन्होंने महानुमाबी के सुम्हाव ग्रामित किए।

मुख्य प्रस्ताव निम्न प्रकार है --

१ वेदप्रचार विमान ऐसा प्रमास करे कि आयंसमाजों ने बनता का सना-दर न हो तथा सन्त समय में स्थान और समय का परिवर्तन न किया जाये तथा कहीं पर भी एक साथ वो प्रचारक न सेवे बार्चे ।

२ बार्यसमाची को यह निर्देश विमा बाये कि वे उपवेशकों को समुचित मार्व-अवय तथा दक्षिणा दें तथा उनका खलपान बावि से सरकार करें।

३ समा के बैतनिक सर्वतनिक उप-देखकों की बैठकों नहींने दो महीने ने सबस्य

बुखानी जाया करें। ४. सभा का साप्ताहिक पत्र सार्थ बन्देस सभी उपदेसको को नि सुरक भेवा बाये ।

का प्रयोग सच्या हवन स्नादि सिस्तनाने, मस्कृत एर ने वाचनासय की व्यवस्था करने तथा योग बादि की कक्षाएँ सनाने वे किया जाये। ६ सभा की स्रोर से सार्वजनिक रूप

उचित सम्मान हो तथा उनकी समदायों

क्षे तपदेशको का सम्मान किया बाव ।

७ उपयेशको की क्षमता बढाने के सिए उन्हें प्रश्विक्षण दिया बाना बाबस्यक है. विसके लिए बोग्य विद्वानी द्वारा चन्हें प्रशिक्षित कराया **वा**ये।

द उपदशक समय पर **मार्यसमा**ज मन्दिर में पहुँचें तथा बहा तक सम्भव हो प्रवने भावता को पहल से तैवार करके से वार्ये । वे वैदिक सिखान्तों के प्रमुखार ही बोर्ले।

६ ब्राह्मण, सम्बाधी, विश्वार्थी इन्हें सम्मान की बाकाक्षा नहीं करनी चाहिए, यदि यह परिश्रम से कार्य करेंने तथा स्थान की बावना रखेंने तो इनका सम्मान स्वय-नेव होवा ।

१० प्रचारकों का बीवन वैका ही हो वैसा वह बोसते हैं। वह तब एक ऋण्ड के नीचे बनुवासित रहकर कार्य करें। प्रचार और व्यवहार दोनों में ही उपदेशको को ग्रण्या होना चाहिए। यो कार्यक्रम वह स्वीकार करें जनमें वह सबस्य पहुँचें। इस सबय में बैतनिक ना प्रवेतनिक तनी उपवेशकों को धपने कर्तका का पालन करना चाहिए।

११ मार्वसमार्थी के मधिकारी ५ सार्वसमायों ने पुरोहियों का अद्वासीर सद्वाव का परिचन दें।

१२ बायसमावों को हमें बादीवाद नही बनाना कान्य । बार्यसमाब गन्दिरी का उपयोग मुकत बेद प्रचार के मिए ही किया जाना चाहिए।

१३ सभाप्रचान की सूर्यदेव की न बैठक का समापन करते हुए कहा कि वहा शोग्यता है उसे कोई ठुकरा नहीं सकता। शिष्टाचार कहता है कि इस मान बासे बक्ता का गम्मान करें। बार्यसमाम मे धपनी बात को कहने की सभी को स्व-तन्त्रता है। कुच ग्रन्थ समठनो मे तो प्रचारक प्रपनी बात कड़ भी नहीं सकते। बदि हम बाबारवान हैं तो निश्चव ही हमारा सम्मान होगा। यदि हम उच्छ ह्य में हो हमारा सम्मान हमारे बज्ये भी नहीं करेंने। कमिया अधिकारियो, उपवेशकों दोनों में है मैंने देखा है प० रामचन्द्र देहसवी सदर बाबार से चलकर ग्रपनी बटाई तेकर बाते वे तवा रेलवे स्टेखन के सामने भीर ज्यादा मीड हो बाने पर पार्क ने प्रचार करते है। माज के प्रचारकों को उसी कर्तव्य भावना से कार्य करना चाहिए। उन्होंने बाद ने सभा की बार्षिक स्थिति से भी उपस्थित खबस्यों को सवनत कराया ।

स्वामी स्वरूपानम्य सरस्वती प्रवि काता वेदप्रचार विजान ने सभी उपस्<del>वित</del> सदस्यो को समूख्य सुम्हाव तथा स्वस्य रहते हुए वेदप्रचार में समान रहने का धाधीर्वाद दिया। भी बेदप्रत अर्माने धन्यवाद देते हुए कहा कि मान्य विद्वानी

हारा दिये वए सुफार्कों के बनुसार हुन कार्य करने का पूर्ण प्रवास करेंबे, तथा उपदेशकों वे सम्मान के सिए वयास्रवित प्रयास करेंगे । उन्होंने आर्यसमान बीवान हाल के बनिकारियों का इस बैठक की व्यवस्था करने तथा जनपान द्वारा स्था-नत करने के सिए चन्यवाद किया।

इस बैठक मे स्वामी स्वक्यानम्ब सर-स्वती, सना प्रचान भी सूर्यदेव, सभा महा-बन्त्री डा॰ वर्मपास, बन्त्री भी वेदस्त शर्माश्री सोमदेव सर्मा शास्त्री साचार्य रविवस नीतम, प॰ सक्मीदास स्त्री अस प्रकाश बार्य, श्री नेत्रपास बार्य, सी समर नाव कान्त भी रखबीत सिंह राखा, भी वमनवास श्री बहाप्रकाश वानीश, श्री बर्मबीर सास्त्री श्री मनुदेव सास्त्री, श्री बादराम बार्ये श्री बच्चपाल सास्त्री, श्री बनोहर सास ऋषि भी हरिदेव सामार्थ, श्री कुम्मीलास प्रार्थ, श्री सत्यदेव स्नातक की बेदम्बास की मुनीदेव पार्य, की **अ्योति प्रसाद भी रामकिशोर वैद्य, भी** बह्मप्रकाश शास्त्री, जी वश्पान सुवासु, भी वेदपाल शास्त्री भी रामचन्त्र समी, बी बनेबकुमार सारी, जी ससाराम प्रेमी, श्री गुलावसिंह राजव भी उदबक्षेक, बर्बाचार्य, की बसवीत सास्त्री, की विचा-राम मिश्र याचार्य भी समीचर नतवाला क्षी स्वामी जगदीस्वरानम्द सरस्वती, भी स्वामी ज्ञानेपरयानम्य बादि ज्यस्थित वे ।

> स्वरूपानम्ब सरस्वती प्रविच्ठाता वेदप्रचार विमान

सर्वस्व ग्रर्ण्ण करने वाले 'होता' : (पुष्ठ १ का शेष)

है दे महर्षि दयानन्द के प्रनुयायी जिनके कारण स्वाधीनता का यज्ञ सफल हुमा क्योंकि देश की माजादी के लिए जेलो मे जाने वाले द० प्रति-शत बार्यसमाजी थे। शूर वर्म के इन पुजारियों को देश जाति का प्रशाम ! क्योकि-

शूर वर्ग है, मभय दहकते ग्रगारो पर चलना, शूर वर्म है को गित असि पर घरकर शीश मचलना। शूर वर्ग कहते हैं, छाती तान तीर साने को, **जूर धर्म कहते हैं** हसकर

हलाहल पी जाने को ॥ इन्ही अपर बलिदानियों के कारण ग्रन्थेरे के बीच स्वाधीनता का सूरज उगा। भाज का भारत २१ वीं सताब्दी की घोर सुनहरे भविष्य की कामना लिए बढ रहा है परन्तु जैसी वर्तमान विकट स्थितियों हैं उन्हें पार करना मामयिक चुनौती है। इस समय चुनौती है। बढती हुई बाबादी घोर गरीबी, प्रशिक्षा, जातिवाद, क्षेत्रवाद भीर सब से कूर ग्रातकवाद। रवीन्द्रनाथ ने लिखा **शताब्दीर सूर्व माजि** रक्तमेष बस्त गेली हिंसार उत्सवे, भाजि बाजे। ग्रस्त्र शस्त्रे सकारे उन्माद रागिनी, भवकारी। दयाहीन सम्यता नागिनी ॥ स्वार्थ बघे सघात लोभे लोभे, छटे छे सग्राम प्रलय मचन भोषे।

"इन रक्तवर्ण मेघो के बीच इस शताब्दी का सूर्य अस्त होता दिसाई देरहा है। प्राज हिंसा के इस उत्सव मे सस्त्र घस्त्रों के बीच धाधुनिक सम्बता नागिन बनकर मृत्यु भी भवकर रागिनी पर नृत्य कर रही है। मनुष्य का एक स्वार्थं दूसरे स्वार्थ से टकरा रहा है। लोभ के साथ लोभ का संघर्ष मचा है और इस प्रलय सम्राम मे रत मानव बाल्मविश्वास के पथ पर बढता चला जा रहा है।<sup>८</sup>

इस मन्धड भरे तूफान न भी ग्रात्मविश्वास का होना, ग्रागे बढने की शक्ति सजीये स्वाना, सकल्प की ब्दता भीर दूरहब्टि का होना प्रत्याः वश्यक है। यही हमारे राष्ट्र की गौरवपूर्ण प्रस्मिता है।



महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) सिंग

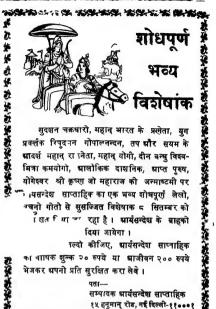
ales, handstan Angles and in

5 538808, \$37887, 537**343** 

Post in NDPSO on 16-8-85







सुदशन चक्रधारी, महान भारत के प्रस्तेता, यूग प्रवर्त्तक रिप्दान गोपालनन्दन, तप ग्रीर सयम के भादर्श महान् रा निता, महान् योगी, दीन बन्ध्र विश्व-मित्रा कमयोगो, मालोकिक दाशनिक, म्राप्त पुरुष, योगेश्वर श्री कृष्ण जो महाराज की जन्माष्टमी पर ै।यसन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोघपर्ण लेखो. न्चनो गोतो से सुसज्जित विशेषाक द सितम्बर को ा शत िया जा रहा है। स्नार्यक्षन्देश के साहको दिया जायेगा।

**ग्**लदो कीजिए, भार्यसन्देश साप्नाहिक का बाविक जुल्क २० रुपये या श्राजीवन २०० रुपये भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

सम्पादक श्रायंसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ 

लिए उत्तम स्वास्थ्य गुरुकुल काँगडी फार्मेसी. हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें



वासा कार्यासय-६३, वली रामा केवारमाय, चावती बाजार, विल्लो-६ फोन । २६१८३८



बय १ प्रक ४० मुख्य एक प्रति ५० पैसे रविवार ४५ मगस्त १६=इ वार्षिक २० दपने सच्छि सबत् १६७२६४१०६६

बावस २०४२ **ब्रा**जीवन २०० **ब्**पय

वयानन्वाब्द--- १६१ विवेश में ४० डासर ३० पाँड

### निराशा वादी शल्य मत बनो, आशा और मेठता के प्रतीक कष्ण बनो -रामगोपाल शालवाले

नई दिल्ली १८ ग्रगस्त १६८५। माय केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के निर्वाचन से पूर्व सामयिक प्रधान का भासन ग्रहण करते हुए सावदेशिक ग्राय प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान लाला रामगापाल जालवाले ने कहा कि झाय केन्द्रीय सभा दिल्ली की स्थापना उस समय हुई थी जब देश भार में कही भी ऐसी सभा नहीं थी। कानपुर में काफी समय बाद के-द्वीय सभा की स्थापना हुई। मार्य केन्द्रीय सभा दिल्लो का भाना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी सभा के तत्वावधान

में चीन के हमले के समय तहकातीन गृहमन्त्रीश्री चह्नाए। को रामलीला मैदान में भायोजित विशाल समा रोह मे ५१ हजार रुपये भीर एक तलवार भट की गयी थी। समुचे देश मे इत्सभाकी छाप है। मुक्ते दुख होता है जब मेरे कुछ निराश साथी सब कुछ करते हुए भी कहते हैं।क हम ग्रच्छी तरह नहीं कर पाये। सब तरह सम्पन्न होते हुए भी कहते है कि हम भूखे हैं नगे हैं। मैं मानता ह कि हमे और अधिक कार्य करना चाहिए।सगठन के भन्तर्गत कार्य

करना चाहिए। करते हुए लोगो के मार्गमे ब्रवरोध नहीं पैदा करने चाहिए। हो सके तो उनको सहारा देना चाहिए। मुक्ते यह प्रसग याद बाता है जब महाभारत के युद्ध मे कर्ए के सारची भ्रत्य के और वे उस वार योद्धा कर्ण को बार-बार सूतपुत्र ग्रयोग्य कहकर हतोत्साहित कर रहे थे। जब सारथी ही हतोत्साहित करे तो कार्यकर्ता कैसे कार्यों को सुचार रूप से सम्पन्न कर मकता है। दूसरी धोर कृष्ण हर प्रकार प्रज्न को प्ररित कर रहे थे उमका उत्साह-

वर्षन कर रहे थे उसका मोहभग कर रहे थे। द्रोपदी चीरहरण श्रीर सभिमन्य की मृत्य का बदना लेने के लिए उकसा रहें थे। परिगामत विजयश्री भी पाण्डवो को ही मिली जिसमे कृष्ण का बहत बडा हाथ था।

इसलिए मेरे प्यारे भाइयो. उत्साह से काम करा। सावियो का उत्साह वधन करो, उन्हे सहयोग दो। जीत तुम्हारी होगी। उन्होने पजाब की समस्या मीनाक्षी ५रम मे किये जा रहे कार्यों पर सतीष व्यक्त

(शेष पृष्ठ ६ पर)

## केन्द्रीय सभा के निर्वाचित प्रधान श्री महाशय धर्मपाल



भी महाशय धर्मपाल दानवीर, धर्मप्रिय, श्रत्यनिष्ठ, निक्छल सरम प्रकृति के स्वामी, एम॰ डो॰ एव॰ प्रा॰ सि॰ के स्व-रवाधिकारी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति बहाशय वर्षपाल बार्व केन्द्रीय सभा

दिल्ली राज्य के प्रधान सर्वसम्मति से हुवं भीर उल्लास के वातावरण मे निर्वाचित हए।

श्री महाशय धर्मपाल भपने पूज्य पिता श्री स्व० महाशय चुन्नीलाल के सत्यनिषठ ईमानदार, परोपकारो, दानी स्वभाव को मादश मानकर समाज सेवा में सलग्त हैं। उन्होंने भपनी पूज्या माता चन्ननदेवी की मधुर स्मृति को जीवन्त रूप डेने के लिए माता चन्ननदेवी मार्य धर्मार्थ नेत्र विकित्सालय सुभाष नगर मे बनवाया जो हजारो रोगियो को नेत्र ज्योति प्रदान कर रहा है। जनक पूरी में भी दो बढ़े बस्पताल दू खियो के दुबहरण का कार्य महाशय जी भूभ सकल्प के कारए। कर रहे हैं। श्रो महाशय चुन्नीलाल चैन्टिंबल इस्ट के अन्तर्गत एक बनता किरता (क्षेत्र पुष्ठ ११ पर)

#### महामन्त्री श्री त्र्यशोक कुमार सहगल



बी बंगोक कुमार सहयस

कर्मठ कार्यकर्ता चून के धनी, हसमूख, मधुर स्वभाव जनसेवा के लिए क्रुनसकल्प समेरिकन एक्सप्रस बेक के उच्च अधिकारी, बहुषि दयानम्द भीर भार्यसमाज के भगाष

श्रद्धाल श्री श्रशोक सहगल के श्रायं केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री चुने जाने पर हार्दिक बन्नाई।

श्री प्रशोक महगल धार्यसमाज राजेन्द्र नगर के १२ वर्षों से लगाता र रहे हैं। उनके कारण उस क्षेत्र के जन जन तक भ्रायममाज का सन्देश पहचा है। ग्राय केन्द्रीय सभा दिल्ली के वे १६७४ से लेकर १६७८ तक महामत्री रहे। उनके द्वारा उस काल में किये गये कार्यों को आर्य जगत भाव नक स्मरण करता रहा है। १६७५ की भन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के वे समोजक थे। दूर दराज तथा देश-देशान्तर से पधारे लाखो बायो के स्वागत सम्मान भौर भावास व्यवस्था के लिए श्री अशोक कुमार की सेवा की काफी प्रश्रसा को गई थी।

#### सत्संग वाटिका

(सव यत) जिस जिस स्थान मे तू (मम्बेह्से) कम करता है उस उस स्थान में (न) हमारे जिए (यनवम्) क्षमय दान (कुद) कर (न प्रकास्म) हमारी प्रका के जिए (तम् प्रधान) करमाक करक प्रकार (कुद) करो धौर (न पशुच्य) हमारे पशुची को मी (यसवम्) प्रमायवान कर।

भन मन्न में इंत्यर से प्रायना करते हुए कहा गया है कि है इंत्यर ! जिस जिस स्थान से गुम्हारा कम चलता है उस उस स्थान से हमारे लिए हमारी प्रजायों और प्राप्त के लिए कस्थारण मय समयदान कीविए !

क्ल्याण कारक परपेववर प्रमाप कैंवे है। अय कोई वस्तु नहीं है। यैने एक घटना कहीं। पढ़ी भी कि एक बार एक बाकू विस्त पर कई हत्याधों के सिश्योध थे और वह धाजीवन कारावाल की सब्त भूगत रहा था। एक दिन जेल के पहुरेवार के कमरे में पहुचा जहां चाभियों रखी हुई थी। पहरेवार मेर उसके सम्य साथियों की प्रोर पिश्मील ताल कर बोला हाथ उपर करों।

उस डाव की भयकरता का अनुमान करके उसकी माज्ञा के मनुसार उहीने हाथ उरा दिए भीर उसके पूछने पर चामियो कार छाभी से बतादिया। जसने पहरेदारों के सन्दरको छोडकर दूसरी का कालको रियो में द कर दिया। फिर सरदार मे कहा चलो फ कलोनाग्रर भुः रकार मोटर पर शहर के बाहर चलो सरदार उसे लक्द बाहर निकला जहा जेलर पेडो कैन वटहल रताथा जेलर न एक कैदी को सरनार कसाय द्याराम समीन्र मे बैठन देखान उस कोई सदेह नही हुग्रा। नसलमय डाक पिस्ती को कान केन च छिपाए हुए गा गर यह तनी सर दरकी ही शोक्छी

कुछ बूर जाकर उसने सरदार को मोटर न रिव ना निया और स्वय गोरर कप ने ना न गरदार के नीव रनरन पर नह पिस्तीन सरदार के सामने न चाटक बी उसे नमस्ते की और मोटर स्टटकरदा।

मोटर के चल पड़ने पर जन सरदार को होश धाया और उसने वह पिस्तोल पड़ी दली तो उस समफ प्राया कि यह लक्ष्मडा को पिस्तोल है और मैं व्या ही चर रहा था। इसी प्रकार जीवन म श्रम भी लक्ष्मी की पिस्तोल है। हमारी धिषकाछ सीम ए भीर निराशाई लक्ष्मी क रिस्तोल की खलना से धिषक नहीं। हम खलनाक्षी

### निर्भय बनो, निर्भय करो

सरेशचन्द्र वेदालकार

यनो यत समीहसे ततो नो ग्रमय कुरु। श न कुरु प्रजाम्योऽभय न पशुक्य ॥ यजु० ग्र० ३६ । म० २२



को न पहचान कर उन्हें यदाय की शक्ति देवेते हैं। तब वेहमें दुवा के कारागार में बाल देती हैं और सभी सुबोगों से विश्वत करदेती हैं।

हमें बीवन में बानेवाली प्रापत्तियो से भयभीत नहीं होना चाहिए। प्रत्येक भापत्ति समिश्राप ही नहीं होती । जीवन में बाने वाली प्रारक्षिक ग्रापक्तिया धनेक नार बाबीबांव सिद्ध होती हैं। वेहमे शिक्षा भी देती हैं और इसारे प्रयत्नों ने हमे साहसा भी बनाती हैं। इनसिए इस मत्र मे कहा गया गया है कि हे ईश्वर ! बाप हमारी धौर हमारी प्रवाबी की रक्षा कीजिए धौर बाभय कीजिए जिससे निडर होकर हम नव अपने कर्मों को कर सक। परमेश्वर के निजा भीर मुख्य नाम भी श्रम् श्चाद का प्रय ही यही है। परमेश्वर क्यों कि हमारी रक्षा करता है इसलिए उसे ब्रो३म् कहते हैं। वह परमेश्वर नि छल साहस पूजा कार्यों मे सदा हमारी रक्षा करता है। परमेश्वर सत्य साहस धीर निष्काम कम में कैस मनुष्य की रक्षा करता है <sup>?</sup> एक एतिहासिक घटना द्वारा यहमत्य देखाजास्कत हे

यूनान म एक गुलाम ल नदान ये किया नायक स्वाकार था। सीर्य उठका इस्टेब था। यहीं एक स्वान्त नाय थी र जुलामें के लिए सलित स्वा का स्व अवस्थ कर दिया गया जिन नि में यह कानून लागू किया गया जा दिनों कियो कुछ सु दर यूतियों के नियां पूर्व के सम्पन्न के दुक्कों में उस समने दुव्य की सनुपूर्ण किलाकर उनमें साल्य अल ने थी। उसे कला वा सर्वेतम पुरस्कार दूर के सम्राट परी समीय से पाने की साला थी। पर इस कानन ने उठकी साथा थर उपाराण कर दिया।

हियों की एक नहुत था। उसने यह समाचार जानकर सन्न हृदय से अपू से अपना की है देववर मेरे बाद की रख्नु करों । पुस्तुरे वरणों में हमारा बरतक धर्मित है। तुम्बुरों कृषा ही धव हमारी रक्षा कर बकती है। तुम्बुरों कृषा हो कि कला के विकास में हम निवर होकर सबुयों कर वहाँ। बहु सपने भाई को लेकर तहकाने में गई स्नोर उसे सपना काम वालू रखने की सलाह वी। उसने कहा इसमें मैं भी पुम्हारी सहायता करूपी। भगवान् हमारा साम देवे।

ज्ही विनों एवेन्स ने कता के नभूमों की प्रदेशनी का सायोजन हुसा। पेरीक्सीब उसका सभापतित्व कर रहे थे। एक स्थान पर सुन्दर पूनिया थे। ऐसा माझूब होता था कि वैसे समित कसामों के स्थिप्टाता देशना स्थोनों ने स्वय उनका निर्माण किया है।

ये मूर्तिया किसने बनाई है?
दसको ने पूछा । शानित एका कारत व्यदक स्पन्ने वाली पूल मरे वालो वाली धम बता हो मूर्ति सी एक सकती को पक्ष बाए। पर फिर भी लडकी नहीं बोली। पेरैश्लीक ने उसे कैरवाने से बाले का धादेश दिया। इस धादेश को पुनते ही भी की नारता हुए। एक पुनक पेरी ननीव के पाय पूच धोर बोला कमा करी। उस लडकी को बचा ला। धम रामा में हूं ये मूर्तिया मेरे गुलाम हाथो ने तैयार की है।

गुलाम धौर कला ? जनता चिल्लाई इस चेल में बन्दकरो।

परीवनीज ने खन्द होकर कहा अब नक में व जंवत हुएंचा नहीं हो सक्दाा । माज भी क्या के इधिहास में कियों का 11- नमर है यह है परपेस्वर द्वारा प्रदक्त प्रस्तय का उदाहरण । इश्लिए सज बहुता है कि है ईस्वर । तु बहु सबहु विस्थान है वहाँ वहा हमारी प्रवासों को निमय कर स्थीर उनकी रुआ कर।

भय धारण विषयात का वानु है। अब के कारण दुनिया से बहुत से बोग धायणी मोस्या का लमुचित पुरस्कार पाने से विषय पहुँची हैं और धारने बसुतुशों से स्वव की धारने परिवार धीर सवधियों को तथा धारने देख की लाग नहीं पहुँचा खकते बशीक वे एक धातात मय के बोफ के तीचे बसे रहते हैं।

पुरुषों की रक्षा के साथ साथ पशुक्री की रक्षा की भी बाद कही वई है। पश्चकी को सनय कैरे प्राप्त हो सकता है? उनको समय कराइया हो दे सकते हैं। इसीलिए सारवीय सस्कृति ने कहा गया है गाय वैसी के साथ प्रमुक्त करा जाता है गाय वैसी के साथ प्रमुक्त करों। उनको समय उनका स्थाल भी रहते। उनको समय पर पास सी मनर उनका स्थाल भी रहते। उनहों समय पर पास की शा उनहों का बुक्त सह मारो। प्रार मत कुनाओं।

महाराष्ट्र मे एक चिठोरी धानावस्था का पन मनावा जात है। इस मनावस्या को बैसो को विश्राम दिया जता है। उनका शुगार किया जाता है स्सानों की स्त्रियों के पैरों के बामूच्या जैस के पैरों में पहनाये जाते हैं और गमे मे माना बाली जाती है। बैलो का जल्स निकाला जाता है। उनके लिए क महाराष्टीय पक्यान्न पुरस्पयोती का नवेख लगाया वाता है। घी की बार छोडी जती है। वैसो का सत्कार किया जाता है। नयो ? इसके पीछे बैलो मौर पसमी के सभयवान की भावना रहती है। जिस देल की गदन पर हमने जुद्रा रक्षा जिसकी गदन पर षट्टे पड गए जो घूप की चड मे काम करते हैं जिन्होने हल चनाया चरस चलाई गाडियाँ कीची क्रोध में प्राकर हमने जिन्हें वाबुक मारे झार चुभाई जिनके परिश्रम से हरे भने होकर हमारे खेत लड लहाने लगे धौर बनाज से लद गए। जिनके परिश्रम सं मोतियों की तरह ज्वार और सोने की तरह गहूपकते हैं जिनके परि बम से जान और मक्का धरहर और चना होता है उस कच्ट मूर्ति बैल को भ्रमय की भावनास परिपूजित कर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने को बहु दिन मनाया जाता 🖹 ।

गायको तो माताके समान पश्चिम और पूज्यमाना गगाहै। घण्य झाविकी रक्षाकी बातवेनों से सवत्र पार्डकाली है।

इस प्रकार वेद का सन कहता है कि
प्रमुक्त पर बाजित रहकर मनुष्य को
निमय बनाने का प्रय न करना चाहिए।
यदि धार जीवन से सफलता चाहित है
कीर धरनी देवी हुई शवित को पुनर्जीवित करना चाहते हैं तो निजादमों और
विपरिदारों को सपकर समकता छोड़
वीजिए। उनसे बिल्कुल प्रमावित हो
होइए। कठिनाइसों से सपनीत न होकर
उन्हें इस विट से देवना चाहिए कि उन्हें
केंद्रे द्वर किया जा सकता है? फिर पूर्ण निर्मंत्रा के साथ उन्हें इर करने से सम

> भ । का दामन छोड है, भय से भय अस मान । यह है मिच्या कल्पना जान सके तो जान ॥



#### ५६ वचन-सन्देश ५५

#### शरीर और आत्मा दोनो बलवान

जो केवल प्रारमा का बल प्रयात् विद्या ज्ञान बढाये जाये और छरीर का बल न बढ़ावें तो एक ही बलवान् संकडों, ज्ञानी और विद्वानों की खात, सकता है। और जो केवल धारीर ही का बल बढ़ाता जाये प्रारमा का नहीं तो भी राज्य पानन की उत्तम व्यवस्था विना विद्या के कभी नहीं हो सकता। बिना व्यवस्था के सब प्रापक्ष में ही दूट-कूट विरोध लढ़ाई-फ्नाडा करके नस्ट-अस्ट हो खाये। इसलिए सर्वेटा शरीर भीर भात्मा के बल को बढाते रहना चाहिए।

जेसा बल भीर बुढि का नाशक व्यक्तिचार भीर श्रति विषया-स्वित है वेसा भीर कोई नहीं हैं। विशेषत ज्ञात्रियों को ख्डाङ्ग भीर बलपुक्त होना चाहिए। क्योंकि जब वे ही,विषयासवन होंगे तो राज्य-महीं वर्ष्ट हो जायेगा। —महार्ष व्यानस्व

सम्पादकीय--

## व्योम को छूता व्यक्तित्व

कई सदियों की गुलामी के बाद जैसे ही भारतवर्ष स्वाधीन हुआ नयी उमगों, नये उत्साह, नवीन क्रान्ति की लहरों को लेकर उन्नत होता चला गया। जिस देश में स्वदेशी सुई नही बनती हो भीर उसा देश में स्वदेशी उपग्रह, स्वदेशी परमाणु ऊर्जा केन्द्र, वडे-बडे उद्योग कल कारखाने धनाज उत्पादन मे धारमनिर्भरता. यातायात भार परिवहन में सलग्न, सम्पूर्ण गाडिया भारतीय हो, टैक, तोप, रेलगाडी, वायुपान, जलयान स्वनिर्मित हो, कई बार जो भारत सीमा पर मडराते बतरो-भाक्रमणों का मुंह तोड जवाब देकर समस्त विस्व को जीका चुका हो, उस युवा भारतवर्ष को जवान भौर सबल होते देख दूसरी ईर्ष्यालु शक्तिया क्या चुप बैठ सकेगी? जी नहीं। वे इंध्यामे देख शक्तिया भारतवर्षके स्विप्तिल महलको घराशायी करन मे जुटी थी भौर जुटी हैं। ३१ सक्तूबर १६८४ को देशद्रोहियों की गोलियो स भारत माँका लाडली विषव की नेत्रो प्रियदर्शिनी छलनी कर दी गयी। दिशामी में खुन के साथ आतक फैल गया। लगा भारत के स्विप्नल महल को नीव लंडलडा गयी। हर दिल चीलता-कराहता दिलाई पडा। ऐसा जान पडा जसे भारत से उसकी गंगोली छीन ली गई और सारी दुनिया में कोई दूसरी गगोत्री भी नहीं। जो कही से लाकर स्थापित को जा सके। इताश-निराश सतप्त लोगों को ग्रालों मे कोप को चिन्गारिया फूटने लगा। हिसा का ज्वालामुझों फूट पडा। दिल्लो के साथ दूसरे शहरो-प्रातो में मा हिसक प्रतिक्रियाएँ हुई जो बहो हा दुर्भाग्यपूर्ण यो । खाज भीर बीखलाहट भरे वातावरण में श्री राजाव गांचा भारत के प्रधानमन्त्रा बने। दिल्नी में खुँगा उठ रहा था। घर म माँ का प्रथा था, बाहर प्राक्रोश से मरो भीड थो। ऐसे में उन जवान कन्धो ने एक से अर्थी उठाई दूसरे से देश को जिम्मेदारी। उसका होसला, उसकी हिम्मत कमजोर नहीं पडी। देश की ग्रांबों ने अपने भासू पोछे। चीरे-चारे देश की उसहतो सासे अविरत हो गयी। एकाएक निर्वाचन की घोषणा हुई। देश की एकता और असण्डता की ध्रपील करते युवा प्रधानमन्त्री को भारत की जनता ने इतने बहमत से चुना जो एक एतिहासिक भाष्ट्ययं बन गया।

भारतीय राजनीति में भनेक वर्षों के बाद बदलाव के स्पष्ट लक्षण दिलाई देने जरी। निर्वाचन के बाद सत्ता में भाते ही उन्होंने धोषणा कर दो कि वे पजाब समस्या को हल करने के लिए हर समय प्रमत्न करने। दिल्ली तथा दूसरे स्थानो पर ट्राजिस्टर कम काण्ड के बाद दहसत मरे बाताबरण में प्रधानमन्त्री का पूर्व निर्धारित विदेश यात्रा का कार्यक्रम जीखिम अरा होने से झाम राम थी कि उन्हें विदेश यात्रा पर नही जाना चाहिए किन्तु सत्तरों से खेलने वाला यह युवा विदेशों में भारतीय संस्कृति, अपनी मान्यता एक विचारों के अध्ये कहराकर आया जो झरथन्त गरिमामय था।

ससद के मानसून सन के शुरू होने वासे दिन पजाब पर सम-फ़ौता अवानक संत लोंगोवाल के साथ कर लिया गया जिस पर उन्हें वेशव्यापी समर्बन मिला। १४ अगस्त को लालकिले के प्राचीच से आवणा देने से चार चच्टे पूर्व ससम समस्या का समफ़ीता को कर लिया गया। उस रात प्रधानमन्त्री सोमें नहीं। सुबह पौने तीन बचे बहुगुन की बाटी के लोगों के लिए उन्होंने गये प्रभात की तथा स्त्राधीनता दिवस की अनुपम भेट दी। १७ प्रगस्त को जब पजाब में हुतंतपुर में रेतवे कोच करूटरी का प्रवानमन्त्री ने शिलाल्यास किया तो पजाब मे चुनाव कराने की घोषणा कर दी गयी। इसके साथ चुनाव का मार्ग प्रशस्त करने में भी उन्होंने कई एक कदम उठाये। निर्पराख और विभन्न घपराघों में पकड़े गये लोगो की रिहाई भी घनायास कर दी गई भीर पब तक लगमग २००० लोग रिहा किये जा चुके हैं।

जिन किसानों ने विजली के बिल ग्रदा नहीं किये थे उनके कनेक्शन न काटे जाने का फैसला किया गया। महाराजा र एजीत सिंह की बरसी भी सरकारी स्तर पर मनाई गई। सैनिक भगोडों की बहाती के आदेश किये गये। लगभग १०० ऐसे भगोडों को काम पर लगा दिया गया।

कहने का मतालय यह है कि काफी हद तक उदार होकर भी उन्होंने समस्यामों को मुलकाया। प्रवानमन्त्री इसके लिए द्याई के यात्र हैं। उन्होंने लार्लाकते के प्राचीर के राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा था कि सिर्फ दस माह पूर्व विदेशों में पूछा जा रहा था कि क्या भारत की एकता और स्रितल्य कायस रहेगा ? उन्होंने कहा था— मारत की म्राने कपर विद्यास है और हम किसी में दवाव के साम्या चुटने नहीं टेकने वाले हैं। थी राजीव गांधों की वाणी में नये भारत की म्रावाएं, माकाक्षाएं और म्रात्मविद्यास मुलरित हो रहा है। एखाव भीर मत्म को समस्यामों के हन भीर गुजरान में भारलाण विरोधी मोदोलन को म्राग नुकाय जाने के बाद माझा और विद्यास की नई किरणे दिखाई वे रही हैं।

लेकिन इसका यह मतलब नही है कि धव देश के सामने कोई समस्या नहीं रह गई है जो लोग साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसी जहरीली भावनाओं को उभार कर देश में गडबंड फैलाते **रहे** हैं उन्हें इस जाद के डण्डे से आकाश में विलीन नहीं किया जा सकता। वे भाज भी मौजद हैं। कल वो फिर सिर उठा सकते हैं। पजाब भीर ग्रसम विधानसमार्थों के चुनाव का ग्रायोजन और संघर्ष से अन ग्राहत इन दोनों राज्यो मे बदि लोकप्रिय सरकारो की स्थापना हो गई तो यह भारतीय लोकतन्त्र की बडी भारी जीत मानी जाएगी। देश की एकता भीर मसण्डता को चुनौती देने वाली ताकतो के गाल पर यह एक करारा जोरदार घूसा होगा भीर इसकी इन समय आवश्यकता भा है। श्रींलका में तमिलों की समस्याभी भारत के प्रधानमन्त्री के लिए चुनौती है। हमें ग्राशा भी है इसी सद्भाव के साथ वे इस समस्या को भी अवस्य सुनमा सकेंगे। प्रव तक के तच्यों से यह प्रमाणित है हमारे युवा प्रधानमन्त्री में दूसरे को समभने की ग्रीर उन्हें ग्रानी बात सम-भाने की भद्गुत क्षमता है। भनावस्यक मानापमान की भावना में विश्वास रखने की बजाय शान्ति और सीहार्द के वातावरण मे सम-स्याओं का समाधान निकालने मे विश्वास रखते हैं। इसके लिए उनकी जितनी भी प्रशसा की जाये थोडी है।

--- यशपाल सुषांशु

भाव भौतिकता की भार विवेती सर्वभ्यापी हवा ने हमारे खीवनी की इतना विवेला और विकृत कर दिया है कि प्रथम तो सम्भवत कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं दील पहला, जो इससे प्रभावित न हुआ हो दूसरे इससे प्रभावित व्यक्ति कुछ ऐसे नास्तिक और स्वार्थान्य हो वए हैं कि मानो जैसे उन्होंने घवनी घन्यायपूर्ण स्वार्च विधि हेत् देश, राष्ट्र और समाज के बहुमूक्य हिलो की होजी ही कर दी हो। ऐसे ही दुराचारी, दुष्प्रवृत्तिपूर्ण पापाचारी स्रोप कागज के कुछ ट्कडों के बदले देश भौर राष्ट्र के बहुमूल्य रहस्यों को विदे-वियो के हाथों देवने में लेशमात्र भी नहीं मजाते । बढ बढे सरकारी और वैर सरकारी प्रविकारी लोग गरीको के लिए सिर खिपाने के लिए मकान निर्माण कार्य मे जागे जिला बुनियाद समवा कमजोर बुनियाद वाले मकान और उनके निर्माण में निम्न क्षेत्री की निमीण सामग्री का प्रयोग करके लोगों के जान लेवा नकान बनाने से बरा भी उस नीली खती वाले सक्तिशानी भगवान से नहीं डरते।

बायुयन्त्री में नेलनाडियों में, बसी मे कारो ग्रीर ग्रन्थ सार्वजनिक स्थानो पर जान लेवा बम रखकर धर्म के न म पर सहस्रो बेगुनाह भाषाल बृद्ध बच्चे जवान स्त्री पुरुषो की जान लेने में जराभी नहीं सकोच करते दलित, ग्रह्पसल्यक लोगो की मार्विक तथा सामाजिक दशा सुधारने के नाम पर उनसे निवाचन के समय मत प्राप्त करन हेतु भारक्षण की नीति का सहारालेकर ग्रयोग्य लोगो को पदो पर स्थापित करकेन केवल बोग्य व्यक्तियो का गलाघोटाचा रहा है विलक्त सर-कारी सेवाओं में सयोग्य समवा कम श्रयोग्य व्यक्तियों को नियुक्त करके देश भीर राष्ट्र का बहुत महित कर रहे हैं भीर गम जाति पानि पर शाबारित ग्रार-क्षण के नाम पर ग्रयोग्यो की पदील्लित करना धौर भी बन्यायपूरा व्यवहार है इसी दूपित नीति के फलस्वरूप जो नर-सहार बाज महर्षि दयानन्द और राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की जनमभूमि गुजरात मे हो रहा है, वह किसी सं छुपा नही है। इसी दूषित वातावरण से प्रमावित सभी वर्गी के लोगो न धाचार के मूल्यो को धपने जीवन में से इसे तुच्छ और सारहीन बस्तु सममन्तर ऐसे बाहर फैक दिया है मानो जैसे कोई दूष में से मक्सी निकाल कर फेक दे। देखने मे भाता है कि जीवन का कोई भी तो क्षत्र ऐसा नही रहा, बाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, वार्मिक हो वाधस्य कोई भीर वा .स दूषित वृक्ति से प्रमावित न हुआ हो। वह एक महान विश्ताका विषय है राष्ट्र घीर समाज के लिए। घत ऐसी स्थिति मे सुधार लान के लिए और सोगो के विचारो मे परिवतन लाने के हतू यहा किन्ही पुक्वो शास्त्रो भौर स्मृतियो के भावार सम्बन्धी कुछ बहुमूल्य धमृत वचन दिवे

## देश की वर्तमान पतनोन्मुखी स्थिति में आचार पालन

#### अत्यन्त आवश्यक

#### --चमनलाल

वा रहे हैं जिनको बीनन में धारण करने से लोग न केवल धारना सुवार कर पार्यमें, प्रपितु वह राष्ट्र, केव धौर समाव के निर्मक बीनन में सुवार की के धाणी कर्नेयें। ऐसे ही सुवार की धाज सस्यन्त धावस्यकरा ।

> धांचारास्त्रभते ह्यादुरा-चारास्त्रभते श्रियम्, धांचारास्त्रमते कीर्ति पुरुष प्रेरम चेह् च। सर्वेलकाणहीनोऽपि य सदाचार ान् भवेत्, अद्वानोऽनत्रुयस्य सत वर्षाण प्रीवति ॥

सर्थांतृ सवाचार पातन करने वाले को सायु तथा कांग्लि की प्राप्ति होती है। वदावारी इहतीक एवं परलोक में कींति को प्राप्त करता है। यदि कोई विशेष गूण न मी हो परन्तु असुवारहित अगव-योग विधान पर पूर्ण कवा वाला है, खरा-चारी है तो ऐसा व्यक्ति शत वय जीवी होता है।

> न स्वे सुचे वै कुरुत प्रहर्षं, नाश्यस्य दुचे भवति प्रहृष्ट । दत्त्वा म परुषाम कुरुतेऽनुताप, म कच्यने सम्पुरुवार्षशीम ॥

प्रयात जो प्रपने सुझ मे प्रसन्न नहीं होता, दूसरों के दुझ के समय हवें नहीं करता तथा थे वान वेकर पछराता नहीं, बह सस्युरुषायंशील प्रवांत स्वाभारी कह-साता है।

पाप्मान हा व हन्ति यो गवते।

धर्मात यज्ञ करने वासा पाप का नाश करता है।

> सर्वस्मात् पाप्मनो निर्मुज्यते । य एव विद्वानन्निहोत्र जुहोति ॥

भ्रमित भ्रमिनहोत्रयज्ञ करने वासा व्यक्ति पापो से मुक्त हो जाता है।

> धानारनान् सदा पूती सदैशाचारनान् सुसी। धानारनान् सदा नन्य सत्य सत्य च नारद॥ धर्मत् धानारनान् मनुष्य सदा

पिक रहता है, सुसी रहता है भीर थन भी प्राप्त कर लेता है भीर सचमुच बहु बन बन्ध हो जाता है।

> इह् चेदवेदीयम सत्यमस्ति । न चेदिहावेदीन्महृती विनध्टि ॥

सर्मात् यवि इस अनुष्य जीवन में परबह्म को जान निया तव तो कुशक है, किन्तु यवि इस जीवन के रहते रहते स्राक्तस्य प्रमाय के कारए। उसे नहीं जाना तो महान विनास है।

समेध्यो वै पुचयो बदनृत वदति ।

ग्रमित मूठ बोसने वासा स्मस्ति ग्रमित कहलाता है।

> नित्य स्वर्य रितर्यस्य पुष्पास्या सुच्छता स्वेत् । ऋतौ प्राप्ते प्रजेन्नारी स्वीया दोषितविज्ञता । स्वकुसस्य खराचार कदापि नो विमुञ्चति । एतसे वि समास्यात ग्रहस्थस्य डिजोत्तम ॥ बहास्याँ स्वपानेस्त । गृहिकां प्रक्रित्य किल ।

(चुमना घपने पति से कहती है)— बाह्यए। बेच्ठ ! सदा सत्य कर्मों ने विसका सनुराग हैं, वो पुष्पात्मा होकर साबु-शीसता का सावय नेता है, ऋतुकाल से सपनी ही स्वी के साथ सगत होता है, वह स्वय दोषों से दूर पहता है स्नीर सपने वह स्वय दोषों से दूर पहता है स्नीर सपने हुन के सदाबार का कभी त्यान नहीं करता, सबभुव बही सच्या सदाबारी है। यही ग्रहस्य का बहायर्थ है। स्रोप यही बहावर्थ ग्रहस्थों को सदा भूनित प्रदान करने वाला है।

> दुराचाररतो कोके नहंनीय पुनान् भवेत । भ्याचिभिश्याचि सूत्रते सवाल्पाय सुदु सक्षाक् ।।

धर्मात सवाचार के पालन न कः ने से मानव विन्यमामी, रोगी दुखी धीर अल्पायुही जाता है।

> सवाचारेण सिख्येच्य ऐहिकामुध्यक सुसम ।

सर्वात् सदावार से इस लोक तथा परलोक के समस्त सुक्त सिद्ध हो जाते हैं।

> सदाचारेण देवत्वमृतित्व च तवा लमेत्।

सर्थात् सदाचार ते सनुष्य देवत्य भीर ब्रह्मस्य को प्राप्त करके सहान् दम जाता है।

> क्रीय कामी लोममोही द्मसन्तोष विधिवासा, मानगोकी **धकुप**।सूये • स्प्रहा **ई**च्या जुगुप्सा च मनुष्य शोषा , वज्या द्वारशैते नराणाम ।। एकैक पर्युपास्ते ह मनुष्यान मनुजर्वम । लिप्समानोऽन्तर तपा मृगाणामिक लुब्धक ॥

भयित काम, क्रीथ, लोज मीह भवतीय निर्वयता प्रमुखा प्रमित्रान योक, स्पृहा, ईप्यों भीर निन्दा 'मनुष्यो में पाये जाने वाले ये बारह दोय सदा ही स्थापने घोष्य हैं। नरलेब्ड जैसे ब्याध मृत्रों को बारते का भवसर देखता हुआ उनकी राह से लगा रहता है ज्यीप्रकार हन ये से एक एक दोय सनुष्य का खिद्र देखकर उस पर साकामशा कर देता है।

#### धैयं की महिमा

को पुतीबत में नहीं पबडाते वे सफलता के शिलर पर पड आते पुट्टों का विनास कर दम नेते राम क्रम्या नामी कहकाते काति के बीन कोते दसानन्द बुद्ध सम्मानीर वन जाते वेसा को सहान् बनाते विकसारित्य इंग्यिर सम्मान्दी वाते नेतां संस्तृत्व कार्य होते उनके रहित व्यक्तिय वकार होताे उनके रहित व्यक्तिय वकार होते

#### वे उठा रहे है कदम आत्मघाती

को रात दिन केवल पैसा कमाये हैं
पैते के बस पर सपनी सकत दिवाते हैं
पैते को अपना देवता उहराते हैं
पैते को अपना देवता उहराते हैं
ऐसे सम्पत्ति को करने में न समुख्याते हैं
ऐसे सम्पत्ति को न स्पन्ना खुल सिसता है
सर्वेत किन्ता में उनका सपीर चुनता है
सम्बद्ध कम्में स्वत्य की स्वत्य को हो
मोजन पमाने में मुखेसर सबी हो जाती है
को ऐसे जीवन के हैं अभिनापसारी
के उठा पहें हैं करम सारमाती

—शकुनचन्द मुप्त विशारद



## स्वामी दयानन्द-एक संन्यासी योद्धा

लेखक-श्री मदनगोपाल

११५० के मध्य मे जब प्रथम स्वत-त्रता संग्राम की शताब्दी मनाये जाने की बोजना बन रही थी, उस समय एक वैधिक विद्वान ने १८५७ के गदर से सम्बन्धित लेखों का ध्रध्ययन करके यह निष्कर्ष निकासा कि महर्षि दयानम्य सर-स्वती (१८२१-८३) ने इस १८६७ के प्रवस स्वतन्त्रता समाम मे बढ़ा ही सक्रिय बोगदान दिया था। इन विद्वान् का नाम 🖁 — स्वामी वेदानन्द सरस्वती, जिन्होने १९५४ में स्वामी विरजानन्द की जीवनी लिसी । इसमे उन्होने कहा है, कि १८५५ में स्वामी पूर्णानन्द ने महर्षि दयानन्द की वासिक कार्यों की प्रेरला देने के साथ साथ यह परामर्श दिया या कि वह मयुरा में प्रकाबक्ष स्वामी विरजानम्द जी महा-राज से मिले। स्वामी दयानन्द ने मधुरा जाने के बजाय मध्य भारत मे भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया । यह वही स्थान थे बहा पर बाद में ब्रिटिश राज्य 🕏 विरुद्ध विद्रोह हुमा । स्वामी वेदानन्द ने लिला है कि यह विचारचारा समबत झोगो को सही न सगे, पर इसको एकदम यसत भी नहीं कहा जा सकता।

महर्षि वयानन्व सरस्वती ने स्वत-न्त्रता सम्राम ने सक्रिय भाग लिया था श्रयवानही, यह प्रायंसमात्र के क्षेत्र मे विवाद का विषय है। इस विषय पर कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। कुछ सीव इस विचारबारा का विरोध करते हैं कि क्वामी बयानस्य ने स्वतन्त्रता सम्राम मे भाग लिया था, जब कि कुछ दूसरे इस विचारवारा का पूर्णंतवा समर्थन करते हैं। को लोग यह कहते हैं कि स्वामी दया-नन्द ने इस सम्राम में भाग नहीं लिया या **जनकी बजीस यह है कि १८७० तक दमानद** केवल वामिक कार्यों से सम्बन्धित रहे धीर उन्होंने स्वय को राजनीति से दूर रला। इस विचारवारा को इस बाधार पर सही नहीं मानाजा सकता कि उस समय स्वामी दयानन्द की बायू ३२ वर्ष थी। और यह एक ऐसी प्रायु है जब व्यक्तिकी मावनाषु भीर विचारकारा विद्रोहात्मक होती है। भीर ऐसे मामको में सिक्रिय मान लेने की व्यक्ति की दिन होती है। यह बात एक और तस्य से सिद हो जाती हैं, कि बाद के बर्वों से महर्षि बयानन्य ने स्ववेशी राज्य भीर स्वराज्य की बात को प्रचारित किया है। उन्होंने

नमक कर का भी विरोध किया था। उन्होंने राष्ट्रीय माना की बात कही थी, रुम्हेंने रुमी विकास पर बन दिया तथा अस्पुरस्ता का विरोध किया। इनसे यह स्वयन्त है कि असे ही वह वामिक नेता से पर यह राजनीति से सम्मुख्य नहीं थे। स्वयन्त वह दूरक्टि याने व्यक्ति थे। समझी निवास्त्रा ने बाद से चककर महात्मा वाची के लिए भी दिशानियंग का कार्य किया। उन समझ निवेशी राज्य का कार्य किया। उन समझ निवेशी राज्य का कार्य किया। उन समझ निवेशी राज्य का कार्य किया। उन समझीर वतानम्प जैसा स्वयन्ति इस विकास से समझीवित नहीं यह सका।

महींप वयानन्द के प्रारम्भिक जीवन सम्बन्धी हमारा प्रान उनके उस भाषण पर प्राथास्ति है, जो उन्होंने १८७५ मे पूना में विया था और बाव में झन्य १४ मायर्गों सहित मराठी में खुपा था।

बहु कहा जाता है कि महर्षि दयानन्य प्राप्तेस १-६६ से कानपुर और हमाहा-बाद के निकट को में में वेचे गये। वहु जनवरी, करवरी १-६७ में समाहाबाद में के धीर सार्थ १-६७ के नवजुक्तेवसर में मार्थ २६, १-६७ के नवज्वमर १-६० तक यह कहा जाता है कि बद नवंगा के किनारे किनारे इसके ओत प्रमरकाटक तक परे। १-६० के वे स्वामी विस्तान्य के पाल पहुँचे में। मार्थ १-६० वे नवज्वर १-६० तक के समय के तिए स्वामी व्यानन्य से जुणी ने विद्यानी के प्रस्वर यह उस्पुकता जायुत की धीर उन्हें यह जोचने में किए प्रतिस्त किया कि से १-६० के स्वरन्यता समा के प्रस्वर्णकत थे।

उन्नीस वर्ष पश्चात् स्वामी वेदानद सरस्वती ने अपनी पुस्तक का दूबरा

सशोधित एव प्ररिवधित सस्करण प्रका-शित कराया। इसमे उन्होने श्री मीर-मुश्लाक के फारसी में लिखे हुए सवलाप पवायत के निशायों को परिशिष्ट के रूप में विया। इममें उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्वामी जी स्वत-वतासयाम में सिकिय रूप से भाग ले रहे थे। सर्वेकाय पंचायत का मूख्य कार्यालय सौरम मुजपपरनगर मे था। इस पनायत में मथुरा से प्रज्ञाचक्षुस्वामी विरजानद को भी बुबाया गया था। उन्होने चुने हुए जोगो की इस बैठक मे राष्ट्रीय स्वत-वता कैसे प्राप्त करें, इस विषय पर परा-मर्खंदियाचा। लगभग इसी समय सस्य-प्रिय शास्त्रीकी "भारतीय स्वतन्त्रता के सम्राम में भागसमाज का योगवान' प्रका-शित हुई वी। इसम भी उन्होने दयानन्द के योगदान की बात लिखी है। भी पिण्डी दास ज्ञानी ने भी "१८५७ के स्वतन्त्रता सप्राम में स्वराण्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का क्रियात्मक योगदान' प्रकाशित करावा ।

१६७० ने पण्डित सीजवन्तु का "योगी का आस्वर्याद" — ६- वर्षों का सक्तात जीवन प्रकाशित हुधा। इसमें यह साबा किया गया है कि महर्षि द्यानन्त्र ने १-६७ के गुढ़ में भाग लिया या, यह महर्षि द्यानन्त्र के उन आस्वर्यादासम्बद्धार प्रवास के साव सावादित है जो उन्होंने अपने दर्जनों पर सावादित है जो उन्होंने अपने दर्जनों प्रवास के सम्बद्धार प्रवास के सम्बद्धार प्रवास के समय सिलाई थी। उन्होंने यह भी कहा या कि यह वह उनके स्वित्तकाल में प्रवास किया है होना बाहिए। यह टिप्पिएया बगाली भागा ने लिखी हुई थी और थी सीनजन्तु ने यह सावा किया है कि उन्होंने इन सब टिप्पिएयों को सोव निकाला है।

इस विवरण के मनुसार १८५५ में स्थानन ने माजण्ड आहु से हरिदार के जिए धरनी वाजा जारम्म की । वे मजमेर, ब्यादुर, दिख्ली, मेरठ होते हुए गए। वह बहुा भी कही ठहरे बाजार मे, समंचाला मे, स्मान बाट पर अथवा महिर में उन्होंने यब बयह वही पाधा कि लोव यह कर रहे में कि धरोज जारतवर्ष को राहु धीर केतु की तरह यह रहे हैं। दिल्ली में एक मुवाने सामुखी पर कटाल करते हुए कहा कि यह सोच जारत में दथा को देख एस्न-सहन में ही किय साने हैं। स्थानन

को बदम पतालगाकि वहयू नाब्यक्त डायरस के जिमीदार दयाराम का पौत्र या, जो ग्रग्नेजो के विषय लड़ाई में मारा गया वा भौर जो ज्ञान्तिकारी राजा महेन्द्र सिंह का पूर्वज या। दिल्ली में लालकिला के सामने एक महाराष्ट्रियन साधु ने दया-नन्द को सलाइ दी कि वह हरिद्वार मे खाकर ग्रपने ग्रापको पवित्र करेतथा देश की रक्षा के लिए कार्य करे। उस साध् ने बताया कि वह भी उन सैकडो साधुम्री मे से एक है जो इसी उद्देश्य को लेकर सारे देश में घ्म रहे है। बाद में २५० साधु दिल्ली से मेरठ, बैरकपुर मौर वैजूर की भीर गये। इन सब गतिविधियों के सिए केन्द्रीय व्यक्ति दिल्ली के जीवमाया मदिर काएक पूजारी त्रिश्ल बाबा था। यह साधु धपने हाथ ने कमल का प्रतीक लेकर चल रहे थे भीर साधारण लोगो के बीच में रोटिया लेकर चलते थे। इस विद्रोह के लिए मई ३१ निश्चित की गयी थी पर दुर्भाग्यवश मगलपाण्डे ने समय से पूर्व २१ मार्च को भ्रपनी कार्यवाहिया प्रारम्भ कर दी थी।

उपयुंक्त टिप्पिश्यो से यह भी पता लगता है कि वैक्यव लोगों ने इस कार्य भे खायुभों के सहयोग का वि.शह किया था। उनका कहना था कि मध्य देवनाओं के स्थान है। यहाँ पर वेवल देवताओं की पूजा होनी चाहिए। किसी देश समाज स्थवा टाएं की नहीं।

पून हरिद्वार मे दयानन्द ऐसे लोगो के सम्पर्क मे आये जिल्होने १०४७ के सग्रःम मे महत्त्वपूरा भूमिका निभाई थी। बाद में हार के पन्चात् बुछ नेनाओं ने नेपाल मे शरए। लेने का प्रयास किया था, जहाँ उनको शरण नहीं मिल सकी थी। दयानन्द चनुप काटि, कन्याकुमारी ग्रीर रामस्वर भी गये। जह वह साधुमी के एक एसे वर्गस मिन, जिनका कहना या कि वह दि~ली के जोगमाया मदिर से भाषे है। दयानन्द ने उनमे से एक को पहचान मो लिया था। यह नाना साहब थे। दयानन्द के कहने पर उसने सन्यासः लिया भीर स्वामी दिव्यानद वनकर दया-नन्द के राज्य मीरी में गये जहा पर वह मृत्युपर्यन्त एक धनी व्यक्ति के साथ वेश बदलकर रहे। उनकी स्मृति मे एक बहुत वडास्मारक बनाया गया जिसके लिए बिठ्र के मदिर से धन प्राप्त हुआ

धीनबन्धु का कहना है कि बनाली भागा से प्रान्त टिप्पणियों को पहुल प्रका-दिल नहीं किया जा सकता था घोर उन्हें १८८६ में दमानन्द की सुर्धु के परवात् भी इनको प्रकाशित नहीं किया जा सका क्योंकि सभी लेखक बहुसमान्त्री थे घोर बहु सभी दमानन्द से हैं प रखते थे। यह बात उस्ते खनीन है कि दमान्द को बहुत-

(द्येव पृष्ठ १ पर)



उपनिषत् कथा माला-१५

## दुःख और सुख

#### लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

एक वलोक यह है--निर्मानमोहा जितसगदीया
सम्प्रात्मितिस्या निवृत्तकामा ।
ह हविमुषता सुसबु सत्तर्गसंख्युत्स्यपृदा पदमध्यय तत।।

ससार में दुल के कारण हैं मान और मोह ! इस मान और मोह से जो बुर हवह है निमानमोहा। निनती मान मोहों येवा ने निर्मानमोहा। मोह क्या है और मान क्या है ? ससार की वस्तुयों में दिल की ग्रज्ञानपूरक फँसावर का नाम है मोह। मोह दुल का कारण है पर जिस मनुष्य के दिल की किसावर ससार किसी वस्तु में जानप्यक है उसका नाम प्रम के। यह (प्रम) सल का कारण है।

दो लडके थे। उनका धापस में प्रेम हो गया। व काले च मे पढते थे। एक धनल सदयातो दूसराभी चनुर नकिन थोडा प्रहिमल था। यह मोगबाटर पीता था नान्यासहो यान हो। एक दिन उसने श्रपने दूसरे मित्र से बफ का पानी पीने का बाग्रह किया। उसने कहा अपन व्यास लग्गी तब पानी पीवगे। कोई द्यानमी पुने से स्रयाही झीर पवराया हुआ हो उसका उस वक्त ठण्डापानी पीने पर जो झाल झाता है बल्लासद इसीर प्यास क ५ न वा का न न द्राला। में ग्रणनी ।तक न्यान कि जब मै **गाडी** संचल प्राप्ताधानामभ्यासलगी। भूम क्स टन रहा ने नहा मिलात तक भराध्यम रक्तीरही। मैं कम इल खकी स वान्रि निकाले बा जैपूरमेण्क ग्रादमीने व्ह क्या मने वहा बापको पान च हुए भाई ' ५ हटण्डा पाना ले द्याया चसकी तारीप ने ना। दल्वासियो की बादन वर हो गई कि व प्यास क विनाही नाग्रीर बरफका व्यवहार करने लगे ह। महनत करने क पीछ धाराम कितना ग्रन्छ। सुलाका देने वाला है यह हमे तव भालूम होगा जब हम मेहनत कर। इसी प्रकार तूब प्यास लगने पर ही ठणो पानी का धान द बासकता

स्करात जैसे स्नादमी भी दुनिया से दूए हैं। उससे कमा किसी ने पूछा कि क्या स्नाप कभी ठण्डा पानो पीत है? उस ने कहा जिस समय मुझे प्यास भन्छी सन जाती है उस समय पानी पीता हूं। किन ने कहा कि दूस पुत्रमूरि साने में कभी पटनी नहीं देवत हैं। उसने कहा, बव

ख्व भूक समती है उची खस्य मैं खाता हू चाहे वह दाल हो या चटनी हो या धीर कोई साने की चीज हो। जब भूख या प्यास नहीं समती है तब न तो कुछ, खाता हैं धीर न पीता ह।

प्राचीन धार्यों ने सोजन को तीन मागो मे बांटा है (१ हिता (२) मित (३) ऋतः। हमे भोजन कैसा करना चाहिए ? हिन सर्वात् हितकारी ऐसा भोजन जो शरीर को फायदा पहुँचावे भौर दूसरा मित सर्वात परिमिक्त भोजन करे भूख से ज्यादा नहीं बावे भीर र्तसरा ऋत यानी समयानुकूल कोचन करे। यह तो हुई प्राचीन ग्रायों की वासा। बाजकल तो ऐसा है कि बाह्यए। लोग जब किसी दावत भीर भोज में सम्मिश्वत होते हैं तो पहले आय पी लेते हैं ताकि तीन चार लण्डु ज्यादा सार्वे। लाने के वक्त तो वेज्यादा स्ताजाते हैं परपीछे, तक लीफ उठाते हैं। इस वास्ते वह लहका जो सोडाबाटर पौसा वा रोजसिनेमा भी देखताथा। पर दूसरा जो न तो सोरा वाटर या सिगरेट ही पीता वा न सिनेमा काही शौकीन वा उससे उसके मित्र ने पूछा मित्र कभी सिनेमामे भी नहीं जाते भीर न सोडाबाटर ही पीते हो ? उसने कहा ठीक है काई बात नहा। मैं कभी-कभी जब जरूरत होती है तब सोडावाटर भी पीलेटा न भीर सिनेमा भी देख लेता ह पर तुम्हारी तरह हमेशा नहीं। तुम्हारी तो भादत ही ऐसी हो गई है। घञ्छातुम मुके सिनेमाम धाज क्यो ल जाने हो <sup>?</sup> उसन उत्तर दिया तुम हमारे मित्र हो सिनेमा मे जाफोगे तो हम तुम बराबर हो आवेंगे। उसने कड़ा कि विद तुम नहीं ले जामोगे तो भी तो हम तुम दोनो बराबर ही रहेगे। श्रास्तिर वही हुमा वह सिनेमा नहीं गया । बहुत से निकम्मे नहको को बहुत से बुद्धिमान लडके भएनी बुद्धिमानी से प्रभावित करके प्रपनी तरफ बाक्षित कर लेते हैं। इसी प्रकार एक धौर उदाहरण मीजिये--

एक धावती वा गहते के लोग धन्ही गहता करते वे पर धावकण के लोग नहीं सहित उस धावती के एक कोई मिल वा। उस धावती ने धपने तिम के कहा पुग हमारे मिल हो, इस समय मुने एक धन्दी की बकरता है। युग हमे थी। हम पुनको वा करते। उसने कहा क्या यात करोंने ' उसने उसने प्रकृत क्या कर करते। उसने कहा क्या साह करते के बेबो हमारे एक पुनको साह करते। अपने उसर दिया साह करते के बेबो हमारे एक मिल के, उनुके

हमने तीन-नार विश्व के लिए एक प्रमूजी प्राणी भी तो उन्होंने थी। उत्तरे क्यार हिया, में वो तुन्हें धनूठी नही बूंगा उस भी साम यह साठेगा कि मेरे भानिने पर भी स्थित में मुक्ते धन्हीं नहीं हों। इस सारते मोह सो है यह हु स का काइना है। सनुस्य का नेम ज्ञान-मूर्यक होना चाहिए। सज्ञान पूर्वक दिन से सन्य का नामा जोग में सा नाम प्रमुक्त दिन की सनन का नामा नेम है। यह हुई हम्स की सर्चा।

मान क्या है? धन्त करण की प्रवृत्ति को मान कहते हैं धर्मात धान्तरिक दिस की फहाबट को होती है उसका नाम मान है धीर मान धीर मोह को हैं ये दोनों ही दुस के कारण हैं। इन दोनों से मुक्त होने पर ही हम निमनिमोहा हो सकते हैं।

सब साने हैं जितसनदोया जिसने समदोव को बीत लिया है। सग दोय बहुत बुरी चीज है। इसको सार भी स्वीकार करेंगे इससे बहुत से इसरे सवगुच पैदा हो जाते हैं। जैसे गीता में कहा है—

सगात्सजायते काम

त्रोबाद्भवति सम्मोह सम्मोहात्समृतिविभ्रम ॥

कामारकोषोऽभिजायते ।

जैसे सम में बैठ जावोगे वैसे श्री विचार हो जावेंग । सोहबत का प्रसर धवन्य हो बावेगा। लेकिन इस समका श्रसर किस पर होग जो मान भीर मोह को जीत कर निर्मानमोहा हो गये हैं उन पर इस सगदीय का असर नही होता। वे जितसगदोषा कष्टुलाते हैं। वदापत्रमिवा म्भसा' कमल के पत्र की तरह जो जल के बीच मे रहता है और वस ही में वृद्धि को प्राप्त होता है। परन्तु वह उसके दोष से बिबत रहता है क्यों कि उसमें सबदोब नहीं है पानी की बूद प्रगर उसके ऊपर पड आने तो भी वह पत्ता गीला नही होता है वह बूद मोती की तरह बोस बन कर पर्से पर इबर उचर हिमती रहती है, पर उसके ऊपर कोई झसर नहीं होता परम्यु विद किसी पीपल या बढ़ के बुक्त के पत्तें पर पानी की बूद विरक्षावे तो वह पत्ता गीला हो बाता है। ये दोव "निर्मानमोहा वें नहीं हो सकते।

ग्रव श्रव्यास्मनित्याविनिवृत्तकामा

श्चारमिक्तन में भारमिकार के प्राप कहें कि किस तरह से रहा वाता है।

रेक्टो--

जिसके लिए यह सन चीज हैं, वह कैसा है। प्रगर इसका पता लग जाने ती फिर किसी को कोई दुझान रहे।

एक बनत का चिक्र है कि प्रजाब के एक वांव में एक घावयी मिट्टी (सी ने भी मिट्री) सोदने गवा। पहला फावडा बार कर इस मिट्टी उसने सपती टोकरी के डानी। दूसरा फावडा मारा तो वह एक पाल पर विर पडा । वह पात्र तांबे का वा। उस पाल में वद उसने देशा तो उन्ने बहुत सी मधर्फियां व रुपये दिकाई दिये । वे करीवन ४ ६ हजार की चीजें बी जो कि एक छोटै से पात्र में रस्ती थी। जिस समय उसने फावडा मारा था तो वह अनुवेपर भी लगावा जिससे उसका भ्रमुठा कट गया था पर उसने उस बक्त खशी के मारे उस पर कुछ स्थान नहीं विया। वह उस पात्र को मिट्टी में खिवा कर वर ले गया और अपनी स्त्री से कहा कि इसको सम्भान कर रखा। फिर जब बह अपने इस काम से निवृत्त हुआ तो उस धगुठ के कटने के दुख से बहुत व्याकुल हो गया लेकिन पहले कुछ भी दर्वमालुम नही हुआ। सामने पैसा था गया था. जिसकी खुशी से उसका दुल दब गया था। वह तो पैसे की खुशी बी, पर जिस को भारमाकापतालगजावे तो उस खुशी को वही जान सकता है इसरा नही। तो अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा ' इस का भय प्रध्यास्मिचिन्तन मे मस्त रहना, यह भवस्या जिसकी हो जाती है जसकी सब कामनाएँ दूर हो जाती हैं।

इण्डा विविधा इण्डा सो प्रकार की है। एक स्वाध इण्डा सीर इसरी राग्यें इण्डा। वेंद्रे यह उनको दो, यह मेरे को सो। सबर उनको वेच्टा अपने निव के नियह तो वह स्वायें इण्डा कह-साती है। सबर उनकी वेच्टा अपने निव के सिये नहीं तो वह परमार्थ इण्डा कह साती है।

साने डन्डेवियुस्ता' हम्ड सर्वात् पुण कार पुल उपने पुण हो नये। शील-मुफ दवा के बीच ने यह सरीर ही धाने नहीं निवता है। वारीर के साथ ही पुळ और दुक बोनों हैं |बीवम्युक को न मान की दुखा है, न लोध की और न सावच की। यदि उसके बीवन में वर्तिक है तो वह बोकोपकारावें सर्वात् दुवरों की

(बेब पुष्ठ ७ वर)

#### देश का विश्वावन वार्तिक घाषार पर हुया। मुख्यानां में प्रपत्ते वर्षे को भारत में धनव वर्षे माना धोर उन्होंने धन्ये तिए धनव स्थान की माग की। कान्नेस पार्टी ने मुस्तमानों को धन्य वर्षे नहीं माना, परन्तु वाद वे भारत में वो वर्षे स्वीकार किये गए उसी घाषार पर स्व का विशावन हुया। समूचे भारत में बहु। सुन्यनानों के ६० परिवाश ना इसवें

प्रधिक सोगों ने धलग प्रान्त की मांग की

जसे ब्रिटिश सरकार ने स्वीकार किया।

भारत-विभाजन के पश्चान् मुस्मिन स्नीत के प्रेसीटेल मिंग जिल्ला ने पूज्य स्नाहाला जी को कहा कि दो देखें के हिन्दू स्रीर मुख्यनमानी को साराम वे इचर त चयर जाने की बात मान ती जाय। परहु सहारमा गांची जी ने दवकी बात गरही स्नाती। श्री जिल्ला जो बात चाहते ये वही हुआ परन्तु बढ़ी सारकार के बाद हुआ लालो स्मात्म हुआ सीर सरबो की सम्मत्ति सुट ली गर्मी।

भारत विभावन के परवाद पुसल भानों ने अपने देश (पाकिस्ताम) को इस्ला-मिक देश बना दिया और हिन्दुओं के स्रविकारों को समान्त कर दिथा। अरत औा अने देश को हिन्दू राष्ट्र पार्टित कर अस्कता था, परंतु दुर्मान्यवश इसने ऐसा नहीं किया। इसके नेतामों ने अपने देश को 'सेन्द्रअर' घोषित किया और यहा के स्थानिताशियों को समी को में स्थानिताशियों को समी की में स्थानिताशियों कुषा समी हमने से

भारत का सैक्यूलर होना लोगों के सक्ता लगा। जारत के सजी लोगों के सिकार समित होंगे। इसका सिकार ने स्वी होंगे। इसका किसी ने भी विरोध नहीं किया। सभी के लिए एक समान कानून बनाये जायेंगे। उरस्तु बनता के जेव कि सबी सा जीव के में मुस्सिम लीव पर प्रसिवन्य न सवाकर कर सहस साथ के से मुस्सिम लीव पर प्रसिवन्य न सवाकर खरके साम मिलकर वहा सरकार बनाई। यह समस्या लोगों के मस्यक्र मही साई ।

भारत ने सैस्पूसर बाद के विवक्ष वेश में क्षिन्दुओं के लिए अनेको कानून "हिन्दू कोड विन बनाये" तब बनता श्रतके हो वई और उशको बहु सवा कि सैस्पूसर बाद दिखाने के बिश्यू है। परुषु कावेश

## भारत की शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है ।

साप्ताहिक 'बार्यसम्बेख'

भाग-१

#### ग्रोमप्रकाश त्यागी

सरकार की नीति पुराणी ही है। सनता ने सगह सगह मीटिंग की, और सरकार का स्थान धार्कायत किया कि उसे देश के लिए एक कानुस नमाना चाहिए दो नहीं। परन्तु भी सवाहरखाल जी ने धपने मन की कता की धीर कानुत ननति चले गये। सन कानुन नुसलमान और काक्सीर की लेखकर करते है।

देश को सन से नवा मानवर्ष उस दिन हुमा जब कि देश में विकाश जगानी चालू हुम जादिए तो यह वा कि लाई मैकाले की उदाई जमान्त कर भारत की विका पढिले जाल की जाय परन्तु चोक कि साई मैकाले को स्वीकार किया और कानून बनते गरे।

कानून का खबसे बड़ा दोन उस दिन हुआ जब कि भारत में अस्पस्यक्ष धौर बहुसस्यक वर्ग मानकर दो कानून बनाये वये । अस्पस्यक्ष वर्ग में मुत्यक्षान धौर ईसाई से धौर देश की ०० प्रतिसात धार्म (हिन्दू) जनता बहुस्यक बच मे गयी । सरकार ने अस्पस्यक्षी की अपने स्कूली को कलाने, विश्वक नियुक्त करने या निका-कने, विश्वा से वामिक विश्वा वेते की जुट दो धौर बहुस्यक वर्ग को यह धौरकार नहीं दिया गया ।

कानून का दुष्परिखाम यह दुमा कि बहुसन्यक वग हिन्दू शिक्षा का वष्टि से मले मागे हो पर-तु उसके विधानीं सदा-बार मारनीय सस्कृति तथा वैधमक्ति से गृत्य हो गए। यब कि मल्यस्थक वर्ग के स्कूलो मे चोर साम्प्रदायिक बच्चे बनन को हैं।

भारत में आर्यसमान सिला के क्षेत्र में बहुत हमारे हैं। परस्तु बहुतस्थक वर्ष में मह भी धा गया। सरकार की नीति का क्यान कर आर्यसम्बद्ध वर्ण ने नाते का प्रयत्न किया, परस्तु आर्यवेशिक समा ने जनकी इस नीति को न माना। परिस्ताम बहु हुखा कि धायसमान को नानने वालों का स्थान आर्थ स्कूलों में नहीं पहुर, उनके सलावा बहुत और सोग धा नये। कहूने का तास्यं यह हुआ कि आर्यवधान का प्रवास वेकार सिंह हुआ कि आर्यवधान का प्रवास वेकार सिंह हुआ कि आर्यवधान का

सैन्यूनर स्टैट होने के नाते सरकार को एक ही कानून बनाना चाहिए वा। शिक्षा के लिए सस्प्रस्थक्य वर्ग और बहु-सस्यक वर्ष क्या सैन्यूनर की देन है। समस्य पुरुष तथा समरीका में एक ही

कानून है परन्तु अपने देख को सैन्यूलर बोधिय करने नाले स्वय प्राप्तरण में साम्प्रवाधिक हैं। वस सरकार ही अपने साचरण ने साम्प्रवाधिक है तो किर देख के विद्याची उसकी बात क्यो माने। नव-युवको में ही साम्प्रवाधिकता हिंसा, प्रज-साववाद के बारे हैं। किर सरकार इनते केंग्रे पीछा खुबायेगो। वो हुमने कार्य किया है उसका परिणाय हमे पुनतना ही

जब ८० प्रतिशत जनता के बच्चे

स्वयने सनमाते हम से यह रहे हैं और सल्य-सम्मात तम के बन्धे भीर साम्प्रदासिक तम रहे हैं तन सरकार स्वय सामें कि तह है तमें एकता और सुरता कैस लायभी उसकी भीतों का कोई सर्थ नहीं है। सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिए कि उसकी भून के बारण मारत के प्रत्येक प्रान्य ने स्वास्त्रित है।

भारत की चिक्का दोषपूर्ण है। इसे सैक्यूलर के अनुकूल होना चाहिए। ऐसे होने पर हो बेश एकता सुरकातका सर-कार की नीति का पालन करेगा अन्यका कुछ नहीं होगा। सरकार की उक्त दोप-पूर्ण नीति का कुपरिस्ताम यह हुमा कि— १ देश की => प्रतिस्ताल जनता के

बच्चे कण्पटाग बन रहे हैं। २ मुसलमान ईसाई के बच्चे [पोर

साम्प्रदायिक बन रहे हैं। ३ प्रधानमंत्री की घोषणा देश की

एकता व सुरक्षा कैसे चलेगी। ४ समुचा देश श्रनगाव के चन्कर

४ समूचा देश सम्माव के चन्कर में है भीर नवयुक्त ही हिमक बन रहे हैं।

#### दुःख और सुख (१९०८ ६ का शेष)

भनाई के लिए कार्य करता है उसके लिए तो कोई दूसरा काम ही नहीं। वड बाद-मियों का ऐसा ही स्वमाव होता है।

महात्मानाची द्यारहेथ । किसीने क**ह दि**या धरे <sup>!</sup> इस बोरेको उठाकर इधर रखना। इस जगह यदि काई दुसरा बादमा होता तो कहता कि क्या मैं तेरे बाप का नौकर हूजो उठाकर रखू। धाप भी यही अवाव देते परन्तु महारमा जी ने उसे उठाकर ठीक जगह पर रख दिया। जब वे उठाकर चन नद नो गै को मात्रम हुमा किये तो महात्मा गानी है । तब तो उसको बढा पञ्चाताप हुमा । महात्माजी ने कहा, इस में पञ्चालाप करने की दी कोई बात नहीं है। तुम मे इस बजन को उठाने की शक्ति नहीं मैंने इसको उठाकर रख दिया तो इस प्रकार एक दसरे को मदद देना भादमी का कर्त्तव्य है। यह जो काम महात्मा जी ने किया पैसो के लिए नहीं किया। इस प्रकार अपने को भी किसी की मदद के किए कुछ उठा न रक्तना चाहिए। विनि-वृत्तकाम दूसरी के हित के लिए हैं, अपने निज के लिए नहीं। महर्षि दयानन्द की कौनसा सुस हुमा<sup>?</sup> कुछ नही। फिर अपने सारे ससार के सुखों को छोड़ कर जवानी की हालत में सारे काम को छोड कर क्यो धर्म प्रचार किया ' उनकी निजी कोई कामना नहीं बी। यदि कोई कामना है तो ससार के कल्याए। भोर मलाई की। वे चाहते वे कि ससार मुखमय हो जावे। कहा नवाहै कि "इन्द्रेविमुक्ता सुका-दुससर्त्रं का।

कामच को आप जसादो । जस

जावना धोर फिर उसके धाप धक्तर भी पढ़ शीजिए। बाप उनको पढ़ सकत है। मेकिन दस कारण की पुढ़िया तो धाप उनके पढ़ हुत की सहर धाई कि नहु उड़ खाएगा ने प्रत्कृत की सहर समी के नहु उड़ खाएगा ने प्रत्कृत की सहर समी के नहु जो दो घो नहु न अबेसी, जल जाने पर भी उसके नट वैसे ही नजर सावें। पर उसके किसी भीज को नहीं वाथ मकते।

इसलिए सुक्त भीर दुख से भ्रालग हो गो। गरीर पर दुख उसका ग्रामर नजर प्राता है। यह भी होगा कोई परवाह नही। यह भी प्रार क्ली वस्तुहै। पर भ्राता में —

गच्छन्स्यमूडा पदमब्यम तत्।

प्रमुखा = नोह रहित। वो नोह से रहित हो गये सौर जिन्होंने नित्र स्वरूप को जाना व 'नच्छानित समूद्रा पश्म् सम्यय तत्' उस पद का जो 'सन्यय' है प्राप्त हो जाते हैं।

दोनो ही मार्ग धच्छ हैं कोई किसी मार्ग मे जाता है, कोई किसी माग से जाता है। उसके विषय मे—

कमंज बुद्धियुक्ता हि

फला स्थलस्या मनीविषा । जन्मवन्धविनिर्मुक्ता

द गम्बन्स्यनामयम् ॥

तिर्माणुभोहा वित्तसवयोषा , प्रध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा । द्वन्दैविमुक्ता सुकदु ससर्वे-गैक्द्यन्त्यमुढा पदमञ्जय तत् ॥

## श्रेत्याद्य के वास पर

### "मुस्लिम पर्सनल लॉ : विरोध क्यों"

भारतियन के सर्वोच्य न्यायालय ने या से तताक सी गई मुस्लिय महिल भी के प्रथिकारों के सम्बन्ध में नित्य दिया है तब से इस देश के कट्टर मुस्लियों डारा वम के नाम पर उसका प्रतिवाद कर बानून में परिवर्तन की माग की जा रही है। उन्होंने रिक्ष दिया देश विरोध दशके प्रमाण किया है। उन्होंने रिक्ष दिया के सिर्धा दशके प्रमाण । कई बाता पर दक्के विद्व मुस्लिम जनभत का एकत्रित कर महिला मों के सामता है। इस्तु उनका यह प्रयास किया जा। है रहु उनका यह प्रयास किया जा। है रहु उनका यह प्रयास किया जा। है रहु उनका यह असांक स्वीवित्या भन्मविव्यास एवं वर्षाच्या जीकक है।

बास्तव में इस्लाम ने नारी को वास्तव का प्रतीक बताया है, जिसका स्पष्ट उपलेख नवाब स्थारी के पीत्र डा० सानन्य पुनन (पूर्व डा० रफत प्रस्ताक) नै वैदिक बम में वीक्षित होने के प्रस्त न् "मैंने इस्लाम क्यो छोबा तथा इस्लाम के नारी में इस्र प्रकार किया है ---

"रव्यस्वला (मासिक वर्म में स्त्री) को कह नो वपवित्र है ट्रवक् रखो। ऋनु समय में उन्तरे पास जाओं, जब तक कि वह पीन हो। ए। शुन्हारी वीविया दुन्हार लिए चेतिया है। बस बाघो जिस तरह चाहों। न चेन प्र पुत्र को घल्लाह लगन (स्थ्य) श्रयक में कही पकता। शिवारा २ शूरन २ प्रायन २२२, २०३ व २२४।

इस प्रकार संबंधि रजस्वला काल से स्त्री स्पन्न विजय है तथापि ध्रीरक को नेती समझकर इच्छानुसार प्रयोग करना स्पट्टत मात्र काम वासना पूर्ति की प्रवृत्ति का खोतक है।

पुन कुरसान में सौरत को जो बजा विया गया है वह झायत १८७ सूरत २ सिपारा २ में इस प्रकार है— जरारोजे (उपब स) की गत तुम्हारे लिए हलान को गई। मदनोन्स करना झपनी पत्नियो

इतना ही नहीं सीरत के साथ निम्न प्रकार के व्यवहार का भी सावेश इस्लाम ने दिया है

> "तुम रही सिर्फ वर मे, बाहर न निकलो घर से '

> > <del>दुरबान</del>- २०३६ ३८

उपयुं कत चयाहरए। ही श्री जाति के स्थान का प्याप्त विवरण, प्रवश्चित करता है। क्षी— माता, बहुन, परती, पुत्री शक् कुछ हैं। प्राचीन काल में हमारे देश ये गार्गी, मैत्रेयी विज्ञोत्तमा, सीठा साविकी दमयन्ती ग्राटि नारिया हुई हैं। वह हमारे लिए धायर्थ है। इसीलिए मनुस्पृति में कहा गया कि 'यम नायेंस्तु पूज्यन्ते रक्तन्ते तत देवता। परन्तु इस्लाम ने नारी का जो स्वस्थ प्रस्तुत किया है उसके कारण धाज मुस्लिम महिलाधों में जाएति धाई है तथा वशेंच्य ग्यायालय के निगय न उसमें डिमुल्ति उस्साह का सवार किया है।

हम रे पुलिय नपुत्रों को इस सज्जार से इन्कार नहीं करना चाहिए और बतनान बैजानिक श्रुप से सामाजिक, व प्रायक स्थितिक परिप्रेक्ष्य में समने पुष्टिकोण तथा ध्यवहार से परिवर्तन करना चाहिए। यदि सर्वोज्य न्यायालय का निस्स्य बार्गिक हरलानेप के क्यमें भागा जाता है तो मुस्लिय कानून को वड बहिता को भी सारे मुस्लिय चानुन को के स्वीकार करना चाहिए।

भारत सरकार को भी इस दृष्टि से विचार कर ऐसे कानून का प्रावधान करना चाहिए कि भारतवर्थ में रहने वाला प्रत्येक नागरिक भारतीय है और उसके ऊपर एक समान कानून लागू होना चाहिए। हमा ादेन धर्म निरपेज राज्य है, परन्तु इसका यह भवें नहीं कि सभी बम के व्यक्ति व्यतत्र रूप से प्रपन सुविधाजनक कानून का निर्माश एव पासन करें। प्रत्यक वर्ष का उद्देश्य मानवीय कल्याच है। सत यदि जानवताकी र ता, विश्व-बन्धुत्व, स्नाति एवं मैत्रीके लिए कोई नियम वन ता वह वरसीय होता है न कि उच्च-नीच लडा६ भगडा भ्रादि का भेद-वाब कराने वाल धार्मिक पासड व **सन्ध**-विश्वास का माना जाय।

बस्टिस एम० एप० केन ने सर्वोच्च ग्यायाव्यक के शाह बानों के केस में रफट मत व्यक्त किया है कि जुमीम कोर्ट के फैसले के विषठ आ-दोलन पूर्णंत अनु-वित व गुमराह करने बाला है। बहु निव्यत करते हमारे सर्विधान की सामा-किया आर्थिक व रावनीयिक स्थाय काव्यक करने की सर्वेधानिक स्थाय काव्यक करने की सर्वेधानिक स्थायन काव्यक करने की सर्वेधानिक स्थायन काव्यक करने की सर्वेधानिक स्थायन नहीं बैठता। सच्या प्राक्रीय ऐसी बातो पर नहीं बेठता। सच्या प्रक्रीय होना सुर्वंदार्थों के विरोध से केन्द्रित होना चाहिए।

बाखा है न्यायपालिका की बरिया व नारी-मम्मान की बाबना को दृष्टि मे रखकर हमारे देश के नागरिक विचार करेंगे तथा भारत बरकार मी खारे देश में समस्त भारतीय नागरिको हेतु एक-बमान सहिता का निर्माण करेगी।

> मनवीव (सुरेक्षचन्त्र ''शास्त्री'') ४०७, मुठ्ठीनच, इलाहाबाद

### भारत में मुसलमानों की संख्या कैसे बढी

श्रीमान की.

भारत में प्रस्कामानों की सस्या बोर जुल्म से कबरदस्ती करने से बड़ी दरना बन कांसिम ने सिल्म पर हमसा किया। उस समय पतने साम ४००० प्रस्कामा ने। नेकिन साम कम ज्यादा करके प्रस्कामाने की सस्या १२ करीड के सामम है। सब कोई पूर्ण कि प्रस्कामानों की सस्या कैंडे बड़ी।

१ यह कि कासिस, वौरी, कुतुबुहीन एकक, अन्तमस, अलाउदीन खिलबी, बोबी, आदि ने जब भी बौका मिला हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलबान नाया।

२ यह कि उन्होंने हिषयार लेकर सोगो को डरा धमकाकर वबरदस्ती मुस-समान बनाया जो कि तसवार के ओर से मुससमान बने।

३ कई वावचाहों ने एक सरकुवर निकासा, वा तो नौकरी में लगे हिन्दू मुख्यमान वन जाए। वरना छन्हें करम कर दिया बायेगा।

४ बहुत से बादशाह साना तब साते में जब किसी विशेष सम्या में हिन्दुसी को मुसलसान बना लेते से । इस प्रकार से बाबर, हुँमायूँ, सकबर, जहागीर और साहबाह सादि ने भारत से गळ हत्या बद की। परन्तु भौरगजेब के समय गऊ इत्याव जित्रयादोगारालगा दिये गए।

१ हिन्दू बच्चो, घोरतो व लोगो को पकडकर धरने बेग में स गये जहा पर उनका मुख्य टका बगावा यया। हस प्रकार है हिन्दुओं की घावारी कम से कब होती नई धोर ज्यादा धावारी मुससमानों की होती गई।

भत प्रायंना है कि सारे मामले की जांच गडताल की जाए। और हिल्दुओं के साथ न्याय किया जाए।

> जयदेव गोयस पत्रकार जीव्य

### मिनिस्टर का त्रादेश नहीं चाहिए, कुछ सेवा पानी करो

बादरणीय श्री मिर्धाजी, सादर नमस्ते।

धापको स्थरण होगा कि हव धापको १६ ७-६५ को स्व० सो सस्तित साकल को के साथ मिले वे। धापको महास्व पुलीसाल वेरिटेबत ट्रस्ट के लिए दूरपाथ के सम्बन्ध में धापसे आर्थना की थो। धापके धारेश के धानुसार की के० डी० मिताल, उपनिवेशक ने धपने पत्र सस्ता ६३/१/६५ पी०एच०ए० वि० २१/७/६५ के धारुशा धारेश की आरीक कर दिने वे।

मैं श्री मिलन जी का बावेच प्राप्त होने पर ७-६-६६ को कर्माध्यक प्राप्त-सर (प्रवम) थे मिला था। उन्होंने हमारा पत्र तेकर बेपुड ने घायको बुरा धला कहाँ हुए उस पर घायेच बारी किए थे। किया वाराजवस में दिल्ली से बाहर चला बना।

बहा से शीटने पर कस १६-८-६१ को जब में उनसे पुन जिला तो उन्होंने कहा कि मिनिस्टर बाह्य के कहलवाने से या उनके मादेश बारी करवाने से टेली-फोन बोटे ही जिल काते हैं जब तक सेता पानी न की बाए। मैंने आपकी फाइस प्रसिद्ध वनरास मैंनेवर की ए० के॰ कुप्ता को नेस सी हैं। सी कुप्ता की के पास जब मैं गया तो छन्होंने मुझे आकेले में कहा कि धापका कर मुक्ति प्रमास्त्रपत्र देश मार्च १६८२ सक का है। या तो भाग धागे का प्रमास्त्रपत्र ने बाह्ये या हमारी सेवा कर बीजिए।

मैंने भी गुसा है बहा कि यह तो निवंध श्रेष्टी में हमें देनीफोन मिक रहा है, बदि वाचारण सेंद्री में भी बदि सिम्मिट स्ट्राहर देनीफोन दिकानाम नाहें दो है समते हैं। इसके बाद भी मैंने उनके निवंधन किया कि हैं। इसके बाद भी मैंने उनके निवंधन किया कि हैं। इसके बाद भी मैंने उनके निवंधन किया कि हमने साने के लिए कर पुलित के लिए मार्च पात हमा है, आने पर सामको दे दिया आयेगा। परस्तु नव इहिना देसा है को तैयार हो है, अने पर सामको दे दिया आयेगा। परस्तु नव इहिना देसा के कार्य करने को तैयार नहीं हुए।

(सेच पुष्ठ & बर)

#### स्वामी दयानन्द --एक सन्यासी योदा (पृष्ठ ५ से बागे)

समाजियों ने बगाल में बुनावा था। यब विसम्बर १८७३ में वह कलकता में बे, तत वह देवेन्द्रनाय टैगोर भीर केशवचन्द्र सेन मे मिले । कैशवबन्द्र सेन वयानन्य से बहुत पश्चिक प्रमाबित हुआ। धीर इच्छा प्रकर की कि यदि दयानन्द शरोजी जानते तो वह उन्हें बिटेन में ले जाते। वयानम्ब ने कहा कि काश कैंशव बन्द्र सेन संस्कृत बानते और बहु पश्चिम का ग्रन्बानुकरण म करते। दयानम्य ने सेन की सनाह मानकर घपना सारा कार्य सस्कृत की बगह हिन्दी में करना शुरू कर दिया था।

बाद में वर्षों में दयानन्द भीर बह्म-श्वमान में नेद इतने प्रश्निक बढ़ गये ने कि बह्यसमाजियों ने दयानन्द की लाहीर में बुसाया पर उनके भाषलों का बाईकाट किया धीर दयानन्द के रहने की व्यवस्था भी एक मुस्लिम प्रशंसक के घर करनी यही। यह मेच इतने ज्यादा बढ़े कि बाहीर में बहासमाज के सस्वापक श्री दयालसिंह मजीठियाने लिला है कि द्यार्यसमान के सदस्यों को उनके ट्रम्ट तथा धन्य सस्वाधों से निकास बाहर किया वाये ।

फिर भी दयानन्द के बहुत से बगाली प्रश्नसक ये भीर यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वाकों में देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय थे, जिन्होंने दया, नन्द चरित्र (१८६६) ग्रादर्श सुवारक दयानस्य धौर विरजानन्य चरित्र लिखे। मुझोपाच्याय ने विभिन्न स्थानों की बाजा करके ऐसी सामग्री इकट्टी की वी जो बाद के जीवनी नेसक श्री वासीराम के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। श्री घासीराम ने दयानन्द की जीवनी देवेन्द्रनाथ मुखोपा-ध्याय भीर प० लेखराम की उद्गं कृति पर माधारित की है। दीनवन्त्रु के इस दावे को कि दयानन्द के बगाली प्रशसकों ने कुल महत्त्वपूर्ण टिप्पशियां लिखी थीं, इसको धसम्भव नहीं माना जा सकता। सपसम्बद्ध भी उन्हीं के बाधार पर दया-नम्ब की बीवनी सिसादी। १८५८ छे १८६० तक के सबस में दीनवन्त्र का

कहना है कि स्वामी जी जनवरी, फरवरी १८६७ में सबस भीर मुरादाबाद में वे धौर बढ़ मुक्ते एवर में मार्च १८५७ में वे। बहुकानपुर जून ६ को पहुचे। मसवकर बाट जुन २२ को धीर कानपूर और इसा-बाद के बीच बुमते रहे। मई, जुन जीसाई १८१७ में वह मिरबापुर में वे। जुलाई में विदूर में और सितम्बर में विश्वगायन में। नवस्वर में वह चन्दनगढ़ और बनारस में वे । उनका कहना है कि इसके बाद भी ब्रह रीवां जिले में नर्मदा के स्रोत तक पहुँचे वे । रीवां में उस समय बचेस सर-दार का राज्य था। रीवा की फीबों ने नक म्बर, विसम्बर १८४७ में विद्रोह किया।

दयानन्द ने सत्यार्वप्रकाश में मृति पूजा के संबंध में सिका है कि १०५७ में वय वर्षेस विदुर के झासपास रहते थे, <del>पन्होंने प्रश्नेकों का विरोध किया धौर</del> श्रंत्रेकों ने उनके बदिरों पर वस बरसाये। ''तुम्हारी मूर्तियां क्षेत्रों को बचाने के लिए उस समय क्याकर रही थीं। वह मक्की तक भी नहीं सार सकी।" दीनवन्यू का कहना है कि नयानन्द द्वारा यह विव-रता ऐसा सगता है जैसे उनकी स्वय की साक्षी हो। उन्होंने यह ही कहा है कि दयानन्द लगभग उन्हीं स्थानों पर वुमे जहाँ पर उस समय या कुछ बाद में भीषण युद्ध हुमा। यह विवाद माज भी चल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता सग्राम के प्रथम दौर में भाग लिया था। ग्रथना नहीं । इस सेस में ऊपर दिये गये ऐतिहा-सिक तथ्य यह सिद्ध करते है कि दयानन्द ने इस पहली लडाई में सक्रिय बोबदान दिया, उन्होंने लोगों को प्रेरला दी तथा भने ही भारतीय इस पहली लडाई में हार बये हों पर उनके बन्दर एक ऐसा विद्यास जागृत हो गया वा कि व्ह ग्रेप्रेजों को धवश्य उकाड फेंकेंमे । दयानस्य ने सर्वत्र स्वराज्य को ही सच्छा बताया भीर बाद में हुमे स्वराज्य मिला भी। महात्मा उन्होंने बनाली में जो इधर-छधर टिप्पणियां गांधी को मार्व दिखाने वाले वस्तुतः दया-नन्द ही थे।

स्टेटसमैन से साभार

#### मिनिस्टर का ग्रादेशः '

(पृष्ट द से झाने)

धव प्राप ही बतावें कि इस फ्राप्टा-चारका कैसे अन्त हो सकता है। क्या धार्यसमाज के कार्यकर्ताओं को भी ऐसे भ्रष्ट तरीके भपनाने चाहिए।

यदि सापके विभाग में ही सापके बादेश की इस प्रकार से बदहेलना की बाती है, धीर विजयां उठाई बाती हैं, दो ग्राम लोबों का क्या हास होना, इसका ब्राप स्वयं घनुमान सवायें।

**बत** मेरा बापसे बनुरोप है कि बाप इस मामसे की जांच करावें और ऐसे

भ्रष्ट सोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करें, जिससे नीचे वाले ग्राचकारियों को भी सबक हासिस हो सके।

मैं प्राप्ता करता हू कि अध्टाचार मिटाने में बार्यसमाज के उत्साही कार्य-कर्ताओं, चिन्होंने विना रिश्वत के काम कराने की कसम छठा रखी है, का उत्साह बढ़ाने के लिए उपबुंक्त प्रविकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्ववाही करेंने।

बोमप्रकाश बार्य, नंत्री

निराशावादो शल्य"

किया भीर बहराइच, गोण्डा वारा-गासी के बर्मीन्तरगाकी समस्याकी मोर ध्यान भाकवित किया। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय सभा पर्वो का धमधाम से बायोजन करती है। इस इस वर्ष दिल्ली में प्रार्थसमन्त्र दीवान हाल की स्थापना शताब्दी मनायी जायेगी। हमारा विश्वास है कि झार्य बीरों के शिविरों तथा प्रशिक्षरण के माध्यम से ही मार्यसमाज के मान्दो-लनको गति प्रदानकी जासकती है। सार्वदेशिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा की ग्रन्तरग सभाकी बैठक में भी महत्त्वपूर्ण निश्चय द्यायवीर दल को ऊर्जाप्रदान करने का ही हुआ। है। दीवानहाल की ग्रोर से एक हजार **धार्य वीरों का शिविर इ**स वर्ष दिल्ली में लगाया जायेगा ।

जब हम इतने महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हमें निर्वातनो के समय शान्ति, सद्बुद्धि भौर एकता से काम लेना चाहिए।

बार्यसमात्र मन्दिर हनुमान् रोड नई दिल्ली में धार्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक श्रिषवेशन सभा प्रधान महा-शय धर्मपाल जीकी ग्रध्यक्षना में हक्या। गायत्री मत्र के पश्चात महा-मन्त्री श्री सूर्यदेव ने ससद सदस्य श्री ललित माकन, श्रीमती गीताजली माकन, श्री बालकृष्ण खन्ना, श्री पाठक, श्री प्रतापसिंह (करनाल), आदि के निधन पर शोक प्रस्ताव रखा। सभी ने खडे होकर दो मिनट मौन रहकर उन्हें श्रद्धाजलि दी। तत्पइचात् श्री सूर्यदेव ने सभा के वार्षिक प्रधिवेशन को कार्यवाही की प्रस्तुत किया । प्रिसिपल भोनप्रकाश ने कहा कि मैं ग्रौर मेरे साथी कुछ समय से महसूम कर रहे हैं कि कार्य में शिथिलता बाई है। इस बात का उपस्थित सदस्यो ने विरोध किया भीर कहा कि कार्य बढा है और धारे भी बढ़ना चाहिए। श्री रामनाच सहगल, श्री मामचद रिवारिया, श्री राज सिंह भल्ला, श्री विजय गुप्ता ने कहा कि भार्य केन्द्रीय समाका गत वर्ष का कार्य प्रशसनीय है। सभी ने तालियों से इस बात का अनुमोदन किया। सभा को वार्षिक रिपोर्ट नर्वसम्मति से सपुष्ट हुई। इसके बाद आय-व्यय विवरण भीर बजट प्रस्तुत करते हुए महामन्नी ने बताया कि जब हमने सभा सभाली उस समय इसके पास ६,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट घौर लगभग ८०० रुपये का कर्जा था। झाज इसके पास ११,००० रुपये का फिक्स डिपो-जिट तथा सात हजार रुपया कीय में है। भाय व्यय विवरण तथा बजट सर्वसम्मति से पारित हुमा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

डा॰ धर्मपाल मत्री ने प्रस्ताव रला कि आज भी दिल्ली की आर्थ समाजों की सख्या को देवते हुए हमें अन्तरम सभा के नदस्यों को नहस्या ३१ से बढाकर ४० कर देनी चाहिए। इस प्रस्ताव पर श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि वधानिक इब्टि से सबि-वान सशोधन का कार्य नैमिलिक सभामें किया जाना चाहिए, यदि कोई वैधानिक ग्रापत्ति न हो तो सशोधन इसी साधारण सभा की बैठक मे पारित कर लिया जाये। उन्हें बनाया गया कि वार्षिक साधा-रए सभा सर्वोच्च है भीर आज भाव-श्यक कोरम भी पूरा है। तीन वर्ष पहले सविधान में सङ्गोधन किया गया था। मत यह सशोधन प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाये। श्री राज-सिंह भल्ला श्री मामचद रिवारिया श्री रामनाथ सहगल, श्रीलाजपत राय चादि मान्य सदस्यो ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया । यह प्रस्ताव सर्वभम्मति से स्वीकृत हमा।

इसके पश्चात् सभा प्रधान महा-शय धर्मराल ने वर्नमान कार्यका-रिएगी के कार्यकाल की समाप्ति की घोषरा की। सामयिक प्रधान के लिए श्री ग्रोममकाश श्रो रामनाथ ने लाला रामगोपाल झालवाले का नाम प्रस्तावित किया। श्री लाजपत राय तथा ग्रन्य भनेक सदस्यो ने उनके नाम का श्रनुमोदन किया।

लाला रामगोपाल शालवाले ने सामयिक प्रधानका पद ग्रहरा किया। सारा सभागार तालियों की गडगडा-हट से गुज उठा। उन्होंने मान्य सदस्यों को सगठित ग्हने की प्रेरला दी ग्रीर प्रधान पद के लिए नाम वामत्रित किए। श्री हरवससिह खैर ने महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रस्तावित किया । श्री रामशरणदास भार्यभौर श्री लाजपत राय ने इस प्रस्ताव का ग्रनुमोदन किया। लाला जी ने दूसरा नाम प्रामित्रत किया। कोई नाम न धाने पर उन्होंने सर्व-सम्मति से महाशय धर्मपाल को सभा का प्रधान निर्वाचित घोषित किया। सभी सदस्यों ने ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। श्री लाजपत राय, श्री राजसिंह मल्ला भ्रादि ने प्रस्ताव रखा कि कार्यकारिस्सी के गठन का कार्य महाशय धर्मपाल जी को ही सोंप दिया जाय । लाला जी ने कहा कि महामन्त्री का चुनाव भी धाप धभी कर लें। श्री ईश्वरचद धार्य, श्री रामशरए दास धार्य ने श्री ग्रशोक कुमार सहगल का नाम प्रस्तावित भीर भनुमोदित किया। सभी ने करतल व्यनि से इस प्रस्ताव

(बेब पुष्ठ ११ वर)

### समाचार सन्देश

#### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा द्वारा

## वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम

आर्यममान दीवान हाल दिल्ली के साप्नाहिक सत्सग मे २५ प्रगस्त १६८५ को श्री महेश विद्यालकार द्वारा विशेष प्रवचन होगा।

१ आयसमात्र त्रिनगर मे ३० अगस्त से १ सितम्बर तक पण्डित आशारास प्रेमी भवनोपरेक्क अवन मण्डली द्वारा रामि को द बजे से १० बजे तक मधुर सगीत एव वेद प्रवचन होगा।

२ कासक्रमाज रमुक्तरपुरा न०२ में ४ जिनम्बर से म जितम्बर तक प्राचाय हरिदेव विद्यान्य भूषण तक नेकारी द्वारा केव प्रवयन होगा। कथा से पूर्व प० जुल्ला स्वाक प्राथ अवनायरोकक के ममुर सबन। परेक होगे।

३ सायसशाव सदर कैसारा न० १ से २ से मायस्थाव सदर कैसारा न० १ से २ से मायस्था स्वाप्त स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र

४ झायसमाज सफदरजन इन्तनव में पण्डित यश्चपाल पुषाधु एम०ए० सम्या वक्त झाय सन्धेश वा झारा वदकवाक सायक्रम रहेगा। कवा य पुत्र प० वेदन्यास साय प्रचारक झारा मधुर सगत सुनन को विकोग यह कामक्रम ४ सिटम्बर से ८ विकास रक्षमुकाम स सम्यन्न होगा।

धू प्रसम्भाग स्वर्शनार पहाडा बीरव में नवभवार २० प्रमस्त ते व दित भार तक धूमकाम क साथ मनाया वा रहा है जिससे प० स्थवेब स्नानक रीडयो कसाकार के जनगेचरेब होने प० ज्यादि प्रसाद डोलक नाटक साथ रहेने ।

६ प्रायसमाज देवनगर में ६ सिस-म्बर स १५ सितन्बर तक प० आधाराम प्रेमी भी "पामवीर राघव द्वारा भवनी पदेश होगे। सभव राती = बजे से १० बजे तक रहेशा।

७ श्रायक्षमात्र राख्याप्रताप बाग से ६ से १५ सिखान र तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया चा रहा है विषये प० वेदप्यास भवनोपदेशक एव प० वदप्रसह तबका बादक का कार्यक्रम रहेगा, साथ ही व विकास्त्र र मुकी वीयहर बाग एक विशास सीमायात्रा निकासी जायेगी। मध्यसमाज राजीरी वाडम में ह से १४ सितान्तर ५५ तक नेव सप्ताह मनाया चा रहा है जिसमे प० सत्यवेव स्नातक रेडियो कमाकार एवं ज्योतिप्रसाव दोलक कमाकार द्वारा मजनोपवेश होने।

६ जायसमाज शालीमार नाग में सीक्रण जन्माय्यी पर पृत्रवान के शाम मनामा जा रहा है। इस सरवर पर विज्ञान सम्बादा उपदेशकों के श्रीकृष्ण जीवन पर स्थाव्यात होगे। जाय ही ४० सस्यदेव स्नादक रेडियों कलाकार के मधुर चयन जीवे।

१० बायसमाज ध्रष्टोकनगर का वाविकोत्सव धूमबाम क साथ मनाया जा रहा है। ७ मा क भजना ५देशक पण्डित चुन्तासाम जा काय क जोसाल सबनाए-देश होंगे।

११ घायसमाज नयाबात मे वद-प्रचार सप्ताह मनायाजा रहा है जिसमे महात्मा रामाकतार वध बहापवसक जी का वंद प्रवचन रहेगा।

१२ भागवसान घकरपुर विस्तार में १ स न वितास्तर तक प्रात ६ ३० वर्षे स न वितास कर विद्यार यह प्रवक्त रखा स्वास्त्र स न वितास के विद्यार का प्रवास का स्वास विद्यास के विद्यास की प्राकृष्ण कम्मोत्सव अमाचा व्यासा की अहिष्ण कम्मोत्सव अमाचा व्यासा किस क्षाहाना विद्यान भजनोप-वेद्यक प्रवास रह है।

१६ बायसमाज न्यू भावीनगर मे १ से ७ वितानर २५ तक अवश्वार सप्ताह मनाबा जा रहा है जिसमें ४० विशासाल जपसान का प्रवचन और ४० जम मपसान सबन सम्बता के संदुर जजन हाने।

१४ वार्यवसाय १४ हुनुसान् रोड से बेदप्रचार सप्ताह् १ खितम्बर हे द वितम्बर तक मनावा खावगा विवर्षे प्रक सदनमोहन विद्यासाय (हैदरावास) का बेदप्रवचन क्या गया है क्या से पूब मनुर संगीत का कायक्रम रहेगा।

धार्यसमान चूनावण्डी पहाडचन नई दिल्ली ४ वितम्बर वे ८ वितम्बर तक वेद प्रवचन श्री ५० रामप्रसाद वेदावकार द्वारा किया वायेगा।

द्वारा किया जायेगा। समय---रात्रि ६ वजे से १० वजे तक।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रविश्ठाता वेदप्रचार विजाव

#### केन्द्रीय श्रार्य युवक परिषद् का ६ ाट वार्षिक खुला श्विवेशन

केन्द्रीय आयं पुनक परिचन् विल्यो प्रवेच का छठा गांविक श्रावेचान तीववान उनरते हुए रनकार प० वशपान श्रुवांधु (धन्मावक मान सन्वेच) की शर्मकाता मे रक्ष प्रवस्त, रतिवार दोपहूर २ वर्षे धार्मवसाय धनारकती मन्दिर मान मे समारीह पूर्वक होगा। परिचन् प्रवस्ता सी सन्ति हुमार झाम ने नताम दिल्ली, हरियाणा, प्वान, उत्तर प्रदेश व धन्म राज्यो से ४०० नीववान बाव लेने।

इस सवसर पर की समर स्थानी की महाराज की प० जिलीस बेवालकार, स० विश्वपाल क्यन्त, साक्षा इन्द्र नारायस्य, की रामनाच सहमल, सहास्य कर्मपाल. भी रामभन्त विकस डा० क्युंक्यास्य (करनास) व भनेक भूषंन्य साथ विडात् व नेता भाग लेंके। सम्बल व शास्त्राधि-कारियो की नियुक्तियां व ब्बज, सोटी, फुटबास उन्हें कायक्रम में दी वार्येगी।

धायसमार्थे व धाय पुत्रक पूण वेध-पुता में ठीक १ ३० बचे पहुर्थे व धपनी बसें, ट्रक, मैटाबोर गाडियो में खिक से धिक संस्था में पचारकर सगठन का परिचय हैं।

> चन्द्रमोहन द्याय प्रेस सचिव केन्द्रीय द्याय युवक परिवद, दिल्सी

#### श्रार्यसमाजों के निर्वाचन

मार्वे बनाज राजेन्द्र नगर नई विस्ती का वार्षिक जुनाव २८७८१ को सी विवसास वासुवेवा की सम्प्रकाता कें सम्पन्न हुसा। निम्नासिस्त पदाधिकारी जुने गरे —

वयान---श्री द्वारकानाय सहयज मुस्य उप प्रवान—श्री शिवसास वासुवेवा जपप्रधान—भी कृष्णसास माटिया उप प्रधान-धी रामकिसन जी कुन उप प्रधान-भी नेजराब बावें उपप्रचान — श्री दीवान पुरुषोत्तमझाल जी उप प्रधान-भी बनराज कोहसी मत्री — भी शादीसाल जी प्रचार नत्री — श्री ब्रशोक कुमार सहगत्र उपमत्री-श्री प्राणनाथ कक्कड उप मत्री—श्री शिवकृशार जी उप मत्री —श्री हेमराज बांबा उप मत्री-अी मोहनलाल बस्सी कोवाध्यक्ष भी श्रोमप्रकात उपकोषाञ्चक की चून्नीसास उप कोवाध्यक भी वर्गकृत भी पुस्तकाध्यत्र भी घोमप्रकाश समुका लेकानिरीक्षक भी युरेन्द्र मोहम युष्टा

(द्वारकानाथ सहगल) प्रथान धार्यसमाज राषेत्र नगर नई विल्ली-६०

मार्यक्रमान नया गाँस विस्ति का ६५ नाँ नार्यिक अधिवेशन रविनार विनाक १४ ७-६५ को प० सरववेन विद्यालकार की सध्यक्षता में निम्न प्रकार सम्मन्न

प्रधान—सा॰ धोनप्रकाश कपढे वाले छप प्रधान—श्री पूर्याचन्त्र घरोड़ा छप प्रचान—, धोनप्रकाश कीम वाले

मन्त्री—, विष कुमार वार्य उप बन्त्री—, वर्षपाश वार्य उप बन्त्री—, राषेन्द्र कुमार वाल वाले उप बन्त्री—,, बद्दालन्द वर्षा कोयान्वव्य—, राषेन्द्रनाथ बोटे वाले पुस्तकाञ्चल-भी नन्दकियोर साव इसके स्रतिरिक्त सब सम्मति से

इसके स्नातारस्त सब सम्मात स सन्तरम समा के लिए १५ सदस्य मी चुने गये। भवदीय

शिवकुमार द्यार्थ (मन्त्री) द्यायसमाच नयावांस विल्बी

जिला आयसमान, समस्तीपुर का नार्यक निर्वाचन दिनाक २१ ७ ०५ बार रविचार को भी रातमशाब साथ के सम्मान हों में स्वीहास्पूण नातानरण ने सम्मान हुमा। निम्मविस्तित प्रवाचिकारी एवं सम्तान स्वस्थ चुने नथे।

,, दीन दयाल काबडा--उप प्रधान

,, विशेष्तर प्रसाद गादन —स्पप्रभान

,, नवल किशोर शास्त्री—मन्नी

"रामलास धाय--छप मत्री "वजरमलाल कृत कृत वाला-छपमधी

।, हरि नारायण वैश्व-कोवाध्यक्ष ,, सुरेशपन्द्र साय-पुस्तकाध्यक्ष

, हरिशयन्त्र थी—सेवा निरीक्षक निवेदक सन्त्री, नवस किसोर सास्त्री विवा प्रार्थसमाज समस्त्रीपुर (विहार)

#### श्रन्तरंग सूचना

सार्वेदेशिक बार्य शेर वस दिश्मी प्रवेश समिति की एक अत्यावस्थक नैठक समितार दिनाक २४ अगस्त १८०६ को साथ ४ वसे सार्येदमान मन्दिर, १६ हर्डु-मान् रोड नई दिल्ली ने होनी निश्चित हुई है।

आप इस समिति के माननीय सबस्य हैं। कृपया बैठक में समय पर पथारकर अपने सहयोग तथा विचारों से सामान्यित करें।

भवदीय (स्थानसुन्दर विरवानी) मन्दी

#### महाशय धर्मपाल (पष्ठ १ का शेष)

चिकित्सालय दिल्लो के ग्रामीए तथा पिछड़ी बस्तियों में नि गुल्क चिकित्मा सेवा का कार्य कर रहा है। श्री महाश्रय जी ने कई एक शिक्षाल सस्थाएँ मी स्थापित की है। पिछले ५ वर्षों से जनकी ग्राम्यस्ता में ग्राय केन्द्रीय सभा दिल्ली दिनोदिन उन्नत होती हुई प्रशन्ति प्राप्त कर रही है। हम मान्य महाश्रय जी को शतायु होने की मानन कारता है। €

#### (पृष्ठ ६ से बामे)

का स्वागत किया। मान्य लाला जी की श्री प्रधोक कुमार सहगल को महामन्त्री निवर्गित बोचित किया स्मीर चेल्या की प्रधान करें के स्मीर चेल्या की प्रधान चौर महा मन्त्री दोनो मिलकर कायकारिएी का गठन कर लगे। प्रस्ताव रका गया कि वर्ग प्रतिनिधियों का चुनाव टीलियों में सदस्यों को बाटकर यही पर करा लिया जाये। इस प्रक्रिया को लम्बा जानकर निएाय किया गया कि सभा प्रधान सौर महामन्त्री का बायकर्ताओं से प्रपासक करके स्वय हो वग प्रतिनिधि भी चुन ल।

सभा प्रवान महावय वर्मपाल जी भौर नवनिर्वाचिन महामत्री श्री श्रवोक सहगल ने उपस्थित सदस्यो का ग्राभार व्यक्त किया।

श्री सूयदेव नै सूचाह रूप से

म्राधिवेशन सम्पन्न होने पर उपस्थित सदस्यो का तथा जलपान के लिए महाश्रेय घमपान जी मौर मायसमाज हनुमान रोड के अधिकारियो का घन्यवाद किया।

> राजेन्द्र दुर्गा प्रचार मन्त्री बाय के दीय समादिल्ली राज्य

#### प्रान्तीय श्रार्थ महिला सभा द्वारा मन्त्र प्रतियोगिता

देद प्रचार दिवस का पन र १--६४ को सोमन र प्रात है एक के साथ पर के को तक बयान द बाटिश में मान्य नहिन इंदबरदेवी ची की प्रध्यकाता में सम्पन होने या रहा है। मन प्रतिकशिया में बखुबद के १५ मन के माने से १२ से २२ मक होनी।

एक सप्ताह के झान्र अपने नास निम्न पो पर भेज नीजिये।

> प्रक्रमा मार्गसभा मतिस्ती ३०३१ ८ हतकरोड नद्दं निल्ली ५

#### श्रावणी यज्ञ

म्रायसमाज पजाकी नाग नई दिल्ली २६ मे १ सितान में सितानमा १६०५ तत्र अपनवद से प० ट्रण्वीराज सासती के ब्रह्मा के सिर्मा या की पूर्ण कुछि - चितानकार प्रवाग प्राप्त ६ कके हुँगी। निवेदक

मा (वेद प्रकाशः)

#### सम्बन्धित विद्यालय च्यान दें

बाप प्रपते विद्यालय की वस ११-४ ८५ को प्रमुख गतिबिरियों की रिपोट तथा परीबाधों और सम्ब प्रतियोगिकाल स्मृत्यालय प्रपत्न करने नाने स्मृत्य स्मृत्यालय के नान जिजवाने की कृपा करें। हमारा विद्याल है कि इससे विद्यालय के प्रव्यालक स्वयाधिकाशों स्मृत्य शामाणी का उत्साहत्वनन होवा और ने सीर मी सम्ब्रा कार सामाणी वर्षों ने कर सकेंग।

धाय विचा परिषद द्वारा आयोजित नैतिक विचा परोक्षा के सब्ब में परिपत्र चापकी सेवा में केवा चा चुका है। धार इस सबच में यथाशीझ आवश्यक काय वाही करने की कुगा करें।

धाए न्हिली प्राय प्रतिनिश्चित सला के उपवेशको अनगोपवेशको और साल उपवेशको को स्रा ने तिवालय से निर्माक विकार पर पाल्या चैने हेतु समय समय पर धालनित कर न निससे कि झालो का सही गायदान हो सके। कुछ साय विद्वाली के नाम और एते साथको सुनमाय नीचे तिके जार हा है।

१ स्वामी विद्यानद भी सरस्वती डी १४/१६ माडल टाउन दिल्ली ६ दूरमाय ७१२७६२८

२ स्वामी स्वरूपानव की सरस्वनी द्यायसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली दूरमाप ३१०१४० ३११२८०

३ डा॰ महेश विद्यलकार बी॰जे॰ २६ पूर्वी गालीमारवंग दिल्ली ४२ टरभाष ७११२ ५६१

४ डा० रघत्रार वेदालकार ए०एस०/३ न लीमार बाग दिल्ली ५२ दूरभाग ७१११६७१

५ चा०प्रात बेनालकार ७२ इत्यनगर निल ७ दरभाप ६ चा०तात पी त्रपाध्याय अपि० २ २ ६ स ा उन निर्पार

७ साथा हरिन्दे सि॰ भूपण सनाम नम्र ७६ गली नम्बर २२ बीडनपुर न गनई न्लिसी ५ दूराल ५६८४६५ द झावाय रामकिशोर वैद्य सी ४३ डी०टी०सी० कालोनी हरिनगर किपो नई दिल्ली ६४

१ श्री वसवीर शास्त्री **बायसमाय** वीबानहाल दिल्ली ६ दूरभाष २३७४४०

१० भी सस्यवेव स्नातक भावसमाब रचुवरपुरा न०२ वसी न० ५ विल्ली ३१

११ श्री पुनीसाम श्रायसमाज मोगल दिल्ली-१४

१२ श्री वेदस्थास धायसमाच धनाच मण्डी छाहदरा दिस्सी ३२ ३ श्री धाशाराम धार्यसमाच धशोकनगर नई दिस्सी १०

१४ श्री यशपाल सुवाशु बायसमाव वीवान हाल दिल्ली ६ दूरभाव २३७४४०

१५ श्री प्रि॰ चन्द्रदेव

१६वी/२० डब्स्यू०ई०ए० देव नवर नईदिल्ली ४ द्रुरभाव १६२४४६

१६ प० स यभूषणा वैदालकार एफ० २६ ग्रीन पाक नई दिल्ली १६

१७ श्री प्रमचन श्रीचर ३६ ई० बहाराचा रणजीत सिंह रोड धावशनगर विल्ली दूरमाय ७४२४३१

धाप इन विद्वानी से सीवा सम्यक्त कर लें तथा समय धौर तिथि की सूचना कार्यालय को भी देने की कृपा करें। यसवाद!

> (डा॰ धनपाल भाय) महामत्री

#### श्रावर्णी पर्व एव वेद प्रचार सप्ताह

दिनाक २० समस्त = ५ मे ७ खि०
म्बर ६६ तक ख्रमारोह पूरक मनाय
जायमा जिसमे सलत करुय ण बहुद प्रात
प्रात साण ६ स खाड । द वेश तक प्रत
दिन होगा तवा राणि को ६ २० वके से
१२० ते तक सी ए० वायक्ररति ज
उपाध्य य द्वारा वेद कथा होगी।

भवदीय बाव्राम भाग (म श्री)



कोग 539609 **637987 637341** 







सदर्शन चक्रधारो, महान् भारत के प्रशोता, युग प्रवर्त्तक, रिपुदनन, गोपालनन्दन, तप ग्रीर सयम के मादर्श, महान् राजनेता, महान् योगी, दीनबन्धु विश्वा-मित्र कर्मयोगी, आलीकिक दार्शनिक, आप्त पृष्य, योगेश्वर श्री कृष्ण जो महाराज की जन्माष्टमी पर मार्यमन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोषपूर्ण लेखी, वचनो गोतो से सुसज्जित विशेषाक द सितम्बर को प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यसन्देश के ग्राहको को विशेषाक मुफ्त दिया जायेगा।

इसलिए जल्दी कीजिए, ग्रायंसन्देश साप्नाहिक का वार्षिक शुल्क २० रुपये या भाजीवन २०० रुपये भेजकर भपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

सम्पादक भार्यसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ 

के लिए उत्तम स्वास्थ्य काँगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सवन करें

वाला कार्यालय-६३, गली राजा के वरनाय. २६६८३८ चावडी वाकार, विस्ती-६





बर्वायक ४१ मूल्य एक प्रति ४० पैने रविवार, १ सितम्बर, १६=ह

सुष्टि सबत् ११७२१४६०=६

भाइपद २०४२

वयामन्वाभ १६ विवेश में ४० जानर, ३० और

## प्रधानमन्त्रो द्वारा माता चन्नन देवो धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के कार्यों की सराहना

नई विस्ती, २६ बगस्त १६०%

बाव भारत के प्रचानसन्त्री सी राजीव वाधी की ने माता बन्तन देवी धार्य वर्नार्व नेत्र चिकित्सासय, जनक पूरी, नई दिल्बी द्वारा भीमती इन्दिरा मांची जी के ६०वें बन्मदिवस के उपसंदय में बाज से १६ नवस्थर १६०% तक प्रारम्भ किए वा रहे 'नेत्र ज्योति बवामी' श्वभियान का गुन्नारम्य करते हुए चिकि-रसासय की टीम को अपने निवास स्वान पर दुनाकर अपना श्राक्षीर्वाद प्रदान किया ।

इस टीय में चिकित्सासय के ६ डाक्टर. ७ नसों के श्रतिरिक्त सार्वदेशिक धार्ये प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रकान बासा रामगोपाप शासवासे, जूतपूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य चपमन्त्री सुधी कुमुद वैव बोशी, मृतपूर्व सबद सदस्य भी हरदयास बी बेवगरा, विस्ती धार्य प्रतिनिधि समा के प्रकान श्री सूर्यदेव, महासन्त्री टा॰ चर्मपाल, बार्य केन्द्रीय समा के त्रचान महाश्वय वर्मपास तथा बन्य कई गण्यमान्य व्यक्ति समितिया थे ।

चिकित्सासय के सचिव की मोन

प्रकाश धार्य ने भी राजीव गांधी जी की पिसले पाच वर्षों में श्रीमती गांधी के जन्म दिनों के धवसर पर किए गए कार्यों की रिपोर्ट तथा बच तक विकित्सासय द्वारा किए वर कार्व का सक्षिप्त विवरण दिया। धापने वह बी बताबा कि इस वर्ष श्रीमती नाथी जी के जन्मवित पर दिल्ली के ६६ ग्रामो में बा बाकर नेत्र परीक्षल किये वायेंगे। ६६ हबार स्कूली वच्चो के स्कूको मे जा जाकर नेत्र परीक्षण किये जागेंगे ६१ हजार नेत्र सुरक्षा सम्बन्धी नियम प्रधानमन्त्री जी के चित्र एवं सन्देश सहित

प्रकाशित कराकर वितरित किये खार्सेसे तथा इस धवसर पर सबमग ४०० नि -शल्क नेत्र धापरेशन किये जायेंगे।

प्रवासमन्त्री श्री राखीय गांकी जी ने चिकित्साक्षय के कार्यों की मरि-मरि प्रश्नसा करते हए जिक्तिसासय के मणि-कारियो तथा डाक्टरो का बन्यबाद fact i

> भोमप्रकाश धार्य विकित्स सय सचिव

## आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न १६८५-८६ के लिए पूर्वाधिकारी पुर्नीनवीचित

की तैयारियां प्रारम्भ

धार्यसमात्र वीवान हास का १००वा वार्षिक श्रविदेशन २५ श्रगस्त को जी सूर्य वेब प्रवान की धम्मकता में सीहार्टपुर्श नाता.. बर्थ में सम्मन्त हुआ। वर्त वर्ष के प्राय-स्थय की स्वीकृति के पश्चात् भग्नामी विसम्बर में भनायी जाने वाली शताब्दी के कार्यक्रम को बल्तिम कर विया गया सभा नत वर्ष के श्रीककारियो एवं सन्तर्थ सदस्यों को श्री भाषामी वर्ष १६८६-८६ के लिए विवर्शित बोचित किया पर्या ।

ग्रायंसमाज दीवान हास दिल्ली के मन्त्री की मूलचन्द गुप्त की घोषणा के धनसार धार्यसमाज दीवान हास शताब्दी समारोह के कायक्रम १३ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर्तक व्यथाम से सम्पन्न होंगे। विनमे चतुर्वेद पारायस वज्ञ मायण, सेलन प्रतियोगिताएँ, वैिक विद्वानों की संबोध्ठिया तथा विजिन्त सम्मेलमी का द्यायोजन होना । समारोहस्वत पर धनेक त्रवर्धनिया भी धायोजित नी वार्येनी। जिनमे आर्थसमाज दीवान हाल के कार्य व्य शादोसनी को स्मरण कराती भौकिया होगी। इस सवसर पर वहाँ भव्य स्मा-रिका, बनेको पुस्तको, दैवटो धीर फोस्बर्स का प्रकाशन किया कायेगा वहा पूरातन द्यार्थ-शाहित्य प्रदर्शनी का भी धायोजन होगा।

आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी सभारोह

बार्यसन्देश साप्ताहिर का द सितंबर का ग्रक विशेशक के रूप में प्रकाशित होगा। यत इस वार का श्रक केवल समावारों के लिए ही नार पंज का प्रका-जिल किया जारहाई। १५ सितम्बर का श्रक मो हम केवल समावार श्रक चार पेज का ही प्रकाशित करेंगे। २२ सितम्बर से धार्यसन्देश हर सप्ताह नबीन लेखो और खोबपूर्ण सामग्री के साथ सुन्दर साजसका के साथ प्रकाशित हाता रहेवा ।

पाठक वन्द ध्यान दें

सम्पादक, भार्यसन्देख

### समाचार सन्देश

### दिल्ली श्रार्य प्रतिनिधि द्वारा साप्ताहिक सत्सर्गों की व्यवस्था

#### १ सितम्बर १६८४ रविवार

आर्यंसमाज दीवान हाल मे प० क्षितीश वेदालकार द्वारा प्रवचन

धन्धामुगस प्रतापनगर--प ० देवराज वैदिक मिक्नरी । अशोकनगर-प० मुरारीलाल वेचैन । ग्रावंपुरा -प॰ रमेश जन्द वेदाचार्य । मानन्दविहार-प॰मर नाथ काम्त धार्योपदेशक । किंग्जवे कैम्य---धार्यंदीर रखबीवसिंह राखा। किशनगंब मिल एरिया -स्वामी यज्ञानन्य खरस्वती। बांधीनगर-प० चून्नीसास बार्य । गीता कालोनी-इ० भीष्म । गोविन्वपुरी-प • रवीन्द्रनाम पाठकः योविन्द भवन--प० वेदप्रकाश शास्त्री । जनकपूरी बी २ -डा० सबदयाल सुटानी। जनकपूरी सी० 3 - प० राधेवयाम शर्मा एम०ए० । टैगोर गार्डन -- प० सोमदेव शास्त्री । तिमार-पर — प० सन्देव जास्त्री । तिलाक नगर----प० जसमगवान भी । देवनगर — डा० रमु नन्दन सिंह्। नगर शाहदरा — प॰ झमी-चन्द मतवालाः। स्यू मोतीनगर---प०उदय श्चीरत सर्वाचाय । नागयस्मविहार -स्वा० प्रजानस्य सरस्वती । प्रजाबी वाग-प० केटल्यास द्वार्थ । पजाबी बाग एक्सटेंशन---

माबार्वे हरिदेव सिद्धांत भूवण जी । महरौसी -- मा० मोहनसास गांची । सहा-वीर नगर-- पं बसवीर सिंह बाक्सी। मौडस बस्ती--- श्रीमती प्रकाशवती सास्त्री मोतीबाग-प० सुबीबकुमार शास्त्री । राजाप्रताप काग-महात्मा मुनी शकर वानप्रस्य । राशैरी गाईन-डा॰ केट प्रकाश महेक्वरी । रमेश नगर-शाचार्य रामवीर शास्त्री। रचुवरपुरा-श्री मुनी देव भवनोपदेशक। साजपत नगर--का० छविकृष्ण शास्त्री । व्यर्डु हो-प॰ नेत्र पाल भार्य । ही बसास -- प० इति दन भार्य। त्रिनवर—प० चमनलास जी। विवेक विहार -- प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। श्रष्टोक विद्वार-प० सस्यवेव स्नातक रेडियो कलाकार इस्यादि ।

> व्यवस्थापक स्थामी स्वरूपानस्य प्रविष्ठाता वेद प्रचार विभाग दिल्ली समा

तांसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली मे ३० ग्रगस्त मे अमितम्बर तक

#### वेद प्रचार सप्ताह

प्रतिदिन प्रात ७ ३० वजे से ६०० वजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ

र० झगस्त को प्रात्त ७ ३० बजे हे आवणी उपाक्रम सामूहिक यजोपवीत संस्कार

एवम् हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान-दिवस

३१ धयस्त से ६ सितम्बर १८०४ रात्रि ७।। क्ये मे ६ वर्ष तक ध्राप्रसमाज के विवान महोपदेशक वैद्य रामकिकोर जी द्वारा

#### वेद-प्रवचन

प्रवचन से पूर्व की गुलाब सिंह जी 'राषव' के नवन होंने। ७ सितस्वर शनिवार से प्राठ ७ २० बजे से योगीराज श्री कुड्ण जन्मोस्सव बनाया वायेगा। कृत्या उपरोक्त कार्यक्रमों में पचार कर बमें साम उठायें।

> मूलचन्य गुप्त मन्त्री धार्यसमाम मन्दिर दीवान हास

#### वेदप्रचार सप्ताइ

वेद सप्ताह ६ सितम्बर से १४ सित-म्बर १६८५ तक सार्यसमाम स्रोक विद्वार केव-१ में मनाया जाएवा।

> प्राप्त ६ वणे से ७ ३० तक यज्ञ जहार और वेदप्रकाश जी मोत्रिय

राजि प ३० से ह बच्चे तक भवन १ ०० से १० बच्चे तक वेदकवा (भी वेदधकाश वी स्रोजिय)

१६ सितम्बर १८०६ रविवार पूर्वाहृति प्रात ७ ३० से ११ ३० तक

भवन भी विश्वय मूचमार्य एव आर्थ स्त्री समाज सहोक विद्वार-१

उपवेशा डा० उवा रानी शास्त्री एव श्री वेदप्रकाश धोत्रिय।

> जसवन्त लाझ प्रदान कार्याचय मधी प्रार्थसमाज संशोक विहार, फेज-१

नत वर्षों की नाति प्रायंतमान तस्त्रा पूरा बारास्त्राची में विनाति ३० प्रमानत के ७ वितान्तर ११८५ (बावणी से सीकृष्ण जनमाटनी) तक वेदावचार सप्ताह मनाया बाएगा जिसमें की समंग्रास शास्त्री, भावार्थ पुरुकुत ततारपुर गावियाबाद व पराम्प्रकाद समीतावार्थ, बाराबसी प्रवार रहे हैं।

#### कार्यक्रम

निस्क प्रतिदिन प्रात ७ वर्षे हे ६ वर्षे तक विभिन्न परिवारों से विशेष यक्ष एव राषि ७ वर्षे हे १० वर्षे तक यक्ष, भवन व प्रवयन झावैं माज मन्दिर, सल्लापुरा वाराणसी में होता।

> बुढदेव द्यार्य व्यवस्थापक व्यार्थसमाज नल्लापुरा, वारासबी

#### श्रावश्यक सूचना

विल्लां नी सभी तभी वार्यवसायों को सूचित नि या जाता है कि दिस्ती वार्य प्रतिविधि समा में उपवेशक अजनीय-केशकों की पूर्व व्यवस्था है। घाण वार्यने वाप्यादिक सत्वंभों के लिए वपदेशक, समीत कलाकारों की वेबा प्राप्त करें। एक वप्ताह पूर्व पत्र व्यवहार कर प्रपत्त वस्ता के विध् प्रयोक्षक महानुष्पानों का क्षांक्रम एकें। हमें पनेन न० ३१०११० पर सानके करें।

व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती स्रविष्ठाता वेद प्रचार दि०सा०प्र० समा

#### श्रार्यसमाज श्राशा पार्क में स्वतंत्रता दिवस समारोह

विनोक १५-८-८६ को प्राचा पार्क निवासी कल्याण सभा (रिवा॰) की धोर से कासीनी मे ३१वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारीह वडे इर्वोल्सास के साथ मनावा वया । इस सबसर पर व्यवारोहरू थी श्चान्तिप्रकाश जी नारन प्रधान, सार्य समाज बाक्षा पार्क के द्वारा किया गया। स्थतन्त्रता प्राप्ति के किए जिन महान वीरों ने धपने प्राव्यों की बस्ति दी थी उन को श्रद्धांश्राणित श्री वर्ष । माननीय प्रधानमध्यी भी राजीव गांची के साहसिक कार्य धीर सम्बन्ध की प्रश्नमा की नई। राष्ट्रीय भावनाओं से धोत प्रोत राष्ट्रीय बीत तथा भ्रम्य सास्कृतिक काशक्रम प्रस्तुन किये गये। समाके प्रधान श्री सरदार सिंह के द्वारा बच्चों से सिठाई सादि बॉट कर समारोह का विधिवत् समापनाकवा

निरजन देव स्थादेश मन्त्री आर्थसमाज भागा पाक नई दिल्ली

#### हम सुधरेंगे जग सुधरेगा

सार्यसमाय मुह्न्सा गोबिन्यवह, बासपर भट्ट मे दिनाक १४ वस्त से १८ वस्त तक, इनी सायवसाय की बारे हे बैदिक स्टस्त यह, मजन एव से इद-चनो का सुन्दर आयोजन किया गया। वैदिक यदि मण्डल के व्यक्ति स्वस्था हु-कमारीय मुनि वानप्रप्र एव आयार्थ व-सार्थ नरेश में डारा यह सब कार्यक्रम सम्प्रकार के सम्प्रकात हुंगा। युढ वेद पाठ विविद भी चना। वद मन्यों की अयाच्या करते हुए बहुस्वारी यो ने माता-प्रमा स्वपना जीवन देनिक यह, सम्ब्रा स त्या-स्वाय के पविच बना कर सपनी स-वन्तों के वैदिक सस्कार अपनाने की प्रदेशा देने का सप्रेश दिवस

कहाचारी जीव मुनिजी साबकल पजाब में एकताव शान्ति के लिए वैदिक सको व वेद प्रवचनों का सामोजन करते हुए शान्ति सामाकर रहे हैं।

> कृष्णा कोछड़ मन्त्रिसी

#### चतुर्वेद पारायण यज्ञ की प्रणीहित

यज भवन जवहर नगर दिल्ली में २१ प्राप्तत से प्राप्तीत जबुवें पारावण वज में पूर्णाहुर्ति १२ तिनगर रिवार को होगी। इस अज के बहुगा एव जहिल्ला होगी। उस अज के बहुगा एव जहिल्ला होगी। प्राप्त के विज्ञ से ही अवालु जन भारी सक्या में वाल को होगी। प्राप्त के विज्ञ से होगी। स्वाप्त के प्रवक्त संस्ता भी इस समस्य प्राप्त का भी इस समस्य प्राप्त की स्वाप्त की स्वाप्त स्वाप्त

निवेदक दर्जन देव

### युना वर्ष के उपलक्ष्य म ६४५ से राति = बजे तक भाषण-प्रतियोगिता

### विषय श्रीकृष्ण क्यो महान् थे ?

श्री क्रम्म जायात्रशी पर स्हेट ३० बसे तक युरस्कार तितरण भी प्रमित्त नरेड प्रमान सम्प्रस्क दनिक बीर सचन साध्य सार्विजनिक सभा स्३० से रास्त्रि १० बजे तक

#### मुस्य वक्तागरः

का॰ वसपान साथ महाम त्री दिस्ती साथ प्रतिनिधि सभा भी मेमकार गोयल साम्प्रका ला॰ रामपाड धनाक वान वर्माव ट्रस्ट त्रवा वाजार सामा कियोरी लाला अस्ति समाक सभी सायसमाक करर वालार , आमती प्रकाश सर्थे महासभित्र प्रातीय प्राय महिला तथा दिस्ती र य भी केमकारुम सेटी सभित्र प्रायसमाज प्रताप नवर

भी प्रतिन कुमारे प्राय सहामात्री के तीय साथ युवक परिवद दिन्ती प्रदेश सामाय देवतत शास्त्री उपप्रयागात्राय सा० गोवि दराम गुरुष्ट्रस श्रीत्यर सैकण्डरी स्कूल राम नाग रोड

सी जुनस किसोर स्वालक बैटिक मुझ्यास्य सायसमात्र पुन वनस्य सी बनबीर प्रजान के प्रोय साय युवक परिवर् दिल्ला प्रदेश युव बुखी राम खर्मी स्विच्छाता महाखब पुनीसाल वेद प्रचार वर्मीय ट्रस्ट

नोट— १ श्रीमती प्रकास सार्या साचाय देवत्रत शास्त्री की वसकार जी सावस्त्र प्रति योगिता के निर्मायक होगे।

२ साबायप्रकारु परीक्षाने बैठ २०० सात्र सात्राओं से प्रयम १० पुरस्कृत होगे।

 मोकनायक की कुटल ट्रैंबर ६०००० खुपवाने में सहयोग देने वाले बाव सज्बन की वहाँ सम्मानित होंगे।

चन्द्रमोहन आर्यं



एम डी एर

सिकाकाई रीठा खाँसमा हरड बहेडा चन्त्रन व सम्ब सर्गाच्या बडी बटियों से बनाया गया एफ डी हुन्छ. विकासाई गठाइर एक घरपना साजकारी प्राकृतिक वेड है। इसने कोई रालामनिक पराच नहीं है।

एव की एव शिकाकाई पाऊवर का झाड़ है हैं नियमित प्रयोग की अमे ।

निर्माता अहाथियां बी हट्टी (प्रा॰) लिंक 9 44 इण्डस्ट्रियन एसिया कीर्त कमर क्षे विक्रत-110015 फोन 539809 537987 537341

#### योग एव सस्कृत प्रशिक्तगा शिविर सम्पन्न

ज्ञानपुर (वाराससी) विश्वभारती अनुसाधान परिषद् ज्ञानपुर द्वारा आयो जित बोग भीर संस्कृत प्रशिक्षण शिविर का समापन करते हुए सम्प्रकृति व सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति डा० रागकरता सर्मा ने कहा कि योग विश्वको श्राचकस मैस्मरिक्स कहा बाता है ऐसी कोई बल्लु नही है। योग वह बस्तु है को हमारे वारीर इप्रिय साल्मा मन और बुद्धिको दश प्रदान करता है। महर्षि पत्रवलि के मत को उद्घत करते हुए धापने कहा कि जीवन शक्की तरह बीने के चार मूझ मात्र है -- मैत्री करूणा मुविता भौर छवेक्षा इनकी व्याख्या करते हुए बापने इन्हें अ बन में बपनाने पर जोर दिया। सन्क्रुत साथा की चर्चा करते हुए बापने कहा कि संस्कृत भाषा एक महाभाषा है। वो देश की सभी भाषाधी को सभी भाव प्राथियों को एक दूसरे के शाथ जोडने ने बस्यन्त महत्त्वपूरा सुमिका निभा रही है। कायकम के बारस्थ मे परिवद के निदेशक डा॰ कपिल देव द्विवेदी ने मुख्य धतिथि का स्वागत करते हुए योग के विभिन्न पहुलुक्को पर प्रकाण डाला भौर शिविर में छ त्री द्वारा उसाहपुरा भाग सने पर उन्हें बचाई दी। परिषद् के बर्धकाडा भारतेषु द्विवेदी ने परिषद् की उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। समारोह की धम्यकता डा० बालचन्द श्रीवास्तव मू०पूर्व उच्च शिक्षानिवेशक उर्व प्रवने की । सापने इस प्रकार के िविर प्रतिवृत समाने की भपील की। इस धवसर पर बीवासनी तथा धायवीर दस के प्रशिक्षक भी कीतिबेच शास्त्री द्वारा धास से त्से हे सरिया मोडमा काच पीसना कागज की तरह वाली फाडना बादिकाभी प्रदक्षन हुआ। समारोह के भात में प्रो॰ विद्याशकर त्रिपाठी ने भाय बाद ज्ञापन किया।

> धायन्तु झाय प्रचार मात्री विश्वभारती अनुसंभान परिषद् ज्ञानपुर वाराससी

#### श्रार्य वीर दल हरियागा का श्वा प्रातीय महासम्मेलन २०, २१, २२ सितम्बर को कैथल में होना निश्चित

पसवस । सावदेशिक सामवीर दस हरियाणा का नीवी प्रान्तीय सहासम्मेलन रस वस २० से २२ सितान्य रस सीमती इतिरा गाणी कन्या सहाशिक्षालय सैयल मे वडी प्रमाना से मनाया जाना निश्चित हुआ है। सम्मेलन के सम्यक्त साला रात गोपाल वी वानप्रस्थ प्रधान सावदेशिक साम प्रतिनिश्चित का गर्न रिव्ली होवे

दिकार २२ ६-५ को प्रात प० धिवकुमार की शा शी का प्रकलन यशोप रान्त होगा। साथ की र का कीर साथ समाज सम्मेषन कर की सोमानन्य की सरस्वरी की सम्बद्धता में होगा मुख्य करवा भी बीक राम की ब्रिडियल सव बानन्य की भी का प्रकाश संस्वार्थी सावास संस्परित की ही है।

स्वामी जीवनातम्य जी सरस्वती यह के बहुत हुँगि। सासा त्वा शोरुटी का

सयोजन प्राचाय केवता जी (उपप्रवान सेनापति सम्बद्धीयक प्राय वीर दल) करमे । कवि सम्मयन का सनायोजन डा॰ राखा प्रताप विद्यु सन्तीरी करिने । सम्प्रेतन के स्वापताच्या श्री वाद्वारा जी पुष्पा ए बोकेट होने । सम्मेयन के सबो जक श्री हरीराम जी साथ मण्डलपति रहेग

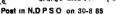
आप खी इस नहरनपूरा सम्मेलन म सपरिवार कि निमो सहित माग सल्बा में सादर निमनित है अपया इस सम्मे सन सभाग नकर सामा गिकर एव एकता का परिवाद । इस की तन सन चन से सहायता भी कर।

> श्रजीत क्रुमार ग्राय मत्री भाग वीर दल हरियाचा

#### श्रावश्यक सूचना

भ यवाद ।

व्यवस्थायक समिन्द्राता वेदप्रचार 经经验的现在分词的现在分词的现在分词的现在分词





## शोधपूर्ण भव्य विशेषांक

सुदर्शन चक्रवारो, महान भारत के प्रशेता, युग प्रवर्त्तक, रिपुदमन, गोपालनन्दन, तप और सयम के भादर्श, महान राजनेता, महान् योगी, दीनवन्सु विश्वा-मित्र कर्मयोगी, भालौकिक दार्शनिक, भ्राप्त पृश्व, योगेश्वर श्री कृष्ण जो महाराज की जन्माष्टमी पर धार्यसन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोषपूर्ण लेखो, वचनो गोनो से सुसज्जित विशेषाक = सितम्बर को प्रकाशित किया जा रहा है। श्रार्यसन्देश के भ्राहको को विशेषाक मुक्त दिया जायेगा।

इसलिए जल्दी कीजिए, भायंसन्देश साप्नाहिक का वार्षिक शुल्क २० रुपये या भाजीवन २०० रुपये भेजकर भपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

पता— है
सम्पादक प्रार्थसन्देश साप्ताहिक है
१५ हनुमान रोह, नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

शाला कार्यालय—६३, गसी राजा केदारनाय, कोन २६१८३८ वालडी बाजार, विस्ती-६



वयः शक्तः ४° सस्यः एक प्रति ४० वैसे रविवार १६ सिसम्बर १६-६ वाधिक २० वर्ग सृष्टि सबत् १९७२९४१०=६ भाजीवन २०० स्पर्य माइपद २०४२

दबामन्दान्थः — १६१ विदेश में ४० डालर ३० पॉंड

## आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन एवं

## खण्ड खण्ड भारत कोअखण्डित करने वाले

## महामानव का मधुर स्मरण

७ सितम्बर दिल्ली, ग्रार्यसमस्ब दीवानहाल दिल्ली के तत्त्वावधान वे बीकुव्ल जन्माब्टमी घूमधाम से मनाई गयी । इस व्यवसर पर श्री रामगोपाल खालवाने की प्रध्यक्षता वे अनेक बक्ताओं ने योगेववर श्री कृष्ण के पवित्र एव उदात्त जीवन चरित्र पर प्रकाशक डाला। केन्द्रीय ससदीय मन्त्री श्री एच० के० एल० भगत ने आर्थसन्देश साप्ताहिक के मोनेस्वर श्री कृष्ण विशेषाक का विमोचन किया। श्री भगत ने श्री कदण की महानताओं का वर्णन करते हुए कहा, मुझे उनकी दार्शनिक मान्यताको ये प्रगाद श्रद्धा है। इस असार ससार में तो कुछ दिन आने कुछ दिन पीछे एक दिन सब को ही बाना है परन्तु यह स्मरण रक्षना चाडिए-नेव खिन्दन्ति शस्त्राणि शस्त्र इस घारमा को नहीं काट सकते बौर म ही अला सकते, बारीर पर ही बाबात हो सकता है। सरीर ही भरता मिटता है धारमा नहीं। इस-लिए यह मान्यता मनुष्य को सनित भीर साहस देती है। उन्होंने मार्थ-संमाज और महर्षि दयानन्द के अन्-क्लियो द्वारा किये गए भीर किये जा रहे कार्यों की पूरि-भूरि प्रजसा की, श्री सनत वे बताया में कुछ सक्य पूर्व साहौर गया था, मैं वहा डी •ए • बी • कासिज भी देखने गया,

मैंने बहुत के रिजस्टिए में लिखा यह कालिज सब इस्लामिया कालिज बन गया है यह पहले डी॰ ए॰ बी॰ कालिज बा जिसकी स्थापना महारमा हस राज ने की थी। मैं इसी कालिज में पड़ा हूं। यदि यह डी॰ ए॰ बी॰ कालिज न होता तो न जाने कितने मुक्त जैसे सामारण परिवार के लोग पढ ही न पाते। उन्होंने सामयिक वर्षा करते हुए कहा—जिस मारत की सुरकता के लिए महाँच रवानन्त, महारमा गांधी तथा अनेक विलदा-नियों ने प्रपता सर्वस्व प्रपंण किया है वह भारत सदा सम्राप्ट रहेगा उसे

कोई तोड नहीं सकेगा।

श्री रामगोपाल सालवाले ने सपने वस्तव्य में कहा, साज से पाच हजार वर्ष पूर्व चक्र घर श्री कुरूए सी महाराष्ट्र ने खड़-सुक्ष्य हुए गारत को सलक्ष्य सारत किया था। सान-तायी राजाधों की कृग्ता से पिसती प्रजा को सपनी कुशसनीतियों से खुडाया था। साज वावस्यकता है श्री कुरूए की नीतियों सौर महान-ताधों को सपनाने की

इस सबसर पर ओ प० जय-प्रकाश आर्थ प्रतिनिधि (मूतपूर्व) इमाम बेतिया एव यशपान सुधाशु तथा दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने भी धपने विचार प्रस्तुत किये।

प्रायंसमाज दीवानहाल से एक सप्ताह तक श्री महारत्या रामकिकोर हारा मनोहर एव प्ररणाप्रद वेदका तृई तथा श्री गुलावसिंह राघव हारा सघर अजन हुए। वेद सप्ताह के अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ का भी धायोजन किया गया था जिसके बह्या था प० यशाया सुघागु तथा स्ट्रालक श्री सुरेन सास्त्री एव श्री धर्मवीर शास्त्री थे।

## आर्यसमाज का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

पार्यसमाभ का विष्टमण्डल सार्वदेशिक ग्रार्थ प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेत्रव मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांची से जिला और ज्ञापन दिया। इस जापन में कहा गया है कि सैनिको के सेवा कार्व में रहते समय कुछ तस्य उनकी सम्पत्ति बादि पर कब्बा कर लेते हैं। इसलिए सैनिकों को इस मामले में वैचानिक सरकारा दिया जाये तथा इससे सम्बद्ध मुक-हमो का निपटारा शीझ किया जावे। ज्ञापन मे यह भी धनुरीय किया गया कि प्रवाबी की लिपि देवनागरी की जाये। इससे पजाव कें हिन्दी का विकास होगा। श्री

रामगोपान सालवाले ने सार्यसमाय दीवानहाल की सतात्वी का उद्वा टन करने का खनुरोस किया। त्रवान मण्डी ने सिद्धान्तर इस निमन्त्रण् की स्थीकार करते हुए इस सक्तर पर एक डाक टिकट जारी करने की सम्मावना पर भी विचार करने का सम्मावन दिया। श्री शालवाले ने कारमीर की समस्या और उसके समामान के लिए महत्त्वपूर्णं प्रकार दिये। उन्होंने दिल्ली से कनता लासन के समय पुरानी इमारतो के सामने सम्मावन के लिए ने के सामने सम्मावन के लिए ने के सामने सम्मावन के समय निम्निक समय के समय निम्निक सम्मावन के सामने सम्मावन के समय निम्निक समय करने का

п

# आर्यसमाज सफर्दरजंग के ब्राधिकोत्सव पर

## विशाल सम्मेलन

ग्रार्थममाज सफदर जग इन्क्लेव नई दिल्ली मे वेद सप्ताह के श्रवमर पर वार्षिकोत्स्व का ग्रायोजन किया गया। इस ध्वसर पर प्रातकाल बृहद यज्ञ श्री डा॰ वाचस्पति के बह्यात्व में सम्पन्न हुआ। रात्रि मे प • यशपान सुधाशु (सम्पादक आर्य सन्देश) द्वारा भ्रत्यन्त रोचक एव द्याध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर वेदकथा हई, तथा श्री वेद-याम के मधर भजन हुए। रविवार म सितम्बर को विशाल सम्मेलन का समायोजन हमा। इस ग्रवसर पर गुरकुल कौगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कूलाधिपनि श्री डा॰ स यकेतुतथा कुलपति श्रो डा॰ सत्यकान वर्माका

भव्य स्वागत हुआ। इस ममारोह की ग्राप्यक्षताश्री डा० सत्यकेतुने का। सम्मेलन में डा॰ सत्यकाम वर्मा प॰ जैमिनी शास्त्री, श्री डा॰ वाचस्पति श्री उपाप्याय श्री प्रमचन्द्र श्रीघर श्री सूर्यदेव जी बादि वक्ताम्रो ने मपने विचार व्यक्त किये।

डा० सत्यकाम वर्मा ने कहा-गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्रति जो भार्य जगत मे एक आम्बा बनी हुई थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने जो इस गुरुकुल के माध्यम से स्वप्न देखा या मैं उसी स्वप्त को पूर्ण करने का, गुरुकुल विश्वविद्यालय गौरव को पुनस्थापित करने का हरसम्भव प्रयत्न करूगा।

प॰ जैमिनी शास्त्री ने श्री कुष्ण के मोह रहित मद रहित स्वरूप का मनोरम व्याख्या से चत्रण किया। डा॰ वाचस्पति ने श्री कृष्ण के दार्श-निक, नीतिमान येखा बादि गुर्णो का भरपूर व्यास्यान किया। श्री प्रमुचन्द्र श्रीघर ने भी ग्रपना श्रोजस्वी भाषरा देते हुए कहा आयसमाज के भगडाई लेने का समय मा गया है।

दिल्ली मार्थ प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—श्रीकृष्ण का वास्तविक स्वरूप हिन्दू समाज से स्रो गया है। केवल बाल्यकाल की लीलाभ्रोको पौराग्गिक जगत् याद करता है। उनका हिषयारी से सजा गाततायियों को ललकारता ब्दरूप

कीन बाद करेगा ? उनका धक्कण्डत भारत को एक भारत करने का महान कीसल कीन याद करेगा ? सारयो बनकर धर्जुन को धन्याय से जुमने की महान् प्रेरणा देने वाले दार्शनिक को कौन बाद करेगा? यह मही स्बद्धप स्मरमा करने वाला तो ग्रार्थ-समाज है और महर्षि दयानन्द के सन्यायी ही हैं।

द्यार्थसमाज मन्दिर के प्रधान श्री हरबन्स बाल बेर ने मन्दिर द्वारा चलायी जा रही गतिविधियो का उत्साहबर्द्धक परिचय दिया।

## राजधानी में वेदप्रचार सप्ताह की धूमधाम

धार्यसमाज झालोमार बागने दिल्ली में वेद सप्ताह के ग्रवसर पर भनेक विद्वानो को भागन्त्रित किया। प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री के द्वारा एक सप्ताह वेदकया हुई । श्री बहाप्रकाश वागीश यज्ञ के बहुता थे श्री कुटरा जन्माष्टमी पर श्री प॰ सचिवदानद **बा**म्त्री डा• महेश विद्यालकार हा । धर्मपान महामन्त्री दिल्ली मा । प्र० सभा तथा डा० रघवीर वेदाल-कार ग्रादि वक्ताभी के प्रवचन हुए।

> दिल्ली इस धार्यसमाज मे डा॰ वाच स्पति उपाध्याय की मनोरम वेदकथा हुई वेद सप्नाह के हो ग्रन्तर्गत प्रात काल यज्ञ का भी ग्रायोजन किया

#### भव्य जुलूम

श्रार्थममाज नागा प्रताप वाग श्रायसमाज सीताराम बाजार दिल्ली की भ्रो से श्री कृष्ण जन्मा-**ड**टमी पर एक भव्य जलूस का आयोजन किया गया जिसमे अनेक भार्यसम्बामो ने भाग लिया। दिल्ली भार्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भी नेतृत्व एव सहयोग दिया गया।

#### नवीन श्रायंसमाज दयानन्द विहार का वेदमप्नाह

श्रायंसमाज दयानन्द विहार दिल्ली मे २० ग्रगस्त से १ सितम्बर तक बेदकथा का ग्रायोजन किया गया। इस भवसर पर प॰ यश्रपाल सुधाशुके द्वारा वेदश्वचन हुए।क्षेत्र की वार्मिक जनता वे ग्रगांघ श्रद्धा से बद्ध-चढकर भाग विया।

#### श्रार्थसमाज कृष्णनगर में श्रीकृष्ण जन्माष्ट्रमी

ग्रार्यसमाज कृष्णनगर मे जन्मा-ब्टमी के भवसर पर भनेक वक्ताओं ने ग्रपने विचार व्यक्त किये। समा प्रधान श्री सूर्यदेव ने श्री कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र का श्रद्धालु जनता की स्मरणः करावा। दिल्ली मार्यप्रति-निधि सभा द्वारा किये जा रहे उत्साह वर्द्धक कार्यक्रमो का भी परिचय दिया ।

## श्रार्यसमाज सदर बाजार दिल्ली

महात्मा रामिकशोर वैद्या की गीना एव वेद की पुनीत शिक्षामी पर ग्रावारित मघुर शैली मे प्ररक कथा हुई। हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदान होने वाले वीरो का भी स्मृति दिवस मनाया गया।

### आर्यसंदेश का संकल्प

ग्रार्यसदेश की व्यवस्था तथा लेखों के स्तर में सुधार के लिए तथा वितरण सख्या में वृद्धि करने हेतु. एक बैठक बुधवार २१ झगस्त १६८५ को दिल्ली आर्थ प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड मे सभाप्रकान श्री सूर्य देव जी की ग्रध्यक्षता में हुई। इस बैठक मे डा॰ धर्मपाल डा॰ गरोशी-नाल श्री विमलकान्त शर्मा श्री राजेन्द्र दुर्गश्री अजय भल्ला,श्री श्रद्धानन्द प० यशपान जी सुधाशु श्री रामशरण दास आर्थ, श्री माचार्य रामिकशोर वैद्य श्री वेदव्यास श्री मासाराम मादि कायकत्तामो भौर विद्वानो ने भाग लिया।

ग्रायंसदेश ही वस्नुत दिल्ली भाग प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा ग्हे कार्यो तथा भ्रत्य समाज कल्याए। के लिए किये जा रहे कार्यों का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत कर सकता है यह इस सस्याका विगुल है। यह इस सस्या का शख है जो लोगो का ध्यान घ'-कवित करता है कार्यकलापी का विवरण प्रस्तुत करता ८ तथा अघि-कारियो एवं कार्यकर्तामों को प्रशस्त पथ पर ग्राग्रसर होने की प्रेरणा देता है। ग्रायं सदेश में सुधार की बात प्रारम करने से पूर्वमहामन्त्री डा० धर्मपाल ने सम्पादक श्री यशपाल जी सुषाशुका निष्ठापूर्वक कार्यकरने भीर भार्यसदेश के स्तर को किया उठाने के लिए सत्प्रयास करने के लिए बन्यवाद दिया और बताया कि यह बैठक जहाइ स बात पर विद्यार

करने के लिए है कि आर्य सदेश किस प्रकार मनुष्य के शारीरिक ब्रात्मिक ग्रीर सामाजिक कल्यारा के लिए कार्यकरे। इस बात पर भी विचार करने के लिए है कि किस प्रकार इसको ग्रात्म निर्भर बनाया जामे । बडे-बडे लक्ष्य रखने की बावज्यकतातो है पर बाधार भूमि की दुढता को भी भ्यान में रखना धावश्यक है। हम तभी कूद मकते हैं जब हमारे पैर मजबूत जमीन पर टिके हो।

इन बातो पर विचार विमर्श के पश्चात निम्नलिखित निर्णंय सर्व-सम्मति से लिये गये।

१ इसकी पुष्ट सरूबा १२ ही होनी चाहिए।

२ समय समय पर विशेषाक निकाले जाने चाहिए। विशेषाक ऐसे आकार में हो कि लोग उसे समाल कर रख सक । साथ ही उनकी सामग्री भी सग्रहणीय हो।

३ मार्य सदेश में विभिन्न स्तम प्रारम किए गमे हैं। यह घच्छा प्रयास है। स्वास्थ्य सबन्धी परिचर्चा भी प्रारभ की जाये। इसके लिए डा० विवेकपाल, वैश्व ग्रोकार दत्त, वैच प्रष्ठलाद दल, वैच नित्यानद धादि की सेवाएँ प्राप्त की जा सकती

४ इसकी ग्राधिक स्थिति मे सुघार बावस्थक है। बार्यसदेश के व्यवस्थापक, समा के सभी झिवकारी श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री वजय घल्ला,

(सेव वृष्ठ ३ पर)

### समाचार सन्देश

#### जैन ममाज भी श्वार्य प्रचारक से प्रभावित हुए बिना न रह सका

निजारा (धनवर) स्थानीय खार्यमात्र के वेदश्यार मप्ताह का गुआरम्भ वेदिक प्रवक्ता शक्टर धानन्द मुमन (पूर्व नवाय छतारी) ने किया। डा० सुमन में वेद के सन्वेय से स्थानीय जनना का मन भोह लिया, वेदकथा के सुमन ने हेस्थानीय प्रवक्ता के सान्वेय से बाल सुमन ने हेस्थानीय स्वर पर धार्य-, नमाज की ज्योति को प्रज्वलित किया धारवर्ष तो यह कि बार्यसमाज के दिरोधी विचारमारों के जैन समु-वाय ने भी डा० सुमन को धपने

प्रसिद्ध तीर्थस्थल देहरा मन्दिर पर प्रामन्तित किया व उनके विचार पुने, बार सुमन ने प्रामन उद्योधन में कहा कि वद दो प्ररच वर्ष सना-तन सस्कृति का सन्वेश मनुष्य मात्र को प्रदक्षित कर रहा है। वेद न नर-बलि को मानता है न पशु बलि को यह एक दुष्प्रचार है। हमें सारे सम्प्र-दायों के मोह से निकलकर वेद की विचारधारा की फैलाना है।

दिल्ली आर्थ प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड,

#### श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह

विताक ७ मितस्वर ८५ को साय
७ ०० व के से ११-०० व के सांतवार
को झार्यसमम्ब धार्यपुरा सज्जी मटी
के साल मताया गया। जिसमें वैदिक
सिद्धान्तों के झालार पर योगीराज
कृष्ण जी का खाड़्की पूर्वर वर्ष प्रेसी
एउनों के सम्भूख प्रस्तुत किया
गया। साल मे श्रीकृष्ण जी के जीवन
पर फर्सिक्या भी धार्योजित की गई।
योगीराज के विति से सम्बन्धित
भूभनी का धनीना कार्यक्रम हुमा।

बनेक जजन मण्डलियों ने कई उच्च-कोटि के विद्वानों ने जिनका लस्य जनता के मध्य योगीराण का सच्चा बादर्श चरित पहुचाना है पथार कर उत्तम भाषण किये। इस कार्यक्रम से पूर्व एक बृहद् यज्ञ का मायोजन किया गया। जिसका सरक्षकत्व पुरोहित घमंद्र शास्त्री विद्यावानस्पति जो ने

> राजवीर ग्राय मत्री श्रायंसमाज श्रायपुरा सब्जी मण्डी, दिल्ली-७

#### प्रान्तीय श्रार्य महिला सभा द्वारा हरितृतीया पर्व हर्षे उल्लास से सम्पन्न

हरितृतीया पर्व हर्षोल्लास और बडी धूमबाम से बढ़ा गार्डन के विशालतन प्रागण में मान्य बहिन सत्यवती जी वि नकृता की अध्य क्षता में सम्पन्न हुआ।

ग्राज के पर्व के मुख्य श्राकर्षण के बच्चो भीर नवयुवितयो द्वारा श्रीवक से भीषक दौड मे भाग लेना भीर परस्कार प्राप्त करना।

बहिनों ने बहुसस्या में यथा समय पहुँचकर घपने साठन साठन परिचय सिया। किरानारियों मरती बच्चों की टोलिया फुलो नहीं समाती बाँ। ऐसा लग रहा था जैसे कोई भेला लगा हो। परस्पर प्रीतिकोंज की प्रपनी हो विचा थी।

सना यिकारियों ने बड उत्साह से भाग सेकर पुरस्कार बंदान किये। जिसमें सेका प्रकाना सरला जी महता मान्य बहिन सुसीला बी मानन्द, तारा वैद्य, चाद रानी प्ररोडा इत्यादि।

१०० से भी प्रधिक प्रतियोगिता में बहिनों ने भाग लिया। प्रत्येक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न हो गया इन्द्रदेन ने महती कुषा की। यज्ञ के समय न-ही-नन्ही बूदों से प्राधीर्वाद देकर फिर विश्राम करते रहे।

ावश्राम करत रह। सभा मत्रिणी प्रकाश भार्या

#### श्रार्यसमाज शकरपुर दिल्ली में बृहद् यद्ग

सकरपुर लग के वार्षिक जनो हारा प्रमावसमाज के प्रागण में विराट् वस का वायोजन हुंड्या, जिसमे प्र-वर्मनीर वास्त्री बहुगा एव प्रवचन-कर्ता के। द निरास्त्र को जन्मास्ट्रजी का पर्व जी मनाया गया जिसकी स्वामी स्वरूपानन्द ने बोजस्त्री कदि-ताया हारा कृष्ण नरित का बसान किया। (पृष्ठ २ का नेप) **आर्यंसन्दे**श का सकल्प

श्री सुरैन्द्र हिन्दी श्री सुशोल महा-जन श्री विमल कान्न धर्मी श्री शोमप्रकाश सुनैष्मा धर्मद बालीवन सदस्य बनाकः तथा विज्ञापन मह-योग देकर विलवाकर धार्य सदेश के कोष की।वृद्धि में विश्वेष सहयोग द। सभा के सभी उपदेशक प्रतिनिधि तथा बार्यसमाजों के सश्री स्वय बा-जीवन सदस्य बन धौर विसम्बर ६५ तक कम से कम दस सदस्य बवर्य बनाये।

५ माजीवन सदस्यों से प्राप्त धन मसग साते में रखा जाये जिसे वर्ष के बाद मार्यसदेश निमित्त स्थायों कोष में परिवर्तित कर दिया जाये। उसका ब्याज केवल खर्च किया जाये।

६ समाचार पत्र के निए कागज के कोटा हेतु आवेदन पत्र दे दिया जाये। इस कार्य को श्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक) श्री विमल कान्त सर्मा और श्री सुरेन्द्र हिन्दी के महयोग से करने।

७ डी ए.वी पी के विज्ञापन प्राप्त करने की सारी ध्रौपचारिक— तार्य पूरी की जा चुकी हैं। श्री विमल कान्त वार्मा (स्योजक) इस कार्य को शीझ पूरा कर दगे।

द बिना पूर्व भुगतान के झाय सदेश को पोस्ट करने की ग्रनुमति मिल चुका है इसके लिए समीने प्रसन्तता यक्त की

६ ग्रायसदेश का सदस्यता शुक्क समाप्त हाने पर ग्राहको को जा पत्र भवा जाये उसका भाषा शिष्ट होनी चाहिए

१० ग्राय प्रतिनिधि सभा की सभी बैरको में ग्रायंसदेश का विषय ग्रवस्य रखा जाये

११ प्रार्थसदेश के श्री कृष्ण जनमाज्यमी विशेषाक के लिए श्री सरेन्द्र हिन्दी (संगोजक) श्री राजेन्द्र हुर्गा श्री सुशील महाजन, श्री श्रदा-नन्द, श्री रामशरण दास बार्थ डा० गगांशीलाल तथा सभी मणी धौर उपदेशक, विशापन प्राप्त करने मे सहयोग करेंगे।

१२ श्रार्थसदेस में वंवाहिक विज्ञापन भी दिये जाय। इसके लिए पूरा प्रारूप श्री राजेन्द्र दुर्गा उपलब्ध करायोंगे। तभी कार्यसमाजी को एक परिपत्र मेजा जाये कि उनके यार्थ जो भी शादी हों उन्हें प्रार्थसदेस का वार्षिक मारूक मुनद्द नाया जाये।

१३ बायंसदेश दिल्ली बायं प्रतिनिधि समा का गल है। बत इसमे बायंसमाज के बायं नेताबो बौर समाको सुवना विशेष सज्जा के साथ प्रकाशित को जानी चाहिएँ।

शान्ति पाठ भीर सभा प्रधान एव ग्रन्य उपस्थित सज्जनो के धन्यवाद के पश्चान बैठक समाप्त हई। □

#### निर्वाचन

सार्वे उपप्रतिनिधि क्यां कानपुर महानवर वी सन्तरम ममा ना वाधिक निर्वोचन दिनोक ११ समस्त १८८५ को सायस्याच बीसामऊ में चा पुनीसाल बादव की सम्बद्धता म मन्यना हुसा, विसमी निम्निसिंखत पदाविकारी निर्वा-चित्र हर।

प्रधान प० विश्वयणान शास्त्रा उपप्रधान श्रीमती सरना चौधरी

- ,, श्री बाचादीन वर्गा
- , श्री गोरसनाथ गुप्ता मन्त्री डा॰ ह्रप्यालसिंह पो०एस०डी० उपसन्त्री श्रीमतीडा॰ श्राका रानी राय पी०एस०डी०
  - ,, श्री हरिशचन्द्र साहनी
- , श्रीरिपुदमन कुमार भल्ला कोषाध्यक्ष**ी राजेन्द्र प्रसादधार्य** स**इ**० डा• ग्रमरपाल सिंह

पी०एच॰ ही। नेकानिरीक्षक श्री पूर्णालास बादव

> हरवास सिंह मन्त्री श्रार्थे उपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर

#### स्वतन्त्रता दिवस समारोह

विडला धार्य गर्ल्स सीनियर मैकेण्डरी विद्यालय का स्वतंत्रता दिवस समारोह माननीय वेदप्रकाश म्बुल्लर की ग्रध्यक्षता मे दिनाक १४ ८ ८५ वृषवार को ग्रार्यसमाज विन्लालाई स के प्रागम में बडी धूमधाम से मनाया गया। ध्वजारो-हरग कार्यकारिसी पाषद श्री खल्लर द्वारा सम्पन्त हुन्ना । विद्यालय की छात्राधों ने देशभिक्त पूर्ण सास्कृ-तिक कायक्रम प्रस्तुन किया। एक छात्रा ने स्वामी दयानन्द की घटट देशभक्ति एवं गब्द प्रमुपर ग्रापने विचार व्यक्त किए। मुख्य प्रतिश्वि एव ग्रागन्तको द्वारा कार्यक्रम को भूरि-भूरि प्रशशा की गई।

प्रिसिपल बिडला श्रार्य गर्ल्स सीनियर सैके० स्कूल विडला लाइन्स दिल्ली ७







उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां



शासा कार्यातय—६३ वसी राजा केरारमान, चावडी बाजार,|विस्ती-६ कोन। १६९८३८

भेवन करें



वय स्थव ४४ मुक्द एक प्रति ८ तैमे रविवार २२ सितम्बर १८०६ वार्षिक २० रुपये सृष्टि **नवत् १**६७**२**६४८०८६ द्याजीवन २०० रुपय भाइवद ३०४२

दयानन्दाब्द — १६१ विदेश मे ५० शलर ३० पींड

## गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु एवं कुलपति श्री सत्यकाम वर्मा

## दिल्ली सभा द्वारा स्वागत समारोह



श्रासत्यकाम वर्मा

रिववार १५ मिनम्बर दिल्ली । मार्थसमाज हनमान् रोड नह दल्भी से डाल म यकेतु एव डा० । स्वायसमाज हनमान् रोड नह दल्भी से डाल म यकेतु एव डा० । स्वायान मा डिल । स्वायान किया गया। इस मव-। दपर बालने हए था रामगोधला मान्याले ने कहा- यह प्रमानना का मुख्य है कि एक्कल विश्वश्री-ब्रालय

के कुलाधिपति एव कुलपति अपने हो गुरुकुल के स्नानक तथा लब्ध प्रति-ष्टित विद्वान है। गुरुकुल विश्वविद्या-लय ने समस्त विश्व को सुयोग्य विद्वान लेखक एव वक्ता प्रदान किये हैं। एक समय तक छ। मिक मामा-जिक एव राजनैतिक क्षत्र मे गुरुकुल के स्नातको का वर्चस्व रहा। इस समय फिर हमारे मामने चुनौती है। वही खोई प्रनिष्ठा फिर पाने को मुभे ग्राज्ञाहै। श्रोम यकेनुजी ग्रीर श्रो मत्यकाम जो अपने कार्यो स्रीर प्रय सो से इस मस्थाको उसी उच्च स्थान नक पत्रचाने में नक्षम ही मकरो । श्री शालवाल ने हमने हुए कहा—ग्राप दानों के गत में पड़ी हुई मालाए जितनी है ग्रीर जितनी इनकी पत्तिया है उनने हो कत्त यो का बोफ ग्राप लोगो के कन्धो पर है।

सावदेशिक सभा के काषाध्यक्ष श्री सोमनाय मरवाह ने दानो विद्वानो की विद्वता और स्वभाव एव कार्य

कुशलना की प्रशमा को तथा गुरुकुल के भविष्य की कुशल कामना की।

दिल्ती मार्थे प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा-यह माना कि माग दुगम है भ्रौर काटो पथरो से भरा हुआ है। कुशलता और योग्यता इसी में है कि बेघनक निडर भीर उत्माहित होकर विपरीत परि स्थितिया में भी काय पूरण कर लिया जाये। इस समय प्रयक्त भ्रायनर नारी का अस्टिगस्कृत के वननान भीरभ बध्यका स्रोर नगी हुई है। गुरुकून म केवन १. विद्यार्थिया का होना स्थिति की गम्भीरता को प्रकट कर रहा है। भगड ग्रीर मुकद्मे गजा तथा ग्रन्य प्रकार को समस्याए वहा ग्रब नक है। हमारे मान्य कुलाबिपनि और क्रपति हम सब को ग्राणाग्रो को विश्वास में वदन पाय गे मैं ऐसी भूभ कामना करता है।

श्राराम राल भलिक ने सभा काध्यान ध्राय विज्ञानो और पुरो हितो के सम्मान की ग्रोर दिलाया। दिल्लो ग्राय केन्द्रीय सभा के

ादन्ता आय कन्द्रीय मभाक अधान श्रो महाशय ध्रमपाल ने स्वा-गत करते हुए हार्दिक बबाई दी और कहा-मबसे पुगती और सबसे अच्छी हमारी गत्रकल जिला पद्धति है। इसका जितना प्रचार प्रमार होगा उतना ही हम ऋषि के ऋएा को चुका

दि शिया प्रतिनिधि सभा के महासन्त्रा ड । गर्मान ने गरकुल का गौरव गरिमा का प्रवान करते हुए भविष्य के उ ज्वत हो सकने की मगत कमना की

चा० सर-कनु एव चा० सम्यक्ताम ने प्रपन -- गांशन शब्दों मंबक्ताग्रों की ग्रामाया अनुरूप काय करने नाविकास -- चाग्या इस ग्रवसरी पर अनेक ण्यागन्त्र चा प्रदेशनी

## स्य. श्री देववात धर्मेन्दु-एक युग की कहानी का अन्त

षयोबुद वैदिक धर्म के सेनानी श्री देववत धर्में दु हा १६ तिनम्बर्र को लिखन हो गया : श्रू सू करती तिता की लपटो में उनके पाधिय धरीन के साथ एक द्वा की कहानी समीध्य हो गयी । अमुना के तीर पर वेदिक मन्त्रों को पित्र ध्वनियां और श्रम्थ सरकार में सम्मिलित नगर धायवानों के बील स्वानाक बहु सरल इस क्षेत्रेय्या का प्रतीक केहरा मेरे

मानस परल पर उमरा । एक-एककर उनके कार्यों से बुढ़ी सनेक स्मृतिया स्कुरह कर बादे खाने लगी।

महात्मा गांधी के ग्रसहयोग ग्रादोलन से लेकर स्वामा श्रद्धानन्द भीर महात्मा हण्टाज के निर्देशी पर ग्रुद्धि तथा वेदिक सम के प्रचार प्रसार के कार्यों तक उनके जोवन की एक प्रक मधुरस्मृति है। सस्याधी के खिहासकवाद और सत्तावाद से

स्रलग हरकर व सम प्रचार वैद प्रचार प्राय भाषा के दल्यान राष्ट्र निर्माण धौर युवको मे चिरव निर्माण के महान् कार्य मे लगे रहे। वे दल एव वय से ऊपर रहे, मवको अपना प्यार वाटते रहे। शिमला के पहाडी गाँवो मे चुम-चूम कर उन्होंने विद्यक बमंका प्रचार किया। साथ ही पहाडी क्षेत्रों के प्रजेक नमस्याखा के निदान का सा उनका काय ग्लु.य

है।

दिन्नो मे रन्त नए प्रवार प्राप्त क उनके काथ। में ग्राय युवक परि-वद के गायम में प्रायमाण के शत के लिए कमर श्रीर चरित्रवान युवक तथार करने का उनका मकलर काफी हदतक सम्बन्ध हुए। एक कुखल बक्ना होने के साथ ग्रीर धनेक सम्मेलनो में ग्रपना निद्वन्त काथ क प्रमान के

(बोब पृष्ठ ११ पर)



## जीवन सार्थक और श्रेष्ठ कैसे हो ? आत्मचिन्तन के क्षण

#### ग्राचार्य दीनानाथ सिद्धान्नालकार

केन् उपिद मे एक कथा ग्राती है। पृथ्वी ध्रप नेच वयु आकाश ग्रादि इन तत्त्वो मे धर्मिमान ग्रा गयाकि हम ही सर्वशक्तिमय है। वह ग्रपने स्वामी और निर्माता को भूल गये। उन की जाच करने और उनका ग्रमिमान नोज्ने के लिए बह्य शक्ति ने उनको परीक्षालो। ब्रह्म ने अपनीदी हई शक्ति को इन पच तत्वो से छीन जिया। ग्रब पाँचो तन्त्र जन्त्र एक्दम निश्चेष्ट हो गये। उन्हें अपनी भूल जब जान हई तव उन्होंने क्षमा मागते हुए बहा शक्ति से प्राथना की । त्सके पश्चात् पृथ्वी ध्रप तेज वायु धाकाश पुन संशक्त हो गये। ठीक यही स्थिति भ्राज के मानव की है। श्रमिम न मे फस जब वह अपने को शक्तिका भण्डार समभने तगता है तभी दुल कट्ट प्राप्त करता है।

प्रभुशक्तिका विनम्रताने स्म-रगा करते रहना चाहिए फनन वह प्रमुप्त शक्ति पुन जागृत हा जाती

#### भोष्म की साधना

महाभाग गान्तिपव के स्रतु-सार स्व∽छासे मृत्युका जब वर्गा बृद्ध निनामह भीटम रेंग शब्या पर मृत्यु के लिए उहाँ निश नप साधना रत पिनामह द्वाादीर्घ जीवन पर म्राधारित प्रकाशप्रद उपदेश श्रवगा करने जन समह एक व होता था। इस दीर्घ गाय शान्तिपर्व मे इन्ही सव अनुपम उपदेशों का सग्रह है। भ्रायात्मिक युद्धि के क्या उपाय है। इसके उत्तर में पितामह कहते हैं-

ब्रात्मा नदी सप्रमपुण्यतीर्था, सत्योदका शोलनटा दर्योमि । नत्राभिषक कुरु पाण्डपुत्र न वारिए। श्रुप्यति चान्तरात्मा ॥

यह ग्रात्मचिन्तन रूप नदी, जिसके दोनो किनारे नयमस्प सत्य-रूपी जल, शोल रूपी घाट है। हे पाण्डपुत्रो । वही स्नान करो जिससे श्रन्तरात्मा गुट्ट हा जायेगा, केवल जल द्वारा प्रात्मशुद्धि नही हो सकती।

> जीवन में छिड़ वैदिक धर्म में पवित्र जीवन ग्रीर

उसके सबेक्षरण और पवित्रता का माधन हृदय को श्रद्ध गूरा का भण्डार बनाने पर विशेष बल दिया ग्या है-

ग्रो३म यन्मे, छिद्र चक्षषो हदयस्य मनसो बातिनुष्ण बृहस्पति-मेंतहचातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पति ।।

#### यजु० ३६।३

इसका ग्रर्थ करने हुए महर्षि दयानन्द 'ग्रायोभिविनय'' मे कहते हे—हे परमेश्वर । मेरे हृदय(प्राग्गा-त्मा) मन बुद्धि, विज्ञान विधा भीर सब इन्द्रियद्वष इनके छिद्र के विकार इतको निर्मुल करके मत्य, धर्मादि में स्थापन ग्राप ही करो। भ्राप सब भ्रवनों के पति हैं। इसी-लिए ग्रापसे बार बार प्रार्थना है कि सव दिन हम लागो पर कृपा हिट से कल्यागकारक हो। हे परमात्मन ! श्रापके विनाहमाराकल्याएकारक कोई नहीं है। हमको ग्राप हो का सब प्रकार का भरोसा है, सो ब्राप ही पनाकरगे।

नैमे नौका मे छोटा छेद भी डवो देने मे समर्थ हो सकता है वैसे ही मन व ग्रात्मा मे भी कोई स्वल्प पाप ही धीरे धीरे वटना हुया जीवन नौका को न्यो देने में समय हो सकता है महाभारत में तारद श्री कृष्ण मवाद मे नारदमुनि पाप छिद्र के निक्कासन के दो प्रशार के उपाय बनाने हैं --

#### दो उपाय नारवमुनि द्वारा

१ परिमार्जन भौर भ्रनुमार्जन। पहले प्रकार के उपाय के अन्तर्गन क्षमा सरलना और कोमलना के द्वारा पाप निवारण होता है भीर दूसरे साधन अनुमार्जन के अन्तर्गत सेवा मत्कार, विनम्रता और समर्पण द्वारा हदय में सदगुराों के प्रति प्रीति, श्रद्धा विश्वास के मकत्र उदित श्रीर परिवर्धिन होते हैं।

#### ग्रर्थ शौच सर्वप्रथम

जीवन को प्रथम पवित्र बनाने के लिए सभी ऋषियों ने जितने साधन बताये हैं उनमे मुस्य प्रर्थ 'शौच"है।

सर्वेषामेव शीवाना ग्रथंशीच परम समृतम्। यो अर्थेन जुर्चिहि स

श्चिन मृद्वारि श्चि॥

सब प्रकार की शद्धना में धर्ष श्चि अर्थान धन सम्पत्ति इन्यादि की शुद्धना सर्वोपरि है। जो व्यक्ति इस ग्रहना का पालन करता है व<sub>ा</sub> वास्तविक शुद्ध है

मनुकहते हैं कि जल से शरीर गृद्ध होता है म की पवित्रता सत्य व्यवहार, ग्रात्मा की पवित्रता ग्रध्या-त्मविद्या भीर नयोमय जीवन तथा विचार भीर मानसिक विन्तन के साथ स्वान्याय तथा शास्त्र ग्रन्थयन से होती है। युधिष्टिर के एक प्रवन के उत्तर में भीष्म कहते हैं कि नीयों मे श्रष्ठ तीर्थ विज्ञ हृदय ही है। पवित्र वस्तुओं में ग्रति पवित्र विशृद्ध हदय ही हैं। श्रेष्ठ जिसे आ चरगामे नाये वह बाचरण सर्वश्रेष्ठ है। इसी-लिए गीना मे भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जिस प्रकार द्याचे-रंग करते हे अन्य व्यक्ति उसी का

ग्रनकरण करते हैं।

मदाचार सम्बन्धी निप्रम वालन जीवन पद्धनि के निए सन्त कवीर क शब्दों में ग्रीर पविवता के माग पर चलने के लिए मदा सावधान ग्रीर आगरूक रहना होगा। कवीर कहते

तेरी गठरी में लागे चोर बटो-हियाका सोवै। जागू सबेश बाट **भ**नेरा फिर नहीं लाग जोर। भव सागर इक नदी बहत है, बिनु उतरे जाये बोर।

कहत कवीर सुनो भाइ साधी। जागत कीज भेरा

#### वेद के शब्दों में --

जो जागना है नसे ही ऋचाएँ चाहनी है जो जागता है उसे ही सामबेद प्राप्त होता है, जो जागता है उसे ही प्रभुक ते हैं कि मैं तुम्हारा ही <sup>भित्र</sup> है। महर्षि दयानन्द ने विष-पान करके भी हमे जगाया पर भाज हम उस ऋषि की ग्रमनवागी सुन पटकर भी नहीं जाग रहे है। जाग करतीहम ऋषिऋसा से मुक्त हो सर्त है

#### उठ जाग जाग रे स्वामिमान

उत्तम चन्द शरर "म० ग०

मेरे मानस की श्रम र ज्योति, मेरे जीवन के असर प्रासा

नेरे बन वैभव कान पार, तेरो शक्ति काक्यावलान ? तेरे माथे की भृकुटि से रिपुदल बर बर कम्पायमान उठ जाग जाग रे

तूश्रीकृष्ण काचक्र, शिवाकी श्रमि रामका धनुष बाए। राएग प्रताप का कवच तू ही, गोविन्द सिंह का चण्डी गान

तूजागे तो जीवन जागे, तूसोये तो नर मृत समान तू प्राणी का प्रेरणा स्रोत, तुक बिन प्राणी केवल मसान उठ जाग •

तेरी हुकृति से जगता है, मानव का सुप्त वैभव महान् तुम बिन अमृत भी गरल तुल्य, तूदे तो विष भी सुघापान उठ जाग जाग रे स्वामिमान

### आर्यवीर दल की आवश्यकता

लेखक-योगप्रकाश त्यागी

आत्र ससार प्रशानिन का घर बना हुया है। पणुता इस से जुनकर ताण्डव नृत्य कर रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को निपालने का प्रयन्त कर रहा है। एक प्रध्याय दूसरे सम्प्रदाय का विनाश करने पर तुला है। इस पागलपन ने भगवान् की मृष्टि का सर्वश्रेष्ठ देन भनुष्य का मृष्ट्य दो कौडी कर दिया है। ईक्टर पुत्र मतुष्य के जीवन से प्राज, लोग बनाए हुए एत्वर के भवनो, मन्दिरों और मस्त्रियों का मृष्ट्य प्रविक्त समस्त्रे हैं। मान्-शिक्त किस की गोद में बठकर प्रमुत्त पिया है, आज लोग उसी की टाग पंकड कर बाजारों में पसाटते फरते हैं और उसे नाना प्रकार अपमानित करते हैं। बच्चे और कुढ़ तक इस मुखानिन के इंचन बन रहे हैं। इतना ही नहीं, इस पागलप कर प्रवार करने बाल अथवा इन पागलों के स्त्रात ही नहीं, इस पागलप कर अवार करने बाल अथवा इन पागलों कर हाता ही नहीं, इस पागलप कर अवार करने बहुत बड़ा राजनीतिज (Politician) के कर पुकारते हैं। आज जो व्यक्ति जितना हो बड़ा मक्कार, फूठा, घोचेबाज तथा निर्मेश होता है, वह उतना हा बड़ा नेता समक्ता जाता है। ये पूर्त नेता सपना पुता पर राष्ट्रोपता तथा घम का मुलम्मा (पानी) ज्वाकर साधारण जनता का अस्था बता रहें है।

स्नासिर यह सब क्यो हा रहा है ? इसका विराध क्यो नहीं किया जाता ? आज क्या वड-वडं सम्पादक प्रपन पत्रों में इस पशुता का प्रोस्ताहन दे रहें है ? इन समस्त प्रकृतों के उत्तर का लाज में यह मुख्य ध्यानावस्थत होकर विवार करे ता वह एक हा पारेरुं। म पर पहुचना के आज मसार में ऐसे श्रंट वात पुरुवा का प्रभाव है जा सरम को रलाये गुण्डों का दमन कर सक। दूधरे शब्दा में आज ससार में प्रोसं श्रंट वात पुरुवा का प्रभाव है जा सरम को रलाये गुण्डों का दमन कर सक। दूधरे शब्दा में आज ससार म आयंवार तथा आयवोर दब का अभाव है। । कसा नाम । वशेष स दब हान क कारण. बहुत स मायियों का शायद मेरा यह बात सलरेगा परन्तु वात सरम है। आक नहीं तो कत उन्हें यह सरम सब हान कर है यह सरम सब हो कोई परिततन करने को चेवडा कर परन्तु हस सरस स वह कदाणि वस्तुल नहीं हो सकता।

ससार में मुख्यत ग्राज तीन प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं। पहले गुण्ड, हुसरे शर्राफ हुज डे तथा तासरे बार पुरुष गुण्डों को परिभाषा प्रथम उतक स्वस्य का वरणन में ग्रारम में हा कर चुका हू। ये स्वायांन्य हैं भीर प्रपत्त स्वाय का पूर्ति समस्त उचित तथा बतुंचित उपायों से करते रहते हैं। एष्ट्र-उन्नति, यम रक्षा तथा विश्व शान्ति इनके मृस्य नारे हैं, और इन्हों अंद उनारों का आड म ये प्रपत्त समस्त कुकन करते हैं। इन गुण्डों के एकदेशाय ही नहीं प्रपितु सार्वमील सङ्गठन ववे हुए है। इन ने पास सुतु सम्पत्ति मामन तथा सनाए है सभी के स्वाय प्रायस में टकराते रहते हैं। अनके परिणास्वरूप समय-ममय पर युद्धान्ति मुक्ति नहते हैं।

दारिक हिनड व है, जिनके हृदय में भलाई से प्रम तथा बुराई से घूगा है परन्तु उनको यह घूगा उनक हृदय को सीमा का कभी उल्ल हुन नहीं कर पाता, और ना हो उस में उन्ल हुन करने का साहुस है। वे गुण्डो को बुरा ही नहों मममते प्रिपृत हृदय से उनका वि । वा चाहते हैं, परन्तु उन में गुण्डो का सामना करने का साहुन नहीं है। वे गृण्डो के सामना करने का साहुन नहीं है। वे गृण्डो समय खाते हैं, महनका कोई सङ्गठन है, ना ही इनके पास यथेष्ट चन तथा साधन है।

तासरे बीर पुरुष है, जो मृत्यु को कुछ नही समभते। जिन में विरो-सारमक समित इटक्टर कर भरी है। परन्तु इनके हृदयों में गुण्डों के जिनाश को उमजु नहीं है। इनमें विद्या का प्रभाव है, जिसके परिएगामस्वरूप वे पुष्डों को वालांकियों को न नममकर उन्हें उनके सहन वन जाते हैं। इन का भोलापन इनका समित का दुरुपयोग करा रहा है। घन तथा साधन इनके पाम हैं ही नहीं, जिमके का ग्एा इनका सगठिन होना कठिन है। इसरे बब इनके हृदय ही भाव शून्य है तो फिर इनके सगठन का प्रश्न हो कैसे उठ सहता है।

अनुपात के विचार से ससार में गुण्डे पिचहत्तर, घारोफ हिजडे बीस
तथा बोर पुरुष पाच प्रतिश्वत हैं। इस प्रकार झाज दुलमा में गुण्डा का एकछन्न राज्य है। इन्हों के दमन का प्रश्न बाय सहार के भले ममुख्यों के
मस्तिक्क चाट रहा है। यह बात रडता के साथ कहो जा मकनी है कि इस
समस्या का हल घरोफ हिजडे या मूर्य बीर पुरुष कराणि नहीं कर सकते।
ससार को आज ऐसे पुरुषों की आवष्यकता है, जिनके हृदय मनुष्यता से
भरे हो। 'जीधा भीर जीने दां' जिन का नारा हो। सन्याय तथा प्रत्याचार का विरोध हो नहीं भिंग्दु इन का विनाध करने का जिनमें साहस हो।
प्रपने इस तक्ष्य का पूर्वि में जिन्हें अपने सर्वस्य को बाजो लगाने की उमञ्ज हा, अर्थोन् ससार को ऐसे अंटड बार पुरुषों को भावस्यकता है, जिनके हृदय
भीर सन्तिक्क दोनों ठीक हों, बुद्धि तथा सिकता जिनमें समन्यय हो।

आवश्यकता है। बाज एक ही देश के नही अपितु ममार भर के श्रेष्ठ पुरुषों के एक इड सगठन की आवश्यकता है, जिस के द्वारा ममार को गुण्डों से रहित करके विश्व शान्ति की स्थापना की जा मके।

ऐसे ही श्रेष्ठ बीर पुरबों के मगठन के निए 'ग्रायंवार दल वी रचना हुई है। इस का यह नाम भी इसी लक्ष्य को दिल्ट में रब्बकर रावा गया है। मेरा ढढ विश्वास है कि इस प्रकार के सगठन का नाम इस से प्रविक प्रस्था और हो हो नहीं मकना। यह नाम प्रपिन नश्य की पूर्णतया व्यक्न करना है! प्रार्थवीर दल के जयघोष भी इसी लक्ष्य को पूर्णित करते हैं। जेसे—

(१) वैदिक धर्म की जय हो।

(२) स्रार्यवीरो जागो ।

(३) मसार के श्रेष्ठ पुरुषो एक हो जाग्रा।

डम् प्रकार समार को गण्डों के देननार्थ एक मुक्ट आर्यवीर दल की आवश्यकता है, जिस से प्रत्येक भले बीर पुरुष को भाग लेना चाहिए। यदि असे पुरुष को भाग लेना चाहिए। यदि असे पुरुष ने सार्थ के प्रत्येक से सार्थ प्रत्येक से प्रत्येक से प्रत्येक से प्रत्येक हों गो । यदि असे पुरुष में प्रत्येक प्रत्येक

#### मार्थ बीरदल के कर्सक्य

आर्यंवीर दल के दो महान् कर्नव्य हैं—

(१) ब्रार्थ धर्म, ब्रार्थ जानि छोर आर्थ मन्कृति नो रक्षा करना ' (२) समाज मे सेवा एव ब्रात्मत्याग का ग्रादर्श उपस्थित करना।

प्राय सेवा छौर रक्षा दो विरोधी शन्द है इन दोशो कर्नश्यो का पालन एक व्यक्ति कैसे करें यह विवारणीय है। परन्तु जब हम बदिक वर्छा व्यवस्था पर द्रिष्टपान करते हैं तो हमारी यह कठिनाई दूर हा जाती है।

ष्ट्रायं जाति एक योद्धा जाति रही है। जिम में कार्य और मुविधा की हिट से चार वर्गों को स्थापना हुई थी। इस वर्ग व्यवस्था में विद्या प्राप्ति भीर उसका उपयोग (आविकारारि) बाह्य के हाथ में सीपा गया। रखा भीर सामन क्षत्रिय के अधिकार में दिया गया। मनाज का भरणा-पोषण और आधिक उपवस्था (Supply Department) बंदय जाति को मिली तथा समस्त माज की सेवा गूद वर्ग के व्यक्ति करे, ऐसी व्यवस्था की गई। प्रत्येक वर्ग के कर्नव्य निविधित करने का अर्थ यही था कि प्रत्येक वर्ग के चारी कर करते का अर्थ यही था कि प्रत्येक वर्ग के चारो वर्गों के गुरा के समन्वय के साथ साथ अपना एक गृरा विशेष क्य से होना चाहिए भर्मीन एक ब्राह्मण जान, नप त्याग के वर्द्धन्य के साथ से होना चाहिए भर्मीन एक ब्राह्मण जान, नप त्याग के वर्द्धन्य के साथ रक्षा, पोषण और सेवा के माल भी प्रत्ये के सवस्थ भी सेवा के माल भी प्रत्ये के साथ रक्षा, पोषण और सेवा के माल भी प्रत्ये के साथ रामा जान, पोषण और सेवा भी भाव होना बाहरण की। व्यवस्थ है। वश्य के अन्य उत्तर पोषणा गुण की प्रमुख भाव की अर्थ स्था की प्रत्ये पास की सेवा भाव होना वाहिए। इसी प्रकार पूर्व के सन्वस्थ में समस्त ।

जन हमें विदिक वर्ए व्यवस्था द्वारा यह स्पष्ट हा जाता है कि सात्रिय के अन्य र रखा और शिवत के गुएगे को अमुखता के साथ शेष विद्या, भोषणा और सेव के गुएग भो होने अनिवार्य हैं ना सेवा आरे राता है। कर्मच्या का पालन किस प्रकार आयंवीर कर मखते हैं, यह प्यष्ट हो जाता है। आयंवार दल आयं जाति की आज अधिन है। यदि यह शिवत केवल रक्षा ही में क्या हो तो रखा कार्य के अभाव में डव शिवत का दुरुयोग पाश्विकता में भी हो। सकता है और निवंशों के शोपण में भी नग मकतो है। यत शिवत का दुरुययोग न ही हुमी आवना में झाज धर्म का शिवत जा सम्वय सेवा एव आरस्यान के माथ किया गया है। मेवा में वित्रभ्रता को आवस्यकता होती है, यन एक अजिय में जहा वित्रभ्रता की आवस्यकता होती है, यन एक अजिय में जहा वित्रभ्रता की सावस्यकता होती है, यन एक अजिय में जहा वित्रभ्रता भी दिखाई दे, यही आदर्श आज धर्म है।

मत मार्थ वीरदल मे इस भावना को बल मिलना हो चाहिए कि बार्थ वीरो का प्रमुख कार्थ प्रार्थ घर्म, मार्थ जानि भीर प्रायं सम्कृति को ग्ला करना तो है हो परन्तु आर्थ जाति की रला में विरोधों के सम्मूख इत्ता का पित्र वे हे हुए आर्थ जाति की रला में विरोधों के सम्मूख इत्ता का पित्र वे दे हुए आर्थ जाति के साथ विनम्रता का वर्नव भी होना चाहिए। इस विनम्भना के प्रभाव में ही बडप्पन का महकार पेदा हो जाता है। प्राय सेवा का प्रमुख कार्य नो शूद्र वर्गा के व्यक्ति हो करेंगे परन्तु यदि झावस्थकता पत्री तो सेवा काय तथा रक्ता के कार्य का उत्तरदायित्व भी आर्थवीर दल पर है। इस कर्नव्य को प्रस्येक प्रार्थ वीर पहिचाने। यदि कोई सार्यवीर प्यासे को पानो पिलाना है, सुखे को मन्न देता है। माग, पानो, सम्बंध सम्बंध सम्बंध सार्थ को परने पिलानो है, सुखे को मन्न देता है। माग, पानो, सम्बंध सम्बंध सार्थ से स्थापति से फसे हुए व्यक्तियों की प्राण् रक्षार्थ सेवा कार्य करता

धपने पूर्ग के प्रद्वितीय गाम्बज लखक तथा उच्चलम वक्ता प० तुलमीराम स्वामी काजन्म ज्येक ठ तुक्या ३ स० १९२४ वि० ( ६६७ ई०) को परीक्षित गर जिला मेरर मे पडित हजारालाल स्वमीके यहा हमा। प्रारम्भिक शिक्षा पिता के माल्निध्य में हुई। १ वष को ग्रायु में यजी पवीत सस्कार सम्यन्त हद्या । ११ वर्षकी इप्यस्थाम बाल कत्नसीराम कीनलारोग से झात्र मा हुझा। परिलाम स्वरूप उन्हें एक नेत्र की हानि उठानी पड़ी। गढमुकन-ब्बर मे पडित लज्जाराम से सम्कृत भाषा और ध्याकरमा का ग्रध्ययन किया। धन्य शास्त्र भी पढे। १६४० वि० मे स्वामी दयानन्द लिखित मस्याप्रकादा वेदाग प्रकाश तथा ऋविदादिभाग्यभूमिका क्रादि ग्रन्थों के पढ़न से उनका कुकाब द्यायममाज की श्रोगह्या। पून १६ १ वि॰ मे देहणाडून जाकर प० सुबलकिशोर से चाटाहरायी तथा महाभाष्य ग्रादि व्या करण क धार्वग्रयो काधस्ययन किया स्वामी दयानन्द के निकर तत्वक के रूप मे रहने वाले प० दिनेशराम मे भी पढने का अवसर मिला।

प॰ तुलसीराम को धार्यममात्र के प्रसिद्ध विद्वान मेरठ निवासी ब व् घासी-राम के सम्पर्कमें ग्राने का ग्रवसर मिला। ग्रद वे विधिवत ग्रायनमाज के सभासद बन । १८०७ मे प्राप्त प्रतिनिधि सभा पश्चिमोल र प्रदेश । वर्तमान उत्तर प्रदेशः) के सगठन में योग दि । तथा जीविकोप जैन हेनु मेरर के देवनागरी स्कृत मे कृद्रकाल तक सम्कृत ग्रह्मापन कार्यं किया । नमी बीच प्रसिद्ध मनातनी विद्वान प० सम्बिकान्स व्याम मर्ग साथे ग्रीर स्नानन भनसभा कतन्त्रावधान से पैरिक्तिक संगठयो का प्रचार करन लगा। तल मीराम ामी ने प्रवत युक्तियो और प्रमाण " क्याम जी के प्रचार का खण्डन किया। उप पर देवनागरी विद्यालय के प्रान्धक उनसे इत्य हा गया। स्वामी जी न अभिनम्य नीकी यागान द दिया भौर पूरानपरा "दममाज र कास का द्मपन लिंग् स्रायममा अस्ति । "वाय की तम नविस तुलमीराम स्वर्णन विश्वमित्रो मैं स्टी लाख न किय जिनस क्रूचसर, पत्र ना परी% त गट आश दालापु रेगा पाति के गास्त्रान प्र'नड है। १ ८/= नि म तुल्मीराम जी धाय प्रतिनिधि सनापि बमा⊤र प्रदेश के उन्देशक नियुवन हत धीर प्रान्त न्य पी प्रचारक यमे चर एए। १६५० निसे प भीमसेन समान स्पमीजी काप्रयाग स्तिन धारने प्रेस सर वही यवालय का मै जर नियुक्त किया। धत स्वाभी जा ⊤माजी ने सहयोगी रू~ पंत्रयाग था गत धीर बाप सहास्त ने सम्यानन में प० भीममन क सहायक वन । क धविध मे उहोत मैं लितक विषयो पर शनेक लहालि वे।

#### त्रायेसमाज के शास्त्रार्थ महारथी

## प० तुलसीराम स्वामी

ले०-डा० भवानीलाल भारताय

१९ ५ वि०मेष नुपनीरास न मेर० में स्वानी प्रय को नापना को धौर साहित्य त्सान तः गाप्रका⊤न क महत् यज्ञ काग्ररम्भ किया। जन्बरी १०६७ से मासिक वदप्रकाण का प्रकाशन प्रारम्भ क्यि । त्र ब्हालाक प्रिय**तवा। इसमे** मायसमाज के विद्वान्तों के मण्डनात्मक नला के प्रतिरिक्त वि । घी विद्वानी द्वारा सिसे जाने वाल माक्षेपाल्मक उस्त्रो तथा ग्रन्थों क प्रमाण पुरस्म<sup>—</sup> आवण्डन मी श्चपताथाः वेदप्रकाश की फाइन आर्थ-समाज धान्दालन क गत्यात्मक स्वरूप को जानन व दृटि = धत्यन्न सहत्त्वपूरा है। १.. ६ .. द० संप० लखर संनास्मृति मे स्थाम जी न उपदशक विद्यालय की स्था-पनाक । इस विद्यालय संप० सत्यवत रामा प० स्ट्रदस्त शमा प० ज्वालादस्त शामा प० मणिशकर प० मनुदन तथ स्वामा झोकार सन्त्रिदानन्द जैसे उ-च-क्लोटक प्यदत्क निकल कर प्रचारक्षत्र मे ब्राय। १६०६ स १६१ 🖆 तक स्वामी जे अर्थप्रतिनिधि समा संयुक्त प्रान्त के प्रधान रहे। प्राप्त के गवनर सर जम्स मेस्टन = ग्रगम्त '८१३ को ुरु कत्र पृत्दापन ग्राय । उस समय स्वामी जी गुरुकुल मे भ्रष्ट्यापन करते थे। गुरुकुल के सुचार सचालन का दल कर गतनर धन्यत प्रन न हुए। अल्लाङ १०४६ को विभू विकारोगम प०तुल पीराम ल्वामाका निधन हुना।

प॰ नूलसीराम धाव वण्मी तथा सरस्वतीक वरदपुत्र नेखरू यः।

्रोने प्रत्य श्रीवन काण से लग-गार 40 ग्रन्थ लिल जिनम विभिन नास्त्रो क्षापा न्द्रण्यान स्टब्सिशन्त यक्क ग्रन्थ प्रवास नितन्त्रती पहिलो के लिले ग्राम्येय मृतक बन्दी के सनीव उत्तर सादि प्रमुख्य नास्त्र मोजी कन्नित का स्विन-नगार्सल दिसा पारहर हैं—

म्वंद आगय — न्वामी द्यालस्ट इन मन्वद आग्य मन्यम मन्य के हिर् क्न के दिनीय यम पर ही समाप्त हो जान हे । न्यमे झामे म आग्य ए नुदर्भ गम वामी न लिलना प्रारम्भ क्या या जिसक संगानी प्रकाशन व्यवस्था क जलाई १८६ क प्रक से होंगे लगा या। यह भाष्य सस्कृत तथा हिन्दी दोनो भाषायों में लिला जाता था। प० जुनसी-रास के दिवसत होने पर वनके समुख पुट्टालाल स्वामी ने इसण कुस मन्य जिला। परन्यु यह स्थावेस साम्य पुस्तका- कार नही उप सका।

व्येतास्वतरापनियद आष्य — जीवेदवर भेद परक व्यवस्था युक्त यह सस्कृत हिस्सी भाष्य पर्न्त्रेद धौर मन्यय पुक्क किया गया है। १-६७ ईं । परचा

मनुस्पृति भाष्य — मनुस्पृति का यह पर्\*िय पूर्णभाष्य हिन्दी भाषा म लिखा गया है। धे पक्ष्म प्रग्न का सतक भिवपन दिया यदा है। प्रथम सर्वकरण १८१४ ड० में प्रकाशित हुआ। १९७६ वि०तक इस ग्रन्थ के ६ सस्करण प्रका-शित हुए।

व**डदर्श**न **भाष्य** सम्स्यादशन

मा।दशन— स्वामाप्रस मरठ प्रथम सम्करण १८११ म प्रकाशित ।

> न्य य दर्शन वैापिक दशन बदान्त दर्शन

भीमासादर्शन—नुजमोदाम स्वामी जीन खपा। इस दशन के प्रथम २६ सजो काही नाव्य जिल्ला।

बिदुरनीति — यह टीका १८४५ वि० (१८६८ मर्ट) रे प्रथम नार प्रकाशित हुई।

धाम-भगवदगीता आध्यम् — वैदिक मान्तव्यनुदारा यह सरल सुआध आध्य स्वामा प्रेस ने प्राधित हुषा। इमका द्विताय स-करण श्री रामवान कप्टर्टस्य बहुत्यगढ द्वारा २०३४ वि० (१९७७ ६०) से प्रकाशित हुषा।

नारदीय शिक्का—इस निक्षा शान्त्र विधयक यन्य ना सम्पादन तथा प्रकाशन स्थामी जीन फाल्गुण १८६३ में स्थामी प्रेस मेरठ से किया।

श्लोक युक्त निरुक्त (निषण्टु) स्त्रोक बद्ध वैदिक निषण्टु— स्रग्नि- चित श्री मास्कर राय बीक्षित कृत निवष्टु का सम्पादन व प्रकाशन तुमसीराम स्वामी द्वारा १८६२ ई० मे किया गया।

अतृंहरि कृत नीतिगतक का धनु— वाद — धार्य वर्षट प्रवरिका - सरस्वती यत्रालय इटावा से प्रकाशित — १८६६ है ।

सण्डन मण्डन के ग्रन्थ---

ऋषादिभाग्यम्भिका केन्द्र पराग— दितीयोग बह्मकुल्ल उदामीन लिखित ऋषेदादि मध्य भूमिका के खण्डन परक सन्य का यह उत्तर सरस्वती यत्राजय प्रयाग १६५० वि० (१-१०, १०) मे प्रकाशित हुमा।

भास्करप्रकाश सनातन धर्म के विद्वान प० उनावाप्रभाद मश्र ने मत्याय प्रकाश क लण्डन म दयान-द तिमिर भास्करग्रन्य लिखकर नेमराज श्राकृत्सा दास स वैक्टेश्वर प्रेस बस्प्रड स १६५१ वि० म प्रकाणित करायाचा। प० तुलतीराम ने इसका सटीक उत्तर भास्कर बकाश के रूप में लिखा। भारकरप्रकाश का प्रथम भाग । सत्यार्थप्रकाश के तीन प्रथम समुल्लामा का मण्डल) श्वामी बह्यानस्य सरमान सम्पदिन भारती-द्वारक मासिक मे भागवाही स्रापने के पश्चात इन्ही स्वग्मी जी द्वारा पृथक् १८६७ ई० म पुस्तकाकार छपा। पुन सम्पूराग्रन्थ न्सीवय (१०६७ ई०) स्वासी प्रेस मेश्ठ से उपा। भास्करप्रकाश का द्वितीय सम्बरण १६०४ मे तथा ततीय सम्बरका १६१३ में छवा।

विश्वक्षप्रशा भ्रास्त्रण्यकाश के प्रणान स्वयः ज्ञास्त्र स्वरूप स्वयः प्रमुख्य चार्चित स्वयः प्रमुख्य चार्चित स्वयः प्रमान सिक्ष ने प्रमान सिक्ष ने प्रमान सिक्ष कर तुल-सार्ग्यम् सार्गित चार्चित कर सार्वित कर सार्वित स्वयः स्वयः प्रमान स्वयः स्वयः स्वयः सार्वित सार्वित स्वयः । १०० से दिनीस स्वयः एकरण्य छ्या।

मूनिपनाप्रकाश **१**६५७ वि० मे प्रकाशनः।

िण्णिन यज्ञ — मनक श्राद्ध लण्डन म लिया यथा ग्रथा प्रथम सम्बर्खा १८०६ दे० पान १९७१ विक तृतीय सम्बर्खाः

सीमप्रत्नो री प० सीमसेन शर्माकृत यानेगोका उर१९१४ ई० से प्रकाति।

धजाननिवारण — पावरी सदयसिंह के ज्यारयान घार्यतन्त्र प्रकाश का सण्डन । रचाची नेच नेच्छ ने १०८७ ने वर ।णित ।

तुलसीराम न्वामी के बार व्याख्यान— स्वामी प्रेस मेरठ में प्रकाणित १६०॥ में तृतीय सन्करण ये व्याख्यान पृथक्श भी खुपे थे।

# तस्ण मंच

## उद्बोधन आर्य वीरों के लिए

रामाज्ञा वैरागी सवासक—क्षाय बीर दल विहार





सुवा पारी राष्ट्रा ते नवसे शक्ति शाली शक्ति शता है। इस शक्ति का स्व राष्ट्रीय सित है। शक्ति शालित ते स्व राष्ट्रीय सित है। शक्ति शालित से स्व राष्ट्रीय सित है। हमारो एक मजीव मन्छति है पर वह क्या है? श्वाप इसका वरान भी नही कर पाते इसलिए कि आप अपन मस्कारो से परिवित नही है। याप स्वाचान क्या है? श्वाप वर्षान के स्वन्त्रता क्या है? श्वाप वर्षान व व सा है? श्वाप वर्षान के स्व है । बिना इसके ज्ञान के कि स्व न्या है। अपन के सा है जाप जीवि है जिना यह जाने कि अम क्या है । आप जीवि । है जिना यह जाने कि जीवन क्या है। आप की इस सही बोध होना चाहिए

ग्राव्य हम मनो मिनकर प्रपने
महान् कल्लाबो के प्ययर कदम से
कदम मिलाकर जनना प्रा व्यक्त से
कदम मिलाकर जनना प्रा व्यक्त से
सोते मिलकर बड़ी नहीं का ज्ये खोटे
होते सिलकर बड़ी नहीं का ज्ये खेटे
हो सभी दिशाओं से प्राता मन्द-मन्द
समीर मिलकर नीवगामी पवन का
क्य नेता है। पश्री अध्व बाध कर
उडते हैं और उससे वे नियोंकना का

प्रनुभव करते हैं। प्राप देख रहे हैं
विदव की परिम्थितिया बदन रही हैं
ज्य दिखिल्यों में मुखाद का निना त
ग्रावस्यकता है। ऐसे सुधाद और
परिवतन की जहा मानव मानव का
शोषगा न कर सके हमें मामाजिक
शाधगा के विरुद्ध ग्रामिन्तन कानि के
लिए शारीरिक मानसिक नथा
सामाजिक शिंकन के प्रावद्यकता है।
इसके लिए हमें ग्राजेय माधना का
दोषन जी नाना होगा।

सभय काम्बर है कि ना प्रतो-भनो से द्र हमें नास्त्रिकाद के दूषित । वकारों से बचक शान्ति के शूल भरेप-परक्रान्ति पथ पर अप्र-सर नो गाहै

चिलए हम एक साथ मिलकर पिन्नबद्ध होकर प्री सावधानी के साथ अपने निश्चित लक्ष्य की आर बढा।

श्राप मुनिए, दूर सुद्र दिशाश्रो स श्रमियान कंगीनों को चनि अनु-गजिन हो रहा है।

चिलए, बिल्कुल सोध चिनए।
एक निष्टिन उद्देश निचारित कर रहा
स्वापनी प्रविक्तन प्रताक्षा कर रहा
है। यह सम्भव है कि प्राज की परिस्वित प्रापना जीवन माग सकता
है। न्सानए निभय और निमको
प्रापने ने – एसा करने दी भावना
का नेक्र प्राप्त विरुए। यह भी सभव

है कि प्रापको मानवना यो विनिवेदी पर प्रयत्ना शाश नान पढ़ लेकिन गृढ गामानिक अनुग्यस्य प्रापके भीवन विन्दान है प्राप्त प्रपत्ने की सावना चाहता है प्राप्त प्रपत्ने की सावर समितिकर। राष्ट्र हे लिए समाज के निग और मानवता के लिए। विनान के अनुभव ज्ञान वर्तनाम की अनुभित छापके लिए प्रजय कोष हाए।

प्रोइए चिता आगे बहिए। हमारा एक मी शा और स्पष्ट है। कितने साहम आवशीर हैं जो हमार हैं। कितने साहम आवशीर हैं जो हमार एक है। हैं। राष्ट्र के दिया के लिए मानवता के वहुमुशी विकास के लिए, विशाल बी कातिकारी कार्यक्रम आपके ममल है इसकी सम्पूर्णता के लिए यह विस्तृत अनुरोध और आदेश पत्र है।

ग्राडट् हम एक मुत्र के भीतर बचकर घोषित कर। मनाः क श्रष्ठ पुरुषो एक हो जाग्रा हण्य ना विज्य मायम। जहां मा जे प्रभि को भग नित्र करो भीर कायोग्य करा हम मभी तम्हारे साथ न

श्राय बन्धुनो नागवा नमार धोरे बोरे किन्त समस्याग्रो से घिरता जा रहा है कहिए घिर गया है। विश्व की मारी समस्याग्रो के मना-घान श्रीर निदान का सम्प्रण उत्तर-

दायित्व क्रांतिदर्शी म ष दयानन्द जी ने ग्रायसमाज को सुपुर्व किया या। सहुपि ने उसक लिए व्यापक रूपरेखा प्रस्तुन को य। ससार का जटिल घनस्याग्री के समून विनाश के लिए जिन कुशल हाथी की प्राव-दयकता है, वे हमारे ररग ग्रायशीरी के पास है। नये विद्य के निर्मान के यक्ष मे ग्रायंवीरों का प्रमुख स्थान है।

प्राय बीरदन राष्ट्रके विकास के लिए च्हासकत्यी तरएगे का एक स्माठन है जो मात लाठी जलाने वालो या ज्यायाम करने वालो का समठन नहीं है। यह मानवता के हिन मे उन अकुराते प्राप्त के प्राप्त वीरो का व्हा समठन है जो मानवता वी सेवा के लिए प्रपने जोवन की वाजी लगाता रहा है। यह प्राप्त वो दल मात्र समठन या सस्या नहीं यह एक प्रादोलन है। दानवता के विकट कार्नि की ज्वाला है। प्रत्यावार तथा कुरा-नियो कुविचारों के विरुद्ध स्वकनी प्राप्त है। प्रत्यावार तथा कुरा-नियो कुविचारों के विरुद्ध स्वकनी प्राप्त है। प्रत्यावार तथा कुरा-

प्रामं बीर ने ने विराम नहीं प्रभियान का मन्थक है। उसके राख्य प्रामित्तीन आय जित है। गसी जाति जो विनाश की घोर नहीं निर्माण की घोर रुगुल हुनी है। इस प्रकार आप बीर दल एक प्रक्रिया है और साधन भी आय बार दल यक्ष है धोर घाट्टिन भी।

# किशोर मच

इन्द्र-विरोचन

बल नीत शास्त्री

देवताश्री में सबसे वना इन्द्र था। दंखी (राजमी) में मबसे बड़ा बिरोचन था। एक बार विरोचन मीर न्यू अहार महिला की प्रमान्त के विषय में बार करने लगे। दोनों की ममन में कुछ भी नहीं बाया। वे ख़ब मोचने नथे। बन्त में दोनों बहा जो के पास गये। महाज जी ने पास बडाया। इन्द्र बिल्कुल सादे कप पे में बहा प्रमान के स्वाप्त कर होने बहा जो के सास गये। महाज जी ने पास बडाया। इन्द्र बिल्कुल सादे कप पे में कपड़ पहन त्य थे। उन्होंने बहा जो के कपड़ पहन त्य थे। उन्होंने बहा जो से कहा — हम मारना मीर परमानम के विषय में कुछ बताइए। धांगा

क्या है और परमात्मा के साथ उस का क्या मस्वत्य है ?' प्रजापति बह्या में कहा कि पहले दोनो एक वर्ष तक बह्यवर्यवत धारण करके मेरे पास रहां। फिब तुन्हें हसके विषय ये बताक्या। दोनों ने बह्या जी को बात मान ली। एक वर्ष तक ब्रह्मवर्य का बत धारण करके फिर दोनो प्रजापति के पास गये बह्या (प्रजा-पति) ने उन्हें एक करोरा विया और कहा—जाबा देसो इसमे तुन्हें क्या विद्याधी देता है।

दोना नै कटोरे में देखा। उसमे

इन्हें शरीर की छाया दिलाई ना। उन्होंने कहा—कटोरे मे हमे शरीर की छाया विचाई देती है। हमारे दाढी, मूछ केश, कुण्डल मुकुट श्रादि दिखाई पडते है।

इसके बाद प्रजापित ने उनके वस्त्र उत्तरना दिये। उन्होंने फिर से करोरे में देखने के लिए कहा। दोनों ने फिर देखा। उन्हें फिर से खरीर को छात्र। दिखाई दी उन्होंने फिर प्रजापित से जाकर कहा कि खरीर की छात्र। दिखाई देती है। प्रजापित ने कहा— यह खरीर ही शह्य है।



यह बात सुनकर दोनो प्रपनी राजधानी लौट गये। सहाा (प्रजा-पति को बात याद करके िरोचन तो अपने शरार को हो सब कुछ सम फ़्ते लगा। वह जूब शच्छा जाता प्रच्छा पहनता और शरीर को गजा कर रखता। उसके साथी भी ऐगा कि करते तो भीर आपस में फ़गट कर नष्ट हो गये।

इन्द्र ने ऐसा नहीं किया। सने आस्मा के बारे में सोचा, उसको समक्र में नहीं ग्राया कि शरीर ही किस (बेब पुष्ठ ११पर)

## महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई

डा० रमल किशार गोयनका

न्वाम श्रद्धाना दका जास २५ फर वरी १८५ तवा महासा गावी का जाम सक्त्वर १ को हुमा। ॰ ख कार स्वामी भ्रद्धान नगावी न ज्यासम १२ वण वन्य स्वामी श्रद्धान द जब वस् १ ७६ में बरेली से साथे व स्वामी स्वान न य प्रत्यो जिनामाशा को बाल कर रहें गत्व गांधी प्ररम्भिक पाठ ताला से गत्मा प्रतम्भ पाठ श्रद्धान क्या प्रतास मन १८६६ में स्वास्त्र साथ स्वास्त्र स्वास्त्र के त तब गावी नवा कहा। क खाल सा

गावा मई १ ८१ में एक वेरिस्टर क नैसियन से भारतीयों का मुकदमा लड़न के लिए निश्च प्रयोगा यद तो उन समय तक मुशाराम प्रायनमात्र की सम्पूण गतिविधियों गर खा गय भीर साम प्रतिनिधि समा के प्रधान वत ।

गांवी विकास प्रकाश में कई भार तीय प्रायसमान के प्रचारकों के समक में स्वाय और उनके सातन राग एवं देशनिक को दसकर क इतन प्रभानित हुए कि जुलाई १-०५ में जब प्रायसनाथ के प्रचार के लिए माई प्रसानव दिलास एन्चे नो गांवी ने उन्हें जोहानिस्त्रम में मुनाय समर्पत किया

इधर भारत से स्वामी श्रद्धानद न ५६ नवम्बर १ १८ में साथ प्रतिनिधि सभा के माध्यम में मुस्कुल स्थापना का प्रत्नाव स्वीकार करा निया था धौर धन क्ल प्रयान में नन १ २ मं मुक्कुल व्योकी को स्थापना कर वा में।

महारमा गांधी ने निक्षण घ्रमीक से भ रतीय कृतियों के सम्मान एव ग्रधिकारी के लिए मन १० से सत्याग्रह धारम्भ किया यह जन धारोकन बराने देगा बिना परन नो के स्वापार करना भागे पर पजीकृत प्रमाणप्त न दिलाना धार के स्वापार करना भागों पर पजीकृत प्रमाणप्त न दिलाना धगठों की छाप देने हैं इकार करना धारे नटाल की सीमा पार करके टासवाल में प्रवेश में पत्र का उत्सवन करना धारि धनेक रूपो में चल रहा था।

स्वामी अद्धान को एक धारोलन की बानकारी मिली थों र हैं यह भी गत हमा कि गाओं के नतत्व में सब आने वाले से सम्य प्रह धारोलन को धन को धावण्यकता है। इस मी प्रदानक ने पूर क गुरुक्त के छात्रों का दूसों के रूप में काय करन धन सम्ह करने की प्ररणा दी इस प्रकार समृहीत बन मेरे प्रिय मह सुम्बोचन से पज्ज के साथ गांधी की

न्त्र मी प्रदानद प्रीर व भी के प्रथम परिचय का यह कहानी स्वयमहामा गापान यग «ष्टिया के ६ अन्त्रदा १६२७ के प्रकोन स्वामी जी केस्मरण शीषक से प्रकोनित की।

गाथी जाने सपने सस्मरण म तिला स्वाम जी ते पुरू जापन अवा था वह हिंदी में था। उन्होन मुक्त मेरे प्रिय माई कहकर सम्बाधित क्या था "स बात न मुक्त मुनीराय का प्रमी बना दिया। इस प्रकार इस छोटे से न्यायक मे जो सम्ब थ बना वह स्व मा उद्धानत के नाहीद होने तक घनिष्ट एव सामीय सम्ब ची के रूप में चलतारहा

महात्मा गाषी के निजय प्राप्तिका स मारत प्रम्त पर स्व मी अद्वानन से उनकी रही मट गुरुकुल कायबी म ६ सर्पत १ १५ को हुई। गाषी ६ अन्तरो १-१५ को दिदि एा मफाका से बन्दर बन्दरवाह पन्त्रे और आतिनिकेनन मे महाकवि रसीन्नाय ठाकुर से मिलते हुए १ प्राप्ते को हरिद्वार मे प्रवेग किया। गाषी को स्वामी अद्वान व ने उतने सोझ मिलाने का अय सी एफ एच्यूज को है जि होने गाषी को यह सनाह ना भी कि भारत जाने पर भारत के तीन महान सुपुत्रों में एक स्वामी अद्वानद सी वे।

गांची ने जारत झाने से कई बास पून २७ माच १९१४ को नेटास (दक्षिण झफ़ीका) से स्वामी श्रद्धानद को पत्र से ऐंडयूज के सुफान और उनके दक्षन की श्रपनी उत्सुकता का व्यक्त किया महात्मा गाधी ने प्रिय मह मा जी सम्बोधन क बाद पत्र में लिखा श्री एन्यूज मुक श्रापके नाम भीरकाम के बारे में उतला जुके हैं। इसलिए ऐसानही लगता कि मैं किसी धवनवी को लिख रहा है। धाशा है इस सम्बोधन के लिए घाप मुक्त शमा करने क्यों कि मैं भीर श्री एच्यूज दोनो ही भ्राप भीर भाषके काम के कारेम चर्च करते समय यनी सम्बोधन करत रहे हैं। श्री ऐत्यूज ने मुक्त यह भी बत सामाथाकि गृहदेव रवी न्नाय ठाकर ग्रीर श्री सुबील कुमार दर पर शापका कितना स्थिक प्रभाव पढा है। उनसे सभ पता बना है कि प्रापके शिप्यों ने सत्या ग्रहियों के लिए कितना काम किया वा छाहोने गुरुकल के जीवन के इतने सुन्दर शात चित्र स्रीचे ये कि यह पत्र लिसते समय लगता है जैसे मैं गृश्कल मे ही पञ्च गया ह। ीएच्यू ज ने मेरे मना मे उक्त तीनी स्थानी को देखने और इन स स्थाको के प्रधान भारत के तीन बहान सुपुत्रों के प्रतिसम्भान प्रकट करने की उकुष्ट धिमलाचा जगा दी है

महारमा गांधी के गुरुकल काँगडी पण्यन से पहुन समनलाल गांधी फोनिकस पाठ्याला के २५ छात्रों ने साथ नहा पहुन के थे गांधी न - फरवरी १९१५ का पत्र लिखकट स्वांधा खद्धानण का बज्धों को प्रम दन नथा उनके साथ परिश्रम करने के निग्व यब द न्या धार निला बिना स मत्रण ही स पर्ने निकल पहुंच कर धानके चरणा म सिर कुकाना मेरा कस्ता के सरणा म सिर कुकाना मेरा कस्ता के सरणा म सिर कुकाना मेरा

गांची ध्रप्रैन १६११ को गुरुकल कागडी प च जहा स्वामी श्रद्ध। नन्न की उपस्थिति मे गुरुकल के ब्रह्माचारियों ने उनका स्वामत करते हए मानपत्र भट किया।

गांधी न प्रपने उत्तर में प्रव नातों के बाय स्वामी अद्धानद द्वारा उन्हें भाइ कहते की बात का विशेष रूप से उत्सेष प्रकार करने हुए कहा महात्मा जी ने मुक्त प्रवोग एक प्रव में मार्क कहां है उसका मुक्ते नव है। इत्या धाप लोग यही प्राथना करें कि सै उनका आदि बनने के प्रोध्य हो सक। मैं रूप क्या बाद प्रपने देग में साम हु में कीई स्वलाह नहीं से सकता। में सी मारवस्त प्रपत्त करने खाया हु मैं कीई सवाह नहीं से सकता। में सी मारवस्त प्रपत्त करने खाया हु सै कीई सवाह नहीं से सकता। से सी मारवस्त्र प्रपत्त करने खाया हु सीर जो भाषात्मुष्टिक की सेव। से सका

है ऐसे प्रत्येक प्राची के सम्मूक मुक्ते के लिए तैयार हैं। मैं प्रपने देश की लेवा में प्राच देने के लिए तैयार हूं। घव मैं विदेश नहीं जाऊना। मेरे एक मार्ड (श्रदमीदाख नाक्षा) चल बते हैं। मुफ्त धावा है कि महा मा जी उनका स्थान ते नये ग्रीर मफ़ मार्ड मार्ने।

स्वामी अद्धानद ने भाई के नाते मानो प्राशीबांव देते हए कहा मक्त यह युनकर प्रसन्नता हुई कि धाप घट प पत पहुंचे धीर धन्य जोघों की जाति वाहर पहुंचे भारत की सेवा करने के किए विदेश नहीं आयोंगे। स्मा धाशा है कि गांधी मारत के निए ज्योति स्तम्ब बन पाएंगे। स्वामी बद्धानद की यह बर्धि-ध्यासाणि कितनी खड़ाहद से यह स्वास्त्र ध्यासाणि कितनी खड़ाहद, यह हुस गांधी वाही ही नहीं सारा स सार कानता है।

सहारमा गाँची स्वामी अद्यानत्व के जीवनकाल में वो बार द घप्रैल १९१५ तथा २० भाष १९१६ को गुरुकक कागडी गय तथा उनके शहीद होने के लगपन वार भास उपरात १६ माच १९२७ को दोक्षात भाषण देने गए थे।

इससे पूज गांकी २० माच १६१६ को गृहकल के वार्षिक उत्सव पर जब स्राय ता उहोन गुरुकल कागडी की स्वशामित प्रजातत्रय ग्रीर राष्टीय सस्या मानते हुए स्वामी श्रद्धानाद की प्रशासाकरते हुए कहा या यायममाव की गतिविधि का सबस्रठ परिसाम कदा चित गुरुकुल की स्थापना धीर उसके परि चालन में दिला पहत है यह ठीक है कि सनामा मुजीर स की प्ररत्नादायक उपविति ही सकी गणित का प्रविद्यान है किं तुयह सस्यासच्च धर्यों मे एक स्वगासित प्रजातशीय और राष्ट्रीय सस्वा है किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता या धाश्रय से वह बिलकुल मुक्त है। व्स आवण मे गाथा ने निधन स्थक्तियों द्वारा दान देने तथा सस्था के प्रवसकी की व्यवरदम्त सगटन शक्ति की मुक्तकठ से

महास्था गाधी न अपनी आरमकवा में पत्रकी बाता के धनुसक के सक्ख में भित्रका अब में पहांक से वीत्र वाल में मित्रका अब में पहांक से वीत्र वाल में मित्रका अब के दशन करने और उनका मुक्कुल देवने गया तो मुक्ते बढी शांकि मिली। हरिद्वार के कोलाहत और गुक्कुल की गांति के भीच का मेद स्पष्ट दिखाई देवा था। महत्या नं मुक्त अपने प्रम से नहाना निया बहान री मेरे पास से हटते ही न दे।

यात्रा के यद महात्या गायी और स्वामी अद्धानण से सहस्योत निरतर बढता गया धीर स्वामीनता ज्याम के की बार मिलकर काव किया। जब प्रस्वों ने रोसट स्वितियस शाय किया तो स्वामी अद्धानस्य ने ३० साथ १९१९ को दिस्सी से ४० हुआ र अस्तिसर्वी (विष पुष्ट ११ वर)



आसार्य क्षेमचन्द्र 'सूमन'

हिन्दी के श्रनन्य साधक बाचार्य

क्षेत्र वन्द्र सूमन इन दिनो दिवगत हिन्दी सेवियो की स्मृति को चिर-स्थायी बनाने के महत्त्वपूर्ण यज्ञ मे सन्तरन हैं । दम खण्डो मे प्रकाश्य इस विशाल ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस ग्रन्थ मे देश-विदेश के हजारों हिन्दी सेवी लेखको, कवियो. पत्रकारों, हिन्दी प्रचारको के प्रामासिक परिचय प्रकाशित किये

श्रीमुबन को मुक्त श्रार्थसमाजी तथा काग्रेमी हैं। ग्रार्थसमात्र से ही सन्दें हिन्दी सेवा के सस्कार मिले। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे प्रसिद्ध विद्वान प० न देव शास्त्री वेटतीर्थके श्रीनरगो मे अध्ययन के टीरान उन्होने वैदिक धर्म व भारतीय सस्क्रीत की मेवाका सकल्प लिया। जिसमे वे ७० वर्षकी श्रायुमे श्रभी तक लगे हए है।

समन जो को हिन्दी साहित्य व सस्करिको मेवाके निए राष्ट्रपनि ने गनवर्ष ही रद्मश्री" से सम्मानित किया। उन्हें पत्रकार शिरोमिएा, साहित्यमार्तण्ड, साहित्य वाचस्पनि भादिकी उपाधियों में विभूषित

१६ मितम्बर को ७०वें जन्मदिवस पर

## आर्य विद्वान्-हिन्दी सेवी आचार्य क्षेमचन्द्र समन

शिवकमार गोयल

किया जा चुका है। स्वाधीनता सेनानी केरूप में उन्हें प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांघी ने नाम्रपत्र भेंट किया

समन जी भार्यसमाज मे सक्रिय योगदान करते रहे है। मारीशस मे १६७३ में भायोजित १२ वे भार्य महा-सम्मेलन में हुए कवि सम्मेलन के वे ग्रध्यक्ष थे। ३५ वर्षो तक उन्होने गुर-कल महाविद्यालय ज्वालापुर की ग्रतरग समिति में विभिन्न पदी पर रह का शिक्षा नेवा में योगदान किया।

#### स्वाधीनता सेनानी

ममन जी ने स्वाधीनता धादो-लन में भी सक्रिय भाग लिया था। सन १६४२ में भारत छोड़ो आयोलन में वह लाहौंग में गिग्फ्तार किए गए। वह देश की स्वाधीनता के लिए फीरोजपूर जेल में पूरेदो वर्षतक यातनाए सहन करते रहे। पजाब सन्कार द्वारा पञात्र से निन्कासित कर दिए जाने पर वह श्रापने ग्राम बावगढ (मेरठ) ग्रागए। समन जी को सक्रिय नेता समभकर उत्तर प्रदेश सरकात ने बाब्गट में नजरबन्द कर दिया। नगभग दम मास नक वे ग्रयने गाव मे नजरवन्द रहे।

समन जी ने फी जिपूर जेल मे "कारा" नामक एक रोचक वण्ड काव्य की रचना की थी। इस सन्दर खण्ड काव्य में सन १६४२ के राष्ट्रीय श्रान्दोलन का सरम वर्शन समन जी ने धनोखे उग से किया है। "कारा" में समन जी के देश के युवको का यो श्राह्मान किया है।

> हम बढे हमारे जीवन में. बरबम तुफान ग्रधीर उठे। मदियों से मोते, भारत के तरकम का नीवा नीर उठे। युग-युग से परवशना पिजरे, का बन्दी भारत कीर उठे। है जग सगा जिसमे पावन, वह वीरो का शमशीर उठे। हम जलती ब्राहो से रिपू के, प्राग्गो को जलता छोट चले। "जय हिन्दं हमारा नारा है, हम लाल किले की ओर जले।

स्मन जी ने जहा श्रपनी श्रोज-न्वी लेखनी के नाध्यम से स्वाधीनता सम्राम में योग दि वहा उनकी योजस्वी वारगी ने भी देश की नह ा**र्डको जा**रत क के स्वाधी व्या के ग्रमर यत्र में "पने को सर्पस्प-

पित करने का स्राह्मान भी किया। नररबन्द रहते समय उन्होने 'कारा' के अतिरिक्ति 'बन्दी के गाने'' नाम के काव्य सकलन की रचनाभी की थी। ग्रगस्त क्रान्ति के रोचक इति-हास के रूप मे उनके 'हमारा संघर्ष', 'नेताजी सभाष', 'श्राजादी की कहानी' ब्रादि राष्ट्रीय भावनाम्नो से श्रोत प्रोत ग्रन्थ उल्लेखनीय है।

ममन जी एक यशस्वी साहित्य-कार के साथ साथ निर्भीक व सफल पत्र रंभी रहे हैं। उन्होने जहां 'मन्स्वी' 'शिक्षा मुघा' एव लाहीर के दैनिक हिन्दी मिलाप' के सम्पाद-कीय विभाग में काफो समय तक कार्य किया वही उनके सम्पादकीय लेख भ्रोजस्वी व राष्ट्रीय भावनाभ्रो से भ्रोन प्रोन होते थे।

समन जी ने लगभग चार दर्जन पुस्तक लिल्कर व सम्पादित करके हिन्दी साहित्य की श्रभिवृद्धि में अपूर्व योग दिया है। 'ब्राब्निक हिन्दी कविधित्रियों के प्रम गोन," "हिन्दी के सर्वश्रेण्ड प्रेमगीन", हिन्दी के लोक-प्रिय क्वि", मल्लिका", 'हिन्दी माहिन्य नये प्रयोग", "साहित्य सोपान" 'समन सौरभ" "ग्राचनिक हिन्दी साहिन्य", "हिन्दी साहित्य धीर प्रगति "प्रादिलोकप्रिय ग्रन्थो की रचना करके उन्होने हिन्दी साहि-त्य की भागी सेवाकी।

Jo वें वर्षको स्नायुमे साहित्या की सेवामे निरन्तर रत हैं। इसी प्रकार शतायुहोकर वे हिन्दी सेवा मे लगे रहें, उही कामना है।

> 'घर्मदत' पिलम्बुवा (उ० प्र०)

## दिल्ली के आर्य वीरो आओ कैथल चलें

(उत्तमचन्द्र शरर) मचालक धायवीर दल हरियाणा

२० से २० सिनम्बर तक कैयल मे हरियाएग प्रान्तीय स्रार्यवीर मम्मेलन पूरे समारोह से मनाया जा रहा है। सम्मेलन की ग्रध्यक्षता भार्यजाति के निर्मीक प्रहरी श्री ला० रामगोपा जी वानप्रस्थ करेगे। इतियाग्गामे इस प्रकार प्रत्येक वर्ष प्रान्तीय स्तर पर सम्मेलन होते रहते है जिसमे प्रान्त भर के आर्यवीर, तथा समाजे सम्मिलित होकर समा-रोह को सफल बनाती हैं। दिल्ली भार्यममाज का मुरुय केन्द्र है। देश के विभाजन के पहतात तातीर के स्थान पर दिल्ली ग्रायों का गढ बना 🖢। प्रमन्तना की नात है कि दिल्ली में प्रार्थतीयदल भी प्रपना स्थान इना पाया है। ग्रार्यवीर दल ग्रार्य-समाज का खड़गधर बाज है। युवा वर्गका मार्थसमान मे प्रवेश द्वार मार्यवीर दल ही है मन दल मार्य समाज का भविष्य है। हरियागा के इस प्राप्तीय सम्मेलन में दिल्ली के

भार्यवोरो तथा समाजों को ग्रामन्त्रित करने मे प्रसन्नता अनुभव कर रहा है। हरियागा दिल्लो का समीपवर्ती प्रान्त है। दिल्ली के आर्यबन्ध् यदि थोडासाकद्य करेती हरियाणाके ग्रार्थवीरों का उत्माह वे ग्रपनी उप-स्थिति से बड़ा सकते हैं। इस के माथ ही सेवादल का सुन्दर रूप भी प्रस्तुत कर सकते हैं। ग्रार्थसमाज का युवा वर्ग भपने इस सगठित कार्यक्रम से देश के सम्मुख धपना उज्ज्वल रूप प्रस्तुतकरसकता है। यत दिल्ली

के ग्रार्यबन्ध्यों से साग्रह निवेदन है कि वे २० २१, २० मितस्वर को कैथल के लिए ही जिर्वरम्वे।

सम्मेलन में देश भगके ब्रार्थ नेता पथार रहे हैं। पजाब के चुनावो के कारए। पजाव का वह सहयोग तो हमे न मिल सकेगा जो हम चाहते हैं फिर भी पजाब तथा हिमाचल के द्मार्यवीर भी इस में यथापूर्व सम्मि-लित होंगे। धाज देश तथा समाज के सम्मूख कई चुनौतियाँ हैं, ग्रानकवाद का राक्षस मुह बाये खडा है, साम्प्र-

दायिकता, देश के विभाजन के पञ्चान भी हपारा पीछा नहीं छोड रही, समाज में छनछान तथा दहेज जैसी भयद्भर बोमारिया समाज को सत्त्व होन बना रही हैं। उधर धार्मिक क्षेत्र में ग्रन्धविष्वास ग्रीर पालण्ड ग्राज के विज्ञान के यूग मे भी धार्य-समाज तथा वृद्धिजीवियो को चैलेंज कर रहे हैं। इन नमाम गापी के विरुद्ध धार्यसमाज के युवा वर्ग की सगठित भावाज भ्राज समय की माग है। भ्रत दिल्लो तथा आसपाम के आर्थवन्य इस ग्रावाज को प्रभावी बनाने मे दन के कार्यकर्नाम्रो को सहयोग अवस्य दे।

मेरी उड़ी कामना है कि समय की इस । गको पूरा करके के लिए एक बृहद् सम्मेलन आर्यवीर दल दिल्लीको योगसे बुलाया जाए। दिल्ली देश की तमाम गतिविधियों का केन्द्र है, यदि झार्यवीरी का सग-

(बेब पुष्ठ ६ पर)



श्रद्धक यशपाल मुधाणु श्रद्धशीय भाषसा करते हुए।

केन्द्रीय ग्रार्थ यूत्रक परिषद दिल्ली के वार्षिक ग्रधिवेशन मे अध्य-क्षीय भाषणं न रते हुए युवा पत्रकार एवम आर्यमन्देश के सम्पादक श्री यशपाल सुधाश ने मार्य युवको का श्राह्मन । कया कि वे देश धर्मको रक्षामे तत्पर हा। उन्होने युवका की भ्रन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर प्रकाश डालते हए कहा-सभी देशों में यवको की रुचिया शारीरिक विकास. धारिमक विकास से अलग हटकर विद्रोह एव नशे पाप सगोत । या **₄कर्त्तव्य विमु**खताकी ग्रोर वटी है। र्घामिक नैतिक मृत्यो का ह्रास भी विस्वभर के युवरी में हुआ। है। हिप्पी- वोल रह थे। उह ने इस अवसर पर

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

दश धर्म और मंस्कृति की रच्चा हेतु चरित्रवान युवक श्वागे श्वायें

इज्म की ग्रादी, कैवरे चौर जीन की सस्कृति हमारे अपने देश में भी घर करता जारही है। तप, सयम धौर सदाचार से श्रीभन्त हमारी सास्क्र-तिक ग्रस्नितान जाने कहा धूमिल हो गया है। अनेक राष्ट्रीय सम-स्याए भी आज हमारे सामने मूह

बाये वडी है। जिन्का सामना करने

युवको की साज नितान्त भावश्यकता

नंतिक भौर चारित्रिक गुरगो से युक्त देशभक्त युवको भीर उनके सगठनो की ग्राज स्थान ।स्थान पर ग्रावश्यकता है। यह समय को प्कार

श्रो सुघाशुजा स्नार्यसमाज श्रनार- किया। कली (मन्दिर माग) मे आयोजित युवक रैली के समापन समाराह मे



घाय युवक दवजारीहरू के समय दवज गीत गाते हुए ।

स्रविकाश्या, मण्डल । यको, जारा नादको यो भी पुरस्का विश्विसल डोरी, बैज आदि से सम्मानित

इस भवसर पर ग्रध्यक्षत कर रहे श्री यशपाल सुधाशु को केन्द्रोय आयं युवक परिषद दिल्ली की स्रोर

सं एक टाफी भा प्रदान को गयी जिसे ग्रंय जगत् के सम्भादक श्री क्षितीश वेदालकार ने भट किया। इस रैली में विभिन्न स्थानों है

भाये सैकडो युवको ने भाग लिया चन्द्र मोहन ग्रार्थ प्रेस सचिव

केन्द्रीय ग्राय युवक परिषद् के समापन समारोह में दायें से श्रीमती प्रकाण ग्रायं,ी सितीश वेदाल कार. श्री यशपाल सुत्रांगु, श्रीमती सरला मेहता, श्री विश्वपाल जयन्त, श्री धमवीर एव श्री श्रनिल आये।

## परायण महायज्ञ की प्रणोहित

श्चार्यसमाज मन्दिर न्यू मोतीनगर मे श्रावराी पर्व के उपलक्ष्य में किये जा रहे यजुर्वेद परायण महायज्ञ को पूर्णाइति न सितम्बर को हुई। इस अवसर पर श्रद्धाल जनता द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। ग्रायंसमाज मन्दर मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के ग्रनावा बेदकथा तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी का भी श्रायोजन किया गया जिसमे सर्वश्री प० शिवाकान्त उपाध्याय, प॰ भारद्वाज पाण्डेय, प॰ भारत मित्र शास्त्री ग्रादि विद्वानों के सुन्दर उपदेश हए। इस

पुण्य भवसर पर श्री जय भगवान धार्यकी भजन मण्डती द्वारा मनी-रम भजन भी सुनाये गये, जिसमे जनता ने भरपूर लाभ उठाया। श्रन्त में समाज के प्रधान श्री तीर्थराम जी धार्य ने सब का धन्यवाद किया तथा समाज की झीर से यज्ञशेष के रूप मे सिलाई की मशीन धौर यजमानो को स्वामी दयानन्द की अपनर कृति सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

तीर्घराम आर्थ प्रधान

## सितम्बर के प्रवचनकर्त्ता

मार्यसमाज विवेक विहार में रविवार के साप्ताहिक सत्सग मे निम्न-निवित महानुभावों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

रविवार उपदेशक महोदय श्री प॰ रविदत्त जी गौतम एम ए १५-६-54 साहित्याचार्य श्रीयुत यशपास सुधाशु २२-६-५४ श्रीयृत जैमिनी शास्त्री ₹8-8-5% दर्भनाभिलाषी. मार सी कथरिया मत्री भार्यसमाज, विवेक विहार

# रेक्पाइक के वाज पत

## प्रधानमन्त्री के नाम एक पत्र

वैंस तो देश के प्रचान मन्त्री होने के नाते श्रापके पास ऐसी ठोस व्यवस्था है ही जिससे प्रापको देश मे घटने वाली प्रत्येक ऐसी घटना की जानकारी मिलती रहती है जिसका सीधा सम्बन्ध देश की धक्षण्डला, एकता तथा सुरक्षा से है । किन्तु फिर भी मैं देश का एक हितविन्तक नागरिक होने के नाते बापका ध्यान इस समय पाकिस्तान द्वारा हमारे देश मे क्साये जा रहे छल युद्ध की धोर धवध्य दिलाना चाहता ह। नीच सिसी जिन घटनाची का मैं इस पत्र में उल्लेख कर रहा है। मैं उसे पाकिस्तान द्वारा हिन्दु-स्तान पर एक छल बाक्रमण ही मानता ह। यह पत्र मैं "संझाशाने लिख रहा है कि भ्राप इस पर गम्भीरतासे विचार कर इस क्योर मधी बावस्यक यम उठाने की कडी व्यवस्थाकरेंगे।

पाकिस्तान को सन् १९७१ के युद्ध मे बरी तरह परास्त होने के बाद यह बात पुरी तरह साध्ट हो नयी बीकि वह किन्टस्तान को सीघाच। त्रमण कर कभी भी परास्त नहीं कर पायेगा। इसी प्रकार के विचार पर्कस्तान तथा ग्रमरीका ने युद्ध विशेषज्ञो ने भी व्यक्त किए है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकि-स्तान के युद्र विशेषज्ञी ने सोचा कि हिन्दु-स्थान पर एक छल बाक्रमण किया जाए ताकि उमे ग्रन्दर मे तोडा वा सके ग्रीर अब पाकिस्तान हिन्दस्थान पर भाक्रमण करेतो उमे टिदुस्थान के अन्दर पाकि-स्तान समयन पचमांगी तत्त्वा का समर्थन भीर सहाबता मिल एक और हिन्दुस्थान को ग्रन्दर से नोड कर कमजोर किया

ऐसा लगता है कि इसके लिए पाकि-स्तान ने अपनी नयी रशानीति म हिन्दू स्वान मे तीन विश्विष्ट स्थान जम्मू कम्मीर पजाब तथा हैदरावाद को चुना है। पाकि-स्तान धन त जम्मू कत्मीर को हिन्दुस्थान से भ्रलगकर एक मुस्लिम राज्य स्थापित करन की कल्पना करता है। इसके लिए पाकिस्तान तथा शेष मुश्लिम जगत् हिन्दु-स्थान के इन्लाम के जन्नी कटटरवादी तथा प्रथम्तावादी तत्त्वो की खुल कर धार्थिक व सःमरिक सहायता कर रह हैं। जिसके कारण ग्राज कश्मीर घाटी एक मिनी पाकिस्तान का रूप बारण कर चुकी है। इसका प्रमाश समस्त देश के सोगो को हिन्दुन्थान ग्रीर वैस्टइण्डी**अ** के बीच खेले गये ऋषेट मैच मे वहावे मुन्य मली शेख फाडक धम्बुल्लाह की उपस्थिति मे पाकिस्तान मण्डे लहराये जाने तथा हिन्द्रस्थानी खिलाडियों के प्रति दूवित क्यवहार को देखने से मिला जाता है।

पाज भी जले ही बहाँ शाह की कांग्रेस समर्थक सरकार है किन्तु कश्मीर पादी की पाकिस्तान परस नीति तथा स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं है धीर वह पियति तव तक बनी रहेगी जब तक सविधान की सम्यायी बारा ३७० को समाप्त नहीं किया जाएगा। एसी मेरो मान्यता है।

पाकिन्तान का दूसरा मोर्चा है पजाब इसके लिए पाकिस्तान मे जनग्ल नियाजी की देख रेख में लगभग एक लाख मुख्य मानो को सिक्स बनाकर उन्हें सिक्स मत की सभी बातों तथा धातकवादी एव पृथ-क्ताबादी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। जिससे उन्हें पजाब मे मेजकर उग्रवादी सिस्तो के साथ मिलकर देश मे धराजक तथा पृथकतावादी कार्य-क्रमो को चलाया जा सक । इसके लिए पाकिस्तान में सिस्तों को भी उग्रवादी गतिविधिया सिखाने के लिए भी सैनिक शिविर स्थापित किए गए है। जिसके बारे में आपने भी कई बार इस सम्बन्ध में यह कहा है कि पाकिस्तान में उप्रवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है इसके हिन्दू-स्थान के पास प्रमाश हैं। यह मोचा प्रजाब का भी इसीलिए बनाया गया है ताकि जब पाकिस्तान हिन्दुस्थान पर ग्राक्रमण कर उस समय ये पथकताबाटी सिख बने मुमलमान तथा उग्रवादी सिक्त हिन्द्स्थान का धन्दर से कमजोर कर उसकी सहायता

पाकिस्तान क नीसरा मोर्चा हैदरा-ाद है जो एक मुस्लिम बाहत्य नगर है। स्मभनत यह तो गपको भी विदित ही है कि निभाजन के समय निजाम हेदरा वाद को पाकिस्तान से मिलाना चाहता वा जिसके लिए वहा पर रजाकाराना बुद्ध भो हुआ। याकिन्तुत्भारेलीहपुरुष सर-दार पटेन ने हैद बाद का हिन्द्रशान मे मिला कर उसकी सब ग्राशामी पर पानी फेर दिया था। इसके बाद १६८ से निरतर जो हेदराबाद म साम्प्रदायिक दगे हो रहे है उनके पीछे यही पाकिस्तान सम-उक प्रवमागी तत्त्वो जिनको पाकिस्तान म महायता मिलती है काही हाथ है। ताकि यहा मजस्बी जनून और प्रकता-तन्त्र सित्रय रहे भीर यहा भातक व्याप्त रह। हैदराबाद के घास पास के क्षेत्र को विशेषरूप स मत परिवर्तन के लिए भी निक्चित किया ⊓या है। जहां पर रहन वाले हरिजनो को पैट्रो डालर के उस पर प्रलोभन देकर मुसलमान बनाया जा रहा है ताकि हैदराबाद को एक अलग मुस्लिम राज्य बनाया जा सके।

इसके श्रतिरिक्त हिन्दुस्थान के सीमा-वर्ती राषस्थान, पत्राव बुजरात, श्रासाय ब्रादि राज्यों ने मुसलमानों की वृत्तपैठ मी बड पैमाने पर हो रही है। "मुस्लिम इण्डिया" सम्बदार के सनुसार १६८३ से पूर्व पाच वर्ष में लगभग ७६ हजार पाकि-स्तानी हिन्दस्थान मे प्रवेश कर रह रहे हैं। इस प्रकार यह सत्या इससे भी कही ग्रविक लाखी की है। ये सभी तस्व पाकि-स्तानी होने के नाते वहा समय समय पर तोड-फोड आतकवादी नवा साम्प्रदायिक दगे कराने में सलम्त रहत हैं। हिन्दुस्थान की विदेशियों के प्रति नरम नीति के कारए। इस समय हिन्दुस्थान विश्व का सब से बड़ा ग्रनाय ग्राधम बन चुका है। इसके धनिरिक्त यहाँ की बोटो की राज-नीति भी इस सम्बन्ध में कड़ी कार्यवाही करने में बाधक है। इस प्रकार पाकिस्तान प्राचीन यूनानी 'टोजन होर्स' की तरह

हिन्दुस्थान के मीतर प्रवेश कर उसे स्थान स्थान से टोडने में लगा हुआ है। फिर चाहे वह मुरादाबाद हो या अलीमड अववा मेरठ हो या हैसराबाद।

माता है माप उपरोक्त मुहों पर बम्भीरता से ज्यान देकर बसगत एक कुर्ती-वत स्वापों से उपर उठकर देश की ध्वा-दता भीर एकता पर हो रहे पाकि-स्वा-के इस भ्रान्तिक छल युढ़ को समाप्त करने के जिए सभी भ्रावस्मकता कार्यवाही करेंगे जिससे पाकिस्तान जो हमारी श्वा-उता भीर एकता पर प्रहार कर खा है उसके मुह पर करारी वपत लगाई बा

> भवदीय विश्वन स्वरूप एक हित्रविश्वक नागरिक

## आर्य संन्यासी क्या करें ?

ग्रार्यजगत मे जो मन्यासी विद्वान हैं, बहुत ग्रच्छा प्रवचन दे सकते हे बहत भच्छे व्यास्यान दे सकते है बौलने की जैली ग्रच्छी है वक्त्व कला के घनी हैं, वास्मी मे रम है उन्कासर्वत्र सम्मान होता हा है उनको लाने पीने की रहने की कही कमी नही। परन्तु जा सन्यासी विद्रान नहीं बेटो शास्त्रों के जाना नहीं बहुन कम पढ़ लिखे है प्वचन **ब्या**रयान **देने** की करा ज्यादा ग्रच्छी नहीं के किसी गिनती में नहीं उन का सम्मान नहीं उनको रोनी कपडा नही रहने को स्थान नदी कभी किसी ग्रार्यसमाज मदिर मे भटकते किरते हैं कभी कही।

बार्य विवारों र डोने के नाने ऐसे सन्यामियों का पर नाग सभाकों को करना बाहिये जिससे स्थिपना भराग पोक्षाण के पक दरदर नागने की स्थिति में नहीं टाए नथा पौराहियां के मर स बादि न हो

सार्वदशिक रार्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ग्रार्य प्रतिधि सभा प्रादे- शिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा इस पर विशेष रूप से गम्भीरता के साथ विवार करके इस समस्या का हल करे।

२ टा प्रकार पुरोहिनों की ममस्या है। आयमाशजों में विद्यान कृष्टिया स्वीर आर्यमाशजों के विद्यान कृष्टिया स्वाप्टिया होने चाहिए। इसका प्राय अशान है। टकारा से नया दुसरे किसी सस्या से जो नया पुरोहिना करते आर्यमाणों में गए हैं। आय असम्माण ने गए हैं। आय असम्माण ने गए हैं। आय असम्माण ने ने पुराहिन में जो गुरा होने चाहिये विद्वारा धीरता, गभी-राग महत्रशीना नी निर्मोभिता होनी चाहिए दमका अभान है।

मार्थममाजो में उनम पुरोहित न मिलने की बणी ममस्या है, सभायों को इसपर विचार करके, इंड आर्थिसमाजी, विद्वान् सेवा भाव रखने वाने आर्थममाज का प्रचार करन वाले, गुरुबन्दी से दूर रहकर प्रचार करने वाले पुरोहिन नैपार करन वालिए।

> जग्नराम ग्रार्थ ाधीनगर

(ण्ट ७ व षप)

ठित स्प िना में कही लाया जा में कही लाया जा में कही लाया जा में कही तिर देश के जितर आप नेना यदि दल के मच से आग के देशहो- हियों के किन्द्र मर्गन्त अभियान चला सक नी आप्यमां प्राचित्र में में किन्द्र मर्गन्त अभियान चला सक नी आप्यमां देश का नेतृत्व मस्भाल के नेताओं ने गदि म आप्यान दिया तो हिया ।। अप्यान दिया तो हिया ।।

हरियाण प्रार्थवा ह हरियाण प्रार्थवा दल याज प्रगति के पथ पर अग्रसर है उस के पास ४ शिक्षन प्रान्त के लिए कार्य कर रहे है उसे कुछ समर्पित प्रार्थवीर सौमाय से प्राप्त है जिनके जावत हो का उद्देश प्रार्थवीर दा की मेवा ही है। उस की एक अपनी सामिक पत्रिका

भाहे कुळ "च । पद सी ग स्रार्थबन्ध् हदा न उसरा मरभए। नर रहे हैं। दन भी र० के नाभग शास्त्राएँ प्रान्त मे चल रही है। स्वामी स्रोमानन्द जमे नपस्वी ने ग का गुभाशोबीद दल को प्राप्त है। इस परिस्थिति मे यदि दिन्ली के ग्रार्यवीर ग्रपने सहयोग का हाब वटाय तो हरि गरा। ग्रायंबोर दन उनका आभागी होगा। भीर निरचय ही यह छाटा भाई समय ग्राने पर लक्ष्मगा के समान, राम की सेवा ररने मे अपना गौरव अन-भव करेगा । आर्थो । ग्राम्रो विरोधी शक्तियों के सम्मुत हम एक होकर ग्रार्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के पवित्र नाम को उज्वल बनाये।

## समाचार सन्देश

## सानाहिक मत्सगो का विवरण रविवार २२ सितम्बर १६८४

(भ्रमर व ग्रामगल प्रताप कालाना) प० उत्प्रश्रद्ध धर्मा चय किंगजब कम्प प० देवराज वदिक मिशनरी गाता कालोनी-श्रीमगीलाल बेचन गुल्मण्टी— ब्र० भोष्मदेव । गोवि न भवन-स्वामी प्रज्ञानाट सरस्वती। चना-प० ग्रहोककसार शास्त्री। टगोर गाडन स्वामी यजान द जी। तितक गर-प० मुनीदेव भजनो पटेशक देवनगर प०रमेशचाड बनाचायः। नारायरा विद्वारः प० बदप्रकाश स्राय । प्रीतमपुरा--- डा० रघन दन सिह पजाबी वाग-डा० वदप्रकाण माहेरवरी । पजाबी वाग-प० अशोक कुमार विद्यालकार भोगल-श्रीमती प्रकाशवती । महा बीरनग प० राधस्याम शर्मा।

मौडल वस्ती--- प्रायवीर रराजीत सिह राएग मोनी वाग—डा० सुख दयाल भूटानी राजौरी गाडन-महात्मा देवश भिक्ष रमेशनगर-श्री बलवीरसिंह शास्त्री । लक्ष्मीबाई नगर-मा० मोहनलाल गामी । विजयनगर-प्रायवार नेत्रपाल ग्राय। सोहन गज-ब॰ मनदव शास्त्री । सदर बाजार—ग० छवि कृष्ण शास्त्री। साकेत-प० सुशील शास्त्री हीजवास-प० तुलमाराम धाय। त्रिनगर प० ग्रनराथ कान्तजी। ग्रशोक विहार-प० हरिङ्चन्द्र ग्राय

यव स्**धापक** स्वामीस्व पा टमरस्वती ग्रधिकाना बन्प्रचा विभागसभा

### प्रवार वाहन द्वारा प्रवार कार्य विवरण

१-आयममाज ग्राजापाक २६ २७२८ जिम्ब न द बजेसे १० बज तक प० स यदव जी स्नातक रैडियो कलाकार एवं टोलक वादक जोती प्रसाद द्वारा सगीत का काय क्रम रखा गया है जिसमे महामा रामकिशोर वद्य महोपदेशक का बेद प्रवचन रखा गया है। प० चुनी लाल मजनोपदेशक जा के मधूर भजन भी होगे

२-- ब्रायसमाज बुराडी ग्राम मे तीन दिवस के लिए प्रचार बाहन द्वारा बेट प्रचार का स्रायाजन किया गया है। ० सितम्बर से २ भक्टूबर रात्रीको दबजे से १ बजे नक प० बेद॰यास जो रेडियो कलाकार प॰ चून्नीलाल आय भजनोपदेशक का प्रोग्राम रहेगा। साथ ही स्वामा स्व रूपा द सरस्वती वेदप्रवार श्रिष ष्ठाना का प्रवचन होगा। स्वामी म यवेग जो प्रधा ग्रायसमाज बुगी द्वारा प्रचार की व्यवस्था करायगे

— ।यममाज रघवरपुरा **न०** र मे १ अक्टूबर स १० अक्टूब नक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम 🕝 जी राघव क सर्वोत्तम प्ररुगादायक जीवन कथा का आयोजन किया है। यह रामायए का कथा प० सत्यदेव जा स्नातव संगीत कताकार द्वारा प्रस्तुत की जायेगी। ढोलक वादक प॰ ज्योतिप्रसाद जी रहेंगे।

४ — भायसमाज किंगज्वे कम्प मे ७ अपक्दय से १३ तक महात्मा रामकिशोर महोपदेशक का वेद प्रव चन होगाकायक्रमात्री ८ बजेसे १० बज तक रहेगाकथासे पूराप० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के मधूर भजन हुम्राकरने

५-श्रायसमाज महानोर नगर मे २६ सितम्बर स ६ ग्रब्टुबर नक आचाय हरिदेव सिद्धान्त भूषण तक केसरी का वेद प्रवचन होगा जिसमे कथा से पूत्र मधुर भजनो काभी कायकम होगा ।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्रिषकाता वेदप्रचार विभाग दिल्ली सभा

## नि शुल्क वैवाहिक सम्बन्ध सेवा

श्रायसमाज मन्दिर रमेशनगर नई दिल्ली ११००१५

हमारे यहा विवाह योग्य लडके एव लडकियो का रजिस्टबन प्रति दिन साय वजे तक हाता है। मिलने का समय रविवार ११ से १२ वजे होगा

भवटीय

## ग्रार्य वीर दल के बढ़ते कदम

युवकामे राष्ट्रीय चारित्रक नतिक मल्यो एव वचारिक क्रान्ति लाने के निए आय बार दल दिल्ली प्रदेश ने ल्लिली के विभिन स्थानो पर शिविर एव सम्मेलन भागोजित करने के लिए अनेक योजनाए बनाई है। भाय वीर दल भापके बच्चो युवको मे जागृति के लिए शारीरिक एव मान सिक मा यात्मिक उनित के लिए बाह्वान करता है। समस्त मायसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने महिर में आय वीर दल की शास्ताए भायोजिन कर तथा युवको को ग्रायसमाज का ओर भाकृष्ट करने के लिए रचनात्मक कत्म उठाय ।

प्रीतनदास रसवन्त



नई दिल्ली स्नाय बीर दस के शिरि में पडकती मुजासो स्रौट प्रलिब्ड मुदुयो के द्वारा काच पीसते युवक दशको को परिचय देते हुए श्री मागे राम साथ।

### श्रावश्यक निदश

सभा के पूज परिपत्रों में दिल्ली की समस्त सम्बन्धित प्रायसमाओं के प्रवि कारियों से बार बार प्रायना की गयी है कि माप धपन अ यसमाज के चुनाव सपा करालें भीरवय ६८४ ८५ में भाग समाजदारा किन्य गए कास का बलात विवरण घोषित सभासदो की सुची साथ नय य रामभ को देव राशिया दशाश वदप्रचार तथा भायक्ष देश का शुरुक तथा भागभी तीन वर्षों के न्विए सभा के सिए इतिनिधियों के नाम उनके पूरे पते सहित सना कार्यालय को भिजवा है। सार बार लिसन पर भी स्रीतक स्रापकः साम समाज द्वारा "पयन्त श्रीपनारिकताए पूरी नहां की गयी

बार गर एक काय क लिए लिखने से सभा का धन यथ में स्टेशनरी जिटिता तय अकथादि पर अप्त हो वाता है। हमारा सभी का कत॰य है कि सभाके धना**बस्यक ल**चको बचाय तथा समा द्वारा मागी गयी जानकारा को समय पर सभा कार्याभय को मिजवाय ताकि समा का संगठन महद्ध बना रहे।

समा का वर्षिक श्रविदेशन निकट अविष्य मे होने अगरहाहै और सभाका वार्षिक विवरण भी प्रकाशित होना है। हमारी हादिक इच्छा है कि बापका द्याय समाज की नतिविधिया भी उसमें सम्मि जित की आर्थे।

मुक्त पूर्ण बाबा है कि बाप पत्र निवते ही उपर्युक्त सभी जानकारिया तथा (मल्ती) सरेन्द्र महायान केन प्रविद्या क्या को बुवाकील विवया

सभा बाप सभा के सहयाग और सद भाव की अपेक्षा करती है। भवदीय डा॰ धमपाल ग्राय) महामधी

## यार्थवीर दल क लिए यत्यावश्यक निवेदन

जसा कि सापको पूब पत्र दिनांक ८ ७ १८८६ में प्राथमाकी नयी थी कि बाप क्रपनी बायसमाज मे सावदेशिक भायवीर दल ने लिए एक मधिष्ठाताका चयन करके उसका न म/निवास का पता बाय तथा दूरभाष नम्बर बादि समा कार्यालय को भिज्ञवा द। सभी तका बापकी बायसमाज का ओर स यह नाम भीर विवरण प्राप्त नही हुव प्रापन प्रपनी प्रायसमात्र के निर्वाचन के समय एक धर्षिष्टाता का जयन कर जिया होगा यदि प्रापन धना नहीं चुना हो तो धपनी समाज की म तरग सभा की बैठक बुलाकर इस काय को यवाशी घ्र पूरा कर ल। इत्याचुने गय मनोनीत । कमे मध् अधिष्ठाताक नाम निम्न फाम पर भ**र** कर सभा कार्यालय को समानी हा सिज वान काकष्टकर ताकि युवको में नई वेतना नागृत नो धीर धार्यसमाक का. समन्त सह हो स्मरण रह प्रविष्ठाता की प्रायु१८ सं४५ वयं तक हो तथा बहु ब पकी पायसमाज की घोर से बायबीर दल की समिति का सदस्य होता चाहिता।

क्रुपय अविसम्ब कायकाही कर प्रजु-म्रहीत दर हा ॰ घमपान **धार्व** 

द्वाराद्वम ब्रह्मविद्या प्राप्त कर सकते

को इच्छाकी। ब्रह्माजीने कहा

भ्रात्मा या ब्रह्म का कोई स्वरूप नही

होता। इस शरीर के नष्ट हो जाने

कभी मरती नही। इसे किसी प्रकार

दिया, जो देवताम्रोका राजा था,

जिनकी सान्त्रिक वृत्तिया थी। विरो-

चन ग्रसुरो का नेताथा। जो खानाः

पीना, रहना यही जीवन तत्त्व है

ऐसा समभते हैं वही श्रमुर हैं, ताम-

मिक वृत्ति वाले हैं। इन्द्रने उनकी

आज्ञा मानी ग्रीर पवित्र जीवन

विनाया । ग्रानन्द ग्रीर सुख से जीवन

भर गया। इद्र को सच्चा ज्ञान

मिला। विरोचन को नही मिला।

इसलिए वह दुखी रहता था। सुख

भीर दु य की यही पहचान है।

ब्रह्मा जी ने यह उपदेश इन्द्र की

का रोग या कब्ट नही होता।"

पर भी आत्मा समर रहती है। सातमा

इन्द्र ने ब्रह्म के स्वरूप मी जानने

#### (पच्ठ६ काशेष) गांधी भौर श्रद्धानंद की बीरगति

के जुलूस का नेतृत्व करते हुए इसका विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गाची वो भेजे गए तार के धनुसार इस दिन हए गालीकाड मे ४ हिंदू ५ मुसम मान मारे गय तया १३ घ।यल एव २०

गावीने ३ ग्रप्रैल, १६१६ को इस बलिदान गव वैयं के लिए स्वामी श्रदा-ज-दको तार दियाधीर लिखा शैसट कानुन का विरोध करने में प्रापने तथा दिल्सी के लोगों ने जिस धनुकरणीय धैर्य से काम लिया है इसके लिए मैं बापका तथा दिल्ली के लोगो को साधुवाद देता हु। हम उसके पीछे निहित दमन की भावना का विरोध कर रहे हैं। यह कोई द्मामान काम नही है।

लक्ति बोरमगाम भीर भमृतसर मे इए दूलदायों काड़ों के बाद जब गांधीजी ने सत्याग्रह स्थिति कर दिया तो स्वामी श्रद्धानन्द न दिल्ली समिति भन करके ग्रादालन ने ग्रपना हाय लोच सिया। स्वामी श्रद्धानन्द गांधी की ग्रोर से निराध हो गय और उन्होने गाची के दृष्टिकोण का जोरदार विरोध किया। यह बोनो की महानता थी कि प्रेमभाव फिर भी बना रहाः गाधीने 'स्वामी जीके सस्मरसां' मे लिखा है कि जितना जोरदार उनका विरोध होता वा ज्तन ही जोरदार उनकाप्रेम भी होताया।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या स गर्धी को बडा घाषात लगा । गावी काग्रेस कमेटीकी बैठक में भागलने के लिए गोहाी जारहे थे। उन्हें सोरभोग नामक एक द्रोटे से रेलवे स्टेशन पर लाला लाज-पतरायका तार मिला। गावी इस हत्या से स्तन्ध ये किंतु उनके विचार मे यह हत्या नही "बीरनति" भी। नाधी ने गोहाटी की २४ दिसम्बर १६२६ की बैठक मे इसे अपूर्वमरण 'एव 'धन्य मृत्यु' कहा झीर कामना की कि एसी मृत्युहम सब को मिले।

२६ विसम्बर १६२६ के प्रधिवेशन में गांधी ने स्वय शोक प्रस्ताव रखा धीर उसमे स्वामी श्रद्धानन्द के देशप्रेम, निष्ठा निर्मयताएव धन्य गुरुगे की प्रशसाकी।

"यम इंडिया (३०-१२-१६२६) मे" शहीब श्रद्धानन्द जी 'शीर्यक से लिखी बपनी श्रद्धावालि में गांधी ने उन्हें ' बीरता का भवतार" 'कर्मवीर" एव "योव्धा" कहातया जिला, "वर्गधीर सत्य" के लिए प्राण देने के कारण मृत्यु भी बन्य हो बयी।" बाषी ने १ जनवरी ११२७ को बनारस में उन्हें श्रद्धावलि देने के बिए मगा स्नान किया भीर उस "महान **बात्मा" के कार्यों** को पूरा करने की **प्रथम से प्रार्थना की**।

महात्मा गांची ने स्वामी अञ्चलन्द के इत्यारे धम्बुस रखीव को बोबी न मानकर वन वक्षवारों एवं नोकों को उत्तरवादी ठहराया जो स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय भौर मदनमाहन मालबीय को इस्लाम का शत्रु घोषित कर रह थे। गाबी ने धनेक बार स्घ्ट बब्दों मे कहा कि स्वाभी श्रद्धानन्द 'इल्लाम क नत्रु" नहीं हैं। गाथी के कहा कि हिन्दू~ पुमलमानो का इस हत्यास शिशालनी चाहिए और उनक रकत से घपने घपन हृदय का पाप भो देना चाहिए। गाभी ने प्रति शोध भीर बदले को भी घम विरोधो कहा भौर निर्देश दिया कि हिंदुक्कों की भारम-स्यम रखना चाहिए।

महात्मा नाथी स्वामी श्रद्धानन्द की, कूछ मामलो मे बसहमति क बाबजूद धपना भाई घादरणीय सहयोगी मानते हुए उनके गुणों के प्रशसक बने रह। धस्प्रयता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किये उनकी गांधी ने सदैव मुक्त कठ से प्रशसा की । यद्यपि दोनो देशमक्तो के क्षेत्रो एवं कार्यप्रशासी में बातर या, लेकिन क्यायह स्थोग ही याकि दोनो को एक जैसी वीरगति बाप्त हुई।

कादम्बिनी से साभार ए/६८ ब्राग्नोक विहार पे-ब-I दिल्ली **५२** (पृष्ठ १ संग्रागे)

देवव्रत धर्मेन्द्

बाद भी उन्होंने केवल भाषरण देने

तक ही अपने आप को सीमित नहीं

रखा। बल्कि उन्होने उनको चिर-

स्थायी बनाने के लिए उन्होने रचना-

त्मक कार्य प्रारम्भ किये। बालक

मामाजिक नैतिक मूल्यो के प्रतीक

अनेक विषयो पर प्रतियोगिताए

ग्रायोजित करना तथा सत्यार्थप्रकाश

यज सम्कार सम्बन्धी परीक्षाएँ

भायोजित करना ऱ्या युवको को

परोपकारी एवं सेवा-कार्यों के लिए

उत्साहित करते रहना उन्होने भ्रपने

जीवन का ग्रंग बना लिया था। ग्रंपने

वारिकास्रो, युवक युवतियो मे धार्मिक

अपनी शकाको मूनाया।

इतनासुनकर ब्रह्माजीने इन्द्र को फिर से ब्रह्मचर्य वत धारण करने के लिए कहा। इन्द्र फिर वापस ग्रा गया। उसने एक वर्षतक ब्रह्मचारी का पवित्र जीवन बिताया। एक वर्ष के बाद बह्या जी के पास गया। ब्रह्मा जी ने कहा = ससार मे ब्रह्मचर्य से

## (पृष्ठ ६ मे बागे) इन्द्र-विरोचन

प्रकार बहाहो सक्ता है। वह फिर ब्रह्मा (प्रजापति) के पास ग्राया भीर

ब्रह्मा जी (प्रजापति) ने कहा--बेटा । तुम्हारी बुद्धि देखकर मुभे प्रमन्नता हो रही है। इस वार तुम्हारे माथ विरोचन क्यो नही ग्राया ? इन्द्रने कहा -- वे शरीर को ही सब कुछ समभने लगे। हर समय सुख से जीवन बिनाते हैं। शारीरिक सूख को ही वे सच्चा सुख समभते हैं। इस बात से अलग हट कर सोचना नही

बढकर कोई तप नहीं है। इसी के

जीवन मे जो घन वैभव उन्होने प्राप्त किया धपने पास नही रखा धौर न स्वय उसके उपभोग का ग्रानन्द लिया वरन एक तपस्वी याजक बनकर ब्रार्थ बनायालय सार्वदेशिक ब्रार्थ प्रतिनिधि सभा ग्रीर अन्य ग्रार्थ साम।जिक सम्याग्री, गरीब छात्री के लिए धर्पित कर दिया।

धीर, गम्भीर एव सौम्य प्रसन्न चित्त धर्मकी घुन के धनी कुशल वक्ता, कुशल लेख र कुशल पुरोहित, कुशल प्रशासक कुशल युवा नेता श्रो देवव्रत धमन्द्र को ग्रार्थ सन्देश परिवार की छोर से विनम्न श्रद्धा-जलि।

---यशपाल मधाश्

## श्चार्यसमाज करौलबाग में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

३० अगस्त से ७ सितम्बर तक श्रार्यसमाज करौलवाग नई दिल्ली मे वेदकथा एव बृहद् यज्ञ का स्रायो-जन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रो॰ रामिकशोर जी की वेदकथा एव श्री गलाविमह राघव द्वारा मधुर भजनो का रमास्वादन कराया

७ सितम्बरको श्रायसमाज के प्रागरा मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का श्रायोजन किया गया। इस श्रवसर प~ श्री प्रा० रामकिकोर, प्रा० रमेश चन्द्र श्री ब्राचार्य हरिदत्त शास्त्रो श्री मोदप्रकाश शास्त्री एव श्री अजय भल्ला सादि वक्तासा ने श्रीकृष्ण के उदात्त चरित्र पर प्रकाश डाला। सभाका सवालन श्री श्रोमप्रकाश सुनेजाने किया।

> निवेदक कार्यालय मन्त्री दयालचन्द गृप्त

सुल्तानपुर महरौली दिल्ली-३० मे म्बुल गया है जिसमे विद्यार्थियो को नि शुल्क शिक्षा एव ग्रावास की सुविधा है और जनवरी से ७५ ह० मासिक छात्रवृत्ति भी छात्रो को दी जाएगी।

> मनुदेव शास्त्री, प्रिसीपल सीनाराम विद्यामन्दिर दुर्गापुरी सुल्तानपुर

## स्व० श्री पं० देवव्रत धर्मेन्द्र श्रद्धांजलि सभा दिल्ली की समस्त आयंसमाजो की ओर से २२ सितम्बर रविवार को

श्रार्यसमाज दीवान हाल म प्रांत १० बजे प० दवव्रवत धर्मेन्द्र की स्मृति मे श्रद्धाजलि सभा का ग्रायोजन किया गया है, इस ग्रवसर पर पहुँचकर कर्तव्य का पालन करे।

मन्त्री-प्रायंसमाज दीवानहाल दिल्ली

## "कैथल में कवि सम्मेलन"

पलवल । मार्यवीर दन हरि-याएग का प्रान्तीय महा सम्मेलन २२ सितम्बर रविवार से कैंबल मे हो रहा है। २२ सितम्बर रात्रि ६ बजे कवि सम्मेलन का मायोजन किया गया है जिसमे निम्नलिखित भार्य कविगरा पकार रहे हैं-प्रो० उत्तमचन्द शहरर (सचालक), हा॰ शामा यणव मानी क्रिकेट की

सियाराम निर्भय (भारा), श्री सत्य-पाल बैदार (दिल्ली) श्री गैला राम दीवान, श्री मुन्नवर माहिब, श्री व्याकूल जी एवं धन्य कई कविगरा।

(मजीत कुमार मार्य) मत्री भार्यवीर दल हरियागा संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए शुभ सूचना ''राष्ट्रीय सस्कृत सस्यान'' से





उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

लवन करें



शासा कार्यालय-६३ गली राखा केदारनाय चावडी बाजार विल्ली-६ फोन २५६८३८



वय १ मंक ४७ भूस्य एक प्रति १० पैसे रविवार १३ प्रकृतवर, १६=६ वार्षिक २० रुपये सच्टि सबत ११७२१४१०८६ साजीयन २०० रुपय वाध्वित २०४२

वयानन्वान् १६१ विदेश में ४० डालर ३० पौँ

नई दिल्ली, २१ सितम्बर । गप्त-बर एजे नियों ने केन्द्र सरकार को झाग्रह किया है कि पाकिस्तान ने पजाब के भनावा उत्तर भारत के कुछ धन्य क्षेत्रों से प्रशाति पैदा करने के उद्देश्य से कट्टरपनी मुस्लिम नेताओं धीर सगटनो को व्यापक स्तरपर माधिक सहायता देने को पेशकशकी है

गुप्नचर एजसियो की सूचना के बनुसार पाकिस्तान सरकार ने 'वीसा देने का उदार नीति के नाम पर बडासच्याम भारत के मुस्लिम नेतामो व्यापारियो भौर सादग्ध व्याक्तयों को पाकिस्तान माने की सुविधा दे दो है। पाकिस्तान इन लोगों के माध्यम से भारत में 'मस्लिम पर्सनल ला' भौर 'इस्लाम' की रक्षा के नाम पर मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से भलग भलग करने काकप्रचार तथादंगे करवाने का इरादा रखता है।

विदेशों में भारत विरोधी षड्-यन्त्र पर नजर रखने वाले गुप्तचर सगठन ने अपनी रिपोर्ट मंजामा मस्जिद के इमाम मौलाना अब्दुल्ला बुखारी द्वारा इसी महोने के प्रारम्भ में को गई पाकिस्तान यात्रा का उल्लेख मी किया है। रिपोर्ट के श्चनसार शाही इमाम ने पाकिस्तान के नेताओं और पत्रकारों के बीच जाकर कहा, भारत मे हिन्दू, मुसल-मानो भौर सिस्रो पर बुरी तरह ग्रत्या वार कर रहे हैं। मारताय मुस-लमाना क पास इन जुल्मो क विरुद्ध सबब करने क झावश्यक साधन नही ₹ 1 इन काम के लिए पाकिस्तान सरकार धीर जनता को लडाई लडने के लिए प्राधिक ग्रीर मन्य सहायता करनी चाहिए।

इमाम बन्धारी ने खलेखाम यह यह भी कहा कि इस पाकिस्तान को ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होने श्रसम मे ५० हजार और मुरादाबाद मे पाच हजार मु ासानों के मारे जाने नथा भारत से गुसामानों के पर्सनल ला के कुछ प्रावधानी के विरुद्ध ग्रदालती फेनलो का उल्लेख करते हुए इस्लामी परम्पराओं की रक्षाकी दहाई भी दी है। इमाम की टिप्पियों को पाकिस्तानी प्रखबारी ने सुस्तियों में छापा है। पारिस्तानी नेतामो ने इमाम के साथ हुई गुप्त वार्ताघो में हर सम्भव सहायता के वायदे किए हैं।

गुप्तचर एजेसिया पाकिस्तान के इरानो को निफल करने के लिए भारत म शक्रिय धन्य धार्मिक नेताओं की गतिविधियों पर भी कडी नजर रसे हुए है भीर इनके विरुद्ध

भी देरही हैं।

भावदाक कार्रवाई करने की साह

बनाया जाता है कि भाजमगढ के इमाम मी नाना श्रोबेदल्या स्थान के एक कट्टर साम्प्रदायिक भीर उत्तेजक भाषरा के टेप की मुस्लिम क्षेत्रो में सुनवाने भीर मक्त बटवाने की रिपोर्टभी सरकार को दी गईं है। राजस्थान के पाली परवें की मिल्लत मे दिये गए इस भाषण मे मौलाना घोबेदुल्ला लान ने तलाक-शदा मस्लिम बीवी की परवरिश का सर्चा देने सम्बन्धी उच्चतम न्याया-लय के फैमले का कड़ा विरोध करने भीर पर्सनल लाके लिए खून की नदिया बहादेने की प्रजोरे भ्रप

इस भाषण में मौताना श्रोबे-दुल्लालान ने कहा है कि मस्लिम किसी कोई के पाबन्द नही है। ये किसी कोट में सफाई देने नहीं जायगे लेकिन कूरान या पर्सनल लाके बिलाफ कोट मे जाने ताली का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्स-नल लाबदलने की कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस भ्रटलबिंहारी वाजपेयी और गजीव गांधी को भी कल मा पढने के लिए मजबूर दीने। पड सकता है।

बताया जाता है कि इ टेलीजेन्स ब्यूरो की ग्विट पर भोपाल में इस भाषगाके टेपकी प्रतिया जब्त कर ली गई हैं लेकिन दिल्ली उ० प्रव भौर विहार के मुस्लिम बहल क्षत्रो मे अप्ब भी यह टेप घडल्ले से बट धीर बज रहे है। इन राज्यों के प्रशासन ने घव तक कोई जेस कार्र-वाई नहीं की है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

## युवा पीढ़ी को महीष दयानन्द का सन्देश सुनाय –सर्यंदेव

धार्यसमाज शाहाबाद मुहम्मद-पुर दिल्ली मे ब्रायोजित एक मास के धार्यवीरदल के शिविंग के समापन समारोह के भवसर पर बोतते हुए सभा प्रधान श्रो सूर्यदेव ने कहा-

धाज की आवश्यकता है कि ग्राम ग्राम शहर शहर मे यूवको के शारी-रिक बौद्धिक भीर मारिमक विकास के लिए इस प्रकार के आर्यवीर दल के शिविर लगने चाहिए। उन्होने मज्ञान, मभाव भीर अत्याचार मिटाने के लिए तथा देश की एकता धीर प्रखण्डता के लिए युवकी की बागे माने के लिए माह्यान किया तथाप्रेरए। दीकि सभी भार्यनर-नारियों को अपने लड़के और लड कियो को धार्य मत्सगो मे लाना चाहिए ग्रीर उन्हें ग्रपने वर्म और सस्कृतिका परिचय कराना चाहिए। ग्रार्यसमाज का उद्देश्य तो व्यक्ति भीर समाज के सर्वती-मुखी विकास

बारीरिक धारिमक सामाजिक नौकिक एव पारलौकिक हर अकार के उत्थान से जुड़ा हुआ है। वदिक मन्त य सर्वोत्कब्ट एव वैज्ञानिक है इनक प्रचार प्रसार के लिए हमे हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

'स श्रवसार पर ५० यूवको ने तलवार भाले तथा व्यायाम ग्रादि का सन्दर प्रदर्शन किया जिसकी जनताने मन्त्रमुख होकर देखा। बह शिविर श्री बर्मवीर वशिष्ठ प्रशि-क्ष" के नेतत्व में सम्पन्न हुआ, सार्व देश ग्रायंबीर दल दिल्ली प्रदेश के ग्रधिव्हाना श्री प्रियतमदास रसवन्न नया मन्त्री श्री स्थामसुन्दर विरमानी तथा श्री रामसिंह, श्री जगवीर सिंह श्री राजेश में ती शास्त्रानायक स्नादि का भी योगदान इस प्रवसर पर स्तुन्य म-त्री

आर्थ त्याज शाहाबाद मुहम्मदपुर



## आइये वेदमाता की शरण में चलें

#### लेखिका--श्रीमती सुषीलादेवी विद्यालकृता सिकन्दराबाद

म्रो स्नुनामय। वरदावेदमाता, प्रचोदयन्तापावमानी द्विजानाम् । म्रायु प्रागा प्रजा पञ्जन कीत्ति द्वविराबह्नवर्चस मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥



यह ग्रथवंदित का मन्न है। इसमे प्रभुकहते हैं। ऐ मानवी मैं मैंने बेद-माना वेदरूपी माता स्तृता=प्रस्तृत कर दी है। यह कैसी है ? वरदा = बर देने वाली। तुम्हारी फोली र,शियो से बरदानों से भर देने वाला है। सबको पढने ती प्रेरगादो। यह वेदमाता द्विजानाम् = द्विजो को पाव-मानी पवित्र करने वाली है। दिज कौन ? जिसके दो जन्म हए हो। एक अपन्म माता के गर्भ से तथा दूसरा जन्म ग्राचार्य गर्भ से । ग्राचार्य उप-नयमान बहाचारिया कृत्युते गर्भ-मन्तः। त रात्रस्तिस उदरे विभक्ति त जान द्रष्टमभिसयन्ति देवा । मौ जन्म देनी है शरीर का। ग्राचार्य उसे दूसरा जन्म देवर भ्रात्मवान् बनाना है। बेदमाता ऐसे दिजो की पवित्र कर देती है। उनके जीवन कुन्दन बन जाते हैं।

क्रिरक्या देती है वेदमाता ? सुनिये—श्रायु, प्राग्न प्रजा पशु, कीर्तिद्रविस्पन्नीर ब्रह्मवर्चेस ।

मन्त्य को नीन प्रकार की इच्छाय हानी है-पुत्रेषणा, वित्तेषणा लोके-षणा।

पुनेवागा=सतान की इच्छा सभी को हानी है। सबकी गोद भरी रहे च गही ना कुरक नाना है। पर प्राप्त न स्वान हानत नि पुन पुन प्रनामक न का ना ना करने हैं नी एक हैं पुनयागा वेद-साना जा दें। स्म इच्छा को भाषा पुन करने हैं।

विन्तेषणा धन नी इच्छा।
भोली मण्डी भगे रहे। कोई गरीब
न हा सभाव सस्त न गहे। सबके
घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे। बैद-माना पश्च पशु खब्द से ही सुद समृद्धि नापी जाती थी। किसके पार पशुधन-मान, बैल, घोडे, हाबी किसने है, इसी से समृद्धि का पता चलता था तो देदमाता पशुभी देती है।

वित्तंषणा = पूरी करती है।

लोकेबएा = कीस्ति यथा, प्रान नाम गभी चाहते हैं। बुरे काम करने वाला भी चाहता है कि कोई उ बुरा न कहे। धन जावें पर नाम न जाये। बेदमारा कीस्ति भी देती है। इसके साथ-नाथ बेदमाता ब्रायु और प्राएग लिंक में देती है। जोवेम बराद कतम। धायु प्राए। ताल्पर्य मह कि जो बेद का स्वाध्याय करता है। बेद पटकर उपके प्रनुसार प्रपने जीवन का सवालर करता है उसे जीवन मे भगवान् के बाशोवदि से सब कुछ प्राप्त हो जाना है।

चार चीजों के समूह का नाम मनुष्ट है। शरीर मन बुद्धि और आरमा। हमारे पुल्वार्य भी चार हो कहे गये हैं— घर्म, घर्ष काम और मोशा। शरीर के लिए बावश्यकता है प्रर्थ की। प्रर्थ याने शरीर को जीवन रलने के साधन । रोटो, कोई बिट्या लाये या घटिया पर चाहिए सबकों ही जाना। जीवन चल नहीं सकता यदि सारा को प्रर्थ याने शरीर लाते ने मारा को प्रर्थ याने शरीर लाते ने मारा को प्रर्थ याने शरीर लाते ने मारा को प्रर्थ याने शरीर लाते निये मारा स्थान वार्य लाये नाव वार्य लाव वार्य लाव

शरीरमाच च्लु धर्मसावनम्।

चा । क्यनीतिसूत्र में भी कहा है – सुख्यस्य मूल घर्म । धर्मस्य मूतम् अर्था।

सुल का मूल घर्म है परन्तु घर्म का मूल प्रयंहै। घत मर्थमेवार्जय निष्फला क्रियाधन पदाकरो।

मन के लिए आवश्यकता है काम को। विना कामना के मन ही क्या? हा कामनायें खिल हो खुभ हो। बुद्धि के लिए वर्स की आवश्यकता है,

वर्ग के कारण ही बुद्धि में सत् असत् का विवेक पैदा होना है।

बात्मा को मों स की पावरयकता है। हमें शरीर गौर मन के बचन से मुक्त होना है। केसे? शरीर और मन के द्वारा ही। यह एक ऐसी पहेली हैं जिसे सुलकाना है। इसका उपाय है—

तराजू तो। एक पलड से सर्थ स्त्रीर काम को रखी। दूसरे पलडे से रखी वर्ष को तराजू की वही बुद्धि के हाथ भेदेदोन प्रखंबीर काम की छोहो, नवर्ष को छोहो। वर्ष पूर्वक सर्व सीर काम का उपयोग करी। यो प्राप्त को मोखामिल जायेगा।

महामारतकार व्यास जो कहते हैं। ऊर्ण्याहुविंगोम्येय न च करिवत् गुरागिति मा। घर्मायेय न च करिवत् गुरागिति मा। घर्मायेय च काम्यव्य स्व धर्म कि न सेक्यते ? अर्थ ग्रीर काम बुरे नही। घरीर के लिए काम प्रति-वार्य हैं। यह मन हो क्या ? जिसमें कोई कामना न हो ?

अर्थ ग्राह बनकर उसने न लगे। मन में बुरी कामनाय न ब्राये। मन विश्वसकत्त्री हो इसके लिए घर्मपूर्वक अर्थ और काम का उपभोग करो। बाज धर्य और काम का पलडा भारी हो गया है। धर्म कप पलना ह्ल्का हो। पया है। इसीलिये इतनी प्रशान्ति इना ग्रामुण है।

टका वर्ष टका कर्म, टका हि परमपदम। टका यस्य गुहे नास्ति हा टका टकटकन्युते। टका ही वर्ष। टका हो कर्म वन गया है। मनुष्य का निर्माण न्ही हो रहा। पहिले आश्रम व्यवस्था थी। बहायर्थ में वर्ष का अध्यादम स्वप्त में वर्ष का अध्यादम स्वप्त में वर्ष का अध्यादम स्वप्त में वर्ष का प्रधादम स्वप्त में वर्ष का प्रधादम स्वप्त में वर्ष का प्रधादम स्वप्त में वर्ष की साधना धारम साक्षात्कार के धाश्रम थे। सीवी चवते चवते धारमी मनुष्य बनकर तक्य तक पहुच बाता था। नत्य सभी का होता वा-

विविषदु सात्यन्तनिवृत्ति ग्रत्यन्तपुरुषार्थः । श्राष्ट्यारिसक्, श्रास्त्रिदेविक, ग्रास्टि-

मौतिक दुःसाँ से पूर्ण निवृत्ति पाना ही बीवन यात्रा का बरन "क्य पा। हम बेदों को भूल गये। बेद की शरण में भाषों सब कुछ मिलेगा। क्य ? बब महा दस्वा अष्ठ के मर्पण करके 'तेन व्यवदेत' की मावना से सुझार के विषयों का भीग करोगे। तब सापको जवत बहुस्सोकम् अष्ठ का बहुस्लोक स्माश प्राप्त हो सकेगा।

यत् करोषि यदश्नासि यज्जु-होसि ददासि यत् बत्तापस्यसि कौन्तेय कुरुव्य मदर्पणम् यह भगवदर्पण की भावना के बिना प्रभु का प्रसाद पाना कठिन है। उपनिषदों में झष्टावक की कवा प्रसिद्ध है। राजा जनक ने झध्टावक्र से कहा पाच मिनटो मे प्रमु के दर्जन करा दो। अध्टावक्र ने कहा कराता ह परन्त तब, जब ग्राप श्रपना मन मुकेदे दें। मन एका प्रती प्रमु दर्शन होते हैं। चचल सहरों मे प्रपना मुक्त नही दिन्वाई पडता । स्थिर पानी मे ही हमारा मुख प्रतिबिम्बित होता है। जीना भी एक कला है। इस वेदमाता की गोद में बैठकर सीला जा सकता है। भाइये श्रावरा मास है। वेद का पढना, पढाना, सुनना, सुनाना, सब भायों का परम धर्म है। वेदमाता को गोद में बैठकर अम्यू-दय, भीर निश्रेयम का अभृत पान करे।

## परामर्श बहुमूल्य है

दिया परमात्मा तुमको इसका सदूपयोग करो बदले कुछ न लिया इससे परोपकार करो ऐसे कार्यं करो जिससे दुबारा मनुष्रतन प्राप्त हो ऐसा मार्ग धपनाधो जिससे सच्चा मुख प्राप्त हो निस्सन्देह परमात्मा प्रदत्त यह जीवन प्रमुख्य है इसको समासकर रसना

#### 3

## सारी उलझनों का हल है आर्यसमाज !

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के हृदयोद्गार



धार्यवमात्र एक वडे उद्देश की लेकर स्थापित हुमा था। धजान के मन्कार की समाब से दूर भगाने के महान् प्रयत्न की बार्यसमात्र के निरन्तर जारी रका। धार्यसमात्र राह भूने जहाजों के लिए लाईट हाउन का काम देता हैं।

मैं एक जगह किसी लक्षपति सेठ महोदय से बन्दा मानने गया। धार्यसमाज का नाम सुनते ही व गरज उठे और कहा-स्या धार्यसमाज धार्मी मदा नहीं है? मैंने कहा-धार्यसमाज नहीं मर सकता, मेरे जैसा ध्यक्ति मर जाये तो कोई बात नहीं, सेकिन धार्यसमाज को तो जिन्दा स्कूना है। धनर कोई यह समस्रोक धार्यसमाज मर जायेगा, तो वह निरामुक्ष हैं।

कुछ यात्री एक नाव में सफर कर रहें वे। रास्ते में तूफान के कारण नाव डावाडाल होने लगा। साथी याती न एक से कहा—माई नाव बुनने वाला है। कुछ उपाय करो। ता वह कहात है— बुनने वाली है ता बुनने दो। मस्लाह का हा नुकसान है। उसने हम से किराया ज्यादा सालया है। वह सपन पाप का कल मोगेगा।

लेकिन वह यात्री यह भूल गया कि नाव के शाब वह स्वय जी दूब कर मर जायना। ऐसी हो बान हमारे कुछ भाई किया करते हैं। प्रायं समाज वह नाव है जिसमें सारी सम्यता, तारो सस्कृति, गीता, रामा-यहा, वेद और आध्यारिक नावनाए संबोकर सुरक्तित रही गई हैं। सज्ञानया। सगर यह किस्ती दूबी तो हम सब बूब जायने। याद रखो इस बात का, सायसमाज के गोरव में हमारा गोरव हैं। सायसमाब के जोवन में हमारा जावन हैं। सायसमाब का मौत से हमारा मौग है, सायसमाज के समिमान में हमारा समिमान जिसा हुमा है।

एक बायसमाज के खानचार जुलुस में मैंने प्रपने माई-बहुनो को सैनिक कर में देखा, हरियाने के बारों को सपनी मस्ती में देखा। राजस्थान की केसरिया रंग की साड़ा पहुने बहुनों का जब मैं देख रहा था तो उस स्वय मेरे दिल की किलारा बिल रही थी भीर मेरी भाषा का सुमन किस्मित ही उठा। दिल में एक ध्वित हुई—धार्यसमाज जिन्दाबाद। महुषि का स्मरणा किया। मेरे मार्यों यह तुन्हें क्या माजून कि इस सब्सा के बनाने के कितानी जिन्दियों सारी है। इसकी बुनियाद करायर किताने के तुनियाद के जीवन यसे हैं 'इस बिहा को किलारा कि कितानी किस कराये का सिक्त कितानी किस कराये के सार्या कि किताने के सार्या मेरे मार्यों के किताने कि कि किताने कि किताने कि कि किताने कि कि किताने कि किताने कि किताने कि किताने कि किताने कि किताने कि

राजनीति में जाकर लोग कड़ तो कुछ घण्छा भी लगता है, लेकिन यहां प्रायसमाज में बाकर जो लोग मन्त्री, प्रधान या कुछ भी र बनने के लिए लड़ना चाहते हैं। वपरासियों पर हुक़्तत बलाने के लिए में मैं कहूँचा कि तुम बपती शक्ति नष्ट कर रहे हो। घपनी सारी तपस्या पर धानी फरते हो। मगर तुन्हें कबहु बेलतो हो नो जायों पोलिटि-कल मैदान में बेलों। सबर स्मर्गाठ के लिए टिकट मिल गया तो सस्टारे भीन वर्ष के लिए पो बारह हैं।

 धनुभव किया है कि धार्षसमाज सारे भारत की धारमा है। धगर धारमा मर गई तो मारत की भारतीयता नटर हो जाएगी। विकर्षक स्कृति नटर हो जाएगी। धार्यसमाज को छाडकर धौ? कोई सरबा है फिरका परस्ती से लड़वे वाली? मृह से तो सभी लड़वे हैं, पट्ठे उनसे हाथ मिलाय है फिरका परस्ती से लड़वे वाली? मृह से तो सभी लड़वे हैं, पट्ठे उनसे हाथ मिलाय है जो फिरका परस्ती के साथ फिरका परस्त सरबा हो के साथ है जो फिरका परस्ती के साथ फिरका परस्त सरबा हो के साथ है जो फिरका परस्त से साथ हिस मिलाय है और उनकी पोठ ठोकते हैं। यह वास्त को साथ की बात है आब ईसाई पादरियों से यह दम नहीं है कि व साथ विद्वानों के मुकाबले से बात। इन विद्वानों को पहने दो मेरा हो मुका-बला करने सा जाय, तो देखूं। साज ईसाई पादरी नाइसजूस की मोठी गोलिया खिलाकर राम व कृष्ण के सकते की लिए कोई है कि किन मुसलमानों की फिरका परस्ती का मुकाबला करने देत फिरते हैं है लेकिन मुसलमानों की फिरका परस्ती का मुकाबला करने के लिए काई बाये नहीं धाता। ईसाइयों का जवाब देने के लिए नोई तैयार नहीं है।

श्राज बहुत लोग बौद्ध घम का प्रचार करते हैं। हमारी सरकार भी उनकी पीठ ठोका करती थी। बौद्धों ने राम धीर कुछए के मन्दिरों से उनकी पूर्तियों को निकाल फक कर उनकी बगह बुद्ध की मूर्ति रखी गई हैं। जिनकों हमने सिर पर चढाया, वे हो झात्र हमारी झास्तीन के साप बन रहे हैं।

वे प्रचार करते रहते हैं कि ससार घोचे की टट्टी है। तुम कुछ मत करो। कोई किसी का बाप नहीं, कोई किसी का बेटा नहीं। मैंने कहा ध्यार इस नगन् में कोई किसी का नहीं है तो यह सारा जगत् यतीम-सारा इस नगन् में कोई किसी का नहीं है तो यह सारा जगत् यतीम-सारा यह दुनिया की महफिल फूठी है घोच सपना है तो तुम्हारे सामने मुस्किल ही मुस्किल है।

एक पण्डिन ने लिखा —हिन्दुस्तान मे प्लेन बस्बई मे पैदा हुमा भीर भायसनाज का काम भी दयानन्द ने बस्बई मे ही शुरू किया था। प्लेग भीर भावसमाज एक बराबर हैं। प्लेग जुहो से शुरू होता है।

उन पण्डित जी के लिए मेरा जवाब यही है कि धार्यसमाज पाल-डियो के लिए प्लेग ही है। मौलवियो के लिए, पादरियों के लिए. ब्रज्ञान फलाने वाला के लिए रूढिबादियों के लिए ब्रायंसमाज प्लेग है और प्लेग हो रहेगा। आर्यसमान का प्लेग वस्वई से चला भीर ऊँचे स्वर में कहता है कि ईसाई भाइयों, सफाई करों, नहीं तो मैं झा रहा हूं। मफाई हो रही है। किताबे बदल गयी। किताबो के तर्ज बदल गए। भारतवर्ष के अन्दर जितने अच्छे कानून बन रहे हैं, वे कोई इन लोगो ने बाडे ही ईजाद किए हैं ? वे सब हमारे पीसे हुए को फिर पीसा गया है। ग्राज देश के अन्दर दहेज कानूनन बन्द कर दिया गया है तो पहले इसकी ग्रावाज किसने उठायी थी ? बच्चो के ब्याह न हो, बूढो के ब्याह न हो यह सब भादोलन पहले भार्यसमाज ने चलाये थे और वे ही बात ग्राज हमारो सरकार ग्रमल में ला रही है। ग्रगर गो-हत्या को बन्द करने को ग्रावाण ग्राज उठ रही है तो दयानन्द का यह भपने जीवन मे देला हमा पहला स्वप्न या। मगर माज हमारे देश में मो-हत्या बन्द नहीं हुई तो यह हमारे लीडरों की कम शोरी की निशानी है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो यह सपना दयानन्द ने देखा था । शाज बह स्वीकार हो हो गयी है। राष्ट्रभाषा की पट्टरानी की जगह वह जा बठी।

ध्रगर बार्यसमाज को कोई कमजोर करना चाहे बनने से से ही, तो मैं यह कहूगा कि चलो, दोनों चलकर ताला लगा देते हैं। लिकन याद ररो, प्रार्थसमाज कभी नहीं सरेगा। अगर हमारे हाथ से दमानन्द के स्वप्न की पूर्ति न होगी, तो कोई बात नहीं, दूसरों के हाथों से होगी। भाषी खन्तान ही सही, इस स्वप्न को साकार कर दिखायेगी। स्वीकि पिश्च का, मानव के कल्याग का का और कोई रास्ता ही नहीं है, दुनिवा को द्यानन्द के रास्ते पर बाना होगा। गुरवर विरजानन्द व्याकरण के सूर्य थे। उनके पार्षिय सारीर के त्याग करने पर देव दयानन्द ने कहा या करने पर देव दयानन्द ने कहा या का स्थान है। ऐसे महान् गुरु के जरणों में बैटकर देव दयानन्द ने पाणिनि की धर्टाच्यायों और पाराञ्चल मार्म प्रमान करने पार्णिन की धर्टाच्यायों और पाराञ्चल मार्म प्रमान करने समार्भ पार्थों के अन्तर को समफाया। आर्ध- अनार्थ प्रमान के अन्तर को समफाया। हो देव दयानन्द को महानाद्य उपन्तिय पी। इसी उपनिष्य ने ही अपनी भारत के इतिहास में एक नया अपनी भारत के इतिहास में एक नया अपनाय जोड़ दिया।

देव दयानत्व ने स्पष्ट किया कि वाङ्मय के दो रूप हैं। प्रपौद्येय धौर प्रौद्येय धौर प्रौद्येय धौर प्रौद्येय धौर प्रमाद्येय के भी दो रूप हैं आप धौर प्रमाद्येय आप वाङ्मय का स्पाद उत्तके उपरान्त का सारा वाङ्मय धावार्य साहित्य धनार्थ वाङ्मय धावार्य धनार्थ वाङ्मय धावार्य धनार्थ वाङ्मय धनार्थ के अपीक्ष साहित्य कोटि का स्वीकार किया। क्योंकि—

शस्तिको वेदनिन्दन ।

– मनु•

जो बेद के अपीरवेयस्य को स्वी-कार करता है वही भास्तिक है। देव दयानन्द ने इसलिए स्पष्ट रूप से घोषणा की—

"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ता, पढाना सुनना सुनाना, सब आयों का परम

-- प्रार्थसमाज का तीसरा नियम

श्रावणी उपाकर्म पर वेद कथाओं का प्रारम्भ होता है। इसका मुख्य उद्देश्य ही वेद का प्रवाप-असार रख्य है। इस ग्रुम अवसर पर वेद के सम्बन्ध में कुछ चिस्तन, मनन उप-युक्त रहेगा। इनी दिन्द से हम निम्न तीन मून भूत प्रकों पर विचार करेंगे।

१ वेद की उत्पत्ति किस प्रकार

२ वेद का कर्ता कौन है? ३ वेदो का प्रयोजन क्या है?

हर सत्य का बाबार प्रमाण होता है। प्रमाण भी वो प्रकार का है। स्वत प्रमाण भी वर प्रमाण कब अपोरेक्यंत्व की बात करते हैं तो इसका प्रषं है कि वेद स्वत प्रमाण है। ईस्वर का दिया हुमा मानव मात्र के लिए अंस्ट्रतम ज्ञात है। वेद का ज्ञात विना किसी भेदमाव के सब मुत्रणों के लिए हैं। वे भेले हो वे किसी भी जाति वर्ष प्रषवा देख के

## वेदोऽखिलो धर्म मूलम

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

भी अन्य अर्मणन्य हैं सब परत प्रमाण हैं, क्योंकि वे मनुष्य करते है। मनुष्य सर्वज्ञ सर्वन्तियांमी, सर्वव्या-पक, सर्वशितमास् कभी नहीं हो सकता। वह बल्पका है और उसको शक्ति सोमित है। इस सीमितता और अल्प्यता के कारण ही उसमें अपूर्णता है। अपूर्णता कभी पूर्णता को अन्य नहीं दे सकती। इसिल्प मनुष्यकृत सम्प्रेम अप्याप्त हैं और उनमें शास्त्रत तथा सांवभीम सत्यों का भी समाव है। प्राय ऐसे प्रन्यों की आन्यताएं साम्प्रदायिक तथा एक-पक्षीय हैं।

ज्ञान भी दो प्रकार का है। स्वा-भाविक तथा नैमित्तिक। पश्च पक्षी धपने स्वामाविक ज्ञान के कारण ही तैरना भीर उडना जानते हैं। एक मल्लाह के पुत्र को भी धपनै पिता से नदी में तरना सीखना पडेगा। तरना तो अलग बात है, मनुष्य के बच्चे को चलना और बोलना भी सीखना पडता है। ऐसे बहुत से प्रयोग किए गए जिनमें मनुष्य के बच्चों की मानव समाज के वातावरण से मलग थलग रखा गया भौर बच्चे कुछ भी नहीं सीख पाए। केवल वन में जिन पश्चों के बीच उन्हें रखा गया वैसा उनका भी स्वभाव बना। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए नीमित्तिक ज्ञान की आवष्यकता है। वेद ईश्वर के द्वारा दिया गया नैमित्तिक ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में मिला।

मैक्समूलर तो भ्रपने धार्मिक विष्वास में ईसाई थे। वे लिखते हैं—

"If there is a God who has created heaven and earth it will be unjust on his pasf if he deprives millions of his sons born before Moses, of his divine knowledge Reasons and comparative study of religions declares that God gives his divine knowledge from his first appearance on Earth"

प्रवात् यदि वरती भौर भाकाश का रवियता कोई ईरवर है तो उसके लिए यह भन्माय पूर्ण होगा कि वह भूसा से पूर्व उरपन्न भागे वाहीं पुर्व को भ्रपने बात से विञ्चत है। तर्क बीर करों का नकतास्थक सम्मान सृष्टि के बादि में ही झपना ज्ञान मनुष्यो को देता है।

शिक्षा के बिना ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

नोपदेशमन्तरा ज्ञानोत्पत्ति ।

हम अपने माता पिता और आचार्य से ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु आदि सृष्टि में इन सबके ज्ञान प्राप्ति का साथन क्या था?

सर्गादौ वेदोपदेश पूर्वेषामपि गुरुएा। स एव पूर्वेषामपि गुरु काले-नानवच्छेदात।

इस प्रकार परमात्मा 'गुरूणा' गुरु 'ठहरा।

स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने प्रपने प्रन्य बेदमीमाशा में बड़ा पुन्दर तर्क दिया है। वे लिखते हैं कि जितनी भी मानव क्रिमिया हैं उनके कर्ता का स्मर्ग्ण किसी न किसी रूप में होता है परन्तु वेद के कर्ता का नहीं प्रत वेद निश्चित रूप से ईश्व-रीय हैं।

तन्त्र वार्तिक की व्याख्या में भावार्य कुमारिल सह ने कहा है—

कर्त्त् स्मरणामानादपौरुषेया वेदा ।

इस प्रकार प्रत्येक कल्प के आदि में जब सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है तब—

सूर्याचन्द्रमसी घाता यथा पूर्वम-कल्पमयत्। ऋ १०।१९०।३

और इस प्रकार सपने भनन्त ज्ञान बल से परमात्मा ने ऋत भीय सस्य को जन्म दिया—

ऋतञ्च सत्यञ्चामीद्वासपसी-ऽध्यजायतः।

मनादिनिधना निस्या

वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा। धादौ वेदमयी दिव्या

शायदभया।दच्या यत सर्वा प्रवृत्तयः॥

सृष्टि के ग्रांषि में स्वयम्मू पर-मातमा से ऐसी दिस्स बारागे (बर) का प्रादुर्शन हुमा जो नित्य है भीर जिससे ससार की प्रवृत्तियां चलीं। सायगाचार्य के निम्न इसीक के बनु-सार मी बेद ईस्वर द्वारा निश्वसित बान है। यस्य निष्वसित वेदा,

यो वेदेम्बोऽलिल जनत् । विकेश समस्र काले बौर ऋग्वेद के मन्त्र १०।६०।६ के भनुसार बेद की उत्पत्ति— तस्माद यज्ञात सर्वहत,

ऋच सामानि अक्रिरे।

खन्दांसि वशिरे

तस्माद यजुस्तस्मादजायत् ॥

सत जिसका नाश कभी नहीं होता, चित जो सदा ज्ञान स्वरूप है. धानन्द जो सदा सुख स्वरूप है। उसी परम ब्रह्म परमातमा से (ऋच) ऋग्वेद (यजु ) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद भौर (खन्दांसि) इस शब्द से श्यवंदेद भी, वे चारों देद उत्पन्न हए। इस मन्त्र में 'जिज्ञरे' भीर 'अजायत' इन दोनों क्रियाधों के भविक होने से वेद भनेक विद्याओं से युक्त हैं, ऐसा जाना जाता है। इसी प्रकार 'तस्मात' इम से यह निश्चय होता है कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए किसी मनुष्य से नहीं। 'छन्दांसि' शब्द से अथर्ववेद को ग्रहण करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदा-दिमा यसमिका में ऐसा धर्च किया

"नेव की किसी व्याख्या की सफलता या विकलता इस बात पर निर्मार करती है कि उसमें वैदिक वर्ष का केन्द्रीय विचार क्या याना गया है और स्वय वेद की प्राप्ती प्रत्य. साक्षी उस विचार की कहां तक पुष्टि करती है।" इस विचय में महर्षि दयानय का विष्टकोरा विल्कुल स्पष्ट है और उसका प्राथार श्रव्यक्तन है।

—श्री झरविन्द 'महर्षि दयानन्द भौर वेद'

वेद के [एक अन्य मन्त्र से भी स्पष्ट होता है कि वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईदवर करता है। कहा है---

"अयर्बवेद मेरे गुल के समतुल्य, सामवंद लोगों के समान, यजुबंद हृदय के समान और ऋत्येद प्राण् के नाई है। इस मन्त्र में सारी सुव्दिट को बारण करने वाले परमारमा को वेद की बाणों में 'स्कम्म' कहा है। स्कम्म त बूहि कतम स्विवेद सु। - अयर्बवेद १०।७।२०

भीर देखिए सतपत्र बाह्यसा के भनुसार---

एव वा घरे महतो सूतस्य निः-व्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽसर्वाज्जिरसः।

—श• सा• १०।५।४।१०

यहां भी वेदों को ईश्वर से नि:-श्वसित कहा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि देशों का कर्ता परमेश्वर को खोड़कर शुक्र कोर्ट कर्ता । जन्म केर सम्बेजन देख के विभिन्न भागों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की भीग समय-समय पर उठली रही है। भारत विभाजन के तत्काल बाव उत्तर प्रदेख में यह स्वर उठा । राजिंब पुस्थोत्तम दास टडन उस समय राज्य विधान सभा के प्रध्यक्ष के। उन्होंने स्मष्ट कह दिया — 'डाज्य के। एकमाल भाषा हिन्दी है, प्रस्त के समस्त कार्य हिन्दी में ही होंगे।'

टंडन जो तेजस्वी राष्ट्र मक्त है। उन्होंने सदन में घोषणा को सनमन सबा चार सी सदस्य है, उनमें से एक भी सदस्य मेरे विश्व होगा, तो सैं उसी दिन मध्यक्ष पद से स्थान पब दे दूगा।' फिर किसी ने उर्द की माग नहीं उठाई।

भारत विभाजन के बाब ताजा बे। उहुँ की माग उन पर नमक के समान थी। यत किमी को उससे सहानुषूति नहीं थी। साब ही माग उछै।ने बाले भी धारम ग्लानि के खिकार थे, क्योंकि के जानते थे कि उर्दू के नाम पर पाकिस्तान बनवा केने के बाद खेब भारत में उद्दू के लिए कोई स्थान नहीं है। न ही कोई स्वाभिमानी सरकार स्ते कभी स्वी-कार कर नकती है।

फिर भी गुप्त प्रयास जारा रहे, क्योंकि तत्कालीन प्रधान मन्सी जवाहर लाल नेहरू मुसलमानों का प्रावव्यक्ता से प्रकित प्रसारत करने के किए विक्यात से । वे उर्दू के विद्यान
नहीं से, फिर भी बोल चाल में
(जान बूमकर) उर्दू खब्दों का बहुलता के प्रयोग करते से । मले हो ।
जोंबे कों न प्रतीत हो । मुस्लिम
करका क्योंग करते हो । मुस्लिम
करका क्योंग उर्दू भाषा उन्हें सव्यत
प्रसा की । उन्होंने स्पष्ट कहा था—
'वे किला को दृष्टि से प्रसंज है,
सांस्कृतिक दृष्टि से मुसलमान है
कौर प्राविस्मिक दुष्टनावश हिन्दू
है।'

कहते हैं कि काश्रेस कार्य समिति
में किसी प्रस्ताव पर जो गार बहुस
कल रही थी। नेहरू जी पर कुस कहते ती बन नहीं पड़ता था, बस बार-बार यहां दोहरा रहे थे कि इसे राष्ट्रीय मुसलमान पसन्य नहीं करेंगे। इस पर सर्वावा करना भाई पटेल ने हैं तरे हुए कहा था— मुक्ते ती मुसलमानों में कोई राष्ट्रीय दिखाई देता नहीं। हो, एक ही राष्ट्रीय मुसलमाना है, जिसका नाम अवाहर लांल नहरू है।

बात हुँबी की थी, हँसी में टल कई। वेश का सरकाशीन नातावरण देशा था कि चाहकर वी नेहरू

## उर्दूं की मांग का विरोध और आर्यसमाज

-सन्तोष 'कण्व'

जी उर्जू को दितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग का समर्थन नहीं कर सके। एक सार्वेजनिक समा में उक्त कहाना पढा चा—'हम उर्जू की तस्की चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का कर्ता हाना हो जाएगा और बहुत तरह की प्रवचन सार्वेगी।

नेहरू जो उद्दें को दूसरी माथा बनाने का निरोध मात्र आधिक दियति के कारण कर रहे थे। दूसरे वे यह त्री जानते थे कि उद्दें की परा-प्रचागत लिपि कार्यालयों के काम-कांज में जटिसताएँ हो उत्पन्न करेगी।

स्रायसमाज की दृष्टि में यह कारए गौए हैं। प्रश्न राष्ट्र के हित का है। खर्चा दुगना हो या चौगुना, राष्ट्रीय एकता और सवण्डता के लिए किया जाएगा। हमारा विरोध कुछ कट्ट सत्यों पर ग्राचारित है, जिनकी चर्चा सांगे करगे।

उदूँ वाले इस स्थिति का लाभ उठाते हुए समय-समय पर अपनी सांग मुक्तर करते गए। १५ अपनर १९४७ को अनेक ज्वलन्त समस्याएँ कुल हो बकती थी और सम्पूर्ण राष्ट्र उनका एक स्वर से समर्थन करने को तरपर वा, परन्तु नेहरू जी की हठवर्षी के कारण ऐसा नहीं ही सका। आगे ज्वलकर देस के विजिन्न आगो में असा मस्या उठ सडी हहै।

विश्वस्वना देखिए कि भारत विज्ञाजन के प्रथम वशक में ही 'राज्य पुनर्गठन आयोग (१९६६)' के मार्थ के आयाद पर राज्यों के पुनर्गठन की समुज्ञांका कर दी। आर्थेतमाज कभी भी इसका पक्षचर नहीं रहा। आज भी नहीं है। हम भाषा, भाव भीर भावना में ऐक्य के पक्षचर है। राष्ट्रीय क्कता जीर करवह मा

उपर्युक्त बायोग ने राजमाषा के सम्बन्ध में निम्न सनुशंसा की बी---

'बिस राज्य में ७० प्रतिश्वत से प्रविक एक शावामी समूह हो उस राज्य की एक मानी तथा उसके

मतिरिक्त ३० प्रतिशत से प्रधिक बोलने वाला कोई ग्रन्य भाषा-ममूह हो, उस राज्य को द्विभाषी घोषित किया जा सकता है।

'जिन जिलों में राज्य की घोषित राजभाषा के मतिरिक्त ७० प्रतिशत से प्रधिक बोलने वाना कोई प्रन्य भाषा समृह हो तो उस भाषा को उस जिला विशेष में सरकारी का काज के लिए मतिरिक्त राजमाथा घोषित किया जा सकता है।'

सन् १६७५ में श्री इन्द्र कुमार गुजराल की शब्दश्वता मे Commithee for promotion of ाdu गठित की गई। उस ने भी शायोग की उपगुक्त भनुशक्षा को दोहरा दिया।

बिहार और उत्तर प्रदेश को जनगरणा से मुस्तक्यानों की सक्या है। प्रति ते बहुत कम है। दूसरे सभी मुस्तमान उर्दू आधी नहीं हैं। इस प्राथार पब कुछ लोग उर्दू की दितीय राजभाषा नगाए जाने की विदाय कर रहे हैं। इस सत्तारू जोने की विदाय कर रहे हैं। इसके अतिरास्त भारतीय जनता पार्टी, लोक राज्या स्वाधी परिचर, राष्ट्रीय स्वय सेवक मन, विश्व हिन्दू परिचर् जैसे साठन भी इसी एक में हैं। उर्दू की सबैधानिकता का मामना सर्वोच्या नामना सर्वाच्या नामना सर्वोच्या नामना सर्वोच्या नामना सर्वोच्या नामना सर्वाच्या नामना सर्वोच्या नामना सर्वोच्या नामना सर्वाच्या नामना स्वाच्या नामना सर्वाच्या नामना सर्वाच्या नामना सर्

परन्तु धार्यसमाज का पक्ष इससे जिल्ल है। जो लोग उर्दू की मोग को धरवंधानिक बता रहे हैं, वे वरोग रूप से मुससमानों को कत्तर प्रवेश व बिहार ने धपनी धावारी शीझातिशीझ ३० प्रतिश्वत से अधिक करने को प्रेरित कर रहे हैं, जिससे इस्लामीकरए। की घांधी तेत हो गई है। वित वे धाने लक्ष्य में सफ्त हो जाते हैं, तो उर्दू की माग को धर्मवंबानिक बताने वालो पर बया तर्क बचेगा ? क्या उस समा उर्दू को दितीव राजधाया वार्षिया जाएगा?

उर्दूकी मांग के साथ उसकी मानसिकता जुडी है। जिल्ला मौर जुनके साथियों ने कहा का कि जनकी

(मुमतमानों को) माथा उद्ग है। वे हिन्सी वानों के माथ नहीं रह मकते। उन्हें सक्त जगह चाहिए। इसी जिद के कारएा भारत्न हुटा। पाकिस्तान बना। बिनको उद्ग राजभाषा बनानी थो, वे स्वेच्छा मे पाकिस्तान गए। इसने किसो को रोका नहीं। घव इस विछत भारत्न मे, घथवा उसके किसो राज्य विशेष मे उद्ग को दिलीय राजभाषा बनाए जाने की जिद करना कथा अनुचिन एव राष्ट्र-डोह नहीं है? यदि ऐसा ही करना था, तो विभाजन हा नहीं किया जाता। दोनों बाने एक साथ नहीं बल सकतीं।

भारत-विभाजन के समय उर्दू में काम करने के प्रत्याशी लागों की सक्या जाज को घरेखा कही प्रीषक थी। उन्हें हिन्दों में काम करना मुस्कित था।जब उस समय उर्दू को दिनोय राज भाषा बनाने को प्रावश्य-कता नहीं परी नो प्राज कीन सा पहाड देट वना?

उर्दू के पक्षघरों का कहना है कि जुर्दू भी मारत की भाषा है। भारत में ही पैदा हुई, फली-फुली और विकसित हुई। हिन्दी राष्ट्र-भाषा है। जुर्दू उसका धिकार नहीं खीनती।हिन्दी पटरानी है, तो जुर्दू को खोटी रानी बनाकर रखाली।

हमारा मत इससे फिन्न है। उर्दू भारत की भाषा नहीं है। होती तो पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा नहीं बनती। किसी भा तीय भाषा को पाकिस्तान सपनी राष्ट्र भाषा कदापि नहीं बना सकता।

बहाँ पर स्वतन्त्रता है। अपनी उर्दू को रानी बनाग्रो या पटरानी, हमारे यहाँ सौतों का चलन नहीं है।

उद्दें पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा है। वहाँ की सरकारी भाषा है। उसको यह दर्जा देने के लिए ही हमने भपनी मातृ भूमि का विभाजन स्वीकार किया था। कलेजे पर पत्थर रसा वा। माताशो ने लास स्रोए थे बहुनों का सुहाग लुटा था। किसी का माई बिछडा था, तो किसी की बहुन लुटी थी। बाप की लाठी दूटी थी, किसी का सहारा छूटा था। नृशायता के उस ताण्डव नृत्य में बरती कापी थी, ग्राकाश रोया था. मानवता तडपी थी, किमके लिए? उर्द् के लिए। उर्द् वालों की जिद के लिए। जिन्ना के पागलपन के लिए। भव किम बात का हिस्सा मागा जा रहा है ? इस बचे हुए भारत में उर्द के लिए कहाँ जगह है ? क्या वह कुर्वानी कम थी ? क्या वह खून पानी





## उपनिषत् कथा-माला-१७

## उपासना

#### लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

मनुष्य विनाग्रहकार के रहे। सत्कर्मके करने से मन्द्य को जो अभिमान माहोता है उसका नाम ब्रहकार है -सस्कृत भाषा में इसे बहता (ब्रह्माव) ब्रथवा मम-ता कहा है। कोई भी सत्कर्म ग्रहकार के साथ मिलकर अपने असली स्व रूप मे नही रहना परन्तु वह किया हमाकम न किए के तुल्य हो जाता है। विद्वानी ने इस दोष की दूर करने के लिए वडे मुन्दर उपवेश दिये हैं - उनका वचन है कि यदि बाए हाथ से कोई शुभ काम किया जावे तो उसका ज्ञान दाए हाद्य को भी न हो। यदि मस्तिष्क किसी के साथ भला करै तो मन इससे देखबर रहे-से वचन मन्द्य को इस बुरी **ब्रा**दन (ब्रहकार) को **खुराने के** लिए काफी हैं। सनुष्य से यदि कोई काम भच्छाही जाता है तो वह अपनी प्रशसासूनने के लिए हर भोर कान लगाए रखता है यदि कोई उसकी बडाई न करेतो फिर विवश होकर लोगो के सामने अपनी प्रशसा स्वय हो करने लग जाता है। यह एक ऐसा कडा बन्धन है, ऐसी कडी जजीर है कि मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बटा कठिन है। भ्रपनी प्रशसा चाहना अपने आप मे एक वडा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसा-यन भो निष्फल हो जाता है।

बीज ग्रपने की छुपाता है तो वक्ष पैदा है ग्रीन जो बीज बाहर पड़ा रहता है वह बीज या तो पद-दलित हो जाता है या उसे पश्-पक्षी सा जाते हैं। वसकी सस्कृत भाषा मे निकाम कर्म कहा गया है। प्रमु-भक्तो के मन में इसे नाश होने वाला लिखा है। जैसे घान के ऊपर के छिल के को अपनगक र देने में फिर वह लाने के काम तो ग्राना है परन्त्र भागे उत्पत्ति करने के योग्य रहीं रहता। सस्य दर्भ के साथ प्रशसा का लगा हुमा छिलका मनुष्य को ससार मे बार बार लाने का कारए। बनता ही रहता है, इसको दूर कर देने से नाशवान नाश हो जाता है और शेष ससार मे रह जाते हैं।

प्रमुभक्त इस बात को जानकर कमें करते हैं। और सत्य पथ में जा निज्जों हैं। और फिर साक्षात्कार

मे जाकर बाराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशसा बाप करना भारी भूल है। लिखा है-

> तारीक अपनी आप मत करना कभी तू भूल कर। ऐव अपना देख ऐवे गैर पर मत कर नजर।।

जो मनुष्य इस बुरी झन्दत वाला है वह अधरे मे है। उच्च से उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशसा करने से छोटा धौर पवित्र होने पर भी सोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है जो मनुष्य में पर दोष निकालने का स्वभाव बढाता है। भीर ससार मे उसको नाकारा बनाता है। स्वार्थी पुरुष धच्छे मनुष्यो के सग से घवराता है ग्रीर कोई विचार-शोल मनुष्य उसको समीप नही आने देता। स्वार्थता मत्य पच से हटाकर कुमार्गपर चलाती है और फिर दुल को समीप वाती है। बुद्धिमान् मनुष्य वह है जो भ्रपने दुर्गुगो पर व्यान रहे और दूसरे के दूर्ग्णो की पडताल न करे।

> स्वार्थ से काम सारे दुनिया मे हैं विगड जाते। गुप्त कहाँ वह भेद जिसे समा में हैं सुनाते॥

म्वार्थ से सब काम बिगड जाते हैं इससे चोट खाकर फिर वे बनने मे नही बाते। जैसे किसी भेद को जन साधारण की सभा में सुनाकर यह बताना कि यह गुप्त भेद है किसी से मन कहना इस वचन से लोगों को हसाना भीर भपने को मूर्ख बनाना है। जो मनुष्य स्वार्थी हो जाता है वह स्वयं भपने भाप की घोला देता है भीर वह शुभ भाच-रगाको बेचकर दुराचरगाको मील लेता है। इससे सुल-दुल में सममाव बना रहता है भीर पद-पद पर कब्ट भाते हैं। यह स्वार्थ एक बला है जो शरारत को जगाती है जो कभी दूर नही होती। स्वार्थता एक बारिमक व्याधि है जिसके साथ प्रसत्य बोलना भी शामिल है। स्वार्थ को पूरा करने के लिए भूठ और घोखा देना मी उसका स्वभाव हो जाता है-

हुवा दिल जो बालूदा हिरसा हवा से, नहीं चमकता फिर वह नूरेखुदा से।

प्रमु से मिलाप तो मन्ध्य को प्राप्त ही है भीर यह सदा उसके समीप है। प्राप्य बस्तु ध्यापक से मिन्न नहीं हो सकती। केन्द्र भीर वेरे का सम्बन्ध सदा से हैं। अनुवित सासारिक विचार मनुष्य के वित्त को हर समय परेशान करके उसकी पवित्रता को तुष्णा से विगाह देते हैं। इसलिए बुरे काम की जिम्मे-दारी से बचने के लिए जीवन के कार्य क्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना भावस्थक है। मन की शुद्धता से जो पुरुष प्रमुके दर्शन की चेष्टा करता है। वह भूल पर है। जैसे 'र' के ग्रागे व'न लिखा जाये तब तक स नही हो सकता बस, जब तक मन श्रद्ध न हो प्रमु प्राप्ति नहीं होती। फिर अन्त करता प्रकाशित होकर प्रमु-दर्शन से स्वयमेव बाल्लादित ही जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रमुप्राप्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार की चेक्टा करता है वह सब व्यर्ष जाती है।

मत उपासना की विधि विश्त की जवलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना देती है। यदि मनुष्य इस जवस्या को ठीक बना ले, तो ज्ञान पच की ओर उसका पय बत सकता है इसके बिना नहीं। इसिए, प्रमुभकतो के सकत हैं।

दिलबर तेरा तेरे भागे खडा है। मगर नुक्स तेरी नजर मे पडा है॥

जिस की खेज मैं लोग हैरान व परेशान है वह तो सामने लडा है। परम्यु इसको इन बाहरी श्रांको से देखना चाहते हैं। उनकी घाँसी से जो वस्तुए दीखती हैं, वे सब महसूस की जाती हैं, परन्तु परमारमा समो से परे है। इसलिए वह किसी भी धग से माजुम नहीं हो सकता। ठीक बस्तिष्क का दूसरा नाम 'क्रान' है। प्रमु-भक्त अपने अपने अनुसन से उसको देख सकते है। परन्तु उसको ससार के कूठे प्रेम ने बुरा बना दिया है, अब तक यह बुराई दूर न की बाय तब तक उसका दर्शन कठिन है। जैसे कि घांस से सुनने का भीर कान से बेखने का कार्य कठिम है।

इसलिए प्रभुमक्त मन की शुद्धि के लिए ठीक यरन करता है। उन हो पुस्तकों का पठन पाठन करता है किममें यह विषय हो। उन प्रमुक्ती की सगति में जाना पतन्य करता है, जो उसमें दख हैं। ससार का कोई भी ऐसा कार्य जो इस मार्ग में कका-नट डाले, नह नहीं करता है। यह इह उपाय है जिससे लोक श्रीर पर-लोक दोनों सुचर जाते हैं।

> अब शत सहस्र इच्छाओं से सब हृदय कलुषित होते। फिरकहा प्रमुकी ज्योति से अन्तर मालोकित होते?

इच्छाभी का बढते जाना हृदय में एकाग्रता उत्पन्न नहीं होने देता। भभिलावा हृदय रूपी सागर मे एक सहर सी उठाती है, फिर उससे दूसरी तीसरी बहर स्वयमेव बनती बाती है—इस भवस्या में हृदय में मैल बढता जाता है। यह बार बार जीवन भौर मृत्युकी भाफत को साथ लाती है, इससे पीखा खुडाना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। परन्तु हरएक विचार को यहा पहुँच नही, अनुचित इच्छा से हृदय की शुद्धता नहीं, दोष-युक्त स्वभाव को दूर करने वाली पुच्य कमाई नहीं। परन्तु जो अचा-नक के प्रेमी हैं जो इस गृढ विषय को हल करने के योग्य हैं, वे सदा कम होते हैं, हर कोई इस पण का पणिक नहीं। जिसके पूर्व शुभ कर्म सहायक हों, वर्तमान का पुरुवार्ष ठीक प्रकार से हो भीर प्रमुकी कृपा सहायता हो, वह इस मार्ग पर चल सकता है भीर वह निवचय मान्यवान् है, जिस को योग्य पद्म प्रदर्शक मिले। परन्तु बाजकल योगियो की, गुरुवों की भीर गुरु-मर्जी की वटी ही चरचा हो रही है, इसके पीछे ससाद की एक भारी सस्या अपनी सुध-बुध हो रही है। बढ़ी विचित्र बात है कि जो चीज हर श्रवस्था में कम होनी पाहिए, जिसकी कमी ही सुन्दरता की बोतक है, जिसकी समिकता से प्रकृति भी हरती है, मनुख्य अपनी अधूरी चेच्टा से यदि इसी घोर प्रयत्नश्रील हो तो सिवा बूरे परिसाम के और क्या हो सकता है ? प्रत्येक सम्प्रदायवालों ने धपने शिक्ष वर्ष को बढाना भीर उन्हें स्पने सिद्धान्त का मन्द्र-

#### उपासना

विश्वासी बनाना ही अपना विशेष कर्तव्य जान सिवा है। आरत वर्ष इस बात का दीवाना है, इसीलिए तो दपको न कोई सबे होने का स्थान है, और न कोई ठहाने का ठिकाना। कितनी भूल है, कितना अन्य-विश्वास है कि गृश को प्रशोस्तर से ठेंचा स्थान दिया जाए। इससे प्रकट है कि यह वेस स्था पार्ग पर प्रास्थ नहीं। ऐभी अनुचित चेच्टा तो हुदय को खुढता प्रकट नहीं करती, परन्तु भूल को जतानी है। विद्वानो का तो क्यन है—

विन्दगीको रास्तीसे तूगुजार। कर्मफलसेफिररहेगासुबकसार॥

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को सत्य-मार्ग पर ही चल कर व्यतीत करे और बनी हुई बात को अपने हाथ से न बिगाडे। यह निबस कर्म के फल से मुक्त होने का है। मनुष्य बुरे कार्य के बोक्त से हल्का हो बाता है। प्रन्त करण की प्रवृत्ति विवव-प्रम से मुक जाती है, फिर शरकर्मों से मेल व वुष्कर्मों से वैर हो भाता है। सुख मे उसी प्रमु का धन्य-बाद भौर दूल मे शान्ति मनुभव करने का स्वभाव हो जाता है। फिर जीवन में न तो अधिक मानन्द भी र न मृत्यु से अधिक घवराहट होती है। हुर एक को सुस्री देलकर खुझ होना भौर दूल में हाय बटाना उसका स्वभाव हो जाता है। इन नियमो के पालन करने से मनुष्य मे मनुष्यता बाजाती है, यदि ऐसा न हो तो शोभ-लालन मादि के प्रभाव से हृदय धवराता है। मनुष्य को सासारिक कारोबार में सच्चा रहना चाहिए भीर कभी भी मूल से मूठ या कटु अवन न कहुना चाहिए। व्यवहार धौर ब्यापार मे नेकी से काम करना धौर धोला-देही से डरना चाहिए, इससे मान-मर्यादा भीर गुम कमाई श्राप्त होती है।

निष्वय से भीर विचारशील की सगति से भारता समर हो जाता है। यह विचार बहुत भण्डा है। विसके अनुवार निष्य में कर दे परमात्मा का मिलाप होता है। कामवासना की प्रधिकता से दरना, यहस्य के निष्यमें को जली प्रकार से पालना, लोग भीर इच्छाओं से पराचित न होलए हस पर विजय पाना, यह मनुव्य का पूरा करंग्य है। इस क्रियम को यूरा करते रहना मनुव्य की यूरा करते रहना मनुव्य की यूरा करते रहना मनुव्य की वूरा करते हमा की दरा है। इस क्रम्म की यूरा करते रहना मनुव्य की वूरी में व्यक्ति में स्वार है। इस क्रम्म के व्यक्ति से व्यक्ति से व्यक्ति से व्यक्ति से स्वार है।

है। जो इस पर धाचरण करता है. वह ही पूरा मनुष्य है। जो इन नियमो का पालन नही करता वह चाहे किसी का गुरु हो या शिष्य, वह गवार है। जाच करने से यह प्रमाशित हो चुका है कि जब तक मन धन्चित इच्छाओं से बरी न हो तब तक अलाई की लता कैसे हरी हो ? वह मनुष्य इस पष में कैसे गति करेगा, जिसके नेत्रों में मनध्यपूजा, की घूल पडी हो। मनुष्य को परमे-श्वर से व्यक्तिक मानना भलाई को बेचकर बराई को मील लेना है जो ऐसा करते हैं वह सच्चाई से वबराते हैं, भीर कुठ के समीप होते जाते हैं। गुरु तो अपनी चतुरता से माल उडाने लगे भीर शिष्य जन बोबे मे भाने लगे। कैसी बात है जिसका न मोल है भीर न पता है केवल वहम-परस्ती है, जिससे मनुष्य समाज पर बहा ही बाधात है। हा, यह सत्य है, इस काम को वही कर सकता है जो ससार को पढाने धौर दनिया से कमाने की शक्ल रखता हो। हर एक इस विद्या का प्रवीण नही इस मनुष्य पूजा से तो यह प्रकट है-

मूलक रहमने खुदा को कैसा प्रधा किया। प्रपने घर के बीच में प्राप ही को गुम किया॥

मेरे मित्र । मनुष्य-पूजा प्रमु-पुजा के उच्च नियम को मनुष्य के दिलो से दूर हटाकर उनको कगाल बना देती है। यह ऐसी मूल है जैसे कि जिल्ला भीरकान रखने वाला खद को गंगा धीर बहरा बना दे या अपने ही घर में घर स्वामी गुम हो बाए। ऐसी बाती का बनाना केवल भ्रपनी भूल पर लोगों को हँसाना है। जो जिसके योग्य हो उसको वैसा समकता जिसको मनोवृत्ति ससार के उपकार मे हो उसका मान करना उसके उपकार को न मुलना भला ही है, मगर उसकी भूल जाना चाहिए। यह जो कुछ कहा गया है उपासना को सीढी के विपरीन होने से कहा है। यह तो मनुष्य के स्वमाव को शुभ बनाकर परमात्मा की भोर, को सर्व मलाइयो का केन्द्र है, ले वाती है। इसके बिना प्राप्त किए साक्षात्कार की सीढी किसी को नहीं मिलती है। उपासना की रीति ब्रे रास्ते पर चलने वाले भूले दिल की को इसका क्षत्र और बुराई चाहने वाला है, बचाती है। इसके सहारे ही प्रगर मनुष्य में बनावट का स्व-मान न हो, दिल पर काबू हो जाता है। इस इसारे पर दुनिया के सब विद्वान सहनत है, यही एक बात है

कि जिस पर चलने से मनुष्य ससार के बचन से मुक्त होकर मुक्ति की प्राप्त करके स्वा के लिए प्रसन्तिचित्त हो चाता है। इस काम के करने को इस नियम पर कटिबढ़ होना चाहिए जिससे माने माने माराम की शक्ति बढ़ती चाये, और सासारिक मोह के जजाल से कमजोरी सामने न माबे। यह यह है—

> मास्त कान मृह बन्द कर नाम निरंजन ले। अन्दर के पट तब खुलें बाहर के पट दे॥

देखने के योग्य वस्तु को देखना भीर न देखने के योग्य को न देखना र्माल को बन्द करना है। सूनने के योग्य शब्दो को सुनना भीर न सुनने के योग्य शब्दों को न सुननाकान को बन्द करना है। फिजूल बातो से से जिल्ला को रोकना भीर श्रम भीर हित की बातो का करना जिल्ला को बन्द करना है। इस अमल के दढ हो जाने से प्रमुकी सर्व है कि सगर धारम साक्षातकार भीर प्रमु-दर्शन न हो तो मुक्ते कठा समक्ती मेरा उपहास करो। यह श्रमल बार बार परमाहमा के गुणो के प्रकट होने मे उसके प्यार में बड़ा ही सहायक है। मगर भाज कल इस पर अपल गलत तरीके से हो रहा है। घण्टा दो घण्टा के लिए भास कान मूस को बन्द करना ही शुभ काम मान लिया गया है। यह किसी सीमातक साधन के रूप में ठीक तो हो सकता है भगर इससे ठीक रास्ता

खल जाय, मगर यह नहीं होता है। श्रसली नियम जिसमे भूल नहीं है, वह ऊपर लिखा गया है कि आह कान और जिल्ला का ठीक रास्ता में जाना सिद्धि का कारण तो हो सकता है इसके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं। भगो के द्वारा बाहरी धूल जो दनियादी असर लेकर अत -करएा मे जाम होता है वही उसके जीवन को बर्बाट करने में बन एकह लेता है। इन इन्द्रियो भीर संस्कारो के दोष से दूषित होकर मनुष्य जानता हुमान जानने और सुनता हुमान सूनने वालो के बराबर होता है। दनिया में देशा जाता है, सही है गलत नहीं हो सकता है। दिखावटी धमल करने वाले जो भीतरी शक्ति को नही सभालते हैं उनका स्वभाव ज्यादातर कठोर देखा गया है और बाहरी झाडम्बर मे फँसकर कुछ श्रमिमान ग्रीर कुछ ग्रपने बड्यान की स्तुति सदा करते ही रहते हैं, इस लिए सारी बनावट मतलब निकालने के लिए प्रमासित होती है और जो भले लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं वह किंधर से भाते हैं भीर कहा को जाते हैं। कुछ पता नहीं चलता है। वह ससार को कहा बढाते हैं, फरक है दूनिया के चाहने वालो का, इस रास्ते में कदम नहीं बढता है भीर भगर दिखावट के लिए चले तो कदम कदम पर गिर पडता है, इसलिए उपासना मनुष्य को भन्दर की सफाई को ठीक करके ग्रसली जगह तक पहुचाती भीर परमात्मा से मिलाती है।

श्रार्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली के शताब्दी-समारोह के उपलक्ष्य मे

## निबन्ध-प्रतियोगिता

विषय 'वेद सब सत्य विद्यामी का पूस्तक है''।

पुरस्कार— प्रथम १००० रुपये द्वितीय ७५० रुपये तृतीय ५०० रुपये

- प्रतियोगी की योग्यता न्यून तम शास्त्री या समकक्ष होनी चाहिए।
- ☐ जिल्ला कुलस्केप साइज के २० पृष्टों में सुलिखित या टकित अक्षरों
- होना चाहिए।

  □ निबन्ध की माथा हिन्नी होगी।
- ा तीन प्रसिद्ध प्रार्थ विद्वानी द्वारा निर्श्य किया जायेगा, जो सर्वेमान्य होगा।
- निबन्ध प्राप्ति की मन्तिम तिबि १५ नवस्वर १६८५ है।
- पुरस्कृत विद्वानो को श्रताब्दी समारोह के धवसर पर ससम्मानित किया जावेगा।

सयोजक— मूलचन्द गुप्त मन्त्री

दूरमाच . २३७४४०

श्रार्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली-६

# खन की नदियों की चेतावनी का उत्तर

धकाली समस्या से अभी हम सुलम ही नहीं पाये थे कि एक और दस्तक दरवाजे तक भा पहची। इस्लामियत का शैतान बौखला उठा। श्री जगन्नाथ शास्त्री द्वारा एक खबर १५ सितम्बर दिल्ली से प्रेषित होकर १६ सितम्बर को "दैनिक" भास्कर में खपी। शोर्षक या. खन की नदियो की चेतावनी । इस खबर से देश के बहु-सख्यक समुदाय पर चोट तो है ही, साथ हो देश में अशांति फैला कर एक नये विभाजन की ही प्रक्रिया है। इसका हर देशभक्त को डटकर विरोध करना चाहिए, मौलाना उबे-दल्ला खान जोश ने भाकर होस को मुल रहे हैं। उत्तर में निवेदन है कि भापके ही घर की भौरते मुस्लिम पर्सनल लॉ से तंग शाकर न्यायालय का दरवाचा खटखटाती है। न्याया-

के अच्छे अच्छे पढे लिखे लोग, भी भव वैदिक धर्म में दीक्षित होकर गायत्री मत्र पढने लगे हैं। प्रापकी मदीना यूनिवसिटी,के वाइस चांसलर घादरणीय भाई धमरेश जी भीर छतारी नवाब के पौत्र डा॰ भाई भानद सुमन जी से मिलना चाहिए। मौलाना उबेदल्ला सान का कथन है कि मुसलमान ही भारत के सच्चे सपत है। हम मानते हैं कि भारत मे अनेक मुसलमान देशभक्त हुए हैं। मान्यवर रसलान, बादर के बोग्य मोहम्मद भनी साहब, समर शहीद सशकाक उल्ला, पूर्व राष्ट्रपति माननीय हा० जाकिर हुसैन एक फलरुहीन भली बहमद साहब भीर भूतपूर्व केन्द्रीय मत्री पादरणीय छागला जैसों पर हमें गर्व है। मौलाना खान जैसे पाकिस्तानी एजेट भौर जिल्ला जैसे

इससे प्रापकी यह कल्पना भी निरा-बार हो बाती है। मौलाना सान का कहना है कि जो कोई करान और हमारे पर्सनल लॉ की खेडेगा उसकी सफाई देने हम कोर्ट में नहीं जावेंगे। बल्कि उनकी ही सफाई कर देंगे। इससे यह स्पष्ट सिक्क हो जाता है कि मौलाना लान को भारतीय सविधान भीर न्यायालय में विश्वास नहीं है बापको तो बपनी पाकिस्तानी बस्ला-मिक तलवार में विश्वास है। पर मियां याद है ब्रापको, जिस पर्सनल लाँ की हिमायत करके भाग बौखला कर अनर्गल माष्ण कर रहे हैं उस लाँ के हिमायती पाकिस्तानी सरकार ने बगलादेख में पर्सनल लॉ की मानने वालों पर ही बार बार झस्याचार किये। उनकी रक्षा हिन्दू बीव वाहिनी ने ही को थी उस समय ग्राप

दौनों बच्चे जिन्दा दीवार में चूनका विये थे। जिसे हम प्रभी भूले नहीं हैं। बन्दा वैरागी एवं वीर हकीकत राय की निर्मम हत्वा हमें याद है जिसे हम भूले नही हैं। ऐसी दर्बनाक घटनाओं से इतिहास भरे पड़े हैं। जो मौलाना खान जैसे मतान्य लोगों के विनीने कुक्रत्य का परिग्णाम था। हम वसु-वैव कुटुम्कम् के मानने वाले लोग है। जियो और जीने दो में निस्वास करते हैं। इसलिए मौलाना सान से मन्रोम है कि पिछले इतिहास की न दोहराये । भमो क्षत्रपति शिवाजी एव महारासा प्रताप का रक्त मीजब है, सरे दरबार में तुम जैसे पाजियों का सिर काटनै वाले वाले बीच प्रमर-सिंह राठीर का रक्त मीजूद है। भारतीय हिन्दुस्व के रक्त की गर्माने की कोशिश्वन करो बरना परिस्तास

## खन की नदियों की चेतावनी

(जगन्नाव शास्त्री द्वारा)

दिल्ली को घनी मुस्लिम बस्तियो में नि सत्क वितरित हो रहे एक भाषरण के देव में चेतावनी दी गई है कि बदि करान या मुस्लिम परसनल ला बदलने के बारे में कोई कार्रवाई की गई तो खून की नदिया बह जायेगी ।

यह टेप आजमगढ मस्जिद के हमाम मौलाना उबेदल्ला खान के राजस्थान के पाली कस्बे में मिल्लत में दिये गये भाषरा का है।

इममे वावा किया गया है कि केवल मुसलमान ही भारत के सच्चे सपूत हैं। महात्मा गांधी या इन्दिरा गांधी की दत्या किसी मुमलमान ने नहीं की। यदि इदिरा गांधी जी के अपन-रक्षक मूसलमान होते तो यह दिन नहीं देखना पडता। भारत की गोप- नीय सचनाएँ विदेशों को बेचने वाला कुमार नारायए। भी मुसलमान नहीं

भाषण में कहा गया है कि यदि कुरान नहीं रहेगी तो फिर गीता भौर गुरु ग्रथ साहब भी नहीं रहेंगे। मुसलमान किसी कोर्ट में सफाई देने नही जाये में, लेकिन करान या पसं-नल ला के विलाफ कोर्ट मे जाने वाले को सफाई कर दी अधिगी।

मौलाना का कहना है कि करान पर पाबदी लगाने या पर्सनल लाँ बट-लने को कोशिश की गई तो हो सकता है कि इतिहास खुद को दोहराये एव बाला साहब देवरस, अटल बिहारी वाजपेयी और राजीव गांधी को कलमा पढना पड जाये।

भाषए। में कहा गया है कि मुसल-भान ही सच्चे वफादार हैं। इसीलिये

भारत की घरती मा मुसलमानों को मरने के बाद भी भपने सीने में जगह देती है। मुसलमान कब्रिस्तान तक मे सच्वा हिन्दुस्तानी है, जब कि ग्रच्छे भच्छे भारत रत्न जीते जी हिंदुस्तानी रहे पर मरने के बाद पाकिस्तानी बन गये क्योकि उनकी राख हवा में विसेर दी जाती है, जो बाकर पाकि-स्तान में थमती है।

मौलाना का कहता है कि पाकि-स्तान बनाने में जितना जिल्ला का हाथ है, उतना ही सरदार पटेल का। जितना मुसलमानों का दोष है,उतना ही भारत के गैर मुसलमानों का। जिन्होंने पाकिस्तान मागा, बले गये। हम किसी को दया पर जिन्दा नहीं हैं। भारत किसी के बाप की जागीर नहीं है ।

भाषरण में बार बार चेतावनी दी गई है कि वह जवान काट ली

जायेगी, वह साल सींच ली बायेगी. जो कुरान या पर्सनल ला के खिलाफ होगी।

यह अरोप भी नगाया गया है कि वगलादेशी मुनलमानी की बाड में बिहार में हजारो भारतीय मुमल-मानों के नाम वोटर लिस्ट से काट दिये गये।

भाषरण के टेप में कहा गया है कि भाज मुसलमानो का क्लेश्राम हो रहा है, अस्मते खूटी जा रही हैं और बच्चों को खत्म किया जा रहा है।

मजेदार वात यह है कि संकडों ऐसे टेप मुस्लिम बस्तियों में को बांडे एक सुने जा रहे हैं लेकिन केन्द्रीय गृह मन्त्रालय की कोई जानकारी नहीं है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने वह सहज मान से कहा "हाँ, उडती-उडती सबर सुनी है कि ऐसा कोई टेप है।"

(देनिक मास्कर)

सय का काम है, न्याय देना इसमें किसी वर्ग विशेष का दोष नहीं जो धाप इतना बौखला रहे हैं। माननीय बालासाहब देवरस श्री अटलविहारी बाजपेयी एव देश के प्रिय नेता मान-नीय श्री राजीव जी को कलमा पढ़ाने की बात भीर हमारी पवित्र गीता एव गुरु ग्रथ साहिब को मिटाने की बात, वास्तव में हिन्दू समुदाय पर एक गभीर चोट है। पर मैं समभता हुकि गीता और गुरु ग्रन्थ साहिब को मिटाने बाला भीर इन उच्च नेताओं को कलमा पढाने वाला शायद अभी पैदा नहीं हुआ। बाद रहे आपके उच्च काटि के मौलवी भीर इस्लाम

देशद्रोही लोग भारत माता के सच्चे सपूत नहीं हो सकते। जिन्होंने देश का बटवारा कराके भारत माता के तीन दुकडे करा दिये वर्ना आज भारत विश्व में सर्वशक्तिमान राष्ट होता। मौलाना लान का तक है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी का ग्रम रक्षक कोई मुसलमान होता तो उनकी हत्या नहीं होती। भापके इस कथन पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है, क्योंकि भारत में अग्रेजों का पैर जमाने वाला मीर जाफर क्या मुसलमाव नहीं था, फांसी वाली महारानी लक्सीबाई का तोपची जो अग्रेजो से मिल गया था, लुवा वक्त क्या मुसलमान नहीं था ह

कहा ये जब एक लाख पाकिस्तानी सलवार ने घुटने टेक दिये वे । यह है वापकी पाकिस्सानी ताकत जिसके स्वर में भाग बोल रहे हैं। मौलाना लान एक बात और फरमाते हैं जो अत्यन्त वसीर एवं विकारसीय है। बापका कहुना है कि हम पिछले इति-हास को बोहराय ने, किन्तु वह भागको मतान्य का भ्रम है। पिछला इति-हास हमें बाद है सगभग ७०० वर्ष पूर्व एक विदेशी सुटेरे मुहम्मद गक-नवी को सम्बाह प्रथ्वीराज चौहान ने १७ बार माफ किया वा । पर मौलाना साव के साका वे एक बाद थी नहीं बनका । युर योजिन्सविह के

भयकर होंगे। मौलाना खान की तरह ही बहुत से जलनाववादी एव वेसद्रोही लोग साम्प्रदायिक बहर मैलाकर हमारे देख की एकता एव वत्रवा के लिए सतरा वैवा कर रहे हैं। जामा मस्जिब के इमान अन्युल्ला बुलादी जो माजकल पाकिस्ताम गर्व हुए हैं। वह भी वहां भारत के मिलाफ विव वसन कर रहे हैं। भारत सर-कार को चाहिए कि वह मौसाना जैसे लोगों को अविलब गिरफ्तार कर बण्डित करें और देश हित की देखते हुए कमनीर को बारा ३७० बीझाति-बीम तंबाचा की बावे और तथी के (gie daf \$\$ 44) -

## उर्दूकी मांग" (प्रचर के बागे)

बा? धरे! उर्द् भीर उर्द् वार्लों की बिद के लिए हमने जो बलिदान दिया है, उसकी कोई मिसाल दे दो तो हम जाने।

उर्द भारत में पैदा हुई, ठीक है। रूरपतवार भी तो क्षेत मे पैदा होती है। उसे कोई समालकर नही रखता उर्दू भारतवासियों के सहयोग से उत्पन्न नहीं हुई थी। पविचम भौर मध्य एशिया से भाए लुटेरों ने जब यहां भपने राज्य स्थापित किये तो उनके समक्ष भाषा समस्या उत्पन्न हुई। उनकी सेवा में घरब. ईरान, टकीं, प्रफगानिस्तान बल्स बुसारा धादि कितने ही देशों के लोग थे। नगरी के बाहर इनकी छावनियाँ शी। सब ग्रपनी ग्रपनी भाषा बोलते के। कोई किसी की भाषा नहीं सम-ऋता था। बडी परेशानी होती थी। भीरे घीरे काम चलाक भाषा बनी। 'भाषा' तो नहीं 'बोली' ठीक रहेगा। धग्रेजों की छावनी से भी 'गोरासाही बोली' चली थी। उर्द लुटेरीं के लक्कर की भाषा है। उनकी, जिन्होंने भारतीय नारियों का सतीत्व खटा था. मन्दिरों को तोडा था. बच्चो को काटा या, पुस्तकों को जलाया चा, भारत को उजाडा या।

'लाइकर' को ख़ावनी या उर्दू भी कहते हैं। इसोलिए लुटेरों की ख़ावनी की बोली को 'लाइकर की बोली' या उर्दू की बोली कहा जाता था। कालान्तर में इस जीलो के लिए उर्दू क्षवद ही इक हो गया।

पाफिस्तान ने उर्जू को मो ही अपनी राष्ट्र आचा नहीं मान लिया। श्वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान के सोग स्वय को उन्हीं लुटेरों का बख्ज मानते हैं। आपत और आर-सीयों के प्रति उनकी खत्रुता का भी यही कारण है।

उर्द् की भोग उठाने वाले भार-तीय मुसलमानों के मन में सी यही भाव कठा हुआ है कि वे भी उन्हीं सुटेरों के क्षक हैं भारतवासियों के नहीं। यह हमारा नहीं वरन् उनका अपना विचार है।

मलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सस्यापक संयद महमद लौ लिखते

"भुतलमान इत देश के मूल निवासी नहीं हैं। वे भूतकाकीन विजेताओं के साव यहां भाए और कीरे बोरे यहां भाकर वस गए। भारतीय मुशलमान उस जाति के देशक हैं, जो एक समय इस देश पर पाज्य करती थी। तुम सोची कि तुम बीन हों? कुमारी कीम क्या है? सात सताब्दियों तक राज्य किया है। हमारी कीम उन लोगों के झून से वनी है, जिनसे न केवल मारत एशिया भीर यूरोप भी कापते वे। हमारी कीम ने प्रपत्ती तकवार से सम्पूर्ण भारत जीता था। मैं तुम्हें किर याद दिलाना वाहता हु कि तुमने विभिन्न कीमों पर राज्य किया है और कई मुल्लों को शताब्दियों तक प्रपने प्राध्य किया है। तुम जानते हो कि राज्य करना क्या होता है?

उर्दू की साग किसी देशसकत की मांग नहीं है। उर्दू वालों को देश की विन्ता भी नहीं है। उनके महान शायर इकवाल का कहना है—

> धगर मुल्क हाथों से जाता है, जाए। तू महकाम-ए-हक से न कर बेवफाई॥

भीर भहकाम -ए-हक, उन्हें 'दारुल हरव' को 'दारुल इस्लाम' बनाने की प्रेरणा देता है। वे हिन्दी को काफिरों की माया मानते हैं। इसीलिए उर्द् का फण्डा उठाए हुए हैं।

एफ॰के॰ दुर्रानी का निम्न उद्ध-रण पढिये और सोचिए —

'But India is a geographical unity, is also a fact, which the Muslims must never forget There is not an inch of the soil of India which our fathers did not once purchase with their b'ood. We can not

be false to the blood of our fathers India the whole of it is therefore of heritage and it must be reconquered for lelam. Our uitimate ideal should be the unification of India, spiritually as well as politically under the banner of Islam. The final political salvalion of India is not otherwise possible.

दुर्रानी साहब लिखते हैं — "लेकिन भारत की भौगोलिक

एकता भी एक तथ्य है जिसे मुसल-मानों को नहीं मलना चाहिए। भारत की एक इच भूमि भी ऐसी नहीं जिसे हमारे पूर्वजों ने प्रपना रक्त बहाकर न खरीदा हो। हम ग्रपने परसों के रक्त का ग्रपमान नहीं कर सकते। इस दिष्ट से सम्पूर्ण भारत ही हमारी बपौती है। इसे इस्लाम के लिए पून जीतना चाहिए। ग्रत इस्लाम के फण्डे के नीचे भारत का घाध्यात्मक भीर राजनीतिक एकी-करण करनाही हमारा अन्तिम उद्देश्य है। इसके बिना भारत की पूर्ण राजनीतिक मुक्ति बसम्भव है। सक्षेप में, उर्द की द्वितीय राज भाषा बनाने की माग एक गहरे वड-यन्त्र का हिस्सा है। प्रवन ३० प्रव्हाव से मिषक का नहीं है। उर्द के लिए पाकिस्तान बन चुका है। शेष भारत में अब उसका कोई मविष्य नहीं है। इस सत्य को स्वीकारने में किसी को किसी प्रकार की विप्रति नहीं होनी चाहिए, न हिन्दू को धीर न मुसल-मात को।

बदलवाने हैं भीर उचित स्थान पर फिट कराने हैं। इन घ्वनि विस्तारक यन्त्र से प्रतिदित एक घण्टा निष्य केसेटो द्वारा बार्ष वाणी का प्रसारण किया जाए तो समय की पुकार की पूर्ति से लाभ ही लाभ होगा। यह विषि बार्यसमाजों के दैनिक सत्सर्गों को भी सरस बनायगी।

लोग आर्थवाणी के गीतो को दिन भर गुनगुनाकर आत्मा में आनन्द लेते रहेंगे।

ग्रार्यसमाज के उद्देश्यपूर्णगीतों को हम बलात् क्षेत्र के लोगों के कानों में डालकर विचार पैदा कर सकेंगे।

श्रायंसमाज के केसेटो की माग बढ़ने से ग्रन्छे सन्छे सगीतक पैक्ष होने लगेगे श्रीर केसेट निर्माण कम्प-नियो का हॉसला बढ़ नये नये न केवल सामान्य केसेट हो तैयार करवे बपितु यह उद्योग वीडियो केसेट की श्रीर भी बढ़ जायेगा।

दिल्ली की धार्यसमाजों का एक यह सफल प्रयोग हरियाएगा, उत्तर प्रदेश राजस्थान धीर पजाव धादि प्रान्तों में फैल जायेगा धीर धार्य-समाज में नवजीवन क्याप्त हो जायेगा।

केसेटों द्वारा प्रचार को के वरा-बर होगा जबकि अजनोपदेखक को बुलाने पर काफी ब्यय एवं व्यवस्था कडनी होती है और फिर जनता सुनने प्राती नहीं।

कुछ लोग घपने निजी उत्साह से प्रपने वरों में प्रसारण करते हैं परन्तु यदि यह कार्यक्रम धार्मसमार्थी मी हो तो धार्मसमाज का स्रस्तित्व लोगों को वृष्टिगोचर होग।

> श्रो३म् प्रकाश गुप्त २३, वीर सावरकर ब्लाक शकरपुर मोड, दिल्ली-६२

## श्रार्व वाणी प्रसारण

निवेदन है दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाएग और पजाब भादि में आर्यसमाज के प्रचार का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह धार्यसमाज के मजनोपदेशक हैं परन्त समय की भावव्यकता बदलने के कारण न तो प्रभावशाली योग्य भजनोपदेशक ही रहे भीर न परम्प-रागत हारमोनियम ढोलक पर सुनने वाले श्रोता ही । उनके मन की रिकाने, मन में सकार पैदा करने का काम यन्त्रीकृत उन्नत साज के साथ दिल को छने वाले निर्जीव इसेटों के गोतों ने ले लिया है। धाकाशवासी इस मनोविज्ञान का परा लाभ चठा रहा है भीर कामू-कता प्रधान गीतों का प्रसारण कर बाताबरण को दुषित कर रहा है। रविवार को दूरवर्शन पर विसाई वाने वानी फिल्म के कारण बार्य-

Ann who when it wellow it .

की बैठकों समाप्त हो गई हैं।

मत प्राप इस मनीविकान का लाम प्रपने पुरुषार्थ से भी तथा प्रभा-बहाली व्यक्तियों के प्रभाव से प्राकाखनाएं। के माध्यम से उठाकर प्रार्थत्व के गीतों को वायुमण्डल मे प्रसारित कर प्रथवा करवा कर उद्देश्य प्राप्ति की धोर बढ सकते हैं।

भगने द्वारा किये पुरुवायं के लोन में भाप योजना बढ़ तरीके से दिस्त हो भार्यसमाजों में चारों तरफ सीतो के प्रसारण हेतु लाउडस्पीकर फिट कराके सेट प्लेयर यन्त्र द्वारा भार्य-समाज के केसेटों के प्रसारण से यह काम पूरा कर सकते हैं। बहुत से आर्यसमाजों के पास लाउडस्पीकर हूँ भी परन्तु न तो वह जिंवत स्थानों पर लगे हैं भीर न ही उनकी ज्वान सार्यसमाण मस्दिर से बाहर आशी है। सतः उनके यह लाउडस्पीकर

## की जसवन्त राय को पत्नी शोक

ष्रायंस्ताज राए॥ प्रताप बाता के प्रधान श्री जसवन्त राय साही की वर्मपत्नी का २६ सितम्बर को निधन हो गया। श्रीमती पुष्पा साही धार्य-समाज की कमंट कार्यकर्ती थीं। उन के देहावनान पर धार्यसमाज राए॥ प्रताप बाग की श्रीर से एक श्रद्धी-जलि सभा का सांगीजन किया गया, विसर्षे दिवचनत प्रात्मा के सद्गुएगों की स्मरण किया गया।

निवेदक जगवीश धार्य मन्त्री

## समाचार सन्देश

## दिल्ली त्रार्य वीर दल के २० युवकों द्वारा प्रान्तीय त्रार्थवीर दल महासम्मेलन, कैथल में सोल्लास भाग विशाल शोभा यात्रा निकाली गई

हरियाणा प्रार्थवीर दल के निनन्त्रण पर प्रार्थवीर दल दिल्ली प्रदेश के २० प्रार्थवीरों ने नीवे प्रान्तीय धार्थवीर महासम्भेलन, कंचल में सोल्लास भाग लिया। प्रार्थवीर दल दिल्ली के यह युवक, दिल्ली प्रार्थ प्रतिनिध्ध प्रभा की, सेटाबोर),प्रवार-बाहुन में बठकर वैदिक नारों को गुं जाते हुए २२ सितन्बर, ६५, जनिवार दीपहर दो जे से समझ्य प्रस्तिरा माधी कन्या महाविद्यालय, कंचल पहुचे। मोजन प्राप्तिक उपरात्त साढ़े तीन बजे प्रारस्म हुई ग्रीमायाना में विभन्न प्रदेशों हो साथे हुए सावेवीरों के माय, दिल्लो

आर्यवीर दल के यह युवक लाठी, भाले, तलवारों से सुसज्जित पूर्ण गरावेश में सम्मिलित हुए।

दिल्ली धार्य प्रतिनिध सभा का मुख्य पत्र, बार्यसन्द्रश एव की भी राष्ट्र अधिक प्रकार का सी राष्ट्र अधिक प्रकार के लिए सभास्यल पर नि शुल्क बितरित किया गया। धायोजकों ने धार्यनीरों के ठहरने एव साने पीने की सुन्दर अपवस्था की बी इसके लिए सभी ने मुक्त कठ से प्रश्ना की।

श्यामसुन्दर विस्मानी मत्री झार्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

## श्रार्यसमाज तिमारपुर में यज्ञ व वेदकथा सम्पन्न

मार्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली-७ मे १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक बजुर्वेद पारायरा यज्ञ एव बेदकशा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् पूज्य प० सत्यप्रिय जी माचार्ययज्ञ के ब्रह्मा ये तथा श्री कर्मवीर जाव पुरोहित श्रीनानक चन्द जो आर्य वेद पाठी थे। सर्वश्री चौ० भीमसिह, विनोद शर्मा, झानन्द प्रकाश गुप्ना, कृष्णलाल पोपलो, मल्होत्रा जी, श्रीमती शान्ति देवी. सभाष सद एव विमल कान्त शर्मा बारी-बारी से यजमान बने। यज्ञ के पश्चात प्रतिदिन धाचार्य श्री सत्य-प्रिय जी ने वेद मन्त्रों की सरल, सहज रोचक व मनोहारी व्याख्या की। रात्रिको सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रेम-चन्द जी श्रीचर एमं०ए० को वेदकथा हुई। साथ ही रात्रिको भाचार्यश्री सत्यप्रिय जो का भी प्रवचन होता रहा। कथा से पूर्व अजनोपदेशक श्री

सत्यदेव वी स्नातक रेडियो कला-कार एव तवना वादक श्री ज्योति प्रसाद जी ने अपने मणुर भजनों द्वारा सभी को अन्त्रमुख कर दिया। यव कथा ये समाज के नमीपदाध-कारियों ने सदस्यो एव नगर के निवासियों ने नाफी सक्या मे उप-दियत होकर उत्साहपूर्वक माग लया। यश शेष वितररा के परचाम नगर का भी आयोजन किया गया। माता जन्नन देवी आर्य नेस्न धर्माये चिकित्सालय के चलवाहन ने भी १५ वितम्बर को काफी सक्या में स्थानीय रोगियों की आँखों की भी जीव की।

> मबदीय विमलकान्त शर्मा उपमन्त्री शार्यसमाज तिमारपुर दिल्ली-७

## श्रार्यसमाज राजोरी गार्डन नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार

६६ ८ प्र. से १४६ ८ प्र. को राजि तबा १४.६ ८ प्र. को उपनिवदों के महान् बिडान् प्रो० रतनसिंह बो एम०ए० के प्रवचन होते रहे। ओता-गए। काफी सक्या में पबारते रहे तबा उन पर आर्यसमाज का प्रभाव बहुत सन्द्या रहा। प्रवचनों से पूर्व श्री सरस देव जी रेडियो कलाकार के सजन भी होते रहे।

द ६ दर्भ को मार्यसमाज की सोव से श्री कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

> नन्दकिशोष माटिया मन्त्री

## श्वार्यसमाज इतुमान रोड का वार्षिकोत्सव

साप्ताहिक 'बार्वतन्त्रेषा'

धार्यसमाज हुनुमान रोड का वाण्कित-राव बंडे समारोह पूर्क १५ हुनुमान रोड में ११ अक्टूबर से १३ अक्ट्रुबर तक मनावा गया। इस अक्सर पर एक सप्ताह पूर्व श्री प० मदनमोहन विद्यासागर का वेद प्रवचन हुजा। जिसमें घामिक जनता ने सहवें भाग विद्या। प्रवचन से पूर्व श्री सोहनलाल पबिक के मचुर भाग हुए। उत्सव के धवसर पर धनेक गण्यमान्य व्य-वित्यां धोर विद्यानों के प्रवचन हुए।

> निवेदक मन्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

#### प्राम प्रचार

घार्यसमाज धाशा पार्क के तत्त्वावधान में वेद प्रचार का प्रायी-जन किया गया। यह प्रचार कार्य २६ से २८ सितम्बर १६८५ तक माशा पार्क मार्केट के मध्य में होता रहा। जिस में महात्मा राम किशोर वैद्य महोपदेशक जी का वेद प्रवचन हुन्ना साय ही प॰ सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मधुर भजनोपदेश से जनताने धर्मलाम प्राप्त किया। दिल्ली समा के वेद प्रचार श्रविक्टाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने स्वास्य्य सम्बन्धी कविताओं भौर हास्य कविताधों द्वारा श्रोतागर्गो को लामान्वित किया। भाशा पार्क मार्केट में भारी सख्या मे श्रोतागरा बाते रहे। बार्यसमाज तिलक नगर जनक पूरी घीर झशोक नगर से सभी मार्थ बन्धु बाते रहे साथ ही सभी ने इस बेद प्रचार कार्यक्रम की भूरि-मूरि प्रशसाकी धौर अपनी काली-नियों में कार्यक्रम रखने के लिए बाप्रह किया भीर इस कार्यक्रम के लिए समा प्रधिकारियों का धन्यवाद किया गया।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती धविष्ठाता, वेदप्रवास

## षार्ष कन्या गुरुह्वल नरेला (दिल्ली) का कीतिमान

कार्य सनता की यह जानकर हुएँ होगा कि श्रापकी प्रिय संस्था कन्या गुरुकुल नरेला की कन्याओं ने इस वर्ष महर्षि दयानम्द विस्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा में उसीएर्ड परीक्षां ख्यों की योग्यता सची (मेरिट बिस्ट) में पाठ में से पाच स्थान (प्रथम, द्वितीय, चतुर्य, पञ्चम तथा बच्छ। तथा एक स्वर्श पदक प्राप्त कर विद्वविद्यालय में धपना कीति-मान स्थापित किया है। इसका श्रेंय कन्या गुरुकुल के कुलपति पूज्य स्वामी मोमानन्द जी सरस्वती के पूज्य तप, तेज एव ब्रह्मनिष्ठ बाश्रमप्राण मान्यवर्या माचार्या बहुन सुमित्रा जी की सुव्यवस्था तथा कर्त्तव्यपरायण स्नातिका बहनों की लगन को है। भारत के सात राज्यों से बाई कन्याओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट शार्ष पद्धति के अनुसाय शिक्षा-दीक्षा देने वाली एकमात्र इस शिकास सल्या के लिए तन मन चन से पूर्ण सहयोग देना मार्य जनता का पुनीत कर्सच्य है।

—सबाददाता दारा

## दिल्ली श्रायंसमाओं के श्रिकारी त्यान हैं

समस्त प्रार्थसमाज के प्रविकारी महानुभावों से अनुरोध है कि दिल्ली बार्य अधिनिश्चित स्था के उपवेशकों एवं अपनीपदेशकों के कार्यक्रम निर्माण करने के लिए केदप्रचार अवस्थापक स्वामी स्वक्रपानन्त से मिलें जो केवल उपयेशक से मिल कर, अवस्थापक से सम्पर्क किया कर, अवस्थापक से सम्पर्क किया कार्यक्रम वार्वों उनको सह- योग कर पाने में हम प्रसम्बंह । अवस्थापक से तिया उनसे किया अध्यक्ष से तिया जार्यक्रम वार्वों से एक प्रसम्बंह । अवस्थापक से तिया जार्यक्रम वार्वों स्थापक स्वाम्य है। अवस्थापक से तिया जार्यक्रम वार्वों स्थापक स्वाम्य के लिलित पान प्रमाण से लिलित

महामन्त्री चर्मवास विल्ली झार्य प्रतिनिधि समा क्लिसे

## श्रार्यसमाज घोंडा दिल्ली-४३ में श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव

सार्यसमाय के प्रांगण में ७ सितं-बर से द सितस्वर तक श्रीकृष्ण क्षमाष्ट्रमी पर एक समारोह का सारोजन किया गया। क्षित्रमें वैदिक विद्वानों ने भी कृष्ण के महान् परित पर प्रपो कावल किये। तोच औ क्षर्राक्ष क्षमण किये। तोच औ लिया । इस सवसर पर भी प॰दिनेस बन्द आस्त्री बीर आबार्य सस्यक्रिय के प्रवक्त हुए ।

> निवेदक सरक्ष्यस्थान श्रुप्ता मात्री, बार्यसम्बद्धाः सीवा

#### धर्ममलम (पुब्ठ ४ का शेष)

कल्याशी हैं भीर सब मनध्यों के लिए दिना किसी भेदभाव के दिया गया श्चान है।

यथेमा बाच कल्याशीमावदानी वनेम्य । ब्रह्मराजन्याम्या सदाय बार्खाय च स्वाय चारसाय।

- यजु॰ २६।२

बेद का पवित्र और कल्यास कारी जान जन जन के निए है। बेद श्राय वमग्रन्थों की तरह किसी एक जानि सम्बदाय या वगका धमग्रथ नही है। वेन पढ़ने और सनने का श्रधिकार सब को है इसलिए मनु महारक्ष ने कहा है-

धम जिल्लासमानाना प्रमास परम श्रति मनु २।१२

धम के जिज्ञास्यो क लिए वेद ही एकमात्र प्रमास है। पूर्व मीमासा मे बाया है --

वेत्प्रतिपाद्यप्रयोजनवत ग्रयॉ 907 1

क्षम के जिज्ञासभी के लिए वेद ही एकमात्र अमाण है। धम वही है को बेद के द्वारा प्रतिपानित है और धम ध्रम नाम मक्ष-चारो प्रयो ख ने की सिद्धि करने,वाला है।

श्री भारते दनाथ (स्वा॰ वेद भिक्षाने अपनी प्रतक Message of the Arva Sama; to the Universe में लिखा है-

Among all the bocks of knowledge the Vecas are the only one that give this know tedge namely-

1 The teachings are for all men in this wolld without exception for al times and for a lands hev are not at all meant for a vs equal land

सहदय सामनस्यम age or particular society

? There is nothing in them that is against the laws of creat on of the world nor against the laws of finding out truth nor against the world of well wishing sacred souls nor against any good behaviour with regard to men in the world

3 The teachings are not against science nor against good thoughts or things They inculcate a knowledge devoid of confusion and pre-

वेद भारवत नतिक मृत्यो का ज्ञान है जो सब काली देशी जातियो वर्गी तथा विभिन्न सम्प्रदायों के मानवी के लिए कल्यासा सब समद्धि तथा धानन्द का मागदशक है। उन शादवत सत्य ज्ञान के कुछ मन्त्रो पर ध्यान दीजिए ---

सग-उध्व मवदध्व

स वो मनासि जानताम । देवा भाग यथा पुव

> संजानाना उपासते॥ ऋग्वेद १०।१६१।२

वस्तु सर्वाणि भृता

साहित्य प्रचार दूस्ट

मी ६ दशनाय:: 238360:233H

न्यात्मन्नेबानपश्यति ।

सबभूतेष नात्मान ततो न विज्यपसते॥

-- यज् ० ४० °

विद्वव क्रांगिव ।

भ यो श वमभिहयत

वत्स जातमिवाघ्न्या ॥

ग्रथकः ३।३०।१

इस प्रकार बेद जाइबत सत्य का ज्ञान हैं जो सब प्राशियों के कत्यारा के लिए सब्टि के प्रारम्भ में ही ईस्वर के द्वारा निमित्तिक ज्ञान के रूप में मिले। वेद के पठन पाठन श्रवण भीर मनन तथा ज्ञान के धनुरूप धाचरण से ही मनुष्य मात्र के जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। उन सब का जो इस पवित्र माग के अनुवायी हैं। यह वर्म और कलव्य है कि निच्ठा पुरुक अपनी समग्र शक्ति की इसके प्रचार प्रसार में लगा द तभी क्रव्यन्तो विश्वनायम का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

#### खन की चेतावनी (पुष्ठ = मे धारो)

लिए एक घाचार सहिता बनाई जाये। मैं प्राचीन भारतीय संस्कृति के मानने वाले लोगों से बाशा करता है कि वह भी भपनी संस्कृति एव भारत श्रीम की रमा के लिए सचेत ग्हें। और ऐसे देशद्रोहियों से कह दें कि बादे मातरम कहना होगा या भारत से जाना होगा।

> यीताराम प्राप्त प्रधान बायसमाज विदिवा

## श्रार्यममाज श्राशा पार्क में वेढ प्रचार

बायसमाज भाशा पाक (फतेह नगर) नई दिल्ली १ में दिनाक २६ २७ २८ सितम्बर १६८४ को बेद प्रवार का कायक्रम दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा उत्साह से मनाया गया। इस श्रवसर पर महात्मा राम किशोर जी महोपदेशक के प्रवचनो द्वारा तथा प॰ सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार ने धपने भवतो दारा वद प्रचार किया। जनताने वड ध्यान एव र्राच पूर्वक इस कायक्रम को सुना तथा उनके लिए बटा उपयोगी भी रहा है। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने अपनी हाम्ब कविताशोदारा जनता का मनोरजन किया लोगो ने भी इस का परा आनन्द उठाया ।

बाशा पाक की इस छोटी सी नई कालोनी में ग्रायसमाज का यह पहला बद प्रचार हआ। है जो हर प्रकार से सफल और सराहनीय रहा भवदाय

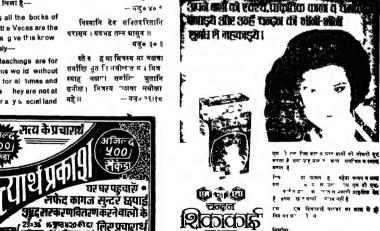
> नरजनदेव सचदेवा मन्त्री



महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लि॰

9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति कार का विकास 118015

the 539609 537987 537341



Post in N D P S O on 11 10 85

रा कार्य गार्की

दांतों की हर बीमारी का घरेल इलाज

23 जड़ी बुटियों से निर्मित

आयुर्वेदिक औषधि

टाते का शबदर

देत .

अब नये पैकिय में उपलब्ध

L. THEFIL

महाशिया दी ु ०) लि० ९ ४४ इण्डस्ट्रियल एरिया कार्ति नगर नई दिल्ली १६ एकेन ६५७४०७ ६५७४७ ६५७४४

Licensed to post without prepayment Licence No. 41

## त्रार्यसमाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी वर्ष ধ 🕬 निबन्ध प्रतियोगिता

ग्राय महिला 'शक्षा मण्डल टस्ट द्वारा ग्रायोशिक' विषय नारी उत्थान और श्रार्यसमाज

(उपनिषयौ सभावनाए एव कत्त-य)

पुरस्कार—प्रथम १५०० रु० द्वितीय १३०० रु० ततीय 🕴 👀 🗱 निवाध गाप्ति की अन्तिम तिथि ३१ १२ ११८५ ई. नियमाव नी

१ निब घ अप्रजी नि दी माषा और देव गगरी लिपि मे हो ।

o अधिकतम शब्द संख्या ३ ००० हो सकती है

३ लेग की विषयवस्तु और मौशिकता के जिए लेल स्वय उपाधनायी होगे ।

४ निबन्ध को तीन प्रतियाँ फुलस्केप क गज पर एक धोर टाइप की हुई। या लिखी हुई भेजना सावश्यक होगा।

५ निबन्ध में लेखक का नाम पता परिचय ग्रादि नहीं होना चाहिए।

६ लखक का नाम पना हस्ताक्षर युक्त प्रतियोगिता में प्रवशार्थ पक्ष अलग कागज पर निबन्ध के साथ सलग्न करना आवश्यक हागा।

७ लेख के प्राप्त न होने नब्ट होने ग्रथवा क्षतविक्षत ग्रवस्था मे प्राप्त होने का दायित्व माय महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट का नही समक्षा जाएगा

म पुरस्कृत लेवो के प्रकाशन का अधिकार आय महिला शिया मण्डल ट्स्ट को हागा

ह प्रतियोगिता में प्रविष्ट लख वापस नहीं किने जाय गे किन्तु प्रति योगिता के निराय की वावरणा के पहच न ग्रपने ले को अन्यत्र प्रकाशित

करने में लेखक स्वतात्र होगे। १० पुरस्कृत व्यक्तियों को निराय को नक द्वार दे दी आएगी। ११ प्रियोगिता मे तिल् च भेजने समभा जाएगा कि लेखक

को प्रतियोगिना की शत स्वीका है। १२ निर्मायक मण्डल का निरम्य मा तम लोगा।

निव व भेजने क पता-

श्रीमत्त्रीजी

आय महिला शिक्षा मण्डल टस्ट २० विषान सरगो कलकता

किशनलाल पोद्दार (प्रथान)

रुलियाराम गुप्त (म त्री)

लिए उत्तम फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें



धासा कार्यालय-६३ गली राजा केवारनाय, चावडी बाजार, विस्ती-६ फोन । २६१८३८



वर्षे ६ श्रीष्ठ ४८ जुल्ब एक प्रति ५० पैसे

रविवार, २० धन्तूबर, १६०६ वार्षिक २० व्यवे मुष्टि संबत् ११७२१४१०८६ साजीयन २०० स्वय सारिवन २०४२

दबानन्दाब्द—१६१ विदेश मे ५० डासर, ३० पॉड

## राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

## राष्ट्र रक्षा के लिए आरक्षण समाप्त करना

## आवश्यक है

सास भारत की परिस्थितियां सड़ी विषय हैं। इसे सन्दर धीर बाहर दोनो स्रोप से सत्तरा है। प्रवाद साताम, नागालेख, प्रान्ध्रप्रदेश, तेवामाना स्वोप्ने प्रवाद साताम, नागालेख, प्रान्ध्रप्रदेश, तेवामाना स्वोप्ने प्रान्त विशेष की किसी साचार पर सारकाए की सुविचा देते हैं जैसे काध्मीर में मिल रही हैं। वर्म प्रवचा जाति के साचार पर बिजेब सुविचाएँ देते हैं तो सन्य सोग सी उसी प्रकार की मुविचाएं पाने का प्रयास करते हैं, और प्रान्दोलन चलाते हैं। वे स्वतन राष्ट्र स्वापित करने का प्रयास करने में

लगे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए सलगाव-बावियों को नटर करने के साथ साथ उसकी भावना को समाप्त करना भावस्थक है। आज मनुष्य का वरित्र भी पतन की भोर जा रहा है। सरकार भी इस दिशा में योग सान करती हैं। सराब के व्यवसाय को केवल उत्पादन सुल्क भ्राप्त करने के लिए बन्द करने में प्रसम्भ हैं। महा मभी वराइयों की जब है। ये बिनार डा॰ बर्मयाप्त ने प्रार्थसाज हडसन लाईन, गुक्तेग वहादुर नगर दिल्ली-१ के बाधिकीरत्व पर व्यक्त कुमार वैशालकार ने प्रपने भावएं में सम्पूर्ण मारत की दुर्देशा का विवरण दिया भीर भार्यसमाज से अपेक्षा की कि एक देशस्थापी भारोजन जलाया जाना चाहिए। मनुष्य अच्छा बनेगा। सत मनुष्य का निर्माण भावस्थक है। यह कार्य केवल भार्यसमाज ही कर सकता है। इस भवसर पर प्रायंत्रदेश के यहारवी सम्पादक श्री प० यक्षामत सुवाष्ट्र ने भार्यक्रमों का भारतान सुवाष्ट्र ने भार्यक्रमों का भारतान सुवाष्ट्र ने भार्यक्रमों का भारतान क्याष्ट्र ने भार्यक्रमों का भारतान क्याष्ट्र ने भार्यक्रमों के भारतान

## — डा० धर्मपाल

कल्याण सम्भव है। राष्ट्र सम्मेलन का मयोजन श्री राजेन्द्र दुर्गाने किया।

भार्यसमाज किय्न्ये केय्य मे पिछले एक सप्ताह से सुप्रसिद्ध विद्वान भोजस्वी वक्ता प० यशपाल सुघाशु के को कथा हुई भौर प० चुन्नीलाल के भगन हुए। १२ अन्द्रवर को आर्थ महिला सम्मेलन भौर भार्ययुवक सम्मेलन सम्मन हुए।

> निवेदक गोपाल स्नार्यमत्री

## पाकिस्तान द्वारा राजस्थान सीमा पर बड़े पैमाने पर युद्धाभ्यास

पाकिस्तान ने राजस्थान से सगने बालो सीमा चीकियों के बाल-पास युडाम्यामें में बडोतरी कर टी है। मारो माना में बाल वहन सामरिक महस्व के ठिकानों पर इकट्ठें किये बार हें हैं। प्राप्त सामा बारों के जनु-सार यह साथका व्यवत को जा रही है, प्रापामी कुछ महोनों में पाकिस्तान महस्व सीमा खेन में अडकाने वाली कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान ने प्रपान में सिन्दों पर पुरसा संस्कृत की सक्या में बडोतरी कर बी है। पर्विषयी राजस्थान से लगने बाकी सीमान चौकियों पर पाकि-

स्तान ने पाचवी ग्रीर दूसरी कोर लगा एकी है। न॰ भा० के ग्रनुशार पाकिस्तान ने परिचमी गीमाल्त पर वैनिक महत्त्व के ठिकानी पर धमे-रिकी राडार लगा रखे हैं। हाल में इनकी सच्या में में वृद्धि को गयी है। यह भी ग्राचका व्यक्त की गई है कि जसलमें नाडमेर से लगी सीमा में पाकिस्तान ने ग्रापने ठिकानो पर इलेक्ट्रोनक हिष्यारों को मो इकट्ठा करना शुरू कर दिया है।

सीमा पर चल रही ग्रवाखनीय भीर खतरनाक गतिविधिया चिन्ता का विषय हैं। खुली सीमाओं के कारण असम में विदेशी नागरिकों की मुख पैठ की समस्या का सामना करना यहा और जजाव में सिल मानकवादियों को हिष्यार प्रकाशन की सुविधा प्रकाशन की सुविधा पिता के साम जाने वाला ४०० किलोगीटर साम में वर्षों के प्रकाश में वर्षों के प्रकाश में उर्षों के स्वाप जाने वाला अवव्य वना है। यहाँ विदेशियों और प्रातकवादियों के पृथ पैठ के अलावा तस्करी भी एक वही समस्या है।

यह उल्लेखनीय है कि सिनम्बर मे पाकिस्नान की वायुसेना ने वायु-सेना दिवस मनाया था। इस ग्रवसर पर एयर चीफ मार्गल जमाल ग्रह- मद स्नान ने एक घाटेश जारी कर वायुसेना के प्रतिकारियो और जवानों से कहा कि वे किसी भी जुनौतों का गुनायना करने के लिए नमार्थे। उन्होंने कहा कि यदि हम पर युद्ध थोंगा गया तो हम उपका कडा जवाब दने में सक्ष्म है।

इसी दिन पाकि-तान की वायु-सेना क मभी टिकानो, फजल, लाहोर, सरगोधा, चकलाला और पेशावर के बाधुसेना म्रड्डो पर जवानों को या दिलाई गी कि वे किसी भी पश्चिति में देलेंगी से मुकाबले के लिए तैयार रहें।



## सन्ध्या-योग

#### लेखक-जगत् कुमार शास्त्री

१ - बाबो भाई सज्जन पृथ्वो । हम सन्ध्या करे, बोन्द्रारोपासना कर गायत्री मन्त्रका अनुष्ठान और भोकारका जप करे। प्रानकाल सूर्य के उद्रय होने से पहले भीर सायकाल सूर्य के अस्त होने के पीछे सध्या का समय है। पच महायज्ञों में सन्ध्या प्रथम धौर मुख्य है। इसे ब्रह्म यज्ञ भी कहते हैं। इसका एक प्राचीन नाम अबहुत भी है। ("जपोऽहुनो, हुतो होम " मनुम्मृति तृतीय श्रध्याय) गायत्री मन्त्र व सावित्रो मन्त्र की अनुष्टान विधि भी यही है। श्रोद्धार जप विधि ग्रथवा आंद्भारोपासना भी यही है। इसके ये विभिन्न नाम कुछ तो शास्त्रकारों के विचार प्रकार के भाषार पर हैं, कुछ साधको उपासको के श्रेणी विभाग के बाधार पर। यदि काई अपना सारा जीवन वा धाधकाश समय सन्ध्या धार्यात स्तुति प्रार्थना धीर उरासनापूर्वक भगवान के सम्यक ध्यान में व्यतीत कर सके तो भी बहत कम है। परन्तू यदि कोई श्रधिक सनय प्रभु भक्ति में न लगा सके तब भी दोनो समय सन्या अवस्य करे। सन्ध्या मे गायदी मन्त्र का अनुक्रमानुसार विशेष पाठ भीर विचार तथा अनुक्रमानसार ही प्रणव जर्मी श्चवश्य ही करे। जा ऐसा नहीं करता शास्त्रों में उसे दोषी माना गया है। उसके विश्कार का आदेश भी दिया गया है-

२—प्राचीन इनिहास ग्रन्थों को देखने से ज्ञान होना है। कहमारे पूर्वत राम कुंग सोना कुनी आदि एवस व ऋषि पुनि महास्मा, साधु सन्त आदि नियम पूर्वक सन्योगासना किया करते थे। याज्ञ गुद्ध नोता तथा चीर विश्वति के समय में भी वे प्रयोग सन्या जत का परित्याग न राने थे। नभी नो वे वह वह काम करने दीर्ष आयु को प्रान्त करने में भी समय हुए थे। आज भी उनकी यशोगायाए मसार में गाई जा ही है। ईश्वर को उन पर विशेष हुपाया। क्यों कि वे मव ईडरा के मच्चे भक्त थे।

= धाज ममार में हम का स्थान नोम ने ने रखा है। दिखावा प्रतिदि "स्ता हो बना जा रहा है। मानो मन्य रगड़ा हो गया है प्रीर कर के पर पान में है। नास्तिकता थ्रीर उसके परिणाम में बिर होना पर रमें है मासिकता थ्रीर उसके प्रतिप्राम में बिर होना पर रमें है पीर भी नाना प्रशार मा बुजयाए एव दु जो का वहाने था। विचार तरगा प्रति हा रही हैं। मच्चे आस्तिक जन हा इस स्थित का सामना कर सकेंगे। थ्रीर वस्ती हुई दु ज तथा थ्रा-अकार परस्य औ को राह सकेंगे। देवर माने हुई दु ज तथा थ्रा-अकार परस्य औ को राह सकेंगे। ईस्वर भिक्त सही प्राप्त मासिक स्थाना पुष्प प्राप्त उदय वाना और सच्च प्रास्तिक नर-नारी हा अपन जीयन स्वय में विज्ञा नाम करेंगे।

४—संग्ट्या के मन्त्रों ना पाउ आरे और स्थिर एवं शान्तित्त हो हा करणा पहिए उन्दारण ग्रह एवं स्पष्ट हो । साथ हो साथ सन्याम ना ने अर्थों हम मन्त्र त्यों र ये वि ता सी होना रहे । अर्थ को जान नना नो म या योग सफ्त श्री सुखद न हो सकेशा । अर्थ को जाने वि नता मन एगा न हो सन्ध्या कम में भीनि बटगी । नीता रन्य पर्याप्त नहीं है । ज्यव स्वयं अर्थाण मन हो मन में पाठ और जप आर्थि पर्योप्त नहीं है । ज्यव स्वयं से अर्थाण मन हो मन में पाठ और जप आर्थि पर्योप्त ने के लाभ अधिक है । कभी कमार सम्मिनित सन्ध्या प्रमाश में जा उन्वस्वय में पार किया आता है वन तो इनितिए होता है कि जिनको सम्या के मन घठ-श्रव याद नहीं है जनको भी व सर्वन्य म याद हो गर्थे। वह सन्ध्या का सन्य प्राप्त नहीं होता। प्रशिक्षण नो नहीं होता।

५—वैदिक मन्द्रा विषयक छोटी बडी भौर गय-पद्ममयी भ्रवं-ज्ञासक पुस्तक बहुत ने विद्वानों ने बनाई हैं। सभी उत्तम हैं। सामको को अपनी भ्रपनी योग्यता भौर सुविधा के भ्रनुसार किसी भी एक पुरनक की सहायता से, अथवा किसी मित्र वा अन्य विद्वान् की गहा-यता से रून्या के सब मन्त्रों का चुढ़ उच्चारण और अर्थ शिख देना चाहिए। विभिन्न विद्वानों के अर्थ-प्रतिपादन में जो जाविक्त केंद्र प्रभेद पाये जाते हैं, वे सब उमरी हैं। वे तो गौरा ही हैं। बस्तिक्त और तास्विक भेद उनमें नहीं हैं। अत उपासकों को भेद में भी प्रभेद मान कर हो चलना चाहिए। धर्म भेद के विश्वम में नहीं पड़ना चाहिए। न्वाच्याय से इम प्रकार के सभी स्वासानी से हो मिट जाते हैं। (परस्पर विनद्ध अर्थन होने चाहिए।)

६—सन्ध्या की महिमा हमारे आयंशास्त्रों में बहुत विस्तार के साथ गाई गई है। उपनिषकारों एवं स्मृतिकार महूर्षियों में वैदिक गन्ध्योपासना पर सर्वाधिक वल दिया है। उपासना के अनाव में मानव-जीवन रूखा, फीका कडवा फुसफुता और अशान्त वन जाता है। ऐसी अवस्था में उत्तम जान मो मानसिक विलाम अथवा वाज्ञाल होकर रह जाता है। मिद्रान्त असे कहते हैं, जिसके अन्त में सिद्ध अवस्थ ही मिलनों है। सिद्धान्त आचरण के लिए बने हैं, वाद विवाद से विद्धान्तों की परख होती है।

७—प्रान काल को सन्ध्या के पहचान रात के कार्यों का, और सायकान को सन्ध्या के पहचान दिन के कार्यों का भली प्रकार विचार भी करना चाहिए। यदि किसी से कभी कोई भूनव्क हुई हो, तो उस के सुवार का उनाय करना उचिन है। ऐसा प्रम्याग करने से मनस्य का चरित्र प्रस्पन्त निर्मल जीवन शान्त प्रीर स्वभाव प्रति सौम्य, शुद्ध ट्विं स्तिष्य हो जाता है। फिर प्रमु-भिन्न में मन भी खुब लगने लगाना है ग्रीर ग्रन्न में मनुष्य ब्रह्मानस्य में लोन होने की सिद्धि भो प्राप्त कर लेता है।

८—जो लोग उपासना कर्म द्वारा प्रपने-प्रपने जोवन को सुखी, सफल नजस्वी और शान्त बनाना चाहते हैं उनको सभी प्रकार के मादक द्वस्थो तमोगुर्गी एव रजोगुर्गी भोजनो प्रशिव पदार्थों, चरित्र-होन मित्रो और काम कोच सद सोह लोजनवा ग्रहकाररूपी मनो-विकानों का पिन्याग घवश्य हो कर देना चाहिए। इसे ही खहरिपु-दमन कहते हैं।

१—नय के नाम पर शरीर को कब्ट देना या मुखा उलना धनु-विन है। किमी अगन-महान्ये जाना गुढ बाधु के सेवन एकान्तवास विशेष प्रप्रमान्य और प्रकृति-निरीक्षण के लिए तो ठीक है प्रत्यवा महीं। घर-मुहम्बी का परित्यान करके तथाकथित बेरागी या रमते-राम बन आना तो एक प्रकार की कायरता हो है। कर्ताव्य-कर्मी से यह विमुख्ता और शास्त्र विद्वित जीवन-समर्थ से यह पलायनवाद कि ते निर्मा किसी रूप में भी अयस्कर नहीं है। मन्यास नो बपरि-मह और त्यागवाद ही है।

०० - ग्रण्नी-अपनी स•ध्या उपासना, जप, यनुष्ठान, साधना ग्रादि-ग्रादि भक्ति-धर्म के छोटे-बड़े मभी कार्यक्रम उपासक अपने आप ही कर। नौकरो या मुनोमो से करवाने का काम यह नही है। किसो के शुभ कर्मों मे प्रेरित या उत्साही करना नो बात ही दूसरी है।

११ — सन्थ्या-साता की शरण ग्रहण करो। तन के चोले को भक्तिबाद के रग में रगो। मन-बन्दर को वश में करो। सच्चे उपासक बनो। उपासना के लाभ बहुत हैं।

4.40



## क्या बरनाला उग्रवादियों का इलाज कर सकेंगे ?

तीन वर्षों से पत्राव में भाग भीर धुमा उठता रहा है हर हिन कोई बोला फूट पडता और लोगों के दिलों में दहशत ब्याप जानी। मुबा प्रधानमन्त्री ने समस्या का समाधान करने का हर सम्मव प्रयास किया। स्व० श्री लोगावाल के मान हए समझौते से सारे देश को प्राक्षा बची थी, कि पंजाब समस्या का समाधान हो गया किन्तु सन्त सोगोबाल को हत्या से फर बाबाची पर पानी फिर गया। लेकिन प्रधानमन्त्री ने चुनाव कराकर फिर समस्या को सुलकाने का साहस दिखाया। पजाब से चुनाव का । बगुल बजा। सिल भीर हिन्दुमी ने एक-जुट होकर धातकवाद क मुकाबले म बाट डाले। दूसरी तरफ वाबा जोगेन्दरांसह का पाटी न चुनाव का बायकाट करते का फैसला किया। उप्रवादिया न चुनाव में रकावट डालने में कोई कसर नहीं खाडा । चुनाव शुरू होन सं एक दिन पहले बारावाल, बटाला, दाना-नगर, भन्तसर, फरादकाट आरतलवडा सरवाम उपवादिया ने बम क धर्माको कये। बटाला मे एक बम धर्माकेस तान बच्च मर गये मार राज्य सभाक सदस्य माहिन्द्रप्रसाद ममृतसरक प्रमुख पयवे-क्षक का दालाल का कारतहरू नहस हा गई। अनुतसर म चुनाव शुक्त हान सदा दिन पूर्व आतंकवादियो नदा इका कायकनीमा का जहराला प्रसाद । बलाकर मीन का नाद सुला दिया। कई स्थाना पर टाइन बम मामिल । दिल्ल। रलव स्टेशन क बाहर एक ट्रांजस्टर बम काण्ड स नान व्याव त्या का मात का बाल चढा दिया गया। इसक बावभूद जुनाव हुए, भ्रक्तांत्रया को सरकार वन गई। केन्द्र सरकार भा बहा चहिता थो। उप्रवाद का सफाया अकाला सरकार के हाथा

१४ दिसम्बर १६२० का जब मकालो दल बना था किसी प्रकार की साम्यदायक भावना का बाज मा उत्तम नवर नहीं भारता था किन्तु जसे जसे काला दल न ताकत प्रकार उसमें कई ऐसे तत्त्व चामिन विज्ञ जसे जने के राये प्रकार प्रकार त्यां किन्तु जसे जसे कारण प्रकार ताकत पर का मिन हुक टुक हो गया। उदा-बादी तत्त्वान में का मान का प्रकार त्यां साम चित्र में मान का प्रकार त्यां साम चित्र में स्वाप्त की कुर्यों का पान के लिए कुछ नताया न उपवादा तत्वापर हाथ घर रेखा जससे उपवादा साम साम उपवादा त्यां पर हाथ घर रेखा जससे उपवादा साम त्यां हात गया। इन्हों के कारण अब के प्रवाद में मान किन तो पर प्रकार में सात का ना ना ना पर प्रकार यह है स्था बकाली दल उपवादों घड को ना करके में सफल होगा ? क्या वह सन्त लोगोवाल के मादशा के अनुसार हिन्दू सिख एकता के लिए काम करेगा भीर स्वयं मं उगते घड बन्दों के फीड का इस्ताक कर पायेगा ?

श्री सुरजीतसिह बरनाला सवसम्मति से पबाव के मुख्यमन्त्री बने हैं। उन्होंने कहा भी हैं- लयी सरकार का पहला काम सारे पजाब की सासों के सासू पोछने का होगा। हम ऐसा सरकार बनायमें जिसे राज्य के साहर धावमा अपना समक नके।" हम श्री वरनाना को सफलता के लए खुआबसा देते हैं। क वे सफल हो पर दस स्थित से हम्कार नते। किया जा सकता कि बरनाला लोगोवाल नहीं हैं वे सामूहिन धकाली नेनृत्व का एक हिम्सा हैं। बराबर वालों में वरिष्ठ सारे दल को अपन साथ साथ लेकर चलना उनके लिए एक चुनौती है। पुस्पमन्त्री की साथ प्रवास के तर चलना उनके लिए एक चुनौती है। पुस्पमन्त्री की साथ प्रवास के तिए पुचे इससे उनकी धामिकना का ता पता चलता है नितु राज्य के अब प्रतास के लिए पुचे इससे उनकी धामिकना का ता पता चलता है नितु राज्य के अब प्रतास के लिए मुझे इससे उनकी धामिकना का ता पता चलता है कि तु राज्य के अब प्रतास के लिए साथ से का ना भी उनित नहीं समा। इससे हिन्दुभों के मन ने क्या निवार उनने। खायव वही जो किसी सिख प्रकाक ने कहे थे। प्रयार प्रवास के से हम के समें स्थान से साथ से से सरका सनती हैं तो सिख जनता हसे हिन्दुभों की सरका से हिन्दुभों का साथ से सिल्य साथ से हिन्दुभों की सरका से हसे हिन्दुभों साथ से सिल्य से साथ से साथ से सरका से सिल्य से साथ से सिल्य से सिल्य से साथ से सिल्य से साथ से सिल्य से हसे हमें सिल्य से सिल्य से सिल्य से सिल्य से सिल्य से सिल्य साथ से हिन्दुभों सिल्य से सिल्

**की स**रकार प्रहेगी । तो क्या ग्रब <mark>श्रका</mark>ली सरकार पर हिन्दू विद्वास न कर ? जब कि यह भी धजोब रवैया है जेलो से काफी सिल रिहा क्यिं गये और किये जा पहे हैं परन्तु जेलों में बन्द प्रधिकाश हिन्दू अभी भी रिहा नहीं किये गए। दूसरी बोर पजाबियो ने ब्रपने मन मे २६ मितम्बर को बरनाला के मुख्यमन्त्री चुने जाने पर खुशिया अनायां और खुशहालों की बाशाएँ जगायी। लेकिन आने वाला समय शकाली दल के लिए चुनौतियों से भरा हुआ है। पिछले तीन वर्षों से पजाब केन्द्र की सहायना पर चलना या रहा है यब एक तरफ लोगों के ऊपर टैक्सो का बोभ, डालना तथा इसरी तरफ उग्रवाद को साफ करना काफी जोखिम भरा काम है। सन्त लोगोवाल और राजीव गाधी के बीच हुए समकौते ने बाने वाले पजाब का रास्ता तय कर दिया था। पजाब की नयी सरकार के लिए उस रास्ते पर चलना कडी चुनौती है। यह सच है कि सिखों के विशाल बहुमत ने इस चुनाव मे आनकवादी रीति नाति के खिलाफ बोट दिया है। बेग्रन्तसिंह को विषवा विमल लानसा का सिफ ४०० वोटो से हार जाना इस बात का सकेत है कि उग्रवादियों से सहानुभूति रक्षने वाले श्रभों हैं। पजाब की नयी सरकार को उग्रवादियों के इन हिमातियों का मन भी बद-लना होगा। उसे अपने कार्यों से सिद्ध करना होगा कि भिडरावाले भीर उसके सहयोगियों का रास्ता गलत था। पंजाब और मिख दोनों के लिए महिनकर था। उपवादियों के हौसले मभी भी बूलन्द है भारत से बाहर जो षड्यन्त्र धभी चल रहे हैं वास्तव मे काफी चिन्ता-जनक हैं प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की ब्रिटेन यात्रा से नीन दिन पूर्व ब्रिटिश पुलिस ने लगभग एक दजन ग्रानकवादियों को गिरफ्नार किया है। ऐसाक हाजारहा है कि इन लोगो ने श्री राजीव गांघी की हत्याका वड्यन्त्र रचाया।

यह भी बहुत स्पष्ट है कि पजाब के आतकवादियों को अमेरिका ब्रिटेन भीर कनाडा के बसे सभी मिलो से महायता मिलनी रही है। आनकवादी प्रधानमन्त्री श्रीमनी इन्दिरा गाधी श्रीर सन्त लोगीवाल जैसे सुविरूपान लोकप्रिय नेताबो को हत्या कर चुके है झौर अब भी वे षडयन्त्र करने मे लगे हुए हैं लेकिन यह कूछ मसामान्य सा प्रतीत होता है जब कभी प्रधानमन्त्री वाशिगटन या लन्दन पहुचने वाले होते हैं तभी वहा की सरकार को मानकवादियों की गतिविधियों की जान-कारी मिलती है। क्या यह सच नहा है कि रेगन प्रशासन भीर थैचर सरकार को पूरी तरह मालून है कि उनके देशों में भारत विरोधी गिनविधिया चल रही हैं। दोनो सरकारो को खालिस्तान की माग करने वाले मुट्ठीभर सिलो की सारी कारस्तानियो की जानकारी है। कुछ राजनैतिक प्रक्षको का यह भी विचार है कि ग्रमेरिका, ब्रिटेन तथा कनाडा के शासको ने जानबुमकर भारत को खण्डित करने का षडयन्त्र रचने बानों को ग्राश्रय दे रखा है। इन उग्रवादियों का जो भारत से बाहर हैं सम्बन्ध पजाब के किसी सूत्र से भी जुडा हुआ। लगता है। जो योजनाए बाहर बनती हैं उनका प्रयोग भारत मे होना है। इसलिए बरनाला सरकार को देश की ग्रखण्डता का चुनौती देने वाली नाकतो स लडने के लिए कमर कसनी ही होगी। चुनौनी के व लोग जो बन्दूक और वम की भाषा में बात करते हैं। कल तक ये बन्द्रक उन पर तनी हुई थी जिन्हें उग्रवादी ग्रापरेशन ब्लुस्गर के लिए उत्तरदायी सममते थे। अब यह बन्दूक उन पर भी तन सकती है जिन्हें सिख पन्थ के स्वयम्भू सरक्षक सिखी कागदार कह रहे है। मतलब साफ है नयी प्रकाली सरकार को इन भटको का नयी राह हो नहीं दिखानी उन्हें उस राह पर चलाने का दायित्व भी निभाना है। ग्रगर प्यार की भाषा उन्हें समक्ष न ग्राये तो उनकी भाषा से ही उन्हें सही रास्ते लगाना होगा।

—यशपाल सुषाञ्



# व्यासंघीठ

## उपनिषत् कथा-माला--१८

## कर्मकाण्ड

#### लखक-स्वामी सवदानन्द सग्स्वती

हुक्म है शाओं का नूहो पाक टिला। हो नेक सबसे मुख्यन से मिला।

नेक काम मनुष्य को नेक बनाता है और बरे कामों से मनुख्य दूरा बन जाना है नेक काम से हृदय गृद्ध होता और बरेक म से अज्ञान बढता है नेक बादमी प्रभूका इच्छ्रक भीर इच्छामोका जो मनुष्यको बुरैकामो की घो लीवनी हैं त्मन कताहै पापो का राग्ताख़ल जाने से समार मे कष्ट ग्रौर मुमाबत दिन प्रतिदिन बढताजाता है कमण्यता मनुष्य को पापो से हम कर कल्या समागपर अग्रसर करती है बरे काम न करो — दुख पास्रोगे कमजोग्हो बास्रोगे। यह बात्स है कि कोई भापूरव शुरू से हाभ्रपने भ्राप बुरा । न ता ननी है जिस स्टेशन पर वह खडा है उसके एक ओर ब्राई भौर दूसरी भ्रोर भनाई है यति बेसमभा में वह भपन करम का बुराई को श्रोर बढाता है। तनानामधिक भाई सेदूर हाजाहै पर यत्रिवह सोच सम स न्य पुणामाग को ग्रान्स करता है तो उनना हा ग्रायक वह पुरापाता है यी चक्क अगेच प्ताहग्रा एक वो तो प्रभूसे ना मिनाताहै भौर त्सरे को समार मे घनाता रहता है परन् भ्राजकन सिद्धान भी बदल पया है—जिस काम के करने से ∺नुष्य का हत्य पवित्र और स्नत करण ग्रह हो ज्से तो कोई विरलाहा निभाता है जिसम सब का आ । म हो दुव सुल मे परस्पर सहयोग हो अय से कियाको कदन हो उस कम का काई काई नी करता है प तुग्राजकत हरकाई बाहरा श्र बस्तरो का शौकान है और इनके विरुद्ध कहा गई वातो पर कान तक नहाधना।

जमें कोई मन ईस्वर की पूजा विल्कुल चुप नाप करना घ्रण्टा मानते हैं और कोर्ष घण्टा घर्षिणाल बजा कर पूजा पा करना कि मानना है । दे मान में ईस्वर को जपना है तो दूसरा प्रतिन को नपना है एक का मूख पश्चिम नो है तो दूसरे का पूजा कि लियों ने मोन को कसे माना है तो दूसरे ने उसे उटा जाना है

इस विषयम कहाँ तक कहें हर एक मन ने अपने को दूसरे से पृथक करने का कोई न कोई ढग निकाला हुआ। है वह किसी हद तक नीक हो सकते हैं पर नु वास्तविकता को ठीक करने में सहायक नो पर ऐसा नो न हुआ। मनुष्य ने बाह्य भावम्बर को ही सब कुछ मानकर ग्रसलियत को लो दिया जिससे यह ससार भगनी का केंद्र बन गया। धम की तो यह आजा थी कि मनुष्य नेक और शुद्ध झाच राग करता हो उसके हत्य मे बमड धीर धभिमान न हो एक दूसरे के साय प्रम का बर्ताव कर शत्रना के बीज बोने से भीर फमाद करने से सनावर-वहतो हुआ। डोगकी वास्तविकता का स्थान देने से सकडो प्रकार के बसेड नोगे यह तो ठीक है कि मनुष्यों में कुछ न कुछ भेद होता है परत इस भेद की अधिकता को जमाना शत्रना कहता है असूल तो भगवो को मिटाना है इसकी ब्रज्ञानना से मनुष्य भगनो को उरता है असलियन तो यह है-

नेकी की नाकत नहीं नो वदी संपरहेज कर। ग्रापने ऊपर जल्म करने से

सटा ईइवर से डर ।

मनुष्य का यह मुख्य कत्त ०य है कि वर पुभ काम करने वाला ही बने यदि इसमे यह शक्ति महोतो ब्रे कामो से दूर रहना तो ग्रावन्यक यत्र नरीका तो समार के हित भीर क प्राग्तका है। जब मन्ष्य भ्रपने स्वभाव को ब्राई से हटा कर उसके ५ भाव को टिन से मिटा देना है तब उसका क्यानेकी करने का स्वभाव हो जना है जिल्ल की प्रवृत्ति हिमी न किमी ग्रोर टोनी आवश्यक है बुराई का स्रोत बात होते ही भनाई का माग भाष ही जुन जाता है जो मनुष्य किसी कसाथ बुराई करना है वह ग्राज नहीं तो कल मुमीबत मे फमनाहै अध्याय से किसी को दूव पहचाना धपने ग्राप को स्वयमेव मुसीबनो मे फसाना है परमा मा द्वनाशक है म्रत जो मनुष्य किसी को मूसीबत से बचाता है वह भी भपनी योग्यता के ग्रनुसार प्रमुके इस गुए। का भागी बन जाता है, किंद्र अभी बहु कृष्ट नहीं पाता।

प्रमु स्वतन्त्र है। भ्रत जो कोई किसी को ब भ्रम से भ्रमत करता है वह मुक्ति पद को पाता भ्रीर प्रमु के समीप हो जाता है। प्रमु दवाणु है। भ्रत जो किसी पर दया करता है वह भ्रमरत्व प्राप्त कर कभी नहीं सरता। हर हाल में खबा रहना चुसी बात मुझ से कभी न कहना चुस्च-डुल के भ्रामात को गानिपूकक सहना परमे स्वर की भाजा है।

इनके बदले में स्वास्थ्य प्रमन्तता भीर सम्मान पाता है। इसलिए मनुष्य बुरे कामो से बचे भीर भलाई के लिए अपने बढ। ससार के किसी मनुष्य को दस्व देना किसी असम्वान काकलब्य नही है मेरेमित्र। द्याप तनिक इत असूलो पर घ्यान द किये मन्द्य को दनिया के रास्ते से निकाल कर प्रभ से मिलाप की घोर किस प्रकार ले जाते हैं। जो मनध्य को भ्रन्याय से कन्ट पहुचाना है वह प्रभु से दर हो जाता है। भलाई करना बुराई से परे ग्हना ग्रीर परहेजगारी का जीवन विताना पर मेदवर को प्राप्त करने का एक विशेष माग है। ग्रीर मिसी भी ईमानदार को जो मच्चे ग्रधों मे घमवन है दूसरों को कष्ट देने का ध्यान तक नहीं हो सकता धम एक सच्चा माग है जो प्रभुतक ज पहचता है। इस पर चर्ने वाला कभी भटकता नहीं। वह उपाय जो प्रमु से मिलाप में महा यक नो उस पर बाचरण करने से कौन करु पाना है ? मनस्य की गिराकट का मुख्य कारण दूसरो को दुख पहुचाना ही है---

बुराई या मलाई जो है करते। सदाजमका है वसाफल वे भरते।

मनत्य वृते वा भले काम के प्रभाव से कभी बचनही सकता। यह नियम वा मजबून थीर वारिक है सा ससार इसी नियम के शतु नार चल रहा है किसी के पांच नफलता चम है। है तो कोई प्रपत्ते (ध्यक्ति) ने हमजी भीर कोई प्रपत्ते (ध्यक्ति) ने हमजी भीर कोई प्रपत्ते (ध्यक्ति) ने हमजी भीर कोई । यह नियम नसे को तसा है रसी भरकी नहीं बच्चा। मन्ध्य पहाडो की कह रामों से जाकर ध्यने को ख्रिस्पुर, चाहे सम्मे को सागर की तक रिक्रं है।

विराए भीर चाहे शकांग पर उड जाए। पर इस ससार भरके राज्य में कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ कर्म ग्रपने परिएगम से पीछा छुडा सके। इसीलिए विद्वान ने कहा है कि जो मनष्य भौरो के माथ ब्राई अथवा मलाई करता है उनका परिशाम लौट कर उसी की प्रभावित करता है जिससे मासारिक द्व या सूख पैदा होता है भीर यदि भला काम फल की इच्छामे रहित हो जिस मे दिस्वावत्या बनावटका लगाव न हो तो वह (मलाई) कर्त्ता को मोक्ष की भीर ले जाता है। इसलिए वर्म की यह झाज़ा है कि बुरै कामो का त्यागकरनाही चाहिए ग्रीर नेक काय यदि फल की हब्दि रखकर किया जावे तो वह सासारिक सुख देना 🕏 पर यदि भलाई फल की सनिच्छा से की जाए तो उसका फल मोक्ष है। अव मनष्य को अधिकार है कि जिथर को चाहे प्रपनी गनि बढाए-शरव का फरमान है

नेकी से नारे काम कर। मत बदी कर भल से मत किसी को बदनाम कर॥

बन प्राप शुभ कामो पर जो सुबा का कारण है जन पर ध्यान द— शुद्ध मंत्रि स॰ना ज्ञान महनशीलता होशियारी मत्यना पनिवता इदिय यमन मनोनियह सुब्त दुब्त की प्रधिकता में निलयना बुरे कार्मों से भय सत्कर्मों में निडरता दया, प्राराम सतोध प्रक्तित दान शुभ कामना नवो सेपन्हेज ध्यादि धच्ची प्रादत प्रभु की और ले जाती हैं। जिन ब्यूबियों से सब को नाम धीव ससार में शांति स्थापित हो वहीं दिवन क्या मानव्य का सुक्य कत व्य है

जिन बुरे कामो से मनध्य स्वय कष्ट उठाना है और औरो को-कष्ट पहुचाता है वे सब दुष्टो के प्रिय दुगुरा ५ हैं जो निस्नलिखित हैं—

भौर जिन मनध्यों में ये गुए। हो के

देवता कहनाते हैं। देवता का कोई

विशेष प्रकार का शरीर नही होता।

देवता तो गुरगवान को कहते हैं।

भक्तान बुराई करना, क्रुविचार, (वेच एव्ट ११ पर)

## श्रेष्ठ मानव जीवन निर्माण : साधन शील और उसके अंग

नीतिकारों के शब्दों में

धाचार्यं दीनानाथ सिद्धान्तालकार



महाभारत बान्तिपर्व, राजधर्म प्रकरण के बध्याय १२४ में दुर्वीचन धौर वृतराष्ट्र-पुत्र-पिता का सवाद है जिसमें भोष्मपितामह, युषिष्ठिर तबा भ्रन्य कई विद्वान् भी उपस्थित वे। इसका प्रारम्भ वृतराष्ट्रद्वारा पुत्र दुर्योभन को सतप्त देख कर इस प्रक्त से होता है कि तुम्हारे इस प्रकार सतप्त होने का क्या कारण है जब कि तुम्हारेपास लोकिक सुख समृद्धिक सब साधन उपस्थित है। दुवाधन स्बभावत पाण्डवा से बडी ईव्या करता था। उसने कहा-पुधिष्ठिर के घर म हजारो स्नातक स्वर्णपाको मे भोजन करते हैं जब कि मेरे महलो मे कुछ संकडा स्नातक भाजन करने बाते है। इसी प्रकार दुवींबन ने बस्त्र, घरव इत्यादि घन्य कई जड बेतन वस्तुमा और पशु पक्षिया का भा जिक्र ।कया । धृतसब्द्र न पुत्र की ईच्या, द्वव के त्याग का उपदेश दते हए कहा--

हुपुत्र । यदि तु युधिष्टर सद्वस्त स्वतः सम्बद्धाः करना बाह्या है ता सालवान् वन । तब दुर्याधन का यह पूछना स्वाभाविक हो या कि यह पूछना को यह पूछना का हितहास सुनात हुए सक्नो के एक क्यन के प्रमाण क्यां का के माणे कि निम्न वर्णन किया — मर्याद् (१) वर्ष (१) वर्ष (१) सर्थ (१) सर्थ (१) सर्थ (१) सर्थ (१) सर्थ के म्रान्स स्वाद् (१) वर्ष (१) सर्थ (१) सर्थ (१) सर्थ (१) सर्थ (१) सर्थ हो स्वाद् स्वार स्वार

किसी के भी प्रति मन, वाएी, कर्म से द्वाह न करना, दया, यथाशक्ति वान, यह सील कहा जाता है। प्राचानकाल के नीतिकारों—मर्जु हिर श्रृष्ठर, वाएक्य ईत्यादि ने "शील" का कुछ सचिक विस्तार से विवेचन क्या है। इनके वचनों को हम यहां उपस्थित करते हैं। शीलवान व्यक्ति के गुरा-भनेंटरि

सन, बचन और शरीर से सक्त के क्यों के स्वाप्त के स्वप्त सामकर सपने हवा सामकर प्रपने हवा सामकर प्रपने हवा सामकर सपने हवा स्वप्त के स्वप्त

तृष्ट्या का त्याग, समा बारण, मद का त्याग, पाप में प्रीति का त्याग सत्य बोलना, सज्जनों के मार्ग का मनुसरण, विद्वानों की सेवा, प्रजनीय व्यक्तियों का भावर, सनुशों के प्रति भी नम्न व्यवहार। भ्रपने गुर्गों को खिपाना, अपने यथा की रक्षा, बुक्षियों के प्रति वया यह सरपुर्वों के लक्षात हैं।

#### शील सर्वभेष्ठ सुवात है—

वन सम्पत्ति की घोत्रा सज्ज-नता, सूरवीरता की घोत्रा, वाक् स्यम, (बढ बढ होंग न मारना, झान की घोत्रा, धान्ति, विद्या की क्षोत्रा नमता, चन की घोत्रा सुपान को दान, तप की घोत्रा, कोच न करना, प्रमुता की घोत्रा, कमा धौर वम का पूच्या निष्छल व्यवहार है। पर इन सब का मून घोल सदाचार सर्वश्रेष्ठ है।

#### विदूरनीति

वो धानत हुए वैर को नही मह-काता, न वसण्ड करता है, धपने की होन नहीं जताता है "दुर्यति में पड़ा हुँ" ऐसा कहकर प्रकार्य नहीं करता धार्य उसे परम खार्यशील कहते हैं।

भपने सुख में बहुत हुएं नहीं करतान ही दूसरे के हु ख में प्रसन्त होता है। भी देकर पदवासाप नहीं करता, वह सत्पुरुष भाव शील कह-साता है।

इस ससार में पुरुष का श्रील ही

चाजस्य नीति

(१) विद्याग्रम्यास मे, परिवार भील से, गुगा स श्राय श्रीर क्रोष नेत्र से पहचाने जाते हैं।

(२) रूप की शोमा गुण से, कुल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सफलता से और घन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(३) गुण्हीन व्यक्तिकारूप, शील से टीन काकुल प्रयोगमेन श्राने श्राने से विद्या, और व्यवहारमेन से घन कानाश टीता है।

(४) जिसके पास विद्या नहीं, तप नहीं, दान नहीं, शोल नहीं, गुरा भौर धर्म नहीं ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप में मृग के समान विच-रते हैं।

इस प्रकार शील के सम्बन्ध में प्राचीन नीतिग्रन्थों में जो विविध-रूप बतायें गये हैं, उनका वर्शन करने के बाद घृतरास्ट्र अपने पुत्र दूर्योघन को ग्रन्त में कहते हैं—

हेपुत्र । यदि त्युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है, तो इस प्रकार जीवनका तत्त्व जानकर सोलवान वन ।

> के सी ३७/बी ग्रशोक विहार, दिल्ली-४२

## यज्ञोपवीत-महिमा

(एक गीत)

यज्ञोपवीत लेक स्थुदको निहारना है। जीवन सुवारने का सकल्प धारना है॥

मुक्य है, जिसका यह नष्ट हो जाता

है, उसका न तो जीने का प्रयोजन

भीर न वन से उसे कोई लाभ होता

भयवा कुल का मद होता है। बह-

कारियों के लिए यह मद उन्मादक

होते हैं किन्तु सज्जनो के लिए यही

चरित्रेहोन का कुल (उत्तमकुल

में जन्म) प्रमारण नहीं, ऐसा मेरा

विचार है। नीच कुल में उत्पन्त का

वृत्त (सदाचार ही उसकी विशिष्टता

दमन का साधन होते हैं।

होती है) ।

विद्यामद चनमद, तीसरा देश

हर भूठ की तरफ से मुहबपना फेरना है। सच्चे बतो का पालन करने की प्रेरणा है।।

तपत्याग साधना को हर दम उभारना है। जीवन सुधारने का '।।

गायली जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना। दुष्टो की सगति में हरगिज न पांव घरना॥

भगवान् को कभी न दिल से बिसारना है। जीवन सुधारने का : : !!

समभो येतीन ऋष्ण हैं कन्चेपे तीन वागे। जब तक हैं प्राण इन से व्यक्ति कभी न भागे।।

निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन गुजारना है। जीवन सुधारने का

पतरो की टहल सेवा देवों की उचित पूजा। ऋषियों सग जैसा कर्तव्य है न दूजा।।

माता पिता गुरु के ऋरण को उतारना है। जीवन सुवारने का ै॥

... नेको के काम करके तत्काल भूल जाना। निष्काम भाव होकर ग्रीरो के काम ग्राना।।

शिक्षाकासूत्र है यह मन में विचारना है। जीवन सुधारने का

सुभ चिह्न द्यार्थों का यक्नोपवीत है यह। सबश्रेष्ठ लोगपहने ऋषियों की रीत है यह।।

दुनिया में ''पिषक'' इस के यश को निखारना है। जीवन सुवारने का • ॥

लेखक--प० सत्यपाल 'पथिक''

## यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में

## ऋषि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

ले --- जगदीश भ्रार्य, सिद्धातरत्न, 'विद्यारद' सासाराम

दशन दश धानु से बना है। शका धर्य है दे ना। देसता तो भो को र है — कीट पनगादि सभी खते हैं। परन्तु यहा देखना एक बेशेब धर्म में धाया है। दार्शनक बन्तन में निवेचनात्मक दण्टि से बीबन जगन को देखना ही दर्शन हैं।

दर्शन से दो मुख्य तत्य है—प्रष्टा ग्रीर हस्य भीर दोनों के महस्रोग से बना है दर्शन । यह सारा कहाण्य स्थय है। प्रष्टा ग्रात्मा है। दर्शन शास्त्र के किसी विशेष विचारचारा से प्रपने को सम्बन्धित रबने वाला व्यक्ति वार्शनिक कहा जाता है।

मनुष्य भीर दार्शनिकता का भट्ट सम्बन्ध है। बिना दर्शन ('Anilosphy) के मनुष्य रह ही नहीं सकता।

दार्जनिको को मैं तीन कोटिया मे विभाजित करता है। प्रथम तो दे हैं जो टेवल पर बैठकर दर्शन की बात करते हैं उनके विचार जीवन से कोई मेल नहीं रखते हैं। दूसरे वे हैं जो केवल दर्शन के हो लिये दर्शन-शास्त्र का ग्रध्ययन करने हैं। वे प्रपने क्रोन को दार्शनिक विचारों से इस-लिए पम्प करते हैं ताकि दूसरे लोग उन्हें दाशनिक समक्र। तीमरी कोटि मे वे बाते हैं जो स्वभावत दार्शनिक होते हैं। उनका चिन्तन यथार्थवाद से समन्त्रित रहता है उनके दार्श निक विचारों से मानवता लाभान्वित होता है। ऋषि दयानन्द इसी कोटि के टाजनिक थे।

स्त्रामी दयानन्द जन्मजात दार्श निक (Born Philospher) थे। वे भाव र या काल्पनिक फिलास्फर नही थे। उन्होने दशनशास्त्र का किसी गुरुक्त या विद्यालय मे ग्रह्मयन नही कियाया नके जीवन की दो घट नाएँ ऐसी हैं जो यह प्रमातिक ती है कि उहें मा के दूध की घड़ो के साथ ही दर्शन मिना था। पहली घटना तो चौदह वर्ष की ग्राय मे घटी शिवरात्रिके दिन। पिनाजो कटर शव थे भी ग्रापने पुत्र को भी होबोपासक बनाना चाहते थे। उसे क्षित्रात्रिका वत रखने के लिए प्रेरित किया। शिव की प्रलौकिक स्थचमन्कारिक कथायो को सुना कर बालक मूलज्ञार (दयानन्द का बच-

पन का नाम) की उत्साहित किया। मन जी के मस्तिष्क में यह दढता से जमा देते हैं कि शिवरात्रिको निष्ठा-पूर्वक व्रत रखने वाले भक्तो को शिव साक्षात दर्शन देते हैं। बालक मूल जी शिव मन्दिर में रात्रि के समय वतानव्यान में लीन है। तभी एक छोटी सो सामान्य घटना घटती है। कुछ चहे बिल से निकलते हैं भौर शिव प्रतिमा पर उछल-कूद मचाते हैं। मूलशकर इसे देख कर बादवर्य चिकत हो उठता है। उनके बाल मस्तिष्क मे प्रश्नो की विजलिया काँच उठनो हैं। क्या यह वही शिव है जिस की प्रलीकिक कथाधों को मैंने सुना है, जो अपने जिल्ला से सनेक मय-कर राक्षसो को नष्ट करते हैं अपने तीसरे नेत्र से नामदेव की अस्म किया है वह अपनी रक्षा इन सुद्र चुहो से क्यो नहीं कर पारहा है? क्या यह वही शिव है ? बालक प्रपनी शकाओं को पिता के समक्ष रखता है। पिता जो उत्तर देते हैं उस उत्तर से वह सतुब्ट नहीं होता है भीर तब बही निभयता से विता से कहता है कि मैं वत नहीं रख्या। वह घर पहचता है और वर्तको तोड कर भोजन कर लेता है। सच्चे शिव को प्राप्त करने का मन मे मकल्प लेता है उसे मूर्ति पूजा से विरक्ति हो जाती है।

शिवरात्रिको घटना से तीन बातो का पता लगता है— १ बालक मूल की जिज्ञासुबृति २ खच्चे शिव की प्राप्तिका सकल्प, और ३ निर्म-यता से प्रप्ति विचारो को प्रकट करना।

एक दार्शनिक के लिए जिज्ञासु होना पहली शर्न है। वेदात का पहला सूत्र है---

श्रयातो बहाजिज्ञासा ।

दूसरी बात यह बताती है कि
उस प्रत्यायु में भी अपने कठोर पिता
के समक्ष निर्भयता से अपनी शका
को रक्ष्या है। दार्घिनिक के लिए
निर्भयता का गुएा धावश्यक हैताकि
वह प्रपनी विचारबारा को ससार
के सामने रक्ष सके। तीसरी बात,
शिव की प्राप्त करने का कठोर वत
का लें। है।

बुसरी घटना-पाच वर्षी के बाद

घटती है। बालक मूल अपनी बहुन और चाचा के मृत्यु-दस्यो का साक्षान् देखना है। उसके बाल-मस्तिष्क में इस इस्य से एक विलक्षाएं प्रतिक्रिया होती है। प्रदन उठता है मृत्यु क्या है? क्या स्त्रीकों एक न एक विन मरना है? क्या मृत्यु से बचा नहीं जासकता?

दूसरी घटना से दो प्रश्न उत्पन्न हुए—१ सृत्यु क्या है ? २ इस से की बचा जा सकता है।

ऋषि दयानन्द का सारा जीवन निम्न चार प्रश्नो को सुलक्षाने में लग जाता है—

ताह— १ शिव क्या है? २ उसे कसे प्राप्त किया जाए?

२ उसे कसे प्राप्ताक्या जाए.' ३ मृत्यक्याहै? भीर ४ भीर उससे कैसे बचाजाए?

दर्शनद्वास्त्रका मी यही मुख्य विषय है। परमास्त्रक्या है? किस विधि से उसे प्राप्त किया जा सकता है? तथा मोझ क्या है? धौर उसकी प्राप्ति के क्या साधन हैं?

धत स्वामी दयानन्द एक जन्म-जात दार्शनिक (Born Philospher) के इसमे किंजित भी मन्देह नहीं।

ऋषि दयानन्द ने दर्शनशास्त्र पर अपलगसे किसी ग्रन्थ की रचनानही की। उनके स्वरचित ग्रन्थों में दार्श-निक सूत्र यत्र-तत्र बिलरे हैं। सत्यार्थ प्रकाण नृतीय सप्तम श्रष्टम, नवम ग्रादि समुल्लास मे प्रसगवश दार्श-निक मन्तव्यों के मध्ययन से पता चलता है कि वे उच्चकोटि के दार्श-निक थे। परन्तु कुछ विद्वानी का मत है कि उनके स्वकृत ग्रन्थों में जो प्रसगवश भारतीय दशंनो के कुछ मन्तव्यों के उद्धरण मिलते हैं, वे मन्तब्य ऋषि दयानन्द के न होकर उन दर्शनो का ही मन्तव्य कहना युक्तिसगत है। किन्तुमेरा विचार इस विवार से भिल्न है। मेरी बार ा है कि स्वामी जी ने भारतीय दशेंनी का आधार लेकर जिन मन्तव्यो का समन्वय किया है, उन्हें 'दयानन्द-दर्जन' कहना ही युक्ति सगत है। धाज की भाषा में यह कहा जा सकता है कि प्राचीन दार्शनिक सिद्धारों की दयानन्द ने एक नवीन शैली, नवीन बाबा में सुबोब सरल दग से उसे प्रतिपादित किया। 'नवीन कवर मे

पुरानी पुस्तक'।

स्वा• दयानन्द महाराख ने विविध प्रकारो से वार्शनिक तस्वो ना प्रतिपादन किया है। किसी सम्प्रनाय विशेष का अनुगमन नहीं किया है। उनके मन्तव्य सम्प्रवाय निर्पेक्ष तथा सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्ध रक्षते हैं।

श्री दयानस्य महाराज ने गख्य सूत्राराक शैली में प्रापने लघ ग्रन्यों में दर्शन तत्त्वों का निरूपण किया है। जैसे 'सायों हेवर रत्न माला' एवं स्वसन्तव्यामन्तव्य प्रकाश । इन लच्नतम पुस्तकों में दर्शन के मीलिक तत्त्वों का विवेचन प्रस्तुत हैं। यह हम नि सकीच कह सकते हैं कि दयानव्य एक मीलिक दार्थीनिक हैं।

यह बडे ही खेद की बात है कि धार्यसमाज ने संस्थागत रूप में उनके निरूपित दार्शनिक मन्तव्यो का कोई प्रामासिक भाष्य तैयार नहीं किया है। बाह्य उत्सवो, विश्लेष समारोहों पर लाखो रु का बजट बनता है। जो दो-तीन दिनो के तमाखे का नाटक कर समाप्त हो जाता है। इन उत्सवीं एव समारीहो से किंचित ही लाभ होता है । जितना लाम होता है उस से कही अधिक ही हानि होती है। काश । इन बजटों का दशाख भी उन के दार्शनिक मन्तन्यों के भाष्य में लगता तो आज विश्व मे दशनन्द. दसरे शकरावार्य के रूप में समास्त होते। हाय ! हमारी (हमारे विद्वानी) की मनमध्यता से हमारा फर्स्ट क्लास का दार्शनिक शाचाय पीछे पह गया है। ग्रस्त्।

ऋषि दयानन्द के दर्शन पर माधिकारिक ग्रथ बहुत ही ग्रस्प हैं। यह प्रयास भी व्यक्तिगत ही है। म्रमेजी मे दो पुस्तकें बडी ही भच्छी हैं। स्व॰ प॰ गगाप्रसाद जी उपा-ध्याय की Phoilosophy of Dayanand तथा उनके सुपुत्र स्वा॰ सस्य-प्रकाश जी की A critical study of Philosophy of Dayanad हिन्दी में उपाध्याय जी की ही एक लघु पुस्तक 'शकर रामानुष एव दयानन्द' भी अच्छी पुस्तक है। अभी हाल ही मे डा० श्रीनिवास शास्त्री जी, प्रो॰ दयानन्द पीठ कुरुक्षेत विश्व • ने दयानन्द दर्शन-'एक अध्य-यन' पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक कई हिट्यों से अञ्छी है। भी देव-प्रकाश जी गुप्त ने भी 'दयानन्द-दर्शन' नामक एक पुस्तक लिखी है। वे सभी प्रयास व्यक्तिगत हैं-सस्यारे गत नही। हा, डा० सस्यप्रकाश वी की पुस्तक, भाग प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने प्रकाश्वित की है।

स्वामी जी के दर्शन के बाबार पर प॰ उदयबीर की बास्त्री वे को

६ दर्शनों का भाष्य प्रकाशित किये हैं, करना है। यह ससार दुलसय है, वे भी धनुषम हैं। प॰ उपाध्याय जी ना 'शद्र तवाद', 'शांकर भाष्याली-चन', 'जीबात्मा', 'मैं भीर मेरा मग-बान्' (मूल पुस्तक बग्नेजी में 'l and myg d') एव भ्रास्तिकवाद ग्रादि प्स्तक भी दयानद दर्शन के मिद्धान्त के आधार पर उपलब्ध है। पर ये सभी पुस्तकें दयानन्द के मौलिक दशन के रूप मे नहीं हैं। शस्तु।

द्भव मैं द्भाः ने मुख्य विषय पर भाता हु। स्त्रामी दयानन्द का दर्शन एक यथार्थवादी दर्शन है (Philosophy free from scepticism and full of hope life and vitality) है, जो जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध र बना है। उनके सभी दार्शनिक मतव्यों को भगर हम यथार्थवादी रिष्टकोगा से उपस्थित करें, तो एक ग्रन्थ बन जायेगा। श्रीर दूसरी बात यह भी है कि मुफ मे-इतनी योग्यना एव क्षमता भी नही है कि इस विषय पर कोई स्वतत्र ग्रन्थ लिख्। इस लघु निबन्ध में उन के कृतिपय दाशनिक विवासें का श्रध्ययन प्रस्तुत कर रहा हू। मेरा यह लेख एक सकेत मात्र है। मार्य-वार्जनिक विदानों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे, 'दयानन्द-दर्शन एक यबार्चवादी दर्शन है' इस पर एक स्वतन्त्र प्रत्य की रचना करे।

#### यथार्थवाद से समन्वय

त्रैतवाद का सिद्धान्त-

इस सिद्धान्त में भोक्ता, भोग्य एव परमात्मा पर विचार प्रस्तुत किया गया है। भोक्ता जोव, भोग्य-अप्टजगत् है, तथा परमहत्मा इस जगत्काकर्ता-धर्ताग्रीर जीवो के कर्म फलों का प्रदाता है।

जड जगत् सुन्द एव दु-समय है। स्वामी दयानन्द ने इस सुब्दि की मुख एव दुल से मिश्रित माना है। बौदों का यह निद्धात कि जगत्मात्र दू लगय है 'मर्वस्य ससारस्य दु ला-स्मत्व' बौद्ध धर्म ससार को दु समय मानकर तथा इसे क्षाणिक बतना कर ससार त्यागने का उपवेश देता

शांकर-सिद्धान्त के अनुसार यह जगत् मिथ्या है, माया है। एक बहा ही सस्य है। बत बहा की प्राप्ति के लिए इस मिथ्या एव माया जगत को त्यागना ही जीवन का परम सक्य है। बौद्धों एव शंकर का दार्श-निक सिद्धान्त पलायनवादी सिद्धांत है। इनके स्वान पर दयानन्द का सिद्धान्त यह प्रतिपादन करता है कि ससार सस्य है यत इसका भीग करना है, संसाद से पलायन नहीं इसका निराकरण करते हुए दया-नन्द यह प्रतिपादन करते हैं कि ससार केवल दू समय नहीं है, सुबा भीर दूल दोनों सापेक्षिक हैं। बिना दुल के सल का ग्रानन्द नहीं मिल

'ससार पूर्ण उपभोग करने के निए है। ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त है। परन्तु इसका यह ग्रर्थ कदापि नहीं है कि चार्वाकों की तरह केवल सांसारिक सुखों को ही वाँछनीय बतलाया है। वे (स्वामी जी) भोग के साथ सयम की मावश्यकता पर रहता के साथ जोर देते हैं। यजुर्वेद के इस सिद्धान्त को जीवन में उता-रने को कहते हैं। 'तेन त्यक्तेन मु जी बा" अर्थान त्याम के साथ मीग करो।

जीव कर्मकरने में स्वतत्र है, ऐना प्रतिपादन कर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। कर्म स्वा-तत्र्य पर दयानन्द बहुत बन देते हैं। उनकी यह बारएग है कि मनुष्य स्वतत्र रूप से कर्म करके ही उन्नति के शिखर पर चढ सकता है, या पतन की खाई में भी गिर सकता है। मनुष्य ग्रपने कर्मी से ही 'देव', असुर पिशाच, राक्षस बन जाता है। दया-नन्द दर्शन नियतवादी नहीं है, पुरु षार्यवादी है।

जिस प्रकार जीव कर्म करने में स्वतंत्र है, उसी प्रकार परमात्मा उनके कमों को फल देने में भी स्वतत्र है। ईइवरीय व्यवस्था में जीवों की स्वतत्रताकी एक सीमा है वह झसीमित नहीं है। फल मोगने मे वह परतत्र है। परमात्मा स्वभाव से ही न्याय करता है, वह श्रन्याय कभी नहीं करता। बिना प्रवार्थ किये वह कुछ नही देना। दयानन्द ने स्पष्ट कहा है कि केवल प्रार्थना करने से कुछ नहीं मिल सकता। प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ प्रावश्यक है। सत्यार्थ-प्रकाश में लिखते हैं -- भ्रपने पुरुषार्य के उपरान्त प्रार्थना करनी चाहिए। जो परमेष्ट्रार के भरोसे भालसी होकर बैठे रहते हैं, वे महामूर्व हैं। क्योंकि जो परमेश्वर की बाजा है, उसको तोडकर सुख कभी नहीं प्राप्त

मुक्ति, उसका स्वरूप धौर उसके प्राप्ति के साधन---

ऋषि दयानंद ने इस विषय पर सत्यार्थप्रकाश भौर ऋ॰ मा॰ भूमिका में बिस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह प्रतिपादन किया है कि जीव स्वभावत पविक्र है, परन्तु ससार में भाकर सज्ञान्

एव प्रविद्या में फमकर बन्धन में पड बाता है। 'बन्ध' एव 'मोक्ष' का स्व-रूप बताते हुए कहते हैं -

'बन्ध-सनिमित्तक प्रयति प्रविद्या निमित्त से है। जो जो पापकर्म ईश्वर मिन्नोपामना प्रजानादि सब दुल फल करने वाले हैं, इमीलिए यह बन्धन है, कि जिसकी इच्छा नहीं भीर भोगना पडता है।

मुक्ति-- ''ग्रर्थात सब दुस्रों से खुटकर बधन रहित सर्वथ्यापक **ए**वर भौर उसकी सुब्टि में स्वेच्छा से विचरता, नियतं समय पर्यन्त मुक्ति का मानन्द भोगकर पून ससार में बाना।"

मक्ति के साधन - ईश्वरोपासना मर्थान् योगाम्यास धर्मानुष्ठान, बह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, प्राप्त विद्वानो का सग, सत्य विद्या, सुविचार भौर पुरुषार्थ है।

'बार्योद्देश्यरत्नमाला' में भी यही व्याख्यात है।

ऋषि दयानद के समय मक्ति धौर उसकी प्राप्ति के सम्बन्ध में बढाही भ्रम फैलाबा। मुक्ति का धर्य कुछ लोगों के मतानुसार जीव का बह्य हो जानातथापरमात्मासे मिल जाना भर्यान् उसका 'लय' हो जाना वा। उसकी प्राप्ति का साधन केवल रामकुडल का नाम अपना तवा गगा भादि नदियों में स्नानादि माना जाता रहा। धर्कमण्यता धौर मुक्ति (भक्ति) दोनों कासम्बन्ध था। इन विचारघाराओं के प्रवर्तक कोई सामान्य जन नहीं थे। बल्कि ग्रपने युग के महान् दार्शनिक विद्वान् ब्राचार्य शकर, रामानुज, माध्य, निम्बार्क एव वल्लभ थे। ऋषि दयानन्द ने इस प्रवाह को उलट दिया। कर्मण्यता को मोक्ष से जोड-कर उसे यथार्थवादी बनाया। यह भी सत्य है कि बाज भी मुक्ति की गलत परिभाषा से लोग विषटे है, किन्तु म्वामी जी की विचारधारा का भी प्रभाव कम नहीं पडा है। दया-नन्द ने साल्य दर्शन के बनुमार दुखीं से खटने का उपाय वर्तना ही पुरुषार्य बताया और इसी का फल मक्ति है, ऐसा प्रतिवादन किया । दु स तीन प्रकार के हैं।

(क) धाध्यात्मिक - वर्यात् श्वरीर सम्बन्धी पीडा जैसे ज्वरादि।

(स, ग्राधिभौतिक-दूसरे प्राशियों से दु खिस होना । जैसे सर्पादि तथा चौर डाकुमो से प्रताहित होना ।

(ग) माचिदैविक- प्राकृतिक षटनांभी से जैसे मूकम्प, बाढ, सूखा भोलों की बुब्टि, साइक्लोनादि।"

स्वामी जो ने दुलों का क्लासि-फिकेशन (वर्गीकरण) किया है। क्रम स॰ (क) भीर (ल) के द्वारा जो दुय मिलते है, उनकी रोकवाम करना, मानव के वश मे है। क्रम स॰ (ग) की रोकथाम हमारे हाथ में नही है। जो कि श्राज का विज्ञान भी इन्हें रोक्याम करने का प्रयास तो करता है, फिर भी ये हनारे वश में नही रहते।

मोक्ष से पुनरावर्तन---

स्वामी दयानन्द मुक्ति को धनन्त नहीं मानते । उनका यह सिद्धान्त है कि मक्ति में सूख भोगने के पश्चान जीव पून समार में लीटता है, यह प्रतिपादन बिल्कुल नवीन सा लगता है। ऋषि दयानन्द का मक्ति विषयक यह सिद्धान्त एक क्रांतिकारी विचार है। भारतीय चिन्तको को यह सर्वमान्य मान्यता रही है कि मोक्त के बाद जीव पुन शरीर धारए। नहीं करता है। भ्रपनी इस भारता को वे छान्दोग्योपनिषद् बहा सूत्र, एव गीता 10 के प्रमाणों से पुष्ट करते

दयानन्द धपने सिद्धान्त के प्रति-पादन में ऋग्वेद" के मत्रो को, सांख्य" को सूत्रों के प्रस्तृत करते हैं। युक्ति भीर तर्कसे भी अपने मत की पुष्टि करते हैं। वे निम्न तर्क प्रस्तुत करते

१ जीव के साधन परिमित हैं, वत उनका फल धनन्त केंसे हो सकता है।

२ यदिमुक्त जीव मोक्ष से पून न नौटें तो एक दिन ऐसा द्यायेगा कि ससार से जीव का उच्छेद हो जावेगा।

३ दुल के बिनासुल का ग्रनु-भव नहीं हो सकता। मुक्ति का धाकषं सा यही है कि जीव दूल के बाद सुप और सुख के बाद दु ख को धनुभूनि प्राप्त करे।

४ परमात्मा न्यायकारी है, यत होने वाले कर्मों का फल भनन्त नहीं हो सकता । स्वामी जी ने पूनरा-वृत्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर इस विचारको यथार्थ जीवन से जोडा है।

दर्शनों का समन्वय--

भारतीय एव पाइचात्य दार्श-निकों का यह मत रहा है कि भारतीय षड्दर्शनों में परस्पर विरोध है। स्वा॰ दयानन्द प्रथम दार्शनिक हैं, जिन्होने युक्ति, तर्क एव शास्त्रों के प्रमासा से सिद्ध किया है कि षड्-दर्शनों में विरोध नहीं है। दार्शनिको की यह धपनी कल्पना है, मनघडन्त सिद्धान्त है।

स्वामी जी ने षडदशनों में द्यवि रोघ कैसे माना है सो उन्ही के शब्दो मे देरहा ह।

जसे एक विद्या में अनेक विद्याओं के अवयवों का एक दूसने से भिन्न प्रतिपादन होता है. वैसे ही सकि विद्या के भिन्न भिन्न छ अवयवी का छ शास्त्रों में प्रतिपादन करने में इनमें कुछ भी विरोध नहीं है। 10 इस विषय पर स॰प्र॰ के नतीय एव म्रष्टम समा मे विस्तत रूप से विवे-चन किया गया है। ऋषि दयान-द का यह प्रतिपादन बहुत ही जम-कारिक है।

इस सम्बन्ध से वर्तमान समग्र के प्रसिद्ध टार्कानिक स्व॰ हा॰ राष्ट्रा-कृष्णन के मत काभी धवलाकन पाटक कर। मैं इसे उद्धत करने का लोम सवरण नहीं कर सकता। वे लिखते हैं--

The six systems agree on a certain essentials. The acceptance of the Veda implies that all the systems have drawn from a common reservoir of thought All the systems protest against the acepticism of the Buddhists and erect a standard of objective reality and truth as opposed to an eternal unstable flux. All the systems accepts the view of the great world rhythm vast periods of creation maintenance and dissolution follows each other in endless succession 14

#### ईव्वर, बीव एव प्रकृति---

ईव्वर-सभी मास्तिक दाशं-निको ने ईव्वर की सत्ता में विश्वास प्रकट किया है। अगर मतभेद हैती उसके गुरा-कर्म एव स्वभाव के प्रति-पादन में। ईश्वर के स्वरूप का प्रति-पादन जोवन से सीघा सम्बन्ध रखता है। कसे सुनिये-

नास्तिकता-जो लोग ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हुए भी किसी एक विशेष स्थान में निवास मानते हैं। जैसे वैकृष्ठ लोक, क्षीरसागर, कैलाश पर्वत. सातवा भासमान भादि तथा ईश्वर प्रपने भनतो का अपराध क्षमाकरता है धर्मकी स्थापना के लिए मनुष्य रूप मे जन्म लेता है इत्यादि, ये सिद्धान्त मनुष्य की पाप करने से नहा रोक सकते। क्यों कि वह यह समभता है कि परमात्मा तो एक विशेष स्थान पर निवास करता 🖁 मेरे प्रपराघो को नही देख रहा है। भगर में करता ह भी तो भी उमकी स्तुति, प्रार्थना करने पः वह

मभेक्षमा कर देगा। यह भावना ग्रपराधो को बढावा देती है। जब जब ध्रथम बढता है, ईश्वर ध्रवनार ग्रहण करेगा भीर घम की स्थापना करेगा । धम की स्थापना और श्रधर्म का उच्छेदन मानव वश की बात नही है। यह भावना सकमण्यता फैलाती है। इसे ही नास्तिकवाद कहते हैं।

मास्तिकता-- मास्तिकवाद का जीवन की यथार्वता से गहरा सबध है। एक भौतिकवादी (धनीश्वरवादी) की जीवन पद्धति भीर एक अध्या-त्मवादी (ईश्वरवादी) की जीवन-पद्धति मे बहुत बढा अन्तर है। भौतिकवादी का लक्ष्य प्रानन्द प्राप्त करनाहै। चाहे वह किसी भी ढग से मिले यही उनके जीवन का मोटो

"ऋण कृत्वा वृत पिबेत् - अग-नालिंगनाजन्य सुसमेव पूर्मर्यता'। जो यह मानते हैं कि मैं केवल शरीर ह। मेरा यह प्रथम भीर भन्तिम शरीर है। वह शरीर के अतिरिक्त कुछ और सोच ही नही सकता। समाजवास्त्रियो ने इस भावना की नष्ट करने के लिए विविध उपाय सुमाये हैं। परन्तु चतुर चालाक मनुष्य इन उपायो से बचने का भी रास्ता निकाल ही लेता है।

ग्रव बाइये सच्यात्मवादियो के जीवन पदति का निरीक्षरण कर। **ई**च्चरवादी का सिद्धान्त है---

"मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्ष —मैं सब प्राणिको को मित्र का दिन्ट से देखू। "सर्वे-वेदा यत्पदमामनन्ति तपासि सर्वाणि च यहदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्त पद सप्रहेश इवीमि '---श्रवीत जिस पद का सभी वेद वर्गान करते हैं. जिसके लिए सब तप भादि वत किये जाते हैं, जिसकी इच्छा से ही ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य का पालन करता है, वही ईश्वर है। सभी भूत-प्राशियों को मित्र की द्विट से देखने वाला भ्रास्तिक किसी से वृत्मा द्वव नहीं करेगा-ईश्वर प्राप्ति के लिए वह ब्रह्मचय का पालन करेगा। जिसका भादश ईश्वर प्राप्ति नहीं है. वह ब्रह्मचर्य का बारण क्यो करेगा। उसके लिए तो ललनाओं का मालि-गन ही परम पूरुवार्थ है।

पाव टिप्पणिया--

- १ यजुर्वेद ४०।१
- २ स्वमतब्यामतब्य प्रकाश (ले॰ स्वामी दयानम्द)
- ३ सत्यार्थप्रकाश सप्तम सम्ब
- ४ स्वमतव्यामतव्य प्रकाश मन्तव्य स॰ ११, १२, १३

## दिल्ली श्राय प्रतिनिधि समा के उपदेशकों के कार्यक्रम महात्मा रामिकशोर वैद्य के कार्यक्रम

१४ से १६ मक्तवर ८४ रामायस की कथा बानन्द निकेतन दिल्ली २० से २७ मनतवर ६४ यज्ञ-प्रवचन प्रात नी॰ सानसन्द जी निवास बी ४/३ कृष्ण नगर दिल्ली

२८ से ३१ अक्तुबर ८४ भार्यसमाज प्रनाप नगर दिल्ली १से दनकस्बरद्ध धार्यसमाज धमर कालोनी दिल्ली ११ से १७ नवम्बर ८४ भागसमाज बालीमार बाग दिल्ली २१ से २७ नवम्बर ८५ श्री राषश्याम गुप्ता के निवास स्थान एक्स २६८१ रधुवरपुरा न० २ दिल्ली

## श्राचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी के कार्यक्रम

२४, २६, २७ वक्तूबर ८४ सोनी रत (हरियाणा) २८ व २६ शक्तुवर ८४ प्रवचन, रात्रि पहितम विहार दिल्ली १, २ ३ नवम्बर ८४ भार्यसमाज जबाहर नगर पलवल ४ से १० नवम्बर ८४ मार्यसमाज वसई दारापुर दिल्ली

दोलकवादक श्री ज्योति प्रसाद श्रार्य के कार्यक्रम १४ व १४ सक्तवर ८४

वेद सस्वान राजीरी गार्डन १६,१७ १८ अक्तूबर दश्याम प्रचार प्रशान्त विहार, दिल्बी २८ से ३ नवम्बर ८४ धार्यसमाज प्रताद नगर दिल्ली ४ से १० नवम्बर ८४ मार्यसमाज बसई दारा पुर दिल्ली

## पं० सत्यदेव स्नातक रेडियो दुरदर्शन कलाकार के कार्यक्रम

१४ व १५ वक्तुबर ८४ वेद सस्वान राजीरी गार्कन १६, ७, १८ अक्तबर ८४ प्राप्त प्रचार प्रसान्त विहार दिल्ली १८ से २३ अक्तूबर ८५ वेद भारती प्रचार समिति राजौरी गाईन २४, २६, २७ मन्तूबर ८४ वैदिक प्रचार समिति सोनीपत २८ से ३ नवस्वर ८% मार्यसमा न प्रतापनगर दिल्ली ४ से १० नवम्बर ८३ मार्यसमाज बसई दारा पुर दिल्ली २४, २४, २६ नवस्बर दश मार्यसमाज गाजियाबाद (उ॰ प्र०)

## पं० वेदव्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

**धायसमाज** साकेत दिल्ली १४ से १६ भनत्वर ८४ वैदिक प्रचार समिति सोनीपत २४, २४, २६ मक्तवर ८४ २८ से ३१ मन्त्वर ८४ बार्यसमाज लाजपत नगर १ से १० नवम्बर ८४ श्रार्वसमाज ग्रम र कालोनी दिल्ली ११ से १७ नवम्बर न्थ वार्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली

## पं॰ चुन्नीलाल भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से २३ अक्तूबर ८४ २४ से २७ अक्तूबर ८४ २०व २१ सक्तूबर ८४ १, २, ३ नवस्वर ८४

अवकाश रहेगा मार्यसमाज कोसी कला (मधुरा) बार्यसमाज विनय नगर दिल्ली बार्वसमाज जवाहर नगर पलवल (हरियारगा)

प्रमार्थोहस्यरस्नमाला व्याख्यात रत्न स॰ २४।३० ६ सारुयदर्शन--''खब विविध दु सात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपृरुषार्थ ।"

म॰ १ सु॰ १ (बाध्यकार स्वा• ब्रह्मसूनि परि-वाजक, प्रकाशक-वार्य सा॰ म॰ लि॰ मजमेर)

७. स॰प्र॰ समु॰ ह पृष्ठ ३८० (प्र॰ रामलाल कपूर ट्रस्ट) द झान्दोग्यो०--न च पूनरा-

वर्त्तन्ते दाश्याश १ वेदान्तवर्धन, शारीरिक सत्र 'धनावृत्ति' सब्दादनावृत्ति सब्दात् (RIRISS)

१०. गीता 'बय् गत्या न निय-र्तन्ते तदाम परम गमे ।" १४।६

- ११ ऋ०म०१स० २४म०१-२ १२ सास्य दर्शन "इदानीमिव
- सर्वत्र नात्यन्तोच्छेद ।" १।१६६ १३ ' ऋ० दयानन्दप्र तिपादित वैदिकदर्शनम्" सम्पादिका एव सन्-वादिका-प॰ प्रश्ना देवी ग्रामायो. पा॰ कन्या महाविद्यालय, वारासारी पु॰स॰ २३।२४ । इस ग्रन्थ के मल लेंसक काशी पढित सभाष्यका राष्ट्र-पति सम्मानित म० म० डा० गोपास शास्त्री दशन केशरी (शब स्व०) जी
- **?Y** A critical study of Philosophy of Dayanand By Dr S. Prakash D Sc Page 93-94.



(स्व > श्री केलबचन्द्र बूग्गा) ग्राप का जन्म प्रजाब प्रात के

जालवा जिला में हुआ। इनके पू० पिता प॰ दौलतराम जी यु॰ पी॰ शिक्षा विभाग में शिक्षक थे अत उनका निवास स्थान मेरठ ग्रयका रुडकी ही रहा। इनकी लगभग सारी शिका मेरठ में हुई। इतिहास में एम ए करने के पश्चात इन्होंने L L B को परीक्षापास की।

बकालत का धम्यास करने के लिए इटकी गए। परतु इस व्यवसाय की मलिनता को इनका न्यायप्रिय हृदय सहन न कर सका। दस महीन के पहचात ही इनका मन उचाट हो गया ।

इन्होंने प्रपने पिता से अनुरोध किया कि वे उन्हें अपने व्यवसाय मे ही लगाए। इनके पिताजी ने इन्हें शिक्षाप्रशिक्षण प्राप्तकरने के लिए टिमरनी (JP) में भेज दिया। हैक्योग से इनके वहा पहचते ही

मानव जानि का प्रयेक सदस्य

ध्रपने कमा के साधार पर ही वास्थ

बनराचाहिए। जन्म के स्राधार पर वण श्यवस्थाको स्वीकार करके

समाज ने अपने ग्राप को ग्रनेक

प्रकार के सकटो में चर लिया है।

क्राज मानव समाज भिन्न भिन्न

समनायो । बर कर मानव मात्र का

ही ग्रहित कर रहा है। अपने

हाया ग्राने ही पर मे कुल्हानी

(विज्ञापन परिशिष्ट)

## स्व० श्री केशवचन्द्र बग्गा के प्रति एक श्रद्धांजलि

जन्म--१८ सितम्बर १६११

मृत्यु १६ सितम्बर १६८४

बहा का विद्यालय ब द हो गया परत् किमी प्रकार ने यह व्यव्दवा के एक स्थानीय स्कूल में शिक्षक पद को पा गए और वही रहने नमे। यह एक मादर्श शिक्षक थे शिक्षण काय से **धत्यत प्रम था।** इतिहास राजनीति के अतिरिक्त अग्रजी भौर गणित (उच्च गणित) पर पूर्ण अधिकार था। छात्र इनसे ग्रत्यन प्रम कन्ते थे भीर सहिशक्षक इनके ज्ञान से लाभ उठाते थे। समय पालन तथा क्तब्यपरायग्ता इनके विशेष गुरा थे।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री हरि शकर परसाई इनके शिष्य रहे उन्होंने हिंदी की पविका में प्रपने मन्भव लिखते हुए इनकी बनी प्रगसा की है। वे लिखते हैं-

हमे एक शिक्षक पढाते वे कशव चढ्रवग्गा। उनके कक्षा मे माते हो हम प्रसन्तना से नाच उन्ते वे भीर सोचा करते थे कि हम भी ऐसे ही शिलक बनगे। उनके पढाने का तरीका हमे ग्रत्यन रुविकर लगता

इसके अनिरिक्त फिल्मा ग्रक्षिनेना

श्रशोक कुमार और किशोर कुमार भी इनके शिष्य रहे हैं।

विवाह के पश्चान यह देल्ली मे आपाए। यहाक्छ दिन एक Bank में काय किया परतु मन नहीं रमा बत इन्होने दिल्ली के सरक री शिक्षक प्रशिक्षण विद्यारय मे शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त किया भीर देन्त्री के सप्रद्धि स्वत से श्री महावीर जन हायर सकतो स्कूल मे शिक्षक बन गए वहा पर भी इन्होने ग्रपनी कत यपर यसता तथा निइस्तन स्वभावस पर्याप्यापारम किया छात्रों के प्रनिट का व्यवहार क्लोरप न्तुप्रसमय नोना था यनी कारण है कि सेबा-निवर्त्तिके पदचात भी वे इनके दशना को आपते रहते थे । न केवन छात्र वरन शिक्षक भी इनके जान में लाभ उठाते बे तथा भपनी समायाश्री का हल क वाते। इनका प्रग्रजी का जान श्रद्ध होने के कारण नथा गरिएन पर ग्रधिकार होने के कारण इन विषयों के लेखक भी इनकी सहायना लेते थे।

इनके चरित्र में सत्यता और सिद्धात तीनो कृत कृत कर भग हथा WT :

प्राय कहा करते। थे मैं मेरठ श्चार्यसमाज में नियम-पुवक जाया करताथा। वही पर मुर्भे ग्रायसमाज के प्रति विश्वास उपन हआ। भायसमाज के सिद्धातों के प्रति इनकी धास्था थी ग्रत कोई ग्रध-विश्वास या रूढिप्रियमा इनके स मने नही ठहर सकती थी जाति गति नथा जन-पूजा के घोर विरोधी थे चाहे कोई भी ग्रवसर हो व किसी परग्परागत अधिव नास को नोड देते थे हा ईश्वर भिनत के भक्तो से काफी प्रमुखा।

यह सच्चे साहित्य प्रमी थे। मग्रजी नथा उद्स हित्य के ऊपर तो इतना ग्रिषकार था कि आप उनके पास घटो बडे रहिए वे आपको ब्रयजो को नथा न की कविनाएँ रहते। इनको ईइवर ने विलक्षण सनाते प्रतिभात्यास्मरगाशकित दाथी। देश विदेश के राजननिक इनिहाग के अनिरिक्त यह भ्रायसमाज के इति हास तथा इसकी गतिविधियो की परी चानकारी रखते थे।

इनके चरित्र में कुछ ऐसे गुला थे। जा सब को प्रशाबित करते रहते थे इनकासबसे वनागुण था प्रनु शानन प्रियना य प्रभाजो केवल बाहर हानहीं घर में भी चनता रहत

गटा कारग है कि मेवा निवृत्ति के पश्चात भ इनके स शिक्षक और छात्र इनके पास आरते रन्ते थे भौर श्रद्धा से शोश भक ते थे।

> प्रकाशवती शास्त्री जन मनिर नई दिल्ली

## जातपात-मानवता का शत्र

डा० ग्रानन्द सूमन

मारने वाली बात को साथक करना ही उसका ध्येय बन गया लगना है। प्रसम्बद्ध जातिबाद ने सम्प्रमा मानव नमाज व विश्व के प्रति एक विकट समस्या उत्पन्न कर दी है। बाबता विभिन्न पथो के अनुरायी भी धपने को जाति के रूप मे मानने उत्ते हैं। नहीं किसी प्रपत्र (फार्म) मादि मे जाति का कोब्ठक यता है, वहा तुरन्त हिन्दू, मुस्लिम ईमाई वंन बौद्ध सिन्त महत्त्व ग्रन्थान्य शब्दो का प्रयोग करते हैं। वास्तव मे यह 'क्रोच्ठक होना ही नहीं चाहिए। वेदों में वृत्त-व्यवस्था का व्यक्त कर्न के हो, सेवा कार्य पेडी में होता है। किली बाह्य गावाद जहां वेदय का बहस्रत

भाषार पर है जन्म के भाषार पर नही। इस से भी आगे बढकर वेद व्याख्यानुसार- बाह्मशोऽस्य मन-मासीद बाह राजन्य कृत । ऊरू नदस्य यद्वेष्य पदम्या ७ शही जा-यत ।। धर्मात मख बाह्यए है जो ज्ञान पूर्ण है। भुजाए क्षत्रिय हैं जो रक्षा करैती हैं। उदर वैश्य है जो जीवन सामग्री वितरण करना है। पैर शुद्र है जो जीवन को गति प्रदान करते हैं सेवा करते हैं। यदि इस मत्र के प्राचार पर हम देख तो एक ही व्यक्ति चारो वर्गों में आता है प्रत्येक व्यक्तिका चिन्तन मनन मस्तिष्क से, रक्ता-कार्य हाथो से, शरीर को एक-वितस्श गावि उदय

दो हजार वय की गुलामी ने हमे चिन्तन शुन्य बना दिया। हम ग्राष संस्कृति व सत्य घम का मार्गत्याग कर व्यक्तिवादी और सम्प्रदायवादी विचार धारा के रग में रग गये। तथ।कथित शासको ने हम पर मन चाहे ग्रत्याचार किये तथा हमे व हमारी विश्ववारा संस्कृति को उजा डने के लिए हमारी शिक्षा पद्धति का स्वरूप विपरीन दिशा में मोड दिया। इसका भी बना प्रभाव नमारी जीवन पद्धति पर पडा। दूसरा हमारी स्व नन्त्रता के परचान जो नैता हमे प्राप्त हुए व भी आर्थ संस्कृति से परिचित न ये उन्होंने जिस प्रदेश मे ब्राह्मरण का पल हा भारी देखा बहा देश्वावहावैश्यवाद जहा गुद्रो का दना वहा गुद्रवाद को बरावा दिया।

भारम्भ मे हम बाह्यण क्षत्रिय ब्रादि के ब्राचार पर बटे, फिर घीरे-वोरे -प वियो सम्मानाथ दिये उपनामों को भी जानि माना जाने नग जैसे दोश्निन चनुवदी त्रिपानी तिवारी रायमाहब रायजादा. ठाकूर पटान लान मादि मादि। इसा प्रकार गोत्र उपनाम भी जाति बनते गये यहा तक कि कबीरपन्थी नानक के चेले मोहम्मद के चेले ग्रनी के चेल (शिया) सभी अपने को जाति बना कर प्रते हैं। मठ घोशो जैसः वातावरण वन गरा मानवता व वम दोनो नी विकृत हो गये विषाक्त हो गये। जानपौट तोटना बडा ग्रावयरक है। इस काय को प्रत्येक वृद्धिजीवी मिलकर करे। सबप्रथम हम मानव है तत्पश्चात् कर्म के आधार पर हमे जो भी वर्ण प्राप्त होना है वह हमारा वर्ध है। श्रत

किक देश अपने विदेश

## समाचार सन्देश

## साप्ताहिक सत्संगों का विवरण रविवार २० श्रक्तुबर १९८४

ग्रन्था मगल प्रताप नगर -पo त्तलसीराम आर्थोपदेशक प्रशीक नगर-स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती, ग्रमर कालोनी -डा॰ रचूनन्दनसिह, धानन्द विहार एल ब्लाक-महात्मा देवेशभिक्ष, इन्द्रपुरी श्रीमती प्रकाश-वती शास्त्री किंगज्ये कम्प-प॰ धमंबीर शास्त्रो विद्यावाचस्पति, गुजरावाला टाउन पार्ट-२-भीष्म-वत शास्त्री, ग्रटर कलाश न–१— डा॰ यु दयाल भूटानी गुडमण्डी-स्वामी प्रज्ञानन्द मग्स्वती गोविन्द-पुर-प॰ मुनिदेव भजनोपदेशक, चनामण्डी पहाडगज-प॰ कामेश्वर शास्त्री, जनकपूरी बी-२-प॰ देव-राज वदिक मिश्नरी, जगपुरा विस्तार—डा॰ कृष्णदत्त शर्मा, टैगोर गार्डन-प॰ स्रशोक कुमार शास्त्री, तिमारपुर—ग्रायंवीर रेश-जीतमिह रागा, तिलक नगर-प• ब्रह्मप्रकाश वागीश, देवनगर—डा॰ सुभाषचद शास्त्री, दरिया गज-ण• प्रखिलेश व्याकरणाचार्य, श्री निवासपुरी-प॰ राष्ट्रयाम शर्मा, नारायण विहार- व॰ रामवीर शास्त्री, प्रीतमपरा-प॰ सीमदेव शास्त्रो, प्रशात विहार- क॰ मनदेव शास्त्री, पञाबी बाग-प रमेशनन्द्र वेदाचार्य, बसई दारा पुर-श्री भ्रमी-चन्द मतवाला, भोगल-डा॰ बेद-प्रकाश महेरवरी, मौडलवस्ती-प॰, मुरारीलाल बेचन महावीर नगर- ब्रह्मप्रकाश ज्ञास्त्री, रासा प्रताप बाग-श्री ग्रमरनाथ कान्त. रघवरपरा-प॰ जय मगवान मण्डली. राजीरी गार्डन-प॰ हरिशवन्द्र धार्योपदेशक, रमेश नगर- भी नेत्र-पाल ग्रार्थ लक्ष्मीबाई नगर ई-१२०८-प० वेदप्रकाश शास्त्री, सोहनगज-महात्मा मुनिशकर वान-पस्थी, शादी सामपुर-प॰ बलवीर सिंह शास्त्री शालीमार बाग-स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती. परिवाजक--मार्थ नगर— मा॰ मोहन लाल गाँधी, मोतीबाग - ब्रह्मचारी वेदप्रकाश सार्थ।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग दिल्ली समा

## श्रायसमाज पंसा राड "सी ब्लाक" जनक पुरा. नई दिल्ली-४८ में वेद प्रचार सप्ताह

भार्य समाज मन्दिर के प्रागण मे उपस्थित जनसमूह के सम्मूख भार्य विद्वानी ने अपने भोजस्वी विचार प्रकट करते हुए कहा-

धाज देश की स्थिति गम्भीर है-भालगाववाद के नारे है। मनुष्य-मनध्य का प्रागाधानक वन रहा है ऐसे समय में हमें भी सतक रहकर धपने कर्नव्य कम का पालन करते हुए राष्ट्रहित मे भागे बढना होगा। भाज पजाब, जहापर कभी गुरु गोविन्द सिह जी तथा स्वामी दयानन्द श्रद्धा-नन्द, महात्मा हसराज बीर लेख राम ने प्रम और सीहार्द का वाता-बरण बनाया था भीर जगह जगह भार्य स्कूलो, डी॰ ए०वी० स्कूलो~ कालेजो की नीव रखी थी- उसका स्वरूप विकृत हो रहा है। ऐसे समय मे हमे एक जुट होकर महानऋषियो की प्ररेशा को लेकर अभी बढना है। विघटनकारी तत्त्वो को समाप्त करने के लिए योगिराज श्री कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से प्ररेशा प्राप्त कर जो हमा**रे** भादर्भ महान् पुरुष थे। उन्होने ही। ए० वी॰ शिक्षण सस्यामो को प्रगति का मृल्याकन भी उपस्थित जनसमूह को कराया।

इस समारोह के अन्य प्रमुख वक्ता थे --स्वामा मुनाश्वरानद जी. श्री दरबारी लाल जी,, हा॰ राघा-कृष्ण ठाकुर, प्रधान, वार्मिक एव सामाजिक महासघ जनकपुरी, श्री शिवकुमार सास्त्री (विकास पुरी), भीर विराट सुपुत्र श्री शिवकुमार जी यह कार्य बडे उत्साह एवं हवं भरे वातावरए मे ७ सितम्बर की सम्पन्न हुमा।

> (वैद्य महेन्द्रपाल सिंह धार्य) मत्री

## ११८४ ई० के वर्ष में दयानन्द श्रनुसंघान पीठ पंजाब विश्वविधालय से पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त विद्वान

डा० वेदपाल वर्णी

मापने शतपम बाह्यए तथा महाँव दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक धष्ययन प्रस्तुत कर १६८५ मे पी॰ एच० डी० की उपाँच प्राप्त की है। विद्वान् शोषकर्ताने सस्कृत में प्रस्तुत किये गये भ्रपने शीव प्रबन्ध में श्वरापम की वेदार्थ प्रक्रिया का विस्तार पूर्वक कहापीह कर महर्षि भाष्य से उसका समायोजन किया है। इसी प्रसग में वैदिक यज्ञी का स्वरूप, यजुर्वेद का प्रतिपाश द्यादि नाना विषयो की गम्भीर विवे-चना कोधकर्ता ने की है। डा॰ वर्णी ने भावने भावी शोधकार्य के रूप मे शतपथ बाह्मए। को विस्तृत ऐतिहा-सिक समीक्षा को ही चुना है।

## डा॰ राजपाल सिह

भारतीय वडदर्शन का झार्य-समाज की देन पर हा॰ राजपाल सिंह को इसी वर्ष उपाधि प्रदान की गई है। डा॰ सिंह ने धार्यसमाज के दार्शनिक विद्वानी के कृतित्व का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया 81

डा० धर्मदेव शर्मा ग्रापका शोध का विषय स्वामी दयानम्द रचित सस्कारविधि का गुह्मसूत्रो से तुलनात्मक अध्ययन बा। इस विषय के सदमं में सोध-कर्ताने विभिन्न ग्रह्मसत्री का अध्ययन कर सस्कारविधि प्रोक्त सस्कारों के विधि विधान से उनकी

तलनात्मक समीक्षा प्रस्तत की है। प्रजाब विश्वविद्यालय ने बार श्रोमपाल शास्त्रों की प्रेमचन्त्र के परवर्ती हिन्दी उपन्यासकारो पर मार्यसमाज को विचारधारा का प्रमाव शीर्षक शोध काय पर १६८४ ईं॰ मे पी॰ एच॰ ही॰ उपाधि प्रधान की है।

दयानन्द अनुसमान पीठ के भ्रष्यक्ष हा० भवानीलाल भारतीय के निर्देशन में सम्पन्न उक्त शोध कार्यों के अति क्त सम्प्रति स्वामी दयानम्द के यजुर्वेद भाष्य मे देवता तत्त्व, स्वामी दयानन्द की मस्कृत व्याकरण शास्त्र को देन, पुनर्जा-गरए। भान्दोलनो को दार्शनिक पृष्ठभूमि सादि विषयो पर भी शोक कार्य किये जा रहे हैं।

वेदपाल कार्यालय सचिव दयानन्द धनुसवान पीठ, चडीगढ

## कन्यात्रों को वेदाचार्य बनाने के लिए कन्या वेदगुरुकुलम बरेली में कन्यात्रों को प्रविष्ट कराइए कत्याधी को धारम्भ से बेद

पढाया जायेगा बनारस सस्कृत यूनि-वसिटी की प्रथमा, मध्यमा बास्त्री, वेदाचार्य परीक्षाए दिनाई जायगी। इन परीक्षाओं के द्वारा कन्याए हाई-स्कूल इन्टर बी ए एम ए परीक्षाएँ भी कर सकती हैं।

शाजकल के कल्यागुरकूली मे लडिकयो को साहित्याचार्य व्याकरण चार्य कराया जाता है। एक भी कन्या गुरुकूल ऐमा नही जहा कन्याम्रो को वेदाचार्य कराया जाता हो। धाश्रम तथा भोजन व्यवस्था गुरुकुल मे रहेगी। स्वतन्त्र स्थानीय कन्याएँ भी पढने मा सकती हैं। कन्या की भाय कम से कम दस बारह वध भीर पाचनी श्रेणो उत्तीर्ण हो। प्रथमा, मध्यमा, सास्त्री, वेदाचार्य कक्षाभी में भी प्रवेष हो सकता है यदि किसी ने पूर्व परीक्षाएँ पास की हुई हो।

निवेदक बेदाचार्य, प्राचार्यं विषयश्रवा व्यास एम ए. (सचावक)

तीन सौ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत अहरा किये।

मार्यसमाज डालटेन गज (पलाम्) बिहार में स्वामी श्रेयानव वैदिक यति की अध्यक्षता में वेद प्रचार का कार्य सम्पन्त हुआ। यजुर्वेदीय यज्ञ मे हजारा लोगी ने माहति प्रदान की। इस मवसर पर तीन सी (लोगो ने बज्ञोपबीत ग्रहरा किये।

> निवेदक वैद्य महेन्द्र

वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा एम ए

वेदाचार्या श्रीमती देवी शास्त्री एम ए. (मुस्याषिष्ठात्री) (धाचार्या) वेदमन्दिर १०३ बाजार मोतीलाल वरेली (उ० प्र०)

## बर्डे बढ़ों का सम्मान करो !

जिस राष्ट्र देश और नुजानि के क्यवित अपने पूर्वजो, बहो का श्रादर मान करते हैं उनके महान श्रीर श्रोद्ध कार्यों से प्रेरणा लेते हैं तथा पूरवाय र रते हैं वे सदा श्री, सम्प-न्तता ग्रीर वंभव के स्वामी होते है तथा सभी के बोच यश और कीर्ति के भी भागी होते हैं। 'अभिवादन शीनस्य ित्य बढीयसेवित । चत्वारि भाशीर्वाद मिले हैं भीर लोगो ने इनके तस्य वक्तते भायविद्या यशोवनम । जा व्यक्ति वद्ध लोगो की सेवा करत हैं भीर प्राभवादन शील हैं उनकी बायु विद्या यशा भीर बल बढते हैं।

ग्राज की समस्या भीषण है। परिवारों के विघटन के कारण बद्ध लोगो को बह सम्मान नहीं मिलता जो उद्देगरम्परा से मिलता ग्राया है वे कवल सुबह दूघ लाने या शाम को पार्क में टहलने तक ही रह गये है। बद्ध ोगी को धन प्रथवा सहा-अपूर्णिको अपक्षासम्मानकी स्राव-इयक्ता है। तारी में इस भावना की जागृत करने के तिए दिल्ली मे एक स्वय सेवी सम्था कार्यरत है-ऐज केयर इण्डिया ए ६७ साउथ एक्स-टेबान पार्ट ॥ नई दिल्नी-४८

इसो सस्या के सहयोग से जाकिर हुसैन कालेज साध्य के एन एस एस के स्वय सेवको ने बी के दत्त कालोनी भीर सलीगज कालोनी मे बद्ध लागे रास्थिति का सर्वेक्षण किया इस एन्नर्राष्ट्रीय युवा वर्ष मे इन छालो का दाना है कि जिन बद्ध लोगों को इन्होंने सूची वनाई

#### कर्मकाड

(पुष्ठ ४ न झाग)

कूकर्म बुगी नीयत ब्रे स्वय देखना, दुष्कर्म करना स्वार्थता आत्म-इनावा भीरता स्-ती नक्ताचीनी ठयर्थं क्रोध वर्मान्यता घमण्ड अयोग्य इच्छा नीभ नृष्णा बेहदा बोलना अनम्पना, व्रास्त्रभाव वरे सग मे प्रीनि सन्मार्ग मे ककावट---कहा तक कहें - विद्याभ्यास मे प्रशा भजानता भीर दृष्कर्मों मे प्रवृत्ति उस का भादश हो जाता है जैतान कोई विशेष प्रमारका देहचारी नही। जिसमे यह वरा याँ हो वह मनुष्य, शेनान है।

इन दोशों में से बहत से एक जैसे भीर एक हो ग्रथ रखने वाले जान पडते हैं पर ऐसा नहीं है उनमे बोडा-थोडा भेद है। जैसे तृष्मा व लोभ दोनो समान दीखते हैं पर उनके भर्य मे बोडा मेद अवश्य है ऐसा ही सब जगह जान ले। ये सब ब्री बादत किसी मनुष्य मे एक हो समय प्रकट नहीं होती। समय बाने पर अपने

है उनको वाछित सहायता ये छात्र ऐज केयर के माध्यम से भीर भ्रन्य सस्थान्या क माध्यम से उपलब्ध करायगे। बपून एक महाना बाद तथा ऐस हा अन्य अन्तराल पर इस कालोनी मे धाकर देखते रहेगे कि चन्हे महायत दो है गई या नही। इन छात्रों को बढ़ों का सेवा करते समय लम्बे जीवन के लिए दुधा की है।

इस सम्बन्ध मे शनिवार १२ धक्तवर को ग्रायोजित सर्वेक्षण मल्याकन समागेह मे श्री खशीक जन महानगर पार्षद ने रहा कि ळात्रो से ऐसी मावना उत्पन्न करने को खरूरत है कि वे अपने वड़ो का सरमात करे। मध्य समिमायण मे श्रो महर्षि ने कहा कि हम ऐसी पीटी तैयार कर जो बुढो का सम्मान करे। फिर हमे ऐक केयर जैसी सस्थाकी अक्टरता रहेगी। इस अवसर पर दिल्ली।वहवविद्यालय की डा॰ ऊषाबनजीं भीर ऐजकेयर के श्री एन डी जैन ने वृद्धों की सेवाकी भावस्यकता पर प्रकाश हाला । ऐज-केयर के ग्रध्यक्ष श्रीएन डी जैन ने कहा कि युवा शोगों में ऐसी भावना जल्याल करने को आवश्यकता है कि ग्रपने बडो का सम्मान कर। समा-रोड के ग्रायोजक डा॰ घमपाल ग्राय ने क्हाकि हमने इन्युवाछात्री को इस कार्यसे इसनिए जोटा कि वे प्रयते घर में बड़ी बटो का सम्मान करनामीख।

बल को बढाती हैं। एक के प्रकाश मे दमरी दब जानी है उनके बढाव-घटाव को जानने बाता मनध्य सद गुरगोका ज्ञारक व्दरी भ्रादनों से ग्रुपनापीला छुट नेताहै। इस नियम से ही माध्य मूर पाना है और प्रभु के समीप होता है। इस सय-माग पर न चलकर मनध्य द ख उराता है धौर बदनाम हो जाता है।

## श्रार्यसभाज शादीपुर साम-पर का वार्षिकोत्मव सम्पन्न

ग्रार्यसमाज के भवन में १६ सितम्बर से २२ मिनम्बर तक वार्षिक उत्सव धुमधाम से सम्पन्न हुछा । इस ग्रवसर पर श्री कृष्णदत्त ब्रह्मचारी श्री प्रकाश चन्द शास्त्री, श्री सुभाष-चन्द्र श्री ग्रशोक विद्यालकार श्री स्वामी योगानन्द तथा स्वामी प्रमा-नन्द जी आदि महानुभावो के द्वारा वेद प्रवचन हए।

यन्त्री, कलाराम

## अभी बाकी है।

महाबीर नीर' विद्यालकार गुरुकुल कांगडी

तुमने सब कुछ दियाहमे पर मन कादान सभी बाकी है। बिगया को बहार तो देदी सीरभ दान श्रभी बाकी है। हर झिषयारे पथ पर तुम तो जब उजियाला कर जाते हो। में सोचा करता तब मन में कुछ तम जाल प्रभी बाकी है. तुमने कृटिया के बदले मे. राजभवन के स्वप्न दिखाये। यहा धरमान धभी तो क्वारे, कितना दर्द प्रभी बाकी है तुम ने शासन के कारण ही, ये कानून बना हाले हैं। किन्तुहरकानून बृधा जब, मन-सस्कार प्रभी बाकी है तुमने हिन्दी के बदले मे म्रमुजी का मान बढाया। किन्तु जन-जन की भाषा का, ग्रंभ सम्मान झभी बाकी है ' तुमने त्फानों को बाघा, नदियों को कगन पहनाये। किन्तु परीक्षा-काल है यह तो कितना काम मभी बाकी है। कितना टीस अभी नवारी है, कितने दद विधूर फिरते। हर ग्रांसु अमृत हो जाये वह वरदान ग्रमी वाकी है तुमने बहुत निर्माण कर लिये ग्रीर योजना बहुत बन' ली। किन्तू चमन की खुशहाली का वह मधुगान अभी बाकी है

अपने धरो ८ +वश्यः प्रामिक काला व चमकंतर बनाइरा और 'जहें चन्द्रन की शांनी-भीनी एकंट से बददाड़ये।

तुमने मोमा की रक्षा मे,

कितने पहरेदार विठाय ।

किन्तू हमारा यश हो जिससे वह सभियान प्रभी बाकी है



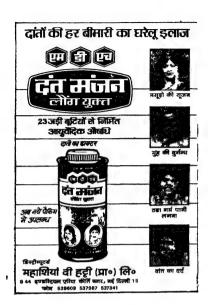


एम डी एव जिरुतकाई पाउन्डर बापा की सीकरी वर करता है तथा उह प्रकृतिक काला सर्गाधत व स्वस्थ बनाता है

ागा र राठा कावला रूप बहेडा **चवल व धन्य** म~िबत जणी वित्यों से बन या गया एम **डी एक** काकार पाउडर एक ग्रामात लाभकारी प्राकृतिक देव है उस्मे ोइ स्टायनिक पदार नहा है।

एस इ. एथ न्किनकई पाज्यर का ब्राज से ही नियमित्र प्रयोग की जिया।

महाणिया वी ुर्ने (प्रा॰) लि॰ 8 44 भृष्टिहरतानाकी अन्य सर्वे विन्ती 110015 9 539CJ9 537987 537341



## जातपात

(पृष्ठ १ का शेष) नाम के साथ वर्ण लिखना श्रावश्यक नहीं हम अपने नाम के साथ यदि कुछ न भी लगाय तो झति उत्तम ।

राष्ट्रीयता को विचार बारा व गष्ट्रभा कि अनुसार हमारा नाम-करण हो तो परेशानी क्या है? श्चरब मे रहने वाला व्यक्ति यदि श्रपना नाम श्रव्दल्ला रखता है तो इसमे बरा क्या है ? भारत में रहते बाले को अपना नाम द्याम, कृष्ण या इसी प्रकार का कोई नाम वदि उत्तम लगता है तो बूरा क्या है? हमें सम्प्रदाय के प्राचार पर नाम-करण नहीं करना चाहिए। हमें तो नामकरण अपनी राष्ट्रभाषा को दिस्टिगत रखते हए करना चाहिए। जातपात समाप्त करके ही मानव समाज वास्तव म मानवता के उत्तम व सत्य माग को स्त्राकार कर सकता है। केवल हिंदुशी में हा जातपात नही है नूसलमान ईसई व धना समुदायों में भी है। किन्तू हमें मान बता के नाते जातपान त्याग कर धपने नाम को सार्थक करना चाहिए

हम ज्ञान प्राप्त कर मानवो को ज्ञानोपदेश द तो हम ब्राह्म एत हैं। हम बीर्य रक्षा कर ब्रह्मचय का पालन कर बल प्राप्त कर व समाज की रक्षा कर तो हम समिय हैं। हम न्यायपूर्ण विचि से धनाजन करें व उस धन को यद्याधीय प्रत्येक में बितरित कर द तो हम वस्य हैं, हम समाज को गति प्रदान कर सना प्रदान कर व सेवाकार्य द्वारा मानव समाज की सहायता करें तो हम शूद्र हैं। मानव समाज को बेदजान के धनुसार वर्ण स्वीकार कस्ले चाहिए— यही इस युग की प्रवम धावस्वस्वता है।

वैदिक प्रवस्ता, तपोयन शासम, देहरादून -- २४८०० द

श्रार्थ समाज मन्दिर माकृत नई दिल्ली वेदकथा

धार्यसमाज माकेन मे १४ अवत्वर स १८ अक्तूबर तक श्री अवश्वर स १८ अक्तूबर तक श्री अवश्वर स्वाप्त स्वाप्त

निवदक सन्त्री राजेशात्रद गुरासावर सक्सेना

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेंसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

शासा कार्यासय—६३, मसी राजा कैवारनाय, बावडी बाजार, विल्ली-६ कोन : २६१८६८



# साप्ताहिक र

SISTI PURE PROPERTY OF THE PRO

व्य . ६ शक १० बुक्य एक प्रति १० वैसे रविवार, ३ नवम्बर, १००६

सृष्टि सबन् १८७२८४६०=६ स्राजीवन २०० स्पय ब्रास्थित २०४२

दयानन्दाब्द — १६१ विदेश मे ४० डालर ३० पाँड

## मर्हीष दयानन्द निर्वाण दिवस पर

## आर्यसन्देश का उत्कृष्ट विशेषां

**%** 

भवने पाठकों की पुरजोर माग को ध्यान में रचकर साप्ताहिक बार्यमन्देश बपनी गौरवमयी पर-प्यरा के धनुसार महर्षि दयान-र्वात्त्र वित्तव (शोपावली) पर एक उल्हुष्ट लेलों से मरपूर आकषक विशेषाक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषाक नवीन नध्यो शिक्षाप्रय एव प्ररुपाप्रय लेकों से सुमण्जिय स्पञ्चाप्य होगा। भायस्टेस के याहक इसे नि शुल्क प्रप्न कर

सक गे।

यदि आप अपने घर कैठे ऋषियो प्राप्त पुरुषों सन्ते विद्वानों की बाला एव सत्योगदेश पढना वाहते हैं तो प्राज ही माप्ताहिक धार्यसदेश के मदस्य बन जाड़थे भीर विधिष्ट विशे कि भीन शुल्क प्राप्त कीजिए।

> पना सम्पादक-माप्ताहिक ग्रायमन्देश, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १०००१



इन्दिरा-स्मति

कविवर प्रसाव" शास्त्री एम०ए० महोपदेशक शास्त्री सन्त रामनगर (कटरा) ग्रागरा-६ (उ०प्र०)

## विशेषांक की मल(केया---

- # दश की माजादी का दीवाना राजस्थान की भील जाति का गुरु अल्हड सन्त-गोविन्द गुरु महींव दयानन्द का मनोखा शिष्य जिसने स्वतन्त्रता के लिए सेना सजायी थी। इतिहास का मार्मिक प्रसग
- # प्रग्नेज चिल्तीड के किले को प्रपने कब्जे मे लने का पड्यव रच रहे थे। ऋषि दयानन्द ने इसकी रक्षा के लिए अद्भुत साहसिक कार्य किया। इतिहास की गुफा मे छिपा ऋषि दयानन्द का एक महान्द कार्य।
- क्स स्वामी दयानन्द ने श्राघ्यात्मिक जगत् मे श्रानोस्त्री कान्ति को, उस क्रान्ति से मसार चमत्कृत हो सकता है। इसी कारण वे जगत् गरु और विश्व वन्छ हैं।
- ऋषि दयानन्द ने बृहत् भारत का स्वप्न देखा था। उस स्वप्न का पूर्ण करने के लिए उन्होंने क्या मन्त्र दिया ? प्रतेको खोजपूर्ण, प्रघ्यात्म, शिक्षाप्रद, मनोरजक, ऐतिहा-सिक लेखों का प्रपूर्ण सकलन होगा इस विशेषाक में।

ग्रात्र हो ग्रपनी प्रति सुरक्षित कराइये।

बता दे कोई मनुष्यता की महापुजारिगी कहाँ गई है। धदम्य दुगदिनो "ही जो वो सिहवाहिनि कहाँ गई है।।१।। सजाया जिसने प्रमन्ता के स्वरूप प्रगार घारतो को। जगाया जिसने प्रमन्तात से प्रमुज्य मानो स्वभारती को। विकास बीगा बजाने वालो सरस्वती सी कहा गई है। २॥

विकास वागा बजान वाला सरस्वता सा कहा गई है। या धरा के दुग में दुर्ज रने जो दु लो को कहती रही कहाना। धरा के दुनो । जरा ने वेल खेस लोव विषय्न प्राणी। धरा के दुनो । जरा ने बोलों घरा की पुत्री कहीं गई है। ३॥ नहीं गनन में कहीं घर ये प्रयञ्चवादी घटाएँ काली।

न नाच पाये महासमर को विनाशकारी झकाल काली।
पुकार ऐसी उठाने वाली सम्रक्त वाएंगे कहाँ गई है।।४॥
न दुष्ट दूसमन की चाक्ता का यहाँ न होने दिया बसेरा।
उसे चटादी बसीन जिसने यहाँ जो चाहा कर झेंबरा।
प्रकाश पीरव दिखाने वाली विजय सवानी कहाँ गई है।।॥॥

कही भी उल्लू ने मुकसेना न डाल पाय चमन से दरा। नई चमक से नई दतक से किया है जिमने यहा सबेरा। नया हो सूरज उता गई जो उचा किरण वो कहा गई है।।६।। मुफाई जिसने शुचारता से समानता की शुद्ध रेखा। मिरे हुसों को लगा रहे हो गले से ऊंचे कि स्वप्न देखा। म्वराष्ट्र का चित्र निकार देती थो रग रचना कही गई है। ७।। कि जाते जाते भी रक्त जल से प्रफुल्तता से जिसे है सीचा।

दिया है माझीव प्रमन्तता से अमर झलच्डित रहे बगीचा। दवीचि ऋषि की मिसाल बनकर सदा सुहागिनि कहाँ गई है।।दा।

## समाचार सन्देञ

## श्रम्बिल भारतीय श्रार्य युवा महामम्मेलन

नई दिल्ली १० ग्रक्तुबर (बृह-स्पतिवा )। आयममाज ग्रनारकली (मन्दिर मार्ग) के ६१व वार्षिकोत्सव के भवसर पर भागामी २४ नवस्वर रविवार को बार्य युगा नेता बहा-चारी धार्य नरेश की ग्रध्यक्षता मे 'म्रखिल भारतीय ग्रार्थ यवा मना-सम्मेचन का ग्रायोजन किया गया है। जिसमे १००० प्रतिनिधि भाग लेने बारहे हैं।

युवा महासम्मेलन सयोजक व केन्द्रीय ग्रार्थ युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री ग्रानिच कुमार सम्मेलन के लिए दिल्लो के विश्विन्न मार्थ ने एक प्रस विज्ञप्ति में बताया कि २३ नवस्वर, शनिवार को देश के विभिन्न राज्यों के बार्य युवक सग ठनो के प्रमुख नेताओं व विद्वानों की बैठक होगी जिसमे युवावर्ष पर नौजवानों के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर

पर प्रभावी भक्तिका निमाने के उल्लब से भावी कार्यक्रम बनाया जायेगा

ग्रार्य नेता व डी॰ए॰वी॰ प्रबन्ध कर्जी सभा के कायवाहक ग्रम्यक्ष श्री दरबारी लाल ने समस्त भारत के डी०ए०वी० स्कल कालेजो के प्रति वियो को भी प्रवक महासम्मेलन को सफल बनाने के आदेश दिए हैं। महासम्मेलन को सारी व्यवस्था ग्राय प्रादेशिक प्रतिनिध्य सभा, नई दिल्ली कर रहो है।

राष्ट्रीय स्तर के इस युवा महा स्थानो पर जनसम्पर्कग्रामियान तथा क्षत्रीय युवक सम्मेलनी क ब्रायोजन भी किये जा रहे हैं।

चन्द्रमोहन ग्रार्थ (प्रेस सचिव) केन्द्रीय जार्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश

## सिराज स्तां, सूरज कुमार बन

मुवनेश्वर । कुछ दिन हुए वाली-बीर के श्रो सिराज लाँ द्वारा कुमारी किरण अग्रवाल के अपहरण के विषय को लेकर उडीसामे प्रवल हलचल मची हई थी। गत ना ०६-१०-५५ को अवनेश्वर भागसमाज मदिर मे श्रो सिराज लाकी शृद्धि सस्कार के पदचान उनका विवाह सुश्रो किरण के साथ सम्पन्न होकर एक संघर्ष का सुकान्त समापन हो गया

श्री सिराज सुश्री किरए। तथा उनके अधिवक्ता और भारमीय स्वजन कटक उच्च न्यायालय मे न्यायमूर्ति श्री राधावरमा पटनायक के समक्ष भपनी सम्मति प्रकट करके मुवनेह्दर आर्यसमाज की महायता में विवाह के निमित्त प्रम्ताव दिया वा। माननीय न्यायमुर्ति ने इसे स्वी-कार करते हुए अपने दीर्घ निर्माय मे हहा है- 'ग्रिषिवक्ता ने यह निवेदन केया कि मामला मित्रता पूर्वक वलभा लिया गया है और इस प्रकार

## शुद्धि ममाचार

कलकत्ता २ अक्ट्बर। स्रार्य समान बड़ा बाजार द्वारा आरज साय एक भाग समारोह में शेख ग्रमी-रुद्दीन पुत्र शेख लतीपुद्दीन लाल-दीघो घार (पूर्व) पो० व याना चन्द्र-नगर, जिला हुगली (प॰ बगाल) के **बाबेट**न पर उनकी शृद्धि श्रीप∙ एक विस्फोटक स्थिति का मुखान्त समापन हो गया है। यह भी तय हमाहै कि श्रो मिराज और सुश्रो किरण प्रार्थसमात्र की पद्धति के भ्रन्मार विवाह बधन मे एक हो जाए गे ।

. भुवनेश्वर श्रार्यसमाज के नव-निर्मित महर्षि दयानन्द निर्वाश चताब्दो स्मारक यज्ञ मडप मे कटक मुवनेश्वर तथा उडीसा के बहु प्रति-ष्ठित व्यक्तियो को उपस्थिति मे श्री सिराज का शुद्धि सस्कार हमा। श्री सिराज ने बड़ी प्रसन्नताके साब श्री सूरजक्रमार" नाम ग्रहमा किया। शृद्धि के अनन्तर श्री सरज कुमार ग्रीर कुमारी सुश्री किरण ग्रग्रवाल का विवार सस्कार अनुष्ठित हमा ।

उटीसाके सभी समाचार पत्रो ने इस समाचार को प्रमुख स्थल पर प्रकाशित किया।

त्रियतमदाम

ई श्वरदत्त वैद्य के पौरोहिय में को गयी जिसमें समाज के मत्री खशदाल चन्द ग्राय तथा समाज के विशिष्ट सहयोगियो सहित भ्राम जनता के लोग भी उपस्थित हुए। शुद्धि के उपरान्त उनका नया नाम धमर-गीत स्वीकृत हुमा।

#### पासण्ड सण्डन का श्राहरान

## श्री रामनाथ सहगल का वक्तव्य

(निज सवाददाता द्वारा) पिछले दिनो दैनिक समाचार पत्रों में पकाशित दो समाचारों के बारे में आर्थ जनता का ध्यान आक-र्षिन करना चाहताहः। पहला समानार लन्दन का है जहाश्री प० श्रीराम शर्मा की उपन्थिति मे गायत्री परिवार की छोर से धायोजित यज कार्यक्रम के भवसर पर स्वामी प्रजा नन्द ने तथाकथित भगवानी से सावधान रहने का उपदेश देते हुए कहा कि-अब समय बा गया है कि हम लागो को भ्रपने मकानी पर सूचना पटो पर 'बीवेयर धाफ डाग केंस्थान पर 'बीवेयर श्राफ गाड श्रयीत कुत्ती से सावधान के स्थान पर भगवानों से मावद्यान लिखवा कर रागना चाहिए। इसका ग्रर्थ यह है कि ये तथाकथित भगवान कूत्तो से भी ग्रंथिन काटने वाले ग्रीर गिरे हए हैं ।

दुसरा समाचार न्युयार्क से भावा है। लगमग३ वर्षपूर्वे तथाक वित मगवान आचार्य रजनीश भारत छोडकर समेरिका में सादेगान में जा बसे। करोडो रुपये को विस्तत भूमि खरीद कर वहा रजनीशपरम की स्वापना की । समार की सब से मृल्यवान कार राल्स-रायस का रज-नीश प्रयोगकरते हैं। उनकी घडी की जजीर में मूल्यवान हीरे पड हए हैं। उनके ग्राश्रम में उन्मुक्त सेक्स को पूरी छन्है। विनासी जीवन व्यतीत करने वाले मगवान रजनीश का कहना है कि उनके अनुपायियों ने उनके साथ घोला किया, उनकी हत्या का प्रयास किया तथा उन्हें करोडो डालग्कर्जमे डुवो दिया।

## वेदप्रचार विभाग का द्विनीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थं ट्रस्ट द्वारा सचालित वेद प्रचार विभाग का वार्षिक उसव दिनाक २७ १०-८५ रविवार साथ ३ बजे १/४४ कीर्ति इण्टर्ग्टीयल एरिया (M D H) में सावदेशिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्यवर श्री रानगोपाल वानप्रस्थ की अध्य-क्षानामे मनायागया।

इस भवसर वर भनेक प्रतिष्ठित विद्वानो ने घामिक जनता का मार्ग-दर्शन किया।

> खुशीराम शर्मा · वेद प्रचार समिस्ठाता

भव रजनीशपुरम से समाचार से प्राप्त हुआ है कि मगवान रजनीश के लगभग दो हजार धनुयायियो ने रजनीश को भूतपूर्व निजीसचिव मा प्रानन्दशीला द्वारा रजनीश-वाद" पर प्रकाशित पुस्तक की ५००० प्रतियो व सचिव के कपड़ो की अर्थीवनाकर नाच-गाकर उनकी ग्रत्येब्ट कर दी।

इन दोनो समाचारो से इस बात का स्पष्ट मकेत मिलता है कि तथा कियत नकली भगवान भगवानी के पासण्ड से पाइचात्य भौतिकबादी जगत्काएक वर्गक्रव चुकाहै। पासण्ड व ढोग से भाकर्षण होता है। इसलिए शुरू में इनकी भोर मकना स्वाभाविक है। परन्त पालव्ड की पोल खुलने पर उस से षएगा भी जल्दी ही हो जाती है।

हमारे देश में भी ईशवर के नाम पर अनेक पालव्ड फैले हुए हैं। कहने की वावश्यकता नहीं कि इन पासण्डो के कारण समय समय पर देश को राष्ट्रीय अपति उठानी पडी है सार्यसमाज घपने जन्म-काल से ही इस प्रकार के पालण्डों का विरोधी रहा है। भ्रपने प्रारमिक काल मे पालण्ड लण्डन के लिए भार्यनमाज ने विधिमयो से अनेक **कास्त्रार्थकिए। ग्रब इस दिशामे** शिथिलता बाई हुई है। मैं बपने मार्यविद्वान उपदेशक व प्रचारक महानुभावो से निवेदन करूगा कि-पालण्ड लण्डन के कार्यक्रम मे पुरी शक्ति के साथ जुट जाये।

> भवदीय (गजेन्द्रप्रसाद मालवीय) कार्यालयाध्यक्ष

## विद प्रचार सप्ताइ

भार्यसमाज यमुना विहार(रजि) दिल्ली के तत्त्वावधान में बेद प्रचार सप्ताह २ से ६ अक्तूबर तक सर्व श्री आचार्यरामचन्द्र जीकी धक्य-क्षता में पाच दिवसीय यज्ञ के पहचात पूर्ण बाहुति सहित बड समारोह पूर्वक सम्पन्न हुमा । त्रतिदिन सज्ज, उपदेश तथा मजनो की मधुर ध्वनि के साथ श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, श्रीप॰ ग्रस्तिलेश जोश्रीप॰ नानक चन्द्र जी श्री भुदेव जी सादि विदानों ने साग लेक<sup>7</sup> वेद मार्ग पर चलने की प्रेरगादी ।

कमल किशोर ग्रायं उपमन्त्री मार्यसमाज यमुना विहार (रजि.) विक्सी-४३

## श्रार्थसमाज सान्ताकुज में श्रार्थ ध्यान योग केन्द्र का उदघाटन

धार्यसमाज ने अपने स्थापना दिवस पर नवनिर्मित वानानकनित ध्वनि शुन्य भारत वर्ष की ग्रायं समाजों में सर्व प्रथम ध्यान योग केन्द्र का उदचाटन पूज्य स्त्रामी सत्यपति जी के कर कमलीं द्वारा किया गया। इस धवसर पर बोलते हए स्वामी जी महाराज ने कहा कि धार्यसमाज ने यह कार्य करके ग्रनकरणीय बादर्श प्रस्तृत किया है, इसकी बहत बडी ग्रावश्यकता भी जो ग्राजपूरी हो रही है। मुभे प्राशा है कि इस ध्यान योग केन्द्र से बम्बई की जनता प्रधिक से प्रधिक लाभान्त्रित होगी। इसे देख कर मुफे हार्दिक प्रसन्नता हई है। यहा आकर वास्तविक शाति मिलती है, यहा आकर ध्यान लगाया

जा सकता है। ऐसे ध्याम योग केन्द्र का निर्माण प्रत्येक नगर से होना चाहिए। परमात्मा यहा के कार्य-कर्नामों को शन्ति प्रदान करे, जिससे ऋषि के शबूरे कार्यों को पूरा करते रहें।

बन्त में महामन्त्री केंप्टिन देव-रंग झार्य ने तताया कि इस ब्यान तोग केन्द्र के लिए श्री राजेन्द्र बाहरी जी ने २०००। = इपये की बातानु-कृतित मधीन तथा श्री केवलकृष्ण जी मेहरा ने ऊनी कालीन मेन्ट किया है। इनके सहयोग से हम दसे पूरा कर पाये हैं।

> (कैप्टिन देवरत्न ग्रार्थ) महामन्त्री

## श्रार्यसमाज मन्दिर, वाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में रतनचन्द श्रार्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का उदघाटन

बचवार दिनाक २ प्रक्टूबर, १६८४ को बडे समारोह पूर्वक प्रात द बजे से साढे १२ बजे तक सम्पन्न हुमा। कार्रवाई प्रात = वजे विशेष यज्ञ से धारम्भ हुई। उसके पश्चात् प्रात १० से ११ बजे तक रतनचन्द भार्य पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे विच्चो ने बहुत ग्राकर्षक वैदिक विवारधारा से गोत प्रोन सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया : इस अवसर पर लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान, सार्वदेशिक सभा, श्री धर्म-दस जी, प्रशासक, नई दिल्ली नगर पालिका (मुख्य मतिथि के रूप मे), श्री रतनवन्द जी सूद, श्री रामलाल मलिक, श्रो हरवस मिह जी बेर, प्रधान दक्षिए। दिल्ली वेदप्रचार मण्डल डा॰ धर्मपाल जो, महामन्त्री दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा, श्रो रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादे-शिक सभा श्री राजेन्द्र दुर्गा, मन्त्री धार्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली की बहत सी भार्यसमाओं के अधिकारी

## वाषिकात्सव

धार्यभमाज शालीमार बाग, दिल्ली का वाधिकोत्सव ११ से १७ नवस्वर ८५ को प्रमानाम से मनाया जा रहा है, जिसमे महात्मा राम कियोर वस महोपदेशक का बेदप्रवचन धौर प० सत्यदेव स्नातक रेडियों कलाकार के प्रजापित होता करेंगे। सी ज्योतिप्रसाद डोलक कलाकार सा रही ।

एव सदस्य व श्री रतनचन्द जी सुद के परिवार के सभी लोग उपस्थित व । सत्यवती म्मारक भवन ज उद्घाटन श्री जे । भारठ सुद (सुपुत श्री रतनचन्द जो सुद) जी ने किया। इस भवन के १४ कमरो का निर्माण ,लगभग ५ लाख रुपये की लागत से श्री रतनचन्द जो सुद ने प्रपत्तो स्व-पाँव समंप्रत्मे श्री सत्यवती जी सुद की स्मृति में कराया है।

श्री वर्मेदल जो, प्रशासक, नई दिल्ली नगर पालिका ने घोषणा की कि रतन्त्रचन्द ग्रार्थ पिल्नक स्कूल को वीक्र मान्यता वी जायेगी। श्री रोशनलाल गुप्त, प्रचार मन्त्री झाय समाज सरोजिनी नगर, प्रबच्छक, रतन्त्रचन्द मार्थ पिल्लक स्कूल ने सभी का झार्दक चन्यादा किया।

> रोशनलाल पुप्त प्रचारमन्त्री भार्यममाज एव प्रबन्धक रतनचन्द भार्यपब्लिक स्कूल

## वेद कथा एवं वार्षिकोत्सव धार्यसमाज समर कालोनी में

श्वे १० नवस्वर के वेद कथा और वाधिकोत्सव मनाया वा रहा है, जिसमें महात्मा रामकिकोर जी वेख यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे। राजिको वेद रहेगा। प० वेद व्यास अवनोपदेशक का समीत का कार्यक्रम रखागया है।

व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सथा

## श्रन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह प्रावश्यक है कि हिन्दू प्रपती सन्तानों की सादिया गुएा, कर्म, स्वमाव के बाक्षार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के निए मार्थममाज (धनारकली) मन्दिर मार्ग प्रादेशिक प्रतिनिश्च समा ने तत्त्वावद्यान में एक बत्तार्जातीय विवाह विमाग की स्थापना की गई है। यहा इस बात का ध्यान रखा बाता है कि धन्त-जातीय विवाह में दहे बाचक हो। धव तक लगभग द० धन्तव्यतिय विवाह सम्पन्न हो जुके हैं और सब

## श्रार्थ प्रतिनिधि सभा श्रान्ध प्रदेश के नव निर्वाचन श्रिधकारी

प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्यासी श्री डा॰ गोविदराव जी गी ने बोधन श्री पुरुषोत्तम रेइडी जी उपप्रधान पादन्नापेठ श्री के करुगाकर जी सुर्यनगर मत्री श्रीमाणिकराव जी शास्त्री बेगम बाजार श्री नागमल्लप्पा जी गोषामहल सिंह जी श्री लक्ष्मण ध्र वपेठ उपमत्री श्रीके० व्हीरेहडी जी जडचरली कोचाध्यक्ष श्रीराजावी० किशन लाल जी पुस्तकाष्यका श्री प॰ कुर्मास्वामी जी शास्त्री

## <sup>हेदराबाद</sup> चम्पारगा जिला निर्वाचन सम्पन्न

निवेदक

ग्रार्थ प्रतिनिधि नभा

धान्ध प्रदेश

दिनांक २२-६-८५ को स्थानीय नर कटिया गज आयंसमाज में श्री राम बुक्षलाल की भ्रष्यक्षता में क्या-रहा जिला सभा का निर्वाचन हुया। जिसमें भ्रामाभी नर्षे के लिए सर्वे श्री रामाझा वैरागी प्रचान तथा बी० के० सास्त्री मत्री चुने गये।

मत्री प्रधान के प्रतिरिक्त २१ धन्य सदस्य तथा पदाधिकारी चुने गए हैं। सभी कार्य शान्ति पूर्ण वातावरण में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ।

> रामचन्द्र भूतपूर्वं मन्त्री चम्पारण जिला समा, बिहार

वस्पतो सुक्षी हैं। बाफिस का समय ११ से ४ वजे तक है और साय ५ वजे से ७ वजे तक व्यक्तिगत बात चीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक युवति सम्यवा उनके सरक्षक निस्न पते पर सपर्ककरे।

डा॰ मदनपाल वर्मा ग्रीषध्याता-ग्रन्तर्जातीय विवाह विभाग ग्रार्यसमाज (अनारकली), मदिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

नोट-सेवा नि शुल्क है।

## श्रार्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२१ का निर्वाचन

वाधिक चुनाव दिनाक २२-१-०५ को श्री लाला रामधरणवास जो की घटणकात में मर्वतम्मति से सम्प्रत्त हो। प्रचान श्री हो। प्रचान हो। प्रचान श्री हो। प्रचान श्री हो। प्रचान सम्बा प्रचान रामचन्न ग्राप्त

आर्यमान व मनई की वार्षिक साधारण सभा दिनाक २१-१-१८=५ को सम्पन्न हुई जिसमे प्रागामी वर्ष के लिए पदाधिकारो सर्व सम्मति से निवधित हुए हैं। कृपया अपने प्रतिष्ठित पत्र में प्रका-क्रिया करने की करा करें।

निम्नलियित पदाधिकारी निर्वाचित हुए'— परामशंदाता श्री प० दयासकर्

जी शर्मा
प्रधान श्री गए।पत राय प्रायं
उपप्रधान श्री ज्ञानप्रसाद गौतम
उपप्रधान श्री भाक्रलाल शर्मा
मत्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
उपमत्री श्री चमनलाल चीदना
क्षीणाध्यक्ष करसन दाम राएगा
पुरन्काञ्चक्ष श्री श्रद्धसेन मिश्र

राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मत्री

## त्रार्यसमाज लाजपत नगर में राष्ट्ररचा सम्मेलन

धार्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के उत्सव के धवसर पर अद्धेय श्री रामगोपाल जी धालवाले की धन्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की धन्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन देनांक ३-११-च.५, रविवार प्राद. १० से १ वजे तक धनाया जा रहा है।

प्रेषक मेचस्याम वेदालकार Post in N D P S O on 1-11-85 Licenced to prst without prepayment Licence No U 139





लिए स्वास्थ्य के उत्तम गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेंसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें



शासा कार्यासय-६३, शसी राजा केवारनाय, बाबडी बाबार, बिस्बी-६ फोन . २६६८३८



\* 244.1711

रविवार, द विसम्बर, १९४६ वार्षिक २० स्पवे मुष्टि सबत् ११७२१४१०८६

मामशीय २०४२

र्चयानम्बाब्द--- १६१

पूर्व एक प्रति १० वेडे

**बाजीबन २०० रु**पय

विदेश में ५० डालर ३० वींड

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० वी० चव्हाण से भेंट

# ाबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में ज्ञापन

दिल्ली ३० नवस्वर ।

सार्वदेशिक बार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान भी रामगोपाल शालवाले के नेतत्व में प्राय प्रात प्रायंसमाज के खिष्टमण्डल ने केन्द्रीय गृहमणी श्री एस॰ बी॰ बब्हाण से भट कर उन्ह हैदराबाद बार्य सत्याप्रहियों के सम्बन्ध मे एक ज्ञापन पत्र दिया।

बिष्टमण्डल ने गृहमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया कि हैदराबाद भाव सत्याप्रहियो के सामने पक्षन प्राप्त करने ने कुछ विशेष कठिनाह्या है। १६३८-३६ मे पविषमी प्रवास (को श्रव पाकिस्तान मे हैं) के लोगों ने भी सत्याप्रह मे माग लिया वा । सत्कालीन निजाम स्टेट अब तीन प्रान्तो मे विमाजित हो चुका है। उस समय को लोग जेली में गये थे, उन्ह निजाम सरकार ने कोई प्रमाण पत्र नही दिया था। यह शान्दोलन सार्वदेशिक श्राय प्रति-निधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे

चला बाधीर सभा ने सस्याप्रहियो को प्रभारण पत्र भी विशे थे ।

बिष्टमहल ने यह भी बताया कि अधिकाश तरपाग्रही वाव तक दिवगत हो चुके है। जो बोह बहुत लोग इस समय बृद्धावस्था ने जी रहे हैं, उनके पास भव ४७ वर्ष के उप-रान्त कोई प्रमास पत्र केव नहीं है।

बिष्टमबल में सरकार से मौग की कि जिस बकार राष्ट्रीय आवी लन के सेनानियी को कायस के प्रमारा पत्र के भाषार पर स्वतंत्रता सेनानी माना गया बा उसी प्रकार केन्द्र सरकार सावदेशिक वार्य प्रति-निधि सभा दारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के बाधार पर प्रमाणित लोगो को स्वतंत्रता सेनानी स्वीकार कर और गृहमत्रालय द्वारा स्वीकृत पदान बोजना का लाम प्रदान कर।

गृहमत्री थी च॰हाए। ने, तुरन्त सभा से सूची भेजने के लिए कहा भौर घाइबासन दिया कि वे राज्य सर

कारों से बातचीत करके इसका निर्माण करदी करने। उन्होंने यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद सब **बान्ब, कर्नाटक और महाराष्ट्र मे** 

विभाषित हो चुका है। जिन्द्रमञ्जू मे प्रो॰ वेरसिंह, श्री धोनप्रकाश त्यागी प० सिवकुमार शास्त्री, श्री सोमनाच एडवोकेट और लक्ष्मीचन्द सादि सम्मिलित वे।

> सक्विदानस्य शास्त्री उपमन्त्री

## आये विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को बैठक सम्पन्न

ग्रायं विचा समा मुस्कूल कागडी हरिवार की बेटक रविवार शश्रान्ध को आर्थसमाज मन्दिर दीवानहाल मे सम्यन्न हुई। इसमें दिनाक ३०।१०। प्रकी कार्यवाही सपुष्ट की गयी तथा सविधान की मन्तिम रूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गई। शेष पदाधिकारियो तथा कार्यकारिस्ती के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी भौर कायकारिसी इस प्रकार है। प्रधान-प्रो० शेरसिंह उपप्रधान-श्री सूर्यदेव श्रीर श्री वीरेन्द्र मन्त्री-डा॰ वमपाल सहा यक मन्त्री-श्री प्रकाशवीर शास्त्री भीर श्री बाशानन्द भाय कोषाध्यक्ष -हा॰ हरिप्रकाश सदस्य लाला रामगोपाल की शालवाले स्वामी श्रोमानन्द, श्री हरवशलाल शर्मा, महासब वर्मपाल की तथा सभी पदेन सदस्य । इस पद लाला रामगोपाल

बालवाले ने कहा कि मैं गरुकूल कांगड़ी के किसी भी भगड़े में नहीं पडना चाहता भीर न ही मैं वहा किसी सभा का सदस्य ही बनना चाहता हू मरे पास बहुत काम है। मरा सार्वदेशिक समा का काय भी हज होता है। वहा आपस मे लोग भगडा करते हैं। मरे पास बहत शिकायत झाती है। सभी उपस्थित सदस्यो ने माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले से एक स्वर में अनु-राध किया है कि भाप हमारे मान्य नेता है, बार्यसमाज को शिरोमिए। समा सार्वदेशिक श्राय प्रतिनिधि समा के प्रधान है। प्राप पजाब समा के त्रिशाखन के भी सर्वमान्य मधि-कारी हैं। इस समा का सदस्य अमने की हमेरिरी प्रार्थना को आप अवस्य स्वीकारकरें। अनेक अनुरीकी एक प्रार्थनाची पर किसी प्रकार भाष

(विविष्युष्ठ १५ वर)

## श्री जोरीलाल खन्ना का निधन

माबदेशिक बाय प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शास बाले के छोटे भाई श्री शोरीलाल की सन्ना का प्रमृतसद में लम्बी बीमारी के परकात् १७।११।८५ को बेहाबसान हो गया है। स्री शोरीलाल जी पहल बम्बई में अ्यापार करते थे । कुछ वर्ष पूर्व वह अमृतसर में वस गए थे । वह अपने पोकेएक पुत्र कोड नए हैं।

क्रवात्मा से प्राचना है कि दिवगत बारमा को सदमति प्रदान करे बौरपरिवार को इस नहाम् विमीय को पर्य पूर्वक सहन करने की सनित दे । डा॰ वर्गपान

\* \*\*\* \*\*\*



₹

## -चमनलाल (पूर्व प्रधान ग्रायंसमाज मशोक विहार)

यह म त्र बढ़ा महत्त्वपूण है इस लिए भी कि यह ऋग्वेद मे एक बार भीर सामवेद में दो बार पाया है। इस मन्त्र मे सत्रह शब्द है-पहले पद मे बाठ धीर दूसरे मे नौ शब्द है। इस मन्त्र में म नव को धपने बचपन खबानी तथा बुढापे की याद दिलाकर धात से विधि के विधान में बधी आने वाली मृत्यू के स्वागत का सकेत है। मृत्यू जमी घोर भयवाहनी वस्तु को अगत नियन्ता प्रमुकी भोर से भेजी हुई उसको उपहार के रूप मे स्वीकार करने का झादेशा है न कि उससे घबराकर परमात्मा को कोसने लगे प्राणी। यही नहीं इस मन्त्र मे मानव को उसके अपने जीवन की नश्वरता असारता का चिन्तन करा कर प्रभ के प्रति सच्ची निष्ठा एव श्रद्धा घारण करके वेद विहित कार्यों को करक इस ससार रूपी भवसागर से पारहोने का बडा सुदर चित्रण है। जसाकि ऊपर कहँ स ये है कि मन्त्र में मानव जीवन को तीन धव स्थाएँ -बालपन खबानी तथा बुढापा की भीर घ्यान दिनाकर अन्त मे चौथी मयुको अभव उपहार रूप मे लैने को कहा गया है। बावन मे ऋमिक परि नन ५ फल बरूप ये अवस्थाएँ

ती है योगिशाज श्रीकृष्ण जी ने भागीता प्रध्याय दो इलोक तेरह मे इन प्रवस्थायो का इस प्रकार बढा सुन्दर वणन किया है

> देहिनो ग्रस्मिन यथा देहे कीमार यौवन जरा। तथा देहान्तरप्राप्ति वीरस्त्रन महाति॥

यदि विचार पूबक देखा जावे तो जीवन मे ये ऋनिक परिवतन मानो एक सगीत के समान हैं। सगीत प्राय वही अच्छा धौर रचिकर<sub>ो</sub>ता है जिसमे उतार चढाव हो। गायक कभी मीठ हल्के स्वर में भीर कभी ऊ ने उग्र स्वर में गाता है। इस के श्रभाव मे प्राय लोग गानो को नीरस (Pull) समऋते हैं। पर तुयह जीवन संगीत ऐसा सूरीला मीठा भीर रसीला है कि किसी भी भवस्था मे नगदमी इससे ऊबता नश्ची । शिशुस्व रत्व भीर युवानस्या की तो बात

विध् दद्रारा समने बहना युवान सन्त पलितो जनार । देवस्य पश्य काव्य महित्वाऽद्या ममार सहा समान ॥" ऋग-१०।५५।५

साम-३२४७ २७८२

बुधा मौसी सभी की उत्सकता का

कारण बन जाता है। उस शिश्व की

उलटी सीधी बार बार गिरके उठने

ही क्या दुखदायी बुढापा जरावस्था से प्रादमी युक्त होना नही चाहता चाहे वह कितनी ही मयकर शीर दुखदायी क्यो न हो।

श्रद्ध गाँत पलित मण्डम दशनविहीन जात तुण्डम । बुद्धो याति गहीत्वा दण्डम तदपि न सञ्चति द्याशा पिण्डम ॥

ऐसी दयनीय अवस्था मे भी कोई मरना नहीं चाहता वरन ऐसा प्राय देखने भ्रथवा सुनने मे भी भाता है कि बहुचा लोग यम के द्वारा मेजे हुए उसके दूतों को भी लताइन का विफल प्रयास करते हैं।

नानाविध कलाओं स्नाना पकाने की कला खाने खाने की कला मल मूत्र त्यागने की कला स्नान करने की कला और सगीत कला भादि कलाओं से परिपूर्ण यह जीवन चार अवस्थाओं से युक्त सगीतमय नही यह स्वय सगीत सा प्रतीत होता है। प्रत माम्रो जरा उपर्युक्त मन्त्र के मर्थो के माध्यम से जीवन संगीत का कुछ रसास्वादन करें। विषु दद्वाण समने बहुनाम नव जात शिञ्जे चन्द्रमाकी मानिन्द बढा सुन्दर लगता है बच्चा बाहे किसी पशुपक्षी का भी क्यो न हो और यदि किसी के बच्चान हो तो वह सुन्दर मनमोहक शिष्ठ उसकी वेदना का कारण भी बन जाता है। जसे चन्द्रमा सब को प्यारा लगता है परन्त वही शीतलता का देने वाला चन्द्रकृष्ण और यशोदा को बीघने वाला हो जाता है। जब कृष्ण उसको पाने की इच्छा करता है धोर बेचारी देशी" धीर देखते ही देखते उसे बुढापा यशोदा कृष्ण को नानाविध फुसला कर सन्तुष्ट कश्ने मे विफल हो जाती है 'शिशुजब कुछ बढा हो जाता है चलने फिरने का प्रयास करता है भौर नानाविष चेष्टा मे करने लगता है, तो सभी सबे सबधी... माता पिता भाई बहुन, चाचा चाची

की चेष्टाधो को देखकर सभी धानन्द विभोर हो उठते हैं। भन्त सुरदास के वणन में माता यशोदा कृष्ण के चलने को देखने के लिए कितनी उत्सुक हैं। यही कारण है कि बच्चे को घर का चिराग कहा जाता है क्योंकि इसके बिना वर अन्य बन जाता प्रभ अपनी महान उदारता धीर कपा है। कैसा है बच्चे का लावण्य? युवान सन्त समने बहुनाम । इसके पश्चात जब बच्चा शिश्व और कीमार भवस्थाको पार कर युवा भवस्था को प्राप्त होता है तो भ्रपनी शिखरी चढती जवानी में भी शिक्षुकी न्याई धनेको को बीघने वाला हो जाता है जब वह उभरती जबानी में यथा ग्रयवा युवती न बाने कितनों का ध्यान अपनी धोर बाक्रस्ट कर नेता है। कतिपय लोग किली सन्दर ग्राक पक युवा को देखकर उस की अपने जामाता के रूप में बाने का प्रयत्न करत हैं भीर कई भाव किसी सुन्दर युवती को धपनी प्रवस् 🖣 🚾 में धपने घर की लक्ष्मी बनाना चाहत हैं परन्त उन चाहने वालों को वे धप्राप्य होने के कारक कुछ कमने ते

लगते हैं परन्तु बह जवानी कव तक रहती है। कुछ ही समय सक अपना चमत्कार दिखाकर वप की मान द अपूर्वों से धोकल हो जाती है ग्रीर कभी बापस नहीं ग्रातो । इसी लिए किसी ने बड़ा चुन्दर कहा है-'ओ जाकर न बाती वह जवानी भा दबीचता है जो उसको लेकर जाता है इसीलिए कहा भी है जो धाकर नही गया वह बुढापा देखी। 'पलितो जगार" इस अवस्था मे अवानी का वह लावच्य सौन्दर्य आई

बार्ड हो बाता है भीर सब भक्त

प्रत्यक्त शिवित पर वाते हैं घोर इस

ग्रवस्था में वह सुन्दर युवा ग्रव पोपले मुह (बिना दन्त के) वाला बल्लर की न्याई व्यवहार करने लगता है भीर ग्रद तक प्यार करने वाले चाहने बाले सभी छोटे बह उसे घणा की दिष्टि से देखने लगने हैं और चाहते हैं कि जल्दी हो यह इस समार से विदाई से। इस बीधी धवस्था में भगवान का हो एकमात्र सहारा रह जाना है। शेष सब बन्ध बान्धव नी उस बेचारे की निनान्त उपेक्षा ही करते दिखाई देने हैं।

> देवस्य परय काव्य महित्वाऽचा ममार स ह्या समान ।

गेसी दयनीय चौथी धवस्था मे से मत्युरूपी उपहार उसकी सहाय तार्थं भेजने हैं और वह इस उपहार को पाकर उस क्लेशमयी दयनीय मवस्था से मुक्ति पा जाता है। धीर लोगों को केवल यही कहते सुनने हैं कि प्रभ का विधान भी कैमा विचित्र है कि कल ही जो धमक व्यक्ति जीवित या माज इस सैंसार से चल बसा है। प्रभ ने नानाविष ससार की प्रदर्भत रचना की है और मृत्यू एक बडी विचित्र किन्ही के लिए मयाबही भीर दूगरों के लिए सुन्दर और बानन्ददायिनी सिख होती है। सारा ससार इस मत्यु शब्द तक से भवभीत हो जाता है परन्तु सन्त कबीर जसे उसी के स्वागत के लिए सर्वदा तैयार रहते हैं। उन्होन क्या ही सुन्दर कहा है-

> जिस मरने से जग हरे मेरे मन आनन्द। इस मरने से ही पाइये पुरण परमानन्द ॥

मृत्यू एक पहेली है जिस का समा-चान द्याज तक भी बढ बढ नही कर सके। यह शास्त्रत है अमीर गरीब, धनवान निर्धन, राजा रक्टू विद्वान श्रविद्वान सभी के लिए समान है। ससार मे यही एक ऐसी वस्तु है जिस ने सब को एकसमान एक स्थान पर मा सहा कर दिया है। इस का सभी जगह साम्राज्य है, कोई इसके पाश है

(कि ने कि किहे)

## पर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल का पित्रक्षण शिविर सम्पन्न

सलतानपुर गत दिवस पूर्वी उ० प्र॰ ग्रायबीर दस का सप्त दिवसीव शिविर का शुभागमा दयान-द जु० हा० स्कल झास्त्रीनगर सुलतानपूर में प्रदेशीय आय बीद दल के अधि-काता श्री बेचनसिंह मिर्जापुर द्वारा ध्वजोत्तोला एव वदिक राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर के ४०० ग्रायवीरों ने भाग लिया।

श्री बेचनसिंह ने भाग शिविर की महला पर प्रकाश डालते हुए इताया कि इस से क्षत्र सुसस्कारित होगे । ग्रायंवीर दल के प्रदेशीय सकालक श्री प्रवद्य विहारी लन्ना बाराणसी ने वतमान मुक्क पीढी की कृत्सित मनोवृत्ति का चित्र सीचते हुए छात्रो से सायवार बनने का सिविरके माध्यम से साह्वान किया, विविर के सरक्षक श्री रामकिशोर त्रिपाठी ने वैदिक जीवन भादशों पर धकाडा डाला। वक्ताओं मे सर्वश्री राजकच्या जायसवाल भोमप्रकाश एडबोकेट, भीमकुमार सिंह मल्ल प॰ शम प्रविनाश जिपाठी एव ध्रेन्द्रसिंह शिक्रिशियों को अपना आशीर्वाद देते हुए शिविर को साधना स्थलीय के रूप में अपनाने का आग्रह किया।

इसी अवसर पर दयानन्द ज॰ हा० स्कूल के निर्मित ३ कक्ष श्री शमहृदय जायसवाल कक्ष श्री सतीश-चन्द्र चौपडा कक्ष, श्री स्व० जगबहा-दुरसिंह क्का का उद्घाटन फैआबाद के सप्रसिद्ध धार्य नेता श्री माताप्रसाद त्रिपाठी के द्वारा सम्पन्न हुमा। सभी श्रतिथियो का स्वागत शिविर सयो-अक एक प्रधानाचार्य श्री प्रयासदीन जायसवाल एव ग्रम्बिकाप्रसाद चौर-सिया द्वारा किया गया।

ग्रस्तिम दिए समापन के अवसर यर प्रात यज्ञ के पदचात् दिल्ली के साबंदेशिक पार्यवीर वल के प्रचान श्वासक श्री बालविवाकर हस तथा सुप्रसिद्ध सार्वं बिद्वान् भाषायं प्रज्ञा-मित्र फैजाबाद की विशेष उपस्थिति मे शिविर में भाग सेने वाले ४०० क्षिविराधियों का यक्षेत्रवीत सस्कार तवा प्रतिकापण कार्यकम बारयन्त न्त्रेर्यावायी वीक्**लक्ष्मिक्** रहा ।

सार्वकास राजींव रणवर्गसङ् अवेडी की बध्यक्षता में कार्ववी में का

क्षारीरिक प्रदर्शन हमा। छात्री के सामूहिक नेतिकिया, नेत्रकिया तथा दण्ड चालन का कायकम भनोखा था। श्री सजय कुमार धरोडा गौंडा का सिन् एव जांच पर रखकर टयुबलाइट फोडना श्री शभूराम द्वारा बाह पर ईंट रखकर फाडना भी ग्रत्यन्त प्रधासनीय रहा। दीक्षातमायण के अन्तर्गत श्री बालदिवाकर हस जी ने सभी प्रशि-क्षार्थियों से स्वामी दयानद की कठोर तपस्या से प्ररणा लेते हुए वदिक वर्म प्रचारार्थं शिविर से घर जाने के बाद भी कभी निराश न होने का ग्राप्रह किया।

राजींप रणञ्जयसिंह ने धायह

किया कि प्रशिक्षार्थियों को मातदेव पितदेव, एव प्राचार्यदेव की भावना से जीवन यात्रा करनी चाहिए। अन्य वक्ताओं में श्री दीनानाथ मुन्दीगज, रमाशकर जी किराकत, प्रशोक त्रिपाठी बाराणसी, का० राजेन्द्रप्रसाद कतपुर, श्री भ्रोमप्रकाश एडवोकेट प्रधान भीमकुमार सिंह गल्ल ध्रिष-ष्ठाता, श्री बेचनसिंह सचालक श्री उदयबिहारी खन्ना, श्री मुन्नीलाल जी किराकत सक्षक श्री रामिक शोर त्रिपाठी कार्यंक्रम संचालक श्री राम कष्ण जायसवाल, उपस्वालक श्री प्रयागदीन बायसवास ने प्रशिक्षा वियो को प्रपना धाशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रवसर पर दयानन्द ज ब्हा व स्कल के सभी ग्रध्यापक श्री उदयराज प्रजापति कार्यालय इन्वाज श्री रामलाल मीय राशन इन्यार्ज, श्री उमाधकर द्विवेदी श्री सुयंनाण पाण्डेय धनपतगज, श्री जटाशकर तिबारी श्री जगदीश मिश्रा ने मैस का कार्यभार देला. श्री हौसिलाप्रसाद तिबारी, श्री रामकेवल जायसवाल यज्ञ को व्यवस्था को शब्खे दग से सम्पन्न कराया। श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र एव श्री बेजनावसिंह ने मति-वियो का स्वागत किया। इस शिविव को सम्पन्न कराने मे मुख्य रूप से श्री प॰ रामकिशोर जिपाठी एवं श्री प्रयागकीन जायसवाल का विश्वेत्र सम्बोग रहा।

> प्रयाणकीतः शाससवाश श्चिविर समोजक

## श्रार्य प्रतिनिधि सभा प्रवीं श्रकीका कीनियानेरोबी की −िि रे गई हिर्वादन

**श**ष्य प्रतिकित सरु पर्कीय श्रफोका ग्रपने स्थापना काल से हो पर्वी भक्त का हा हती आपत भारत से दर सभी पारदेशाय क्षत्रों मे वदिक मन्तव्यो और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा सस्यापित बार्धभगाज के मिटातों के प्रचार प्रमार में लीन रहा है। ग्राज भी यह सभा पुरा मर्यादाओं को सुर-क्षित रजता हमा मागे ही ग्रागे बढता जा रहा है। इस वस सभा का निर्वाचन २४ नवस्वर १०८४ ई० को सबसम्मति से दो वर्ष के लिए अर्थात १६८६ ई० तक धनीव प्रस-न्तता एवं मदभावनाधी से परिपर्ण वातावरण में हुआ। निर्वाचन के पश्चात सभाप्रधान श्री हरबगराय जी साही ने अपने साथियों को साथ लकर स्गाण्ड तनजानिया श्रीर कोनिया मादि सभी प्रदेशों की आयममाओं का दौरा किया भीर भायं बन्धओ को मिलकर उत्साह प्रदान किया। इस दौरे का वडा ही सफल प्रमाव

इस वर्ष की गतिविधियों से तत्लेखनीय कार्यं की निया राष्ट्र से ईसाई और "स्लाम धर्म के साथ साथ हिन्दू वर्गकी शिक्षाको भी धनि-वार्य रूप से लागू कराने का भरसक यत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्मेशिक्षा सभी जिल्ला सम्मण्यो मे इसी सत्र (Session) से पाठयऋग में निर्देशिन कर अनिवास कर दो थी। किन्तु इसमे केवल इस्लाम और ईसाई वर्म को हो लिया गया था। हिन्दू वर्गका कही भी नाम नही

था। सभा के अविकारि के भी • डा • वदोराम जी शर्मा के ग्रनशक प्रानी से इन सरकार ने हिन्द्रथम भी भी पाठयकम में सम्मिलित करना स्वी-कार कर लिया। किन्त्र हिन्द्रधर्म का मार्गग्रन्थ घर्मों के समान संस्ल बही था। किर भी डा॰ शर्मा जी ने हिन्दू-धर्म का पाठयकम तैयार किया भीव सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को मेरे माध्यम से भेजा। किन्तु हुमारे ही कई घन्य विचारी वाले सज्जनी ने अपने आप को हिन्दूधम के शीर्षक से यक्त पाठयक्रम को स्वीकार करने मे कल बाधाण उपस्थित की। इन सभी बाबाधों को भी डा० वदाशम जीने बडी ही सुफ-बुफ से राज्य सरकार को परी तरह मन्तृष्ट करके भीर दसरे माइयो को भी समऋकर शान्त किया और परमात्मा की क्रा मे हिन्दूबर्म को भी इस राष्ट्र के बच्चे पतने का ग्रवसर प्राप्त कर सकेंगे। डा॰ साहिब सरकार की शिक्षा नीति के पैनल पर एक वरिष्ठ सदस्य के रूप में मनोनोत हैं। और इनसे बार्य समाज का मान भीर भान को सर्वों-परि प्रनिष्ठा प्राप्त हुई है। डा॰ साहब बाजकल वर्मशिक्षा के बच्या-पको को तैयार कर रहे है भीर स्वय सभी मुसलिम, जन सिख, ईसाई विद्यालयो मे जाकर हिन्दू धर्म पर धयने भाषण देते हैं। इस प्रकार स ना वैदिक धर्म के प्रचार मे दत्त-वित्त है।

> लखनराम साही (हरबशगय साहो) सभा प्रचान

## निर्वाचन सूची ११८५-८६ के दो वर्षों के लिए

श्री हरबशराय जी शाही सभाप्रधान श्री महेन्द्र जी मल्ला वरिष्ठ उप-प्रचान

श्री जीलकान्त जी वर्मा तवव्रधान मम्बासा (समूद्र तटीय क्षेत्रायं) किसुम् (परिचमी क्षेत्रार्थ)

श्रीबलबीर जी ढाडा महामन्त्री श्रीमधुदुमारजी भल्ला उपमन्त्री एलडोरेट श्री बीरेन्द्र कुमार जी बर्मा उपमत्री

श्रो गिरधारीलाल जी सेठी कोषा-ध्यक्ष

कोषाध्यक्ष श्रो भ्रमस्ताय जी फक्के बेद-प्रचाराधिष्ठाता

श्री धर्मेन्द्र जी कपिसा सह-

बीम्बी विमंसाविष्ठ - पुस्तका-१. इन्हीं के साथ चौदह सदस्य अस्तरम समा के जिए निर्वाचित हुए।

२. श्रद्धानन्द नसंरी स्कल के लिए श्री नवलकुमार भल्ला निर्देशक और श्रीमती पृथ्या मदन, मैनेजर निर्वाचित हुए। प्रमाणित प्रति सभा प्रधान

## श्री राजेन्द्रपाल को बहुढ़ा उपप्रधान महर्षि दयानन्द निर्वाग दिवस पर समारोह पूर्वी दिल्ली में

विशाल सभा

१७ नवम्बर दिल्ली । प्रार्थसमाज गीता कालोनी में पूर्वी दिल्ली की समस्त बार्यसमाजो की बोद से एक विशाल समा धायोजित की गई। जिसमे वैद्य रामिकशोर, श्री वेद-प्रकाश क्षेत्रीय, श्री डा॰ धर्मैपील, बी सुर्वदेव समा प्रवान शादि बक्तांओं ने महिंद दयानन्दें के जीवने एव अन्तर्वी पर प्रकाश 'डाली' इस अवसद पर पूर्वी दिल्ली के हजारो श्रकाल तर तारी जपस्थित है ।

#### शाक में मांस परोसा

प्राव दिनाक ३।११।८५ के प्रायं समाव के सार्ताहिक सत्यग में यह सानकर वडा प्रारचन प्रीर दुव हुमा कि माने प्रायं प्रार दुव हुमा कि माने प्रायं प्रार दुव हुमा कि माने प्रायं प्रायं दुव हुमा कि माने प्रायं प्रा

बलीगढ मुस्सिम विश्वविद्यालय के एक रीडर ने पुलिस मे एफ बाई प्रार दज कराई। इस घटना से मार्ग बगत की घार्मिक भावना को ठस पहुची है। सत्सा में बनेक वस्ताओं ने घोर निन्दा की।

हम जिला प्रशासन से घपेसा करते हैं कि वे इस घटना को गम्भी रता से ल घौर दोषी व्यक्तियों को उचित दण्ड दिया खाय ताकि भविष्य मे इस प्रकार की पुनरावृत्ति न हो।

सत्यपाल पचनदा

प्रधान

### श्रार्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

वतमान सन्दर्भ मे चार सूत्र

बायसमास का इतिहास सेवा का ज्यानन उदाहुरक है। महाँच त्यानन्द के समुवाधियों सेवा करते करते अपने बसिदान दिखें हैं। उन्हें आवस मानकर हम यह स्थ-रक्ष कर्षों किअपने मन्तिय में हम सेवा की पवित्र भावता से प्रवेश करें न कि पद भीर मान पान की इन्ह्या से। सन्दोने कहा इस समय हमासा स्वा-

श्री हरिकिशनसिंह मलिक को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री हरकिशन मसिक की दर्दनाक हत्या से समस्त धार्य जगत् ने सोक व्याप्त हो गया। जनकी स्मृति में १० नवस्वर को धार्यसमार्व दीवान हाल मे एक श्रद्धाञ्चलि समा प्रो॰ सेरसिंह की **अध्यक्षता मे हुई। इस घदसर पर** धनेक गण्यमान्य महानुभावो ने दिव-गत बात्मा के प्रति बपनी श्रदाज-सियां प्रपित की। श्री मसिक विटा-बर्ड सेश्वन जब दिल्ली, धार्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता दानी एव परोप-कारी थे। उन्होंने सेवामुक्त होने के बाब प्रपना सारा समय समाज सेवा मैं व्यतीत किया। वे सरवनिष्ठ मब्द स्वनाव, कर्मठ, धवनी बात विगमता एवं बुद्धा के कहते में

---यशपाल सुधाशु ध्याय कम होता जा रहा है। धार्य-समाज के पुस्तकालयों में घल लगने लगी है। पुराने भार्यों में स्वाध्याय का गुण बढा विशेष था। साज हमे सत्सग में नियमित पहुंचने का वत बेना होगा। भीव गसी, मौहल्लो, पाकों ने कथाओं के आयोजन किये वाने वाहिए। मन्दिरो से बाहुर निकलकर वेदों का सन्देश जन जन इक पहुचना समय की पुकार है। बीर बीबा सूत्र है परस्पर सहयोग । बार्यसमाज मन्दिर मे बाने नाने महर्षि के सबी प्रनुवाकी समस्त भाई बहुनो में एक दूसरे के साथ बन्बुत्व का नवित्र नाता है। प्रतः एक दूसरे के द स में सहमागी होना चाहिए। इस त्रकार परस्पर सहयोग सपेक्षित

इस वाधिकोत्सव वे पूर्व वक्त मनोहर वेदकवा भी हुई। विसर्भे अववनकर्ता श्री वेदशकास श्रीविव वे। मनोहारी गायक श्री वाचव के अस्त दए।

बम्बाददाता बायबन्देश

प्रसिद्ध थे । प्रसिद्ध सन्धाती श्री घोमानन्य भी ने उनको समाध देवा एव बान के गुण की भूषि जूषि प्रधाता की। इस धवसद पद श्री डा धर्मपाल, श्री सोमनाव मस्वाह, श्री मामबन्द रिवाडी, श्री मूलकन्य घारि वक्ताओं वे उनके प्रति श्रद्धा-वषन कहें।

धनेक समावसेवी सस्याधो ने धोक प्रस्ताव पारित किये जिससे सार्वदेशिक झार्य प्रतिनिधि समा, दिस्सी झार्य प्रतिनिधि समा, झार्य केन्द्रीय सभा दिस्सी, बार्यस्यास्य वीवान इस्त भावि सस्यार्थे सामिल

नियी संपादनाता

एक भाषा व एक लिपि से राष्ट्रीय एकता सम्भव

सालनव (रायवरेली) वेसवारा डिब्री कालेज (महाविद्यालय) में प्रस्थात महिला उदधारक, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित प्रार्थसमाजी नेता श्री देवीदास बावं ने राष्ट्रीय एकता व श्रखण्डता विषय पर भाषण देते हए कहा कि राष्ट्रीय एकता नारो व बातो से नहीं होगी इसके लिए सामू-हिक कदम उठाने पहरो। देश की एक ही भाषा हिन्दी व सभी राज्यों की माषाम्रो की लिपि भी एक ही देवनागरी होनी चाहिए। देश मे सब के लिए एक ही कानून भी होना धावस्यक है। सम्प्रदाय विश्लेष के सिये ससग से कानून बनाना सनुचित होवा ।

श्री आर्य ने कहा कि एकता के लिए विद्यार्थियों में देशमन्ति, त्याग

आर्यंसमाज सराय रोहल्ला

वार्षिक चुनाव

३ नवस्बर, १६८५ को धार्य-समाब सराय चोहल्ला का १६८५-८६ के लिए वार्षिक चुनाव हुमा । बिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए । स्वीमती सांच धर्मा जी . प्रधान

श्रीमती सार धर्मा त्री. प्रधान श्री ज्यालाप्रसाद जी उपप्रधान श्री रोधनजात उपप्रधान

,, उत्तमचन्द मत्री ,, देवसैन बब्दा उपमत्री

,, बाममेहरा उपमत्री

,, ज्ञानमन्द कोवाध्यक्ष ,, सुञ्जीलकुमार प्रचारमत्री स्तमयन्द्र

सन्त्री

श्रार्थससमाज निर्माण विहार दिल्ली-१२ का प्रथम वार्षिक उत्सव सम्पन्न

२८ अक्तूबर से ३ नवस्वर ८६ तक सैन्द्रत पार्क निर्माण विहार मे बड समारोह पूर्वक मनाया गया। २८ प्रक्तूबर से २ नवम्बर तक प्रातः ७३० से ६३० बजे सामवेद महा-यज्ञ व राजिको ८३० से १३० वर्षे बी जैमिनि सास्त्री वी की वेद कवा हुई। ३ नवस्वर को प्राप्त द से १३० वज्ञ को पूर्णाहति हुई धीर १०वजे से दोपहर १ वजे तक परित्र निर्माण सम्मेखन जा० रामगोपाल जी **सासवासे प्रधान सार्वदेशि**क सभा की अध्यक्षता में हुन्ना। श्री विद्याप्रकाश सेठो मुस्य जतिवि वे। श्चनेक विद्वार्ती वे प्रधान कर शपने विवाद स्थे।

> प्रेम प्रकाश सन्त्री आर्वेश्वमाथ निर्धाण विद्वार

व तपस्या की चावना छोटेपन से हीं उत्पन्न करना झानस्वक है। शिक्षा धानामीय ही चहाँ गरीब अभीद एक साथ रहे तथा शिक्षा प्राप्त करें।

कालेज के बाजाएँ वो प्रमण-वारी एवं में बेदेशलाल मार्च का म व्याद्याल किया तथा मामान्य प्रजट किया। राजि में वेदश्यार सक के तत्वावधान में प्रमाग मार्ग जोराहा पद धार्याजित विद्याल सभा में बो वेवीवास मार्ग के धार्मनन्दन किया गया। श्री धार्य ने कूमाळूत व जाति बाद को छोडने एव बल दिया। सभा की घम्यसता श्री रामकुमार रस्तोकी ने की।

> रामकुमार रस्तोगी भागसमाज

#### त्रार्यसमाज विकासपुरी में विराट जन सभा

१० नवस्य नई दिल्ली। प्रायं-समाय विकायपुरी से अत्र के समस्त्र वार्यं समायों को प्रोय के विराद् जन-बमा का प्रायोगक किया गया। इस ध्यवय पर की डा॰ महेल विद्याल-कार, वी॰ वस्त्रतिल्ल, को डा॰ घर-पास, वी गौरोबाल वास्त्री ने प्रप-पास, वी गौरोबाल वास्त्री ने प्रप-वोजस्थी क्यार्ये में महींव व्यानत्त्र के नहान् कार्यों प्रोय धार्यसमाय की नावी योवमाबों पर वन्नच्य विवे। स्वाय की वार्यिक चनता ने वह चह वान जिल्ला।

सम्बाददाता

निर्वाचन

समा का वाविक चुनाव ११।६। दूप को आर्यसमान मदिर, प्रकोक नगरा में भी वर्षनमान बस्पानी की सम्बद्धाता ने बम्पन्न हुआ। जिसके निम्नसिक्कित प्रविकारी सर्व-सम्मति से बने गए —

प्रधान श्री दाजाराम ग्राय उपप्रचान महाशय सुक्रदेव भागे, श्रीभीमसेन आर्थे

श्रामसम्बद्धाः मंत्रीः ह्वीश कुमार भार्य सहमत्री श्रीचन्द्रभाग सतिया,

श्री बीमपैन रहेसा कोवाध्यक्ष श्री चन्द्रमान भ्राहुवा बेबापदीक्षक श्री यद्यपाल भ्रानन्द अण्डादपाल श्री नन्दलाल माटिवा हदीश कुमाद आर्थ

मत्री भागसमाज नविर, सम्रोक ननदः



ससार का प्रत्येक प्राणी स्वस्तत्र सहना बाहता है। जैसे बधा पश् टटने पर भाग जाता है, पिजरे मे बन्द पक्षी यदि निकलने का अवसर प्राप्त कर ने तो उड जाता है, पकडे गए सर्पे. बिच्छ बादि भी भाग जाते है। यहा तक कि वर्षों से चिडियावरों से नाना प्रकार के बन्य प्राणी भागते हुए पण् वाते हैं। सभी बोड़े ही विनों पूर्व एक विडियापर के वोते ने ऐसे लोहे के जंगले को काट दिया। जिसको बब्बर शेर भी नहीं तोड सकता था। उस तोते को दुवासा पकड़ कर दोहरे पिजरे में रखा गया है। तो मन्द्य जाति का तो कहना ही क्या ?

सतार के श्रेष्ठतम व्याकरणा-वार्य महींय पाणिनि ने कर्ता की परमावा की है जो पूर्ण स्वतन हो यया स्वतन कर्ता। सवार के सभी वाष्ट्र स्वतन रहना चाहते हैं। इसके लिए नाना प्रकार के पुढ होते क्या है हैं। या स्वता का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन है। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन तन रहना चाहता है जिसके फलस्व-रूप परस्पर में सबाई मा हे भी देखे जाते हैं।

स्वतत्रता को अनेक मर्यादाए हैं। वेसे यदि सक को स्वतत्रता को यूरो पूरो छुट दे दी जाए तो अपना विनाश भी वपदयभावों है। आर्थ-समाज का दस्वां नियम सब मनुष्यो का सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतत्र रहना चाहिए तथा प्रत्येक हिनकारी नियम में सब स्व-तत्र रहें। इसके आधार पर पस्त-त्रता को स्वतत्रता है। स्वतत्रता वेस्तेन्त कानून हैं जिसके आधार पर चसना हो स्वतत्रता है।

कुछ लोग तो स्वतंत्रता का मन-माना प्रयं करते हुए व्यक्तिगत तथा शब्दीय, प्रान्ताय वार्यो विशेष के माधाद पर एक दूसदे पर हावी होने के लिए नर सहार पर तुलकर प्रपना तथा पराया अहित करने में हो लगे पहुते हैं। बल्कि देला गया है कि भावतंत्रय की छोड़कर प्रमय देशस्य वर्षरूक प्रयोक्त राया हो हैं।

हमारे देश का सवा से ही स्वा-भावक नियम रहा है कि किसी को ची जन्याय पूर्वक न दबाया जाने । परन्तु हमारे देश पर जिन जिन कोगों ने शासन किया, उन्होंने बढ़े-बढ़े कूर प्रत्याचार किए। इसके किए इतिहास सासी है। पुरुषोत्तमा नावेख, स्वामी क्यानन्य सरस्या तथा प्रत्य कालिकारियों की सेखा-बढ़ी पड़ने के बहु बात बिक्कुल सरस्य

# सच्चे भारत माता के सपूतो जागो !!!

प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पुरोहित सार्यसमाज शासीमार बाग, दिल्ली-५२

हो बाती है।

किसी भी दुब तथा विद्याल वसन मुख तींब के वे (तथद होते हैं जो दिखलाई नहीं देते । इसो प्रकार से किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के वे क्रान्ति-कारी ही राष्ट्रकरी भवन के पत्थर होते हैं जिस पर वेश उन्नत कर से सबा है । धोक की बात है कि उन लोगों के विदय में, प्रामाणिक तथ्यो तथा उनके बलिदानों को जन साथा-रहा है।

किसी भी देश को स्वतत्रता दिलाने वाले सूर्युको निममण देकर दथो बुलाते है। जिस मौत की बात सुनकर वडं बढे योग्य व्यक्ति भी प्राय भयभीत हो जाते हैं इसलिए कि हमारे देश में भ्रमानवीय अत्या-वार बन्द होकर प्राणीमात्र को जाने का पूर्ण जीवकार प्राप्त हो। स्वत-त्रता के लगभग ४० वर्ष वाद क्या हुमा बया क्या हो रहा है? क्या इसी के निए स्वतत्रना प्राप्त की गई थो?

स्वतत्रता का लक्ष्य क्या था ? सोविष्य पशु-पिक्षयों का वच बेका वाए। घपनी भाषा का सभी स्करों पर प्रयोग हो तथा भारत विद्याल तथा समुन्तत हो। स्वतत्रता के पश्चात् गोवश का नाश, राष्ट्र-भाषा की पूर्ण व्यवहेनना, विदेशों रिवि-रिवाज, खानपान व्यवहार, साधा मांस मार्दि का सेवन, मश्ली-लता का जोरवार प्रचार करके युवा-स्वित को कमजोर करना और शेष भारत को पुत खण्ड करने की मिसोमयत चल रही है।

कुला कीन है ? जुला के करके वमन करके खा लेता है। इसी प्रमाद हम म्र मेवों का वमन खा रहे हैं। कुले की नकल कर रहे हैं। व मेवी की पूर्ण मरोपता हम दिला रहे हैं। हम विरोध ही नहीं करते। हुए सहन्यतीलता का वाबा करते हैं। हमें पेसा चाहिए, देश, धर्म, परिवास भाड में जाये। जहाँ इस विचारवास के सोन होंगे, वहां सर्वनाश ही तो होता।

दे गारतवासियो, यदि वाप में

उन कान्तिकारियों का खोलता हुमा रक्त है तो क्यो नहीं भारत माता को रक्षार्थ सर्वस्त धर्मण कर रेते। भारत माता के टुकडे करने वाले तथा पृथकता को मांग करने वाले कपूत हैं, छपूत नहीं। उन्हें चाट आधो। उन्हें खत्म कर दो।

याद रक्षो किसी बृक्ष के मूल में पानी डालने से बृक्ष बढ़गा, फलेगा, फूलेगा भी। इसी प्रकार यदि देश बचेगा तो घर, सडक, बाग वर्गाच, नाग प्रकार के जिज्ञान, कारवाने सेत स्यागा तथा जन समुदाय बचेगे झन्यथा नहीं। देश को बचाओ।

याद रखी प्रत्येक राष्ट्र धपने देश की पूर्व निर्धारित मान्यताखी के क्षीर परम्मराएँ उसका मार्ग दर्शन करती हैं। स्वतंत्र राष्ट्र का सर्विधान होता है। पर हमारे देश के भाकाश-वाणी, दुर्दर्शन, समाचार पत्र और राजकीय स्थिकारी नये दंग से मये रास्ते पर चल रहे है।

किसी भी देश की स्वतंत्रता 'करो वा मरो' पर ब्राधारित होती है। देवासुर सग्राम सर्वविदित है। महाभारत सर्वविदित है। हमारे धपने बर में कोई भाग लगाने भाये, तो हम तुरन्त बाग बुभाने का उप-कम करते हैं। हमारे देश मे धान लगी है। इसे कौन बुआयेगा? जिस देश की युवाशक्ति बुरी तरह कामान्ति दुव्यंसन, बच-पान, मांसाहार करने में लगी हो, उस देश का महाविनाश सामने ही है। धत सभी सभल जाशी। अगडाई लो। भारतमाता का ग्रगकाटनातो दूर, छूने वालो को सपरिवार, समूल नष्ट कर दो। उन का बीज तक पृथ्वी से मिट जाए, ऐसाप्रयास करो।

जीजाबाई, सक्मीबाई, सीता, साबिधी, युजभा, दुर्गा, काली प्रादि की सिंगतों नारियों अपनी प्रपनी कुपाण हाथ में लेकर नरमुख्डे को एक्पित करके दिखा दो कि हम प्रास्ताना को दुर्गी नवस से देखने बालों की यही दशा करती हैं।

गुरु विरजानंद, स्वामी वयानन्द,

चन्द्रशेखर ग्राजाद, बिममिल, भगत-सिंह भाई परमानन्द, सुभावचन्द्र, बोस, बीर सावरकर इत्यादि हजारों बलिदानियो का खुन, युन था पानी नहीं। यदि धाप में रक्त की पवित्रता का तनिक भी भागास है तो क्यों स्वतत्र देश को परतत्रता की भोद ले जा रहे हो । ग्रावश्यकता इस बात की है कि हम एक जुट हो कर सबख करें, तभी सफल होगे। विरोध करो तन मन घन से उन नीचों का जो हमारे देश में रहकर जी रहे हैं भी स गुण गाते हैं विदेशों का। भ्रषिकार मागे नही मिलता, मुजबण्डों से छीना जाता है, सच्चाई मानी नही, मन-बाई जाती है। इस काम को कुकर्मी भीर भारमा से बलहीन लोग नहीं कर सकते। चीर का चीर विदोध नहां करता। इस प्रकार से हम भी चोर है यदि हम धराष्ट्रीय तत्त्वों का विरोध नहीं करते।

यदि साप सपने को स्वतन सम-भते हैं तो नाम काम मनी बदलने होंगे। मुसलमान साथे, उन्होंने प्रयाग का नाम बदलकर इलाहाबाद कर दिया। स ग्रेजों ने भी अपने देश की भाषा और सस्कृति के साबार पर भी नामकरण किया। हमें तो सपने नाम सपने उग से एकने साहिर, पर इस सेस्टर रसते हैं वण्डीगढ़ के, बोकारों में और सार के पुरम में क्यों?

तुम सब को महापाप लगेगा
यदि भारतीयता को तिलाजिल देकर
भ्रपने घरों में ढंडी, मस्मी, पाया
हत्यादि महापातक करवों का प्रयोग
करोगे। इन शब्दों का मर्थ मृत भीर
पापी का बोजक है। टीटू, नीटू, दीटू
बीटू, पप्पू, गुडड़ शब्द भी घरों में
मृत गए हैं। हम लोग चोटी और
जनेऊ छोडकर भही बंचभूला भरवानक
कर हीजड़े बन रहे हैं। नारी विदेशो
नर बनने की इच्छा कर रही है।

माइसो। कहाँ तक लिख्लुं। यदि ठीक दग से लिख्लुं तो रोना माता है। तथा विद्याल प्रत्य कन जाये। आज हर चर का प्रत्येक सदस्य भारतवर्षे का परम श्रु बन रहा है। विवाह, भोज, जुनाव सभा, खेलकृद मादि सभी में विदेशोपना है। ऐसा लगता है कि अपने देश में कुळ साझ रहा ही नहीं। जो समार लगजग दो प्रत्य वर्षे तक मारतवर्षे के चक्रवर्ती राज्य को ब्यदस्या के प्रत्य जेता रहा, वह आ बदस्य ने देश चेक जुका है। हमी में खोट है।

कुछ लोग हैं, जो पूर्ण भारतीय है पर व ग्रस्थल्प हैं। उन्हें राजसत्ता, जनसत्ता, वर्गसत्ता तथा धन धादि

(शेव पुष्ठ ११ पर)

### एक घटना और एक दुर्घटना

लेखक-म०म श्राचार्यं विश्वश्रवा व्याम वेदाचार्यं एम० ए० वेदमन्दिर वरेली

(घटना)

दीवान बहादुर बाबू हरविलास जी शारदा उन व्यक्तियों में से थे जिन्होने महर्षि के दर्शन किये थे। वे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की धनेक बाते सुनाया करते बे। दीवान बहादूर साहब जीवन भर परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे।

डा॰ रघुवीर ससार प्रसिद्ध महान रिसर्च स्कालर थे। दीवान बहादर साहब ने डा० रघवीर को परोपकारिणी सभा मे महर्षि के ग्रथो के सम्यादनायं रखा। डा० रघुवी र कुछ काल भजनेर मे काम करते रहे पर डा॰ रघुवीर यह चाहते थे कि महर्षि के प्रत्थो पर उनका नाम सम्पादक के रूप मे छापा जावे पर दीवान बहादुर साहब ने इसे स्वीकार नहीं किया भीर स्पष्ट कह दिया कि माप रहेयान रहे पर महर्षि के ग्रन्थो पर केवल महर्षिका ही नाम रहेगा भ्रन्य किसी का नहीं। डा॰ रघव र छोडकर चले गये। दीवान बहादूर साहब ने कोई पर्व ह नहीं की। घत द्यायजगत यह देख लेकि परोपका रिणी सभा द्वारा प्रकाशित सत्याथ प्रकाशादि ग्रन्थो पर महर्षि का ही नाम है। श्रन्यत्र प्रकाशित प्रत्येक ग्रय पर लम्बी लम्बी भूमिकाए इसका गलत उसका गलत केवल हमारा सही है। ऐसी तृत् मैं मैं ग्रन्थ से पूर्व भरी रहती है।

#### (एक दुर्घटना)

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ नोएडा गाजियाबाद मे अनार्ष प्रथो की परीक्षाए तोडकर श्राषं पाठविधि से प्रथमा' मध्यमा, शास्त्री, बाचार्य परीक्षाची का कीस बनाया गया है। सस्कृत युनीवर्मिटी वाराणसी ने उमे स्वीकार करके मान्यता मो दैदो। पर बभी उस म कुछ सुधार की धावश्यकता है धन महेश योगी जी को सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि मे लिखित प्रार्ष पाठविधि देखनी थी। मैं तदथ महात्मा ग्रमर स्वामी जी के धाश्रम, गाजियाबाद गया कि सत्यार्थप्रकाश, सस्कारविधि वहा मिल जायगे।

महात्मा धमर स्वामी भी उस पार्थप्रकाश को लिये बैठेचे जो व पत्र पर भकित कराया गया | उत्पर उठा | सकता हु। प्रसिद्ध

है उसकी भयकर ग्रह्मद्वियो पर निशान लगा रहे थे। वे सब अश-दियों को संग्रह करके परोपकारिणी समा को भेजने कि ऐसा अश्द सत्यार्थप्रकाश ताम्रपत्र पर शस्त्रित कराया गया है। मेरे पास बहु ग्रन्थ नही था मैंने पहलीबार उसे देखा। कुछ स्वल मैंने भी देखे जैसे सत्यार्च-प्रकाश के सप्तम समुल्लास मे निस्कत के नाम से प्रमाण दिया है---

> 'ऋषयो मन्त्रदृष्टयो मन्त्रान् सप्रादुः।'

पर ऐसा पाठ निक्क्त मे कही नही है। ये तीन स्थानो के ट्रक्ड हैं ऐसा छापना चाहिए-ऋषय मन्त्रदुष्टय ' मन्त्रान् सप्राद्

> (एक भयकर धक्का) दीवान बहादुर साहब ने सत्यार्थ

> > जीवन संगीत

(पुष्ठ २ का शेष)

बचा नही है। कृष्ण भगवान् ने

गीता में बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।

ध्रुव जन्म मृतस्य च।

ग्रस्मिन् परिवर्तनशील ससारे

मृत को वान जायते।

रखते हुए स्वर्गीय स्वामी केवलानन्द

जीने भजन की एक कली में कैसा

यहा बड -बड विद्वान् हुए,

बलबान हुए धनवान हुए।

पर भीत के पजो से केवल.

भी वहें मार्मिक शब्दों में इस प्रकार

मृत्युरीशे द्विपदा

मत्युरीशे चत्रवदाम् ।

तस्मात्त्वा मृत्योगींपते-

रद्भरामि सभाविभे ॥

धर्वात मृत्यु दो पायो व बारपायो

पर एक सम शासन करती है। पर-

मात्मा कहता है कि बा, मेरे पास

बा, मत भयभीत हो क्यांकि उस

भूपति मृत्यु से तो केवस मैं ही तुम्हें

अववंवेद दाशश्र

वर्षन किया गया है---

कोई रचना में आकर बचान॥

इम मृत्यु के शासन को वेद मे

इसकी बादवतता को ध्यान मे

प्रकार कही है --

सुन्दर कहा है---

यही बात किसी सन्त ने इस

प्रकाश के टाइटल पेज पर भी डा० रथुवीर का नाम देना स्वीकार नही किया पर इस ताम्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश पर सस्यार्थप्रकाश के प्रत्येक पुष्ठ पर सेठो के नाम, दुकानदारों के नाम फर्म के नाम, कम्पनी के नाम पूर्ण पते सहित ताम्रपत्र पर अकित किए गए हैं। सत्यार्थ-प्रकाश को ताम्रपत्र पर अकित करके ग्रमर नही बनाया गया है। प्रत्युत सत्यार्थप्रकाश की छाती पर व्यापारियों को पूर्ण पते सहित ताञ्चपत्र पर अकित किया गया है। इसीलिए उन्होंने धन दिया होगा। उस दश्य को देखकर एक गहरा घक्का मुक्ते लगा। यदि आज दीबान बहादूर साहब जीवित होते तो ऐसा जवन्य कृत्य कभी न होता। पता नही परोपकारिणीसभा के लोग कुछ देखते हैं या नही । वह सत्यार्थ प्रकाश लगता नहीं । को लियो सत्यार्थ प्रकाष का ऐसा नहीं जो मृद्रित सत्यार्थप्रकाश पर जैसा डाला जाता है। सावंदेशिक सभाको इस दृश्य का ज्ञान नहीं है। ग्रायंजगत को चाहिए कि इस ताम्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश को गलवा देवे यह आयंसमाज

पारचात्य चिन्तक (Andrew Jackson) ने भी इस मृत्यू के शासन की इस प्रकार पष्टिकी है---

के इतिहास मे एक कल दूहै। 🔵

अन सिद्ध हुमा कि मृत्यु कभी भी और किसी को भी धादबोच लेती है यह एक अतिथि की तरह है जिसका सत्कार करना हमारा कर्तंब्य है। यह टाला जाने वाला कोई साघारण निमन्त्रण नही समकता

बन्धनो । हमे चाहिए कि इस क्षण भगुर ससार मे इस नदवर जीवन को ग्रसारता को समक्र कर इसके पालन पोषण मे ही ग्रासक्त हो कर अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ नष्ट न करे। बुद्धिमत्ता तो इसमे है कि मौत रूपी बज्ज गिरने से अचेत होने से पूर्व ही---

'प्रणोति श्रभिद्यावर्त्तस्व

वेद विहित कार्यों-स्पवहारों को करते हुए उस धानन्दस्वरूप हिरच्य-रूप को ग्रपना रक्ष ह बना से-'श्रॉन पुरा तनवित्नोर वित्ताबि-

दिरण्यकपमवसे कृष्ध्वम्। ऋग् ४।३।१ यही बात उपनिषद में भी कही

'महदभय वज्ययेतच्चत य एतद्विदुरम्नास्ते भवन्ति ।' इसी क्रीमक जीवन परिवर्तन को विद्वानो ने 'जीवन सगति' के नाम से पुकारा है उद्दें में इसे 'तराने जिन्दगी भीर भक्तल भाषा में इसकी

कहा गया है। इस जीवन समति को एक उद्देशायर ने दरिया केरूप में सम्बोधित करके उससे ऐसे कहलवाया है। यह रचना हो वर्ष पुरानी है।

शायर दरिया से---

सुना प्यारे दरिया कुछ अपनी कहानी, कहा से तेरा बहना भाता है पानी। कि वर जारहा है टहसता - टहसता, कदम तील-तील भीर बन-बन है चलता।। दरिया का उत्तर --

> पहाडी है अपनी जन्म भूमि व्यारी. अडी ये की बसा की हस्ती हमारी। था ऊर चे पै सूत के इ. भवना भूला, चमन चार जिसके था एक फल निक्ल भाषा इकदिन मैं दीत्राना बनकर, मचाता चला शोर स्ना-साके चनकर। कही फूल थे मुम्हे पै भुक भुकके झाते, लजा करते होटो मे कुछ मुस्काते।। पहाडी के नीचे मैं बहुत उछला कदा, किनारों के अन्दर चलामे मटकता। भगर घव गया वह स्रशी का जमाना, वह जाता रहा मोजो का सब तराना॥ धब तो माता है कानों मे शोरे समन्दर, गया कोई दम मे पियदो के घन्दर।।

अत ग्रन्त में यही कहगा कि हमारे पाठको । यदि जीवन को सफल करना चाहते हो, भीर मृत्यु के भय से बचना चाहते हो तो--

"नारावण वो चीवों का ज्यान रक, यदि चाहता है कस्याण । याद करने की मील, भवने को थो भनवान्॥ 🗅

When death comes, he respects neither age nor ment He sweeps from this earthly existence the sick and the strong the rich and the poor and should teach us to live to be prepared for

विरवेभि सासिभि. सह।" श्यर्व-७।१०५।१ प्राचीन योग सारिवयों ने प्राच विद्या का विकास किया, जिससे उरवेक गनुष्ठ स घन विहीन होने पर मी ध्रदने जीवन में स्वास्थ्य-लाम कर सकता है उन्होंने प्राणायान तामक एक ऐसी किया का प्रविक्ताव एव प्रयोग किया जिसमे मानव शरीर ने होने वाले प्राण का नियमन एव सवधन मनुष्य के हाण में हो गया। मनुष्य ने इनमें न केवल सारीरिक स्वास्थ्य लाम ही किया, प्राणितु सा

मुस्य प्राण दस है—प्राण, अपान, समान, उदान, स्यान, नाग, कूर्म, कुकल, देवदल ग्रीर चनञ्जय।

प्राण—धाल, कान मे मुलनासिका द्वारा निकलता हुमा ठहरता
है। मीतर के पूषित परमाणु बाहर
निकालता है। मुक्त ग्रन्न को पुरीष,
जल को स्वेद एव पूज और रसादि
को बीर्य बनाना प्राण का हो काम
है। इसके स्वस्थ रहते से पुष्प का
बीर्य बदता है एवं हिमबत्जमता
है। तथा स्त्री के रजीविकार नष्ट
हो जा है।

धरीर के ऊपरी भाग से यह स्था करता है। इस प्राण के ताब स्था का प्रुच्य सम्बन्ध है। क्यों कि दोनों तैजब हैं। इसी कारण परमे-इसर ने धारीर के ऊपर के भाग में नेशों को बनाया है। इसी सम्बन्ध में स्थाँदय होने पर नेत्रों की धर्मित बहुती हैं।

अपान—द्वित वायु को गुदा हार से निकालता है। गुदा से मल, एपस्य से मूज और मण्डकीय से वीयं निकालता तथा गर्भ को नीचे से बाता है। स्त्री गर्भाधान के समय भीयं को इस प्रपान बायु से ही प्रदुण करती है। अतएय अपान बायु के क्षानुत-विगडने पर गर्भ स्थिति नही होती।

गरीर के नीचे का भाग इसके प्राचीन रहता है। पायिब प्रग्नि के सम्बन्ध से प्रपान की चाल नीचे की है।

जठरानिन भी पानिव ही है। इस के कि रहने से प्रपान बायु की समता और अन्यया होने से विवसता हो जाती है। इसी कारण प्रपान बायु के क्रुपित होने से रोग हो बाते हैं। स्वप्न में बीयें-पात होना भी श्रेपाईं बायु के (बिनकने पर) निमित्त कारण से होता है।

प्राण व अभान का परस्पर सबन्ध यह है कि जिस नाड़ी से अमान बायु -नीचे को जाता है स्वरी नाड़ी से अमर

### जीवनोपयोगी प्राण-शक्ति

--सोमवेद

\*

को बाणी निकलती है। इसी कारण बोलते समय प्रपान वायु नहीं निक-लता प्रवा जब प्रपान वायु निक-लता है तब बोल नहीं पाते। प्रता इस प्रक्रिया का भी प्यान रखना प्रनि-

समान—शरीर में सर्वत्र रस पहु-चाता है। अर्थात् भुक्त अन्न-जल को यचाकर शरीर के सब म गों (अस्थि, भेदा, चर्म, बनाने वाली नाबियों) को तदनुकूल यचायोग्य विभाग देता है।

व्यान—कमल के तत्य माकार वाले हृदय मे ही यह रच रूपी शरीर का स्वामी जीवात्मा रहता है। इसी हदय में एक सी एक नाड़ी हैं। इन एक सौ एक नाडियों में से एक एक की सौ-सौ शासा नाडी फटती हैं। अर्थात् मूल एक सौ एक नाडियों मे एक-एक मे नौ-सौ शाखा निकलती हैं। उन शाला नाहियों मे से एक-एक के बहत्तर-बहत्तर हजार प्रतिशाला नाडिया होती हैं। इन मूल और पतिशास रूप स्वनाहियों में व्यान प्राण विचरता है। शरीर में सर्वत्र ग्रनि करता है। जिमसे शरीर में चेड्टा शादि कर्म, जीवात्मा मन के सयोग से करता है। सुक्ष्म एव स्थूल नाडियों मे रक्त सचार करना भी इसी का कार्य है।

उदान — कच्छमूल में रहता हुमा शिरएयंत गांत करता है। वारोर को उठाये रखना और बल-पराकम बृद्धि करना इसका काम है। यह धन-पान को भीतर की चकर समान वायु को साँप देना है। सुष्टम्पा नाडी के साथ नामि से उत्तर की कोर उठता हुमा पुण्य-कर्म से जोवात्मा को सुक्ष भोग की उत्तर सामग्री से युक्त तथा पाप-कर्म के सचित होने पर दुक्त की सामग्री और तिवंगादि योनि प्राप्त कराता है। तथा पुण्य-पाप सम होने पर मनुष्य योग प्राप्त प्रमान है। तथा पुण्य-पाप सम होने पर मनुष्य योग प्राप्त कराता है।

उदान प्राण के द्वारा ही घरीर के प्राण का बह्याध्व के प्राण से सबन्ध है। योगी बन दली के द्वारा स्थूल घरीर से निकलकर लोक-लोकान्तर में यूम सकते हैं।

नाय---इसके द्वारा खींकना, डका-क्ना, प्रतिच्छित का बमन करना एवं

दस्तादि होते हैं।

कूमंं-≁-इसके द्वारा शरीर में सकोचनीयकायं, यथापलक मार-नादि होते हैं।

कृकल--इसके द्वारा खुरिपपासा-भूख प्यासादि की उत्पत्ति होती है।

देवदत्त---इसके द्वारा निद्रा, तन्द्रा, जम्हाई ग्रादि किया होती हैं।

भनञ्जय--इसके द्वारा मूर्छा, बेहोशी तथा खरीटा भरना भादि होते हैं।

विवेचन----प्राण पारण करने की रीति जब जात हो जाती है, तब चलु के सित्तहीन होने पर भी पुन उत्तम मुस्टि प्राप्त को तो है। प्राण् जाने की सम्भावना होने पर भी पुन जाण की स्थितता की जा सकती है। भोग भोगने की स्थल्यता होने पर भी भोग भोगने की शक्यता होने पर भी भोग भोगने की शक्यता होने पर भी भोग भोगने की शक्यता होने पर भी भी भोग भोगने के शावस्वा होने पर भी दीर्ष सायुख्य की प्राप्ति होने के पहचात् पुन सूर्यं की जगसना हो सकती है। प्राण्-रीति के प्रमृक्त भति रखने से यह सब कुछ हो मक्ता ति ?

प्राण, प्रपान दि सब प्राणों की प्रतिकटा यदि उत्तम रीति से की जाए तो मनुष्य नान ज्योति की प्राप्त करता है। इस ज्योति से मनुष्य मनसा, बाचा धीर कर्मणा शुद्ध 'विष हो जाती है। बयोकि प्राण हमारा इतिवयों का राजा है।

"राजा में प्राण" (यजु० २०।१) इतना ही नहीं प्रपितु इन्दियों के भोगो का स्वाहण्कार जब प्राण-सब- संत के लिए होता है नब मतुष्य प्रत्यन्त ने लिए होता है । प्राण के सबर्षन एवं सरक्षण से मतुष्य मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता। इस स्वात है। प्रत्य ने प्रदेश के प्रदेश के प्रत्य को दूर करने में बह एफल हो जाता है। प्रत परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, मेरे नाक मे प्राण स्विप्ता से रहे। मेरा कान, नेन सौव प्राण क्लिन-पिन्न न होता हुसा मेरे साम प्रत्य कान रहे। यह प्राण मेरा मिन बना रहे।

बरीर में प्राण की गति ठीक स्हुवे से क्षिर की सुद्धि होती है सौस् सपान की गति से मस-मुमोरसनं

उत्तम प्रकार से होते हैं। इन दोनों के बशीभून होने से शरीर क्यूणं पेण नोनेग रन्दा के। प्रवीत् प्राण से शक्ति का सबर्धन तथा प्रपान से विष को दूर करके स्वास्थ्य का सर-क्षण होता है।

भ्रतृप्त इन्द्रिय होने से मनुष्य भोगों को घोर तीव गति से जाता है। और पतित हो जाता है। इस प्रकार भोगों मे फसे हुए मनुष्य प्राण शक्ति को बैठते है। क्यों कि शरीर मे स्वस्थ प्राण के होने पर ही बीर्य स्वस्थ रहेगा।

जीव गर्म के अन्दर रहना हुमा भी प्राण-अपान के व्यापार करता है। इसी कारण वहा उसका जीवन चलता है। यह प्राण ही जब प्रेरणा करता है तब जीव गर्म से बाहर प्राता है।

हमारे शरीर में जो जो इन्द्रिया-दिक शक्तिया हैं वे सब प्राण के माध्यम से ही कार्य करती हैं। मुख्ति दशा में सब इन्द्रियां तमीगुण रूप प्रम्ववार समुद्र में डूब जाती हैं। इसी कारण शरीर का स्वामी जोवारमा न देखता, न सुनता और में स्वाम न स्वामी जोवारमा न देखता, न सुनता और में स्वाम न स्वाम जोवारमा न देखता, न सुनता भीर में तमें मुख्य कर्म में जीन हो जाता है। तब भी एक प्राण ही मनुष्य को जताता है कि वह जीवित है। प्राण के शरीर से निकलते ही सब इन्द्रियों की शक्ति भी निकल जाती है।

प्राण---सिन यज्ञ से बलवान् बनती है। धनेंक धर्मों में से यज्ञ का एक धर्म सक्सें करना भी है। स्वामं रत्ता से प्राण शिवत का सकोच होना है। तथा परित्त, जनता की भलाई करने से प्राण-धिन विकसित होती है। इसिलए(युजु० ६।११) में कहा गया 'प्राण यज्ञ के लिए समित हो।' अध्यवंवेय में प्राण को ध्रीमित कहा गया है। क्यों कि जब प्राण को घनित धरीर से पृषक् हो जाती है तब किसी भी ध्रीयिष का उपयोग नहीं होता। प्राण-शिवन के बिना सुस्त में पानी भी ध्रनदर नहीं जाता।

शरीर में भाठ चक हैं। मूलाधार, स्वाधिक्ठान, मणिपूरक, सूर्य, धना-हत, विशुद्धि, धाडा और सहसार-हनमें प्राण कार्य करता है। कमशः गुदा से लेकर चिर तक भाठ स्थानों में ये भाठ चक्र हैं। पीठ के मेस्टब्ड में इनको स्थिति है। मस्तिब्क में सहसार चक्र का स्थान है। प्राण का एक केन्द्र हुदय में है। प्राण-व्यान हाश प्राण-चक्र को सारी पीड्डे मित

(बेद पूष्ठ = पर)

भायंसमाज भीर बाबू शिव-व्रत लाल

एक नया प्रहार—सितम्बर मास के दूसरे सप्ताह के दैनिक प्रवाब केमरी के एक शक मे श्री खुशवन्त सिंह काएक लेख प्रकाशित हुन्ना। यह लेख हिन्द समाचार उर्दू में भी छपाहोगा। मैं यदाकदा श्री खुश-बन्न सिंह के लेखों को विहगम देख्ट से देखा करता है। यह महोदय हिन्दुकों पर विशेष रूप से भार्यसमाज पर बोट करने से बूकते नहीं। बलिहारी पजाब केसरी के सञ्चा-लको की जो हिन्दू जाति पर ऐसे कृपालकों के प्रहार करवाने में अपनी उदारता मानते है। इस समय मेरे सामने पजाब केसरी मे छवा उप-होक्त लेख नही।

इस लेखा में श्री शिवज्रत लाल एम ए की बडाई करते हुए लिखा है कि वह बड़े योग्य भीर भाष्या-त्मिक व्यक्ति थे। बहुएम ए मे एल एल डी थे। इस विभूति को प॰ हसराज (महात्मा हसराज) वह ला॰ लाजपत राय धार्यसमाज मे लाए, ग्रार्थ गजट का सम्पादक बनाया। फिर श्रायंसमाज के नेताश्रो द्वारा दूसरे मती की आलोचना से दुली होकर भार्यसमाज को छोड गये। होशियारपूर के श्री फकी र बन्द इनके उत्तराधिकारी बने। शिवद्रत लाल जी राधा स्वामियो की दयाल बाग शास्ता के गुरु बने भीर दाता दयाल नाम से सम्मानित किये जाते थे।

चेद है कि झायंसमाज ऐसे फूठ को पोल खोलने में प्रमाद करता है। झायंसमाज पर बडी चतुराई से प्रहार किये जाते हैं मौर हमें पता ही नहीं चलता।

सुशवन्त्रसिंह जी को पताही नहीं कि दाता दयाल शिवव्रत लाल बार्यसमाज में लाए नहीं गये, वह बाप ही बाए थे। इन्हें यह भी पता नहीं कि एक युवक को प्रोत्साहन देवे के लिए उन्हें झार्य गजट का मम्पादक बनाया गया था प्रन्यथा धार्यसमाज मे तब प्रस्थात दार्शनिक **डा**० दीवानचन्द जैसे युवक द्यार्थ गजट की सेवा करने के लिए दे। भाई परमानन्द जैसे प्रतिभाशाली क्षपस्वी विद्वान् की लेखनी की तब षुम मची हुई थी। श्री शिववृत ने आर्थ गजट नहीं छोडा, उन्हे आर्थ गजट छोडना पडाया ऐसे कहिए कि ब्लहे प्रार्थ गजट से हटाया गया,

प्रनियमितता के कारण । वह विमितता क्या वी ? इस एव प्रजी

### कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक-प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञास्' वेद सदन धबोहर

में कुछ नहीं लिखता। यह महात्मा हसराज जो की सज्जनता थी कि उन्होंने इस पर कोई कड़ा दण्डन दिया।

श्री श्विवत्रत लाल भी तो बेदाती भो बने। बह स्वामी राम तीर्थ के भी गीत गाते रहें। फिर बेदान्त क्यो छोडा ? श्रीमान् जी बह तो यहा से बहा, बहा से यहा, वहा से कही भीर पुगते ही रहें।

रही खण्डन के कारण प्रार्थ-समाज को छोडने की बात सो भी खूब कही। शिवदत लाल जी ऋषि के गीन भी गात रहे तब क्या उन्हें विक मती का खण्डन करता है?

राधा स्वामी मत ने क्या दूसरी का खण्डन नहीं किया ? राषा स्वामियों की पुस्तकों में आपके सिक्ष मत का भी खल कर खण्डन किया गया है, पढ़ना हो तो दाता दयाल जी के उत्तराधिक। स्थि। में से राधा स्वामी गुरु साहिब जी महा-राज का साहित्य पढ नोजिए। राघा स्वामियो का स्पष्ट लेख है कि पूर्व के ऋषि, मुनि महात्मा, व्यास, वसिष्ठ दामकृष्ण भीर इस्लाम के नवी भी सब भटके हुए थे। दाता दयाल के जिन फकीरचन्द जो (परम दयाल) की भाष स्तुति कर रहे है उनके शब्द हैं-- "वो सब के सब वास्त-विकता से अपरिचित थे।" राषा स्वामी गुरु जी का वचन है-

"नही झात्म पदमास्य मार्नू"

फिर लिखा है "भल्लाह खुदा स्मूल न मानी"

> "ऋषि मुनि सब घोसा साया । क्या व्यास विधिष्ठ भूलाया॥"

ईसाई मत के सस्थापक ईसा वा जन तीर्थकुरों पर भी चोट की गई है। प्रमाण चाहिए तो हम दे वें। वेसे प्रथमार्थ प्रभाणिक समीक्षा तो अनुचित्त है। यदि सम्भ समाज में विचारक शास्त्र चर्चा करते हुए मुक्ति वा प्रमाणों से एक दूसरे का बण्डन करें तो इससे चबराना नहीं चाहिए। सन्त कवी वे बसा सात (सुन्नत) की, सुन्ति यूवा साबि को तीकी साकोचना नहीं की? सिक्क गुरुक्षों ने क्यादूसरों का खण्डन नही किया?

जिन परम दयाल फकीरचन्द जी की जुवनत सिंह बडाई करते हैं, वह परम दयाल आप अवननो में अपनी बडाई प्राप ही कर किया करते वे भीर उनके द्वारा दूसरों का जण्डन पडना हो तो 'जनता जनादँन' साम्नाहिक होशियाचपुर का न/१५ अपने अपने अपने अपने साम्नाहिक होशियाचपुर का न/१५ अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने साम्नानता को वर्षाना है। यह सस्ती सोकंत्रियता पाने के लिए एक काय-रता पूर्ण प्रहार है।

यह खदावेशी समाज सेवक-

श्रबोहर मे १८-८-१६८५ ई० को एक शिव मन्दिर का शिला-विन्यास किया गया। इसके लिए धनेको लोगो को निमन्त्रण पत्र भेजे गये। शिवलिङ्ग पूजा के लिए बनाए गये इस मन्दिर के मचालक कौन हैं, यह पढकर पाठक चौक पडेगे। उस निमन्त्रण पत्र के नीचे सचालक के रूप भे दो नाम हैं एक है अर्थ हस-राज सार्य जो सब विधान सभा का चनाव लड रहे है भौर दूसरे महा-पुरुष हैं डा॰ राजकुमार बीहान। बहु श्रीमान् अब इस घडी हरियाणा के नन्मोला कस्बा के डी० ए० बी० कालेज के बाचार्य है। यह महोदय एक ही सनय में दो दो आयंसमाजो के सदस्य रहे हैं भीर श्री हसराज भार्य यहा के भार्यसमाज के प्रधान रहे हैं। श्री चौहान वही महानुभाव हैं जिनको वेशों ने प्रपनी देहली की बलिदान शताब्दी के नगर कीर्तन का भार सौपाथा। ऐसा मैंने तब पढा या । शार्यसमान को गम्भीरता से सोचना है कि बोट नोट के चक मे फंसे लोगों से समाज को कैसे बचाया जावे । सस्ती लीडरी के लिए माज अपवेश में कई प्रकार के लोग समाज का धनिष्ट कर रहे हैं। पुराने आयं समाबी वैदिक मर्यादा वा वैदिक संस्कारों का प्रचार करते के लिए इढ़ प्रतिश वे । उन्होंनि कितने कव्ट सहै। वैर विरोध का सामना किया परन्तु बनमगाए नहीं । बाहए ! ऐसे महानुसावों से समाज को बचावें।

कुछ भूलो का सुचार-

द्यापं प्रावेषिक उपस्था हरियाणा में महिष बिलदान सतास्वी
एर एक स्मारिक निकाली मुझे
यह स्मारिका सभी प्राची प्राप्त हुई
है। इसमें मेरे लेख से छाये की
समुद्धियों के कारण कुछ सबद्ध प्रश्च हुई हैं। मार्थ सलेख हारा में कुछ का
सुद्धार्थ के कारण कुछ सबद्ध प्रश्च हुई हैं। मार्थ सलेख हारा में कुछ का
सुवार करना चाहता हूं। कारण यह
है कि यह शत्यन्त महस्वपूर्ण बातें

साब युविष्ठिर सिंह रेवाड़ी वालों की पतनी प्रवम भारतीय महिला बी जिसे भारतीय नव जान करण के किसी सरबा के कोई पर दिया। यह रेवाडो के लायंसमाब की प्रवान चुनी गई। स्मारिका में राव युविष्ठिर वो की पुत्री छपा है। यह पुत्र छापे की है। वतंमान केन्द्रीय मन्त्री राव वीरें हैं। विस्तृत ने माताओं के प्रपान है। व

मेरे लेख मे कुछ पित्तयां कर्तृया लाल जो बलखधारी के बारे में छूट गई जिससे देहरादून के महाचय मुहम्मद उत्तर का नाम अधुद्ध छपा है उत्तका नाम ऋषि ने श्री अलख-धारी लिखा था। ,मुरदासपुर के श्री लाला हरकस राव (मौलाना मञ्जूत म्रजीज) Extra Asstt Commissioner का नाम भी मधुद्ध छपा है। लोज करने वाले विद्वान् नोट कष्

प्राण शक्ति

(পুৰুত ও কাহাৰ)

होती है। प्राण का एक भाग शरीय की शनितयों के साथ सम्बन्ध रखता है। दूसरा भाग धारमा की शक्ति के साथ सदेव सबन्ध बनाये रखता है। खीरासा ही प्राणों का बायार है। इसी के शास्त्रय से शरीर के बीच प्राणों की स्थिति रहती है।

निककरे-- जो मनुष्य तस्य से प्राण को जानता है यह जीता हुआ ससारी सुझ मोगकर प्राणायामादि इस्य योगाम्यास करके झात्मज्ञान युक्त हुआ मरने के पदचात् मुक्त हो जाता है।

> पता --डी० ए० वी० मा० स्कूल शालीमार बान, दिस्सी





### रूढ़िवादिता के खिलाफ जंग की शुरुआत

मुस्लिम समाज इप समार बहुत चवराका क्रुका है। १४०० ताल बाद इस्लाम में यह भूकम्प भाया है जिसने इस्लाय की बाबोदा पडती दीवारी को हिलाकर रख दिया है। रुढिवादिता के जाका को वक्टवे वाले मुल्लायो के दिमाग पर शाहबानो केस वे करारा ऋटका क्या है। वे इस समय क्षव्य हैं कि कही प्रशिक्षित बहुल मुस्लिम समाज बच्चे प्रविकारों को पहचानने न लग जाये और उनका महत्त्व समाप्त न हो जाने। सुश्रीमकोर्ट के इस फैसले को जो कूरान के दायरे के घदर बिना पश्चक जा ब हस्तक्षप किये हमा है उसे गलत साबित करने वालों के लाय दिन्द्रव्याची समाज तक सीमित नहीं हैं बल्कि इसको सीमा ससार के सारे मुसलमान देशों का परिधि तक फीलो हुई है। वास्तव मे शाहबानो केस का यह फसला इन सार देशों को खुली चुनौता है जा घम को भाड लेकर भौरता पर चार भ्रत्याचार करते हे और उनका अधिकार हजम करते रहे हैं। यह क्रान्तिकारी कदम उन लोगो के विरोध में है जो माजतक भारत को उतक सहा सधिकारों से विवत करते रहे हैं। शाहबानों केस से यह स्पष्ट 🛊 🗑 📲 बढाई केवल मात्र मुस्लिम माहलाओं का लगई नहीं है बल्कि इस बढाई में हर वह औरत बामिल है जो किसी भी धम, समाज देश का हा बीर बत्याचारी को किसी भी रूप में सहन कर रही हो। सम्बदत इसी बुढबा धीर विस्तृतता के कारण इसका विरोध इतना व्यापक हो रहा है जा कि जमानवास है।

शाहबानों की सादी १६३२ में इन्दौर के एक बकोल श्री गहम्मद शहमद के साथ हुई थी। १६७५ तक पांत पत्ना का जावन वडा सुखमय बीता। मतलब जावन के कामतो ४४ वर्ष जो बेगम बाहबानो ने प्रपने पति के साथ विज्ञाये हुर्व और उल्लास से रहे। १६७५ ये पढि मुहुम्मद ग्रहमह वे यकायक वेगम शाहवानो को घर से बाहर निकास दिया। बेगम शाहवानी ६६ बद का बुढिया हो चुको या। इस उम में विद्यका सावरा द वती। कौन इस उन्न में उसे पत्ना स्वोकार करता। मालिय उसे भदाक्त हो एक सहारा दिखानी दो। बीर उसने इन्दौर के न्यानिक मिन्स्टेंक की बदालन में की बदादी कानून के तहत १२५ वी बारा म अपने पति पर ५०० स्पये प्रति-मास भरस पाषस का बावा ठोका। न्यायालय ने बेबन बाह्बानी के पक्ष ने निर्साय दिया भौर मुहस्मद बहुमद को २५ स्पर्क प्रक्रियास केने का आदेव दिया। यह निराम समस्त (६७१ में दिया नवा बाल्याना का यह राश्चि प्रपत्ने सच के सिए बहुत कम बना। उन्होंने सध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में त्यायिक मजिस्टू ट के फसल पर पुनावचार के बिह् वान्विका दायर की। जुलाई १६५० में उच्च न्यावालय व मुहम्भव बहुबद को १७६-५० र० प्रति माह देते का आदेश दिया । इस मुहम्मद शहमद न सर्वोच्च न्यायालय सत्रीम कोर्ट मे वाचिका दाखिल कर उच्च न्यायालय के निर्श्य को गलत बताया। सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायाधाशों का सन्वन्यवन गाउ ने इस याचिका पर सुनवाई शुरू की । इसमे प्रमुख मुख्य न्यायाधाश श्रा वाई॰ बो० चन्द्रचह के। पोठ ने मूहम्मद शहमद की श्रपालों को खारिज कर दिया। देश के इस हवोंच्य न्यायालय की पीठ न निराय दिया कि "एक वलाकश्रदा मुस्लिम भीरत तब तक अपने पूर्व पति को पत्नी कहलाएगा अब तक वह दूसरा शादी नहीं कर लेती। ग्रत बारा १२५ के अन्तर्गत उच नहिला का यह प्रविकार प्राप्त है कि उसका पति उसे जोवन यापन का खर्चा दे। पर्सनल ला के प्राव-वानो को मुझावजे से कोई लेना देना नही है।" मुस्खिम पर्सनल ला मे यह शावधान है कि इहत को समयावधि में पति धपना परवा को जीवन यापन हा सर्चा देगा। इहत तीन मास तक की वह धवधि है जिसमें पत्ना पाक बीवन जीते हुए किसी दूसर मद के साथ परनी वाला सम्बन्ध नही रख तकती। इसके बाद ही वह दूसरी शादी कर सकती है। सुप्रामकोर्ट ने अपने निर्माय में यह स्पष्ट किया कि बारा १२५ के अन्तगत एक मुस्लिम पति को प्रपनी तलाकश्रुवा परनी को इहस को अवधि के बाद भी जावन यापन का क्षर्य देना होगा। सबचानिक पीठ ने भीर स्पष्ट किया कि "सही स्थित यह है कि यदि तसाकश्रदा परनी जीवन यापन करने में सक्षम है तो इहत के बाद रति की जिम्बेदारो समाप्त हो जातो है, उसे सब देने की जरूरत नही। बेहान त्यानाबीकों वे कहा कि वह कहना उचित नहीं है कि एक मुस्सिम महिला बारा १२६ के बलावेंत बीवन नावन क्षर्य की नांग नहीं कर सकती।

मुस्लिम पर्सनक सा में 'मेहर' वह राघि नहीं जिसे तलाक के बक्त दिया जाये।'' न्यायाधीकों ने यह भी कहा कि धारा १२४ प्रभने चरित्र में पूरी तरह से धर्म निरमेक्ष है। यह ममाज से बुद्धता के लिए प्रतिबद्ध है। सवैधा-निक पीठ में पूरे देख में सभी वगों के लिए समान विखिल कोर्ट बनाने का सुमाव दिया। उससे राष्ट्रीय प्रखण्डता मजबूत होगी। विद्वान न्यायाधीकों ने यह भी कहा—"भारतीय सविधान सा ४४ वा प्रतृष्टेस मृतपत्र'' बनकर रह गया है जिसमें कहा गया है कि सरकार को पूरे देश में समान सिविक कोट बनामु कर है को मान्यता दिलाने के प्रयत्न करने चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्शय को लेकर पूरे देश में एक बार तहलका मचा। सरकार के प्रत्यर और बाहर इसके पक्ष और विपक्ष में मत प्रकट होने लेगे। केन्द्रीय सरकार के दो मन्त्रियों ने इस विषय पर बड़ी बहादुरी के साथ परस्यर विरोधी विचाए अथनत किये। प्रबुद्ध नेता जरूर मुस्लिम समाज को ममय के साथ चलने को सलाह दे रहे हैं। जनतापार्टी के यहासचिव संयद धाहबुद्दीन ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्शय को मुसलमानो के के बामिक मामले में देखन माना।

मुस्तिम पर्यानन ला में सुवार करने वाना भारन मकेला देश नहीं है। सबसे वह मुस्तिम राष्ट्र पाकिस्तान में इसमें सशोधन हो चुका है १६६१ में वहाँ यह कारून बना दिया गया था कि कई शादियों करने से पूर्व करकार की मब्दि स्वाधन हों सिक्त स्वाधन हों से पूर्व करकार की मुद्द से सिक्त से मुद्द हों निर्देश में इसमें सभी-वन हो चुका है। हम सबसे क्ष्मर इस्ताम गएराज्य ईरान की सबसें सभी-वन हो चुका है। हम सबसे क्ष्मर इस्तामी गएराज्य ईरान की सबसें सभी-वन हो चुका है। हम सबसे क्षमर इस्तामी गएराज्य ईरान की सबसें प्रधी-वन प्रधारिक कैं सिक्त में विलयों के हुको की रक्षा के लिए कुछ निर्देशक खिदाब वारी किये हैं। वसके दो साग है। शादी के वक्त मेरिज मफसर वादी के विलयों करने देता है। एक आप वे बब पिट परवी को तलाक देता है ते परवान करने देता है। एक आप वे बब पिट परवी को तलाक देता है तो वर्ता के क्षम माम प्रधानन है। इससे विलयों के अधिकारों की नावत वानकारी है। वह १२ मिकार है साम के सब्ता की सिकार है। वह १२ मिकार है साम के बन्ती को दिने गए हैं।

भीर इवर बारत के मुसलमान कह रहे हैं सविधान के अनुच्छूद ४४ को बातो सनाप्त कर दिया जाए अववा मुखलमानो को इसका विधिकार क्षेत्र से बाहर रखा जाये। खास तौर पर भाल इण्डिया मुस्लिम लीग के प्रध्यक्ष सुलेमान सेठ धीर मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड यह शोर मचा रहे हैं। बाहबानो बेगम ने ७ साल छोटी घदालत से लेकर बडी बदालत तक बडी दिने दो के साथ वह मुकदमा लडा है। ब्राखिर उसकी फोली मे उसका नुह मौगा कल इन्याफ के साथ धाही गया। परन्तु कट्टरपथी मुस्लिमी का दवाब की उस अबला पर लगातार पडता रहा और वही हुआ जिसका डर था वह मुक्त गई। उसने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को वापिस लेने को माग कर दी। कुछ सुचारवादी मुस्लिम सगठनो ने यह बारोप लगाया कि रूढिवादी मुस्लिम संगठनो के दवाब मे ग्राकर ही उसने ग्रपना ताजा वक्तव्य दिया है। पू॰ पू॰ मुख्य न्यायाघोश श्री वाई बो॰ चन्द्रचुड ने कहा है कि इस फैसने से एक सामाजिक उथल-पूषल पैदा हो गई है जिससे यह ,निष्कर्ष निकलता है कि फैसले पर पुनर्विचार हो । उन्होंने कहा इस फैसले से अरी-यत में हस्तक्षप के आरोप का कोई दम नहीं है। अदालत को कूरान के सदर्भ मे शरीयत की विवेचना का श्रविकार है। श्री चन्द्रचंड ने कहा इस फैसले पर जो विवाद खडा हुमा है उसके लिए मुसलमान कट्टरपथियो की धर्मा-न्यता भीर किसी परिवर्तन को न स्वाकार कर सकने के प्रवेषे को ही दोषी ठहराया जा सकता है। उन्होंने कहा इस फसले के विरोध से यह सिद्ध हो गया है कि इस तरह के फैसले की समाज मे जबरदस्त आवश्यकता थी।

हमारा कहना इतना ही है सरकार ४४वे अनुच्छेद के अनुसार समस्त देशा में एक कानून लागू करना चाहिए तथा समय को आवाज के साख चलना चाहिए। भायं यवको <sup>।</sup>

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट यह वष भ्रान रह य यू रूप में मा रहा है हमारे दश मे भी ११ जनवरी १८ ८५ को स्व मी विवेकः न्दके न्म दिबन बरहनारे ख्वा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी नै युवावर्ष का उद बाटन किया था भौर ११ जनवरी को युवा दिवस भी बोषित किया। उस समय यह श्राशा बधी यो कि हमारी सरकार युवा-बग को एक रचनात्मक दिशा देगी भीर युवाशकित कादेश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुक्ते यह कहते हए अत्यन्त दुख हो रहा है कि युवा वर्ष समाप्त होने को है, पर सभी तक देश में न युवको को कोई रचनात्मक दिशादी जा सकी है न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनके लिए किसी काय की कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे लाभा" न्विन हो।

युवावर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक मास्को से झायोजित युवा समाराह में भाग लेने के लिए गये थे, पर बहा पर इन युवको ने अपनी जिस विलासी वृत्ति का परिचय किया वससे मेरे देश की प्रतिक्ठा पर झाव झाई। नवस्वर मास में विल्ली विश्व विद्यालय की खोर से निगुँट देशों के युवको का एक सम्मे कन बुलाया गया पर यह सम्मेन की युवको के लिए किया न्वना-श्व योजना पर विदार नहीं कर सका।

मैंने बचपन मे एक कविता पढी थी, जिसकी पहली पक्ति थी— ' बताए तुम्हे जवान जवानी किसकी कहते है, दें जग को जीवनदान जवानी उसको कहते हैं।" इस पक्ति मे यौवन को किसी झायु विशेष के साथ नहीं बाधा गया, वरन उसे एक पवित्र भौर ऊची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलाजलि देकर नि स्वार्थ भीर परोपकार की भावना से राष्ट्र, नही नही विश्व के कल्याण के लिए अग्त्मसमर्पण की भावना रखता हो जिम समय महिष दयान व ने ग्राय-समाज की स्थापना करके धायसमाज कालक्ष्य ऋग्वेद कायह बाक्य कि कुण्बन्तो विदवमायम् स्थापित किया था, उस समय वे भो भागंजन मे यही प भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड दें भीर प्रतिदिन यज्ञ करते हुए विश्व के कल्याण के 🗪 अपनो ब्राहृति, ब्रात्मबलिदान मावनासे भर उठ।

याद रखो. हमे विश्व को सार्थ

### युवा वर्ष पर आर्य युवकों के नाम सन्देश

डा० प्रशात वेदालकार

बोर ससार में बितना प्रश्निव है, जो प्रकन्याणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म हैं का स्वनो नक्ष्य करना है। ऋग्वेद ने ससार को श्रष्ट बनाने की जहां प्रराणा दी बहां ससार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रको ससार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हुसे स्वय अव बनाना होगा। साधु धौर मानवीय दृष्टि से ऊ चा ब्यक्ति ही दूसरे को सत्कर्म पर प्ररित कर सकया है। जो स्वय पुष्ट है बहु दूसरो की दुष्टता को दूर करने को बात सोच भी कैसे सकता है?

जब मैं तुम्हे कहताह कि तुम मच्छे बनो तो मेरा ग्रम होता है कि तुम्हारा सारा व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से पृष्ट बनो। यदि तम शारीरिक दष्टि से ग्रस्वस्य ग्रीर दबल हो तो तम जीने योग्य भी नहीं हो। तुमने पढ़ा भीर सुना होगा---वीरभोग्या वसुन्धरा यह पृथ्वी वीरो के भोग के लिए ही है। तम्हे अपने मे बीरता की मावना भरनी होगी। बारताक लिए अपनी मासपेशियो को पुष्ट करना होगा। उसके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्या-याम करने का प्रपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने वहा था-शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम् । शरीर धर्मका ध्रपने कलंब्य की पति का प्रथम साधन है। यदि तुमने ससार को श्रेष्ठ बनाने का धपना कर्त्तव्य पूर्ण करना है तो पहले भापने शारीर को पुष्ट बनाधो । मुभ्ते तुम्हे यह भी बनाना है कि वीरता वा पूब्ट शरीर स तुम्हे निर्वलो व अनार्थों की दुष्ट स्वभाव से रक्षा करनी है। बीर व पुष्ट होने का अर्थ किसी को सना-वर्य म्हा से दबाना या प्रताहित करना नही है।

जब में तुन्हें अध्य बनने के लिए कहता हूं तब तुन्हें सच्छा भीर तीक्ष्ण मस्तिष्क वासा बनने की भी प्रेत देता हूं वाकि तुन भपनी भवार बुद्धि से अपने प्राप्त घरीर का ठीक उप-योग कर सकी। तुम्हारा मस्तिष्क ऐसा हो जिससे नीर कीर विवेक की समता हो। सरय की पहचानने धीव ससत्य की रहानाने भी समझ हो। समय पर ठीक निषंत्र कर घीर इतना विकसित हो कि बद्धा 📢 नये ज्ञान को ब्रहण कर**ै भें 🦏 स**क्षम हो। तभी तुम सम्बद्ध स्थीने कि विश्व में क्या हैम है और का काहा जब तुम्हे ससार के दुष्टी की नष्ट करने का कार्य सीपा गवा है तो बिना विवेक व जान के तुम यह काम नहीं कर पाधीगे। ससार में कौन दुष्ट है धौर कौन साधु? यह बाल तुम विना धण्छे मस्त्रिष्क 🖣 नही जान सकते । प्रपना बच्छा मस्तिष्क करने के लिए तुम्हे सदा धनवे माता पिता, किसी शक्ते गुरु व पय-प्रदर्शक के सम्पर्क मे रहना होगा ? उनके प्रति तुम्हे शास्था रखनी होगी। गीता में कहा है-- 'श्रद्धावान समते ज्ञानम्" श्रद्धां व विद्वास से ही मस्तिष्क में नित नया ज्ञान घाता है भीर विवेक शक्ति बढ़ती है। जो विचारधारा प्रनास्था का प्रचार करतो है वह हेय है। भाज समार में एसी भौतिकता पर बाबारित भ्रनेक विचारघाराए हैं जो व्यक्ति को भ्रनास्था का पाठ पढाकर उनके मस्तिष्क को विकत कर देती हैं। तुम्हे उन सबसे बचना है। मैं तुम्हे कहना चाहता ह कि तुम महर्षि दया-नन्द के शिष्य हो उन्हीं के प्रन्थों का मनन करो भीर उन्हीं से भपनी दिशा निर्धारित करो।

पर याद रखो पुष्ट घरोर धोर स्वस्य मस्तिष्क वाले व्यक्ति सी प्रकृष्ट आपरण के बोवा देखे पये हैं। मैं तुम्हे प्रच्छे चरित्र का भी उपदेश देता नाहता हूं। कोई भी ऐसा काम मत करों जिसे करने पर तुम्हे गर्व न हो। प्रच्छे चरित्र को निष्णानी यहीं है कि व्यक्ति जरने किये हुए काम का हर जगह वर्णन कर करता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को बता हो नहीं सकते तो वह निषद कर्म है, उससे बचो। तसी चरित्र पुष्ट होता है।

यह सच है कि झाज के यूग में सत्यावरण करने व ईगानवारी से रहने में सनेक कठिनाइयां खाती हैं। पर तुम बिस कवी औड़ नहान् सत्या से सम्बद्ध क्लेंगोर विश्व सेव पुरुष महर्षि द्यानन्य की तुम सतान जो जनके लिए बक्त भी बठिम नहीं

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हो। यन नम्बरे ियो काम से किसी को हानि होती हो उसे कभी मत करो। महाभारत मे धर्मकी परिभाषा ग्रात्मन प्रतिकलानि परेषां न स्माचरेत' के रूप मे की मई है। दूसरे के प्रति वहा व्यवहार करो जैसा व्यवहार तम दसरे से चाहते हो। तम्हारे किसी नाम से किसी का दिल न दुखे। वरन तुम्हारे कामो से दूसरो का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तससीराम ने 'परहित सरिन घरम नहिं कोई कह-कर मनुष्य को यही प्ररुणा दो थी। महर्षि दयानन्द ने भी भ्रपने ग्रन्थो म बारम्बार यही कहा है कि सपार का उपकार करना हम सबका परम धमं है।

मैं यह सब तम्हे इसलिए कह् रहां हु कि देश का युवा बग भाव किक तम्य विमूद है यह कुछ करना बाहता है पर उसे कुछ सुकता नहीं है। उसके सामने भाज कोई भावशें नहीं है। मुक्त विश्वास है कि व्या-नन्द के शिष्म उनके सिए आदर्श सिद्ध होंगे।

महर्षि दयानन्द भीर भार्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतंत्र कराने के लिए इस देश के हवारी युवकी ने प्राणो की झाहति दी थी। सार्थ-समाज के सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान योगदान किया। श्री इयाम जी कृष्ण वर्मीने चिदेश में इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रसार विदेशों में भी किया, जिस से देश का स्वाभिमान जागा । लाला लाजपतराय स्थामी श्रद्धानन्द माई परमानन्द, सरदार प्रजीतसिंह, श्री मदनलाल ढीनरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गैंदालाल, डा॰ रोझन सिंह जी सरदार मगतसिंह, चौ॰ मुस्त्यारसिंह श्री हरविलास शारदा तबा धन्य धनेक स्वतत्रता प्रेमियो ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतत्रता के लिए धपने को बलि-दान किया। मालाबार के मोपला विद्रोह, राजस्थान व बगाम के धकास विहार के भूकम्प, देश-विभाजन भीर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन १६४७ में पजाब मे हिन्दी, रक्षा-बान्दोलन बादि द्वारा धार्यसमाज ने सदा प्रम्याय के विषद्ध सच्चें किया।

देश को स्थलमता विकाने में, वेख की क़ूरोतियों व प्रम्वविश्वस्थे कॉर्न विनष्ट करने में, देश की शिक्षा-प्रमासी में बारतियता का स्थर

#### साधना-शिविर का समापन

नुई दिल्ली १० नकम्बर १ वेक मस्यान में आधीजित सप्त दिवसीय साधना शिविर का समापन १० नव-म्बर को प्राप काल स्वस्तियाग को पूर्णाहित के साथ हो गया। इस शिविर में ३५ शिविरावियों में बजू-बेंद के शिवसकल्प मत्रो का गहराई से चिन्तन विद्या । व्यक्ति ग्रीर सपूर्ण मानव-सभुदाय का विराट मन शिवसकल्प वाली धपनी स्थिति तक प्रत्येक विकारे हुए ट्टेमन को उठा सकता है, उठाना चाहता है। इस विराट मन की भाकाक्षा की पूरा करने से बरती की विनाशकारी शक्तिया पराजित होंगी भीर विनाश के साधनो पर प्रभावशाली ढगो से रोक लगाई जा सकेगो। मानवता

के विनाण को रोकने के लिए शाख की यहू सब से बड़ी और प्रथम शाव-स्यकता है।

ण्स उण्योगी शिविर मे महात्या दयान-द, स्वामी दयान-द, सत्यात-ध्यक्ष डा० सम्मदेव समा डा० वहीं प्रसाद मचोली माता नरेन्द्रायाँ सादि के प्रवचनों के स्वितिष्कत सच्चा सासन, प्राणायाम और ज्यानविधि का सम्यास कराया गया। वेदमनों के शुद्ध उच्चारण का अस्यास सो कराया गया। समला जिविर मई १९८६ में सायोजित किया जाएगा।

> अभयदेव शर्मा प्रध्यक्ष वेद सस्थान, नई दिल्ली

#### भारत माता के सपूतो (पृष्ठ ३ का केव)

की सला में कुचलकर रख दिया है।
पुनरिप वे प्रिमन की तरह बार-बार
सवर्षे रत हैं। ग्रन्त में उन्हीं का सब्यें
रम लावेगा। नकती, महार, पदलो-लुप, हामता को ककती गई बेडियो बागे लोग इसी प्रकार काला मुह करके मुद्दी की जिन्दगी जियेंगे।

क्षो । ऋषि महर्षि, रामकृष्ण ग्रादि की सन्तानो भ्राव प्रावस्यकता है रावण तथा कस को भारने की, जिससे भारतमाता माता बनी रह-कर ग्रापको प्राचीवदि देवे। तभी ग्रापको और ग्रापको मावो सन्तान को सच्चे प्रयों में भ्रासीवदि प्राप्त होगा।

धाज धानस्यकता है कर्ण धौर भामाखाइ की। उन लोगों की धान-स्यकता है जिनके हृदय पटल में देख-मिन की हर मम्य प्राग जलती रहती है। जो भारत निस्न को खाति दे सकता है मानवता का सदेश दे सकता है यह अभानुकरण कर रहा है। यह अपनी शक्ति नहीं पहचानता वह उस राजा के समान है जो बड़ राज्य का स्वामी होते हुए औ अपनी शक्ति को न पहचान कर अपने को केवल भोपड़ों यात्र का स्वामी मानता है।

श्चान हमारी पहली धानस्यकता है कि देवाभनतो का बृद समान करें। कान्तिकारी धीर लून लौता देन वाले भाषणो का आयोजन करें। लेलो पुस्तको, पत्र-पत्रिकाधो साकाशवाणी, दूरदर्शन धादि के सम्प्र्यम से देशसिन्त का प्रचार करें। सम्प्र्यम वातावरण को देशसिन्त की वाणी से जु जायमान कर दें। तभी हमारी नसौँ ने भरी दासदा नपु-सकता का विच निक्केगा धीर इनमें देशभन्ति का अमृत उनक उठेवा। घर घर प्रत्येक व्यक्ति को वोदन श्रोल उठेगा—आरतमाता की असा

#### अजिल्द सत्य के प्रचारार्थं अजिल्द अ 900 से किंग्र में किंग्र में किंग्र स्पेद कागज सुन्दर फ्रपाईं अजिल्द अ अजिल्द अ

#### शोक-समाचार

धार्यसमाज मान्नाक के के महा-मत्री कींट्रन देवररन धार्य के अनुव भाता व स्वर्विष धुमकारों महसेन जी के छठे पुत्र विश्वस्त आयं के तानिक में २७ वर्ष की करपाजु में धाकस्मिक निवम हो ईस्काः प्रमारण फिल्म दिनया से समीत निवंसक के रूप में जुडे हुए थे। एजस्पानी फिल्म पिया मिलन की धास छहित मन्य कई फिल्मों में उन्होंने सगीत दिया धा।

गत वर्ष महाँष दयायन्द निर्वाण शताब्दी पर झांपने प्रथमें प्रव्य पिता श्री की स्मृति में 'श्रक्का' केंसिट तैयार किया था। जिसका विमोचन झज मेर में निर्वाण शताब्दी के प्रवसर पर किया गया था, जिसकी काफी सराक्ष्मां भी की गई थी।

पांच जुकवार दिनाक १५।१०।=५
को साय द नजे उनेकी भारमा की
सान्ति के लिए झार्यसमाज मदिर
सान्ताक ने साति यक का प्रायो
जन किया गया जिसमे बस्वई महा
नगरी को समस्त आर्यसमाजो द्यार्य
प्रतिनिध सभा बस्वई हारा स्वर्गीय
प्रवर्त वार्य के कार्यों को समर्थ
करते हुए उनके इन छोटी सी आयु
में बले जाने पर हार्यिक शोक प्रकट

प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री

#### शूभ विवाह सम्पन्न

धार्यसमाज के कार्यकर्ता विश्वव-देव शास्त्री की सुप्रती उतिल का ग्रुभ तिवाह दिलीपकुमारं सुप्रत स्व-गींम क्षे स्वीश्यक्त की (इक्वीनियर जल निग्म) उठ्यन्न के ताब दिलाक २७ नवस्मर, १६८५ कुम्बार की स्मार्यसमाज हतुमान् रोक, नर्द दिल्ली-१ में समारोह पूर्वक वस्पन्न हुमा। श्री स्वामी स्वक्रपानन्त भी व श्री यशपुल पुषायु ने प्रपने आधी-वीर दिये।

दिल्सो आर्थं प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध

#### मातृ मन्दिर कृत्या गुरुकुल हो० ४४।१२६ नई बस्ती रामपुरा, बाराणसी

जीतकासीन प्रवेश झारम्भ है। बालिकामो को सर्वविष उन्नति का मलभ्य भवसर।

सिसु से लेकर वेदाचार्य ज्या-करणाचार्य एव दसनावाय (एम ए ) सक की सुशिक्षा। पी एच डी ब विदेश भ्रमण का भी सुविद्याए। उज्जवन भविष्य।सस्पर्क करें।

> डा॰ पुष्पावती पीएव डी दर्शनाचार्य विदावारिधि सध्यक्षा



Post in N.D.P.S.O. on 6-12-25 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 130



#### यवा वर्ष पर

(पृथ्व ४ का शैंक) मल के भी भीत करशहर, विति वृत्व बक्त कही कीने असी। बातियों के उत्वान में वर्ग का विस्ति-विक स्वरूप प्रकट करने ने तथा ब्रप्ते देश के औरक्पूर्ण ऐतिहासिक पृथ्में को जनामर करने में कार्य युवकों का कार्य श्रीवस्मरणीय है।

भेषा तुम प्राथिसमाज के उस गरियोपूर्ण इतिहास को स्मएन करके उसी प्रकार का बारवी अस्तव नहीं करपंकते ? 'निर्देशत कर सकते ही। विव मन मे के भी आवना हो। हरम में जीवन हिंसीरे के बढ़ा हो। बीर मस्तिष्क में उपस पुणत हो तो सब कुछ हो सकता है।

बाज का मुनक अपने महापुरुको से, देश के गौरवपूज इतिहास से, अपने प्ररक्त वर्षों से कट चुका है। माय-समाज उन्हें उसी जह से फिर से बोडना चाहता है। पर यह काम केवल उपदेशों से हीने वासा नहीं है। उसके लिए उदाहरण पहिए। मुक्त पूरा विश्वास है कि तुम जनके लिए उदाहरण बनोंने और उनका मार्थ दर्सेन करोपे।

युवा वर्ष मे यदि तुमने यौवन के बास्तविक बादशों को प्रवने जीवन

ने चारण कर लिया तो उसके यहां पुर्वीक जनमा कर्त्यांन होना, मार्थ समायका नाम अना होगा, वहां पार्के भी तेषुनंति होगा । विश्व की एक मेर्ड किशी में स्ट होगी । किशी, मेरे बीरो, कर्म्द कर सी। एक बाब सक्त्य केरन की कार्यक्षकता है फिर मर्विस तेमंहरि श्रेंसम अभिगी।

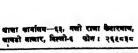
> डा॰ प्रयोत वैदालकार ७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

गर्यकले कांगडी की बैठक " (पृथ्व १ का शेष)

सामा जी वे स्वोकार कर लिया। इस पर सबी सदस्वों ने हर्व व्यक्त किया। तत्परचात ग्रन्य विषयो पर निर्णय लिए वए। कुलाबिपति, कूल-पति, मुस्याधिकाता, सहायक मुस्या-विकाता, बानायं तथा बानार्या कन्या गरकल देहर।इम सभी ने इस सकल्प को द्रहराया कि वे सभी गुद-कुल की गौरवमयो परम्परा के अनु-रूप, मिलकर कार्य करने ग्रीर गुरू-कूल को उन्नति के शिवर पर ल जाने का यथाश्चित प्रयास करने। उल्लास एव हुई के बाताबरण मे बैठक सम्पन्न हुई।

प्रचार-विसाग संत्यंपाल

लिए फार्मेसी. इरिद्वार की और्षाधयां सेवन करें







१ शक १६ बुक्य एक प्रति ५० पैसे रविवार, १४ दिसम्बर, १६०६ बाधिक २० स्पय सुष्टि सवत् १६७२६४६०८६ द्वाजीवन २०० स्पय मागशीय ३०४२

दयानन्दाव्य — १६१ विदेश में ४० डालर २० पौंड

# कश्मीर से धारा ३७० को शोघ्र समाप्त

# कर देना चाहिए

-सर्यदेव

श्चार्यसमाज पश्चिम पूरी नई दिल्ली में वार्षिकोत्सव पर ध्वजा-रोहण करते समय डा॰ धर्मपाल ने हडा--'झार्यसमाज का एक नियम है प्रविद्या का नाश भीर विद्या की वृद्धि करनो चाहिए। दस ध्वज के नीचे श्रद होकर हम प्रतिज्ञा करे कि विद्याका नाश करने महम कभी नीछे, नहीं हटगे। कुछ समाजों के प्रधिकारी ऐसे उपदेशको की माग करते है जो केवल मीठी माषा बोलते हैं सकारात्मक बोलते है खण्डन की बात नहीं करते हैं। मैं कहता है कि वब तक खण्डन नहीं करेगे, जब नक बतंन को माज नहीं लेंगे, तब नक शदता कहा से भाएगी। पहली बात

को मिटा कर हो दूसकी बात बन ही नया लिखा जा सकता है। दया-नन्द को स्वामी विरजानन्द ने कहा था जो बब तक पढ़ा है उसे भूस जाक्यो । इन पोषियों को यमुना नदी मे फक कर साम्रो। अत हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम अविद्या का पाखण्डका, ग्रन्धविश्वास का नावा करने में सदा तत्पर रहे. किसी से कोई समभौतान कर।

इस धवसर पर अनेक गण्यमान्य महानुभाव उपस्थित थे। क्षेत्र क धार्मिक जनो ने उत्साहपूर्वक काय-कम मे भाग लिया।

सवाददाता ग्रार्थसन्देश

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

### विशाल शोभा यात्रा

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बुधवार, दिनाक २५ दिसम्बर १६८५ को धुमधाम से मनाया जायेगा।

इस प्रवसर पर प्रात १० वजे से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन (नया बाजार) से शामा यात्रा का धायोजन किया गया है जो निषारित मार्ग से होती हुई लाल किला मैदान पर पहुच कर एक जन सभा मे परि-वर्तित हो जाएगी। इस सभा में आर्यसमाज के मूर्वन्य नेता तथा देश के प्रसिद्ध नेताम् । के भाषण होगे।

महाशय चमपाल प्रधान

प्रशोक कुमार सहगल महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा (पंजीकत) दिल्ली राज्य १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

### को मिटा कर हो दूसरी बात बन सकती है। टेप पर पिखला मिटाकर पाखंड खंडनी की आवश्यकता है

–डा० धर्मपाल

धार्यसमाज म राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलनो का झायोजन क्यो किया जाता है? राष्ट्र की सामाधी की रक्षा करना सरकार का दायित्व है, सेनाधो का कर्त्तव्य है। फिर हम क्यो इन सम्मेलनो का ग्रायोजन करते है ? इसलिए करते हैं कि राष्ट केवल मुमाग ही नहीं होता. राष्ट्र वहां क नर-नारी होते है। राष्ट वहा की भारमा होती है। हम उनकी आ-मा को रक्षाकरनाचाहत है। यह रक्षा धार्यसमाज के माध्यम से हो सकती है। उसके चरित्र का निमाण यही पर हो सकता है। हमारे राष्ट्र रक्षा सम्मेलनो के भायोजन का प्रयोजन यही है। यह उदगार दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रयान श्री सूयदव ने ग्रायंसमाज चना मण्डी के वार्षि-

कोत्सव पर भागोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय मावण मे कहे। इस प्रवसर पर डा॰ धर्म-पाल, श्री प॰ मदनमोहन विद्यासाग्र. प॰ क्षितीश वेदालकार ने भी सभा को सम्बोधित किया।

भार्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२ के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए सभा प्रधान श्री सूयदव न कहा कि राष्ट्र रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि प्रदेश विशेष को कोई विशेष प्रधि-कार न दिये जाय । काश्मीर को घःरा ३७० को तुरन्य समाप्त कर दिया जाय। इसी बारा के लालच मे ग्रन्य प्रदेशांक लोग ग्रयनी भ्रयनी स्वायत्तना की माग करन हैं और देश का विघटन का कतरा पदा हो जाना

# बाबा पथ्वीसिह आजाद नहा

चडोगढ १० दिसम्बर पंजाब के भूत-पूर्व मन्त्री आचार्य पथ्वीसिह प्राजाद का लरड मे निघन हो गया। स्वरड यहा में लगभग दम किलोमोटर की दूरी पर है। पजाब सरकार न दिव गत नेता के प्रति सम्मान व्यक्त करते हए ग्राज श्रपने कार्यालय बन्द कर दिए।

रास्टपति ज्ञानी जलस्टिह स्वनत्रनासनानीव पजाबक भूत-पूर्व मन्त्रपश्वा सिह ग्राजाद की मृत्युपर दुखन्यक्त किया है।

श्रीमता कृष्णा भाजाद के नाम एक सबदना सन्देश म राष्ट्रपति ने बाबा धाजाद को एक प्रमुख साहित्य-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

# मुनि-चोरी के दण्ड का महत्त्व : युधिष्ठिर का विषाद : द्रौपदी-व्यास-कृष्ण द्वारा उद्बोधन : युधिष्ठिर का राजतिलक: अवबोधक प्रसंग

-ग्राचाय दोनानाथ सिद्धान्तालकार

गल ग्रोर दा भाई तपस्वी ऋषि गगानट पर दानों के सुरस्य वृक्षी भीर फल फलो मंलदे भाश्रम थे एक बार लिखित के ग्राश्रम में सदा प्रमृत गो किसी प्रकार बाश्रम से निकल रास्ता भ्ल भटक गई देर तक नही प्रायी । लिखिन ऋषि का चितित हो धौर उसकी लोज मे ग्राश्रम मे बाहर जाना स्वाभ विक ही बा काफी दर तक भटकन के बाद भ्रपने बन भाई शख के भ्राश्रम के पास गौ सिल गर्ड देर तक भाग दौड करने के फनस्वरूप लिखित को भूख ने व्याकृत किया। उसने तत्काल बढ माई शख के ग्राथम म लगे पक सस्वाद फलो सं भूख की नृष्ति की इसी समय गम्ब भी वहा ग्रचानक ग्रा गये। उहोने भाई को फल खने त्या उनसे पूछा कि यह फल नुमने कहा से लिये<sup>?</sup> लिखित ने समीप ग्रासड बढ भाई को प्रणाम कर कहा यह द्माप के उद्यान कही तो फल<sup>3</sup>। इस क साथ अपने ग्राश्रम रंगी क गूम हो जान भीर उसकी तन ज मे ग्रपनी देर तक की खोज ग्रौर भूख लगने की साराकहानी मृता दी। शख ने इस पर अपना असतोव प्रकर करते हुए कुछ ककश स्वर म कहा तुमने मूकम पूछे, बिनास्वय हामेरे उद्यान मंस चोरी की है त्सीलिए तुम श्रव । जा के पारु जा श्रपन इस कुकम काब्यौरासनाः। प्रपनाग्रप राप्रस्वीकार कर राजा से समूचित दण्डकी प्राथना करो लिखिन मृति बड भाई क प्रान्श से राज प्रनम्न के पास गय ग्रीर ग्रपन ग्रपराघका सारी कहात मृत त नगराजा म नन दियं जान का श्रनुराध किय

ग्रप ग्र⊢ाक्रनि नण्डक जाउन

ाजा बट धमम बस में पड गय उमने न कल मित्रमण्डल का बठक वृत्ताइ मित्रमण्डन न राजाकसाथ सहत्ति प्रकट करत हुए सहज हो किसी निइन्य तक पहुंचने में ग्रसम यताप्रकटकी मित्रिमण्डल मे एक शद्ध और गास्त्रन म ता भी थे। वह त्स समय उपियत न थे। उन्हें

बुलाया गया भीर उनसे पथप्रदशन मागा गया उन्होने समुबा मामला सून कर कहा-- अपराध का दण्ड (कानन का पालन) ना धवश्य होना चाहिए। वह छोटा है या बहा यह मतभेद का विषय है। परन्तु राष्ट चरित्र को रक्षा भौर याय व्यवस्था को मब प्रकार के पक्षपात से ग्रान्छता रखने से लिए उसके पानन म किसी प्रकारका भी नन् नच नदी होना चाहिए। बद्ध विद्वान मन्त्री ने मन् ग्र०० ब्लोक १७ १६ के प्रमाण से कहा-

टण्ड का हा शासक मटा जागता 🧦

- (१) जो दण्ड है वही पूरुष राजा वही याय का प्रचारकर्ता भीर सब का जासनकत्ता वही चारो वण भौर चारो भाश्रमो के धम का प्रतिभू प्रचान जामिन है।
- (२ वही प्रजाका शासनकर्ता सब प्रजाका रूथक सोने हुए प्रजा जनो मे जागता है। इसालिए बुद्धि मान दण्ड को हा घम कहते हैं।
- धारण किंगा जय तो वह सब प्रजा का झानित करता है भीर जो बिना विचार चलाया जाये तो सब भ्रोर स राजा का विनाश करता है।

#### लिखिन मूनि को दण्ड

र जान जब उस बद्ध म त्रांसे पुछाकि अब इस लिखिन ऋषि का चरी कं भ्रपराध मंक्यादण्ड टिया जाये ? तव बद्धामा यो ने कूछ समय क गहन चितन के बाद कहा— यायविनो का मत है कि जिम अग म व्यक्ति अपराध करता है वह कार त्ना चार्ए पर यह बहुत कठोर भी अपराधी के भावा मुबार के मार्ग को सवया भवरुद्ध कर देता है जो उचित प्रतात नही होता। इमोलिए मेरा सम्मति मं इस युवक का ऐसादण्ड दिया ज ये जिससे हाथ स दीव काल तक क<sup>टा</sup> परिश्रम किया जाये।

वृद्ध मन्त्री का यह मत राजा

और मित्रमण्डल ने पसन्द किया। लिखित ऋषि कुमार को यह दण्ड सुना दिया गया भीर इसकी सचना उसके बड भाई शख ऋषि को भी दे

युधिष्ठिर की पत्नी द्वीपदी का ग्रपने पति को समभाना

न्यास मूनि ने यह कथा उस समय सुनाई जब युधिष्ठिर राज्य भीर गहन्य भाश्रम छोड वराग्यवान हो वानप्रस्थ भीर सन्यासी का जीवन व्यतीत करने का निष्चय कर चके वे महाभारत शान्ति पव के मन्त गत राजधम धनुशासन पव के नवम ग्रध्याय से लेकर ग्रगले ग्रध्यायो तक श्रीकृष्ण दौपदी भीर भाची पाण्डवी सहित मगोड्डी से सबने एक स्वर से ग्रपने बढ भाई युचिष्ठिर के उपयक्त निश्चय का प्रबल विरोध करते हुए उसे धपने कतय राजधम और गहस्य धम के पालन का उपदेश कई प्रकार की प्राचीन श्रवाचीन कथाशी भीर उपाल्यानो द्वारा पुष्ट किया। प्रमगवज हम यह। उस निराधार सवया ग्रस य क्योल कल्पित भीर ( ) जाल्ण्ड ग्रच्छं विचार मे नारी के लिए कलक रूप लोक प्रचलित मिथ्याबाद का जोरदार खण्डन करना बाहत है जिसके अनुसार द्रीपदी के वाच पति युचिष्ठिर महित कहे जाते हैं। महाभारत के अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध किया जा चुका है कि द्रौपदी का एकमात्र पति युधिष्ठिर ही या। इस प्रकरण के चतुद्दश भव्याय म इस सभा मे उपस्थित व्यास मुनि श्रीकृष्ण पचपाण्डव तथा प्रमुख नाग रिको का उपस्थिति म प्रवक्ता वशम्यायन पहले ५ श्लोको म द्रौपदी का परिचय देते हुए कहते हैं--

ध्रपने भाइयों के मुख से वेदों के मिद्धातो क अनुसार सुनकर भी जब धमराज युधिष्ठिर कुछ नही बोले नब महान कुल मे उपन्न युवितयो मेश्रष्ठ विशाल नेत्रा राजा युधि ष्ठिर के प्रति समिमान रखन वाली राजाकी सदाही लाडली घमजा महारानो द्रौपदी अपने पति देव नृप श्रम्क युधिष्ठिरकी जोग्सम्बोधित कर सान्त्वनापूर्ण परम मध्र वाणी मे बोली--

इतवन म ११ वष के वनवास भीर एक वय क श्रज्ञातवास म आपके इन सब भाइयो ने मर्दी गर्मी प्राची पानी आदि प्रतिकल स्थितियो मे सब सहते हुए भापका साथ दिया उस समय आपने कहा था कि बीर बन्धुम्रो । दुर्योधन और उसके सार्थियो को हराकर व्मपथ्वी को शत्रमों की लाशों स पाट दंगे। उस समय उदारतापूण नाना प्रकार के यज्ञो द्वारा भगवान की बाराधना करते हुए विजय प्राप्त कर बनवास जनित दुस स्कामे परिएत हो गया। बीर महाराज! इत वन मे अपने माइयो को स्वय हा ऐसे बीरतापुण वचन कहन के बाद फिर धाज हम लोगों को क्यों छोड रहे हैं <sup>?</sup>

द्रौपदी ने अपने निराश पति युचिष्ठिर को निम्न प्ररक्ष शब्दों मे कहा---

१ न क्लीबो वसुषा भड़ते न क्लीबो धन मदनुते। न क्लोवस्य गह पुत्रा मत्स्या पक इवासते ॥

म० मा० शातिपव १४।१३

अर्थात जो कायर भीर नप्सक है वह पथ्वी का उपभोग नहीं कर सकता न ही बन उपाजन कर सकता भीर न ही उसे भीग सकता है। जैसे केवल कीचड में मछलिया नहीं होती उसी प्रकार नपसक क घर मे पुत्र नहीं होता है।

२ जो दण्ड दन की शक्ति नही रखता उस क्षत्रिय की कोमा नहीं होती। दण्डन द सकवै वाला राजा इस पटवा का उपभोग नहीं कर सकता। हे भारत । दण्डहीन राजा की प्रजामी का कभी सुख नही मिलता। वीर धौर घात्मबल की धनी इस बार भारतेय नारी द्वीपदी के यह जब्द यान हमारे देश की वर्त-मान राजनीतिक स्थिति पर शक्षरश्च घटते हैं।

राजा के लिए दण्ड उचित इस सगोब्डी में उपस्थित व्यास (क्षेष पृष्ठ ११ पर)

# आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद ः एक मधुर स्मृति

×

स्वतत्रता सेनानियों के सम्बन्ध में लिखते हुए नहात्मा गायों ने बादा पृथ्वीसिंह बाजाद को स्वाधोनता के मदिर की यात्रा करने बाला सहयात्री कहा था। सहात्मा जो ने कहा था, कोई भी कान्ति-कारी उनके महान् साहस्तिक कार्यों को बराबरों कर सकता है, मगर उनके बागे नहीं जा सकता।

पृथ्वीसिंह बाजाद का जोवन प्रस्तव्यस्त रहा तबा वे किंतना-इयों से जुमते रहे। उनका जन्म १४ वितम्बर, १८६२ को पजाब को पटियाला रियासत के सासक गांव में एक निषम परिवार म हुआ बा। कुछ समय तक वे प्रमने पिता के साब रहे, जा बर्मा में पणुजी के साब रहे, बा बर्मा से पानुनी किंदी कर रहे थे। बर्मा से वे सिगा-पूर गां और फिर मनीला। बहास समरीका गये।

धपने से राष्ट्रांवता को सावना के उत्पन्त होने का श्रय उन्होंने भावंसवाज एवं व्हांव दयानन्द, महात्मा गांधी घोष बचाल के कारित-कारियो को दिया । उनके अनुसार सब स पहल सायसमाज न १०० स उन्हें प्रमावित किया। इसके बाद वे बगाल के समस्त्र विदाह धौर लाला.आजपतराय के ानबांसन से प्रभावित हुए । विदेशी दसन से उन्हें सर्वांचिक चुणा थी। उन्हें प्रपत्ने बात्यकाल से कनाडा को मारा प्रमानी (इसारता लक्षों के कारवाना) से काम करना बाद है। वहा रहने के दौरान वे मान्दांसन की मोर उन्नुख हुए विसका परिणति स तत १९१४ से गदरगार्टी को स्यापना महुद्द।

पदरपार्टी के सदस्यों ने ब्रिटिश सक्कार द्वारा मारत के निरा-दर एव बबमानना को समाप्त करने के लिए स्वदेश लोटने और देश को स्वायोनता के लिए बगावत का नेतृत्व करने कः सकस्य सिया था। मदरपार्टी के प्रध्यक्ष वाबा सोहन माखना के नेतृत्व के पार्टी के कुछ साहसी सदस्य १६१४ में एक बहाज में भारत पहुंचे। यह पार्टी इससे पूर्व केलिकोनिया में बनाई नई थी। बाबा उस समय बहाज में ही थे, अब भारत पहुंचते ही गवरपार्टी के सदस्यों को गिरफ्नार कर लिया गया।

दती समय पहला क्षेत्रीर पहर्य-त काक का मुक्या शुरू हुआ था। चौबीस कार्तिकाराया का मृत्युवण्ड धार येव को सण्डवान के सामानिक कार्यास दिया गया। वाला पृत्यासिह उनमे से एक थे। केवल सात व्यक्तियों का काली हुई। बावा ने सण्डमान चेल से सेत्युत्तर चेल मे राजनीतिक विद्यक्तिक प्रति हुए जा चहे जुव्यवहाय के विरोध स्वक्त १११ दिन की भूच हुव्यात की भी। वाला चेल में छह वर्ष कर कर १११ दिन की भूच हुव्यात की भी। वाला चेल में छह

वृत १६२१ में स्वदेश लीटते संभय जन्हें पुलिस के साथ महास से राव्यमह्री भेजा गया। वर्तनान धाननं अदेश में ब्राम्ले के निकट वे बलती रेलगाड़ी की बिंडकी से बाहर कूद गए। रात नर वे साल संच में दौडते रहे। अगली शाम वे फिर एकड गये और जेल में डाल दिये गए। दुवारा नवम्बर, १६२२ में राजमहेन्द्री से रेल हारा नागपुर के आये आते समय वे अमरावती के निकट बडनेश में बलती हुई हलााड़ी के सौचालय से कूद गए और मूमिनन हो गये। अमले १६ बचौं तक जनका कोई पना नहीं चला। वेश बदलकव वे कुछ समय तक मावननर में युवा लोगों को सारीरिक व्यायाम सिकाते रहे और उनने राष्ट्रीयता भी सावना जंगाते रहे। उन्होंने १६३१ में कराचों के हुए कांग्रेस अभिवेशन में माग लिया, बहा जनको मेंट झांच ध्रवसुस वपकार सा से हुई।

धफगानिस्तान में पकडा गया पक्नु हर नार वे किमी नग्ह वन निकसे। सोवियन वस में भी वे दो महोने जेल में रहे। यह पता चलने पर कि वे गदरपार्टी के सदस्य है उन्ह छोड़ दिया गया। फिन मास्कों में ठहरें भीर तोन वसं तक उन्होंने मानसंवाद का प्रध्ययन किया। छप्यवेश में ही व १६३४ म काबुल पहुंचे जहा व पकड गये और १३ महोने जेल में बन्द रह। जनता के दबाब में प्राकर उन्हें छोड़ दिया गया। फिर व जाली पासपोर्ट पर पाडिचेरी होते हुए मझास पहुंचे। बाबा ने १६३५ से १९३० के बीच बम्बई और कलकत्ता में कम्युनिस्ट पार्टी को मजबुत बनाने के लिंग कार्य किया।

महात्मा गांधी से उनकी घट १६ मई १६३८ की जुहु में हुई। गांधी जी को नवाह पर उन्होंने पन्तिम के आगे धारमसमर्गण कर दिया, जिसने उन्हें फिर कुक समय के तिल् जेन से बन्द रखा। जेन से रिहा होने पर उन्होंने गांधी जी के साथ उनके घाणम से काम किया।

बाबा उन कुछ पुराने स्वतंत्रता सेनानियों से से थे, जिन्होंने इस बब २३ फरवरों को पोर्ट ब्लेयर से राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह हारा सम्पन्त समर्पण समारोह' से आग लिया था !

बाबा पृथ्वीसिह ग्राजाद का क्षेल जगत् हे भी काफी निकट का रिस्ता रहा । इस उन्ने से भी व इतने सांक्य वे कि बुजुग एवले-टिक में उच्होंने देश और विदेश में सुब नाम कमाया।

भ्रमी हाल ही में हुई विश्व बुद्धा एयसेटिक्स चैस्पियनशिप में बाबा पृथ्वीसिंह भ्राचाद ने सौ मोटर को दोड जीतकर अद्भुत मिसास कायम की।

(नवभारत टाइम्स से साभार)



#### स्वामी श्रद्धानन्द उपदेशमाला

बार्यसन्देश साप्ताहिक अपने सकल्यानुसार एक ग्रीर विशेषाक ग्रपने प्रिय पाठको के लिए बीग्न प्रकाशित कर रहा है। स्वामी श्रद्धान्तन्द ग्रद्धन्त विचारक, जीवन प्रभा की जाञ्बल्यमान कर सकते से समय प्रहान उपरोश्तक, लेकक मनीया राष्ट्रभायक थे। उनके मधुर ग्रध्याप्त उपरोशों का एक मकलन हम स्वामी श्रद्धान्त्व बलिदान दिवस की स्मृति मे प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषाक ग्रापको जीवन मर स्मरण रह सकेगा ऐमा हमारा विश्वाम है। साप्ताहिक आर्य-सन्देश के सदस्यों के लिए वह नि शुक्क होगा। ग्रात प्राप भी ग्राज ही २० क्यों वार्यक सदस्य बन बाह्ये ग्रीर ग्रानेक विशेषाक तथा प्रति सम्नाह घर वेटे ग्रायक्षन्देश पत्रिका ग्रावत स्थायक वेटे ग्रायक्षन्देश पत्रिका ग्रावत स्थायक विशेषाक तथा प्रति सम्नाह घर वेटे ग्रायक्षन्देश पत्रिका ग्रारा उच्चकोटि के लक्षो का ग्रानन्द लीजिए।

सम्पादक ग्रायस देश १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली

कराबी से छथबंश ने वे सोवियत सघ पहुंचे। कई बार उन्हें

ऋषिवग!

स्राप ता स्नान्दिचन हाकर म्या का प्रानन्द भीग रहे है अपक वह देश जिसके लिए प्राप दिन रात बेचन रहते थे जिस दश क मुक्षार के लिए स्नापका सनको बार विषयान करना पड़ा उसके दशा कर भी स्नारका कुछ अनुमान है।

ग्राप जीवन पयन्त परमिता परमा-मा को जाजा का पालन करते रहे। जीवन पर्यन्त जापने एक भी बुरा कर्म नहीं किया। कर्मों के फुनदाता ग्रापसे बहुन हो प्रसन्त थे जिस कारण जापको मोझ प्राप्त हुमा और बन्म मरण के चक्कर से छुट गये। इससे तो प्रच्छा था जाप एक दो नो बुरे कर्म ग्रापने जोवन में कर जाते जिससे ग्रापने। फिर मारल से जन्म नेना पहता ग्रीर पूब जन्म का श्रमूरा काम पुरा कर सेते।

प्रापने प्रायंतमाओं को स्वावना की थी। प्रापके प्रमाव क कारण उस समय भी इवारो जन प्रायमाओं बन चुके थे। पापने रूटियो कुरी-तियो, प्रन्वश्रद्धा धन्य विद्वाम को दूर करने का काम ध्रायों को सौंपा। काम इसे मम्मार से हो छोड़कर मोक्ष को प्राप्त कर गये। यदि पाच वस् धीर रह जादे तो देख का बहुत सुक्षार हो अत्ता। हमे यह दुदिन न देखने पढ़ने।

भ्रापक व्यक्तित्व कृतित्व भीग वक्तुत्व मे आदू का भ्रमर था। परि-ह्यितियां भ्रोर वानावरण विपरित होने के वानजब भी जितना काम भ्राप भ्रकेले कर गये परिस्थितिया प्रमुक्त होने पर भी हम दो करोड भ्रायंसमाजी उतना काम नहीं कर

स्वदेशी सस्कृति,स्वभाषा नथा स्वतंत्रतः कानाद सर्वत्रवस आपने ही बजाया या। अपने कहा बाने 'अपना राज्य चाहे कसा मां विदेशी राज्य संफिर भां अच्छा है भारत से आरसीयों का राज्य ही होना चाहिए।

सन् १८५७ मं झापने भारत को स्वतन्त्र कराने का काम स्ववार के रूप में किया आप भारत को तुरन स्वतन्त्र कराना चाहते थे। आपके बाद आयों ने भी यह सोवा कि भारत को पहले व्यवजी से मुक्त कराया आए। किर आयसमाज कराया आए। किर आयसमाज का प्रवार और प्रकार करना स्वतन्त्र भारत में सुगम हा आएगा। प्रत परिस्थितिया अनुकूल हो आएगी। ता ऋषिवर का स्वन्त्र भी साकार हा आएगा की ना माज स्वार भी रूप

# महर्षि दयानन्द का मोक्ष राष्ट्र का दुर्भाग्य

--जगत्राम स्नार्थ

वह । धार्योपदेशक भजनोपदेशक. हमारे गुरुकुलो, स्कलो, कालेओं क ग्रध्यापक भीर छात्र सभी भाजादी के दोवाने बनकर स्वतन्त्रता सम्राम मे कद पड़। याननाए महीं और बलिदान हुए, धन्त मे भारत स्वतन्त्र हद्या । जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द भौर उनके भनुयायी भार्यों को मिलना चाहिल बा परन्तु ऐसा हमा नहीं। ग्राजादी के बाद राष्ट के जो प्रशासक भौर भाग्य विचाता बनते रहे । उनको ग्रार्थसमाज के सम्बन्ध मे पता भी नहीं था कि भारत को स्वतन्त्र कराने मे प्रधिकतम योगदान ग्रायसमा-जियों का रहा है इसलिए भारत को स्वतन्त्र कराने का श्रेय आर्यसमाज को है। भौर न हो आर्थनेताको ने उनके करनो तक भावाज पहुचामी। परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद बायसमाज को पूछा भी नही

भाग्न को स्वत-नता क जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती
मुक्कावले में राजा राममोहन राय ने
मारत के लिए कोई विशेष काम नही
किया। ऋषि दयानन्द का राजा राममोहन से कोई मुकाबला ही नही।
फिर भी पिक्षा मनालय मारत सरकार ने राजा राममोहन राय के नाम
पर बीस लाख क्यय का प्रमुखाकरिक देश उनका स्वारक कायम
कर रखा है और मारत को स्वतन्त्र
कराने वाले महर्षि दयानन्द का कोई
स्मारक नहीं बना पांधे प्रीर न हो
उनके नाम पर कोई प्रनुदान दिया
भवा है।

दव दयानन्द ग्रापनी आ यंश्वमाची की हालत तो माकर देखें मुफ्ते तो ऐसी हालत देखकर छुप छुप कर रोना माता है!

ऋषिवर । धापका धार्यसमाजो क सदस्य जालीम पजास वश्व जैसे पहले होते थे वेस नही गृं। ध्रव तसे धार्यसमाज नही है। ध्राव तसे धार्यसमाजो समस्य हो नही। ऋषि द्यानन्द के समस्र ही नही। ऋषि द्यानन्द के समस्र ही नही। ऋषि द्यानन्द के सक्त और बायसमाज के दीवाले समाप्त ही रहे हैं। प्रव नकती, फसली, ध्रवसरवादी लोग आयंसमाजो में इपये के जोड़ से पपना सिक्का ज्ञाना चाहते हैं। मंर जैसे पुराने वार्यसमाजी बिन्होंने

धाज से पथास साठ वर्ष पहले का आयसमाज का स्वर्ण युग दला है व दुली है और बेबस हैं।

ऋषिवर! हम परदया करो।
धापका नाम हो दयानन्द है, धापने
धाजीवन परमात्मा की भाजा का
पालन किया है। वे सच्चितान्द द्वाप
से प्रसन्त हैं धापको कहना मानते हैं
उनको हमारी धोर से कहे कि
धापके धमृतपुत्र धार्य जन धापको
धमर देन वेदों के प्रचार और प्रसा-करने वाले दु नो हैं धौर वेदोदारक
ऋषिवर दयानन्द का धाह्वान करते
है। प्रमो! हमारी पुकार मुनो
हमादे ऋषिवर को एक वार पुन
भारत में बन्म द जिससे मारत में
सुधार हो।

प्रमां । ह्यारे पास सच्चा मीर सुच्चा सौदा है परन्तु पारमी नहीं है। मापने वेदो का ज्ञान रूपी प्रसाद केते हमारे पास नहीं माते चहुा गला महा दुर्गन्य बाला सस्ता सौदा है वहा भाहकों की भीड लग रहा है। उस भीदें का उपयोग करके हानि भी उठाति है पर समझते नहीं। प्रभों । उनको सदबुढि द ।

बायसमाजो में कुञ्जेक लोग ऐसे भी हो गय हैं जिल्होंने सून रखा है कि ससद में विपक्ष मजबूत होना बाहिए। समद मे तो यह बाशय होता है कि नेता शोन कोई ऐसा काम न करें जिससे देश और वर्ष का लाग हो, वह ही फार्मला बार्यसमार्जी मे लाना चाहते हैं। हालांकि पत्येक साप्ताहि न सत्सग मे ऋग्वेद के अतिम सुक्त का पाठ होता है भीर भर्ष भी बोला जाता है कि "चिस बन सब एक हो"। सबद का फार्मुला ग्रायं-समाजो म नहीं बलाना बाहिए। मार्थममाज वेदो पर प्राथारित एक विश्वद्व धार्मिक सस्या है। ऐसे लोग ग्रार्यसमाजो मे भो गुटबन्दो बना कर विपक्ष को मजबून बनाने का कुकमें करते हैं। ऐसे अनार्य लोग आर्य-समाज का कोई भी काम नही करते भौर न ही दूसरों को करने देते हैं। श्रायसमाज का विषटन करके दूर बैठ कर तमाशा देखना चाहते हैं। वे वार्यसमाज के ग्रन हैं। एक व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, लगन और उत्साह के साथ आर्यसमाज का प्रच्छा काम करता है। अपर्यसमाज को

अपनी मा सनभ्रकर आर्थसमात्र की सवा करता है। ऐसे व्यक्ति को सह-योग देना चाहिए, यही आर्थन्त है। पर-त होना क्या है कि ईष्टा में देव के की बड म फ्रेंसकर प्रार्थमांज के अच्छे भने चन रहे काम में बाबा एव विचन रालकर भार्यसम्पज के काम को नहीं चलने देने कितने लेद को। बात है।

धार्यसमाजों में कुछ व्यक्ति ऐसे मी हैं जिन्होंने प्रविकारे पर पर रहते हुए भी धार्यसमाज का तन मन से किल्कुल काम नहीं या न न न से प्राचेत्व हैं परन्तु फिर भी धार्यकार पर की इच्छा बनी रहती हैं। धार्यकार पर लेने के निए गुट-बन्दी काले हैं लक्ष्मी झाफरते हैं धोर धन्यक्शा फैलाकर वाता-वरण स्वास करते हैं।

जो लोग प्रथिकार पद को इच्छा न रखते निन रान प्रायक्षमात्र का को चिन्तन करते रहते है प्रोर प्रार्थ-समाज का काम दिन रात करते रहते है जनसे शिक्षा नवा प्रेरणा केली चाहिए। प्रार्थसमाज का पूत जिस कें सिर पर स्वार हो वह सर्विकार पद जिए विना भी प्रार्थसमाज का काम किए विना नहीं दंह सकते।

भार्यसमाजो मे प्राय ऐसे लोगो ने बातावरण दूषित कर रखा है। भार्यसमाजो की उन्नति नहीं होने देते। बार्य जनो को सर्वदा ऐसे ब्य-क्तियो ने साववान रहना चाहिए।

> अगत्राम **धार्य** गाधीनगर, दिल्ली-३१

#### त्रार्थसमाज पटेल नगर नई दिल्ली द्वारा वेद पत्रार तथा वार्षिकोत्सव

वार्यसमात्र परेल नगर क्राचा पटेल पाके में प० यशपाल सुवासु की मनोहर वेदकथा हुई। इस घ्रवस्थ वर हुंचारो नर-नारियों ने दो सप्ताह तक आई प्रत्यों पर आक्षारित स्थुन मय ज्ञान का प्रानन्द लिया। वेद कथा के प्रन्तिम सन्त्र्या वेला में ३०० पुरुष महिलाओं ने प्रपने दोष त्याय करने का तथा। स्रायोजन का स्था-लन श्री जैसाराम तनेजा ने किया।

प्रात काल एक सप्ताह युकु-वंदीय यह द्वार्था जिसके बहुता जो प्रेम चन्द श्रीषर थे। यनेक श्रव्यालु नरू-नारियों ने श्रद्धा पूर्वक ध्राहुति प्रवान की। बन्तिम विक्य भी तोमनाब मनवाह के समापनित्व में ध्रार्क संग-ठन सम्मेवन हुखा।

> मन्त्री आर्थसमाज

सन्नीसवी शताब्दा के अन्य धीर बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे आर्था बत देश म मुरूप रूर से राजनीति के क्षत्र मे दश की जो दुई शा थी वह सर्वाबादत यो एक झोर अन्नजो का माम्राज्य व दश गुलामी की जजीरी मं जकडा हुआ, दूसरो धार सामा जिक क्ष त्र में मनुष्य मनुष्य के मध्य भदमाव की दावार, श्रज्ञानान्वकार, नारो जाति का दयनोय स्थिति, घामिक जगत म एकेश्वरवाद क स्थान पर बहुदवतावाद निराकार परमात्मा के स्थान पर मूर्ति पूजा एव अवतारवाद न स्थान ग्रहण कर रक्खा या, इतना हा नही बल्कि कर्मानुसार वज ब्यवस्थाको जगह जन्माधिकार पर धाधारित बाह्यण मण्डलो ने अपना भासन ग्रहण कर रक्सा था।

ऐसे मे परम पिता परमात्मा के

नियमानुसार धम एव सत्य को पुन स्थापित करन हतु ऋषि दयानन्द का प्रादर्भाव हमा। घटनाए ता घाटत होता हो रहता है मगर उन घटनामा की बोर किसा व्यक्ति या महापुरुष का ही ध्यान जाता है जिनके ऊपर परमात्माको कृपा र्राष्ट होतो है। ऐसी हो घटनाए , महर्षि दयानन्द क जीवन में घांटत हुइ, हम इस का ऋ मे द्रशिक विस्तारम न जाकर पाठको को सिफ मूर्ति पूजा सं सक्षित घट-नाए देते है। महाँच ने अपने पिता जो के कहने पर वत उपवास स्थेत, धीर उस उपवास रक्षन का कोई कल प्राप्त न होकर जीवन में एक नमा कोच उत्पन्न हुआ और उसा बोधोत्पन्न होने से हा आ**ब इस ग्रा**र्था\_ वसंदश तो क्या विश्व को एक नई कान्तियामानवताकेक्षत्र मे नई दिशामिली । जिस कान्तिका प्राज भारत ने ही नहीं बल्कि समस्त विश्व है उसका अनुसरण किया, चाहे वह राजनीति हो या घामिक जगत हो या फिर चाह सामाजिक सत्र हा, यहर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महाभानव ये जिन्होने धपनी सूक्ष्म बुद्धि से प्रत्येक क्षेत्र मं विचार मधन कर समस्त राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करते हुए अपने भ्रमर प्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में अप्रेजों के साम्राज्य के विदोध में लिखा कि विदशियों का राज्य बाहे कितना ही प्रच्छा हो मगर पूर्ण सुसदायक राज्य ता स्व-देशियों के राज्य होने में ही है। दुर्दिन भव मारी हैं तब ऐसे ही मानवता को कष्ट उठाने पडते हैं, बब तक एक मत, एक हानि-लाम एक ही माचा न होगी तब तक पूर्व सुक्ष की कल्पना करना निरर्थक है। इसना ही महीं ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ब्यारहव समुल्लास की प्रत्युक्तिका <u>मे</u> लिक्सा कि महाभारत युद्ध के

# मर्हीष दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थें

लेखक-रतनलाल आर्य निजारा ग्रलवर (राजम्यार)

पश्चात इस धार्यावत दश की बही हानि हुई है। दिनोदिन यह दश रसा तल का बार जा रहा है। ग्रागे महर्षि लिखते हैं कि गुप्त हुए ज्ञान का पुन-मिलना बडा हो दुष्कर कार्य है। जैनी, पुरानी, किरानी मीर कुरानी यह सब मतो के मूल हैं। इसके पश्चात हो इस भार्यावर्त दश ने वास, गासा न्तर व मत-मतान्तर प्रचलित हुए है। इनका काई घन्यया नहीं कर सकता। आज जितना भी सम्प्रदायबाद इन बहुदबताबाद के मानने पर मिल रहा ह धौर |दना-दिन राष्ट्रीयत। नाम की चीज नहीं के बराबद है, अगर हम महर्षि दयानन्द के बताए हुए मागपर चल जसा कि उन्होंने वज व्यवस्था के बारे अम उद्घोध करते हुए लिक्सा झौर वेद का मन्त्र चद्धृत करते हुए कहा-

> बाह्रशंबन्य मुखमासीद् बाह्रशंबन्य कृत । उक् तदस्य यद्वैश्य, पदम्या सुद्रोऽजायत्।।

श्चर्यत-जिल प्रकार शरीर मे मुस श्रष्ठ है, इसी प्रकार समाजरूपी शरीर में जिसके कर्म बाह्यण के तुल्य हो, जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है यज्ञ करना, कराना, दान दना झीर दान लेना, वेदोक्त धम का प्रचार व वेद का पढना भीर पढाना इत्यादि इसो प्रकार से ।अस प्रकार शरीर मे बाहुबल ग्रधिक है वहा राज्याधि कारी हो सकता है अन्य नही। तासरा वर्ण जिस प्रकार धारी व मे पेट का स्थान है जो कि सभी भागो को भोजत का समान विभाग कर दता है इसी प्रकार समावरूपी शरीर मे जो वैष्य है उस का भी यह कार्य होना चाहिए कि वह समाज के सभी वर्गों मे धन का समान 🕬 से बट-व।राकरे और ग्रमाव का नाश करे चौषावर्षे जिस प्रकार शरीय में पैरो की स्थिति है कि सारे क्षरीर का बोफ ढोते हैं, इसी प्रकार समाज रूपी शरीर में जिसको पढन पढान से कुछ नहीं जाने शर्मात् निर्वेद्ध हो उसे शुद्र कहना, मनर महर्षि ने लिसा कि खुद्र भी अपने उत्तम कर्ज से दिज सजा को प्राप्त होता है धीर द्विज झगर नीच काम करे तो वह भी शह हो जाता है। मर्जा

न समाज म ग्रम्पुश्य समक्ष जान वालो के प्रति बहुत महान् काय किया है। महर्षि दयानन्द के पश्चात हो स्वामी श्रद्धानन्द भीर महात्मा गाघी न इस कार्य को धाग बढाया। यह साराकार्य हो ऋषि दयानन्द की मावाजयो। भाजग्रगरउनके पद विह्नो पर ग्रगर ग्रायांवत दश का मानव बले तो इसमे कोई शक नही कि हम अपने पिछले गौरव का पुन प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ण व्यवस्था पर भाषारित सामाजिक व्यवस्था इस्गरं पुन गुरुकुल प्रणाली के मान्यम से सरकार द्वारा व्यवस्थित हो तो किसो प्रकार का नेदमाक ससमानता साम्प्रदायिकता छुझाछत, राष्ट्र की एकता धीर ग्रसण्डता की जगह पर एक ही भाषा, एक ही मत कायम रहकर ग्राय साम्राज्य की एव राम-काज्य की कल्पना परिलक्षित हो सकतो, है

घार्मिक जबता में भी हम एके-श्वरवाद पर ऋषि दमानन्द के बताए हुए माग पर चल तो सारा ससार ही मोक्ष का मानन्द ले सकता है भौर तभी ससार स पूज कार्नित सम्भव है। कई देशों में तो ईश्वर तक को मान्यता नही है सोर जिस देश मे हैं यहापर भी एक ईश्वर के स्थान पद स्वय सिद्ध पदमातमा मोजूद है भौर भलग कलग मतो के प्रादर्भीय होने से मनुष्य की बृद्धि भ्रमित सो हो गई है, इसलिए महर्षि बयानन्द ने धार्मिक क्षत्र मे एकेश्वरवाद पर बल देते हुए लिस्ताधीर वेद का मन्त्र उद्युत करते हुए कहा कि 'न नस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद्यश ।'

प्रवर्गत उस निराकार परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है जिसका कि नाम बढ़ी महानता के साव जिया जाता है, इसी ने साथ उन्होंने ईशो पनिवर के मन्त्र का हवाला देत हुए कहा कि—

> मन्यन्तम प्रविद्यन्ति ये मसम्भूतिमुगसत । ततो भूय इव ते तमो वेसम्भूत्या रता ।

श्चर्यात ने मनुष्य अन्धकार मे प्रविष्ट होते हैं जो ग्रसम्भूति अर्घात (जह प्रकृति की उपासना करते हैं)

होने 🖹 जा प्रकृति द्वारा निर्मित मृद्धि कुछ स्थूल जडपदार्थों की जसे वि मूर्यादिकी उपासना करते हे इसी-लिए तो महर्षि दयानन्द ने + तिपूजा श्रीर ग्रवतारवाद का प्रवल तक ग्रोर युक्ति से खण्डन कियाग्रोर एक ईश्वर काप्रचार किया ग्रीर कहा कि परमान्मा सवव्यापक है उसकी मूर्ति या प्रतिमा नहीं है और जो मन्द्य परमात्मा को एक स्थान पर जन्तता भीर मानता है वह पापादि न म भौर कुचेब्टा किये बिना नही रह सकता बल्कि जो मनाय पर-मात्मा को नर्व यापक मानना ग्रीर जानता है वह किसी भी जगह यहा तक कि अपने मन मे भी दुर्भावना नहीं प्राने देता मगर आजकल की ब्राह्मण मण्डली ईश्वर को मूर्ति पूजा के दायरे मे सीमित कर रामलीलाओं भौर रासलीलाभ्रो द्वारा मूर्ति पूजा और भवतारवाद को बढावा दे रही है और मनुष्य मध्य को परमात्मा के सही स्वरूप का दिग्दशन न कराकर भन्यकार की गहरी साई म उकेल वही है। इस लिए ग्रगर ऋषि दयामन्द न होते तो भाषका यह भायांबनं दश न जाने कहा रसातल म जा गिरता। फिर भी उनका उत्तराधिकारिकी धार्यसमाज देश में फैले मूर्तिपुजा अवतारवाद कुमाछत का इतना ही नहीं जो मुस्लिम आकान्ताको दारा हमारै समाज से ग्रस्प्रय समक्षे जाने वाले लोगों का विदेशी घन के नाम पर धर्मान्तरण कर रहे हैं एवं ग्रन्थ सामाजिक ग्रमिशाप एव राष्ट्र के विरोध स्वरूप जितने भी कार्य है ध्यान देकर इस देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य जैसा भार्यसमाज कर रहीं है भन्य नहीं। इसी प्रकार जो महर्षि दयान दन प्रत्यक क्षेत्र मे जो वैचारिक कान्ति को बह सदा हो सदा प्रनुकरणीय थो ग्रीर रहेगी।

चतर्वेद पारायण यज्ञ १५ दिसम्बर से २७ दिसम्बर ८५ नक समय प्रात ७३० से ६।३० तक घाहतियो द्व रा यज ऋग्वेद तथा यजुर्वेद रात्रि ७ ३० से १ बजे तक मन्त्र पाठ पारायण मामदद अधवदेद स्थान श्री मनोहर विद्यालकार का निवास १७० छत्ता भवानी शकर, फतेहपुरा (चिम्मन लाल की घमशाला के सामने) प्रवचन प्रतिदिन दोनो समय २ या ३ बार दम दस । मनट श्री सत्यभूषण योगी झयवा प॰ हरिशरण सिद्धातालकार आर्य भवदीय

#### बुरों की भलाई करना ऋादर्श परोपकार मानव का कल्याण मानवता से

टेक

-थामनी प्रकाश सूद एम**ा प्रीनपार्क** 

ससार में ईंडवर का चना मे मानव को सवा-कहर किन की सजा नी गई है। स्रय सब प्राणी केवल अपने कल्यास की सोचते हैं ग्रीर दुसरे जानवर स कौर छीनकर खाने में भा नहीं हिचकिचान क्योंकि उनमे वृद्धि का धभाव है। मनुष्य को इसी-निए सर्वोच्च माना गया है कि उसमे एक विलक्षण शक्ति है जिसका नाम हमारे शास्त्रों ने बुद्धि व विवेक कहा है। व्योक के करण ही मानव धर्म-कर्म करके मान्वता का कल्याण कर सकता है। यदि मानव में यह भिन्नता नहीं तो निम्नलिखित कहावत के अनुसार यह मानव कहलाने का प्रधि-कार हो नहा ग्यता--

£

माहारनिदाभय अनुक्रव, सामान्यमेतत् पश्चित्रीराणाम्। धर्मो हि वेषामधिका विशेषो, धर्मेण हीना पश्मि समाना ।।

श्रयात श्राहार निका भय और विलास बामना मारो बात मनुष्य धौर पद्म ने एक समान ही हुआ। करतौ हैं। धर्म ही वह मूल विश्लेषता है जो मनुष्य भीर पशु में भेद करती है। वर्म के सभाव मे मनुष्य पशु से भी गया बीता है। जिसे मनुर्ध के लिए धर्भ कहा गया है। वह वास्तव से यही है कि मनुष्य केवल अपने लिए जीने वाला धीर कवल प्राप्ते सुख स्वाधीं का ध्यान रखने वाला प्राणी नहीं है। वह एक सामाजिक प्राणी है ग्रन उसका प्रत्येक कार्य-व्यापार प्रत्येक कदम भ्रपना ही नही बल्कि सम्पूर्ण समाज भीर जीवन का हित साधन करने वाला होना चाहिए यही मनुष्यनाका सञ्चालक्षण है।

किन्तु प्रतिबेद के साथ यह स्वी-कार करना पड़ना कि साज का मनुष्य निहित स्वार्थी और ग्रात्म-जीवी होता जा रहा है। वह अन्धा-वन्त्र श्रपनी स्वाय साधना मे तोव गति से भाग रहा है ! उसे दूररों के द्श ग्रन्याय ग्रत्याचार ग्रविदशम दखने की चिन्ता नही। यही कारण है कि बाज नारो घोर भय घौर घशाति का बातावरण बना हमा है, हाहा-कार मच हुआ है। दैहिक, दैविक, भौतिक तापा ग्राज जलाए सब को ब्रापा' व्से प्रभताका ही लक्षण कहा जाएगा। धांज सारे जीवन में घीर ममाज मे प्रभु-वृत्तिया घर कर गई है। वह इस कमीटी पर पूरा नही - त्रन<sup>र</sup> कि ''वहो मनुष्य है कि ओ

मनुष्य के लिए मरे।' जब तक सब के कल्याण की भावना मनुष्य मे जागृत नहीं होतो तब तक जाति दश धीर राष्ट्रका उत्थान सम्भव नही होगा। इस मानव कल्यारा की मावना सं श्रोत-प्रोत होकर ही हमारे प्रवानमन्त्री श्री राजीव गांधी मध्य-प्रदेश के ब्रादिवासियों में कैसे अनेक व्यक्तिगन द्रस गाथाए सुनने गए। उसके पक्चात उडीसा के दीन दुखियो को पुकार सुनकर ग्रभाव व भय से त्रस्त लोगो को पूर्ण बाइवायन देकर उनके कब्ट निवारण के लिए पूर्ण सहयोग के लिए कहा है। यह मानव योनि हो ऐसी दुर्लभ योनि है जिसमे मानव दूसरों के कट्ट हरण कर सकता है भी र मानवता का कल्याण करने ये समय हो सकता है। ग्राव मनुष्य में अञ्चाचार व चरित्र हनन का बोलबाला अधिक हा गया है क्यों कि वह मानवता के द्वित को भूल गया है। धाज एक देश दूसरे देश को निगलना वाहता है भौर शक्तिशाली राष्ट अपनी प्रभुसत्ता से छोटे राष्ट्रों को मास दिला रहे हैं भीर महासक्तियो के बल पर उन्हें भयभीत कर रहे है। बब तक समाज की देश की, राष्ट्र की प्रवृत्ति चर्म विमुख रहेगी राष्ट्र का कल्वाण वयासम्भव नही है। सुख व समृद्धि उसी के पाव चमती है जो मानवता के कल्याण के लिए धन्नसर होता है।

इस नर नन को पाकर कोई न कोई मागलिक कार्य अवस्य करना वाहिए। यह पच भौतिक सरीर तो भवस्यम्मावी नश्वर है वा भात्मा समय है सौर उसी व्यक्ति की साम्मा बलशाली व पवित्र होती है जो पाप वृत्ति से दूर रहकर सत्सगिन मे प्रधिक समय व्यतीत करता है। वर्म के धनुसार ग्राचरण करता है भपनी वृत्तियो का बाह्यमृत्रो न करके अन्त-र्मुल करना है उसका ध्येय मानव मात्र का कल्याण हो होता है भीर परपी ना को वह अपनी पीडा समक्रता है भौर दूसरों के थोड़ से दुख को भी महान समभ कर उसक निवारण का पूर्णप्रयास करता हुआ। सच्चे पिता ईश्वर की गोद का अधिकारी हो जाता है। जन्म-मरण के बन्धन से

(शव पुष्ठ १२ पर)

-पृथ्वीसिंह बेघडक ग्रार्थं भजनीक

बूरो की भलाई करना सबसे अच्छा काम है। छडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है।। छोडकर बुराई बुरा श्रच्छे काम करने लगे शायद उसको देख उसका णाई भी सघरने लगे। बतायों नो इससे प्रच्छा और नया प्रोग्राम है छडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है।।१॥ कोई बुरा होता नही ब्री हो लुटतायारोजाना जो लोग और लुगाइया। जिसका भाज मिद्ध ऋषि याल्मीकि नाम है छडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है।।।।। शिक्षा देकर दूर करो ग्रज्ञानी की ग्रज्ञानता, भगर शिक्षादेने पर भी किसी की नहीं मानता। फिर तो उस पापी के लिए राम है घनश्याम है, खुडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है।।३॥ मुसलमान ने ही मुसलमान को बरबाद किया, भारत ने कूर्बानी करके बगला को ग्राजाद किया। पूछो जिया से क्या धव भी सतरे में इस्लाम है, छडा दे ब्राई उमकी जिस से वह बदनाम है ॥४॥ बहाद्रशाह जफर का बेटा एक रोज मथुरा गया, वजानन्द के पैर पकडे पाच गिन्नी देकर कहा। खुदा के फरिश्ते तुम्हे शाह का सन्नाम है, छुडा देवराई उसकी चिससे वह बदनाम है।।।।।। स्वामी दयानन्द ने कहा या तहसीलदार को, छोड दो गराव सुनो वेद के प्रचार को। धमीचन्द तू हीरा है पर वेदयाओं का गुलाम है, खुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है।।६॥ पिलायाचा दूध जहर गेर करके किसी ने, पांच सौ रुपये दे करके कहा था यह - ऋषि न। दयानन्द की तरफ से यह प्रापको इनाम है, छडा दे बगई उसकी जिससे वह बदनाम है।।।।। ईश्वर की असली भक्ति मत्यार्य-प्रकाश मे, यस्य नाभ महस्रका य्यारहवे समुल्लास मा ज्ञान से बच्छा जाप घो ३मृ नाम न्याम शाम है, छडा दे वराई उसकी जिससे वह बदनाम है।।दा। एक डेढ मिनट बाकी रह गया था फासी का, ितना अच्छा फिकरा था यह अक्त ईसा मसी का। द गृह ऐण्ड फोरगेट पाखिरो कलाम है। जुंडा दे बराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥६॥ कृष्ण जैसी नीति रहे राम सी मर्यादा रहे, पृथ्वीसिंह वेघडक कहै शासन प्रजाबाद रह। जिला मेरठ ग्रन्दर जिलका शिकोहपुर ग्राम है, खुडा दे बराई उसकी जिससे बहु बदनाम है।।१०।।

टिप्पणी -मार्थसमाज के सुविख्यात मार्थ मजन उपदेशक वीर आस् कवि चौघरी पृथ्वीसिंह वेश्वहक ने प्रयन स्वर्गवास से कुछ पहले, दुर्जनी के सुधार तथा उनके दीव निवारणार्थ १० पद्माशों का यह गीत बनाया नाया था। जैसे साधुर्धों के मत्सग से रत्नाकर डाक्कि विवासीकि ऋषि बना वा । भारत ने बगलादेश स्वतत्र कराया । गुरु बुजानन्द की राजनैतिक गुप्त मबुरा पचायत श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स० १६१३ वि० मे दिल्ली नरेश बहा-दुर शाह का बेटा फिरोजशाह ने गुरु को पाच गिल्ली भेटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भा सम्मान अदेश दिया था। वह शाहजादा सग्राम हार के पदचान सक्का मदोना जाकर सन १८१६ ई० में गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अमीचन्द भागें भजनीक बना । विश्वदाता जगननाथ की महर्षि ने पाच सौ क्यारे दिए वह पश्चात्ताप पूर्वक दुर्गति सहित मरा। कहा है ईस'ममीह ने फासी के समय भी परे पकार की बात कही थी, ईश्वर मक्ति दूर होकर वह ग्रमसात्मा हो जाता है। नवा भोश्म स्मरण सर्वश्रेष्ठ उपासना है, दुराग्रहो दुष्टो के लिए रामकृष्ण का दण्ड चाहिए। चौधरो पृथ्वीसिंह का ग्राम शिकोहपूर है।

प्रेषक निहालसिंह बार्ये पता उसीर खेडी रोइतक पस्तक समीक्षा-

### 'प्रभुदर्शन'

लेखक श्री यशपाल जी 'ग्रायंबन्धु प्रकाशक महिला ग्रायंसमाज, स्'शन रोड, मुरादाबाद। मूल्य केवल प्रचार

'प्रमुदर्शन' को बात प्राय सभी मत मतान्तर करते हैं और इस सबब में ग्राज जितना भूत ज्याप्त है शास्त्र हो ग्रन्य किसी विषय में हो। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्रमुदर्शन का वैदिक दृष्टिकोण ग्रत्यन्त सरस और सरस सब्दों में सुन्दर तर्क और ह्यादनीय प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है।

श्री यशपाल जी प्रार्थवन्तु प्रलेक वर्षों से प्रपने लेको तथा लघ् पुस्तको के मान्यम से इस वैदिक साहित्य की निरन्तर सेवा कर रहे हैं। हमारा विडवाम है कि प्रार्थवन्त से इस प्रकार के प्रथक प्रयास की न केवन मराहता होगी भी स्विक से स्विक पुस्तक विनरण द्वारर प्रवाद प्रसाद होगा प्रपितु साहित्य प्रकाशन की सैवा हेत् अवस्य बायसमाज के प्रका-शन विभाग की सहायता करने।

श्री 'धार्यंबन्ध्' स्वाघ्यायशील ग्रीव ग्रायंसमाज हरवला कालोनी गुरादाबाद के सिक्रम सदस्य हैं। उनकी बीस के लगभग इस प्रकाव की पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं उन्हें धौब बार्यसमाज के महिला विभाग को जिन्होंने उनको प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कराया है बघाई देता हूं।

> प्रमचन्द्र श्रीधर एम ए ३६/ई रणजीतसिंह मार्ग स्रादर्शनगर दिल्ली-१ ००३३

#### गांव शहर बिकते हैं

क्रॉकड, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु कैसे बन गए उसके मनुगामी निरत्तर उपवास झुद्धि सत्याग्रह इन सब का सुदर्म क्या था ? दो पैसे सेर के नमक हेतु दाण्डी यात्रा, लाठी चार्ज और चौसठ हजार ज्यक्तियों का कारावास मर देना हुँस कर सहना सभी याननाए

क्या केवल ग्रहतीस वर्षों मे राष्ट्र का चरित्र बदल जाता है यज वही रहता है मन कल्षित हो जाता है लग जाती है सेवादारों की लम्बी चक्रब्युहो पक्तिया ग्रीर राजनयिक भवनी मे सेवादार छन्ते है सेवक की धर्जा पर हजूर की मर्जी पर गाव शहर विकते हैं। सेनाधिकारी बन जाते हैं लारकिस बन्ध्, भ्रौर व्यापारी-मिएक नाल कूमर नारायए। सेवक हनुमान् की गरिमा भूलकर चुराने लगते हैं स्वामी के रहस्य धर्मात शुद्र भपनी सुद्रता पर उतर बाते हैं जलवे लगने हैं सविधान के पष्ठ देश जायदाद का रूप ले लेता है बँटने लगते हैं उसके भूभाग भग्न हो जाता है भौर बिखर जाते हैं चारी श्रीर राक्षस ही राजसा

---नरेश गुप्त 'नीरक'

#### देवदयान्द बता गये

ल**सक—स्वर्गीय प० देवेन्द्र जी तूफान** स्थान पो० स्रचपुर जि० गाजियाबाद (यु०पी०)

भारत देख हमारा त्यारा बन जाए स्वर्गनगरिया। देव दयानन्द बना गए हमे वैदिक वर्म डगरिया ॥

एक ब्रह्मा का पूजन हो ना पूज दर दीवारो को। सन्त्या हवन कर नर-नारी रख गुद्ध विचारो को। ग्रन्न के घट-घट भरे हुए हो कोठ खास कुटरिया।

> सभा सचिव मन्त्री ससद मे मनुबद के जाता हो। राज्य की गद बनाकर खेल राम भरत से भ्राता हा। मीता जैसी माता हो जो तज दे महल श्रटरिया।।

शिल्प क्रास्त्र के पहिल हो और सुझी सभी किसान हो। कान पकड लाए शेरो के बच्चे भरन समान हो। सुग के तुल्य बगण्ये उछल बछड गाय बछन्या।

> ब्राई है शुभ वडी देश में फिर स नव निर्माण की। गृद्ध भावना बनी रहें प्रन् देवेन्द्र तुफान की चाहं कोई उछाने मोनाचादी बीच बजिर्या।।

#### गाजर के गुण

र्ले ० स्वामी स्यम्पानन्द सरस्वती

आजकल गाजर की फनल कुछ हो गई है मौर बाजार मे सभी प्रकार की गाजर उपस्वव है। गाजर कई रगों में होनी है जेंसे के काली नारगी बंगनो भीर लाल रम की गाजर। इन सभी प्रकार की गाजरों में भ्रानेको प्रकार के गुण होते हैं। किन्तु विशेष लाभ की दृष्टि से देशी गाजर प्रविक लाभ की दृष्टि से देशी

कहावत है कि---

गाजर, बणवा ग्रामला जो साथ मन लाय। क्षाचा बढे कल्जी मिटे.

खन साफ हो जाय ।।

गाजर के उपयोग करते व साते का इस प्रकार—गाजर कच्चो स्थाने से तथा चबा-चवा कर साने से एट साफ रहता है। गाजर मे १२ किस्म के लवण पाये जाते हैं। इससे सल्फव, सोडियम क्सोरीन संगने-श्चियम, केलशियम सिल्कन पोट-श्चियम इत्यादि सभी तत्त्व मोजूद है। आ कि कब्बो दूर करने म सहयोगी हैं।

गाजर स्वास्थ्य वर्षक और गुण-कारी तत्त्वो का अप्डार है। गाजर के रस मे उपरोक्त सभी नत्त्व पाये जाते हैं जो लामकारी व पुष्टिकारक होते हैं। गाजर का हलुवा बना कर भी साया जाता है। गाजर को छील कर बीच की नली को निकाल देना चाहिए। फिर पानों में चोकर बीया कस म कस कर दूप में पकाना चाहिए गां बोने पर मीठा मिला कर हलुवा तैयार होता है। कुछ लोग मावा (बोझा) भी मिलाते हैं जिसके बादाम पिस्ता काज इलायसी मिलाकर तथार करन है जिसके सेवन करन म सरीर पुष्ट होना है।

गाजर का मुख्या भी जनाया जाता है जो कि कब्जी को खत्म कर के मूक्ष बढाता है। गाजर के रस में थोडा सा गुड मिमाकर पोने से मूज बिकार दूर हाता है। साथ ही जम बोग को कहोते हैं। सम्सी मिलती है। भाजकक्ष मीसम है प्रयोग कर लाभ उठायें।



### समाचार सन्देश

#### त्रागामी १४ फरवरा १६८६ को दिल्ली में डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर विशाल गोभा यात्रा कार्यक्रम मभी त्रार्थसमाजों व त्रार्थजनों मे इसमें भाग लेने की त्र्यील

दिल्ला, ४ दिसम्बर

नावंदेशिक झायं प्रतिगतिष मभा के प्रधान जी रामगोपाल दालबाले झागामी १५ फरवरी १८८६ को डी० ए० वी० दालाव्दी समारोह पर निकत्न वाले विद्याल शोमा नृशता से साम्मिलत होन के निष्यक्षमी आयं स्वाची व कायकर्ताओं को विशेषकर दिल्ली की समस्त आयं जनता से स्वील को है कि इस दिन सभी लोग सम्य कायंक्रमों को खोटकर इस सोबा सात्रा ने बडी सक्या में माग संं।

यह शोमा यात्रा प्रात ११ वजे

लालकिला मद न में प्राप्त्म होगी और जादनी चीक घण्टाघन नहीं सहक चान्नदों ने चार्या ही जेलाजी अक्षानी में देश के स्वाप्त हो जेलाजी अक्षानी में देश के स्वाप्त हो जेलाजी किया हो होती हैं है सार्य प्रदेश चीक गोम हो होती हैं है सार्य प्रकेष आंखेसमाज मन्दिर से होती हैं है सार्य प्रकेष आंखेसमाज मन्दिर मार्ग नहीं दिल्ली में समान्त होगी।

इस मदसर पर मनक कार्यक्रमो का भी भायोजन किया जा रहा है।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक समा,

दिल्ली

विस्थापितो भौर घुसपैठियो मे भेद किया जाए

#### हिन्दू रचा समिति की अध्यक्ता पंढिता राकेश रानी का वस्तव्य

घसम समभौते के घन्नगंत वगलादेश से धसम ने धाए लोगो को १० साल के लिए मतदान से विश्वत करते का निजय विवाद का विषय बन गया है। इसके कारण बगलादेश से आए हिन्दू विस्थापितों के मन में धाकोश पनप रहा है। उनका कहना है कि भारत विभाजन के समय उन की इच्छा के विरुद्ध उन्हे वयसादेश तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान मे रहते के लिए विवश किया गया था। उन्होंने कभी पाकिस्तान बनाने का न तो समयन किया था भौर न ही उन्होने मात् भूमि भारत से भपना सम्बन्ध विच्छेद किया था। इसलिए ये घ्सपैठिये नहीं बल्कि विस्थापित हैं भौर मातृभूमि मे मसम्मान वापस लीटना उनका श्रविकार है। बगला देश से बाये हिन्दुबों के इस कथन मे कन है। वे घुसपीठये नहीं बल्कि बिस्यापित हैं इसके विपदोत ग्रसम मे भूमि हडपने भीर राजनैतिक स्वार्थों को दब्टियत रखकर इसे बगलादेश में मिलाने की योजना मन मे रखने वाने मुस्लिम तस्व वस-पैठिए हैं। घसपैठिया भीर शरणा-थियो मे प्रन्तर समभना चाहिए।

मारत सरकार ने पहले मी पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुश्रो को विस्वापित माना वा । शब श्री लका से भागकर धाने वाले पीडित तमिल हिन्दुओं की भी संबकाय विस्थापित ही मानती है और उन्ह पूरा सरकाण दे वही है। किर इन बगलादेश के विस्थापिती को हिन्दुस्रो के साथ ही सौतेलापन क्यो ? बगखा-देश से निहित स्वायों के कारण वसे मस्लिम बसपैठियों के स्तव पर रखने के पीछे केवस बोट की राजनीति की मानसिकता काम कर रही है। हमारा समो राष्ट्रबादी नागरिको धीर सस्थाओं से अनुरोध है कि वे बगला देश से बाए।इन हिन्दू विस्वापितो के हितों के सिए आवाज उठाए। इनका मताधिकार स्ट्ट कपना इनके साय घोर धन्याय है।

> भवदीय राघेरवाय कर्मा

#### महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, जिला राजकोट (सौराष्ट्र) भारत सरकार द्वारा श्रकालग्रस्त चेत्र घोषित

धाय जनता की सूचनाथ जिये-दन है कि युग प्रवर्तक महिंव दयान-द की जन्म भूमि टकारा, बाज ध्रकाल के कराज गासी में जा रहा है। भारत सरकार ने टकारा (जिला-राजकोट) सहित ध्रमस्त सीराष्ट्र को ध्रकालयस्त चोषित कर दिया है।

टकारा में इस समय उपदेशक विष्णावस गीशाला प्रादि कार्य महाल स्यानन्दस्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा बसाये जा रहे हैं। इसके कारण टकारा ट्रस्ट को काफी प्राधिक सकट का सामना करना पद रहा है। बहा पर पानी बिल्कुन सुख गमा है, जिस से काफी सकट उरएना हो गया है।

मेरी समस्त भायसमानी स्त्री-

#### वेद अचार गोष्ठी

भजमेर १८-११-१६८५ परोप-कारियो सभा के तस्वाबधान मे ऋषि मेले के अवतर पर मध्याह सत्र मे चर्चा की गई। रामस्वरूप समोधक गोह्दी ने कहा कि (१) ऋषिकत वेद भाष्य उसी भैली में प्रवाहो (२) सब भाषाधी ने इसका सनुवाद हो (३) धाक्षेत्रों का निरा करण हो। (४) एक निर्मारित रूप रेला प्रनुसार विभिन्न देशों के मूल-वासियों में वैदिक बर्म के उपदेश की व्यवस्था हो । इन मुद्दो पर गभी र विचार करने के शिए लब्बप्रतिष्ठ वैज्ञानिक शिक्षा वेसा स्वामी सस्य प्रकाश जी की श्रध्यक्षता में गोष्ठी हुई।

क्रमण स्वामी प्रोमानस्य जी महाराज (प्रधान, परोपकारिणी समा। सत्यप्रिय शास्त्री (हिसार) प० भानन्दत्रिय जो (बडौदा), डा॰ भवानीलाल जी भारतीय (बडोगढ). ओ • वेशसह जी (नई दिल्ली), वैद्य प॰ बह्यानन्द जी (शजमेर), कु॰ सरोजिनी (प्राचार्या-कन्या गुरुकुल वित्तीह), प० भन-तशम जो (व्या-वर) वजरग लाल जी (डोडियाणा), धर्मवीर जी (छात्डी), वदीसास जी (देवलो), सोहनलाल शारका जी (शाहपुरा भीलवाडा) वैद्य लक्ष्मण सिंह जी, श्रीमती मिविनेश (महिला धार्यसमान समसेर), मजनोपदेशक बेगराच की. भोगाराक वानप्रस्वी जी (शिवनक), प्रदीप (सामीय), वैश्व धमसिंह जी कोठाबी ने विचार व्यक्त किये। शान्ति पाठ कियोडीमस जी गुप्त ने किया।

सब बक्ताओं ने सक्षेप में न सक्स आया में अपनी बात क्वी। उप- आर्थसमाओ एव प्रन्य धार्य सस्याभो से तथा सभो आर्यजनो से भी प्राथना है कि इस सकट की घढ़ी में हमारी ध्रायिक सहायता करते की क्रपा कर इसके लिए हम धापके धामारी रहेगे । यह सहायता की चाथि आप चैकांड्राफ्ट प्रचवा मनीधार्डर द्वारा महाचि वयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकाचा इसके उप कार्यालय महाचि वयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा, बार्यसमाज (धनारकती), मन्दिर मार्ग नई है।

> रामनाच सहगल सन्त्री

रोक्त चारों विषयों के बारे से क्या किमया रही हैं ? क्यो रही हैं ? क्यो कैसे दूर हो सकतों हैं ? इन सब पब चर्चा की गई। वक्ताओं ने खाबे के कार्य की विषा की ओव सकेत किए।

> रामस्वरूप गोष्ठी संयोजक

#### धार्मिक विक्चर

प्रचार पर्दे पर भाषभी भ्रयने सार्यसमाज ने कराइए।

गोहत्या, दहेज, महासमुद्रा के बिकट तथा धार्यसमाज क शहोदो की पूर्व जीवनिया स्लाइटम द्वारा दिखलाई बाती हैं। जोशोसे गीत यी होते हैं। बिजली का प्रबन्ध ध्रवस्य हो।

द्यासानन्द भजनीक द्यार्यं भवन १/६३४६ प्रतापपुरा, गली न० २ वेस्ट बोहसास नगर साहदरा, दिल्ली-३२

### दिल्ली की श्रार्थसमाजों के साप्ताहिक सत्संग रविवार १४ दिसम्बर १६८४

प्रतापनगर-ब॰ भीष्मवत शास्त्री, महात्मा देवेश भिक्ष । मौडलबस्ती-ग्रातन्द्रविद्वाव जेलरोड—प० हरि-ज्वन्द्र ग्रार्थं । **ग्रा**र्थं रहा सब्जीमण्डो---व • उदयश्चे ब्रु धर्माचार्यं । इन्द्रपुरी---पः वेदप्रकाश शास्त्री । किंग्जवे-केम्य--- प० बहाप्रकाश शास्त्री । गुज-रावाला टाउन-डाक्टर रघनन्दन मिह । गोविन्दपुरी-स्वामी यज्ञानन्द सरस्वतो । लक्ष्मीनगर विस्तार-यः चन्नालाल ग्रायं भवनोपदेशकः। चनामण्डी पहाडगज-डा॰ छविकृष्ण शास्त्रो । जनकपुरी बी ब्लाक-डा॰ धमंदेव शर्मा ! तिमारपुर-श्री धमी-बन्द्र मतबाला । तिलकनगर-डा॰ वेदप्रकाश महेश्वरी । देवनगर-प० मोमदेव शास्त्री । दरियागज -- बहा-चारियो, पवित्ता रामदेवी एम०ए०। नागलराय-बहाचारी मनुदव शास्त्री नारायण विहार-पर्व रामवीर शास्त्री, श्रानिवास पुरी - प० असरनाथ कान्त द्यायों ग्रदेशक । टैगोर गार्डन-प्० कामेश्वर शास्त्री। प्रीतमपुरा-प० नेत्रपाल धार्य । प्रशान्तविष्ठार -- प० चम्रतमान सार्थोपदेशक । पजाबीबाग एक्सटेन्सन---प॰ वेदव्यास भार्य भन-नोपदेशकः प्रजाबी बाग-साचार्य इरिटेव सिद्धान्तभवेण । भोगल--

प - तुलसोराम ग्रार्थ। मोतीबाग---प॰ बलवीरसिंह शास्त्री। महाबीर-नगर - प० रमेशचन्द्र वेदाचार्य । राणात्रताय बाग-प॰ ध्रश्नोक विद्या-लकार। राजीशे गार्डन-पं॰ ब्रह्म-पकाश वागीश। रमेशनगर - धार्य-वोर रमजीतसिह राणा । लझ्मीबाई नगर-प॰ नन्दलाल निभंग सिद्धान्त शास्त्री । लड्डूबाटो—मा॰ मोहनलाल नांघी । सोहनगज- पं व मुनिदेव मञ्जनोपदेशक । शालीमार बाग- डा॰ सुभावचन्द्र शास्त्री । शादी खामपुर--प॰ देवराज बेदिक मिश्नदी। त्री-नगर--श्रोमती कस्तूरी देव शार्या। होजसास-- प्राचार्य द्यामलास । प्रनाजमण्डी शाहदरा--महात्मा राम किशोर वैद्य। दीवानहाल-- भावार्य हरिदेव सिद्धान्तमयणः बोट क्लब दोपहर १ बजे से २ बजे तक ६ १०, ११, १२ १३ दिसम्बर आचार्य हरि-देव सिद्धान्त भवण नक केशरी का प्रवचन होगा।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती मिष्ठातः वेदप्रचार

### दिल्ली श्रार्थ प्रतिनिधिं सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम दिंसम्बर ११८४

१ महात्मा रामिकशोर जी वैद्य महोपदेशक ६ दिसम्बद से १५ दिस-म्बर प्रायंसमाज प्रनाजमण्डी चाह-दरा २२, २३, २४ विसम्बर-ग्रायं-समाज सोहना [हरियाणा) २८,२६ दिसम्बर् धार्यसमाज मोतीनगर नई दिल्ली-१५

२. पण्डित सत्यवेव स्नातक रेडियो टी बी कलाकार १ से १४ दिसम्बर नक प्रनाजमण्डो शाहबरा, मधीत कार्यक्रम रहेगा ।

३ पण्डित जोतीप्रसाद ढोलक कलाकार ६ से १५ दिसम्बर धनाज-मण्डी बाहदरा-संगीत कार्यंकम ।

४ प॰वेदग्यास ग्रामं प्रचारक सगीत कलाकार १ से १५ दिसम्बर, भार्य-समाज कृष्णनगर कार्यकम रहेगा, १८ से २२ दिसम्बर, आर्यसमाज ऋषिनगर सोनीपत (हरियाणा)।

थ. ग्राचार्य हरिदेव सिद्धान्त-भवण ह से १३ दिसम्बर, दोपहर बोट क्लब कार्यक्रम रहेगा।

६ पं० ब्लीलाल झार्यप्रवारक सगीतज्ञ १५ विसम्बर फात १ बजे.

लक्ष्मीनगर विस्तार (सगीत कार्यक्रम) १६ से २० विसम्बर तक दोपहर १ बजे से २ बजे तक बोट क्सब कार्य-कम सगीत द्वारा प्रस्तूत करेंगे।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रांचळाता वेदप्रचार विभाव दि॰ अ॰ प्र॰ समा

#### हरिजन युवक बनवारी विंधर्मियों के चंगुल से मुक्त

#### करा दिया गया

तिजारा । दिनाक ४-१२-दश ग्राम सातीवाडा (टपूकडा] की मस्जिद के इमाम दुल्ली फकीर धादि साथियो द्वारा हरिजन युवक बनवारी को धर्म परिवर्तन के लिए उडा लिया गया या जिसको बाना टपूकडा के धवक प्रयासों से बार्यसमाज एव विदव हिन्दू परिषद तिजारा के कार्य-कर्ताओं ने मुक्त कराकर शुद्ध कर लिया गया है।

> विशनदास धार्य सन्त्री प्रार्थसमाज तिजारा, ग्रसवर

### श्रायंवीर दल की देन यवकों का शारीरिक स्वास्थ्य विकास

ले०-रामाजा वैरागी सचालक मार्वदिशिक धार्यवीर दल विदास

युवको की पीढी, राष्ट के भविष्य की भाषारशिला होती है। इम ग्राचारशिला को सशक्त रखने के लिए युवको के शारीरिक स्वा-स्थ्य के विकास की दिशा में आय वीज दल का प्रयास हमारे सामने है। श्रायंवीर दल की शाखाओं भीर शिविरों के माध्यम से युवको को पूर्ण मनुशासित जीवन जीने और बहा-मृहतं में उठने की प्रवत्ति को जागत करने की प्ररणादी जाती है। इन जाखाओं के साध्यम से जारीकिक शक्तिको सशक्त बनाने का एयस्त किया जाता है। दैनिक व्यायाम का भ्रम्यास युवको क लिए सक्षम मिद्र होता है। ऐसे श्रसस्य उदाहरण हमारे मामने हैं. जो ध यंबोर दल में मबद होने से पूर्व आचरणहोन ही नहीं अकित से क्षीण हो चके थे उनके भीतर सगठित चरित्र शक्ति का निमाण हो नही हमा वरन् उनके भीतर नवजीवन के सचार हथा। व एक भादर्भ और साहरी युवक के रूप मे समाज के बीच प्रतिकित हए। धार्यवीर दल की स्पष्ट मान्यता है कि चरित्रवान युवक हो जागत राष्ट के निर्माण में मही मागीदांव होते है। युवको का चरित्र ही राष्ट्रीय वरित्र को निरूपित करता है। आये वीरदल धाज भी ग्रयने ट्रमी लक्ष्या भीर उद्देश्य को लेकर ध्रयसर है।

#### साधना की भूमि या माधना मन्दिर

पथ्वो गष्ट का शरीर है, जनता प्राण है भीर संस्कृति है मन शरीर प्राण और मन के सांस्मलन से ही राष्ट्रकी आरमाका निर्माण होता है। हमारे देश का नाम आर्यावर्त है, भारत है। भारतीय तात्पर्य धाय सस्कृति की स्पष्ट परिभाषा है---कुण्वन्तो विद्वमार्यम धौर हमारी संस्कृति का स्वर है- सर्वे अवस्तु सुस्तिन । इस परिभाषा के अध्य-यन के लिए शिक्षा भीर स्वाध्याय मनिवार्य है। वेदों में उत्तम कोटि ने राष्ट्र निर्मास के लिए मानसिक तेज तथा शारोरिक कवित का प्राप्ति के लिए प्रार्थना को गई है। इसा दृष्टिसे इस परम पावन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए धार्य वारदल धीर स्वाध्यायी प्रकृति को प्रनुप्ररित करने, ब्रह्मचर्यं घम पालन करने के

साथ ही जारीरिक स्वास्थ्य की समुन्नति के लिए और विशिष्ट सर्वी की ग्रोर ग्रभिक्षि जागत अस्त्रे के लिए साधना भूमि या साथना मदिर के निर्माण की योजना को अतिम रूप दिया गया। भाय वीर दल की भोर से भारत क विभिन्न प्रदेशों में बहुत सार माधना मदिर स्थापत किए गए। यह योजना समग्र रूप से प्रश्न-सित और प्रतिष्ठित हुई है। बीच से कुछ शिथिनता भी बाई है किन्त श्रम पून जागरण है। जिसके लिए हमारे प्रधान संचालक धा बाल दिवाकरहस नथा उपप्रधान सचा-लक डा० देवव्रत प्राचाय समर्पित हैं। आयंबीर दल के कार्यों की विशेष जानकारी हेतु 'मायवीर दल एक परिचय" पुस्तक छप गई है श्रवद्य

#### शोध-संगोर्घ्य

"ब्राज दिनाक २४ ११-८१ ई० को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक जोध सस्यान गुरुकुल प्रभात ग्राध्यम (टोकरी) भोला भाल मेरठ (उत्तर प्रदेश) में पुज्य स्वामी विवेकानन्द जीसरस्वतीकी ग्रध्यक्षता मे एक शोध समोध्ठी सम्पन्न हुई । जिसका सयोजन डा॰ निरूपण जी विद्याल-कार ने किया है। इस मगोष्ठी का विषय बा---'वैदिक महिनाओं मे देवताबाद' इस समोच्डी में प्रोफेसर षेरसिंह, श्रीमती प्रभात शोभा, **डा**० कर्णसिंह, डा॰ वेदपाल (पजाब वि॰ वि०), डा॰ स्मा दुर्बानवा, डा॰ वेद-

प्रकाश, कु० शोला (शोध छात्रा दि० वि०वि०), सुनीना वर्मा, श्री सोमदेव शतायु, भी शिवशकर तथा बहा-चारी वाचस्पति ग्रादि वक्ताग्रो ने अपन विचार व्यक्त किये। अन्त में गुरुक्त के सत्री प॰ श्री इन्द्रराज जो ने सब को धन्यवाद देत हुए शोध सस्यान को योजना पर प्रकाश डाला यगली संगोष्ठी १३ जनवरी १६८६ को ग्रायोजित करन का निक्चय किया गया।

> भवदीय उन्द्रराज मन्त्री

#### **प्रेटर कैलाश १ मे श्रार्य युवा मम्मलन सम्पन्न**

ग्रायसमाज ग्रन्स कलाश्व १ क वार्षिका सब पर आय युवा सम्मे सहगल ने सामाजिक सस्यामी से मागकी कि वे युवको को उचित प्रतिनिधिवदायुवा । वशके उप सक्य में कुछ घाय संस्थाए हा काय ऋमो मे युवाबाका स्थान देपाई है। धायसमाज क प्रारम्भिक इतिहास मे हम देखते हैं कि युवा वग की प्रचार शली व बडाय हस हा भायसमाज ने बहुमुखी उनात का

प्रसिद्ध ग्रध्यक्ष श्री बमवार एम

ए ने ग्रायसमाजो से ग्रापील की कि वे युवको को भाकषित करने के निए नन की ब्रध्यक्षता करते हुए श्रा धजय मन्दिरों में ब्रखाड यायामशालाएं जडो कराटे∦ केंद्र और योगासन कक्षाओं का भायोजन कर।

युवापत्रकार श्रीनरेद्र श्रवस्थी ने कहा कई भी सस्यायुवको के माने से ही गतिशील होती है। युवाधो को व्यसनो से मुक्ति दिला कर राष्ट की मेवाम उहे श्राय समाज ही लगा सकता है।

च द्र मोहन धाय

#### वेद प्रचार सप्ताह मम्पन्न

धायसमाज बसई दारापुर रतन पाक रामगढ ई एस झाई कालोनी नई दिल्लो ११००१५ मे ७ नवम्बर से १० नवम्बर १६८५ तक वेदप्रचार सप्ताह का कायकम सम्यान हुन्ना जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा डा॰ धम देव शर्भा तथा सतदेव जी रेडियो ,कला कार के प्रतिदिन भजन भीर ग्राचाय हरिदेव जी तक केशरी द्वारा कथा के माध्यम से वेद माग पर चलने का सदुपदेश हुआ। पूर्णाहुति के दिन प्रो० मारत मित्र जी शास्त्री खुशी राम जी ने यज्ञ एव वेद के सम्माध मे सदुपदेश दिया। इसी अवसर पर श्री राजकुबार जी यागी सदस्य दिल्लीनगरनिगमन प्रो०दुनीचन्द

पुस्तकालय एव व चनालय का भ्रपन करकमलो से उदघाटन | किया भीर ३१०० रुपये प्रदान कर सभी लोगो को वेद उपनिषद रामायण झादि ग्रयो के झध्ययन को प्ररणा दी। स्व० प्रो० दुनीच द जी का पृत्री श्रीमती शान्ति सभरवास ने ५००/ रुपये तथा षामिक पुस्तक प्रदान की। श्रो मगतराम जो मूतपूव कौसलर न सभीका घन्यवाद और समय समय पर झच्छे-अच्छे ग्रायो के सध्य यन के लिए भान का निमत्रण दिया।

> कृष्ण कुमार छावडा मन्त्री म्रायसमाम बसई दारा पूर नई दिल्ली ११००१४

#### श्राय सत्याग्रह हैदराबाद पेशन का मामला

दिल्लो २ दिसम्बर।

जिन लोगो ने हैदराबाद ग्राय सत्याग्रह १६ ३८ ३६ मे |सावदेशिक समा द्वारा सचालित निजाम हेदरा बाद क विरुद्ध भादोलन म माग शिया या धौराजन्हे जेल **।**का सजा हुई था। उन सब सत्याप्रहियो स निवेदन हे कि भपना प्राथनों वत्र द्मपने नाम पिताके नाम स्थान बहा से सत्याप्रह के लिए गए ये जार बहा मिरफ्तार हुए तिथि ,जेल का नाम बहा प्रारम्भ मे भज 🛺 ए बोर वहा से छूट तथा छूटने की । तिथि के

विवरण सहित अविकतम २० दिस म्बर १८८४ तक साबदेशिक धाय प्रतिानांच सभा महर्षि दयानन्द्र भवन रामलीला मदान नई दिल्ली २ के पते पर भिजवा देवे ताकि उनका मामला के द्वीय सरकार के सामने पद्मन हेतु स्वीकृत कराया जा सके। इसके उपरान्ध यदि कोई व्यक्ति छट गया तो साबदेशिक क्षेत्रमा उनके मामले में किसी भी प्रकार के सह योग के ।सए उत्तरदायां नहीं होगी।

रामगोपास गासवासे प्रधान सावदेशिक सभा दिल्ली

#### मातृ मन्दिर कन्या गुरुक्त की छात्राश्रो के वेदप्रचार की धूम

२६ ८ ८ १ से २६ ८ ८ १ तक मात्मिन्दरको छात्राची न पलामू बिहार के धन्तगत विश्रामपूर म श्रायोजित विद्यास यजुर्वेद पारायण यज्ञ मे ऋत्विज का काय सफलता पुत्रक सम्पन्न किया । बालिकाओ क मध्य वेंद्र मन्त्रोक्वा रण से दूर २ के **अनेक ग्रा**भाका लाखों की संख्या म वनता | मत्रमुग्ध रही घोर उन्होने बालिकाओं का स्तेह से संस्कार किया बस्त्र,तथा ११०१) ६० की बली भटकी।

बालिकाका के मावपूण प्ररणा

प्रद कायकमो साम्रा का मोल, दहेब का नापसा, हिन्दी बेदपाठ प्रश्निक्षणम सत्याय प्रकाशस्य वश्यय (संस्कृति) मादि कावक्रमों का धुम रही।

माचार्या हा॰ पुष्पावतो जो के प्रवचनो में जनता सर्त्याधक प्रमाविस सहो । प्रामाण जनवा क<sub>र</sub>स्तेह से अभिभूत होकर भावार्या वा से मिवष्य मे भावस्यक सहयोग देवे तथा बहा कन्या गुरुकुल खोलने का षाख्वासन दिया। जाचार्या जी वे उन्ह ऋषि दयान द प्रदर्शित वदिक पय अनुसरण की प्रदेशा दो।

#### लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्स ग

द्यायसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से माय युवक सभाकी भ्रोर से स्विवार ३ नवम्बर १९७५ को साय ३१५ वज से ६ अपजे तक श्री राम ञूक्स जी यादव के निवास स्थान पर पारि वारिक सत्सगका साथोजन किया गया। इस भवसर पर स्रेन्द्र कुमार जीशास्त्रा ने यज्ञ सम्पन्न कराया सथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। वेद प्रचार अजन म इक्षा लुधियाना की बोर से श्री किरपा राम जा बाय तया श्री बरापाल जी धाय ने भजनो

का कायकम प्रस्तुत किया । इस सारे समारोह की ग्रध्यक्षता श्री नवनीत नाल जो ढीगरा प्रधान **मार्यसमा**ज महर्षि दयानन्द बाबार लुवियाना, ने की। बहुत बढ़ी सक्या में सत्सग प्रमियों वे इस सत्सग में ,भाव सेकर षम साम उठाया ।

रोशन लाल भाग घञ्यक्ष वेद प्रचार विसास धायसमाज महर्वि दवानन्द बाजार नुषियाना

#### श्रार्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली मे योग प्रशिच्नण शिविर का समापन समारोह सम्बन्न

माननीय श्री स्वामी श्रपरोक्षा मन्द को महादाज के निदशन मे २०११ ११८५ से चलाये जा रहे योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह निम्न कायकमानुसार मायोजित किता गया है-

रविवार दिनाक १ १२ १६८५ प्रात ५३० वर्षे यज्ञ

६०० बजे योगाभ्यास ৩ ३০ **ৰ**জ **বাল** সহিলেগ विविर समापन समारोह

प्रध्यक्षता स्वामी अपरोक्षानन्द जी वक्ता ब्रह्मचारी वितेन्द्र व साथी

डा० रमुबीर वेदालकार डा० धम

प्रात ८४४ बजे शान्तिपाठ व प्रसाद वितरण

माप सब सपरिवार सादर ग्राम त्रित हैं।

निवेदक

बोमदत्त मारद्वाक मगवती बोब राय हरिराम गुप्त नगदीश चन्द्र गुम्ता देवदाज कालरा कमला तल बाड डा॰ बार •के॰ गोवस मोला वकर बार्जिय वेदप्रकाश महता नानक चन्द गुप्ता।

### सर्वप्रिय दानवीर प्रवान श्री सोहनलाल जी तुली के श्राकस्मिक निभन पर भावभीनी श्रद्धाजलि

भायसमाज किशनगज (मिल एरिया] दिल्ली के श्रद्ध य प्रचान श्री सोइनलाल जी तुली जिनका झाक स्मिक निधन १०११ ८६ को हुआ भौर किया रस्म बुधवार दिनाक २०११ ८५ को हुई उसमे आयसमाज किशनगंज (मिल एरिया) की म्रोर से निम्नलिसित श्रद्धावनि प्रस्तुत की

श्रद्ध य श्री सोहनलाल जी तुली मायसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली के जन्म देने वाले इन महा पुरुषों में से एक महान पुरुष के जो कि धावे चसकर वे एक बायसमाज के कमठ कार्यवर्ता के रूप मे उमरे भौर वर्षों तक इस बायसमाज के प्रधान पद को सुखोमित करते रहे। उनके अवक परिश्रम त्याग नि-स्वाय सेवा तथा उनकी निष्ठाबान कुम भावनाधो काही यह अस 🕏 कि इस में न में नेविक वर्ग के प्रचा-श्वर्ष इस बावसमाव का धपमा एक

महत्त्वपूण क वा स्थान है। इन शब्दो के साथ दिवगत घाटमा के प्रति भपनी श्रद्धाजलि भपित की गई।

इसके अतिरिक्त इस भागसमाव के बतमान प्रधान डा० एस एस कामरा एवं (कविराज श्री बी सी जोशी प्रचान बाजार कमेटी किशन गज दिल्ली ६ के अतिरिक्त आय समाजके एक प्रमुख नेता मलिक रामलाल श्री मोदप्रकाश शास्त्री श्रीमती कोशल्या मलिक सूतपूर कान्सल र श्री बलबीर मित्र झान द भौर भी कामेश्वर शास्त्री ने भी सपनी श्रद्धांजनि दिवगत ग्रात्मा की स्राति एवं सदगति के लिए भट**ी**। इस योक सभा मे १५०० से मी समिक बहुर और माई उपस्थित

> [जेपी पाठक] सक्त्री बायसमाज किशन गज (मिल एस्वा) दिल्ली-६

#### आवश्यकता है

सूबीग्य वर वध मेल मिलान के लिए श्री ग्रात्मदेव, सयोजक आदर्श विवाह केन्द्र दिल्ली श्राय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली से सपर्ककरे।

निम्न युवको युवतियो के लि-स्योग्य मेल वास्त्रित हैं -

सयाग्य वर चाहिए-

१ कन्या२४ वर्ष ५-३ बी०ए० पिता दिल्ली मे व्यापाररत, २ कन्या २२ वष ५-४ बी/काम सरकारी सेवा मे ३ कन्या २१ वर्ष ५-४ बी० काम मृहकार्यमे दक्षा, ४ कन्या २१ वर्ष, पू-४ एम**०ए० बी० एड, ५ क**न्या २४ वर्ष ५-३ बी०ए० साय एक हजार रुपये मासिक ६ कन्या २८ वर्ष ५-३ बी॰ काम, सरकारी सेवारत, ग्राय १,४००/- मासिक ७ कन्या २३ वर्ष ५-३ बी॰काम पिता प्रिसिपल, ८ कन्या२३ वर्षवी० ए० वॉ०एड पिता ग्राई॰ए०एम० ६ कन्या २३ वय । ५ बी ०ए० बो ०एड० सरकारी सेवा ७०० रुपये मासिक, १० कन्या २६ वर्ष ५२ बी० ए०, ११ कन्या २६ वष ५ फुट नसिंग ट्रैण्ड कार्यन्त १० कत्या २२ वर्ष, ४-४ बी० ए० श्राय ११५० रुपये मासिक १३ कन्या २१ वर्ष ५-२ मध्यापिका ११००/-हपये मासिक, १४ कन्या २२ वष ५-४ बो ०ए० ट्रेनिंग कोर्स, भोप्रटर

एम डी एव

टेलीफान ग्राय ११००/- मासिक ।

सूयोग्य वध् चाहिए--

१ युवक २ ३ वर्ष ५-७ मैक नि कल इन्जीनियर ग्राय १८००/- रुपये मासिक २ युवक २५ वर्ष ४-८ ईच इलैक्ट्रोक्ल इ जीनियर भ्राय १५००/-मासिक ३ युवक २५ वर्ष ५-२ एम० बी०की०एस०, ४ युवक २८ वर्ष <-< इच एम**े बो**ं बीं एसे २३००/- मासिक, ५ युवक २० वष ५ ७ इ च एम०बी० बी०एस० भ्रपना क्लिनिक ६ युवक ३०वर्ष ४-८ एम•बी॰बी॰ एस॰ भ्रपना किलनिक ७ युवक ३० वर्ष ६ प्रोफेसर पी० एच॰डी॰ भाय २,५००/- मासिक, ८ युवक २८ वर्ष ५-८ मैकेनिकल इन्जीनियर प्राय २ ३००/- मासिक. ह युवक २२ वर्ष ५-७ बी० काम. धपना कार्यटाइप फोटोस्टेट २.०००:-मासिक १० युवक २७ वर्ष ५-८ इ च बी॰काम इण्डियन प्यर लाइन्स १८०० मासिक, ११ युवक २७ वर्ष ५-७ एल०एल०बी० ग्रंपना व्या-पार २,००० - मासिक १२ युवक २८ वर्ष ५ फट एम० काम यूनियन बक् आय १,८०० - मासिक, १३ युवक इ३ वध ५-४ बी० ए० द्याय .१००/ मासिक, १४ युवक २८ वष ५ ८ सरकारी सेवा १०००/-

> डा॰ घर्मपाल द्यार्य महामन्त्री

मनि-चोरी (पच्ठ० का शेष)

मुनिने पूर्वोकन शखद्मीर लिखिन कथा की ओर सकत करत हए कहा --हेपाण्डव श्रष्ठ युधिष्ठिर । राजा मुखम्न द्वारा लिखित को दण्ट प्रदान रूपी अच्छ कम कंफनस्वरूप निश्चय ही उच्चनम पद प्राप्त होगा व्यास मनि कहने हैं —

- (१) महाराज<sup>।</sup> प्रजाजना का पालन पूर्णरूप सं करना ही क्षत्रिय का मुख्य धर्म है। अन्य काम कुमाग तुल्य हैं। यत तुम मन को शोक म निमम्न मत करो।
- (२) हे धर्मज सत्पुरुष 'तूम घपना पप्नीव भाइयो की हितकर बात सुनो । राजन् दण्डधारण कानन का पालन<sup>।</sup> हो क्षत्रिय घमं है। सिर मुडाकर सन्यासी बन जाना ठीक

शोक मत करो --প্রাক্রঘণ

इस सगोष्ठी मे श्रीकृष्ण भी उप-स्थित थे। ग्रर्जन न उनसे प्राथना की — हे माधव<sup>ाँ</sup> घर्मपुत्र युधिष्ठिर स्वय भाई वन्धुओं के वियोग से शोक सन्तप्त हो स्वय ही दक्ष माग्रमे ब्ब गये हैं। भाप इन्हें वर्य दोजिए। उस समय श्रोकृष्ण बोले-

१ सिंहपुरुष ! तुम शोक मत करो। शोक नो अरीर को सुखादेने वाला होता है। इस समरागण मे जो बीर मार गये ने वे फिर सहज ही मिल सके यह सभव नहीं है।

२ गजन <sup>!</sup> जैसे सपने में मिले हम बन जागन पर मिण्या हो जाते हैं उस प्रार्जाक्तिय नहासमर मे नष्ट हा गये है उनके दर्शन धव सभव नहीं है।

३ क्षत्रिय धम मे उत्पर रहने वाल वट वेदाङ्गो के पारगत यह शूर वेर नरेश पुण्यमयी वीरगति को प्राप्त हुये है उनके लिए तुम्ह शोक नद्र करना चाहिए।

युर्घिण्ठिर का नगर मे प्रवेश

ग्रदना वमशोला वीरागना बुद्धि-मना द्रौपदी तप पुत व्यासमृति धीर नोति तथा वर्मक अगाध भण्डार श्रीकृष्ण तथा धाने चारो भाइयो के उत्साहवधक शब्दों को मुन युधि-ष्ठिर की घात्मविश्वास की ज्योति प्रदाप्त हो गई। सुसज्जित श्राक्षंक स्वस्थ रथ पर माता कृन्ती महारानी द्रौपदी और घस्त्र शस्त्रो से सज्जित भाइया घीर सेना सहित उच्च स्वर समन्वित विभिन्न वाद्य यन्त्रो भीर मस्त गज ब्रह्म ब्रादिक रखपर विराज्यान वेद पाठी विद्वान द्विज वग क गूणगान श्रीर मगल स्तोत्र पाठ की मधुर वाणी से गुजते हस्तिना-पुर नगरो में सहस्रो लाखी आ बाल वद्ध नर-नारियों का हथ ध्वनि धौर सतन पूष्प वर्षा सहित सम्राट युधि-ष्ठिर ने राजधानी हस्तिनापुर मे प्रवेश कर भाग लाम्राज्य की चतुर्दिक लहराती ध्वजा फहराई।

> भाचाय दीनानाथ सिद्धान्तालकार के सी ३७/वी ध्रशोक विहार दिल्ली-५२

#### गुरुकुल महाविद्यालय शुऋताल का महोत्सव सम्पन्न

गुरुकूल महाविद्यालय शुक्रताल मुब्नगर का २१ वा वार्षिक महोत्सव २४ सा २७ नवम्बर तक बढ हर्षो-न्लास के वातावरण में सम्पन्न हमा। महोत्सव मे ममाज सुधार ग्रान्दोलन श्चार्यं सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन किसान सम्मेलन व ज्यायाम सम्मे-लनो का धायाजन किया गया । महा--सब में लगभग ४० हजार लोगों ने भाग लिय'।

सम्मेलन मे मवश्री स्वामी ग्रानन्द वेश जी शक्तिवेश जी चन्द्रदेव जी, घीरसिंह शास्त्री प्रमपाल शास्त्री चौ॰ प्रियवत जी सहदेव बघडक, वोरन्द्रवीर सेमचन्द, ज्ञान्ति स्वरूप जौली, प्रादि अनेक मुख्य वक्ताग्री न दश को समस्यासो जैसे शराब का बढता हवा प्रचलन दहेज ग्रनुशासन होनता, राष्ट्रीय सुरक्षा बतंमान जिक्षा प्रणाली देश की श्रखण्डता किसानो को समस्या भादि विभिन्न विषयों पर धपने धपने विवार व्यक्त किये।

स्वामी पानन्दवशजी को ग्रध्यक्षता मे २४ नवम्बर म चल रहे यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहति २७ नवस्बर को हुई। गुरुकूल को पवित्र यञ्जवेदी पर हज रा नर नारियो न यज्ञोपबीत ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ आदि की दीक्षाए ली घोर शराव माम, घुम्रपान म्रादि समस्त निषिद्व पदार्थों को त्या-गनेकी प्रतिज्ञाए की।

इस महायज्ञ के धन्यक्षीय भाषण म वदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री स्वामी भ्रानन्दवेश जा महाराज ने श्रपनी पुरातन संस्कृति एवं यज्ञों के महत्त्व पर दिचार व्यवन करते हुए कहा कि समाज के सभो वर्गों का राष्ट्र उल्यान एव अन्वण्डताक लिए सन्त क्रिया-शोल रहना चाहिए।

सवाददाना श्रायसन्दश





करता है तथा उन्हें प्राकृतिक काला सुवन्धिन व स्थाय

धिकाम ई रोठा, भावला हरड बहेडा चन्दर व सन्द सुर्पान्यन बडी बूटिया से बनाया गया एम बी एक शिकालाई पाऊडर एक भायन्त लाभकारी आकृतिक वेट है। इससे कोई रासायनिक पदाच नहीं है।

एम डो एवं क्षिकाकाई पाऊटर का आवा से ही नियमित प्रयोग कोलिये।

निर्माता महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) खिं• 8 44, इण्डॉस्ट्रयम एरिया, कीर्ति सम्बर वर्ष विकार 110015 कोन 539609 537987, 537341



कार व महान समाज सुधारक हैंबताया। उहीने कहा कि पबाब के लिए उनकी नवाझों को विधेषत पिछड वर्गे के लिए किए गए क यों का मध्ये ममय नक याद किया जाएगा। उनका मत्युम अपूरणीय स्रति हुई है

पंजाब और हरियाणा के मुख्य मन्त्रिया और धनक नेताधान भा बाबा खाजाद का ध्रपनी भावभीनी अदाजाल धांपन की है।

सावदेशिक ग्राय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोगल शालवाले ने कहा—श्री ग्रायाय पृण्डीशिक्ष आजाद स्वन तता सप्राम के प्रबल योद्धा महृष्टियान-ने से सच्चे ग्रन् याद्या महृष्टियान-ने से सच्चे ग्रन् याद्या महात्मा गांधी के दिशा निद्यान में ग्रानेक ग्रादोलना म बद बढ कर व ४ ४ ४२० वाले राष्ट्र सेवक थे।

महात्मा गामा ने वहा मिलन बा उन्होन हरिजनों के बीच रहकर उन की शिक्षा सहयोग कर सहो रास्ता दिखाया और उन्हें घम परिवतन से बचाया १० मदमाहन मालबीय ने उन्हें काशी बुलाकर सम्मानित किया और आधाय शब्द से सुन्धोधित किया श्रा प्राचाय जा माव शिव सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल कागड़ी के कुलाधिपति ग्रीर प्रजाब मतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे हैं। जीवन के श्रान्तिम काल से उनकी इच्छा स्थायप्रकाश का गुरुम्झी मे श्रनुवाद करने की था जो पूरी नहीं हा पाई। उनके जाने म ग्राय जगत को गहरा क्षति पहचा है।

सावदेशिक ग्रांग प्रतिनिधि समा नई दिल्ली दिल्ली बाग प्रतिनिधि समा भाग के द्वांग समा दिल्ली भागसमाज दीवान हाल गुरुकुल कागडा हरिद्वार मादि बनेक सस्पाभो मे शोक सवेदना के मदश मिले हैं।

#### मानव का कल्याण

(प्रष्ठ६ का नव)

ऐसे ननुष्य हमेशा भ्रपने सामने इस विश्न का प्रनुसरण करते हैं होरा जनम भ्रमोल है तृ इसे न गवा प्यारे भ्रीर वह इस्वर से सदव यही प्राथना करता हुआ इस ससार मे विचरण करता है।

सब का भला कही भगवान। सबका सब विधि हो क याण।।



दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम हो एच

एम हो एच

प्रमुद्ध की गुजन

23 जड़ी बृदियों से निर्मित
आयुर्वेदिक और्चार्य

क्रित संग्राम

क्रि

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

वाका कार्यावय-६३, पत्ती राजा वैशारमाय, चावडी वाजार, दिल्ली-६ फोन: २६१८३८

